

दक्षिण भारत में जैन समाज के प्रखर नेता दानवीरशेठ
स्व० श्रीमान् ताराचंदजी साहेब गेलडाकी

जीवनझलक

दक्षिण भारत के प्रवास पर आये हुए किसी भी व्यक्ति के दिलमें, मद्रास जैसे शहर के जैन समाज की शिक्षण और-वैद्यकीय सस्थाओं का सुव्यवस्थित क्रम और प्रगथ देखकर आनंद हुए बिना नहीं रह सकता। और स्वतः ही जैन समाज की दान-दिशा को इस ओर ले जाने वाले व्यक्तिके रूपमें दानवीर शेठ स्व० श्रीमान् ताराचंदजी साहेब गेलडाका नाम व व्यक्तित्व नजरमें आये बिना नहीं रहता।

मध्यम कदका इकहटा वदन, खादीकी धोती, खादीका कुरता और खादी की टोपी, पैरमें केन्वासके पादत्राण हाथमें छोटीसी लकड़ी-चमकती तेज आखे और ७० वर्ष की अवस्थामें भी-जवानों की तेजी-ये आप के अभिन्न गुणों के सूचक थे। उनके यह सादगी अत समय तक भी कायम रही थी।

सन १९३७ में आप राजकोट पगारे ये वहां अनेक शिक्षण सस्थाओंको देखकर आपने अपने मनमें तय किया कि मैं मद्रास जाकर शिक्षाकी ऐसीही सस्थाएँ बनाउगा। उनके विचारों की पुष्टि के रूपमें श्रीमान् विरदीचंदजी सा मलेचाने ५००००) रूपया दान दिया और यहांकी श्री एस एस. जैन एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना हुई। इस सोसायटी के विकास के लिये आपने अपने व्यापार से भी-निवृत्ति ले ली और-क्रमशः इसका विकास करते रहे। इस सोसायटी के तत्वावधानमें क्रमशः प्राथमरी स्कूल, गेर्डिंग होम, हाईस्कूल एवं कॉलेज भी-स्थापित हुए और आज भी सुचारु रूपसे चल रहे हैं। जब तक ये सस्थाएँ पूर्णरूपसे आत्म-निर्भर नहीं हुईं तबतक आप सोसायटी के प्रारंभ कालसे मंत्री बने रहे। इतनाही नहीं प्रत्येक सस्था के लिये आपने दान दिया था ही-किन्तु ताराचंद गेलडा जैन विद्यालयके लिये ३१०००) रु का भव्य दान दिया। इसके उपरांत भी २२००० रु. का और दान आपका होनेसे आप

भगवानुं ठेकाए
श्री अ. बा. श्रवे. स्थानकेवासी
नेन शाश्वत सभिति,
ठे. गरेडिया कुवा रोड, श्रीन बोन
पासे, राजकोट, (सौराष्ट्र)

Published by
Shri Akhil Bharat S S
Jain Shastrodhdhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W Ry, India



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञा,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैपयन्तः ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानवर्मा,
कालो ह्य निरवधिर्निपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतच्छन्दः



करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते है तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेगा मुखसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान मे यह लायगा ॥ १ ॥

मूल्य ३. २५=००

प्रथम आवृत्ति प्रत १२००

पीर सप्त २४८६

विश्व सप्त २०१६

धसपीसन् १६६३

सुद्रक

भण्डिलाल छगनलाल शाह

नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस,

धी काटा रोड, अमदावाद

७८ वर्ष की आयुमें आपका पंडित-मरण हुआ जो आपके यशस्वी जीवन की यशरत्नगी के समान था। अर्थात् यशस्वी पुरुषों के शिरोमणि थे।

आपके सुपुत्र श्रीमान् भागचंदजी सा गेलडा भी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। जैन एन्ड नेशनल सोसायटी के आप सदस्य एव पदाधिकारी रह चुके हैं—वर्तमानमें आप सोसायटीके सभापति हैं। गोसेवा और पाजरापोल के कार्यके लिये आप घर २ जाकर चंदा करने में सक्रोच महमूस नहीं करते और गिरत आठेक वर्षों से आप मद्रास पाजरापोलके मंत्री हैं और उसका बहुत ही विकास किया है। द्वितीय पुत्र श्री नेमचंदजी स्वर्गवासी हुए हैं किन्तु आप भी औपधालय निमित्त टस्ट करके गये हैं। तृतीय पुत्र श्री खुगालचंदजी व्यापार-कुशल हैं और कार्य-भार सन्हाले हुए हैं।

इस आगम प्रकाशन के लिये जब आपके पास डेप्यूटेशन पहुँचा तब इन सुपुत्रोंने उदारता से ५००१) रु दिये हैं एतदर्थ धन्यवाद है। अन्य सज्जन भी उनका अनुकरण करे यही अभ्यर्थना है।

सेक्रेट्री
शास्त्रोद्धार समिति

सोसायटी के पेइन (सरसक) बने। सन १९५६ में अर्थों को भी-कार्य संचालन का अनुभव हो एतर्त्य आप निवृत्त हुए, किन्तु अत समय तक सोसायटी के प्रत्येक कार्य के लिये आप मलाह देते रहे और यह समान का गौरव था कि आप जैसे कुशल एवं विचक्षण सलाहकार मिले।

दानके प्रवाह को शुभ मार्गमें उहाने का आप का प्रयास अत्यंत अनुकरणीय रहा। और मद्रास के जैन समाजने वैदकीय राहत क्षेत्रमें "जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी" स्थापित की-जिसके तत्त्वारम्भमें कई डीसपेंसरिया और एक प्रभूतिगृह चल रहा है। आप उसकी कार्य कारिणी के पदाधिकारी व सदस्य रहे।

इतनाही नहीं आपने अपने व्यापार क्षेत्रको नहीं भूला और सैदापेट (भूदान) में शुद्ध आयुर्वेदिक औषधालय-जिनेश्वर औषधालय खोला जिसके साथ आगे जा कर अपनी पत्नीके नामपर रामपुरजगाई गेलडा प्रभूतिगृह भी खोला। एतदर्थ आपने अपने द्वितीय पुत्र स्व. नेमीचंदजी की इच्छाके अनुसार अलग ट्रस्ट बना दिया है।

आपने अपनी जन्मभूमि कुचेरा के लिये भी कुछ करने के विचार से बहा पर भी छात्रालय शुरू १९४२ में करवाया और उसके प्रारम्भकाल से आपकी ओर से २५० मासिक सहायता उसे दी जा रही है-जो अब भी चालू है।

तदुपरांत ताराचंद गेलडा ट्रस्ट भी आपने कायम किया जिससे कई उदीयमान जैन समाज के विद्यार्थियों की आशाओं को प्रोत्साहन दिया गया और दिया जा रहा है।

उनके अदम्य उत्साह और जोश के साथ उनके दृढ़ मनोबल का परिचय न दिया जावे तो उनका व्यक्तित्व अधूरा रहेगा। वे अपने आप आगे बढ़ने वाले थे। बहुत ही छोटी उम्र में उन्होंने व्यापार किया और ताराचंद गेलडा एन्ड सन्स, टी वी ज्वेलरीज एवं महेन्द्र स्टोर्स आदि व्यापारिक फर्म चले। सामान्य पूजीसे लेकर वे लाखोपति बने। सामान्य शिक्षा ज्ञान के बाद भी चार भाषा की जानकारी और प्रचल व्यापारिक ज्ञान आपकी विशेषता थी।

आजीवन खादीप्रत, हाथघटी का पीसा हुआ धान और गायका दूध-चीकठिन घृत वे आजीवन निभाते रहे। समान-सुधारणा भी आपने कई प्रकारसे की।

१७ द्वितीय श्रुतस्कधका उपक्रम	
प्रथम वर्ग-पहला अध्ययन	
१८ कालीदेवीका वर्णन	७६१-८०५
दूसरा अध्ययन	
१९ रात्रीदेवीका वर्णन	८०६-८१०
तीसरा अध्ययन	
२० रजनी दारिका के चरित्रका निरूपण	८११-८१४
दूसरा वर्ग	
२१ शुभानिशुभादि देवीयोंके चरित्रका वर्णन	८१५-८१९
तीसरा वर्ग	
२२ अम्बादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८२०-८२५
चौथा वर्ग	
२३ रूपादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२५-८२८
पाचवा वर्ग	
२४ कमलादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२९-८३३
छठा वर्ग	
२५ उत्तरदिशाके इन्द्र महाकाल आदिकोंकी अग्रमहिपियों का वर्णन	८३४-८३५
सातवा वर्ग	
२६ सूरप्रभादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३६-८३८
आठवा वर्ग	
२७ चन्द्रप्रभादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३९-८४२
नववा वर्ग	
२८ पद्मादिदेवियों के चरित्रका वर्णन	८४२-८४५
दशवां वर्ग	
२९ कृष्णादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८४६-८५१
३० शास्त्र प्रशस्ति	८५२

ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रं तृतीय भा की विषयानुक्रमणिका

क्रमाङ्क

विषय

१

पेज

चौदहवा अध्यायन

१ तेतलीपुत्र प्रधानके चरित्रका वर्णन

१-१६

पंद्रहवा अध्यायन

२ नदिफलके स्वरूपका निरूपण

१७-१३१

सोलहवा अध्यायन

३ धर्मरुचि अनगरके चरित्र निरूपण

१३२-१८२

४ सुकुमारिका के चरित्रका वर्णन

१८३-२५१

५ द्रौपदी के चरित्रका निरूपण

२५२-२९६

६ द्रौपदी पूजा चर्चा

२९७-४२६

७ द्रौपदी के चरित्रका वर्णन

४२७-५८५

सत्रहवा अध्यायन

८ नावसे व्यापार करने वाले वणिजोंका वर्णन

५८६-५९०

९ नावके निर्यामक का दिङ्मूढ होनेका कथन

५९१-५९५

१० कालिक द्वीपमें सुवर्ण आदिका वर्णन

५९५-५९६

११ कालिक द्वीपमें हिरण्य आदिसे पोतकाभरना

५९७-६००

१२ कालिक द्वीपमें रहे आकीर्णार्थों का वर्णन

६०१-६१९

१३ आकीर्णार्थोंके द्रष्टातको दार्ष्टान्तिक के साथ योजना

६२०-६३७

अठारहवा अध्यायन

१४ सुसमा दारिका के चरित्रका वर्णन

६३८-७०७

उन्नीसवा अध्यायन

१५ पुडरीक-कडरीक मुनिके चरित्रका वर्णन

७०८-७५२

द्वितीय श्रुतस्फुट

१६ द्वितीय श्रुतस्फुट का मङ्गलाचरण

७५३-७६८

१७ द्वितीय श्रुतस्कंधका उपक्रम	
प्रथम वर्ग-पहला अध्ययन	
१८ कालीदेवीका वर्णन	७६१-८०५
दूसरा अध्ययन	
१९ रात्रीदेवीका वर्णन	८०६-८१०
तीसरा अध्ययन	
२० रजनी दारिका के चरित्रका निरूपण	८११-८१४
दूसरा वर्ग	
२१ शुभानिशुभादि देवीयोंके चरित्रका वर्णन	८१५-८१९
तीसरा वर्ग	
२२ अल्लादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८२०-८२५
चौथा वर्ग	
२३ रूपादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२५-८२८
पाचवा वर्ग	
२४ कमलादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८२९-८३३
छठा वर्ग	
२५ उत्तरदिशाके इन्द्र महाकाल आदिकोंकी अग्रमहिषियों का वर्णन	८३४-८३५
सातवा वर्ग	
२६ सूर्यमादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३६-८३८
आठवां वर्ग	
२७ चन्द्रमादि देवियों के चरित्रका वर्णन	८३९-८४२
नववा वर्ग	
२८ पद्मादिदेवियों के चरित्रका वर्णन	८४२-८४५
दशवां वर्ग	
२९ कृष्णादि देवियोंके चरित्रका वर्णन	८४६-८५१
३० शास्त्र प्रशस्ति	८५२

તા ૧૫-૭-૬૩ ના રોજ કલાસવાર

મેમ્બરોની સંખ્યા.

૨૭	આદ્ય મુરખીશ્રી, ૫૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૩૨	મુરખીશ્રી, ૧૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૧૩૩	સહાયક મેમ્બરો, ૫૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૫૮૬	લાઈફ મેમ્બરો, ૨૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૪૬	બીજાન બરના જુના મેમ્બરો, ૧૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૮૨૭	કુલ મેમ્બરો

રૂપિયા બસો પચાસ તથા રૂપિયા પાચસો-વાળા મેમ્બરો લેવાનું હવે બંધ છે ફક્ત રૂા ૧૦૦૧ થી મુરખીશ્રી માટે ૭૦ સીતેર જગ્યા ખાલી છે અને આદ્ય મુરખીશ્રી રૂા ૫૦૦૧ થી દાખલ કરવામા આવે છે.

મેમ્બરોની સંખ્યા પૂરતા જ શાઓ છપાય છે જેથી પાછળથી દાખલ થનારને સૂત્રો મળવા મુશ્કેલ છે માટે જરૂાસુ બાંધવો તથા બહેનોને અમારી વિનંતી છે કે તેઓ મુરખીશ્રી અથવા આદ્ય મુરખીશ્રીમા પોતાનું નામ જલ્દી મોકલી આપે.

રાજકોટ

તા ૧૫-૭-૬૩

નમ્ર સેવક,

સાકરચ દ બાંધચ દ રોડ

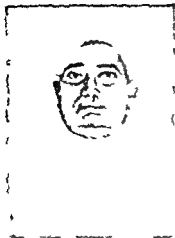
મત્રી

आद्यमुखाश्री



सेठ साहेबश्री ताराचदजी साहेब. गेलडा
मद्रास

આંનમુરખખાશ્રીઓ



(૨૫) ગૅકત્રી હુજીયત કાલીદામ નાગિયા
ભાગ-૫૬



ਜਸਮੀ ਫੁੱਲਗਾਵਿਓ ਨੇਥ ਫਲਾਫ
ਸਾਧਕੋਟ.



શ્રીશ્રી શાંતિબાલ મ ગળદાસભાઈ
અમદાવાદ



(૨૫) શ્રીમતી ગંગીલાલ જાણસાલ
બારસી



(રૂ.૧) ગેઠશ્રી જાનનાલ ગામળદામ ભાવસા
અમદાવાદ



(૨૧) ગે. જંગલભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ

૨૨ શ્રીમાન ગે.શ્રી મુન્નયદત્ત મા
બાલિયા પાલી માગવાડ.



(૨૩) ગે.શ્રી દિનેશભાઈ કાલિદાસ શાહ
અમદાવાદ



ગે.શ્રી જેમિંગભાઈ પોચાવાલભાઈ
અમદાવાદ



૨૪ ગે.શ્રી આત્માનંદ માલેન્દ્રાવ
અમદાવાદ.



(૨૫) ગૌશ્રી શામજીભાઈ વેવજીભાઈ વીંગણી
રાજકોટ



ગૌશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ વીંગણી
રાજકોટ.



(૨૬) વિનોદકુમાર વીંગણી
રાજકોટ.
(દીલા દીધા પહેલાં શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા)



ગૌશ્રી નિમીવાવજી લાલચદજી સાં હુણિયા
તથા ગૌશ્રી જેનતરાજી લાલચદજી સાં

આદ્યમુરખીશ્રીઓ



(૨૧) ગેઠ મંગલભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ

૨૧. શ્રીમાન ગેઠી સુન્દરદાસ મા
બાલિયા પાક્કી મારવાડ.



(૨૨) ગેઠી દિનેશભાઈ કાતિલાલ શાહ
અમદાવાદ



ગેઠી નેમિગભાઈ પોચાવાલભાઈ
અમદાવાદ



૨૧. ગેઠી આત્માગમ માણેજીવાન
અમદાવાદ.

આદ્યમુરખીશ્રીઓ



રોક સાહેબ શ્રી કીશનચ દલ સાહેબ
બેહરી દિલ્હી



સ્વ. ગેઠશ્રી હરિવાલ અનોપચ દ ગાહ
ખલાત



૧ ૫મ્મે બેઠેલા મોટાભાઈ શ્રીમાન
મુનચ દલ જનાહીરલાલજી બરાડયા
૨ બાપુમા બેઠેલા મિત્રીલાલજી
બરડિયા
૩ ઉભેલા સીધી નાનાભાઈ પૂનમચ દ
બરડિયા



શ્રી વૃજલાલ દુલ્લાલ પારેખ
રાજકોટ.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्रीजैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालप्रतिभिरनितया अनगार-
धर्माभूतर्पिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृत

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

तृतीयो भागः

अथ चतुर्दशा ययन प्रारभ्यते

अस्य व्याख्यायमानचतुर्दशाध्ययनस्य व्याख्यातेन त्रयोदशेनाययनेन सहाय-
ममिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने सता गुणानां गुणाभिप्रेक्षकमद्गुरूपदेगरूप-
सामग्र्यभावे हानिरुक्ता, इदं-तथाविधसामग्रीसद्भावे गुणसंपदुपजायते, इत्यभि-
धीयते, इत्येव पूर्वेण सद्भाभिप्रेक्षकस्यास्येदमादिसूत्रम्-‘जडण भते इत्यादि ।

मूलम्-जडणं भते । समणेणं भगवया महावीरेण जाव
संपत्तेणं तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, चौद-
समस्स णं भते । णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महा-
वीरेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते? एव खलु जवू ! तेणं

चौदहवा अध्ययन प्रारभः-

इस चौदहवें अध्ययन का तेरहवें अध्ययन के साथ इस प्रकार का
संबन्ध है-तेरहवें अध्ययन में जो यह बात कही गई है कि आत्मा में
सम्यग्दर्शन आदि प्रकट भी हो गये, हों परन्तु यदि उन को बढाने वाली
सद्गुरु आदि की उपदेश रूप सामग्री का अभाव रहे तो उन गुणों की
हानि हो जाती है । इस अध्ययन में अब सूत्रकार यह स्पष्ट करेंगे कि
यदि जीव को तथाविध सामग्री प्राप्त होती रहती है तो गुण संपत्ति
भी बढती रहती है.-‘जडण भते ’ इत्यादि ।

चौदसु अध्ययन प्रारभ-

चौदहा अध्ययनने तेज्जा अध्ययननी साथे आ जातने न अथ છે કે
તેરમા अध्यયનમા જે આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરવામા આવ્યુ છે કે આત્મામા
સમ્યગ્દર્શન વગેરે પ્રગટ થણ થઈ ગયા હોય છતાં જે સદ્ગુણ વગેરેની ઉપ-
દેશ રૂપ તેમનુ વર્ધન કરનાર સામગ્રી હોય નહિ તો તે શુણની હાનિ થઈ
જાય છે આ અધ્યયનમા સૂત્રકાર હવે એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે
જીવને જે તથાવિધ સામગ્રી મળતી રહે છે તે શુણ સંપત્તિ પણ વધતી ગ્હે છે

‘જડણ મંતે ’ इत्यादि-

કાલેણં તેણં સમણ તેયલિપુરં નામ નગરં પમયવણે ઉજ્જાણે
 કણગરહે રાયાં । તસ્સ ણં કણગરહસ્સ પડમાવર્ઠે દેવી ।
 તસ્સ ણં કણગરહસ્સ તેયલિપુત્તે ણામ અમચ્ચે સામદંડ-
 દક્ખે । તત્થ ણ તેયલિપુરે કલાદે નામ મૂસિયારદારણ હોત્થા
 અદ્દે જાવ અપરિભૂણ । તસ્સ ણ મદ્દા નામ મારિયા । તસ્સ
 ણ કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા, મદ્દાણ અત્તયા
 પોટ્ટિલા નામ દારિયા હોત્થા રુવેણ ય જોઢવણેણ ય લાવ-
 ણ્ણેણ ય ઉક્કિટ્ઠા ઉક્કિટ્ઠસરીરા । તણ્ણં પોટ્ટિલા દારિયા
 અન્નયા કયાઈ પહાંયા સન્વાલકારવિભૂસિયા ચેડિયાચક્ક-
 વાલસપરિવુડા ઉપ્પિ પાસાયવરગયા આગાસતલગંસિકણ-
 ગમણ તિદ્દુસણ કીલમાણીં વિહરઈ ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—જમ્બૂસ્વામી પૂછતિ—યદિ ત્વલ્લ મદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતાઃ મહા-
 વીરેણ યાવત્સંપાત્તેન ત્રયોદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અયમર્થઃ પ્રજ્ઞસ્ય ચતુર્દશસ્ય ત્વલ્લ
 મદન્ત ! જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્સંપાત્તેન કોડર્ય

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હું કે (મતે—જહ્ણ સમણેણ ભગવયા
 મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ) હે મદત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને કિ
 જિન્હોને સિદ્ધિગતિ નામ કા સ્થાન પ્રાપ્ત કર લિયા હૈ (તેરસમસ્સ ણાય-
 જ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ચોદસમસ્સ ણ મતે ! ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ
 ભગવયા મહાવીરે ણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે) તેરહેવે જ્ઞાતાધ્યયન
 કા પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રજ્ઞસ્ય કિયા હૈ—તો હે મદત ! ચોદહેવે જ્ઞાતા-
 ધ્યયન વા ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કયા અર્થ નિરૂપિત કિયા

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે કે (મતે ! જહ્ણ સમણેણ ભગવયા મહા
 વીરેણ જાવ સપત્તેણ) હે મદત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ સિદ્ધ
 ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

(તેરસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે, ચોદસમસ્સ ણ મતે ! ણાયજ્ઞ-
 યણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે)

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે મદત ! તે
 શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જ આ ચોદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો ચો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

प्रहसः । सुधर्मा स्वामी कथयति-एव खलु जम्बू ! । तस्मिन् काले तस्मिन् समये तैतलिपुरं नाम नगरम् आसीत् । तत्र प्रमदवन नाम उद्यानमासीत् । तस्य नगरस्य कनकरथो नाम राजाऽसीत् । तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी । तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः तैतलिपुत्रो नाम अमात्यः 'सामदडदक्खे' साम दण्डदक्ष = अत्र सामदण्डग्रहणाद् दानभेदयोरपि ग्रहण तेन सामदानभेददण्डात्मक-चतुर्विंशोपायनिपुण इत्यर्थः आसीत् ।

तत्र खलु तैतलिपुरे कलादे नाम 'मूसियारदारण' मूषीकारदारकः = सुवर्णकारदारकः, 'मूषी' इति मूषापर्यायः, गौरादित्वाद्द्वीप यत्र सुवर्णादि है ? (एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण तैयलिपुर नाम नगर पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राधा, । तस्स ण कणगरहस्स पडमावई देवी) श्री सुधर्मा स्वामी अथ श्री जम्बू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के अभिप्राय से कहते हैं-जम्बू !, सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से है-उस काल और उस समय में तैतलिपुर नाम का नगर था । उस में प्रमदवन नाम का उद्यान था । उस नगर के राजा का नाम कनक रथ था । इस कनकरथ राजा की रानी का नाम पद्मावती देवी था । (तस्स ण कणगरहस्स तैयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदडदक्खे । तत्थ ण तैयलिपुरे कलादे नाम मूसियारदारण होत्था अड्डे जाव अपरिभूए) उस कनक रथ राजा का अमात्य था जिस का नाम तैतलिपुत्र था । यह साम, दान, भेद और दड इन चार प्रकार की राजनीति में विशेष, पटु निपुण था । उसी तैतलिपुर में कलाद नाम का

(एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण तैयलिपुर नाम नगर पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राधा । तस्स ण कणगरहस्स पडमावई देवी)

श्री सुधर्मा स्वामी भवे श्री जम्बू स्वामीने आ प्रश्नोना जवाण आपवानी
जम्बू ! छे छे छे छे जम्बू ! सालणे तभास प्रश्नोना जवाण आ प्रभावे
छे छे ते छणे आने ते मभये तैतलिपुर नामे नगर छे तेभा प्रमदवन
नामे उद्यान छे ते नगरना राजानु नाम कनकरथ छे ते कनकरथ राजानी
राणीनु नाम पद्मावती छे

(तस्स ण कणगरहस्स तैयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदडदक्खे । तत्थ ण तैयलिपुरे कलादे नाम मूसियारदारण होत्था अड्डे जाव अपरिभूए)

ते कनकरथ राजाने ओक अमात्य (मंत्री) छे तेने नाम तैतलिपुत्र
छे ते साम, दान, दड आने दड ओ आरे प्रकारनी नीतिमा विशेष
निपुण-कुशल छे ते तैतलिपुरमा कलाद नामे मूषीकार दारक (सोनीने पुत्र)

કાલેણં તેણં સમણેણ તેયલિપુર નામ નગરં પમયવણે ઉજ્જાણે
 કણગરહે રાયાં । તસ્સ ણં કણગરહસ્સ પડમાવરૂં દેવી ।
 તસ્સ ણં કણગરહસ્સ તેયલિપુત્તે ણામ અમચ્ચે સામદંડ-
 દક્ખે । તત્થ ણં તેયલિપુરે કલાદે નામં મૂસિયારદારણ હોત્થા
 અદ્દે જાવ અપરિભૂણં । તસ્સ ણ મદ્દા નામ ભારિયા । તસ્સ
 ણં કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા, મદ્દાણ અત્તયા
 પોટ્ટિલા નામ દારિયા હોત્થા રુવેણ ય જોઠ્ઠવણેણ ય લાવ-
 ણેણ ય ઉક્કિટ્ટા ઉક્કિટ્ટસરીરા । તણં પોટ્ટિલા દારિયા
 અન્નયા કયાઈ ણહાંયા સઠ્ઠાલકારવિભૂસિયા ચેડિયાચક્ક-
 વાલસપરિવુડા ઉપ્પિ પાસાયવરગયા આગાસતલગંસિકણ-
 ગમણં તિંદૂસણં કીલમાણીં નિહરઈ ॥ સૂ. ૧ ॥

ટીકા—જમ્બૂસ્વામી પૂછતિ—યદિ સ્વલુ મદન્ત! શ્રમણેન મગવતા મહા-
 વીરેણ યાવત્સપ્રાપ્તેન ત્રયોદશસ્ય-જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અયમર્થઃ પ્રજ્ઞસ-ચતુર્દશસ્ય સ્વલુ
 મદન્ત! જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય શ્રમણેન મગવતા મહાવીરેણ યાવત્સપ્રાપ્તેન કોડર્ય

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછતે હૈં કિ (મતે—જહ્ણ સમણેણ મગવયા
 મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ) હે મદત ! યદિ શ્રમણ મગવાન્ મહાવીરેને કિ
 જિન્હોને સિદ્ધિગતિ નામ કા સ્થાન પ્રાપ્ત કર લિયા હૈં (તેરસમસ્સ ણાય-
 જ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે ચોદસમસ્સ ણ મતે ! ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ
 મગવયા મહાવીરે ણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે) તેરહવે જ્ઞાતાધ્યયન
 કા પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રજ્ઞસ કિયા હૈં—તો હે મદત ! ચોદહવે જ્ઞાતા-
 ધ્યયન વા ઉન્હી શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર ને કયા અર્થ નિરૂપિત કિયા

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે કે (મતે ! જહ્ણ સમણેણ મગવયા મહા-
 વીરેણ જાવ સપત્તેણ) હે મદત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ સિદ્ધ
 ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

(તેરસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે, ચોદસમસ્સ ણ મતે ! ણાયજ્ઞ-
 યણસ્સ સમણેણ મગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે)

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત ૩૫ અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે મદત ! તે
 શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જ આ ચોદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો ચો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

‘चेडियाचक्रवालसपरिवुडा’ चेडिकाचक्रवालसपरिवृता=चेडिकाः=दास्यस्तासा यच्चक्रवाल मण्डल तेन सपरिवृता=सहिता दासीसमूहपरिवेष्टितेत्यर्थः, उपरिभासा-दवरगता प्रासादोपरिस्थिता-आकाशतले=अनाट्टतमदेशे ‘छत्त’ इति प्रसिद्धे कनकमयेन=स्वर्णनिर्मितेन ‘तिन्दसएण’ तिन्दसकेन=कन्दुकेन क्रीडन्ती र विहरति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-इमं च ण तेयलिपुत्ते अमन्त्रे णहाए आसखंधवरगए महया भडचडगरवदपरिविखत्ते आसवाहणियाए णिजायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेण वीइव-यइ। तएण से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामत्तेण वीइवयमाणे २ पोहिलं दारिय उप्पि पासायवरगय आगासतलगंसि कणगतिदूसएणं कीलमाणीं पासइ, पासित्ता पोहिलाए दारि-याए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता। एवं वयासी - एसा णं देवाणुप्पिया। कस्स दारिया? किं नामधेज्जा?। तएणं कोडुवियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा ण सामी। कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया, भद्दाए अत्तयापोहिला नाम दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ट-सरीरा। तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनि यत्ते समाणे

विभूसिया चेडियाचक्रवालसपरिवुडा उप्पि पासायवरगया आगास तलगंसि कणगमएण तिन्दसएण कीलमाणी २ विहरइ) एक दिन की बात है कि यह स्नान कर के तथा समस्त आभरणों से विभूषित हो करके अपनी दासियों के साथ प्रासाद के ऊपर छत पर सुवर्ण निर्मित कन्दुक (गेंद) से क्रीडा कर रही थी। सूत्र ॥ १ ॥

अथ द्विसे ते स्नान कर्था आह पोताना णधा अणेने धरेयाओथी शय्यागारीने पोतानी दासीओनी साथे भडेवनी उपरनी अगाशीभा सोनाथी पनाववाभा आवेदी इतीथी रभी रही इती ॥ मन्त्र “ १ ”

માલ્યતે સા, તાં કરોતિ=સાધનમામગ્રીત્વેન નિષ્પાદયતિ, इतिव्युत्पत्तय्या मूषीकार-
इति सुवर्णकारे योगारूढोऽय शब्दः । ' होत्था ' आसीत् । यो हि आढयो यावद-
परिभूतः । तस्य खलु कलादस्य मूषिकारदारकस्य दुहिता भद्राया आत्मजा
पोटिला नाम दारिका आसीत्, याहि रूपेण च=आकृत्या, यौवनेन च=तारुण्येन
च लावण्येन च=शरीरोत्कृष्टकान्ति विशेषेण उत्कृष्टा अतएव उत्कृष्टशरीराऽसीत् ।
ततः खलु पोटिला दारिका अ यदा मृदावित् स्नाता सर्गोलङ्कारविभूषिता

મૂષીકાર દારક-સુવર્ણકાર કા પુત્ર-રહના થા । મૂષી શબ્દ કા અર્થ
સાંચા હૈ । હસ મે સુવર્ણાદિ દ્રવ્ય વિચલાયે જાતે હૈ । હસ સાંચે કો જો
બનાતા હૈ હસ કા નામ મૂષીકાર હૈ । હસ વ્યુત્પત્તિ કે અનુસાર યહ
શબ્દ સુવર્ણકાર (સોનાર) મે યોગારૂઢ હુઆ હૈ । યહ મૂષીકાર દારક
આઢથ યાવત્ અપરિભૂત થા । (તસ્સ જ મદ્દા નામ મારિયા, તસ્સ ય
કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા, મદ્દાએ અત્તયા પોટિલા નામ દારિ-
યા હોત્યા, રૂવેણ ય જોવ્વણેણ ય લાવણેણ ય ઉક્કિદ્ધા ઉક્કિદ્ધ
સરીરા) હસ મૂષિકાર દારક કલાદ-સૌની કી અત્યન્ત પ્રિય પોટિલા
નામ કી લડકી થી જો હસ કી પત્ની મદ્દા કો કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુઈ
થી । યહ આકૃતિ સે, યૌવન સે એવ લાવણ્ય સે-શારીરિક ઉત્કૃષ્ટ કાતિ
સે-બહુત હી અધિક મનોહર થી-અતઃ હસ કા શરીર બહુત અધિક
ઉત્તમ થા । (તણ પોટિલા દારિયા અન્નયા કયાઙ પ્હાયા સન્બાલકાર-

રહેતો હતો. ' મૂષી ' શબ્દનો અર્થ સાંચો (ખીણ) છે તેમા સોના વગેરે
દ્રવ્યો 'ઓગાળવામા આવે છે આ સાચાને બનાવનારનુ નામ મૂષીકાર છે આ
વ્યુત્પત્તિને લઈને આ શબ્દ સુવર્ણકાર (સોની) માટે યોગારૂઢ થઈ ગયો છે
તે મૂષિકારદારક આઢથ (ધનવાન) યાવત્ અપરિભૂત હતો.

(તસ્સ જ મદ્દા નામ મારિયા તસ્સ જ કલાયસ્સ મૂસિયારદારયસ્સ ધૂયા
મદ્દાએ અત્તયા પોટિલા નામ દારિયા હોત્યા, રૂવેણ ય જોવ્વણેણ ય લાવણેણ
ય ઉક્કિદ્ધા ઉક્કિદ્ધસરીરા)

તે મૂષિકારદારક કલાદ સોનીની ખૂબ જ વહેલી પોટિલા નામે 'પુત્રી' હતી
જે તેની પત્ની ભદ્રાના ગભથી ઉત્પન્ન થઈ હતી તે આકૃતિથી, યૌવનથી,
લૌલવણ્યથી-શરીરની ઉન્નત-કાતિથી બહુ જ મનોહર હતી, એથી તેનુ શરીર
ખૂબ જ ઉત્તમ હતુ.

(તણ પોટિલાદારિયા અન્નયાકયાઙ પ્હાયા સન્બાલકારવિભૂસિયા ચેદિયા
'ચક્રવાલસપરિવુઢા ઉપ્પિ પાસાયવરગયા આગાસતલગસિ કળમમણ તિંદસ-
'ણ કીલમાળી ૨ વિહગહ)

रदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिन्ता, जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता, तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमद्व निवेदेति ॥ सू० २ ॥

टीका—‘इम च ण’ इत्यादि । अस्मिन् खलु समये तेतलिपुत्रोऽमात्यः स्नातः ‘आसखधवरगए’=अश्वस्वधवरगतः=अश्वारूढः ‘महया भटचडगरवदपरिक्खिते’ महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्त’ महान्तो भटचटकराः=भटसमूहाः तेषां वृन्दैः=समूहैः परिक्षिप्त=परिवृत’ सन् ‘आसवाहणियाए’ अश्ववाहनिकाये=अश्ववाहनेन क्रीडनायं ‘णिज्जायमाणे’=निर्यान्=निर्गच्छन् कलादस्य मृषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन पार्श्वभागेन ‘वीइवयइ’=व्यतिव्रजति=गच्छति । ततः खलु स तेतलिपुत्रो मृषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन व्यतिव्रजन् पोडिल्ल दारिकाम्

‘इम च ण तेयलि पुत्ते अमच्चे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(इम च ण) इसी समय (तेयलिपुत्ते अमच्चे) पहाए आसखधवरगए महया भटचडगरवदपरिक्खिते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयइ) तेनलि पुत्र अमात्य स्नान से निवट कर घोड़े पर चढ़ा हुआ बहे २। भटसमूहों के वृन्दों से घिरा होकर अश्वक्रीडा के लिये मृषीकारदारक कलादके (सोनार) मकान के पास से निकला । (तएण से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयमाणे २ पोडिल्ल दारिय उप्पि पासायवरगय आगासतलगसि कणगतिदसएणं कीलमाणी पासइ) मृषीकारदारक कलाद के मकान के पास से होकर जाते हुए

इम च ण तेयलिपु अमच्चे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(इम च ण) ते वभते

(तेयलिपुत्ते अमच्चे) पहाए आसखधवरगए महया भटचडगरवदपरिक्खिते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयइ)

तेतलिपुत्र अमात्य स्थानथी परवाजीने घोडा उधर सवार थया) अने त्यारपडी विशाण बटो (घोडाओ) ना समूहोथी पीटणाछने अश्वक्रीडा माटे मृषीकारदारक कलादना घरनी पास थाने नीज्जा

(तएण से तेयलिपुत्ते मूसियादारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयमाणे २ पोडिल्ल दारिय उप्पि पासायवरगय आगासतलगसि कणगतिदसएण कीलमाणी पासइ)

अभिन्तरट्टाणिजे पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, एव वयासी-
 गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया । कलादस्स मूसियारदारयस्स
 धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह ।
 तएणं ते अब्भन्तरट्टाणिज्जा पुरिस्सा तेतलिणा एव वुत्ता समाना
 हट्टतुट्टा करयलपरिग्गाहिय सिरसावत्त मत्थए अजलिं कहु
 तहन्ति किच्चा ज्ञेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवा-
 गया । तएणं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे
 पासइ, पासित्ता हट्टतुट्टे आसणाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टित्ता सत्त-
 ट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, आसणेणं उवणिमन्तेइ उव-
 णिमत्तित्ता, आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी-
 सदिसंतु ण देवाणुप्पिया । किमागमणपओयण ? तएण ते
 अब्भन्तरट्टाणिज्जा पुरिस्सा कलाय मूसियदारयं एव वयासी-
 अम्हे णं देवाणुप्पिया । तव धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारियं
 तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइ णं जाणोसि देवाणु-
 प्पिया । जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो सजोगो ता
 दिज्जउण पोट्टिला दारियां तेयलिपुत्तस्स, तो भण देवाणुप्पिय ।
 किंदलामो सुक्क ? तएण कलाए मूसियारदारए ते अब्भन्त-
 रट्टाणिजे पुरिसे एव वयासी-एस्स चेव णं देवाणुप्पिया ! मम
 सुक्के, जन्न तेयलिपुत्ते मम दारिया निमित्तेणं अणुगह करेइ ।
 ते अब्भन्तरट्टाणिजे पुरिसे विपुलेणं असणपाणखाइमसाइ-
 म्मेणं पुप्फवत्थ जाव मल्लालकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सका
 रिस्सा सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ । तएणं ते

यावत्-उत्कृष्टशरीरा अस्ति । तत खलु स तेतलिपुत्र अश्वमाह्निकायाः प्रति निवृत्तः=प्रत्यागतः सन् 'अर्द्धमतरठाणिज्जे' अभ्यन्तरस्थानीयान्=अन्तरङ्गप्रेष्य पुरुषा शब्दयति, सन्दयित्वा एवमावद्-गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः 'कलादस्य मृषीकारदारकस्य दुहितर भद्राया आत्मजा पोद्विला दारिका मम भार्यात्वेन वृणुत । हे देवानुप्रिया यूय तथा प्रयतम्, यथा समृषीकारदारकः स्वदुहितर मम भार्यात्वेन मय दद्यादिति नाय । तत खलु ते अभ्यन्तरस्थानीया पुरुषास्ते- तन्निना एवमुक्ताः सन्तो हृष्ट तुष्टा' करतल्पपरिवृष्टीत शिर आवर्त्त मस्तकेऽङ्गुलिं कृत्वा, 'तद्वति' तथेति तथा स्मरिष्यामीति 'किञ्चा' कृत्वा=स्त्रीकृत्य यत्रैव कला

इस का नाम पोद्विला है । रूप आदि से यह बहुत ही उत्कृष्ट शरीर वाली है । (तण्ण से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाने अर्द्धमतरठाणिज्जे पुरिसे सदावेह, सदावित्ता एव वयासी, गच्छहणं तुब्भे देवानुप्पिया ! कलादस्म मृषियारदारकस्म धूय भद्दाए अत्तय पोद्विल दारिय मम भारियत्ताए वरेह) इस के बाद वह तेतलि पुत्र अमात्य, अश्वमाह्निका रो पीछे जा लौटा तो लौटते ही उसने अपने अन्तरंग प्रेष्य पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा- हे देवानुप्रियों ? तुम लोग जाओ-और मृषीकार दारक कलाद की पुत्री जिसका नाम पोद्विला है, जो भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई है उसे मेरी भार्यारूप से वरआओ । तात्पर्य उस का यह है कि तुमलोग वहा जाकर ऐसा प्रयत्न करो कि जिस से वह मृषीकारदारक कलाद अपनी पुत्री को पत्नी के रूप में मुझे दे देव । (तण्ण ते अर्द्धमतरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एव वुत्ता समाना इदु तुद्धा करयल परिगग्हिय सिरसा

छे तेनु नाम पोद्विला छे ते इय वगेदथा भूमए उत्कृष्ट शरीरवाणी छे

(तण्ण से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाने अर्द्धमतरठाणिज्जे पुरिसे सदावेह सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुब्भे देवानुप्पिया ! कलादस्स मृषियारदारकस्स धूय भद्दाए अत्तय पोद्विल दारिय मम भारियत्ताए वरेह)

त्यारपणी ते तेतलिपुत्र अमात्य अश्वमाह्निकाधी वर पाठे आओये त्याओ आपतानी साथे ए तेले पोताना-अन्तरंग प्रेष्य पुत्रोने मोलाव्या अने मोलावीने तेमने आ प्रभाळे इधु डे हे देवानुप्रियो ! तमे नओ अने मृषी कारदारक कलादनी पुत्री डे-के नेनु नाम पेद्विला छे, अने ने लद्राना गमथी उत्पन्न थर्छ छे-तेने लार्था उपमा मने आपो तात्पर्य आ प्रभाळे छे डे तमे लोओ त्या जर्धने ओरी होजिग करे डे नेथी ते मृषीकारदारक कलाद पोतानी पुत्रीने पत्नी उपमा मने आपी डे

ઉપરિ પ્રાસાદચરગતામાશતલે કનકનિન્દસકેન ક્રીડન્તી પદ્યતિ, દદ્વા, પોટ્ટિ
 લાયા દારિકાયા રૂપે ચ યૌવને ચલાય્યે ચ 'જાવ અજ્ઞોવચ્ચને' યાવત્-મૂર્છિતઃ,
 ઘૃદ્ધ, પ્રથિતઃ, અધ્યુપવચ્ચ = અત્યન્નસક્તાઇત્યર્થે કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ શબ્દયતિ,
 શબ્દયિતા, એમવદત્-એવા સલુ દેવાનુપ્રિયાઃ ! કમ્ય દારિકા કિં નામપેયા ? ।
 તતઃ સલુ કૌટુમ્બિકપુરુષા તેતલિપુત્રમ્ એમવદન્-એવા સલુ સ્વામિન્ । કલાદસ્ય
 મૂષીકારદારકસ્ય દુહિતા, મદ્રાયા આત્મજા પોટ્ટિલા નામ દારિકા રૂપેણ ચ
 હસં તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને પ્રાસાદ કે ઉપર છત પર સુવર્ણ કી કન્દુક
 (ગેંદ) સે ક્રીડા કરતી હુદ્ડે ઉસ પોટ્ટિલા દારિકા કો દેવા । (પામિત્તા
 પોટ્ટિલાએ દારિકાએ રૂવે ચ જાવ અજ્ઞોવચ્ચને કોટુચિયપુરિસે મદ્રાવેઈ
 સદાવિત્તા એવ વયાસી-એસા જ દેવાણુપિયા કસ્સ દારિયા ? કિં નામ
 ધેજ્જા ?) દેલ્લ કેર ઘહ ઉસ પોટ્ટિલા દારિકા કે રૂપ, યૌવન એવ લાવણ્ય મેં
 મૂર્છિત, ઘૃદ્ધ, પ્રથિત બનકર ઉસ પર અત્યન્ત આસક્તિ સે યુક્ત હો
 ગયા । ઉસી સમય ઉસ ને કૌટુમ્બિકપુરુષોં કો બુલાયા-બુલાકર ઉન
 સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિયો ! કહો યહ કન્યા કિસકી હૈ ઓર
 હસકા નામ કયા હૈ ? (તણ કોટુચિયપુરિસા તેયલિપુત્ર એવ
 વયાસી-એસા જ સામી ! કલાયસ્સ મૂસિયારદારગસ્સ ધૂયા મદ્રાએ
 અત્તયા પોટ્ટિલા નામ દારિકા રૂવેણ ચ જાવ ઉક્કિદ્ધસરીરા) ઉન કૌટુ-
 મ્બિક પુરુષોં ને તેતલી પુત્ર સે એસા કહા-હે સ્વામિન્ ! યહ મૂષીકાર
 દારક કલાદ કી પુત્રી હૈ જો મદ્રા માર્યાં કી કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુઈ હૈ ।

મૂષિકારદારક કલાદના ઘરની ખાસે થઇને જતા તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે
 મહેલના ઉપરની અગાથી ઉપર સોનાની દડીથી રમતી તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈ
 (પામિત્તા પોટ્ટિલાએ દારિકાએ રૂવે ચ જાવ અજ્ઞોવચ્ચને કોટુચિયપુરિસે સદા-
 વેઈ સદાવિત્તા એવ વયાસી એસા જ દેવાણુપિયા કસ્સ દારિયા ? કિં નામધેજ્જા ?)

તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈને તે તેના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમા મૂર્છિત
 ઘૃદ્ધ, પ્રથિત બનીને અત્યંત આસક્ત થઈ ગયો તરત જ તેણે કૌટુમ્બિક
 પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેણે તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવા
 નુપ્રિયો ! બોલો, આ કન્યા કોની છે અને એનું શું નામ છે ?

(તણ કોટુચિયપુરિમા તેયલિપુત્ર એવ વયાસી-એસા જ સામી । કલાયસ્સ
 મૂસિયારદારગસ્સ ધૂયા, મદ્રાએ અત્તયા પોટ્ટિલા નામ દારિકા રૂવેણ ચ જાવ
 ઉક્કિદ્ધ સરીરા)

તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્ !
 તે મૂષિકારદારક કલાદની પુત્રી છે અને મદ્રામાર્યાના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો

યાવત્-ઉત્કૃષ્ટગરીરા અસ્તિ । તત્ સહ ન તેતલિપુત્ર અશ્વમાદનિકાયાઃ પ્રતિ
નિવૃત્તઃ=પ્રત્યાગત સન્ 'અર્ધિમતરઠાણિજ્જે' અમ્યન્તરસ્વાનીયાન્=અન્તરદ્વમેષ્ય-
પુરુષા શબ્દયિતિ, શબ્દયિત્તા ણ્વમાદત્-ગચ્છત સહ યુય દેવાનુપ્રિયા' કલાદસ્ય
મૂષીકારદારકસ્ય દુહિતર મદ્રાયા આત્મના પોદિલા દારિયા મમ માર્યાત્વેન
વૃણુત । હે દેવાનુપ્રિયા યુય તયા પ્રવત ામ્, યથા સમૂષીકારદારક સ્વદુહિતર
મમ માર્યાત્વેન મમ દયાન્તિ નિનાય । તત્ સહ તે આમ્યન્તરસ્વાનીયા પુરુષાસ્તે-
તત્તિના એવુક્તાઃ મન્નો હૃષ્ટ તુદ્રા' કરતલ્પગિમૃદીત શિર આવર્ત મસ્તકેઽન્નલિ
કૃત્યા, 'તદત્તિ' તથેતિ તથા કરિષ્યામીતિ 'કિંચા' ઋત્વા=રીકૃત્ય યત્રૈવ ઋશ

હમ કા નામ પોદિલા હૈ । સ્પ આદિ સે ઘટ યદુન હી ઉત્કૃષ્ટ ગરીર
વાલી હૈ । (તણ સે તેયલિપુત્તે આસવાદણિયાઓ પડિનિયત્તે મમાણે
અર્ધિમતરઠાણિજ્જે પુરિસે સદાવેદ, મદાવિત્તા ણ્વ ચયાસી, ગચ્છહણ
તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા' કલાદસ્મ મૂનિયારદારયસ્મ ધૂય મદ્દાણ અત્તય
પોદિલ દારિય મમ મારિયત્તાણ વરેદ) એસ કે વાદ વદ તેતલિ પુત્ર
અમાત્ય, અશ્વચારનિકા સે પીઠે જગ લૌટા તો લૌટતે હી ઉસને અપને
અન્તરગ પ્રેમ્ય પુરુષો કો બુલાગ-ઔર બુલાકર ઉનસે હમ પ્રકાર કહા-
હે દેવાનુપ્રિયો ? તુમ લોગ જાઓ-ઔર મૂષીકાર દારક કલાદ કી પુત્રી
જિમકા નામ પોદિલા હૈ, જો મદ્રા કી કુદિસિ સે ઉત્પન્ન હુઈ હૈ ઉસે મેરી
માર્યાત્વ સે વરઆઓ । તાત્પર્ય એસ કા વદ હૈ કિ તુમલોગ વહાં
જાકર જેના પ્રવત્ન કરો કિ જિમ સે વદ મૂષીકારદારક કલાદ અપની
પુત્રી કો પત્ની કે રૂપ મેં મુદ્દે દે દેવ । (તણ તે અર્ધિમતરઠાણિજ્જા
પુરિસા તેતલિણા ણ્વ દુત્તા સમાણા રુદ્ધ તુદ્ધા કરતલ પરિગ્ગહિય મિરમા

છે તેતુ નામ પોદિલા છે તે રૂપ વગેરેથી ખૂબજ ઉત્કૃષ્ટ ગરીરવાળી છે

(તણ મે તેયલિપુત્તે આસવાદણિયાઓ પડિનિયત્તે મમાણે અર્ધિમતરઠાણિજ્જે
પુરિસે સદાવેદ મદાવિત્તા ણ્વ ચયાસી ગચ્છહણ તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા' કલાદસ્મ
મૂનિયારદારયસ્મ ધૂય મદ્દાણ અત્તય પોદિલ દારિય મમ મારિયત્તાણ વરેદ)

ત્યાગ્પત્ની તે તેતલિપુત્ર અમાત્ય અશ્વચારનિકાવી વેગ પાડે આવ્યો
ત્યાગે આવતાની આવેજ તેણે પોતાના-અન્તરગ પ્રેમ્ય પુત્રપોને બોલાવ્યા અને
બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને મૂષી
કારદારક કલાદની પુત્રી કે-કે જેતુ નામ પોદિલા છે, અને જે ભદ્રાના ગમથી
ઉત્પન્ન થઈ છે-તેને ભાર્યા રૂપમાં અને આપો તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તમે
લોકો ત્યા બહારને એવી દોગિય કોઈ કે જેની તે મૂરીકારદારક કલાદ પોતાની
પુત્રીને પત્ની રૂપમાં અને આપી દે

दस्य मूषीकारदारकस्य गृह तत्रैव उवागताः । तां सलु म कथादो मूषीकारदारकः
तान् अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषानेजमानान् पश्यति, हृष्टा तद्वत्पुत्रोऽतिशयममुदितः
आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय तान् सम्मानयितुं तेषामभिष्टान् गताष्टपदानि

वत्त मत्थण अजलिं कट्टु तहत्ति किञ्चा जेणेव कयायस्स मूसियारस्स
गिहे तेणेव उवागया) उस प्रकार तेतलि पुत्र के द्वारा कहे गये वे
अन्तरंग प्रेक्ष्य पुरुष हृष्ट तुष्ट होते हुए वहाँ से निकल कर मूषीकार
कलाह का जहाँ घर था वहाँ आये । आते समय उन्होंने तेतलि पुत्र
को दोनों हाथों की अजलि बनोकर और उसे मस्तर पर रख कर नम
स्कार किया-और हम आपने जैसा कहा है वैसा ही करेंगे इस बात
को उसे आश्वासन देकर स्वीकार किया था । (तएण से कलाए मूसि-
यारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता इट्ठ तुट्ठे आसणाओ
अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणे
ण उवणिमतेइ, उवणिमत्तिता आसत्ये वीसन्थे सुहासणवरगण एव
वयासी सदिससु ण देवाणुप्पिया । किमागमणपओयण-तएण ते अ-
र्हिभत्तरठाणिज्जा पुरिसा कलाय मूसियदारय एव वयासी) जब उस
मूषीकार दारककलाहने उन पुरुषों को आपने घर की ओर आते हुए
देखा-तो वह देखकर हृष्ट तुष्ट हो अपने आमन पर से उठ बैठा-उठ

(तएण ते अर्हिभत्तरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एव वुत्ता ममाणा इट्ठुट्ठा
करयलरिग्गहिय सिरसावच मत्थण अजलिं कट्टु तहत्ति किञ्चा जेणेव कलायस्स
मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया)

आ रीते तेतलिपुत्रे जेज्जोने आदेश आप्थो हे जेवा ते अतरंग प्रेक्ष्य
पुत्रं हृष्टं तुष्टं यथा तथा रवाना यधने मूषीकार कलाहं तु तथा घर इत्तु तथा
पछोच्या तेतलिपुत्रनी पासेथी पाछा इरता तेज्जो जे अने हाथोनी अजलि
बनावीने अने तेने भत्तके मूषीने नमस्कार कर्या अने अजे आपे जेम हुकम कर्यो
हे तेने यथावत् पालन करीशु आ रीते तेभनी आज्ञा तेज्जो जे रीकारी

(तएण से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता
इट्ठुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता
आसणेण उवणिमतेइ, उवणिमत्तिता आसत्ये सुहासणवरगण एव वयासी सदिससु
ण देवाणुप्पिया । किमागमणपओयण-तएण ते अर्हिभत्तरठाणिज्जा पुरिसा
कलाय मूसियदारय एव वयासी)

मूषीकारदारक कलाह ने ते पुत्रोने पोताना घर तरङ्ग आवता जेना
त्यारे ते जेधने हृष्ट तुष्ट यधने पोताना आसन उपरथी पियो थर गये अने

गत्वा तानग्रे कृत्वा स्वयम् 'अणुगच्छ' अनुगच्छति, तेषां पृष्ठवर्तीभूत्वा गच्छति, अनुगम्य, आसनेन उपनिमन्यति=आसनदानेन तान् पुरुषानुपवेशयति, उपनिमन्य, आसस्य, विस्वस्थः एतेषामममत्यपुष्पाणां मत्कारो यथावज्जात इति हेतोः स्वस्थमनाः भूत्वा सुखासनपरगतः=स्वयमपि स्वकीयासने सुखोपविष्टः सन् एमवदत्-सदिशतु खलु हे देवानुप्रियाः! भवता किमागमनप्रयोजनम्? ततः खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषाः कलाद मूपीकारदारकम् एमवदन्-वयं खलु देवानुप्रिय! तव दुहितर भद्राया आत्मजा पोष्टिला दारिका तैत्तलिपुत्रस्य भार्यात्वेन वृणुम, तद् यदि खलु त्व 'जाणसि' जानासि=मन्यसे, हे देवानुप्रिय! यद् अस्माकमेतत्तत्कन्याविषयकं वाचनं ' जुत्त वा ' युक्तं वा=उचितम् ' पत्त वा ' प्राप्तं वा मनसिसल्लग्नं वा ' सलाहणिज्जं वा ' श्लाघनीयं वा=प्रशंसनीयं वा अपि च 'सरिसो वा सजोगो' सहजो वा सयोगः तैत्तलिपुत्रेण सह तव कन्याया वैवाहिक

कर फिर वह सात आठ ढग प्रमाण आगे उन का सत्कार करने के लिये गया। वहा से उन्हें आगेकर के वह स्वयं उनके पीछे २ आया। आकर के फिर उसने उन्हें आसनों पर बैठाया-बैठा कर आश्वस्त विश्वस्त होकर बाद में वह स्वयं दूसरे अपने आसन पर शान्ति पूर्वक बैठ गया। बैठ जाने के बाद फिर उसने इस प्रकार कहा- हे देवानुप्रियो! कहिये-किस कारण से आप यहा पधारे हैं-आपलोगों के आने का क्या प्रयोजन है-इस प्रकार उसके पडने पर उन अभ्यन्तर स्थानीय पुरुषों ने उस सुवर्णकार के पुत्र कलाद से इस प्रकार कहा (अम्हे ण देवाणुप्पिया। तव धूय भद्राण अत्तय पोष्टिल दारिय तैयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइण जाणसि देवाणुप्पिया। जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो ता दिज्जउण पोष्टिला दारिया तैयलि

जोलो थछने तेमना स्वागत भाटे सात आठ पगला सामे गये। त्याथी तेछे आवनाराज्जोने आगग छनीने जेटले डे पोते तेज्जोनी पाछण पाछण आलतो त्या आलोये अने आवीने तेछे तेज्जोने आमने। उपर जेमाउथा त्यारपछी आश्वस्त विश्वस्त थछने ते पोते जील्ल आमन उपर शान्तिपूर्वक जेसी गये। जेसीने तेछे तेज्जोने विनय पूर्वक कछु के डे देवानुप्रियो। जोलो, तमे शा कान्छुथी अही आलोया छे? तमे शा प्रयोजनथी आलोया छे? आ रीते कलाद (सुवर्णकार) नी वात सालागीने ते आब्य तर अधानीय पुत्रोये तेने आ प्रभाछे कछु डे

(अम्हेण देवाणुप्पिया! तव धूय भद्राण अत्तय पोष्टिल दारिय तैयलि पुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइण जाणसि देवाणुप्पिया! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज

सम्बन्धो योग्यो भवतीति, यदि जानासि तदा दीयता यत्तु पोष्टिग दारिका तेत-
लिपुत्राय 'तो' तर्हि भण=बूढ़ि, हे देवानुप्रिय ! किं दत्तः । इत्थम् सम्मानपुरस्कारं
भवते किं समर्पयामः । ततः खलु कन्यादो मूषीरदारक' अन्यतरस्थानीयान्
पुरुषान् एवमप्रदत्-एतदेव खलु दवानुप्रियाः । मम शुत्थम्, यत्खलु तेतलिपुत्रो
मम दारिकानिमित्तेन अनुग्रह=दया करोति । इत्युक्तनाम्ना तान् अभ्यतरस्थानी-

पुत्तस्स तो भण देवाणुप्पिया ! किं दत्तामो सुक्क ? तएण कलाण मूसि
यार दारए ते अविमतरठाणिज्जे पुरिस ण्य वयासी) हे देवानुप्रिय हम
लोग तुम्हारी पुत्री पोष्टिला दारिका को कि जो भद्राकी कुक्षि से उत्पन्न
हुई है तेतली पुत्र अमात्य की वह भार्या अने इस रूप से चरण करने
के लिये आये हुए है-तो यदि तुम हे देवानुप्रिय ! हमारी इस याचना
को उचित, प्राप्त, और इलायनीय-प्रशसनीय मानते हो और यह सम
झते हो कि यह तेतलिपुत्र के साथ तुम्हारी कन्या का वैवाहिक संबध
योग्य है-तो पोष्टिला दारिका तेतलि पुत्र के लिये प्रदान कर दो-और
साथ में यह भी कह दो कि हम आपके लिये इस निमित्त क्यों सम्मान
पुरस्कार दें। इस प्रकार उन सब की ऐसी बातें सुनकर उस सुवर्ण
कार पुत्र कलादने उन आये हुए अभ्यतर स्थानीय पुरुषों से इस प्रकार
कहा-(एस चेव ण देवाणुप्पिया ! मम सुक्के जन्म तेयलिपुत्ते-
मम दारिया निमित्तेण अणुग्गह करेइ, ते अविमतरठाणिज्जे पुरिसे

वा सरिसो वा सजोयो ता दिज्जउण पोष्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स तो भण
देवाणुप्पिया ! किंदत्तामो सुक्क तएण कलाए मूसियारदारए ते अविमतरठाणिज्जे
पुरिस एव वयासी)

हे देवानुप्रिय ! तमारी लक्ष्मी लायीना गर्लथी जन्म पायेवी तमारी
पोष्टिला दारिका अमात्य तेतलीपुत्रनी लार्था थाय आ लतनी भागली करवा
अमे तमारी पासे आव्या छीजे हे देवानुप्रिय ! तमे तेतलिपुत्रनी भागली
उचित, श्लाघनीय अने प्रशसनीय मानता होय तेमज्जेम पणु तमने थतु
होय के अमात्य तेतलिपुत्रनी माथेना आ लक्ष सणध योग्य छे तो तमे
अमात्य तेतलिपुत्रने पोष्टिलादारिका आपी हो अने जेनी साथे तमे अभने
जेम पणु जलुगी हो के तमने अमे जेना जदल सम्मान पुरस्कारना इपमा
शु आपीजे ? आ रीते तेजो जधानी वात सावणीने ते सुवर्णदारना पुत्र
उलाहे आव्यतर स्थानीय पुरुषो आ प्रभाणु कछु दे-

(एस चेव ण देवाणुप्पिया ! मम सुक्के जन्म तेयलिपुत्ते मम दारिया

યાન્ પુરુષાન્ વિપુલેન યગનપાનલાયસાગ્રેન પુષ્પસુગન્ધમાલ્યાન્કારેણ ચ સત્ક
રોતિ, સમ્માનયતિ, સત્કૃત્ય સમ્માન્ય, પ્રતિવિસર્જયતિ । તત- સ્વલુ તે=આશ્વન્તર
સ્થાનીયા' પુષ્પા કૃત્તદસ્ય મૂર્તીકારદારસ્ય ગૃહાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામ્યન્તિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય
યત્રૈવ તેતલિપુત્રોડમાત્યસત્રૈવોપાગન્ત્રન્તિ, ઉપાગત્ય તેતલિપુત્રાય યમાત્યાય 'એ
મઠ' એતમર્થમ્=વિગ્રહસ્ય સ્વીકૃતિરુપમર્થ નિવેદયન્તિ ॥ મુ. ૨ ॥

વિપુલેણ અસળપાણલાઙ્કાડમસાઙ્કમેણ પુષ્પવત્ય જાવ મલ્લાલકારેણ
સન્કારેઙ્ક, સમ્માણેઙ્ક, સન્કારિત્તા, સમ્માણિત્તા પઢિ વિસર્જેઙ્ક । તણ્ણ
તે કલાયસ્મ મૃસિયારદારયસ્મ ગિહાઓ પઢિનિકલ્લમતિ, પઢિનિકલ્લ-
મિત્તા જેણેવ તેયલિપુત્તે અમચ્ચે, તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા
તેયલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ ઇયમઠ નિવેદેતિ) હે દેવાનુપ્રિયો ! મેરા
સન્માન પુરસ્કાર યહી હૈ કિ જો તેતલિ પુત્ર દારિકા કે નિમિત્તા સે મેરે
ઝપર ણેસી દયા કર રહે હૈ-અર્થાત્ મેરી પુત્રી કો જો વે અપની પત્ની
બનાને કી ચાહના કર રહે યહી સત્ર સે વહા ડન કી ઓર સે મેરે લિયે
સન્માન પુરસ્કાર પ્રદાન કિયા જા રહા હૈ । ડસ પ્રકાર કહ કર ડસ
કલાદ ને ડન અન્યતરસ્થાનીય પુરુષોં કા વિપુલ અશન, પાન, લાઘ,
સ્વાઘ સે ઇવ પુષ્પ, વલ્લ, ગધ માલા ઇવ અલકારોં સે લૂચ સત્કાર
કિયા-સન્માન કિયા । સત્કાર ઇવ સન્માન કરને કે યાદ ફિર ડસને
ડન્હેં વિસર્જિત કર દિયા । વહા સે વિસર્જિત હોરુર વે અન્યતર સ્થાનીય

નિમિત્તેણ અણુગ્રહ કરેઙ્ક, તે ઝર્ગિમતરઘાણિજ્જે પુરિસે વિડલેણ અસળપાણલાઙ્કા-
સાઙ્કમેણ પુષ્પવત્ય જાવ મલ્લાલકારેણ સન્કારેઙ્ક, સમ્માણેઙ્ક, સન્કારિત્તા, સમ્મા-
ણિત્તા પઢિવિસર્જેઙ્ક । તણ્ણ તે કલાયસ્મ મૃસિયારદારયસ્મ ગિહાઓ પઢિનિકલ્લ-
મતિ, પઢિનિકલ્લમિત્તા જેણેવ તેયલિપુત્તે અમચ્ચે, તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા
તેયલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ ઇયમઠ નિવેદેતિ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! અમાલ્ય તેતલિપુત્ર મારી દારિકાને સ્વીકારવા રૂપ જે મારા
ઝપર દયા બતાવી ગયા છે તે જ ખરેખર મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કારની
જ વસ્તુ છે એટલે કે તેઓ મારી પુત્રીને પોતાની પત્ની પત્ની તરીકે
ધણી રહ્યા છે, એજ તેમના તરફથી મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કાર રૂપ
છે આ રીતે ઢીને તે ઢલાદે આશ્વતર સ્થાનીય પુરુષોના વિપુલ અશન, પાન,
ખાદ્ય, સ્વાદ્યથી અને પુષ્પ, વલ્લ, ગધ, માળા અને અલકારોથી ખૂબ જ સરસ
રીતે સત્કાર કર્યો અને તેમનું સન્માન કર્યું સત્કાર અને સન્માન કર્યા પછી
તેણે તેમને વિદાય આપી ત્યારપછી તે આશ્વતર સ્થાનીય પુરુષો તે સુવર્ણ

पोटिला दारिका स्नता सर्वाङ्गारभूषिता 'सीय' शिविका दूरोहयति=भारोहयति,
दूरोह=भारोह 'मित्तणाइ सपरिबुडे' मित्रज्ञाति सपरिगृह्यत = मित्रज्ञाति स्वजनसमन्वित
रिवेष्टितः, सर्वान् वैवाहिकान् मभारान्=विवाहसंस्कारोचित सामग्रीन् गृहीत्वा स्वकाद्
गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य 'सन्विडूणैः सर्वज्ञाना=सर्वप्रकारिकया ऋद्ध्या
सह 'तेयलिपुर' तेतलीपुरम् म-यमभ्येन निर्गच्छन् यत्रैव तेतलेष्टह तत्रैव उपा
गच्छति, उपागत्य पोटिला दारिका तेतलिपुत्राय स्वयमेव भार्यात्वेन ददाति ।
ततः खलु तेतलिपुरोऽमात्यः पोटिला दारिका स्वभार्यात्वेन 'उपणीय' उपनी-

पोटिल दारिय णाय सन्वालकाग्निभूमिय मीय दुरुहइ) शुभ तिथि
नक्षत्र, सुहृत्ता में पोटिला दारिका को स्नान करा कर समस्त अलकारों
से विभूषित किया और विभूषित कर के फिर उसे शिविका पर बैठा
दिया—(दुरुहत्ता मित्तणाइ सपरिबुडे सातो गिहाओ पडिनिक्खमइ,
पडिनिक्खमित्ता सन्विडूण तेयली पुर मज्झ मज्झे ण जेणेव तेयलिस्स
गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता पोटिल दारिय तेयलिपुत्तस्स
सयमेव भारियत्ताए दलयइ) बैठा कर फिर वह मित्र, जाति, स्वजन,
समन्धी परिजनों से परिवेष्टित होकर एव वैवाहिक समस्त सामग्री
को लेकर अपने घर से निकला । निकल कर सर्व प्रकार की अपनी
ऋद्धि के साथ २ तेतलि पुर के बीच से होता हुआ जहा तेतलि का
घर था वहा पहुँचा । वहा पहुँच कर उसने अपनी पुत्री पोटिला दारिका
को तेतलि पुत्र को अपने आप से भार्या रूप से प्रदान कर दी । (तण्ण

(सोहणसि विहिनक्खत्तमुहुत्तसि पोटिल दारियं णायं सन्वालकार, भूसिय
सीय दुरुहइ)

शुभ तिथि नक्षत्र, सुहृत्तां पोटिला दारिकाने स्नान करानीने भूमी
जतना अलकारोथी जलुगारीने तेने पावणीमा भेसाडी दीपी

(दुरुहत्ता मित्तणाइ सपरिबुडे सातो गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्ख
मित्ता सन्विडूणैः तेयलीपुर मज्झ मज्झेण जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छत्ता पोटिल दारिय तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ)

भेसाडीने ते पोताना मित्र, जाति, स्वजन, समन्धी अने परिजनोंनी
साथे लग्ननी णधी साधन सामग्री लगे देखी नीज्जये नीकणीने ते सर्व
प्रकारनी पोतानी ऋद्धिनी साथे तेतलिपुरनी वच्चे धामने जया तेतलिप्रधान घर

મૂલમ્—તણં કલાણ મૂસિયારદારણ અન્નયા કયાઈ સોહણંસિ તિહિનમ્મલ્લમુહુત્તસિ પોટિલં દારયં પહાય સલ્લા-
લકારમૂસિયં સીય દુરુહહ, દુરુહિત્તા મિત્તણાહસંપીરવુડે સાતો
ગિહાઓ પહિનિમ્મલમહ, પહિનિમ્મલમિત્તા સલ્લિટ્ટીણ તેયલીપુરં
મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેવ તેયલિસ્સગિહે, તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવા-
ગચ્છિત્તા, પોટિલ દારિય તેયલિપુત્તસ્સ સયમેવ મારિયત્તાણ
દલયહ । તણ તેયલિપુત્તં પોટિલ દારિયં મારિયત્તાણ ઉવ-
ણીય પાસહ, પાસિત્તા પોટિલાણ સલ્લિ પટ્ટયં દૂરુહહ, દૂરુહિત્તા
સેયપીણહિ કલસેહિ અપ્પાણ મજ્ઞાવેહ, મજ્ઞાવિત્તા અગ્નિ-
હોમ કરાવેહ, કરાવિત્તા પાણિમ્મહણ કરેહ, કરિત્તા પોટિલાણ
મારિયાણ મિત્તણાહ જાવ પરિજણ વિહરેણં અસણપાણલાહમ
સાહમેણ પુપ્પ જાવ પહિવિસજ્જેહ । તણ સે તેયલિપુત્તે પોટિ-
લાણ મારિયાણ અણુરત્તે અવિરત્તે ઉરાલાહ જાવ વિહરેહ ॥ સૂ. ૦૩ ॥

ટીકા—‘તણ’ इत्यादि, तत खलु कलादो मूषीकारदारकं अ-यदा कदाचित्
‘सोहणंसि’ शोभने=शुभावाहे विवाहयोग्ये ‘तिहिनम्लल्लमुहुत्तसि’ तिथिनक्षत्रमूहर्त्त

પુરુષ ઉસ સુવર્ણકાર પુત્ર કલાદ કે ઘર સે નિકલે ઔર નિકલ કર જહા
તેતલિ પુત્ર અમાત્ય યા વહા આયે—વર્હા આકર ઉન્હોં ને તેતલિ પુત્ર અમો
ત્ય કો વિવાહ સ્વીકૃતિ રૂપ અર્થ કી સ્વર દી । સૂત્ર ॥ ૩ ॥

“ તણ કલાણ મૂસિયારદારણ ” इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણ) इस के बाद (मूसियारदारण) मूषीकार दारक ने
(अन्नया कयाइ) किमी एक समय (सोहणंसि तिहिनम्लल्लमुहुत्तसि

કાર પુત્ર કલાદના ઘરથી નીકળ્યા અને ત્યાથી જના અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો
ત્યા પહોંચ્યા અમાત્ય તેતલિપુત્રની પાસે જઈને તેઓએ રકતસંબંધ સ્વીકા-
રવા રૂપ ખબર આપી ॥ સૂત્ર “ ૩ ” ॥

તણ કલાણ મૂસિયારદારણ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—(તણ) त्पारपत्री (मूसियारदारण) मूषीकार दारके (अन्नया
कयाइ) कैर्हि ओक वणते

‘पुष्पजाव’ पुष्पयान्त=पुष्पयन्त्राग्निं याज्माल्यालङ्कारादिना सत्कारयति, सत्कार्यं ‘पडिमिज्जे’ प्रति मिमर्जयति । ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽमात्यः पोट्टिलाया भार्यायाम् ‘अणुरक्ते’ अनुरक्त=आमक्तः ‘अणिरक्ते’ अविरक्तः=अत्यन्तानुरक्त इत्यर्थः, ‘उरा-१३ जा’ जन्मान् यावत्=उदारान् भोगभोगान्=मिषयभोगान् भुञ्जानो विदरति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएण से कणगरहे राया रज्जे य रट्टे य वले य वाहणे य कोमे य कोट्टानारे य अतेउरे य मुच्छिए४ जाए पुत्ते वियगेइ, अप्पेगडयाण हत्थगुलियाआ छिदइ, अप्पेगइयाणं हत्थगुट्टए छिदइ, एव पायगुलियाओ पायगुट्टएवि, कन्नसक्कुलीएवि, नासापुडाइ फालेइ, अगमगाइ वियंगेइ । तएणं तीसे पउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयांसि अयमेयाख्वं अज्झत्थिए५ समुप्पज्जित्था—एव खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगेइ, जाव अंगमगाइ वियगेइ । त जइ अह दारय पयायामि, सेय खलु ममं त दारग कणगरहस्स रहस्सिय चेव सारक्खेमाणीए संगो-

पोट्टिला भार्या के मित्र, जाति, स्वजन सयन्धि परिजनों का अशन, पान, स्नान एवं स्नान्य रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प, वस्त्र यावत् माल्य अलंकार आदि से सत्कार करवाया, सत्कार करवाने के बाद फिर उन सब को बर्हा से विदा कर दिया । इसके पश्चात् पोट्टिला भार्या में आसक्त एवं अनुरक्त बने हुए इस तेतलि पुत्र अमात्य ने उसके साथ पचेन्द्रिय सन्धी सुखों का अनुभव करने लगा । सूत्र ॥ ३ ॥

पोट्टिला भार्याना मित्र ज्ञाति, स्वजन मणधी अने परिजनोंना अशन, पान, पाय अने स्नान रूप अने अतना आहारयी तेमज पुष्प, वस्त्र यावत् माल्य अलंकार वगेरयी सत्कार करवावडो अने अतना करवावडोया पडी तेले अधाने पोताना वेरयी विदाय अपी त्यारपडी पोट्टिला भार्यामा आमक्त अने अनु रक्त थयेले ते अमात्य तेतलिपुत्र तेनी भाये पचेन्द्रिय सणधी सुखेना

ताम् उपनयनीकृता पशति, दृष्ट्वा पोष्टिलाया साद्वं पट्टक दृग्गच्छति, दुरुक्ष 'सेय
पीण्हि' श्वेतपीतै = रजतसुवर्गनिर्मितै. 'कलसेहि' कलशः = घटे आत्मान
'मज्जावेइ' मज्जति = गपयति, मज्जयित्वा अग्निताक्षिको विवाह इति हेतोः
'अग्निहोम करावेइ' अग्निहोम कारयति, कारयित्वा 'पाणिग्रहण' पाणिग्रहण =
विवाह करोति, कृत्वा पोष्टिलाया भार्यायाः 'मित्तगाइ जाय परिजण' मित्र
ज्ञातिस्वजनमभ्यग्निपरिजनम् विपुलेन अशनयानपायस्याद्येन चतुर्विधादारेण

तेयलिपुत्ते पोष्टिल दारिय भारियत्ताण उवणीय पासइ, पामित्ता पोष्टि
लाण सद्धि पट्टय दुरुहइ) तेतलिपुत्र अमात्य ने पोष्टिला दारिका को
अपनी भार्या रूप से अपने लिये प्रदान की हुई देखा तो देख कर वह
उस पोष्टिला दारिका के साथ पट्टक पर बैठ गया। (दुरुहत्ता सेयपीण्हि
कलसेहि अप्पाण मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्निहोम करावेइ, करावित्ता
पाणिग्रहण करेइ करित्ता पोष्टिलाण भारियाण मित्तगाइ जाय परिजण
विडलेण असण पाण खाइम साइमेण पुष्फ जाय पडिप्पिसज्जेइ । तण्ण
से तेयलिपुत्ते पोष्टिलाण भारियाण अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ जाव
विहरेइ) बैठ कर फिर उसने रजत एवं सुवर्ण से निर्मित कलशों द्वारा
अपना अभियेक करवाया। अभियेक करावा कर "अग्नि साक्षिक
विवाह होता है" इस रयाल से फिर उसने अग्नि में होम करवाया।
करवा कर बाद में उसने उस पोष्टिला दारिका का पाणि ग्रहण कर
लिया। विवाह हो चुकने के अनन्तर फिर उस तेतलि पुत्र अमात्य ने

(तएण तेयलिपुत्ते पोष्टिल दारिय भारियत्ताए उवणीय पासइ, पामित्ता
पोष्टिलाए सद्धि पट्टय दुरुहइ)

तेतलिपुत्र अमात्ये पोष्टिला दारिकाने ते पी भार्या रूपमा आपेली नेधने
ते पोष्टिला दारिकानी साथे पट्टक उपर बेली गये।

(दुरुहत्ता सेयपीण्हि कलसेहि अप्पाण मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्निहोम
करावेइ करावित्ता पोष्टिलाए भारियाए मित्तगाइ जाव परिजण विडलेण असण
पाण खाइम साइमेण पुष्फ जाय पडिप्पिसज्जेइ । तएण से तेयलिपुत्ते पोष्टिलाए
भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ जाव विहरेइ)

बेलीने तेहे आदी अने रोनाना उणयेो वगे पोतानेो अलियेक
करावडायेो अलियेक करावडावीने तेहे 'अग्नि साक्षिक लग्न थाय
छे' आभ विचारीने तेहे अग्निमा डवन करावडायेो त्पारपत्री तेहे पोष्टिला
दारिकानु पाणि अडणु कथुं लग्ननी विधि पूरी अथा गाइ अमात्ये

करोतीति व्यङ्ग्यति=अगहीनान् करोति । ' विद्मे ' इति पाठे विरुत्तयति छिनत्ति
इत्यर्थो बोध्य । तत्प्रकारमाह-अप्येकेषा=केषांचिदुत्पन्नानां पुत्राणां हस्ताङ्गुली-
छिनत्ति, अप्येकेषां=केषांचित् नालानां हस्ताङ्गुष्ठान् छिनत्ति । एवंपादाङ्गुलिकाः
पादाङ्गुष्ठान् अपि, एव ' कण्ठसकुलीं च ' कर्णशङ्कुलीरपि=कर्णानपि तथा नासा-
पुटानि च ' फाले ' पाटयति=छिनत्ति, इत्यर्थः । अनेन प्रकारेण एव कनकरथो
राजा नालानाम् ' अगमगाड ' अङ्गानि अङ्गानि मर्माङ्गानि व्यङ्ग्यति=छिनत्ति ।
ततः खलु अनेन प्रकारेण समुत्पन्नानां पुत्राणां विनाशानन्तरम् ' तीसे ' तस्याः
कनकरथस्य राज्ञ्याः पद्मावती देव्या अन्यदा ' पुष्करत्तावरत्तकालसमयसि '
पूर्वरात्रापररात्रकालमयमे=रात्रेः पश्चिमे भागे अयमेतद्रूपं आयात्मिकः=आत्मगतो

उत्पन्नं ह्येव अपने पुत्रों को अगहीन कर देता । (अप्येगइयाणं हत्य
गुलियाओ छिदद्, अप्येगइयाणं हत्यगुष्टं, छिदद्, एव पायगुलि-
याओ पायगुष्टं चि कन्ममङ्गुलीं चि, नासापुडाइ फालेइ, अग-
मगाइ विर्यगेइ) किन्तु नालकों के वह हाथों की अङ्गुलियों
को छेद देता था, किन्तु नालकों के हाथों के अङ्गुष्ठों को-
काट देता था, इसी तरह वह पैरों की अङ्गुलियों को पैरों के अङ्गुष्ठों को,
कानों को नासा पुटों को छेद देता था । इस तरह यह कनकरथ राजा
नालकों के अङ्गों का भगकर देता था । (तएण तीसे पाउमावईए देवीए
अन्नया पुष्करत्तावरत्तकालसमयसि अयमेवासुवे अज्जत्थिए ५ समु-
प्पज्जित्था) इस प्रकार समुत्पन्न पुत्रों के विनाश के बाद उस कनकरथ
राजों की रानी पद्मावती देवी के किसी एक समय रात्रि के पश्चिम
भाग में यह इस प्रकार का आयात्मिक यावन् मनोगत सकल्प उत्पन्न

(अप्येगइयाणं हत्यगुलियाओ छिदद् अप्येगइयाणं हत्यगुष्टं छिदद्, एव पायगु-
लियाओ पायगुष्टं चि कन्ममङ्गुलीं चि, नासापुडाइ फालेइ, अगमगाइ विर्यगेइ)

छेदनाक भाण्डोनी ते हाथोनी आगणीओ कपावी न भावतो हतो,
छेदनाक भाण्डोना हाथोना अङ्गुलो कपावी न भावतो हतो, आ रीने ते
पणोनी आगणीओने, पणोना अङ्गुलोने, कानोने, नाउने कपावी न भावतो
हतो आभ ते कनकरथ राज्ञ भाण्डोना अङ्गोनु ते छेदनं कपावी न भावतो हतो

(तएण तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुष्करत्तावरत्तकालमयसि
अयमेवासुवे अज्जत्थिए ५ समुप्पज्जित्था)

आ प्रभाषे जन्मेवा पुत्रोना विनाश पञ्च ते कनकरथ राज्ञो राज्ञी
पद्मावती देवीने बोध ओकं समये रात्रिना छेदना पडोरभा आ नततो आध्या-
त्मिकं यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्नं थये हे—

વેમાળીય વિહરિત્તણ તિકદ્દુ એવ સપેહેડ, સંપેહિત્તા તેયલિ-
પુત્ત અમચ્ચ સદાવેડ, મદાવિત્તા એવ વયાસી એવ ચ્ચલુ દેવા-
ણપ્પિયા ! કળગરહે રાયા રજ્જે ચ જાવ વિચગેડ, ત જહ્ નં
અહં દેવાણપ્પિયા ! દારગં પયાયામિ । તણ તુમ દેવાણ-
પ્પિયા ! કળગરહસ્સ રહસ્સિયં ચેવ અણુપુલ્લેણં સારક્કલે-
માળે સગોવેમાળે સવહેહિ । તણં સે દારણ ઉમ્મુક્કચ્ચાલ-
ભાવે જોલ્લવણગમણુપ્પત્તે તવ ચ મમ ચ ભિચ્ચાભાયણં
ભવિસ્સહ । તણ મે તેયલિપુત્તે પડમાવર્ડણ એયમદ્ધ પડિ-
સુણેહ, પડિસુણિત્તા પડિગણ ॥ સૂ. ૪ ॥

ટીકા—‘તણ સે’ इत्यादि । तत्, खलु स कनकरथो राजा राज्ये च=राष्ट्र
च=देशे बले=सैन्ये च, गाहने=अश्वादिषु च कोशे=भाण्डारे च धान्यादीना
कोष्ठागारे च अन्तःपुरे च, ‘मुच्छिण’ मूर्च्छितः=मोह प्राप्त, गृह=आसक्तः
अग्रितः=विशेषेणासक्त, अध्युपपन्न=सर्वथा तत्परायण, जाए २=जातान् २=
उत्पन्नान् २ पुनान् ‘विचगेह’ व्यङ्ग्यति=विगतानि अङ्गानि येषा तान् व्यङ्गान्

‘તણ સે કળગરહે રાયા’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણ) इसके बाद (से कनगरहे राया रज्जे य रट्टे य बले य
गाहणे य कोसे य कोष्ठागारे य अतेउरे ॥ मुच्छिण ४) वह कनकरथ
राजा राज्य में राष्ट्र में सैन्य में अश्वादि वाहन में, धान्यादिकों के
कोष्ठागार में एव अन्तःपुर में मूर्च्छित गृह अ यन अनुरक्त एव
अध्युपपन्न—सर्वथा तत्परायण बन गया । सो (जाए पुत्ते विचगेह)

તણ સે કળગરહે રાયા इत्यादि—

(તણ) त्थारभाह

ટીકાર્થ—(સે કળગરહે રાયા રજ્જેય રટ્ટે ચ બલે ચ ગાહણે ચ કોઢાગારે ચ
અતેઉરે ચ મુચ્છિણ ૪)

તે કનકરથ રાજા રાજ્ય રાજ્યમા, રાષ્ટ્રમા, સૈન્યમા, અશ્વ વગેરે વાહ
નામા, ધાન્ય વગેરેની બાબતમા, કોષાગારમા અને રણવાસમા મૂર્છિત, ગૃહ,
ઘરો જ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન અપૂર્ણપણે તત્પર થઈ ગયો એથી (જાણ
પુત્ર વિચગેહ) તે જન્મેલા પોતાના પુત્રોને અગ્રહીન બનાવી દેતો.

‘અણુપુત્રેણ’ આનુપૂર્વ્યેણ=યથાક્રમમ્ સરક્ષન્ ભૂમટ્ટયાદિતઃ સગોપાયન્ ભૂપકૃતો પદ્મવાત્ ત દારક ‘સન્દૃહઃ’ સન્દૃય, તસ્ય ચાલસ્ય દૃદ્ધિમુપનય । તતઃ સ્વલુ સ દારક ‘ઉમ્મુક્કચાલભાવે’ ઉમ્મુક્કચાલભાવ=ઉમ્મુક્ત પરિત્યક્તો ચાલભાવો ચાલત્વ યેન સ, ‘જોવ્વણગમણુપ્પત્તે’ ચૌત્તનક્રમનુપાપ્ત=પ્રાપ્તતારુણ્યઃ તવ મમ ચ ણ સારસ્થેમાણે સગોવેમાણે સવદ્દેહિં । તણ સે દારણ ઉમ્મુક્કચાલ ભાવે જોવ્વણગમણુપ્પત્તે તવ ય મમ ય ભિક્ષ્વામાયણ ભવિસ્સહ તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે પડમાવહણ્યમદ્ધ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા પહિગણ) તો યદિ મેરે યહાં પુત્ર ઉત્પન્ન હોતા હૈ—મેં પુત્ર કો ઉત્પન્ન કરતી હૈ—તો મુઝે યહી યોગ્ય હૈ કિ મેં રાજા કનકરથ કો સ્વધર ન પડે હસ રૂપ સે ઉસકી રક્ષા કરૂં—ઉનકી દૃષ્ટિ સે —ઉસે ઘચાતર રહૂ—એસા ઉસને મન સે વિચાર કિયા । વિચાર કર ફિર ઉસને અમાત્ય તેતલિપુત્ર કો ઘુલાયા—ઘુલાકર ઉસ સે એસા કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજા રાજ્ય આદિ મેં ઇતના અધિક સૂઝિત શુદ્ધ—અત્યત અનુરક્ત એવ અધ્યુ પપન્ન ઘના હુઆ હૈ જો વહ ઉત્પન્ન હુણ ચાલકો કો અગ હીન કર દેતા હૈ—ઉનકે હાથો કી અંગુલિયોં આદિ અઙ્ગોં કો રાટ દેતા હૈ । તો હે દેવા નુપ્રિય ! યદિ મેં પુત્ર કો ઉત્પન્ન કરતી હૈ તો દેવાનુપ્રિય તુમ ઉસે રાજા કો સ્વધર ન પડે હસ રૂપ સે રક્ષિત કરતે હુણ ઓર ઉનકી દૃષ્ટિ સે ઘચાતે ટુણ ક્રમશઃ દૃદ્ધિગત કરો । જન વહ ચાલક—ક્રમશઃ સર્વદ્વિત હોતા હુઆ ચાલ્યાવસ્થા સે રહિત હોકર યૌવનાવસ્થા ચાલા ઘન જાયગા

માણે સગોવેમાણે સવદ્દેહિં । તણ સે દારણ ઉમ્મુક્કચાલભાવે જોવ્વણગમણુ પત્તે તવ ય મમ ય ભિક્ષ્વામાયણ ભવિસ્સહ તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે પડમાવહણ્યમદ્ધ પહિસુણેહ પહિસુણિત્તા પહિગણ)

હવે મને પુત્ર ઉત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને ઓજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરથ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે બાળકની રક્ષા કરે તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવુ આ પ્રમાણે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેના કામમાં આટલો બધો મૂર્ચ્છિત, શુદ્ધ—ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડ્યો છે કે તે જન્મેલા બાળકોના અગ્ર કપાવી નાખે છે તેમના હાથોની આગળીઓ વગેરે અગ્રોને કપાવી નાખે છે જો હે દેવા નુપ્રિય ! હું પુત્રને જન્મ આપુ તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી બાળકની રક્ષા કરતા તેનું ભરણુ—પોષણુ કરજો, જો તે

વિચારો યાવત્ મનોગત સમ્પત્તિઃ, 'સમુપ્પજિન્ત્યા' મમુપ્પત્તત્ । સમ્પત્તિપ્રકાર માદ- 'એ સ્વલુ' ઇત્યાદિ-એ સ્વલુ કનકરથો રાજા રાજ્યે ચ યાવત્ વ્યવ્વયતિ । યાવત્ અદ્વાનિ અદ્વાનિ વ્યવ્વયતિ જનન પ્રકારેણ કુત્તિમતપ્રકારેણ મારયતિ । તદ્યદિ સ્વલુ અહ દારક 'પયાયામિ' પ્રજનયામિ, સેય સ્વલુ મમ ત દારગ કળગરહસ્સ રહસ્સિય ચેવ સારસ્વલેમાળીણ સગોવેમાળીણ વિહરિત્તિણ 'એય. સ્વલુ મમ ત દારક કનકરથસ્ય 'રહસ્સિય ચેવ' રહસ્સિયકમેય=ગુણમેય આપદ સરન્ત્યા 'સરસ્વ માળીણ' સરસ્વત્યા. ભૂપટ્ટણાદે, 'સગોવેમાળીણ' સગોવાયન્ત્યા ભૂપકૃતોપ- દ્રવાત્ વિદર્શુમ્, 'તિરિદ્ધુ' ઇતિ કૃત્ત્યા=કૃતિ મનસિ કૃત્યા એ સપેક્ષતે=એવ વિચારયતિ સપેક્ષ=વિચાર્ય તેતલ્લિપુત્તમમાત્મ પ્રમાણ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એવમવદત્-એ સ્વલુ દેવાણુપિયા ! કનકરથો રાજા 'રજ્જેય જાવ વિયગેહ' રાજ્યે ચ યાવત્ વ્યવ્વયતિ=રાજ્યાદિપુ ચ મૂર્છિતો જાતાન પુત્રાન્ ત્રિકૃતાદ્વાન્ કરોતિ એવ તેષામદ્ગોષાદ્વાનિ સ્વલુયતિ । જનયા રીત્યા પુત્રાન્મારયતિ, તદ્યદિ સ્વલુ અહ દેવાણુપિયા ! દારક પ્રજનયામિ । તત્ત સ્વલુ ત્વ કનકરથસ્ય રહસ્સિયકમેવ

હુઆ-(એ સ્વલુ કળગરહે રાયા રજ્જે ય જાવ પુત્તે વિયગેહ, જાવ અગ્ન મગાહ વિયગેહ) યહ કનકરથ રાજા રાજ્ય આદિમે મૂર્છિત ગૃહ, અલ્પ- ન્ત અનુરક્ત એવ અધ્યુપપન્ન અત્યન્ત તત્પર વનકર પુત્રોં કો વાટ દેતા હૈં-બુરી તરહ સે ઝન્હે માર હાલતા હૈ (ત જહ અહ દારય પાયાયામિ, સેય સ્વલુ મમ ત દારગ કળગરહસ્સ રહસ્સિય ચેવ સારસ્વલેમાળીણ સગોવેમાળીણ વિહરિત્તિણ ત્તિ કટ્ટુ એવ સપેહેહ, સપેહિત્તા, તેયલિપુત્ત અમચ્ચ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપિયા ! કળ ગરહે રાયા રજ્જે ય જાવ વિયગેહ ત જહણ અહ દેવાણુપિયા ! દારગપ- યાયામિ, તણ તુમ દેવાણુપિયા ! કળગરહસ્સ રહસ્સિય ચેવ અણુપુન્ને

(એ સ્વલુ કળગરહે રાયા રજ્જે ય જાવ પુત્તે વિયગેહ, જાવ અગ્ન મગાહ વિયગેહ) કનકરથ રાજા રાજ્ય વગેરેની બાબતમાં મૂર્છિત ગૃહ, ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન-અત્યન્ત તત્પર થઈને-પુત્રોને અગાહીન કરાવી નાખે છે યાવત્ તેમના અગોને ડપાવી નાખાવે છે અને ખરાબ હાલતમાં તેઓને મરાવી નાખાવે છે

(ત જહ અહ દારય પાયાયામિ, સેય સ્વલુ મમ ત દારગ કળગરહસ્મ રહ- સ્સિય ચેવ સારસ્વલેમાળીણ સગોવેમાળીણ વિહરિત્તિણ તિરિદ્ધુ એવ સપેહેહ, સપેહિત્તા તેયલિપુત્ત અમચ્ચ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપિયા ! કળગરહે, રાયા રજ્જે ય જાવ વિયગેહ ત જહણ અહ દેવાણુપિયા ! દારગ પયા યામિ, તણ તુમ દેવાણુપિયા ! કળગરહસ્મ રહસ્સિય ચેવ અણુપુન્ને સારસ્વલે-

‘અણુપુત્રેણ’ આનુપૂર્વ્યેણ=યથાક્રમમ્ સરક્ષન્ ધૂરટ્ટયાદિનઃ સગોપાયન્ ધૂપકૃતો પદ્મવાત્ ત દારક ‘સવદ્દેહ’ સવર્દ્ય, તમ્ય ગાલસ્ય દૃદ્ધિમુપનય । તતઃ સ્વલુ સ દારક ‘ઉમ્મુક્કગાલભાવે’ ઉમ્મુક્તગાલભાવ=ઉમ્મુક્ત પરિત્યક્તો ગાલભાવો ગાલત્વ યેન સ’, ‘જોઘ્વણગમણુપ્પત્તે’ યૌવનન્મનુપ્રાપ્ત=પ્રાપ્તતારુણ્ય. તત્ત મમ ચ

ણ સારક્ષેમાણે સગોવેમાણે સવદ્દેહિં । તણ્ણ સે દારણ ઉમ્મુક્કગાલ ભાવે જોઘ્વણગમણુપ્પત્તે તત્ત ય મમ ય મિસ્સવામાયણ મિસ્સિસ્સહ તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે પડમાવટ્ટણ્ણમદ્ધ પહિસુણેદ્ધ, પહિસુણિત્તા પહિગણ) તો યદિ મેરે યહાં પુત્ર ઉત્પન્ન હોતા હૈ—મેં પુત્ર કો ઉત્પન્ન કરતી હૂં— તો મુઝે યહી યોગ્ય હૈ કિ મે રાજા કનકરથ કો ગ્વર ન પડે હસ રૂપ સે ઉસકી રક્ષા કરૂં—ઉનકી દૃષ્ટિ સે —ઉસે બચાકર રહૂ—એસા ઉસને મન સે વિચાર કિયા । વિચાર કર ફિર ઉસને અમાત્ય તેતલિપુત્ર કો ઘુલાયા—ઘુલાકર ઉસ સે એસા કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજા રાજ્ય આદિ મેં હતના અવિક સૂઝિત ગૃહ—અત્યત અનુરક્ત એવ અધ્યુ પપન્ન બના હુઆ હૈ જો વહ ઉત્પન્ન હુણ બાલકો કો અગ હીન કર દેતા હૈ—ઉનકે હાથો કી અગુલિયો આદિ અઙ્ગો કો કાઢ દેતા હૈ । તો હે દેવા નુપ્રિય ! યદિ મેં પુત્ર કો ઉત્પન્ન કરતી હૂં તો દેવાનુપ્રિય તુમ ઉસે રાજા કો ગ્વર ન પડે હસ રૂપ સે રક્ષિત કરતે હુણ ઓર ઉનકી દૃષ્ટિ સે રચાતે હુણ ક્રમશઃ દૃદ્ધિગત કરો । જય વહ બાલક—ક્રમશઃ સવર્દિત હોતા હુઆ બાલ્યાવસ્થા સે રહિત હોકર યૌવનાવસ્થા બાલા બન જાયગા

માણે સગોવેમાણે સવદ્દેહિં । તણ્ણ સે દારણ ઉમ્મુક્કગાલભાવે જોઘ્વણગમણુ પ્પત્તે તત્ત ય મમ ય મિસ્સવામાયણ મિસ્સિસ્સહ તણ્ણ સે તેયલિપુત્તે પડમાવટ્ટણ્ણમદ્ધ પહિસુણેદ્ધ પહિસુણિત્તા પહિગણ)

હવે મને પુત્ર ઉત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરથ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે બાળકની રક્ષા કરે તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવુ આ પ્રમાણે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને હું કે હે દેવાનુપ્રિય ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેના ધામમાં આટલો બધો મૂર્ચ્છિત, ગૃહ—ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડ્યો છે કે તે જન્મેલા બાળકોના અગો કપાવી નાખે છે તેમના હાથોની આગળીઓ વગેરે અગોને કપાવી નાખે છે જો હે દેવા નુપ્રિય ! હું પુત્રને જન્મ આપું તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી બાળકની રક્ષા કરવા તેનું ભરણુ—પોષણુ કરજો, જો તે

‘મિલ્લાભાષણ’ મિલ્લામાનનમ્=મિલ્લાયા આગરભૂતોમિલ્લયતિ । તતઃ સ્વલ્પસ તેતલિપુત્ર પદ્માવત્યાઃ પરમર્થ પ્રતિશ્રુણોતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકર્ય પદ્માવત્યા સમીપાત્ પ્રતિગત સ્મર્યહે ગતરાન્ ॥૫૦૫॥

મૂલમ્—તણ પડમાવડે ય દેવી પોટિલા ય અમઠ્ઠી સયમેવ ગઢ્ઠં ગિળહડ, સયમેવ પરિવહડ । તણ સા પડમાવડે નવળહ માસાણં જાવ પિયદસણં સુરુવ દારગ પયાયા, જ રયણિં ચ ણં પડમાવડે દારય પયાયા તં રયણિં ચ ણ પોટિલા ત્રિ અમઠ્ઠી નવળહ માસાણં ત્રિણિહાયમાવત્ત દારિય પયાયા । તણં સા પડમાવડે દેવી અમ્મધાડ સદાવેડ સદાવિત્તા ઇવ વયાસી—ગચ્છહ ણં તુમે અમ્મો । તેતલિગિહે તેતલિપુત્તં અમઠ્ઠ રહસિસયં ચેવ સદાવેહ । તણં સા અમ્મધાડે તહત્તિ પાડિસુણેડ, પાડિસુણિત્તા અંતેરસ્સ અવહારેણ ણિગ્ગચ્છડ, ણિગચ્છિત્તા, જેણેવ તેતલિસ્સ ગિહે જેણેવ તેતલિપુત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા કરચલ જાવ ઇવ વયાસી—ઇવ સ્વલ્પ દેવાણુપ્પિયા । પડમાવડે દેવી સદાવેડ । તણં તેતલિપુત્તં અમ્મધાડે અતિય ઇયમઠ્ઠ સોઘ્ઠા હટ્ટુટ્ટે અમ્મધાડે સદ્ધિ સાઓ ગિહાઓ ણિગ્ગચ્છડ, ણિગચ્છિત્તા અંતેરસ્સ અવહારેણ રહસિસયં ચેવ અણુપ્પવિસડ, અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પડમાવડે દેવી તેણેવ

તો હમારે તુમ્હારે દોનોં કે લિયે મિલ્લા પાત્ર-મિલ્લા કા આધાર ભૂત-બન જાયગા હમ-પ્રકાર પદ્માવતી કે હસ કથન રૂપ અર્થ કો ઉસ તેતલિપુત્ર અમાત્યને સ્વીકાર કર લિયા । ઓર સ્વીકાર કરકે ફિર વહ પદ્માવતી દેવી કે પાસ સે અપને ઘર પર ચલા આયા ॥ સૂ૦ ૪ ॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણુ પટાવીને બુવાન થઈ જશે તે ભારા અને તમારા બનેને માટે લિક્ષાપાત્ર લિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી વિદાય લઈને પોતાને ઘર આવી ગયો ॥ ૪

उवागए करयलपरिगहियं दसणह सिरसावत्तं मत्थए अंजलि
 कट्टु एवं वयासी-सदिसत्तु णं देवाणुप्पिया । ज मए कायव्वं ?
 तएणं पउमावर्ड तेतलिपुत्त एवं वयासी-एवं खलु कणगरहे
 राया जाव वियगेइ, अहं च णं देवाणुप्पिया । दारग पयाया
 त तुम णं देवाणुप्पिया । एयं दारग गेणहाहि जाव तव मम
 य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्तिम्हट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ । तएणं
 तेतलिपुत्ते पउमावर्डए हत्थाओ दारग गेणहइ गिणहत्ता उत्त-
 रिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स रहस्सियं अवदारेणं णिग्गच्छइ,
 णिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी-एवं खलु देवा-
 णुप्पिया । कणगरहे राया रज्जे य जाववियगेइ, अय च णं दारए
 कणगरहस्सपुत्ते पउमावर्डए अत्तए, त ण तुम देवाणुप्पिया ।
 इम दारग कणगरहस्स रहस्सिय चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि
 य सगोवाहि य सवड्ढेहि य । तएणं एस दारए उमुक्कवालभावे
 तव य मम य पउमावर्डए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टि-
 लाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विनि-
 हायमावन्निय दारिय गेणहइ, गेणहत्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता
 अतेउरस्स अवदारेण अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता जेणेव पउ-
 मावर्ड देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावर्डए देवीए
 पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिणिग्गए । तएण तीमे पउमा-
 वर्डए अगपरियारियाओ पउमावर्ड देवि विणिहायमावन्न च

‘મિત્રાભાષણ’ મિત્રાભાવનમ્=મિત્રાયા આગરભૂતો મનિપ્રયતિ । તતઃ સ્વલ્પ સ તેતલિપુત્ર પદ્માવત્યા પદ્મર્મ પ્રતિશ્રુણોતિ=સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય પદ્માવત્યા સમીપાત્ પ્રતિગત સ્વગૃહે ગતવાન્ ॥૫૦૮॥

મૂલમ્—તદ્દર્શનં પડમાવર્ઙ્ગં ય દેવી પોદિલા ય અમચ્ચી સય-
મેવ ગંઘં ગિણહૃદ્, સયમેવ પરિવહૃદ્ । તદ્દર્શનં સા પડમાવર્ઙ્ગં
નવણ્હ માસાણં જાવ પિયદસણં સુરુવં દારગ પયાયા, જ રયણિ
ચ ણં પડમાવર્ઙ્ગં દારય પયાયા ત રયણિ ચ ણ પોદિલા વિ
અમચ્ચી નવણ્હ માસાણ વિણિહાયમાવન્ન દારિય પયાયા ।
તદ્દર્શનં સા પડમાવર્ઙ્ગં દેવી અમ્મધાં સદાવેદ્ સદાવિત્તા એવ
વયાસી—ગચ્છહ ણ તુમે અમ્મો । તેતલિગિહે તેતલિપુત્ત અમચ્ચ
રહસ્સિયં ચેવ સદાવેહ । તદ્દર્શનં સા અમ્મધાં તદ્દત્તિ પાડિસુણેદ્,
પાડિસુણિત્તા અતેરસ્સ અવહારેણ ણિગ્ગચ્છેદ્, ણિગ્ગચ્છિત્તા,
જેણેવ તેતલિસ્સ ગિહે જેણેવ તેતલિપુત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છેદ્,
ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ જાવ એવ વયાસી—એવ સ્વલ્પ દેવાણુપ્પિયા ।
પડમાવર્ઙ્ગં દેવી સદાવેદ્ । તદ્દર્શનં તેતલિપુત્ત અમ્મધાં એ અંતિય
એમદ્દ સોચ્ચા હટ્ટુત્થે અમ્મધાં એ સદ્ધિ સાઓ ગિહાઓ
ણિગ્ગચ્છેદ્, ણિગ્ગચ્છિત્તા અતેરસ્સ અવહારેણ રહસ્સિયં ચેવ
અણુપ્પવિસેદ્, અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પડમાવર્ઙ્ગં દેવી તેણેવ

તો હમારે તુમ્હારે દોનોં કે લિયે મિત્રા પાત્ર-મિત્રા કા આધાર ભૂત-
બન જાયગા હમ-પ્રકાર પદ્માવતી કે હસ કવન રૂપ અર્થ કો ઉસ તેત
લિપુત્ર અમાત્યને સ્વીકાર કર લિયા । ઓર સ્વીકાર કરકે ફિર વહ
પદ્માવતી દેવી કે પાસ સે અપને ઘર પર ચલા આયા ॥ સૂ ૪ ॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણ વટાવીને જુવાન થઈ જશે તો
મારા અને તમારા બંનેને માટે શિક્ષાપાત્ર શિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે
આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર
કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી નિદાય લઈને પોતાને ઘર આવી ગયો । સૂ ૪

उवागए करयलपरिगहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलि
 कट्टु एव वयासी-सदिसत्तु णं देवाणुप्पिया । ज मए कायव्वं ?
 तएणं पउमावई तैत्तलिपुत्त एवं वयासी-एव खलु कणगरहे
 राया जाव वियगेइ, अहं च ण देवाणुप्पिया । दारग पयाधा
 त तुम णं देवाणुप्पिया । एय दारग गेणहाहि जाव तव मम
 य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्ति कट्टु तैत्तलिपुत्तं दलयइ । तएणं
 तैत्तलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारग गेणहइ गिणहत्ता उत्त-
 रिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अत्तेउरस्स रहस्सिय अवदारेणं गिग्गच्छइ,
 गिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी-एवं खलु देवा-
 णुप्पिया । कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, अय च णं दारए
 कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए, त ण तुम देवाणुप्पिया ।
 इम दारग कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुब्बेण सारक्खाहि
 य सगोवाहि य सवड्ढेहि य । तएणं एस दारए उमुक्कवालभावे
 तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टि-
 लाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विनि-
 हायमावन्निय दारिय गेणहइ, गेणहत्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, ~~पिहेइ~~
 अत्तेउरस्स अवदारेण अणुप्पविसइ अणुप्पविमिन्ना ~~अणुप्पविमिन्ना~~

दारिय पासति, पासित्ता जेणेव कणगरह राया तेणेव उवाग
 च्छति उवागच्छित्ता करयलपरिगहिय दमनह सिगसावत्तं म-
 त्थए अजलि कट्टु एव वयासी एव खलु सामी । पउमावई
 देवी मइल्लियं दारियं पयाया । तण्णं कणगरहे राया तीसे
 मइल्लियाए दारियाए नीहरण करेइ, वट्टणि लोइयाइं मयाकि-
 च्चाइ करेइ करित्ता कालेण विगयसांए जाए । तएण से तेत-
 लिपुत्ते कोडुवियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता, एव वयासी-खिप्पा-
 मेव चारगसोहण जाव ठिडवडिय, जम्हाण अम्ह एस दारए
 कणगरहस्स रजे जाए, त होउ ण दारए, नामेण कणगज्झए
 जाव भोगसुमत्थे जाए ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । तत खलु पद्मावती च देवी पोष्टिला च अमात्यौ
 सममेव गर्भं गृह्णाति, सममेव गर्भं परिहति=धारयति । तत खलु सा पद्मावती
 ‘नवण्ह मामाण जाव’ नवाना मासाना नय्यु मासेसु व्यतीतेषु यावत् सत्तु
 ‘पियदसण’ पियदर्शनम्=पिय चेतोहर दर्शनमवलोकन यस्य त = दर्शकजन-
 चेतोहादनक सुरुप दारक ‘पयाया’ प्रजाता=प्रजनितवती । यस्या रजन्पा च

‘तएण पउमावई य देवी’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पउमावई य देवी पोष्टिलाय अमचची
 सयमेव गर्भं गिण्हइ) पद्मावती देवी और पोष्टिला अमात्यी ने साथ ही
 गर्भ धारण किया । (तएण सा पउमावई नवण्ह मामाण जाव पियद
 सण सुरूव दारग पयाया) पद्मावती देवी ने जब नौ मास अच्छी तरह
 गर्भ के समाप्त हो चुके तब दर्शकजन चित्ताह्लाद जनक अच्छे रूप
 शाली पुत्र को जन्म दिया । (ज रयणि च ण पउमावई दारय पयाया

‘तएण पउमावई य देवी’ इत्यादि—

टीकार्थ—तएण) त्पारपथी (पउमावई य देवी पोष्टिला य अमचची सयमेव गर्भं
 गिण्हइ) पद्मावती देवी अने पोष्टिला अमात्यीके साथे साथे ९ गर्भधारण किये
 (तएण सा पउमावई नवण्ह मामाण जाव पियदसण सुरूव दारग पयाया)
 न्याये नव मास सारी रीते पसार धर गया त्पारे पद्मावती देवीके
 लोनाशके बोधने प्रसन्न धर जय जेवा इषाणा पुत्रने जन्म आय्ये।

खलु पद्मावती दारक प्रजाता तस्या रजन्या च खलु पोष्टिकापि अमात्यी ' नवण्ड-
मासाण ' नवाना मासानाम्=नरसु मासेषु व्यतीतेषु ' विणिहायमावन्न ' विनि-
घातमापन्नाम्=मृताम् दारिका प्रजाता=जनितवती । ' तएण ' तन खलु पुत्रजन्मा
नन्तर सा पद्मावती देवी अम्मधात्री शब्दयति, शब्दयित्वा एवमनदत्-गच्छत
खलु यूयमम्भ ! ' तेतलिगिहे ' तेतलिगृहे=तेतलेरमात्यस्य गृहे तेतलिपुत्रसमात्य
रहस्सियम्भ=अन्यैरपरिज्ञातमेव शब्दयत=आह्वयत । तनः खलु सा अम्मधात्री तथेति
प्रतिश्रुति,=अङ्गीकरोति, मनिश्रुत्य अन्त पुरस्य ' अवदारेण ' अपदारेण=पृष्ठ-
द्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव तेतलेष्टुम्भम्, यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपा-
गच्छति, उपागत्य ऊरुतल यावद् अञ्जलिपुट कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे

त रयणि च ण पोष्टिलावि अमची नवण्ड मासाण विणिहायमावन्नं
दारिय पयाया) जिस रात्रि में पद्मावती देवी ने पुत्र को जन्म दिया था
उसी रात्रि में पोष्टिला अमात्यी ने भी नौ मास व्यतीत हो जाने पर
एक मरी हुई कन्या को जन्म दिया (तएण सा पडमावई अम्मवाय
सदावेह, सदावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुमे अम्मी ! तेतलिगिहे
तेतलीपुत्त अमच्च रहस्सिय चेव सदावेह) हम के बाद उस पद्मावती
ने अम्मधात्री को बुलवाया और बुलवाकर उससे ऐसा कहा है अम्म !
तुम तेतलि अमात्य के घर पर जाओ । और किसी को पता न पड़े
इस रूप से तुम तेतलि पुत्र अमात्य को बुला लाओ । (तएण सा अ-
म्मवाई तहत्ति पडिसुणेह पडिसुणिता अतेउरस्स अवदारेण निग्ग-
च्छह निग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्सगिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा-
गच्छह, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया

(ज रयणि च ण पडमावई दारय पयाया त रयणि च ण पोष्टिला वि अमची
नवण्ड मासाण विणिहायमावन्न दारिय पयाया)

ज रात्रिमें पद्मावती देवीमें पुत्रमें जन्म आये। ते ज रात्रिमें पोष्टिला
अमात्यीमें पक्षु नव मास पूरा यवाथी ओउ भरेदी कन्यामें जन्म आये।

(तएण सा पडमावई अम्मवाय सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी गच्छह ण
तुमे अम्मी ! तेतलिगिहे तेतलिपुत्त अमच्च रहस्सिय चेव सदावेह)

त्यापछी ते पद्मावतीमें अम्मधात्रीने बोलावी अने बोलावाने तेने
आ प्रभावे कुछ डे छे अभ्य ! तमे तेतलि अमात्यने घर, जाओ अने डोढने
पछर पडे नहि तेम तेतलिपुत्र अमात्यने तमे अहाँ बोलावी लावे।

(तएण सा अम्मवाई तहत्ति पडिसुणेह, पडिसुणिता अतेउरस्स अवदारेण
निग्गच्छह निग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्सगिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा-

દેવાનુપ્રિય ! પદ્માવતી દેવી ગચ્છતી ગચ્છતી । તતઃ ચતુ તેતલિપુત્રઃ ' અવધાર્ષિ
અતિષ્ઠ ' અમ્મધાર્ષ્યા ધનિત્તે=અમ્મધાર્ષ્યાઃ મકાશાત્ પતમથં શ્રુત્વા હૃદયતુષ્ટોઽમ્મ
ધાર્ષ્યા સાદ્દં સ્વકાદ્ ગૃહાદ્ નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય અન્તપુરસ્ય અપદ્મારેણ રહસ્વિક-
મેવ=પચ્છછમેવ અનુપવિશતિ, અનુપવિશ્ય, યત્રેય પદ્માવતી દેવી તત્રેય ' ઉવાગણ '
ઉવાગતઃ=સમાપ્તઃ કરચલપરિગૃહીત દશનચ શિરસાવર્ત મન્ત્રકેઽહ્નલિકૃત્વા એવં
વશ્યમાણપ્રકારેણ અમદત્-' સદિસતુ ' મદિશતુ=આત્માપયતુ સતુ હે દેવાનુપ્રિયે !

પદમાવર્ષ દેવી સદાવેહ । તણ તેતલિપુત્રે અમ્મધાર્ષિ અતિષ્ઠ એમજ
સોચ્ચા હૃદયતુષ્ટે અમ્મધાર્ષિ સદિ સાઓ ગિહાઓ ગિગચ્છહ) પદ્મા
વતી દેવી કે હસ પ્રકાર વચન સુન કર ઉપ અમ્મધાર્ષી ને તથેતિ
' કહ કર ઉસકી આજ્ઞા કો સ્વીકાર કર લિયા । સ્વીકાર કર કે ફિર
વહ અતઃ પુર કે અપદ્માર સે-પીઠે કે દરવાજે સે ઘાટિર નિકલી-નિકલ
કર જહાં તેતલિ કા ઘર ઓર ઉસમેં ખી જહા તેતલિપુત્ર થા વહા ગઈ ।
વહા જાકર પહિલે ઉસને તેતલિપુત્ર અમાત્ય કો દોનોં હાથ જોડ કર
નમસ્કાર ક્રિયા-બાદ મેં ચોલી-હે દેવાનુપ્રિય ! આપકો પદ્માવતી દેવી
બુલા રહી હૈં । અમ્મધાર્ષી કે મુલ સે હસ પ્રકાર વચન સુન કર બ
તેતલિ પુત્ર હર્ષિત એવ તુષ્ટ હોતા હુઆ અમ્મધાર્ષી કે સાચી અપને
ઘર સે નિકલા । (ગિગચ્છિત્તા અતેરસસ અવધારેણ રહસ્વિય ચેવ
અણુપ્પવિસહ, અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પદમાવર્ષ દેવી તેણેવ ઉવાગણ
કરચલપરિગૃહિય દસણહ સિરસાવર્ત મન્ત્રે અર્જલિ કટ્ટહુ એવ વયા
ગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા કરચલ જાવ એવ વયાસી-એવ ચલુ દેવાણુપ્પિયા ! પદમાવર્ષ
દેવી સદાવેહ । તણ તેતલિપુત્રે અમ્મધાર્ષિ અતિષ્ઠ એમજ સોચ્ચા હૃદયતુષ્ટે અમ્મ
ધાર્ષિ સદિ સાઓ ગિહાઓ ગિગચ્છહ)

આ રીતે પદ્માવતી દેવીની વાત સાંભળીને અમ્મધાર્ષીએ ' તથેતિ ' (સાહે)
આમ કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી સ્વીકારીને તે રણુવાસના પાછલા
ખારણેથી બહાર નીકળી અને નીકળીને જ્યાં તેતલિપુત્રનું ઘર અને તેમના પછ
જ્યાં તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતા ત્યાં પહોંચી ત્યાં પહોંચીને તેણે સૌ પહેલાં
બંને હાથ બોડીને તેતલિપુત્રને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તેણે કહ્યું કે હે
દેવાનુપ્રિય ! તમને પદ્માવતી દેવી બોલાવે છે અમ્મધાર્ષીના મુખથી આ બતની
વાત સાંભળીને તેતલિપુત્ર હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થતા અમ્મધાર્ષીની સાથે
સાથે જ તે પોતાના ઘેરથી રણુવાસ તરફ રવાના થયો

(ગિગચ્છિત્તા અતેરસસ અવધારેણ રહસ્વિય ચેવ અણુપ્પવિસહ અણુપ્પ
વિસિત્તા જેણેવ પદમાવર્ષ દેવી તેણેવ ઉવાગણ, , , , , -દમણહ સિર-

‘ જ મણ કાયવ્વ ’ યન્મયા કર્તવ્યમ્, તતઃ સ્વલુ પદ્માવતી દેવી તેતલિપુત્રમેવમવ-
દત્ ‘ એવ સ્વલુ કળગરહે રાયા વિયગેઈ ’ એવ સ્વલુ કનકરથો રાજા વ્યઙ્ગ્યાત્=
હે દેવાણુપ્રિય ! મયા પૂર્વમેવકથિત-યત્કનકરથ ઉત્પન્નાનુપુત્રાન્ વિકૃતાઽદ્વાન્
કૃત્વા મારયતિ । અહ ચ સ્વલુ દેવાણુપ્રિય ! દારક પ્રજાતા=પ્રજનિતવતી, ‘ ત ’
તસ્માત્ કારણાત્ ત્વ સ્વલુ દેવાણુપ્રિય ! એત દારક ટઠાણ યાવત્ તત્ત ચ મમ ચ

સી સંદિસતુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! જંમણ કાયવ્વ ? તણં પડમાવઈ તેતલિ
પુત્તં એવ વયાસી-અર્થે સ્વલુ કળગરહે રાયા જાવ વિયગેઈ, અહ ચ ણં
દેવાણુપ્પિયા દારગ પયાયા ત તુમ ણં દેવાણુપ્પિયા ! એવ દારગ ગેણહિ)
ચલકર વહ અતઃ પુર કે પૃષ્ઠ ભાગ કે ઢાર સે કિસી કો આને કા પતા
ન લગે હસ રૂપ સે વહા પ્રવિષ્ઠ હુઆ । પ્રવિષ્ઠ હોર જહાં પદ્માવતી દેવી
થી વહાં ગયા । વહા જાકર ડસને દોનોં હાથ જિસમેં જુડે હુઈ હૈં ઓર
દશોંનલ્લ જિસમેં હૈં એસી અજલિકો દક્ષિણ તરફ સે ઘુમોકર બાયે
તરફ હેજાકર ઓર મસ્તકપર અજલિ કો રલ્લકર કહા-અર્થાત્ નમ-
સ્કાર કર પૂજા હે દેવાણુપ્રિય ! જો મુશ્કે કરને યોગ્ય કાર્ય હૈં ડસ કે
કરને કી આપ આજ્ઞા દીજિયે । હસ કે વાદ પદ્માવતી દેવી ને તેતલિપુત્ર
સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાણુપ્રિય ! મૈને તુમસે પરિહે હી કહ રલ્લકા હૈં
કિ કનકરથ ઉત્પન્ન હુઈ પુત્રોં કો વિકૃત અગ વનાકર માર ઢાલતા હૈં ।
ઓર મૈને હે દેવાણુપ્રિય ! પુત્ર કો ઉત્પન્ન ક્રિયા હૈં । હસલિયે તુમ હે દેવા-

સાવત્ત મત્થણ અજલિં વટ્ટુ એવ વયામી-સ દિસતુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! જંમણ કર-
ણિજ્જ તણ પરમાનીઈ દેવી વયામી-એવ સ્વલુ કળગરહે રાયા જાર વિયગેઈ અહ
ચ ણ દેવાણુપ્રિયા ! દારગ પયાયા ત તુમ ણદેવાણુપ્પિયા ! એવ દારગ ગેણહિ)

ત્યા પહોચીને રણુવામના પાછલા બારણુથી કોઈને ખબર પડે નહિ તેમ
રણુવાસમા પ્રવિષ્ઠ થઈ ગયો । પ્રવિષ્ઠ થઈને તે બ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા
પહોચ્યો । ત્યા પહોચીને તેણે દશે નખો બેમા છે એવા બને હાથ બેડીને
અજલિ બનાવીને તેને જમણી બાબુથી ફેરવીને ડાબી બાજુ તરફ લઈ બંધને
મસ્તક ઉપર અજલિ મૂકીને આ પ્રમાણે કહ્યું-એટલે નમસ્કાર કરીને પૂછ્યું
કે-હે દેવાણુપ્રિય ! મારે લાયક જે કંઈ પણ કામ હોય તે મને કહો ત્યાર
પછી પદ્માવતી દેવીએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાણુપ્રિય !
તમને મે પહેલેથી કહી રાખ્યું છે કે રાબ કનકરથ ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રાને
અગહીન કરી નાખે છે અને હે દેવાણુપ્રિય ! મારે પુત્ર થયો છે હે દેવા-
ણુપ્રિય ! એ બાળકને તમે લઈ બાંચો.

भिक्षाभोजनमपि भिक्षाभोजन, यथा भिक्षाभाजनं जीवनं निर्वाहयति तथाऽप्यपि जीवनं निर्वाहको भविष्यति 'चिरुदु' इति कृत्वाः इत्युक्त्वा 'तेतलिपुत्र' तेतलिपुत्राय प्रोक्तं तत्रादत्र द्वितीया ददाति=तेतलिपुत्रस्य हस्ते दारकमर्पयति। ततः खलु तेतलिपुत्रः पश्चात्त्या हस्ताभ्यां दारकं गृह्णाति, गृहीत्या उत्तरीयेण=उत्तरीयवस्त्रेण च 'पिहेह' पिदधाति=आच्छादयति, 'पिहिता' पिधाय अन्तः-पुगस्य 'रहस्सिय' रहस्सिय=प्रच्छन्न यथा स्वात्तया अवहारेण निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वकं पुत्रं यत्रैव पोद्विला भार्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पोद्विलाग्रेमवादीत्-एव खलु हे देवानुमिये ! कनकरथो राजा राज्ये च यावद् व्यद्वयति स्वपुत्रान् भारयन्ति अयं च खलु मम हस्तस्थितो दारकं कनकरथस्य पुत्रः पश्चात्त्या आत्मजो मया कृतानीतः, 'त' तस्मात् कारणात् खलु हे देवानुमिये ! इमं दारकं 'कणगरहस्स' नुमिये ! इमं बालकं को छेलो (जाव तत्र मम य भिक्षाभायणे भविस्सि इत्ति कइदु तेतलिपुत्त दलयह) यावत् यह हमारे तुम्हारे लिये भिक्षा का भाजन हो जायगा जिस प्रकार भिक्षा भाजन जीवन निर्वाहक होता है-उसी तरह यह भी जीवन निर्वाहक होवेगा इस प्रकार कहकर उसने तेतलिपुत्र के हाथमें आपने पुत्र को दे दिया। (तएण तेतलिपुत्ते पउमा-वईण हत्थाओ दारग गेण्हइ) तेतलिपुत्र ने भी पश्चात्ती देवीके हाथसे बालक को छे लिया। (गिण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेह, पिहिता अते उर-हंस्सरहस्सिय अवहारेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोद्विला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-पोद्विल एव वयासी एव खलु देवानुमिये ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेह, अयं

(जाव तत्र मम य भिक्षाभायणे भविस्सि इत्ति कइदु तेतलिपुत्त दलयह)

अ-भारा अने तभारा भाटे 'भिक्षाभाजन' थये अट्ठे के नेम भिक्षातु पात्र छवनने टकावनार छाय छे तेमअ आ भागक पणु छवन निर्वाहक थये आ प्रभावे कहीने तेले तेतलिपुत्रना छायभा पोताना नव जत पुत्रने सोधी दीधो (तएण तेतलिपुत्ते पउमावईण हत्थाओ दारग गेण्हइ)

तेतलिपुत्रे पणु पश्चात्ती देवीना छायभाथी भागक लध लीधु

(गिण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेह पिहिता अतेउरस्स रहस्सिय अवहारेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोद्विला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पोद्विल एव वयासी, एव खलु देवानुमिये ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेह, अयं च न दारण कणगरहस्सपुत्ते पउमावईण अस्सए

रहस्मिय चेव ' कनकरथस्य रहस्यिकमेव=कनकरथो यथा न जानीयात्तथैव ' अणु-
पुव्वेण' आनुपूर्व्येण=अनुक्रमेण तत्कृतोपद्रवतथ 'सारवखाहि य' सरक्ष्य कनकरथनृ-
पद्विष्टितः संगोपाय च तत्कृतोपद्रवतः, तथा संवद्धेहिय ' संपर्यय च=स्तन्यपानादि
माऽस्य गालस्य वृद्धिमुपनय ! ततः खलु एष दारकः उन्मुक्तगालभावः तत्र च मम
च पद्मावत्याश्च 'आहारे' आधार=आधारस्वरूपो मन्विष्यति ' तिकट्टु ' इतिकृत्वा

च ण दारए कणगरहस्स पुत्ते पडमावईण अत्तण, त णं तुम दारगं
कणगरहस्स रहस्मियं चेव अणुपुव्वेण सारवखाहि य संगोवाहि य स-
वद्धेहिय) लेकर फिर उसे अपने दुपटे से ढक लिया और ढककर
प्रच्छन्न गुप्तरूप से अतः पुर के पीछे के दरवाजे से बाहर निकल गया ।
निकल कर जहा अपना घर और पोड़िला भार्या थी वहा गया । वहाँ
जाकर उसने पोड़िला भार्या से इस प्रकार कहा-देवानुप्रिये ! कनक रथ
राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्च्छित हो रहा है कि वह उत्पन्न
हुए अपने बालकों को अङ्ग विच्छेद कर मार डालता है । यह जो पुत्र
मेरे हाथ में है वह कनक रथ राजा का पुत्र है यह पद्मावती देवी की
कृष्णि से उत्पन्न हुआ है । इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम इस पुत्र को
कनक रथ को खर न पड़े इस तरह प्रच्छन्न रूप से क्रमशः रक्षित
करती रहो-पालती रहो उसकी दृष्टि से बचाती रहो और स्तन्यपान
आदि से बढ़ाती रहो । (तएणं एस दारए उन्मुक्कगालभावे तव य

त णं तुम देवानुप्पिया ! इम दारगं कणगरहस्स रहस्मिय चेव अणुपुव्वेण सार-
वखाहि य संगोवाहि य संवद्धेहिय)

लधने तेले जेसभा ढाडी द्वीधु, अने ढाडीने छुपी रीते रणुवासता पाछला
भारलेथी भहार मीकणी गये । भहारनीडणीने न्या पोतानु भर अने मोट्टिला
'लाया' डती ग्या गये । त्या पछोचीने तेले 'पोट्टिला' लायाने ज्येभ कहु डे-डे
देवानुप्रिये ! राजा कनकरथ राजन्य वगेरेनी भावतमा ओट्टेला भये । आसक्या थय
गये छे के ते जन्म पायेला पोताना भाणजेना अ गेने जपाचीने भारी नज्जे
छे भारा हाथमा जे भाणक छे ते पणु कनकरथ राजनो ज पुत्र छे पद्मावती
'देवीना' गर्भभाथी आनो जन्म थये छे ज्येथी छे देवानुप्रिय ! कनकरथ राजने
अणु थाय नडि ते प्रभावे तये छुपी रीते आ पुत्रवृ रक्षण करता रहे,
पोपणु करता रहे, राजनी कुदृष्टिथी जेने हर राणता रहे । ज्येने स्तन्यपान
ओट्टे के द्वध वगेरे भिवडावीने ज्येने भोटो करे ।

इत्युत्तमा पोद्दिलायाः पार्श्वे 'निनिगः' निनिगति=स्थापयति, तथा पोद्दिलायाः पार्श्वे ता 'निनिहायमावण्ण' विनिगातमावणा=मृतां दारिगा गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण पिदधाति, पिधाय अन्नः पुरस्य अपद्वारेण अनुपमिगति, अनुप्रविश्य यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पद्मरत्नाः देव्याः पार्श्वे स्थापयति, स्थापयित्वा तासु 'पडिनिगण' प्रतिनिर्गतः प्रतिनिव र्य स्वयम्

મમ ય પડમાવર્દૈ ય આહારે ભવિસ્સઽત્તિ કદ્દહુ પોદ્દિલાણ પાસે નિ કિલ્લવદ્, નિકિલ્લવિત્તા પોદ્દિલાઓ પાસાઓ વિનિહાયમાવણ્ણિયં દારિય ગેણ્ણદ્, ગેણ્ણિત્તા ઉત્તરિજ્જેણં પિદ્દેહ પિદ્ધિત્તા, અંતેરસસ અવહારેણ અણુપ્પવિસદ્) હસ તરહ કમજા. ઘૃદ્ધિગત હોના હુઆ યહ માલક જય ચાલ્યાવસ્થા સે રહિત હો જાવેમા તો હમારા તુમ્હારા ઓર પદ્માવતી દેવી કા આધાર હોગા, એસા કહકર ઉસ તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને ઉસ પુત્ર કો પોદ્દિલા કે પાસ રલ દિયા। ઓર પોદ્દિલા કે પામ સે મરી હુઈ કન્યા કો ઉઠા લિયા-ઉઠાકર ઉસે અપને ઉત્તરિયચ્છ સે ઢંક લિયા, ઢંક કર ફિર અતઃ પુર કે પિઝલે દરવાજે સે વહા આયા (અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પડમાવર્દૈ દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા પડમાવર્દૈ દેવીણ પાસે ઠાવેદ્, ઠાવિત્તા જાવ પડિનિગ્ગણ) વહા આકર જહાં પદ્માવતી દેવી થી વહા પહુંચા, વહાં પહુંચ કર ઉસને ઉસ મૃત કન્યા કો પદ્માવતી દેવી કે

(તણેણ એસ દારણ ઉમ્મુક્કરુઆભાવે તવ ય મમ ય પડમાવર્દૈ ય આહારે ભવિસ્સઽત્તિ કદ્દહુ પોદ્દિલાણ, પાસેનિકિલ્લવદ્, નિકિલ્લવિત્તા પોદ્દિલાઓ પાસાઓ વિનિહાયમાવણ્ણિયં દારિય ગેણ્ણદ્, ગેણ્ણિત્તા ઉત્તરિજ્જેણં પિદ્દેહ, પિદ્ધિત્તા, અંતેરસસ અવહારેણ અણુપ્પવિસદ્)

અને આ રીતે અનુક્રમે મોટા થતો આ બાળક જ્યારે બચપણ વટાવીને જુવાન થઈ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીનો આધાર થશે આ પ્રમાણે ઝીંને તે તેતવિપુત્ર અમાત્યે તે બાલકને પોદ્દિલાની પાસે મૂકી દીધો અને પોદ્દિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી ઉપાડીને તેને પોતાના ખેસથી ઢાકી દીધી અને ત્યારપછી તે રણવાસના પાછલા બારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમા ગયો.

(અણુપ્પવિસિત્તા જેણેવ પડમાવર્દૈ દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા, પડમાવર્દૈ દેવીણ પાસે ઠાવેદ્, ઠાવિત્તા જાવ પડિનિગ્ગણ)

ત્યા જઈને જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા ગયો અને ત્યા પહોચીને તેણે તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામા મૂકી દીધી અને ત્યા મૂકીને તે ત્યાથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘર આવી ગયો.

गतवान् । 'तएण' तत्र खलु तस्याः पद्मापत्याः 'अगपरियारियाओ' अङ्गपति-
चारिका 'दाम्य' पद्मापतीदेवीं त्रिनिधातमापन्ना प्राणरहितां दारिका च पश्यन्ति,
दृष्ट्वा यत्रैव कनकरथो राजा, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कनकलपरिगृहीत दंश-
नख शिर आवर्त्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा 'एव' = वक्ष्यमाणरीत्या अवदत्-हे
स्वामिन् ! पद्मापतीदेवी 'मङ्गलिया' मृता दारिका 'पयाया' प्रजाता=प्रजनित-
वती । 'तएण' इति, तत्र खलु दामीमुखान्मृतगालिकाजमश्रुगगनान्तर कनकरथो
राजा तस्या 'मङ्गलियाए' मृतायाः दारिकाया 'नीहरण' निर्हरण 'निष्काशन
' करेड' करोति, कृत्वा नहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति, कृत्वा 'कालेण'

पास रख दिया । और खलु फिर वह वहा से चल दिया चलकर
अपने घर आ गया । (तएण तीसे पडमावईण अगपरियारियाओ पड-
मावड देवि विणिहायमावन्न दारिय पासति, पासित्ता जेणेव कणगरहे
राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिगहिय दसनह
सिरसावत्त मत्यण अजलिं कट्टु एव वयासी एव खलु सामी पडमावई
देवी मङ्गलिय दारिय पयाया) इसके बाद पद्मावती देवी की अगपरि-
चारिकाओंने पद्मावती देवी को और मरी हुई उस कन्या को देखा देखा
कर वे सब जहा कनक रथ राजा थे वहाँ गई-वहा जाकर उन्होंने दो
नौ हाथों की अजलि बना कर और उसे मस्तक पर घुमाकर-अर्थात्
नमस्कार कर इस प्रकार कहा हे स्वामिन ! पद्मावती देवी ने मृत कन्या
को जन्म दिया है । (तएण कणगरहे राया तीसे मङ्गलियाए दारियाए नीह-
रण करेड, वट्टणि लोडयाइ मयकिच्चाइ करेड करित्ता कालेण विगयसोए
जाए) इस प्रकार उन के मुख से सुनकर कनक रथ राजाने उस मृत

(तएण तीसे पडमावईण अगपरियारियाओ पडमावड देवि विणिहायमावन्न
दारिय पासति पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता
करयलपरिगहिय दसनह सिरसावत्त मत्यण अजलिं कट्टु एव वयासी-एव खलु
सामी पडमावईदेवी मङ्गलिय दारिय पयाया)

त्याग्भाह पद्मावती देवीनी अज-परियाज्जिओओ पद्मावती देवी तेमज्ज
ते भरेली अन्धाने जेध जेधने तेओ अधी जया कनकरथ राजा हुता त्या गध
अने त्या जधने तेओ जाने हाथोथी अजलि बनावीने अने तेने मस्तक
उपर इरवीने आ प्रभाओ उल्लु उ छे स्वामी ! देवी पद्मावतीओ भरेली
अन्धाने जन्म आय्यो छे

(तएण कणगरहे राया तीसे मङ्गलियाए दारियाए नीहरण करेड, नहूणि
लोडयाइ मयकिच्चाइ करेड करित्ता कालेण विगयसोए जाए)

ઇત્યુક્ત્વા પોદિલાયાઃ પાર્શ્વે 'નિકિવિયઃ' નિશિપતિ=સ્થાપયતિ, તથા પોદિ
લાયાઃ પાર્શ્વત્ તા 'વિનિહાયમાવશ્નિય' વિનિગ્રાતમાવશ્નિય=મૃતો દારિકા શૃદ્ધાતિ,
ગૃહીત્વા ઉત્તરીયેણ પિદધોતિ, પિધાય અન્નઃ પુરસ્ય પ્રપન્નાગ્રેણ અન્નમગ્નિગ્નિતિ, અન્ન
પ્રવિશ્ય યગ્નૈય પદ્માવતી દેવી તગ્નૈય ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પદ્મસ્ત્યાઃ દેવ્યાઃ
પાર્શ્વે સ્થાપયતિ, સ્થાપયિત્વા તામ્ 'પદિનિગ્મણ' પ્રવિનિર્ગતઃ પ્રતિનિર્ગત્ય સ્વપ્ન

મમ ય પદમાવર્ષે ય આહારે ભવિસ્સત્તિ કદદુ પોદિલાય પાસે નિ
કિલ્લવઢ, નિકિલ્લવિત્તા પોદિલાઓ પાસાઓ વિનિહાયમાવશ્નિય દારિય
ગેળ્લ, ગેળ્લિત્તા ઉત્તરિજ્જેણ પિહેઢ પિહિત્તા, અતેરસસ અવહારેણ
અણુપ્પવિસહ) હસ તરહ ક્રમશઃ ઘૃદ્ધિગત હોના છુઆ યદ્દ ધાલક જય
ધાલ્યાવસ્થા સે રહિત હો જાવેગા તો હમારા લુમ્પારા ઓર પદ્માવતી દેવી
કા આધાર હોગા, એસા કહકર ઉસ તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને ઉસ પુત્ર કો
પોદિલા કે પાસ રલ્લ દિયા । ઓર પોદિલા કે પામ સે મરી છુઈ કન્યા
કો ઉઠા લિયા-ઉઠાકર ઉસે અપને ઉત્તરિયવલ્લ સે ઢંક લિયા, ઢંક કર
ફિર અ ત. પુર કે પિઝલે દરવાજે સે વહા આયા (અણુપ્પવિસિત્તા જેનેવ
પદમાવર્ષે દેવી તેનેવ ઉવાગચ્છઢ, ઉવાગચ્છિત્તા પદમાવર્ષે દેવીય પાસે
ઠાવેઢ, ઠાવિત્તા જાવ પદિનિગ્મણ) વહા આકર જહા પદ્માવતી દેવી થી
વહા પઢુંચા, વહાં પઢુંચ કર ઉસને ઉસ મૃત કન્યા કો પદ્માવતી દેવી કે

(તપ્પણ ઇસ દારણ ઉમ્મુવકગાલભાવે તવ ય મમ ય પદમાવર્ષે ય આહારે
ભવિસ્સત્તિ કદદુ પોદિલાય, પાસેનિકિલ્લવઢ, નિકિલ્લવિત્તા પોદિલાઓ પાસાઓ
વિનિહાયમાવશ્નિય દારિય ગેળ્લ, ગેળ્લિત્તા ઉત્તરિજ્જેણ પિહેઢ, પિહિત્તા, અતેરસસ
અવહારેણ અણુપ્પવિસહ)

અને આ રીતે અનુક્રમે ચોટો થતો આ બાળક જનારે અથપજી વટાવીને
'શુવાન થઈ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીના આધાર
થશે આ પ્રમાણે જહીને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે બાલકને પોદિલાની પાસે
મૂકી દીધો અને પોદિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી
ઉપાડીને તેને પોતાના ખેસથી ઢાકી દીધી અને ત્યારપછી તે રણુવાસના પાઠલા
બારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમા ગયો.

(અણુપ્પવિસિત્તા જેનેવ પદમાવર્ષે દેવી તેનેવ ઉવાગચ્છઢ, ઉવાગચ્છિત્તા,
પદમાવર્ષે દેવીય પાસે ઠાવેઢ, ઠાવિત્તા જાવ પદિનિગ્મણ)

ત્યા જહીને જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા ગયો અને ત્યા પડોથીને તેણે
તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામા મૂકી દીધી અને ત્યા
મૂકીને તે ત્યાથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘેર આવી ગયો.

अस्माकमेव दारकः स्नकरयत्य राज्ये जातः, 'त' तस्मान् भवतु खलु दारको नाम्ना 'स्नकध्वजः' इति । अनन्तरमपि दारकः क्रमेण वृद्धिं गच्छन् यावद् 'भोगसमर्थे जाय' भोगममर्थे जात = तारुण्य प्राप्त इत्यर्थः ॥ सू० ५ ॥

मूलम्—तएणं सा पोष्टिला अन्नया कयाई तैत्तलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था, नेच्छइ य तैत्तलिपुत्ते पोष्टि लाए नाम गोत्तमवि सवणयाए, किपुणदारिसणं वा परिभोग वा ? । तएण तीसे पोष्टिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था—एव खलु अह तैत्तलिस्स पुर्व्वि इट्ठा ५ आसि इयाणि अणिट्ठा ५ जाया, नेच्छइ य तैत्तलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोग वा ओहयमणसकप्पं जाव झियायइ । तएण तैत्तलिपुत्ते पोष्टिल ओहयमणसकप्प जाव झियायमाणि पासइ, पासित्ता एव वयासी—मा णं तुम देवाणुप्पिया । ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि । तुम च णं मम महाणससि विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता वहूणं

भारी उत्सव किया । तथा भोजन आदि द्वारा मित्र ज्ञाति द्वारा प्रमुख जनों का सत्कार सम्मान करके फिर उसने उनके समक्ष इस प्रकार कहा—यह हमारा पुत्र कनक रथ राजा के राज्य में उत्पन्न हुआ है—इस लिये यह “कनकध्वज” इस नामसे प्रसिद्ध होवे । इस के बाद यह पुत्र क्रमशः वृद्धिगन्त हुआ यावत्—भोग समर्थ हो गया—अर्थात् जवान युवा—बन गया ॥ सू० ५ ॥

सुधी लारे अत्तमव उज्जये तेमज्ज भोजन वगेरेयी मित्र ज्ञानि वगेरे प्रमुख लोकानां सत्कार अने सम्मान करीने तेहे तेजानी समक्ष आ प्रभाषे कहु के आ आभारे पुत्र राजा कनक रथना राज्यमा उत्पन्न थये छे जेथी जे “कनकध्वज” नामे प्रसिद्ध थाय त्याग पछी ते कनकध्वज समर्थ यथायथा धीमे धीमे मोटे थता यावत् लोग स र्थ धर्ष गये ओटवे के जवान थर्ष गये ॥ सू० ५ ॥

कालेन समये व्यतीते 'विगयसोण' विगतशोकः=शोकशून्यो जात' । ततः सदा
स तेतलिपुत्र कौटुम्बिकपुरुषान् वाञ्छयति, वाञ्छयित्वा एवमादत्- 'स्त्रिषामेव'
क्षिमेव 'चारगसोहण' चारगशोधन=चन्द्रीजनमोक्षण याग्यमानो मानवर्द्धनम्
पुत्रजन्मोत्सवनिमित्तक राजकर्मचारिणां चेतनगृह्यादिना सत्कारमम्मानवर्द्धन
कुरुते, इत्येव रूपामाज्ञां दत्त्वा सत्य 'ठिङ्गडिय' स्थितिपतिता कुलमर्यादान्तर्गता
पुत्रजन्मनिर्देशदिससप्तम्यमहोत्सवस्पर्षा प्रक्रिया करोति । पुनश्चाशनाग्निना मित्र
ज्ञातिप्रमुखान् सत्कृत्य सम्मान्य तत्पुत्र एव वक्ष्यति- 'जम्हाण' यस्मात्सर्व

'कन्या का निर्हरण-उमठान में छे जाना-क्रिया । निर्हरण कर के फिर
अनेक लौकिक मृतकृत्य क्रिये । मृत कृत्य कर चुकने के बाद धीरे २
घे विगत शोक हो गये । (तएणसे तेतलिपुत्ते कौटुम्बिकपुरिसे सदा-
वेइ, सदावित्ता एव वयासी-स्त्रिषामेव चारगसोहण जाय ठिङ्गडिय
जम्हाण अम्हें एस दारण कणगरहस्म रज्जे जाए त होउण दारण नामेण
कणगज्झाए जाव भोगसमत्थे जाए) इस के बाद तेतलिपुत्र अमात्यने
कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-शीघ्र
ही तुम लोग चारक शोधन करो-चन्द्रीजनों को मुक्त करो यावत् मानो-
ष्मन का वर्द्धन, और पुत्र जन्मोत्सव के निमित्त को लेकर राज कर्म
चारिय के चेतन की वृद्धि आदि करके उनके सम्मान का वर्द्धन करो-
इस प्रकार आज्ञा देकर स्वयं उस तेतलिपुत्र अमात्यने अपनी कुल
मर्यादा के अनुसार पुत्र का जन्म होने के कारण दश दिवस तक बड़ा

आ धीते सेभना सुभथी आ वात साभणीने कनकस्थ राज्ञे ते भरेली
कन्याने श्मशानभा पडोआडी अने त्याग्याह तेबु भरेणु पछीनी धणी कियाओ
पूरी करी भरेणु कियाओने पताच्या पछी राज्ञ कनकस्थ धीमे धीमे शोक
शब्दित थय गथा

(तएणें से तेतलिपुत्ते कौटुम्बिकपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-
स्त्रिषामेव चारगसोहण जाव ठिङ्गडियं, जम्हाण अम्ह एस दारण कणगरहस्स
रज्जे जाए त होउणें दारण नामेण कणगज्झाए जाव भोगसमत्थे जाए)

त्याग्याह तेतली पुत्र अमात्ये पोताना कौटुम्बिक पुरुषोंने जोलाव्या
अने जोलावीने तेभने आ प्रभाबु कहुं के-तमे लोको सत्वर चारक शोधन
करे-ओठवे के जेलाआनामाथी केहीओने छोडी भूको यावत् भानोभानतुं वर्द्धन
तेभन पुत्र जन्मोत्सव पहल राजकर्मचारीओना पगार वगेरेनी वृद्धि करीने
सेभना स भानतु वर्द्धन करे आ रीते कौटुम्बिक पुरुषोंने आज्ञा आपीने
तेतलिपुत्रे जते पोतानी कुल मर्यादा सुगुण पुत्र जन्म होवा पहल दश दिवस

त्तकालसमए' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमे भागे 'इमेयारूवे' अय
मेतद्वृषः=वक्ष्यमाणप्रकारः 'अज्झत्थिए जाव' आध्यात्मिको यावत् मनोगत
सकल्पः 'समुप्पजित्था' समुदपद्यत, सकल्पप्रकारमाह-एव खलु अह 'तेतलिस्स'
तेतलेः=तेतलिपुत्रस्यामात्यस्य पूर्वम् इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा
'आसि'=आसम्, परन्तु 'इयारिणि' इदानीम् अनिष्टा यावद्-अमनोऽमा जाता।
नेच्छति च तेतलिपुत्रः मम नाम यावत् परिभोग वा=मम नाम गोत्रमपि श्रोतु
नेच्छति किंपुनर्मम दर्शनं मया सह परिभोग वा। इत्यमेवापोट्टिला 'ओहय-
मणसकप्पा' अपहतमनः सकल्पा=अपहतो=दुःखावेगवशाद् रुद्धो, मनः सकल्पो=
मानसिको निचरो यस्या सा, 'जावझियायड' यावद् व्यायति=यावदार्त्तव्यान
करोति। ततः खलु तेतलिपुत्र पोट्टिलामपहतमनः सकल्पा 'जाव झियायमारिणि'

या कयाह पुब्बावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्प-
जित्था) जन पोट्टिलाने अपनी तरफ तेतलि पुत्र अमात्य की इतनी
अधिक उपेक्षा-अनादरता देखी तो एक दिन किसी समय उसे रात्रि
के मध्यभाग में इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प
उत्पन्न हुआ-(एव खलु अह तेतलिस्स पुत्ति इद्धा ५ आसिं, इयारिणि
अणिट्ठा ५ जाया नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोग वा ओ
हयमणसकप्पा जाव झियायड) में तेतलि पुत्र अमात्य के लिये पहिछे
इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी, परन्तु इस समय मे-उन्हे
अनिष्ट यावत् अमनोम बन रही हैं। वे तेतलि पुत्र अमात्य देखने और
परिभोग करने की तो बात श्रौन कहे मेरे नामगोत्र तक को भी सुनना
पसद नहीं करते हैं। इस तरह वह अपहतमनसकल्प हाकर यावत्

अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था)

न्यारे अमात्य तेतलिपुत्रने पोट्टिला ओ चाताना प्रत्ये आटली भधी
उपेक्षा अने अनादरता नेछे त्यारे ठोछे वण्णते ओउ द्विपस रात्रिना मध्यमा
गमा तेना मनमा आ नतने आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न येथा डे

(एव खलु अह तेतलिस्स पुत्ति इद्धा ५ आसिं इयारिणि अणिट्ठा ५ जाया
नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव झियायड)

पडेथा हु तेतलिपुत्र अमात्यने भाटे छि, कात, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम
हती पणु डमणु हु तेमना भाटेअनिष्ट यावत् अमनोम यऽ पडी छु तेतलि
पुत्र अमात्य न्यारे मारु नाम गोत्र सुद्धा मालगवु छिन्ता नथी त्यारे भारी
साथे नेवान्नी अने भारी साथे परिखोगनी तो बात न शी करवी ? आ रीते
ते पोट्टिला अपहत मन सकल्प थडने यावत् आन ध्यान करती भेडी हती

समणमाहण जाव वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि। तएण सा पोट्टिला तेतलिपुत्तेणं एवं वुत्तासमाणा हट्ठतुट्ठा तेयलिपुत्तस्स पयमट्ठं पडिसुणिता, कल्लाकल्लि महाणससि विपूल असण जाव दवावेमाणी विहरड ॥सू०६॥

टीका—'तएण' इत्यादि। ततः मल्ल म पोट्टिला अन्यदा कदाचित् केनापि कारणेन तेतलिपुत्रस्य अनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोशा, अमनोष्मा जाता चाप्यऽभूत्। नेच्छति च तेतलिपुत्रः पोट्टिलाया नाम गोत्रमपि 'सवण याए' श्रमणतायै=श्रूयतेऽनेनेति श्रमणं कर्म, तस्य कर्म श्रमणता तस्य, श्रमण विषयोक्तुम् इत्यर्थं किं पुन तस्या 'दरिसण वा' दर्शन वा तथा महपरिभोग वा, वाञ्छेत, अपितु न। तत खलु तस्याः पोट्टिलाया अन्यदा कदाचित् पुनरुत्तावर

तएण सा पोट्टिला इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा पोट्टिला) वह प्रधानकी स्त्री पोट्टिला (अन्नया कयाइ) किसी समय—कोई निमित्त को लेकर—किसी भी कारण से—(तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा जाया यावि होत्था) तेतलिपुत्र के लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एवं अमनोम जन गई। (जे च्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसण वा परिभोग वा) इस प्रकार वह तेतलिपुत्र उस पोट्टिला के नाम गोत्र तक को भी सुनना पसंद नहीं करता तो फिर उसके देखने और परिभोग पास जाने की तो बात ही क्या है। (तएण तीसे पोट्टिलाए अन्न

तएण सा पोट्टिला इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार पडी (सा पोट्टिला) ते अभात्यनी पत्नी पोट्टिली (अन्नया कयाइ) डोर्ध वणते गभेते कारखे (तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था) तेतलि पुत्रने भाटे अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय अमनोज्ञ अने अमनोम थर्ध पडी

(जे च्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसण वा परिभोग वा)

अथी तेतलिपुत्र अभात्यने तेनु नाम जेन मुद्धा साअणधु पथु पसद पत्तु न डुत्तु त्थारे तेने जेवानी अने तेनी पासे जेवानी तो बात जे शी?

(तएण तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइ पुग्गावरत्तकालममयसि इमेयारुवे

पोट्टिला तेतलिपुत्रेण 'ए' पूर्वोक्तप्रकारेण उक्ता सती हृष्टतुष्टा तेतलिपुत्रस्य 'एयमट्ट' एतमर्थम्=अन्नदानरूपमभिप्राय 'पडिसुमइ' प्रतिश्रुणोति=स्वीकरोति, 'पडिसुणिता' प्रतिश्रुत्य=सोऽकृत्य, 'करलाकळि' कल्याण्य=वतिदिनम्, महा-
नसे विपुलम् 'असण जाव' अशन यावत्=अशनपानखाद्यस्वाद्य चतुर्विधमाहार
मुपस्कार्य ददती च 'दवावेमाणी' दापयन्ती च विहरति ॥ ६ ॥

मूलम्—तेणं कालेण तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ
ईरियासमियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरि-
वाराओ पुव्वाणुपुव्वि० चरमाणागामाणुगाम दुइज्जमाणा जेणामेव
तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता, अहापडि-
रूवं उगगहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हिता, सजमेणं तवसां अप्पाणं
भावेमाणिओ विहरति । तएण तासिं सुव्वयाणं अज्जाण एगेसंघा-
डए पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स
गिह अणुपविट्ठे । तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ
पासइ, पासित्ता, हट्टतुट्टा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, वदइ,
णमसइ, वदित्ता णमसित्ता, विउल असण जाव पडिलाभेइ, पडि-
लाभित्ता, एव वयासी—एवंखलु अहं अज्जाओ तेतलिपुत्तस्स पुव्वं

से दिलवाओ । इस तरह तेतलिपुत्र अमात्यने जब उस पोट्टिला से
कहा—तो वह बहुत अधिक प्रसन्न एवं सतुष्ट हुई । और उसने तेतलि-
पुत्रकी इस बातको मान लिया । मान करके वह प्रतिदिन भोजन शाला
में चारो प्रकार का आहार बनवा कर उसे अमण, माहण आदि जनोंके
लिये स्वयं देने लगी और दूसरों से दिलवाने लगी ॥ सू० ६ ॥

यावत् यायडाने पोते आचो अने णील्लओने हुकम करीने अपावे। तेतलि
पुत्र अमात्ये न्यारे आ प्रभावे पोट्टिलाने उल्लु त्यारे ते भूणञ्ज प्रसन्न तेभञ्ज
सतुष्ट यध गध अने तेवे तेतलिपुत्रणी आ वात स्वीकारी वीधी अने ते
दरदोण सोज्जन शाणामा यारे नतना आहारो जनावडावीने श्रमवु प्राद्ववु
पगेरे ने पोते आहार आपवादागी अने णील्लओ द्वारा अपाववा लागी सूद

યાવદ્ધ્યાયન્તીમ્=યાવદર્શન્યાન કરું તો પડ્યો, છટ્ટા અમાદન-મા સહુ ત
 હે દેવાનુપ્રિયે ! અપહતમનઃ સમૃત્પા 'જાવ જિયાદિ' યાવદ્ધ્યાય=યાવદર્શન્યાને
 માકુરુ । હે દેવિ । ત્વ ચ સ્વલુ મમ 'મહાણસમિ' મહાનસે=મોજનશાલાયા
 વિપુલમ્ 'અસણ જાવ' અસન યાવત્=મજનપાન સ્વાદિમ સ્વાદિમ ચતુર્વિધમાહારમ્
 'ઉવક્લઢાવેદિ' ઉપસ્કારય, 'ઉવક્લઢાવિત્તા' ઉપસ્કાર્ય 'વહૂણ સમણ મારણ
 જાવ વળીપગાણં' વહુમ્ય શ્રમણનામણ યાવત્ પનીપકેમ્ય=પાનકેમ્ય, સ્વયં
 દેયમાણી 'દદતી ચ, અન્યૈઃ 'દવાવેમાણી' દાવન્તી ચ વિહર । તત્ સ્વલુ સા

આર્તધ્યાન કર રહી થી-(તણ તેતલિપુત્તે પોટિલ ઓહયમણસંકલ્પ
 જાવ જિયાયમાણિ પાસઢ, પાસિત્તા અવયાસી માણ તુમ દેવાણુપ્પિયા
 ઓહયમણસકલ્પા જાવ જિયાદિ, તુમ ચ ન મમ મહાણસસિ વિઝલ
 અસણપાણ સ્વાહમ સાહમ ઉવક્લઢાવેદિ, ઉવક્લઢાવિત્તા વહૂણ સમ-
 ણ મારણ જાવ વળીપગાણ દેયમાણી ય દવાવેમાણી ય વિહરાદિ, તણ
 સા પોટિલા તેતલિપુત્તેણ અવ વુત્તા સમાણા હટુ તુટ્ટા તેયલિપુત્તસ્સ
 અમમઢ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા કલ્લાકલ્લિ મહાણસસિ વિપુલ અસણ
 જાવ દવાવેમાણી વિહરહ) ડતને મે તેતલિપુત્ત ને ઉસ અપહતમનઃ
 સકલ્પ હોકર આર્તધ્યાન કરતી હુહ પોટિલા કો દેવા-તો દેવકર ઉસને
 ઉસસે કહા-હે દેવાનુપ્રિયે તુમ અપહતમન સકલ્પ હોકર આર્તધ્યાન
 મત કરો-તુમ તો મેરી મોજનશાલા મેં વિપુલમાત્રા મેં અગન, પાન,
 સ્વાદિમ અવ સ્વાદિમ હસ તરહ ચતુર્વિધ અહાર ધનવાઓ ધનવાકર ઉસે
 અનેક શ્રમણ બ્રાહ્મણ યાવત્ યાચકજનોં કે લિયે સ્વયં દો ઓર દૂસરોં

(તણ તેતલિપુત્તે પોટિલ ઓહયમણસકલ્પ જાવ જિયાયમાણિ પાસઢ
 પાસિત્તા અવયાસી માણ તુમે દેવાણુપ્પિયા ઓહયમણસકલ્પા જાવ જિયાદિ, તુમ
 ચ ન મમ મહાણસસિ વિઝલ અમણપાણ સ્વાહમ સાહમ ઉવક્લઢાવેદિ, ઉવક્લઢાવિત્તા
 વહૂણ સમણમારણ જાવ વળીપગાણ દેયમાણી ય દવાવેમાણી ય વિહરાદિ તણ સા
 પોટિલા તેતલિપુત્તેણ અવ વુત્તા સમાણા હટુતુટ્ટા તેયલિપુત્તસ્સ અમમઢ પહિસુણેહ,
 પહિસુણિત્તા કલ્લાકલ્લિ મહાણસસિ વિપુલ અસણ જાવ દવાવેમાણી વિહરહ)

આટલામા અપહતમન સકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન કરતી તે પોટિલાને
 અમાત્ય તેતલિપુત્તે બેઠ અને બેઠને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે દેવાનુપ્રિયે !
 તમે અપહતમનસકલ્પ થઇને આર્તધ્યાન કરો નહિ-તમે મારી લોજન
 શાળામા બેઠને પુઠકા પ્રમાણમા અગન, પાન, સ્વાદિમ અને સ્વાદિમ આમ
 ચાર બીજા આહારો બનાવડાવો અને બનાવડાવીને તેને ધણુ થ-

पोट्टिला तेतलिपुत्रेण 'एव' पूर्वोक्तप्रकारेण उक्ता सती दृष्टतुष्टा तेतलिपुत्रस्य 'एवमदृ' एतमर्थम्=अन्नदानरूपमभिप्राय 'पडिसुमइ' प्रतिश्रुणोति=प्रीकरोति, पडिसुणिता 'प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'करलाकलि' कल्याण्य=प्रतिदिनम्, महा-
नसे विपुलम् 'असण जाव' अशन यावत्=अशनपानखावस्त्राय चतुर्विधमाहार
सुपस्कार्य ददती च 'दावेमाणी' दापयन्ती च विहरति ॥ ६ ॥

मूलम्—तेण कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नाम अज्जाओ
ईरियासमियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरि-
वाराओ पुव्वाणुपुव्वि० चरमाणागामाणुगाम दुइज्जमाणा जेणामेव
तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता, अहांपडि-
रूव उगगहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हिता, संजमेणं तवसा अप्पाणं
भावेमाणिओ विहरंति । तएण तासिं सुव्वयाणं अज्जाण एगे सघा-
डए पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स
गिहं अणुपविट्ठे । तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ
पासइ, पासित्ता, हट्ठुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, वदइ,
णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता, विउलं असण जाव पडिलाभेइ, पडि-
लाभित्ता, एव वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ तेतलिपुत्तस्स पुव्वं

से दिलवाओ । इस तरह तेतलिपुत्र अमात्यने जब उस पोट्टिला से
कहा—तो वह बहुत अधिक प्रसन्न एव सतुष्ट हुई । और उसने तेतलि-
पुत्रकी इस बातको मान लिया । मान करके वह प्रतिदिन भोजन शाला
में चारो प्रकार का आहार बनवा कर उसे श्रमण, माहण आदि जनोंके
लिये स्वयं देने लगी और दूसरों से दिलवाने लगी ॥ सू० ६ ॥

यावत् यावडेने पोते आपो अने णील्लओने हुकम कगीने अपावे। तेतलि
पुत्र अमात्ये न्यारे आ प्रभावे पोट्टिलाने कल्लु त्थारे ते भूणञ्ज प्रसन्न तेमञ्ज
सतुष्ट थध गध अने तेवे तेतलिपुत्रनी आ वात स्वीकारी वीधी अने ते
हररेअ लोअन शाणाभा त्थारे लतना आहारो णनावडावीने श्रमण्ण आहण्ण
माहार आपवालागी अने णील्लओ द्वारा अपाववा लागी सूइ

इट्ठा ५ आसि, इयाणि अणिट्ठा ५ जाव दसण वा परिभोगं वा,
 तं तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ
 बहूणि गामागर जाव आहिडह बहूणं राईसर जाव गिहाइ
 अणुपविसह, त अत्थि आइ भे अज्जाओ । केइ कहिंचि चुन्न
 जोए वा मंतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्ढावणे वा काउ
 डुवणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा
 भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली वल्ली, सिलिया वा गुलिया वा
 ओसहे वा भेसजे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्तस्स
 पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि । तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए
 एव वुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कच्चे ठवेति ठवित्ता,
 पोट्टिल एव वयासी-अम्हे ण देवाणुप्पिया । समणीओ निगं-
 थिओ जाव गुत्तवभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्प-
 यारं कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमग पुण उवदिसित्तए वा
 आयरित्तए वा ? अम्हेणं तव देवाणुप्पिया । विचित्त केवलि-
 पन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो । तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ
 एव वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ । तुम्ह अतिए केवलिपन्नत्त
 धम्म निसामेत्तए, तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्त
 धम्म परिकहेति । तएण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म
 हट्ठुट्ठा एव वयासी-सइहामि णं अज्जाओ । णिगंथ पावयण
 जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अह तुब्भ अतिए
 पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पाडिवाज्जित्तए, तएण

सा पोष्टिला तासि अज्जाण अतिए पचाणुव्वइय जाव गिहि-
धम्म पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ णमसइ, वडित्ता णे-
मंसित्ता पडिविसज्जेइ । तएणं सा पोष्टिला समणोवासिया
जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तेण कालेण’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सुव्रतानाम्
आर्या ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यो बहुश्रुता बहुपरिवाराः ‘पुत्राणुव्वि’
सुव्रतपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया विचरन्त्य ‘जेणामेव’ यत्रैव तेतलिपुर नगर तत्रैवो-
पागच्छति, उपागत्य ‘अहापडिरूव’ यथाप्रतिरूपम्=यथाकल्पम् ‘उग्गह’
अवग्रहम्=व्रमत्यर्थमाज्ञाम् ‘उग्गिण्हति’ अगृह्णन्ति=याचन्ते, अगृह्य ‘सजमेण’
समयेन सप्तदशभिरेन, ‘तवसा’ तपसा द्वादशविधेन आत्मान भावयन्त्यो

‘तेण कालेण तेण समएण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समयमें
(सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ
बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वानुपुव्वि० जेणामेव तेयलिपुरे णयरे तेणेव
उवागच्छइ) सुव्रता नामकी आर्या तीर्थंकर परपरा के अनुसार विहार
करती हुइ उस तेतलिपुर नगर में आई । ये ईर्यासमिति आदि पाच
समितियों की पालक थीं—गुप्त ब्रह्मचारिणी थीं । बहुश्रुत थी । अनेक
परिवार से युक्त थीं । (उवागच्छित्तो अहा पडिरूव उग्गह उग्गिण्हति,
उग्गिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणीओ विहरति तएणं

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये
(सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ बहुस्सु
याओ बहुपरिवाराओ पुव्वानुपुव्वि० जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छइ)
सुव्रता नामकी आर्या तीर्थंकर परपरा मुज्जम विहार करती तेतलिपुर
नगरमा आवी ते ईर्यासमिति वगेरे ५ (पाच) भमितियोंनु पावनकरनारी
हुती तेमज्ज शुभ ब्रह्मचारिणी हुती ते बहुश्रुत तेमज्ज वषा परिवारे थी
थी टणायेली हुती

(उवागच्छित्ता अहापडिरूव उग्गह उग्गिण्हति, उग्गिण्हित्ता सजमेणं तवसा

इडा ५ आसि, इयाणि अणिट्टा ५ जाव दसण वा परिभोगं वा,
तं तुब्भेणं अज्जाओ सिम्बिखयाओ बहुनायाओ बहुपट्टियाओ
बहुणि गामागर जाव आहिडह वहुणं राईसर जाव गिहाइ
अणुपविसह, त अत्थि आइ भे अज्जाओ । केइ कहिंचि चुन्न-
जोए वा मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्ढावणे वा काउ
डुवणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा
भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली वल्ली, सिलिया वा गुलिया वा
ओसहे वा भेसजे वा उवलद्धुपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्तस्स
पुणरवि इटा ५ भवेज्जामि । तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए
एव वुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कस्से ठवेति ठवित्ता,
पोट्टिल एव वयासी-अम्हे ण देवाणुप्पिया । समणीओ निग्गं-
थिओ जाव गुत्तवभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्प-
यार कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमग पुण उवदिसित्तए वा
आयरित्तए वा ? अम्हेणं तव देवाणुप्पिया । विचित्त केवलि-
पन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो । तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ
एव वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ । तुम्ह अतिए केवलिपन्नत्त
धम्म निसामेत्तए, तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्त
धम्म परिकहेति । तएण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म
हट्टुट्टा एव वयासी-सद्दहामि णं अज्जाओ । णिग्गंथ पावयण
जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अह तुब्भ अतिए
पच्चाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पाडिवाज्जित्तए, तएण

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यत्वा, विपुलमशनपानस्वाद्यस्वाद्यरूपं चतुर्विधमाहार
'पडिलाभेद' प्रतिगम्यति=ददाति, प्रतिलम्ब्य, एवमपदत्-एव खलु अहं हे
आर्याः ! तैत्तिरीयस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम्,
परन्तु 'इयार्णि' इदानीम् 'अणिष्टा' जाव दंसर्णं परिभोगं वा' अनिष्टा यावत्
दर्शनं परिभोगं वा=साम्प्रत तैत्तिरीयस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा,
अमनोऽमा जाता, तस्मादेव तैत्तिरीयो मम नामगोत्रमपि श्रोतुं नेच्छति, किं
पुनर्हं आर्याः ! स मम दर्शनं मया सह परिभोगं वा कथं गच्छेत् ? । 'त तुभ्येण

अभुष्टेह' देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से
उठी (अभुष्टित्वा वदह णमसह, वदित्वा, णमसित्वा विव्रल अमण जाव
पडिलाभित्ता एव वयासी) उठकर उसने उसको बदना की-नमस्कार
किया। वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें विपुल मात्रा में अशन
पान आदि चतुर्विध आहार दिया-और दे कर वह इस प्रकार करने
लगी-(एव खलु अह अज्जाओ। तैत्तिरीयस्स पुव्व इद्वा ५ आसि,
इयार्णि अणिष्टा ५ जाव दंसर्णं वा परिभोगं वा-त तुभ्येण अज्जाओ
सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपटियाओ बहुणि गामागार जाव अहिं-
डह, बहुणं राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ) हे आर्याओ ! पहिले मैं
तैत्तिरीय अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव
मनोम थी परन्तु अब इस समय मैं उनके लिये अनिष्ट, अकान्त,
अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोम बन रही हूँ। वे मेरा नाम गोत्र तक
भी सुनना पसंद नहीं करते हैं तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

(अभुष्टित्वा वदह णमसह, वदित्वा, णमसित्वा विव्रल अमण जाव पडिलाभेद
'पडिलाभित्ता एव वयासी')

जैसी थहने तेछे तेभने नभन कथां वदन अने नभन करीने तेछे तेभने
पुष्कण प्रमाणमा अरान, पान वगेरे आर जतना आहारो आप्या अने
आपीने ते आ प्रमाणे छेवो लागी ठे—

(एव खलु अह अज्जाओ। तैत्तिरीयस्स पुव्व इद्वा ५ आसि, इयार्णि ५
दंसर्णं वा परिभोगं वा त तुभ्येण अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपटि-
याओ बहुणि गामागार जाव अहिंडह, बहुणं राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ)

हे आ-र्याओ ! हु पडेला तैत्तिरीय अमात्यना भाटे पूष ४ छट, कात,
प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम छती पणु छेवे हु तेभना भाटे अनिष्ट, अकात,
अप्रिय, अमनोज्ञ अने अमनोम थर्ध पडी छु तेज्जो भारा नाम गोत्र सुद्धा
सामणना छेवता नथी त्यारे भारी सामे परिभोग करवानी अने भने जेवानी

विहरन्ति । तत खलु तासा सुव्रतानामार्याणामेकः सघाटकः प्रथमाया पौरुष्याम् स्वाध्याय=प्रप्रमृत्पठनरूप करोति, 'जात्र अडमाणे' यात्र इत्यादि, यात्र उच्चात् 'द्वितीयस्यां पौरुष्या सूत्रार्थचिन्तनरूप ध्यान करोति, तृतीयस्यां पौरुष्यां सुव्रतामार्यामापृच्छ्य उच्चनीचमध्यमकुलेषु गृहमागुदानिकमिक्षार्थमटन् इत्यर्थो बोध्यः, तेतलेगृहमनुप्रविष्टः । तत खलु सा पोष्टिला ताः सघाटकस्या आर्या एजमानाः पश्यति, दृष्ट्वा, हृष्टतुष्टा आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय उन्दते

तासि सुव्रायाण अज्जाणं एगे सघाडण पढमाण पोरिसीण सज्जाय करेइ, जात्र अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे) वहा आ कर उन्हांने यथाकल्प ठहरने की आज्ञा मागी-मांग कर फिर वे १७ सतरह प्रकारके समय और १२ बारह प्रकार के तपसे अपने आपको चामित करती हुई ठहर गई । इन सुव्रता आर्या का एक सघाटक था जो प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करता-द्वितीय पौरुषीमें सूत्रार्थका चिन्तनरूप ध्यान करता और तृतीय पौरुषीमें सुव्रता आर्या की आज्ञासे ऊँच नीच एवं मध्यम कुलोंमें भिक्षा के लिये अटन करता । इस तरह वह सघाटक (सघाडा) तृतीय पौरुषीमें इन उच्चादि घरों में भिक्षार्थ अटन करता हुआ तेतलिपुत्र अमात्य के घर पर आया (तएण सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ वा सह) इनने में उस पोष्टिलाने उन सघाटकस्थ आर्याओं को ज्यों ही अपने घर पर आया हुआ देखा तो (वासित्ता हट्टतुट्ठा आसणाओ अ

अप्पाण मायेमाणीओ विहरति तएण तासि सुव्रायाण अज्जाण एगेसघाडण पढमाण पोरिसीण सज्जाय करेइ जात्र अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे) त्या आवीने तेमण्णे यथाकल्प (साधुकल्प प्रमाणे) रडेवानी आशा मागी अने त्यारपछी ते १७ जतना समय अने १२-जतना तप वडे पोता ॥ जतने वासित करता ते त्या देशाध सुव्रता आर्यानी अरे सघाटक डोने जे प्रथम पौरुषीमा स्वाध्याय करतो डोतो, द्वितीय पौरुषीमा सूत्रार्थनु चिन्तन रूप ध्यान करतो अने तृतीय पौरुषीमा सुव्रता आर्यानी आशा भेजवीने जिया, नीचा अने मध्यम कुलोमा गोयरी भाटे जाता डता आ प्रमाणे ते सघाटक तृतीय पौरुषीमा उपदेशत जिया वगेरे कुलोना घरोमा गोयरी भाटे करता करता तेतत्रिपुत्र अमात्यने त्या आये (तएण सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एज्ज माणीओ पासइ) पोष्टिलाअे ज्वारे सघाटकस्थ आर्याज्जाने पोताने घेर आवेवी जेध त्यारे ते (वासित्ता हट्ट तुट्ठा आसणाओ असुदडेइ) जेज्जने ते अणु अ प्रसन्न थई अने पोताना आगन्था जेवी थई

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, त्रिपुलमशनपानस्वाद्यस्वाद्यरूप चतुर्विधमाहार
'पडिलाभेड' प्रतिबन्धयति=ददाति, प्रतिबन्धय, एवमदत्-एव खलु अहं हे
आर्याः ! तैत्तिरीयसूत्रस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम्,
परन्तु 'इयार्णि' इदानीम् 'अणिट्ठा' जाव दसणं परिभोग वा' अनिष्टा यावत्
दर्शनं परिभोग वा=साम्प्रत तैत्तिरीयसूत्रस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा,
अमनोऽमा जाता, तस्मादेव तैत्तिरीयसूत्रो मम नामगोत्रमपि श्रोतुं नेच्छति, किं
पुनर्हं आर्याः ! स मम दर्शनं मया सह परिभोग वा कथं वाञ्छेत् ? । 'त तुब्भेण

व्स्सेह) देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से
उठी (अच्छुटित्ता बदह णमंसइ, वदित्ता, णमसित्ता विवल असण जाव
पडिलाभित्ता एव वयासी) उठकर उसने उसको बदना की-नमस्कार
किया । वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें त्रिपुल मात्रा में अशन
पान आदि चतुर्विध आहार दिया-और देकर वह इस प्रकार कहने
लगी-(एव खलु अहं अज्जाओ ! तैत्तिरीयसूत्रस्य पुत्र इह ५ आसि,
इयार्णि अणिट्ठा ५ जाव दसणं वा परिभोग वा-तं तुब्भेण अज्जाओ
सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपडियाओ बहुणि गामागार जाव अहिं-
डइ, वहुण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ) हे आर्याओ ! पहिले मैं
तैत्तिरीयसूत्र अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव
मनोमयी परन्तु अब इस समय मैं उनके लिये अनिष्ट, अकान्त,
अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोमय बन रही हूँ । वे मेरा नाम गोत्र तक
भी सुनना पसंद नहीं करते हैं तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

(अच्छुटित्ता बदह णमंसइ वदित्ता, णमसित्ता विवल असण जाव पडिलाभेड
पडिलाभित्ता एव वयासी)

जैली यधने तेले तेभने नमन कर्या वदन अने नमन करीने तेले तेभने
पुज्जण प्रमाणमा अरान, पान वजेरे आर जातना आहारो आभ्या अने
आपीने ते आ प्रमाणे छेवा लागी ठे—

(एव खलु अहं अज्जाओ ! तैत्तिरीयसूत्रस्य पुत्र इह ५ आसि, इयार्णि ५
दसण वा परिभोग वा तं तुब्भेण अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपडि-
याओ बहुणि गामागार जाव अहिंडइ, वहुण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ)

हे आर्याओ ! हे त्रिपुल तैत्तिरीयसूत्र अमात्यना भाटे भूषण छेव, कान्त,
प्रिय, मनोज्ञ अने मनोमयी होती पण छेव हे तेभना भाटे अनिष्ट, अकान्त,
अप्रिय, अमनोज्ञ अने अमनोमयी छेव पडी छे तेभना भाटे नाम गोत्र सुद्धा
साम्रणना छेवत्य नथी त्यारे भारी सामे परिभोग करवानी अने अने जेवानी

अज्जाओ ' इति, तत्=तस्मात् कारणात् यूयं खलु हे आर्याः ! ' मित्रिययाओ ' शिशिता=शिक्षां प्राप्ता, ' बहुणायाओ ' बहुज्ञाताः=अनेकशास्त्रज्ञाननिपुणः ' बहुपठियाओ ' बहुपठिता=नाताविधिविद्याकुशलाः स्थः पुनः ' बहुणि गामागर जाव अहिंदह ' बहुनि ग्रामाकर यावत् आदिण्डय=बहुपु ग्रामाकरनगरादिपु परि भ्रमण कुरुष । तथा च ' बहुण राईसर जाव गिहाइ अणुपविमइ ' बहुना राजेश्वर यावद् गृहाणि अनुपविशथ=हे आर्याः ! यूयं बहुना राजेश्वर तत्परत्रेष्ठि सेना-पत्यादीनां गृहे प्रवेश कुरुष, ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् ' अत्थि अइ मे अज्जाओ ! ' अस्ति आइ युप्पाकमार्या ! ' आइ ' इति वाक्यालङ्कारे देशी शब्दः । हे आर्याः ! अस्ति ' केइ कहिं चि ' कोऽपि कुत्रचित्=युप्पाक ज्ञानविषये ' चुन्नजोए वा ' चूर्णयोगो वा=चूर्णानां द्रव्यचूर्णानां योगः, स्तम्भनादिकर्मकारी, ' मतजोए वा ' मन्त्रयोगो वा=मन्त्राणां योगो व्यापारो वा वशीकरणादि मन्त्रयोग ' कम्मणजोए

और देखने की उनकी बात ही क्या कहें इस लिये हे आर्याओ ! आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं-अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं-बहुपठित हैं-नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं-अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती हैं, अनेक राजेश्वर आदिको के घरों में आती जाती रहती हैं (त अत्थिआइ मे अज्जाओ) तो हे आर्याओ ! (केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा) कहीं कोई चूर्ण योग - द्रव्य चूर्णों का स्तम्भनादि कर्मकारी योग (मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूहकम्मे वा मूले, कदे छल्ली, बल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भैसज्जे वा, उवलदपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्त स्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि) मन्त्र योग-वशीकरण आदि मन्त्रों का

तो बात क्या रही ? अथी हे आर्याओ ! तमे सी शिक्षिता हो, बहुज्ञाता हो-अटले के धृष्टा शास्त्रों का ज्ञानधी निपुण हो, बहुपठिता हो-अनेक नातनी विद्याओं का कुशल हो, धृष्टा ग्राम, आकर स्थानों का विहार करता रहे हो, अने धृष्टा राजेश्वर वगैरें का भेटले का आवण करता रहे हो (त अत्थि-आइ मे अज्जाओ) तो हे आर्याओ ! (केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा) क्याक गमे ते चूर्ण योग-द्रव्य चूर्णों का स्तम्भना वगैरें का योग,

(मतजोएवा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभि ओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूहकम्मे वा मूले कदे छल्ली बल्ली सिलिया, वा गुलिया वा, ओसहे वा, भैसज्जे वा उवलदपुव्वे वा जेणाह तेतलि पुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि)

वा 'कर्मणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, 'ह्रिय उद्वायणे वा'=हृदयो-
द्वायन वा=चित्तार्क्यकवस्तुविशेषो वा 'काउद्वायने वा' कायोद्वायन वा=शरीरा-
र्क्यकवस्तुविशेषो वा 'आभियोगिण वा' आभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो
वा, 'वशीकरणे वा' वशीकरण वा=वशीकरणयोगो वा, 'कौतुककर्म वा' कौतुक-
कर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा 'भूतिकर्म वा' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रित-
भस्मगलेषण वा तथा-औषधीना 'मूले' मूलम् 'कदे' कन्दः 'छल्ली' त्वक्
'लली' लता 'सिलिया वा' शिलिका=तृणविशेषः, 'गुलिया' गुलिका=
गुटिका 'ओसहे वा' भेसज्जे वा' औषध वा भैषज्य वा, इत्यादिक वस्तुजात
युष्माभिः उपलब्धपुत्रे' उपलब्धपूर्वम्=प्राप्तपूर्वम्, हे आर्याः । भवत्य एषु किमपि
उपलब्धपूर्वम् अवश्य भवेयुः, तत्कृपया मह्यमर्पय, 'जेगाह' येनाहम्, यत्सेवनादह
तैत्तिरीयस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोज्ञामनोऽमा भवेयम् । ततः खलु ता
आर्याः पोट्टिलाया एवमुक्ताः सत्यो द्वापि हस्तौ कर्णे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा

योग कामेण योग-उच्चाटन आदि मन्त्रो का योग हृदयोद्वायन-
चित्तार्क्यक वस्तु विशेष का योग, कायोद्वायन-शरीरार्क्यक वस्तु
विशेषका योग, आभियोगिक-पराभव करन का योग, वशीकरण-
वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग,
भूति कर्म-मन्त्रादि से अभिमन्त्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा
औषधियों के मूल, कद त्वक-छाल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष
गोली, औषध-भैषज्य इत्यादि वस्तुओं का योग आरके देखने में अलग
आया होगा-इस लिये कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हम
अवश्य-अवश्य प्रदान करें कि जिसमें म-जिम के सेवन से मैं-तैत्तिरीय
लिपुत्र को पुनरपि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोमयन जाऊँ (तएव
तामा अज्जाओ पाट्टिलाए एव मुक्ताओ समानाओ दावि हत्ये कन्ने ठवे ति,

मन्त्रयोग-वशाकरण वगैरे मन्त्रोना योग-कर्मणयोग, उच्चाटन वगैरे
मन्त्रोना योग, हृदयोद्वायन-चित्तार्क्यक वस्तु विशेषना योग, आभियोगिक-
पराभव करवाना योग, वशाकरण-वशीकरण योग, कौतुकर्म-सौभाग्यवर्द्धक
स्नान वगैरेना योग, भूतिकर्म-मन्त्र वगैरथा अभिमन्त्रित करीने लभ्य
(राशौडी) तु प्रक्षेपण रूप योग तेमज औषधीओना भूग, कद, त्वक (छाल)
तेनज लता, शिलिका-तृण विशेष ओली, औषध, भैषज्य वगैरे वस्तुओना
योग तानास ओनामा बाळस आये ज हये ओटला भाटे तमे कृपा करीने
ओमावा गमे ते योग मन बाळस आपा क ओना तेनथा हु करी तेतवि
यतनी छिः बात जिम यतनास यतने मनोम थर्ष लजि

अज्जाओ ' इति, तत्त=तस्मात् कारणात् यूय रासु हे आर्याः । ' मित्रिययाओ ' शिसिता=शिक्षां माता, ' बहुणायाओ ' बहुज्ञाताः=अनेकशास्त्रज्ञाननिपुणः । ' बहुपठियाओ ' बहुपठिता=नाताविधविद्याकुशलाः स्यः पुनः ' बहुणि ग्रामाग्र जाय अदिह ' बहुनि ग्रामाग्र यावत् आदिण्ठय=बहुपु ग्रामाकरनगरादिषु परि भ्रमण कुरुष्व । तथा च ' बहुण राईसर जाव गिहाइ अणुपयिमड ' बहुना राजेश्वर यावद् गृहाणि अनुपविश्य=हे आर्याः । यूय बहुना राजेश्वर तलपरश्रेष्ठि सेना-पत्यादीना गृहे प्रवेश कुरुष्व, ' त ' तत्त=तस्मात् कारणात् ' अत्थि अइ मे अज्जाओ । ' अस्ति आइ युप्मायमार्या । ' आइ ' इति वाक्यालङ्कारे देशी शब्दः । हे आर्याः । अस्ति ' केइ कहिं चि ' कोऽपि कुत्रचित्=युप्माय ज्ञानविषये ' चुन्नजोए वा ' चूर्णयोगो वा=चूर्णानां द्रव्यचूर्णानां योगः, स्तम्भनादिकर्मकारी, ' मतजोए वा ' मन्त्रयोगो वा=मन्त्राणां योगो व्यापारो वा वशीकरणादि मन्त्रयोग ' कम्मणजोए

और देखने की उनकी बात ही क्या कहें इस लिये हे आर्याओ । आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं—अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं—बहुपठित हैं—नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं—अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती हैं, अनेक राजेश्वर आदिकों के घरों में आती जाती रहती हैं (त अत्थिआइ मे अज्जाओ) तो हे आर्याओ । (केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा) कहीं कोई चूर्ण योग—द्रव्य चूर्णों का स्तम्भनादि कर्मकारी योग (मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उडावणे वा, काउडावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले, कदे छल्ली, बल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, मेसज्जे वा, उवलद्वपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्त स्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि) मन्त्र योग—वशीकरण आदि मन्त्रों का

तो बात क्या रही ? अच्छी हे आर्याओ तबे सौ शिक्षिता हो, बहुज्ञाता हो—अच्छे के धन शास्त्रों का ज्ञान भी निपुण हो, बहुपठिता हो—अनेक बातों की विद्याओं का कुशल हो, धन ग्राम, आकर स्थानों का विहार करता रहो हो, अने धन राजेश्वर वगैरें का मंडोला आवाज करता रहो हो (त अत्थि आइ मे अज्जाओ) तो हे आर्याओ । (केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा) क्या के गमे ते चूर्ण योग—द्रव्य चूर्णों का स्तम्भनादि कर्मकारी योग,

(मतजोएवा कम्मणजोए वा हिय उडावणे वा, काउडावणे वा अभि ओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली बल्ली सिलिया, वा गुलिया वा, ओसहे वा, मेसज्जे वा उवलद्वपुव्वे वा जेणाह तेतलि पुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि)

वा ' कर्मणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, ' ह्रिय उद्वावणे वा '=हृदयो-
द्वायन वा=चित्तार्पकवस्तुविशेषो वा ' काउद्वायने वा ' कायोद्वायन वा=शरीरा-
कर्पकवस्तुविशेषो वा ' आभियोगिण वा ' आभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो
वा, ' वशीकरणे वा ' वशीकरण वा=वशीकरणयोगो वा, ' कौतुककर्म वा ' कौतुक-
कर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा ' भूइकर्म वा ' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रित-
भस्ममन्त्रेण वा तथा-औषधीना ' मूले ' मूलम् ' कदे ' कन्दः ' छल्ली ' त्वक्
' बल्ली ' लता ' सिलिया वा ' शिलिका=तृणविशेषः, ' गुलिया ' गुलिका=
गुटिका ' जोसहे वा भेसज्जे वा ' औषध वा भेषज्य वा, इत्यादिक वस्तुजात
गुणमाभिः ' उपलब्धपुञ्चे ' उपलब्धपूर्वम्=प्राप्तपूर्वम्, हे आर्याः । भवत्य एषु किमपि
उपलब्धपूर्वा अवश्य भवेयुः, तत्कृपया मन्त्रमर्पय, ' जेगाह ' येनाहम्, यत्सेवनादह
तैत्तलिपुत्रस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोज्ञामनोऽमा भवेयम् । ततः खलु ता
आर्याः । पोडिलाया एवमुक्ताः । सत्यो द्वापि हस्तो कर्णे स्यापयन्ति, स्थापयित्वा

योग कर्मण योग-उच्चाटन आदि मन्त्रो का योग हृदयोद्वायन-
चित्तार्पक वस्तु विशेष का योग, कायोद्वायन—शरीराकर्पक वस्तु
विशेषका योग, आभियोगिक पराभव करन का योग, वशीकरण-
वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग,
भूति कर्म-मन्त्रादि से अभिमन्त्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा
औषधियों के मूल, कद तक-उल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष
गोली, औषध-भेषज इत्यादि वस्तुओं का योग आपके देखने में अवश्य
आया होगा-इस लिये कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हम
अवश्य-अवश्य प्रदान करें कि जिससे मैं-जिस के सेवन से मैं-तैत्त-
लिपुत्र को पुनरपि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोमय बन जाऊँ (तृण
तामा अज्जाओ पाडिलाए एवमुक्ताओ समानाओ दावि हत्थे कर्णे ठवे ति,

मन्त्रयोग-वशीकरण वगेरे मन्त्रोना योग-कामंलुयोग, उच्चाटन वगेरे
मन्त्रोना योग, हृदयोद्वायन-चित्तार्पक वस्तु विशेषना योग, आभियोगिक-
पराभव करवाना योग, वशीकरण-वशीकरण योग, कौतुककर्म-सौभाग्यवर्द्धक
स्नान वगेरेना योग, भूतिकर्म-मन्त्र वगेरथी अभिमन्त्रित करीने लम्भ
(राखोडी) तु प्रक्षेपण रूप योग तेमज्ज औषधीओना मूल, कद, त्वक (छाल)
तेमज्ज लता, शिलिका-तृण विशेष ओणी, औषध, भेषज्य वगेरे वस्तुओना
योग तानादा तेवामा याक्खस आओवा न हरी ओटला भाटे तसे कृपा करीने
ओमावा गमे ते योग मन थोक्कम आपा के जेना सेवनथा हु करी तेतवि
पुनरी त्ति । तत, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोमय थर्ह न्ति

પોટિલામ્ એવમવદન-યય સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયે ! શ્રમણ્યો નિર્ગ્રન્થ, યાયાઽપ્યનરગ્રન્થિ
રહિતા, યામ્ ગુણવદ્ધવારિણ્યઃ, નો સ્વલુ કલ્પતેઽસ્માકમ્ 'એયપ્પયાર' એતલ્લ-
કાર=મ્મણોરપિ 'નિસામેત્તણ' નિશામયિતુ=શ્રોતુ ન કલ્પતે इति પૂર્વેણ સમ્ભવ્યઃ ।
'અદ્ધ' इति સમ્પ્રોધને 'હે પોટિલે ! કિં=કય પુન. 'ઉવદિસિત્તણ વા 'ઉપદેશ્ચ
વા, સ્વયમ્ 'આયરિત્તણ વા' આચરિતુ યા કલ્પતે । ન કલ્પતેઽત્યર્થઃ, તથ સ્વલુ
તવ હે દેવાનુપ્રિયે ! વિચિત્ર કેવલિપક્કત્ત ધમ્મ પડિકથયામઃ । તતઃ સ્વલુ સા પોટિલા

ઠાવિત્તા પોટિલ એવ ચયાસી-અમ્હેણ દેવાણુપ્પિયા ! સમણીઓ નિગ્ગધીઓ
જાવ ગુત્તથમયારિણીઓ, નો સ્વલુ કલ્પઈ અમ્હ એયપ્પયારકન્નેહિ વિ
નિસામિત્તણ કિમગ ઉવદિસિત્તણ વા, આયરિત્તણ વા । અમ્હ ણ તવ
દેવાણુપ્પિયા ! વિચિત્ત કેવલિપક્કત્ત ધમ્મ પડિકરિઙ્ગામો) હસ પ્રકાર
તસ પોટિલા કે દ્વારા કહીં ગઈ ઉન આર્યાઓં ને અપને દોનોં કાનોંપર
હાથ રલ્લ લિયે-ઔર રલ્લ કર પોટિલા સે હસ પ્રકાર કહને લગીં-હે
દેવાનુપ્રિયે ! હમ તો નિર્ગ્રન્થ શ્રમણિયાં હૈ, નવ કોટિ સે પૂર્ણ બ્રહ્મચર્યકો
હમ પોલતી હૈં । હમૈં તુમ્હારી એસી ચાતે કાનોં સે સુનના ંધી કલ્પિત
નહીં હૈં તો ફિર હે પુત્રિ ! હમ હનકા ઉપદેશ તુમ્હેં કેસે દે સકતે હૈં-
ઔર સ્વય ંધી હનકા આચરણ કેસે કર સકતા હૈં । અર્થાત્ હન ચાતોં
કા ઉપદેશ દેના ઔર સ્વય હનકો અપને આચરણ મૈં લાના ચહ સબ
હમારે કલ્પ કે અનુસાર નિષિદ્ધ હૈં । હમ તો હે દેવાનુપ્રિયે ! તેરે હિતકે

(તણ તાઓ અજ્ઞાઓ પોટિલાએ એવુત્તાઓ સમાણીઓ દો વિ હત્યે કન્ને
ઁવતિ, ઠાવિત્તા પોટિલ એ ચયાસી અમ્હેણ દેવાણુપ્પિયા ! સમણીઓ નિગ્ગધીઓ
જાવ ગુત્તથમયારિણીઓ, નો સ્વલુ કલ્પઈ અમ્હ એયપ્પયારકન્નેહિ વિ નિસામિત્તણ
કિમગ ઉવદિસિત્તણ વા, આયરિત્તણ વા । અમ્હ ણ તવ દેવાણુપ્પિયા ! વિચિત્ત
કેવલિપક્કત્ત ધમ્મ પડિકરિઙ્ગામો)

આ પ્રમાણે પોટિલાની વાત સાલણીને તે આર્યાઓએ પોતાના બંને
કાને ઉપર હાથ મૂકી દીધા અને મૂકીને એમ કહેવા લાગી હે દેવાનુપ્રિયે !
અમે તો નિર્ગ્રન્થ શ્રમણીઓ છીએ નવવાડ સહિત બ્રહ્મચર્યનું અમે પાલન
ઠરીએ છીએ હે પુત્રિ ! તમારી એવી વાતો અમારા માટે કનઘી સાલણથી
પણ યોગ્ય લેખાય નહિ ત્યારે તેના વિશે ઉપદેશની વાત તો સાવ અયોગ્ય જ
છે અમે આ વિશે તમને કોઈ પણ જાતનો ઉપદેશ પણ આપી શકીએ નહીં
તો પછી જાતે આનું આચરણ કેવી રીતે કરી શકીએ ? એટલે કે આ બાબ
તનો ઉપદેશ આપવો તેમજ પોતે આનું આચરણ કરવું તે

ता आर्या एवमवादीत्-इच्छामि खलु हे आर्याः । युष्माकमन्तिके केवलप्रज्ञप्त धर्म निशामयितुम्=श्रोतुम् । ततः खलु सा पोष्टिला धर्म श्रुत्वा ' निसम्म ' निशम्य=हृदयेनाधार्य हृष्टतुष्टा एवमवादीत्-श्रद्धामि खलु हे आर्या ! नैर्ग्रन्थ्य प्रवचन यावत् ' से ' तत् तथैव यथैतद् गृय्य वदथ । हे आर्याः ! ' इच्छामि ' इच्छामि खलु अहं युष्माकमन्तिके ' पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म ' पञ्चाणुव्वतिक यावत् गृहिधर्म ' पडिवज्जित्तए ' प्रतिपत्तु=स्वीकृतुम् । अनन्तर ता आर्या एवमवा

लिये विचित्र केवल प्रज्ञप्त धर्मका उपदेश करते हैं (सो तृ सुन)- (तएण सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एव वयासी इच्छामि ण अज्जाओ । तुम्ह अतिण केवलपन्नत्ते धम्म निसामेत्तए-तएण ताओ अज्जाओ पोष्टिलाण विचित्तधम्म परिकहेति) उनकी इस प्रकार बात सुन कर उस पोष्टिलाने उनसे कहा-हे आर्याओ ! मैं आप लोगों के मुख से केवल प्रज्ञप्त धर्म सुनना चाहती हूँ । पोष्टिला की ऐसी प्रार्थना सुन कर उन आर्याओं ने उस पोष्टिला के लिये विचित्र केवल प्रज्ञप्त धर्म सुनाया (तएण सा पोष्टिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा एव वयासी) उन के मुखसे केवल प्रज्ञप्त धर्म सुन कर और उसे अपने हृदयमें अवधृत कर अत्यन्त हर्षित एव सतुष्ट हुई उस पोष्टिलाने उनसे ऐसा कहा (सदहामि ण अज्जाओ । णिगंथ पावयणं जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अहं तुब्भ अतिण पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जित्तए-अहामुह, तएण सा पोष्टिला तस्मिं अज्जाण अतिण पचाणुव्वइय

भुज्जम अथोग्ग गल्लाय छे छे देवानुप्रिये ! अमे तो तारा छित माटे विचित्र केवलिप्रज्ञप्त धर्मने उपदेश आपीये छीये तेने तुं सालण

(तएण सा पोष्टिला ताओ अज्जाओ एव वयासी इच्छामि ण अज्जाओ ! तुम्ह अतिण केवलपन्नत्ते धम्म निसामेत्तए-तएण ताओ अज्जाओ पोष्टिलाण विचित्त धम्म परिकहेति)

तेमनी आ जलनी बात सालणीने ते पोष्टिलाके तेमने ओम कह्युं के छे आर्याओ ! तमारा भुज्जथी हुं केवणी प्रज्ञप्त धर्मने सालणवा छुछु छु पोष्टिलानी ओवी विनती सालणीने ते आर्याओके तेने विचित्र केवलि प्रज्ञप्त धर्मने उपदेश आपीये । (तएण सा पोष्टिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठा एव वयासी) तेमना भुज्जथी केवणी प्रज्ञप्त धर्मनु अवधु करीने तेने हृदयमा धारण करीने भूषण हर्षित अने सतुष्ट यती ते पोष्टिलाके तेमने ओम कह्युं के

(सदहामि ण अज्जाओ । णिगंथ पावयणं जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अहं तुब्भ अतिण पचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्म पडिवज्जित्तए-अहामुह)

पोट्टिलाम् एवमवदन्-यय खलु देवानुप्रिये । श्रमण्यो निर्ग्रन्थः, यागाभ्यन्तरप्रवृत्तिरहिता, यावद् गुप्तव्रतचारिण्यः, नो खलु कल्पतेऽस्माकम् 'एयप्पयार' पतत्सकार=स्फोरपि 'णिसामेत्तए' निशामयितुं श्रोतुं न कल्पत इति पूर्वेण सम्बन्धः । 'अद्ग इति सम्बोधने' हे पोट्टिले ! किं=कथं पुनः 'उवदिसित्तए वा' उपदेशद्वयं वा, स्वयम् 'आयरित्तए वा' आचरितुं वा कल्पते । न कल्पत इत्यर्थः, वयं खलु तव हे देवानुप्रिये ! विचित्र केवलपन्नत्तं धम्मं परिकल्पयामः । ततः खलु सा पोट्टिला ठावित्ता पोट्टिल एव वयासी-अम्हेण देवाणुप्पिया । समणीओ निग्गधीओ जाव गुत्तवभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयारकन्नेहि वि निसामित्तए किमग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा । अम्ह णं तव देवाणुप्पिया ! विचित्त केवलपन्नत्त धम्मं पडिकहिज्जामो) इस प्रकार उस पोट्टिला के द्वारा कहीं गईं उन आर्याओं ने अपने दोनों कानों पर हाथ रख लिये-और रख कर पोट्टिला से इस प्रकार करने लगीं-हे देवानुप्रिये ! हम तो निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ हैं, नव कोटि से पूर्ण ब्रह्मचर्यको हम पालती हैं । हमें तुम्हारी ऐसी बातें कानों से सुनना भी कल्पित नहीं हैं तो फिर हे पुत्रि ! हम इनका उपदेश तुम्हें कैसे दे सकते हैं-और स्वयं भी इनका आचरण कैसे कर सकते हैं । अर्थात् इन बातों का उपदेश देना और स्वयं इनको अपने आचरण में लाना यह सब हमारे कल्प के अनुसार निषिद्ध है । हम तो हे देवानुप्रिये ! तेरे हितके

(तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एववुत्ताओ समाणीओ दो नि हत्थे कन्ने ठवेत्ति, ठावित्ता पोट्टिल एव वयासी अम्हेण देवाणुप्पिया । समणीओ निग्गधीओ जाव गुत्तवभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयारकन्नेहि वि निसामित्तए किमग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा । अम्ह णं तव देवाणुप्पिया । विचित्तं केवलपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो)

आ प्रभाणु पोट्टिलानी बात सासणीने ते आर्याओओ पोताना अने काने। उपर हाथ भूझी दीधा अने भूझीने ज्येठ कडेवा लागी हे देवानुप्रिये ! अने तो निर्ग्रन्थ श्रमणीओ छीजे नववाड सज्जित ब्रह्मचर्यनु अने पालन करीजे छीजे हे पुत्रि ! तमारी ज्येवी वाने। अमारा माटे जनधी सासणीओ पणु येअय लेआय नहि तयारे तेना विशेष उपदेशनी बात तो साव अयेअअ छे अने आ विशेष तमने केअ पणु जातने। उपदेश पणु आपी शरीजे नही तो पछी जाते आनु आचरणु केवी रीते करी शरीजे ? ज्येठले के आ जाअ तने। उपदेश आपवे। तेमज पोते आनु आचरणु करव ते पणु अमारा कल्प

દિપુ:- અહામુહ 'યથા સુખ, હે દેવાનુપ્રિયે ! । તત સ્વલુ સા પોટ્ટિલા તાસા માર્યાનામતિકે પચ્છાણુપતિક યાન્દુ મુદ્ધિધર્મપ્રતિપથતે, પુનસ્તા આર્યા વન્દતે નમસ્પતિ, વન્દિત્તા નમસ્પિત્તા પ્રતિવિસર્જયતિ । તતઃ સા પોટ્ટિલાશ્રમગોપાસિકા જાતા, 'જાવ પહિન્નામેમાણિ' યાન્દુ પ્રતિલમ્પવન્તી=નિર્ગ્રન્થેન્નપ' શ્રમણેભ્યઃ શ્રમણીભ્યશ્ચ ચતુર્વિધમાહાર દદતી વિદરતિ ॥ મૃ૦ ૭ ॥

જાવ ગિહિધમ્મ પહિવજ્જેહ, તાઓ અજ્ઞાઓ વદહ, ણમસહ વદિત્તા ણમસિત્તા પહિવિસર્જેહ) હે આર્યાઓ ! મેં હસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન પર શ્રદ્ધા કરતી છું યાવેત્તે ણમાં માનતી છું કે યહ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન જેસા આપ કહતી હૈં વૈસા હી હૈં । અતઃ હે આર્યાઓ ! અથ મેં આપકે પાસે પચાણુ વ્રત માત શિક્ષાવ્રત આદિ રૂપ ૧૨ ચારહ પ્રકાર કા મુદ્ધસ્થ ધર્મ કો ધારણ કરના યાહની છું । હમ તરહ પોટ્ટિલા કી ભાવના જાન કર ડન આર્યાઓને ડસસે કહા-યથા સુખ દેવાનુપ્રિયે ! તુજે ત્રિસ તરહ સુખ હો વૈસા તૂ કર-શ્રયસ્કર કાર્યમેં ચિલમ્બ કરના યોગ્ય નહીં હૈં-હમ પ્રકાર ડન આર્યાઓને આજ્ઞા પ્રાપ્ત કર ડસ પોટ્ટિલાને ડન્હીં આર્યાઓ કે પાસ સે જાવકધર્મ પચ અણુપા પંચ મોન શિક્ષાવ્રતોં તો ધારણ કર લિયા । હમ પ્રકાર શ્રમણોપાસિકા બની હુઈ ડસ પોટ્ટિલા ને ડન આર્યાઓ કો વન્દના એવ નમસ્કાર કી-વન્દના નેમસ્કાર કરકે ફિર ડન્હે વિસર્જિત કર દિયા । (તણ સા પોટ્ટિલા સમણોવાસિયા જાયા જાવ પહિ

મુહ તણ સા પોટ્ટિલા તાસિ-અજ્ઞાણ આતેપ પવાણુગ્ગય જાવ ગિહિધમ્મ પહિ વજ્જેહ તાઓ અજ્ઞાઓ વદહ, ણમસહ વદિત્તા ણમસિત્તા પહિવિસર્જેહ)

હે આર્યાઓ ! આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન ઉપર હું શ્રદ્ધા કર છું યાવેત્તે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન જેવું મને કહ્યું છે તેવું જ હું એથી હે આર્યાઓ ! હુંવે હું તમારી પાસેથી પાંચ અણુવ્રત વગેરેનો 'મુદ્ધસ્થ ધર્મ' ધારણ કરવા ઇચ્છુ છું આ રીતે પોટ્ટિલાના વિચારો બાણીન તે આર્યાઓએ તેને કહ્યું કે 'યથાસુખમ્' એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમા સુખ પ્રાપ્ત થાય તેન તુ કર માર કામમા વિલગ કરવો જોઈએ નહિ આ પ્રમાણે તે આર્યાઓની આજ્ઞા મેળવીને તે પોટ્ટિલાએ તે આર્યાઓની પાસથી આવક-ધર્મ-પાંચ અણુવ્રતો અને માત શિક્ષાવ્રતો-ને ધારણ કરી લીધો આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટ્ટિલાએ તે આર્યાઓને વદન તે અ નમઃ કર્યા અને વદન તથા નેમન કરીને તેમને વિદાય આપી (તણ સા પોટ્ટિલા સમણોવાસિયા જાયા જાવ પહિન્નામેમાણો વિદરતિ) આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટ્ટિલા

प्रियं जागरमाणीह' कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या अयमेतद्भूष, 'अज्झत्थिए जाव' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिक=आत्मगतो यावन्मनोगत सकल्प समुत्पन्नः। सत्त्वप्रकारमाह-एव खलु अहं तैत्तिरीयस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया, मनोज्ञा मनोऽमा, आमम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा यावत् परिभोगं वा। अस्याभिप्रायः-अहो मनुष्याणां मनोवृत्तेरस्थिरता। पूर्व, यस्यादम् इष्टा कान्ता प्रियाऽदिकाऽस्मत्, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका ज्ञाताऽस्मि। अयं तैत्तिरीयस्य मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति किं पुनर्ममवर्जान् मया सह परिभोगं वाञ्छेत् अपितु नेत्यर्थः। 'त' तत्=तस्मात्कारणात् 'सेय' स्यसि) रात्रि के पिछले भागमें (कुटुम्बजागरिय-जागरमाणीह अयमेत्याह्वे अज्झत्थिए जाव समुत्पन्ने) कुटुम्ब की, चिन्ता से जाग रहा थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ- (एव खलु अहं तैत्तिरीयस्य पूर्वम् इष्टा ५ आसि इयाणि अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा, तं सेय खलु मम सुव्ययाण अज्जाण अतिए पवइत्तए) मैं पहिले तैत्तिरीय को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हूँ-अनिष्ट आदि बन गई हूँ। और बातों की बात ही क्या है-वे तो अब मेरा मुख तरु नहीं देखना चाहते हैं-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है-पूर्व मैं जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अनिष्ट अप्रिय आदि बन गई हूँ। यह तैत्तिरीय तो मेरी नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो चाहना ही

आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्नो हे

(एव खलु अहं तैत्तिरीयस्य पूर्वम् इष्टा ५ आसि इयाणि अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा तं सेय खलु मम सुव्ययाण अज्जाण अतिए पवइत्तए)

पडेल्ला हू तैत्तिरीयस्य पुत्रे भूमजं धृष्टकात, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम हटी पणु हवे हू तेमना भटे तेवी रही नथी अनीष्ट वगेरे थध पडी छु भारी साथे वातवीतनी वात तो हूँ रही पणु तेओ भाइ भो पणु जेवा भागता नथी जेरणर पुत्रोनी मनोवृत्ति केटवी अथी यथय डोय छे ? जेने पडेल्ला जे हू धृष्ट, कात, प्रिय, वगेरेना इपम हटी, हवे तेने तेव हू अनिष्ट अप्रिय वगेरे थध पडी छु आ तैत्तिरीयस्य मम नाम गोत्र सुद्धा साध जेवा भागता नथी त्यारे भने जेवानी अने भारी साथे रहेवानी तो तेमने पाछवा पडेरमा (कुटुम्बजागरिय जागरमाणीह अयमेत्याह्वे अज्झत्थिए जाव समुत्पन्ने) घर-गृहस्थीना विचाररती जगी रही हटी तारे-आ ज्ञातनी

मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विद्विए जाव रवेणं नेयालिपुरस्स
 मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ ।
 पोहिला सीयाओ पच्चोरुहइ । तेतलिपुत्ते पोहिलं पुरओ कहु
 जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ
 नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।
 मम पोहिला भारिया इट्ठा ४, एसणं, संसारभउव्विगा जाव
 पव्वइत्तए, पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिक्खं अहा-
 सुहं ना पडिवध करेहि । तएण सा पोहिला सुव्वयाहि अज्जाहि
 एवंवुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ,
 अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता,
 सयमेव पच्चमुट्ठिय लोयं करेइ, करित्ता, जेणेव सुव्वयाओ तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता,
 एव वयासी-आलित्ते णं भते-। लोए एव जहा देवाणदा जाव
 एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, वहुणि वासाणि सामन्नरियागं पाउणइ,
 पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठि भत्ताइ
 अणसणाए छेदित्ता, आलोइयपडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे
 कालकिच्चा अणतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा ॥सू०८॥

टीका—‘तएण तीसे’ इत्यादि । तत खलु तस्या पोहिलाया, ‘पुव्व
 रत्तावरत्तकालसमयसि’ पूर्वरात्रापररात्रकालसमये-रात्रे पश्चिमेभागे ‘कुडुव जाग

तएण—‘तीसे पोहिलाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तीसे पोहिलाए) उम पोहिला के
 जय कि वह (अन्नया क्याइ किसी एक दिन (पुव्वारत्तकालसम

‘तएण-तीस पोहिलाए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्पार पछी (तीसे पोहिलाए) ते पोहिलाने-के क्यादे ते
 (अन्नया क्याइ) डोह ओक दिवसे (-)

रिय जागरमाणीए' कुड्डुजजागरियां जाग्रत्या अयमेतद्वृत्त 'अज्झत्थिए जाव' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिक=आत्मगतो यावन्मनोगत सकल्प समुत्पन्नः । सकल्पप्रकारमाह-एव खलु अहं तेतलिपुत्रस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया, मनोज्ञा मनोऽमा आमम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा यावत् परिभोग वा । अस्याभिप्राय-अहो मनुष्याणां मनोवृत्तेरस्थिरता । पूर्व, यस्याहम् इष्टा कान्ता प्रियाऽदिकाऽस्मि, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका जाताऽस्मि । अयं तेतलिपुत्रो मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति किं पुनर्ममदर्शनं मया सह परिभोग वाञ्छेत अपितु नेत्यर्थः । 'त' तत्=तस्मात्कारणात् 'सेय' यस्मि) रात्रि के पिछले भागमें (कुड्डुजजागरिय-जागरमाणीए अयमेया-रूबे अज्झत्थिए जाव समुत्पन्ने) कुड्डुव की, चिन्ता से जाग रहा थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ- (एव खलु अहं तेतलिपुत्रस्स पुब्बि इद्धा ५ आसि इयाणिं अणिद्धा ५ जाव परिभोग वा त सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए) मैं पहिले तेतलिपुत्र को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हूँ-अनिष्ट आदि बन गई हूँ । और पात्रों की प्राप्ति ही क्या है-वे तो अब मेरा मुख तक नहीं देखना चाहते हैं-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है-पूर्व मैं जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अनिष्ट अप्रिय आदि बन गई हूँ । यह तेतलिपुत्र तो मेरी नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो चाहना ही

आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्नो भवे

(एव खलु अहं तेतलिपुत्रस्स पुब्बि इद्धा ५ आसि इयाणिं अणिद्धा ५ जाव परिभोग वा त सेय खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए)

पडेला हु तेतलिपुत्रने भूमज धइकात, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम हुती पणु डवे हु तेमना मटे तेनी रही नथी अनीए वगेरे थछ पडी छु भारी साथे वातयौतनी वात तो दूर रही पणु तेओ माइ भो पणु जेवा मागता नथी जेरपर पुन्धानी मनोवृत्ति डेटली जधी यथा होय छे ? जेने पडेला जे हु धोट, कात, प्रिय, वगेरेना इयमा हुती, डवे तेने तेज हु अनिष्ट अप्रिय वगेरे थछ पडी छु आ तेतलिपुत्र भारा नामगोत्र सुद्धा साल जेवा मागता नथी तयारे भने जेवानी अने भारी साथे रहेवानी तो तेमने पाछवा पडोअमा (कुड्डुजजागरिय जागरमाणीए अयमेयारूबे अज्झत्थिए जाव समपन्ने) मर-जहन्नीना चित्तावस्थी जगी रही हुती तयारे-आ जतनी

श्रेयः=उचितं खलु मम सुव्रतानामार्याणामन्तिके प्रव्रजितुम्, एव सपत्नते=विचार
यति, सप्रेक्ष्य=विचार्य 'कल्ल जाव पाउप्पभायाए' कल्ल यावत् प्रादुप्पभाया
याम्=मातः सूर्योदयसमये यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपागच्छति उपागम्य 'करयल-
परि०' करतलपरीगृहीत मस्तनेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवदत्-एव खलु हे देवानुप्रिय !
मया सुव्रतानामार्याणामन्तिके धर्मः 'णिसते' निशान्तः=श्रुत, 'जाव अमणु

उसे कैसे हो सकती है। इस लिये मुझे अब यही उचित है कि मैं
सुव्रता आर्यिका के पास प्रव्रजित हो जाऊँ। (एव सपेहेइ, सपेहिता
कल्ल जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) इस
प्रकार जब वह विचार कर चुकी तो विचार करके फिर जब प्रातः काल
हुआ और सूर्य का उदय हो चुका तब जहाँ तेतलिपुत्र था वहाँ पहुँची
(उवागच्छित्ता करयल० एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! मए
सुव्वयाणं अज्जाणं अतिए धम्मे णिसते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए,
तएण तेयलिपुत्ते पोहिल एव वयासी-एव खलु-तुम देवाणुप्पिए !
मुंडा पव्वइया समानी कालमासे काल किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु
देवत्ताए उववज्जिहिसि, त जइ ण तुम देवाणुप्पिए ! मम ताओ देवलो
याओ आगम्म, केवल्लिपन्नत्ते धम्मे वोहेहि तो ह विसज्जेमि) वहा जा
कर उसने दोनों हाथ जोड़ कर उस को नमस्कार किया-बाद मे वह
इस प्रकार उससे कहने लगी है देवानुप्रिय ! बात ऐसी है कि मैंने

हरकार न शी डोय ? ओधी भने डवे ओए येअ्य लागे छे डे डे डे सुव्रता
आर्यिकाओनी भासे प्रव्रजित थल लउ

(एव सपेहेइ, सपेहिता कल्ल जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव
उवागच्छइ)

आ रीते न्यारे तेणु येअ्यस विचार करी वीधो त्यारे ते सवादे सूर्योदय
थता न्या तेतलिपुत्र अभात्य डतो त्या पडोय्थी

(उवागच्छित्ता करयल० एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! मए सुव्व
याण अज्जाण अतिए धम्मे णिसते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएण तेयलिपुत्ते
पोहिल एव वयासी-एव खलु तुम देवाणुप्पिए ! मुंडा पव्वइया समानी कालमासे
काल किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि त जइणं तुम देवाणु
प्पिए ! मम ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवल्लिपन्नत्ते धम्मे वोहेहि तो ह विसज्जेमि)

त्या न्धने तेणु तेभने णने हाथ नेडीने नमस्कार कयां भने त्यारपछी
ते आ प्रभाणु कडेवा लागी डे डे देवानुप्रिय ! मे सुव्रता

पासेधी

णाया पञ्चइत्तए ' यायदभ्यनुज्ञाता प्रत्रजितुम्=स धर्मो मम मनसि रुचितः तस्माद् भवताऽभ्यनुज्ञातासती प्रत्रजितुमिच्छामीतिभावः । ततः खलु तेतलिपुत्रः पोट्टिला-मेवमपदत्-एव खलु त्व देवानुप्रिये ! मुण्टा प्रत्रजिता सती कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपत्स्यते । ' त ' तदा यदि खलु त्व देवानु प्रिये ! मा ततो देवलोकादागत्य केवलप्रज्ञप्त धर्मं बोधये , ' तोह ' तदाऽह त्वा ' विसज्जेमि ' प्रत्रजितुमाज्ञापयामि । ' अह ण ' अथ खलु यदि खलु त्व मा ' ण सवो-हेसि ' न सरोधयसि=केवलप्ररूपित धर्मं बोधयितुं प्रतिज्ञां न करोषि ' तो ' तदा ' ते ' त्वा न तिसृजामि=प्रत्रजितुं नाज्ञापयामि । ' तएण ' तत खलु=तेतलिपुत्रस्य एतद्गचनश्रवणानन्तम् , सा पोट्टिला तेतलिपुत्रस्य ' एयमट्ट ' एतमर्थ=धर्मं प्रति बोधनरूपमर्थ ' पडिसुणेइ ' प्रतिश्रृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तेतलिपुत्रो विपुलमशनपानखात्रस्याय चतुर्ग्रिमाहासम् , ' उवक्खडावेइ ' उपस्कारयति= निपादयति , ' उवक्खडावित्ता ' उपस्कार्य ' मित्तणाइ जाव आमतेइ ' मित्रज्ञाति

सुव्रता आर्थिका के पास धर्म का उपदेश सुना है वह धर्म मुझे बहुत ही अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ है । इस लिये मैं आपसे आज्ञा लेकर दीक्षित होना चाहती हूँ । पोट्टिला की ऐसी बात सुन कर तेतलिपुत्रने उससे कहा—देवानुप्रिये ! बात ऐसी है कि तुम दीक्षित हो कर जब काल अवसर काल करोगी (यह निश्चित है) अन्यतर देवलोक में देवता की पर्याय से उत्पन्न होओगी—तब यदि देवानुप्रिय ! मुझे वहाँ से आ कर तुम केवलप्रज्ञप्त धर्म समझाओ—तो मैं तुम्हें प्रत्रजित होने के लिये आज्ञा दे सकना हूँ (अह ण तुम मम ण सरोहेसि तो ते ण विस ज्जेमि तएण सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ट पडिसुणेइ, ततः खलु तेयलिपुत्ते त्रिपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ जाव

धर्मनो उपदेश सांख्यो छे अने ते भने गभी गयो छे, अटला भाटे हु तमारी आज्ञा भेगवीने दीक्षा अर्हणु करवा धरु छु पोट्टिलानी आ नतनी बात सांख्योने तेतलिपुत्रे तेने कहु के छे देवानुप्रिये ! तमे दीक्षित भवने न्यारे काणना समये काण करयो अने अन्यतर देवलोकमा देवताना पर्यायथी नम पावयो त्यारे ने तमे छे देवानुप्रिये ! त्याथी आवीने भने देवणि प्रज्ञप्त धर्म समझयो तो हु तमने अत्यारे भुशीथी प्रनलत थवानी आज्ञा आपी शकु तेम छु

(अह ण तुम मम णं सरोहेसि तो ते ण विसज्जेमि तएणं सा पोट्टिला तेयलि-पुत्तस्स एयमट्ट पडिसुणेइ, ततः खलु तेतलिपुत्ते त्रिपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ जाव आमतेइ, आसतिता, मित्तणाइ सम्माणित्ता पोट्टिल

શ્રેયઃ=ઉચિતં સ્વલુ મમ સુવ્રતાનામાર્યાણામન્તિકે પ્રવ્રજિતુમ્, પર મપક્ષતે=વિચાર
યતિ, સપ્રેક્ષ્ય=વિચાર્ય 'કલ્લ જાવ પાડપ્પમાયાણ' કલ્લ યાવત્ માદુપ્પમાતા
યામ્=માતઃ સૂર્યોદયસમયે યત્રેત તેતલિપુત્રસ્તત્રેતર ઉપાગચ્છતિ ઉપાગત્ય 'કરયલ-
પરિ' કરતલપરીગૃહીત મત્તરેડઙ્ગલિ કૃત્વા એમવદત્-એવ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય !
મયા સુવ્રતાનામાર્યાણામન્તિકેર્ધમઃ 'નિસતે' નિશાન્તઃ=શ્રુત, 'જાવ અન્નણ

હસે કૈસે હો સકતી હૈ । હસ લિપે મુદ્દે અવ યદ્દી ઉચિત હૈ કિ મૈ
સુવ્રતા આર્યિકા કે પાસ પ્રવ્રજિત હો જાઝ । (જ્ય સપેહેદ, સપેરિસા
કલ્લ જાવ પાડપ્પમાયાણ જેનેવ તેયલિપુત્તે તેનેવ ઉવાગચ્છહ) હસ
પ્રકાર જથ વહ વિચાર કર ચુકી તો વિચાર કરકે ફિર જથ પ્રાત કાલ
હુઆ ઔર સૂર્ય કા ઉદય હો ચુકા તથ જહાં તેતલિપુત્ર થા વહા પહુંચી
(ઉવાગચ્છિસા કરયલ૦ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મણ
સુવ્વચારણં અજ્ઞાણં અતિણ ધમ્મે નિસતે જાવ અન્નણુનાયા પન્નવ્વત્તણ,
તણ તેયલિપુત્તે પોટ્ટિલ એવ વયાસી-જ્ય સ્વલુ-તુમ દેવાણુપ્પિણ ! મુડા પન્નવ્વયા
સમાણી કાલમાસે કાલ કિચ્ચા અન્નયરેસુ દેવલોણ્ણુ
દેવત્તાણ ઉવવજ્જિહિસિ, ત જહ્ણ તુમ દેવાણુપ્પિણ ! મમ તાઓ દેવલો
યાઓ આગમ્મ, કેવલિપન્નત્તે ધમ્મે વોહેદિ તો હ વિસજ્જેમિ) વહા જા
કર હસને દોનોં હાથ જોડ કર હસ કો નમસ્કાર કિયા-વાદ મેં વહ
હસ પ્રકાર હસસે કહને લગી હૈ દેવાનુપ્રિય ! વાત એસી હૈ કિ મૈને

દરકાર જ શી હોય ? એથી અને હવે એજ થોગ્ય લાગે છે કે હું સુવ્રતા
આર્યિકાઓની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ

(એવ સપેહેદ, સપેરિસા કલ્લ જાવ પાડપ્પમાયાણ જેનેવ તેયલિપુત્તે તેનેવ
ઉવાગચ્છહ)

આ રીતે જ્યારે તેણે ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો ત્યારે તે સવારે સૂર્યોદય
થતાં જ્યારે તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતો ત્યાં પહોંચી

(ઉવાગચ્છિસા કરયલ૦ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મણ સુવ્વ
ચારણ અજ્ઞાણ અતિણ ધમ્મે નિસતે જાવ અન્નણુનાયા પન્નવ્વત્તણ, તણ તેયલિપુત્તે
પોટ્ટિલ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ તુમ દેવાણુપ્પિણ ! મુડા પન્નવ્વયા સમાણી કાલમાસે
કાલ કિચ્ચા અન્નયરેસુ દેવલોણ્ણુ દેવત્તાણ ઉવવજ્જિહિસિ ત જહ્ણ તુમ દેવાણુ
પ્પિણ ! મમ તાઓ દેવલોયાઓ આગમ્મ, કેવલિપન્નત્તે ધમ્મે વોહેદિ તો હ વિસજ્જેમિ)

ત્યાં જઈને તેણે તેમને જને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યો અને ત્યારપછી
તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિય ! મેં સુવ્રતા આ ? પાસેથી

‘દ્રોહ’=આરોહ ‘મિત્રજ્ઞા’ જાવ સેપરિહુડે ‘મિત્રજ્ઞા’તિ યાત્ સપરિવૃત્ત=મિત્ર-
જ્ઞાતિસ્વજનસમ્પન્નિપરિજનાદિભિર્યુક્તઃ ‘સન્વિદ્વો’ ‘સર્વદ્વર્ષો’ ‘જામ રવેણ’
‘યાવદ્રવેણ’=મેર્યાદિનિનાદેન સહ તેતલિપુરસ્ય મં ‘યમધ્યેન યત્રેયં સુવ્રતાનામુપોશ્રય
સ્તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ । સો પોટિલા શિરિકાતઃ ‘પંચોરુહ’ મત્યવ્રોહતિ=અવતરતિ ।
તેત સ તેતલિપુત્ર પોટિલા પુરતઃ કૃત્વા યત્રૈવ ‘સુવ્રતા આર્યા તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ,
ઉપોગત્ય, ચન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એમવદત્-એવં સ્વલુ હે
દેવાનુપ્રિયાઃ મમ પોટિલામાર્યા ઇષ્ટા કાન્તા પ્રિયા ‘મનોજ્ઞા મનોઝ્મા, વર્તતે,

ઘેઠા કર મિત્ર, જ્ઞાતિ સ્વજન સમ્પન્ની પરિજનોં સે ‘યુક્ત’ હોકર અપની
સમસ્ત વિભૂતિ કે અનુસાર ગાજે ‘વાંજેકે સાથ તેતલિપુર નગર કે વીચો-
‘વીચ ચલે કર વહ જર્હા સુવ્રતા આર્યિકા કો ઉપાશ્રય યા વહા ‘પટ્ટુ’ચા ।
(‘પોટિલા સીયાઓ પંચોરુહ, તેતલિપુત્રે પોટિલ પુરઓ કદ્દુ જેણેવ
‘સુવ્રયા અઝ્જાઓ તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા, વંદદ નમસદ વંદિત્તા
‘નમસિત્તા એવ ચયાસી, એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । મમ પોટિલા મારિયા ઇદ્ધા
૫ એસણ સસારમઉવિવગા જાવ પવ્વહત્તપ્પ પહિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા !
સિસ્સિણીમિક્ક અહાસુહ મા પહિવધ કરેહિ) પોટિલા શિરિકા સે
ઉત્તરી-તેતલિપુત્ર પોટિલાકો આગે કરકે જર્હા સુવ્રતા આર્યિકા થીં વહાં
ગયો । જા કર ઉસને ઉનકો વંદનાંકી નમસ્કાર કિયા । વંદનાં નમસ્કાર
કરકે ફિર હસ પ્રકાર કહને લગો હે દેવાનુપ્રિયે ! યહ મેરી પોટિલા નામ
કી પત્ની હૈ । ‘યહ મુદ્દે ઇષ્ટ, કાન્ત, પ્રિય, મનોજ્ઞ એવ મનોમ હૈ । હસને

પાલખીમા બેમાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સમ્પન્ની પરિજનોને સથે લઇને
તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ સુબંધ ગાબવાબની સાથે તેતલિપુર નગરની
‘વંચોવચ્ચ’ થઇને જ્યા તે સુવ્રતા આર્યિકાને ઉપાશ્રય હતો ત્યા પહોચ્યો
(‘પોટિલા સીયાઓ પંચોરુહ, તેતલિપુત્રે પોટિલ પુરઓ કદ્દુ જેણેવ ‘સુવ્રયા અઝ્જાઓ
તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા, વંદદ, નમસદ, વંદિત્તા નમસિત્તા એવ ચયાસી એવ
સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । મમ પોટિલા મારિયા ઇદ્ધા ૫ એસણ સસારમઉવિવગા જાવ
પવ્વહત્તપ્પ પહિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા । સિસ્સિણીમિક્ક અહાસુહ મા પહિવધ કરેહિ)
પોટિલા પાલખીમાથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર ‘અમાત્ય પોટિલાને
‘આગળ રાખીને’ જ્યા સુવ્રતા આર્યિકા હતી ત્યા ગયો ત્યા જઈને તેણે તેમને
‘વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા, ‘વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે
કેહું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! આ પોટિલા નામે મારી પત્ની છે અને એ દિલકોત,
પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ છે એણે ‘તમારી પાસેથી ‘ધર્મ’ શ્રવણ કયું છે

यावदामन्त्रयति, मित्रज्ञातिस्वजनसम्प्रन्धिपरिजनान् आमन्त्रयति, 'आमन्त्रिता' आमन्त्रय 'जात्र समाणिड' यावत्-समानयति=प्रशनेशनादि चतुर्विधाहारण समान्य, 'पोटिल प्हाय जाव पुरिससहस्सवाहिणि सीअ' 'पोटिला स्नाता यावत् पुरुषसहस्रवाहिनी शिषिकाम्, 'दूरोहेइ' दूरोहयति=आरोहयति, 'दुरुहिता'

आमन्तेइ आमन्त्रिता जाव सम्माणेइ, सम्माणिता पोटिल प्हाय जाव पुरिससहस्सवाहिणि सीय दुरुहइ, दुरुहिता मित्तणाइ जाव संपडिबुडे सन्विट्ठीण जाव रवेण तेयलिपुरस्स मज्झ मज्जेण जेणेव सुव्याण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ) यदि तुम मुझे समर्पित नहीं करोगी अर्थात् केवल प्रज्ञा धर्म को मुझे समझाने की प्रतिज्ञा नहीं करोगी तो मैं तुम्हें दीक्षित होने की आज्ञा नहीं दूंगा—इस प्रकार के तेतलिपुत्रके इस कथनको उस पोटिलाने स्वीकार कर लिया। अर्थात् मैं देवलोक में जाऊंगा तो वहां से आ कर आप को प्रतिबोध दूंगी इस प्रकार जब पोटिला ने स्वीकार कर लिया। इस के बाद तेतलिपुत्र ने विपुल भान्ना अनशनादि रूप चारों प्रकार का आहार निर्वपण करवाया-करवा करके फिर उसने अपने मित्र, ज्ञाति, आदि जनो को आमन्त्रित किया। मित्र, ज्ञाति, स्वजन सबन्धी परिजनोको आमन्त्रित करके यावत् अशन पाना दिरूप इस चतुर्विध आहार से उनका सम्मान करके उसने पोटिलाको स्नान करवा कर यावत् उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिषिका पर बैठाया, प्हाय जाव पुरिससहस्सवाहिणि सीय दुरुहइ दुरुहिता मित्तणाइ जाव संपडिबुडे सन्विट्ठीण जाव रवेण तेयलिपुरस्स मज्झ मज्जेण जेणेव सुव्याण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ)

जो तमने भने सजोधशो नहि ओटवे के जो तमने भने केवणि प्रसंत धर्मने समर्पणवानी प्रतिज्ञा करशो नहि तो तमने हु डोअपणु सजोगामा पणु दीक्षा स्वीकारवानी आज्ञा आपीश नहि आ सीते कळेवाथी पोटिलाओ तेतलिपुत्रना कथनने स्वीकारी वीधु ओटवे के पोटिलाओ तेभने आ प्रमाणे प्रतिज्ञाअथ यधने केहु के हु देवलोअभा जयथ अने त्याथी आवीने तमने धर्मने ओअ आपीश आम न्यारे पोटिलाओ स्वीकारी वीधु, त्यारपणी तेतलिपुत्रे पुण्ण प्रमाणमा अशन वगेरेना इपमा चार जतना आहारो जनावडाव्या अने त्यारणाइ तेणे पोताना मित्र, ज्ञाति, वगेरे स्वजनोने आमन्त्रणु आप्थु मित्र, ज्ञाति, स्वजन सबन्धी परिजनोने आमन्त्रणु आपीने यावत् अशन पान वगेरे चार जतना आहारोथी तेभनु सम्मान करीने तेणे पोटिलाने स्नान करावडाव्या अने यावत् तेने पुरुष सहस्रवाहिनी शिषिका पर बैठाया, साडी,

દ્રોહ=આરોહ 'મિત્તળાહ જાત્ર સેપરિહુડે' મિત્રજ્ઞાતિ યાત્ર સપરિવૃત્તઃ=મિત્ર-
જ્ઞાતિસ્વજનસમ્પન્નિપરિજનાદિભિર્યુક્તઃ 'સન્વિહૂએ' સર્વદર્યા 'જાત્ર રવેણ'
યાવદ્રવેણ=મેર્યાદિનિનાદેન સહ તેતલિપુરસ્ય મે'યમધ્યેન યત્રૈય સુત્રતાનામુપોશ્રય
સ્ત્રૈય ઉપાગચ્છતિ । સા પોટિલા શિર્ષિકાતઃ 'પચ્ચોરૂહડ' પ્રત્યવરોહતિ=અવતરતિ ।
તેત સ તેતલિપુત્ર પોટિલા પુરતઃ કૃત્વા યત્રૈય સુત્રતા આર્યા તત્રૈય ઉપાગચ્છતિ,
ઉપોગત્ય, પન્દતે નમસ્યતિ, વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એમવદત્-એવ સ્વલુ હે
દેવાનુપ્રિયાઃ મમ પોટિલામાર્યા ઇષ્ટા કાન્તા પ્રિયા મનોજ્ઞા મનોડમા, વર્તતે,

બેઠા કર મિત્ર, જ્ઞાતિ સ્વજન સમ્પન્ની પરિજનોં સે 'યુક્ત' હોકર અપની
સમસ્ત વિભૂતિ કે અનુસાર ગાજે ઘાંજેકે સાથ તેતલિપુર નગર કે ધીર્ચો-
'ધીર્ચ' ચલ કર વહ જહાં સુત્રતા આર્યાંકા કા ઉપાશ્રય થા વહા 'પહુંચા ।
('પોટિલા સીયાઓ પચ્ચોરૂહડ, તેતલિપુત્રે પોટિલ પુરઓ કદ્દુ જેણેવ
'સુવચ્યા અંજાઓ તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા, વદડ નમસડ વદિત્તા
નમસિત્તા એવ વચાસી, એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મમ પોટિલા મારિયા ઇટ્ટા
૫ એસણ સસારમઝગિંગા જાવ પવ્વહત્તણ પહિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા !
સિસ્સિણીમિસ્સ અહાસુહ માં પહિવધ કરેહિ) પોટિલા શિર્ષિકા સે
ઉત્તરી-તેતલિપુત્ર પોટિલાકો આગે કરકે જહાં સુત્રતા આર્યાંકા થીં વહાં
ગયા । જા કર ઉસને ઉનકો વંદનાંકી નમસ્કાર ક્રિયા । વદનાં નમસ્કાર
કરકે ફિર હસ પ્રકાર કહને લગો હે દેવાનુપ્રિયે । યહ મેરી પોટિલા નામ
કી પત્ની હૈ । યહ સુદ્ધે ઇષ્ટ, કાન્ત, પ્રિય, મનોજ અને મનોમ હૈ । હસને

પાલખીમા બેઠાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સમ્પન્ની પરિજનાને સથે લઇને
તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ સુજ્ઞા ગાળવાળાની સાથે તેતલિપુર નગરની
'વચ્ચોવચ્ચ' થઇને જ્યા તે સુત્રતા આર્યાંકાને ઉપાશ્રય હતો ત્યા પહોંચ્યો
'(પોટિલા સીયાઓ પચ્ચોરૂહડ, તેતલિપુત્રે પોટિલ પુરઓ કદ્દુ જેણેવ 'સુવચ્યા અંજાઓ
તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગચ્છિત્તા, વદડ, નમસડ, વદિત્તા નમસિત્તા એવ વચાસી એવ
સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! મમ પોટિલા મારિયા ઇટ્ટા ૫ એસણ સસારમઝગિંગા જાવ
પવ્વહત્તણ પહિચ્છતુ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સિસ્સિણીમિસ્સ અહાસુહ માં પહિવધ કરેહિ)
'પોટિલા પાલખીમાંથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોટિલાને
આગળ રાખીને જ્યા સુત્રતા આર્યાંકા હતી ત્યા ગયો ત્યા જઈને તેણે તેમને
'વદના તેમજ નમસ્કાર કર્યો, વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! આ પોટિલા મામે મારી પત્ની છે અને એ ઇષ્ટકાંત,
પ્રિય, મનોજ અને મનોમ છે એણે તમારી પાસેથી 'ધર્મ' શ્રવણ કર્યું છે

एषा खलु भवतीना ममीपे धर्मे श्रुता, धर्मश्रवणजनितवैराग्यशतात् समारमयो
 द्विना 'जाव पवइत्तए' यात् प्रजितुम् भीता जन्म मरणेभ्यो भवतीनामन्तिके
 प्रव्रज्या ग्रहीतुमिच्छति, तस्मात् 'पडिच्छतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु देवानु
 प्रियाः ! इमा शिष्याभिक्षाम्, सुप्रतार्या प्राह—यथासुखम् मा प्रतिवन्ध कुरुष्व ।
 ततः खलु सा पोट्टिला सुप्रताभिरार्याभिरैवमुक्ता सती हृष्टतृप्ता उत्तरपौरस्त्य
 दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्राम्यति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्या
 लकारमवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिक लोच करोति, कृत्वा यत्रैव सुप्रता
 आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, गन्दिह्या नमस्यित्वा एवमव
 दत्—'अलिच्छेण भते ! लोए' आदीप्तः खलु भदन्त ! लोकः—हे आर्ये ! एष
 लोको जन्मनरामरणादिभिर्दुःखैः प्रज्वलितः, 'एव' अनेन प्रकारेण 'जहा देवाणदा'
 यथा देवानन्दा=देवानन्देव एषाऽपि सुप्रतानामन्तिके प्रव्रजिता, यान्त—एकादश
 अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयति, पालयित्वा मासिक्या

आपके पास धर्म सुना है सो उसके प्रभाव से यह ससार भय से
 उद्विग्न हो कर जन्म मरण से भीत, व्रस्त हो कर आपके पास दीक्षित
 होना चाहती है । इसलिये हे देवानुप्रिये ! आप मेरे द्वारा दी गई इस
 शिष्य भिक्षाको अंगीकार कीजिये । तब सुप्रता आर्यिका ने कहा—
 यथा सुख मा प्रतिवध कुरुष्व—(तएण सा पोट्टिला—सुव्वयाहिं अज्जाहिं
 एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिम दिमीभागं अवक्कमइ, अवक्क
 मित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पच्च
 मुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवा
 गच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अलिच्छे ण
 भते । लोए एव जहा देवाणदा जाव एककारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि

તેના પ્રભાવથી એ સસારભયથી વ્યાકુળ થઇને જન્મ-મરણથી ભીત અને વ્રસ્ત
 થઇને તમારી પાસેથી દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે એટલા માટે હે દેવાનુ
 પ્રિયે ! મારા વડે અપાતી આ શિષ્યા રૂપી ભિક્ષાને સ્વીકાર કરે । ત્યારે
 જવાબમાં સુપ્રતા આર્યિકાએ તેને કહ્યું કે 'યથાસુખ મા પ્રતિવધ કુરુષ્વ'
 (તણ સા પોટ્ટિલા સુવ્વયાહિં અજ્જાહિં એવ વુત્તા સમાણા હટ્ઠતુટ્ઠા ઉત્તર
 પુરત્થિમં દિસી ભાગ અવક્કમઇ, અવક્કમિત્તા સયમેવ આભરણ-મલ્લાલકાર
 ઓમુયઇ, ઓમુઇત્તા સયમેવ, પચ્ચમુટ્ઠિય લોય કરેઇ, કરિત્તા જેણેવ સુવ્વયાઓ
 તેણેવ ઉવાગચ્છઇ, ઉવાગચ્છિત્તા વદઇ નમમઇ, વદિત્તા, ણમસિત્તા એવ વયાસી—
 અલિચ્છેણ ભતે ! લોએ એવ જહા દેવાણંદા જાવ એકકારસઅંગાઇ અહિજ્જઇ, બહૂણિ

સહેલનયા આત્માન જુદ્ધા પઠ્ઠિ મક્તાનિ અનશનેન છિન્વા, ' આલોદ્યપડિકતા ' આલોચિત પ્રતિક્રાન્તા ' સમાદિપતા ' સમાધિપ્રાપ્તા કાલમાસે કાલ કૃત્વા અન્ય-તરેષુ દેવગોકેષુ દેવતયા ઉપપન્ના । સુ.૮ ॥

ઘાસાણિ સામન્નપરિયાગ પાડણહ, પાડણિત્તા માસિયાએ સહેહણાએ અત્તાણ ક્ષોસેત્તા સદ્દિમ્ભત્તાહ અણસણાએ છેદિત્તા આલોદ્યપડિકતા સમાદિપત્તા, કાલમાસે કાલ કિન્વા અણ્ણતરેસુ - દેવલોએસુ દેવત્તાણ ઉવવણ્ણા) હસ પ્રકાર સુવ્રતા આર્યિકા કે દ્વારા કરી गई वह-पोट्टिला बहुत अधिक हृष्टतुष्ट हुई। बाद में वह ईशान कोणमें गई। वहां जाकर उसने अपने हाथों से शरीर पर रहे हुए आभरण, माल्य एव अल कारों को उतार दिया। उतार कर अपने आप पंचमुष्टिक वेश्यों का लुचन किया-लुचन कर फिर वह जहां सुव्रता आर्या थीं वहां आई। आते ही उसने उन्हें वन्दना एव नमस्कार करके फिर वह इस प्रकार बोली— हे भदन्त ! यह लोक जरा मरण आदि दुःखों से प्रद्वलित हो रहा है, इस प्रकार से देवानदा की तरह यह सुव्रता आर्या के पास दीक्षित हो गई। याचत् उसने ११ अर्गों का अध्ययन भी कर लिया। बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया। प्रीतिपूर्वक अन्त में एक मास की सहेलना धारण कर ६०, भक्तों का अनशन द्वारा छेद

ઘાસાણિ સામન્નપરિયાગ પાડણહ, પાડણિત્તા માસિયાએ સહેહણાએ અત્તાણ ક્ષોસેત્તા સદ્દિ મ્ભત્તાહ અણસણાએ છેદિત્તા આલોદ્યપડિકતા સમાદિપત્તા, કાલમાસે કાલ કિન્વા અણ્ણતરેસુ દેવલોએસુ દેવત્તાણ ઉવવણ્ણા)

આ રીતે સુવ્રતા આર્યિકા વડે આજ્ઞા અપાયેલી પોટ્ટિલા ખૂબ જ હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈ ગઈ ત્યારપછી તે ઈશાન કોણ તરફ ગઈ અને ત્યાં જઈને તેણે પોતાના હાથથી જ શરીર ઉપરના આભરણો, માળાઓ અને અલ કારો ને ઉતાર્યા અને ઉતારીને પોતાની મેળે જ પાચ મુઠ્ઠી કેશોનુ લુચન કર્યું લુચન કર્યા પછી તે જ્યાં સુવ્રતા આર્યા હતી ત્યાં આવતી રહી ત્યાં આવીને તેણે તેમને વદન અને નમસ્કાર કર્યા, વદના અને નમસ્કાર કરીને તે આ પ્રમાણે વિનતી કરવા લાગી કે હે ભદન્ત ! આ સંસાર જરા (ઘટપણ) મરણ વગેરે દુખોથી સજગી રહ્યો છે આ રીતે પોટ્ટિલા દેવાનદાની જેમ સુવ્રતા આર્યાની પાસે દીક્ષિત થઈ ગઈ અને અનુક્રમે તેણે અગિયાર અંગોનુ અધ્યયન પણ કરી લીધું તેણે ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું છેવટે પ્રીતિપૂર્વક એક માસની સહેલના ધારણ કરીને અનશન વડે સાઠ લક્ષોનુ છેદન કર્યું

एषा खलु भवतीना समीपे धर्मे श्रुता, धर्मश्रवणजनितवैराग्यशतात् समात्मनो द्विगुणा 'जाय पञ्चदत्त' यावत् प्रयजितुम् भीता जन्म मरणेभ्यो भवतीनामन्तिके प्रयज्या ग्रहीतुमिच्छति, तस्मात् 'पठिच्छु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्यन्तु गल देवानु प्रियाः । इमा शिष्याभिक्षाम्, सुवतार्या प्राह—यथामुखम् मा प्रतियन्य कुरुष्व । ततः खलु सा पोट्टिला सुवताभिरार्याभिरेवमुक्ता सती हृष्टतुष्टा उत्तरपौरस्त्य दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्राम्यति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्या लकारमयमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिक लोच करोति, कृता यत्रैव सुवता आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमव दत्—'आलिच्छेण भते ! लोए' आदीप्तः खलु भदन्त ! लोकः—हे आर्ये ! एष लोको जन्म मरामरणादिभिर्दुःखैः प्रज्वलितः, 'एव' अनेन प्रकारेण 'जहा देवाणदा' यथा देवानन्द=देवानन्देव एषाऽपि सुवतानामन्तिके प्रयमिता, यावत्—एकादश अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयति, पालयित्वा मासिक्या

आपके पास धर्म सुना है सो उसके प्रभाव से यह सत्तार भय से उद्विग्न हो कर जन्म मरण से भीत, व्रस्त हो कर आपके पास दीक्षित होना चाहती है । इसलिये हे देवानुप्रिये ! आप मेरे द्वारा दी गई इस शिष्य भिक्षाको अगीकार कीजिये । तब सुवता आर्यिका ने कहा— यथा सुख मा प्रतियध कुरुष्व—(तएण सा पोट्टिला—सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा उत्तरपुरत्थिम दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्क मित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पच मुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवा गच्छित्ता वदइ नमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अलिच्छे ण भते । लोए एव जहा देवाणदा जाव एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि

तेना प्रभावधी जे सत्तारलयधी व्याकुण थधने जन्म-मरलुधी भीत अने व्रस्त थधने तमागी पासेधी दीक्षा ग्रहण करवा छिउ छे जेट्ठा भाटे छे देवानु प्रिये । मारा वडे अपाती आ शिष्या इपी भिक्षानो स्वीकार करे । त्यारे जवाणभा सुवता आर्यिकाजे तेने कछु के ' यथासुख मा प्रतियध कुरुष्व ' (तएण सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एव वुत्ता समाणा हट्ठुट्ठा उत्तर-पुरत्थिम दिसी भाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पचमुट्ठिय लोय करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नममइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अलिच्छेण भते । लोए एव जहा देवाणदा जाव एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि

जाव उवणेइ, उवणित्ता, एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया !
 कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नाम
 कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रत्तो
 रहस्सियं सवड्ढिए, एयं णं तुव्वमे महयार रायाभिसेएणं अभि-
 सिचह । सव्व च से उट्ठाणपरियावणिय परिकहेइ । तएणं ते
 ईसर० कणगज्झयं कुमार महयार रायाभिसेएणं अभिसिचंति ।
 तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय०
 वण्णओ जाव रज्जे पसासेमाणे विहरइ । तएणं सा पउमा-
 वई देवी कणगज्झय रायं सदावेइ, सदावित्ता, एवं वयासी—
 एस णं पुत्ता ! तव रज्जे य जाव अतेउरे य० तुम च तैतलि-
 पुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, तं तुमं ण तेयलिपुत्तं अमच्चं
 आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इत अब्भुट्ठेहि, ठियं
 पज्जुवासाहि, वयंतं पडिससाहेहि, अच्चासणेणं उवणिमंतेहि
 भोग च से अणुद्वेहि । तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए
 देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोगं च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा
 कदाचित् । ‘कालग्गमुगा सजुत्ते’ काळवर्मण सयुक्तः= मृतश्चाप्यभयत् । ततः

‘तएण से कणगरहे राया’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ)
 वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया (तएण

‘तएण से कणगरहे राया’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएणं) त्यागपत्ति (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) ते कनकरथ

कवलित थय गयो ओटले के मृत्यु पाये।

मूलम्—तएण से कणगरहे राया अन्नया कयाइ कालधम्मणुण सजुत्ते यावि होत्था । तएण राईसर जाव जीहरणं करेत्ति, करित्ता, अन्नमन्न एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए । कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था, अम्हेणं देवाणुप्पिया । रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अय च णं तेतली अमच्चे कणगरहस्स रत्तो, सव्वट्ठाणेषु सव्वभूमियासु लद्धं चण दिन्नवियारे सव्वकज्जवद्वावए यावि होत्था, त सेय खलु अम्ह तेतलिपुत्त अमच्चं कुमारं जाइत्तएत्ति कट्ठु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेत्ति, पडिसुणित्ता, जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छत्ति, उवागच्छिता, तेतलिपुत्त अमच्च एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया । कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियगेइ । अम्हे यणं रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुम च णं देवाणुप्पिया । कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेषु जाव रज्जधुराचितए, तं जइण देवाणुप्पिया । अत्थि केइ कुमारे सायलक्खणसपन्ने अभिसेयारिहे, तण्णं तुम अम्ह दलाहि । जाणं अम्हे मइयार रायाभिसेएणं अभिसिचामो । तएणं तेतलिपुत्ते तेसि ईसर० एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, कणगज्झय कुमार णहाय जाव सस्सिरीय करेइ, करित्ता तेसि ईसर

दिया । छेद कर आलोचित प्रतिक्रान्त बनी हुई यह समाधि प्राप्त हो गई और काल अवसर काल कर अन्यतर देवलोकमें देवता की पर्याय से उत्पन्न हो गई । सू० ८ ॥

छेद करीने आलोचित प्रतिक्रान्त बनी हुई यह समाधि प्राप्त थी यह अने काण अवसर काण करीने अन्यतर देवलोकमा देवताता पर्यायधी अन्न पायी सू० '८'

जाव उवणेइ, उवणित्ता, एवं वयासी—एस ण देवाणुप्पिया ।
 कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नाम
 कुमारे अभिसेयारिहे रायलम्बणसंपन्ने मए कणगरहस्स रत्तो
 रहस्सियं सवड्ढिए, एयं णं तुव्वमे महयार रायाभिसेएणं अभि-
 सिचह । सव्व च से उट्ठाणपरियावणिय परिकहेइ । तएणं ते
 ईसर० कणगज्झयं कुमारं महयार रायाभिसेएणं अभिसिचंति ।
 तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय०
 वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ । तएणं सा पउमा-
 वई देवी कणगज्झय रायं सदावेइ, सदावित्ता, एव वयासी—
 एस णं पुत्ता । तव रज्जे य जाव अंतेउरे य० तुम च तेलि
 पुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुमं ण तेयलिपुत्त अमच्चं
 आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इंत अब्भुट्ठेहि, ठियं
 पज्जुवासाहि, वयंतं पडिससाहेहि, अद्धासणेणं उवणिमंतेहि
 भोग च से अणुवड्ढेहि । तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए
 देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोग च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा
 कदाचित् । ‘कालम्मृगा सजुत्ते’ काव्वर्मेण सयुक्तः= मृतश्राप्यभनत् । ततः

‘तएण से कणगरहे राया’ इत्यादि ।

टीकोर्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ)
 वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया (तएण

‘तएण से कणगरहे राया’ इत्यादि

टीकाथ—(तएणं) त्यारपछी (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) ते कनकरथ
 राजा कोई दिवसे कालकवलित थय गयो ओटवे के मृत्यु पाभ्ये ।

खलु 'राईसर० जाव' = राजेश्वर० यावत् = राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकादि
 सार्धवाहमभृतयः तस्य 'णीहरणं' निहरणं = मृतककृत्यं कुर्यन्ति, कृत्वा भग्न्यो
 अन्यमेवमयदन्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! कनकरयो राजा 'रज्जे य जाव पुत्ते'
 राज्ये च यावत् पुत्रान् = राज्यादिषु मूर्च्छित उत्पन्नान् पुत्रान् 'वियगित्था'
 अव्यङ्गयत् = विकृताङ्गान् कृतगान् मारितगानित्यर्थः । 'अम्हेण' वयं गन्तुं देवानु
 प्रिया ! 'रायाहीणा' राजाधीनाः = राजयशवर्तिनः, 'रायाहिट्टिया' राजाधि
 णिता = राजाश्रिता इत्यर्थः, 'रायाहीणकज्जा' राजाधीनकार्याः, रायामधीन कार्ये

राईसर जाव णीहरण करेनि, करिप्ता अन्नमन्न एव वयासी-एव खलु
 देवानुप्रिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था) राजेश्वर,
 तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, सार्धवाह आदि व्यक्तियों ने मिल कर
 उसका दाह संस्कार किया । दाह संस्काररूप मृतक कृत्य करने के बाद
 फिर उन लोगों ने परस्पर में इस प्रकार का विचार किया । हे देवानु
 प्रियो ! देखो कनकरथ राजाने तो राज्य आदि में मूर्च्छित हो कर
 उत्पन्न हुए समस्त पुत्रों को विकृत अंग करके मार डोला है (अम्हे णं
 देवानुप्रिया ! रायाहीणा रायाहिट्टिया रायाहीणकज्जा अय च ण तेत
 लीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेषु-सव्वभूमियासु लद्धपच्चए,
 दिन्नवियारे-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था) अय इस समय कोई राजा
 है नहीं अतः हमलोगों का क्या होगा क्यो कि हम लोग तो हे देवा
 नुप्रियो ! राजा वशवर्ती है, राजा के आश्रित ही रहते आये हैं, हमारा

(तएण राईसर जाव णीहरण करेति, करिप्ता अन्नमन्न एव वयासी-एव
 खलु देवानुप्रिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था)

राजेश्वर, तलवर, माडम्बिक कौटुम्बिक, सार्धवाह वगैरे लोकोत्थे भणीने
 तेना अग्नि-संस्कार कर्थे अग्नि-संस्कार आदि मृत्यु विधि पतावीने ते लोकोत्थे
 परस्पर भणीने आ प्रभाण्णे विचार कर्थे के हे देवानुप्रियो ! बुद्धो, राजा
 कनकरथे तो राज्य वगैरेनी भावतमा लोभ्य तेभञ्ज मोहित थयने उत्पन्न
 थयेला पोताना पधा पुत्राना अगो कापीने भारी नाभ्या छे

(अम्हेण देवानुप्रिया ! राया हीणा रायाहिट्टिया रायाहीणकज्जा, अय च
 ण तेतलीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेषु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए, दि
 विचारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था)

इवे अत्यारे कोध राजा छे नहि तो अमारी थी दशा थये ? हे
 देवानुप्रियो ! अमे तो राजाना वशवर्ती छीये, राजाने अधीन रहेवाभा न

યેવા તે તથા, સર્વસમાક્રુ કૃત્ય રાજાધીન વર્તેતે રૂતિ માત્રઃ । અય ચ સ્વલુ તેતલિ
રમાત્યઃ કનકરયસ્ય રાજ ' સવ્વઠાણેસુ ' સર્વસ્થાનેપુ=સધિવિગ્રહાદિપુ સર્વેપુ
કાર્યેપુ, ' સવ્વભૂમિયાસુ ' સર્વભૂમિકાસુ = સ્વામ્યમાત્યગાદૂર્ગકોપચલસુહૃત્પૌર-
શ્રેણિરૂપાટ્ટધિયાસુ ' લઢ્ઢપચ્ચણ ' =લઢ્ઢવપત્યય-લઢ્ઢઃ=પ્રાપ્ત પ્રત્યયો વિશ્વાસો
યસ્ય સઃ, સમ્મલજનવિશ્વાસપાત્રમિત્યર્થઃ, ' દિન્નવિચારે ' દત્તવિચારઃ, દત્તઃ=
રાજે ત્રિતોર્ણઃ, વિચાર=શોભનો વિચારો યેન મ, લોકોપકારિ વિચારદાયક રૂતિ-
માત્રઃ, ' સવ્વરુજ્જવહૂવણ ' સર્વકાર્યવર્દક =રાજ્યે સમસ્તકાર્યસમ્પાદનશ્રાપિ
' હોત્થા ' અસ્તિ । ' ત ' તત્=તસ્માત્ કારગાત્ ' સેય ' શ્રેયઃ=ઉચિત સ્વલુ અસ્માકં
તેતલિપુત્રમમાત્ય કુમાર ' જાહત્તણ ' યાચિતુમ્, અયમભિપ્રાય-અયમમાત્યો
રાજ સમ્મલકાર્યનિર્વાહકઃ, અતસ્તત્સમીપે ગત્વા ' કોડપિ રાજલક્ષણસપન્ન
કુમારો રાજપદે સ્થાપનીય. ' રૂતિ વાર્તાલાપમુપક્રમ્ય, સમાગતે પ્રસન્ને, તત્પુત્રો
રાજપદે સ્થાપયિતુ યાચનીય., ' ત્તિરુદ્ધુ ' રૂતિ કૃત્વા=રૂતિ મનસિ કૃત્વા અન્યો-
ડન્યસ્ય એતમર્થ ' પઢિસુર્ણેતિ ' પ્રતિશૃણ્વન્તિ=સ્વીકૃવન્તિ, ' પઢિસુણિત્તા ' પ્રતિ
શ્રુત્ય, યજેવ તેતલિપુત્રોડમાત્યસ્તજૈવ ઉપાગચ્છત્તિ, ઉપાગત્ય, એવમવદન્-એવ સ્વલુ

જિતના મી કાર્ય હોતા હૈ વહ સવ રાજાધીન હી હોતા આયા હૈ । રૂતિ
લિયે તેતલિપુત્ર જો અમાત્ય હૈ ચલો ડનકે પાસ ચલે ક્યોં કિ વે હી
કનકરય રાજાકે લિયે સધિવિગ્રહ આદિ સમસ્ત કાર્યોં મેં એવ સ્વામી,
અમાત્ય, રાષ્ટ્ર, દુર્ગ કોશ, ચલ, સુહૃત્ ઓર પૌરશ્રેણીરૂપ આઠ ભૂમિયોં
મેં વિશ્વસનીય થે । રાજા કે લિયે વે હી લોકોપકારી કાર્યોં મેં સલાહ
દિયા કરતે થે ઓર વે હી રાજ્યમેં સમસ્ત કાર્યોં કે સંપાદક હેં (ત સેય
સ્વલુ અમ્હ તેતલિપુત્ર અમચ્ચકુમાર જાહત્તણ ત્તિરુદ્ધુ અન્નમન્નસ્સ એય
મદ્ધ પઢિસુર્ણેતિ, પઢિસુણિત્તા જેણેવ તેતલિપુત્તે અમચ્ચે તેણેવ ઉવાગ-
ચ્છત્તિ, ઉવાગચ્છિત્તા તેતલિપુત્ત અમચ્ચ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુ-

ટેવાઈ ગયેલા છીએ અમારા બધા કામો રાજાધીન જ હોય છે એથી આલો
આપણે સૌ મળાને અમાત્ય તેતલિપુત્રની પાસે જઈએ, ડેમકે તેઓ જ રાજા
કનકરથના સધિવિગ્રહ વગેરે બધા કામોમા અને સ્વામી અમાત્ય, રાષ્ટ્ર દુર્ગ,
કોશબળ, સુહૃત અને પૌર શ્રેણિરૂપ આઠ ભૂમિઓમા તે વિશ્વસનીય છે લોકોના
હિત માટે તેતલિપુત્ર અમાત્ય જ સલાહ આપતા ગહેતા હતા તેમજ રાજ્યના
બધા કામોને પાર પાડનારા પણ તેઓ જ છે

(તસેય સ્વલુ અમ્હ તેતલિપુત્ર અમચ્ચકુમાર જાહત્તણ ત્તિરુદ્ધુ અન્નમન્નસ્સ
એયમદ્ધ પઢિસુર્ણેતિ, પઢિસુણિત્તા જેણેવ તેતલિપુત્તે અમચ્ચે તેણેવ ઉવાગચ્છત્તિ,
ઉવાગચ્છિત્તા તેતલિપુત્ત અમચ્ચ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપિયા ! કંપગરદે

હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથો રાજા રાજ્યે ચ રાષ્ટ્રે ચ યાત્રા વ્યવરિતિ, ત્રય ચ સ્વદે
હે દેવાનુપ્રિય ! રાજાધીના યાત્રા રાજાધીનકાર્યોઃ, સ્વ ચ સ્વદે દેવાનુપ્રિય !

પિપ્પા ! કળગરહે રાયા રજ્જે ય રદ્ધે ય જાવ વિયગેઠ, અમ્હે ય ણ રાયા
દીણા જાવ રાયદીણકજ્જા, તુમ ચ ણ દેવાણુપ્પિયા । કળગરહસ્સ રણ્ણો
સન્વદ્ધાણેસુ જાવ રજ્જધુરા ચિત્તે—ત જહ્ણ દેવાણુપ્પિયા । અત્થિ કેદ
કુમારે રાયલક્ષણસપ્પને અભિસેયારિદ્ધે, તણ્ણ તુમ અમ્હ દલાહિ)
હસલિયે હમ્મકો ઉચિત્ત હે કિ હમ્મ તેતલિપુત્ર અમાત્ય સે કુમાર કી
યાચના કરે । તાત્પર્ય હસ કા યદ્દ હે કિ યે તેતલિપુત્ર અમાત્ય રાજા કે
સકલ કાર્ય નિર્વાહક હૈ—હસલિયે ડનકે પાસ ચલકર “કોઈ રાજ
લક્ષણ સપ્પન્ન કુમાર રાજપદ મેં સ્થાપનીય હે ” હસ યાત કી હમ ચર્ચા
કરે । હસ ચર્ચા કે પ્રસંગ મેં ડનસે યદ્દ બી નિવેદન કરેગે કિ આપ
અપને પુત્ર કી હી રાજ પદ મેં સ્થાપિત કર દીજિયે । હસ પ્રકાર કા
વિચાર ડન્હોને કિયા । જમ્મ વિચાર સ્થિર હોચુલા—તય સયને હસ યાત
કો એક મત સે સ્વીકાર કર લિયા । સ્વીકાર કર કે ફિર વે સયકે સમ
જહા અમાત્ય તેતલિપુત્ર થે વદા ગયે । વદા જાકર ડન્હોને એસા કહા—
હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાને રાજ્ય ઓર રાષ્ટ્ર આદિ મેં વિશેષ મૂ
ર્ચિત્ત બનકર ઉત્પન્ન હુણ અપને સમસ્ત પુત્રો કો અગમગ કર મારડાલા

રાયા રજ્જે ય રદ્ધે ય જાવ વિયગેઠ, અમ્હે ય ણ દેવાણુપ્પિયા । કળગરહસ્સ રણ્ણો
સન્વદ્ધાણેસુ જાવ રજ્જધુરાચિત્તે—ત જહ્ણ દેવાણુપ્પિયા । અત્થિ કેદ કુમારે
રાયલક્ષણસપ્પને અભિસેયારિદ્ધે, તણ્ણ તુમ અમ્હ દલાહિ)

એથી અમને એ ઉચિત લાગે છે કે અમે તેતલિપુત્ર અમાત્યની પાસે
જઘને રાજકુમારની યાચના કરીએ તો તેતલિપુત્ર અમાત્ય રામના બધા
કામોને સારી રીતે પાર પાડનારા છે, એટલા માટે તેમની પાસે જઘને રાજ
યના ચોગ્ય રાજ-લક્ષણ યુક્ત કોઈ કુમાર મળી શકે તેમ છે કે કેમ ? તે
વિશે ચર્ચા કરીએ આ બાતની વિચારણા કરતા કરતા અમે બધા તેમને એવી
વિનંતી પણ કરીશું કે તમે પોતાના પુત્રને જ રાજગાદીએ બેસાડી દો આમ
તે લોકોએ મળીને વિચાર કર્યો આમ વિચાર પાડે થઈ ગયો ત્યારે સૌએ
એકમત થઈને તેને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેઓ બધા ત્યાથી જ્યા
અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતા ત્યા ગયા, ત્યા જઘને તેમણે તેતલિપુત્રને જહુ કે હ
દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાએ રાજ્ય અને રાષ્ટ્ર વગેરેમાં સર્વિશેષ મૂર્ચિત્ત એટલે કે
મોહવશ થઈને જન્મ પામેલા પોતાના બધા જ પુત્રોના અગ્ર કામીને ને મારી

कनकरथस्य राज्ञः सर्वस्थानेषु यावत् 'रज्जधुरार्चितम्' राज्यस्य धूः राज्यधुरा, तस्याधिन्तकः, राज्यभारनिर्वाहकश्चामि, तद् यदि खलु देवानुप्रिय ! अस्ति कोऽपि कुमारो राजलक्षणसपन्नः 'अभिसेयारिहे' अभिपेकार्थं राज्याभिषेक्याग्यः, 'त ण' त खलु त्वमस्मभ्य 'दलाहि' देहि 'जो' यस्मात् 'ण' त 'अम्हे' वय महता २ 'रायाभिसेएण' राज्याभिषेकेण=राजयोग्येनाभिषेकेण अभि पिञ्चामः राज्ये स्थापयाम इत्यर्थः। ततः खलु तेतलिपुत्रः तेषाम् 'ईसर०=ईश्वर०= ईश्वरतलपरमाडम्पिकादि सार्थवद्दमभृतीनाम् एतमर्थ 'पडिसुणेइ' प्ररिश्रृणोति= स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वाकृत्य, वनकञ्चज कुमार 'ण्हाय सस्सिरीय' स्नात यावत् सश्रीक, स्नात=कृतस्नानम्, यावत् सश्रीकम्=सर्वालङ्कारनिभूषित शोभा- समन्वित च करोति, कृत्वा तेषाम् 'ईसर जाय' ईश्वर यावत्=ईश्वरादीना सम्मुखे 'उण्णेइ' उपनयति, उपनीय एयमगादीत्-एष खलु हे देवानुप्रिया !

है। अब इस समय राज पद में कोई नहीं है। हमलोग तो हे देवानुप्रिय। राजाधीन यावत् राजाधीन कार्य वाले हैं। और देवानुप्रिय ! कनक रथ राजा के लिये सघि विग्रह आदि समस्त स्थानों में एव स्वामी अमा- त्य आदि आठ भूमियों में विश्वसनीय रहें हैं। राजा के लिये लोकोप- कारी कार्यों में आप सलाह देते रहे हैं। और आप ही राज्य भार के निर्वाहक हैं। इसलिये हमारी आपसे यह प्रार्थना है कि हे देवानुप्रिय ! यदि राज्यलक्षण सपन्न कोई कुमार राज्य पद में अभिषेक करने के योग्य होवे तो उसे आप हमें देवे। (जो ण अम्हे महया २ रायाभिसे एण अभिसिचामो। तएण तेतलिपुत्ते तेसि ईसरएयमद्व पडिसुणेइ, पडिसुगित्ता कणगज्झय कुमार ण्हाय जाव सस्मिरीय करेइ, करित्ता तेसि ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी) कि जिससे हम उसे

नाभ्या छे हवे अत्थादे राजपद भाटे कोइ रह्यु नथी छे देवानुप्रिय ! अमे लोको तो राजाधीन रह्योने न रह्योता आब्या छीअने अने छे देवा नुप्रिय ! तमे राजा कनकरथना सघिविग्रह वगेरे णाधा कामेभा अेटवे छे स्वाभी अमात्य, विग्रह विगेरे तमाभ कामेभा ह भेशा विश्वासपात्र रह्या छे, लोकहितनी भाषणमा तमे राजने सलाह आपता रह्या छे, अने तमेन शान्त्यना भधा कामेने पार पाउता आब्या छे जेथी अमे तमने जेवी विनति करीये छीअने छे हे देवानुप्रिय ! राज-लक्षणेवाणे अने अलिपिकत यधने राजगादीअे भेसवा येअ्य कोइ कुमार डोय तो तेने तमे अभने सोयो (जे ण अम्हे महया २ रायाभिसेएण अभिसिचामो। तएण तेतलिपुत्ते तेसि ईसर एयमद्व पडिसुणेइ, पडिसुणेता कणगज्झय कुमार ण्हाय जाव सस्मिरीये करेइ, करित्ता तेसि ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी)

કનકરથસ્ય રાજા પુત્રઃ પદ્માવત્યા દેવ્યા આત્મજઃ કનકરથજો નામ કુમારઃ અભિ
પેક્ષાર્થે રાજલક્ષણસમ્પન્નો મયા કનકરથસ્ય રાજો 'રહસ્તિય' રહસ્તિય=મન્ત્ર
યથા સ્યાત્તથા સચ્ચિત્, એત સ્વલ્પ યુય મહતા ૨ રાજાભિપેક્ષેણ અભિપિચ્ચત્ ।
પુનઃ સઃ સર્ગે ચ 'સે' તસ્ય 'ઉદ્ઘાણપરિયાવણિય' ઉદ્ઘાણપરિયાવણિય=

રાજ યોગ્ય અભિપેક્ષ દ્વારા અભિપિચ્ચત્ કર રાજ્ય મેં સ્થાપિત કરે । इस
तुरह के उन ईश्वर, तलवर, माडम्यिक आदि सार्धवाह बगेरह के इस
कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्य ने स्वीकार कर लिया और
स्वीकार करके कनक वज कुमार को उसने नष्ट युवाकर मर्वालकारों
से विभूषित किया । विभूषित करके फिर वह उसे उन ईश्वर तलवर
आदिकों के समक्ष ले आया । लाकर के उनसे उसने ऐसा कहा—(एस
ण देवानुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमार्वए अत्तए कणगज्झए
णाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलखणसपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो
रहस्सिय सवड्डिए एय ण तुम्हे महया महया रायाभिसेएण अभिसिं
चह) हे देवानुप्रियो ! यह कनकरथ राजा का पुत्र है जो पद्मावती की
कुक्षि से जन्मा है । इसका नाम कनक वज कुमार है । अभिपेक्ष के
योग्य है और राजलक्षण संपन्न है । मैंने इसको कनकरथ राजा से छिपा
कर पालापोषा है और वृद्धिगत किया है । इसे आपलोग बड़े भारी
राजयोग्य अभिपेक्ष के साथ राज्य में स्थापित कीजिये । (सव्व च से

કે જેથી અને તેનો રાજ્યાસને અભિપેક્ષ કરી શકીએ આ રીતે અમાત્ય
તેતલિપુત્રે તે ઈશ્વર, તલવર, માડમ્યિક, સાર્ધવાહ બગેરેના કથનને સ્વીકાર્યું
અને સ્વીકારીને તેણે કનકરથ કુમારને સ્નોન કરાવ્યું અને ત્યારપછી બધા
અલકારોથી તેને શુભચાર્યો ત્યારબાદ અમાત્ય તેતલિપુત્રે સુમન્જ થયેલા
કુમારને ઈશ્વર, તલવર બગેરેની સાથે લાવ્યો અને તેઓને કહ્યું કે—

(एसण देवानुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमार्वए अत्तए कणगज्झए
णाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलखणसपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सिय
सवड्डिए एय ण तुम्हे महया महया रायाभिसेएण अभिसिंचह)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આ કનકરથ રાજાનો પુત્ર છે અને પદ્માવતી દેવીના
ગર્ભથી આનો જન્મ થયો છે કનકવજ કુમાર આનું નામ છે આ કુમાર
રાજ્યાસને બેસાડવા યોગ્ય તેમજ રાજલક્ષણોથી શુદ્ધ છે રાજા કનકરથને આ
બાબતની બધું નથી, એ આનું પાલન તેમજ રક્ષણ છુપી રીતે કર્યું છે
તમે લાદે મહોત્સવની સાથે આ કુમારને રાજગાદીએ બેસાડો

उत्थान=जन्म, परियापनिका=जन्मानन्तरमयावधिका समर्द्धनादिपरिस्थितिः,
उत्थान च परियापनिका च=उत्थानपरियापनिकम्=जीवनचरित परिकथयति ।
तत खलु 'ईसर०' ईसरतलवरमाडम्विकादयः कनकध्वज कुमार महता २
राजाभिषेकेण अभिषिञ्चन्ति । ततः खलु स कनकध्वज कुमारो राजा जातः, स
च कनकध्वजो राजा 'महया हिमवत्त०' महाहिमवत्त०=महाहिमवन्महामलय
मन्दरमहेन्द्रसारः 'महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्राणा सार इव सारो यस्य सः,

उद्घाणपरियावणिय परिकहेइ, तएण ते ईसर० कणगज्झय कुमार महया
२ रायाभिसेएण अभिसिंचति । तएण से कणगज्झए कुमारे राया
जाए, महया हिमवत्त मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ,
तएण सा पउमावई देवी कणगज्झय राय सदावेइ, सदावित्ता एव
वयासी) तेसा कहकर फिर उन तेतलिपुत्र अमात्य ने उस कनकध्वज
कुमार का उत्थान-जन्म और परियापनी का-जन्म से लेकर अभी तक
की समस्त पालन पोषण सवर्द्धन आदि परिस्थिति रूप-जीवन चरित्र
उन्हें कह सुनाया-इस के बाद उन ईश्वर, तलवर, माडनिक एव कौटु
म्बिक आदिकोंने कनकध्वज कुमार का बड़े जोर शोर के साथ राज्या
भिषेक किया । राज्य में अभिषिक्त होने के बाद वे कनकध्वज कुमार
अब राजा बन गये । इसका सार-बल लोकमर्षादा कारी होने के कारण
महा हिमवत्त जैसा, यश और कीर्ति के फैलाव के कारण महामलय

॥ सव्व च से उद्घाणपरियावणिय परिकहेइ, तएण ते ईसर० कणगज्झय कुमार
महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचति । तएण से कणगज्झए कुमारे राया जाए,
महया हिमवत्ता मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ, तएण सा पउमा-
वई देवी कणगज्झय राय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी)

आ प्रभ षे कहीने तेतलिपुत्र अमात्ये ते कनकध्वज कुमारउ उत्थान-
जन्म अने परियापनिका ओटवे के जन्मथी भाडीने अत्यार सुग्रीनी पोषण
सवर्द्धन वगेरेनी श्रवण चरित्र सभधी मधी विगत अथधी धति सुधी कही
सभणावी त्यारणाह ते धिहर, तलवर, माडनिक अने कौटुम्बिक वगेरे लोकओ
कनकध्वज कुमारने भहुँ ज भोटा पाया उपर उत्सव उज्जवीने राज्याभिषेक
कथी अभिषिक्त थवा भाह कनकध्वज राजा थई गया हता तेमनु भण लोक
मर्षादाने रक्षनार होवा भदल महाहिमवत्त जेवु हर्तु तेमना यश अने कीर्ति
ओमेर प्रसरेला हता तेथी ते महामलय जेवा हता तेमज तेओ हह प्रति-

લોકમર્યાદાકારિત્વેન મહાદિમયસ્તદ્દજ, પ્રસૂતપત્નઃ કીર્તિત્વેન મહામલયતુલ્ય,
 દૃઢપ્રતિજ્ઞત્વેન મર્ત્યવપદિગ્દર્શકત્વેન ચ મન્દરમહેન્દ્રતુલ્ય, 'વર્ણપ્રો'ર્ણક વિશેષ
 રૂપેણ અન્યતોડવસેયઃ, 'જાવ રજ્જ પમાસેમાણે' યાવગ્રાજ્ય પ્રણામદ્ વિહરતિ
 રાજ્ય કુર્વન્નાસ્તે । તતઃ સ્વલુ સા પશ્ચાત્તીર્દેરી કનકધ્વજ રાજાન શબ્દયતિ,
 શબ્દયિત્વા એમવદત્-એતત્ સ્વલુ દે પુત્ર ! તવ 'રજ્જે ય જાવ અતેઝરેય૦'
 રાજ્ય ચ યાવદન્તઃ પુર ચ એતસ્સર્વં તેતલિપુત્રસ્ય પ્રમાણેન ર્ત્તે 'ત' તત્=કાર
 ãાત્ ત્વ સ્વલુ તેતલિપુત્રમમાત્ય 'આઢાહિ' આદિયસ્વ=આદર કુરુત્ 'પરિ
 જાણાહિ, પરિજાનાહિ=અવેક્ષસ્વ તદનુમત્યા સર્વં કાર્યં સમ્પાદયેત્યર્થઃ સત્કારય
 વત્ત્વાદિના, સમ્માનય માલયાદિના, 'ઇત' યન્તમ્=ભાગચ્છન્તમેત તેતલિપુત્રમ્
 'અમ્બુદેહિ' અમ્બુત્તિષ્ઠ=અમ્બુત્યાનાદિના વિનય પ્રદર્શયેત્યર્થ 'ઠિય પજ્જુવાસાહિ'
 સ્થિત પર્યુપાસ=સેવસ્વ, 'વયત' વ્રજન્ત=ગચ્છન્તમ્ 'પહિસંપાહેહિ' પ્રતિસંમા
 ધય=અનુગમનાદિના પ્રસાદય, તથા 'અદ્દામણેણ ઉવણિમતેહિ' અગ્રીસનેન ઉપનિ
 મન્તય=સ્વસ્થાસને તમુપવેષય, ભોગ=સુખસામગ્રીરૂપ ચ 'સે' તસ્ય અનુવર્દય ।
 તતઃ સ કનકધ્વજ 'પડમાર્વદેવે દેવી' પશ્ચાત્ત્યા દેવ્યાઃ વચન 'તદ્દત્તિ'

કે જૈમા, દૃઢપ્રતિજ્ઞા વાલે એવ કર્તવ્ય કા દિગ્દર્શન કરાને વાલે જૈને
 કે કારણ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ કે જૈમા થા । ઓર મી ઇન રાજા કે વિષય
 કા વિશેષ વર્ણન દૂમરોં શાસ્ત્રોં સે જાન લેના ચાહિયે । યાવત્ ઇસ તરહ
 યે કનકધ્વજ કુમાર અપને રાજ્ય કે શાસન કરને મેં તત્પર થન ગયે ।
 ઇસકે પાદ ઉસ રાજમાના પશ્ચાત્તીર્દેવો ને ઉન કનકધ્વજ રાજાકો અપને
 પાસ બુલાયા-ઑર બુલાકર ફિર ઉનસે ઉસને ઇસ પ્રકાર કહા-(તણ
 પુત્તા ! તવ રજ્જે ય જાવ અતેઝરેય૦ તુમચ તેતલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ પહા
 વેણ, ત તુમ ã તેતલિપુત્ત અમચ્ચ આઢાહિ, પરિજાણાહિ, સકારેહિ, સમ્મા
 ãેહિ, ઇત અમ્બુદેહિ ઠિય પજ્જુવાસાહિ, વયત પહિસસાહેહિ, અદ્દામણેણ

જાવાળા અને કર્તવ્યને જાતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા
 રાજા કનકધ્વજ વિશે સવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમા વર્ણુ-યુ છે, છત્રાસુઓએ
 ત્યાથી બાણી લેકુ જોઇએ આ પ્રમાણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના
 વહીવટને સલાહળવા માટે સાવધ થઇ ગયા ત્યારપછી ર જમાતા પદ્મ વતીદેવીએ
 કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

(તણ પુત્તા ! તવ રજ્જે ય જાવ અતેઝરેય૦ તુમ ચ તેતલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ
 પહાવેણ, ત તુમ ã તેતલિપુત્ત અમચ્ચ આઢાહિ, પરિજાણાહિ. સવકારેહિ. મમ્મા

तथेति= 'तथास्तु' इतिकृत्वा प्रतिशृणोति=स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य तथैव कुर्वाण
वावद् भोगं च तस्य अनुवर्द्धयति ॥ ९ ॥

उवणिमतेहि, भोगं च से अणुवद्धेहि । तएण से कणगज्झए राया पउमाव-
ईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ, जाव भोगं च से अणुवद्धेइ) हे पुत्र ! यह तुम्हारा
राज्य और अतः पुर तथा तुम स्वयं यह जो कृत्तु है वह सब तैत्तलिपुत्र
अमान्य के प्रभाव से ही है इसलिये तुम तैत्तलिपुत्र अमात्य का आदर
करते रहो, उनकी अनुमति से काम किया करो उनका वस्त्रादि द्वारा
नमय २ पर सत्कार करते रहो, अभ्युत्थानादि सन्मान करते रहो और
जब तैत्तलिपुत्र तुम्हें आते हुए दिखलाई दे तो तुम उठकर इनके प्रति
अपना विनय प्रदर्शित किया करो । जब ये जावे-तब तुम बैठ
कर इनकी सेवावृत्ति किया करो, जब ये चलने लगे तो तुम इनके पीछे
२ थोड़ी दूर तक अपने महलों में पहुँचाने जाया करो, अपने बैठने के
आसन पर इन्हें अर्धभाग में बैठाया करो और जो भी सुख साधनकी
सामग्री है यह इनकी बढ़ा दो । हम प्रकार राजमाता पद्मावती देवी के
धर्मों को "तथास्तु" कहकर कनकवज राजाने स्वीकार कर लिया ।

णेहि इत्त अणुवद्धेहि ठिय पज्जुवासाहि वय व पडिससाहेहि, अद्रामणेण उवणिम
तेहि, भोग च से अणुवद्धेहि । तएण से कणगज्झए राया पउमारईए देवीए
तहत्ति पडिसुणेइ, जाव भोग च से अणुवद्धेइ)

हे पुत्र ! आ तमाइ राज्य रत्नवास तेमन् तमे पोते आ णधु ने कथ
छे, ते सबे तैत्तलिपुत्र अमात्यना प्रभावधी न छे जेथी तमे तेन
विपुत्र अमात्यने सदा आदर करता रहो, हरि क काम तेमनी आज्ञाधी करता
रहो, वस्त्रो वगैरे आपीने यथा ममय तेमने अत्कार करता रहो, तेमनु
सन्मान करता रहो अने अमात्य तैत्तलिपुत्र तमने आवता देणाय त्यारे तमे
उलायठने तेमना प्रति विनय युक्त यधने व्यवहार करे न्यारे तेओ नवा
तैयाउ थाय त्यारे तमे जेसीने तेमनी सेवा करता रहो अने न्यारे तेओ
आलवा माडे त्यारे तमे तेमनी पाछण पाछण थोडे दूर सुधी पोताना मडेल
माज विहाय आपवा माटे तेमनु अनुसरण करेता नज्यो तमे तेमने पोताना
आसनना अर्धभाग उपर जेसाओ अने तेमनी णधी सुभगवडनी सामग्री
मा वधारो करी आपो आ रीते राज्यमाता पद्मावती देवीनी आज्ञाने कतक
धर्म 'तथास्तु' कहीने स्वीकारी लीधी, स्वीकार्या पत्री तेआओ ते

લોકમર્યાદાકારિત્વેન મહાહિમસ્તદ્દશ, મહત્ત્વશઃ કીર્તિત્વેન મહામહત્ત્વશઃ,
 દૃઢપ્રતિજ્ઞાત્વેન કર્તવ્યદિગ્દર્શકત્વેન ચ મન્દરમહેન્દ્રતુલ્યઃ, 'વર્ણમ્' વર્ણક વિશેષ
 રૂપેણ અન્યતોઽવસેયઃ, 'જાત્ર રજ્જ પમાસેમાણે' યાત્રાગ્રંથ પ્રણામદ્ વિહરતિ
 રાજ્ય કુર્વન્નાસ્તે । તતઃ સ્વલ સા પદ્માવતીદેવી કનકધ્વજ રાજાન શબ્દયતિ,
 શબ્દયિત્વા એમવદત્-એતત્ સ્વલ હે પુત્ર ! તવ 'રજ્જે ય જાત્ર અતેઝરે ય૦'
 રાજ્ય ચ યાવદન્ત' પુર ચ એતત્સર્વ તેતલિપુત્રસ્ય પ્રમાણેન ર્ત્તે 'ત' તત્=કાર
 ãત્ ત્વ સ્વલ તેતલિપુત્રમમાત્ય 'આદાહિ' આદિયસ્ય=આદર કુરુણ 'પરિ
 જાણાહિ, પરિજાનાહિ=અવેસસ્વ તદનુમરણા સત્રં કાર્યં સમ્પાદયેત્યર્થઃ સત્કાર્ય
 ચત્ત્રાદિના, સમ્માનય માલ્યાદિના, 'ઇત' યન્તમ્=માગચ્છન્તમેત તેતલિપુત્રમ્
 'અમ્બુદેહિ' અમ્બુત્તિષ્ઠ=અમ્બુત્યાનાદિના વિનયપ્રદર્શયેત્યર્થ 'ઠિય પજ્જુવાસાહિ'
 સ્થિત પર્યુપાસ્ય=સેવસ્ય, 'વયત' ધ્વજન્ત=ગચ્છન્તમ્ 'પઢિસંપાદેહિ' પ્રતિસંમા
 ધય=અનુગમનાદિના પ્રસાદય, તથા 'અદ્વાસણેણ ઉવણિમતેહિ' અર્ધાસનેન ઉપનિ
 મન્ત્રય=સ્વસ્થાસને તદુપવેષય, મોગ=સુખસામગ્રીરૂપ ચ 'સે' તસ્ય અનુવર્દય ।
 તતઃ સ કનકધ્વજ 'પડમાવર્દેય દેવીય' પદ્માવત્યા દેવ્યાઃ યત્ન 'તદ્દત્તિ'

કે જૈમા, દૃઢપ્રતિજ્ઞા ચાલે એવ કર્તવ્ય કા દિગ્દર્શન કરાને ચાલે જૈને
 કે કારણ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ કે જૈસા થા । ઓર ખી જન રાજા કે વિષય
 કા વિશેષ વર્ણન દૂમરોં શાસ્ત્રોં સે જાન લેના ચાહિયે । યાવત્ હસ તરહ
 યે કનકધ્વજ કુમાર અપને રાજ્ય કે શાસન કરને મેં તત્પર થન ગયે ।
 હસકે થાદ ઉસ રાજમાતા પદ્માવતીદેવી ને ડન કનકધ્વજ રાજાકો અપને
 પાસ બુલાયા-ઓર બુલાકર ફિર ડનસે ડસને હસ પ્રકાર કહા-(તણ
 પુત્તા ! તવ રજ્જે ય જાવ અતેઝરેય૦ તુમચ તેતલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ પહા
 વેણ, ત તુમ ણ તેતલિપુત્ત અમચ્ચ આદાહિ, પરિજાણાહિ, સકારેહિ, સમ્મા
 ãેહિ, ઇત અમ્બુદેહિ ઠિય પજ્જુવાસાહિ, વયત પઢિસસાદેહિ, અદ્વાસણેણ

જાણા અને કર્તવ્યને બતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા
 રાજા કનકધ્વજ વિશે સવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમા વર્ણવ્યુ છે, છતાંમુખ્યોએ
 ત્યાથી જાણી લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના
 વહીવટને સલાખવા માટે સાવધ થઈ ગયા ત્યારપછી રજમાતા પદ્માવતીદેવીએ
 કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે

(તણ પુત્તા ! તવ રજ્જે ય જાવ અતેઝરેય૦ તુમ ચ તેતલિપુત્તસ્સ અમચ્ચસ્સ
 પહાવેણ, ત તુમ ણ તેતલિપુત્ત અમચ્ચ આદાહિ, પરિજાણાહિ, સકારેહિ, સમ્મા

अव्भुट्टेइ, अणाढायमाणे, अपरियाणमाणे, अणव्भुट्टायमाणे,
परम्पुहे संचिड्डइ । तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अज्जलिं
करेइ । तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए
परम्पुहे संचिड्डइ । तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणयं
जाणित्ता भीए जाव संजायभए एव वयासी—रुट्ठेण मम कण-
गज्झए राया हीणे णं मम कणगज्झए राया, अवज्झाए णं
ममं कणगज्झए, राया त ण नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण
मारेहिइ त्ति कट्ठु भीए तत्थेऽ जाव सणियर पच्चोसकइ, पच्चो-
सक्कित्ता, तमेव आसखध दुरूहेइ, दुरूहित्ता, तेतलिपुर मज्झ-
मज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तएणं
तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासंति, ते तहा नो आढायति
नो परियाणंति नो अव्भुट्टेति नो अंजलिपरिग्गह करेंति, इट्ठाहिं
जाव णो संलवति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ
य समणुगच्छंति । तएण तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव
उवागच्छइ । उवागच्छित्ता जावि य से तत्थ बाहिरिया परिस्ता
भवइ, त जहा—दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सावि य
णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अव्भुट्टेइ, जाविय से अविभ-
तरिया परिस्ता भवइ, त जहा — पियाइ वा मायाइ वा
जाव सुणहाइ वा सावि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ,
नो अव्भुट्टेइ । तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासधरे जेणेव सए
सयणिजे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयणिज्जांसि णिसी-

मूलम्-तएणं से पोट्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २
 केवलपन्नत्ते धम्मं संवोहेइ, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबु
 ज्झइ । तएणं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झरियए
 एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं अढाइ जाव भोग च से
 बड्ढेइ तएणं से तेतलीपुत्ते अभिक्खणं २ सवोहिज्जमाणे वि धम्म
 नो संबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय रायं तेतलिपुत्ताओ
 विप्परिणामेत्तए तिकट्ठु एव सपेहेइ, सपेहिता, कणगज्झयं तेत-
 लिपुत्ताओ विप्परिणामेइ । तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाए जाव
 पायच्छित्ते आसखधवरगए बहूहि पुरिसेहिं सपरिवुडे साओ
 गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव
 पहारेत्थए गमणाए । तएणं० तेतलिपुत्त अमच्च जे जहा ब्रह्मे
 राईसरतलवर जाव पभियाओ पासति, ते तहेव आढायंति,
 परिजाणति, अब्भुट्ठेति, आढाइत्ता, परिजाणित्ता, अब्भुट्ठित्ता,
 अंजलिपरिग्गहं करेति, इट्ठाहि कंताहि जाव वग्गूहि आल-
 वेमाणा य सलवेमाणा य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य
 समणुगच्छति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया
 तेणेव उवागच्छइ । तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्त
 एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, नो अढाइ, नो परियाणाइ, नो

स्वीकार करके फिर उन्होंने वैसा ही सब कुछ करते हुए तेतलिपुत्र
 अमात्य की यावत् सुख साधन सामग्री बढ़ा दी ॥ सू० ९ ॥

प्रभाषेण ण्णु कस्ता तेतलिपुत्र अमात्यनी सुप्पसगवड वज्जेरनी सामग्रीमा
 वधासे करी आभ्यो ॥ सू० ९ ॥

रिए, तत्थ वि से धारा ओपल्ला को मेयं सदहिस्सइ । तेतलि-
पुत्तेणं पासगं गीवाए वंधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेय सदहि-
स्सइ ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव वंधित्ता अत्थाहे जाव
उदगसि, अप्पामुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद-
हिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कसि तणकूडसि अगणिकायं पक्खि-
वित्ता अप्पामुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं
सदहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘तएण से पोट्टिले’ इत्यादि । तत् खलु स पोट्टिलोदेवस्तेतलि-
पुत्रम् ‘अभिक्षण २’ अभीक्षणम् २=पुनः पुनः केवलपिप्रज्ञप्ते धर्मे सजोययति ।
परन्तु नो चैव खलु स तेतलिपुत्र ‘संबुज्झइ’ सम्बुध्यते=प्रतिबोध प्राप्नोति ।
ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य ‘इमेयारूवे’ अयमेतदूप=पुरउच्यमानः ‘अज्झ-
त्थिए’ ५=आध्यात्मिकः विनित्तः प्रार्थितः मनोगत सरूप, समुत्पद्यत ।
सरूपप्रकारमाह—‘एव खलु’ इत्यादि । एव खलु कनकवज्रो राजा तेतलि-
पुत्र आद्रियते यावत् भोग च समर्द्धयति, ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्षण २ मया

‘तएण से पोट्टिले’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव
(तेतलिपुत्त अभिक्षण २ केवलपिप्रज्ञप्ते धर्मे संबोद्धे, नो चैव ण से
तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलपिप्रज्ञप्त धर्ममें
प्रतिबोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हुआ ।
(तएण तस्स पट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एव खलु कणज्झए
राया तेतलिपुत्त अदाइ, जाव भोग च संबद्धेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अ-

तएण से पोट्टिले इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार पछी (से पोट्टिले देवे) ते पोट्टिलाने एव देव

(तेतलिपुत्त अभिक्षण २ केवलपिप्रज्ञप्ते धर्मे संबोद्धे नो चैव ण से तेतलि-
पुत्ते संबुज्झइ)

तेतलिपुत्र अमात्यने बारबार देवणि प्रज्ञप्तधर्ममा प्रतिबोधित करवा
लाग्यो पण तेतलिपुत्रने प्रतिबोध प्राप्त थयो नहि

(तएण तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एव खलु कणज्झए
राया तेतलिपुत्त अदाइ, जाव भोग च संबद्धेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अभिक्षण

यइ, णिसीइत्ता, एवं वयासी-एव खलु अहं सयाओ गिहाओ
 णिग्गच्छामि, त चेव जाव अन्भितरिया, पुरिसा नो आढाइ
 नो परिजाणाइ, नो अब्भुठेइ, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जी
 वीयाओ ववरोवित्तएत्तिकहु, एवं सपेहेइ, संपेहिता तालउडं विसं
 आसगंसि पक्खिवइ, से य विसे णो संक्रमइ । तएणं तेतलि-
 पुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खधंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा
 ओपह्हा । तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव
 उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए वधइ, वधित्ता अप्पाणं
 मुयइ, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना । तएणं से तेतलिपुत्ते महइ
 महालय सिल गीवाए वधइ, वधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसि-
 यसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए । तएणं
 से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडसि अगणिकाय पक्खिवइ, पक्खि-
 वित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए । तएण से
 तेतलोपुत्ते एव वयासी-सद्धेय खलु भो समणा वयंति, सद्धेय
 खलु भो माहणा वयति, सद्धेय खलु भो समणामाहणा वयति,
 अह एगो असद्धेयं वयामि, एव खलु अहं सहपुत्तेहिं अपुत्ते
 को मेय सदहिस्सेइ ? सहमित्तेहिं अमित्ते, को मेय सदहिस्सइ,
 एव अत्थेणं दारेण दासेहिं परिजणेणं एव खलु तेतलिपुत्तेणं
 अमच्चे कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेतलिपुत्तेणं
 तालपुडगे विसे आसगसि पक्खित्ते, से वि य णो कमइ को
 मेय सदहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं नीलुप्पल जाव खयसि, ओह-

रिए, तत्थ वि से धारा ओपल्ला को मेयं सदहिस्सइ । तेतलि-
पुत्तेणं पासगं गीवाए वधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेयं सदहि-
स्सइ ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव वंधित्ता अत्थाहे जाव
उदगसि, अप्पामुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद-
हिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कसि तणकूडासि अगणिकायं पक्खि-
वित्ता अप्पामुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं
सदहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘तएण से पोट्टिले’ इत्यादि । तत् खलु स पोट्टिलोदेवस्तेतलि
पुत्रम् ‘अभिक्षण २’ अभीक्षणम् २=पुनः पुनः केवलपिप्रज्ञप्ते धर्मे सजोयति ।
परन्तु नो चैव खलु स तेतलिपुत्र ‘संबुज्झइ’ सम्बुध्यते=प्रतियोध प्राप्नोति ।
ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य ‘इमेयारूवे’ अयमेतद्रूप =पुरउच्यमानः ‘अज्झ-
त्थिए’ ५=आध्यात्मिक विनित्तः प्रार्थितः मनोगत सरूप, समुदपद्यत ।
सरूपप्रकारमाह—‘एव खलु’ इत्यादि । एव खलु कनकवज्रो राजा तेतलि-
पुत्र आद्रियते यावत् भोग च समर्द्धयति, ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्षण २ मया

‘तएण से पोट्टिले’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव
(तेतलिपुत्त अभिक्षण २ केवलपिप्रज्ञप्ते धर्मे संबोदेइ, नो चैव ण से
तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलपिप्रज्ञप्त धर्ममें
प्रतियोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतियोध को प्राप्त नहीं हुआ ।
(तएण तस्स पट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एव खलु कणज्झए
राया तेतलिपुत्त अदाइ, जाव भोग च संबुद्धेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अ-

तएण से पोट्टिले इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थार पछी (से पोट्टिले देवे) ते पोट्टिलाने एव देव

(तेतलिपुत्त अभिक्षण २ केवलपिप्रज्ञप्ते धर्मे संबोदेइ नो चैव ण से तेतलि
पुत्ते संबुज्झइ)

तेतलिपुत्र अमात्यने बारबार केवणि प्रज्ञप्तधर्मा प्रतियोधित करवा
लाग्ये। पछु तेतलिपुत्रने प्रतियोध प्राप्त थयो नहि

(तएण तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—एव खलु कणज्झए
राया तेतलिपुत्त अदाइ, जाव भोग च संबुद्धेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अभिक्षण

‘સગૌહિજ્જમાણેપિ’ સંગો યમાનોડપિ ધર્મો નો સચુચ્યતે=પ્રતિબોધ ન પ્રાપ્નોતિ ।
 ‘તં તત્’=તમામ કારણાત્ શ્રેયઃ સત્ત્વ મમ યનકધ્વજ રાજાન તેતલિપુત્રાન્ વિગરિ
 નમયિતુમ્=તેતલિપુત્રિણયે કનકધ્વજસ્ય માનસિકો માયો યથા વિપરિણિતો ભવે
 તથા યત્કુચિત્, ઇતિશ્રુત્વા=ઈતિ મનસિ વિચાર્ય ણ સમેવતે વિચારયતિ
 સપ્રેક્ષ્ય કનકધ્વજ તેતલિપુત્રાન્ વિપરિણમયતિ=વિપરીત કરોતિ । તતઃ સ્વલ
 તેતલિપુત્ર ‘કલ્લ’ કલ્લે ટિતીયસ્મિન્ દિને પ્રાયઃ ‘જ્ઞાણ જ્ઞાન પાપચિન્તે’
 સ્નાનો યાવત્ પ્રાયચિત્ત =સ્નાત =કૂનસ્નાનઃ યાવત્ પદન કૃતચરિત્કર્મા=સાકાદિ
 નિમિત્ત કૃતાન્નભાગ કૃતકૌતુકમાગલ્યપ્રાયચિત્તઃ=કૃતાનિ કૌતુકાનિ દુઃસ્વપ્નાદિ
 દોષનિવારણાં મપીપુણ્ડ્રાદીનિ-માદૃશ્યાદીનિ =મદ્ગત્કારનાણિ દ્વાંદ્વતાદીનિ
 =પ્રાયચિત્તવદ્વચ્ચં કર્તવ્ય્યાનિ યેન સઃ, ‘આમરસધવગપ’ અશ્વસ્કન્ધ
 વરગત =અશ્વારુઢ’ ગુહ્યિ પુસ્પૈ સપરિવૃતઃ સ્વસ્માદ્ ગૃહાદ્ નિર્ગન્ઠતિ, નિર્ગત્ય

મિશ્રલ્લખ ૨ સગૌહિજ્જમાણે વિ ધર્મ્મે નો સચુચ્ચત્, ત સેય સ્વલ મમ
 કળગજ્ઞય રાય તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણમેત્તણ્ તિ કટ્ટુ ઇવ સપેહેહ)
 તથા ઉસ પોટ્ટિલ દેવકો જેમા આ યાત્મિક યાવત્ મનોગન સકલ્પ ઉત્પન્ન
 હુઆ કનકધ્વજ રાજા તેતલિપુત્ર અમાત્યકા આદર કરતે હૈં યાવત્ વે
 ઉનકે સુગ સાધનકી સામગ્રી ઘડા દિયા હૈં-હસલિયે મેરે દ્વારા વાર વાર
 પ્રતિબોધિત કરને પર મીવે ધર્મ મે પ્રતિબુદ્ધ નહીં થન રહે હૈં-પ્રતિબોધ
 કો પ્રાપ્ત નહીં હો રહે હૈં । હમલિયે મુજે અવ એસો કરના ચાહિયે કિ
 જિસસે તેતલિપુત્ર કે વિષય મેં કનકધ્વજ રાજા કા માનસિક વિચાર
 ઘડન જાવે । હસ પ્રકાર કા વિચાર ઉસ દેવકે મનમેં જગા (સપેહિત્તા
 કળગજ્ઞય તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણામેહ, તણ તેતલિપુત્તે કલ્લ જ્ઞાણ

૨ સગૌહિજ્જમાણે વિ ધર્મ્મે નો સચુચ્ચત્, ત સેય સ્વલ મમ કળગજ્ઞય રાય
 તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણામેત્તણ્ તિ કટ્ટુ ઇવ સપેહેહ)

ત્યારે તે દેવકી પોટ્ટિલાના જીવ દેવને એવો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનો
 ગત સકલ્પ ઉત્પન્ન કે રાજા કનકધ્વજ અમાત્ય તેતલિપુત્રને આદર કરે છે
 યાવત્ તેઓએ તેમની અધી ભતની સુખસગવડની સામગ્રીમાં વધારો પણ
 કરી આપ્યો છે, એથી મારાવડે વારવાર પ્રતિબોધિત કરવા છતાં
 તેઓ ધર્મમાં પ્રતિબુદ્ધ થઈ જતા નથી એટલે કે તેમને વારવાર પ્રેરણા
 આપવા છતાં પ્રતિબોધ થયો નથી એટલા માટે હું હવે એ પ્રમાણે કંઈક
 કરું કે જેથી રાજા કનકધ્વજના માનસિક વિચારો અમાત્ય તેતલિપુત્રને માટે
 પ્રતિકૂળ થઈ જાય તે દેવે મનમાં આ ભતને વિચાર કર્યો

(સપેહિત્તા કળગજ્ઞય તેતલિપુત્તાઓ વિપ્પરિણામેહ તણ તેતલિપુત્તે કલ્લે
 જ્ઞાણ પાપચિન્તે આસલ્યવરગપ, બહીરિ પુરિસેહી સપરિવૃત્તે, ગિહાઓ,

पयैव कनकध्वजो राजा तर्जय 'पहारेत्य गमणाए' प्राधारयद् गमनाय-प्रस्थित-
वान् । तत खलु तेतलिपुत्रममात्य 'जेजहा' ये यथा=येन प्रकारेण बहवो 'राई
सरतलवरजावपभियाओ' राजेश्वरतलवर यात्रमभृतयः, राजेश्वरतलवरा यः पश्यन्ति,
ते तयैव तममात्यमाद्रियन्ते नमस्कारादिना परिजानन्ति=शुभागमनमित्यनुमो-
दयन्ति, अभ्युत्तिष्ठन्ति=अभ्युत्थानं कुर्वन्ति, आदृत्य परित्राय, अभ्युत्थाय अञ्जलि-
पत्रिहं कुर्वन्ति, तथा इष्टाभिः कान्ताभिः यावत्-प्रियाभिर्मनोहाराभिर्मनोऽमाभिः ।

जाव पायच्छित्ते आसखधवरगए, यहहिं पुत्तिसेहिं स पत्तिवुडे, साओ
गिहाओ, गिग्गच्छइ, गिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव
पहारेत्य गमणाए, तएण० तेतलिपुत्त अमच्चं जे जहा बहवे राईसरत
लवर जाव पभियाओ पासति ते तहेव आढायति परिघाणति, अब्भु-
द्धेति) इस विचार के आते ही उस देवने कनकध्वज राजा को तेतलि
पुत्र अमात्य के प्रति विपरीत परिणमादिया । जब द्वितीय दिन प्रातः
काल स्नान कर घलिकर्म, कर-काकादि निमित्त अन्न का विभाग कर,
कौतुक, मंगल, प्रायश्चित्त कर-दुःस्वप्न आदि दोषों को निवारण करने
के लिये मयी पुण्ड्रादि और मंगल कारक दूर्वाक्षतादि तथा प्रायश्चित्तकी
तरह आवश्यक कृत्य समाप्त कर-वह तेतलिपुत्र अमात्य घांछे पर बैठ
कर जब अनेक पुरुषों के साथ साथ अपने घर से निकला तब निकल
कर वह ऊस ओर गया जहा कनकध्वज राजा थे । तेतलिपुत्र अमात्य
को ज्यों ही राजेश्वर आदि को ने आता हुआ देखा तो उन्होंने पहिले
की तरह ही उसका आदर किया, उसके आगमन की मराहना की

गिगच्छइ गिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्य गमणाए, तएण०
तेतलिपुत्त अमच्चं जे जहा बहवे राईसर तलवर जाव पभियाओ पासति ते
तहेव आढायति पभियाणति, अब्भुद्धेति)

आ जतने विचार उत्पन्न होता है ते देवे अमात्य तेतलिपुत्र ने भाटे
राजा कनकध्वजने प्रतिज्ञा अनानीदीधो जीवहि मे सवार थता स्नान, अ वि
कर्म, (कगडा वगेरे पक्षाओ भाटे अगलाग अथए) कौतुक, मंगल, प्राय
श्चित्त-ओटले डे दुस्वप्न वगेरेना दोषोना छिनसमन भाटे मयी पुण्ड्र वगेरे
तेमज मंगल वारक दुर्वा अक्षत (व्यापा) वगेरेथी प्रायश्चित्त नी आवश्यक
विधिओ यतावाने घडा पुरुषोथी वीटणधने अमात्य तेतलिपुत्र घांछा उपर
सवार थधने जया कनकध्वज रत्न छता त्या गथे अमात्य तेतलिपुत्रने आ-
पता जेतानी साथे ज राजेश्वर वगेरे बोडोओ पडेहानी जेम ज तेमने आदर
करा तेमने अमात्यनी मराहना करी अने जधाओ उलाथधने तेमनेवधावी दीधा

‘संगोहिज्जमाणेपि’ संरो यमानोऽपि धर्मो नो सवुज्झते=प्रतिरोध न प्रानोति ।
 ‘तं तत्’=रमान कारणात् श्रेयः खलु मम वनरूपज राजान तेतलिपुत्ताद् विरि
 णमयितुम्=तेतलिपुत्रविषये कनकध्वजस्य मानसिको भावो यथा विपरिणतो भवे
 तथा स्तुतुचितम्, इति श्रुत्या=इति मनसि विचार्य एव समेयते विचारयति
 सप्रेक्ष्य कनकध्वज तेतलिपुत्ताद् विपरिणमयति=विपरीत करोति । ततः खलु
 तेतलिपुत्र ‘कल्ल’ कल्पे द्वितीयस्मिन् दिने प्रायः ‘ण्हाण जाव पायच्छित्ते’
 स्नानो यावत् प्रायश्चित्त=स्नात=कनस्नातः यावत् पदेन कृतत्रयिकर्म=शान्ति
 निमित्त कृतान्नभागः कृतशौचकृमागल्यप्रायश्चित्तः=कृतानि कौतुमानि दु स्वप्नादि
 दोषनिवारणाय मपीपुण्ड्रादीनि-माङ्गल्यादीनि = मङ्गलकारणाणि दूर्वाद्यतादीनि
 =प्रायश्चित्तप्रदं कर्त्तव्यानि येन सः, ‘आमसखधरगए’ अश्वस्कन्ध-
 धरगतः=अश्वारूढ बहुभि पुष्पैः सपरिवृतः स्वस्माद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गस्य

भिक्षुखण २ संगोहिज्जमाणे वि धम्मे नो सवुज्झह, त सेय खलु मम
 कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विपरिणमेत्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ)
 तब उस पाट्टिल देवको गेमा आ यात्तिक यावत् मनोगन संकल्प उत्पन्न
 हुआ कनकध्वज राजा तेतलिपुत्र अमात्यका आदर करते हैं यावत् वे
 उनके सुख साधनकी सामग्री उदा दिया है-इसलिये मेरे द्वारा बार बार
 प्रतिबोधित करने पर भी वे धर्म में प्रतिबुद्ध नहीं बन रहे हैं-प्रतिबोध
 को प्राप्त नहीं हो रहे हैं । इसलिये मुझे अब ऐसा करना चाहिये कि
 जिससे तेतलिपुत्र के विषय में कनकध्वज राजा का मानसिक विचार
 बदल जावे । इस प्रकार का विचार उस देवके मनमें जगा (सपेहिता,
 कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विपरिणामेइ, तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाए

२ संगोहिज्जमाणे पि धम्मे नो सवुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय
 तेतलिपुत्ताओ विपरिणामेत्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ)

त्यारे ते देवउप पाट्टिलाना एव देवने जेवा आध्यात्मिक यावत् मनो
 गत संकल्प उ ल ये के राजा कनकध्वज अमात्य तेतलिपुत्रने आदर करे छे
 यावत् तेजोअ तेमनी अधी नतनी सुभसगवडनी सामग्रीमा वधाये पछु
 कही आये छे, जेथी मारावडे बारबार प्रतिबोधित करवा छताअ
 तेजो धर्ममा प्रतिबुद्ध थई जता नथी जेटवे के तेमने बारबार प्रेरणा
 आपवा छता प्रतिबोध थयो नथी जेटवा माटे हु छवे जे प्रमाखे कथि
 कउ के जेथी राजा कनकध्वजना मानसिक विचार अमात्य तेतलिपुत्रने माटे
 प्रतिकूल थई जथ ते देवे मनमा आ नतने विचार कथे

(सपेहिता कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विपरिणामेइ तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं
 ण्हाए जाव पायच्छित्ते आसखधरगए, बहूहि पुरिसेहि सपरिवुडे, गिहाओ,

माद्युवन् 'अपरिजाणमाणे' अपरिजानन्, तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्=अभ्युत्थानाद्यकृत्वा 'परम्पुहे' पराङ्मुखः=विमुखः सन् सतिष्ठन्। ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः सन्मुखे अजलिं करोति। 'तएण' ततः खलु=तेतलिपुत्रेण अजलिकरणानन्तरमपि स कनकवज्रो राजा अनाद्रियमाणः, अपरिजानन्, अनभ्युत्तिष्ठन् तप्णीक पराङ्मुखः सतिष्ठते। ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजं विपरिणतं=विपरीतं ज्ञात्वा 'भीणं जाय सजायभए' भीतो यावत् सजातभयं, एवमपदत्तं=मनस्यकथयत्-रुष्टः खलु मम=मम विषये कनकवज्रो राजा,

उसका कोई आदर किया-न उसके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही। इस तरह अनादर अननुमोदन एवं अनभ्युत्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये। (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) तेतलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुमिणीए परम्पुहे सचिद्धइ) तौ भी उन कनकध्वज राजा ने उस अजलि करने का भी कोई आदर नहीं किया केवल चुपचाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणय जाणित्ता भीणं सजायभए एव वयासी) तब तेतलिपुत्र ने कनकवज्र राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् सजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(रुठ्ठे ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं। (हीणे ण मम कण-

आदर न कर्था, तेभना आववानी सराहना न करी अने उला थरने तेभने सत्कार्या पणु नहि आ गीते अनादर, अननुमोदन अनभ्युत्थान करता ते राजा तेभना तन्त्र थी आ देवकीने जेभी गया (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) तेतलिपुत्रे आवतानी साथे न राजा कनकध्वजने नमस्कार कर्था

(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुमिणीए परम्पुहे सचिद्धइ) छताये राजा कनकध्वजे तेभना नमस्कारने पण उचित मत्तार कर्था नहि देखा तेभो चुपचाप आदेवकीने जेभी न रहा।

(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणय जाणित्ता भीणं जाय सजायभए एव वयासी)

त्याहे तेतलिपुत्र अभात्ये राजा कनकध्वजने प्रतिकूलतर्क गये। (नाराज थयेला) जाणीने लयलीत यावत् सन्नतलय वाणा थना मनमा विचार कर्था के (रुठ्ठेण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा भास ऊपर नाराज

धाग्निः आलपन्तः सलपन्तश्च=आलाप=संभाषणं, सलाप=परस्परसंभाषणं
कुर्वन्तश्च पुरतः=अग्रं च पृष्ठतः=पश्चाद्भागतश्च, पार्श्वतः=पार्श्वभागतश्च, मार्गतः=
यस्मान्मार्गात् तेतलिपुत्रो निर्गच्छति, तन्मार्गतश्च 'समणुगच्छति' समनुग-
च्छन्ति । ततः खलु स तेतलिपुत्रो यत्रैव कनकध्वजस्तत्र उपागच्छति । ततः
खलु स कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रमेजमानं पश्यति, दृष्ट्वा नो आद्विश्यते, नो परि-
जानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति । अनन्तर 'अणाढायमाणे' अनादिमानः=तस्मादरं

सपने उठकर उसे लिया- (आढाइत्ता, परिजाणित्ता अञ्जुद्वित्ता अजलि
परिगह करेंनि, इट्ठाहिं कंनारिं जाव वग्गहिं आलवेमाणा य सलवे
मागा य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुग छंति
तण्णं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ, तण्ण
से कणगज्झए राया तेनेलिपुत्त एज्जमाण पासइ, पासित्ता नो आढाइ
नो परियाणाइ, नो अञ्जुद्वेइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणञ्जु
द्वायमाणे परम्मुहे सच्चिद्वइ) आदर देकर शुभाश्वमन की अनुमोदनाकर
तथा उठकर उन सपने फिर दोनों हाथों की अजलि जोड़कर उसे
नमस्कार किया । बाद में इष्ट, कान यावत् प्रिय-मनोज्ञ-मनोम
वाणियों से आलाप-संभाषण, सलाप परस्पर संभाषण-करते
हुए वे सबआगे, पीछे आजू पाजू होकर जिस मार्ग से वह आरंभ
था उसी मार्ग से उसके साथ साथ चले आये । चलते २ तेतलिपुत्र
अमात्य जहाँ कनकध्वज राजा बैठे थे वहाँ आया । कनकध्वज
राजा ने उन्हें आता हुआ देखा-तौभी पहिले की तरह देखकर न

(अढाइत्ता, परिजाणित्ता अञ्जुद्वित्ता अजलि परिगह करेंनि इट्ठाहिं, कंनारिं
जाव वग्गहिं आलवेमाणा य सलवेमाणा य पुरओ य, पिट्ठओ य, पासओ य,
मग्गओ य, समणुगच्छति तण्णं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव
उवागच्छइ, तण्ण से कणगज्झए राया तेनेलिपुत्त एज्जमाण पासइ, पासित्ता
नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अञ्जुद्वेइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणञ्जु
द्वायमाणे परम्मुहे सच्चिद्वइ)

तेमने आदर आपीने, शुभाश्वमनने अनुमोदित करीने तेज्जे। भधा छला
थया अने तयार पट्टी मने छायीनी अजलि जनावीने तेमने नमस्कार कया
तयार जाइ छै, कान, यावत् प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम वातोयो आलाप-
संलापण सलाप-परस्पर संलापण करता तेज्जे सरे आगम, पाछा अने
तेमनी अने जाजुजे थडने जे भाग्यी तेज्जे आवता छता ते मार्गधी ज तेनी
साथे साथे यात्रवा छाया तेतलिपुत्र अमात्य यावता यावता जया राजा कनकध्वज
जका छता त्या आव्या पण कनकध्वज राजाजे ता तेमने जे-मने

मानुषन् 'अपरिजानमाणे' अपरिजानन्, तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्=अभ्युत्थानाद्यकुर्वन् 'परम्मुहे' पराङ्मुखः=विमुख सन् सतिष्ठते । ततः खलु तैतलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः प्रमुखे पञ्चगि करोति । 'तएण' ततः खलु=तैतलिपुत्रेण अञ्जलिकरणानन्तरमपि च कनक वज्रो राजा जनाद्रियमाणः, अपरिजानन्, अनभ्युत्तिष्ठन् तृष्णीक पराङ्मुखः सतिष्ठते । ततः खलु तैतलिपुत्रः कनकध्वज विपरिणत=विपरीत ज्ञात्वा 'भीण जाय सजायभण' भीतो यावत् सजातभय, एवमपदत्=मनस्यकथयत्-रुष्टः खलु मम=मम विषये कन वज्रो राजा,

उसका कोई आदर किया-न उमके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही । इस तरह अनादर अननुमोदन एव अनभ्युत्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये । (तएण तैतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) तैतलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुमिणीए परम्मुहे सचिद्धइ) तौ भी उन कनक ध्वज राजा ने उस अजलि करने का भी कोई आदर नहीं किया केवल चुप चाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएण तैतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणय जाणित्ता भीण सजायभण एव वयासी) तब तैतलिपुत्र ने कनकध्वज राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् सजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(रुद्धे ण मम कणगज्झए राया) कनक ध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं । (हीणे ण मम कण-

आदर न कर्हो, तेमना आववानी सराहना न करी अने उला थधने तेमने सत्कार्या पणु नहि आ गीते अनादर, अननुमोदन अनभ्युत्थान करता ते राजा तेमना तरद थी भो ईश्वरीने जेभी गया (तएण तैतलिपुत्ते कणगज्झयास अजलिं करेइ) तैतलिपुत्रे आवतानी साथे न राजा कनकध्वजने नमस्कार कर्हो (तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुमिणीए परम्मुहे सचिद्धइ) छताअे राजा कनकध्वजे तेमना नमस्कारने पण उचित सत्कार कर्हो नहि ईछता तेओ चुपचाप भोईश्वरीने जेभी न गहा

(तएण तैतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणय जाणित्ता भीए जाय सजायभण एव वयासी)

त्यारे तैतलिपुत्र अभात्ये राजा कनकध्वजने प्रतिकृणवथर्ह गये । (नाराज थयेला) जालीने लथलीत यावत् मज्जतलय वाणा थता मनमा विचार कर्हो वे (रुद्धे ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा भारा उपर नाराज

‘हीणे ण’ हीनः खलु=प्रीतिहीनः खलु ममोपरि जनक राजा ‘अज्झाण’
अपध्यात=दुर्भासमप्यनो जात खलु मम प्रिये अज्झाणो राजा ‘त’ तत्=
तस्मात् ‘न नज्जइ’ न नायते खलु पप मा केन चीयेन कुमारेण=कुत्सितेन मारेण
‘मारेहिइ’ मारयिष्यति ‘त्तिक्कट्टु’ इति कृत्या=इति प्रितित्य भीतस्तः यावत्-
प्रसितः, उद्विग्नः, सजातमप्य मन् ‘मणिय’ गन् ‘पच्चोमक्कइ’ प्रत्यवस्वपकते
=प्रत्यवसर्पति=पश्चाद्गच्छति प्रत्यवस्यत्य, तमेव ‘आमगय’=अवगच्छन् दूरो-
द्वति, दूरस्थ ‘तेतलिपुर’ अत्र पष्ठ्यर्थे द्वितीया, तेतत्पुगस्येत्यर्थः, मध्यम-येन
यत्रैव स्वरु गृह तत्रैव आधारयद् गमनाय । ततः खलु त तेतलिपुत्र ‘जेमहा’

गज्झण राया) जनकध्वज राजा मेरे ऊपर प्रीति से रहित हो गये हैं ।
(अवज्झाण ण मम कणगज्झण राया) जनकध्वज राजा मेरे प्रिय में
सद्भाव रहित बन गये हैं । (त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारे
हिइ त्ति कट्टु भीण तत्थे पूजावसणिय २ पच्चोमक्कइ) तो न मालूम
चह मुझे किस कुत्सित मरण से मरवा डाले, ऐसा विचार कर वह
भीत (भययुक्त) हो गया अस्त यावत् सजात भयगोला बन गया ।
और धीरे २ वहाँ से पीटाहट कर चला आया-(पच्चोसक्किता तमेव
आसखध दुरुहेइ, दुरुहिता तेतलिपुर मज्झ मज्झेण जेणेव सणगिहे
तेणेव पहारेत्थ गमणाण) आकर के वह अपने उसी घोड़े पर बैठकर
तेतलिपुर के बीच से होता हुआ अपने घर की तरफ चल दिया (तएण
तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाय पासति ते तहा नो आढायति, नो परिया

थइ गया छे (हीणेण मम कणगज्झण राया) जनकध्वज राजाने डेवे भारा
ऊपर प्रेम रह्यो नथी (अवज्झाण ण मम कणगज्झण राया) जनकध्वज राजा
भारा प्रत्ये सद्व्यवसाय रहित थइ गया छे

(त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीण तत्थे जाव
सणिय २ पच्चोमक्कइ)

तो कालु नाले ज्यारे तेजो अने कभोते भरावी न भावे आरीते विचार
करीने ते लयलीत थइ गये, ते जम्हा यावत सज्जत लयवाणे थइ गये
अने धीमिधीमे ल्याथी पाछे करीने आवतो रह्यो

(पच्चोसक्किता तमेव आसखध दुरुहेइ, दुरुहिता तेतलिपुर मज्झ मज्झेण
जेणेव सण गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाण)

त्याथी आवीने ते पोताना बोडा ऊपर सवार थजे तेतत्रिपुरनी पच्छे
थधने पोताना घर तरई रवाना थये

तएण तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाय पासति ते तहा नो नो

ये यथा=ये यथास्थिताः ' ईमरजाय ' ई वर यावत्=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादयः पश्यन्ति, ' ते तद्देव ' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अजलिपरिग्रहं कुर्वन्ति, इष्टाभिर्गवद्वाग्भिर्नो सलपन्ति, नो पुस्तश्च पृष्ठतश्च पार्श्वतश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति । तत खलु तेतलिपुत्रो यत्रैव स्मरु गृह तत्रैव उपागच्छति । यापि च ' से ' तस्य ' तत्थ ' तत्र भवने नाहा पग्गिद् भवति, तद् यथा—' दासाइ वा ' दासाइति वा, णति, नो अब्भुट्ठेति) मार्ग में तेतलिपुत्र को आते हुए जिन ईश्वर तलवर, माडम्बिक आदिको ने देखा तो उन्होंने अब पहिले की तरह न उसका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न उसे देखकर वे उठे ही (नो अजलिपरिग्रहं करोति, इष्टाहिं जाव णो सलपति नो पुरओ य पिट्ठओय पासओय मग्गओय समणुग०) और न उसे हाथ जोड़ कर नमस्कार ही किया । न इष्ट प्रिय वाणियों से उससे आलाप, सलाप किया, और न आजू बाजू से होकर वे उसके साथ मार्ग में ही चले । (तण्ण तेनलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह चलता हुआ वह तेनलिपुत्र अमात्य अपने घर पर आ गया । उवागच्छित्ता जावि से तत्थ वाहिरिया परिसा भवइ, तज्जहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइलणइ वा सा वि य ण नो आढाइ, नो परिणाइ, नो अब्भुट्ठइ) वहा पर भी जो दास घर के काम काज करने परियाणति, नो अब्भुट्ठेति)

मार्गमा जाता तेतलिपुत्रने ईश्वर तलवर माडम्बिक वगेरे दोडोअे लेथे । पणु दोडोअे पडेलानी जेम तेना आहो न उथी, तेना आगमननी अनुमोदना न करी अने तेने लेधने तेओे बिभा न थया

(नो अजलि परिग्रहं करोति, इष्टाहिं जाव णो सलपति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुग०)

अने तेओेअे हाथ लेडीने तेने नमस्कार पणु न उथी धष्ट, प्रिय, वयनोथी तेओेअे तेनी साथे आलाप न उथी, मलाप न कथी अने अने पाणुअे थपने तेओे मार्गमा तेनी साथे साथे आत्था पणु नडि (तण्ण तेनलिपुत्ते जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) आ प्रभाणु आलतो आलतो तेतलिपुत्र अमात्य पोताने घर आनी गथे।

(उवागच्छित्ता जावि से तत्थ वाहिरिया परिसा भवइ, तज्जहा दासेइ वा पासेइ वा भाइलणइ वा, सा वि य ण नो आढाइ नो परिणाइ, न अब्भुट्ठइ) त्या पणु जे दासे-धरमा काम उरनारा नोडरी, त्रैथो-धरना काम भाटे

‘हीणे ण’ हीनः खलु=प्रीतिहीनः सत्तु गमोपरि वनरराजो राजा ‘अवज्झाण’
 अपध्यात=दुर्भावमस्मत्प्रो जात खलु मम विषये वनरराजो राजा ‘त’ तत्=
 तस्मात् ‘न नज्जइ’ न नायते खलु ण मा केन तीज्जेन वमारेण=कुत्सितेन मारेण
 ‘मारेहिइ’ मारयिष्यति ‘त्तिक्कट्टु’ इति कृत्या=अनि विविच्य भीतमस्मः यावत्-
 प्रसितः, उद्विग्नः, सज्जातभव मन् ‘मणिय’ गनः= ‘पगोमक्खे’ प्रत्ययस्वरूपते
 =प्रत्ययसर्पति=पश्चाद्गच्छति प्रत्ययस्वरूप, तमेव ‘आसखध’=भयमन्व द्रो-
 हति, दुरुह ‘तेतलिपुर’ अत्र पष्ठये द्वितीया, तेतलिपुरस्येत्यर्थः, मध्यमन्त्रेन
 यत्रैव स्वरूप गृह तत्रैव माधारयद् गमनाय । ततः खलु त तेतलिपुर ‘जेज्झा’

गज्झाए राया) कनकध्वज राजा मेर ऊपर प्रीति स रहित हो गये हैं।
 (अवज्झाए ण मम कणगज्झाए राया) कनकध्वज राजा मेरे विषय में
 सद्भाव रहित बन गये हैं। (त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारे
 हिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे पूजायमणिय २ पच्चोमक्खइ) तो न मालूम
 यह मुझे किस कुत्सित मरण से मरवा डाले, ऐसा विचार कर वह
 भीत (भययुक्त) हो गया वस्तु यावत् सजात भयत्राला बन गया।
 और धीरे २ वहाँ से पीटाहट कर चला आया—(पच्चोसक्किता तमेव
 आसखध दुरुहेइ, दुरुहिता तेतलिपुर मज्झ मज्झेण जेणेव सण्णिहे
 तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आकर के वह अपने उसी घोड़े पर बैठकर
 तेतलिपुर के बीच से होता हुआ अपने घर की तरफ चल दिया (तएण
 तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो आढायति, नो परिचा

थई गया छे (हीणेण मम कणगज्झाए राया) कनकध्वज राजानो डूबे भार।
 उपर प्रेम रह्यो नहीं (अवज्झाए ण मम कणगज्झाए राया) कनकध्वज राजा
 भार। प्रत्ये सद्व्यवस्था रहित थई गया छे

(त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे जाव
 सणिय २ पच्चोमक्खइ)

तो कालु लोखे ज्यारे तेज्जो भने कज्जोते भरावी न आवे आरीते विचार
 करीने ते लयलीत थई गयो, ते वस्तु यावत् सजात लयवाणो थई गयो
 अने धीमेधीमे त्याथी पाछो करीने आवतो रह्यो

(पच्चोसक्किता तमेव आसखध दुरुहेइ, दुरुहिता तेतलिपुर मज्झ मज्झेण
 जेणेव सण्णिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

त्याथी आवीने ते पोताना घोडा उपर सवार थइने तेतलिपुरनी वज्जे
 थइने पोताना घर तरई खाना थयो

तएण तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो , नो

ये यथा=ये यथास्थिताः ' ईसरजाय ' ईश्वर यावत्=ईश्वरतत्त्वरमाडम्बिकादयः पश्यन्ति, ' ते तद्देव ' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अजलिपरिग्रहं कुर्वन्ति, उष्ट्राभिर्गवद्वाम्बिनो सन्पन्ति, नो पुरतश्च पृष्ठतश्च पार्श्वतश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति । ततः खलु तैत्तिरीयो यत्रैव स्रक् गृहं तत्रैव उपागच्छति । यापि च ' से ' तस्य ' तत्थ ' तत्र भवने प्राया परिपद् भवति, तद् यथा—' दासाः वा ' दासा इति वा,

पति, नो अभ्युत्तिष्ठेति) मार्गं मे तैत्तिरीय को आते ह्ये जिन ईश्वर तत्त्वर, माडम्बिक आदिको ने देखा तो उन्होंने अब पहिले की तरह न उसका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न उसे देवकर वे उठे ही (नो अजलिपरिग्रहं करोति, इष्टार्हि जाय नो सलवति नो पुरओ य पिद्वओय पासओय मग्गओय समणुग०) और न उसे हाथ जोड़ कर नमस्कार ही किया । न इष्ट प्रिय वाणियों से उससे आलाप, संलाप किया, और न आजू याजू से होकर वे उसके साथ मार्ग में ही चले । (तण्ण तेनलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह चलता हुआ वह तैत्तिरीय अमात्य अपने घर पर आ गया । उवागच्छिता जाविसे तत्त वाहिरिया परिसा भवइ, तजहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइएइ वा सा चि य ण नो आडाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुइइ) वहा पर भी जो दास पर के काम काज करने परियाणति, नो अब्भुइइति)

मार्गमा जाता तैत्तिरीयने ईश्वर तत्त्वर माडम्बिक वगेरे लोकेश्वरे लोके । पण्डितों के पड़ेलानी जेभ तेना आदर न कर्यो, तेना आगमननी अनुमोदना न करी अने तेने लोके तेको लोका न थ्या

(नो अजलि परिग्रहं करोति, इष्टार्हि जाय नो सलवति नो पुरओ य पिद्वओय पासओ य मग्गओ य समणुग०)

अने तेकोको हाथ लोडीने तेने नमस्कार पण्डित न कर्यो ईष्ट, प्रिय, वयनोधी तेकोको तेनी साथे आलाप न कर्यो, संलाप न कर्यो अने जने भावुको थोने तेको मार्गमा तेनी साथे साथे आत्मा पण्डित नहि (तण्ण तेनलिपुत्ते जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) आ प्रभावे आलतो आलतो तैत्तिरीय अमात्य पोताने घर आनी गये।

(उवागच्छिता जाविसे तत्त वाहिरिया परिसा भवइ, तजहा दासेइ वा पासेइ वा भाइएइ वा, सा चि य ण नो आडाइ नो परियाणाइ, न अब्भुइइ) त्या पण्डित जे दासो-धरमा काम करतारा नोकरे, प्रेयो-धरना काम भाटे

રાસાઃ=ગૃહકાર્યકારિણોભૂત્યા, પેમાદસા' પ્રેયાઈતિ સા, પ્રેયાઃ ગૃહકાર્ય કર્તુમન્યત્ર પ્રેપણીયા ભૂત્યાઃ, 'માઈહૃતિ સા' માઈહૃતિ સા, 'માઈહૃ' હિતિ દેશીશબ્દ, હાલિકઃ માગિનથેતિ તદર્થઃ હાલિકા=ભૂમિકર્પણાર્થ નિયુક્તા ભૂત્યાઃ, માગિનઃ,=સ્વવ્યયેનાઽન્યસ્ય ક્ષેત્રે કૃષિ કૃત્વા ઉપજાતાન્નસ્યાર્થભાગ ગ્રાહિણ, એતદ્ભૂવા યા પરિપત્ સાઽપિ ચ એત નો આદ્રિયતે, નો પરિજાનાતિ, નો અભ્યુત્તિષ્ઠતે । યાઽપિ ચ તસ્ય આશ્વ ન્તેરિકો પરિપદ્ ભવતિ, 'ત જહા' તદ્ યથા 'પિયાઈ સા' પિતાઽતિ સા, 'માયાઈ વા' માતા ઇતિ વા, 'જાવ સુળ્હાઈ વા' યાવત્ સ્તુવાઈતિ વા, સ્તુવા=પુત્રવધ્, તદ્ભૂવાપિ ચ પરિપદ્ એન નો આદ્રિયતે, નો પરિજાનાતિ, નો અભ્યુત્તિષ્ઠતિ । તત્ત્વ સ્તુ સ તેતલિપુત્રો યત્રૈવ વાસગૃહ યત્રૈવ સ્વરૂ શયનીય તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય,

વાલે નૌકર પ્રેપ્ય, ઘર કે કામ કે લિયે જિન્હે ઘાઠર ખેજા જાતા હૈ એસે ભૂત્ય, તયા માઈહૃ-હાલિક-ભૂમિ કર્પણાર્થ નિયુક્ત ભૂત્ય, અથવા ભાગી દાર-અપને વ્યય સે અન્ય કે સ્વેત મેં કૃષિકરકે ઉત્પન્ન અન્ન કે અર્થ ભોગ કો લેને વાલે વટિયાજન હનરૂપ જો વાલ્ય પરિપત્ થી ઉમ્મને ખી ઉસકા આદર નહીં કિયા, ઉસકે આગમન કી અનુમોદના નહીં કી ઔર ન વહ ઉસકે આને પર અપને અધિષ્ઠિત સ્થાન સે ઉઠે । (જાવિય સે અર્ચિતરિયા પરિસા મવઝ-તજહા-પિયાઈ વા માયાઈ વા જાવ સુળ્હાઈ વા સા વિ ય ણ નો જાઢાઈ, નો પરિયાણાઈ, નો અવ્મુદ્દેઈ) હસી તરૈ જો ઉસકી અન્તરગ પરિપદ્ થી જૈસે પિતા માતા યાવત્ સ્તુવા-પુત્રવધ્ આદિ જન હન્હોને ખી ઉસકા આદર નહીં કિયા, આગમન કા અનુમોદન નહીં કિયા ઔર ન ચે કોઈ ખી ઉસકે આને પર અપને સ્થાનસે

જેઓને ખંડાર મોકલવામા આવે છે તે ભૂત્યો, તથા લાઈલ-હાળીકો એટલે કે ખેડવા માટે નિયુક્ત કરાયેલા ભૂત્યો અથવા તે લાગીદારો-કે જે 'પોતાના ખંચે' જ ખીજના ખેતરમા અનાજ વાવે છે અને વળતરમા ખેતરના માલિક પાસેથી અર્ધાભાગ મેળવે છે-એવા જે બાહ્ય પરિપત સબધી લોકો હતા તેઓ એ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યું નહિ અને ન તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનેથી સત્કાર માટે તેઓ જિલા થયા । (જા વિ ય સે અર્ચિતરિયા પરિસા મવઝ-તજહા-પિયાઈ વા માયાઈ વા જાવ સુળ્હાઈ વા સા વિ ય ણ નો જાઢાઈ, નો પરિયાણાઈ, નો 'અવ્મુદ્દેઈ') અને આ પ્રમાણે જ તેની અતરંગ પરિપદના લોકો જેમ કે પિતા માતા યાવત્ સ્તુવા-ખેટા વહુ-વગેરે લોકોએ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યું નહિ અને તેઓમાથી કોઈ પણ તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનથી જિલા થયા નહિ.

शयनीये निपीदति, निषद्य, एवमपदत्=मनस्यवधयन्-एव खलु=यथा अद्य
तथैवान्यस्मिन्नपि द्विपसे, अहं सखाद् गृहान् निर्गच्छामि, 'त चेव जाव अन्भि-
तरिया परिसा नो आढाड, नो परियाणाड नो अब्बुद्धेड' तदेव यावत् आभ्यन्तरिकी
परिपद् नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति, अस्यायमभिप्रायः-
पूर्वस्मिन् दिवसे रात्रिप्रसन्ने मा दृष्ट्वा राजेश्वरादयः सर्वे आद्रियन्ते स्म, परिजाना-
न्ति स्म अभ्युत्तिष्ठन्ति स्म, अत्रापि गृहनिर्गत मां ते तथैव सत्कारयन्ति स्म । परन्तु
रात्रि अरुस्मात् अप्रसन्ने राजेश्वरतलपरमाहम्भिरुक्तौटुम्भिकप्रभृतयः तथा मदीय
ब्राह्मणभ्यन्तरा च परिपदपि सर्वेऽपि च मा नाद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो

उठे । (तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे
तेणेव उवागच्छइ) इम तरह घर पर आकर वह तेतलिपुत्र अमात्य
जहा अपना वासगृह और उसमें भी जहा अपनी शय्या थी वहां गया
(उवागच्छित्ता सयणिज्जसि निसीयइ, णिसीइत्ता एव वयासी) वहा
जाकर वह उस पर बैठ गया-और मनही मन विचार करने लगा-(एव
खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, त चेव जाव अन्भितरिया
पुरिसा नो आढाड, नो परिजाणाड नो अब्बुद्धेड-तं सेय खलु मम अ-
प्पाण जीवियाओ ववरोवित्तएत्ति वट्टु एव सपेहेइ) पहिले के दिनों में
जब मैं अपने घर से निकलतो था तो लोग-राजेश्वर आदि समस्त जन
मुख पर राजा की प्रसन्नता होने के कारण आता जाता हुआ देखकर
मेरा आदर करते थे-मेरे आगमन आदि की अनुमोदन करते थे उठ-
कर अपने विनय प्रदर्शित करते थे-तथा आज भी जब मैं घरसे निकल

(तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ)

आ रीते घर आवीने तेतलिपुत्र अमात्य न्या तेनी उडेवानी ओरडी
अने तेमा पधु न्या पोतानी पथागी हुती त्यां गथे । (उवागच्छित्ता सयणि-
ज्जसि निसीयइ, णिसीइत्ता एव वयासी) त्या जठने ते तेना उपर भेभी गथे
अने मनमा ज विचार करवा लाग्ये ।

(एव खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, त चेव जाव अन्भितरिया
पुरिसा नो आढाड, नो परिजाणाड, नो अब्बुद्धेड-तं सेय खलु मम अप्पाण जीवि-
याओ ववरोवित्तएत्ति वट्टु एव सपेहेइ)

पडेला न्यारे हुं घरथी गडार नीकणतो हुतो त्यारे दोडो-राजेश्वर
वगेरे गधा दोडो-राज भारा उपर भुश हुता ओटवी-आवता जाता ओधने
भारे आदर करता हुता, भारा आ मननु अनुमोदन करता हुता तेमज्जो ला
थधने विनय प्रदर्शित करता हुता अने आगे पधु हुं न्यारे घरथी नीकणाने

અમ્યુત્તિષ્ઠન્તિ । ' ત ' તત્=તસ્માત્ કારણાત્, શ્રેયઃ સ્વઠુ મમ આત્માન જીવિ
તાદ્ વ્યપરોપયિત્વમ્, ઇતિ ક્રુત્યા, એ સમેક્ષતે, સંપદ્ય તાત્પર્ય ટિપ્પણ ' આસ-
ગસિ ' આસ્યે=મુખે પ્રસિપતિ, ટિપ્પણ નો સમામ્પતિ=ટિપ્પણને નો પરિણમતિ ।
તતઃ સ્વલ્પ સ તેતલિપુત્રો ' નીલુષ્પજ જાવ અર્સિ ' નીલોત્પલ યાવદર્સિ=નીલોત્પલ
ગવલગુલિકસમપ્રમ=નીલોત્પલ=નીલકમલમ્ ગવલ=માદિય શુદ્ધમ્, ' ગુલિક '
નીલરઘુવિશેષ, ' તૈ. સમા પ્રમાતેતલિ કાન્તિર્યસ્ય સ ત તાદૃશ યાવદર્સિ=તીક્ષ્ણ
સ્વરૂપ ' સ્વપ્ને ' સ્કન્ધે=મ્થળમૂળે ' ઓહરહ ' અહરતિ=નિપાતયતિ । તત્રાડિપિ ચ

કર રાજા કે પાસ ગયા-તપ્તે બી હન સપલોગોં ને પૂર્વવત્ મેરા આદર
આદિ સપ કુઠ ક્રિયા-પરન્તુ અકસ્માત્ રાજા કે કષ્ટ હોને પર જબ મેં
વહા સે લૌટકર ઘાપિમ અપને સ્થાન પર આને લગા-તો કિમી ને બી
મેરા આદર આદિ કુઠ બી સત્કાર નહોં ક્રિયા । યદા તક કિ જો મેરી
ઘાહ્ય ઓર આન્ધન્તર પરિપદ હૈ-બીતર યાહરકે નૌકર ચાકર એ મોતા
' પિતા આદિ જન હૈ-ઉસને બી આજ હસ મમય આને પર મુક્તે કુઠ
' નહોં સમજા-અતઃ મુક્તે અવ જેસી સ્થિતિ સે મરના હી ઉત્તમ હૈ । હસ
પ્રકાર કા ઉસને અપને મન મે વિચાર ક્રિયા-(સપેક્ષિતા તાલુડ વિસ
આસગસિ પશ્ચિલવદ્, સેય વિસે જો સક્રમદ્, તણ સે તેતલિપુત્તે નીલુ
ષ્પલ જાવ અર્સિ સ્વપ્તિ ઓહરહ, તત્ત્વ વિય સે ઘારા ઓપલ્લા, તણ સે
તેતલિપુત્તે જેણેવ અસોગવણિયા તેણેવ ઉ૦) વિચાર કરકે ઉસને તાલ
પુટવિપ કો અપને મુખ મે ઢાલા-પરન્તુ ઉસને અપના કુઠ બી પ્રભાવ

રાજાની પાસે ગયો ત્યારે પણ એ બધાએ પહેલાની બેમબ માટે આદર
વગેરે બધું કર્યું હતું પણ એમાં રાજાને નારાજ થઈ જવા બદલ બધા
ત્યાગી પાછો ફરીને પોતાને ઘેર આવવા લાગ્યો ત્યારે કોઈએ પણ માટે
આદર કે સત્કાર કયો નહિ મારી બાહ્ય અને આભ્યંતર પરિવદ્ એટલે કે
બહારના નોકરો-ચાકરો અને માતા પિતા વગેરે-છે તેઓએ પણ આપે અત્યાદ
મારા આવવા બદલ કંઈ પણ કિંમત કરી નહિ એથી એની પરિસ્થિતિમા
મારૂં મરણ જ ઉત્તમ ઉપાય છે

(સપેક્ષિતા તાલુડ વિસ આસગસિ પશ્ચિલવદ્, સેય વિસે જો સક્રમદ્, તણ
સે તેતલિપુત્તે નીલુષ્પલ જાવ અર્સિ સ્વપ્તિ ઓહરહ, તત્ત્વ વિય સે ઘારા ઓપલ્લા,
તણ સે તેતલિપુત્તે જેણેવ અસોગવણિયા તેણેવ ઉ૦)

આ બાતનો વિચાર કરીને તેણે તાલપુટ વિષ (ઝેર)

‘से’ तस्य खड्गस्य धारा ‘ओपल्ल’ कुण्डिता, ‘ओपल्ल’ इति देगी शब्दः । तलपुटेन त्रिपेण, कण्ठे निपातितेनामिनाऽपि च तदभिलपित मरण न जातम् । ततः खलु=तदनन्तरं स तेतलिपुत्रो यत्रैव अशोकवनिना=अशोकवाटिका तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पातक ग्रीवाया वध्नाति, उद्धवा ‘रुख’ वृक्ष ‘रुख’ दुरो इति=भारोहति, दूरुह्य पाश वृक्षे वध्नाति, उद्धवा आत्मान ‘मुयड’ मुञ्चति=अधः पातयति । ‘तत्थवि’ तत्राऽपि=एतस्मिन् मरणोपाय कृतेऽपि च ‘से’ तस्य रज्जुच्छिन्ना=म यत् एव पाशस्रुटिः । ततः खलु स तेतलिपुत्रः ‘महद्महालय’ महातिमहतीम्=अति विशाला जित्वा ग्रीवाया वध्नाति, उद्धवा ‘अथा-हमतरमपोमियसि’ अस्तात्रातागर्वाभ्ये=नास्ति स्वात्र’ यस्य तन् अस्तात्रम्=नहीं दिखलाया-अर्थात् वह चिप रूप से परिणत नहीं हुआ । इसके बाद उस तेतलिपुत्रने नीलोत्पल गवल, गुलिक की प्रभा जैसी प्रभावाली अत्यन्त नीलवर्ण वाली-ऐसी तलवार को कि जिसकी धार बहुत तीक्ष्ण थी-अपनी गर्दन पर रखा-अर्थात् उसे गर्दन पर चलाई-परन्तु उसने भी अपना काम नहीं किया-वह भी-कुटित हो गई-इस तरह जब इन दोनों वस्तुओं से अपना अभिलपित मरण सा य नहीं हुआ-अब वह तेतलिपुत्र जहा अशोकवनिना-अशोकवाटिका-थी वहा गया (उपागच्छित्ता पासगगीवाण वधइ) वहा जाकर उसने अपनी ग्रीवामें फटा डाला-याथा (वधित्ता अप्पाण मुयड, तत्थ वि से रज्जु छिन्ना) धान्य कर फिर वह वृक्ष पर चढ़ गया और वहा से अपने आपको नीचे लटका दिया परन्तु पहा पर भी उसकी रज्जु धीच में से दूट गई (तण्ण से तेतलिपुत्ते

अथमा नाभ्यु पणु तेणु उध अमर जतानी नडि ओटवे के ते विन इधमा परिणुभ्यु नडि त्थार पणी ते तेतलिपुत्रे, नीलोत्पल गवल, गुलिकना जेवी प्रभावाणी तेमज तीक्ष्ण धारवाणी तववाग्ने पोतानी डाक उपर भूडी ओटवे के तेना वडे तेणु पोतानी डाक उपर धा ज्यो पणु तेनाथी पणु उध जाम थयु नडि ओटवे के तरवार पणु भूडी थध गध हुती ‘ओपल्ल’ आ कुठित (भूडी) अर्थ भाटे वपरायेडो देशी गण्ड छे ज्यारे आ रीते ते जने वस्तुओथी तेनी छिन्ना पूरी थध नडि ओटवे के तेनु भरणु थय राक्यु नडि त्थारे ते न्या अशोक वनिना-अशोक वाटिका-हुती त्था गथे (उपागच्छित्ता पासग गीवाण वधइ) त्था जधने तेणु पोतानी डाकमा क्षामे लेखीने आध्ये (वधित्ता अप्पाण मुयड तत्थ वि से रज्जु छिन्ना) आधीने ते वृक्ष उपर चढ़ी गथे अने त्थावी पोतानी भेजे ज ते लटकी गथे परणु अर्द्धी पणु क्षामात दोरड वन्नेथी तूटी-गथु हुतु

अभ्युत्तिष्ठति । 'त' तत्=तस्मात् कारणात्, त्रेयः खलु मम आत्मान जीवि
ताद् व्यपरोपयितुम्, इति कृत्वा, एव समेक्षते, समेक्ष्य ताल्पुट रिपम् 'आस-
गसि' आस्ये=मुखे प्रक्षिपति, रिप नो मनाम्पति=रिपत्वेन नो परिणमति ।
ततः खलु स तेतलिपुत्रो 'नीलुष्पत्र जाव अंसि' नीलोत्पल यावदंसि=नीलोत्पल
गजलगुलिकसमप्रभ=नीलोत्पल=नीलकमलम् गज=माहिष शृङ्गम्, 'गुञ्जिक'
नीलरङ्गविशेष, तै. समा प्रभातेतलि कान्तिर्यस्य स त तादृश यावदंसि=तीक्ष्ण
खड्ग 'खरे' स्कन्धे=कण्ठमूले 'ओहरइ' अहरति=निपातयति । तत्रापि च

कर राजा के पास गया-तब भी इन सपलोगों ने पूर्ववत् मेरा आदर
आदि सप कुछ किया-परन्तु अकस्मान राजा के कष्ट होने पर जब मैं
वहा से लौटकर वापिस अपने स्थान पर आने लगा-तो किमी ने भी
'मेरा आदर आदि कुछ भी सत्कार नहीं किया । यहा तक कि जो मेरी
बाह्य और आभ्यन्तर परिपद है-भीतर बाहरके नौकर चारु एव माता
'पिता आदि जन है-उसने भी आज इस समय आने पर मुझे कुछ
नहीं समझा-अतः मुझे अब ऐसी स्थिति से मरना ही उत्तम है । इस
प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया-(सपेहिता तालउड विस
आसगसि पन्निखवइ, सेय विसे णो सक्रमइ, तण्ण से तेतलिपुत्ते नीलु
प्पल जाव अंसि खघसि ओहरइ, तत्थ विय से धारा ओपल्ला, तण्ण से
तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिग्या तेणेव उ०) विचार करके उसने ताल
पुटविष को अपने मुख में डाला-परन्तु उसने अपना कुछ भी प्रभाव

राजानी पास गये। त्थारे पणु ओ भधाओ पडेलानी जेमज भारे। आदर
वगेरे भणु कयुं डतु पणु ओथिना राजने नाराज थई जवा भदव न्यारे
हु त्थाथी पाछे। इरीने पोताने घेर आववा लाग्ये। त्थारे डोउओ पणु भारे।
आदर के सत्कार कथो नहि भारी। बाह्य अने आक्यतर परिषड ओटले के
भडाइना मोकरे। आदरे अने माता पिता वगेरे-छे तेओओ पणु आरे अत्थारे
भारा आववा भएल कई पणु किंमत करी नहि ओथी ओरी परिस्थितिभा
भाइ भरणु ज उत्तम उपाय छे

(सपेहिता तालउड विस आसगसि पन्निखवइ, सेय विसे णो सक्रमइ, तण्ण
से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव अंसि खघसि ओहरइ, तत्थ विय से धारा ओपल्ला,
तण्ण से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिग्या तेणेव उ०)

आ जतने विचार करीने तेणे तालपुट विष (जेर) ने पोताना

દીત્=ચિત્ત સમો ય મનસ્યેનમકથયત્-મો ચિત્ત ! શ્રમણા યદ્ વદન્તિ તત્સ્વલ્લ
 શ્રદ્ધેય=શ્રદ્ધા યોગ્ય, શ્રદ્ધેય સ્વલ્લ મોઃ બ્રાહ્મણા વદન્તિ, શ્રદ્ધેય સ્વલ્લ મોઃ !
 શ્રમણ બ્રાહ્મણા વદન્તિ । અય માર-જાત્મપરલોકાદ્યર્થ પ્રતિબોધક શ્રમણાદીના વચન
 શ્રદ્ધેય ભવતિ, અતીન્દ્રિયસ્યાપ્યાત્મ-પરલોકાદિરવસ્થુસ્થાનુમાનાદિ પ્રમાણવિષય-
 તયા શ્રદ્ધાવિષયત્વાત્ । પરન્તુ અહમેતો અસહાયઃ અશ્રદ્ધેયમ્ અવિશ્વમનીય
 વદામિ । યદ્યપિ મદીય વચન સર્વથા સત્યમ્, તથાપિ અમમ્ભાવ્યતયા જનૈઃ
 પ્રત્યેતુમશક્યમ્ । તદેવાહ-‘ એવ સ્વલ્લ ’ ઇત્યાદિના ‘ એવ સ્વલ્લ ’ મયિ અશ્રદ્ધેય

બીચ હી મેં બુદ્ધ ગઈ । હમ તરફ હન સમસ્ત અનભવનોં કી સમવના
 કે વાદ તેતલિપુત્રને અપને આપનો સ્વોચિત્ત કરતે હુમ મન મે વિચાર
 કિયા-હે ચિત્ત ! શ્રમણજન જો કહતે હૈં વહ શ્રદ્ધેય હૈં । બ્રાહ્મણજન જો
 કહતે હૈં વહ શ્રદ્ધેય હૈં ઇસી પ્રકાર શ્રમણમાહ્મણજન જો કહતે હૈં વહ શ્રદ્ધેય
 હૈં । હિસકા ભાવ વહ હૈં કિ આત્મા, પરલોક આદિ પદાર્થ જો કિ અતીન્દ્રિય
 હૈં વે અનુમાન આદિ પ્રમાણ કિ વિષયશૂન હો જાતે હૈં-હમલિયે વે શ્રદ્ધાકે
 વિષય વન જાતે હૈં-અતઃ હન અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક આદિ પદાર્થો
 કો પ્રતિપાદિત કરને વાલે શ્રમણ માહ્મણ આદિકોં કે વચન મી શ્રદ્ધેય
 હો જાતે હૈં, પરન્તુ મેં જો કહ રહા હૈં વહ અશ્રદ્ધેય કહ રહા હૈં એક
 અસહાય હૈં-હસલિયે-મુજે હિસ વિષયમેં કિસીકો મી સહાયતા મિલને
 વાલી નહીં હૈં । હન શ્રમણ માહ્મણ આદિજનોં કે વચનોં કે સહાયક તો
 અનુમાન આદિ પ્રમાણ હૈં-પરન્તુ મેરા સહાયક કોઈ પ્રમાણ હી નહીં
 હોતા હૈં, યન્યપિ મેં સર્વથા સત્ય કહતા હૈં પરન્તુ વહ મેરા વચન અસ-
 મ્ભવિત અસહાય-હોને કી વજહ સે મનુષ્યોં કે લિયે શ્રદ્ધેય નહીં વન

આ રીતે આ બધા અમભવનાની મભાનના બાદતે તલિપુત્રે પોતાની ભતનેજ
 સબોધિત કરતા મનમા વિચાર કર્યો કે હે ચિત્ત ! શ્રમણજનો જે કંઈ કહે છે
 તે શ્રદ્ધેય છે, બ્રાહ્મણો જે કંઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રમણ માહ્મણજનો
 જે કંઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે
 પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયશૂન થઈ બંધ
 છે એટલા માટે તે પદાર્થો શ્રદ્ધાના વિષય બની બંધ છે એવી આ બધા
 અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનું પ્રતિપાન કરનાર શ્રમણ માહ્મણ
 વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ બંધ છે, પણ હું જે કંઈ કહી રહ્યો છું તે -
 અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છું એક અસહાય છું એથી મને આ બાબતમા કોઈની
 મદદ પણ મળી રહે તેમ નથી તે શ્રમણ માહ્મણ વગેરેના વચનોના મહાયક
 તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણ છે પણ મારા કથનનું સહાયશૂન થાય તેવું કોઈ
 પ્રમાણ નથી જો કે હું જે કંઈ પણ કહી રહ્યો છું તે સંપૂર્ણ રીતે યથાર્થ
 મારા તે વચનો અસભવિત અસહાય હોવા બદલ

અતલસ્પર્શિ, અતારમ્=અતરણીયમ્, અગ્નિરુપેયમ્=પુરુષ પ્રમાણં यस્ય તત્ પૌરુષેયમ્= ન પૌરુષેયમ્=અપારપેયમ્=પુરુષપ્રમાણરહિતમ્, एतेषां कर्मधारय, तस्मिन् अतिम-
 म्भीरे इत्यर्थः, उदके आत्मान मुञ्चति । तत्राऽपि=तस्मिन्नुદકેऽપિ ચ 'સે'
 તસ્ય=તેતલિપુત્રસ્ય 'થાહે' સ્તાયો જાતઃ । તત્ સ્વલુ સ તેતલિપુત્રઃ શુદ્ધકે
 તૃણકૂટે=તૃણપુણે 'અગ્નિકાય' અગ્નિકાય પ્રક્ષિપ્ય, તત્ર આમાન મુચ્ચતિ ।
 તત્રાપિ=શુદ્ધકે તૃણેऽપિ સો ડગ્નિમાયો 'વિજ્ઞાણ' વિજ્ઞાત =ઉપગાન્ત । 'તણ'
 તતઃ સ્વલુ=એતસ્ય સર્ગમ્ય અસમ્માવ્યસ્ય સમ્માત્રનાનન્તરમ્ સ તેતલિપુત્ર એવમવા

મહદ્મહાલય સીલ ગીત્રાણ-વધદ્ વધિત્તા અત્યાત મતારમપોરિમિયસિ
 ઉદગસિ અપ્પાણ મુયદ્, તત્થ વિ સે થાહે જાણ) ડમકે ઘાદ ઉસ તેત
 લિપુત્ર ને ણક વદ્ધત વિશાલકાય શિલા કો અપને ગલે મેં ઝાઘા-ઔર
 ઘાઘ કર અપને આપકો અથાત-અતાર એવ અપુરુષ પ્રમાણ જલ મેં છોદ્
 દિયા-પરન્તુ વદ્ જલ મી ઉસકેલિણ રતાઘ થાત યુક્ત-વન ગઘા-(તણ
 સે તેતલિપુત્તે સુવકસિ તણકૂડસિ અગ્નિકાય પક્કિલવદ્ પક્કિલવિત્તા
 મુયદ્, તત્થ વિ સે અગ્નિકાણ વિજ્ઞાણ-તણ સે તેતલિપુત્તે ણવ-
 વયાસી-સદ્ધેય સ્વલુ મો સમણા વયતિ સદ્ધેય-સ્વલુ મો માહણા વયતિ,
 સદ્ધેય સ્વલુ મો સમણમાહણા વયતિ, અહ ણગો અસદ્ધેય વયામિ ણવ
 સ્વલુ અહ સહ પુત્તેહિં અપુત્તે કો મેય સદ્ધિસ્સદ્ ? સદ્ધિત્તે હિં અમિત્તે
 કો મેય સદ્ધિસ્સદ્ ?) હસકે ઘાદ તેતલિપુત્રને શુદ્ધ ઘાસકે ઢેર મેં
 અગ્નિ લગાઈ-ઔર ઉમમેં અપને આપકો ડાલ દિયા-પરન્તુ વદ્ મી

(તણ સે તેતલિપુત્તે મહદ્ મહાલય સિલ ગીત્રાણ વધદ્, વધિત્તા અત્યાતમતારમ
 પોરિમિયસિ ઉદગસિ અપ્પાણ મુયદ્, તત્થ વિ સે થાહે જાણ)

ત્યાર પછી તે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટી ભારે શિલા (પથરા) ને
 ઘાતાની બાતને બથાઈ-અતાર અને અપુરુષ પ્રમાણે પાણીમા નાખી દીધી
 પરંતુ તે બહુ પાણી પછુ તેના માટે થાઈ વાળુ એટલે કે છીછરુ થઈ ગયુ

(તણ સે તેતલિપુત્ત સુવકસિ તણકૂડમિ અગ્નિકાય પક્કિલવદ્, પક્કિલવિત્તા
 મુયદ્, તત્થવિ સે અગ્નિકાણ વિજ્ઞાણ-તણ સે તેતલિપુત્તે એવ વયાસી સદ્ધેય
 સ્વલુ મો સમણા વયતિ સદ્ધેય-સ્વલુ મો માહણા વયતિ, સદ્ધેય સ્વલુ મો સમણ
 માહણા વયતિ, અહ ણગો અસદ્ધેય વયામિ એવ સ્વલુ અહ સહ પુત્તેહિં અપુત્તે કો
 મેય સદ્ધિસ્સદ્ ? સદ્ધિત્તેહિં અમિત્તે કો મેય સદ્ધિસ્સદ્)

ત્યાર પછી તેતલિપુત્રે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ પ્રગટાવ્યો અને
 ઘાતાની બાતને તેમા નાખી દીધી પરંતુ તે પછુ વચ્ચેથી જ

દીત્ત્વચિત્ત સમો-ય મનસ્યેનમક્રમયત્-મો ચિત્ત । શ્રમણા યદ્ વદન્તિ તત્સ્વલુ
શ્રદ્ધેય=શ્રદ્ધા યોગ્ય, શ્રદ્ધેય ગતુ ગોઃ બ્રાહ્મણા વદન્તિ, શ્રદ્ધેય સ્વલુ મોઃ !
શ્રમણ બ્રાહ્મણા વદન્તિ । અય માર-જાત્મપરલોકાદ્ય પ્રતિયોધક શ્રમણાદીના વચન
શ્રદ્ધેય ભવતિ, અતીન્દ્રિયસ્યાપ્યાત્મ-પરલોકાદિરવસ્થુરૂપસ્યાનુમાનાદિ પ્રમાણવિષય-
તયા શ્રદ્ધાવિષયત્વાત્ । પરન્તુ અસહાયઃ અશ્રદ્ધેયમ્ અવિશ્વમનીય
વદામિ । યદ્યપિ મદીય વચન મર્વથા સત્યમ્, તથાપિ અમમાન્યતયા જનૈઃ
પ્રત્યેતુમશક્યમ્ । તદેવાહ-‘ એવ ગલુ ’ ઇત્યાદિના ‘ એવ સ્વલુ ’ મયિ અશ્રદ્ધેય

ચીજ હી મેં યુક્ત ગઈ । હમ તરફ હન સમસ્ત અનભવનોં કી સમવના
કે વાદ તેતલિપુત્રને અપને આપ-નો સમોધિત કરતે હુમ મન મે વિચાર
કિયા-હે ચિત્ત ! શ્રમણજન જો કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય હ । બ્રાહ્મણજન જો
કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય હેં હમી પ્રકાર શ્રમણમાહ્ણજન જો કહતે હેં વહ શ્રદ્ધેય
હે । હસકા ભાવ વહ હેં કિ આત્મા, પરલોક આદિ પદાર્થ જો કિ અતીન્દ્રિય
હેં વે અનુમાન આદિ પ્રમાણ કિ ચિષય-નૂન હો જાતે હેં-હમલિયે વે શ્રદ્ધાકે
વિષય વન જાતે હેં-અતઃ હન અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક આદિ પદાર્થો
કો પ્રતિપાદિત કરને વાલે શ્રમણ માહ્ણ આદિકોં કે વચન મી શ્રદ્ધેય
હો જાતે હેં, પરન્તુ મેં જો કહ રહા હેં વહ અશ્રદ્ધેય કહ રહા હેં એક
અસહાય હેં-હસલિયે-મુક્ષે હમ વિષયમેં કિસી કો મી સહાયતા મિલને
વાલી નહીં હેં । હન શ્રમણ માહ્ણ આદિજનોં કે વચનોં કે સહાયક તો
અનુમાન આદિ પ્રમાણ હેં-પરન્તુ મેરા સહાયક કોઈ પ્રમાણ હી નહીં
હોતા હેં, યદ્યપિ મેં મર્વથા સત્ય કહતા હેં પરન્તુ વહ મેરા વચન અસ-
ભવિત અસહાય-હોને કી વજહ સે મનુષ્યો કે લિયે શ્રદ્ધેય નહીં વન

આ રીતે આ બધા અમભવનોની મભાવના બાદતે તલિપુત્રે પોતાની જાતનેજ
સમોધિત કરતા મનમા વિચાર કર્યો કે હે ચિત્ત ! શ્રમણજનો જે કહે છે
તે શ્રદ્ધેય છે બ્રાહ્મણો જે કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રાણ માહ્ણજનો
જે કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે
પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયનૂન થઈ જાય
છે એટલા માટે તે પાથો શ્રદ્ધાના વિષય બની જાય છે એવી આ બધા
અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનું પ્રતિપાન કરનાર શ્રમણ માહ્ણ
વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ જાય છે, પણ હું જે કહી રહ્યો છું તે
અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છું એક અસહાય છું એવી મને આ બાબતમા ડોઈની
મદદ પણ મળી શકે તેમ નથી તે શ્રમણ માહ્ણ વગેરેના વચનોના મહાયક
તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણો છે પણ મારા કથનનું સહાયશૂન થાય તેનું ડોઈ
પ્રમાણ જ નથી જે કે હું જે કહી રહ્યો છું તે સંપૂર્ણ રીતે યથાર્થ
સત્ય-કહી રહ્યો છું પણ મારા તે વચનો અસભવિત અસહાય હોવા બદલ

धचने सती यदि अग्रमेय=एवभूत मत्यमपि यदामि, यत्-अह 'सहपुत्तेहि अपुत्र'
 सहपुत्रैरपि अपुत्रः=पुत्रेषु विद्यमानेऽपि अह पुत्ररहित एवामि नानादृशत्वात् कः
 'मेय' ममेद=इदं मदीय वचन 'सन्निभः' अद्याम्यति=अत्येयति, न कोऽपि,
 तथा अह 'सहमिच्छेहिअमित्तं' सहमिच्छैरमित्तं=मित्रेषु विद्यमानेऽपि 'मित्र-
 रहितोऽह' को 'मेद' ममेद वचन अद्याम्यति ? एवम=अनेन प्रकारेणैव अर्थेन
 दारै दासै. परिजनेन च सहितोऽपि, तं रहितोऽस्मि, इदं मदीय वचन क. अद्या-
 म्यति, अपितु न कोऽपि । 'एव' अमुना प्रकारेण रा यद्यह वरीमि-यत्
 'तेतलिपुत्रे' तेतलिपुत्र नामधेये खलु मयि अमात्ये कनकवज्जेन राज्ञा 'अव-
 ञ्चाएणं समाएण' अपच्यातेन=दुश्चिन्तनेन सता, अर्थात् कनकध्वजो राजा

सकता है जैसा मैं यह सत्य भी कहूँ कि मैं पुत्रों के विद्यमान होने पर
 भी अपुत्र पुत्र रहित-हूँ, तो कौन मेरी इस बात को अद्धा से देखेगा-
 इसी तरह मैं यह कहूँ कि मैं मित्रों के विद्यमान होने पर भी मित्र
 रहित हूँ-तो कौन मेरे इन वचनों पर विश्वास करेगा-(एव अत्येण
 दारेण दासेहि परिजणेण एव खलु तेतलिपुत्तेण अमच्छे कणगज्झएण
 रत्ताअवज्झएण समाणेण तेतलिपुत्तेण तालपुडगे विसे आसगसि
 पक्खित्ते से वि य णो कमइ को मेय सदहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण नीलुत्पल
 जाव खधसि ओहरिण तत्थ वि से धारा ओपला को मेय सदहिस्सइ)
 इस तरह अर्थ, दारा, दास, परिजन, इन से युक्त होने पर भी मैं-इन
 से रहित हूँ, कौन मेरे इस वचन को मानेगा ? अर्थात् कोई नहीं मानेगा
 इसी तरह यदि मैं ऐसा कहूँ कि मुझे तेतलिपुत्र अमात्य के ऊपर कनक

भाणसे भाटे अद्धय थहं शडे तेम नथी जेम के हुं अत्यारे आ जातनी
 साथी वात पणुं के पुत्रो डोवा छताये हुं पुत्र वगरनो छु तो डोवा
 भारी आ वातने अद्धानी दष्टिजे जेशे ? आ प्रभाणे ज हुं के मित्रो
 डोवा छताये हुं मित्र वगरनो छु तो डोवा भारी आ वात उपर अद्धा धरावशे ?

(एव अत्येण दारेण दासेहि परिजणेण एव खलु तेतलिपुत्तेण अमच्छे कण
 गज्झएण रत्ता अवज्झएण समाणेण तेतलिपुत्तेण तालपुडगे विसे आसगसि
 पक्खित्ते से वि य णो कमइ, को मेय सदहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण नीलुत्पल जाव
 खधसि ओहरिण तत्थ वि से धारा ओपला को मेय सदहिस्सइ)

आ रीते अर्थ (धन), दाग (पत्नी) दाग, परिजन को पधा डोवा
 छता पणुं हुं जेमना वगर छु भारी आ वात उपर डोवा विश्वास भूडवा
 तैयार थशे ? ओटवे वे डोवा पणुं विश्वास करथे न नहि आ रीते ज जे हुं
 आभ के हुं के भारी उपर गण्ड डनड वचन नाराज थहं गया छता ओटला भाटे

तैत्तिरीये दुश्चिन्तको जातः इति हेतोः, तैत्तिरीयेण तालपुटक विषम् 'आसगसि' आस्ये=मुखे प्रक्षिप्तम्, 'से वि य' तदपि च विष नो 'कमड न क्राम्यति=विष-त्वेन न परिणमति को जन 'मेद' ममेद मयमपि यचन श्रद्धास्यति न कोऽपि, तथा 'तैत्तिरीयेण' नीलोत्पल जाय खगसि ओदरिण' तैत्तिरीयेण नीलोत्पल यावत् स्क्रन्धे उपहतः=तैत्तिरीयेण नीलोत्पलगवलगुलिकरुपमप्रभाऽसि 'स्क्रन्धे कण्ठमूले ' अवहृत ' प्रहृतः ' तत्त्वमि ' तत्रापि=तस्मिन् मरणोपाये कृतेऽपि च' तस्य=भसेः धारा ओपल्ला=कुण्ठीभूता को 'मेद ममेद श्रद्धास्यति । एवमेव यद्यह द्रूयाम् यन्मया ' तैत्तिरीयेण पामगं गीवाए उधेत्ता जाव रज्जुच्छिन्ना को मेय सहसिस्स' तैत्तिरीयेण पागक ग्रीवाया उद्व्या यावत् रज्जुच्छिन्ना, को ममेद श्रद्धास्यति ? तैत्तिरीयेण अतिविशाला गिला यावद् वद्वा अस्ताधयाव-

श्वज राजा दुश्चितक वन गये-इसलिये मने तालपुट विष मुख में डाल दिया परन्तु वह विषरूप से परिणमित नहीं हुआ । मने विष खाया-पर मैं मरा नहीं-कौन मनुष्य मेरी इस सत्य बात को श्रद्धा की दृष्टि से देखेगा । तथा मैंने नीलोत्पल, गवल एव गुलिका की प्रभा जैसी प्रभाव वाली तीक्ष्ण तलवार अपनी गर्दन पर मरने के लिये चलाई-परन्तु वह भोटी धारवाली बन गई-कुण्ठित हो गई-उमसे मेरी गर्दन नहीं कटी-कौन मेरी इस बात को मानने के लिये तैयार हो सकेगा (तैत्तिरीयेण पासग इत्यादि) इसी तरह यदि मे यह कहूँ कि मुझ तैत्तिरीयने अपने गले में पाशक डाला और वृक्षपर चढ़कर वहां से नीचे मैं लटक पड़ा और फटा बीच में से टट गया तो कौन इन वचनों पर विश्वास करेगा । (तैत्तिरीयेण महद्महालय जाव वधित्ता अथाह जाव उदगसि अप्पा

मे तालपु विष (ओर) भाधु डंतु पणु ते विषना इयभा परिणुत थयु नथी ओटके के विष लक्ष्य उरवा छताये हुं भरणु पाभ्यो नडि आ वात उपर ठये भाणुस विन्धाम भूवा तैयार थये ? तेभ्य नीलोत्पल, गवल अने गुलिकाना जेवी प्रभावाणी तीक्ष्ण धागवाणी तग्वारने मे भरवा भाटे भारी डोड उपर धा कथो पणु ते तरवार ज णूडी धारवाणी थर गध-कुठित थध गर्-तेनाथी भारी डोड उपाठ नडि भारी आ वात उपर डोणु विन्धाम कवा तैयार थये ? (तैत्तिरीयेण पासग इत्यादि) आ रीते ज हुं आम उहुं के मे तैत्तिरीये याताना गणामा क्षामे नाभ्यो अने वृक्ष उपर थढरो वृक्ष उपर थडीने त्याथी नीचे लटकी पडरो पणु क्षामे वर्येरी ज तूरी गये तो डोणु भागी आ वात उपर विश्वास भूथे ?

(तैत्तिरीयेण महद्महालय जाव वधित्ता अथाह जाव उदगसि अप्पा मुक्के,

હૃદકે આત્મા મુક્તઃ, તથાપિ ચ खलु रताद्यो जातः, को ममेदं श्रद्धास्यति=मया स्वरूपे महाशिला वद्ध्वा अगाधे उदके आत्मा मुक्तः, परन्तु तस्मिन्नुदकेऽपि मम तलस्पर्शो जातः, इति मम उच्यते कः श्रद्धास्यति ? पुनश्च-तेतलिपुत्रेण मया शुष्के वृणकटे=वृणपुञ्जेऽग्निनाय प्रक्षिप्य प्रज्वलिते तस्मिन् आत्मा मुक्तः, परन्तु सोऽग्निनाय 'प्रियाए' प्रिव्यातः=उपशान्त, इत्येवमपि मदीय वचनं कः श्रद्धास्यति ? न कोऽपि, इत्येव स तेतलिपुत्र. 'ओहयमणसरूपे' अपहृतमनः सकल्प=भग्नोत्साह' सन् यावद् ध्यायति=आर्तध्यान करोति ॥ सू० १० ॥

મુક્તકો, તત્થ વિ ણ થાહે જાણે કો મેય સદહિસ્સહ ? તેતલિપુત્તેણ મુક્તકસિ તળકૂડસિ અગણિકાય પક્કિલવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ વિ સે અગણિકાણ વિજ્ઞાણે કો મેય સદહિસ્સહ ? ઓહયમણસરૂપે જાવ શ્ચિયાયહ) મુક્ત તેતલિપુત્રને એક વહુત વઢી શિલા કા ગલેમેં ત્રાધી ઓર ત્રાદ મેં અથાહ અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જલ મેં કૂદ પડા પરન્તુ વહ જલ કૂદતે હી થાહ થાલા બન ગયા અથાહ નહીં રહા મેરી હસ સત્ય વાત પર ખી કૌન શ્રદ્ધા કરેગા । હસી તરહ મુક્ત તેતલિપુત્રને એક વઢે ભારી શુષ્ક ઘાસ કે ઢેર મેં અગ્નિ લગાઈ ઓર હસ મેં અપને આપ કો પ્રક્ષિપ્ત કર દિયા-પરન્તુ વહ અગ્નિ બુક્ત ગઈ હસને મુક્તે ભસ્મ નહીં ક્રિયા મેરી હસવાત કો કૌન શ્રદ્ધા રૂપ સે સ્વીકાર કરેગા । હસ પ્રકાર અપહૃત મન સંકલ્પ થાલા બન કર-હત્સાહ રહિત હોકર વહ તેતલિપુત્ર અમાત્ય આર્તધ્યાન મેં પડ ગયા ॥ સૂ. ૧૦ ॥

તત્થ વિ ણ થાહે જાણે કો મેય સદહિસ્સહ : તેતલિપુત્તેણ મુક્તકસિ તળકૂડસિ અગણિકાય પક્કિલવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ વિ સે અગણિકાણ વિજ્ઞાણે કો મેય સદહિસ્સહ ? ઓહયમણસરૂપે જાવ શ્ચિયાયહ)

મે તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા (પથરો) ગજામા બાધી અને ત્યાર પછી હું અથાહ (બેઠા) અતાર અપુરુષ પ્રમાણ બેટલા પાણીમા કૂદી ગયો પણ હૃદતાની સાથે જ પાણી થાહવાળું (છીછરું) થઈ ગયું, અથાહ (બેઠું) રહું નહિ મારી આ વાત ઉપર પણ કોણ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ પ્રમાણે જ મે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટા ભારે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ પ્રગટાવ્યો અને તેમા મે પોતાની જાતને જ પલાવી દીધી પણ તે અગ્નિ જોલવાઈ ગયો તેણે મને ભસ્મ કયો નહિ મારી આ વાતને કોણ શ્રદ્ધેય માનીને સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહૃતમન સહૃદયવાળો (હતાશ) થઈને નિરુત્સાહી બની ગયો અને આર્તધ્યાનમા રૂળી ગયો ॥ “ / - - ” ॥

मूलम्—तएणं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूव विउव्वइ, विउ-
व्वित्ता, तेतलिपुत्तस्म अदूरत्तामंते ठिच्चा एवं वयासी—ह
भो । तेतलिपुत्ता । पुरओ पवाए पिट्टओ हत्थिभयं, दुहओ
अचक्खुफासे, मज्जे सराणि वरिसंति, गामे पलित्ते रत्ते
झियाइ, रत्ते पलित्ते गामे झियाइ । आउसो तेतलिपुत्ता ।
कओ वयामो ? तएणं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एव वयासी—
भीयस्स खलु भो । पव्वज्जा सरणं, उक्कठियस्स सद्देसगमणं
लुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्ज, माइ-
यस्स रहस्स अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अच्चाणपरिसंतस्स
वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणाकिच्चं, पर अभिउजिउ
कामस्स सहायकिच्चं खतस्स दत्तस्स जिइदियस्स एत्तो
एगमवि णं भवइ । तएणसेपोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्च
एव वयासी—सुदट्ठ णं तुम तेयलिपुत्ता । एयमट्ठ आयाणाहि
त्तिकट्ठु दोच्चपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिस
पाउव्वमूए, तामेव दिस पडिगए ॥ सू० ११ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ‘तएण’ तत् खलु तेतलिपुत्रे आर्तध्यान
एते सति स पोट्टिलोदेव’ ‘पोट्टिलारूव’ पोट्टिलारूप विकुर्वति=वैक्रियशक्त्या

‘तएण से पोट्टिले देवे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) उस पोट्टिल देवने
(पोट्टिला रूव विउव्वइ) पोट्टिला के रूप की विकुर्वणा की—अर्थात् वैक्रिय
शक्ति के प्रभाव से उसने पोट्टिला का रूप धारण किया (विउव्वित्ता

‘तएण से पोट्टिले देवे’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थार ५५ (से पोट्टिले देवे) ते पोट्टिलदेवे (पोट्टिला रूव
विउव्वइ) पोट्टिलाना रूपनी विकुर्वणा उरी ओट्ठे के वैक्रिय शक्तिताना प्रभावथी

દુદકે આત્મા મુક્તઃ, તત્રાપિ ચ સ્વલુ ગ્તાગ્રો જાતઃ, કો મમેદ શ્રદ્ધાસ્યતિ=મયા
સ્વકળે મહાશિલા પદ્ધા ગગાવે ઉદકે આત્મા મુક્તઃ, પરન્તુ તસ્મિન્નુદકેઽપિ
મમ તત્ત્વસ્પર્શો જાતઃ, ઇતિ મમ પચન ક' શ્રદ્ધામ્યતિ ? પુનશ્ચ-તેતલિપુત્રેણ
મયા શુષ્કે તૃણકૂટે=તૃણપુન્જેઽગ્નિઘાય પ્રક્ષિપ્ય પ્રજ્વલિતે તસ્મિન્ આત્મા મુક્તઃ,
પરન્તુ સોઽગ્નિઘાય ' વિજ્ઞાણ ' વિધ્યાતઃ=ઉત્સાહ, ઇત્યેવરૂપમપિ મરીય વચન
કઃ શ્રદ્ધાસ્યતિ ? ન કોઽપિ, ઇત્યેવ સ તેતલિપુત્રઃ ' ઓદયમણસરૂપે ' અપહ-
તમનઃ સંકલ્પ =અગ્નોત્સાહ' સન્ યાવદ્ ધ્યાયતિ=આર્તધ્યાન કરોતિ ॥મૂ० ૧૦॥

મુસ્કો, તત્થ પિ ણ યાહે જાણ કો મેય સદ્દિહિસ્સઢ ? તેતલિપુત્તેણ મુસ્કસિ
તળકૂડસિ અગ્નિઘાય પક્કિલવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ વિ સે અગ્નિઘાય
વિજ્ઞાણ કો મેય સદ્દિહિસ્સઢ ? ઓદયમણસરૂપે જાવ જિયાયદ્) મુક્ક
તેતલિપુત્રને એક વહુન વઢી શિલા કાં ગલેમેં યાધી ઓર વાદ મેં અધાહ
અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જલ મેં કૂદ પઢા પરન્તુ વહ જલ કૂદતે હી યાહ
વાલા બન ગયા અધાહ નહીં રહા મેરી હસ સન્ય વાત પર મી કૌન
શ્રદ્ધા કરેગા । ઇસી તરહ મુક્ક તેતલિપુત્રને એક વઢે મારી શુષ્ક વાસ
કે ઢેર મેં અગ્નિ લગાઈ ઓર ઉસ મેં અપને આપ કો પ્રક્ષિપ્ત કર દિયા-
પરન્તુ વહ અગ્નિ બુક્ક ગઈ ઉસને મુક્કે મસ્મ નહીં ક્રિયા મેરી હસવાત કો
કૌન શ્રદ્ધા રૂપ સે સ્વીકાર કરેગા । ઇમ પ્રકાર અપહત મન સંકલ્પ
વાલા બન કર-ઉત્સાહ રહિત હોકર વહ તેતલિપુત્ર અમાત્ય આર્તધ્યાન
મેં પડ ગયા ॥ સૂ० ૧૦ ॥

તત્થ પિ ણ યાહે જાણ કો મેય સદ્દિહિસ્મઢ ? તેતલિપુત્તેણ મુસ્કસિ તળકૂડસિ
અગ્નિઘાય પક્કિલવિત્તા અપ્પા મુક્કો તત્થ વિ સે અગ્નિઘાય વિજ્ઞાણ કો મેય
સદ્દિહિસ્સઢ ? ઓદયમણસરૂપે જાવ જિયાયદ્)

મે તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા (પથ્થર) ગગામા બાધી
અને ત્યાર પછી હું અથાહ (ઊડા) અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જેટલા પાણીમા
કૂદી ગયો પણ કૂદતાની સાથે જ પાણી થાહવાળું (છીછડું) થઈ ગયું, અથાહ
(ઊડું) રહ્યું નહિ મારી આ વાત ઉપર પણ કોણ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ
પ્રમાણે જ મે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટા ભારે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ
પ્રગટાવ્યો અને તેમા મે પોતાની બતને અપવાની દીધી પણ તે અગ્નિ બોલવાઈ
ગયો તેણે મને ભસ્મ કયો નહિ મારી આ વાતને કોણ શ્રદ્ધેય માનીને
સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહતમન સંકલ્પવાળો (હતાશ) થઈને
નિરુત્સાહી બની ગયો અને આર્તધ્યાનમા ફૂળી ગયો ॥ “ સૂ ” ॥

मेवमवादीत् 'भो' हे पोष्टिले । भीतस्य खलु प्रवज्याशरण भवति तत्र दृष्टान्त-
माह-यथा-'उक्कडियस्म' उत्कण्ठितगम्य=परदेशवर्ति=यादु मृकस्य स्वदेशगमन,
'डुडियस्म' क्षुधितस्य अन्नम्, 'तिसियस्म' तपितस्य पान, 'आउरस्म आतु-
रस्य=रोगिण' 'भेमज्ज' भैषज्य 'मायिस्म' मायिकस्य=मायाविन. रहस्य=गोपनम्,
'अभिजुनस्म' अभियुक्तस्य = दोषापवादयुक्तस्य 'पच्चयकरण = प्रत्ययकरण
तन्निराकरणेन स्वविषये निर्दोषताप्रतीत्युत्पादनम्, 'अद्वानपरिसतस्स' अ-वपरिश्रा-
न्तस्य=मार्गगमनपरिसिद्धस्य 'वाहणगमण' वाहनगमन. शकटादिना गमन 'तरि
तैत्तिलिपुत्ते पोष्टिल एव ययासी-भीतस्म खलु भो पवज्जा-सरण-उक्कं-
डियस्म सदेसगमण डुडियस्म अन्न, तिसियस्स पाण, आउरस्स भेस
ज्ज, माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरण, अद्वान परिसतस्स
वाहणगमण, तरिउकामस्स पच्चणकिच्च. पर अभिउजिउकामस्स
सहायकिच्चं सतस्स दनस्म जिडडियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ) इस
प्रकार पोष्टिला की बात सुनकर तैत्तिलिपुत्र अमात्य ने उससे ऐसा कहा
हे पोष्टिले ! भो (भय युक्त) के लिये प्रवज्या शरण भूत होती है,
जैसे-परदेश वर्ती उत्सुक व्यक्ति के लिये स्वदेश गमन शरण भूत
होना है, भूखे के लिये अन्न शरण भूत होना है प्यासे के लिये पानी,
आतुर रोगी के लिये भैषज्य, मायावी के लिये मायाचारी, अभियुक्त-
दोषापवाद वाले के लिये दोषों के निराकरण से अपने विषय में निर्दो-
षता की प्रतीति का उत्पादन, शरण भूत होता है । मार्ग आन्त के लिये
वाहन से गमन, करना शरण भूत होता है, तैरने की इच्छा वाले के

(तएण से तैत्तिलिपुत्ते पोष्टिल एव ययासी-भीतस्म खलु भो पवज्जासंण
उक्कडियस्स सदेसगमण डुडियस्स अन्न तिसियस्स पाण, आउरस्स भेसज्ज,
माइयस्स रहस्स, अभिजुत्तस्स पच्चयकरण, अद्वानपरिसतस्स वाहणगमण, तरिउ
कामस्स सहायकिच्च सतस्स जिडडियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ)

आ रीते पोष्टिलानी वात सालाणीने तैत्तिलिपुत्र अमात्ये तेने कहुं के हे
पोष्टिले ! लालीन थयेवाने माटे प्रवज्या शरण भूत होय छे-वेम-परदेशमा
रहेती उत्सुक व्यक्तिने माटे पोताने हेत पाछा करवु शरण भूत होय छे भूखा
ने माटे अन्न शरण भूत होय छे आ प्रमाणे न तरस्याने माटे पाणी, आतुर-
रोग-ने माटे भैषज्य-हवा, मायावीने माटे माया य री अभियुक्त-दोषापवाद
वाणा-ने माटे दोषोना निराकरणथी पोताना विने निर्दोषतानी प्रतीतिनु उत्पादन
शरण भूत होय छे मार्गमा आलता यात्री गयेवाने माटे वाहननो उपयोग
शरण भूत होय छे. तरवानी किछा धरावता माथुमने माटे नाव वगेरे जलयाम-

ધારયતિ, મિકુર્વિત્યા તેતલ્પિપુત્રસ્ય અદૂરસામન્ત=નાતિદૂરે નાતિનિમ્ન્ટે સ્થિત્વા
 પૃથ્વમસાદીત્-દમો તેતલ્પિપુત્ર ! 'દમો' દ્વિત્યામન્ત્રણે, દે તેતલ્પિપુત્ર ! 'પુરઓ'
 પુરતઃ=અગ્રતઃ 'પવાણ' પ્રપાતઃ=ગતઃ, અતો નિર્ગમનમસમ્ભવિ, પૃષ્ઠતઃ ઇસ્તિ
 મયમ્, અતો પ્રત્યાવર્તન ચાસમ્ભવિ, 'દુહમો' ઉમયતઃ=ઉમયત=ઉમયોઃ
 પાર્થયોઃ 'અચક્ષુષાસે' અચક્ષુષર્ષઃ=અન્ધકાર, 'મજ્ઞો' મ યે=યત્ર ત્રયમાસ્મદે
 ત્વં 'સરાણિ' શરા=ચાણા, 'વરિસતિ' વર્ષન્તિ=નિપતન્તિ । 'ગામે પલિત્તે'
 ગ્રામે પ્રદીપ્તે=પ્રજ્વલિતે સતિ રણ્ણે' અણ્ય=અન 'ઝિયાઃ' ધ્યાયતિ=ગન્તુ
 ચિન્તયતિ, અણ્યે પ્રદીપ્તે ગ્રામ ધ્યાયતિ=ગન્તુ ચિન્તયતિ, 'આઝમો તેતલ્પિપુત્રા'
 હે આયુષ્મન્ તેતલ્પિપુત્ર ! 'ઉમઓરઝિત્તે' ઉમયત પ્રદીપ્તે=ઉમયસ્મિન્ પ્રજ્વલિતે
 વય 'કઓ વયામો' કુતો ત્રજામ=રુગન્ત્રામ । તત્ ગતુ સ તેતલ્પિપુત્રઃ પોટિલા

તેતલિપુત્તસ્સ અદૂરસામન્તે ઠીઞ્ચા (ધારણ કર કે વહ
 તેતલિપુત્ર કે સમીપ ગયી । વહાં જાકર ડસને ડસમે ડસ પ્રકાર
 કહો—(દ મો તેતલિપુત્તા ! પુરઓ પવાણ પિટ્ટઓ હત્થિમય) અરે ઓ
 તેતલિપુત્ર ! આગે પ્રપાત ખડ્ડા હૈ ઓર પીઠે હાથી કા મય હૈ । (દુહઓ
 અચક્ષુષાસે, મજ્ઞો સરાણિ વરિસતિ) દોનો ઓર અન્ધેરા હૈ ઓર
 જહા હમલોગ ઠહરે હુણ હૈં વહા વાણોં કી વૃષ્ટિ હો રહી હૈ । (ગામે
 પલિત્તે રણ્ણો ઝિયાહ, રત્તો પલિત્તે ગામે ઝિયાહ) ગ્રામ મેં આગલગને
 પર મનુષ્ય જગલ મેં ચલે જાને કો સોચતા હૈ—ઓર જગલ મેં આગ
 લગને પર ગ્રામ મે ચલે આને કે લિયે વિચારતા હૈ । (આઝસો તેતલિ
 પુત્તા ! ઉમઓ પલિત્તે કઓ વયામો) પરન્તુ જય દોનો મેં આગ લગ
 જાવે તો હે આયુષ્મન્ તેતલિપુત્ર ! કહો ! હમ કહા જાવે ? (તણ સે

સેણે પોટિલાનુ ૩૫ ધારણ કથુ (તિલ્લિપુત્તા તેતલિપુત્તસ્સ અદૂરસામન્તે ઠીઞ્ચા
 એવ વયાસી) ધારણ કરીને તે તેતલિપુત્રની પાસે ગઈ ત્યા જઈને તેણે તેને
 આ પ્રમાણે કહ્યું કે (દ મો તેતલિપુત્તા ! પુરઓ પવાણ પિટ્ટઓ હત્થિમય) અરે,
 ઓ ! તેતલિપુત્ર ! તમારી સામે પ્રપાત-પાથ છે અને તમારી પાછળ હાથીનો
 મય છે (દુહઓ અચક્ષુષાસે, મજ્ઞો સરાણિ વરિસતિ) અને તરફ અધાર
 અને ન્યા અમે ઊભા છીએ ત્યા તીરે વર્ષો રહ્યા છે (ગામે પલિત્તે રણ્ણો
 ઝિયાહ રત્તો પલિત્તે ગામે ઝિયાહ) ગામમા આગ લાગતા માણુમ જગલમા
 નાસી જવાનો વિચાર કરે છે અને જગલમા આગ લાગતા ગામમા આવતા
 રહેવાનો વિચાર કરે છે (આઝસો તેતલિપુત્તા ઉમઓ પલિત્તે કઓ વયામો)
 પણ ન્યારે અને તરફ આગ સળગી ઉઠે ત્યારે હે આયુષ્મન્ત તેતલિપુત્ર !
 બોલો, અમે કયા જઈએ ?

મેવમવાદીત્ ' મો ' હે પોટિલે ! મીતસ્ય સ્વલુ પ્રવ્રજ્યાશરણ મ્વતિ તત્ દૃષ્ટાન્ત-
માહ-યયા- ' ઉત્ક્રિયસ્મ ' ઉત્ક્રિયનસ્ય=પરદેશગર્તિ-ગાદુ મુદ્સ્ય સ્વદેશગમન,
' હુદિયસ્મ ' હુદિયતસ્ય અન્નમ્, ' તિસિયસ્મ ' તપિતસ્ય પાન, ' આઊરસ્મ આતુ-
રસ્ય=રોગિણ ' મેમજ ' મૈવજ્ય ' માયિસ્મ ' માયિકસ્ય=માયાદિનઃ રહસ્ય=ગોપનમ્ ;
' અમિજુતસ્મ ' અમિયુક્તમ્ = દોષાપવાદયુક્તસ્ય ' પચ્ચયકરણ = પ્રત્યયકરણ
તન્નિરાકરણેન સ્વવિષયે નિર્દોષતાપ્રતીત્યુત્પાદનમ્, ' અદ્વાણપરિસતસ્સ ' અ વપરિશ્રા-
ન્તસ્ય=માર્ગગમનપરિશિષ્ટસ્ય ' ગાહણગમણ ' ગાહનગમન શ્વકટાદિના ગમન ' તરિ
તેતલિપુત્તે પોટિલિ એવ વયામી-મીત્તસ્મ સ્વલુ મો પવ્રજ્ઞા-સરણ-ઉત્ક્ર-
ક્રિયસ્સ સદેસગમણ હુદિયસ્મ અન્ન, તિસિયસ્સ પાણ, આઊરસ્સ મેસ-
જ્ઞ, માહ્યસ્સ રહસ્સ, અમિજુત્તસ્મ પચ્ચયકરણ, અદ્વાણ પરિસતસ્સ
ગાહણગમણ, તરિડકામસ્સ પદ્ધવણકિચ્ચ પર અમિડ જિડકામસ્સ
સહાયકિચ્ચ સતસ્સ દનસ્મ જિડદિયસ્મ ઇત્તો ઇગમવિ ણ મ્વદ્) આ
પ્રકાર પોટિલા કી વાત સુનકર તેતલિપુત્ર અમાત્ય ને ઉસસે એસા કહા
હે પોટિલે ! મીન (મય યુક્ત) કે લિયે પ્રવ્રજ્યા શરણ મૂત્ત હોતી હૈ,
જેસે-પરદેશ વર્તી ઉત્સુક વ્યક્તિ કે લિયે સ્વદેશ ગમન શરણ મૂત્ત
હોના હૈ, મૂલ્કે કે લિયે અન્ન શરણ મૂત્ત હોના હૈ પ્યાસે કે લિયે પાની,
આતુર રોગી કે લિયે મૈવજ્ય, માયાચી કે લિયે માયાચારી, અમિયુક્ત-
દોષાપવાદ વાલે કે લિયે દોષો કે નિરાકરણ સે અવને વિષય મે નિર્દો-
ષતા કી પ્રતીતિ કા ઉત્પાદન, શરણ મૂત્ત હોના હૈ । માર્ગ શ્રાન્ત કે લિયે
ગાહન સે ગમન, કરના શરણ મૂત્ત હોના હૈ, તૈરને કી ઇચ્છા વાલે કે

(તદ્દન સે તેતલિપુત્તે પોટિલિ એવ યયામી-મીત્તસ્મ સ્વલુ મો પવ્રજ્ઞાસરણ
ઉત્ક્રક્રિયસ્મ સદેસગમણ હુદિયસ્મ અન્ન નિસિયસ્સ પાણ, આઊરસ્સ મેસજ્ઞ,
માહ્યસ્સ રહસ્સ, અમિજુત્તસ્સ પચ્ચયકરણ, અદ્વાણપરિસતસ્સ ગાહણગમણ, તરિડ
કામસ્સ સહાયકિચ્ચ સતસ્સ જિડદિયસ્સ ઇત્તો ઇગમવિ ણ મ્વદ્)

આ રીતે પોટિલાની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તેને કહ્યું કે હે
પોટિલે ! ભગવાન થયેલાને માટે પ્રમજ્ઞા શરણ મૂત્ત હોય છે-જેમ-પરદેશમા
રહેતી ઉત્સુક વ્યક્તિને માટે પોતાને દેશ યાજી કરવું શરણ મૂત્ત હોય છે બૂખ્યા
ને માટે અન્ન શરણ મૂત્ત હોય છે આ પ્રમાણે જ તરસ્થાને માટે યાજી, આતુર-
રોગ-ને માટે મૈવજ્ય-દવા, માયાવીને માટે માયા ચ રી અમિયુક્ત-દોષાપવાદ
વાળા-ને માટે દોષોના નિરાકરણથી પોતાના વિષે નિ નિતાની પ્રતીતિનું ઉત્પાદન
શરણ મૂત્ત હોય છે માર્ગમા આવતા વાકી ગયેલાને માટે વાહનને ઉપયોગ
શરણ મૂત્ત હોય છે, તરવાની ઇચ્છા ધરાવતા માણસને માટે નાવ વગેરે જલયાન

समेर्णं कम्मरयविकरणर अपुव्वकरण पण्डितस्स केवलवर-
णाणदसणे समुप्पण्णे ॥ सू० १२ ॥

टीका—‘तएण तस्म’ इत्यादि । ततः खलु तस्य तेनलिपुत्रस्य शुभेन परिणामेण जातिस्मरणम्=पूर्वभवान समुपपन्नम् । ततः खलु तस्य तेनलिपुत्रस्य अयमेतदूय आध्यात्मिक मार्थितः विन्तिताः कल्पितो मनोगतः सत्त्वः समुद्रपद्म एव खलु अहम् इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहेषे पुष्कलावती विजये पुण्डरी विजये राजधान्या महापद्मे नाम राजा आसम् । ततः खलु अहं च्यविराणांमत्तिके मुडो भूत्या यावत् ‘चोदमपुव्वाइ०’ चतुर्दशपूर्वाणि०=चतुर्दशपूर्वाणि अथीत वान् , बहूनि वर्षाणि ‘सामन्नपरियाय’ ग्रामण्यपर्याय०=वारिण्यपर्याय पालित

‘तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेतलिपुत्तस्स) तेनलिपुत्र को (सुभेण परिणामेण जाइ सरणे समुप्पण्णे) शुभपरिणाम से जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया । (तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारुवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था—एव खलु अहं इहेव जम्बूद्वीपे दीपे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पोंडरिगिणीए रायहाणीए महापद्मे नाम राया होत्था) उसके प्रभाव से उसने अपने पूर्वभव को जान लिया—उसने जाना कि मैं इसी जम्बूद्वीप नामके द्वीप में महाविदेह क्षेत्र में पुष्कलावती विजय में पुण्डरीकिणी नामकी राजधानी में महापद्म नाम का राजा था (तएण अहं येराण अतिण मुडे भविता जाव चोदमपुव्वाइ० बहूणि

‘तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारभाइ (तेतलिपुत्तस्स) तेतलिपुत्रने (सुभेण परिणामेण जाइ सरणे समुप्पण्णे) शुभ परिणामथी जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न भई गद्य

(तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारुवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था—एव खलु अहं इहेव जम्बूद्वीपे दीपे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पोंडरिगिणीए रायहाणीए महापद्मे नाम राया होत्था)

तेना प्रभावथी तेले चोत्ताना पूर्व भवने जाणी वीधा तेने आ जातनु ज्ञान थयु के ते आ जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा भडा विदेह क्षेत्रमा पुष्क लावती विजयमा पुण्डरीकिणी नामनी राजधानीमा महापद्म नामे रा न छते ।

(तएण अहं येराण अतिण मुडे भविता जाव चोदमपुव्वाइ० बहूणि वासाणि

वान् । अनन्तरं मासिण्या सलेखनया कालमासे काल कृत्वा 'महासुक्रे कल्पे'
महाशुक्रे कल्पे=सप्तमे देवलोके 'देवे' देव=देवत्वेनोत्पन्नः । ततः खलु अह
तस्माद् देवलोकात् 'आयुस्त्वण ३' आयुः क्षयेण ३=आयुर्भवस्थिति क्षयानन्त-
रम् इहैव तैत्तलिपुरे तैत्तलेरमात्यस्य भद्राया भार्याया 'दारगत्ताए' दारम्भेन=
पुत्रतया 'पच्चायाए' प्रत्यायात=उत्पन्नः, तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम 'पूर्व-
दृष्टानि=पूर्वभवपालितानि 'महन्वयाड' महाव्रतानि=पञ्चमहाव्रतानि स्वयमेव
उपसंपद्य विवर्तुम्, एव सपेहेइ सपेहिता स्वयमेव महाव्रतानि आरोहति=स्वीकरोति,
आरुह्य, यत्रैव प्रमदवनम्=उद्यान तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य असोगवरपाय-

सामन्त्रपरियाय० मासियाण सलेहणाए महासुक्रे कल्पे देवे-
तएण अह ताओ देवलोयाओ आयुस्त्वण ३ इहैव तैत्तलिपुरे तैत्तलि-
स्स अमच्चस्स भद्राए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए) वहाँ मेने स-
विरों के पाम मुडित होकर दीक्षा धारण की थी और ग्यारह अर्शों का
अध्ययन कर विशिष्ट तपस्या की थी अन्त में अनेक वर्षों तक श्रामण्य
पर्यायका पालन कर एक मासकी सलेखना धारण कर मैं काल अवसर
काल कर सातवा महाशुक कल्पमे देवकी पर्यायसे उत्पन्न हो गया । वहाँ
की आयुष्य स्थिति भवस्थिति स्थितिके क्षयके अनन्तर मैं वहाँसे चलकर
इस तैत्तलिपुर में तैत्तलि अमात्य के यहा भद्रा भार्या की कुक्षि से पुत्र
रूप में अवतरित हुआ । (त सेय खलु मम पुब्बदिट्ठाइ महन्वयाइ सय
मेव उवसपज्जित्ताण विहरित्ताए-एव सपेहेइ, सपेहिता सयमेव महन्व-
याइ आरुहेइ, आरुहिता जेणेव पमयवणे उडजाणे तेणेव उवागच्छेइ,

सामन्त्रपरियाय० मासियाए सलेहणाए महासुक्रे कल्पे देवे-तएण अह ताओ
देवलोयाओ आयुस्त्वण ३ इहैव तैत्तलिपुरे तैत्तलिस्स अमच्चस्स भद्राए भारि-
याए दारगत्ताए पच्चायाए)

त्या मे मुडित यधने स्थविरानी पासेथी दीक्षा धारणु करी હતી અને
અગિયાર અંગુલુ અધ્યયન કરીને વિગિષ્ટ તપસના કરી હતી કવટે ઘણા વર્ષો
સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને એક મહિનાની મલેખના ધારણુ કરી અને
ત્યાર પછી કાળ અવસરે કાળ કરીને માતમા મહા શુક્રે કલ્પમા દેવના પર્યાયથી
હું જન્મ પામ્યો ત્યાની ભવસ્થિતિ ૩ (ત્રણ) ના ક્ષય થવા બદલ હું ત્યાથી
આવીને આ તૈત્તલિપુરમા તૈત્તલિ અમાત્યને તમા ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી
પુત્ર રૂપમા જન્મ પામ્યો

(ત સેય खलु मम पुब्बदिट्ठाइ महन्वयाइ सयमेव उवसपज्जित्ताण विहरि
एव सपेहेइ, सपेहिता सयमेव महन्वयाइ आरुहेइ, आरुहिता जेणेव पमयवणे

वस्स 'अशोकवरपायस्य=अशोकवृक्षस्य 'अह' अयः पणिगतशिलोपरि 'सुह
 निसन्नस्स' सुहनिपणस्य=सुहोपरिष्ठस्य 'अणुचित्तमाणस्स' अनुचिन्तयत=
 पूर्वमेव कृतमध्ययनादिक स्मरत 'पुग्वाहीयाइ' पूर्वाधीतानि=पूर्वमेव पठितानि
 सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि सयमेव 'अभिसमन्नागयाइ' अभिसमन्नागतानि=
 ज्ञानविषयतया सजातानि । तत्. सत्तु तस्य तेतलिपुत्तस्य अनगारस्य सुभेन परि
 णामेन 'जा' यात्-प्रशस्तैरभ्यसमायै, प्रशस्तागिर्लेडामि विंशुद्वयमानामिः
 'तयावरणिज्जाण' तदावरणीयाना=ज्ञानावरणीयादीना वर्मणा 'सयोवसमेण'

उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसित्तापट्टयसि सुहनि-
 सन्नस्स अणुचित्तमाणस्स पुग्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोदस्सपुग्वाइ
 सयमेव अभिसमन्नागयाइ) इसलिये अब मुझे यही उचित है कि मैं
 पूर्व भव में पालित किये पच महाव्रतों को अपने आप धारण कर लू।
 ऐसा उसने विचार किया। विचार करके फिर उसने अपने आपही
 महाव्रतों को धारण कर लिया। धारण करके फिर वह जहाँ प्रमदवन
 नामका उद्यान था वहाँ चला गया। वहाँ जाकर वह अशोक वृक्ष के
 नीचे रक्खे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर पटाकार से परिणत शिला के
 ऊपर-आनन्द के साथ बैठ गया और पूर्व भव में कृत अध्ययन आदि
 का बार-बार चिन्तन करने लगा। इस तरह विचार करते-उसके पूर्व भव
 में पठित सामायिक आदि चौदह पूर्व ज्ञान के विषय भूत बन गये।
 (तण्ण तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेण परिणामेण जांवं तया-

उज्जाणे तेणेव उवागच्छत्ता, उवागच्छित्ता असोगवरपायस्य अहे पुढविसित्ता
 पट्टयसि सुहनिसन्नस्स अणुचित्तमाणस्स पुग्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोदस्स
 पुग्वाइ सयमेव अभिसमन्नागयाइ)

झोटा भाटे हुवे भने झेज येअ्य लागे छे के पूर्व लवभा के
 पाथ भइअतोने मे धारण करेला तेने पोतानी भेगे ज धारण करी लई
 आ रीते तेजे विचार कर्यो विचार कर्यो गाइ तेजे पोतानी भेगे ज पाथ
 भइअतो धारण करी लीधा धारण कर्यो पत्री ते न्या प्रमदवन नामे उद्यान
 हुत्तु त्या जतो रख्यो त्या जधने ते अशोक वृक्षनी नीचे भूजायेला पृथिवी
 शिला पट्टक ऊपर-पटाकार इपथी परिणत शिला ऊपर-आनन्द अनुभवतो भेसी
 गयो भने पूर्व लवभा के कछ अध्ययन क्युं हुत्तु तेनु बारबार चिंतन करवा
 लाग्यो आ रीते चिंतन करता करता पूर्वलवभा लखेला सामायिक वगेरे चौद
 पूर्वज्ञान तेने विषयभूत धर्ष गया

क्षशोपशमेन=उदिताना कर्मणा सयेण अनुदिताना कर्मणामुपशमेन=निरुद्धोदयस्त्वेन
'कम्मरयविकरणकर' कर्मरजो विकरणरूपम् 'अपुण्यकरण' अपूर्वकरणम्=अष्टम
गुणस्थानम् प्रविष्टस्य तस्य केवलरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नम् ॥सू० १२॥

मूलम्-तएण तेतलिपुरे नयरे अहा संनिहिएहि वाणमं-
तरेहि देवेहि देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने
कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगधव्वनिनाए कए यावि
होत्था । तएणं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे
समाणे एव वयासी-एव खल्ल तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए
मुंडे भवित्ता पव्वइए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्तं अणगार
वंदामि नमंसामि वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएणं भुज्जो
२ खामेमि, एव संपेहेइ, सपेहित्ता एहाए० चाउरगणीए

वरणिजाण कम्माण खओवसमेण कम्मरयविकरणकर अपुण्यकरण
पविट्ठस्स केवलवरणाणदसणे समुत्पण्णे) इस प्रकार शुभ परिणामों से
यावत् प्रसस्त अवसायों से विशुद्धमान लेश्याओ से, उसके ज्ञाना-
वरणी आदि कर्मों का क्षयोपशम-उदित कर्मों का क्षय एव अनुदित
कर्मों का उपशम-हो गया-सो इस के प्रभाव से वे कर्मरज को दूर
करने वाले अष्टम अपूर्व करण नामके गुणस्थान में प्राप्त हो गये ।
बाद में याहरवे गुणस्थान के अंत में और तेरहवे गुणस्थान के प्रारंभ
में उन्हें केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हो गया ॥सू० १२॥

(तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुमेण परिणामेण जाय तयावरणि-
ज्जाण कम्माण खओवसमेण कम्मरयविकरणकर अपुण्यकरण पविट्ठस्स केवल-
वरणाणदसण समुत्पण्णे)

आ रीते शुभ परिणामोत्थी, यावत् प्रसस्त अर्ध वसायोत्थी, विशुद्धमान
लेश्याओत्थी तेना ज्ञानावस्थीय वगेरे कर्म्मोना क्षयोपशम-उदित कर्म्मोना क्षय
अने अनुदित कर्म्मोना उपशम यर्थ गयो । ओना प्रभावथी तेओ । कर्मरजने
विकरण करनारा अष्टम अपूर्व करण नामना शुभस्थानमा प्राप्त यर्थ गयो । त्थार
पछी प्रारंभ शुभस्थानना अतमा अने तेरमा शुभस्थानना प्रारंभमा तेभने
ज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न यर्थ गयो ॥ सूत्र " १२ " ॥

वस्स 'अशोकवरपादपस्य=अशोकवृक्षस्य 'अहे' अधः परिणतशिलोपरि 'सुह
निसन्नस्स' सुहनिपण्णस्य=सुहोपनिषत्स्य 'अणुचित्तमाणस्स' अनुचिन्तयत=
पूर्वभवे कृतमध्ययनादिक स्मरत 'पुग्वाहीयाइ' पूर्वाधीतानि=पूर्वभवे पठितानि
सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि सयमेव 'अमिसमन्नागयाइ' अमिमग्न्यागतानि=
ज्ञानत्रिपयतया सजातानि । ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अनगारस्य भुमेन परि
णामेन 'जाव' यावत्-प्रशस्तैरध्ययसाधैः, प्रशस्तागिर्लक्ष्यामि विभुद्वयमानाभिः
'तयावरणिज्जाण' तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीनां कर्मणा 'खयोवसमेण'

उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयसि सुहनि-
सन्नस्स अणुचित्तमाणस्स पुग्वाहीयाइ सामाडयमाइयाइ चौदसपुग्वाइ
सयमेव अमिसमन्नागयाइ) इसलिये अब सुझे यही उचित है कि मैं
पूर्व भव में पालित किये पच महाव्रतो को अपने आप धारण कर लू।
ऐसा उसने विचार किया। विचार करके फिर उसने अपने आपही
महाव्रतो को धारण कर लिया। धारण करके फिर वह जहाँ प्रमदवन
नामका उद्यान था वहाँ चला गया। वहाँ जाकर वह अशोक वृक्ष के
नीचे रक्खे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर पटाकार से परिणत शिला के
ऊपर-आनन्द के साथ बैठ गया और पूर्व भव में कृत अध्ययन आदि
का बार-बार चिन्तन करने लगा। इस तरह विचार करते-उसके पूर्व भव
में पठित सामायिक आदि चौदह पूर्व ज्ञान के विषय भूत बन गये।
(तण्ण तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेण परिणामेण जाव तया-

उज्जाणे तेणेव उवागच्छत्त, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला
पट्टयसि सुहनिसन्नस्स अणुचित्तमाणस्स पुग्वाहीयाइ सामाडयमाइयाइ चौदस
पुग्वाइ सयमेव अमिसमन्नागयाइ)

ओठला भाटे हुवे भने ओअ योअ लागे छे के पूर्व लवभा के
पाथ भडावतोने मे धारण करेला तेने पोतानी भेजे अ धारण करी लई
आ रीते तेबे विचार कर्यो विचार कर्यो गाह तेबे पोतानी भेजे अ पाथ
भडावतो धारण करी लीधा धारण कर्यो पत्री ते न्या प्रभवन् नामे उद्यान
हुनु त्या अतो रह्यो त्या अधने ते अशोक वृक्षनी नीचे भूजयेला पृथिवी
शिला पट्टक उपर-पटाकार रुपथी परिणत शिला उपर-आनन्द अनुभवतो जेसी
गये। अने पूर्व लवभा के कछ अध्ययन कयुं हुनु तेनु बारबार चिंतन करवा
लाग्यो आ रीते चिंतन करता करता पूर्वलवभा लखेला सामायिक वगेरे यौह
पूर्वज्ञान तेने विषयभूत थई गया

दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णाणि अचित्तपुष्पाणि निपातितानि=वर्णितानि, दिव्यः=मनो
हरः गीतगन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत् । ततः खलु स कनकध्वजो राजा
'इमीमे कहाए लद्धहे समणे ' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दुष्टचिन्ता विषयी
कृतस्तेतलिपुत्रः अमात्य* मन्त्रज्य प्रमदवने केवलरक्षणदर्शनसम्पन्नो जात इति
वृत्तान्ताभिन्नः सन् एवमावादीत्-एव खलु तेतलिपुत्रो मया ' अयञ्ज्ञाए ' अप-
घ्यातः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा मन्त्रजितः 'त' तत्=तस्मात् कार-
णात् नमस्यित्वा ' एयमट्ठ ' एतमर्थ=मया कृतमपमानरूपमर्थं विनयेन भूयो भूयः
' स्वामेमि ' क्षमयामि, एव सप्रेक्षते सप्रेक्ष्य ' ण्हाए ' स्नातः कृतस्नानः ' चाउ
रगिणीए सेणाए ' चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं यत्रैव प्रमदवन उद्यान यत्रैव तेतलि-

होत्या) यथा सनिहित आसन्नभूत हुए चाण, व्यन्तर देवो ने और
देवियो ने आकाश में देवदुन्दुभिया बजाई । पंचवर्ण के अचित्त कुसुमो
की वृष्टि की । मनोहर गीत गन्धर्व निदान भी किया । (तण्ण से कण
गच्छए राया इमीसे कहाए लद्धहे समणे एव वयामी) जय यह
समाचार कनकध्वज राजा को ज्ञात हुआ मेरो दुष्ट विचारणा के विषय
भूत बने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल
ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है-इस प्रकार का वृत्तान्त जब
उसे मालूम पड़ा-तब उसने अपने मन में विचार किया (एव खलु तेत
लि पुत्ते मए अवज्झाए मुढे भवित्ता पव्वए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्त
अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो
स्वामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमय
वणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलि

यथा सनिहित आसन्नभूत थयेला वाणु०य तर देवेअये अने देवीअये अये
आकाशमा देवदुन्दुभिया वगाडी, पाय र गना अचित्त पुष्पोनी वर्षा करी अण
मनोहर गीत गन्धर्व निनाद (ध्वनि) पलु कथी (तण्ण से कणग जए राया
इमीसे कहाए लद्धहे समणे एव वयासी) व्यापारे आ भमाचारानी ज्ञान नान्त
कनक ध्वजने धर्म के भागी हुए विद्यारणुने लीधे तेतलिपुत्र अमात्ये दीक्षित
धर्मने प्रमदवनमा केवलज्ञान अने केवल दर्शन प्राप्त करी लीधा छे एनादे
तेले मनमा विचार कथी के

(एव खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुढे भवित्ता पव्वए त गच्छामि ण
तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो
स्वामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे
उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अणगार

सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव
 उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेतलिपुत्तेअणगार वदइ नमंसइ
 वंदित्ता नमसित्ता एयमट्ट विणएण भुज्जो२ खामेइ, नच्चा-
 सेन्ने जाव पज्जुवासइ । तएणसे तेतलिपुत्ते अणगारे कण-
 गज्झयस्मं रत्तो तीसे य महइ महालयाए० धम्म परिकहेइ ।
 तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलस्स अतिए
 धम्मं सोच्चा णिसम्म, पचाणुव्वडयंसत्तसिस्खावइयं सावग-
 धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव
 अहिगयं जीवाजीवे । तएणं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइ
 केवलपरियाग पाउणिता जाव सिद्धे । एव खलु जंबू ।
 समणेणं भगवयां महावीरेणं जावे सपत्तेणं चोदसमस्स
 णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिवेमि ॥ सू० १३ ॥

॥ चउदस अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । तत् खलु तेतलिपुरे नगरे ‘अहासनिहिण्हि’
 यथा सनिहितै=आसन्नै, ‘वाणमतरेहि’ वाणव्यन्तरे, देवै देवीभिश्च देवदुन्दुभ्य
 समहिता=आकाशे देवै, देवीभिश्च देवदुन्दुभ्यो वादिता इत्यर्थ, ‘दसद्वयणे
 कुसुमे निवाडिण’ दर्शद्वयणं कुसुम निपातितम्, अत्र जाति त्रिवक्षायामेकवचनम्,

‘तएण तेतलिपुरे नगरे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेतलिपुरे नगरे) तेतलिपुर नगरमें
 (अहासनिहिण्हि वाणमतरेहि देवैहि देवीहिश्च देवदुन्दुभीओ समाह्वयाओ,
 दसद्वेवन्ने कुसुमे निवाडिण, दिव्वे देवगीयंगधन्वनिनाए कए यावि

‘तएण तेतलिपुरे नगरे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्था२ ५४ (तेतलिपुरे नगरे) तेतलिपुर नगरमें
 (अहासनिहिण्हि वाणमतरेहि देवैहि देवीहिश्च देवदुन्दुभीओ समाह्वयाओ,
 दसद्वेवन्ने कुसुमे निवाडिण, दिव्वे देवगीयंगधन्वनिनाए कए यावि)

दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णाणि अचित्तपुण्याणि निपातितानि=वर्षितानि, दिव्यः=मनो
हरः गीतगन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत् । ततः खलु स कनकध्वजो राजा
'इमीसे कहाए लद्धेटे समाणे ' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दुष्टचिन्ता विषयी
कृतस्तेतलिपुत्र, अमात्यः प्रव्रज्य प्रमदयने केवलवर्णानदर्शनसम्पन्नो जात इति
वृत्तान्ताभिज्ञः सन् एवमावादीत्-एव खलु तेतलिपुत्रो मया ' अवज्झाए ' अप-
घ्यातः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः 'त' तत्=तस्मात् कार-
णात् नमस्यित्वा ' एयमट्ठ ' एतमर्थः=मया कृतमपमानरूपमर्थं त्रिनयेन भूयो भूयः
' स्वामेमि ' क्षमयामि, एव सप्रेक्षते सप्रेक्ष्य ' ण्हाए ' स्नातः कृतस्नान, ' चाउ-
रगिणीए सेणाए ' चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं यत्रैव प्रमदयन उद्यान यत्रैव तेतलि-

होत्वा) यथा सनिहित आसन्न भूत हुए चाण, व्यन्तर देवो ने और
दवियों ने आकाश में देवदुन्दुभियां बजाईं । पचवर्ण के अचित्त कुसुमो
की वृष्टि की । मनोहर गीत गन्धर्व निदान भी किया । (तएण से कण
गज्झए राया इमीसे कहाए लद्धेटे समाणे एव बयामी) जब यह
समाचार कनक वज राजा को ज्ञात हुआ मेरी दुष्ट विचारणा के विषय
भूत घने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल
ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है-इस प्रकार का वृत्तान्त जब
उसे मालूम पड़ा-तब उसने अपने मन में विचार किया (एवं खलु तेत
लि पुत्ते मए अवज्झाए मुडे भविस्सा पव्वएण, त गच्छामि ण तेतलिपुत्त
अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो र
स्वामेमि एव सपेहेह-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमय
वणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता तेतलि

यथा सनिहित आसन्नभूत थयेत्ता वाणु० तर देवोअने देवीअने
आकाशमा देवदुन्दुभियो बजाडी, पाय रगना अचित्त पुष्पेनी वर्षा करी अर
भनेह० गीत गन्धर्व निनाद (ध्वनि) पबु कर्यो (तएण से कणगज्झए राया
इमीसे कहाए लद्धेटे समाणे एव बयामी) अथारे आ भमाथारेनी जयु रान्त
कनक ध्वजने थरु के मारी हुण विचरणाने लीधे तेतलिपुत्र अमात्ये दीक्षित
थरुने प्रमदवनमा केवलज्ञान अने केवल दर्शन प्राप्त करी लीधा छे थारे
तेले मनमा विचार कर्यो के

(एवं खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुडे भविस्सा पव्वएण त गच्छामि ण
तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो र
स्वामेमि एव सपेहेह-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे
उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अणगार

पुत्रोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तेतलिपुत्रमनगारं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यन्वा एवमर्थः स्मरताञ्जराभरणं विनयेन भूयो भूयः समयति = क्षमां कारयति, तथा 'नञ्चासन्ने०' नाह्वयामन्ने नातिदूरे गायत् पर्युपास्ते = सेवां करोति । ततः खलु म तेतलिपुत्रोऽनगारः कनकध्वजाय राज्ञे तस्या च

पुत्र अणगार चढड, नममइ, वदित्ता नमसित्ता एवमट्ट विणण्ण भुज्जो २ खामेइ नञ्चासन्ने जाव पज्जुवामइ) मैंने तेतलिपुत्र को अपनी कुछ चिन्ता का विषयभूत घनागा है-सो वह मुद्रित होकर दीक्षित हो गया है । इसलिये मैं अब उसके पास जाऊँ और उन तेतलिपुत्र अनगार को वदना कहूँ-नमस्कार कहूँ । वदना नमस्कार कर मैं अपने द्वारा किये अपमान रूप अपराधकी वहे विनय के साथ धार २ उनसे क्षमा मागूँ-इस प्रकार ज्योंही उसने विचार किया-कि उसी समय वह उठा और स्नान किया-धार में अपनी चतुरंगीनी सेना के साथ जहाँ प्रमदचन था-उसमें जहाँ तेतलिपुत्र अनगार विराजमान थे वहाँ पहुँचा-वहाँ पहुँच कर उसने तेतलिपुत्र अनगार को वदना की नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके फिर अपने द्वारा कृत अपमान रूप अपराध की वहे विनय के साथ धार २ उनसे क्षमा कराई और समुचित स्थान पर बैठ कर उनकी सेवा सुश्रूषा की (तएण से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झ वदइ, नममइ, वदित्ता नमसित्ता एवमट्ट विणण्ण भुज्जो २ खामेइ नञ्चासन्ने जाव पज्जुवामइ)

तेतलिपुत्र आभात्यने मे पोतानी दुष्ट चिंताने विषयभूत (लक्ष्य) बनान्थे छे तेथी ज ते मुद्रित धर्मे दीक्षित धर्म गये छे ओटला भाटे डवे हु तेनी पासे जडि आने तेतलिपुत्र अनगारने वदना कइ नमस्कार कइ वदना आने नमस्कार करीने हु भारा वडे धर्म गयेला आत्मान इस अपराध बदल भहु ज नअपत्ते तेमनी पासेथी क्षमा याचना कइ आ रीते विचार थतानी साथे तरत ज ते जिये थये आने स्नान कथुं त्थार पछी पोतानी चतुरंगिणी सेनाने साथे न्या प्रमदचन हुतु आने तेमा पछु न्या तेतलिपुत्र अनगार विराजमान हुता थ्या पडेथ्ये त्था पडोथीने तेथे तेतलिपुत्र अनगारने वदना करी आने नमस्कार कया वदना आने नमस्कार करीने तेथे तेना वडे धर्म गयेला अपमान इस अपराधनी भहु ज नअपत्ते क्षमा मागी आने त्थार पछी तेथे उचित स्थान उपर बेसीने तेमनी सेवा तेमज सुश्रूषा करी

(तएण से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णा तीसे य मदइ महाल याए० धम्म परिक्खेइ)

‘महद्महालयाए०’ महातिमहत्या परिपदि धर्म ‘परिहर्ह’ परिरुथयति= उपदिशति । ततः खलु स अनरु रजो राजा तेतलिपुत्रस्य केवलिनोऽन्तिके धर्म श्रुत्वा निशम्य पञ्चाणुव्रतिक मत्तशिक्षात्रतिक इत्येव द्वादशविव श्रावकधर्म प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य श्रमणोपासको जातः । कीदृश ?-अभिगत जीवा-जीवः=परिज्ञात-यस्स रण्णो तीसे य महद्महालयाए० धम्म परिक्हेह) इसके बाद उन तेतलिपुत्र अनगार केवली ने कनकभवजराजा को उपस्थित परिपद को विशाल धर्म का उपदेश दिया-(तएण से कणज्झण राया तेतलिपुत्तस्स केवलस्स अतिण धम्म सोच्चा णिसम्म पचाणुव्वडय सत्तसिक्खावडय सावगवम्म पडिवज्जड पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे । तएण तेतलिपुत्ते केवली वड्ढणि वासाइ केवलपरियाग पाउणित्ता जाव सिद्धे । एव खलु जव् । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण चोदसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्ति वेमि) उपदेश सुनने के बाद कनकभवज राजाने तेतलिपुत्र केवलि के समीपश्रुतचारित्ररूप धर्म के प्रभाव से प्रेरित होकर और उस श्रुत धर्म का अच्छी तरह हृदय से विचार कर पाच अणुव्रत एवं सात शिक्षा रूप श्रावक धर्म धारण कर लिया । वारण करके वे श्रमणोपासक बन गये-यावत् जीव और अजीव तत्त्व का क्या स्वरूप है इसके भी वे ज्ञाता हो गये । बाद में तेतलिपुत्र केवलीने अनेक वर्षों तक केवलि

त्यार पछी ते तेतलिपुत्र अनगार डेवणीअे कनकभवज राजाने तेभए उपस्थित परिषदने अभिगत धर्म विषे उपदेश आप्थे।

(तएण से कणज्झण राया तेतलिपुत्तस्स केवलस्स अतिण धम्म सोच्चा णिसम्म पचाणुव्वडय सत्तसिक्खावडय सावगवम्म पडिवज्जड पडिविसज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे । तएण तेतलिपुत्ते केवलि वड्ढणि वासाइ केवलपरियाग पाउणित्ता जाव सिद्धे । एव खलु जव् । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण चोदसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि।)

उपदेश सामग्रीने कनकभवज राजाअे तेतलिपुत्र केवलिना श्रुतचारित्ररूप धर्मना प्रभावथी प्रेरणने ते श्रुतचारित्र रूप धर्म विषे मनमा मागी जीते विचार कराने तेभनी प सेथी पाच अणुव्रत अने सात शिक्षारूप श्रावकधर्म धारण करी लीधा धारण करीने तेअे श्रमणोपासक बर्ध गया अने यावत् एव तेभए अणुव्रतस्वनु स्वरूप थुछे ? तेनु पण तेअेने जान बर्ध गयु त्यार पछी तेतलिपुत्र केवलीअे षण्ण वर्षो सुधी केवली पथीयनु पालन ठ्यु अने आभ तेअेअे यावत सिद्धपद

પુત્રોડનગારસ્તગૈય ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય તેતલિપુત્રમનગાર વન્દને નમસ્યતિ, વન્દિત્ત્વા નમસ્યિત્વા એમર્થ=સ્વકૃતાગ્નિપલક્ષણ ત્રિવેનધૂયો ભૂયઃ સમયતિ=ક્ષમાં કારયતિ, તથા 'નચ્ચાસન્ને' નાત્પાસન્ને નાતિદૂરે યાત્ પર્યુપાસ્તે=સેવાં કરોતિ । તતઃ સ્વલુપ તેતલિપુત્રોડનગારઃ કનકધ્વનાય રાજે તસ્યા ચ

પુત્ર અણગાર વદદ, નમસદ, વદિત્તા નમસિત્તા એમઘટ્ટ વિગણ મુજ્જો ૨ સ્વામેદ નચ્ચાસન્ને જાવ પજ્જુવામદ) મૈને તેતલિપુત્ર કો અપની દુષ્ટ ચિન્તા કા વિષયભૂત ચનાયા હૈ-સો વદ મુદિત દોરૂ દીક્ષિત હો ગયા હૈ । હમલિયે મેં અથ ઉમકે પામ જાઝં ઓર ઉન તેતલિપુત્ર અનગાર કો વદના કરૂં-નમસ્કાર કરૂં । વદના નમસ્કાર કર મેં અપને દારા કિયે અપમાન રૂપ અપરાધકી વહે વિનય કે સાથ વાર ૨ ઉનસે ક્ષમા માગૂ-હસ પ્રકાર ડ્યોહી ઉસને વિચાર કિયા-કિ ઉસી સમય વદ ઉઠા ઓર સ્નાન કિયા-યાદ મેં અપની ચતુરગીની સેના કે સાથ જહા પ્રમદ્વન થા -ઉસમેં જહા તેતલિપુત્ર અનગાર વિરાજમાન યે વહા પહુંચા-વહાં પહુંચ કર ઉસને તેતલિપુત્ર અનગાર કો વદના કી નમસ્કાર કિયા । વદના નમસ્કાર કરકે ફિર અપને દારા જૂન અપમાન રૂપ અપરાધ કી વહે વિનય કે સાથ વાર ૨ ઉનસે ક્ષમા કરાઈ ઓર સમુચિત સ્થાન પર બેઠ કર ઉનકી સેવા સુશ્રૂષા કી (તણ સે તેતલિપુત્રે અણગારે કણગજ્જ વદદ, નમમદ, વદિત્તા નમસિત્તા એમઘટ્ટ વિગણ મુજ્જો ૨ સ્વામેદ નચ્ચાસન્ને જાવ પજ્જુવામદ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યને એ પોતાની દુષ્ટ ચિંતાનો વિષયભૂત (લક્ષ) બનાવ્યો છે તેથી જ તે મુદિત થઈને દીક્ષિત થઈ ગયો છે એટલા માટે હવે હું તેની પાસે જઈ અને તેતલિપુત્ર અનગારને વદન કરૂં નમસ્કાર કરૂં વદના અને નમસ્કાર કરીને હું મારા વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધ બદલ બહુ જ નમ્રપણે તેમની પાસેથી ક્ષમા માગના કરૂં આ રીતે વિચાર થતાની સાથે તરત જ તે જીગ્યો થયો અને સ્નાન કર્યું ત્યાર પછી પોતાની ચતુરગિણી સેનાને સાથે બધા પ્રમદ્વન હતું અને તેમા પણ બધા તેતલિપુત્ર અનગાર વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે તેતલિપુત્ર અનગારને વદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેના વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધની બહુ જ નમ્રપણે ક્ષમા માગી અને ત્યાર પછી તેણે ઉચિત સ્થાન ઉપર બેચીને તેમની સેવા તેમજ સુશ્રૂષા કરી

(તણ સે તેતલિપુત્રે અણગારે કણગજ્જયસ્સ રણા તીસે ય મદદ મહાલ યાપં ધમ્મ પરિરુદ્ધે)

॥ અથ પચ્ચદશમધ્યયનં પ્રારમ્ભ્યતૈ ॥

ગત ચતુર્દશમધ્યયન સમ્પત્તિ પચ્ચદશમારમ્ભ્યતે, પૂર્વાયયનેડપમાનાદ્ વિષય-
ત્યાગઃ પ્રદર્શિતઃ, અત્ર તુ સ જિનોપદેશાદ્ ભવતીતિ પ્રતિપાદયિષ્યતેડતસ્તસ્ય
સદ્ભાવેડર્થપ્રાપ્તિઃ, અસદ્ભાવેત્વનર્થપ્રાપ્તિર્ભવતીત્યેવ પૂર્વેણ સમ્બન્ધઃ તત્તેદમા-
દિસૂત્રમ્-‘જઙ્ઘ્ણ મતે’ ઇત્યાદિ ।

મૂલમ્-જઙ્ઘ્ણં મતે ! સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ
સપત્તેણં ચોદસમસ્સ નાયઙ્ઘ્ણણસ્સ અયમદ્દેવણ્ણત્તે પન્નરસ-
મસ્સ ણં મતે ણાયઙ્ઘ્ણયણસ્સ સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં
જાવ સંપત્તેણ કે અદ્દે પન્નત્તે ? , એવં સ્વલુજંવૂ । તેણકાલેણં
તેણં સમણં ચપા નામ નયરી હોત્થા, પુત્તભદ્દે ચેદ્દે જિય-
સત્તૂ રાયા । તત્થ ણ ચપાએ નયરીએ ધણ્ણે ણામં સત્થવાહે
હોત્થા અદ્દે જાવ અપરિભૂએ । તીસે ણં ચંપાએ નયરીએ
ઉત્તરપુરત્થિમે દિસીમાએ અહિચ્છત્તા નામ નયરી હોત્થા.

-:નન્દિકલ નામકા પન્દ્રહવા અધ્યાયન પ્રાર-:-

ચૌદહર્વા અધ્યયન સમાપ્ત હો જુકા-અવ પન્દ્રહવા અધ્યયન પ્રારમ્ભ
હોતા હૈ । પૂર્વ અધ્યયન મેં તેતલિ પ્રધાન કે આલ્પાન ઢારા અપમાન સે
મી વિષયોં કા ત્યાગ કર દિયા જાતા હૈ યહ વાત સમઢ્ઢાઈ ગઈ હૈ ।
હસ અધ્યયન મેં યહ વિષય ત્યાગ જિનકે ઉપદેશ સે હોતા હૈ યહ કહા
જાવેગા । હસ લિયે ઉસકે સદ્ભાવ મેં અર્થ પ્રાપ્તિ ઓર અસદ્ભાવ મેં
અનર્થ પ્રાપ્તિ હોતી હૈ હસ તરહ સે પૂર્વ અ યયન કે સાથ હસકા સચન્ધ
ધન જાતા હૈ.-જઙ્ઘ્ણ મતે ! સમણેણ ઇત્યાદિ ॥

નદિક્ષ્ણ નામે પદરમુ અધ્યયન પ્રારભ

ચૌદમુ અધ્યયન પુરૂ થયુ છે હવે પદરમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે
પહેલાના અધ્યયનમા તેતલિપ્રધાનના આખ્યાન વડે એ વાત સમજાવવામા
આતી છે કે અપમાનથી પશુ નિરયોનો યાગ કરવામા આવે છે આ અધ્યયનમા
આ વિષય ત્યાગ જેમના ઉપદેશથી થાય છે તે નિષે કહેવામા આવશે એટલા
માટે તેના સદ્ભાવમા અર્થ પ્રાપ્તિ અને અસદ્ભાવમા અનર્થ પ્રાપ્તિ હોય છે,
આ રીતે પૂર્વ અધ્યયનની સાથે આનો સળધ સમજી શકાય છે

ટીકાર્થ-‘જઙ્ઘ્ણ મતે ! સમણેણ’ ઇત્યાદિ ।

સકલજીવાનોવતચત્રાડપિ જાતઃ । તત' खलु तेतलिपुत्रः केवली बहूनि वर्षाणि केवलपर्याय पालयित्वा यायत् सिद्ध = मोक्ष गत ।

સુધર્માસ્વામી પ્રાહ-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण चतुर्दशस्य ज्ञाताध्ययनस्य 'अयमहे' अयमर्थः=पूर्वोक्तो भाव प्रज्ञप्त = प्ररूपित, 'ति वेमि' इति द्वितीयमि=भगवत्समीपे यथा श्रुत तथा त्वा प्रतिकथयामि । एतेन अध्ययनेन इद-
मायात यत्-प्राणिनो यायद् दु खं मानश्रश च न प्राप्नुवन्ति ताम् बहुश प्रबोधिता अपि धर्मे न स्वीकुर्वन्ति, यथा तेतलिपुत्रः ॥ सू० १३ ॥

इति श्री-विश्वमिख्यात-जगद्गुरु-मसिद्धराचरुपञ्चदशभाषाकलितकलितक-
लापालापक-प्रविशुद्धगत्रयनैकरग्रन्थनिर्मापक-रात्रिमानमर्दक-श्रीशाहूच-
त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज
गुरु-गालव्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-घासीलाल-
प्रतिविरचिताया ' ज्ञाताधर्मकथा' सूत्रस्यानगारधर्मावृतव
पिण्याख्याया व्याख्यायां चतुर्दशमः पयन सार्णम् ॥ १४ ॥

પર્યાય કા પાલન કર યાયત્ સિદ્ધ પદ પ્રાપ્ત કર લિયા । સુધર્માસ્વામી
કહેતે હું-હે જમ્બૂ ! શ્રમણભગવાન મહાવીર ને હસ ચૌદહવે જ્ઞાતાધ્યયન
કા યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે ભાવ અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ । સૌ જૈસા મૈને ઉન
ભગવાન કે સમીપ મેં સુના હે યહ વૈસા હી તુમસે કહા હૈ । હમ અધ્ય
યન સે હમેં યહ જ્ઞાન હો જાના હૈ કિ સમાર મેં તેતલિપુત્ર કી તરહ
એસે બી પ્રાણી હૈં કિ વે જબ તક દુ'ખ ઓર અપમાન કો નહીં પાલતે
હૈં તબ તક અનેક ઘાર પ્રતિયોગિત કરને પર બી-ધર્મ કો સ્વીકાર
નહીં કરતે હૈં ॥ સૂ० ૧૩ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
“ જ્ઞાતાધર્મકથાસૂત્ર ” કી અનગારધર્માવૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા
ચૌદહવા અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૪ ॥

મેળવી લીધુ સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર
આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનો પૂર્વોક્ત રૂપથી ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે જેવો અર્થ
મેં તેઓશ્રી પાસેથી સાંભળ્યો છે તેવોજ તમને કહ્યો છે આ અધ્યયનથી
અમને આ જાતનું જ્ઞાન થાય છે કે સમારમા તેતલિપુત્રની જેમ એવા પણ પ્રાણી
ઓ છે કે તેઓ જ્યાં સુધી દુખી અને અપમાનિત થતા નથી ત્યાં સુધી ઘણા
વખત પ્રતિબોધિત કરતા છતાં ધર્મને સ્વીકારતા નથી ॥ સૂત્ર ' ૧૩ ' ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્માવૃતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાનું ચૌદસું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૪ ॥

રિદ્ધિરિથિમિયસમિહા વન્નઓ । તત્થ ણં અહિચ્છત્તાણ નય-
 રીણ કણગકેહુ નામ રાયા હોત્થા, મહયા વન્નઓ । તસ્સ
 ધણ્ણસ્સ સત્થવાહસ્સ અન્નયા કયાહ પુવ્વરત્તાવરત્તકાલસ-
 મયસિ હમેયારૂઢે અજ્ઞાતિણ ચિંતિણ પતિણ કપિણ મળો-
 ગણ સકપ્પે સમુપ્પજિજ્ઞાતાસેય ચલ્હુ મમ વિપુલ પણિયમંડ-
 માયાણ અહિચ્છત્ત નગરિં વાણિજ્ઞાણ ગમિત્તણ, એવ સંપેહેહ
 સપેહિત્તા ગણિમચ્છ ચડ઼િવિહ મહ ગેણહહ, સગડીસાગડ
 સજ્જેહ સજ્જિત્તા સગડીસાગડ ભરેતિર કોહુવિયપુરિસે
 સદાવેહ સદાવિત્તા એવ વયાસી-ગચ્છહ ણં તુઢ્ઠમે દેવાણુ-
 પ્પિયા । ચંપાણ નગરીણ સિઘાહગ જાવ પહેસુ ઘોસણ
 ઘોસેહ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ટીકા—જમ્બૂસ્વામી પૃચ્છતિ—યદિ ચલ્હુ મદન્ત ! શ્રમણેન ભગવતા મહા
 વીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિમાનધેય સ્થાન સમ્પાપ્તેન ચતુર્દશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય અય
 મર્થ = પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞસ્ય તર્હિ પચ્ચદશસ્ય જ્ઞાતાધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહા

ટીકાર્થ—જમ્બૂસ્વામી પૂછતે હૈં કિ (જહ્ણ મતે । સમણેણ ભગવયા મહા
 વીરેણ જાવ સપત્તે ણ ચોદસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમટ્ટે પણ્ણત્તે પન્નર-
 સમસ્સ ણ મતે ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તે
 ણ કે અટ્ટે પણ્ણત્તે) મદત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો
 મોક્ષપ્રાપ્ત કર ચુકે હૈં ચોદરૂઢે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ
 પ્રતિપાદિત કિયા હૈ—તો હે મદત ! મુક્તિ પ્રાપ્ત હુણ ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન

જાણૂ સ્વામી પૂછે છે કે—

((જહ્ણ મતે ! સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ ચોદસમસ્સ નાય-
 જ્ઞયણસ્સ અયમટ્ટે પણ્ણત્તે પન્નરસમસ્સ ણ મતે ણાયજ્ઞયણસ્સ સમણેણ ભગવયા
 મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અટ્ટે પણ્ણત્તે)

હે ભદ્ર ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરી ચુક્યા
 છે—ચોદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપથી અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે તો હે
 ભદ્ર ત ! મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો
 જો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે

वीरेण यापत्तन्नाप्तेन कोऽयः प्रश्नः 'सुधर्मस्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरासीत् । तत्र पूर्णभद्र चैत्य जितशत्रु राजा चाभवत् । तत्र खलु चम्पाया नगर्या वन्यो नाम सार्थवाह आसीत् । स कीदृश ? इत्याह-आद्यो यापद् अपरिभूतः प्रभूतशक्तिशालीत्यर्थः । तस्या खलु चम्पाया नगर्या उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे अहिच्छत्रा नाम नगर्यासीत् । सा कीदृशी?-त्याह-'रिद्धतिमियममिद्धा' ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, तत्र ऋद्धा=नभः स्पष्टिबहु-प्रासादयुक्ता, स्तिमिता = स्वपरचक्रभयरदिता, समृद्धा=धनधान्यादि परिपूर्णा, 'वण्णओ' वर्णकः=नगर्या वर्णनपाठोऽत्राच्य, स तु औपपातिरुद्धादवसेयः । तत्र खलु अहिच्छत्रार्या नगर्या कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् । 'महया वण्णओ'

महावीर ने पन्द्रहवें ज्ञानाध्ययन का क्या अर्थ निरूपित किया है । (एवं खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण सम्पण चपानाम नयरी होत्था) इस प्रकार जम्बू स्वामी के प्रश्न के समाधान निमित्त श्री सुधर्मा स्वामी उन से कहते हैं कि जम्बू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-उस काल और उस समय में चंपा नाम की नगरी थी (पुन्रभदे चेद्दए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था अद्दे जाव अपरिभूए) पूर्णभद्र नाम का उसमें उद्यान था । जितशत्रु नामका राजा उसमें रहता था । उसी चपा नगरी में धन्य नामका सार्थ-वाह भी रहता था । यह जन धन धान्यादि संपन्न था । एव लोकमान्य भी था । (तीसे ण चपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नामं नयरी होत्था, रिद्धतिमिय समिद्धा वण्णओ-तत्थण अहिच्छत्ताए

(एवं खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था)

आ रीते जम्बू स्वामीना प्रश्नना समाधान भाटे श्री सुधर्मा स्वामी तेमने कहे छे के छे जम्बू ! सालणो, तमाश प्रश्नो जवाअ आ प्रभाणे छे के ते कण्ठे अने ते समये य पा नामे नगरी હતી

(पुन्रभदे चेद्दए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था अद्दे जाव अपरिभूए)

तेमा पूर्ण भद्र नामे ઉદ્યાન હતું તેમા જિતશત્રુ નામે રાજા રહેતો હતો । ધન્ય નામે એક સાર્થવાહ પણ તે ચ પા નગરીમા જ રહેતો હતો । તે જન, ધન, ધાન્ય, વગેરેથી સ પન્ન હતો, તેમજ લોક માન્ય પણ હતો

(तीसेण चपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था, रिद्धतिमिय समिद्धा वण्णओ-तत्थण अहिच्छत्ताए नयरीए कणगक्केड नामं राया होत्था महया वण्णओ)

महा०वर्णक = स च 'महयाहिमवतमहतमलयमदरमहिंदसारे' महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसार, इत्यादिरूपोऽत्र विज्ञेयः । तस्य धन्यस्य सार्धग्राहस्य अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रमालसमये = रात्रे पश्चिमे महेरे अयमेतद्रूप आध्यात्मिक-चिन्तितः प्रार्थितः कल्पितो मनोगतः सकल्पः = विचारः समुदपत्रत-श्रेयः = उचित खलु मम विपुल = मचुर 'पणियभडं' प्रणितमाण्ड = गणिमादिकय विक्रयवस्तुमाण्डम् 'आयाए' आदाय = गृहीत्वा अहिच्छत्रा नगरिं वाणिज्याय गन्तुम्, गणिमादि पण्यवस्तुजात गृहीत्वा व्यापारायाहिच्छत्रा नगर्यां मया गन्तव्यमिति भावः । एव 'सपेहेइ' सप्रेक्षते = विचारयति, सपेक्ष्य गणिम ४-गणिम धरिम मेय परिछेय चेत्येवरूप चत्तर्निध भाण्ड = पण्यवस्तुजात गृह्णाति, गृहीत्वा 'सगडीसागड' सकट्टी

नयरीए कणगकेऊ नाम राया होत्था, महया वन्नओ) उस चपा नगरी के ईशान कोण में अहिच्छत्रा नामकी नगरी थी । यह नभस्तलस्पर्शी प्रासादों से युक्त स्वचक्र और परचक्र के भयसे रहित तथा धन धान्य आदि विभव से विशेष समृद्ध थी । नगरी के वर्णन का पाठ औपपातिक सूत्र में जैसा नगरी का वर्णन किया गया है वैसा ही यहा जनना चाहिये । उस अहिच्छत्रा नगरी में कनककेतु नामका राजा रहना था । इस राजा के वर्णन में "महया हिमवतमहतमलयमदरमहिंदसारे" इत्यादिरूप पाठ यहा लगा लेना चाहिये । (तस्स धन्नस्स सत्थवाहस्स अन्नया क्याइ पुब्बरत्तावरत्तकालममयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए पत्थिए, कप्पिए, मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था-सेय खलु मम विउल पणियभडमायाए अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए, एव सपेहेइ, सपेहिस्ता गणिमच ४ चउच्चिह मडे गेण्हइ, सगडी सागड सज्जेइ स

ते यथा नगरीना ईशान कोणुभा अहिच्छत्रा नामे नगरी इती आकाशने स्पर्शता एवा गीया प्रासादोथी आ नगरी युक्त इती तेभञ्ज स्वचक्रं अने परचक्रं ना भयथी रहित तथा धन धान्य वगेरे वेलवथी आ नगरी सविशेष समृद्ध इती औपपातिक सूत्रमा नगरीना विधे जेवु पणुन करवाभा आण्यु छे तेवु न अही पणु आण्यु लेवु जेधंछे ते अहिच्छत्रा नगरीमा कनककेतु नामे राजा रहने। इतो, आ राजाना पणुन भाटे (महया हिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे) वगेरे पाठ अही समञ्जो जेधंछे

(तस्स धन्नस्स सत्थवाहस्स अन्नया क्याइ, पुब्बरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चित्थिए, पत्थिए कप्पिए, मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था-सेय खलु मम विउल पणियभडमायाए अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए एव सपेहेइ, सपेहिस्ता गणिम च ४ चउच्चिह मडे गेण्हइ सगडीसा-

શાકટ=લઘુમહાચ્છકટસમૂહ સજ્જયતિ,=પણી કરોતિ સજ્જયિત્યા શકટીશાકટ
ભરેતિ, મૃત્વા કૌટુમ્બિકપુરુશાન શબ્દયતિ=આહ્વયતિ, આહ્વય પરમસાદીત-ગચ્છત
લઘુ યુય હે દેવાનુમિયા ! ચમ્પાયા નગર્યાઃ ' સિંઘાહગજાનપહેસુ ' શૃંગાટક-
ત્રિકચતુષ્ક ચત્વરમદાપથપથેષુ ઘોષણામ્=ઘોષયત ॥ સૂ૦ ૧ ॥

જિજ્ઞાસા સગડીમાગડ ભરેઈ ભરિત્તા કોહુવિયપુરિસે સદાવેઈ, સદાવિત્તા
એવ વયાસી-ગચ્છહણ તુભે દેવાણુપિયા ! ચપાણ નયરીણ સિંઘાહગ
જાવ પહેસુ ઘોસણ ઘોસેઈ) ણરુ દિન કી યાત હૈ કિ ઉસ ધન્યસાર્થવાહ
કો રાત્રિ કે પશ્ચિમ પ્રહર મેં યહ ઇસ પ્રકાર કા આધ્માત્મિક ચિન્તિત,
પ્રાર્થિત કલ્પિત મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ કિ મૈં ગણિમાદિ રૂપ વિપુલ,
પણ્ય વસ્તુ કો લેકર વ્યાપાર કે લિયે જો અહિચ્છત્રા નગરી મેં જાઝ
તો ઘટુત અચ્છી યાત હૈ । ઇસ પ્રકાર ઉમને વિચાર ક્રિયા-એમા વિચાર
કરકે ઉસને ગણિમ, ધારિમ, મેય ઓર પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચાર પ્રકાર કા
ખાણહ લિયા । ખાણહ લેકર ફિર ઉમને ગાડી ઓર ગાડીં કો તૈયાર
કરવાયા-જય વે ગાડી ગોડે તૈયાર હો ચુકે તય ઉસને ઉમ પણ્ય (વિક્રેય
વસ્તુ) કો ઉનમેં ભરા-ભર કર ફિર ઉસને અપને કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો
બુલાયા બુલાકર ઉસને એમા કહા-હે દેવાનુમિયોં ! તુમ લોગ જાઓ-
ઓર ચપા નગરી કે શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મદાપથ જન
સબ માર્ગોં મેં ઘોષણા કરો । કયા ઘોષણા કરના-યહ યાત નીચે કે
સૂત્ર સે સૂત્રકાર પ્રદર્શિત કરતે હૈ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

સગડીસાગડ ભરેઈ, ભરિત્તા કોહુવિયપુરિસે સદાવેઈ સદાવિત્તા એવ વયાસી
ગચ્છહણ તુભે દેવાણુપિયા । ચપાણ નયરીણ સિંઘાહગ જાવ પહેસુ ઘોસણ ઘોસેઈ)

એક દિવસે તે ધન્ય સાર્થવાહને રાત્રિના છેલ્લા પહોરમા આ જાતનો
આધ્માત્મિક, ચિન્તિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત, મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે પુષ્કળ
પ્રમાણમા ગણિમ વગેરે વેચાણની વસ્તુઓ લઈને વેપાર ખેડવા માટે જો હું
અહિચ્છત્રા નગરીમા જાઉં તો જાહુ સારુ થાય આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો
આવો વિચાર કરીને તેણે ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચાર પ્રકારની
વસ્તુઓ વાસણોમા ભરી આરે જાતની વસ્તુઓ વાસણોમા ભરીને તેણે ગાડી
તેમજ ગાડાઓને તૈયાર કરાવ્યા જ્યારે ગાડી અને ગાડાઓ તૈયાર થઈ ચુક્યા
ત્યારે તેણે તે વેચાણની વસ્તુઓને ગાડી અને ગાડાઓમા ખૂંટી ત્યાર પછી
તેણે પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે
કહ્યું કે હે દેવાનુમિયો ! તમે જાઓ, અને ચપા નગરીના શૃંગાટક, ત્રિક,
ચતુષ્ક, ચત્વર, મદાપથ આ જાધા માર્ગોમા ઘોષણા કરો ઘોષણા કરતા શું
કહેવું તે નીચેના સૂત્ર વડે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે ॥ સૂત્ર “ ૧ ” ॥

घोषणास्वरूमाह—' एव खलु ' इत्यादि ।

मूलम्—एव खलु देवाणुप्पिया । धण्णे सत्थवाहे विउलं
पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए
त जो णं देवाणुप्पिया । चरण वा चीरिए वा चम्मसडिए
वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्म-
चित्तए वा अविस्सु विस्सुवुड्ढमावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपा-
सडत्थे वा गिट्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त
नगरि गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं
दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडियं
दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपमखेवगस्स पमखेव
दलयइ अंतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं
दलयइ सुहसुहेण य ण अहिगच्छत्त सपावेइ तिकट्टु दोच्चपि
तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह,
तएणं ते कोडुविय पुरिसा जाव एव वयासी-हदिसुणंतु भवतो
चपानगरीवत्थव्वा वहवे चरगा य जाव पच्चपिणाति ॥सू०२॥

टीका—एव खलु हे देवानुप्पियाः । धन्यं सार्थवाह निपुलान पणितभाण्डान
'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छत्ता नगरी 'वाणिज्जाए' वाणिज्याय=

' एव खलु देवाणुप्पिया ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय
मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवाणुप्पियो !

एव खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ
अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

हे देवानुप्पियो ! तमे बोके शृगाटक वगेरे भार्गोमा आ नत्तनी घोषणा

व्यापाराय गन्तु तद्=तस्मात् य. खलु हे देवानुप्रिया ! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरीं 'गच्छती' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽमौ, यस्तेन सार्द्धं गच्छे-
दित्याह—'चरण' इत्यादिना 'चरण वा' चरक=गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्योदनादे
योंऽग्रभागो दानार्थं पृथक्कृत्य स्वाप्यते तस्य भिक्षावृत्त्याग्राहक, 'चीरिए वा'
चीरिकमार्गपतितशदितचीरपरिधारक, 'चम्मखडिए वा' चर्मखण्डिकः=चर्म
धारक, 'भिच्छुडे वा' भिक्षोण्ड=अन्यानीतभिक्षान्नभोजी, 'पडुरगे वा' पाण्डु-
राङ्गः=भस्मलिप्तशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही,
'गोव्वइए वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकारी यथा यथा गौ' स्वानासनादिक्रिया
करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भाव, 'गिहिधम्मचितए वा' गृहिधर्म-
चिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य धर्मो गृहिधर्मस्त चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधर्मएव-
श्रेयान् नान्यः' उक्तञ्च—

तुम लोग शृगाटक आदि मार्गों में खड़े होकर इस प्रकार की घोषणा
करना—कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा में पणित (विक्रय वस्तु) को
लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है (त 'जो
ण देवाणुप्पिया । चरण वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा
पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचितए वा अविरुद्धविरुद्ध बुद्ध
सावगरत्तपडनिग्गयप्पभिडपासडत्थे वा गिहत्ये वा धण्णेण सत्थवा
हेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ तस्म ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्त-
गस्स छत्तग दलाइ) इसलिये हे देवाणुप्रियो ! जो भी कोई धन्य सार्थ-
वाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो—चाहे वह चरक हो
चीरिक हो, चर्मखडिारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरङ्ग हो, गौतम हो,
गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, वृद्ध-

केश के धन्य सार्थवाह पुण्ड्र प्रमाणमा पणित (देवाणुनी वन्तुओ) धर्मे
अहिच्छत्रा नामे नगरीमा वेपार भेडवा भाटे ज्वा धिच्छे ते

(त 'जो ण देवाणुप्पिया । चरण वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे
वा गोव्वइए वा गिहिधम्मचितए वा अविरुद्धविरुद्धबुद्धसावगरत्तपडनिग्गय
प्पभिड पासडत्थे वा गिहत्ये वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ-
तस्स ण ण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ)

ओटवा भाटे हे देवानुप्रियो ! धन्य सार्थवाहनी साथे ते केहि ज्वा
धिच्छेते होय—सत्ते ते चरक होय, चीरिड होय, चर्मखडि धारी होय, भिक्षोड
होय, पाण्डुरग होय, गौतम होय, गोव्रतिक होय, गृहस्थ धर्म चिन्तक होय,

घोषणास्वरूमाह—' एव खलु ' इत्यादि ।

मूलम्—एव खलु देवाणुप्पिया । धण्णे सत्थवाहे विउलं
पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए
त जो णं देवाणुप्पिया । चरण वा चीरिए वा चम्मसडिए
वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्म-
चित्तए वा अविरुद्ध विरुद्धवुड्ढमावगरत्तपडनिग्गयप्पभिइपा-
संडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सुद्धिं अहिच्छत्त
नगरि गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं
दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडिय
दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपमखेवगस्स पमखेव
दलयइ अतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं
दलयइ सुहसुहेण य ण अहिगच्छत्त सपावेइ तिक्कट्टु दोच्चपि
तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह,
तएण ते कोडुविय पुरिसा जाव एव वयासी-हदिसुणत्तु भवतो
चंपानगरीवत्थव्वा वहवे चरगा य जाव पच्चपिणत्ति ॥सू०२॥

टीका—एव खलु हे देवानुप्पियाः । धन्यं सार्थराह विपुलान् पणित्तभाण्डान्
'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छन्ना नगरी 'वाणिज्जाए' वाणिज्याय=

' एव खलु देवाणुप्पिया ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव खलु देवाणुप्पिया । धण्णे सत्थवाहे विउल पणियं
मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवानुप्पियो ।

एव खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एव खलु देवाणुप्पिया । धण्णे सत्थवाहे विउल पणियं मायाए, इच्छइ
अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

हे देवानुप्पियो । तमे लोकं शृगाटकं पण्ये भागेना आ नत्तनी घोषणा

व्यापाराय गन्तु तत्=तस्मात् यः खलु हे देवानुप्रिया ! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरीं 'गच्छतो' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽसौ, यस्तेन सार्द्धं गच्छे-
दित्याह-'चरण' इत्यादिना 'चरण वा' चरक =गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्योदनादे-
'योऽग्रभागो दानार्थं पृथग्वृत्त्य स्यात्' इति तस्य भिक्षावृत्त्याग्राहक, 'चीरिए वा'
चीरिरुमार्गपतितशयितधीरपरिचारक, 'चम्मखडिए वा' चर्मखण्डिकः=चर्म-
धारक, 'भिच्छुडे वा' भिक्षोण्ड =अन्यानीतभिक्षान्नभोजी, 'पडुरगे वा' पाण्डुर-
राजः=भस्मलिप्तशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही,
'गोव्वइए वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकामी यथा यथा गौः स्थानासनादिक्रियां
करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भावः, 'गिहिधम्मचितए वा' गृहिधर्म-
चिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य धर्मो गृहिधर्मस्त चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधर्मएव-
धेयान् नान्यः' उक्तञ्च—

तुम लोग शृंगाटक आदि मार्गों में खड़े होकर इस प्रकार की घोषणा
करना—कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा में पणित (विक्रय वस्तु) को
लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है (त जो
ण देवानुप्रिया ! चरण वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा
पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचितए वा अविरुद्धविरुद्ध बुद्ध
सावगरत्तपडनिग्गधप्पभिडपासउत्थे वा गिहत्ये वा धणणेण सत्थवा-
हेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ तस्म ण धणणे सत्थवाहे अच्छत्त-
गस्स छत्तग दलाइ) इसलिये हे देवानुप्रियो ! जो भी कोई धन्य सार्थ-
वाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो—चाहे वह चरक हो
चीरिक हो, चर्मखडिधारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरज हो, गौतम हो,
गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, वृद्ध-

इति हे धन्य सार्थवाह पुण्ड्र प्रमाणमा पणित (देवानुनी वन्तुओ) लघने
अहिच्छत्रा नामे नगरीमा वेपार ओडवा भाटे ज्वा धिच्छे छे
(त जो ण देवानुप्रिया ! चरण वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे
वा गोव्वइए वा गिहिधम्मचितए वा अविरुद्धविरुद्धबुद्धसावगरत्तपडनिग्गध-
प्पभिड पासउत्थे वा गिहत्ये वा धणणेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ-
वस्स ण णणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स उत्तग दलाइ)

ओडवा भाटे छे देवानुप्रियो ! धन्य सार्थवाहनी साथे जे कोछि ज्वा
धिच्छेते होय—सबे ते चरक होय, चीरिक होय, चर्म खडिधारी होय, भिक्षोड
होय, पाण्डुरज होय, गौतम होय, गोव्रतिक होय, गृहस्थ धर्म चिन्तक होय,

घोषणास्वरूपाह—' एव खलु ' इत्यादि ।

मूलम्—एव खलु देवानुप्पिया । धण्णे सत्थवाहे विउलं
पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए
त जो णं देवानुप्पिया । चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए
वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्म-
चित्तए वा अविरुद्ध विरुद्धबुद्धसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपा-
सडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेणं सत्थवाहेण सडिं अहिच्छत्त
नगरि गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्चत्तगस्स छत्तं
दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडिय
दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपम्मेवगस्स पम्मेव
दलयइ अंतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुगस्स साहेज्जं
दलयइ सुहंसुहेण य णं अहिगच्छत्त सपावेइ तिक्कहु दोच्चपि
तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह,
तएणं ते कोडुबिय पुरिसा जाव एव वयासी-हदिसुणत्तु भवतो
चंपानगरीवत्थव्वा वहवे चरगा य जाव पच्चपिणात्ति ॥सू०२॥

टीका—एव खलु हे देवानुप्पियाः । धन्यं सार्थवाहं निपुलान् पणितभाण्डान्
'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छन्ना नगरी 'वाणिज्जाए' वाणिज्याय=

' एव खलु देवानुप्पिया ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव खलु देवानुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय
मायाए इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवानुप्पियो !

एव खलु देवानुप्पिया इत्यादि ।

(एव खलु देवानुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ
अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

हे देवानुप्पियो ! तमे लोके श्रृगारक वगेरे मार्गेमा आ जतन्ती घोषणा

अथवा ' भग्नलुगस्स ' भग्नरुग्गाय भग्नाय = जुटितहस्तपादाद्यव्यवाय
रुग्गाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा ' साहेज्ज ' साहाय्यम् = औषधो-
पचारादि करणरूप ददाति, तथा - सुख - सुखेन = सुखपूर्वक च तम्
अहिच्छन्ना नगरीं ' सपावेड ' संप्रापयति = प्रप्रापयिष्यतीत्यर्थः । ' तिमट्टु ' इति
कृत्वा एतमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि चार घोषयत, घोषयित्वा मम ' एय
माणत्तिये ' एतामाज्ञप्तिराम् = एतद्रूपा ममाज्ञा ' पच्चवप्पिणह ' प्रत्यर्पयत = मनुक्ता
घोषणा कृत्वा पुनर्मह निवेदयतेत्यर्थः । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरीषाः ' तथाऽस्तु-

सुहसुहेण अहिच्छत्त सपावेड, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह) पद-
घ्राण (जूना) रहित है तो जूना (पदघ्राण) देगा जलपात्ररहित होगा उसे
जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्प
लपायेय पूरकद्रव्यसे रहित है तो उसे शम्पल पायेय-भाता पूरक द्रव्य
देगा, अर्थात् चलतेर गीच मार्गमें ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो
जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलतेर यदि
वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलतेर यदि वह पैर फिसल
कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये
होंगे तो उसकी सार सभाल करेगा-रोगी की दवाई करेगा, और बड़े
आनन्द के साथ उसे अहिच्छन्ना नगरीमें पहुँचा देगा । इस प्रकार की
इस घोषणा को तुम लोग दो तीन बार करना । और (घोसित्ता मम
एयमाणत्तिय पच्चवप्पिणह) करके फिर हमें पीछे इसकी खबर देना
(तएण ते कौटुम्बियपुरिसा जाव एव वयामी हदि सुणतु भवतो चपा

भग्नलुगस्स साहेज्ज दलयइ, सुह सुहेणं अहिच्छत्त सपावेड, त्ति कट्टु दोच्चपि
तच्चपि घोसेह)

लेडा वगरनेा डुशे तेने लेडा आपथे, जभवानी सगवड डुशे नडि तेने
जभवानी सगवड करी आपथे शअन-पाथेय-पूरड द्रव्य वगरनेा डुशे तेने
शअल-पाथेय-पूरड द्रव्य आपथे ओटवे के मार्गभा अधवन्थे लातु अलास
थई गयु डुशे तेने थोअ धन आपथे मार्गभा अधवन्थे आलता आलता
ले ते थोडा डपरवी पडी जशे अथवा पगे आलता आलता ले ते पग लपमवाथी
पडी जशे अने तेथी तेना हाथ पग वगेरे लागी गया डुशे तो तेनी ते
सुश्रूषा करशे-रोगनी हवा करशे अने सुजेरी तेने अहिच्छन्ना नगरीभा पडोआ-
डुशे आ रीते तमे मे त्रय वणत घोषणा करे अने (घोसित्ता मम एयमाण
त्तिय पच्चवप्पिणह) घोषणा करीने अमने अमर आये ।

(तएण ते कौटुम्बियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपानयरी

अथवा ' भगलुगस्म ' भग्नरुगाय भगनाय = त्रुटितहस्तपादाद्यवयवाय
रुगाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा ' साहेज्ज ' साहाय्यम् = औषधो-
पचारादि करणरूप ददाति, तथा - सुख - सुखेन = सुखपूर्वक च तम्
अहिच्छत्रा नगरीं ' सपावेऽ ' समापयति = समापयिष्यतीत्यर्थः । ' तिष्ठ ' इति
कृत्वा एवमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि चार घोषयत, घोषयित्वा मम ' एय
माणत्तिये ' एतामाज्ञप्तिकाम् = एतद्रूपा ममाज्ञा ' पञ्चपिणह ' मत्पर्ययत = मत्तुक्ता
घोषणा कृत्वा पुनर्मह्य निवेदयतेत्यर्थः । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः ' तथाऽस्तु-
सुरसुहेण अहिच्छत्रा सपावेऽ, त्ति रुद्रु दोचपि तच्चपि घोसेह) पद-
घ्राण (जूना) रहित है तो जूना (पदघ्राण) देगा जलपात्ररहित होगा उसे
जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्भ
लपाथेय पूरक द्रव्यसे रहित है तो उसे शम्भल पाथेय-भाता पूरक द्रव्य
देगा, अर्थात् चलते-चलते मार्गमें ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो
जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलते-चलते यदि
वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलते-चलते यदि वह पैर फिसल
कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये
होंगे तो उसकी सार सभाल करेगा-रोगी की दवाई करेगा, और बड़े
आनन्द के साथ उसे अहिच्छत्रा नगरीमें पहुँचा देगा । इस प्रकार की
इस घोषणा को तुम लोग दो तीन बार करना । और (घोसित्ता मम
एयमाणत्तिय पञ्चपिणह) करके फिर हमें पीछे इसकी खबर देना
(तएण ते कौटुम्बिकपुरिसा जाव एव वयामी इदि सुणतु भवतो चपा

भगलुगस्म साहेज्ज दलयइ, सुह सुहेण अहिच्छत्रा सपावेऽ, त्ति रुद्रु दोचपि
तच्चपि घोसेह)

जोडा वगरनो हुशे तेने जोडा आपशे, जभवानी सगवड हुशे नडि नेने
जभवानी सगवड करी आपशे शभन-पाथेय-पूरक द्रव्य वगरनो हुशे तेने
शभन-पाथेय-पूरक द्रव्य आपशे ओटले के भार्गभा अधवच्ये लातु भलास
थई गयु हुशे तेने योग्य धन आपशे भार्गभा अधवच्ये आलता आलता
जे ते घोडा छपरयी पडी जशे अथवा पगे आलता आलता जे ते पग लपमवाथी
पडी जशे अने तेथी तेना हाथ पग वगेरे लागी गया हुशे तो तेनी ते
सुश्रूषा करशे-रोगनी दवा करशे अने सुजेरी तेने अहिच्छत्रा नगरीमा पडोया-
हुशे आ रीते तमे जे त्रय वणत घोषणा करे अने (घोसित्ता मम एयमाण
त्तिय पञ्चपिणह) घोषणा करीने अभने भभर आयो ।

(तएण ते कौटुम्बिकपुरिसा जाव एव वयासी इदि सुणतु भवतो चपानयरी

સ્ત્યુક્ત્વા જમ્પાનગરી શ્રુગાટકાદિમહાપથપથેષુ સમાગમ્ય-ગ્વમગ્રાદિપુઃ-‘હદિ’
 इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः ‘शृण्वन्तु-मन्तः-यत् चम्पानगरी यास्त्वया, बहवः
 ‘चरगाय जाय’ इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरी
 गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिकं सर्वं दास्यति, मार्गे च सवलितेभ्यो
 रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्यं करिष्यति, सुरूपूर्णकमहिच्छत्रा
 नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्यय-घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय ‘पञ्चषिणति’
 प्रत्युपयति-निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

નગરીવત્થવા વહવે ચરગા ય જાવ પન્ચષિણતિ) હમ પ્રકાર ધન્યસા-
 ર્થવાહ કી'યાત કો ડૉટુમ્બિક પુરુષોં ને “તવાસ્તુ” કહકર સ્વીકર
 લિયા ઓર ચપાનગરી મેં શ્રુગાટક આદિ મહાપથ પથનકે સમસ્ત માર્ગોં
 મેં જાકર હસ પ્રકાર કી ઘોષણા કી, હે લોકો ! સુનો-જો કોઈ ચપા
 નગરી કા નિવાસી ચરક આદિ જન ધન્ય સાર્થવાહ કે સાથ અહિચ્છત્રા
 નગરી કો જાના વાહતા હો ઉસકે લિયે ધન્યસાર્થવાહ છત્રાદિ સર્વ
 દેગા તથા જો માર્ગ મેં પતિત હો જાવેગે અથવા રોગાક્રાંત થન જાવેગે
 ઉનકી ઔષધિ આદિ દ્વારા સહાયતા ખી કરેગા ઓર હસ તરહ વહ
 ઉનકે લિયે સકુશલ અહિચ્છત્રા નગરી મેં પહુંચા દેગા-હસ પ્રકાર
 કી' ઘોષણા કરકે ઉન લોગોં ને હસકી ચલર ધન્ય સાર્થવાહ કે પાસ
 ભેજ દી. ગૃહસ્થ કે ઘર નિષ્પન્ન હુવ ઔદનાદિક ચાચ વસ્તુઓં કા જો
 સર્વ પ્રથમ હિસ્તા દાનકે લિયે પૃથક કર રલ્લ લિયા જાતા હૈ, ઉસ

વત્થવા વહવે ચરગા ય જાવ પન્ચષિણતિ)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી
 લીધી અને ચપા નગરીના શ્રુગાટક વગેરે મહાપથોમા બંધને આ રીતે તેઓએ
 ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સામજો, ચપા નગરીમા રહેનાર ચરક, વગેરે ગમે
 તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમા જ તેને ધન્ય
 સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધુ આપશે, તેમજ માર્ગમા કોઈ પડી જશે અથવા
 તો માદો થઈ જશે તો ધન્ય સાથવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની
 સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચાડશે આ રીતે
 ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણતુ કામ પુરૂ થઈ જવાની
 ખબર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાવેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓના જે
 સૌ પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામા આવે છે તે ભાગને જે લીધ
 માગીને લઈ જાય છે તેને ચરિક કહે છે, માર્ગમા પડેલા કાંટેલા પુષ્પો, જે

હિંસે કો જો ભિક્ષા વૃત્તિ સે લે જાતેહેં ઉનકા નામ ચરિક હૈ । માર્ગ
મેં ગિરે દૃષ્ટ ફટેચિટે વઘ્ત્ર કો લેકર જો પહિનતે હૈં ઉનકા નામ
ચીરિક હૈ । ચમદે કો જો અપને પહિરને કે -ઉપયોગ મેં લાતે હૈં વે
ધર્મ લ્હિક હૈ । દુસરે કે દ્વારા લાધી ગઈ ભિક્ષા સે જો અપના નિર્વાહ
કરતે હૈં વે ભિક્ષોણ્ડ હૈં । અપને શરીર પર જો ભસ્મ લપેટે રહતે હૈં વે
પાંડુરગ હૈં । ચૈલ કો લેકર જો દુસરોં કે ઘરોં સે અનાજ માંગતે હૈં વે
ગૌતમ હૈ । દિલીપ રાજા કી તરહ જો ગાયકી સેવા કરને મેં લગે રહતે
હૈં-જપ વઘ્ત્ર વૈઠતી હૈ તય વે વૈઠતે હૈં-વહ લ્હી રોતી હૈ તો વે બી લ્હે
હો જાતે હૈં ઇત્યાદિ રૂપ સે ગોચર્યાનુકારી જો જન હોતે હૈં વે ગોવ્રતિક
હૈં । ગૃહસ્થ ધર્મ હી શ્રેષ્ઠ હૈ, હસ પ્રકાર માન કર જો-ઉસમેં
રહ રહતે હૈં વે ગૃહધર્મ ચિન્તક હૈ । જૈસે-ગૃહસ્થાશ્રમ કે સમાન
ધર્મ ન હુઆ હૈ ઓર ન આગે હોગા હી । જો શૂરવીર મનુષ્ય
હોતે હૈં વે હી ઇસે પાલતે હૈં । પાપક ધર્મ કો પાલને વાલે મનુષ્ય શૂરવીર
નહીં હૈં કિન્નુ વે તો કલીન-નપુસક હૈં । યેસી ઇનકી માન્યતા હોતી હૈ ।
અવિરુદ્ધ શબ્દ કા અર્થ વિરુદ્ધ નહીં રહતે હૈં સબકા સમાનરૂપ સે વિનય
કરતે હૈં । વિરુદ્ધ શબ્દ કા અર્થ અક્રિયાવાદી હૈ । યે અક્રિયા વાદી પર-

પહેરે છે તેનું નામ ચીરિક છે આમલને જે વઘ્ત્ર તરીકે પહેરવામા કામમા
લે છે તે ચર્મ ખડિત છે બીનઓ વડે લાવવામા આવેલી ભિક્ષાથી જે
પોતાનું ઉદર પોષણ કરે છે તે ભિક્ષોણ છે પોતાના શરીર ઉપર જે રાખ ચોળે
છે તે પાંડુરગ છે બળદને સાથે લઇને જેઓ બીનઓના ઘરોથી અનાજ,
માગે છે તેઓ ગૌતમ કહેવાય છે રાજા દિલીપની જેમ જેઓ ગાયની સેવા
કરવામા વ્યસ્ત રહે છે-ન્યારે ગાય બેસે છે ત્યારે તેઓ બેસે છે, ન્યારે ગાય
ભીંથી થાય છે ત્યારે તેઓ પણ બીલા થઈ બાય છે વગેરે રૂપમા જેઓ ગોચર-
યાનુકારી જન હોય છે તેઓ ગોવ્રતિક કહેવાય છે ગૃહસ્થ ધર્મજ ખરેખર ઉત્તમ
ધર્મ છે આમ ચોક્કસ પણ માનીને તેમા દત્ત ચિત્ત રહે છે તેઓ ગૃહધર્મ-
ચિન્તક છે જેમકે—ગૃહસ્થાશ્રમ જેવો ધર્મ યથો નથી અને આગળ લવિષ્યમા
યવાની સલાવના પણ નથી જેઓ શૂરવીર માણસો હોય છે તેઓ જ આ
ધર્મનું પાલન કરે છે પાખડ ધર્મને પાલન કરનારા માણસો શૂરવીરો નથી
પણ તેઓ તો નપુસક છે ગૃહસ્થીઓની આ બાતની માન્યતા હોય છે અવિરુદ્ધ
શબ્દનો અર્થ ક્રિયાવાદી છે કેમ કે જેઓ ડોઈ પણ માણસથી વિરુદ્ધ આચરણ
કરતા નથી તેઓ અધાની સાથે સરખી રીતે વિનયપૂર્ણ વ્યવહાર કરે છે-
વિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ અક્રિયાવાદી છે અક્રિયાવાદી લોકો પરલોક જેવી વસ્તુમા

સ્ત્યુક્ત્વા ત્રમ્પાનગરી શ્રુગટકાદિમહાપથપથેષુ સમાગમ્ય-પ્રમચાદિપુઃ-‘દિ’
 રૂપામન્ત્રણે તેન દે લોકાઃ । શ્રુગન્તુ-મગન્તુ-‘યત્ ચમ્પાનગરી તાસ્તવ્યા, વરઃ
 ‘ચરગાય જાવ’ રૂપિ-ચરકચીરિકાદયો ધન્યેન સાર્થવાહન સાર્દમહિચ્છત્રાં નગરી
 ગચ્છન્તિ તેભ્યો ધન્યઃ સાર્થવાહનચત્રાદિક સમૃદ્ધામ્યતિ, માર્ગે ચ સ્પલિતેભ્યો
 રોગાદિગ્રસ્તેભ્યઃ ઔષધોપચારાદિના મહામ્ય રરિષ્યતિ, સુલપૂર્વકમહિચ્છત્રાં
 નગરી પ્રાપયિષ્યતિ ચ, રૂપેવ ઘોષયિત્વા ધન્યમાર્થવાહાય ‘પન્ચવિણ્ણતિ’
 પ્રત્યર્પયતિ-નિવેદયન્તિ ॥ સૂ. ૨ ॥

નગરીવંત્યઘ્ના વરઃ ચરગા ય જાવ પન્ચવિણ્ણતિ) રૂપ પ્રકાર ધન્યસા-
 ર્થવાહ કી’વાત કો ડાકુમ્પિક પુરુષોં ને “તથાસ્તુ” કહી સ્વીકર
 લિયા ઓર ચપાનગરી મેં શ્રુગટક આદિ મહાપથ પથતકે સમસ્ત માર્ગો
 મેં જાકર રૂપ પ્રકાર કી ઘોષણા કી, દે લોકો । સુનો-જો કોઈ ચપા
 નગરી કા નિવાસો ચરક આદિ જન ધન્ય સાર્થવાહ કે સાથ અહિચ્છત્રા
 નગરી કો જાના ઇચ્છતા હો રૂપકે લિયે ધન્યસાર્થવાહ ચત્રાદિ સમૃદ્ધ
 દેગા તથા જો માર્ગ મેં પતિત હો જાવેંગે અથવા રોગાક્રાંત થન જાવેંગે
 રૂપકી ઔષધિ આદિ દ્વારા સહાયતા મી કરેગા ઓર રૂપ તરફ રૂપ
 રૂપકે લિયે સકુશલ અહિચ્છત્રા નગરી મેં પહુંચા દેગા-રૂપ પ્રકાર
 કી’ ઘોષણા કરકે રૂપ લોગોં ને રૂપકી રૂપ ધન્ય સાર્થવાહ કે પાસ
 મેજ દી । રૂપસ્થ કે ઘર નિષ્પન્ન રૂપ ઔદનાદિક રૂપ વસ્તુઓં કા જો
 સર્વ પ્રથમ રૂપ દાનકે લિયે રૂપક કર રૂપ લિયા જાતા રૂપ, રૂપ

વંત્યઘ્ના વરઃ ચરગા ય જાવ પન્ચવિણ્ણતિ)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આગાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી
 લીધી અને ચપા નગરીના શ્રુગટક વગેરે મહાપથોમા જઈને આ રીતે તેઓએ
 ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સામળો, ચપા નગરીમા રહેનાર ચરક, વગેરે ગમે
 તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમા જ તેને ધન્ય
 સાર્થવાહ ચત્ર વગેરે બધુ આપશે, તેમજ માર્ગમા ડોઈ પડી જશે અથવા
 તેા મારો, થઈ જશે તેા ધન્ય સાર્થવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની
 સહાય કરશે અને તેને સકુશલ અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોંચાડશે આ રીતે,
 ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણા કામ પુરૂ થઈ જવાની
 ખબર આપી ગૃહસ્થને ઘર તૈયાર કરાવેલા ભાત વગેરે આદિ વસ્તુઓના જે
 સી પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામા આવે છે તે ભાગને જે લીધ
 માગીને, થઈ, બચ છે તેને અરિક કહે છે માર્ગમા પડેલા ફાટેલા વસ્તુ, જે

हिंसे को जो भिक्षा वृत्ति से ले जाते हैं उनका नाम चरिक है । मार्ग में गिरे हुए फटेचिटे वस्त्र को लेकर जो पहिनते हैं उनका नाम चरिक है । चमड़े को जो अपने पहिरने के उपयोग में लाते हैं वे चर्म खडिक है । दूसरे के द्वारा लायी गई भिक्षा से जो अपना निर्वाह करते हैं वे भिक्षोण्ड हैं । अपने शरीर पर जो भस्म लपेटे रहते हैं वे पांडुरग हैं । बैल को लेकर जो दूसरों के घरों से अनाज मांगते हैं वे गौतम हैं । दिलीप राजा की तरह जो गायत्री सेवा करने में लगे रहते हैं—जब वह बैठती है तब वे बैठते हैं—वह खड़ी होती है तो वे भी खड़े हो जाते हैं इत्यादि रूप से गोचर्यानुकारी जो जन होते हैं वे गोव्रतिक हैं । गृहस्थ धर्म ही श्रेष्ठ है, इस प्रकार मान कर जो उसमें रह रहते हैं वे गृहिधर्म चिन्तक हैं । जैसे—गृहस्थाश्रम के समान धर्म न हुआ है और न आगे होगा ही । जो शूरवीर मनुष्य होते हैं वे ही इसे पालते हैं । पापकर्म को पालने वाले मनुष्य शूरवीर नहीं हैं किन्तु वे तो क्लीब-नपुंसक हैं । ऐसी इनकी मान्यता होती है । अविरुद्ध शब्द का अर्थ विरुद्ध नहीं रहते हैं सबका समानरूप से विनय करते हैं । विरुद्ध शब्द का अर्थ अक्रियावादी है । ये अक्रियावादी पर-

पडेरे छे तेनु नाम चरिक छे आभङ्गाने जे वस्त्र तरीके पडेरवामा काममा बे छे ते चर्म भङ्गित छे जीमञ्जो वडे लाववामा आवेली लिक्षाथी जे पोतानु उड पोषणु करे छे ते लिक्षाड छे पोताना शरीर उपर जे राभ बाजे छे ते पांडुरग छे अण्डने साथे लधने जेओ जीमञ्जोना धराधी अनाज भागे छे तेओ गौतम कडेवाय छे राजा दिलीपनी जेम जेओ गायत्री सेवा करवामा व्यस्त रहे छे—न्यारे गाय जेसे छे त्यारे तेओ जेसे छे, न्यारे गाय जेसी थाय छे त्यारे तेओ पणु जेला थरु जय छे वगेरे रूपमा जेओ गाय यानुकारी जन डोय छे तेओ गोमतिक कडेवाय छे गृहस्थ धर्म अरेअर-उत्तम धर्म छे आम बाळस पणु भानीने तेमा दत्त चित्त रहे छे तेओ गृहिधर्म चिन्तक छे जेमडे—गृहस्थाश्रम जेवो धर्म यथो नथी अने आगग लविथमा यवानी सलावना पणु नथी जेओ शूरवीर बाणुसो डोय छे तेओ न आ धर्मनु पालन करे छे पापकर्मने पालन करनारा बाणुओ शूरवीर नथी पणु तेओ तो नपुंसक छे गृहस्थीओनी आ नतनी मान्यता डोय छे अविरुद्ध शब्दने अर्थ क्रियावादी छे केम के जेओ जेछ पणु बाणुसथी विरुद्ध आचरण करता नथी तेओ अण्णानी साथे सरणी रीते विनयपूणु व्यवहार करे छे विरुद्ध शब्दने अर्थ अक्रियावादी छे अक्रियावादी दोडोअरवोड जेवी वस्तुमा-

સ્તુવતાં જમ્પાનગરી શ્રુગાટકાદિમહાપથપથેષુ સમાગમ્ય-જમ્પાદિષુ - 'હરિ'
 સ્તુત્યામન્ત્રણે તેન હે લોકાઃ । શ્રુયન્તુ-મનન્તઃ-યત્ ચમ્પાનગરી તાસ્તવ્યા, વહવઃ
 'ચરગામ જાવ' ।' ઇતિ-ચરકચીરિકાદયો ધન્યેન સાર્થવાહેન સાર્દમહિ-છત્રાં નગરી
 ગચ્છન્તિ તેભ્યો ધન્યઃ સાર્થવાહશ્ચત્રાદિક સર્વ, દાસ્યતિ, માર્ગે ચ સ્વલિતેભ્યો
 રોગાદિગ્રસ્તેભ્યથ ઔષધોપચારાદિના માહામ્ય પરિવ્યતિ, સુલપૂર્વકમહિચ્છત્રાં
 નગરીં પ્રાપયિષ્યતિ ચ, इत्येव घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय 'पञ्चष्षिणति'
 પ્રત્યર્પયતિ-નિવેદયન્તિ ॥ સૂ. ૨ ॥

નગરીવત્યવ્યા વહવે ચરગા ય જાવ પન્ચષ્ષિણતિ) હમ પ્રકાર ધન્યસા-
 ર્થવાહ કી'વાત કો ઉન કૌટુમ્બિક પુરુષોં ને "તથાસ્તુ" કહકર સ્વીકર
 લિયા ઓર ચપાનગરી મેં શ્રુંગાટક આદિ મહાપથ પર્યંતકે સમસ્ત માર્ગોં
 મેં' જાકર હસ પ્રકાર કી ઘોષણા કી, હે લોકો ! સુનો-જો કોઈ ચપા
 નગરી કા નિવાસી ચરક આદિ જન ધન્ય સાર્થવાહ કે સાથ અહિચ્છત્રા
 નગરી કો જાના વાહતા હો ઉસકે લિયે ધન્યસાર્થવાહ છત્રાદિ સર્વ
 દેગા તથા જો માર્ગ મેં પતિત હો જાવેંગે અથવા રોગાક્રાન્ત યન જાવેંગે
 ઉનકી ઔષધિ આદિ દ્વારા સહાયતા મી કરેગા ઓર હસ તરહ વહ
 ઉનકે લિયે સકુશલ અહિચ્છત્રા નગરી મેં પહુંચા દેગા-હસ પ્રકાર
 કી' ઘોષણા કરકે ઉન લોગોં ને હસકી ધન્ય સાર્થવાહ કે પાસ
 મેજ દી. ગૃહસ્થ કે ઘર નિષ્પન્ન હુપ ઔદનાદિક સ્વાલ્ય વસ્તુઓં કા જો
 સર્વ પ્રથમ હિસ્સા દાનકે લિયે પૃથક કર રલ્લ લિયા જાતા હૈ, ઉસ

વત્યવ્યા વહવે ચરગા ય જાવ પન્ચષ્ષિણતિ)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ સ્વીકારી
 લીધી અને ચપા નગરીના શ્રુગાટક વગેરે મહાપથોમા જઈને આ રીતે તેઓએ
 ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સામ્રાજો, ચપા નગરીમા રહેનાર ચરક, વગેરે ગમે,
 તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમા જ તેને ધન્ય
 સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધુ આપશે, તેમજ માર્ગમા કોઈ પડી જશે અથવા
 તો માટે થઈ જશે તો ધન્ય સાર્થવાહની તેની જરોબર માવજત કરાવીને તેની
 સહાય, કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોંચાડશે આ રીતે,
 ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણુનુ કામ પુરૂ થઈ જવાની
 ખબર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓના જે
 સૌ પહેલા દાન માટે જૂદા કરીને' રાખવામા આવે છે તે ભાગને જે લીખ
 માગીને લઈ, બધ છે તેને ચઢીકે કહે છે, માર્ગમા પડેલા ફાટેલા, વઘો, જે

जणवय मज्झ मज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता सगडीसागड मोयावेइ मोयावित्ता सत्थणिवेस करेइ
करित्ता कोडुवियपुग्गिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-तुब्भे णं
देवाणुप्पिया। मम सत्थनिवेससि महया महया सदेणं उग्घोसेमाणा
२ एव वयह-एवं खलु देवाणुप्पिया । इमीसे आगमियाए
छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे
णंदिफला नाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया
फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा
चिट्ठाति मणुण्णावन्नेणं४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए,
त जो णं देवाणुप्पिया । तेसि नदिफलाण मूलाणि वा । कद०
तय० पत्त० पुप्फ० फल० वीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ
छायाए वा वीसमइ तस्स णं आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा
परिणममाणा२ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेति, तं माणं
देवाणुप्पिया । वेइ तेसि नदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए
वा वीसमउ, मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
विज्जिस्सइ, तुब्भेणं देवाणुप्पिया । अन्नेसि रुक्खाण मूलाणि-
य जाव हरियाणि य आहारेह छायासु वीसमहत्ति घोसणं
घोसेह जाव पच्चप्पिणत्ति, तएण से धण्णे सत्थवाहे सगडी-
सागड जोएइ२ जेणेव नदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता तेसि नदिफलाण अदूरसामने सत्थणिवेस करेइ
करित्ता दोच्चपि तच्चपि कोडुवियपुग्गिसे मदावेइ मदावित्ता

મૂલ્મ-તણં તેસિં કોઢુધિય પુરિમાણ અતિણ યયમઢ્ઠ
 સોચ્ચા ણિસમ્મ ચંપાનયરી વત્થઢ્ઠવા વહવે ચરગા ય જાવ ગિહત્થા
 ય જેણેવ ધણે સત્થવાહે તેણેવ ઉવાગચ્છતિ તણં સે ધણે
 સત્થવાહે તેસિં ચરમાણ ય જાવ ગિહત્થાણ ય અચ્છત્તગસ્સ
 છત્ત દલયઇ જાવ પત્થય ણ દલાઇ દલઇત્તા એવ વયાસી-
 ગચ્છહ ણં તુચ્છે દેવાણુપ્પિયા । ચપાણ નયરીણ વહિયા અણ્ણ-
 જ્ઞાણંસિ મમ પહિવાલેમાણા ચિટ્ઠહ, તણં તે ચરગા ય જાવ
 ગિહત્થા ય ધણેણં સત્થવાહેણં એવ વુત્તા સમાણા જાવ ચિટ્ઠતિ,
 તણં ધણે સત્થવાહે સોહણસિ તિહિકરણનમ્મલ્લત્તસિ વિઝલ
 અસણં ૪ ઉવક્ખડાવેઇ ઉવમ્મલ્લડાવિત્તા મિત્તનાઇં આમતેઇ
 આમંતિત્તા ભોયણં ભોયાવેઇ ભોયાવિત્તા આપુચ્છઇ આપુચ્છિત્તા
 સગઢીસાગઢ જોયાવેઇ જોયાવિત્તા ચપાનગરીઓ નિગ્ગચ્છઇ
 નિગ્ગચ્છિત્તા ચરગા ય જાવ ગિહત્થા ય સદ્ધિ ઘેત્તૂણ ણાઇવિ
 પ્પઇટ્ટેહિં અદ્ધાણેહિ વસમાણેર સુહેહિ વસહિ પાયરાસેહિ અંગં

લોક નહીં માનતે હૈં । વૃદ્ધશ્રાવક-બ્રાહ્મણ-અર્થ કા વાચક હૈં । ક્યોં કિં
 યે પહિલે ભરત ચક્રવર્તીં કે સમય મેં શ્રાવક થે-પશ્ચાત્ બ્રાહ્મણ બન
 ગયે इसलिये “ वृद्धकालिको यः श्रावकः ” इस व्युत्पत्ति के अनुसार
 वृद्धश्रावक शब्द ब्राह्मण अर्थ का वाची बन जाता है । वाकी अवशिष्ट
 शब्दों का अर्थ स्पष्ट है ॥ सू० २ ॥

વિશ્વાસ કરતા જ નથી વૃદ્ધ શ્રાવક-બ્રાહ્મણ અર્થને સ્પષ્ટ કરે છે કેમ કે એઓ
 પહેલાં ભરત ચક્રવર્તીના વખતે શ્રાવક હતા ત્યાર પછી એઓ બ્રાહ્મણ થઈ
 ગયા એટલા માટે ‘ વૃદ્ધ કાલિકો ય શ્રાવક સ્વ વૃદ્ધ શ્રાવક ’ આ વ્યુત્પત્તિ
 મુજબ વૃદ્ધ શ્રાવક શબ્દ બ્રાહ્મણ અર્થનો વાચક થઈ બન્ય છે બીજા શેષ
 શબ્દોના અર્થ તો સ્પષ્ટ જ છે ॥ સૂત્ર “ ૨ ” ॥

निगंथी वा जाव पव्वइए पचसु कामगुणेषु सज्जेइ सज्जित्तो
जाव अणुपरियद्विस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘तएण तेसिं’ इत्यादि । तत खलु तेषा कौटुम्भिकपुरुषाणा-
मन्तिके एतमर्थ=पूर्वोक्तमद्विच्छाननगरीगमनार्थघोषणारूपं भागं श्रुत्वा=कर्म-
विषयोक्त्य, निश्चय=हृदयवार्थं चम्पानगरी गन्तव्या अद्विच्छाननगरीगन्तुकामा
वदश्वरकाश्च यावद् दृष्ट्याश्च यत्रैव धन्य सार्थवाह-स्त्रैर्योषागच्छन्ति । ततः
खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषा चरकाणां च यावद् गृहस्थानां च मन्त्रे अच्छत्रकाय-
छत्रं ददाति यावत् पव्वदन=गम्यत् ददाति, एवमभादीत्=कथयति गच्छत खलु
युष हे देवानुप्रिया । चम्पाया नगर्यां गहि ‘अगुज्जाणमि’ अश्वयोद्याने भा-
‘पडिवालेमाणा’ प्रतिपाद्यन्त=प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततः खलु ते चरकाश्च=

—तएण तेसिं इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेसिं कौटुम्भियपुरिसाण अति ए एयमद्व
सोच्चा णिसम्म चपानगरी वत्थव्वा वहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव
धण्णे सत्यवाहे तेणेव उवागच्छति) उन कौटुम्भिक पुरुषों के मुखों से
इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारणकर चंपा
नगरी निवासी अनेक चरक से लेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहां धन्य
सार्थवाहक था वहां आये (तएण से धण्णे सत्यवाहे तेसिं चरगाणं य
जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्त दलइ जाव पत्थयण दलाइ दलइत्ता
एव वयामी-गच्छह ण तुब्भे देवानुप्पिया । चम्पा नगरी ए पाहिया अ-
गुज्जाणमि मम पडिवाले माणा चिद्धेह) इसके बाद धन्य सार्थवाह

‘तएण तेसिं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्था २५छी

(तेसिं कौटुम्भिय पुरिसाण अति ए एयमद्व सोच्चा णिसम्म चपानगरी वत्थव्वा
वहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्यवाहे तेणेव उवागच्छति)—

ते कौटुम्भिक पुरुषानां मुखी आ घोषणा ३५ अथने-साक्षीने अने
तेने हृदयमा धारय करीने य पा नगरीना धणा अरकथी भाडीने गृहस्थ सुधीना
अथा भाषुसे न्या धन्य सार्थवाह होता त्या आन्या

(तएण से धण्णे सत्यवाहे तेसिं चरगाणं य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स
छत्त दलयइ जाव पत्थयण दलाइ दलइत्ता एव वयामी-गच्छह ण तुब्भे देवानु-

१ एव वयासी-तुम्हेणं देवाणुप्पिया । मम सत्थानिवसंति महया
 २ महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एव वयह-एणं देवाणुप्पिया ।
 ३ ते णंदिफला रुक्खा किण्हा जाव मणुन्ना छायाए त जो णं
 ४ देवाणुप्पिया । एसिं णंदिफलाण रुक्खाण मूलाणि वा कंदं
 ५ पुप्फं तयं पत्तं फलं जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
 ६ व्वेइ, त माणं तुम्हे जाव दूरे दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा
 ७ ण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाण
 ८ मूलाणि य जाव वीसमहत्तिरुद्धु घोसणं जाव पच्चप्पिणति, तत्थ
 ९ णं अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सदहति
 १० पत्तियंति रोयति एयमट्ठ सदहमाणा ३ तेसिं नंदिफलाणं ० दूरं
 ११ दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसि रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति
 १२ तेसिं णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २
 १३ सुहरूवत्ताए भुज्जो २ परिणमति, एवामेव समणाउसो । जो
 १४ अम्ह निगंथो निगंथी वा जाव पच्चसु कामगुणेषु नो सज्जेइ नो
 १५ रज्जेइ से णं इह भवे चेव वहुणं समणाणं अच्चणिज्जे ५ परलोए
 १६ नो आगच्छइ जाव वीइवइस्सइ, जहा य ते पुरिसा तत्थ णं
 १७ अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ नो सदहति ३
 १८ धणस्स एयमट्ठ असदहमाणा ३ जेणेव ते नदिफला तेणेव
 १९ उवागच्छति उवागच्छित्ता तेसिं नदिफलाण मूलाणि य जाव
 २० वीसमति तेसिं ण आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणा
 २१ जाव ववरोव्वेति, एवामेव समणाउसो । जो अम्ह

सिगंथी वा जाव पव्वइए पचसु कामगुणेषु सज्जेइ सज्जितो
जाव अणुपरियट्ठिस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—‘तएण तेसिं’ इत्यादि । तत खलु तेषा कौटुम्भिकपुरुषाणा-
मन्तिके एतमर्थं=पूर्वोक्तमहिच्छाननगरीगमनार्थोपणारूप भागं श्रुत्या=कर्ण-
विषयोक्त्य, निश्चये=हृदयवार्थं चम्पानगरी गन्तव्या अहिच्छाननगरीगन्तुकामा
बहवश्चरकाश्च यावद् गृहस्थाश्च यत्र धन्य सार्थवाह-स्त्रैवोपागच्छन्ति । ततः
खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषा चरकाणां च यावद् गृहस्थानां च मये अन्तर्काय-
एव ददाति यावत् पचदन=शम्यल ददाति, एवमवादीह=कथयति गच्छत खलु
युय हे देवानुप्पिया ! चम्पाया नगर्यां उहि ‘अगुज्जाणसि’ अद्योधाने मां
‘पडिवालेमाणा’ प्रतिपाद्यन्त=प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन् । ततः खलु ते चरकाश्च=

—‘तएण तेसिं’ इत्यादिः—

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तेसिं कौटुम्भिकपुरिसाण अति ए एयमद्व
सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थवा वहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव
धण्णे सत्यवाहे तेणेव उवागच्छति) उन कौटुम्भिक पुरुषों के मुखों से
इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसी हृदय में धारण करके वे
नगरी निवासी अनेक चरक से छेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहां धन्य
सार्थवाहक था वहां आये (तएण से धण्णे सत्यवाहे तेसिं चरगाणं ये
जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्त दलइ जाव पत्थयण दलाउ दलइत्ता
एव वयासी-गच्छइ ण तुम्मे देवाणुप्पिया । चपाए नगरीए वाहिया अ-
गुज्जाणसि मम पडिवाले माणा चिद्धेह) इसके बाद धन्य सार्थवाह

‘तएण तेसिं’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थार पछी

(तेसिं कौटुम्भिक पुरिसाण अति ए एयमद्व सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थवा
वहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्यवाहे तेणेव उवागच्छति)—

ते कौटुम्भिक पुरुषोन्ना मुण्थी आ घोषणा ३५ अर्थने-साशरीने अने
तेने हृदयमा धारण करीने य पा नगरीना धणा चरकथी भाडीने गृहस्थ सुधीना
अथा भाषुसो ल्या धन्य सार्थवाह छत्ता त्या आव्या

(तएण से धण्णे सत्यवाहे तेसिं चरगाणं ये जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स
छत्त दलयइ, जाव पत्थयण दलाइ, दलइत्ता एव वयासी-गच्छइ ण तुम्मे देवाणु-
प्पिया) चपाए नगरीए वाहिया अगुज्जाणसि मम पडिवालेमाणा चिद्धेह)

ચરકાદયો યાવદ્ ગૃહસ્થા ધન્યેન સાર્થવાહેન-પ્રમુક્તા સ-૧: 'જાવ' યાવદ્-
ધન્ય સાર્થવાહ પ્રતીક્ષમાણાસ્તિષ્ઠતિ । તત્ સલુ ધન્યઃ સાર્થવાહ' શોભને તિથિ
કરણનક્ષત્રે=શુભદિનસે ત્રિપુલ્લમાશનાદિક ચતુર્વિધાદારમ્ ઉપસ્કારયતિ=નિષ્પાદયતિ
અપસ્કાર્ય મિત્રજ્ઞાતિસ્વજનસમ્યન્ધિપરિજનાન્ આમન્ત્રયતિ, ભોજન ભોજયતિ=કાર

ને ઉન ચરક આદિ સે લેખર ગૃહસ્થ પર્યન્ત કે મનુષ્યોં મેં જિસકે પાસ
છત્તા આદિ નહીં યા ઉસે છત્તા દિયા યાગત્ જિસ કે પાસ કહેવા નહીં
ધા ઉસકો કહેવા-માર્ગ ભોજન-દિયા । યાદ મેં ઉસને ઉન સયસે કહા
હે દેવાનુપ્રિયોં ! તુમ યત્નાં સે ચલો ઓર મુખ્ય ઉચ્ચાન મેં મેરી પ્રતીક્ષા
કરતે હુએ ઠહેરે રહો-(તણ તે ચરગાય જાવ ગિહત્યા ય ધણેણ સત્ય
વાહેણ એવ બુત્તા સમાણા જાવ ચિદ્ધતિ, તણ ધણે સત્યવાહે સોહણસિ
ત્તિદ્ધિકરણનક્ષત્તસિ વિઝલ અસણ ૪ ઉવક્ષડાવેડ, ઉવક્ષડાવિત્તા
મિત્તનાઈ૦ આમતેડ, આમતિત્તા ભોયણ ભોયાવેડ, ભોયાવિત્તા આપુ
ચ્છડ, આપુચ્છિત્તા સગડીસગડ જોયાવેડ, જોયાવિત્તા ચંપાનગરીઓ
નિગ્ગચ્છડ) હંસ પ્રકાર ધન્યસાર્થવાહ કે દ્વારા કહે ગયે વે ચરકાદિ
ગૃહસ્થ પર્યન્ત સમસ્તજન વહા સે ચલકર મુખ્ય ઉચ્ચાન મેં ગયે-ઓર
ધન્યસાર્થવાહ કી પ્રતીક્ષા કરતે હુએ વહાં ઠહેર ગયે । ધન્યસાર્થવાહ ને
શુભ તિથિ, કરણ, એવ નક્ષત્ર મેં ત્રિપુલ માત્રા મેં અશન આદિ રૂપ
ચારોં પ્રકાર કા આહાર નિષ્પન્ન કરવાયા । જય આહાર નિષ્પન્ન હો

ત્યાર પછી ધન્ય સાર્થવાહે તેઓ ચરક વગેરેથી માડીને ગૃહસ્થ મુખીના
બધા માણસોમાથી જેની પાસે છત્રી વગેરે ન હતી તેને છત્રી વગેરે અને
જેની-પાસે માર્ગ માટેનું લોજન ન હતું તેને લોજન આપ્યું ત્યાર બાદ
તેણે બધા ને મધ્ય કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અહીંથી મુખ્ય ઉચ્ચાનમા જાઓ
અને ત્યાં મારી પ્રતીક્ષા કરો

(તણ તે ચરગાય જાવ ગિહત્યાય ધણેણ સત્યવાહે ણ એવ બુત્તા સમાણા
જાવ ચિદ્ધતિ, તણ ધણે સત્યવાહે સોહણસિ ત્તિદ્ધિકરણનક્ષત્તસિ વિઝલ
અસણ ૪ ઉવક્ષડાવેડ, ઉવક્ષડાવિત્તા મિત્તનાઈ આમતેડ, આમતિત્તા ભોયણ
ભોયાવેડ, ભોયાવિત્તા આપુચ્છડ, આપુચ્છિત્તા સગડીસગડ જોયાવેડ, જોયાવિત્તા
ચંપાનગરીઓ નિગ્ગચ્છડ)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા ચરક ગૃહસ્થ વગેરે
બધા માણસો ત્યાંથી મુખ્ય ઉચ્ચાનમા ગયા અને ધન્ય સાર્થવાહની રાહ જોતા
તેઓ ત્યાં જ રોકાયા ધન્ય સાર્થવાહે શુભ તિથિ, કરણ, અને
પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતના આહારો

पति, भोजयित्वा आपुच्छइ' आपृच्छति=प्रदेशगमनार्थमाज्ञा प्रार्थयति, आपु-
च्छ=आज्ञा प्राप्य शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा चम्पा नगरीतो निर्ग-
च्छति=निस्सरति, निर्गत्य चरकान् यावत् गृहस्थांश्च सार्द्धं गृहीत्वा 'नाद्विष्पगिद्वेहि'
नातिविप्रकृष्टेषु=नातिदूरेषु यथोचितेषु 'अद्वाणेहि' अध्वसु=मार्गेषु 'वसमाणे २'
वसन्-वसन् स्थाने स्थाने निवासं कुर्वन् 'सुहेहि' शुभैः=प्रशस्तैः 'वसहिपायरा-
सेहि' वसतिप्रातराशैः=निवासस्थाने प्रातःकालीनलघुभोजनैः सह अङ्गजन-
पदस्य=अङ्गदेशस्य मध्य-मध्येन यत्रैव 'देसग' देशाग्न्य=अङ्गदेशसीमा वर्तते
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटीशाकटं मोचयति, मोचयित्वा 'सत्थनिवेस'
सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा=
आहूय एवमादीत्-" हे देवानुषियाः ! यूयं खलु मम सार्थनिवेशे महता-महता
शब्देन=उच्चस्वरेण उदयोपयन्तः=सन्तः एव=उद्दिश्यमाणप्रकारेण वदत=कथयत-

शुका-तत्र उसने अपने मित्र, ज्ञानि आदि परिजनोको आमन्त्रित किया।
आमन्त्रित करके फिर उन सभको उसने उस चतुर्विध आहारको भोजन
कराया भोजन कराके फिर उन सभसे परदेश गमन करने की उसने
आज्ञा मांगी। आज्ञाप्राप्त करके उसने गाड़ी और गाड़ों को जुनवाया
जुनवा कर फिर वह चपा नगरी से बाहिर निकला। चरकादि गृहस्थ
पर्यन्त समस्त जन को अपने साथ में ले लिया-(निगगच्छित्ता चरगाय
जाव गिहत्थाय सद्धिं चेतूण णाद्विष्पगिद्वेहि अद्वाणेणि वसमाणे २
सुहेहि वसहिपायरासेहि अग जणवय मज्झ मज्जेण जेणेव देसगं
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोयावेइ मोयावित्ता
सत्थनिवेस करेइ करित्ता कौटुम्बियपुरिसे सद्वावेइ सद्वावित्ता एवं
वयासी — तुम्हेण देवानुषिया ! मम सत्थनिवेससि महया २

आहारे तैयार थर्ध गया त्थारे तेले पैताना मित्र, ज्ञानि वगेरे परिजनोने
आमन्त्रित कया आमन्त्रित करीने तेले अधाने थारे जानना आहारे जमाड्या
थार पडी तेले सौनी पासेथी परदेश जवानी आज्ञा मागी आम तेले
अधानी पासेथी आज्ञा भेजवीने गाडी तेमज गाडाओ जेताराओ अने थार
पडी ते थपा नगरी थी अहार नीज्यो तेले उग्रानभा राह जेतारा अधा
अरु गृहस्थ वगेरे आणुसोने पणु साथे वर वीधा हुता

(निगगच्छित्ता चरगाय जाव गिहत्थाय सद्धिं चेतूण णाद्विष्पगिद्वेहि
अद्वाणेहि वसमाणे २ सुहेहि वसहिपायरासेहि अग जणवय मज्झ मज्जेण
जेणेव देसगं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोयावेइ,
मोयावित्ता सत्थनिवेस करेइ करित्ता कौटुम्बियपुरिसे सद्वावेइ, सद्वावित्ता

एव खलु हे देवानुप्रिया । ' इमीसे ' अस्याः ' अगामियाण ' = ग्रामरहितायाः
 ' छिन्नावायाए ' छिन्नपातायाः ' छिन्न ' आपातो = जनमशागे यत्र सा, तस्या
 जनसञ्चाररहितायाः ' दीहमद्वाए ' दीर्घाश्रया - दीर्घः = बहुकाष्ठमयः अर्धः =
 मार्गो यत्र सा, तस्याः - चिरकालशुद्धनीयायाः, एतादृश्या अटव्या ' बहुमध्यदेश-
 भागे = अतिमध्यभागे, ' एत्थ ण ' अत्र खलु बहवो नदिफलानामट्टाः प्रसन्नाः =
 लोकैः कथिताः । सीटशास्ते ? इत्याह - ' सिट्ठा ' इत्यादि = कृष्णाः = कृष्णवर्णाः,
 कृष्णावभासाः = अतिनीलत्वेन कृष्ण-उटायम्पद्माः यावत्-नीलादिवर्णयुक्ताः,

सहेण उग्घोसेमाणा २ एव वयह-एव खलु देवानुप्रिया । इमीसे अगा
 मिद्याए छिन्नावायाए दीहमद्वाए अटवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णदिफ
 लानाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिगा, पुष्पिगा, फलिया हरियगरेरि
 ज्जमाणा सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठति) निकल कर नाति विप्र
 कृष्ट-पथोचित-मार्गोंमें ठहरता २ और वहां २ प्रातः कालीन कलेवा करता
 हुआ वह जहा अगदेश की सीमा थी वहा पर आया । वहां आकर के
 उसने अपने शकटी शकटों को ढील दिया और ढील करके फिर अपने
 सार्थ को ठहरा दिया । ठहरा देने के बाद फिर उसने अपने कौटुम्बिक
 पुरुषों को बुलाया-और उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम
 लोग हमारे सार्थनिवेश में बड़े जोर २ से घोषणा करते हुए ऐसा कहो
 कि-हे देवानुप्रियो ! सुनो जन सचार रहित दीर्घ मार्ग वाली इस आगे
 की अटवी के मध्यभाग में लोग कहते हैं कि अनेक नदीफल नाम के

एव वयासी. — तुक्केण देवानुप्रिया । मम सत्थ निवेससि महया, २
 सहेण उग्घोसेमाणा २ एव वयह-एव खलु देवानुप्रिया । इमीसे अगामियाए
 छिन्नावायाए दीहमद्वाए, अटवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णदिफलानाम रुक्खा
 पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिगा, पुष्पिगा फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा ' सिरीए
 अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठति) ,

१२ ' त्याथी स्वाना थधने ते भार्गवा यथास्थाने नञ्क नञ्कना स्थणो उपर
 विश्राम करतो अने त्या सधार यता वलपान (नास्तो) वगेरे करतो ते
 अगदेशनी छेड उपर पडोअ्यो राना पडोअ्यीने तेणे गाडी अने गाडाओने
 छोडी भूक्या अने त्या पोताना सार्थने शक्यो शक्या पछी तेणे पोताना
 छोडी भूक पुडोने गोलाव्या अने गोलावीने तेजोने आ प्रभावे छेड छेड
 देवानुप्रियो ! आभारा सार्थ सनिवेशमा तमे लोक ओटेथी आ प्रभावेनी
 घोषणा करता छेड छेड देवानुप्रियो ! सावणो ! छेडे आगण आवतार
 भाणा भार्गवाणा निज्जन वनेमा लोक ओम छेड छेडे तेमा धव्या नदिईण

તથા-‘પત્તિયા’ પત્તિતા=પત્તિહુલા, ‘પુષ્પિયા’ પુષ્પિતા=પુષ્પહુલા,
‘ફલિયા’ ફલિતા=ફલહુલા ‘હરિયગરેરિજ્જમાગા’ હરિતકારારજ્યમાના=
હરિતકેન=હરિતવર્ણેન મૃદા શોભમાના ‘સિસીય’ શ્રિયા=હરિતપલ્લવાદિશોભયા
અતીગતીવ ઉપશોભમાનાસ્તિષ્ઠન્તિ=વર્તન્તે । પુન કીદશાસ્તે ‘સ્ત્યાહ-મનોજ્ઞા-
વર્ણેન, ‘જાવ’ યાવત્-ગ-પ્રેન, રસેન સ્પર્શેન, મનોજ્ઞાઽઞાયયા, રમ્યવર્ણાદિના
રમ્ય ઞાયયા ચ યુક્તા સ્ત્યર્થ, ‘ત’ તત્=તસ્માત્ નન્દિદૃશ્યાના સૌન્દર્યાદિકારણ-
વશાત્ ‘જોળ’ યઃ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયા ! તેષા નન્દિફલાના=નન્દિફલાભિધાના
વૃક્ષાણા મૂલાનિ વા કન્દાનિ વા દ્યવો વા, પત્ત્યાનિ વા, પુષ્પાનિ વા, ફલોનિ વા,
વીજાનિ વા, હરિતાનિ વા ‘આહારેઢ’ આહારયતિ, તેષા ઞાયયા વા ‘વીસ-
મઢ’ વિશામ્પતિ તસ્ય સ્વલુ આયાય’ આપાતે=પૂર્વ ભવળાદિ સમયે ‘મહા’

વૃક્ષાં હૈં । યે વૃક્ષા કૃષ્ણ વર્ણવાલે હૈં ઓર દેવને પર મી અતિ હરિત હોને
કે કારણ કૃષ્ણ હી પ્રતીત હોતે હૈં । પત્ર, પુષ્પ એવ ફલોં સે વે યુક્ત હૈં ।
વે હરિત વર્ણસે ઘડે સુહાવને લગતે હ । ઉનકે પલ્લવ આદિ નવ હરે ર
હ । હમસે ઉન કી શોભા ઘડી નીરાલી પની હૃદૈં હૈં । (મણુળા વર્ણેન
જાવ મણુળા ફાસેન મણુળા ડાયાય, ત જોળ દેવાનુપ્રિયા ! તેસિ
નન્દિફલાણ સ્વલ્પાણ મૂલાણિવા કદ૦ તય૦ પત્ત૦ પુષ્પ૦ ફલ૦ વીયાણિ
વા હરિયાણિ વા આહારેઢ, ઞાયાય વા વીસમઢ, તસ્મ ણ ઓવાય મહા
મવઢ, તઓ પત્ત્યા પરિણમમાણા ૨ આકાલે ચેવ જોવિયાઓ વવરી
વેતિ) વર્ણ, રસ, ગંધ એવ સ્પર્શ સે વે ઘડે મનોજ્ઞા હૈં । ઞાયયા મી ઉનકી
પટી મનોજ્ઞા હૈં । હમ લિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! જો કોઈ હન કી સુંદરતા
આદિ કારણ કે વશસે આકૃષ્ટ હોકર હન નન્દિફલ વૃક્ષોં કે મૂલોં કો
કદોં કો ઞાલોં કો, પત્રોં કો, ફલોં કો વીજોં કો અથવા હરિત અકુરોં

નામે વૃક્ષો ડે તે વૃક્ષો કૃષ્ણ વર્ણવાળાં છે અને ખૂબજ લીલા હોવાથી કૃષ્ણ
વર્ણના જેવા જ લાગે ડે પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી તેઓ સમૃદ્ધ છે લીલા
છમ હોવાથી તેઓ અત્યંત સુંદર લાગે છે તેમના પત્રો વગેરે બધા લીલા
છે તેથી તેમની શોભા એકદમ અનોખી છે

(મણુળા વર્ણેન જાવ મણુળા ફાસેન મણુળા ડાયાય ત જોળ દેવાનુ-
પ્રિયા ! તેસિ નન્દિફલાણ સ્વલ્પાણ મૂલાણિ વા કદ૦ તય૦ પત્ત૦ પુષ્પ૦ ફલ૦
વીયાણિ, વા હરિયાણિ વા આહારેઢ, ઞાયાય વા વીસમઢ તસ્મ ણ ઓવાય મહા
મવઢ, તઓ પત્ત્યા પરિણમમાણા ૨ અઘાટે ચેવ જોવિયાઓ વવરીવેતિ)

વર્ણ, રસ, ગંધ અને સ્પર્શથી તેઓ ખૂબજ મનોજ્ઞા છે ઞાયડો પલ્લ
તેઓને અત્યંત મનોજ્ઞા છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! કોઈ પણ માણસ
તેમની સુંદરતા વગેરે કારણોથી આકર્ષાઈને જો નન્દિફલ વૃક્ષોના મૂળોને, કદોને
છાલને પાદડાઓને, પુષ્પોને, બિયાઓને અથવા તે લીલી કૃષ્ણોને ખાશે કે

યુય, સ્વલ હે દેવાનુપ્રિયા । મમ સાર્થનિવેશે મહતા-નહતા શબ્દન ઉદ્ઘોષયન્તઃ ૨
 एव उदत-“ एते स्वल हे देवानुप्रियाः । ते इमो नन्दिफलप्राप्ताः । यद्ये, पूर्व
 पदिष्टम् कृष्ण यावत्-मनोज्ञायया, तद् यो स्वल हे देवानुप्रियाः । एतेषां
 नन्दिफलानां वृक्षाणां मूलानि वा रुन्दानि वा पुष्पाणि वा, त्वरो वा, पत्राणि वा,
 फलानि वा, यावत्-तानि मूलरन्दादीनि त जीविताद् व्यपरोपयन्ति, तत् मा
 स्वल युय ' जाव ' यावत्-तेषां मूलरन्दादीनि मा आहारयत, मा च तेषां छायासु
 विश्राम्यत किन्तु तान दूर-दूरेण-दूरत पत्र ' परिहरमाणा ' परिहरन्त = वनेयन्त

તીન ચાર ઘુલાયા-ઘુલાકર ઉસને જેસા કતા-હે દેવાનુપ્રિયા । તુમ મેરે
 સાર્થ નિવેશ મેં જાકર જોર ૨ સે એમી ઘોપણા કરો-કિ હે દેવાનુપ્રિયો
 જિન નદિફલ વૃક્ષોં કે વિપત્ર મેં પહિલે સૂચના દી ગઈ હૈ-વે ઘેઈ
 કૃષ્ણ યાવત છાયા સે મનોજ્ઞ નદિફલ વૃક્ષ હૈ । ત જો જ દેવાનુપ્રિયો
 एषसि नदिफलाण रुक्खाण मूलानि वा कंदं पुष्पं त्रयं पत्रं फलं
 जाव अकाले चैव जीवियाओ ववरोवेड, त माण तुभे जाव दूर दूरेण
 परिहरमाणा वीसमह माण अकाले चैव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अ
 न्नेसि रुक्खाण मूलानि य जाव वीसमहत्ति कइहु घोमण जाव पच्च
 पिणति) इस लिये हे देवानुप्रियो । तुम लोग में से कोई भी व्यक्ति
 इन नदिफलवृक्षोंके नलोंको, कंदोंको, पुष्पोंको, छालोंको, फलोंको नहीं
 खावे और न वह इनकी छायामें विश्राम ही करे-नहींतो वह अकालमें
 ही कालरुबलिन अर्थात् मर जावेगा हो जावेगा । इस लिये इन्हें बहुत
 दूर छोड़कर दूसरी जगह तुम लोग विश्राम करो इससे जीवन से रहित

મારા સાર્થ નિવેશમા જઈને મોટેથી તમે આ પ્રમાણે ઘોપણા કરો કે હે
 દેવાનુપ્રિયો । જે નદિફળ વૃક્ષોના વિષે પહેલા તમને બાણ કરવામા આવી હતી
 તે બોજ કૃષ્ણ-તેમજ છાયાથી મનોજ્ઞ લાગતા નદિફળ વૃક્ષો છે

(ત જો જ દેવાનુપ્રિયા ! एषसि नदिफलाण रुक्खाण मूलानि वा कंदं
 पुष्पं त्रयं पत्रं फलं जाव अकाले चैव जीवियाओ ववरोवेड-ત' માણ તુમે
 जाव दूर दूरेण परिहरमाणा वीसमह, माण अकाले चैव जीवियाओ ववरोविस्सइ,
 अन्नेसि रुक्खाण मूलानि य जाव वीसमहत्ति कइहु घोमण जाव पच्चपिणति)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો । તમારામાથી કોઈ પણ માણસ નદિફળ
 વૃક્ષોના મૂળોને, કંદોને, પુષ્પોને, છાલને, ફળોને ખાય-નહિ અને તેમની
 છાયામા પણ વિરામો લે નહિ, નહિતર તે અકાળે જ મર
 જાય તેમનાથી ખૂબ જ દૂર રહીને વિરામો લેશે

सन्तोऽन्यत्र 'वीसमद्' विश्राम्यत=विश्राम कुरुत तेन न खलु यूय जीविताद् व्यपरोपिष्यन्वे, तथा-अ येषां वृक्षाणा मूल्यानि च यावत्-इन्द्रादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" इति कृत्वा प्रेषणा घोषयत, गावत्-ते घोषणा घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय तदाता प्रन्यर्पयन्ति । तत्र=खलु सार्ये अपनेके पुरुषा धन्यस्य सार्य वाहस्य एतमर्थम्=एतद्वृषदेश श्रद्धति, प्रतिगति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्धानाः=श्रद्धामिषयिकुर्वाणाः प्रतियन्त रोचयन्त तेषा नन्दिफलवृक्षाणा मूलादीनि छाया च दूर-दूरेण=दूरतएव परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषा वृक्षाणा मूल्यानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणा छायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु

नहीं होंओगे । तथा इनसे अनिरिक्त और जो दूमरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिको को खाओ और उनकी छाया में विश्राम करो । इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्होंने धन्य सार्यवाह की आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी । (तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सदहति, पत्तियति रोचति, एयमट्ठ सदहमाणाइ तेसि नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसि रक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति) वहां सार्य में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्यवाहके इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया । उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह बात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई । इसलिये इस बात पर श्रद्धा आदि संपन्न होने हुए उन लोगों ने उन नदि फल वृक्षों के मूलादिकों को और उनकी छाया को बहुत दूर से छोड़कर अन्य वृक्षों के मूलादि

पणु मुश्केली नउशे नडि तेमळ आ वृक्षो सिवायना भीळ वृक्षो छे, तेमना भूण ठह वगेरे तमे भाव अने तेमना छायाडभा विश्राम करे तेओओ धन्यसार्थवाहनी आज्ञा प्रमाणे व घोषणा करीने तेने अणर आपी

(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सदहति, पत्ति-यति, रोचति, एयमट्ठ सदहमाणाइ तेसि नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेमि रक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति)

त्या अर्थमा आवेला डेटलाक भाषणेओओ धन्यसार्थवाहनी सूचना इप आ वातने स्वीकारी लीधी अने तेने श्रद्धानी अपेक्षाओ पोताना लुहयभा स्थान आपता अशेअर तेनी उप प्रतीति जी लीधी ते लोकने ते बात इच्छिअर पणु धर्ष पडी आ गीते श्रद्धायुक्त थयेला ते लोकने ते नदिक्ष्ण वृक्षोना भूण वगेरेली अने तेमनी छायावी भूम व दूर रहीने भीळ वृक्षोनी भूण तेमळ इत ओओने आधा तथा तेमनी छायाभा विसाओ लीधी

यूय खलु हे देवानुप्रिया । मम मार्यनिवेशे महता-महता शब्दन उद्गोपयन्तार
एव उदत-“ एते खलु हे देवानुप्रिया । ते इमो नन्दिफलश्रृङ्गाः यदर्थे, पूर्व
पदिष्टम् कृष्णायामत्-मनोराश्यायया, तद् यो सद्य हे देवानुप्रिया । एतेषां
नन्दिफलानां वृक्षाणां मूलानि वा कन्दानि वा पुष्पाणि वा, त्रयो वा, पत्राणि वा,
फलानि वा, यावत्-तानि मूलरन्दादीनि त जीविताद् व्यपरोपयन्ति, त्व मा
खलु यूय 'जाव' यावत्-तेषां मूलरन्दादीनि मा आहारयत, मा च तेषां ग्राह्य
विश्राम्यत किन्तु तान् दूर-दूरेण-दूरत पत्र 'परिहरमाणा' परिहसन्त-वनेयन्त

तीन चार घुलाया-बुलाकर उसने ऐसा कहा-हे देवानुप्रिया ! तुम मेरे
साथ निवेश में जाकर जोर २ से ऐसी घोषणा करो-कि हे देवानुप्रिया
जिन नन्दिफल वृक्षों के विषय में पहिले सूचना दी गई है-वे वही
कृष्ण यावत् छाया से मनोज्ञ नन्दिफल वृक्ष हैं । त जो ण देवानुप्रिया ।
एएसि नन्दिफलाण रक्खाण मूलाणि वा कदं पुष्पं तयं पत्तं फलं
जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, त माण तुवमे जाव दूर दूरेण
परिहरमाणा वीसमह माण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अ
न्नेसि रक्खाण मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कइडु घोसण जाव पच्चपिणति) इस
लिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग में से कोई भी व्यक्ति
इन नन्दिफलवृक्षोंके नलोंको, कंदोंको, पुष्पोंको, छालोंको, फलोंको नहीं
खावे और न वह इनकी गायामे विश्राम ही करे-नहींतो वह अकालमें
ही कालरुबलिन अर्थात् मर जावेगा हो जावेगा । इस लिये इन्हें बहुत
दूर छोड़कर दूसरी जगह तुम लोग विश्राम करो इससे जीवन से रहित

भारा साथ निवेशमा जधने भोटेथी तमे आ प्रभाषु घोषणा कइ-के डे
देवानुप्रियो । जे नन्दिण वृक्षोना विषे पडेला तभने जणु, कइवाभा आवी डती
ते जेज कृष्ण-तेमज छायाथी भनोज लागता नन्दिण वृक्षो छे

(त जो ण देवानुप्रिया ! एएसि नन्दिफलाण रक्खाण मूलाणि वा कदं
पुष्पं तयं पत्तं फलं जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, त माण तुवमे
जाव दूर दूरेण परिहरमाणा वीसमह, माण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ,
अन्नेसि रक्खाण मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कइडु घोसण जाव पच्चपिणति)

जेटला भोटे डे देवानुप्रियो । तभाराभाथी कोछ पणु भाषुस नन्दिण
वृक्षोना भूजोने, क डोने, पुष्पोने, छालने, इजोने जाय नन्दि अने, तेभनी
छायाभा पणु, विसाभा छे नन्दि, नन्दितर ते अकाले ज भू, जे जे जे
ज भनोथी भूण ज दूर रहीने विसाभा वेशे तेथी

सन्तोऽन्यत्र 'वीसमह' विश्राम्यत=विश्राम कुरुत तेन न खलु यूय जीविताद् व्यपरोपिष्यन्वे, तथा-अ येषा वृक्षाणा मूल्यानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" इति वृत्ता प्रोपणां प्रोपयत, यावत्-ते प्रोपणा प्रोपयित्वा धन्यसार्थवाहाय तदाता प्रत्यर्पयन्ति। तत्र=तलु सार्थे अप्येके पुरुषा धन्यस्य सार्थे वाहस्य एतमर्थम्=एतद्रूपदेश श्रद्धति, प्रतिगति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्धवानाः=श्रद्धाविपयिकुर्वाणाः प्रतियन्तः रोचयन्तः तेषा नन्दिफलवृक्षाणा मूलादीनि छायां च दूर-दूरेण=दूरतएव परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषा वृक्षाणा मूल्यानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणा त्रायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु

नहीं होंओगे। तथा इनसे अनिरिक्त और जो दूमरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिको को खाओ और उनकी छाया में विश्राम करो। इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्होंने धन्य सार्थवाह की आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी। (तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा वण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सदहति, पत्ति-यति, रोयति, एयमट्ठ सदहमाणाइ तेसि नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अ-न्नेसि रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति) वहा सार्थ में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्थवाहके इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया। उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह घात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई। इसलिये इस घात पर श्रद्धा आदि संपन्न बने हुए उन लोगों ने उन नदि फल वृक्षों के मूलोंदिकों को और इनकी छाया को बहुत दूर से छोड़कर अन्य वृक्षों के मूलोंदि

पणु भुरवेदी नउथे नडि तेमज आ वृक्षो सिवायना णीज वृक्षो छे, तेमना भृण उह वगेथे तमे भाव अने तेमना छायाभा विसाग उरे। तेओओ धन्यसार्थवाहनी आज्ञा प्रभाणे ज घोषणा करीने तेने भयर आपी

(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा वण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ सदहति, पत्ति-यति, रोयति, एयमट्ठ सदहमाणाइ तेसि नदिफलाण० दूर दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेमि रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमति)

त्या मर्थमा आवेला डेटलाक भाणुओओ धन्यसार्थवाहनी सूचना रूप आ वातने स्वीकारी लीधी अने तेने श्रद्धानी अपेक्षाओ पोताना हृदयमा स्थान आपता भरोणर तेनी उपर प्रतीति करी लीधी ते लोकोने ते व त इयिकर पणु थर्ध पडी आ गते श्रद्धायुक्त थयेला ते लोकोओ ते नदिक्ष ण वृक्षोना भृण वगेथेथी अने तेमनी छायाथी भूम ज दूर रहीने णीज वृक्षोना भण तेमना ... तेने भाधा तथा तेमनी छायाभा विसाओ लीधे।

भाषाते=पूर्वमाहारसमय नो भद्रक भयनि=विशिष्टस्वादादिलाभो न भवति किन्तु ततः पश्चाद्=भक्षणानामानन्तर परिणम्यमानानि २ रसादिरूपेण परिणतानि मूलकन्दादीदि भूभरूपतया=गद्रक्तया भूयो भूय परिणमन्ति ।

अथोपनय दर्शयन् सुधर्मस्वामी माह—‘ एवामेव ’ इत्यादिना । ‘ एवामेव ’ एवमेव=अनेनैव पूर्वोक्तप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ? योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा ‘ जाय ’ यावत्-आचार्योपाध्यायानामन्तिके मुण्डा भूत्वा प्रजितस्ते पामुपदेशं श्रद्धावानः सन् पञ्चम्र धामगुणेषु=सन्दादिनिपयेषु ‘ नो सज्जेह ’ नो

कों को यावत् कदों को खाया और उनकी छाया में विश्राम किया । (तेसिं ण आचाण णो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणयमाणा २ सुह रुवत्ताए भुज्जो २ परिणमति, एवामेव समणाउसो जो अम्ह निगगंथो वा निगगंथी वा जाय पचसु कामगुणेषु नो सज्जेह, नो रज्जेह, से ण इहभवे चेव घट्टण समणाण ४ अच्चणिज्जे परलोण नो आगच्छइ, जाव वीइवयस्सइ, जहा वा ते पुरिमा) परन्तु इन पुरुषोंको उनके मूला दिकों के खाने के समय विशिष्ट स्वादादि को प्राप्तिरूप भद्रक का लाभ तो नहीं हुआ-किन्तु उसके बाद जब खाये हुए उन मूलादिकों का रसादि रूप से परिणमन हुआ तब उन्हें चार २ शुभ रूप परिणमन होने से आनन्द आया और जीवन सुरक्षित रहा-अब सुधर्मास्वामी इसका उपनय (दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृति में जोड़ना) दिखलाते हुए कहते हैं कि इसी तरह से हे आयुष्मन्त श्रमणो ! जो हमारे निर्ग्रन्थ श्रमण एवं श्रमणिघाजन हैं वे आचार्य उपाध्यायके पास मुडित होकर दीक्षित हो जाते हैं और उनके उपदेश को श्रद्धा आदि का विषयभूत

(तेसिं ण आचाण णो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणयमाणा २ सुह रुवत्ताए भुज्जो २ परिणमति, एवामेव समणाउसो जो अम्ह निगगंथो वा निगगंथी वा जाव पचसु कामगुणेषु नो सज्जेह, नो रज्जेह, से ण इहभवे चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे परलोण नो आगच्छइ, जाव वीइवयस्सइ जहा वा ते पुरिमा)

ते भाष्यसेने पृक्षोना भूण कइ वगेइ जाती वभते सविशेष स्वाद वगे रेनी अनुभूति तो थई थकी नहि पणु आधा पछी ते भूण कइ रस वगेइ इपमा परिणुत तथा त्याइ तेभने सुण भण्यु अने साथे साथे तेभना उपन पणु सुरक्षित रह्या सुधर्मा स्वामी हरे ओज वातने दृष्टान्तना इपमा स्पष्ट करता कहे छे हे हे आयुष्मन्त श्रमणो ! आ प्रभावे ज ने अभास निअ थ भमणीओ, आचार्य तेभज उपाध्यायनी पासे मुडित यधने ।

स्वजते=आसक्तो भवति, 'नो रज्जेइ' नो रज्यते नो अनुरक्तो भवति म खलु
 भवएव बहूना श्रमणाना श्रमणीना उहूना साधूना साध्वीना मध्ये-अर्चनीय=
 माननीयः सन् परलोके=भवान्तरे नो आगच्छति=जन्म न प्राप्नोति किन्तु-
 यावत्-अस्मिन्नेव भवे चातुरन्तसमारकात्तार व्यतिग्रनिष्यति=उलङ्घयिष्यति,
 मोक्ष प्राप्स्यतीत्यर्थः 'जहा वा ते पुरिसा' यथा वाते पुरुषाः-यथा वा=येन प्रका-
 रेण धन्यसार्थवाहोपदेशश्च द्रया ते=नन्दिकलवृक्षमूलकन्दादि परिवर्जनेन तत्कथ-
 नानुसारसमाचरणशीलाः पुरुषाः=सार्थपुरुषाः सुखपूर्वरुमहिच्छन्ना नगरीं प्राप्स्यन्ति
 तयेत्यर्थः । अथ श्रद्धा रहितान् वर्णयति-'तत्थ ण' इत्यादि । तत्र खलु सार्थे अप्ये-
 के=ये तेचित् पुरुषाः धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं=नन्दिकलमक्षणादि निषेधरूप

बनाते हुए पात्र काम गुणों में-शब्दादि विषयों में आसक्त नहीं बनते
 हैं अनुरक्त नहीं बनते हैं वे इस भवमें ही अनेक साधु और साध्वियों
 के बीचमें माननीय होते हुए परलोक में जन्म से रहित हो जाते हैं-
 अर्थात् पुन उन्हें जन्म धारण नहीं करना पड़ता है । कारण वे इसी
 भव में चतुर्गति रूप इस संसार कान्तार को पार करने वाले बन जाते
 हैं-उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जावेगा ऐसे वे तैयार हो जाते हैं । जिस प्रकार
 धन्य सार्थवाह के उपदेश पर श्रद्धा करने से ये सार्थ के कितनेक पुरुष
 नदि वृक्षों के मूलकन्दादिकों का परिवहार-त्याग करते हुए और उसके
 कथनानुसार अपना आचरण बनाते हुए सकुशल अहिच्छन्ना नगरी
 को प्राप्त कर लेंगे ऐसे बन गये । अब जिन्होंने धन्य सार्थवाहके वचनों
 पर श्रद्धा नहीं की-उनकी क्या दशा हुई इस बात का वर्णन सूत्रकार
 करते हैं-(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एय-

शुद्ध यद्यने पात्र काम शुद्धिमा शब्दादि विषयोभा-अनासक्त रहें छे ओटले
 के अनुरक्त यथा नथी, तेओ आ लवभा न धणा साधुओ तेभन साध्वीओनी
 वञ्चे सम्माननीय यथा परलोकभा नन्मरहित यद्यन्य छे ओटले के इरी तेओने।
 नन्म यतो नथी केभके तेओ आ लवभा न चतुर्गति इय आ ससार
 क्षतारने पार करवा लायक सामर्थ्य भेजवी छे तेओ मोक्ष भेजववा योग्य
 यद्यन्य छे, जेभ धन्यसार्थवाहना उपदेश उपर श्रद्धा भूझीने सार्थना केटलाउ
 पुद्घोओ नदि वृक्षोना भूण कद वगेरेने त्यज्जने तेनी सूयना सुज्ज आन्य
 रक्षु करता अहिच्छन्ना नगरीमा पहुँची शडे तेवा यद्यन्य छे पुद्घोओ
 धन्यसार्थवाहनी वात उपर श्रद्धा भूझी नछि तेओनी शी डालव यद्य तेनु
 वर्णन करता सूत्रकार कहे छे—

(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमद्व नो सद्वति इ

नो श्रद्धयति नो रोचयन्ति नो प्रतियति । ने धन्यस्य-एवमर्थम् अथ श्रद्धाया अरोचयन्तः, अपतियन्त यत्र नदिफला वृक्षान्मन्त्रोपागच्छन्ति, उपागत्य तेषां नदि फलानां मूलानि य यावत्-कन्ददीनि आहारयन्ति, तथा आयागु न विश्राम्यन्ति तेषां खलु आपातं=पूर्व फलभक्षणान्दिमगते भद्रक भाति=शुभम्यादादिलामोभवति किन्तु 'तत्रो पच्छा' ततः पश्चात्=फलभक्षणाद्यनन्तर परिणम्यमाना=रसादिरूपेण

मद्व नो मद्वन्ति ३ धणस्स एयमद्व असद्वमाणा ३ जेणेव ते नदिफला तेणेव उवागच्छति उवागच्छत्ता तेसि नदिफलाण मूलाणि य जाव वीसमति, तेसि ण आयाण भद्वण भवत्, तत्रो पच्छा परिणममाणा जाव वररोवेति एवामेव समणाउसो ! जो अहं निग्गयो वा निग्गथी वा जाव पव्वइए पचसु कामगुणेषु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरिय द्दिस्सइ जहा वा ते पुरिसा) वहा पर किननेक पुरुषो ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को कि नदिफल वृक्षो के कन्दमूलादि नहीं खाना चाहिये और न उनकी छाया में ती विश्राम करना चाहिये श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं देखा उस पर अपनी श्रद्धा नहीं जमाई, उसे अपनी रुचि का प्रतीति का विषय नहीं बनाया-वे पुरुष- धन्यसार्थवाह के इस कथन को अश्रद्धेय आदि मानकर जहा पर नदिफल वृक्ष थे- वहा गये वहा जाकर उन्होंने उनके मूल कदादि कों को खाया उनकी छाया में विश्राम किया उस समय उन्हें बड़ा आनन्द आया- स्वाद जन्य कोई अपूर्व सुख मिला -किन्तु जब उनका परिपक्व काल आया जब वे खाये हुए मूलकन्दादि

धणस्स एयमद्व असद्वमाणा ३ जेणेव ते नदिफला तेणेव उवागच्छति, उवा गच्छत्ता तेसि नदिफलाण मूलाणि य जाव वीसमति, तेसि ण आयाण भद्वण, भवत्, तत्रो पच्छा परिणममाणा जाव वररोवेति एवामेव समणाउसो ! जो अहं निग्गयो वा निग्गथी वा जाव पव्वइए पचसु कामगुणेषु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियद्दिस्सइ, जहा वा ते पुरिसा)

त्या डेटलाक भाषुसोअे धन्यसार्थवाहना नदिङ्ग वृक्षोना कद्वमूणो वगेरे भावा जेधअे नदि तेमज ते वृक्षोनी छायाभा पणु विसाओ लेवे। नदि आ जतना अथन प्रये श्रद्धावान थया नथी, तेना उपर विश्वास भूठयो नदि अने प्रतीतिपूर्वक तेमा पोतानी अलिङ्गथी जतावी नदि ते भाषुसो धन्यसार्थवाहना कथन अश्रद्धेय भानीने न्या नदिङ्ग वृक्षो हुता त्या गया त्या जधने तेमले तेमना भूण कद वगेरे भाधा अने तेमना छायाभा विसाओ लीधो ते सभये तो तेमने भूण ज आनद प्राप्त थयो, इणोना स्वादभा अपूर्व सुख भज्जु, पणु न्यारे तेजोनी पाथन किया थवा भाडी, जेटले के भाषु वगेरे

પરિણામ પ્રાપ્તુવન્ત. સન્તઃ કન્દાદય યાવત્-તાન્ જામિનાદ વ્યપરોપયન્તિ ।
'એમેવ' એમેવ=અનેનૈવ પ્રકારેણ હે આયુષ્મન્ત' શ્રમણાઃ યોઽસ્માક નિર્ગ્રન્થો
વા નિર્ગ્રન્થી યા યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ સન પશ્ચમુ રામણેષુ=શબ્દાદિકામભોગેષુ સ્વ-
જતે, રજ્યતે-કામભોગાસક્તો ભવતિ યાવત્-સ સ્વલુ ડગ્ધવે વહુના શ્રમણ-શ્રમ-
ણીના, વહુના શ્રાવકશ્રાવિકાના મ'યે ક્લિત્તનીયો, નિન્દનીય', ક્લિત્તનીયો ભવતિ,
પરલોકે=ચ ભગન્તરે ચાતુરન્તસસારકાન્તારમ્ અનુપર્યટિપ્યતિ ચાતુર્ગતિસસાર
એવ સ્યાસ્યતિ ન તુ મોક્ષ પ્રાપ્સ્યતીત્યર્થ । યેન પ્રકારેણ તે=ધન્યોપદેશમશ્રદ્ધાનાઃ
પુરુષાઃ=સાર્થસ્થિતા જના નન્દિફલવૃક્ષમૂલકન્દાદિભક્ષણેન તત્રૈવ મ્રિયન્તે નતુ-
અહિચ્છન્ના નગરી પ્રાપ્તુવન્તીતિ ભાવઃ ॥ સૂ૦ ૩ ॥

મૂલમ્—તણ સે ધણે સત્થવાહે સગડીસાગડ જોયાવેહ
જોયાવિત્તા જેણેવ અહિચ્છત્તા નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવા-

રસારૂપ સે પણિમને લગે-તય વે સઘ અપનેર જીવન સે રહિત હો ગયે
-મર ગયે-। હસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો । જો હમારા નિર્ગ્રન્થ વ
નિર્ગ્રન્થી સોધ્વીજન યાવત્ પ્રવ્રજિત હોકર પચકામ ગુણો મે-પચહ ન્દિયો
કે શબ્દાદિ વિષયો મે-આસક્ત બન જાતા હૈ-અનુરક્ત હો જાતા હૈ, વહ
હસ ભવમેં અનેક શ્રમણ શ્રમણિયોકે યીચ હીલનીય, નિન્દનીય એવ ક્લિત્ત-
નીય હોતા હૈ એવ વહ ભવાન્તર મેં જો હસ ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર કાન્તાર
મેં હી ધૂમતા રહેગા-મોક્ષ પ્રાપ્ત નહી કરેગા । જિમ પ્રકાર ધન્ય સાર્થવાહ
કે ઉપદેશ પર શ્રદ્ધા નહી કરને વાલે સાર્થ કે યે ક્રિતનેક પુરુષ નન્દિફલ
વૃક્ષોં કે મૂલાદિ કે સ્થાને સે વહીં પર મર ગયે-અહિચ્છન્ન નગરી નહીં
જા સકે ॥ સૂ૦ ૩ ॥

રસ વગેરે રૂપમા પરિણુત થવા લાગ્યા ત્યારે તેઓ બધા નિર્ણવ થઈ ગયા,
મૃત્યુ પામ્યા આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ
સાધુઓ કે નિર્ગ્રન્થ સધિઓ પ્રનિણુત થઈને પાંચ કામ શુભોમા અર્થાત્
પાંચે ઇન્દ્રિયોના શબ્દાદિ વિષયોમા આસક્ત થઈ પડે છે-એટલે કે અનુરક્ત
થઈ બાંધ છે, તે આ ભવમા ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓની વચ્ચે
હીલનીય, નિન્દનીય, અને ક્લિત્તનીય હોય છે અને ધીબલ ભવમા પણ-આ
ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર-ગતારમા જ જમણ કરતો રહેશે તેને મોક્ષ પ્રાપ્ત થશે
નહિ ધન્યસાર્થવાહના ઉપદેશને શ્રદ્ધેય ન માનનારા કેટલાક માણસો જેમ નહિ
ફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરે ખાઈને ત્યાંને ત્યાંજ મરણ પામ્યા, અહિચ્છન્ના નગ
રીમા પડોચી રાક્યા નહિ, તેમજ તેઓની પણ સ્થિતિ થાય છે ॥ સૂ ૩ ॥

नो श्रद्धयति नो रोगयन्ति नो प्रतियति। ते धन्यस्य-एतन्ममम् अथर्धाना अरोच
यन्तः, अपतियन्त यत्रो नन्दिफला उभाभ्योपागच्छन्ति, उपागत्य तेषां नन्दि
फलाना मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, तत्रायासु न मिश्राम्यन्ति
तेषां सल्लु आपाते=पूर्व फलभक्षणादिमममे भद्रक भवति=भुग्मयादादिलामोभवति
किन्तु 'तत्रो पच्छा' ततः पश्चात्=फलभक्षणाद्यनन्तर परिणम्यमाना =रसादिरूपेण

मद्व नो मद्वति ३ धन्यस्म एयमद्व असद्वमाणा ३ जेणेव ते नदिफला
तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता तेसि नदिफलाण मूलानि य जाव
वीसमति, तेसि ण आयाण भद्व भवइ, तत्रो पच्छा परिणममाणा
जाव वररोवेति एवामेव समणाउसो ! जो अह निग्गयो वा निग्गयी
वा जाव पव्वडण पचसु कामगुणेषु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरिय
ट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा) वहा पर कितनेक पुरुषो ने धन्यसार्थवाह
के इस कथन को कि नदिफल वृक्षो के कट्मूलादि नहीं खाना चाहिये
और न उनकी त्रायामें ही विश्राम करना चाहिये श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं
देखा उस पर अपनी श्रद्धा नहीं जमाई, उसे अपनी रुचि का प्रतीति
का विषय नहीं बनाया-वे पुरुष- धन्यसार्थवाह के इस कथन को अश्र-
द्धेय आदि मानकर जहा पर नदिफल वृक्ष थे- वहा गये वहा जाकर
उन्होंने उनके मूल कटादि कों को खाया उनकी छाया में विश्राम किया
उस समय उन्हें बड़ा आनन्द आया- स्वाद जन्य कोई अपूर्व सुख मिला
-किन्तु जब उनका परिपाक काल आया जब वे खाये हुए मूलकन्दादि

धणस्स एयमद्व अमद्वमाणा ३ जेणेव ते नदिफला तेणेव उवागच्छति, उवा
गच्छिता तेसि नदिफलाण मूलानि य जाव वीसमति, तेसि ण आयाण भद्व,
भवइ, तत्रो पच्छा परिणममाणा जाव वररोवेति एवामेव समणाउसो ! जो अह
निग्गयो वा निग्गयी वा जाव पव्वडण पचसु कामगुणेषु सज्जेइ, सज्जित्ता
जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा वा ते पुरिसा)

त्या डेटलाक भाषुसोअे धन्यसार्थवाहना न दिक्षि वृक्षोना कट्मूलो। वगेरे
भावा जेधअे नहि तेमज ते वृक्षोनी छायाभा पणु विसाअे देवेो नहि आ
जातना कथन प्रये श्रद्धावान थया नथी, तेना उपर विश्वास भूयेो नहि अने
प्रतीतिपूर्वक तेभा पोतानी अलिइथी गतावी नहि ते भाषुसो धन्यसार्थवाहना
कथन अश्रद्धेय भानीने न्या न दिक्षि वृक्षो डता त्या गया त्या जेधने तेमजे
तेमना भूण कट वगेरे भाधा अने तेमना छायाभा विसाअे दीधो ते समये
तो तेमने भूण ज आनद प्राप्त थयेो, इलोना स्वादभा अपूर्व सुख सज्जु,
पणु न्यारे तेजोनी पायन किया थवा भाडी, जेटले के भा / / वगेरे,

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु म ध यः सार्थवाहः शरुटीगान्ठं योजयति, योजयित्वा यज्ञीगच्छित्वा नगरी तर्जोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छन्नाया नगर्या वहिः अग्रयोद्याने=मुख्ययोद्याने सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा शरुटी-शावटं मोचयति । ततः खलु स धन्य सार्थवाहः ‘महत्थ’ महार्थ=महाप्रयोजनरू, ‘महग्घ’ महार्घ=महामूल्य, ‘महरिह’ मर्याद=महता योग्य ‘रायरिह’ राजार्ह=राजयोग्य प्राप्त गृह्णाति, गृहीत्वा बहुभिः पुरुषैः सार्धं सपरिवृत अहिच्छन्ना नगरिं मज्झमज्जेन अनुगच्छति, अनुगच्छित्य यज्ञीं कनककेतुं राजा तर्जोपागच्छति, उपागत्य ‘करयल जाय वद्धावेड’ करतल यावद् वर्धयति—कर-

‘तएण से धण्णे सत्थवाहे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यसार्थवाहने (सगढी सागड जोयावेड जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ) वहा से अपने गोडी और गाडों को जुनवाया और जुनवा कर जहा अहिच्छत्ता नगरी थी उस ओर चल दिया । (उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेस करेइ) धीरे धीरे अहिच्छत्ता नगरी में वह पहुँच गया । वहा पहुँच कर उसने बाहर रहे हुए प्रधान घरीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया । (करित्ता सगढी सागड मोयावेड) और वही पर अपनी गाडी और गाडों को ढील दिया । (तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ ३ रायरिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं सपरिवुडे अहिच्छत्ता नयरीं मज्झ मज्जेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवाग

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारवाह (से धण्णे सत्थवाहे) ते धन्यसार्थवाहे (सगढी सागड जोयावेड जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ) त्थाथी पोतानी गाडीओ अने गाडाओने जेतारा-नीने जे तरइ अहिच्छत्ता नगरी छती ते दिशा तरइ रवाना थये । (उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेस करेइ) अने धीमे धीमे अहिच्छत्ता नगरीमा पहुँच्यी गये । त्था पहुँच्यीने तेहे नगरीनी णहार आवेला प्रधान उद्यानमा पोताना सार्थने। मुकाभ नाभ्ये । (करित्ता सगढीसागड मोयावेड) अने त्था जे पोतानी गाडीओ अने गाडाओने छोडावी नाभ्ये ।

(तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ ३ रायरिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं सपरिवुडे अहिच्छत्ता नयरीं मज्झ मज्जेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

गच्छित्ता अहिच्छित्ताए णयरीए वहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं
करेइ करित्ता सगडीसागड मोयावेइ, तएण से धण्णे सत्थवाहे
महत्थं३ रायरिहं पाहुड गेणहइ गेण्हत्ता बहुहि पुरिसंहिं सद्धिं
संपरिवुडे अहिच्छित्त नयरिं मज्झ मज्झेणं अणुप्पविसइ अणुप्प-
विसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेउत्तागच्छइ, उवागच्छित्ता
करयल जाव वद्धावेइ, वद्धापित्ता तं महत्थं३ पाहुड उवणेइ,
तएण से कणगकेऊ, राया हट्टुट्टु० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं
महत्थं३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्ण सत्थवाह सक्कारेइ
सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्क वियरइ २ पडिविस-
उजेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे भडविणिमयं करेइ करित्ता पडि-
भड गेणहइ गेण्हत्ता सुहसुहेण जेणेउत्तापानयरी तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता भित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइ
कामभोगाइं भुजमाणे विहरइ, तेण कालेण तेणं समएण थेरा-
गमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मे सोच्चा जेट्टुप्पत्ते कुडुवे ठावेत्ता
पव्वइए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ वद्धूणि वासाणि
सामण्णपरियाग पाउणइ पाउणित्ता मासियाए सं० अन्नतरेसु
देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव
अतं करेहिइ । एव खल्ल जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण
जाव सपत्तेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते
त्तिवेमि ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु म धन्यः सार्ववाह शक्रटीशान्द योजयति, योजयित्वा यज्ञादिच्छत्रा नगरी तर्गोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छत्रा प्रायां नगर्यां रहिः अग्रयोद्याने=मुख्योद्याने सार्थनिवेश करोति, कृत्वा शक्रटी-शान्द मोचयति । ततः खलु स धन्यः सार्ववाहः ‘महत्थ’ महार्थ=महाप्रयो जनक, ‘महग्घ’ महार्घ=महामूल्य, ‘महरिह’ मर्याद=महता योग्य ‘रायरिह’ राजार्ह=राजयोग्य प्राप्तं गृह्णाति, गृहीत्वा बहुभिः पुरुषैः सार्धं सपरिवृत अहिच्छत्रा नगरीं मज्जम येन अनुगच्छति, अनुगच्छ्य यज्ञाय वनमवेत्तु राजा तर्गोपागच्छति, उपागत्य ‘करयल जाय वद्धावेइ’ करतल यावद् पर्ययति—कर-

‘तएण से धण्णे सत्थवाहे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) हमके वाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यसार्ववाहने (सगडी सागड जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ) वहा से अपने गोडी और गाडो को जुनवाया और जुनवा-कर जहां अहिच्छत्रा नगरी थी उस ओर चल दिया । (उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेस करेइ) धीरे धीरे अहिच्छत्रा नगरी में वह पहुँच गया । वहा पहुँच कर उसने बाहर रहे हुए प्रधान पगीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया । (करित्ता सगडी सागड मोयावेइ) और वहीं पर अपनी गाडी और गाडों को ढील दिया । (तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ ३ रायरिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धि सपरिवुडे अहिच्छत्ता नयरीं मज्झ मज्झे ण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवाग

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थवाह (से धण्णे सत्थवाहे) ते धन्यसार्ववाह (सगडी सागड जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ) तथा पीतानी गाडीओ अने गाडाओने जेतारा-नेने के तरइ अहिच्छत्रा नगरी छती ते दिया तरइ नवाना थये । (उवागच्छत्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अगुज्जाणे सत्थनिवेस करेइ) अने धीमे धीमे अहिच्छत्रा नगरीभा पहुँची गये । तथा पहुँचीने तेले नगरीनी जडार आवेला प्रधान प्रधानभा पीतानी सार्थने मुकाम नाथ्ये । (करित्ता सगडीसागड मोयावेइ) अने तथा पीतानी गाडीओ अने गाडाओने छोडवी नाथ्ये ।

(तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ ३ रायरिह पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धि सपरिवुडे अहिच्छत्ता नयरीं मज्झ मज्जेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

તત્પરિગૃહીત શિરઔર્ધ્વતઃ ગગનસ મમત્કે ડગ્ગિ ડગ્ગિ રાજાનં જયવિજયશબ્દેન
 વર્દયતિ, વર્દયિત્વા તન્મદાર્ય મર્ગ્ય મર્ગ્ય મામૃતમ્ ઉપનયનિન્નાન' સમીપે સ્થા
 પયતિ । તત સ્વલુ મ મનસ્વેનુ રાજા દ્વપ્તુદ્વદયો દર્પયગ્ગિર્પદદ્વયો ધન્યસ્ય
 સાર્થસાહસ્ય તમહાર્ય ૩ યાવત્ મામૃ । 'પડિચ્છઙ્ગ' પ્રતીચ્છનિ=સ્વીકારતિ,
 પ્રતીપ્ય ધન્ય માર્ગસાહ સત્ત્વાયનિ મમ્માનયતિ, મ મન્ય મમ્માન્ય તમૈ 'ઉસ્મૃક'
 ઉચ્છુલ્લ=થુલમામાયવ 'કેનાપિ રાજપુરુષેનાસ્માત્કરો ન ગ્રાણઃ' ક્ત્યેતરૂપમા
 જ્ઞાપત્ર વિતરનિ=દદાતિ, વિતીર્ય ત પ્રતિરિસર્જયતિ ।

છઙ્ગ, ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ જાવ પ્રદાવેઙ્ગ, વદ્ધાવિત્તા ત મહત્થ ૩ પાહુડ
 ઉવળેઙ્ગ) હસ કે યાદ ઉમ ધન્ય માર્ગસાહ ને મહાર્ય મારક, મહામૃત્ય
 એવ મહા પુરુષો કે યોગ્ય-પ્રામૃત-મેટ કો સાથ મેં લિયા, ઔર ઢેકર
 અનેક પુરુષો કે સાથ ૨ અષ્ટિચ્છા નગરી મેં વીચ સે હોતા હુઆ પ્રવિષ્ટ
 હુઆ । નગરી મેં પ્રવિષ્ટ હોકર વહ જતા કનક કેતુ રાજા યે વહા ગયા
 વહાં જાકર ઉમને રાજા કો દોનોં હાથ જોડ કર નમસ્કાર કિયા, ઔર
 જય વિજય શબ્દો કો ઉચ્ચારણ કરતે હુગ ઉન્હેં વધાઈ દી । વધાઈ દેકર
 હસને ફિર રાજા કે મમલ્લ અપની મેટ રલ્લદી । (તળણ સે કળગકેઙ્ગ
 રાયા હદ્ધ તુદ્ધં ધળ્લગસ સત્થવાહસસ ત મહત્થ ૩ જાવ પડિચ્છઙ્ગ પડિ
 ચ્છિત્તા ધળ્લ સત્થવાહ સત્કારેઙ્ગ સમ્માળેઙ્ગ, સક્કારિત્તા સમ્માણિત્તા
 ઉસ્સુક્ક વિયરઙ્ગ ૨ પડિવિસજ્જેઙ્ગ) કનકકેતુ રાજાને હર્ષિત એવ સતુદ્ધ
 હોકર ધન્યસાર્થસાહ કો ઉમ મહાર્ય સાધક મહામૃત્ય રાજ યોગ્ય મેટ
 જેળેવ વળગકેઙ્ગ રાયા તળેવ ઉવાગચ્છઙ્ગ, ઉવાગચ્છિત્તા કરયલ જાવ વદ્ધાવેઙ્ગ,
 વદ્ધાવિત્તા ત મહત્થ ૩ પાહુડ ઉવળેઙ્ગ)

ત્યારપછી તે ધન્યસાર્થવાહે મહાર્ય સાધક બહુ કિમતી અને મહા પુરુ
 શોને યોગ્ય ભેટ સાથે હાથે ધણા માણુભોની સાથે અહિચ્છા નગરીની
 વચ્ચેના ભાગે (રાજમાર્ગ) દાખલ નગરીમા પ્રવિષ્ટ થયો નગરીમા પ્રવેશીને
 તે જ્યા કનકકેતુ રાજા હતા ત્યા ગયો ત્યા જાહે તેણે રાજાને બને હાથ
 ભેડીને નમસ્કાર કર્યા અને જય વિજય શબ્દો ઉચ્ચારણ કરતા તેમને વધાઈ
 આપી વધાઈ આપ્યા પછી તેણે રાજાની સામે પોતાની ભેટ મૂકી દીધી

(તળણ સે કળગકેઙ્ગ રાયા હદ્ધ તુદ્ધં ધળ્લગસ સત્થવાહસસ ત મહત્થ ૩
 જાવ પડિચ્છઙ્ગ પડિચ્છિત્તા ધળ્લ સત્થવાહ સવ્કારેઙ્ગ સમ્માળેઙ્ગ, સત્કારિત્તા સમ્મા
 ણિત્તા ઉસ્સુક્ક વિયરઙ્ગ ૨ પડિવિસજ્જેઙ્ગ)

કનકકેતુ રાજાએ હર્ષિત તેમજ સતુદ્ધ થાને મહાર્ય સાધક મહામૃત્ય
 વાળી અને રાજાજોને માટે યોગ્ય ભેટ સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર્યા

ततः खलु सधन्य सार्थवाहस्त्वत्र 'भडविणिमय' भाण्डविनिमय = भाण्डानां =
क्रयाणकवस्तूनां विनिमयम् = आदानप्रदानं करोति, कृत्वा 'पडिभड' प्रतिभाण्ड =
विनिमयेन प्राप्त वस्तुजात गृह्णाति, गृहीत्या शकटीशाकटे भरति भृत्वा शकटीशाकट
योजयति, योजयित्वा सुखं = सुखेन = सुखपूर्णं यत्रैव चम्पानगरी = स्वनिवासस्थानं
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मित्रज्ञातिस्वजनसम्पन्धिपरिजनैः सह 'अभिसमन्नागए'
अभिममन्नागत = समिलितो विपुलान् मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानो विहरति ।

को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उन्होंने धन्यसार्थवाह
का सत्कार एवं सम्मान किया। सत्कार मन्मान करके "किसी भी
राज पुरुष को इन से कर नहीं लेना चाहिये इस प्रकार का शुल्क भाध
विषयक आज्ञा पत्र" उसके लिये प्रदान किया और प्रदान करके बाद
में उसे वहां से बिदा कर दिया। (तण्ण से धण्णे सत्यवाहे भडवि-
णिमयं करेइ, करित्ता पडिभड गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहं सुहेण जेणेव
चपा नयरी तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद धन्यसार्थवाह ने वहां रह
कर अपनी क्रयाणक वस्तुओं का विक्रय किया और उससे प्राप्त द्रव्य
से और दूसरी वस्तुओं की खरीद। खरीद कर उसने उन्हें गाड़ी और
गाड़ों में भरा भरकर उन्हें जुनवाया और जुनवाकर फिर वह वहां से
चपानगरी की ओर वापिस चल दिया। (उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अ
भिसमन्नागए विउलाइ माणुस्सगाइ कामभोगाइ भुजमाणे विहरइ)

तेमहे धन्यसार्थवाहने सत्कार तेमज सम्मान कर्तुं सत्कार अने सम्मान
करीने राजाके 'ठाधपणु राजपुत्र तेमनी पासेधी राजकर ले नहि' ते भ्रा-
तृनी व्यवस्था करता तेमने पुष्क भाक्षीतु आज्ञापत्र लणी आण्यु त्यारपछी
तेने त्याधी नवानी आज्ञा आपी

(तण्ण से धण्णे सत्यवाहे भडविणिमय करेइ, करित्ता पडिभड गेण्हइ,
गेण्हित्ता सुह सुहेण जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छइ)

त्यारआइ धन्यसार्थवाहे त्या रहीने पोतानी क्रयाणक वस्तुओंने जेथी
अने तेनाथी जे धन भण्यु तेनाथी जीण वस्तुओं अरीही लीधी वस्तुओंनी
अरीह करीने तेहे अधी वस्तुओंनी अरीही करीने तेहे अधी वस्तुओंने गाडी
तेमज गाडाओंसा लरी अने त्यारपछी गाडी अने गाडाओंने नेतरावीने
त्याधी चपा नगरी तरइ पाछे खाना थये

(उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइ माणुस्सगाइ काम
भोगाइ भुजमाणे विहरइ)

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે સ્થિરિરાગમનમ્ । ધન્યઃ સાર્યમાને ધર્મશ્રવા
પતિબુદ્ધઃ સન્ જ્યેષ્ઠપુત્ર કુટુમ્બે સ્થાપયિત્વા મવનિન્, સામાયિકાદોનિ પદ્મશા
જ્ઞાનપીતે । વહ્નિ વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાય પાલયતિ, પાલયિત્વા માસિન્યા સલે-
લ્લનયા ૬૬૮માને જુષ્ઠા પદ્ધિ મક્તાનિ અનશનેન શિષ્યા કાલમામે ગ્રાહ્ય-
ક્રત્વા-

પાનગરી મેં આકર વહ અપને મિષ્ટ્ર, જ્ઞાનિ, સ્વજન, મધન્ધી પરિજનો
સે મિલો ઓર વિપુલ મનુષ્ય મધ મધન્ધી કામ મોર્ગોં કો મોગને લગા
(તેણ કાલેણ તેણ સમણ ચેરાગમર્ણ, ધણે સત્યવાહે ધમ્મ સોચ્છા જેઠ
પુત્ત કુટુબે ઠવેત્તા પવ્વહણ, સામાઙ્ગમાઙ્ગાઈ એકારસ અગાઈ વહ્નિ
વાસાણિ સામણપરિયાગ પાઞ્ણિત્તા માસિયાણ સલેહણાણ અન્નતરેસુ
દેવલોપસુ દેવત્તાણ ઉચવન્ને મહાવિદેહે વાસે સિઝ્ઝિહિઈ જાવ અત્ત
કરેહિઈ । એવ સ્વલ્લ જબૂ । સમણેણ મગવયા મહાવીરેણ જાવ સપ્પેણ
પન્નરસમસસ નાયજ્ઞયણસસ અયમઠ્ઠે પણ્ણત્તે તિવેમિ) ડસી કાલ ઓર
ડસી સમય મેં વહા પર સ્થવિરોં કા આગમન હુઓ । ધન્યસાર્યવાહ ને
ડનસે ધર્મ કા વ્યાખ્યાન સુના સુનકર વહ પ્રતિબુદ્ધ હો ગયા ઓર
પ્રતિબુદ્ધ હો કરકે ફિર વહ કુટુબ મેં અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો રલ્લકર દીક્ષિત
હોકરકે ડસને સામાયિક આદિ ગ્યારહ અર્ગોંકા અધ્યયન કિયા । અનેક
વર્ષોં તક શ્રામણ્ય પર્યાય કા પાલન કર ૧ માસ કી સલેલ્લના સે ૬૦
મક્તોં કા અનશન દ્વારા હેદન કરકે કાલ અવસર કાલ કરકે દેવ

અથ નગરીમા આવીને તે પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન, સખધી
પરિજનોને મળ્યો અને વિપુલ મનુષ્ય બનવા કામભોગો લોગવવા લાગ્યો
(તેણ કાલેણ તેણ સમણ ચેરાગમર્ણ ધણે સત્યવાહે ધમ્મ સોચ્છા જેઠ
પુત્ત કુટુબે ઠવેત્તા પવ્વહણ, સામાઙ્ગમાઙ્ગાઈ એકારસઅગાઈ વહ્નિ વાસાણિ
સામણપરિયાગ પાઞ્ણિ, પાઞ્ણિત્તા માસિયાણ સલેહણાણ અન્નતરેસુ દેવલોપસુ
દેવત્તાણ ઉચવન્ને મહાવિદેહે વાસે સિઝ્ઝિહિઈ, જાવ અત્ત કરેહિઈ । એવ સ્વલ્લ જબૂ !
સમણેણ મગવયા મહાવીરેણ જાવ સપ્પેણ પન્નરસમસસ અયમઠ્ઠે પણ્ણત્તે તિવેમિ)
તે કાળે અને તે સમયે તે નગરીમા ન્યવિરો પધાર્યા ધન્યસાર્યવાહે તેઓના
મુખથી ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળ્યું અને સાંભળીને તેને પ્રતિબોધ થયો પ્રતિબુદ્ધ
થઈને તેણે પોતાના કુટુંબના વડા તરીકે પોતાના મોટા પુત્રનીનીમણુક કરીને
દીક્ષા ગ્રહણ કરી દીક્ષા ગ્રહણ કર્યા બાદ તેણે સામાયિક વગેરે અગિયાર અંગોનું
અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષોં સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને એક
માસની સંલેખનાથી ૬૦ ભક્તોનું અનશન વડે હેદન કરીને, વખતે

अन्यतरेषु देवलोकेषु 'देवताए' देवतया=देवतयेन उपपन्नः । महाविदेहे वर्षे
सेतस्यति यावत्-सर्वदुःखानामन्त करिष्यति । एव खलु हे जम्बू । श्रमणेन भग-
वता महावीरेण यावत्-मिद्धिगतिनामयेय स्थान सम्प्राप्तेन पञ्चदशस्य ज्ञाताध्यय-
नस्य अयमर्थ =पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्त 'त्तिरेमि' इति ब्रवीमि व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ४ ॥

इति श्री विश्वविख्यात - जगद्बल्लभ-प्रसिद्धपाचकपञ्चदशभाषाकलित-
ललितकलापालापक -प्रविशुद्देगप्रपन्नैकग्रन्थनिर्मापक-रादिमानमर्दक
श्रीशाहू उत्पत्तिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-
कोल्हापुरराजगुरु-पालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री
घासीलालप्रतिविरचिताया श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्माभू-
तवर्णिण्याख्याया व्याख्याया पञ्चदशमध्ययन समाप्त ॥ १५ ॥

लोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हो गया । महाविदेह क्षेत्र से यह
सिद्ध अवस्था को प्राप्त करेगा-यावत् समस्त दुःखों का अन्त करने वाला
रोगा इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धगति
नाम के स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस पद्रहवे ज्ञाताध्ययन का यह
पूर्वोक्त भाव प्रज्ञप्त किया है । ऐसा मैंने उनके मुख से सुना है सो यह
वैसा तुमसे कहा है ॥ सू० ४ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराजकृत "ज्ञाता-
धर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्माभूतवर्णिनी व्याख्याका पद्रहवां
अध्ययन समाप्त ॥ १५ ॥

કાળ કરીને દેવલોકમાં દેવના પર્યાયથી જન્મ પામ્યો મહાવિદેહ ક્ષેત્રથી તે
સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત બધા દુઃખોનો તે અન્ત કરનાર થશે આ
રીતે હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓએ સિદ્ધિગતિ નામના
સ્થાનને મેળવી લીધું છે-આ પદરમાં જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત ભાવ નિરૂ-
પિત થયો છે એ જે પ્રમાણે તેઓશ્રીના મુખથી સાંભળ્યું છે તે પ્રમાણે જ
તમાની આગળ રજુ કર્યું છે ॥ સૂત્ર ૪ ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની
અનગારધર્માભૂતવર્ણી વ્યાખ્યાનુ પદરમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૫॥

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ મમયે સ્થિરાગમનમ્ । ધન્યઃ સાર્વધાદો ધર્મશ્રદ્ધા
પ્રતિબુદ્ધઃ સન્ જ્યેષ્ઠપુત્રં કુટુમ્બે સ્થાપયિત્વા પ્રવ્રજિતઃ, સામાયિકાતીતિ પતાવ્શા
જ્ઞાન્યધીતે । વહ્નિ વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાય પાલયતિ, પાલયિત્વા મામિન્યા સલે-
લ્લના ૬૬ત્માન જુષ્ઠા પદિ મક્તાનિ અનશનેન ત્રિચા કાત્માસે જાલ કન્ના-

વપાનગરી મેં આકર વહ અપને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબન્ધી પરિજનો
સે મિલો ઓર વિપુલ મનુષ્ય ભવ સબન્ધી કામ ભોગોં કો ભોગને લગા
(તેણ કાલેણ તેણ સમણ થેરાગમર્ણ, ઘણે સત્થવાહે ધમ્મ મોચ્છા
જેદ્ધ પુત્ત કુટુબે ઠવેત્તા પવ્વહણ, સામાદયમાદયાદ ઇકારસ અગાઠ વહ્નિ
વાસાણિ સામણપરિયાગ પાડણિત્તા માસિયાણ સલેહણાણ અન્નતરેસુ
દેવલોપસુ દેવતાણ ઉવવન્ને મહાવિદેહે વાસે સિઝ્ઝિહિહ જાવ અત
કરેહિહ । એવ સ્વલુ જબૂ । સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ
પન્નરસમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ) ડસી કાલ ઓર
ડસી સમય મેં વહા પર સ્થવિરોં કા આગમન હુઆ । ધન્યમાર્થવાહ ને
ઉનસે ધર્મ કા વ્યાખ્યાન સુના સુનકર વહ પ્રતિબુદ્ધ હો ગયા ઓર
પ્રતિબુદ્ધ હો કરકે ફિર વહ કુટુબ મેં અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર કો રલ્લકર દીક્ષિત
હોકરકે ડસને સામાયિક આદિ ગ્યારહ અગોકા અધ્યયન કિયા । અનેક
વર્ષોં તક શ્રામણ્ય પર્યાય કા પાલન કર ૧ મામ કી સલેલ્લના સે ૬૦
ભક્તોં કા અનશન દ્વારા હેદન કરકે કાલ અવસર કાલ કરકે દેવ

અથ નગરીમા આવીને તે પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબન્ધી
પરિજનોને મળ્યો અને વિપુલ મનુષ્ય બવના કામલોગો લોગવવા લાગ્યો

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ થેરાગમણ ઘણે સત્થવાહે ધમ્મ મોચ્છા જેદ્ધ
પુત્ત કુટુબે ઠવેત્તા પવ્વહણ, સામાદયમાદયાદ ઇકારસઅગાઠ વહ્નિ વાસાણિ
સામણપરિયાગ પાડણ, પાડણિત્તા માસિયાણ સલેહણાણ અન્નતરેસુ દેવલોપસુ
દેવતાણ ઉવવન્ને મહાવિદેહે વાસે સિઝ્ઝિહિહ, જાવ અત કરેહિહ । એવ સ્વલુ જબૂ ।
સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ પન્નરસમસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ)
તે કાળે અને તે સમયે તે નગરીમા અધિવેશ પધાર્યા ધન્યમાર્થવાહે તેઓના
મુખથી ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળ્યું અને સાંભળીને તેને પ્રતિબોધ થયો પ્રતિબુદ્ધ
થઈને તેણે પોતાના કુટુમ્બના વડા તરીકે પોતાના મોટા પુત્રનીનીમણુક કરીને
દીક્ષા ગ્રહણ કરી દીક્ષા ગ્રહણ કર્યા બાદ તેણે સામાયિક વગેરે અગિયાર અગોના
અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયન પાલન કરીને એક
માસની સહેજનાથી ૬૦ ભક્તોનું અનશન વડે હેદન કરીને ૧૫તે

सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ ५, विपुले माणु-
 स्सए जाव विहरंति । तएण तेसिं माहणाण अन्नया कयाई
 एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुट्ठावे
 समुप्पजित्था, एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हं इमे विउले
 धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ
 पकाम दाउं पकाम भोत्तु पकामं परिभाएउं त सेय खलु अम्हं
 देवाणुप्पिया । अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लि विउल असण
 पाण खाइम साइमं उवक्खडाविउ उवक्खडावित्ता परिभुज-
 माणाणं विहरित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति परिसु-
 णित्ता कल्लाकल्लि अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुल असणं उव-
 क्खडावेति, उवक्खडावित्ता परिभुजमाणा विहरति, तएणं
 तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारएजाए यावि
 होत्था, तएण सा नागसिरी विपुल असणं उवक्खडेति
 उवक्खडित्ता एगं महं सालइय तित्तालाउय बहुसभारसंजुत्तं
 नेहावगाढ उवक्खडेइ उवक्खडित्ता एग विटुय करयलसिं
 आसाएइ आसाइत्ता त खारं कडुयं अक्खज्ज अभोज्ज
 विसंवेभूय जाणित्ता एवं वयासी-धिरत्थु ण मम नागसिरीए
 अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिबोलियाए
 जीएणं मए सालइए बहुसंभारसभिए नेहावगाढे उवक्ख-
 डिए, सुवहुदव्वक्खए, नेहक्खए य कए, तं जइणं ममं
 जाउयाओ जाणिस्सति तो णं मम खिसिस्सति त जाव
 ताव मम जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेय एयं साल-

॥ अथ षोडशाध्ययनं प्रारभ्यते ॥

उक्त पञ्चदशाध्ययनम्, तत्र विषयमद्भोऽनर्थस्य कारणमित्युपदिष्टम् इह नोदं
शाध्ययने तु तद्विषयनिदानमनर्थस्य मूलं भवतीत्युच्यते, इत्येव संभन्धेन प्रसङ्गः
प्राप्तस्यास्याध्ययनस्य प्रथमं सूत्रमाह—'जइण भते !' इत्यादि ।

मूलम्—जइ णं भते । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव
सपत्तेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोल-
समस्स णं भते णायज्झयणस्स णं समणेण भगवया महा-
वीरेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जवू ।
तेणं कालेणं तेणं समएण चपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं
चपाए नयरीए वहिया उत्तरपुरत्थिमेदिसिभाए सुभूमिभागे
उज्जाणे होत्था, तत्थ णं चपा नयरीए तओ माहणा भायरी
परिवसंति, तं जहा-सोमे सोमदत्ते सोमभूई, अड्ढा जाव
अपरिभूया रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिया, तेसि ण माहणाणं
तओ भारियाओ होत्था, तजहा-नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी

सोलहवा अध्ययन प्रारभ

षट्त्रहवा अध्ययन समाप्त हो चुका-अब सोलहवा अध्ययन प्रारभ
होता है । षट्त्रहवे अध्ययन में विषयसंगत 'अनर्थ' का कारण कहा गया
है-अब सोलहवे अध्ययन में 'विषय' निदान 'अनर्थ' का कारण होता है
'यह स्पष्ट किया जायगा ।' इस संबन्ध से आया हुआ इस अध्ययन का
यह प्रथम सूत्र है 'जइण भते ।' इत्यादि ।

सोणमु अध्ययन प्रारंभ

पदरमु अध्ययन पुर थाय छे 'इवे' सोणमु अध्ययन प्रारंभ थाय छे
पदरमा अध्ययनमा विषयसंगत अनर्थनु 'कारण' जताववामा आओ छे 'इवे'
सोणमा अध्ययनमा विषय-निदान अनर्थनु कारण डोय छे, आ वात स्पष्ट
करवामा आवशे आ विषयने लगतु आ अध्ययननु पडेछु सूत्र आ छे—

जइण भते इत्यादि—

श्रीसुधर्मास्वामी कथयति-‘ एव खलु जन्तू ’ इत्यादि । एव खलु हे जन्तू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी आसीत्, तस्याः खलु चम्पाया नगर्या वहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे सुभूमिभागनाममुद्यानमासीत्, तत्र खलु चम्पाया नगर्या त्रयो ब्राह्मणा भ्रातरः परिवसन्ति. तद् यथा-(१) सोमः, (२) सोमदत्तः, (३) सोमभूतिः, ते किं भूताः-आढ्याः-अनन्तं यावद्-अपरिभूताः, तथा-‘ रिउन्वेय जाव ’ ऋग्वेद-यजुर्वेदमामवेदार्थवेदेषु साङ्गोराङ्गेषु सुपरिनिष्ठिताः । तेषां खलु ब्राह्मणानां तिस्रोभार्या आसन्, तद् यथा-(१) नागश्रीः,

सोलहवे ज्ञाताऽयन का ह भदंत ? उन्ही श्रमण भगवान महावीरने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार के जंजू स्वामी के प्रश्नका उत्तर देते हुए सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जन्तू ! (तेणं कालेण तेण समएण चपा नामं नयरी होत्था, तीसेण चपाए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे, होत्था, तत्थ ण चपाए नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसति) उस काल और उस समय में चपा नामकी नगरी थी । उस चपा के बाहिर ईशान कोण में सुभूमि भाग नाम का उद्यान था । उसी चपा नगरी में तीन ब्राह्मण भाइ रहते थे (त जहा) उनके नाम ये हैं-(सोमे सोमदत्ते सोमभूर्ह) सोम, सोमदत्त, और सोमभूति (अह्हा जाव अपरिभूया) ये सब धन धान्यादि सपन्न एवं जन मान्य (रिउन्वेय, जाव सुपरिनिष्ठिया) ये सबके सब ऋग्वेद आदि चारों वेदों

महावीर-हे जेजो, सिद्धिगति भेजवी बूझ्या छे-सोणमा ज्ञाताध्ययनने सो अर्थ निरूपित कर्छो छे ? आ रीते जणू स्वामीना प्रश्नने सालणीने सुधर्मा स्वामी तेमने उत्तर आपत्ता कहे छे जे छे जणू ।

(तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था, तीसेण चपाए वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे, होत्था तत्थ ण नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसति)

ते काले अने ते समये चपा नामे नगरी छती ते चपा नगरीनी गडार ध्यान जेणुमा सुभूमिभाग नामे उद्यान छत्तु ते चपा नगरीमा त्रछे ब्राह्मण भाइजो रहैता छता (तजहा) तेमना नाम आ प्रभाछे छे-(सोमे सोमदत्ते सोमभूर्ह) सोम, सोमदत्त, अने सोमभूति (अह्हा जाव अपरिभूया) तेजो त्रछे धनधान्य वगेरेथी सपन्न तेमज्जनमान्य छता (रिउन्वेय, जाव सुपरिनिष्ठिया) तेजो त्रछे ऋग्वेद वगेरे आरे वेदान्त आरा ज्ञाता छता (तेसि माहणा ण तओ भारियाओ होत्था त जहा-नागसिरी, भूपसिरी

इयं तित्तालाउ य बहुसंभारणेहकयं एगते गोवेत्तए अन्न
 सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए, एवं
 संपेहेइ संपेहिता त सालइय जाव गोवेइ, अन्न सालइयं
 महुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव
 सुहासणवरगयाण तं विपुलं असणं४ परिवेसेइ, तएणं ते
 माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोम्हा परम-
 सुइभूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था, तएण ताओ
 माहणोओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ त विपुल असणं
 ४ आहारेति आहारित्ता जेणेव सयाइ२ गेहाइ तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ ॥स्०१॥

टीका—श्रीजम्बूस्वामी श्रीसुधर्मस्वामिन पृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ! =
 हे भगवन् श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामयेय स्थानं समाप्तेन
 पञ्चदशस्य अयम्—उक्तरूपः, अर्थः प्रज्ञप्तः, षोडशस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन
 भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामयेय स्थानं समाप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?

टीकार्थ—(जइण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण
 पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स ण भते ? णाय
 ज्झयणस्सण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?
 एवं खलु जब्बू ?) श्री जम्बू स्वामी सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि भदन्त ।
 श्रमण भगवान् महावीरने जो कि सिद्धि गति नामक स्थानको प्राप्त हो
 चुके हैं पन्द्रहवें ज्ञानाध्ययनका यह पूर्वोक्तरूपसे अर्थ निरूपित किया है—तो

टीकार्थ—(जइण भते । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पन्नरस-
 मस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स ण भते ! णायज्झयणस्स ण
 समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जब्बू !)

श्री ४७ पू स्वामी सुधर्मा स्वामीने पूछे छे के छे बहत्त । श्रमण लग
 वान महावीरे के—जेओ सिद्धिगति नामक स्थानने जेजवी बुझ्या छे—पहरेभा
 ज्ञाताध्ययनने आ पूर्वोक्त रूपे अर्थ निरूपित क्यो छे तो ते

પ્રકામ દાતુ, પ્રકામ ભોક્તુ પ્રકામ પરિભાજયિતુમ્ તતઃ = તસ્માત્ શ્રેય = શ્રેયસ્કર સ્વલુ અસ્માક હે દેવાનુપ્રિયા ! અન્યોન્યસ્ય = પરસ્પરસ્ય ગૃહેષુ 'વહ્લાઋણિ' કલ્યાઋણ્ય પ્રતિદિસ વિપુલ = ગુહ્યમ્, અશન પાન શ્વાધ સ્વાધં 'ઉવક્ષઢાઠ' ઉપસ્કાર્યુપરિભુજ્ઞાનાનાં વિહર્તુમ્ । અન્યોન્યસ્ય=પરસ્પરસ્ય એત-મયે તે ત્રયો ભ્રાતરો વ્રાહ્મણાઃ પ્રતિશૃણ્વન્તિ=સ્વીકુર્વન્તિ પ્રતિશ્રુત્ય 'ઋણાઋણિ'

વસાઓ પ્રકામ દાઠ પ્રકામ ભોક્તુ પ્રકામ પરિભાજ-ત સેય સ્વલુ અમ્હ દેવાનુપ્રિયા । અન્નમન્નસ્સ ગિહેસુ ઋણાઋણિ વિડલ અમણ પાણ પાઠમ સાઠમ ઉવક્ષઢાઠિઠ) હે દેવાનુપ્રિયો ! અપને પાસ વિપુલમાત્રા મેં, ગણિમ, ધરિમ, મેય, એવ પરિચ્છેયરૂપ ચારોં પ્રકાર કા ધન હૈ, યાવત્ પદ્મરાગ આદિરૂપસ્વાપત્ય મી હેં, કનક, સુવર્ણ, રત્ન, મણિમૌક્તિક આદિ સત્ કુઠ હૈ-ઔર વહ્ દત્તના અધિક હૈ કિ સાત પીઢી તક મી યદિ સ્વૂચ દાન દિયા જાવે, થૈઠ ૨ સ્વૂચ સ્વાયા જાવે-ઔર ઉસકા હિસ્સા ભાગ મી કર દિયા જાવે-તૌ મી વહ્ સમાપ્ત નહી હો સકતા હૈ । ઇસલિયે હમ્ લોગોં કો ઉચિત્ત હૈ કિ હમ્ લોગ પ્રતિ દિન એક દૂસરે કે ઘર પર અશન, પાન, પાચ એવ સ્વાચરૂપ ચતુર્વિધ આહાર વિપુલ માત્રા મેં ધનવાવે ઔર (ઉવક્ષઢાઠિસ્ટા પરિભુજમાણાણ વિહરિસ્ટા) ધનવા કર ઉસ કા ભોજન કરે । (અન્નમન્નસ્સ એયમદ્ધ પહિસુણેતિ) ઇસ પ્રકાર કા આપસ કા વિચાર ઉન્હોને એક દૂસરે કા સ્વીકાર કર લિયા ।

જાપ આસત્તમાઓ કુઠપ્પમાઓ પ્રકામ દાઠ પ્રકામ ભોક્તુ પ્રકામ પરિભાજત સેય સ્વલુ અમ્હ દેવાનુપ્રિયા ! અન્નમન્નસ્મ ગિહેસુ ઋણાઋણિ વિડલ અસણ પાણ પાઠમ સાઠમ ઉવક્ષઢાઠિઠ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણી પાને પુઞ્ઞ પ્રમાણમા ગણિમ, ધરિમ, મેય, અને પરિચ્છેય રૂપ ચારે જાતનુ ધન છે યાવત્ પદ્મરાગ વગેરે રૂપ સ્વાપત્ય પણ છે કનક, સુવર્ણ, રત્ન, મણિ, મોતી, વગેરે બધુ છે-અને જે કંઈ છે તે જોઈતુ બધુ છે કે સાત પેઢી સુધી પણ જો પુઞ્ઞ પ્રમાણમા દાન કરવામા આવે છતાં તે ખૂટે નહિ એથી અમને એ યોગ્ય લાગે છે કે અમે બધા દરેક જ એકબીજાને દેર અશન, પાન, પાચ અને સ્વાધરૂપ ચાર જાતના આહારો પુઞ્ઞ પ્રમાણમા બનાવડાવીએ અને (ઉવક્ષઢાઠિસ્ટા પરિભુજમાણાણ વિહરિસ્ટા) બનાવડાવીને જમીએ (અન્નમન્નસ્સ એયમદ્ધ પહિસુણેતિ) આ રીતે બધાએ એકમત થઈને વાત સ્વીકારી લીધી

(૨) ભૂતશ્રી, (૩) યક્ષશ્રી, તા: કિં ભૂતા:—સુકુમારપાણિપાદા, યાવન-સર્વાંગ-સુન્દર્ય:, તેષાં સ્વલુ દ્વાપ્રગાનામિદા:—રૂમતીયા:, ત્રિપુલ્લાન માનુષ્યકાન યાવત્ કામભોગાન્ શુદ્ધાના વિદરન્તિ ।

તત: સ્વલુ તેષાં દ્વાપ્રગાનામન્યદા યદાવિદેહત: સમુપાગતાના યાવત્ અથ મેતદ્રૂપ,=વદ્યમાણસ્વરૂપ, મિથ=પરસ્પર, કથામમુદ્ધાપ:—ગર્ભાલાપ: સમુદપ ઘટ-અથ સ્વલુ હે દેવાનુમિયા: 'અસ્માકમિદ ત્રિપુલ ધન ગણિમધરિમમેયપરિ-ચ્છેદ્ય મેદાન્વતુર્મિથ યાવત્ 'સાવતેજ્જે' સ્વાપતેય - પદ્મરાગાદિરૂપ વા, અથ યાવત્પદ્મોદ્ય-અનન્નમુર્ચ્ચરત્નાદિક તથા-મૌક્તિકાદિક ચ વિદ્યતે, કિંભૂત તદિ ત્યાહ-'અલાહિ' પર્યાસ=પરિપૂર્ણ-યાવત્-આસત્તમાત્ કુલ્લવશાત્=સત્તમવશપર્યન્ત

કે અચ્છે જાનકાર થે । (તેસિણ માદ્દનાણ તઓ ખારિયાઓ તેવ્ધા-ત જહા-નાગસિરી, બૂયસિરી, જક્ષસિરી, સુકુમાલ જાવ તેસિ ણ માદ્દનાણ ઇદ્દાઓ ૫ ત્રિપુલે માં જાવ વિદરન્તિ) હન તીનો દ્વાપ્રગાનો કી તીન સ્ત્રિયા થી । ડનકે નામ યે હૈં ।-નાગ શ્રી, ભૂત શ્રી, ઓર યક્ષ શ્રી, યે સવ સુકુમાર કરચરણવાલી થી યાવત્ સર્વાંગ સુન્દર થી । યે તીનો દ્વાપ્રગાન હનકે સાથ મનુષ્યભવ સવન્ધી કામ ભાગોં કો ભોગતે હુપ આનદ સે રહતે થે । (તણ તેસિ માદ્દનાણ અન્નયા કયાઈં ઇગય ઓ સમુવાગયાણ જાવ હમેયારૂવે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા) ઇક દિન કી વાત હૈ કિ જવ યે તીનો ખાઈં ઇક જગહ ઘેઠે હુપ થે તથ હનકા પરસ્પર મૈં હસ પ્રકાર કા વિચાર ચલા-(અથ સ્વલુ દેવાણુપિયા । અમ્હ હમે વિડલે ધણે જાવ સાવતેજ્જે અલાહિજાવ આસત્તમાઓ કુલ-

જક્ષસિરી, સુકુમાર જાવ તેસિ ણ માદ્દનાણ ઇદ્દાઓ ૫ ત્રિપુલે માં જાવ વિદરન્તિ) આ ત્રણે બ્રાહ્મણોને ત્રણ સ્ત્રીઓ હતી તેમના નામો આ 'ત્રિભાણે' છે નાગશ્રી, ભૂતશ્રી, અને યક્ષશ્રી તેઓ ત્રણે સુકોમળ હાથ અને પગવાળી હતી અને બધા અગો તેમના સુન્દર હતા ત્રણે બ્રાહ્મણો તેમની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતા સુખેથી રહેતા હતા

(તણ તેસિ માદ્દનાણ અન્નયા કયાઈં ઇગયઓ સમુવાગયાણ જાવ હમેયારૂવે મિહો કહાસમુલ્લાવે સમુપ્પજિત્યા)

એક દિવસની વત છે કે તેઓ ત્રણે ભાઈ એક સ્થાને બેઠા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ ભાવનો વિચાર કરવા લાગ્યા કે—

—(અથ સ્વલુ દેવાણુપિયા ! અમ્હ હમે વિડલે ધણે જાવ //

આસાદયતિ, અસ્વાગ તત્ સાર કડુકમસ્થાગ્રમમોજ્ય વિપભૂત જ્ઞાતા એવમવાદીત્-
 ધિગસ્તુ મા નાગશ્રિયમન્યામપુણ્યા દુર્ભગા 'દુર્ભગસત્તા' દુર્ભગસત્વા દુર્ભગ=નિષ્ફલ
 સત્ત્વ=વલ યત્યાઃ સા તા વ્યર્થપરિણામિત્યર્થઃ 'દુર્ભગર્ણિયોલિ' દુર્ભગનિમ્બ
 શુલિકાનિમ્બફલિકા, તદ્વદ્ દુર્ભગા તા=જનૈરનાદરણીયામિત્યર્થઃ, જન દ્વિતીયાર્થે
 પછી માકૃતત્વાદ્, 'જી' યયા સ્વલુ મયા શારદિક મહુસમારદ્રવ્યસમૃત સ્નેહાવ-
 (ઉવક્ષ્ણહિત્તા એગ ધિન્દુય કરચલસિ આસાદૃ) જવ વહ તૈયાર શાક
 હો પુકા-તય ઉસને ઉસમેં સે એક તિન્દુ માત્ર શાક અપની હથેલી પર
 રવા ઓર ફિર ઉસે ચત્વા-(આસાદૃત્તા ત સાર કડુય અક્ષજ્જ અમોજ્જ
 વિસંભૂય જાગિત્તા એવ વયાસી-વિરત્થુ ણ મમ નાગસિરીય અહન્નાય,
 અપુન્નાય દુરભગાણ દુભગસત્તાણ દુભગર્ણિયોલિયાણ જીણમણ સારાણ
 વહુસમારસમિણ નેહાવગાદે ઉવક્ષ્ણહિ) ચલ્લકર ઉસે જ્ઞાત હુઆ
 કિ યહ શાક તો વહુન ગ્વારા હૈ, મહુત અધિક કડુઆ હૈ। જ્ઞાને કે
 યોગ્ય નહી હૈ બોજન મેં લેને કે લાયક નહી હૈ, યહ તો વિપ જૈસા હૈ
 એસા જાનકર ઉસને મન હી મન વિચાર ક્રિયા ઉસ વિચાર મેં। ઉસને
 કહા-સુક્ત નાગશ્રી કો ધિક્કાર હૈ, મેં અધન્યા ઓર અપુણ્યા હૈં। જનો
 કે દ્વારા આદર પાને યોગ્ય નહી હૈં। મેરે હમ ચલ કો વાર ૨ ધિક્કાર
 હો-મેરા યહ ચલ ચિલકુલ નિષ્ફલ હૈ મેને જો હસ શાક કે બનાને મેં
 હતના ઉચ્ચમ ક્રિયા હૈ વહ મેરા સર્વથા નિષ્ફલ ગયા। જિસ પ્રકાર નીમ-

ઉપર થી તરતુ હટુ (ઉવક્ષ્ણહિત્તા એગ ધિન્દુય કરચલસિ આસાદૃ) ન્યારે
 શાક તૈયાર થઈ ગયુ ત્યારે તેણે તેમાથી ફક્ત એક ટીપા જેટલુ શાક પોતાની-
 હથેળી ઉપર લાગે આખુ

(આસાદૃત્તા ત સાર કડુય અક્ષજ્જ અમોજ્જ વિસંભૂયે જાગિત્તા એવ
 વયાસી-વિરત્થુ ણ મમ નાગસિરીય અહન્નાય, અપુન્નાય, દુરભગાણ દુભગસત્તાણ
 દુભગર્ણિયોલિયાણ જીણમણ સારાણ વહુસમારસમિણ નેહાવગાદે ઉવક્ષ્ણહિ)

આજવાથી તેને લાગ્યુ કે આ શાક તો ખૂબ જ ખાર છે, ખૂબ જ કડવું
 છે, ખાવાલાયક નથી, લોજનમા કામ લાગે તેવુ નથી, આ તો ઝેર જેવુ છે,
 આમ જાણીને તેણે પોતાના મનમા જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતા તેણે
 પોતાની જાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-મેને-નાગશ્રીને-ધિક્કાર છે, હુ ખરેખર
 અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છુ હુ લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી
 મારા આ બળને વારવાર ધિક્કાર છે, મારા આ બળ સાવ નકામુ છે શાક
 તૈયાર કરવામા જેટલો મે શ્રમ કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો જેમ નીમ

फलमाकल्पं=मतिदितसम् अन्योन्यरूपं दृष्टेः विपुत्रमगनादिकमुपस्कारयन्ति । उप
स्कार्यं परिशुद्धानां विहरन्ति । ततः गच्छन्त्या नागश्रीयो ब्राह्मण्या अन्यदा=
क्रदाचिदन्यस्मिन् समये ' भोजनवारण ' भोजनवारक =भोजयितुं नियमितो दिवसो
भोजनवारक जातः=समायातथाप्यभयम्, ततः सन्तु सा नागश्रीः विपुत्रमगना
पानं खाद्यं स्वाद्यप्यस्करोति=निष्पादयति, उपस्कृत्य एकं महन् ' सान्दर्भ '
सारचित्त-सारेण रसेन चित्तं युक्तं गद्वा-शारदिक=शरदुत्तम ' तित्तालाउअ '
तित्तालापुरु=निष्पादयति तित्तरसयुक्ततुम्बीफलं, बहुसंभारसयुक्तं=बहुभिः=
अनेकविधैः संभारद्रव्यैः=साकादौ स्वादसुगन्धरिज्ञेयार्थं द्विद्विमेयिकाजीरमादीनि
व्याधारद्रव्याणि निक्षिप्यन्ते, तैर्मिश्रितं, ' णेहावगाढ ' स्नेहावगाढ=घृतादिमिश्रं
तम् (युक्तम्) ' उपस्त्वदे ' उपस्करोति, उपस्कृत्यैकं पिन्दुकं परवले समादाय

(पडिसुणिता कल्ला कल्लि अन्नमन्नस्स गिहेसु विउल असण ४ उवक्ख
डावेति) स्वीकार करके अब वे एक दूसरे के घर पर विपुल मात्रा में
निष्पन्न हुए अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाने पीने लगे । (तएण
तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोजनवारणं जाए यावि होत्था)
किसी एक दिन नागश्री ब्राह्मणी की भोजन बनाने की चारी आई
(तएण सा नागसिरी विउल असण ४ उवक्खडेति) सो उस दिन
उसने विपुल मात्रा में चारों प्रकार का आहार बनाया (उवक्खडित्ता
एगं महं सालइय तित्तालाउअ बहुसंभारसयुक्तं णेहावगाढ उवक्खडेइ)
आहार बनाकर फिर उसने शरद्वस्तु में उत्पन्न हुई अथवा रस से
संरस बनी हुई तित्तरसतुम्बी का शाक बनाया-और उसमें स्वाद एवं
सुगंध के निमित्त हींग, मैथी, जीरे आदि का वधार दिया । उसे खूब
अधिक घृत में छोंका था-इसलिये घृत उसके ऊपर तैर रहा था ।

(पडिसुणिता कल्ला कल्लि अन्नमन्नस्स गिहेसु विउल असण ४ उवक्खडावेति)

स्वीकार करने तेजो अशनीजने घर पुष्कल प्रमाणमा अशनपान वगेरे चार
जलाना आहारोने भावा-पीवा लाग्या

(तएण तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोजनवारणं जाए यावि होत्था)

कहाँ अश्वेद्विसे नागश्री ब्राह्मणीने खोजन तैयार करवाने वारे आब्यो
(तएण सा नागसिरी विउल असण ४ उवक्खडेति) तेजो ते दिवसे पुष्कल
प्रमाणमा चारे जलाना आहारो जनाव्या

(उवक्खडित्ता एगं महं सालइय तित्तालाउअ बहुसंभारसयुक्तं णेहावगाढ उपस्त्वदेइ)

आहार जनावीने तेजो शरद्वस्तुमा उत्पन्न थयेली अथवातो रसथी
संरस थयेली तित्तरसवाणी तुम्बीनु शाक जनाव्यु अने तेमा स्वाद अने
सुगंधीना भाटे हींग, मैथी, जीरे वगेरेना वधार दीया ते ॥

આસ્વાદયતિ, અસ્વાય તત્ સાર કઠુકમસ્ત્યાયમમોજ્ય વિષભૂત જ્ઞાતા એમવાદીત્-
ધિગસ્તુ મા નાગશ્રિયમઅન્યામપુણ્યા દુર્ભગા 'દુર્ભગસત્તા' દુર્ભગસત્તા દુર્ભગ=નિષ્ફલ
સત્ત્વ=વલ યસ્યાઃ સા તા વ્યર્થપરિશ્રમામિત્યર્થઃ 'દુર્ભગર્ણિવોલિ' દુર્ભગનિમ્બ-
ગુલિકાનિમ્બફલિકા, તદ્વદ્ દુર્ભગા તા=જનૈરનાદરણીયામિત્યર્થ, એન દ્વિતીયાર્થે
પઠી પ્રાકૃતત્તાત્, 'જી' યયા સ્વલ મયા શારદિક મહુસમારદ્રવ્યસમૃત સ્નેહાવ-

(ઉચ્ચસ્વરિત્તા એમ વિદ્યુત્ત કરચલસિ આસાઈ) જવ વહ તૈયાર શાક
હો જુલા-તય ઉસને ઉસમેં સે ઇક મિન્દુ માત્ર શાક અપની હથેલી પર
રખા ઓર ફિર ઉસે ચલા-(આસાઈત્તા ત સ્વાર કઠુય અસ્વજ્ઞ અમોજ્ઞ
વિસમ્ભૂય જાણિત્તા એવ વયાસી-ધિરત્યુ ણ મમ નાગસિરીય અહનાય, અપુનાય
દુર્ભગાઈ દુર્ભગસત્તાઈ દુર્ભગર્ણિવોલિયાઈ જીઈણ મઈ સાલઈય વહુસમારસમિઈ
નેહાવગાડે ઉચ્ચસ્વરિત્તા) ચલકર ઉસે જ્ઞાત હુઆ
કિ વહ શાક તો વહુન ગ્યારા હૈ, મહુત અધિક કઠુઆ હૈ। જાને કે
યોગ્ય નહી ઠે ઓજન મેં લેને કે લાયક નહી હૈ, વહ તો વિષ જૈસા હૈ
એસા જાનકર ઉસને મન હી મન વિચાર કિયા ઉસ વિચાર મેં ઉસને
કહા-મુક્ત નાગશ્રી કો ધિક્કાર હૈ, મે અધન્યા ઓર અપુણ્યા હૈ। જનોં
કે દ્વારા આદર પાને યોગ્ય નહીં હૈ। મેરે હમ ચલ કો વાર ૨ ધિક્કાર
હો-મેરા વહ વલ ચિલકુલ નિષ્ફલ હૈ મને જો હસ શાક કે વનાને મેં
હતના ઉચ્ચમ કિયા હૈ વહ મેરા સર્વથા નિષ્ફલ ગયા। જિસ પ્રકાર નીમ-

ઉપર ધી તરતુ હુતું (ઉચ્ચસ્વરિત્તા એમ વિદ્યુત્ત કરચલસિ આસાઈ) ન્યારે
શાક તૈયાર થઈ ગયુ ત્યારે તેણે તેમાથી ફક્ત એક ટીપા જેટલુ શાક પોતાની
હથેળી ઉપર લાંબે ચાખ્યુ

(આસાઈત્તા ત સ્વાર કઠુય અસ્વજ્ઞ અમોજ્ઞ વિસમ્ભૂય જાણિત્તા એવ
વયાસી-ધિરત્યુ ણ મમ નાગસિરીય અહનાય, અપુનાય, દુર્ભગાઈ દુર્ભગસત્તાઈ
દુર્ભગર્ણિવોલિયાઈ જીઈણ મઈ સાલઈય વહુસમારસમિઈ નેહાવગાડે ઉચ્ચસ્વરિત્તા)

આખવાથી તેને લાગ્યુ કે આ શાક તો ખૂબ જ ખાર છે, ખૂબ જ કડવું
છે, ખાવાલાયક નથી, ભોજનમા કામ લાગે તેવુ નથી, આ તો ઝેર જેવુ છે,
આમ જાણીને તેણે પોતાના મનમા જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતા તેણે
પોતાની બાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-મને-નાગશ્રીને-ધિક્કાર છે, હુ ખરેખર
અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છુ હુ લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી
મારા આ બળને વારવાર ધિક્કાર છે, મારા આ બળ સાવ નકામુ છે શાક
તૈયાર થાય છે તે મેં મન કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો જેમ તીમ-

ગાઢમુપસ્કૃત, તેન સુગુદ્રગ્યસયઃ-હિન્નનીરકાદિદ્રગ્યનાગઃ, સ્નેહસયઃ=ઘૃતાદિ
સયશ્ચકૃતઃ, તત્=તસ્માત્ યદિ સ્વહ મમ 'જાડયાઓ' યાત્રકઃ, દેવરમાર્ગઃ
જ્ઞાસ્યન્તિ, 'તોળ' તર્હિ સ્વહ મમ 'લિસિસ્મતિ' લિગિયન્તિ-નિન્દાં કોપ ચ
કરિષ્યન્તિ, તત્-તસ્માત્ યાગ્મમ યાત્રકા ન જાનન્તિ, તાગ્મમ શ્રેયઃ-ઉચિત
એતત્ શારદિક તિક્તોલાયુક મધુમારસ્નેહકૃતમ્ એકાન્તે 'ગોવેત્તણ' ગોપયિતુમ્,
અન્યત્ શારદિક મધુરાલાયુક મધુરતુમ્બીફલ યાત્ર સ્નેહાવગાઢમુપસ્કૃતમ્ । એ

કી નિચૌલી કિસી મનુષ્ય કી દૃષ્ટિ મેં આદર પાને યોગ્ય નહીં હોતી
હૈ બસી પ્રકાર મેં બી જનો ઢારા અનાદરણીય ઘની હૈ । જો મેંને શારદ
કાલિક અથવા સરસ હસ તુમી ફલ કા હિદ્ગુ, જીરકાદિ દ્રવ્યોં સે
યુક્ત ઓર ઘૃતાદિ સે યુક્ત શાક ધનાગા હૈ (સુગુદ્રગ્યસયઃ, નેહક્ષણ
ય કણ) હસ કે ધનાને મેં મેંને વ્યર્થ હી ગૃહત સે હિદ્ગુ જીરે મેથી આદિ
દ્રવ્ય કા ઓર ઘૃત કા બિનાજ ક્રિયા હૈ । (ત જહ્ણ મમ જાડયાઓ
જાણિસ્સતિ, તો, ણ મમ લિસિસ્સતિ) હસ ઘાત કો ઘદિ મેરી દેવરાની
જાનેગી તો વે મેરે ઉપર ગુસ્તા હોગી ઓર મેરી નિંદા કરેગી । (ત જાવ
તાવ મમ જાડયાઓ ણ જાણતિ તાવ મમ સેય ણય સાલહયં તિત્તા
લાડય વહુસમારણેહ કય ણગતે ગોવેત્તણ) હસલિયે મુજે અય યહી ઉચિત
હૈ કિ મેં હસ શારદિક તિક્તોલાયુ કે શાક કો જો વહુત સમાર એવ
ઘૃત ઢાલકર ધનાયા હૈ કિસી એકાન્ત સ્થાન મેં છુપાકર રાખ દૂ ઓર

હાની લીંબાળી માણસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી તે પ્રમાણે
હુ પત્ન માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એટલે કે હુ
લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છુ મે શરદ કાલિક અથવા સરસ
તુમ્બીના ફળતુ હીંગ, છર વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ધી વગેરેથી યુક્ત શાક
ખનાયુ છે (સુગુદ્ર ગ્વક્ષણ નેહક્ષણ ય કણ) એને તૈયાર કરવામા મે
વ્યર્થ હીંગ, છર, મેથી વગેરે તેમજ ધી વગેરે વસ્તુઓનો દુર્વ્યર્થ વર્થો છે
(ત જહ્ણ મમ જાડયાઓ જાણિસ્સતિ, તો ણ મમ લિસિસ્સતિ) બે માસ
દેરાણીને આ વાતની બાજુ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે ધરી અને
મારી નિંદા કરશે

(ત જાવ તાવ મમ જાડયાઓ ણ જાણતિ તાવ મમ સેય ણય સાલહયં
તિક્તોલાડય વહુ સમારણેહકય ણગતે ગોવેત્તણ)

એથી અત્યારે મને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિક્તોલાયુ
(કરવી તુબડી) ના શાક ને-કે બે પૂળ જ સરસ ધી નાખીને વધારવામા
આયુ છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યાએ

सपेक्षते=विचारयति, सपेक्ष्य तत् शारदिक यावद् तित्कालावुक्त गोपयति=कचित्
समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिक मधुरालाउयम्पस्करोति=रन्धयति शेषगारा
दिभिः संस्करोति । तेषां ब्राह्मणानां यावत् सुखासनवरगतानां निजनिजामने-
सुखोपविष्टानां तद् विपुलमशनपानं खाद्यं स्वाद्यं परिवेषयति=तेषां भोजनावसरे
भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः । ततः खलु ते ब्रह्माणाः 'जिमियभुत्तुत्तरगया' जिमित-

उसके रानपर (अन्न सालइय मधुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्ख
डेतए) दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी का शाक हींग, जीरे और मैथी
का बघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनालें (एव सपेहेइ, सपेहिता
त सालइ य जाव गोपेइ अन्न सालइय मधुरालाउय उवक्खडेइ तेसिं
महणाण ष्हायाण जाव सुहासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवे
सेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी
तुंबड़ी के बहुत सभार एव घृत युक्त शाक एतान्त में छुपाकर रख
दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी - का शाक हींग जीरे
और मैथी का बघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया । इनने में
वे तीनों ब्राह्मण स्नान आदि से निवृत्त कर भोजन शाला में आकर
अपने २ आसन पर शांति के साथ बैठ गये । उनके बैठते ही उसने
उन्हें अशन आदिरूप चारों प्रकार का आहार यालो में परोमा (तएण
ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्खा परम सुह-

मधुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्खडेत्तए) भील शारदिक भीडी तुणडीनु
धी उपर तरी रहु छे ओवु शाक हींग, ७३ अने मेथीमा बवारीने बनाई
(एव सपेहेइ, सपेहिता त सालाइ य जाव गोपेइ, अन्न सालइय मधुराला-
उय उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ष्हायाणं जाव सुहासनवरगयाण त विपुल
असण ४ परिवेसेइ)

आ ज्ञातनो तेहे विचार कथो, विचार करीने ते शारदिक कडवी तुण
डीना सरम धीमा बघारेला शाकने ओक तरई छुपावीने भूझी दीधु अने भील
शारदिक भीडी तुणडी-इंधी-नु हींग, ७३ अने मेथीनो बघार करीने उपर
धी तरतुं शाक बनावु ओटलाभा तो तेओ त्रहे ब्राह्मणो स्नान वगेरेथी
परवारीने लोअनशाणाभा आवीने पोतपोताना आसन उपर शांतिथी ओसी
गया तेभने ओसता ज तेहे तेओने अशन वगेरे इय आरे ज्ञातनो आहार
थाणीमा थीरस्थे

ગાદ્યમુપસ્કૃત, તેન સુચરુદ્રવ્યવસ્થા:-શિદ્ધીનીશાસ્ત્રિગણનામઃ,
 સમ્યક્કૃતઃ, તન્-તસ્માત્ યદિ સત્ત્વ મગ 'જાડયાઓ' યા
 શાસ્ત્રિયન્તિ, 'તોળ' તર્હિ સત્ત્વ મગ 'તિતિસ્મતિ' ગિગિર્યાઃ
 કરિષ્યન્તિ, તન્-તસ્માત્ ગાગ્મગ યાત્રા ન જ્ઞાનન્તિ, તાગ્મગ
 એતત્ શારદિક તિત્તોલાયુક મધુગમારસ્નેહકૃત્મ્ પ્કાન્તે 'ગોવેત્તપ
 અન્યત્ શારદિક મધુગલાયુક મધુસ્તુમ્વીકલ યાગ્મ સોદાગગાદ્યમુ

ફી નિચૌલી ફિસી મનુષ્ય કી દષ્ટિ મેં આદર પાને ગોચ્ય
 હૈ વસી પ્રકાર મેં બી જનો ઢારા અનાદરણીય થની હૈ । જો
 કાલિક અથવા સરસ હમ તુમી ફલ કા શિદ્ધુ, જીરકાદિ
 યુક્ત ઓર ઘૂતાદિ સે યુક્ત શાક પનાયા હૈ (સુચરુદ્રવ્યવસ્થા,
 ય કપ) હસ કે પનાને મેં મને વ્યર્થ હી વધુત સે શિદ્ધુ જીરે
 દ્રવ્ય કા ઓર ઘૂત કા વિનાજ ક્રિયા હૈ । (ત જહણ મમ
 જાણિસ્સતિ, તો, જ મમ રિસિસ્સતિ) હસ વાત કો યદિ મેરી
 જાનેગી તો વે મેરે ઉપર ગુસ્તા હોગી ઓર મેરી નિંદા કરેગી
 તાવ મમ જાડયાઓ જ જાણતિ તાવ મમ સેયં ણ્ય સાલહ
 લાઝમ વહુસમારણેક કય એગતે ગોવેત્તપ) હસલિયે મુઝે અવ ય
 હૈ કિ મેં હસ શારદિક તિત્તોલાયુ કે શાક કો જો વધુત સ
 ઘૂત ઢાલકર પનાયા હૈ કિસી એકાન્ત સ્થાન મેં છુપાકર રા

હાની લીખાગી માણસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી
 હું પણ માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એ
 લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છું મેં શરૂ કાલિક અ
 તુળીના ફળનું હોળ, છૂં વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ધી વગેરેથી
 બનાવ્યું છે (સુચરુદ્ર વ્યવસ્થા ય નેહવ્ય ય ય કપ) અને તૈયાર
 વ્યર્થ હોળ, છૂં, મેથી વગેરે તેમજ ધી વગેરે વસ્તુઓનો દુઃ-
 (ત જહણ મમ જાડયાઓ જાણિસ્સતિ, તો જ મમ રિસિસ્સતિ)
 દેશણીને આ વાતની બાજુ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે
 મારી નિંદા કરશે

(ત જાવ તાવ મમ જાડયાઓ જ જાણતિ તાવ મમ સેયં એ
 તિત્તોલાય વહુ સમારણેકય એગતે ગોવેત્તપ)

એથી અત્યારે મને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિ
 (હડવી તુબડી) ના શાક ને-કે જે જૂળ જ સરસ ધી નાખીને
 આવ્યું છે-એક વરદ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યા

सप्रेक्षते=विचारयति, सप्रेक्ष्य तत् शारदिक यावद् तित्कालावुक्त गोपयति=कचित्
समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिक मधुरालाउम्भुस्सरोति=रन्वयति शेषमारा
दिभिः संस्करोति । तेषा ब्राह्मणानां यावत् सुवासनवरगताना निजनिनामने-
सुखोपविष्टाना तद् विपुलमशनपान साध स्वाद्य परिस्वेषयति=तेषा भोजनावसरे
भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः । ततः खलु ते ब्रह्मणाः 'जिमियमुत्तरगया' जिमित-

उसके रानपर (अन्न सालइय मधुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्ख
डेत्तए) दूसरी शारदिक मधुर तुण्डी का शाक हींग, जीरे और मैथी
का बघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनाई (एव सपेहेइ, सपेहिता
त सालइ य जाव गोपेइ अन्न सालइय मधुरालाउय उवक्खडेइ तेसिं
महाणाण पहायाण जाव सुवासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवे
सेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी
तुण्डी के बहुत सभार एवं घृत युक्त शाक एकान्त में छुपाकर रख
दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुण्डी - का शाक हींग जीरे
और मैथी का बघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया । इनने में
वे तीनों ब्राह्मण भ्जान आदि से निरट कर भोजन शाला में आकर
अपने २ आसन पर शांति के साथ बैठ गये । उनके बैठते ही उसने
उन्हें अशन आदिरूप चारों प्रकार का आहार यालो में परोसा (तएण
ते माहणा जिमिय मुत्तरगया समाणा आयता चोक्खा परम सुइ-

मधुरालावय जाव नेहावगाढ उवक्खडेत्तए) भीउ शारदिक भीडी तुण्डीतु
धी उपर तरी १६ छे ओबु शाक हींग, ७१ अने मेथीमा बवारीने बनाई
(एव सपेहेइ, सपेहिता त सालाइ य जाव गोपेइ, अन्न सालइय मधुराला-
उय उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं पहायाणं जाव सुवासनवरगयाण त विपुल
असण ४ परिवेसेइ)

आ जतने तेले विचार क्यो, विचार करीने ते शारदिक कडवी तुण
डीना सरअ धीमा पघादेला शाकने ओक तरइ छुपावीने भूडी दीधु अने भीउ
शारदिक भीडी तुण्डी-इधी-तु डींग, ७१ अने मेथीने बघार करीने उपर
धी तरतु शाक बनाउय ओटलाभा तो तेओ जले ब्राह्मणे स्नान वगेदेथी
परवारीने बोअनथाणाभा आवीने चेतपोताना आसन उपर शांतिथी मेसी
गया तेमने मेसतां ७ तेले तेओने अशन वगेदे ३५ आरे जतने आहार

ગાદમુપમ્કૃત, તેન સુરુદ્વ્યસય:-દિઘ્વીરારિદ્વગ્નાશઃ, સ્નેહસયઃ=ઘૃતાદિ
સયશ્ચકૃતઃ, તત્=તસ્માત્ યદિ સ્વઽ મમ 'જાડયાઓ' યાત્રદા, દેવરામાયોઃ
જ્ઞાસ્યન્તિ, 'તોળ' તદિ સ્વઽ મમ 'લિસિસ્મતિ' રિગિન્યન્તિ-નિન્દા કોપ ચ
કરિષ્યન્તિ, તત્=તસ્માત્ યાગ્મમ યાત્રકા ન જ્ઞાનન્તિ, તાગ્મમ શ્રેયઃ-ઉચિતં
એતત્ શારદિક તિત્તોલાયુક મધુમમાસ્નેહકૃતમ્ એકાન્તે 'ગોવેત્તણ' ગોપયિતુમ્,
અન્યત્ શારદિક મધુસાલાયુક મધુસ્તુમ્વીફલ યાત્ર સ્નેહાગાદમુપમ્સ્ફર્તુમ્ । એવ

કી નિયૌલી કિસી મનુષ્ય કી દષ્ટિ મેં આદર પાને ગોચ્ય નહીં હોતી
હૈં ઉસી પ્રકાર મેં મીં જનોં દ્વારા અનાદરણીય ધની હૈં । જો મેંને શરદ
કાલિક અથવા સરસ હસ તુમી ફલ કા દિઘ્ગુ, જીરકાદિ દ્રવ્યોં સે
યુક્ત ઓર ઘૃતાદિ સે યુક્ત શાક ધનાયા હૈં (સુવદ્વક્ષણ, નેહક્ષણ
ય કણ) હસ કે ધનાને મેં મેંને વ્યર્થ હી ચટ્ટત સે દિઘ્ગુ જીરે મધી આદિ
દ્રવ્ય કા ઓર ઘૃત કા વિનાશ ક્રિયા હૈં । (ત જહ્ણ મમ જાડયાઓ
જાણિસ્સતિ, તો, જ મમ રિસિસ્સતિ) હસ પાત કો યદિ મેરી દેવરાની
જાનેગી તો વે મેરે ઉપર ગુસ્તા હોગી ઓર મેરી નિંદા કરેગી । (ત જાવ
તાવ મમ જાડયાઓ જ જાણતિ તાવ મમ સેય ઇય સાલહય તિત્તો
લાહય વહુસમારણેહ કય ઇગતે ગોવેત્તણ) હસલિયે મુક્કે અવ યતી ઉચિત
હૈં કિ મેં હસ શારદિક તિત્તોલાયુ કે શાક કો જો ચટ્ટત સમાર એવ
ઘૃત ડાલકર ધનાયા હૈં કિસી એકાન્ત સ્થાન મેં છુપાકર રાખ દૂં ઓર

ઝાની લીંઝાળી માણસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી તે પ્રમાણે
હું પણ માણસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એટલે કે હું
લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છું મેં શરદ કાલિક અથવા સરસ
તુળીના ફળતુ હીંગ, છઠ્ઠ વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ધી વગેરેથી યુક્ત શાક
ખનાવ્યું છે (સુવદ્વ વક્ષણ નેહક્ષણ ય કણ) એને તેયાર કરવામા મેં
વ્યર્થ' હીંગ, છઠ્ઠ, મેથી વગેરે તેમજ ધી વગેરે વસ્તુઓનો દુર્વ્યર્થ ઉપયોગ છે
(ત જહ્ણ મમ જાડયાઓ જાણિસ્સતિ, તો જ મમ રિસિસ્સતિ) બે મારા
દેરાણીને આ વાતની બાજુ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે ધરી અને
મારી નિંદા કરશે

(ત જાવ તાવ મમ જાડયાઓ જ જાણતિ તાવ મમ સેય ઇય સાલહય
તિત્તોલાહય વહુ સમારણેહકય ઇગતે ગોવેત્તણ)

એથી અત્યારે મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિત્તોલાયુ
(કઠલી તુળી) ના શાક ને-કે બે ખૂબ જ સરસ ધી નાખીને વધારવામા
આવ્યું છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની બચ્ચાએ (પાલકાંચ

उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरुवं जाव विहरंति,
परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिग्गया, तएणं
तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे
ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ,
तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए
पोरिसिए सज्झाय करेइ वीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसा-
मी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहिता तहेव धम्मघोसे येरं आपुच्छइ
जाव चपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे
जणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण
सा नागसिरी माहणी धम्मरुई एजमाण पासइ पासित्ता
तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्त-
कडुयस्स पट्टवणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ उट्टित्ता जणेव
भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्त-
कडुय च बहुसंभारसंभिय णेहावगाढ धम्मरुइस्स अणगा-
रस्स पटिग्गहसि सव्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई
अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ
पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं
पडिनिक्खमइ जणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्नपाण
पडिलेहेइ पडिलेहिता अन्नपाण करयलसि पडिदमेइ, तएणं
ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गवेणं

भुक्तोत्तरगताः भोजनानन्तरं रहिरागताः मन्तः 'आयता' आयताः कृतचुलकाः
'चोक्त्वा' चोक्ताः=मसालितहस्नमुवाः परमशुभिभूताः 'सकम्मसपउत्ता'
स्वरूपसमयुक्ता=स्वस्वकार्यसलग्ना जानागप्यभयत् । ततः सन्तु ताः ब्राह्मण्यः
स्नाता यायत् स्यालकारविभूषितास्तद् विपुत्रमशन पान खाय स्वाद्यम् आहार
यन्ति=आहारकुर्वन्ति भुञ्जते स्म । आहत्य, यत्रैव स्वकानि स्वगानि गृहाणि=
आवासभवनानि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वधर्ममयुक्ता जाता ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तेण कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नाम धेरा
जात्र बहुपरिवारा जेणेव चंपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे

भूया सकम्मसपउत्ता जाया याचि होत्था) आहार जय परोसा जा
चुका-तब उन सयने उसे खाया पीया-और खा पीकर जय ये निपट
चुके तब उन्होंने कुछा आदि कर अपने मुँह का प्रक्षालन किया-और
हाथों को साफ़ कर वे अपने २ कार्य में लग गये । (तएण ताओ माहः
णीओ ण्हायाओ जात्र विभूसियाओ त विपुल असण ४ आहारेति,
आहारित्ता जेणेव सयाइ-२ गेहाइ तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता
सकम्म सपउत्ताओ जायाओ) इसके बाद उन ब्रह्मणियोंने जो कि
पहिले से ही स्नान कर चुकी थी और अपने २ शरीर को सुन्दर वेष
भूषा से सुसज्जित किये हुए थी, उस विपुल अशनादिरूप चतुर्विध
आहार को खाया-और खाकर के फिर वे अपने २ वासभवनों में
चली गई-वहा जाकर अपने २ वे सब काममें लग गई ॥ सूत्र १ ॥

(तएण, ते माहणा, जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्त्वा परमसुख
भूया, सकम्मसपउत्ता जाया याचि होत्था)

आहार न्यादे पीरसाई गये। त्यादे तेओ। त्रछे जभ्या अने जभी पर
वारीने डोगणा वगेरे करीने हाथ भे साई कथी अने हाथ भे साई करीने
तेओ। त्रछे पोतपोताना काममा परेवाई गया

(तएण ताओ माहणीओ ण्हायाओ जात्र विभूसियाओ त विपुल असण ४ आहारित्ता
जेणेव सयाइ २ गेहाइ, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ)

त्यारभाइ ते अ हाणीओओ-डे-नेओओ पडेला स्नान करीने पोताना
शरीरने सुंदर वओथी शयुगार्थु डतु-ते पुङ्कण प्रभावमा जनाववामा आवेला,
अशन वगेरे इय बार जातने आहार कथी आहारथी परवारीने तेओ
पोतपोताना वासववनमा जती रही अने त्या जधने तेओ अवे पोतपोताना
हाथीमा परेवाई गई ॥ सू० १ ॥

उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरुवं जाव विहरति,
 परिता निग्गया, धम्मो कहिओ, परिता पडिगथा, तएण
 तेसिं धम्मघोसाण थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे
 ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेण खममाणे विहरइ,
 तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए
 पोरिसिए सज्झाय करेइ वीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसा-
 मी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहिता तहेव धम्मघोसे थेरं आपुच्छइ
 जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे
 जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण
 सा नागसिरी माहणी धम्मरुई एज्जमाण पासइ पासिता
 तस्स सालइयस्स बहुसंभारसभियस्स णेहावगाढस्स तित्त-
 कडुयस्स पट्टवणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ उट्टिता जेणेव
 भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता त सालइय तित्त
 कडुय च बहुसंभारसंभिय णेहावगाढ धम्मरुईस्स अणगा-
 रस्स पडिग्गहसि सव्वमेव निसिरइ, तएण से धम्मरुई
 अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ
 पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं
 पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छिता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्नपाण
 पडिलेहेइ पडिलेहिता अन्नपाण करयलसि पडिदम्भेइ, तएणं
 ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गधेण

શુક્તોત્તરાગતાઃ મોનનાનતરં યદ્વિગતાઃ મન્તાઃ 'આયતા' આનાતાઃ કૃતચુલકાઃ
'ચોક્ત્વા' ચોક્તાઃ=મસાન્નિદમ્નામ્ના પરમશુભિભૂતાઃ 'મસ્મમપડતા'
સ્વર્મસમયુક્તા=સ્વસ્વકાર્યતઃગ્ના જાતાપત્યમયરૂ । તાઃ સ્વલુતાઃ બ્રાહ્મણઃ
સ્નાતા યાસ્તુ રક્ષાલકારશિખીતામ્નાન્દુ વિપુલમગ્ન પાન યાગ સ્વાગમ્ આહાર
યતિ=આહારકુર્યન્તિ શુદ્ધતે સ્મ । આદિત્ય, યજીવ યજ્ઞાનિ સ્વાગાનિ ગૃહાણિ=
આવાસમયનાનિ તથૈવોપાગ-અન્તિ, ઉપાગત્ય સ્વર્મસમયુક્તા જાતા ॥ સૂ. ૧ ॥

મૂલમ્-તેણં કાલેણ તેણં સમપ્ણ ધર્મમ્મોસા નામ થેરા
જાવં બહુપરિવારા જેણેવ ચપા નામ નયરી જેણેવ સુભૂમિભાગે

શ્રૂયા સક્રમ્મસપડતા જાયા યાતિ હોત્યા) આટોર જય પરીસો જા
ચુકા-તથા ઉન સચને ઉસે યાયા પીયા-ઔર યા પીકર જય વે નિપટ
ચુકે તય ઉન્હોને કુછા આદિ કર અપને મુંદ કા પ્રક્ષાલન કિયા-ઔર
હાથોં કો સાફકર વે અપને ૨ કાર્ય મેં લગ ગયે । (તણ તાઓ માહ
ણીઓ પ્હાયાઓ જાવં વિશ્વસિયાઓ ત વિપુલ અસણ ૪ આહારેતિ,
આહારિત્તા જેણેવ સયાહ-૨ ગેહાહ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા
સક્રમ્મ સપડતાઓ જાયાઓ) હસકે ઘાદ ઉન વ્રહ્મણિયોંને જો કિ
પહિલે સે હી સ્નાન કર ચુકી થી ઔર અપને ૨ શરીર કો સુન્દર વેષ
શ્રૂયા સે સુસજ્જિત કિયે દુષ થી, ઉસ વિપુલ અશનાદિરૂપ ચતુર્વિધ
આહાર કો ખાયા-ઔર લાકર કે ફિર વે અપને ૨ વાસમયનોં મેં
ચલી-ગઈ-વહા જાકર અપને ૨ વે સવ કામમેં લગ ગઈ ॥ સૂત્ર ૧ ॥

(તણ તે માહણા, જિમિય શુક્તોત્તરાગયા સમાણા આયતા, ચોક્ત્વા પરમશુ
શ્રૂયા, સક્રમ્મસપડતા, જાયા યાતિ હોત્યા)

આહાર બ્યારે પીરસાઈ ગયો ત્યારે તેઓ ત્રણે જમ્યા અને જમી પર
વારીને કોગળા વગેરે કરીને હાથ મે સાફ કર્યા અને હાથ મે સાફ કરીને
તેઓ ત્રણે પોતપોતાના કામમાં પરોવાઈ ગયા

(તણ તાઓ માહણીઓ પ્હાયાઓ જાવં વિશ્વસિયાઓ ત વિપુલ અસણ ૪ આહારિત્તા
જેણેવ સયાહ ૨ ગેહાહ, તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા સક્રમ્મસપડતાઓ જાયાઓ)

ત્યારબાદ તે બ્રાહ્મણીઓએ-કે જેઓએ પહેલા સ્નાન કરીને પોતાના
શરીરને સુદર વસ્ત્રોથી શણગાર્યું હતું-તે પુષ્કળ પ્રમાણમાં ખનાવવામાં આવેલા
અંશન વગેરે રૂપ ચાર ભતનો આહાર કર્યો આહારથી પરવારીને તેઓ
પોતપોતાના વાસભવનમાં જતી રહી અને ત્યાં જઈને તેઓ સર્વે પોતપોતાના
કામોમાં પરોવાઈ ગઈ ॥ સૂ. ૧ ॥

उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरुवं जाव विहरति,
 परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएणं
 तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे
 ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ,
 तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए
 पोरिसिए सज्जाय करेइ वीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसा-
 मी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहिता तहेव धम्मघोसे थेर आपुच्छइ
 जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अढमाणे
 जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण
 ता नागसिरी माहणी धम्मरुई एजमाण पासइ पासित्ता
 तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्त-
 कडुयस्स पट्टवणट्टयाए हट्टुट्टा उट्टाए उट्टेइ उट्टित्ता जेणेव
 भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्त-
 कडुय च बहुसंभारसंभियं णेहावगाढ धम्मरुईस्स अणगा-
 रस्स पडिग्गहसि सब्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई
 अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्ठु णागसिरीए माहणीए गिहाओ
 पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं
 पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्नपाणं
 पडिलेहेइ पडिलेहित्ता अन्नपाण करयलसि पडिदम्मेइ, तएणं
 ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गधेण

અભિભૂયા સમાણા તઓ સાલહ્યાઓ જાવ નેહાવગાઢાઓ
 એગં વિંદુણં ગહાય કરયલસિ આમાણહ । તિત્તગં સારં કહુય
 અચ્ચજ્જં અમોજ્જં વિસમ્ભૂયં જાણિત્તા ધમ્મસહ અણગારં એવં
 વયાસી-જહ્ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! એવ સાલહ્ય જાવ
 નેહાવગાઢ આહારેસિ તો ણં તુમં અકાલે એવ જીવિયાઓ
 વવરોવિજ્જસિ, ત મા ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! હમં સાલહ્યં
 જાવ આહારેહિ, મા ણં તુમ અકાલે એવ જીવિયાઓ વવ-
 રોવિજ્જેહિ, ત ગચ્છ ણં તુમ દેવાણુપ્પિયા ! હમં સાલહ્યં
 એગંતમણાવાએ અચ્ચિત્તે થહિલે પરિટ્ટવેહિ પરિટ્ટવિત્તા અન્ન
 ફાસુય એસણિજ્જ અસણંપાણ સ્વાહમં સાહમં પહિગહિત્તા
 આહાર આહારેહિ ॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા—‘ તેણ કાલેણ ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धर्मघोषा
 नाम स्थविरा यावत्-बहुपरिवारा.-गुहसाधुपरिवारेण सहिता यत्रै चम्पा नाम
 नगरी, यत्रैव सुभूमिभागमुद्यान तत्रैवोपागच्छन्ति, अत्र ‘ धर्मघोषा ’ इति बहु-
 वचनमादरार्थं प्रयुक्तम्, उपागत्य यथा प्रतिरूप यावत्-अवगदमवगृह्य समयेन

તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ ઇત્યદિ ॥

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ) उस काल औ उस समय में
 (धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नयरी जेणेव
 सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता अहापडिरुव
 जाव विहरति-परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया-तएण
 तेसि धम्मघोसाण थेराण अतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराछे

(તે ણ કાલેણ તેણ સમણેણ) इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ) તે કાળે અને તે સમયે

(ધમ્મઘોસા નામ થેરા જાવ બહુપરિવારા જેણેવ ચપા નામ નયરી જેણેવ
 સુભૂમિભાગે ઉજ્જાણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા અહાપડિરુવ જાવ વિહરતિ
 પરિસા નિગ્ગયા, ધમ્મો કહિઓ, પરિસાપડિગયા, તણ તેસિ થેરાણ

તપસાઽઽત્માન ભાવયન્તો વિહરતિ-આસતેસ્મ । પરિપદ્ નિર્ગતા ધર્માઃ કથિત = ધર્મરૂઢા કથિતા પરિપદ્ પ્રતિગતા=ધર્મકથા શ્રવણાનન્તર પ્રતિનિવૃત્તા । તતઃ સ્વલ્પ તેષા ધમઘોષાણા સ્થવિરાણામન્તેવાસી ધમરુચિર્નામાનગારઃ ઉદારઃ પ્રધાનો યાવત્ સક્ષિપ્તવિપુલતેજોલેશ્યઃ=સક્ષિપ્તા શરીરાન્ત સઘોચિતા, વિપુલા=અનેકયોજન પ્રમિતક્ષેત્રસ્થિતપસ્તુદહનસમર્થા, તેજોલેશ્યા=વિશિષ્ટતેજોગ્ન્યલબ્ધિવિશેષો યેન સઃ

જાવ તેડલેસ્સે માસ માસેણ સમમાણે વિહરઈ) ધર્મ ઘોષ નામકે સ્થવિર યાવત્ અનેક પરિવાર સે યુક્ત હોકર જહા ચપા નગરી, ઓર ઉસમે જહાં વહ સુભૂમિભાગ નામ કા ઉગ્યાન યા વહાં આયે । વહા આકર કે ઉન્હોં ને વહાં ઠહરને કે લિયે અપને કાપાનુસાર આજ્ઞા માંગી ઘાદ મે વે વહા સપમ ઓર તપ સે આત્માકો ભાવિત કરતે હુગ ઠહર ગયે । ચપાનગરી કે સમસ્ત જન ઉન્હો વહના ણવ ધર્મકથા સુનાને કે લિયે વહાં આયે । ઉન્હોંને શુનચારિત્ર રૂપ ધર્મકા ઉપદેશ દિયા । ઉપદેશ શ્રવણ કર પરિપદ્ અપને ૨ સ્થાન પર પીછે ગઈ । ઇસ્કે અનન્તર ડન ધર્મઘોષ સ્થવિર કે અ તેવાસી જિનજ્ઞા નામ ધર્મસ્થિ અનાગાર યા વડે ઉદાર પ્રકૃતિ કે થે વિશિષ્ટ તપસ્યાઓં કો કિયા કરતે થે-ઉસકે પ્રમાવ સે ઇન્હેં તેજોલેશ્યા કો પ્રાપ્તિ હો ગઈ થી ઓર વહ તેજોલેશ્યા ઇન્હોંને અપને શરીર કે મીતર સક્ષિપ્ત કર રક્ષમી થી ઇસ તેજોલેશ્યા કા વહ સ્વભાવ હોતા હૈ કિ જય વહ શરીર મે યાહિર નિવલતી હૈ તો અનેક યોજન પ્રમિત ક્ષેત્ર મેં રહી હુઃ વસ્તુઓં કો નસ્મકર દેતી હૈ । માસ અપણ કી ઉપવાસ રૂપ તપસ્યા

અંતેવાસી ધર્મરૂઢ નામ અણગારે ઓરાલે જાવ તેડલેસ્સે માસ માસેણ સમમાણ વિહરઈ

ધર્મઘોષ નામના સ્થવિર પોતાના ઘણા પરિવારોની સાથે જ્યાં ચપા નગરી અને તેમા પણ કયા તે સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે ત્યાં રોકાવાની પોતાના આચાર મુજબ આજ્ઞા માંગી ત્યાર છી તેઓ ત્યાં પોતાના આત્માને તપ અને સયમથી ભાવિત કરતા રહેતા હતા જ્યાં ચપા નગરીના બધા લોકો તેમના વદન તેમજ ધર્મકથા શ્રવણ માટે ત્યાં આવ્યા તેઓશ્રીએ શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાંભળીને લોકો પોતાપોતાના નિવાસ સ્થાને જતા રહ્યા ત્યારપછી ધર્મઘોષ સ્થવિરના અંતેવાસી-એમતુ નામ ધર્મરૂઢિ અનાગાર હતું, જેઓ ખૂબ જ ઉદાર પ્રકૃતિના હતા, વિશિષ્ટ તપસ્યાઓ કરતા રહેતા હતા જેના પ્રભાવની એમણે તેજોલેશ્યા મેળવી હતી અને તેજોલેશ્યાને તેમણે પોતાના શરીરમા જ સંકેતી રાખી હતી આ તેજો-લેશ્યાનો પ્રભાવ આ જાતનો હોય છે કે બીજો તે શરીરની બહાર નીકળે છે ત્યારે ઘણા યોગીના ક્ષેત્રમા મૂકેલી વસ્તુઓને ભસ્મ કરી નાખે છે-આસક્ષપણની ઉપવાસ રૂપ તપસ્યાથી તેઓ

અભિભૂયા સમાણા તઓ સાલહ્યાઓ જાવ નેહાવગાઢાઓ
 એગં વિંદુણં ગહાય વરયલસિ આસાપહ । તિત્તગં સાર કદુયં
 અસ્વજ્જં અભોજ્જં તિસ્સમૂયં જાણિત્તા ધમ્મરુદ્ધ અણગાર એવં
 વયાસી-જહ્ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! એવ સાલહ્ય જાવ
 નેહાવગાઢ આહારેસિ તો ણં તુમં અકાલે ચેવ જીવિયાઓ
 વવરોવિજ્જસિ, તં મા ણ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! હમં સાલહ્ય
 જાવ આહારેહિ, મા ણં તુમં અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવ-
 રોવિજ્જેહિ, ત ગચ્છ ણં તુમ દેવાણુપ્પિયા ! હમ સાલહ્ય
 એગંતમણાવાએ અચ્ચિત્તે થડિલે પરિટ્ટવેહિ પરિટ્ટવિત્તા અન્ન
 ફાસુય એસણિજ્જ અસણંપાણ ખાહમ સાહમ પડિગહિત્તા
 આહારં આહારેહિ ॥ સૂ. ૨ ॥

ટીકા—‘તેણ કાલેણ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धर्मघोषा
 नाम स्थविरा यावत्-बहुपरिवारा.-बहुसाधुपरिवारेण सङ्गिता यत्रैव चप्पा नाम
 नगरी, यत्रैव सुभूमिभागमुद्यान तत्रोपागच्छन्ति, अत्र ‘धर्मघोषा’ इति बहु
 वचनमादरार्थं प्रयुक्तम्, उपागत्य यथा प्रतिरूप यावत्-अवगदहमवगृह्य समयेन

તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાવં-(તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ) उस काल और उस समय में
 (धम्म घोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चप्पा नाम नगरी जेणेव
 सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव
 जाव विहरति-परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया-तएण
 तेसिं धम्मघोसाण थेराण अतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराळे

(તે ણ કાલેણ તેણ સમણેણ) इत्यादि ।

ટીકાર્થ-(તેણ કાલેણ તેણ સમણેણ) તે કાળે અને તે સમયે

(ધમ્મઘોસા નામ થેરા જાવ બહુપરિવારા જેણેવ ચપ્પા નામ નગરી જેણેવ
 સુભૂમિભાગે ઉજ્જાણે તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા અહાપડિરૂવ જાવ વિહરતિ
 પરિસા નિગયા, ધમ્મો કહિઓ, પરિસાપડિગયા, તણે તેસિં ૧ થેરાણ

यावत्-न्यायः नगर्यामुच्चनीचमध्यमकुलानि यावदटन् यत्रैव नागश्रिया ब्राह्मण्या
एव तत्रैवानुपस्थितः ।

ततः यत्र सा नागश्री ब्राह्मणी धर्मरुचिमनगरम् एजमानम्-आगच्छन्त
पश्यति, दृष्ट्वा तस्य 'सालङ्क्यस्त' शारदिकस्य तित्तरुद्रकस्य=तित्तरुद्रकतुम्ब-
कस्य बहुसंभारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य 'पट्टवण्ड्याए' प्रस्थापनार्थं=परिष्ठा-
पनार्थं हस्तुष्टा 'उट्टाए' उत्थया=उत्थानक्रियया उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्रैव भक्तगृह
तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तद् शारदिक तित्तरुद्रकतुम्बक बहुसंभारसंभृत
स्नेहावगाढ धर्मरुचेरनगरस्य 'पडिगहसि' पतदग्रहे-पात्रे, सर्वमेव 'निसिरइ'

जिस प्रकार गौतम स्वामी श्री महाश्वर स्वामी से पूछकर आहार लेने
के लिये जाते थे उसी प्रकार इन्होंने धर्मघोष स्थविर से आहार लाने
के लिये आज्ञा मागी । आज्ञा प्राप्तकर ये चंपानगरी में उच्च नीच एवं
मध्यमकुलो में भ्रमण करते हुए जहाँ नागश्री ब्राह्मणी का घर था वहाँ
गये । नागश्री ब्राह्मणी ने इन्हें ज्योही आने हुए देखा (पासित्ता तस्स
सालङ्क्यस्त बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तरुद्रकस्य पट्टवण-
ड्याए हट्ट तुट्टा उट्टाए उट्टेइ उट्टित्ता जेणेव भत्तवरे तेणेव उवागच्छइ)
त्योही यह बहुतमार संभृत एव स्नेहावगाढ उसकडवी तुमडीका आहार
देने के लिये उत्थान क्रिया द्वारा-उठी-अर्थात् अपने में रही हुई उठने
की शक्ति से उठी और हट्ट तुष्ट होनी हुई जहाँ भोजन-गृह था वहाँ
गइ । (उवागच्छित्ता तं सालङ्क्यस्त कडुय च बहुसंभारसंभिय णेहा-
वगाढं धम्मरुच्यस्स अणगरस्स पडिगहसि सत्त्वमेव निसिरइ) वहाँ

स्वामीने पूछीने आहार लाववा भाटे नीकगता हुता तेमज तेओओ पंथु
आहार लाववा भाटे धर्मघोष स्थविरनी पाते आज्ञा मागी आज्ञा भेजवीने
तेओओ य'पा नगरीमा उच्चनीच अने मध्यम कुलोमा भ्रमण करता न्या
नागश्री ब्राह्मणीतु घर हुतु त्या गया नागश्री ब्राह्मणीने तेओओने 'आवता' लेया
'(पासित्ता तस्स सालङ्क्यस्त बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तरुद्रकस्य
पट्टवण्ड्याए हट्टतुट्टा उट्टाए उट्टेइ, उट्टित्ता जेणेव भत्तवरे तेणेव उवागच्छइ)
'त्यारे तरतज भरस पधारैवा धी तरने कडवी तुमडीने आहार आपवा
भाटे उत्थान क्रिया पडे जेणी थ'ओटवे के पोतानामा रहेवी जिमा ववाने ताकातयो
'ते जेणी य'अने हट्ट तेमज तुष्ट थती न्या 'लोअनशाणा हुती त्या गइ

(उवागच्छित्ता तं सालङ्क्यस्त कडुय च बहुसंभारसंभिय णेहावगाढ ध-
म्मरुच्यस्स अणगरस्स पडिगहसि सत्त्वमेव निसिरइ)

તથા, માસ=ત્રિશદ્દોરાત્મક કાલ માસેન=માસ-પણેન માગોપાસરૂપતઃ
 કર્મણા 'સ્વમમાણે' સ્વપન=ચાપન વિદરતિ । તતઃ ચત્તુ મ ધર્મરુચિનગારો
 માસક્ષણપારણકે પ્રથમાયા પૌરુષા 'સજ્જયં' સ્વાધ્યાય સૂત્રપાઠરૂપ ક્રોતિ,
 દ્વિતીયાયા પૌરુષ્યા ધ્યાનમ્ સૂત્રાર્થચિન્તનરૂપ ધ્યાયનિ-ક્રોતિ, ત્રય તથા ગૌતમ-
 સ્વામી, તથૈવ ગૌતમસ્વામીયત્ તૃતીયપૌરુષાં માઝનસ્થાણિપમાર્જયતિ, પ્રમાર્જ્ય
 માજનનાનિ 'ઉગાહેદ્' અપટ્ટહાતિ, અપટ્ટય તથૈવ ધર્મઘોષસ્થવિરિત્ત્રૈવોપાગન્ઠતિ,
 ઉપાગત્ય તથૈવ શ્રીમહાગીરસ્વામીન ગૌતમસ્વામિયદૈવ ધર્મઘોષ સ્થવિરિત્ત્રમાપન્ઠતિ,

સે, યે અપને ત્રિશત અહોરાત્રાત્મક કાલ કો ઉમ્મ સમય વ્યતીત કર
 રહે થે । અર્થાત્ એક મહીને કી તપસ્યા હન્દોને ઉસ સમય કર રહે થે-
 (તણ સે ધમ્મરૂઢ અણગારે માસસ્વમણપારણગસિ પદમાણ પોરિસીણ
 સજ્જાય કરેહ વીયાણ પોરિસીણ એવ જહા ગોયમસામી તહેવ ઉગાહેદ્,
 ઉગાહિત્તા તહેવ ધમ્મઘોસ થેર આપુચ્છહ, જાવ ચપાણ નયરીણ ઉચ્ચ
 નીય મજ્ઞિમકુલાહ જાવ અઢમાણે જેણેવ નાગસિરીણ માહણીણ ગિહે
 તેણેવ અણુપવિદ્ધે, તણ્ણ સા નાગસિરી માહણી ધમ્મરૂઢ એજ્જમાણ
 પાસહ) યે ધર્મરુચિ અનગાર માસક્ષણ કી પારણા કે દિનપ્રથમ પૌરુષી
 મેં સૂત્રપાઠ રૂપ સ્વા યાય, દ્વિતીય પૌરુષી મેં સૂત્રાર્થ ચિન્તન રૂપ ધ્યાન
 ઓર તૃતીય પૌરુષી મેં ગૌતમ સ્વામી કી તરહ ચસ્ત્રપાત્રો વા પ્રમાર્જન
 કરતે । હસ તરહ હન્દોને તૃતીય પૌરુષી મેં ચત્ત પાત્રો વા પ્રમાર્જન કર
 એપને પત્રોં કો ઉઠાયા ઓર ઉઠકર યે ધર્મઘોષ સ્થવિર કે પામ ગયે ।

જોતાના ત્રિશત અહોરાત્રાત્મક કાળને તે સમયે પસાર કરી રહ્યા હતા-એટલે
 કે તેઓ તે સમયે એક માસની તપસ્યા કરી રહ્યા હતા

(તણ સે ધમ્મરૂઢ અણગારે માસસ્વમણપારણગસિ પદમાણ પોરિસીણ સ
 જ્ઞાય કરેહ, વીયાણ પોરીસણ એવ જહા ગોયમસામી તહેવ ઉગાહેદ્, ઉગાહિત્તા
 તહેવ ધમ્મઘોસ થેર આપુચ્છહ, જાવ ચપાણ નયરીણ ઉચ્ચનીય મજ્ઞિમકુલાહ જાવ
 અઢમાણે જેણેવ નાગસિરીણ માહણીણ ગિહે તેણેવ અણુપવિદ્ધે, તણ સા નાગસિરી
 માહણી ધમ્મરૂઢ એજ્જમાણ પાસહ)

ધર્મરુચિ અનગાર ગૌતમ સ્વામીની જેમ પ્રથમ પૌરુષીમાં સૂત્રપાઠ રૂપ
 સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષીમાં સૂત્રાર્થ ચિન્તન રૂપ ધ્યાન અને તૃતીય પૌરુષીમાં
 વસ્ત્ર અને પાત્રોનું પ્રમાર્જન કરતા હતા, માસ ક્ષણનું જોતાના પારણના
 દિવસે પણ તેઓએ તૃતીય પૌરુષીમાં વસ્ત્ર-પોતાનું પ્રમાર્જન કરીને જોતાના
 પાત્રોને લીધા અને લઈને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે ગૌતમ

તથા, માસ=ત્રિશદ્ધોસાત્મક કાલ માસેન=માસનપણેન માગોપચાસરૂપત્વઃ
 કર્મણા 'સ્વમમાણે' ક્ષવયન્=ચારવન્ ગિહરતિ । તતઃ સન્દુ મ ધર્મરુચિત્તગારો
 માસક્ષણપારણકે પ્રથમાયા પૌરુષ્યા 'સજ્જયં' સ્વાધ્યાય સૂત્રપાઠરૂપ કરોતિ,
 દ્વિતીયાયા પૌરુષ્યા ધ્યાનમ્ સૂત્રાર્થચિન્તનરૂપ ધ્યાયતિ-કરોતિ, ત્ર્યયયા ગૌતમ-
 સ્વામી, તથૈવ ગૌતમસ્વામીયત્ તૃતીયપૌરુષ્યા યાજ્ઞાસ્થાણિપ્રમાર્જયતિ, પ્રમાર્જ્ય
 ભાજનાનિ 'ઉગ્રાહેઃ' અપૃહ્ણતિ, અપૃહ્ણયત્રૈવ ધર્મઘોષસ્થિતિર્મત્રૈવોપાગન્ઠતિ,
 ઉપાગત્ય તથૈવ શ્રીમહાગૌતમસ્વામીન ગૌતમસ્વામિદેવ ધર્મઘોષ સ્થિરિમાપ્નઠતિ,

સે, એ અપને ત્રિશત અહોરાત્રાત્મક કાલ કો ઉમ્મ સમય વ્યતીત કર
 રહે થે । અર્થાત્ એક મહીને કી તપસ્યા ઇન્દ્રોને ઉમ્મ સમય કર રહે થે-
 (તણ સે ધમ્મરુહ અળગારે માસસ્વમણપારણગસિ પદમાણ પોરિસીણ
 સજ્ઞાય કરેહ વીયાણ પોરિસીણ એવ જઠા ગોયમસામી તહેવ ઉગ્રાહેહ,
 ઉગ્રાહિતા તહેવ ધમ્મઘોસ થેર આપુચ્છહ, જાવ ચપાણ નયરીણ ઉચ્ચ
 નીય મઙ્ગિલ્લમકુલાહ જાવ અઢમાણે જેણેવ નાગસિરીણ માહ્ણીણ ગિહે
 તેણેવ અણુપવિઢે, તણ સા નાગસિરી માહ્ણી ધમ્મરુહ એજમાણ
 પાસહ) એ ધર્મરુચિ અનગાર માસક્ષણ કી પારણા કે દિનપ્રથમ પૌરુષી
 મેં સૂત્રપાઠ રૂપ સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષી મેં સૂત્રાર્થ ચિન્તન રૂપ ધ્યાન
 ઓર તૃતીય પૌરુષી મેં ગૌતમ સ્વામી કી તરહ વસ્ત્રપાત્રો ના પ્રમાર્જન
 કરતે । હસ તરહ ઇન્દ્રોને તૃતીય પૌરુષી મેં ત્રણ પાત્રો કા પ્રમાર્જન કર
 અપને પત્રો કો ઉઠાયા ઓર ઉઠકર એ ધર્મઘોષ સ્થિરિ કે પામ ગયે ।

પોતાના ત્રિશત અહોરાત્રાત્મક કાળને તે સમયે પસાર કરી રહ્યા હતા-એટલે
 કે તેઓ તે સમયે એક માસની તપસ્યા કરી રહ્યા હતા

(તણ સે ધમ્મરુહ અળગારે માસસ્વમણપારણગસિ પદમાણ પોરિસીણ સ
 જ્ઞાય કરેહ, વીયાણ પોરીસણ એવ જઠા ગોયમસામી તહેવ ઉગ્રાહેહ, ઉગ્રાહિતા
 તહેવ ધમ્મઘોસ થેર આપુચ્છહ, જાવ ચપાણ નયરીણ ઉચ્ચનીય મઙ્ગિલ્લમકુલાહ જાવ
 અઢમાણે જેણેવ નાગસિરીણ માહ્ણીણ ગિહે તેણેવ અણુપવિઢે, તણ સા નાગસિરી
 માહ્ણી ધમ્મરુહ એજમાણ પાસહ)

ધર્મરુચિ અનગાર ગૌતમ સ્વામીની જેમ પ્રથમ પૌરુષીમાં સૂત્રપાઠ રૂપ
 સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષીમાં સૂત્રાર્થ ચિન્તન રૂપ ધ્યાન અને તૃતીય પૌરુષીમાં
 વસ્ત્ર અને પાત્રોનું પ્રમાર્જન કરતા હતા, માસ ક્ષણનું પોતાના પાંચાણના
 દિવસે પણ તેઓએ તૃતીય પૌરુષીમાં વસ્ત્ર-પોતાનું પ્રમાર્જન કરીને પોતાના
 પાત્રોને લીધા અને લઈને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થિરિની ખાસે । જેમ ગૌતમ

રુચિનગારમેવમવદન્ यदि खलु त्वं हे देवानुप्रिय । एतद् शारदिकं यावत्-
तिक्तरुद्रकृतुम्भक यावत् स्नेहाग्नाढम् आहारयसि=आहार करिष्यसि, तर्हि खलु
त्वमकाले एव जीविताद् व्यपरोषिष्यसे' एतदशनेन मरणमश्वय प्राप्त्यसीत्यर्थ ।
वत्=तस्मात् मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय'। एतद् शारदिकं यावदाहाग, मा खलु

નિકલ કર ચપાનગરી કે ધીચો ધીચસે હોકર ચલ દિયે સો જહા સુભૂ-
મિભાગ નામ કા ઉગ્રાન થા વહા આ ગયે । વહા આકર વે અપને આ
ચાર્ય ધર્મઘોષ સચિર કે પાસ આયે વહા આકર ઉન્હોને ભિક્ષામેં પ્રાપ્ત
હુઆ આહાર ઘતાયા ઓર ઘતાને કે પાદ ઉસ શારદિક કડવી તુ યહી
કે યાવત્ સ્નેહાગ્નાઢ શાકુ કી ગધ સે અભિભૂત હોતે હુણ ઉન ધર્મઘોષ
આચાર્ય ને ઉમ શારદિક યાવત્ સ્નેહાગ્નાઢ શાકુ મેં સે એક પિન્દુ માત્ર
કો અપને હાથ કી દયેલી પર રખ કર ચલા (તિત્તગ ત્વાર કહુય
અખજ્જ અમોજ્જ વિસમ્ભૂયં જાણિત્તા ધમ્મરુદ્ અગગાર એવ વયાસી
-જ્ઞણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । એય સાલહ્ય જાવ ને હાવગાઢ આહારેમિ તો
ળ તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ) ચલતે હી " યહ
તિક્ત હૈં ક્ષાર સે યુક્ત હૈં કટુક હૈં અલાઘ્ય એવ અમોજ્જ હૈં તથા વિપમૂન
હૈં " એસા જાનર ધર્મરુચિ અનગાર સે ઉન્હોને એમા કહા હે દેવાનુ
પ્રિય । યદિ તુમ શારદિક કડવી તુ યહી કે વહુ સભાર સમૂત એવં
સ્નેહાગ્નાઢ હમ શાકુ કા આહાર કરોમે-તો નિશ્ચય સે વિના મૃત્યુ કે

નીકળીને અપા નગરીની વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થના બના સુભૂમિભાગ
નામે ઉગ્રાન હતુ ત્યા આબ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના આચાર્ય ધર્મઘોષ
સ્થવિરની પામે આબ્યા અને ત્યા આવીને તેમણે ભિક્ષામા પ્રાપ્ત થયેલા
આહારને ખતાવ્યો અને ખતાવીને તે શારદિક કડવી તૂળડીના સરસ વધારેલા
ધી તરતા શાકની સુવાસથી અભિભૂત થતા તે ધર્મઘોષ આચાર્યે તે શારદિક
સરસ વધારેલા ધી તરતા શાકને હવેળી ઉપર મૂકીને આખ્યુ

(તત્તગ ત્વાર કહુય અખજ્જ અમોજ્જ વિસમ્ભૂયં જાણિત્તા ધમ્મરુદ્ અગગાર
એવ વયાસી-જ્ઞણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । એય સાલહ્ય જાવ નેહાગ્નાઢ આહારેમિ
તો ણં તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ)

આખતા બ " આ તિક્ત છે, ખાર છે, કટુ છે, અલાઘ્ય તેમજ અલોભ્ય
છે તથા વિપમૂત છે " આવુ બણીને ધર્મરુચિ અનગારને તેઓએ આ પ્રમાણે
કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો તમે શારદિક કડવી તૂળડીના સરસ વધા
રેલા ધીતરતા શાકનો આહાર કરશો તો ચોક્કસ તમે કમોતે મરી જશો.

નિષ્ક્રિયતિ=પરિણામયતિ । તતઃ ગત્તુ મ ધર્મકારિણગાર 'અદાપજ્જત' યથા
પર્યાપ્તિ-ઉદરપૂર્તિયે પૂર્ણમેતદ્ એતિ કુત્તા=એતિ મનસિ વિમાત્ર્ય, નાગશ્રિયા બ્રાહ્મણ્યા
ગૃહાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામતિ-નિર્ગચ્છતિ પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય ચમ્પાયા નગર્યા મધ્યમ-પ્રેન પ્રતિ-
નિષ્ક્રામ્યતિ પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય યત્રેવ સુભૂમિભાગમુદ્યાન નૈવોપાગ-એતિ, ઉપાગત્ય ધર્મ
ઘોષસ્ય સ્થવિરસ્ય 'અદૂરસામન્તે =નાતિદૂરે નાતિમનીપે, અન્નપાન 'પહિલેહેદ્' પ્રતિ
લેખયતિ પ્રતિલેખ્ય અન્નપાન કરતલે પાત્ર મ્ત્યા પ્રતિદર્શયતિ । તતઃ સત્તુ તે ધર્મોપાઃ
સ્થવિરાસ્તસ્ય શારદિકસ્ય તિક્તમદુત્તમસ્ય યાત્તુ સ્નેહાગાદમ્ય ગધેનામિ
ભૂતાસન્તસ્તસ્માચ્છારદિકાદ્ યાત્તુ સ્નેહાગાદાદેક વિન્દુરુ ગૃહીત્વા કરતલે
કૃત્વા આસાદયતિ । તિક્તક ક્ષાર વદુરુષ્ અવાયમભોજ્ય વિપ્રભૂત જ્ઞાત્યા ધર્મ-

જાકર ઉસને ઉસ શારદિક કઢવી તુવડી કા ચટ્ટ સભાર સમૃત્ત એવ
સ્નેહાવગાદ શાક ધર્મરુચિ અનાગાર કે પાત્ર મેં સપ કા સપ ડાલ દિયા
(તણ સેધમ્મરુદ્ અણગારે અદાપજ્જતમિત્તિકટ્ટુ ણાગસિરીય મહિ-
ણીય મિહાઓ પહિનિવલ્લમહ) ઇસકે પાદ વે ધર્મરુચિ અનાગાર "યહ
ઉદર પૂર્તિ કે લિયે પર્યાપ્ત હૈ" એસા મનમેં સમજ્ઞ કર નાગશ્રી બ્રાહ્મણી
કે ઘર સે બાહર નિકલે પહિનિરામિત્તા ચપાળ નયરીય મજ્ઞ મજ્ઞેણ
પહિનિવલ્લમહ, જેણેવ સુભૂમિભાગે ઉજ્જાણે - તેણેવ ઉવાગચ્છટ્ટ, ઉ-
વાગચ્છિત્તા ધમ્મઘોસસ્સ અદૂરસામન્તે અન્નપોણ પહિલેહેદ્, પહિલે
હિત્તા અણ્ણપાણ કરચલસિ પહિદસેદ્, તણ સે ધમ્મઘોસા યેરા તસ્સ
સાલહસ્સ જાવ નેહાવગાદસ્સ ગધેણ અભિભૂયા સમાણા તાઓ સાલ
હયાઓ જાવ નેહાવગાદાઓ એગ વિન્દુગ ગહાય કરચલસિ આસાદૈ)

ત્યા જડને તેણે તે શારદિક કઢવી તુવડીનુ ખૂબ જ સરસ રીતે વધા
રેલુ તેમજ ધી તરતુ શાક લઈ આવી અને ત્યારપછી ધર્મરુચિ અનાગારના
પાત્રમા બધુ નાખી દીધુ

(તણ ધમ્મરુદ્ અણગારે અદાપજ્જતમિત્તિકટ્ટુ ણાગસિરીય મહિણીય
મિહાઓ પહિનિવલ્લમહ)

ત્યારપછી તે ધર્મરુચિ અનાગાર "આ ઉદર પોષણ માટે પર્યાપ્ત છે"
એવું બોલીને નાગશ્રી બ્રાહ્મણીના ઘેરથી બહાર નીકળ્યા

(પહિનિવલ્લમિત્તા ચપાળ નયરીય મજ્ઞ મજ્ઞેણ પહિનિવલ્લમહ, જેણેવ સુભૂમિ
ભાગે ઉજ્જાણે-તેણેવ ઉવાગચ્છટ્ટ, ઉવાગચ્છિત્તા ધમ્મઘોસસ્સ અદૂરસામન્તે અન્ન
પોણ પહિલેહેદ્, પહિલેહિત્તા અણ્ણપાણ કરચલસિ પહિદસેદ્, તણ સે ધમ્મ-
ઘોસા યેરા તસ્સ સાલહસ્સ જાવ નેહાવગાદસ્સ ગધેણ અભિભૂયા સમાણા તાઓ
સાલહયાઓ જાવ નેહાવગાદાઓ એગ વિન્દુગ ગહાય

રુચિમનનારમેવમવદન્ન યદિ સલ્લ ત્વ હે દેગાનુપ્રિય । એતદ્ શારદિક યાત્રત્-
તિક્તકુકુતુમ્બક યાત્ર સ્નેહાવગાઢમ્ આહારયસિ=આહાર કરિવ્યસિ, તર્હિ સલ્લ
ત્વમકાલે એવ જીવિતાદ્ વ્યપરોપિવ્યસે' એતદશનેન મરણમવશ્ય પ્રાપ્ત્યસીત્યર્થ ।
તત્=તસ્માત્ મા સલ્લ ત્વ હે દેગાનુપ્રિય ! એતદ્ શારદિક યાત્રદાહાગ્, મા સલ્લ

નિકલ કર ચપાનગરી કે ધીચો ધીચસે હોકર ચલ દિયે સો જહા સુભૂ-
મિભાગ નામ કા ઉગ્રાન થા વહા આ ગયે । વહા આકર વે અપને આ-
ચાર્ય ધર્મગોષ સ્થવિર કે પાસ આયે વહા આકર ડન્હોને ભિક્ષામે પ્રાપ્ત
હુઆ આહાર વતાયા ઓર વતાને કે વાદ ઉસ શારદિક કડવી તુ વડી
કે યાત્ર સ્નેહાવગાઢ શાક કી ગધ સે અભિભૂત હોતે હુણ ઉન ધર્મગોષ
આચાર્ય ને ઉસ શારદિક યાત્ર સ્નેહાવગાઢ શાક મે સે ણક બિન્દુ માત્ર
કો અપને હાથ કી હથેલી પર રલ્લ કર ચલ્લા (તિત્તગ લાર કહુય
અલ્લજ્જ અમોજ્જ વિસમ્ભૂય જાણિત્તા ધમ્મરુઢ અગગાર એવ વયાસી
-જ્ઞણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । એય સાલહય જાગ ને હાવગાઢ આહારેમિ તો
ણ તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ) ચલ્લે હી “ યહ
તિક્ત હેં ક્ષાર સે યુક્ત હે કડુક હે અગ્વાય એવ અમોજ્જ હે તથા વિપભૂત
હે ” એસા જાનર ધર્મરુચિ અનગાર સે ડન્હોને એમા કહા હે દેવાનુ
પ્રિય । યદિ તુમ શારદિક કડવી તુ વડી કે વહુ સમોર સમૂત એવં
સ્નેહાવગાઢ હસ શાક કા આહાર કરોગે-તો નિશ્ચય સે વિના મૃત્યુ કે

નીકગીને થયા નગરીની વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા બના સુભમિભાગ
નામે ઉગ્રાન હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓ પોતાના આચાર્ય ધર્મગોષ
સ્થવિરની પાસે આવ્યા અને ત્યાં આવીને તેમણે ભિક્ષામા પ્રાપ્ત થયેલા
આહારને ખતાવ્યો અને ખતાવાને તે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વધારેલા
ધી તરતા શાકની સુવાસથી અભિભૂત થતા તે ધર્મગોષ આચાર્ય તે શારદિક
સરસ વધારેલા ધી તરતા શાકને હથેળી ઉપર મૂકીને આપ્યું

(તિત્તગ લાર કહુય અલ્લજ્જ અમોજ્જ વિસમ્ભૂય જાણિત્તા ધમ્મરુઢ અગગારં
એવ વયાસી-જ્ઞણ તુમ દેવાણુપ્પિયા । એય સાલહય જાગ નેહાવગાઢ આહારેમિ
તો ણં તુમ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિજ્જસિ)

આખતા જ “ આ તિક્ત છે, ખાર છે, કડવું છે, અગ્વાય તેમજ અભોગ્ય
છે તથા વિપભૂત છે ” આવું બાણીને ધર્મરુચિ અનગારને તેઓએ આ પ્રમાણે
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો તમે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વધા
આહાર કરશો તો ચોક્કસ તમે કમોતે મરી જશો,

स्वराकार्णव जीविनाद् व्यपरोषण्यमा निगस्य । तन्=नस्माद् गच्छ सलु तं
 हे देवानुप्रिय । इदं शारदिक 'एगमणायाए' एगमन्ते=अनापाते=एकान्ते=
 निर्जनस्थाने, अनापाते=आपात=जीन्द्रियादिप्राणिनां संयोगस्तद्वर्जिते, अचित्ते=
 जीवरहिते, स्थण्डिले=भूमौ 'परिद्वेदि' परिष्ठापय, परिष्ठाप्यान्यत् प्रासुकमेषणीय=
 द्वावत्वारिंशदोपरहित, शुद्धम्-अशनपानखाद्यस्याग्रम् प्रतिगृह्य आहारमाहारमा॥सू० २॥

मूलम्-तएणं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोमेण थेरेणं एवं
 बुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमई,
 पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामते धडिह्ठ

सरजाओगे-(त मा ण तुमं देवानुप्पिया । इमं सालइय जाव आहारेहि
 मा ण तुम अकाले चैव जीवियाओ चवरोविज्जहि त गच्छण तुम
 देवानुप्पिया । इम सालइयं एगममणायाए अचित्ते थडिले पडिद्वेदि,
 परिद्वित्ता अन्नं फासुय एमणिज्जं असणं पाण स्वाइम साइम पडि
 गाहेत्ता आहार आहारेहि) इमन्निपे हे देवानुप्रिय ! तुम शारदिक
 फडवी तुषडी के शाक किसी एकान्न स्थानमें कि जहा जीन्द्रियादि
 प्राणिघोंको संचरण नहो—और जो अचित्त हो ऐसी भूमि पर परि-
 ष्ठापना कर आओ । और परिष्ठापना करके फिर प्रासुक एषणीय ४
 -४२ दोषो से रहित शुद्ध अशन, पान, खाद्य-स्वाद्य रूप दुमरे आहार
 को लेकर भोजन कर लो ॥ सू० २ ॥

(त मा ण तुमं देवानुप्पिया । इम सालइय जाव आहारेहि मा ण तुम अकाले
 चैव जीवियाओ चवरोविज्जहि त गच्छण तुम देवानुप्पिया । इम सालइय एग
 ममणायाए अचित्ते थडिले पडिद्वेदि, परिद्वित्ता अ न फासुय एमणिज्ज असणं
 पाण स्वाइम साइम पडिगाहिता आहार आहारेहि)

अथो हे देवानुप्रिय ! तमे आ शारदिक तूषरीना शाकने आशो नडि
 तथी अकाले तमोइ भरेषु पेषु थरो मडि आटे हे देवानुप्रिय ! तमे आ
 आ शारदिक फडवी तूषरीना शाकनी डेहपेषु ओकात्-निर्जन स्थानभा डे न्या
 द्विन्द्रियादि प्राणीआनु संचरण होय नडि अने ने, अचित्त होय अवी भूमि
 'उपर परिष्ठापना' करी आवो 'अने परिष्ठापेना' कथा 'आइ प्रासुक ओषणीय ४२
 'दोषोथी रहित शुद्ध अशन, पान, 'आद्य-स्वाद्य रूप' नीले 'आहार खाची ते
 आहार भक्षु करो ॥ सूत्र " २ " ॥

पडिलेहेइ, पडिलेहिता तओ सालाइयाओ, एगं- विदुग गहेइ
 गहिता थंडिलंसि निसिरइ तो णं तस्स सालइयस्स तित्तकडु-
 यस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेण बहूणि पिपीलियासहस्साणि पाउ-
 ँभूयाइ जा जहा य णं पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले
 चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ तएणं तस्स धम्मरुइस्स अणगा-
 रस्स इमेयारूवे अज्झरिथए ५ जाव ताव इमस्स सालइयस्स
 जाव एगंमि विंदुगंमि पक्खित्तमि अणेगाइं पिपीलियासहस्साइं
 ववरोविज्जाति तं जइ णं अह एय सालइय थंडिलसि सव्व
 निसिरामि तएणं बहूण पाणाणं ४ बहकारणं भविस्सइ, त
 सेय खल्ल ममेय सालइय जावगाढ सयमेव आहारेत्तए, मम
 चेव एएणं सररीरेणं णिज्जाउत्तिकट्टु एव संपेहेइ सपेहिता मुह-
 पोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहिता ससीसोवरियं काय पमज्जेइ २ तं
 सालइय तित्तकडुयं बहुनेहावगाढ विलमिव पन्नगभूतणं अ-
 प्पाणेणं सव्व सररीरकोट्टसि पक्खिवइ, तएणं तस्स धम्मरुइस्स
 त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समाणस्स मुहुत्ततरेण
 परिणममाणंसि सररीरगंसि वेयणा पाउंभूया उज्जला जाव दुरहि-
 यासा, तएण से धम्मरुची अणगारे अथामे अवुले अवीरिए
 अपुरिसक्कारपरक्कमे आधारणिज्जमित्तिकट्टु आयारभडग एगंते
 ठवेइ ठवित्ता थडिल्ल पडिलेहेइ, पडिलहिता दब्भसंधारगं
 संधारेइ सथारित्ता दब्भसंधान्ग दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरस्थाभि-
 मुहे सपलियकनिसुत्ते करंयलपरिग्गहिय एव वयासी-नमोऽधु,

स्वाकांक्ष्य जीविनाद् व्यपरोप्यन्मा त्रियस्य । तन्मन्माद् गच्छ सत्तु त्वं
 हे देवानुप्रिय । इदं शारदिक 'एगनमणावाण' पाकान्तेऽनापाते=एकान्ते=
 निर्जनस्थाने, अनापाते=आपातः=द्वीन्द्रियादिप्राणिनां सयोगस्तद्वर्जिते, अचित्ते=
 'जीवरहिते, स्थण्डिले=भूमौ 'परिद्वेदि' परिष्ठापय, परिष्ठाप्यान्त्यत् प्रासुकमेवणीयं=
 द्वाचत्वारिंशदोपरहित, शुद्धम्-अशनपानखाद्यस्वाद्यम् प्रतिगृह्य आहारमाहारया ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएण से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेण थेरेण एवं
 वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अतियाओ पडिनिक्खमई,
 पडिनिक्खमिक्खा सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामते थडिह्हे

सरजाभोगे—(त मा ण तुमं देवानुप्पिया । इमं सालइय जाव आहारेहि
 मा ण तुम अकाले चिय जीवियाओ चरोविज्जहि त गच्छण तुम
 देवानुप्पिया । इम सालइय एगनमणावाण अच्चित्ते थडिठे पडिद्वेदि,
 परिद्वित्ता अन्न फासुय एसणिज्ज असणं पाण स्वाइम साइम पडि
 गाहेत्ता आहार आहारेहि) इमलिये हे देवानुप्रिय ! तुम शारदिक
 कंडवी तुषडी के शाक किसी एकान्न स्थानमें कि जहा द्वीन्द्रियादि
 प्राणियोंको संचरण नहीं—और जो अचित्त हो ऐसी भूमि पर परि-
 ष्ठापना कर आओ । और परिष्ठापना करके फिर प्रासुक एवणीय ४
 ४२-दोषो से रहित शुद्ध अशन, पान, खाद्य-स्वाद्य रूप धर्मरे आहार
 को लेकर भोजन कर लो ॥ सू० २ ॥

(त माणं तुम देवानुप्पिया । इम सालइय जाव आहारेहि माण तुम अकाले
 चिय जीवियाओ चरोविज्जहि त गच्छण तुम देवानुप्पिया । इम सालइय एग
 नमणावाण अचित्ते थडिठे पडिद्वेदि, परिद्वित्ता अन्न फासुय एसणिज्ज असणं
 पाण स्वाइम साइम पडिगाहेत्ता आहार आहारेहि)

अथी डे देवानुप्रिय ! तमे आ शारदिक तूणडीना शाकने भाशे नडि
 तेथी अकाले तमाइ भरलु पलु थसे मंडि भाटे डे देवानुप्रिय ! तमे आ
 आ शारदिक कंडवी तूणडीना शाकनी कोषपलु अकाले=निर्जन स्थानभा डे न्या
 द्वीन्द्रियादि प्राणीओनु संचरणु डाय नडि अने ने अचित्त डाय ओवी भूमि
 उपर परिष्ठापना करी आवे । अने परिष्ठापना करी आइ प्रासुक अेषणीय ४२
 दोषोधी रहित शुद्ध अशन, पान, खाद्य-स्वाद्य रूप धर्मरे आहार खावी ते
 आहार अडलु करे ॥ सूत्र " २ " ॥

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसमारसभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन बहूनि पिपीलिका-
सहस्राणि पादुर्भूतानि, या यथा च 'ण' त=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य
विन्दुक पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ"
जीविताद् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो विद्युज्यते 'त्रियते' इत्यर्थः, ततः गल्ल=पिपी-
लिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्या-
त्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलाषरूपः, कल्पितः=
कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः सकल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य
शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकस्मिन् विन्दुके प्रसिप्ते सति, अनेकानि
पिपीलिकासहस्राणि 'ववरोविज्जति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो विद्युज्यते त्रियन्ते।

स्स बहूनेहावगाढस्स गन्धेण बहूणि पिपीलिगासहस्राणि पादुर्भूयाइ
जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले चैव जीवियाओ ववरो
विज्जइ) और आकर के उन्होने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर
और न अति समीप भूमि की प्रतिलेखना की। प्रतिलेखना करके फिर
उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुयडी के शाक में से एक विन्दुमात्र
शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया। तो इतने में ही
शारदिक तिक्तकटुवी तुयडी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गंध से
बहा हजारों कीड़िया एकट्ठी-एकत्रित-हो गई। उनमें से जिस कीड़ीने
जिस समय उसे खाया वह कीड़ी उसी समय वहां मर गई। (तएणं
तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारुवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इम-
स्स सालइयस्स जाव एगमि विन्दुगमि पक्खित्तमि अणेगाइ पिपीलिया

सहस्राणि पादुर्भूयाइ जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले चैव
जीवियाओ ववरोविज्जइ)

अने आवीने तेमहे सुभूमिभाग उद्यानथी वधारे इर पणु नडि अने
वधारे नल्लक पणु नडि जेवा स्थाने भूमिनी प्रतिलेखना करी प्रतिलेखना
करीने तेजोजे ते शारदिक-तिक्त कटुवी तूणडीना शाकमाथी जेक टीपा जेटुं
शाक दीधु अने लधने ते भूमिभाग उपर नाभी दीधु नाभतानी साथे ज
था शारदिक तिक्त-कटुवी तूणडीना धी तरता शाकनी सुवासथी हल्लरे कीडीजे
जेकडी थई गध तेजोमाथी जे जे कीडीजे ते शाकने भाधु छतु ते ते-तरतज
था भरी गध

तएण तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारुवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इम-
स्स सालइयस्स जाव एगमि विन्दुगमि पक्खित्तमि अणेगाइ पिपीलिया सहस्राइ

णं अरहताण जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं
सम धम्मायरियाण धम्मोवएसगाणं, पुढ्विपि णं मए धम्म-
घोसाणं थेराण अतिए सव्वेपाणाइवाए पच्चमखाए जावजीवाए
जाव परिग्गहे, इयाणिपि ण अह तेसिं चेव भगवंताण अंतियं
सव्व पाणाइवाइ पच्चमखामि जाव परिग्गह पच्चमखामि जाव-
जीवाए, जहा संदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामिति-
कट्टु आलोइयपडिक्खते समाहिपत्ते कालगए ॥ सू० ३ ॥

टीका—तत्र खटु स धर्मरुचिरनगारो धर्मघोषेण स्थितिरंगैरमुक्तः सन् धर्म
घोषस्य स्थितिरस्यान्तिकान्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागे
धानाद् अदूरसामन्ते=नानिदूरे नातीसमीपे स्थण्डिलं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य
तत्र=स्माद् शारदिकात् निक्त्तरुद्रात् तुम्भसादेकं सिन्दुकं गृह्णाति, गृहीत्वा
स्थण्डिले=भूमौ 'निसरइ' निवृजति=परिष्ठापयति । ततः खटु तस्य शारदिकस्य

तएण से धम्मरुई अणगारे इ यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसे ण
थेरेण एव वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ) वे
धर्म रुचि अनगार धर्म घोष से इस प्रकार कहे जाने पर धर्मघोष के
पास से चले आये (पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ
अदूर सामन्ते थडिल पडिलेहेइ, पडिलेहिंत्ता तओ सालइयाओ एग बिंदुग
गहेइ, गहिंत्ता थडलसि निसिरइ, तो ण तस्स सालइयस्स तित्त कडुय-

त एण से धम्मरुई अणगारे इत्यादि

टीकार्थ—(त एण) त्थारपथी

(से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेण थेरेण एव वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स
थेरस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ)

ते धर्मरुचि अनगार धर्मघोषणी आ वात सावणीने तेभणी पासिथी
आवता रह्य

(पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामन्ते थडिल पडिले-
हेइ, पडिलेहिंत्ता तओ सालइयाओ एग बिंदुग गहेइ, गहिंत्ता थडिलमि निसरइ,
तो ण तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुनेदायगादस्स गवेष ५ विनीळिगा

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसमारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन वहूनि पिपीलिका-
सहस्राणि प्रादुर्भूतानि, या यथा च 'ण' त=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य
बिन्दुकं पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ"
जीविताद् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो वियुज्यते 'म्रियते' इत्यर्थः, ततः खलु=पिपी-
लिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्या-
त्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलापरूपः, कल्पितः=
कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः सकल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य
शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकास्मिन् बिन्दुके प्रक्षिप्ते सति, अनेकानि
पिपीलिकासहस्राणि 'व्यपरोविज्जति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो वियुज्यते म्रियन्ते ।

स्स वहूनेहावगाढस्स गन्धेण वहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइ
जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले चैव जीवियाओ ववरो
विज्जइ) और आकर के उन्होंने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर
और न अति समीप भूमि की प्रतिछेखना की । प्रतिछेखना करके फिर
उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुवडी के शाक में से एक बिन्दुमात्र
शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया । तो इतने में ही
शारदिक तिक्तकटु तुवडी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गंध से
वहा हजारों कीड़िया एकट्ठी-एकत्रित-हो गई । उनमें से जिस कीड़ीने
जिस समय उसे खाया वह कीड़ी उसी समय वहां मर गई । (तएण
तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इम-
स्स सालइयस्स जाव एगमि बिन्दुगमि पक्खिस्समि अणेगाइ पिपीलिया

सहस्साणि पाउब्भूयाइ जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तथा अकाले चैव
जीवियाओ ववरोविज्जइ)

अने आवीने तेभण्ण सुभूमिभाज उद्यानथी वधारे इर पणु नहि अने
वधारे नल्लक पणु नहि जेवा स्थाने भूमिनी प्रतिछेखना करी प्रतिछेखना
करीने तेजोअे ते शारदिक-तिक्त कटुवी तुणडीना शाकभाथी अेक टीपा जेटुं
शाक दीधु अने लधमे ते भूमिभाज उपर नापी दीधु नापतानी साथे न
था शारदिक तिक्त-कटुवी तुणडीना धी तरता शाकनी सुवासथी हल्लरे कीडीअे
अेकडी थर्ध गधर् तेजोभाथी जे जे कीडीअे ते शाकने भाधु छतु ते ते तरतअ
था भरी गधर्

तएण तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इम-
स्स सालइयस्स जाव एगमि बिन्दुगमि पक्खिस्समि अणेगाइ पिपीलिया सहस्साइ

તત્=તસ્માદ્ यदि खल्वहमेतद् शारदिक 'थंडिलंसि' स्पष्टिष्ठे=भूमौ सर्व
 'निसिरामि' निष्ठजामि=परिष्ठापयामि, 'तोण' तर्हि खलु यद्गुणां प्राणानां
 प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=प्राणवन्तस्तेषां, तथाभूताना जीवाना तत्=तस्माद्
 भ्रेयः=भ्रेयस्करं खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकटुकान्नायुक्तं यावत्-स्नेहावगाढ स्वप्-
 मेव आहारयितुं=भोक्तुम्, ममैव 'एण' एतेन=तिक्ततुम्यकादारेण 'सरीरेण'
 शरीरं खलु 'णिज्जाउ' निर्पातुं=निर्गच्छतु नश्यतु 'त्तिस्सु' इति कृत्वा इति
 मनसि निधाय एवम्=अनेन प्रकारेण सप्रेक्षते=पुनः पुनर्विचारेण शरीरनिर्माणं कर्तुं

सहस्साहं चवरोविज्जति, त जइणं अह एय सालइय थडलसि सव्व
 'निसिरामि तएण बहुण पाणाण ४ वह कारण भविस्सइ त सेय खलु
 ममेय सालइय जाव गाढ सयमेव आहारेत्तए) इस तरह पिपीलिकाओं
 की विराधना देखकर धर्मरुचि अनगार को इस प्रकार आध्यात्मिक
 यावत् मनोगत सकल्प-विचार हुआ-यहा सरूपके चिन्तित, प्रार्थित,
 कल्पित इन तीन विशेषणों को ग्रहण कर ने के निमित्त सूत्र में ५ का
 अंक दिया है। जय इस शारदिक तिक्त कडवी तुबडी की शाक की
 एक बिन्दु मात्र जमीन पर डालने पर अनेक पिपीलिका सहस्र प्राणों
 से वियुक्त हो जाती हैं तो मैं जय इस शारदिक तिक्त कडवी तुबडी के
 शाकको पूरेरूपमें जमीन पर परिष्ठापित कर दूंगा तो अनेक प्राणियों ४
 के वह विराधना का कारण होगा इसलिये मुझे उचित है कि मैं ही
 इस शारदिक तिक्त कडवी तुबडी के इस बहुत मसालेदार एव स्नेहा-
 वगाढ बहुत घृतसे युक्त शाक को स्वयं आहार कर जाऊँ। (मम चेव
 एण सरीरेण णिज्जाउत्तिकट्टु एवं सपेहेइ सपेहिता मुहपोत्ति २

चवरोविज्जति, त जइणं अह एय सालइय थडलसि सव्वं निसिरामि तएणं बहुणं
 पाणाणं ४ वह कारणं भविस्सइ त सेय खलु ममेय सालइय जाव गाढ सयमेव आहारेत्तए

આ પ્રમાણે કીડીઓની વિરાધના બેઠને ધર્મરુચિ અનગારને આ બાતને।
 આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ કલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો અહીં સ કલ્પના ચિતિત,
 પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના અહણ માટે સૂત્રમાં ૫ નો અંક આપ
 વામાં આવ્યો છે-કે બ્યારે આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂળડીના શાકના ફક્ત
 એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી કીડીઓ હબ્બરો પ્રાણોથી વીયુક્ત
 થઈ બચ છે ત્યારે હું શારદિક કડવી તૂળડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર
 નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનું કારણ થશે એથી મને
 એજ થોડ્ય લાગે છે કે હું આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂળડીના આ સરસ
 મસાલાવાળા અને ઘી તરતા શાકને ખાતે જ આઈ બહિ

निश्चिनुते । सप्रेक्ष्य-‘ मुहपोत्तिय ’ मुखपोत्तिका=सदोरकमुखवस्त्रिका रजोहरणं च प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य ‘ ससीसोवरिय ’ सशीषोपरिक=चरणतलाद् मस्तकोपरि-
भागपर्यन्त काय=शरीर, ‘ पमज्जेइ ’ प्रमार्जयति, प्रमार्ज्य तद् शारदिक तित्तरुद्धक
बहुसमारसभृत स्नेहावगाढ विलमिव पन्नगभूतेन आत्मना सर्वशरीरकोष्ठके=उदरे
प्रक्षिपति मुखस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहितमाहारयतीत्यर्थः । ततः खलु तस्य धर्मरुचेस्तद्

पडिलेहेइ, पडिलेहिता ससीसोवरिय काय पमज्जेइ पमज्जित्ता तं सा-
लइय तित्तरुद्धय बहुनेहावगाढ विलमिव पन्नगभूएण अप्पाणेण सर्व
सरीरकोट्टसि पक्खिवइ) मेरा ही शरीर इस तित्तरुद्ध तुवडी के
आहार से नाश होवे इस प्रकार उन्होंने अपने मनमें बार २ सोचा
सोचकर अपने शरीर के निर्माण करने का उन्होंने निश्चय कर लिया ।
निश्चय करने के अनन्तर सदोरक मुखवस्त्रिका एवं रजोहरण इनकी
उन्होंने प्रतिलेखना करके फिर वे चरण तल से लेकर मस्तकोपरिभाग
पर्यन्त तक के समस्त अपने शरीर की प्रमार्जना करके उन्होंने उस
शारदिक तित्तरुद्ध तुवडी के बहुत मसाला से युक्त एवं स्नेहावगाढ
बहुत घी से युक्त समस्त शाक का आहार कर लिया-जिस प्रकार
सर्प जब बिल में प्रविष्ट होता है तब बिल के दोनों पार्श्वभागों को स्पर्श
नहीं करता हुआ उसमें सीधा प्रविष्ट हो जाता है-उसी तरह वह
शाक रूप सर्प भी मुख रूप बिल के दोनों पार्श्वभागों को स्पर्श नहीं
करता हुआ सीधा गले से होकर पेट में चला गया । (तएणं तस्स

(मम चेव एण सरीरेण णिज्जाउत्ति कट्ठु एव सपेहेइ, सपेहिता मुहपो-
त्तिय २ पडिलेहेइ, पडिलेहिता ससिसोवरिय काय पमज्जेइ पमज्जित्ता त
सालइय तित्तरुद्धय बहुनेहावगाढ विलमिव पन्नगभूएण अप्पाणेणं सर्व सरीर
कोट्टसि पक्खिवइ)

भाइ शरीर ७ आ तित्तरुद्ध कडवी तूणडीना आहारथी नष्ट थाय आ रीते
तेणे पोताना मनभा बार बार विचार कथी विचारिने पोताना शरीरने नष्ट
करवाना तेमणे भक्ष्य विचार कथी आइ तेणे सदोरक मुखवस्त्रिका अने रजो-
हरणुनी तेमणे प्रतिवेचना करी प्रतिवेचना करिने तेमणे पगना तजियाथी
भांडीने मस्तक सुधीना पोताना आभा शरीरनी प्रमार्जना करी त्यारे तेमणे
ते शारदिक तित्तरुद्ध कडवी तूणडीना सरस मसालावाणा अने उपर घी तरता
अथा खाकने आहार करी लीधा जेवी रीते साय ज्यारे दरमा प्रवेशे छे
त्यारे दरना अने पार्श्वभागने स्पर्श कथी वगर तेमा सीधे प्रविष्ट थय
अथ छे तेमजे ते शाक इथी साय पणु अथ इथी दरना अने पार्श्वभागने
स्पर्श वगर सीधु गणाभा थयने पेटमा जर्तु रक्षु

યત્-તસ્માદ્ यदि खल्वहमेतद् शारदिकं 'थंडलसि' स्पण्डिते=भूमौ सर्व
 'निसिरामि' निष्ठाजामि=परिष्ठापयामि, 'तोणं' तर्हि खलु यद्वा प्राणानो=
 प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=माण्यन्तस्तेषां, तथाभूतानां जीवानां यत्-तस्माद्
 श्रेयः=श्रेयस्कर खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकटुकात्यायुकं यावत्-स्नेहावगाढ स्वप्न-
 मेव आहारयितुं=भोक्तुम्, ममैव 'एण' एतेन=तिक्तवृक्षकाहारेण 'सरीरेण'
 शरीरं खलु 'णिज्जाउ' निर्यातु=निर्गच्छतु नश्यतु 'तिमद्' इति कृत्वा इति
 मनसि निधाय एयम्=अनेन प्रकारेण सप्रेक्षते=पुनः पुनर्निचारेण शरीरनिर्माणं कर्तुं

સહસ્સાહં વવરોવિજ્જતિ, ત જહણં અહં ણ્ય સાલહ્ય થંડલસિ સવ્વ
 'નિસિરામિ તણં' યહુણ પાણાણ ૪ યદ્દ કારણં મવિસ્સહ ત સેય સલ્લ
 મમેય સાલહ્ય જાવ ગાઢ સયમેવ આહારેણ) હસ તરહ પિપીલિકાઓ
 'કી વિરાધના' દેવકર, ધર્મરુચિ અનગાર કો હસ પ્રકાર આધ્યાત્મિક
 યાવત્ મનોગત સકલ્પ-વિચાર હુઆ-યહા સકલ્પકે ચિન્તિત, પ્રાર્થિત,
 કલ્પિત હન ત્રીન વિશેષણોં કો ગ્રહણ કર ને કે નિમિત્ત સૂત્ર મેં ૫ કા
 ધક દિયા હૈ । જય હસ શારદિક તિક્ત કટવી તુવડી કી શાક કી
 'એક ચિન્દુ માત્ર જમીન પર ઢાલને પર અનેક પિપીલિકા સહસ્ર પ્રાણોં
 સે વિયુક્ત હો જાતી હૈં તો મૈં જય હસ શારદિક તિક્ત કટવી તુવડી કી
 શાકકો પૂરેરૂપમેં જમીન પર પરિષ્ઠાપિત કર દૂંગા તો અનેક પ્રાણીયોં ૪
 કે વહ વિરાધના કા કારણ હોગા હસલિચે મુક્તે ઉચિત હૈ કિ મૈં હી
 હસ શારદિક તિક્ત કટવી તુવડી કે હસ યદ્યુત મસાલેદાર એવ સ્નેહ-
 વગાઢ યદ્યુત ધૂતસે યુક્ત શાક કો સ્વય આહાર કર જાઁ । (મમ એવ
 એણ સરીરેણ ણિજ્ઞાઉત્તિકદ્દુદ્ધ એવં સપેહેહ સપેહિત્તા મુહપોત્તિય ૨

વવરોવિજ્જતિ, ત જહણં અહં ણ્ય સાલહ્ય થંડલસિ સવ્વ નિસિરામિ તણં' યહુણ
 પાણાણં ૪ વહ કારણં મવિસ્સહ ત સેય સલ્લ મમેય સાલહ્ય જાવ ગાઢ સયમેવ આહારેણ

આ પ્રમાણે ક્રીડીઓની વિરાધના બેધને ધર્મરુચિ અનગારને આ બ્રહ્મતો
 આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો અહીં સકલ્પના ચિન્તિત,
 પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના ગ્રહણ માટે સૂત્રમાં ૫ નો અર્થ આપ
 વામાં આવ્યો છે-કે બ્યારે આ શારદિક તિક્ત કટવી તૂબડીના શાકના કટુ
 એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી ક્રીડીઓ હબરો પ્રાણીથી વિયુક્ત
 થઈ બચ છે ત્યારે હું શારદિક કટવી તૂબડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર
 નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનું કારણ થશે એથી મને
 એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું આ શારદિક તિક્ત કટવી તૂબડીના આ સરસ
 મસાલાવાળા અને ધી તરતા શાકને ચોતે જ આઈ બહ

मित्यर्थः, एकाग्रतेः साधयति, स्यादिति स्यादिति=सत्तारम्भमि प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य दर्शन स्तारक 'सधारेड' सत्तृणानि=मात्तृत्त उगोति सस्तीर्य, दर्भ-सस्तारक दूरोदति=मारोदति, दूस्व पौरस्त्वभिमुत्त=पूर्वदिग्भिमुत्त, 'मपलियं-कनिमन्ने' सपलपङ्क निपण्णः=पञ्चामनमनिप्रियः, 'रालपट्टि' त=मगोजितहस्त तलद्वय मस्तकेऽल्लि इत्ता एव=रुच्यनगरप्रमाणेन अत्रासीत्=त्वमाप्युक्तवान्,

“ नमोऽस्त्युण अग्रहताण जाव सपत्ताण,—

—नमोऽस्त्युण धम्मघोसाण थेराण मम धम्मायरियाण धम्मोवणमयाण ”
नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत् गमाप्तेभ्यः, नमोस्तु खलु धर्मघोषेभ्यः स्थविरैभ्यो मम उपाचार्येभ्यो नमोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि दीक्षागृहणशालेऽपि खलु मया उर्नघोषागा स्थविराणामन्तिके सर्वे प्राणानिपात प्रत्याख्यातो यावज्जीव 'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन-सयो मृषायाद सर्वमदत्तादान सर्व मैथुन च प्रत्याख्यातम्, तथा-मर्थः परिग्रहः प्रत्याख्यातः। इदानीमपि खलु अहं तेषामेव भगवतामन्तिके सर्वे प्राणानिपातं प्रत्याख्यामि यावत् परिग्रहं प्रत्याख्यामि यावत् प्रतिलेखना कीं प्रतिलेखना करके फिर उसके ऊपर उन्होंने दर्शन-स्तारक को निजाया-पिन्नाकर फिर वे उसपर बैठकर फिर पूर्वदिशा की और मुखकर पर्यङ्कामन से उस पर विराजमान हो गये विराजमान होकर उन्होंने अपने दोनों हाथों को जोड़ा ओर मस्तक पर उसकी अजलि रखकर इस प्रकार अपने मन ही मन वे कहने लगे—
(नमोऽस्त्युण अग्रहताण जाव सपत्ताण, नमोऽस्त्युण धम्मघोसाण थेराण मम धम्मायरियाण धम्मोवणमयाण पुब्बि पि ण मए धम्मघोसाण थेराण अतिए सव्वे पाणाइवाण पच्चक्खाण जावजीवताण जाव परिग्गहे इयारिणि पि अहं तेसि चैव भगवताण अतिव सव्व पाणाइवाण पच्चक्खामि जाव

आह्वने-यश्च पात्र वज्रेने ओडानभा भूडी दीधा भूक्या आह तेओओ सस्ता
२४ भूमिनी प्रतिलेखना कयी प्रतिलेखना करीने तेनी उपर तेमणे हलं सस्ता
२४ कथी हलंमन्तारक पाथगीने तेओ तेनी उपर ओसीने पूर्वदिशा तरहं मुण
करीने पर्यङ्कसनया तेनी उपर विराजमान थरु गया विराजमान थरुने तेओओ
पोताना णने हाथीने ओडया अने तेमनी अजली जतापीने मस्तक उपर
भूडी अने पोताना मनभा ज ठडेवा लाय्या

(नमोऽस्त्यु ण अग्रहताण जाव सपत्ताण नमोऽस्त्युण धम्मघोसाण थेराण मम धम्मायरियाण धम्मोवणमयाण पुब्बि पि ण मए धम्मघोसाण थेराण अतिए सव्वे पाणाइवाण पच्चक्खाण जाव जीवाण जाव परिग्गहे, इयारिणि पि अहं तेसि चैव

आहारिक यावत्-स्नेहावगात्रम् आहारिणस्य=भुक्तयतः, सतो मुहूर्तान्तरेण परिण-
म्यमाने=आहारे परिणाम प्राप्तं सति शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, सा कीदृशी? त्वार-
उज्ज्वला=तीव्रा, यावत् 'दुर्धियासा' दुरध्यासा=दुरधिसङ्गा-अमङ्गल्यार्थः । ततः
खलु स धर्मरुचिरनगारो ऽस्यामा, हीनपराक्रमः, अलः=मनोबलरहितः अवीर्यः=
हतोत्साहः अपुरुषकारपराक्रमः,=पुरुषार्थहीनः, 'अधारणिज्जमिति कट्टु' अपार-
णीयमिति कृत्वा-धारयितुमशक्यमिदं शरीरमिति मनसि विचार्य 'आयारमडग'
आचारभाण्डकम्-आचार्य आचारपाठनार्थं भाण्डक=भाण्डोपकरणं वस्त्रपात्रादिक

धम्मरुइस्स त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समाणस्स मुहूर्त
तरेण परिणममाणसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुर-
हियासा-तण्ण से धम्मरुई अणगारे अथामे अवले अवीरिए अपुरिस
क्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु अपारमडग एगते ठवेइ, ठवि
त्ता थडिल्ल पडिलेहेइ, पडिलेहिता दब्भसथारग सथारेइ, सथारित्ता
दब्भसथारग, दुरुइइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसन्ने कर-
यल परिगगहिय एवं वयासी) ताक उन धर्मरुचि अनगार के पेट में
पहुँचते ही एक मुहूर्त के बाद जब वह पचने लगा तब उनके शरीर
में उज्ज्वल यावत् दुरधियास वेदना प्रकट हुई । इस से वे धर्मरुचि
अनगार पराक्रम से हीन, मनोबल से विहीन, हतोत्साह होकर पुरु-
षार्थ रहित बन गये । यह शरीर अब धारण करने से अशक्य हो रहा
है ऐसा जब उन्होंने प्रतीत होने लगा तब उन्होंने अपने आचारभाण्डक
पञ्चविध आचार पालने के लिये जो - वस्त्र - पात्रादिक ये उनको
-एकान्त में रख दिया-रम्बकर फिर उन्होंने ने सस्ताररुभूमि की

(तएण तस्स धम्मरुइस्स त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समा-
णस्स मुहूर्ततरेण परिणममाणसि सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव
दुरहियासा-तण्ण से धम्मरुई अणगारे अथामे, अवले अवीरिए अपुरिसक्कारपर-
क्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु आयारमडग एगते ठवेइ, ठवित्ता थडिल्ल पडि-
लेहेइ, पडिलेहिता दब्भसथारग सथारेइ, सथारित्ता दब्भसथारग दुरुइइ,
दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसन्ने करयलपरिगगहिय एवं वयासी)
शाक ते धर्मरुचिना चेत्ता पडोयता अ ओक मुहूर्त प्रधी न्यारे तेनु
पायन शइ थयु त्यारे तेमना शरीरमा उज्ज्वल यावत् दुरधियास वेदना थवा
भांडी तेथी ते धर्मरुचि अनगार पराक्रम वगर, मनोबल वगर हतोत्साही
थने पुरुषार्थ वगर भनी गया हवे आ शरीर टकवु अशक्य थय पइथु
छे ओवी न्यारे तेओने प्रतीति थवा लागी त्यारे तेमणे चे आचार

मित्यर्थः, एतान्ते सापयति, सापयित्वा रण्डि=सस्तार-भूमिं प्रतिवेनयति, प्रतिवेन्य दर्शनस्वारक 'सथारेड' सस्तृणाति=मात्तु रणेति सस्तीर्य, दर्शन-सस्तारक दूरोदति=मारोदति, दूश्य पोरस्त्यामिमुत्र=पूर्वदिग्भिमुत्रः, 'सपलियं-कनिमन्ने' सपल्यङ्क निपणः=पञ्चामनसनिविष्टः, ज्जालयि पृथीत=मज्जितहस्त तलद्वय मस्तकेऽललि कृत्वा एव=पञ्चगणप्रमाणेन ज्ञातव्यं=तमाम्भुक्तवान्,

“ नमोऽत्युण अरिहताण जाव सपत्ताण,—

—नमोऽत्युण धम्मघोसाण जेगण मम धम्मयारियाण अम्मोवएसयाण ”
नमोऽस्तु खलु अरिहता भगवद्भ्यो यावत् गमाप्तेभ्यः, नमोस्तु खलु धर्मबोधेभ्यः स्थविरैभ्यो मम उपाचार्येभ्यो उपापदेयकेभ्यः, पूर्वमपि दीपानहणशालेऽपि खलु मया उपाधोताया स्थविराणामन्तिके सर्व प्रागानिपात प्रत्यान्यातो यावज्जीव 'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन-सर्वो मृतात् सर्वमदत्तात् सर्वमैयुन च प्रत्यान्यातम्, तथा-सर्व परिग्रह प्रत्यान्यातः। इदानीमपि खलु अह तपामेव भगवतामन्तिके सर्व प्रागानिपात प्रत्यान्यामि या त परिग्रह प्रत्यान्यामि याव प्रतिवेन्यना की प्रतिवेन्यना करके फिर उसके ऊपर उन्होंने दर्शन-स्तारक को निजया-विज्जकर फिर वे उसपर बैठकर फिर पूर्वदिशा की ओर मुत्तकर पर्यङ्कामन से उस पर विराजमान हो गये विराजमान होकर उन्होंने अपने दोनो हाथों को जोड़ा ओर मस्तक पर उसकी अजलि रखकर इस प्रकार अपने मन ही मन वे कहने लगे—
(नमोऽत्युण अरिहताण जाव सपत्ताण, नमोऽत्युण धम्मघोसाण थेराण मम धम्मयारियाण अम्मोवएसयाण पुब्बि पि ण मए धम्मघोसाण जेगण अतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव जीवाए जाव परिग्गहे ज्यारिणि पि अह तेसिचेन भगवताण अतिव सव्व पाणाइवाए पच्चक्खामि जाव

भाषणे—वस्त्र पात्र वगेरेने जेजतभा भूझी दीधा भूझ्या णाह तेज्जोअे मस्ता २४ भूमिनी प्रतिवेणना करी प्रतिवेणना करीने तेनी उपर तेमजे दलं सस्ता २४ करी दलं सस्ता २४ पाथीने तेज्जो तेनी उपर जेसीने पूर्वदिशा तरश्च मुण करीने पर्यङ्कामनया तेनी उपर विगलमान थर्छ गया दिशजमान थरने तेज्जोअे चोताना णने छाथीने जेउथा अने तेमनी अजली जतापीने मस्तक उपर भूझी अने चोताना मतभा ज उडेवा लाय्या

(नमोऽत्यु ण अरिहताण जाव सपत्ताण नमोऽत्युण धम्मघोसाण थेराण मम धम्मयारियाण धम्मोवएसयाण पुब्बि पि ण मए धम्मघोसाण जेगण अतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव जीवाए जाव परिग्गहे, इयारिणि पि अह तेसि चेव

ज्जीव, यथा-स्कन्दकः=स्कन्दकान् यावच्चरामै-स्कन्दकैः, 'बोसिरामितिकृद्' ज्युस्त्वजामि=शरीर परित्यजामि' इति कृत्या 'आलोड्य पट्टिक्ते' आलोचितप्रति क्रान्तः=पूर्वकृत यदतीतारजात तदाकाचित, पुनरकरणमतिशया प्रतिक्रान्तं येन त तथाभूतः समाधिप्राप्तः=आत्मसमाधियुक्तः कालगतः=मरण प्राप्त ॥सू०३॥

मूलम्-तएण ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुडं अणगारं चिरं
गय जाणित्ता समणे निग्गये सद्दोवेति सद्दवित्ता एववयासी

परिग्रह पञ्चस्वामि जाव जीवाण जहा खदओ जाव चरिमेहि उस्सा
सेहि बोसिरामित्ति कट्टु आलोड्य पट्टिक्ते समाहिपत्ते कालगए)
यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अरिहन् भगवतो के लिये
मेरा नमस्कार हो-धर्मोपदेशक मेरे धर्माचार्य श्री धर्मोपस्थविर के
लिये मेरी नमस्कार हो मैंने पहिले दीक्षा ग्रहण के समय उन धर्मोप
स्थविर के समीप समस्त प्राणातिपात, समस्त मृषावाद, समस्त अद
त्तादान, समस्त मैथुन तथा समस्त परिग्रह जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान
कर दिया है। अब भी मैं उन्हीं भगवतो के समक्ष समस्त प्राणातिपात
यावत् समस्त परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यात करता हूँ। यावत्
अन्तिम श्वासोत्तक स्कन्दककी तरह इस शरीरका परित्याग करता हूँ।
इस प्रकार मन ही मन कह कर वे धर्मरुचि अनागार आलोचित प्रति
क्रान्त बनकर आत्मसमाधिमें तल्लीन होते हुए मरण प्राप्त हुवे ॥सू०३॥

भगवताण अतिय सब पागाइयाय पञ्चस्वामि जाव परिग्रह पञ्चस्वामि जाव
जीवाए जहा खदओ जाव चरिमेहि उस्सासेहि बोमिरामित्ति कट्टु आलोड्यपट्टि-
क्ते समाहिपत्ते कालगए)

यावत् सिद्धिगति भोजवेदा अरिहत भगवतोना भाटे भास नमस्कार छे
धर्मोपदेशक भास धर्माचार्य श्री धर्माधिप स्थविरना भाटे भास नमस्कार छे
पडेदा दीक्षा ग्रहण करती वजते मे ते धर्माधिप स्थविरनी पासे समस्त प्राण
तिपातो, समस्त मृषावादो, समस्त अदत्तादानो समस्त मैथुनो तथा समस्त
परिग्रहोनु प्रत्याख्यान कर्तुं छुनु अत्यारे पणु ते व लगवतोनी सामे समस्त
प्राणातिपात यावत् समस्त परिग्रहोनु यावज्जीव प्रत्याख्यान कर छु लव-
नना छेदा आस सुधी स्कन्दनी जेम आ शरीरनो त्याग कर छु आ रीते
पोताना मनभा व कहीने ते धर्म-रुचि अनगार आवोचित प्रतिक्रान्त धर्मे
आत्मसमाधिमा तद्वीन यता मरण पाया ॥ सूत्र " ३ " "

—एव खलु देवाणुप्पिया । धम्मरुद्धं अणगारे मासखमण-
 पारणगंसिं सालइयस्स जावगाढस्सणिासरणट्टयाए वहिया
 निग्गए चिरगए त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । धम्म-
 रुद्धस्स अणगारस्स सच्चओ समंता मग्गणगवेसणं करेह,
 तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता
 धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनि-
 क्खमित्ता धम्मरुद्धस्स अणगारस्स सच्चओ समता मग्गण-
 गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छति उवा-
 गच्छित्ता धम्मरुद्धस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं
 जीवविप्पजडं पासंति पासित्ता हा हा अहोअकज्जमितिकहु
 धम्मरुद्धस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तिय काउस्सग्ग वरेति
 करित्ता धम्मरुद्धस्स आयारभडग गेणहति गेण्हित्ता जेणेव
 धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता गमणा-
 गमणं पडिक्कमंति पडिक्कमित्ता एव वयासी—एव खलु अम्हे
 तुब्भअतियाओ पडिनिक्खमामो२ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स
 परिपेरतेण धम्मरुद्धस्स अणगारस्स सच्च जाव करेमाणे जेणेव
 थडिल्ले तेणेव उवा०२ जाव इह हव्वमागया, त कालगए
 णं भते । धम्मरुद्धं अणगारे इमे से आयारभडए, तएणं
 ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता
 समणे निग्गथे निग्गथीओ य सदावेति सदावित्ता एव वयासी
 —एव खलु अज्जो । मम अतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे

ज्जीव, यथा-स्कन्दकः=स्कन्दस्वन् यावच्चरमे-स्कन्दगैः, 'वोमिरामितिकृद्' ध्युल्लजामि=शरीर परित्यजामि' इति कृत्या 'आलोइय पट्टिकते' आलोचितप्रति फान्तः=पूर्वकृत यदतीतारजात तदालोचित, पुनरुत्तरणप्रतिज्ञया प्रतिक्रान्तं येन स तथाभूतः समाधिप्राप्त=आत्मसमाधिपुक्तः कालगतः=मरण प्राप्त ॥सू०३॥

मूलम्-तएण ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुद्धं अणगारं चिर
गय जाणित्ता समणे निग्गंथे सदावेति सदावित्ता एववयासी

परिग्रह पञ्चक्खामि जाव जीवाण जहा खदओ जाव चरिमेहिं उस्सा
सेहिं गोसिरामित्ति कट्ठु आलोइय पट्टिकते समाहिपत्ते कालगए)
यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अरिहन्त भगवतो के लिये
मेरा नमस्कार हो-वर्णोपदेशक मेरे धर्माचार्य श्री धर्मगोपस्थविर के
लिये मेरी नमस्कार हो मैंने पढ़िखे दीक्षा ग्रहण के समय उन धर्मगोप
स्थविर के समीप समस्त प्राणातिपात, समस्त मृषावाद, समस्त अद
त्तादान, समस्त मैथुन तथा समस्त परिग्रह जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान
कर दिया है । अब भी मैं उन्हीं भगवतो के समक्ष समस्त प्राणातिपात
यावत् समस्त परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता हूँ । यावत्
अन्तिम श्वासोत्तक स्कन्दककी तरह इस शरीरका परित्याग करता हूँ ।
इस प्रकार मन ही मन कह कर वे धर्मरुचि अनागार आलोचित प्रति
क्रान्त बनकर आत्मसमाधिमें तल्लीन होते हुए मरण प्राप्त हुवे ॥सू०३॥

भगवताण अतिय सव्व पागाइयाय पच्चक्खामि जाव परिग्रह पच्चक्खामि जाव
जीवाए जहा खदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोमिरामित्ति कट्ठु आलोइयपट्टि-
क्कते समाहिपत्ते कालगए)

यावत् सिद्धिगति भेजवेला अरिहन्त भगवतोना भाटे भारा नमस्कार छे
धर्मोपदेशक भारा धर्मोचार्य श्री धर्मघोष स्थविरना भाटे भारा नमस्कार छे
पढ़ेला दीक्षा ग्रहण करती वजते मे ते धर्मघोष स्थविरनी पासे समस्त प्राण
तिपातो, समस्त मृषावादो, समस्त अदत्तादानो समस्त मैथुनो तथा समस्त
परिग्रहोनु प्रत्याख्यान कर्तुं छतुं अत्यावे पणु ते ज भगवतोनी सामे समस्त
प्राणातिपात यावत् समस्त परिग्रहोनु यावज्जीव प्रत्याख्यान कर छु एव
नना छेला आस सुधी स्कन्दकी जेभ आ शरीरनो त्याग कर छु आ रीते
पोताना मनमा ज कछीने ते धर्म-रुचि अनगार आलोचित प्रतिक्रान्त यधने
आत्मसमाधिमा तल्लीन थता भरखु पाभ्या ॥ सूत्र " ३ " ॥

શબ્દયિત્વા, એવ=વચ્ચમાણપ્રકારેણ, અવાદિપુઃ=ઉક્તવન્તઃ, એવ સહુ હે દેવાનુ-
પ્રિયાઃ ! ધર્મરુચિરનગારો માસક્ષયપારણકે શારદિકસ્ય તિક્તઋદુઃસ્તુમ્બકસ્ય
યાવત્-સ્નેહાવગાદસ્ય ' નિસિરણદ્વયાઈ ' નિસૃજનાર્થ મહિર્નિર્ગતશ્ચિરગતઃ=તસ્મિન્
ગતે સતિ વહુતરઃ ખાલો વ્યતીતઽત્યર્થઃ । તત્-તસ્માદ્ ગચ્છત સ્વલુ યૂયં હે દેવાનુ-
પ્રિયાઃ ! ધર્મરુચેરનગારસ્ય સર્વતઃ સમન્તાદ્ માર્ગણગવેષણ=સમ્યગન્વેષણ કુરુત્ ।
તત સ્વલુ તે શ્રમણા નિર્ગન્થા યાવત્ પ્રતિશૃણ્વન્તિ=તથા ઋરિપ્યામીત્યુક્તવા તામાજ્ઞાં
સ્વીકુર્વન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય ધર્મવોષાણાં સ્વામિગણામન્તિક્રાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામન્તિ, પ્રતિનિ-

વધાસી-એવ સહુ દેવાણુપ્રિયા ! ધમ્મરુઈ અનગારે માસલખમણપારણ
ગસિ સાલહ્યસ્સ જાવ ગાઢસ્સ નિસિરણદ્વયાઈ વહિયા નિગગાઈ-ચિરગાઈ,
ત ગચ્છહ ણ તુઞ્મે દેવાણુપ્રિયા ! ધમ્મરુહ્યસ્સ અનગાસ્સ સન્વઓ
સમતા ગવેસણ કરેહ) શ્રમણ નિર્ગન્થો કો બુલાયા । બુલાકર બનોને
એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આન માસલખનણ કી
પારણા કે દિન શારદિક તિક્ત ઋદુરી તુમહી કા વહુ સખાર સમૃત
શાક કિ જિસકે ઉપર ઘૂત તૈર રહા યા લાયે થે-મૈને ઉસે પરિષ્ઠાપન કે
લિયે ઉન્હે આજ્ઞા દિયા સો વે ઉસે પરિષ્ઠાપન કરને કે લિયે યહાં
સે બાહિર ચલે ગયે-ગયે ઉન્હે વહુત ઢેર હો ગઈ-વે અમીતક નહી
આયે હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ જાઓ ઔર ધર્મરુચિ
અનાગાર કી સત્ર તરફ ચારોં દિશાઓં મે માર્ગણા એવ ગવેષણા કરો ।
(તપણ તે સમણા નિગગયા જાવ પઢિસુણેતિ, પઢિ સુણિત્તા ધમ્મવોસાણ

(સમણે નિગગથે સદોતેતિ સદાવિત્તા એવ વયાસી-એવ સહુ દેવાણુપ્રિયા !
ધમ્મરુઈ અનગાર માસલખમણપારણગસિ સાલહ્યસ્સ જાવ ગાઢસ્સ નિસિરણદ્વયાઈ
વહિયા નિગગાઈ-ચિરગાઈ, ત ગચ્છહ ણ તુઞ્મે દેવાણુપ્રિયા ! ધમ્મરુઈસ્મ અન-
ગારસ્સ સન્વઓ સમતા મગ્ગણગવેસણ કરેહ)

શ્રમણ નિર્ગન્થોને જોલાબ્બા જોલાબ્બીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે હે
દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આજે માસ ખમણની પાતણાના દિવસે શાર-
દિક તિક્ત ઋદુરી તૂબીડીતુ સરસ વધારેલું ઉપર ઘી તરતું ચાડ આહાર માટે
લાબ્બા હતા તેઓને મે પ્રતિષ્ઠાપાનની આજ્ઞા આપી છે, તેઓ પરિષ્ઠાપન
માટે અહીંયા બહાર ગયા છે તેઓને બહાર ગયાને બહુ જ વખત થયો છે,
હજી તેઓ આબ્બા નથી એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો બન્નો અને
ધર્મરુચિ અનગારની એમર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરો

(તપણ તે સમણા નિગગયા જાવ પટિસુણેતિ, પઢિસુણિત્તા ધમ્મવોસાણ

पगइभदण जाय पिणीण माम मानेणं अणिग्वित्तेण तवो
 कम्मेण जाव नागसिरीण माहणीण गिहे अणुपविट्ठे, तएणं
 सो नागसिरी माहणी जाव निसीरउ, तएण से धम्मरुई
 अणगारे अहापजत्तमितिउहु जाव काल अणवक्खेमाणे वि-
 हरति, से ण धम्मरुई अणगारे उहुणि जासाणि सामन्नप-
 रित्राग पाउणित्ता आलोइयपडिकंते समाहिउत्ते कालमासे
 काल किन्ना उहु सोत्तम्मजाव सव्वट्ठसिद्धं महासिमाणे देव-
 त्ताए उववत्ते, तत्थ ण अजहणमणुकोसेणं तेत्तील साग-
 रोवमाइ ठिई पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सणि देवस्स तेत्तीसं
 सागरोवमाइ ठिई पणत्ता से ण धम्मरुई देवे ताओ
 देवलोगाओ जाव महाविदेहे वामे सिज्झिहिउ त धिरथुणं
 अज्जो । णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाय णिं
 वोलियाए जाए ण तहारूवे साहु धम्मरुई अणगारे मास-
 खमणपारणगमि सालइएण जाय गाढेण अह्मले चेव जीवि-
 याओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘ तएणं त ’ इत्यादि । तत् ‘ खलु=इतश्च ते धर्मघोषा स्थविरा
 धर्मरश्मिन्गार चिर गत उहुकाउता गत ज्ञात्वा श्रमणान निर्ग्रन्थान् शब्दयति,

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते धम्मघोसा थेरा) उन-धर्मघोष
 स्थविरने (धम्मरुइ अणगार) धर्मरश्मि अणगार को (चिरगय जाणित्ता)
 बहुत देर के गये हुए जानकर (नमणे निगगथे सदावेत्ति, सदावित्ता एव

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्याग्याह (ते धम्मघोसा थेरा) ते धर्मघोष स्थविर (धम्म
 रुइ अणगार) धर्मरश्मि अणगारने (चिरगय जाणित्ता) बहुत पणतधी भंडार
 गयेला लगीने

શબ્દયિત્વા, એવ=વક્ત્ર્યમાણપ્રકારેણ, અવાદિપુઃ=ઉક્તવન્તઃ, એવ સ્વલુ હે દેવાનુ-
પ્રિયાઃ ! ધર્મરુચિરનગારો માસક્ષપણપારણકે શારદિકસ્ય તિક્તકટુસ્તુમ્બકસ્ય
યાવત્-સ્નેહાવગાદસ્ય ' નિસિરણદ્વયાપ ' નિસ્રજનાથં ગદ્દિર્નિર્ગતશ્ચિરગતઃ=તસ્મિન્
ગતે સતિ વહુતર* નાલો વ્યતીતિત્યર્થઃ । તત્-તસ્માદ્ ગચ્છત સ્વલુ યૂય હે દેવાનુ-
પ્રિયાઃ ! ધર્મરુચેરનગારસ્ય સર્વત* સમન્તાદ્ માર્ગણગવેષણ=સમ્યગન્વેષણ કુરુત્ ।
તત સ્વલુ તે શ્રમણા નિર્ગન્થ્યા યાવત્ પ્રતિશૃણ્યન્તિ=તથા પરિપ્રચીનીત્યુત્તવા તામાજ્ઞા
સ્વીકૃવન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય ધર્મપ્રોપાણાં સર્ગારાણામન્તિક્રાત્ પ્રતિનિષ્ક્રામન્તિ, પ્રતિનિ

વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! યમ્નરુદ્ધ અનગારે માસસ્થમણપારણ
ગમિ સાલહ્યસ્થ જાવ ગાઢસ્થ નિમિરણદ્વયાપ વહિયા નિગ્ગય-ચિરગય,
ત ગચ્છત્ત્વ ન તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! ધમ્મરુદ્ધસ્થ અનગારસ્થ સવ્વબો
સમતા ગવેસણ કરેહ) શ્રમણ નિર્ગન્થો કો બુલાયા । બુલાકર ઉનોને
એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આન મામલ્લનણ કી
પારણા કે દિન શારદિક તિક્ત કટુગી તુગટી કા વહુ સમાર સમ્મુત
શાક કિ જિસકે ઉપર વૃત તર રહા યા લાયે થે-મૈને ઉસે પરિષ્ઠાપન કે
લિયે ઉન્હે આજ્ઞા દિયા મો વે ઉસે પરિષ્ઠાપન કરને કે લિયે યહાં
સે વાહિર ચલે ગયે-ગયે ઉન્હે વહુત ટેર હો ગઈ-વે અભીતક નહીં
આયે હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ જાઓ ઓર ધર્મરુચિ
અનાગાર કી સ્વતરફ ચારો દિગ્ગાઓ મે માર્ગણા એવ ગવેષણા કરો ।
(તદ્દય તે સમણા નિગ્ગયા જાવ પહિસુણેતિ, પહિસુણિત્તા ધમ્મધોસાણ

(સમણે નિગ્ગથે સદ્ગોતિ સદ્ગાતિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા !
ધમ્મરુદ્ધ અનગાર મામલ્લનણપારણગમિ સાલહ્યસ્થ જાવ ગાઢસ્થ નિસિરણદ્વયાપ
વહિયા નિગ્ગયા-ચિરગય, ત ગચ્છત્ત્વ ન તુભ્મે દેવાણુપ્પિયા ! ધમ્મરુદ્ધસ્થ અન-
ગારસ્થ સવ્વબો સમતા મગ્ગણગવેસણ કરેહ)

શ્રમણુ નિર્ગન્થોને જોલાબ્બા જોલાબ્બીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે હે
દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આગે માસ અમલ્લની પારણાના દિવસે શાર
દિક તિક્ત કટુગી તૂબડીતુ મરસ વધારેલું ઉપર ધી તરતું ગાડ આહાર માટે
લાબ્બા હતા તેઓને મે પ્રતિષ્ઠાપનની આજ્ઞા આપી છે, તેઓ પરિષ્ઠાપન
માટે અહીંથી બહાર ગયા છે તેઓને બહાર ગયાને બહુ જ વખત થયો છે,
હજી તેઓ આબ્બા નથી એવી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો બાબો અને
ધર્મરુચિ અનગારની એમર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરો

(તદ્દય તે સમણા નિગ્ગથા જાવ પહિસુણેતિ, પહિસુણિત્તા ધમ્મધોસાણ

पगइभइण जाव पिणीण माम मासेण अणिगिस्सत्तेणं तवो-
 कम्मेणं जाव नागसिरीण माहणीण गिहे अणुपविट्ठे, तएणं
 सो नागसिरी माहणी जाव निसीगइ, तएण मे धम्मरुई
 अणगारे अहापजत्तमितिकट्टु जाव काल अणउत्तरेमाणे वि-
 हराति, से ण धम्मरुई अणगारे ब्रह्मणि रासाणि सामन्नप-
 रियाग पाउणिता आलोडयपटिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे
 काल किन्ना उड्डु साहम्मजाव सब्बट्टसि ४ महाणिमाणे देव-
 ताए उववत्ते, तत्थ ण अजहणमणुक्कांसेण तेत्तीस साग-
 रोवमाइ ठिई पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुट्ठस्सणि देवस्स तेत्तीसं
 सागरोवमाइ ठिई पणत्ता से ण धम्मरुई देव ताओ
 देवलोगाओ जाव गहाविदेहे वासे सिज्झिहिइ त विग्गुणं
 अज्जो । णागसिरीए माहणीए अधत्ताए अपुत्ताए जाव णि
 वोलियाए जाए ण तहारुवे साहु धम्मरुई अणगारे मास-
 खमणपारणभमि सालइएण जाव गाढेण अकाले चैव जीवि-
 याओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । तत’ खलु=इतश्च ते धर्मघोष । स्थविरा
 धर्मरुचिमन्गार चिर गत बहुकालतो गत ज्ञात्वा श्रमणान् निर्ग्रन्थान् श-दयति,

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते धम्मघोसा थेरा) उन-धर्मघोष
 स्थविरने (धम्मरुई अणगार) धर्मरुचि अनगार को (चिराय जाणिता)
 बहुत देर के गये हुए जानकर (समणे निगमथे सदावेति, सदाविता एव

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्यागनाह (ते धम्मघोसा थेरा) ते धर्मघोष स्थविरे (धम्म
 रुई अणगार) धर्मरुचि अनगारने (चिराय जाणिता) बहुत पणतथी भंडार
 गयेला भलीने

इतिकृत्वा-इतिखेद कृत्वा धर्मरुचेरनगरस्य 'परिनिव्वाणवत्तिय' परिनिर्वाण-
प्रत्ययिकं=परिनिर्वाण मरणं तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापनं तदपि परिनिर्वाणमेव
तदेव प्रत्ययोद्देतुर्यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययिकः त तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमि-
त्यर्थः कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगरस्याऽऽचारभाण्डकं=वस्त्रपात्रादिकं
गृह्णन्ति, गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य गमनागमनम्=
इर्यापथिकीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्राम्यैवमवादिषुः एव खलु हे स्वामिन् । वयं युष्मा-
कमन्तिहात् प्रतिनिष्क्रामामः=प्रतिनिर्गता', प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वहीं पर मृत शरीर को दोसराने रूप कायो-
त्सर्ग किया । (करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने
उन धर्मरुचि अनागार के आचार भाण्डको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा
लिया-उठाकर वे जहाँ धर्मघोष स्थविर थे-वहाँ आये (उवागच्छित्ता
गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे-
तुम्भ अतियाओ पडि निक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपे-
रतेण धम्मरुहस्स अगगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव
उवा० २ जाव इह हव्वमागया, तं कालगण्ण भत्ते ! धम्मरुहं अणगारे
इमे से आयारभण्डए - तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग
गच्छति गच्छित्ता समणे निगंथे निगयओ य सदावेति-सदावित्ता
एव वयासी) आकर के उन्होंने ईर्यापथिक प्रतिक्रमण किया ।
प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् । हम लोग
आपके पास से यहाँ से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

रीते छड़ीने तेमछे त्याज् मृत शरीरने दोसराना रूप कायोत्सर्ग कथो
(करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करीने तेओओ धर्मरुचि अनागारना आचार
भाण्डकाने तेमज् वओने लईलीया अने लईने जया धर्मघोष स्थविर छता त्या आओया
(उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव
खलु अम्हे तुम्भ अतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स
परिपेरतेणं धम्मरुहस्स अगगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले
तेणेव उवा० जाव इह हव्व-मागया त कालगण्णं भत्ते ! धम्मरुहं अणगारे
इमे से आयारभण्डए तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति
गच्छित्ता समणे निगंथे निगयओ य सदावेति-सदावित्ता एव वयासी)
त्या आवीने तेमछे ईर्यापथिक प्रतिक्रमण कथुं प्रतिक्रमण करीने तेओ
आ प्रमाओ छडेवा लाग्या उ हे स्वामिन् ! अमे छोडे अडिथी आपनी
पासेथी गया अने जईने सुभूमिभाग उद्याननी ओभेर करता करता धर्मरुचि

अस्य धर्मरुचेरनगारस्य सर्वत समन्ताद् मार्गणगवेपणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं
स्थलं धर्मरुचेरनगारस्य कान्तरणस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य धर्मरुचेर-
नगारस्य शरीरक 'निष्पाण' निष्पाण=माणरहित, 'निच्चेद्' निष्पेष्ट=वेष्टा-
रहित 'जयविष्पजड' जीव विमत्पक्त=जीरहीन पश्यन्ति, दृष्ट्वा हा ! हा ! अहो !
इति खेदे, 'अकज्जं' अकार्यम्=अनिष्ट जातं यद् धर्मरुचिनगारो मृतः, 'तिकद्दु'

बेराण अतिघाओ पटिनिस्समति, पटिनिस्समत्ता धम्मरुहस्स-
अणगाहस्स सव्वाओ समता मग्गणगवेसण करे माणा जेणेव थंडिल्ल
तेणेव उवागच्छति, उवागच्छत्ता धम्मरुहस्स अणगारस्स सरीरग
निष्पाण निच्चेद् जीवविष्पजड पासति, पासित्ता हा हा अकज्जमिति
कद्दु धम्मरुहस्स अणगारस्स परि निव्वाणवत्तिय काउस्सग्ग-करेति)
उन निर्ग्रन्थ श्रमणों ने अपने धर्माचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार
कर लिया । और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोष स्थविर के पास से
निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओंमें सब
प्रकार से मार्गणा गवेपणा की । इस तरह मार्गण गवेपणा करते हुए
जहां वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था-
वहां आये वहां आकर के उन्होंने धर्मरुचि अनगार के शरीर को प्राण-
रहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा । देखकर के सहसा उनके
मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह
बड़ा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया ।

बेराण अतिघाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमत्ता धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व
ओ समता मग्गणगवेसण करेमाणा जेणेव थंडिल्ल तेणेव उवागच्छति उवाग-
च्छित्ता धम्मरुहस्स अणगारस्स, सरीरग निष्पाणं निच्चेद् जीव विष्पजड पासति,
पासित्ता हाहा अकज्जमिति कद्दु धम्मरुहस्स अणगारस्स परिनिव्वाण वत्तिय काउ
स्सग्ग करेति)

ते निश्रंथ श्रमणोऽप्ये चोत्ताना धर्माचार्यानी आज्ञाने स्वीकारि लीधी अने
स्वीकारिने तेज्जो धर्मघोष स्थविरानी पासैथी नीकणीने धर्मरुचि अनगारानी
अधी रीते येमेर भागैल्ला तेमज्ज गवेपल्ला करवा लाग्या आ रीते मार्गेषु
गवेपल्लु करता न्या ते स्थण्डिलं हंतु-धर्मरुचि अनगारना मृत्युत्तु स्थानं हंतुं
त्या आव्या त्या आवीने तेज्जोऽप्ये धर्मरुचि अनगारना शरीरने निष्प्राय
निश्चेष्ट अने निर्लव जेयु आ दस्य जेतानी साथे ज तेज्जोना सुभथी
हाय ! हाय ! ना जेह सूचक शब्दो नीकणी पडया तेज्जो हडेवा लाग्या हे
आ अहुं ज ओह्मं यथु छे-धर्मरुचि अनगारश्च

इतिकृत्वा-इतिखेद कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्य 'परिनिव्वाणवत्तिय' परिनिर्वाण-
प्रत्ययिकं=परिनिर्वाण मरण तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव
तदेव प्रत्ययोद्देत्यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययिकः त तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमि-
त्यर्थः कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्याऽऽचारभाण्डक=वस्त्रपात्रादिकं
गृह्णन्ति, गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य गमनागमनम्=
ईर्यापयिक्तीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्राम्यैवमवादिषुः एव खलु हे स्वामिन् । वयं युष्मा-
कमन्तिहात् प्रतिनिष्क्रामामः=प्रतिनिर्गताः, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वही पर मृत शरीर को बोलराने रूप कायो
त्सर्ग किया । (करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने
उन धर्मरुचि अनागार के आचार भाण्डको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा
लिया-उठाकर वे जहा धर्मघोष स्थविर थे-वहा आये (उवागच्छित्ता
गमणागमण पडिक्कमत्ति, पडिक्कमत्ति एव वयासी-एव खलु अम्हे-
तुवम अतियाओ पडि निक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपे-
रतेण धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव यडिल्ले तेणेव
उवा० २ जाव इह हव्वमागया, तं कालगणं भत्ते ! धम्मरुहं अणगारे
इमे से आयारभण्डए - तएण ते धम्मघोसा घेरा पुव्वगए उवओग
गच्छति गच्छित्ता समणे निगगथे निगगथोओ य सदावेति-सदावित्ता
एव वयासी) आकर के उन्होंने ईर्यापयिक प्रतिक्रमण किया ।
प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् । हम लोग
आपके पास से यहा से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

रीते कहीने तेमहे त्याज भूत शरीरने बोलरावा इय कायोत्सर्ग कथो
(करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करीने तेओओ धर्मरुचि अनगारना आचार
भाण्डकाने तेमज वओने ललीधा अने लधने न्या धर्मघोष स्थविर छता त्या आओया
(उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमत्ति, पडिक्कमत्ति एव वयासी-एव
खलु अम्हे तुवम अतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स
परिपेरतेण धम्मरुहस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव यडिल्ले
तेणेव उवा० जाव इह हव्व-मागया त कालगणं भत्ते ! धम्मरुहं अणगारे
इमे से आयारभण्डए तएण त धम्मघोसा घेरा पुव्वगए उवओग गच्छति
गच्छित्ता समणे निगगथे निगगथोओ य सदावेति-सदावित्ता एव वयासी)
त्या आवीने तेमहे ईर्यापयिक प्रतिक्रमण कथुं प्रतिक्रमण करीने तेओ
आ प्रभाहे कडेवा लाग्या के हे स्वामिन् ! अमे बोडो अहीथी आपनी
पासेथी गया अने जधने सुभूमिभाग उद्याननी ओभेर करता करता धर्मरुचि

જ્ઞાત્ય ધર્મરુચેરનાગારસ્ય સર્વતઃ સમન્તાદ્ માર્ગણગવેષણં કુર્વન્તો યત્રેવ સ્થષ્ઠિલં= સ્થલં ધર્મરુચેરનાગારસ્ય કાલ્પકરણસ્થાન તત્રીયોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય ધર્મરુચેર- નાગારસ્ય શરીરક 'નિષ્પાણ' નિષ્પાણ=પાણરહિતં, 'નિન્ચેદ્' નિષ્પેદ=વેષ્ટા- રહિતં 'જયત્પિપ્પજદ' જીર ત્રિપ્તપક્ત=જીરહીન પદ્યન્તિ, દૃષ્ટ્વા હા ! હા ! અહો ! इति खेदे, 'अरुज्जं' अकार्यम्=अनिष्ट जात यद्ध्यर्मरुचिनगारी मृतः, 'विकृद्दु'

થેરાણ અતિયાઓ પઢિનિક્ષમતિ, પઢિનિક્ષમિત્તા ધમ્મરુહસ્સ- અણગારહસ્સ સન્વાઓ સમતા મગ્ગણગવેષણ કરે માણા જેણેવ થંદિલ્લ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા ધમ્મરુહસ્સ અણગારહસ્સ સરીરગ નિષ્પાણ નિન્ચેદ્દુ જીવવિપ્પજદ પાસતિ, પાસિત્તા હા હા અકજ્જમિત્તિ કહ્દુ ધમ્મરુહસ્સ અણગારહસ્સ પરિ નિન્વાણવત્તિય કાઉસ્સગ્ગં-કરે તિ)
 उन निर्ग्रन्थ श्रमणों ने अपने धर्माचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोष स्थविर के पास से निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओंमें सब प्रकार से मार्गणा गवेषणा की । इस तरह मार्गण गवेषणा करते हुए जहां वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था- वहां आये वहां आकर के उन्होंने धर्मरुचि अनगार के शरीर को प्राण- रहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा । देखकर के सहसा उनके मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह बड़ा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया ।

થેરાણ અતિયાઓ પઢિનિક્ષમતિ, પઢિનિક્ષમિત્તા ધમ્મરુહસ્સ અણગારહસ્સ સન્વા ઓ સમતા મગ્ગણગવેષણ કરે માણા જેણેવ થંદિલ્લ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગ- ચ્છિત્તા ધમ્મરુહસ્સ અણગારહસ્સ, સરીરગ નિષ્પાણ નિન્ચેદ્દુ જીવ વિપ્પજદ પાસતિ, પાસિત્તા હાહા અરુજ્જમિત્તિ કહ્દુ ધમ્મરુહસ્સ અણગારહસ્સ પરિનિન્વાણ વત્તિય કાઉ સ્સગ્ગ કરેતિ)

તે નિર્ગ્રન્થ શ્રમણોએ પોતાના ધર્માચાર્યની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસેથી નીકળીને ધર્મરુચિ અનાગારની બધી રીતે ચોક્કસ માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરવા લાગ્યા આ રીતે માર્ગણ ગવેષણ કરતા બધા તે સ્થડિલ હતું-ધર્મરુચિ અનાગારના મૃત્યુનું સ્થાન હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનાગારના શરીરને નિષ્પ્રાણ નિષ્ચેદ અને નિર્ણવ બોલ્યું આ દૃશ્ય બોતાની સાથે જ તેઓના મુખથી હાય ! હાય ! ના ખેદ સૂચક શબ્દો નીકળી પડ્યા તેઓ કહેવા લાગ્યા કે આ બહુ જ ખોટું થયું છે-ધર્મરુચિ અનાગારનું

‘પરિપેરતેણ’ પરિપર્યન્તેન=ચતુર્થુ પરિશ્રમન્તો ધર્મકથેન્નગારસ્ય ‘સત્ત્રજાત્ર’ સર્વતઃ સમન્તાદ્ માર્ગણગચેપણ કુર્વતો યજ્ઞેય સ્થળિલ્લ તર્પણોપાગન્ત્રાતઃ, ઉપાગત્ય ધાવદ્ રૂઢ દ્રવ્યમાગતાઃ મ કાઝગાઃ ચલુ હે મદન્ત । ધર્મરુચિરનગારઃ, રમાનિ ‘સે’ તસ્ય, આચારભાણ્ડકાનિ । તતઃ સત્તુ તે ધર્મયોગા સ્થવિરાઃ ‘પુન્નગ’ પૂર્વગતે=દૃષ્ટિવાદાન્તર્ગતશ્રુતાધિકારવિશેષે ઉપયોગ ગન્ત્રન્તિ=લગયન્તિ ત્વા ધર્મરુચિરાહારમાનેતુ નગર્યાં ગતસ્તદા વસ્થુ ત્રહે ગત ? કેનેદમાઝારદત્ત’ મિત્યાદિ જ્ઞાતુ સ્વક્રીયોપયોગ નયન્શીત્યર્થ, ગત્વા-સ્વક્રીયોપયોગં નયયિત્વા, શ્રમણાન્ નિર્ગ્રન્થાન્ નિર્ગ્રન્થીશ્ચ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા એનગ્રાઝીત્—એ ચલુ હ આર્યાઃ । મમાન્તેગાસી=શિષ્યઃ, ધર્મરુચિર્નામાઝનગારઃ ‘પગામદ્દ’ મતિસ્મદ્રકઃ=પ્રકૃત્યા

દિશાઓ મેં ફિરતે ૨ ધર્મરુચિ અનગાર કી સર્વ પ્રકાર સે માર્ગણ, ગચે પળા કરને લગે । માર્ગણા, ગચેપળા કરતે હુણ હમ લોગ ફિર ઉસ સ્થાન પર પહુંચે જહા ધર્મરુચિ અનગાર કા શર પઢા હુઓ ધા વહા સે અમી ૨ હમ લોગ આરહે હૈ । હે મદન ! વે ધર્મરુચિ અનગાર કાલગત હો ગયે હૈ—વે ઉનકે આચાર ભાણ્ડક વસ્ત્ર પાત્ર હૈ । હિસ કે વાદ ઉન ધર્મચોપ સ્થવિર ને દૃષ્ટિ વાદ કે અતર્ગત શ્રુતાધિકાર વિશેષ મેં અપના ઉપયોગ લગાયા—તો ઉન્હે યહ જ્ઞાત હો ગયા કિ જન ધર્મરુચિ આહાર ‘હેને કે લિયે નગરી મેં ગયે તો વે કિસકે ઘર ગયે, કિસ ને યહ આહાર ‘ઉન્હે’ દિયા હત્યાદિ । અપને ઉપયોગ સે હિસ ઘાત કો જાનકર ઉન્હોને નિર્ગ્રન્થ શ્રમણોં ઓર નિર્ગ્રન્થ શ્રમણિયોં કો બુલાયા ઓર બુલાકર ઉનસે એસા કહા—(એ ચલુ અઝો મમ અતેવાસી, ધમ્મરૂઈ, જામ

અનગારની બધી રીતે માર્ગણા ગચેપણા કરવા લાગ્યા માર્ગણા તેમજ ગચે પણા કરતા અમે લોકો તે જગ્યાએ પહોંચ્યા બધા ધર્મરુચિ અનગારતુ મહા પડથુ હંતુ અમે લોકો અત્યારે ત્યાથી જ આવી રહ્યા છીએ હે ભદ્રત ! તે ધર્મરુચિ અનગાર મરણ પામ્યા છે તેઓથીના આ આચાર લાડક વસ્ત્રપાત્રો છે, ત્યારપછી તે ધર્મચોપ સ્થવિરે દૃષ્ટિવાદના અતર્ગત શ્રુતાધિકાર વિશેષમા પોતાને ઉપયોગ લગાવ્યો તેમાથી તેઓને આ વાતની બહુ થઈ કે બધારે ધર્મરુચિ આહાર લાવવા માટે નગરીમા ગયા હતા, ત્યારે તેઓ કેના ઘર ગયા હતા, આ આહાર તેમને કેણુ આપ્યો હતો વગેરે પોતાના ઉપયોગથી આ બધી વિગત બાણી તેમણે નિર્ગ્રન્થ શ્રમણો અને નિર્ગ્રન્થ શ્રમણીઓને પોતાની પાસે બોલાવી અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(એ ચલુ અઝો મમ અતેવાસી, ધમ્મરૂઈ જામ અનગારે)

સ્વભાવેન ભદ્રઃ-શાન્તઃ, યાવદ્-યાન્ કરુણાદિદ્ દ્રષ્ટવ્યમ્-' પગઈ ઉવસતે, પગઈ-પયણુ કોહમાણમાયાલોહે, મિઝમદવસપણ્ણે, આલીણે, મદદ, રૂતિ । મકુત્યુ-પશાન્ત', મકુતિ પ્રતનુક્રોધમાનમાયા લોમઃ, મૃદુ માર્દવસપન્નઃ, આલીનઃ, મદ્રઃ, રૂતિ । વિનીતઃ ' મામ માસેળ' માસ વ્યાપ્ય માસેન=મામસપણનામકેન, અનિશ્ચિત્તેન=અ-તરહિતેન, અવિશ્રાન્તનેત્યર્થઃ તપઃ કર્મણા વિચરન્ પારણક્રુદિને યાવત્-નાગશ્રિયા વ્રાહ્મણ્યામૃદમનુપવિષ્ટ', તતસ્તદનન્તર સા નાગશ્રી વ્રાહ્મણી યાવત્-શારદિકં તિક્તલાલુકુ ' નિસિરઈ ' નિષ્ટજનિ=પાત્રે નિશ્ચિપતિસ્મ । તતઃ ધર્મરુચિ-

અણગારે પગઈમદદ જાવ વિણીણ માસ માસેળ અણિચ્ચિત્તેણ તવોક-કમેણ જાવ નાગસિરીણ માહ્ણીણ ગિહે અણુપવિષ્ટે તણ સા નાગસિરી માહ્ણી જાવ નિસીરઈ, તણ સે ધમ્મરૂઈ અણગારે અહાપજ્જત્તમિત્તિ કદ્દુ જાવ કાલ અણવકલેમાણે વિહરઈ, સેણ ધમ્મરૂઈ અણગારે વહ્ણિ વાસાણિ સામન્નપરિયાગ પઝણિત્તા આલોડયપહિક્કતે સમાહિ પત્તે કાલમાસે કાલ કિચ્છા ઉડ્ડુ સોહમ્મ જાવ સવ્વટ્ઠસિદ્ધે મહાવિમાણે દેવત્તાણ ઉવવન્ને ઠિઈ પણ્ણત્તા) આર્યો ! સુનો યાત એસી હૈ મેરે અન્તે વાસી શિશ્ય-ધર્મરુચિ અનગાર સ્વભાવ સે હી ભદ્ર પરિણામી થે । યાવત્ શબ્દ સે રૂસ પાઠ કા યહા સગ્રહ હુઆ હૈ " પગઈ ઉવસતે પગઈ પગણુ કોહમાણમાયા લોહે મિઝમદવસપણ્ણે આલીણે મદદ " । યે અવિશ્રાન્ત અતર રહિત-માસ મામલમણ પારણા કરતે યે । આજ ઉનકે પારણા કા દિન થા-સો ગોચરીકે લિયે ઞ્રમણ કરતે હુએ યે નાગશ્રી વ્રાહ્મણીકે ઘર

વિણીણ માસ માસેળ અણિચ્ચિત્તેણ તવો કમેણ જાવ નાગસિરીણ માહ્ણીણ ગિહે અણુપવિષ્ટે તણ સા નાગસિરિ માહ્ણી જાવ નિસીરઈ, તણ સે ધમ્મરૂઈ અણગારે અહાપજ્જમિત્તિ કદ્દુ જાવ કાલ અણવકલેમાણે વિહરઈ, સેણ ધમ્મરૂઈ અણગારે વહ્ણિ વાસાણિ સામન્નપરિયાગ પઝણિત્તા અલોડયપહિક્કતે સમાહિપત્તે કાલમાસે કાલં કિચ્છા ઉડ્ડુ સોહમ્મ જાવ સવ્વટ્ઠસિદ્ધે મહાવિમાણે દેવત્તાણ ઉવવન્ને ઠિઈ પણ્ણત્તા) આર્યો ! સાભણો, યાત એવી છે કે મારા અતેવાસી શિશ્ય-ધર્મરુચિ અનગાર સ્વભાવથી જ ભદ્ર પરિણામી હતા યાવત્ શબ્દથી અહીં આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે-“ પગઈ ઉવસતે ” (પગઈપયણુકોહમાણમાયાલોહે મિઝમદવસપણ્ણે આલીણે મદદ) તેઓ અવિશ્રાન્ત-અતર રહિત-(નિરતર) માસ ખમણ કરતા રહેતા હતા આજે તેમનો પારણાનો દિવસ હતો, તેઓ આહાર માટે ખમણ કરતા નાગશ્રી વ્રાહ્મણીના ઘરે ગયા હતા વ્રાહ્મણીએ શારદિક તિક્ત

રનગારો યથાપર્વાત્તમિતિ કૃત્વા = ધુધાનિવૃત્તયં પૂર્ણમિતિ મત્વા યાવત્-કાલમ્
 'અવળરુલેમાણે' અનગારાદ્દસમાણઃ ચિહ્નરતિ, સ ચત્તુ ધર્મરુચિરનગારો મહાનિ
 વર્ષાણિ શ્રમણ્યપર્વાય પાલયિત્વા, આલોચિત પ્રતિકાતઃ સમાધિપ્રાપ્તઃ કાલમાસે
 કાલ કૃત્વા ઝર્ષે 'સોદમ્મ જાવ સચ્ચદ્ધસિદ્ધે' સૌધર્માદયો દ્વાદશદેવલોકાઃ, તત્
 ઉધ્યં નવગ્રેવેયકાનિ તદુપરિ યાવત્ સર્વાર્થસિદ્ધે, મહાપિમાને દેવત્વેનોપપન્ન = દેવમત્ત
 પ્રાપ્તવાન્ । તત્ = તસ્મિન્ સર્વાર્થસિદ્ધિપિમાને, સત્તુ 'અજહણ્ણમણુક્કોસેણ' અજપ-
 ન્યાતુત્કુપ્પેન = જપન્યોત્કુપ્પરિનિતેન તત્ત્ર દિ સર્વેણ દેવાનાં સ્થિતિઃ સમાનૈવ ભવતિ ન
 તુ ન્યૂનાધિકકાલતયા ચિપમેતિમાયઃ । ત્રયસ્થિશ્ચત્ સાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા,
 તત્ત્ર ધર્મરુચેરપિ દેવસ્ય ત્રયસ્થિશ્ચત્ સાગરોપમાનિ સ્થિતિઃ પ્રજ્ઞતા, સ ચત્તુ ધર્મરુચિ
 દેવસ્તસ્માદ્ દેવલોકાદ્ = સર્વાર્થસિદ્ધિપિમાનાદ્ યાવત્ ચ્યુત સત્ત્ યાવત્ મહાવિદેહે
 વર્ષે સિઙ્ગિહિહ' સેત્સપતિ, સિદ્ધિ પ્રાપ્સ્યતિ । તત્ = તસ્માદ્ ચિગસ્તુ સ્વલ્લ હે

પહુંચે । યાવન્ ઉસને જારદિક તિત્ત કઢવે તુવે કી શાક ડનકે
 પાત્ર મેં યોદ્ધરાય વર્નરુચિ અનગાર ને ઉસકો છુ યાનિવૃત્તિ કે લિપ
 પર્વાસિ માન કર લિયા । ડન ધર્મરુચિ અનગારને અનેક વર્ષોં તક
 શ્રમણ્ય પર્વાય કા પાલન કિયા, ઓર પાલન કરકે આલોચિત
 પ્રતિકાન્ત હોકર વે સમાધિ મેં લીન હો ગયે । કાલ અવસર કાલ
 કરકે અવ વે સૌવર્ન આદિ ૧૨ દેવલોકો સે ડપર નવગ્રેવેય
 કો સે નો આમે જો સર્વાર્થસિદ્ધિ નામ કા વિમાન હૈ કિ જિસમેં ૩૩
 સાગર કી સ્થિતિ હૈ-ઓર યહ સ્થિતિ જહા સ્વ દેવ કી સનાન હેં ઉસમેં
 ૩૩ સાગર કી સ્થિતિવાલે દેવ હુ ૧ હેં । "અજહણ્ણમણુક્કોસેણ" જપ
 ન્ય ઓર ઉત્કુપ્પ તેત્રીસ સાગરોપમ કી સ્થિતિ હૈ । (સ ણ ધમ્મહરૂં
 દેવે તાઓ દેવલોગાઓ જાવ મહાવિદેહે-વાસે સિઙ્ગિહિહ, ત ચિરત્થુ

કડવી તૂબડીતુ શાક તેમના પાત્રમા વહોરાવ્યુ ધર્મરુચિ અનગારે
 તેને છુધા નિવૃત્તિ માટે પર્વાસ બાણીને તેને સ્ત્રીકારી લીધુ તે ધર્મરુચિ
 અનગારે ઘણા વર્ષોં સુધી શ્રામણ્ય પર્વાયનુ પાલન કર્યું છે અને,
 પાલન કરીને આલોચિત પ્રતિકાત થાને તેઓ સમાધિમા લીન થઈ ગયા છે
 કાળ સમયે કાળ કરીને હવે તેઓ સૌધર્મ વગેરે બાર દેવલોકોથા ઉપર નવ
 ગ્રેવેયકોથી પશુ આગળ ૧૨ સર્વાર્થસિદ્ધિ નામે વિમાન છે કે જેમા ૩૩ સાગરની
 સ્થિતિ છે અને આ સ્થિતિ જના બધા દેવાની સરખી છે, તેઓ તેમા ૩૩
 સાગરની સ્થિતિવાળા દેવ થયા છે "અજહણ્ણમણુક્કોસેણ" જપન્ય અને
 ઉત્કુપ્પ ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(સેણ ધમ્મહરૂં દેવે તાઓ દેવલોગાઓ જાવ મહાવિદેહે-વાસે સિઙ્ગિહિહ,

આર્યો ! નાગશ્રિય બ્રાહ્મણીમધન્યામપુણ્યા યાવદ્ દુર્ભગ નિમ્બગુલિકામ્, યથા-
સલ્લ નાગશ્રિયા બ્રાહ્મણ્યાતયારૂપ' પ્રકૃતિભદ્રત્વાદિગુણયુક્તઃ સાધુ ધર્મરુચિરનગારો
માસસખમણપારણકે શારદિકેન તિક્તલાલુકેન યાવત્ સ્નેહાવગાદેનાઽકાલ એવ
જીવિતાદ્ વ્યપરોપિતઃ ॥૨૦૪॥

મૂલમ્-તર્ણાં તે સમણા નિર્ગંથા ધમ્મઘોસાણં થેરાણ અંતિએ
એયમટ્ટં સોચ્છા નિસમ્મ ચંપાએ સિંઘાડગતિગ જાવ વહુજણસ્સ
એવમાઙ્કલ્લંતિ-ધિરત્થુ ણં દેવાણુપ્પિયા ! નાગસિરીએ માહણીએ
જાવ ણિંવોલિયાએ જાએ ણં તહારૂવે સાહૂ સાહૂરૂવે સાલહૂણં
જીવિયાઓ વવરોવેહ, તર્ણ ણં તેસિં સમણાણ અતિએ એયમટ્ટં
સોચ્છા નિસમ્મ વહુજણો અન્નમન્નસ્સ એવમાઙ્કલ્લં એવ માસહ

ણ અજ્ઞો ! નાગસિરીએ માહણીએ અધન્નાએ, અપુન્નાએ, જાવ ણિંવોલિયાએ
જાએ ણં તહારૂવે સાહૂ ધમ્મરૂહં અણગારે માસસખમણપારણગસિ સાલહૂએ
ણં જાવ ગાદેણ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિણ) વે ધર્મરુચિ દેવ
હસ દેવલોક સે ચવકર યાવત્ મહાવિદેહ ક્ષેત્ર સે સિદ્ધિકો પ્રાપ્ત કરેંગે
આર્યો ! અધન્ય, અપુણ્ય યાવત્ દુર્ભગ નિમ્બગુલિકા જેસી અનાદરણીય
હસ નાગશ્રી બ્રાહ્મણી કો ધિક્કાર હો-કિ જિસને તથારૂપ, પ્રકૃતિ ભદ્ર-
ત્વાદિ ગુણો સે સપન્ન સાધુ ધર્મરુચિ અનગાર કો માસસખમણ કે પારણા
કે દિન શારદિક તિક્ત કડવી તુષી કા શાક યાવત્ સ્નેહાવગાદ યના-
કર દિયા-કિ જિસસે વે અકાલ મેં મરણ કો પ્રાપ્ત હૂણ ॥ સૂ. ૪ ॥

ત ધિરત્થુણ અજ્ઞો ! નાગસિરીએ માહણીએ અધન્નાએ, અપુન્નાએ, જાવ ણિંવોલિ
યાએ જાએ ણ તહારૂવે સાહૂ ધમ્મરૂહં અણગારે માસસખમણપારણગસિ સાલહૂએ
જાવ ગાદેણ અકાલે ચેવ જીવિયાઓ વવરોવિણ)

તે ધર્મરુચિ દેવ તે દેવલોકથી ચલીને યાવત્ મહાવિદેહ ક્ષેત્રથી સિદ્ધિને
મેળવશે હે આર્યો ! અધન્ય, અપુણ્ય, યાવત્ દુર્ભગ નિમ્બગુલિકા જેવી અના-
દરણીય તે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને ધિક્કાર છે કે જેણે તથારૂપ, પ્રકૃતિ ભદ્રત્વ
વગેરે ગુણોવાળા સાધુ ધર્મરુચિ અનગારને માસ ખમણના પારણાના દિવસે
શારદિક તિક્ત કડવી તુળડીનું શાક-કે જે સરસ વધારેલું, જેની ઉપર થી તરતું
હટું-વહોરાવ્યું, જેને લીધે અકાળે જ તેઓનું મરણ થયું. ॥ સૂ. ૪ ॥

धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीयियाओ ववरोविए,
तएणं ते माहणा चंपाए नगरीए बहुजणस्स अंतिए एयमढं
सोच्चा निसम्म आसुस्ता जाव भिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी
माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छिता णागसिरी माहणी
एव वयासी-हं भो ! नागमिरी ! अपत्थिय पत्थिय दुरंत पत्त-
लक्खणे हीणपुण्णचाउदसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए
जाव णिचोलियाए जाव ण तुमं तहारूवे साहू साहूरूवे मास-
खमणपारणसि सालइएणं जाव ववरोविए, उच्चावयाहिं
अक्कोसणाहि अक्कोसेति उच्चावयाहिं उद्धंसणाहि उद्धसेति
उच्चावयाहि णिब्भत्थणाहि णिब्भत्थति उच्चावयाहि णिच्छोड-
णाहि निच्छोडेति तज्जेति तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ
गिहाओ निज्जुभंति, तएण सा नागसिरी सयाओ गिहाओ
निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिघाडगतियचउक्कचच्चर
चउम्मुह० बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निदिज्जमाणी
गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी
थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलय वा अलभमाणी२ दडि-
खडनिवसणा खडमल्लयखडघडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा
मच्छियाचडगरेण अग्निज्जमाणमगागेह गेहेणं देह वलियाए
वित्ति कप्पेमाणी विहरइ, तएण तीसे नागसिरीए माहणीए
तवभवंसि चेव सोलस रोयायका पाउब्भूया, त जहा-सासे
कासे जोणीसूल जाव कोडे, तएण सा नागमिरी माहणी

સોલસહિ રોયાયકેહિ અભિભૂયા સમાણી અટ્ટદુહટ્વસટ્ઠા કાલ-
માસે કાલ કિચ્ચા છટ્ઠીએ પુઢવીએ ઉવ્કોસેણં વાવીસસાગરો-
વમટ્ઠિહિણસુ નેરણસુ નેરહયત્તાએ ઉવવન્ના ॥ સૂ૦ ૫ ॥

ટીકા—‘તણ તે’ ઇત્યાદિ । તતઃ સ્વલ્પ તે શ્રમણાઃ નિર્ગન્થા ધર્મધોષાણાં
સ્થવિરાણામન્તિકે એતમ્યં શ્રુત્વા નિગમ્ય ચપ્પાયાં શ્રૃગાટક—યાવન્મહાપથેષુ વહુ-
જનસ્ય એવમાત્વ્યાન્તિ ધિગસ્તુ સ્વલ્પ હે દેવાનુપ્રિયાઃ । નાગશ્રિય બ્રાહ્મણીં યાવદ્
દુર્મગનિમ્નગુલિકામ્, યયા સ્વલ્પ તથારૂપઃ સાધુઃ સાધુરૂપો ધર્મરુચિરનગારઃ શાર-
દિકેન યાવત્તિક્કાલાલુકેન જીવિતાદ્ વ્યપરોપિતઃ । તતઃ સ્વલ્પ તેષાં શ્રમણાનામન્તિકે

‘તણ તે સમણા નિગ્ગંથા’ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તણ) હમકે યાદ (તે સમણા નિગ્ગથા ધમ્મધોસા યેરાણ
અંતિએયમટ્ઠ સોચ્ચા નિસમ્મ ચપ્પાએ સિંધાડગતિગ જાવ વહુજણસ્સ એવ
માહસ્વત્તિ—ધિરત્યુણં દેવાણુપ્પિયા । નાગસિરીએ જાવ ણિંબોલિયાએ જાણેણ
તહારૂવે સાહુ સાહુરૂવે સાલહણેણ જીવિયાઓ વવરોવેહ) હવ શ્રમણ
નિર્ગન્થોને ધર્મધોષ સ્થવિર કે મુખ સે હસ સમાચાર કો સુનકર ઔર
હસકા હૃદય મેં વિચાર કર ચપાનગરી મેં શ્રુગાટક યાવત્ મહાપથો મેં
વહુજનોં સે ણેસા કહા હે દેવાનુપ્રિયોં । બ્રાહ્મણી નાગશ્રી કો ધિકાર હૈ
યાવત્ નિમ્ન કી નિગોલી જેસી અનાદરણીય હૈ કિ જિસને તથા રૂપ
સાધુ—સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગાર કો શારદિક યાવત્ કહવે તુમ્હે કા
શાક દેકર જીવન સે રહિત્ કરદિયા હૈ । (તણ તે સિં સમણાણ અં-

‘તણ તે સમણા નિગ્ગથા’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ (તણ) ત્યારણાહ

(તે સમણા નિગ્ગથા ધમ્મધોસા યેરાણ અંતિએયમટ્ઠ સોચ્ચા નિસમ્મ ચપ્પાએ
સિંધાડગતિગ જાવ વહુજણસ્સ એવ માહસ્વત્તિ—ધિરત્યુણં દેવાણુપ્પિયા । નાગ
સિરીએ માહણીએ જાવ ણિંબોલિયાએ જાણેણ તહારૂવે સાહુ સાહુરૂવે સાલહણેણ
જીવિયાઓ વવરોવેહ)

તે શ્રમણ નિર્ગન્થોએ ધર્મધોષ સ્થવિરના મુખથી આ વાત સાંભળીતે
અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને અપાનગરીમાં શ્રુગાટક મહાપથો વગેરેમાં ઘણા
માણસોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હું દેવાનુપ્રિયો ! બ્રાહ્મણી, નાગશ્રીને ધિકાર છે
અને તે લીમડાની લીંબોળાની જેમ અનાદરણીય છે કેમકે તેણે તથાસ્પ સાધુ સાધુ
રૂપ ધર્મ રુચિ અનગારને શારદિક કહવી તુલ્યીત શાક આપીને મારી નાખ્યા છે

एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य बहुजनोऽन्योन्यस्पर्शपरस्परस्य णामाभ्याति-एव भावते
एव प्रज्ञापयति, एव मनुष्ययति धिगस्तु ग्लु नागभिगा ब्राह्मण्याः, यया धर्मरुचि-
नगर शारदिकेन यायद् जीविताद् व्यपरोषितः । ततः ग्लु ते ब्राह्मणा चपाया
नगर्या बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य, आधुक्ताः=त्रीं क्रोधाविष्टाः
यावत् मिसमिसन्त =क्रोधानलेन प्रज्वलन्त, यथैव नागश्रीब्राह्मणी, तत्रैवोपागच्छन्ति,

ति ए एयमद्द सोचा बहुजणे अक्षमन्नस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ
धिरत्थुणं नागसिरीए माहणीए जाय जीवियाओ ववरोविण, तण्णं ते
माहण चंपाए नयरीए बहुजणस्स अतिए एयमद्द सोच्चा निसम्म आ-
सुरत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवाग
च्छन्ति) उन श्रमणजनों के मुख से इस समाचार को सुनकर और
उसे हृदय में धारण करके अनेक मनुष्य आपस में इस प्रकार कहने
लगे बोलने लगे प्रज्ञापना करने लगे प्ररूपणा करने लगे कि ब्राह्मणी
नागश्री को धिक्कार है जिसने धर्मरुचि अनगर को शारदिक-तित्त
कडवे तुंबे के शाक से जीवन रहित कर दिया है । इस प्रकार उन
ब्राह्मणों ने तथा सोम, सोमदत्त, सोमभूति आदि ने जब चपानगरी में
अनेक मनुष्यों के मुख से इस बात को सुना-तो वे सुनकर और उसे
अपने २ हृदय में धारण कर इकदम क्रोध से तम तमा उठे और
यावत् क्रोधानल से जलते हुए जहां नागश्री ब्राह्मणी थी वहां आये-

(तण्णं तेसिं समणार्ण अतिए एयमद्द सोच्चा बहुजणे अक्षमन्नस्स एवमाइ
क्खइ, एव भासइ धिरत्थुण नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविण,
तण्णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अतिए एयमद्द सोच्चा निसम्म आसु-
रत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छन्ति)
ते श्रमण्यु बोकेना सुभभी आ सभायार सावणीने अने तेने हृदयभा
धारण्यु करीने धण्णु माणुसे अेकणीलनी साथे आ रीते वातचीत करवा लाग्या,
प्रज्ञापना करवा लाग्या, प्ररूपण्यु करवा लाग्या के ब्राह्मण्यु नागश्रीने धिक्कार
छे जेणे धर्मरुचि अनगरने शारदिक-तित्त कडवी तुण्डीना शाकथी भारी
नाभ्या आ रीते ते ब्राह्मणेअे अेउले के सोम, सोमदत्त अने सोमभूतिअे
न्यादे यथा नगरीना अनेक माणुसेना सुभभी आ वात सावणी त्यादे तेअे
सावणीने अने तेने हृदयभा धारण्यु करीने अेकदम क्रोधाविष्ट थई गया अने
क्रोधाधी अग्निभा सजगता न्या नागश्री ब्राह्मण्यु उठी त्या आभ्या.

ઉપાગત્ય નાગશ્રિય વ્રાહ્મણીમેરમવાદિપુઃ-ઉક્તવન્તઃ, હ ભો ! નાગશ્રીઃ । અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિકે ! મરણામિત્રાપિણિ ! દુરન્તપ્રાન્તલક્ષણે ! હીનપુણ્યચાતુર્દશિકે ! ધિગસ્તુ સ્વલુ તવ અધન્યાયાઃ અપુણ્યાયાઃ યાવદ્-દુર્મગનિમ્બગુલિકાયાઃ, અત્ર દ્વિતીયાર્થે ષષ્ઠી આર્પત્વાત્, યયા સ્વલુ ત્વયા તથારૂપઃ સાધુ સાધુરૂપો ધર્મરુચિરનગારો માસલ્પણપારણકે શારદિકેન તિક્ત્તાલાગુકેન યાવદ્ વ્યપરોપિતઃ, 'ઉચ્ચાવયાર્હિ' ઉચ્ચાવચામિઃ=ઉચ્ચનીચામિઃ 'અક્રોસનાર્હિ' આક્રોશનામિઃ=નિન્દાવચૈઃ નીચા ઽસિ ત્વમિત્યાદિભિર્વચનૈઃ 'અક્રોસતિ' આક્રોશન્તિ-ફટકારયન્તિ ઉચ્ચાવચામિઃ ઉદ્ધં 'સનામિ' દુષ્કુલોત્પન્નાઽસિત્યાદિવચનૈઃ, 'ઉદ્ધંસેતિ' ઉદ્ધસયન્તિ=કુલાદિ-

(ઉવાગચ્છિન્તા નાગસિરી માહર્ણી એવ વયામી) હ ભો ! નાગસિરી ! અપત્થિયપત્થિય દુરતપતલલક્ષણે, હીન પુણ્ણચાઉદસે ધિરત્યુણ તવ અધ-ન્નાપ અપુન્નાપ જાવ ગિંવોલિયાપ જાપ ન તુમે તદારૂવે સાહુ સાહુરૂવે માસ સ્વમણપારણંસિ સાલ-હણ જાવ વવરોવિપ ઉચ્ચાવવયાર્હિ અક્રોસનાર્હિ અક્રોસતિ ઉદ્ધંસેતિ) વદા આકર ન્દોને નાગશ્રી વ્રાહ્મણીસે કહા અરીઓ નાગશ્રી ! અરી અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિકે ! હે દુરન્તપ્રાન્ત લક્ષણે ! ઓ હીન પૂણ્ય ચાતુર્દશિકે ! તુલ્લ અપુણ્ય અધન્યા કો ધિક્કાર હો ! તૂ દુર્મગ નિમ્બગુલિકા જૈસી અનાદરણીય હૈ જો તૂને માસસ્વમણકે પારણા કે દિન ઘરપર આહાર લેને કે નિમિત્ત આયે હુપ તથા રૂપ સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગાર કો શારદિક તિક્ત કડવે તુંને કા શાક વેકર જીવન સે રહિત કર દિયા હૈ । તૂ ઘડી નીચ હૈ ઇત્યાદિ રૂપ ઊંચ, નીચ આક્રોશ નિન્દા-વચનોં સે ઉન્હોં ને ઉસે ફટકારા તૂ નીચ સ્વાનદાન કી

(ઉવાગચ્છિન્તા નાગસિરી માહર્ણી એવ વયામી-હ ભો ! નાગસિરી ! અપત્થિ ય પત્થિય દુરતપતલલક્ષણે, હીનપુણ્ણચાઉદસે ધિરત્યુ ન તવ અધન્નાપ અપુન્નાપ જાવ ગિંવોલિયાપ જાપ ન તુમે તદારૂવે સાહુ સાહુરૂવે માસસ્વમણપારણંસિ સાલ-હણ જાવ વવરોવિપ ઉચ્ચાવવયાર્હિ અક્રોસનાર્હિ અક્રોસતિ ઉદ્ધંસેતિ) ત્યા આવીને તેમણે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને કહ્યું કે-કે મુર્ધ ઓ નાગશ્રી ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિકે ! હે દુરત પ્રાત લક્ષણે ! ઓ હીનપુણ્ય ચાતુર્દશિકે ! તારા જેવી પાપણી અધન્યાને ધિક્કાર છે તુ દુર્મગ નિમ્બગુલિકા (લિંબોળી જેવી અનાદરણીય છે કેમકે તેણે માસ-અમણના પારણાના દિવસે ઘેર આહાર લેવા માટે આવેલા તથા રૂપ સાધુ સાધુરૂપ ધર્મરુચિ અનગારને શારદિક તિક્ત કડવી તબડીતુ શાક આપીને મારી નાખ્યા છે તુ સાવ નીચ છે, આમ પણ ઉચ્ચ-નીચ આક્રોશ-નિન્દાના વચનોથી તેઓએ તેને ફીટકારી તુ નીચ

ગૌરવાત્પાતયન્તિ, ઉચાચચામિર્નિર્મલસનામિઃ=ચક્રાચામિઃ 'ગિન્મર્યંતિ' નિર્મલ-
યન્તિ, ઉચાચચામિ 'ગિન્મર્યંતિ' નિર્મલોદનામિઃ=અસ્મદ્ ગૃહાચ્ચિ
નિસ્સર ઇત્યાદિ ચયૈ 'નિચ્છોદેતિ' નિચ્છોદયન્તિ = ગૃહાદિત્યાગમવૈભો
ધ્વનેન ભીષયન્તિ, 'તજ્જેતિ' તજ્જયન્તિ 'જ્ઞામ્યસિ પાપે।' ઇત્યાદિવાચ્યેન્ગુલી
પ્રદર્શનપૂર્વક તાડનમય પ્રદર્શયન્તિ, 'તોલેતિ' તોલયન્તિ ચપેટાદિભિઃ, તજ્જેતિ
તોલેતિ, સ્વકાંદ્ ગૃહાદ્ 'નિચ્છુમંતિ' નિષિષ્યન્તિ = પ્રેરિર્નિ-સારયન્તિ ।
તતેસ્તદનંતર સા નાગશ્રીઃ સ્વકાંદ્ ગૃહાર 'નિચ્છુડા સમાણી' નિષિષ્ણામતી=નિ
સરિતાસંતી, ચપાયા નગર્યા. શ્રદ્ધાટક ચિરુચતુરચેતરચતુર્મુખમંદાપવપથેષુ યત્ર યત્ર

હૈં હસ તરંહ કી ઝંચી નીચી ધાણિયોં સે ઉસે ખલોં ધુરાં કંહા કુલોંદિ
કે ગૌરેવ સે ઉસે પતિત કંહોં । (ઉચાચચામિર્નિર્મલોદનામિર્નિર્મલ્યંતિ, ઉચાચચામિર્નિર્મલ્યંતિ
નિચ્છોદેતિ, તજ્જેતિ, તોલેતિ, તજ્જેતિ
તોલેતિ સયાઓ ગિહાઓ નિચ્છુમંતિ) ઝંચે નીચે કઠોર વચ્ચેનોં સે
ઉસકો તિરસ્કાર કિયોં । ખલે ધુરે વચ્ચેનોં સે ઉસે ડરચાયા-હમારે ઘર
સે તૂ બાહિર નિકલે જા ઇત્યાદિ અયોત્પાદક શબ્દોં સે ઉસે અય
દિલ્લાયા । ઓ પાપિની ! તૂજે મોલૂમ પડ જાયગા, ઇત્યાદિ વાક્યોં સે
અંગુલી દિશ્વા ૨ કર ઉસે મારંને કો અય દિલ્લાયાં ઓર ચપેટા-થપ્પે
ઓંદિ સે ઉસે પીટા ખી । ઓર પીટપોટ કરે ઉસે ઉન્હોંને ફિર અંપને ઘર
સે બાહિર નિકાલે દિયોં । (તર્ણં સા નાગસિરી સયાઓ ગિહાઓ
નિચ્છુડા સમાણી ચપાણ નગરીયે સિંધાડગતિગચ્છેકચ્ચરચ્છેમ્મુહં)

ખાનદાનની છે, આ જાતના ઉચા નીચા વચ્ચેનાથી તેણે જોટી ખરી સ બળાવી
કુળ વંશેરના ગૌરવથી તેણે પતિતા કહ્યું

(ઉચાચચામિર્નિર્મલોદનામિર્નિર્મલ્યંતિ, ઉચાચચામિર્નિર્મલ્યંતિ, નિચ્છોદેતિ, તજ્જેતિ, તોલેતિ તજ્જેતિ તોલેતિ સયાઓ ગિહાઓ નિચ્છુમંતિ)

ઉચા નીચા વચ્ચેનાથી તેને તિરસ્કાર કર્યો, જોટા ખરા વચ્ચેનાથી તેને
ખીવડાવી 'અમારા ઘરથી તુ બહાર નીકળી જા' વગેરે ભયોત્પાદક વચ્ચેનાથી
તેણીને ખીક બતાવી 'એ પાપણી ! તને મળ બતાવવી દઈશું ?' વગેરે વચ્ચે
નાથી સામી આગળી કરીને તેને મારી નાખવાની ખીક બતાવવા લાગ્યા અને
શ્રૂપક લાક્ષ વગેરેથી તેને માર પથુ માર્યો, માર્યા કરીને તેઓએ તેને
જોતાના ઘરથી બહાર કાઢી મૂકી

(તપણ સા નાગસિરી સયાઓ ગિહાઓ નિચ્છુડા સમાણી ચપાણ નગરીય
સિંધાડગતિગચ્છેકચ્ચરચ્છેમ્મુહં બહુજળેણ)

गच्छेति उत्र तत्र सर्वत्र बहुजनेन 'हीलिज्जमाणी' हील्यमाना-जात्याद्युद्धाटनेन,
'खिसिज्जमाणी' खिस्यमाना-परोक्षदुस्सनेन, 'निदिज्जमाणी' निघमाना-
तत्परोक्षम् 'गरहिज्जमाणी' गर्हमाना-तत्समक्षमेव 'तज्जिज्जमाणी' तज्ज्यमाना-
अगुलीचालनेन भयमुत्पादयमाना 'पञ्चहिज्जमाणी' पञ्चयमाना यष्ट्यादिता-
डनेन 'त्रिकारिज्जमाणी' त्रिक्रियमाणा 'धुक्कारिज्जमाणी' धुत्क्रियमाणा कुत्रापि

बहुजनेन हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी,
तज्जिज्जमाणी, पञ्चहिज्जमाणी, त्रिकारिज्जमाणी, धुक्कारिज्जमाणी,
कत्थइ ठाण वा नित्थ वा अलममाणी २ दडि खडा निवसणा खंड
खंडमल्लय खंड खंड घउमत्थगया फुट्टुड्डाहडसीसा म च्छियाउमारेणं
अग्निज्जमागमग्गा गेह गेहेण देह उलियाण वित्तिक्कप्पेमाणी विहरइ)
अपने घर से बाहिर निकल कर वह नागश्री चपानगरी के शृंगाटक,
त्रिक, चतुष्क, चत्वर चतुर्मुख महापथ आदि मार्गों पर जहा २ गेह,
वहा २ सर्वत्र अनेक जनों ने उसकी " यह नीचजाति की है " इत्या-
दिरूप से हीलना की। सब के सब उसपर बहुत क्रोधित हुए सबने
उसकी परोक्ष में निंदा की। सामने सत्रने उसे मला बुरा कहा। अगुली
संचालन पूर्वक उसे मारने पीटने का भय दिखलाया। किन्हीं २ ने उसे
लकड़ी आदिसे मारा पीटा भी। अनेकोने उसे धिक्कारा। कितनेक
जनों ने उसे देखकर उसपर बुरा भी दिया। इस तरह की परिस्थिति

निदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, तज्जिज्जमाणी पञ्चहिज्जमाणी, त्रिकारिज्जमाणी,
धुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाण वा नित्थ वा अलममाणी २ दडिखडा निव-
सणा खंडमल्लय खंड खंड घउमत्थगया फुट्टुड्डाहडसीसाम च्छियाउमारेणं
अग्निज्जमाणमग्गा गेह गेहेण देह उलियाण वित्तिक्कप्पेमाणी विहरइ)

घोताना घरथी गडार नीकणीने ते ता। श्री यथा नगरीना शृंगाटक,
त्रिक, चतुष्क, चत्वर, चतुर्मुख, महापथ वगेरे मार्गों उपर ल्या गध ल्या
ल्या गधे घण्टा भाणुसो तेनी " आ नीथ जतनी छे " वगेरे पथने। थी
हीलना उरी गध भाणुसो तेनी उर भूण न शुन्से यथा तेनी गेर डाण
रीभा लोकोळे तेनी भूण निंदा करी, तेनी साथे तेने गधाले भरी भोटी
सभजावी, आगणी थी धी थी धीने तेनी साथे भारपीट करवानी भीक भता-
ववा लाख्या कोर्छ कोर्छले तो तेने लाकड़ी वगेरेने इटगे पणु भार्यो, घण्टा
भोले तेने इटकारी, इटलाक भाणुसोले तेने लोधने तेनी उपर सूझी झीझु.

स्थानं या निरासार्थं निन्य या-अन्पराश्रित्यमार्थस्थानम्, अन्पमाना २=अमा-
 न्पुवती २, 'दन्तीखडनिगना' दण्डिगण्डनिगना=दण्डि-कनमन्पान जीर्णवस्त्र,
 तस्य सण्ड, तदर निगनन-परिधान यस्याः सा तथा, 'खडमल्लपखडगडगड-
 गया' खण्डमल्लक-सण्डपट्टदस्तगता=खण्डमल्ल=मिद्वर्ग शराखण्ड सण्डपट्ट
 कथ पानार्थं घटखण्ड, तद् द्वय दस्तगत यस्या सा तथा, 'कुट्टदडादृसीसा'
 स्फुटितदडादृशीर्षा-स्फुटित स्फुटितकेश 'दडादृम्' अयर्थं शीर्षं शिरो यस्याः
 सा तथा, प्रिकीर्णकेशयतीत्यर्थ 'मञ्जिगानहगरेण अमिज्जमाणमग्गा' मसिका
 चटकरेण अन्योपमानमार्गा मसिकासमूहेन अनुगम्यमानमार्गा शरीरवस्त्रादीना
 मलिनत्वान् मसिकास्तत्पृष्ठतो धारतीत्यर्थ. गेह गेहेण देह वलियाए' गृह गृहेण
 देहलिकया=प्रतिगृह देहनिर्वाहेतोः उदरपूर्यर्थमेवेत्यर्थ-पृति 'कप्पेमाणी'
 कल्प्यमाना=कुर्वाणा सती विहरति । ततस्तदनन्तर खल्ल तस्या नागश्रिया ब्राह्मण्या
 स्वस्मिन् भवे एव षोडश रोगातङ्काः प्रादुर्भूताः, तद्वयथा-(१) भ्वासः, (२)
 कासः, (३) ज्वरः, 'जायकुट्टे' यावत्-कुष्ठम्, (४) दाहः, (५) कुक्षिशूलम्, (६)

का सामना करती हुई वह कहीं पर भी बैठने के लिये स्थान को, और
 ठहरनेके लिये-विश्राम करनेके लिये-जगह भी को नहीं प्राप्त करती फटे
 हुए जीर्ण वस्त्र के टुकड़े को पहिरे हुए भिक्षा के लिये मिट्टी के खप्पर
 को और पानी के लिये फूटे घड़े के टुकड़े को हाथ में लिये हुए इधर
 उधर एक घर से दूसरे घर पर उदर पूर्ति के लिये फिरने लगी । इसके
 शिर के घाल इधर उधर बिखरे हुए रहते थे । शरीर और वस्त्रादिकों
 के मैले कुचैछे होने के कारण मक्षिकाओं का समूह इसके पीछे पीछे २
 भागता रहता था । (तएण तीसे नागसिरीए माहणीए तवभवसि चेव
 सोलसरोयायंका पाउब्भूया- त जहा सासे कासे जोणिसूले, जाव

आवी परिस्थितिने। भुकाणवे। करती कैधं पणु स्थाने भिक्षवानी के श्रावानी
 के विश्राम करवानी जग्गा ते भेजवी शक्की नहि, अने छेपटे दाटेला अना
 वस्त्रोना ककडाने पीटाणीने बिक्षाना भाटे माटीनु अण्पर अने पाछीना भाटे
 दूटी भाटलीना ककडाने हाथमा लधने पेट भरवा भाटे आभतेम अेक घेरथी
 पीले घेर समवा लागी तेना माथाना पाणो आम तेम अस्त व्यस्त रहेता
 हता, शरीर अने वस्त्रो पगेरे मेला डोवाने बाधि माणीओना टोणेटोणा तेनी
 पाछण पाछण समता रहेता हता

(तएण तीसे नागसिरीए माहणीए तवभवसि चेव सोलसरोयायंका पाउ
 भूया-त जहा सासे कासे जोणिसूले, जावकोडे तएण सा

मगन्दर, (७) अर्शः, (८) योनिशूलम्, (९) दृष्टिशूलम्, (१०) मूर्धशूलम्, (११) अरुचिः, (१२) अक्षिवेदना, (१३) कर्णवेदना, (१४) कण्डू, (१५) जलोदरम्, (१६) कुष्ठम् । ततस्तदनन्तरं सा नागश्री ब्राह्मणी पोडशमी रोगातङ्कैरभिभूता-
सती आर्तदुःखार्तिवशात्तां=शारीरिकमानसिकदुःखमुक्ता कालमासे कालं कृत्वा
पष्ठ्या पृथिव्याम् 'उक्कोसेण' उत्कृष्टतः, द्वाविंशति सागरोपमस्थितिकेषु नर-
केषु-नरकावासेषु नारकत्वेन उपपन्ना-उत्पन्ना ॥ सू० ५ ॥

मूलम्-सा णं ततोऽणंतरंसि उव्वट्ठित्ता मच्छेसु उव्वन्ना,
तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा
अहेसत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीस सागरोवमट्ठिइएसु
नेरइएसु उव्वन्ना, सा णं ततोऽणंतरं उव्वट्ठित्ता दोच्चपि

कोढे तएण सा नागसिरी माहिणी, सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूया
समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसे
ण बावीससागरोवमट्ठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उव्वन्ना) उस नागश्री
ब्राह्मणी को उसी भव में ये सोलह रोगातक प्रकट हो गये-(१) श्वास
(२) कास (३) ज्वर (४) दाह (५) कुक्षिशूल (६) भगन्दर (७) अर्श
(८) योनिशूल (९) दृष्टिशूल (१०) मूर्धशूल (११) अरुचि (१२) अक्षि-
वेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्डू (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ । इन १६
सोलहरोगातको से अत्यन्त दुःखित हुई-शारीरिक एवं मानसिक व्य-
थाओं से व्यथित हुई-वह नागश्री काल अवसर काटकर छठी पृथिवी
में २२ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकावासों नैरयिक को पर्यायसेमें
उत्पन्न हुई ॥ सू० ५ ॥

सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूया समाणी अट्ट दुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा
छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइयत्ताए उव्वन्ना)

ते नागश्री ब्राह्मणीने तेज्ज ववमा आ सोण रोगातको प्रकट थया
(१) श्वास (२) कास (३) ज्वर (४) दाह (५) कुक्षिशूल (६) जलोदर (७)
अर्श (८) योनिशूल (९) दृष्टिशूल (१०) मूर्धशूल (११) अरुचि (१२)
अक्षिवेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्डू (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ आ सोण
रोगातकोथी अतीव दुःखी थयेवी शारीरिक तेमज्ज मानसिक व्यथाओथी व्यथित
थती ते नागश्री काल अवसरे काल करीने छट्ठी पृथिवीमा बावीस सागरनी
उत्कृष्ट स्थितिवाणा नरकावासेमा नैरयिकनी पर्यायथी जन्म पात्री ॥ सू० ५ ॥

विद्धा दाहव्युत्क्रान्त्या द्वितीयवारमपि अधः सप्तम्या पृथिव्यामुत्कृष्टतत्त्वपञ्चिंशत्सा-
गरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूपपद्यते, सा खलु 'तजोर्हितो' तस्याः=सप्तम्याः
पृथिव्याः, यावद् उद्वर्त्य 'तच्चपि' तृतीयवारमपि मत्स्येषु उत्पन्ना । तत्रापि च
खलु शस्त्रविद्धा 'जाव काल किञ्चा' यावत् दाहव्युत्क्रान्त्या कालमासे काल
कृत्वा द्वितीयवारमपि पृथिव्यामुत्कृष्टतो द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकेषु
नरकेषूपपन्ना, सा खलु तत्=पृथिव्याः अनन्तर 'उवद्वित्ता' उद्वर्त्य=
निस्सृत्य उरःपरिसर्पेषूपपन्नाः, तत्र गन्धर्व्या दाहव्युत्क्रान्त्यामुत्कृष्टतः सप्तदश-
सागरोपमस्थितिकेषूपपन्ना । एव यथा गोशालकस्तथा ज्ञातव्यम्=गोशालकनदस्या-

ज्जई) तिर्यञ्चगति में मच्छ की पर्याय से उत्पन्न हो गई । वहां वह
मत्स्य के भव में शस्त्र से विद्ध होकर दाह की उत्पत्ति से काल अवसर
काल कर मरी सो नीचे सप्तम नरक में ३३ तेतीस सागर की उत्कृष्ट
स्थितिवाले नरकावास में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां से
निकलकर फिर वह मत्स्य की पर्याय से उत्पन्न हुई । (तत्थ वि य णं
सत्यविज्झादाहवक्कतीण दोच्चपि अहे सत्तमीए पु०) वहां वह शस्त्र
से पुनः विद्ध होकर दाहकी व्युत्क्रान्ति से मरी और मरकर द्वितीयवार
भी सप्तम नरक में (उक्कोस तेतीससागरोवमद्विइणसु नेरइण उवव
ज्जई) उत्कृष्ट-तेतीस सागर की स्थिति छेकर नैरयिक की पर्याय में
उत्पन्न हुई । (सा ण तओ हिं तो जाव उववद्वित्ता तच्चपि मच्छेसु उव-
वन्ना, तत्थ वि य णं सत्यवज्झा जाव कालं किञ्चा दोच्चपि छट्ठीए पुढ-
वीए उक्कोसे ण तओऽणतर उवद्वित्ता मच्छेसु उरएसु एव जहा गोसाले

तिर्यञ्च गतिमा मच्छथी पर्यायनी जन्म पाभी त्या ते मत्स्यना लवमा
शस्त्र वडे वीधाधने दाहथी पीडाधने काण अवगरे काण करीने भरलु पाभी अने
नीचे सातमा नरकमा ३३ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाणा नरकावासमा नैरयिकनी
पर्यायथी जन्म पाभी त्याथी नीजणीने करी ते मत्स्यना पर्यायथी जन्म पाभी
(तत्थ वि य णं सत्यविज्झा दाहवक्कतीए दोच्चपि अहे सत्तमीए पु०)
त्या ते करी शस्त्र वडे विद्ध थधने दाहथी पीडाधने मरी अने मरीने
भीलु वधत पलु स तमा नरकमा (उक्कोस तेतीससागरोवमद्विइणसु नेरइण उव-
वज्जई) उत्कृष्ट ३३ सागरनी स्थिति धधने नैरयिकनी पर्यायमा जन्म पाभी
(सा ण तओहिं तो जाव उववद्वित्ता तच्चपि मच्छेसु उववन्ना, तत्थ वि य णं
सत्यवज्झा जाव काल किञ्चा दोच्चपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण तजोऽणतर

વર્ણનં વો'યમિત્યર્થઃ, 'વારણપ્પમાપ મણ્ણુ ઉપપન્ના' વાપ્પ રત્નમમાયાં સમ-
 દુત્પન્ના=અર્થે માપ-ઉરઃ પરિસર્પેનગતો નિ શુત્ય પચમ્યા ધૂમપ્રમાયા પૃથિવ્યા
 મુત્કૃષ્ટવઃ સમદગસાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષુત્પન્ના, તતો નિ' શુત્ય દ્વિતીય
 વારસુરઃપરિસર્પેષુત્પન્નતે, તપ્રાપિ પૂર્વસુ શાન્ કન્યા દ્વિતીયવારમપિ પચમ્યા પૃથિ-
 મેંહા નેયન્વ જાવ રણપ્પમાઓ સત્તસુ ઉવચન્ના, તઓ ઉવ્વહિત્તા જાહ
 ર્માહ સ્વહાયર વિહાણાહ જાપ અદુત્તરં ચ ણ સ્વવાયર પુઢવિકાહયત્તા
 તે તેસુ અણેગસત્તસહસ્સ સુત્તો) વહાં સે અપ સ્થિતિ સમાપ્ત હોતે હી
 વહ નિકલી-નિકલ કર તોસરી વાર મી મત્સ્ય કી પર્યાય મેં ઉત્પન્ન
 હુઈ । વહાં શસ્ત્ર ચિદ્દ હોકર દાહ કી વ્યુત્ક્રાન્તિ સે મરી સો મર કર
 દુયારા મી છઠી હી પૃથિવી મેં ૨૨ વાવીમ સાગર કી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે
 કર ઉત્પન્ન હુઈ । વહાં કી અવસ્થિતિ સમાપ્ત કર જવ વહ વહાં સે
 નિકલી તો ઉર પરિસર્પ કી પર્યાય મેં ઉત્પન્ન હુઈ । વહાં પર મી વહ
 શસ્ત્ર ચિદ્દ હોકર દાહ કી વ્યુત્ક્રાન્તિ સે-ઉત્પન્તિ સે કાલ અવસર કાલ
 કર ધૂમપ્રમા નામ કી પચમ પૃથિવી મેં નૈરયિક કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન
 હુઈ । વહા સત્તરહ સાગર કી ઉત્કૃષ્ટ-સ્થિતિ હસકી હુઈ । ગોશાલક
 કી તરહ હસકા વર્ણન જાનના ચાહિયે । તાત્પર્ય હસકા હસ પ્રકાર હૈ-
 ૧૭ સાગર કી ઉત્કૃષ્ટસ્થિતિ વાલે પચમ નરક સે નિકલ દ્વિતીય વાર
 મી વહ ઉરઃ પરિસર્પ કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુઈ । વહા સે પૂર્વ કી તરહ

ઉવ્વહિત્તા મચ્છેસુ ઊપસુ એવ જહા ગોસાલે તહા નેયન્વ જાવ રણપ્પ
 માઓ સત્તસુ ઉવચન્ના, તઓ ઉવ્વહિત્તા જાહ ર્માહ સ્વહાયરવિહાણાહ જાવ
 અદુત્તરં, ચ ણ સ્વવાયરપુઢવિકાહયત્તા તે તેસુ અણેગસત્તસહસ્સસુત્તો)
 ત્યાની અવસ્થિતિ પૂરી થતા જ તે ત્યાથી નીકળી અને નીકળીને ત્રીજી વાર
 પણ માછલીના પર્યાયમા જન્મ પામી ત્યા શસ્ત્રથી વીધાઈને તથા દાહથી
 પીડાઈને મરણ પામી અને તે વખતે પણ છઠી પૃથિવીમા ૨૨ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ
 સ્થિતિ લઈને ઉત્પન્ન થઈ ત્યાની અવસ્થિતિ પૂરી કરીને જ્યારે તે ત્યાથી
 નીકળી ત્યારે તે ઉર પરિસર્પના પર્યાયમા જન્મ પામી ત્યા પણ તે શસ્ત્રથી
 વીધાઈને અને દાહથી પીડાઈને કાળ અવસરે કાળ કરીને ધૂમપ્રમા નામની
 પચમ પૃથિવીમા નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યા ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ
 સ્થિતિ તેની થઈ ગોશાલકની જેમ આતુ ધર્ષન બાણી લેણે બેઠાએ મતલબ
 આની આ છે કે ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા પચમ નરકથી નીકળીને
 બીજી વખત પણ તે ઉર પરિસર્પના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યાથી પણ પહે-
 લાની જેમજ કાળ અવસરે કાળ કરીને બીજીવાર પણ આ પૃથિવીમા

व्यामुत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेपूत्पन्ना । ततो निःसृत्य तृती-
यनगरमपि उरः प्रतिसर्पेष्टपद्यते, अत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा चतुर्थ्या पङ्कप्रभायां
पृथिव्यामुत्कृष्टतो - दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेपूत्पन्ना, ततो निःसृत्य
सिंहेष्टूपद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयनगरमपि चतुर्थ्या पृथिव्यामुत्कृष्टतो
दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेपूत्पन्ना । ततश्चतुर्थ्याः पृथिव्या निःसृत्य द्विती-
यनगरमपि सिंहेष्टूपद्यते, तत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा तृतीयाया बाहुकप्रभाया पृथि-
व्यामुत्कृष्टतः सप्तसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेपूत्पन्ना, ततो निःसृत्य पक्षि-
पूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयनगरमपि तृतीयाया पृथिव्यामुत्कृष्टतः

काल कर द्वितीयवार भी यह पचम पृथिवी मे १७ सागर की उत्कृष्ट
स्थितिवाले नरकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां की स्थिति
समाप्त कर जब यह वहां से निकली-तो तीसरी बार भी यह उरः
परिसर्पों में उत्पन्न हुई। वहां से पूर्व की तरह काल कर चौथी पङ्क
प्रभा पृथिवी में कि जहा १० सागर की नैरयिको की उत्कृष्ट स्थिति
है वहां नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां से निकल कर यह
सिंह की पर्याय में उत्पन्न हुई। पहिले की तरह वहां से भी मर कर
द्वितीय बार भी यह चतुर्थ नरक में दश सागर की स्थिति वाले नरक
में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। चतुर्थ नरक से निकल कर यह
दुबारा भी सिंह की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां से अपने समय पर
मर कर फिर यह बालुका प्रभा नाम की तीसरी पृथिवी में सात सागर
की उत्कृष्ट स्थिति लेकर नैरयिक की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां से
निकल कर फिर यह पक्षियों के कुल मे उत्पन्न हुई। यहां से मर कर

१७ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाला नरकभा नैरयिकना पर्यायथी जन्म पाभी
त्यानी स्थिति पूरी करीने ब्यादे ते त्याथी नीकणी तो त्रील वार पक्षु ते
उर परिसर्पभा उत्पन्न थछ त्याथी पडेलानी जेम काण करीने बोथी पङ्क
प्रभा पृथिवीभा-उे ब्यां दशसागरनी नैरयिकानी उत्कृष्ट स्थिति छे, त्या नैर-
यिकनी पर्यायथी उत्पन्न थछ, त्याथी नीकणीने ते सिंहाना पर्यायथी जन्म पाभी
पडेलानी जेम त्याथी पक्षु भरषु पाभीने णीलवार पक्षु अतुर्थ नरकभा दश
सागरनी स्थितिवाला नरकभा नैरयिकना पर्यायथी जन्म पाभी अतुर्थ नरकथी
नीकणीने ते करी सिंहाना पर्यायथी उत्पन्न थछ त्याथी भरषु पाभीने करी ते
बालुकाप्रभा नामनी त्रील पृथिवीभा सात सागरनी उत्कृष्ट स्थिति लधने नैर-
यिकनी पर्यायभा जन्म पाभी, त्याथी नीकणीने ते करी ते पक्षीभाता कुणभ

સપ્તસાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષૂત્પન્ના । તત્તત્તર્થીવાયાઃ પૃથિવ્યા નિ સ્ત્ય
 દ્વિતીયચારમપિ પશિષૂત્પદ્યતે, તત્રાપિ પૂર્વત્ કાઠ ઋયા દ્વિતીયાયા પૃથિવ્યા
 ચર્કરમગાયામુત્કુષ્ટતસ્ત્રિસાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષૂત્પન્ના । તતો નિસૂત્ય સરી-
 સ્પેષૂત્પદ્યતે, તત્રાપિ ચત્ત્રવેધ્યા દાહ્યુત્કાન્ત્યા કાન્માસે કાલ કૃત્વા દ્વિતીયાર-
 મપિ દ્વિતીયાયાં પૃથિવ્યામુત્કુષ્ટતસ્ત્રિસાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈરયિકેષૂત્પન્ના । તતો
 દ્વિતીયાયાઃ પૃથિવ્યાઃ નિ સ્ત્ય ડિતીયચારમપિ સગીચ્પેષૂત્પદ્યતે, તત્રાપિ પૂર્વત્
 કાલ કૃત્વા પ્રથમાયા પૃથિવ્યા રત્નપ્રમાયામુત્કુષ્ટત્ત ઇન્દ્રમાગરોપમસ્થિતિકેષુ નૈર-
 યિકેષૂત્પન્ના, તતો નિઃ સ્ત્ય સત્તિપુ, તતો નિઃ સ્ત્યાઽસત્તિષૂત્પદ્યતે, તતો નિઃ

ફિર यह पुनः तीसरे नरक में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति वाले नैर-
 यिकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । यहां से निकल कर पुनः
 यह पक्षियों के कुल में उत्पन्न हुई । यहां से मर कर फिर यह दूसरी
 पृथिवी जो शर्करा प्रभा है और जिसके नरकावासों में तीन सागर की
 उत्कृष्ट स्थिति है वहां नैरयिकों की पर्याय से उनकी स्थिति लेकर उ-
 त्पन्न हुई । वहां से निकल कर सरीसृपों में यह दाह की व्युत्क्रान्ति से
 मरी तो मर कर द्वितीय चार भी द्वितीय पृथिवी के नरकावासों में
 तीन सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर उत्पन्न हुई । द्वितीय पृथिवी से
 निकल कर दुबारा यह सरीसृप में उत्पन्न हुई । वहां से अपने समय
 पर मर कर रत्नप्रभा नामकी प्रथम पृथिवी में उत्कृष्ट एक सागर की
 स्थिति वाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां की
 भवस्थिति समाप्त होने पर यह वहां से निकलकर सजी जीवों में वहां

જન્મ પામી ત્યાથી મરણ પામીને ફરી તે ત્રીજા નરકમા સાત સાગરની
 ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નૈરયિકોમા નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી નીક-
 ળીને ફરી તે પક્ષીઓના કુળમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી મરણ પામીને ફરી તે
 બીજી પૃથિવી જે શર્કરાપ્રભા છે અને જેના નરકાવાસોમા ત્રણ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ
 સ્થિતિ છે ત્યા નૈરયિકોના પર્યાયથી તેટલી જ સ્થિતિ લઈને જન્મ પામી
 ત્યાથી નીકળીને સરીસૃપોમા તે ઉત્પન્ન થઈ ત્યા શસ્ત્રથી વીધાઈને તથા દાહથી
 પીડાઈને મરણ પામી અને ત્યારપછી બીજીવાર પણ બીજી પૃથિવીના નરકા-
 વાસોમા ત્રણ સાગર જેટલી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લઈને ઉત્પન્ન થઈ બીજી પૃથિવથી
 નીકળીને બીજીવાર તે સરીસૃપમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી યથા સમય મરણ પામીને
 રત્નપ્રભા નામની પ્રથમ પૃથિવમા ઉત્કૃષ્ટ એક સાગરની સ્થિતિવાળા નરકા-
 વાસોમા નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઈ ત્યાની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને તે
 ત્યાથી નીકળીને સગી-શ્વેદોમા, ત્યાથી પણ મરણ પામીને

सृत्य द्वितीयमारमपि प्रथमाया पृथिव्या पल्योपमस्याऽसरयेयभागस्थितिकेषु
नैरयिकेषु नैरयिकरुयोत्पन्ना ' इति ।

‘ तओ उग्रद्विचा ’ तव उग्रद्वयं=रत्नप्रभातो निः सृत्य यानि इमानि ‘ खह-
यरविद्याणाइ ’ खचरविधानानि चर्मपक्ष्यादीनि भवन्ति तेषु, यावत् ज्योत्तर च
खलु यानीमानि खरवादरपृथिवी कायिकविमानानि तेषु खरवादरपृथिवीकायिक-
तयाऽनेकशतसहस्रकृत्वः समुत्पन्ना ॥ सू० ६ ॥

मूलम्—सा णं तओऽणंतरं उव्वद्विचा इहेव जंबूद्वीवे दीवे
भारहेवासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भहाए
भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया तएणं सा भहा
सत्थवाही णवण्हं मासाणं० दारियं पयाचा सुकुमालकोमलिय
गयतालुयसमाण, तीसे दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए अम्मा-
पियरो इमं एयारुवं गोन्न गुणनिप्फन्न नामधेज्जं करेति—जम्हा
णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा त होउणं
अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया, तएण तीसे
दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेति सूमालियत्ति, तएणं
सा सूमालिया दारिया पंचधाई परिग्गहिया तं जहा—खीरधाईए

से भी मर कर असजी जीवों में और फिर वहा से मर कर फिर
दुबारा भी प्रथम पृथिवी में १ एक पल्य के असख्यात वें भाग प्रमाण
स्थितिवाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । उस रत्न
प्रभा पृथिवी से निकल कर फिर यह जितने ये पक्षिभेद हैं—चर्म पक्षी
आदि हैं—उनमें और उनके बाद जो ये खर—वादर—पृथिवीकायादि भेद
हैं उनमें खरवादर पृथिवीकायिकरूपसे लाखों बार उत्पन्न हुई ॥ सू० ६ ॥

अने इसी त्याही भरलु पाभीने णीलुवार पलु पडेली पृथिविमा १ ओक पदयना
अस ज्योतर्मा लाग प्रमाण स्थितिवाणा नरकावासोमा नैरयिकना पर्यायधी
जन्म पाभी ते रत्नप्रला पृथिविती नीकणीने इसी ते नेटला पक्षी लेहे छे-
चर्म पक्षी वगेरे छे—तेओमा अने त्यारपछी भर—आहर पृथिवीकाय वगेरे लेह
छे तेओमा भर—आहर पृथिवीकायिकना रुपमा लाणो वार जन्म पाभी सू. ६

‘पयाया’ मजाता=मजनिवती, किं भूता दारिकामित्याह—‘सुकुमारकोमलिय’ सुकुमारकोमलाम्—अतिमृदुलाम् गजतालुरुसमाना अद्भुत्यातिकोमलतया गजतालुरुलपामित्यर्थः । तस्या दारिकाया ‘निव्यत्तचारसाहियाए’ निवृत्तद्वादशा दिकाराः सम्प्राप्तद्वादशदिवसायाः अम्मापितरौ=मातापितरौ इदमेतद्रूप ‘गोणं’ गौणं=गुणेभ्य आगत=प्राप्त गुणनिष्पन्न=गुणबोधकं नामधेय कुरुतः कर्तुंविचारयतः तथाहि यस्मात् खलु अस्माकमेवा दारिका सुकुमारा गजतालुरुसमाना जाता, तद्=तस्मात् भवतु खलु अस्माकमस्या दारिकाया नामधेयं ‘सुकुमारिका’ इति । ततः विचारकरणानन्तर खलु तस्या दारिकाया अम्मापितरौ नामधेय कुरुतः ‘सुकुमारिका’ इति । ततः खलु सा सुकुमारिका दारिका पञ्चधानीपरिवृष्टीता—पञ्चसंख्यकाभि र्धात्रीभिः=उपमातृभिः सुरक्षिता जाता, तद् यथा=तासा पञ्चानां धानीणा नामानि दर्शयति ‘खीरधार्इए जाव गिररुदर’ इति । खीरधात्र्या=स्तन्य-

बाहिके गर्भ के नौ मास तथा साढे सात दिन रात पूर्णरूप से व्यतीत हो चुके तब उसने पुत्रीको जन्म दिया । यह पुत्री अत्यन्त कोमल अग-बाली थी इसी लिये गजका तालु भाग जिस प्रकार मृदुल होता है यह वैसी ही कोमल थी । जब यह १२ घाट दिन की हो चुकी—तब इस के मातापिताने इसका ‘यथा नाम तथा गुण’ इस कहावतके अनुसार गुणों को लेकर नाम सस्कार करने का विचार किया । विचार करने के बाद उन्होंने इस खयाल से कि यह हमारी पुत्री अत्यन्त सुकुमार और गज तालु का के जैसी मृदुल है अतः इसका नाम सुकुमारिका रहे (तएण तीसे दारियाए अम्मा पियरो नामधेज्ज करेति सूमालियत्ति) उस कन्या का नाम सुकुमारिका रख दिया (तएण सा सुकुमारियदारिया

अर्थात् साध्याहीना गर्भना नव मास अने साढा सात दिवस रात पूरा थई चूक्या त्थारे तेण्हे पुत्रीने जन्म आय्यो आ पुत्री अतीव दोमजागी छती हाथीना ताणवानो लाग जेवो सुदोमण छाय छे, ते तेवीज कोमण छती ज्यारे ते भार दिवसनी थई गर्भ त्थारे तेना मातापिताअ जेवु नाम तेवा शुश्रुवाणी अे कडेवत मुज्ज शुण्णेना आधारे तेना नाम मस्कार करवानो विचार कर्थो विचार कर्था जाह तेअोअे पोतानी पुत्रीनी सुकोमण दृष्टि समक्ष राणीने अेटले ई तेअोअे आ प्रमाखे विचारिने ते आ भारी पुत्री हाथीना ताणवा जेवी सुकोमण छे माटे अेनु नाम सुकुमारी राणीअे

(तएण तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्ज करेति सूमालियत्ति)
ते कन्यानु नाम सुकुमारी राण्यु

जात्र गिरिकंदरमालीणा इव चपकलया निव्याण निव्याघायंसि
जात्र परिवद्ध्य, तएणं मा सूमालियादारिया उम्मुक्खवालभावा
जात्र रूवेण य जोवणणेण य लावणणेण य उन्निकट्टा उन्निकट्ट
सरीरा जाया यावि हांत्था ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘सा ण तओ’ इत्यादि । सा गल्ल नागश्री. ततोऽनन्तरम् उद्धत्य
जम्बूद्वीपे दीपे भारते वर्षे चम्पाया नगर्यां सागरदत्तस्य सार्धसाहस्य भद्रया भार्यायाः
कुक्षौ ‘पञ्चायाया’ प्रत्यायाता गर्भसमागता । ततः खलु मा भद्रा सार्धवारी
नवसु मासेषु बहुमतिपूर्णेणु अर्द्धाष्टमेषु रात्रिन्दिवेषु व्यतिक्रान्तेषु सप्तसु दारिकां

‘सा ण तओऽणन्तर’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(सा ण तओऽणन्तर उवट्ठिता) इसके बाद वह नागश्री खर
पृथ्वी कायिका से निकल कर (इहेव जम्बूद्वीपे दीपे भारहे वासे चपाए
नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्राए भारियाए कुच्छिसिदारियात्ताए
पञ्चायाया) इसी जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारतवर्ष नामके क्षेत्र
में वर्तमान चपानगरी मे सागरदत्त सेठ की धर्मपत्नी—भद्रा की कुक्षि में
पुत्रीरूप से अवतरी (तएण सा भद्रा सत्थवाही नवण्ह मासाण दारिय
पयासा सुकुमालकोमलिय गयतालुयसमाण तीसे दारियाए निव्वत्त
धारिसाहियाए अम्मापियरो इम एयारूव गोन्नं गुणनिप्फन्न नाम
घेज्ज करेति, जम्हाण अम्ह एसा दारिया सुकुमाला गयतालुय समाणा
त होउण अम्ह इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया) भद्रा सार्ध

‘सा ण तओऽणन्तर उवट्ठिता’ इत्यादि—

टीकार्थ—(सा ण तओऽणन्तर उवट्ठिता) त्थारपधी ते नागश्री भर पृथिविका
यिकथी नीकणीने (इहेव जम्बूद्वीपे दीपे भारहे वासे चपाए नयरीए सागरद
त्तस्स सत्थवाहस्स भद्राए भारियाए कुच्छिसि दारियात्ताए पञ्चायाया)
ओ ७ ७ जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा आवेला भारतवर्ष नामना क्षेत्रमा विद्यमान
चपानगरीमा सागरदत्त सेठनी धर्मपत्नी लक्ष्मणा उदरमा पुत्री रूपमा अवतरी
(तएण सा भद्रा सत्थवाही नवण्ह मासाण० दारिय पयाया सुकुमालकोम
लिय गयतालुयसमाण तीसे दारियाए निव्वत्तधारिसाहियाए अम्मापियरो इम
एयारूव गोन्नं गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेति, जम्हाण अम्ह एसा दारिया सुकु
माला गयतालुयसमाणा त होउण अम्ह इमीसे दारियाए

भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि-
तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं बुत्ते
समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्तां सांग-
रदारगं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता । साग-
रदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।
सूमालिया । दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव तं जइ
ण सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं
से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं बुत्ते समाणे
तुंसिणीए, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि
तिहिकरणदिवसणम्वत्तमुहुत्तसि विउले असंणपाणखाइमसा-
इमं उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमतेइ जाव सम्माणित्तां
सागरं दारगं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्तां
पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ
जाव सपरिवुडे सव्विड्डीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्ग-
च्छित्ता चंपानयेरि मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहा-
वित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सां-
गरदत्ते सत्थवाहे विपुल असंणपाणखाइमसाइम उवक्खडा-
वेइ उवक्खडावित्ता जाव सम्माणित्ता सागरगं दारगं सूमालियाए
दारियाए सद्धि पट्टय दुरूहावेइ दुरूहावित्ता सेयापीएहि कल-
सेहि मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्निहोम करावेइ करोवित्ता सागरं
दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥ सू० ८ ॥

से १, तएणं ते कोडुवियपुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं
 बुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी-एस णं देवाणु-
 प्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया सूमा-
 ल्लिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्टसरीरा
 तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुवियाणं अंतिए एयमडं
 सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ण्हाए
 जाव मित्तनाइ परिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव
 उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं
 एज्जमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भु-
 ट्ठित्ता आसणेणं उवणिमतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं वीसत्थं
 सुहासणवरगयं एवं वयासी-भण देवाणुप्पिया ! किमाग-
 म्मापओयण १, तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं
 सत्थवाहं एवं वयासी-एव खल्ल अह देवाणुप्पिया ! तव धूयं
 भद्दाए अत्तियं सूमालिय सागरस्स भारियत्ताए वरेमि, जइ णं
 जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो
 वा संजोगो दिज्जउण सूमालिया सागरस्स, तएणं देवा-
 णुप्पिया किं दलयामो सुक्क सुमालियाए१, तएण से सागर-
 दत्ते त जिणदत्त एव वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया सूमालिया
 दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमग पुण पासणयाए
 त नो खल्ल अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि
 विप्पओगं तजइण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए

भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि-
तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते
समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सांग-
रदारगं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-एवं खल्ल पुत्ता । साग-
रदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी-एवं खल्ल देवाणुप्पिया ।
सूमालिया । दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा तं चेव त जइ
णं सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं
से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे
तुंसिणीए, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि
तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तसि विउले असणंपाणखाइमसा-
इम उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमंतेइ जाव सम्माणित्ता
सागरं दारगं पहायं जाव सन्वालंकारविभूसिय करेइ, करित्तीं
पुरिससहससवाहिणि सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ
जाव सपरिवुडे सन्विड्डीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्ग-
च्छित्ता चंपानयरि मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहा-
वित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सां-
गरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणपाणखाइमसाइम उवक्खडा-
वेइ उवक्खडावित्ता जाव सम्माणित्ता सागरगं दारगं सूमालियाए
दारियाए सद्धि पट्टय दुरूहावेइ दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कल-
सेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ करावित्ता सागरं
दारयं म्मालियाए दारियाए पाणिं गिणहावेइ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'तस्य ण चपाण' इत्यादि । तत्र मनु नम्यायां नगरी जिणदत्ते नाम सत्यवाहे अहुं, तस्स णजिणदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इट्ठा जाव माणुस्सए काम भोए पच्चणुन्भवमाणा विहरह) उस चपा नगरीमें जिणदत्त नामको एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एव जन मान्य था । इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था । यह सर्वाङ्ग सुन्दरी थी । समस्त अंग और उपांग इसके पड़े ही सुकुमार थे । यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी । पति के साथ मनुष्य भव सम्यग्धी काम भोगों को भोगती हुई यह आनन्द के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी (तस्स ण जिणदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिणदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था—जिसका नाम सागर था । यह सुकुमाल यावत्

'तस्य ण चपाण' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तस्य णं चपाण नगरीए जिणदत्ते नाम सत्यवाहे अहुं, तस्स णजिणदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इट्ठा जाव माणुस्सए काम भोए पच्चणुन्भवमाणा विहरह) उस चपा नगरीमें जिणदत्त नामको एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एव जन मान्य था । इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था । यह सर्वाङ्ग सुन्दरी थी । समस्त अंग और उपांग इसके पड़े ही सुकुमार थे । यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी । पति के साथ मनुष्य भव सम्यग्धी काम भोगों को भोगती हुई यह आनन्द के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी (तस्स ण जिणदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिणदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था—जिसका नाम सागर था । यह सुकुमाल यावत्

तस्य ण चपाण इत्यादि—

टीकार्थ—(तस्य णं चपाण नगरीए जिणदत्ते नाम सत्यवाहे अहुं तस्स ण जिणदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इट्ठा जाव माणुस्सए काम भोए पच्चणुन्भवमाणा विहरह) ते चपा नगरीमा एतदत्त नामे अेक सार्थवाह रहतेो हतेो ते धन धान्य वगेरेथी सविशेष सपत्त तेमज्ज समाज्जमा पूछतेो माणुस्स हतेो तेनी धर्मपत्नीनु नाम लद्रा हत्तु, ते सर्वांग सुन्दरी हती तेना यथा अगे अने उपागेो णहुं सुकैमण हता, ते पोताना पतिने णहुं बढादी हती पतिनी साथे मनुष्य लवना कामलोगेो भोगवती ते सुजेथी पोतानेो वधत्त पसार करी रही हती

(तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे)

लद्रालार्याथी उत्पन्न थयेलेो लद्रालार्याने अेक पुत्र हतेो तेनु नाम सागर हत्तु ते सुकुमार यावत् सुन्दर रूपवान हतेो।

स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य, सागरदत्तस्य गृहस्य
 'अदूरसामन्ते' = नातिदूरे नातिसमीपे 'वीर्ययड' व्यतिप्रजति=गच्छति,
 'इमचण' अस्मिन् समये सुकुमारिका दारिका स्नाता=कृतस्नाना 'चेडियासघ-
 परिबुडा' चेडिकासघपरिवृता=दासीसमूहमध्यगता, उपरि आकाशतलके-प्रासाद-
 स्यादालिकोपरि 'कणगतेदुसकेण' कनकतेदुससयेन 'तेदुसय' इतिदेशीशब्दः,
 सुवर्णमयकन्दुकेन 'कीलमाणी २' विहरति, ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः
 सुकुमारिका दारिका पश्यति, दृष्ट्वा सुकुमारिकाया दारिकाया रूपे च यौवने च
 लावण्ये च 'जाय विम्हए' यावत् विस्मितः=आश्चर्ययुक्तः सन् कौटुम्भिकपुरुषान्=
 आज्ञाकारिण पुष्पान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानु-
 मिया ! कस्य दारिका किं वा नामधेय 'से' इति तस्या ? , ततः खलु ते

अच्छे रूपवाला था । (तएण से जिणदत्ते सत्यवाहे अन्नया कयाई साओ
 गिहाओ पडिनिक्खमड पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूर
 सामतेण वीर्ययड) एक दिन जिनदत्त सार्थवाह अपने घरसे निकला
 और निकलकर सागरदत्तके घरके पाम से हो कर जा रहा था । (इम
 च ण सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासघपरिवुडा उप्पिआगा
 सतलगसि कणगतेदूसएण कीलमाणी २ विहरइ , इसी समय सुकु-
 मारिका दारिका नहा थो कर अपने प्रासाद की छत पर दासी समूहके
 साथ २ सुवर्णमय कटुक (गेंद) से खेल रही थी । (तएण से जिण
 दत्ते सत्यवाहे सूमालिय दारिय पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए
 रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुविय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी
 एसण देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा-नामधेज्ज से ? तएण ते

तएण से जिणदत्ते सत्यवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमड
 पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीर्ययड)

એક દિવસે જીનદત્ત સાર્થવાહ પોતાને ઘેરથી બહાર નીકળ્યો અને
 નીકળીને સાગરદત્તના ઘરની પાસે થઈને જઈ રહ્યો હતો

(इम च ण सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासघपरिवुडा उप्पि आगास-
 तलगसि कणगतेदूसएण कीलमाणी २ विहरइ)

તે વખતે સુકુમારિકા દારિકા સ્નાન કરીને પોતાના મહેલની અગાશી
 ઉપર ઢાંચી સમૂહની સાથે સુવર્ણમય કટક (દડા) રમતી હતી

(तएण से जिणदत्ते सत्यवाहे सूमालिय दारिय पासइ पासित्ता सूमालियाए
 दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुनिय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी
 एसण देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा नामधेज्ज से ? तएण ते कोडुविय

टीका—‘तत्थ ण चंपाण’ इत्यादि । तत्र गत्तु चम्पायां नगरीं जिनदत्तो नाम सार्थवाह आद्यो यावद् अपरिभूत आसीत्, तस्य जिनदत्तस्य भद्रा भार्या आसीत्-सा किम्भूता-सुकुमारा इति यावद् मानुषयान् ‘पञ्चणुन्भवमाणा’ प्रत्यनुभवन्ती विहरति । तस्य गत्तु जिनदत्तस्य पुत्रो भद्राया भार्याया आत्मजः= अद्भुतः, सागरो नाम दारकः आसीत् स किम्भूतः-सुकुमारापाणिपादः, सर्व लक्षणसम्पन्नः यावत्-सुखः । तत्र गत्तु म जिनदत्तसार्थवाहः अन्पदा कदाचित्

‘तत्थ ण चंपाण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तत्थ ण चंपाण नगरीं जिनदत्ते नाम सत्यवाहे अद्भुते, तस्स णजिनदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इति जात्र माणुस्सण कामभोगे पञ्चणुन्भवमाणा विहरइ) उस चंपा नगरीमें जिनदत्त नामको एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एवं जनमान्य था । इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था । यह सर्वोद्ग सुन्दरी थी । समस्त अग और उपाग इसके पदे ही सुकुमार थे । यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी । पति के साथ मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भांगती हुई यह आनन्द के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी (तस्स णं जिनदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिनदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था-जिसका नाम सागर था । यह सुकुमाल यावत्

तत्थ ण चंपाण इत्यादि—

टीकार्थ—(तत्थ ण चंपाण नगरीं जिनदत्ते नाम सत्यवाहे अद्भुते तस्स ण जिनदत्तस्स भद्रा भारिया, सुमाला इति जात्र माणुस्सण कामभोगे पञ्चणुन्भवमाणा विहरइ) ते च चंपा नगरीमा छन्दत्त नाम्हे ओक सार्थवाह रहतेो हतेो ते धनधान्य वगेदथी अनिशेष सपन्न तेभञ्ज समान्ना भूछतेो भाणुस हतेो तेनी धर्मपत्नीनु नाम लद्रा हतेु, ते सर्वोद्ग सुन्दरी हती तेना अधा अगे अने उपागेो णहुञ्ज सुकामण हता, ते पोताना पतिने णहुञ्ज बडादी हती पतिनी साथे मनुष्य लवना कामलोगेो लोगवती ते सुजेथी पोतानो वभत्त पसार करी रही हती

(तस्स णं जिनदत्तस्स पुत्ते भद्राए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे)

लद्राभार्याथी उत्पन्न थयेवेो लद्राभार्याने ओक पुत्र हतेो तेनु नाम सागर हतेु ते सुकुमार यावत् सुन्दर रूपवान हतेो

બ્રાહ્મસ્તેષા કૌદુમ્બિકાનામન્તિકે એતમર્થં શ્રુત્વા યત્રૈવ સ્વકં ગૃહ તત્રૈવોપાગચ્છતિ,
 ઉપાગત્ય સ્નાતો યાવદ્ મિત્રજ્ઞાતિપરિવૃતશ્રમ્પાયા નગર્યાં મન્થ્યે ભૂત્વા યત્રૈવ સાગર-
 દત્તસ્ય ગૃહ તત્રૈવોપાગચ્છતિ, તતસ્તદનન્તરમ્ સાગરદત્તઃ સર્થત્રાહં સ્વલુ જિનદત્ત
 સાર્થવાહમ્ એજમાનમ્=આગચ્છન્ત પશ્યન્તિ, દૃષ્ટ્વાડડસનાદુત્તિષ્ઠતિ, ઉત્થાય 'આમ
 જેણં ઉવણિમંતેહ' આસનેનોપનિમન્ત્રયતિ=આસન ઉપવેશનાર્થં પ્રાર્થયતિ, ઉપનિ
 મન્ત્ય, આસનોપર્યુપવેશનાનન્તરમ્, આસ્પસ્ય=માર્ગશ્રમાપગમાત્ શ્રાન્તિરહિત, વિસ્વ-
 સ્થ=વિશેષતો વિશ્રાન્તિમુપગતં, સુલાસનવરગત=મુલેન વિશિષ્ટાસનોપવિષ્ટ, તે

અતિએ એમઢ સોચ્ચા જેણેવ સપે ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિત્તા
 પ્હાએ, જાવ મિત્તણાહ પરિવુઢે ચંપાળ૦ જેણેવ સાગરદત્તસસ ગિહે તેણેવ
 ઉવાગચ્છહ, તણે સાગરદત્તે સત્થવાહે જિણદત્ત સત્થવાહ એજમાણ
 પાસહ, પાસિત્તા આસણાઓ અન્નુદ્દેહ, અન્નુદ્ધિત્તા આસણેણં ઉવણિ-
 મંતેહ ઉવણિમત્તિત્તા આસત્થ સુહાસણવરગય એવ વયાસી) જિનદત્ત
 સાર્થવાહને ઉન કૌદુમ્બિક પુરુષો કે મુલ્લ સે જવે હસ અર્થ વો સુના તો
 સુનકર વહ પહિલે અપને ઘર ગયા—વહાં જા કર ઉસને સ્નાન કિયા ।
 યાવત્ ફિર વહ અપને મિત્ર, જ્ઞાતિ આદિ પરિજનોં કે સાથર ચપાનગરી
 કે બીચ સે હો કર જહાં સાગરદત્ત કા ઘર યા વહા પહુંચા—સાગરદત્તને
 જ્યોં હી અપને ઘર પર આંતે હુએ જિનદત્ત સાર્થવાહવો ઢેલા — તો વહ
 જલ્દીસે અપને સ્થાન સે ઉઠા—ઔર ઉઠકર “ આપ યહાં બેઠિયે ” હસ
 પ્રકાર ઉનસે કહને લગા જવે વે યથોચિત્ત સ્થાન પર બેઠ ચુકે ઔર આસ્વ

(તણે સે જિણદત્તે સત્થવાહે તેસિં કૌદુમ્બિકા અતિએ એમઢ સોચ્ચા—
 જેણેવ સપે ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પ્હાએ, જાવ મિત્તણાહ પરિવુઢે
 ચંપાળ૦ જેણેવ સાગરદત્તસસ ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, તણે સાગરદત્તે સત્થવાહે,
 જિણદત્ત સત્થવાહ એજમાણ પાસહ, પાસિત્તા આસણાઓ અન્નુદ્દેહ, અન્નુદ્ધિત્તા
 આસણેણ ઉવણિમંતેહ ઉવણિમતિત્તા આસત્થ યીસત્થ સુહાસણવરગય એવ વયાસી)

અનદત્ત સાર્થવાહે તે કૌદુમ્બિક પુરુષોના મુખથી આ વાત
 સાંભળીને સૌ પહોંચા તેઓ પોતાને ઘર ગયા ત્યા પહોંચીને તેમણે
 સ્નાન કર્યું યાવત પછી તે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પગિજનોની સાથે
 ચપા નગરીની વચ્ચે થઈને ત્યા સાગરદત્તનો ઘર હોતું ત્યા પહોંચ્યા સાગર
 દત્ત અનદત્ત સાર્થવાહને પોતાને ઘર આવતા જોઈને ત્વરાથી તે પોતાના
 આસન ઉપરથી ઊભો થઈ ગયો અને ઊભો થઈને “ તમે અહીં બેસો ”

કૌટુંબિકપુરુષા જિનદત્તન સાર્થવાહેનેયુક્તા સત્તો દ્વણ્ણાઃ-અતિમુદિતાઃ ' કર-
યલ જાવ ' કરતત્પરિણીતં શિર આવતં દળનય મસ્તકેડુર્લિ કૃત્વા ધ્રુવમા;
દિપુઃ-હે દેવાનુપ્રિયા ! એવા સાગરદત્તનમ્પ સાર્થવાહસ્ય ' ધ્રુવા ' દુહિતા-પુત્રી,
ભદ્રાયા આત્મના સુકુમારિના નામ દારિકા સુકુમારપાણિપાદા યાવદ્-રૂપેણ ચ
યૌવનેન ચ લાવણ્યેન ચ ઉત્કૃષ્ટા ઉત્કૃષ્ટ શરીરા । તતઃ સ્વલુ સ જિનદત્તઃ સાર્થ

કૌટુંબિક પુરિમા જિનદત્તેણ સત્થવાહેણં એવ યુત્તાસમાણા હૃદ્ય કરયલ
જાવ એવ વયાસી-વસર્ણ દેવાણુપ્પિયા ! સાગરદત્તમ્પ મત્થવાહસ્સ ધ્રુવા-
ભદ્રાણ અત્તિયા સુમાલિયા નામ દારિકા સુકુમાલપાણિપાયા જાવ ઉત્કિઠ
સરીરા) ચેલતો દુઈ ઉસ કુમારિકા દારિકા કો જિનદત્ત સાર્થવાહ ને
દેખા-દેખકર વે સુકુમારિકા દારિકા કે રૂપ યૌવન એવ લાવણ્ય મેં
આશ્ચર્યચક્કિન હો ગયે-ઔર આશ્ચર્ય સે યુક્ત હોકર ઉન્નોને કૌટુંબિક
પુરુષો કો બુલાયા-બુલાકર વે ઉનસે હસ પ્રકાર કહને લગે-હે દેવાનુ-
પ્રિયો ! યહ કન્યા કિમકી હૈ હસકા નામ કયા હૈ । જિનદત્ત સાર્થવાહ
કે ઢારા પૂછે ગયે ઉન કૌટુંબિક પુરુષો ને હર્ષિત હો કર ઔર અંપને
દોનોં હાથો જોડ કર વહે વિનય કે સાથ ઉનસે એસા કહા-હે દેવાનુ-
પ્રિય ! યહ પુત્રી સાગરદત્ત સાર્થવાહકી હૈ । ભદ્રા આર્યા કો કુક્ષિ સે
યહ જન્મી હૈ । હસકા નામ સુકુમારિકા હૈ । હસકે કર ચરણ વહે હી
સુકુમાર હૈ યાવત્ રૂપ, યૌવન એવ લાવણ્યસે યહ સર્વોત્કૃષ્ટ હૈ ઔર
સર્વાંગ સુન્દરી હૈ । (તર્ણ સે જિનદત્તે સત્થવાહે તેસિ કૌટુંબિકાણં

પુરિમા જિનદત્તેણ સત્થવાહેણં એવ યુત્તા સમાણા હૃદ્ય કરયલ જાવ એવ વયાસી-
વસર્ણ દેવાણુપ્પિયા ! સાગરદત્તસ સત્થવાહસ્સ ધ્રુવા ભદ્રાણ અત્તિયા સુમાલિયા
નામ દારિકા સુકુમાલપાણિપાયા જાવ, ઉત્કિઠસરીરા)

૧મતી સુકુમાર દારિકાને જીનદત્ત સાર્થવાહે બોધ બોધને તેઓ સુકુમાર
દારિકાના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમા આશ્ચર્ય ચકિત થઇ ગયા અને ત્યાર
પછી તેમણે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તે તેમને આ
પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ કન્યા કોની છે ? એનું નામ શું
છે ? જીનદત્ત સાર્થવાહ વડે એવી રીતે પૂછાએલા તે કૌટુંબિક પુરુષોએ હર્ષિત
થઇને પોતાના અને હાથ બેડીને બહુજ વિનયની સાથે તેમને આ પ્રમાણે
કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાર્થવાહ સાગરદત્તની આ પુત્રી છે ભદ્રાભાયાના ઉદરથી
આનો જન્મ થયો છે સુકુમારિકા આનું નામ છે એના હાથપગ ખૂબ જ સુંદર
મળ યાવત્ રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી આ સર્વોત્કૃષ્ટ છે સુન્દરી,

પાત્ર='કન્યા યોગ્યોઽય મત્પુત્રઃ સાગર' ઇતિ, 'સલાહિજ્જં વા' શ્લાઘનીયં= પ્રશસનીય યા 'સરિસો વા સજોગો' સદૃશો વા સંયોગઃ-અય કન્યાવરયો વૈવા-
હિકઃ સમ્બન્ધઃ કુલેન રૂપેણ ગુણેન વા તુલ્ય ઇતિ, 'તો' તર્હિ 'દિજ્જત' દદાતુ
મર્યાદાં સ્વલુ સુકુમારિકા દારિકાં સાગરાય=મત્પુત્રાયેતિભાવઃ । તતઃ સ્વલુ હે
દેવાનુપ્રિય ! વ્રૂહિ-કિં દદ્ધ-કિં દદ્ધાં, શુલ્ક=સંમાનાર્થં દ્રવ્ય સુકુમારિકાયા દારિ-
કાયાઃ ? તતઃ સ્વલુ સ સાગરદત્તઃ સાર્થવાદસ્ત જિનદત્તમેવમવાદીત્-એવ સ્વલુ હે
દેવાનુપ્રિય ! સુકુમારિકા દારિકા મમૈકા એકજાતા=એકૈવોત્પન્ના, તયા-શ્ણા-
અનુકૂલા, યાવત્-કાન્તા=ઈષિતા, પ્રિયા=પ્રીતિપાત્રા, મનોજ્ઞા=મનોગતા તથા-

કન્યા કે યોગ્ય છે. આ સમ્બન્ધ પ્રશસનીય છે, કન્યા ઓર વર કા આ
વૈવાહિક સમ્બન્ધ કુલ રૂપ ઓર ગુણો કે અનુરૂપ છે તો આપ અપની
પુત્રી સુકુમારિકા કો મેરે પુત્ર સાગર કે લિયે પ્રદાન કર દીજિયે-(તણ
દેવાનુપ્રિયા ! કિં દલ્યામો સુલ્ક સુમાલિયા ?) હે દેવાનુપ્રિય !
સાથ મેં આ મી કહ્ દીજિયે કિં સુકુમારિકા દારિકા કે સમાનાર્થ હમ
કયા દ્રવ્ય દેવે (તણ સે સાગરદત્તે ત જિનદત્ત એવ વયાસી-
એવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયા ! સુમાલિયા દારિયા મમ એગા, એગજાયા હૈદા
જાવ કિમગપુણ પાસળયાણ ત નો સ્વલુ અહ ઇચ્છામિ, સુમાલિયા
દારિયાણ સ્વળમત્રિ વિપ્પઓગ ત જહ્ણ દેવાનુપ્રિયા ! સાગરદારણ મમ
ધરજામાડણ મવહ, તો ણ અહ સાગરસ્સ સુમાલિય દલ્યામિ) સાગ
રદત્તણ ને જિનદત્ત સે તવ હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! આ સુકુ-
મારિકા પુત્રી મેરે આ એક હી લઢકી છે ઓર આ એક હી ઉત્પન્ન હુઈ

છે, આ સમ્બન્ધ સારો છે, કન્યા તેમજ વરનો આ લગ્ન સમ્બન્ધ કુળ રૂપ
અને શુભોને અનુરૂપ છે તો તમે તમારી પુત્રી સુકુમારિકાને મારા પુત્ર સાગરને
માટે આપો. (તણ દેવાનુપ્રિયા ! કિં દલ્યામો સુલ્ક સુમાલિયા ?) હે દેવા-
નુપ્રિય ! સાથે સાથે એ પણ અમને જણાવો કે સુકુમારી દારિકાના સમા-
નાર્થ અમે શુ દ્રવ્ય રૂપમા આપીએ ?

(તણ સે સાગરદત્તે ત જિનદત્ત એવ વયાસી એવ સ્વલુ દેવાનુપ્રિયા ! સુમા-
લિયા દારિયા મમ એગા એગ જાયા હૈદા જાવ કિમગપુણ પાસળયાણ ત નો સ્વલુ
અહ ઇચ્છામિ સુમાલિયાણ દારિયાણ સ્વળમત્રિ વિપ્પઓગ ત જહ્ણ દેવાનુપ્રિયા !
સાગરદારણ મમ ધરજામાડણ મવહ, તો ણ અહ સાગરસ્સ દારગસ્સ સુમાલિય
દલ્યામિ) ત્યારે સાગરદત્તે જનદત્તને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ
સુકુમારિકા દારિકા મારે એકની એક પુત્રી છે અને આ એક જ જન્મી છે

જિનદત્ત સાર્થસાગરોઽન્વક્ષ્યમાણપ્રકારેણાચારીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! મળ=મળ્ય, કિમા-
ગમનપયોજનમ્=કમ્પે પ્રયોજનાય સમાગતો મયાન ? તતઃ ચતુ સ જિનદત્તઃ સાર્થ
વાહ સાગરદત્ત સાર્થસાગરોઽન્વક્ષ્યમાણપ્રકારેણાચારીત્-એવ ચતુ અહ દે દેવાનુ
પ્રિય ! તત્ દુહિતર=પુત્રો, મદ્રાયા આત્મનાં સુકુમારિકાં=સુકુમારિકાનામ્ની
સગરસ્ય=સાગરનામકમ્ય મત્પુત્રસ્ય માર્યાત્વેન 'વરેમિ' વૃણોમિ=ચાન્ગમિ, યદિ
સ્વલુ ત્વ જાનીષિ દે દેવાનુપ્રિય ! 'જુત્ત વા' યુક્ત વા=યોગ્ય વા-'અત્ત વા' વ્યવ
સમુચિત મવતિ' તિ 'પત્ત વા' પાત્ત વા=અત્ત વા' કુલમર્યાદામનુપાત્ત વા,

સ્થવિશ્વસ્થ પત્ત જુકે-તય વિશિષ્ટ આસન પર શાંતિકે સાધ થેટે દૃષ્ટ ઉત્ત
જિનદત્ત સાર્થસાગરોઽન્વક્ષ્યમાણપ્રકારેણાચારીત્-હે દેવાનુપ્રિય !
કિમાગમનપયોજનમ્ (કલિયે દેવાનુપ્રિય ! યદા પધારને કા આપકા
કયા પ્રયોજન હૈ ? કિસ પ્રયોજન સે આપ યદા આયે હૈ-કલિયે- (તત્ત
સે જિનદત્તસત્થવાહે સાગરદત્ત સત્થવાહ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ અહ
દેવાનુપ્રિયા ! તવ ધૂય મદ્રાણ અતિય સૂમાલિય સાગરસ્સ મારિયત્તાણ વરેમિ જહ્ણ
જાણાહ દેવાનુપ્રિયા ! જુત્ત વા પત્ત વા સલાહણિજ્જ વા સરિસો વા સજોગો
દિજ્જહ્ણ સૂમાલિયા સાગરસ્સ) જિનદત્ત સાર્થવા
હને સાગરદત્ત સાર્થસાગરોઽન્વક્ષ્યમાણપ્રકારેણાચારીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! મેં આપકી
સુમદ્રા કી કુક્ષિસે ઉત્પન્ન હુઈ સૂમાલિકા પુત્રી કો અપને પુત્ર સાગર કી
માર્યા બનાના ચાહતા હૈ । યદિ આપ હસે સ્વીકાર કરે કિ યદા વ્યવ
યોગ્ય હૈ-વચિત હૈ-કુલ મર્યાદા કે અનુસાર હૈ અથવા મેરા પુત્ર આપકી

આ રીતે તેમને કહેવા લાગ્યો ત્યારે તેઓ ઉચિત સ્થાને બેસી ગયા અને
આસ્વસ્થ વિશ્વસ્થ થઈ ચૂક્યા ત્યારે વિશિષ્ટ આસન ઉપર શાંતિપૂર્વક બેઠેલા
તે જિનદત્ત સાર્થવાહને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું- (મળ દેવાનુપ્રિયા ! કિમાગમન
પયોજન) હે દેવાનુપ્રિય ! ખતાવે અહીં પધારવાની પાછળ આપનો શો હેતુ
છે ? કયા પ્રયોજનથી આપ અહીં આવ્યા છો ?

(તત્ત સે જિનદત્ત સત્થવાહે સાગરદત્ત સત્થવાહ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ
અહ દેવાનુપ્રિયા ! તવ ધૂય મદ્રાણ અતિય સૂમાલિય સાગરસ્સ મારિયત્તાણ વરેમિ
જહ્ણ જાણાહ દેવાનુપ્રિયા ! જુત્ત વા પત્ત વા સલાહણિજ્જ વા સરિસો વા સજોગો
દિજ્જહ્ણ સૂમાલિયા સાગરસ્સ)

જિનદત્ત સાર્થવાહે સાગરદત્ત સાર્થવાહને ત્યારે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે
દેવાનુપ્રિય ! હું તમારી સુભદ્રાના ઉદરથી જન્મ પામેલી સુમાલિકા પુત્રીને મારા
પુત્ર સાગરની પત્ની બનાવવા ઇચ્છુ છું આપ જો મારી માગણી ઉચિત સમ
જતા હો, કૃપા-મધોદા યોગ્ય તેમજ મારા પુત્ર તમારી માટે યોગ્ય

પાત્ર = 'કન્યા યોગ્યોઽય મત્પુત્રઃ સાગર' ઇતિ, 'સલાહિજ્જં વા' શ્લાઘનીયં = પ્રશસનીયં વા 'સરિસો વા સજોગો' સદ્ગો યા સંયોગઃ - અય કન્યાવરયો વૈવાહિકઃ સમ્બન્ધઃ કુલેન રૂપેણ ગુણેન વા તુલ્ય ઇતિ, 'તો' તર્હિ 'દિજ્જડ' દદાતુ મનાં સ્વલુ સુકુમારિકા દારિકાં સાગરાય = મત્પુત્રાયેતિમાત્રઃ । તતઃ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! ત્રૂહિ-કિં દત્ત-કિં દયાં, શુલ્ક = સમાનાર્થ દ્રવ્ય સુકુમારિકાયા દારિકાયાઃ ? તતઃ સ્વલુ સ સાગરદત્તઃ સાર્યવાદસ્ત જિનદત્તમેવમવાદીત્-એવ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! સુકુમારિકા દારિકા મમૈસા એકજાતા = એકોત્પન્ના, તથા-દૃષ્ટા-અનુકુલા, યાવત્-કાન્તા-ઈપ્સિતા, પ્રિયા = પ્રીતિપાત્રા, મનોજ્ઞા = મનોગતા તથા-

કન્યા કે યોગ્ય છે. આ સંબન્ધ પ્રશસનીય છે, કન્યા ઓર ઘર કા યહ વૈવાહિક સંબન્ધ કુલ રૂપ ઓર ગુણો કે અનુરૂપ છે તો આપ અપની પુત્રી સુકુમારિકા કો મેરે પુત્ર સાગર કે લિયે પ્રદાન કર દીજિયે- (તણ દેવાણુપ્પિયા ! કિં દલયામો સુલ્લ સુમાલિયા ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથ મેં યહ બી કહ્તીજિયે કિ સુકુમારિકા દારિકા કે સમાનાર્થ હમ કયા દ્રવ્ય દેવે (તણ સે સાગરદત્તે તં જિનદત્ત એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! સુમાલિયા દારિયા મમ એગા, એગજાયા દૃષ્ટા જાવ કિમગણુણ પાસણયા ? ત નો સ્વલુ અહ ઇચ્છામિ, સુમાલિયા દારિયા સ્વળમત્તિ ત્રિપ્પઓગં ત જહ્ણં દેવાણુપ્પિયા ! સાગરદાર મમ ધરજામાડણ મવડ, તો ણ અહ સાગરસ્સ સુમાલિય દલયામિ) સાગરદત્તે ને જિનદત્ત સે તવ હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! યહ સુકુમારિકા પુત્રી મેરે યહા એક હી લડકી છે ઓર યહ એક હી ઉત્પન્ન હુઈ

છે, આ સંબન્ધ સારો છે, કન્યા તેમજ વરને આ લગ્ન સંબન્ધ કુળ રૂપ અને શુભેને અનુરૂપ છે તો તમે તમારી પુત્રી સુકુમારિકાને મારા પુત્ર સાગરને માટે આપો. (તણ દેવાણુપ્પિયા ! કિં દલયામો સુલ્લ સુમાલિયા ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથે સાથે એ પણ અમને જણાવો કે સુકુમારી દારિકાના સમાનાર્થ અમે શુ દ્રવ્ય રૂપમા આપીએ ?

(તણ સે સાગરદત્તે ત જિનદત્ત એવ વયાસી એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! સુમાલિયા દારિયા મમ એગા એગ જાયા દૃષ્ટા જાવ કિમગણુણ પાસણયા ? ત નો સ્વલુ અહ ઇચ્છામિ સુમાલિયા દારિયા સ્વળમત્તિ ત્રિપ્પઓગ ત જહ્ણં દેવાણુપ્પિયા ! સાગરદાર મમ ધરજામાડણ મવડ, તો ણ અહ સાગરસ્સ દારગસ્સ સુમાલિય દલયામિ) ત્યારે સાગરદત્તે જિનદત્તને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સુકુમારિકા દારિકા મારે એકની એક પુત્રી છે અને આ એક જ જન્મી છે

मनोमा=मनसः स्थानभूता, किं यद्वा उद्गमपुष्पमिष 'उद्गमपुष्प केनापि
 एषम्' इतिरत्र भ्रमणरिपयत्वेन सा दर्शना, विमल । पुन-दर्शनविषयतया, तत्-
 तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग-
 वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुमिष । सागरदारगो मम 'घरजमा
 उप' गृहजामातृकः=गृहजामीनामाता भवति 'गोण' तर्हि खलु अह सागररिप
 दारकाय सुकुमारिका ददामि । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थगाढः सागरदत्तेन
 सार्थवाहेनैव मुक्त सन् यत्रैव स्वकं गृहं तत्रोपागच्छति, उपागत्य सागरदारकं=
 स्वपुत्रं शब्दयति, शब्दयित्वा परमशदीव-एव खलु हे पुत्र । सागरदत्तः सार्थ
 वाहो मम=मो भवति, 'सम्बन्धसामान्ये षष्ठी' एवं=प्रथमप्रकारेण अवादीव-
 एव खलु हे देवानुमिष । सुकुमारिका दारिका मयैका एफ जाता इष्टा 'त चेव'

है । यह मेरे लिये ईष्ट याचतु मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ
 है । अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से
 प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एव मन का स्थान भूत होने
 से मनोज्ञ है । ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उद्वयर पुष्प के समान
 दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या । अतः मैं इसे देना नहीं
 चाहता हूँ । कारण इस सुकुमारिका दारिका के बिना मैं एक क्षण भी
 नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुमिष । सागर यदि घरजमाई बन
 कर रहना चाहें तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ ।
 (तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सहावेइ,
 सहावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता । सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

आ भने छह यावत् मनोम छे-ओठवे हे कात छे, प्रिय छे, अने मनोम छे
 अनुकूल होवा भइल छह, ईप्सित होवाथी कात, प्रीतिपात्र होवा भइल प्रिय
 अने मनने गमे ओवी होवाथी मनोज्ञ तथा मनने आश्रय होवाथी मनोम
 छे वधारे शु कहु । आ तो अभने उद्वयर पुष्पनी नेम दर्शन-दुर्लभ छती
 सावणवानी तो बात न शी करवी । ओथी आने हु आपवा छिछतो नथी
 करेछु ठे ओना वगर हु क्षणवार पणु रहीं शकतो नथी ओटला भाटे हे देवा
 नुमिष । सागर जो घर न भाई थप्पने भारी पासे रडेवा छिछतो होय तो हु
 आ भारी सुकुमारिका पुत्री तेमने आपी शकु तेम छु

(तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्ते णं सत्थवाहे ण एव वुत्ते समाणे
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारगं सहावेइ, सहावित्ता
 एव वयासी-एव खलु पुत्ता । सागरदत्ते सत्थवाहे मम

तदेव=पूर्वोक्तवर्णनमेवात्रगोच्य यावत्-तस्माद् नो खल्वहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग, तत्=तस्माद् यदि खलु सागरदारको मम 'घर-जामाउए' गृहजामातृकाः=गृहवासी जामाताभवति, तर्हि ददामि । ततः खलु त सागरको दारको जिनदत्तेन तार्थवाहेनैवमुक्तः तन् तूष्णीकः=मौनावलम्बी सन् संतिष्ठते ।

घरासी-एव खलु देवाणुष्पिया । सुमालिया दारिया मम एगा एगजाया इहा त चेव जइण सागरदारण मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि) इस प्रकार सागरदत्त सार्थवहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह जहा अपना घर था वहां आया-वहां आकर उसने अपने सागर पुत्र को बुलाया । बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-सागर-दत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता हूँ । उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्र पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं । यह उसे बहुत ही अधिक इष्ट यावत् मनोम है । इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया । इसलिये वह उसका एक क्षण भी विप्रयोग सहन नहीं कर सकता है । अतः वह

देवाणुष्पिया ! सुमालिया दारिया मम एगा एगजाया इहा त चेव जइण सागर-दारण मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि)

आ रीने अनदत्त सार्थवाह तेमनी आ वात साबजीने ते अनदत्त सार्थवाह ज्या पोतातु घर छतु त्या आव्या, त्या आवीने तेणे पोताना सागरपुत्रने बोलाव्यो बोलावीने तेणे तेने आ प्रभाणे कछु के छे पुत्र ! सागरदत्त सार्थवाहने भने आ प्रभाणे कछु छे के तभारे पुत्र सागर जे भारे घर नभार्छे रडेवा कणूवतो डोय तो हु भारी पुत्री सुकुमारिका तेमने आपवा तैयार छु तेओ तभने घर नभार्छे जनापवा ओटवा भाटे धिछे छे के सुकु-मारिका दारिका तेमनी ओकनी ओक पुत्री छे ते तेमने अतीव धिष्ट यावत् मनोम छे आ रीते सागरदत्ते जे कछ कछु छतु ते जधु तेमणे पोताना पुत्र सागर आगण रणू कछु अणे छेवटे कछु के ओटवा भाटे ज ते ओक क्षण पणु पोतानी पुत्रीने विप्रयोग सह्ये शकतो नथी तभने ते आ कारवथी ज घर नभार्छे जनापवा धिछे छे

મનોમા=મતસઃ સ્થાનભૂતા, કિં વત્ના ઉદ્ભવપુરુષમિય 'દૃઢમ્બરપુરુષ' કેનાપિ
 રથમ્ 'ઇતિયત્ શ્રવણમિયત્તે સા દુર્ભા, કિમ્મ ! પુન-દર્શનમિયતયા, તત્-
 તસ્માદ નો સ્વલ અહમિષ્ટામિ સુકુમારિકાયા દારિકાયાઃ સ્તનમપિ વિપ્રયોગ-
 વિયોગમ્, તત્-તસ્માદ યદિ સ્વલ હે દેવાનુપ્રિય ! સાગરદારમો મમ 'ઘરજામા
 ઉપ' ગૃહજામાત્કઃ=ગૃહવાસીજામાતા મયતિ 'શોણ' તદિ સ્વલ અદં સાગરતય
 દારિકાય સુકુમારિકા દદામિ । તતઃ સ્વલ સ જિનદત્તઃ સાર્થવાદઃ સાગરદત્તેન
 સાર્થવાદેનૈવ મુક્ત સન્ યત્રૈય સ્વલ ગૃહ તત્રોપાગમ્છતિ, ઉપાગત્ય સગરદારક-
 સ્વપુત્ર શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા પયમવાદીત્-પય સ્વલ હે પુત્ર ! સગરદત્તઃ સાર્થ-
 વાદો મમ=મા મતિ, 'સમ્બન્ધસામાન્યે વષ્ટી' એવ=વધ્યમાણમકારેણ અવાદીત્-
 એવ સ્વલ હે દેવાનુપ્રિય ! સુકુમારિકા દારિકા મમૈકા એક જાતા ઇષ્ટા 'ત વેવ'

હૈ । યહ મેરે લિયે ઈષ્ટ યાવત મનોમ હૈ-કાન્ત હૈ, પ્રિય હૈ ઓર મનોજ
 હૈ । અનુકૂલ હોને સે ઈષ્ટ, ઈષ્પિત હોને સે કાન્ત પ્રીતિપાત્ર હોને સે
 પ્રિય મનકો રુચને વાલી હોને સે મનોજ એવ મન કા સ્થાન ભૂત હોને
 સે મનોજ હૈ । જ્યાદા કયા કહ્ન યહ તો હમ્ને ઉદ્ભવર પુત્ર કે સમાન
 દર્શન દુર્લભ થી-સુનને કી તો વાત હી કયા । અતઃ મેં હસે દેના નહીં
 વાહતા હું । કારણ હસ સુકુમારિકા દારિકા કે વિના મેં એક ક્ષણ બી
 નહીં રહ સકતા હું હસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! સાગર યદિ ઘરજમાઈ બન
 કર રહના વાહે તો મેં ઊન્હે યહ અપની સુકુમારિકા પુત્રી દે સકતા હું ।
 (તણ સે જિનદત્તે સત્યવાહે સાગરદત્તેણ સત્યવાહેણ એવ બુત્તે સમાણે
 જેણેવ સણ ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિત્તા સાગરદારગં સદાવેદઃ,
 સદાવિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલ પુત્તા ! સાગરદત્તે સત્યવાહે મમ એવ

આ મને ઇષ્ટ યાવત મનોમ છે-એટલે કે કાન્ત છે, પ્રિય છે, અને મનોમ છે
 અનુકૂળ હોવા બદલ ઇષ્ટ, ઇષ્પિત હોવાથી કાન્ત, પ્રીતિપાત્ર હોવા બદલ પ્રિય
 અને મનને ગમે એવી હોવાથી મનોજ તથા મનનો આશ્રય હોવાથી મનોમ
 છે વધારે શુ કહું ! આ તો અમને ઉદ્ભવર પુત્રની જેમ દર્શન-દુર્લભ હોતી
 સાક્ષણવાની તો વાત જ શી કરવી । એથી આને હું આપવા ઇચ્છતો નથી
 કારણ કે એના વગરે હું ક્ષણવાર પણ રહી શકતો નથી એટલા માટે હે દેવા
 નુપ્રિય ! સાગર જે ઘર જમાઈ થઈને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હું
 આ મારી સુકુમારિકા પુત્રી તેમને આપી શકું તેમ છું

(તણ સે જિનદત્તે સત્યવાહે સાગરદત્તે ન સત્યવાહે ન એવ બુત્તે સમાણે
 જેણેવ સણ ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા સાગરદારગ સદાવેદઃ, સદાવિત્તા
 એવ વયાસી-એવ સ્વલ પુત્તા ! સાગરદત્તે સત્યવાહે મમ એવ

तदेव=पूर्वोक्तवर्णनमेवात्रोच्य यावत्-तस्माद् नो खल्वहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग, तत्=तस्माद् यदि खलु सागरदारको मम 'घर-जामाउए' गृहजामातृकाः=गृहवासी जामाताभवति, तर्हि ददामि । ततः खलु त सागरको दारको जिनदत्तेन तार्यवाहेनैवमुक्तः तन् तूष्णीरुः=मौनावलम्बी सन् संतिष्ठते ।

वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । सुमालिया दारिया मम एगा एगजाया इहा त चेव जइण सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि) इम प्रकार सागरदत्त सार्थवाहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह जहा अपना घर धा वहाँ आया-वहाँ आकर उसने अपने सागर पुत्र को बुलाया । बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-सागर-दत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता हूँ । उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्र पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं । यह उसे बहुत ही अधिक इष्ट यावत् मनोम है । इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया । इसलिये वह उसका एक क्षण भी विप्रयोग सहन नहीं कर सकता है । अतः वह

देवाणुप्पिया ! सुमालिया दारिया मम एगा एगजाया इहा त चेव जइण सागर-दारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि)

आ रीने अनहत सार्थवाह तेमनी आ वात साअणीने ते अनहत सार्थवाह ब्या पोतानु घर छतु त्या आव्या. त्या आवीने तेणे पोताना सागरपुत्रने ओलाव्या ओलावीने तेणे तेने आ प्रभाळे कछु के छे पुत्र ! सागरदत्त सार्थवाहने भने आ प्रभाळे कछु छे के तभारे पुत्र सागर ने भारे घर नभार्ह रडेवा कणूवतो होय तो हु भारी पुत्री सुकुमारिका तेमने आपवा तैयार छु तेओ तभने घर नभार्ह पनाववा ओटला भाटे छिछे छे के सुकु-मारिका दारिका तेमनी ओकनी ओक पुत्री छे ते तेमने अतीव छष्ट यावत् भेनाम छे आ रीते सागरदत्ते ने कछ कछु छतु ते पधु तेमणे पोताना पुत्र सागर आगण रणू कछु अने छेवटे कछु के ओटला भाटे न ते ओक क्षण पधु पोतानी पुत्रीने विप्रयोग सह्य शकतो नथी तभने ते आ कारखथी न घर नभार्ह पनाववा मंछे छे

मनोमा=मतसः स्थानभूता, किं यद्वा उद्गमपुष्पमिव 'उद्गमपुष्प केनापि
 एष्टम्' इति यत् श्रवणरिपयत्नेन सा दुर्गभा, किमहम् । पुन-दर्शनविषयतया, तत्-
 तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग-
 वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुमिय ! सागरदारको मम 'घरजमा
 उप' गृहजामातृकाः=गृहवासीजामाता भवति 'तोण' तर्हि खलु अहं सागरात्
 दारकाय सुकुमारिका ददामि । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवादः सागरदत्तेन
 सार्थवाहेनैव युक्त सन् यज्ञैव स्वक गृह तन्निरोपगच्छति, उपागत्य सागरदारक-
 स्वपुत्र शब्दयति, शब्दयित्वा परमवादीत्-एव खलु हे पुत्र ! सागरदत्तः सार्थ-
 वाहो मम=मां प्रति, 'सम्बन्धमामान्ये पत्नी' एव=वध्व्यमाणमकारेण अवादीत्-
 एव खलु हे देवानुमिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एक जाता इष्टा 'त चेव'

हे । यह मेरे लिये ईष्ट यावत् मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ
 है । अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से
 प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एव मन का स्थान भूत होने
 से मनोज्ञ है । ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उदुधर पुष्प के समान
 दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या । अतः मैं इसे देना नहीं
 चाहता हूँ । कारण इस सुकुमारिका दारिका के बिना मैं एक क्षण भी
 नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुमिय । सागर यदि घरजमाई बन
 कर रहना चाहे तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ ।
 (तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेण एव बुत्ते समणे
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सदावेइ,
 सदावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

आ भने छष्ट यावत् मनोम छे-ओटले डे कात छे, प्रिय छे, अने मनोम छे
 अनुकूल होवा भदल छष्ट, छप्पित होवाथी कात, प्रीतिपात्र होवा भदल प्रिय
 अने मनने गमे ओवी होवाथी मनोज्ञ तथा मनने आश्रय होवाथी मनोम
 छे वधारे शु णु ! आ तो अभने उदुधर पुष्पनी जेम दर्शन-दुर्लभ હતી
 સાલગવાની તો વાત જ શી કરવી ! એથી આને હુ આપવા ઇચ્છતો નથી
 કારણ કે એના વગર હુ ક્ષણવારે પણ રહી શકતો નથી એટલા માટે હે દેવા
 નુપ્રિય ! સાગર જો ઘર જમાઈ થઇને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હુ
 આ મારી સુકુમારીકા પુત્રી તેમને આપી શકુ તેમ છ

(તएण સે જિણદત્તે સત્થવાહે સાગરદત્તે જ સત્થવાહે જ એવ બુત્તે સમાણે
 જેણેવ સए ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છइ, ઉવાગચ્છિત્તા સાગરદારગ સદાવેइ, સદાવિત્તા
 એવ વયામી-એવ खलु पुत्ता ! सागरदत्तે सत्थवाहे मम

सम्मानयति समान्य सागर दारक स्नात यावत् सर्वालङ्कारविभूषित कारयति, कारयित्वा पुरुषसहस्रबाहिनीं शिविकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह मित्रज्ञाति स्वजन-सम्बन्धिभिर्यावत् परितृप्तः सर्वद्वर्था सकलविभवेन स्पर्काद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य चम्पाया नगर्या म यम-येन=मध्येभूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शिविकातः 'पञ्चोरुहावेह' प्रत्यवरोहयति, सागरदारकं स्वपुत्र प्रत्यवतारयति, प्रत्यवरोह सागरक दारक सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य उपनयति=ममीपमानयति ।

ततः खलु सागरदत्तः सार्थवाहो विपुलमशन पान खात्रं स्वाध=चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति=निष्पादयति, उपस्कार्य यावत् = मित्रादिसहित जिनदत्तमामन्त्र्य भोजयित्वा, सत्कृत्य, समानयति, समान्य सागरक दारक सुकुमारिकाया दारिकाया सार्थ 'पट्टय' पट्टक 'दुरूहावेह' दूरोहयति=आरोहयति, दूरुह श्वेतपीतः=

सयका चन्द्रादिक से सत्कार किया सत्कार करके फिर उनका स्वागत यचानादिको द्वारा सन्मान किया- । सन्मान कर के बाद में उसने अपने सागरपुत्रको स्नान कराया- । स्नान कराकर उसने उसे समस्त अल-कारो से विभूषित कराया । विभूषित कराकर बाद में उसने उसे पुरुष सहस्रबाहिनी शिविका पर चढ़ाया चढ़ाकर मित्र, ज्ञाति, स्वजन सबधियों को साथ लेकर फिर वह सकल विभवके अनुसार अपने घर से निकला -निकलकर चंपानगरी के बीचो बीच से होता हुआ सागरदत्त का जहाँ घर था वहाँ पहुँचा । (उवागच्छित्ता सीयाओ पञ्चोरुहावेह, पञ्चोरु-हावित्ता सागरग दारग सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेह, तएण, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुल असणपाण स्वाहम साहम उवक्खडावेह, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरग दारग सुमालियाए दारियाए सद्धि पट्टय

जिने अधाने वओ वगेरे आप्पिने सत्कार कथे, सत्कार करीने तेहे तेभनु स्वागत वथने। वडे सन्मान कथुं सन्मान कथा भाद तेहे पोताना सागर पुनने स्नान करांयु स्नान करावीने तेहे तेने अधा अवजरोथी शलुगार्यो, शलुगारीने तेहे तेने पुत्थ-सहस्रबाहिनी पालणीमा भेसाउथे। त्याग्गयी मित्र, ज्ञाति, स्वजन सबधीओने साथे लधने ते पोताना सपूणुं वैलवणी साथे पोताना धेरथी नीकळ्ये-नीकणीने यथा नगरीनी वच्चे थधने ते न्या सागरदत्तनु धर हुतुं त्या पडोवथे।

(उवागच्छित्ता सीयाओ पञ्चोरुहावेह, पञ्चोरुहावित्ता सागरग दारग सा-गरदत्तस्स सत्थ० उवणेह, तएण, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलअसणपाणस्वाहम साहम उवक्खडावेह, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरग दारग सुमालियाए

તતઃ સત્ત્વ નિન્યત્તઃ તાર્થવાદો ડ્યયદા વદોતિ પ્રોમને=શુભકારકે,
તિથિકરણનક્ષત્રગુહર્ત વિપુલમગ્ન પાત્રં ગાય સાયમ્પ્રપન્નાસ્યતિ, નિપાદયતિ,
ઉપસ્કાર્ય મિત્રજ્ઞાતિપ્રમૃત્તિનામન્ત્રયતિ, આમન્ત્ર્ય 'જાય સમ્માણેઃ' ગાયત્ સમ્મા
નયતિ ભોજયતિ, ભોજયિતા ગતાદિભિ મ કરોતિ, મત્કૃત્ય સ્વાગતચનાદિના
તુમ્હે ઘરજમાઈ યનાના વાહના ઇ. (તળણં સે સાગરણ દારણ જિણદત્તે

ણ સત્થવાહેણં ણ વુત્તે સમાણે તુમિણીણ સચ્ચિદ્દહ, તળણં જિણદત્તે સત્થ
વાહે અન્નયા કયાહ સોહણસિ તિહિકરણદિવમણસગ્ગામુહૂત્તસિ
વિહલ અસણ પાન ગાહમ સાહમ ઉવક્કલ્હાવેહ, ઉવક્કલ્હાવિત્તા
મિત્તણાહંઆમતેહ, જાય સમ્માણિત્તા સાગર દારણ ણાય જાવ સવ્વા
લકારવિશ્વસિય કરેહ, કરિત્તા પુરિમમત્તસ્મ ગાલિણિં સીય દુરુહાવેહ,
દુરુહાવિત્તા મિત્તણાહ જાય સપરિવુદે સન્વિહ્વીણ સાઓ ગિહાઓ નિગ્ગ
ચ્છહ નિગ્ગચ્છિત્તા ચપા નયરિં મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેય સાગરદત્તસ્સ ગિહે
તેણેવ ઉવાગચ્છહ) જિનદત્ત સાર્થવાદ કે દ્વારા ફસ પ્રકાર કરા જાને
પર વહ સોગર દારક સુપચોપ રહ ગયા ઉમને કુટ્ત મી ઉત્તર નહોં દિયા ।
એક દિન જિનદત્ત ને શુભ, તિથિ કરણ, દિવસ નક્ષત્ર સુહૃત્તમેં વિપુલ
માત્રા મેં અશન, પાન, સ્વાદ્ય ઓર સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર બનવાયા
-બનવાકર ઉસને અપને મિત્ર જ્ઞાતિ આદિમન્ધુઓં કો આમત્રિત કિયા
આમત્રિત કરકે ફિર ઉસને ઉન સબકો ભોજનકરાયા-ભોજન કરાકર

(તળણં સે સાગરણ દારણ જિણદત્તે ણ સત્થવાહે ણ વુત્તે સમાણે તુમિ
ણીણ સચ્ચિદ્દહ, તળણ જિણદત્તે સત્થવાહે અન્નયા કયાહ સોહણસિ તિહિકરણદિવ
મણક્કલ્હાવેહ, વિહલ અસણપાન ગાહમ સાહમ ઉવક્કલ્હાવેહ, ઉવક્કલ્હાવિત્તા
મિત્તણાહં આમતેહ, જાય સમ્માણિત્તા સાગર દારણ ણાય જાવ સવ્વાલકારવિશ્વ
સિય કરેહ, કરિત્તા પુરિસસહસ્પવાહિણિં સીય દુરુહાવેહ, દુરુહાવિત્તા મિત્તણાહ
જાય સપરિવુદ સન્વિહ્વીણ સાઓ ગિહાઓ નિગ્ગચ્છહ, નિગ્ગચ્છિત્તા ચપા નયરિં
મજ્ઞ મજ્ઞેણ જેણેય સાગરદત્તસ્સ ગિહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

જીનદત્ત સાર્થવાદ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયેલો સાગર પુત્ર એકદમ ચૂપ
થઈને બેસી જ રહ્યો તેણે કોઈ પણ જાતનો જવાબ આપ્યો નહિ એક દિવસ
જીનદત્તે શુભતિથિ, કરણ, દિવસ, નક્ષત્ર સુહૃત્તમા પુષ્કળ પ્રમાણુમા અશન,
પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો આહાર બનાવડાવ્યો બનાવડાવીને
તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે સબ ધીઓને આમત્રિત કર્યા
આમત્રિત કરીને તેણે તે બધા આવેલા સબ ધીઓને જમાડયા જમા

मूलम्—तएण सागरदारए सूमालियाए दारियाए इम
 एयारूवं पाणिफास पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ
 वा जाव मुम्पुरेइ वा एत्तो अणिट्टतराए चेव० पाणिफासं
 पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहु-
 त्तमित्तं सच्चिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते संत्थवाहे सागरस्स
 दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखा-
 इमसाइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसंजइ, तएणं
 सागरए दारए सूमालियाए सद्धि जेणेव वासघरे तेणेव उवाग-
 गच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिंगंसि
 निवज्जइ, तएण से सागरए दारियाए सूमालियाए दारि-
 याए इमं एयारूव अगफासं पडिसंवेदेइ, से जहा नामए
 असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगफास पच्चणु-
 वभवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अगफास असहमाणे
 अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सच्चिट्ठइ, तएणं से सागरदारए सूमा-
 लियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए
 पासाउ उट्टेइ, उट्टित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया
 दारिया तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइ-
 मणुरत्ता पत्तिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ, उट्टित्ता
 जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स
 पासे णवज्जइ, तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

રાજતસૌર્ય કલશે = તારિપૂર્ણર્ષટેર્મેજયતિ = સ્તવયતિ, મઝ્જાવિત્તા અગ્નિહોમ
કારયતિ, કારયિત્તા સાગરં દારય મુમાલિયાણ દારિયાયા પાર્ણિગ્રાહ્યતામ્ ॥ ૮ ॥

દુરુહાવેદ, દુરુહાવિત્તા સેવાપીર્ણદિ કલસેદિ મઝ્જાવેદ, મઝ્જાવિત્તા
અગ્નિહોમ કરોવેદ, કરાવિત્તા સાગર દારય મુમાલિયાણ દારિયાય પાર્ણિ
ગિણ્ણાવેદ) વહા પટ્ટંચકર ઉસને અને પુત્ર સાગર કો પાલખી સે નીચે
ઉતારા ઓર ઉતારકર સાગરદત્ત સાર્થવાહ કે પાસ ઉસે લેખાયા । સાગ
રદત્ત સાર્થવાહને ખી પહિલેસે હી ત્રિપુલમાત્રા મેં અન્ન, પાન, ખાદ્ય,
અવ સ્વામ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર તૈયાર કરવાલિયો થા મો ઉમસે મિત્રાદિ
સહિત જિનદત્ત સાર્થવાહ કો આનંદ કે સાથ ગિલાયા ગિલાકર સવકા
સત્કાર કિયા સન્માન કિયો । સત્કાર સન્માન કરને કે વાદ ફિર
સાગરદત્તને સાગર દારક કો અપની પુત્રી સુકુમારિકા કે સાથ એક
પટ્ટક પર બેઠાયા-બેઠાકર સુવર્ણ ચાંદી કે કલશોસે ઉનકા અભિષેક
કરાયા અભિષેક હો જાને કે વાદ અગ્નિહોમ કરાયા 'અગ્નિહોમ જબ
હો ચુકા તવ સાગરદત્તને અપની પુત્રી સુકુમારિકા કા સાગર કે હાથ મેં
હસ્તમિલાપ કિયા-અર્થાત્ લગ્ન કર દિયો ॥ સુ. ૮ ॥

દારિયાય સદિ પટ્ટય, દુરુહાવેદ, દુરુહાવિત્તા સેવાપીર્ણદિ કલસેદિ મઝ્જાવેદ,
મઝ્જાવિત્તા અગ્નિહોમ કરાવેદ, કરાવિત્તા સાગરદારય મુમાલિયાણ દારિયાય
પાર્ણિ ગિણ્ણાવેદ)

ત્યા પહેચીને તેણે પોતાના પુત્ર સાગરને પાલખીમાથી નીચે ઉતાર્યો
અને ઉતારીને સાગરદત્ત સાર્થવાહની પાસે લઈ ગયો । સાગરદત્ત સાર્થવાહને
પણ પહેલેથી જ પુષ્કળ પ્રભાલુભા અન્ન, પાન, ખાદ્ય અને સ્નાન રૂપ આર
ભતનો આહાર તૈયાર કરાવીને રાખ્યો હતો । તેણે મિત્ર વગેરે લોકોની સાથે
જનદત્ત સાર્થવાહને આનંદની સાથે જમાડ્યા અને ત્યારપછી તેણે સૌના
સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યો । સત્કાર અને સન્માન કર્યા બાદ સાગરદત્તે સાગર
દારકને પોતાની પુત્રી સુકુમારિકાની સાથે એક પટ્ટક ઉપર બેસાડ્યો । બેસાડીને
સોના-ચાંદીના કળશોથી તેમનો અભિષેક કરાવડાવ્યો । અભિષેક પુર કરી પુર
થયા બાદ તેણે અગ્નિહોમ કરાવ્યો । અગ્નિહોમની વિધિ પૂરી થઈ ગઈ ત્યારે
સાગરદત્તે પોતાની પુત્રી સુકુમારિકાને સાગરની સાથે હસ્તમેળાપ કરાવી દીધો
; એટલે કે લગ્ન કરાવી દીધો ॥ સુ. ૮ ॥

मूलम्—तएण सागरदारए सूमालियाए दारियाए इम
 एयारूवं पाणिफास पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ
 वा जाव मुम्पुरेइ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं
 पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहु-
 त्तमित्तं सचिट्ठेइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स
 दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखा-
 इमेसाइमं पुप्फवत्थे जाव सम्माणेत्ता पडित्रिसंज्जइ, तएणं
 सागरए दारए सूमालियाए सद्धिजेणेव वासघरे तेणेव उवाग-
 गच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिंगंसि
 निवज्जइ, तएण से सागरए दारियाए सूमालियाए दारि-
 याए इमं एयारूव अंगफासं पडिसवेदेइ, से जहा नामए
 असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अंगफास पच्चणु-
 वभवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अंगफास असहमाणे
 अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठेइ, तएण से सागरदारए सूमा-
 लिय दारिय सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए
 पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवाग-
 च्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया
 दारिया तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइ-
 मणुरत्ता पत्तिं पासे अपस्समाणी तंलिमाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता
 जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स
 पासे णवज्जइ, तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

बुच्चंपि इमं एयाह्यं अंगफासं पडिसंपेदेह जाव अकामए
 अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिद्वह, तएणं सेसागरदारणसूमा-
 लियं दारियं सुहपमुत्तं जाणित्तासयणिज्जाओ उट्टेह उट्टित्ता
 वासघरस्स दार विहाडेह विहाडित्ता मारामुक्के विव काए
 जामेव दिसिं पाउच्चभूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू०९॥

टीका—‘तएणं’ इत्यादि । ततः खलु सागरदारणः सुकुमारिकाया दारि-
 काया इममेतद्व्युप=रक्ष्यमाणमकार पाणिस्पर्श=करस्पर्श प्रतिसंपेदयति=अनुभवति,
 कीदृशः स करस्पर्श इति सदृष्टान्तमाह—‘से जहानामए’ इत्यादि । तद् यथा
 नामरूपम्=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्त प्रदर्शयति—‘असिपत्तेह वा’ इत्यादि । असि-
 पत्रमिति वा=असिपत्र-खड्गः, यथा खड्गधारायाः स्पर्शः सोढुमशक्यस्तद्वत् सुकु-
 मारिका दारिकायाः करस्पर्शं प्रतिसवेद्यत इति भावः । ‘जाव मुम्पुरे इ वा०’
 यावत् मुम्पुरेति वा=अत्र यावत् करणादिद बोध्यम्—‘करपत्तेह वा खुरपत्तेह वा

‘तएण सागरदारण’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद—अर्थात् सागरदारणने जब हस्तमिलाए
 क्रिया तब (सागरदारण) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुकु-
 मारिकादारिकाका (पाणिपास) वह हस्तका स्पर्श (इम एयाह्य पडिसवे
 देह) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेह वा जाव मुम्पुरे-
 इवा, एत्तो अणिद्वतराए चेव० पाणिफासं पडिसवेदेह) जैसे वह
 असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श
 हो । यहा यावत् शब्दसे “कर पत्तेह” वा खुर पत्तेहवा, कलत्र चीरिया

‘तएण सागरदारण’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्पारप जी ओटवे के सागरदारके ब्यापरे हस्तमेजाप कथे त्यादे
 (सागरदारण) ते सागरने (सूमालियाए दारियाए) सुकुमार दारिकाने (पाणि
 पास) ते हाथने स्पर्श (इमएया ह्व पडिसवेदेह) आ प्रभाणे हाथे के
 (से जहा नामए असि पत्तेह वा जाव मुम्पुरेइ वा, एत्तो अणिद्वतराए चेव
 पाणिफासं पडिसवेदेह)

जाणे ते असिपत्र-तलवार-ने स्पर्श न होय, यावत् अग्निकण मिश्रित
 भस्मने स्पर्श न होय अर्थात् ‘यावत्’ शब्दार्थ

(करपत्तेह वा खुरपत्तेह वा, कलत्रचीरियापत्तेह वा सच्चि

ફલંવચીરિયાપત્તેઃ વા સત્તિઅગ્નેઃ વા કોતગ્નેઃ વા તોમરગ્નેઃ વા મિંદિમાલગ્નેઃ
વા સૂચિકલાવણ્ડ વા વિચ્છુયડકેઃ વા કપિરુચ્છુઃ વા ઇગાલેઃ વા મુમ્મુરેઃ વા
અચ્ચોઃ વા જાલેઃ વા આલાઈ ના સુદાગણીઃ વા ભવેયારુવેસિયા ? નો ઇણદ્વે
સમદ્વે, કરપત્રમિતિ વા ક્ષુરપત્રમિતિ વા કદમ્બચીરિકાપત્રમિતિ વા શક્ત્યગ્રમિતિ
વા કુન્તાગ્રમિતિ ના તોમરાગ્રમિતિ વા મિન્દિપાલાગ્રમિતિ વા વૃથિરુદ્ધશ્ચ ઇતિ વા
કપિરુચ્છુરિતિ વા અદ્ધારઃ ઇતિ ના મુર્મુર ઇતિ ના અર્ચિરિતિ વા જ્વાલેતિ વા, અલાતમિતિ
વા શુદ્ધાગ્નિરિતિ ના ભવેદેતદ્રૂપ - સ્યાત્ ? નાયમર્યઃ સમર્યઃ, ઇતિ । તત્ર કરપત્ર=
ક્રકચં ' કરવત્ ' ઇતિ પ્રસિદ્ધ ક્ષુરપત્ર= ' ઉસ્તરા ' ઇતિ પ્રસિદ્ધમ્, કદમ્બચી-
રિકાપત્રમ્-કદમ્બચીરિકા-ત્વણવિશેષ, અમ્યા અગ્રમાગોઽતિતીક્ષ્ણો ભવતિ તસ્ય
પત્ર, શક્તિઃ=શસ્ત્રવિશેષઃ-ત્રિશૂલ વા તસ્યા અગ્રમાગઃ સ્વ કુન્તઃ ' માલા ' ઇતિ
પ્રસિદ્ધ શસ્ત્રવિશેષઃ, તદગ્રમાગઃ, તોમરઃ=વાણ વિશેષસ્તદગ્રમાગ, મિન્દિપાલઃ=
શસ્ત્રવિશેષઃ સૂચીકલાપકં સૂચીસમૂહસ્તસ્યાગ્રમાગઃ, વૃથિરુદ્ધશ્ચ=વૃથિરુ કપ્પકઃ,
કપિરુચ્છુઃ-સ્વર્જુકારી વનસ્પતિવિશેષઃ, અદ્ધારઃ=જ્વાલારહિતોઽગ્નિ, મુર્મુર=અગ્નિ-

પત્તેઃ વા, સત્તિ અગ્નેઃ વા કોતગ્નેઃ વા તોમરગ્નેઃ વા, મિંદિમાલગ્ને વા
સૂચિકલાવણ્ડ વા વિચ્છુય ડકેઃ વા કપિ રુચ્છુઃ વા ઇગાલેઃ વા મુમ્મુરેઃ
વા અચ્ચોઃ વા જાલેઃ વા આલાઈ વા સુદાગણીઃ વા ભવેયારુ વેસિયા ?
નો ઇણદ્વે સમદ્વે) કર પત્ર-કર વત, ક્ષુર પત્ર-ઉસ્તરા કદમ્બચીરિકા પત્ર
છુરિયા ઘાસ-જિસકા અગ્રમાગ અધિક તીક્ષ્ણ હોતો હૈ શક્તિ-અગ્ર
-શક્તિ-ત્રિશૂલ અથવા આયુધવિશેષ કા અગ્રમાગ કુન્તાગ્ર માલે કી
નોફ તોમરાગ્ર-વાણ કી અની મિન્દિપાલ-શસ્ત્ર વિશેષ-કા અગ્રમાગ-
સૂચી કલાપકા અગ્રમાગ-વિચ્છુ કા ઢક કપિરુચ્છુ-કરેચ-જિસકે સ્પર્શ
હોનેપર રુજલી આતી હૈ-જ્વાલા રહિત અગ્નિ, મુર્મુર-અગ્નિકળમિશ્રિત
તોમરગ્નેઃ વા, મિંદિમાલગ્ને વા સૂચિકલાવણ્ડ ના વિચ્છુય ડકેઃ વા, કપિરુચ્છુઃ
વા ઇગાલેઃ વા, મુમ્મુરેઃ વા અચ્ચોઃ વા જાલેઃ વા, આલાઈ વા સુદાગણીઃ વા
ભવેયારુવે સિયા ? નો ઇણદ્વે સમદ્વે)

કરપત્ર-કરવત, ક્ષુરપત્ર - અચ્ચો, કદમ્બચીરિકા પત્ર-ધુરિકા કે જેનો
અગ્રમાગ એકદમ તીક્ષ્ણ હોય છે, શક્તિ-અથ-શક્તિ, -ત્રિશૂળ અથવા આયુધ
વિશેષનો અગ્રમાગ, કુન્તાગ્ર-માલાની અણી, તોમરાગ્ર-તીરની અણી, મિંદિપાલ-
વિશેષનો અગ્રમાગ, સૂચીકલાપનો અગ્રમાગ, વાંજીનો ડાબ, કપિરુચ્છુ-કવચ-
જેના સ્પર્શથી અગ્નિવાળ આવે છે, ભવાળા રહિત અગ્નિ, મુર્મુર-અગ્નિશૂળ
મિશ્રિત ભસ્મ, અર્ચિ-લાકડાઓથી સળગતી ભવાળા, ભવાળા-લાકડા વગરની

दुच्चंपि इमं एयारुचं अंगफास पडिसंवेदेइ जाय अकामए
 अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएण मेसागरदारए सुमा-
 लियं दारियं सुहपमुत्तं जाणित्तासयणिज्जाअं उट्ठेइ उट्ठित्ता
 वासघरस्स दार विहाडेइ विहाडित्ता मारामुक्के विव काए
 जामेव दिसिं पाउव्वभूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू०९॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । ततः मलु सागरदारकः सुहमारिकाया दारि-
 काया इममेतद्रूप=रक्ष्यमाणमकार पाणिस्पर्श=स्पर्श प्रतिसवेदयति=अनुभवति,
 कीदृशः स स्पर्शः इति तदष्टान्तमाह—‘से जहानामए’ इत्यादि । तद् यथा
 नामस्म=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्त प्रदर्शयति—‘असिपत्तेइ वा’ इत्यादि । असि-
 पत्रमिति वा=असिपत्र-खट्गः, यथा खट्गधारायाः स्पर्शः सोढुमनस्यस्तद्वत् सुह-
 मारिका दारिकायाः स्पर्शः प्रतिसवेद्यत इति भावः । ‘जाय मुग्गुरे इ वा०’
 यावत् मुग्गुरेति वा=अत्र यावत् करणादिद बोध्यम्—‘करपत्तेइ वा सुरपत्तेइ वा

‘तएण सागरदारए’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद—अर्थात् सागरदारकने जब हस्तमिलाप
 किया तब (सागरदारए) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुह-
 मारिका दारिकाका (पाणिपास) वह हस्तका स्पर्श (इम एयारुच पडिसवे
 देइ) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाय मुग्गुरे-
 इवा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफास पडिसवेदेइ) जैसे वह
 असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श
 हो । यहा यावत् शब्दसे “कर पत्तेइ” वा सुर पत्तेइवा, कलत्र चीरिया

‘तएण सागरदारए’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारथ श्री ओटखे के सागरदारके न्यारे हस्तमेजाप कर्यो त्यारे
 (सागरदारए) ते सागरने (सूमालियाए दारियाए) सुहमार दारिकाने (पाणि
 पास) ते हाथने स्पर्श (इमएया रुच पडिसवेदेइ) आ प्रभाळु लाये के
 (से जहा नामए असि पत्तेइ वा जाय मुग्गुरेइ वा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव
 पाणिफास पडिसवेदेइ)

आळु ते असिपत्र-तरवार-ने स्पर्श न होय, यावत् अशिक्षु मिश्रित
 भस्मने स्पर्श न होय अर्ही ‘यावत्’ शब्दथी

(करपत्तेइ वा सुरपत्तेइ वा, कलत्रचीरियापत्तेइ वा सचि वा कौतम्गे)

रिजनांश्च त्रिपुलेनाशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पपुष्पगन्धमाद्यालङ्कारेण सत्करोति
समानयति सत्कृत्य समान्य प्रतिप्रसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको
दारकः सुकुमारिकाया सार्धं यत्रैव वासगृह-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उवागच्छति
सुकुमारिकाया दारिकाया सार्धं 'तलिमसि' तलिमे देशीयोऽयशब्दः तल्पे-शयनीये
'निवज्जइ' निपीदति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया
इमेतमद्रूपमद्भुतपश्यं प्रतिसवेदयति-तद् यथानामक-तत् प्रतिसवेदन दष्टान्तोपन्या-
सपूर्णं प्रदर्शयते-असिपत्र वा यापद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अद्रस्पश्यं

अम्मापियरो मित्तणाइ० विउल्लेण असण पाणखाइम माइम पुष्पकवत्थ
जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति) अतः चह सागर उसमें अभिलाषा
से रहित बन गया । फिर भी वहा विवश होकर वह कुछ समय तक
ठहरा रहा । सागरदत्त सार्धवाह ने सागर दारक के मातापिता का तथा
उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, सखी परिजनो का विपुल अशन, पान,
खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एव पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला
तथा अलङ्कार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया । सत्कार सन्मान
करके फिर उसने सबको अपने यहाँ से बिदा कर दिया । (तण्णं
सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छिता सुमाकियाए दारियाए सद्धि तलिगसि निवज्जइ, तण्ण
से सागरए दारए सुमालियाए दारियाए इम एवाह्व अगक्कास पडि-
सवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामघरागचेव अगक्कास

गरदत्ते सत्यवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउल्लेण अमण पाण
खाइम साइम पुष्पकवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति)

अतएवा भाटे ते सागर तेना अलिवापाथी रहित भनी गये। छताये
ते त्या लाचार धर्मे छोडा वणत सुधी राजये। सागरदत्त सार्धवाहे सागर
दारकना मातापितानो तेभज तेना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सखी परिजनोना
विपुल अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य इय आर जातना आहारधी अने पुष्प
पत्र, गंध, माला तेभज अलङ्कारधी बहुत सत्कार अने सन्मान करुं सत्कार
तेभज सन्मान करीने तेछे सीने पीताने त्याथी विहाय कर्या

(तण्ण सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छिता सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिगसि निवज्जइ, तण्णं से सागरए
दारए सुमालियाए दारियाए इम एवाह्व अगक्कास पडिमवेदेइ से जहा नामए
असिपत्तेइ वा जाव अमणामघराग चेव अगक्कास पञ्चगुणवमाणे विहरइ तण्णं

पणमिश्रितमस्म अग्नि=१-पन प्रतिपदा ज्वाला, ज्वाला-इन्धन से रक्षित ज्वाला
तम्=उत्सुक, शुद्धाग्निः लोहपिण्डस्थ अग्नि । असिपत्रादि-शुद्धाग्निपर्यन्ताना स्पर्श
इव सुकुमारिकायाः परस्पर्शो भवेत्तद्यथाशिमू? नागमर्ग समर्ग=अग दृष्टा तममूर
करस्पर्शो साम्य प्राप्तुं न समर्गः तर्हि कीदृशः ? इत्याह 'पक्षो भजिद्वतराप चैव'
एतरमाद् असिपात्रदीना स्पर्शादनिष्टतरक एव, अकान्ततरक एव=अत्यन्तमक
मनीय एव, अप्रियतरक एव=अतिदुःखजनक एव अमनोज्ञतरक एव=अतिशयेन मनो
विकृतिकारक एव अमनोमतरक एव=अतिशयेन मनः प्रतिकूल एव वर्धते, तमेवम्भूतं
पाणिस्पर्शं सुकुमारिकादारिकायाः परस्पर्शं प्रतिपदेदगति=अनुभवति ।

तत खलु स सागरदारकः अकामकः= निरमिलापः 'असञ्चसे' अपम्वक्त्रः=
अपगतस्यातन्व्यः विग्रहः सन् गृह्यमाण=स्तोककाल सतिष्ठते (ततः खलु स
सागरदत्तः सार्थवाह सागरस्य दारगस्त्य अम्नापितरी मिताशातिस्त्रजनमम्बन्धिष

भस्म अग्नि-इन्धन प्रतिपद ज्वाला, ज्वाला-इन्धन से रक्षित ज्वाला
अलात-उत्सुक शुद्धाग्नि-लोहपिण्डस्थ अग्नि । इन असिपत्र से लेकर
शुद्धाग्नि पर्यन्त पदार्थों का स्पर्श जैसा होता है वैसा ही सुकुमारिका
के कर का स्पर्श हो सकता था-परन्तु यहाँ यह अर्थ समर्थित नहीं है
-अर्थात् उसके सुकुमारिका के कर स्पर्श में इन दृष्टान्तों के स्पर्श की
समानता नहीं मिल सकती है क्योंकि वह स्पर्श तो इनके स्पर्श से भी
अधिक अनिष्टतर ही था, अकान्ततरक ही था-अत्यन्त अकमनीय था,
अप्रिय तरकही था-अत्यन्त दुःखजनक ही था, अमनोज्ञतरक ही था
-अत्यन्त मनो विकृतिजनक ही था, अमनोमतरक ही था-अत्यन्त
मनः प्रतिकूल ही था । (तएण से सागरए अकामए अवसव्वसे
सुद्धत्तमिस्स सचिद्धइ, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स

ज्वाला, अलात-उत्सुक, शुद्ध अग्नि-लोहपिण्डस्थ अग्नि-आटली वस्तुओं पर अक्षु
करतु जेधजे आ असिपत्रथी भाडीने शुद्ध अग्नि सुधीना पदाथेनो जे नतने
स्पर्श होय छे तेवो ज सुकुमारिकाना हाथनो पण स्पर्श होतो

पण इडिकतमा तो आ वस्तुओंनी समानता पण तेना तीक्ष्ण स्पर्शनी साथे
करी शकय तेम नथी केमके तेना हाथनो स्पर्श तो ठिकत वस्तुओंना स्पर्श
करता पण वधारे अनिष्टतर होतो, अकान्ततरक होतो, अतीव अकमनीय होतो,
अप्रियतरक होतो, अत्यन्त दुःखजनक होतो, अमनोमतरक होतो, अमनो मनो
विकृतिजनक होतो, अमनोम तरक होतो, बहुत ज मन प्रतिकूल होतो

(तएण से सागरए अकामए असव्वसे सुद्धत्तमिस्स सच्चिद्धइ - तएण से सा

रिजनांश्च विपुलेनाशनपानखाद्यन्माद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति
समानयति सत्कृत्य समान्य प्रतिप्रसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको
दारुः सुकुमारिकाया सार्धं यत्रैव वासगृह-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उवागत्य
सुकुमारिकाया दारिकाया सार्धं 'तलिमसि' तलिमे देशीयोऽयशब्दः तल्पे-शयनीये
'निवज्जइ' निपीदति । ततः खलु स सागरदारुः सुकुमारिकाया दारिकाया
इममेतमद्रूपमद्गरूपं प्रतिप्रवेदयति-तद् यथानामरू-तत् प्रतिसवेदनदष्टान्तोपन्या-
सपूर्वकं प्रदर्शयते-असिपत्र वा यावद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अङ्गस्पर्शं

अम्मापियरो मित्तणाइ० विउल्लेण असण पाणखाइम साइम पुष्पवत्थ
जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति) अतः चह सागर उसमें अभिलाषा
से रहित बन गया । फिर भी वहा विवश होकर वह कुछ समय तक
ठहरा रहा । सागरदत्त सार्थवाह ने सागर दारु के मातापिता का तथा
उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, संबन्धी परिजनो का विपुल अशन, पान,
खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला
तथा अलङ्कार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया । सत्कार सन्मान
करके फिर उसने सबको अपने यहा से विदा कर दिया । (तएणं
सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छिता सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिगसि निवज्जइ, तएण
से सागरए दारए सुमालियाए दारियाए इम एयाहव अगफासं पडि-
सवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामपरागचेव अगफास

गरदत्ते सत्यवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउल्लेण असण पाण
खाइम साइम पुष्पवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति)

ओटला भाटे ते सागर तेना अलिवापायी रहित भनी गये। छताये
ते त्या लाचार थडने थोडा वणत सुधी देखाये। सागरदत्त सार्थवाहे सागर
दारुना मातापिताने तेमज तेना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबन्धी परिजनोना
विपुल अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप आर भतना आहारथी अने पुष्प
वस्त्र, गंध, माला तेमज अलङ्कारथी अहु सत्कार अने सन्मान कथुं सत्कार
तेमज सन्मान करीने तेणे सोने पोताने त्याथी विदाय कर्था

(तएण सागरए दारए सुमालियाए सद्धि जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छिता सुमालियाए दारियाए सद्धि तलिगसि निवज्जइ, तएणं से सागरए
दारए सुमालियाए दारियाए इम एयाहव अगफास पडिसवेदेइ से जहा नामए
असिपत्र वा जाव अमणामपराग चेव अगफास पञ्चगुणवमाणे विहरइ तएणं

મયત્તુમન્ પિદરતિ। તતઃ ચત્તુ મ સાગરદારકમ્નમ્મા અગ્નિમમદમાનોડપસ્ય
 યતઃ=અગ્નિ સ્થાનચ્ચ, ગત્તુ મુદ્દમાત્ર મતિષ્ટિઃ। તત્ત ચત્તુ મ સાગરદારકઃ
 સુકુમારિકા દારિકા સુલપમુક્તા કામ્યા સુદુમારિકાયા દારિકાયાઃ પાર્શ્વત્ ઉત્તિષ્ઠતિ,
 ઉત્થાય યત્રૈવ સ્વક ગ્રયનીયં તત્રોપાગન્નતિ, ઉપાગન્ન ગ્રયનીયે, ' નિવગ્ન'
 નિષોદતિ સ્થિતીત્યર્થઃ। તત્ત ચત્તુ સુદુમારિકા દારિકા તત્રો મૂર્ત્યન્તરે મતિ-
 મુદ્દા=નાગરિકા સત્તિ પતિવ્રતા ' પદમનુરત્તા' પ્રત્યનુરક્તા સ્વપતિ પ્રત્યનુરાગિની,
 પાર્શ્વે પતિમપદ્યન્તી ' તલિમાડ ' સ્વન્યાત્=ગ્રયનીયાત્ ઉત્તિષ્ઠિતિ, ઉત્થાય યત્ર
 પચ્ચણ્ણમત્રમાણે પિદરદ્ધ તણ્ણ સે સાગરણ અગ્નિપત્તમં અમદમાણે અવ
 સન્નસે મુદ્ધત્તમિત્ત સચિદ્ધઃ) હસકે યાદ સાગરદારક સુકુમારિકા કે
 સાથ જહા વાસગૃહ-ગયન પર-યા ગર્હા ગયા ગ્રા જાકર વહ ઉસ સુકુ
 મારિકાકે સાધર ઝક શલ્યાપર પેઠ ગયા। પેઠ જાને પર ઉસ સાગરદારક
 કો સુકુમારિકા દારિકાકા અગસ્પર્શ હમરુસે પ્રીત હુઆ-જેસે માનો
 અસિપત્ર આદિકા સ્પર્શ હો। હન અસિપત્ર (સ્વદ્ગકો યાવત્) આદિકો
 કે સ્પર્શ સે બી ઉસકો વહ અગસ્પર્શ યાવત્ અમનામતરક હી થા। હસ
 પ્રકાર કા ઉસકા અગસ્પર્શ અનુભવતા હુઆ વહ સાગરદારક વિવશ
 થનકર વહા કુઝ સમય તરુ ઠહરો યાદ મેં જય ઉસસે સહન નહી
 હુઆ તો। (તણ સે સાગરદારણ સૂમાલિય દારિય સુદ્ધપસુત્ત
 જાણિત્તા સૂમાલિયાણ દરિયાણ પામાડ ઉદ્દેહ, ઉદ્દિત્તાં જેણેવ સણ સય
 ણિજ્જે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ, ઉવાગચ્છિત્તા સયણીયંસિ નિવજ્જનદ્ધ, તણ્ણ
 સૂમાલિયા દારિયા તત્રો મુદ્ધત્તતરસ્સ પઢિયુદ્ધા સમાણી પઢ્વવયા પઢ

સે સાગરણ અગ્નિપત્ત અમદમાણે અવસન્નસે મુદ્ધત્તમિત્ત સચિદ્ધઃ)

ત્યારપછી સાગર દારક સુકુમારિકાની સાથે જ્યા વાસગૃહ-શયનઘર હતું
 ત્યા ગયો, ત્યા જઈને તે સુકુમારિકાની સાથે એક શબ્દા ઉપર બેસી ગયો
 બેઠા બાદ તે સાગર દારકને સુકુમારિકા દારિકાનો અગ-સ્પર્શ એવા પ્રકારનો
 જણાયો કે તે અસિપત્ર - તરવાર વગેરેનો સ્પર્શ ન હોય। અસિપત્ર
 વગેરે કરતાં પણ તેનો અગ સ્પર્શ યાવત અમનોમતરક હતો આ રીતે તેના
 અગ સ્પર્શને અનુભવતો સાગર દારક લાચાર થઈને ત્યા થોડા વખત સુધી
 રોકાયો અને ત્યારબાદ બ્યારે તેને તે સ્પર્શ અસહ્ય થઈ પડ્યો ત્યારે

(તણ સે સાગરદારણ સૂમાલિય દારિય સુદ્ધપસુત્ત જાણિત્તા સૂમાલિયાણ
 દારિયાણ પામાડ ઉદ્દેહ, ઉદ્દિત્તા જેણેવ સણ સયણિજ્જે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ, ઉવા-
 ગચ્છિત્તા સયણીયંસિ નિવજ્જનદ્ધ, તણ સૂમાલિયા

‘से’ तस्य शयनीयं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे (निवज्जई)
निपीदति=स्वपिति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया
‘दुच्चपि’ द्वितीयशरमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारम् अङ्गस्पर्शं प्रतिसवेदयति
यावद्-अकामोऽपस्वशो मुहूर्तमात्रं सतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः
सुकुमारिका दारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा शयनीयात्=गम्यात् उत्तिष्ठति, उत्थाय
वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वारं ‘विधाटो’ विधाटयति = उद्घाटयति विधाटय
‘मारामुक्के विवकाए’ मारामुक्त इव काकः=मार्यन्ते प्राणिनो यस्या सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ उट्टित्ता (उवागच्छइ)
वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर
उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहाँ अपनी
शय्या थी वहाँ चला गया । वहाँ आकर उस पर पड़ गया इतने में ही
एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका
दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलंग से
उठ बैठी । उठकर वह जहाँ सागरदारक का पलंग था वहाँ गई ।
(उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) वहाँ जाकर वह उसके पास
सो गई । (तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इम
एयारूवं अंगफासं पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्त
मित्तं सच्चिइइ, तएण से सागरदारए सुमालिय दारिय सुहपसुत्त

पडिबुद्धा समाणी पइवया पइमणुरत्ता पत्तिपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ
उट्टित्ता उवागज्जइ)

ते सागर दारक ते सुकुमारिका दारिकाने सुजेथी सूतेली नणीने तेनी
‘पासेथी उठ्यो, अने उठीने न्या पोतानी शय्या छती त्या नतो रह्यो त्या
नधने ते तेनी उपर पडी गयो ओटलाभा ओके मुहूर्त पछी पतिभा अनुरक्त
भनेली पतिव्रता सुकुमारिका दारिका नगी गई अने पोतानी पासे पति न नेता
पोतानी शय्या उपरयी उठी अने ओठी गई त्थारपछी ते उठीने न्या सागर
दारकनी शय्या छती त्या गध (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) त्थां
नधने ते तेना पडिआभा सुई गध

(तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूवं अंगफासं
पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सच्चिइइ, तएण से सागरदारए सुमा
लिपि-रियं सुहपसुत्त जाणिवा सयणिज्जाओ उट्टेइ, उट्टित्ता वासवरस्स दार विहा-

प्रयत्नुमात्तर निहरति। ततः गन्तुं ग सागरदारकाया अङ्ग स्यर्गममदमानोऽप्यस्य
 यतः=अगमा सातन्त्र्य, गतं मूर्तमात्रं गतिष्ठितं। ततः गन्तुं ग सागरदारकः
 सुकुमारिकां दारिकां सुवपयुतां ताया सुकुमारिकाया दारिकायाः पार्श्वेन उत्तिष्ठति,
 उत्थाय यत्रैव स्वरु शयनीयं तत्रोपागच्छति, उवाग य प्रपनीये, 'नित्यम्'
 निषोदति स्मृतितीत्यर्थः। ततः गन्तुं सुकुमारिका दारिका ततो मूर्तान्तरे प्रति-
 युद्धा=जागरिता सति पवित्रता 'पद्मपुराणा' प्रत्यनुक्ता स्वपति प्रत्यनुरागिनी,
 पार्श्वे पतिमपश्यन्ती 'तस्मात्' सन्त्यात्=तयनीयात् उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्र

पञ्चगुण्यमाने निररु तण से सागरण अगफासं असहमाणे अब
 सन्वसे मुहुत्तमित्त भण्डिह) इसके बाद सागरदारक सुकुमारिका के
 साथ जहा वासगृह-शयन घर-था चला गया रहा जाकर वह उस सुकु-
 मारिकाके साथ एक शय्यापर बैठ गया। बैठ जाने पर उस सागरदारक
 को सुकुमारिका दारिकाका अगस्पर्श इस रूपसे प्रनीत हुआ-जैसे मानो
 असिपत्र आदिका स्पर्श हो। इन असिपत्र (गद्गको यात्रत) आदिको
 के स्पर्श से भी उसको वह अगस्पर्श यावन् अमनामतरक ही था। इस
 प्रकार का उसका अगस्पर्श अनुभवता हुआ वह सागरदारक विवश
 बनकर वहा कुछ समय तक ठहरा बाद में जब उससे सहन नहीं
 हुआ तो। (तएण से सागरदारण सुमालिय दारिय सुवपसुत्त
 जाणित्ता सुमालियाए दरियाए पासो उद्देह, उद्धित्ता जेणेव सए सय
 णिज्जे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता सयणीयसि निवज्जह, तएण
 सुमालिया दारिया तओ मुहत्ततरस्स पडिबुद्धा समाणी पहन्वया पड

से सागरण अगफास असहमाणे अबसन्वसे मुहुत्तमित्त संचिहह)

त्यारपणी सागर दारक सुकुमारिकानी साथे न्या वासगृह-शयनघर छु
 त्या गयो, त्या न्हने ते सुकुमारिकानी साथे एक शय्या 'उपर भेसी गयो
 भेडा भाद ते सागर दारकने सुकुमारिका दारिकानो अग-स्पर्श' जेवा प्रकारने
 न्ह्यायो हे ते असिपत्र - तरवार वगेरेनो स्पर्श' न होय। असिपत्र
 वगेरे करता पण तेना 'अग स्पर्श' यावत अभनोमतरक हुतो आ रीते तेना
 अग स्पर्श'ने अनुभवतो सागर दारक लायार अधने त्या थोडा वजत सुधी
 शेकायो अने त्याभाद न्यारे तेने ते स्पर्श' असह्य थधं यउयो त्यारे

(तएण से सागरदारण सुमालिय दारिय सुवपसुत्त जाणित्ता सुमालियाए
 दारियाए पासो उद्देह, उद्धित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छह, उवा-
 गच्छित्ता सयणीयसि निवज्जह, तएण सुमालिया

‘से’ तस्य शयनीय तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे (निवज्जई) निपीदति=स्वपिति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया ‘दुच्चपि’ द्वितीयवारमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारम् अङ्गस्पर्शं प्रतिस्वेदयति यावद्-अकामोऽपस्वयशो मुहूर्तमात्रं सतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिका दारिका सुखप्रसुप्ता ज्ञात्वा शयनीयात्=शय्यात् उत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वारं ‘विधाढेड’ विधाटयति = उद्घाटयति विधाटय ‘मारामुक्के त्रिं काए’ मारामुक्त इव काकः=मार्यन्ते प्राणिनो यस्या सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ उट्टित्ता उवागच्छइ) वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहा अपनी शय्या थी वहां चला गया । वहां आकर उस पर पड़ गया इतने में ही एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलंग से उठ बैठी । उठकर वह जहा सागरदारक का पलंग था वहा गई । (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) वहा जाकर वह उसके पास सो गई । (तण्ण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इमं एयारूव अंगफास पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त सच्चिद्धइ, तण्ण से सागरदारए सुमालिय दारिय सुहपसुत्त

पडिमुद्धा समाणी पडव्वया पइमणुरत्ता पत्तिपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्टेइ उट्टित्ता उवागच्छइ)

ते सागर दारक ते सुकुमारिका दारिकाने सुभेथी सूतेदी न्णणीने तेनी पासेथी उड्यो, अने उडीने न्या पोतानी शय्या इती त्या न्णतो रद्धो त्या न्णने ते तेनी उपर पडी गथो ओट्टाभा ओक मुहूर्त पडी पतिभा अनुरक्त भनेदी पतिव्रता सुकुमारिका दारिका न्णगी गध अने पोतानी पासे पति न नेता पोतानी शय्या उपरथी उडी अने ओडी गध त्थारपडी ते उडीने न्या सागर दारकनी शय्या इती त्या गध (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) त्यां न्णने ते तेना पडभाभा सुध गध

(तण्ण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूव अंगफास पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त सच्चिद्धइ, तण्ण से सागरदारए सुमालिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्टेइ, उट्टित्ता वासवरस्स दार विहा-

દના યથમ્યાન, તસ્માદ્દુક્તો નિમ્નઃ કારુ ઽપ, 'દા-માગદુ=મા.કપુપ્પાશમુક્તઃ
=નિર્મુક્ત ચિન્દુદિઃ કારો યથા ચેગતો નિર્મલ્લતિ તદ્દુ, યસ્મા પવ દિશઃ
માદુર્ભૂતસ્વામેર દિગ પ્રગિતઃ ॥ ૬૦ ૧ ॥

મૂલ્ય-તર્ણસૂમાલિયા દારિયા તઓ મુદ્દુત્તંતરસ્સ પડિબુઢા
પડવયા જાવ અપાસમાળી મયણિજાઓ ઉદ્દેહ સાગરસ્સ
દારિયાણ સવ્વઓ સમતા મગ્ગણગચ્છેસણં કરેમાળીર વાસથ
રસ્સ દાર વિહાહિયં પાસહ પામિત્તા ણવ વયાસી-ગણ સે

જાણિત્તા સયણિજાઓ ઉદ્દેહ, ઉદ્દિત્તા વાસથરસ્સ દાર વિહાહેઈ,
વિહાહેત્તા મારામુક્તે ચિર કાળ જામેવ દિર્સિ પાઠ્ઠમૂળ તામેવ દિર્સિ
પડિગણ) સાગરદારક કો સુકુમારિકા દારિકા કા અગરાગં દુવા
રામી વૈસા હી પૂર્વોક્તરૂપ સે અનુમત્ર મેં આગા-અન. ઉસકે પાસ સોને
કી હચ્છા ન હોને પર મી વહ વિવશાશેરુર કુટ્ર સમય તરુ ઉસકે પાસ
સોતા રહા-જય વહ અચ્છી તરહ સો ગદ-તય વહ ઉસે સુરત પ્રસુસજા
નકર ઉસકે પાસ સે ઉઠો-ઔર ઉઠકર ઉસને ઉસ વાસ ગૃહ કે દરવાજે
કો ઘોલા ઘોલકર જિસ પ્રકાર 'મારામુક્ત' કારુ વહે વેગસે નિકલતા હૈ
-ઉસી તરહ યહ મી પદ્ધત જલ્દી વહા સે નિકલકર જિસ દિશા સે
પ્રકટ હુઆ થા-ઉસી દિશા તરફ ઘોપિત ચલા ગયા । જિસ મે પ્રાણી
મારે જાતે હૈં ઉસકા નામ મારા-શૂના- વધસ્થાન હૈ । હસ મારા સે
નિકલા હુઆ અથવા મારનેવાલે પુરુષ કે હાથ સે છૂટા હુઆ-એસે યે દો
અર્થ " મારમુક્ત " હસ શબ્દ કે હો સકતે હૈ । સૂ. ૧

હેઈ, વિહાહિત્તા મારામુક્તકે વિવ કાળ જામેવ દિર્સિ પાઠ્ઠમૂળ તામેવ દિર્સિ પડિગણ)

સાગર દારકને સુકુમારિકાને બીજીવારને અગ રૂપશ પશુ પહેલાંની
જેમજ લાગ્યો એટલા માટે તેની પાસે સૂવાની ઇચ્છા ન હોવા છતાં એ તે
વિવશ થઈને થોડીવાર સુધી તેની પાસે પડી રહ્યો બ્યારે તે સારી રીતે સૂઈ
ગઈ ત્યારે તે તેને સુખેથી સૂતી બાણીને તેની પાસેથી ઉઠ્યો અને ઉઠીને
સેણે તે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડ્યું ઉઘાડીને જેમ મારા-મુક્ત કાગડો જલ્દી
નીકળી જાય છે તેમજ તે પશુ બહુ જ ત્વરાથી ત્યાથી નીકળીને જે દિશા તરફથી
આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો જે સ્થાને પ્રાણીઓ ભારી
નાખવામા આવે છે તેનું નામ " મારા " (વધસ્થાન) છે આ 'મારા' થી
પૂરીને આમ જે અર્થો 'મારામુક્ત' શબ્દના થઈ શકે છે ॥ અન્ન ૬ ॥

सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसंरुप्पा जाव झियायइ, तएणं सा
 भदा सत्थवाही कळं पाउ० दास चेडियं सदावेइ सदावित्ता
 एवं वयासी-गच्छह णं तुम देवाणुप्पिए । बहुवरस्स मुह-
 धोवणियं उवणेहि, तएण सा दासचेडी भदाए एवं वुत्ता
 समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणति, मुहधोवणिय गेण्हइ
 गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं
 वयासी - किन्नं तुम देवाणुप्पिया । ओहयमणसंरुप्पा
 जाव झियाहिसि ?, तएणं सा सूमालिया दारिया तं दास-
 चेडी एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया । सागरए दारए
 मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वास-
 घरदुवार अवगुणइ जाव पडिगए तएण तओ अह मुहुत्तं-
 तरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए ण से सागरएत्तिकट्टु
 ओहयमण जाव झियायामि, तएण सा दासचेडी सूमालि-
 याए दारियाए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेएइ, तएणं
 से सागरदत्ते दासचेडीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म
 आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवाग-
 च्छइ उवागच्छित्ता जिणदत्तं एव वयासी-किण्णं देवाणु-
 प्पिया । एव जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूव वा कुलसरिसं
 वा जन्न सागरदारए सूमालियं दारिय अदिट्ठदोस पइवयं

विष्पजहाय इहमागओ ब्रह्मिं सिञ्जणियाहि य कंठणियाहि
य उवालभइ, तण्णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठ सोञ्चा
जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग-
रयं दारयं एवं वयासी—दट्ठुण पुत्ता ! तुमे कय सागरदत्तस्स
गिहाओ इह हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता !
एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तण्णं से सागरए जिणदत्तं
एव वयासी—अवि आइ अह ताओ । गिरिपडणं वा तरुप
डणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेसं वा
विसभक्खणं वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा
पवज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खल्ल अहं
सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तण्णं से सागरदत्ते सत्थवाहे
कुडुतरिए सागरस्स एयमट्ठ निसामेइ निसामित्ता लज्जिए
विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनि-
क्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सुकुमालिय दारिय सदावेइ सदावित्ता अके निवेसेइ निवे-
सित्ता एव वयासी—किण्ण तुम पुत्ता ! सागरएण दारएणं
मुक्का ? अहणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जावं
मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि
समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘तण्ण’ इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तरं खल्ल सुकुमारिका
दारिका ततो ब्रह्मर्षीवतरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

શયનીયાત્=શય્યાત ઉત્તિષ્ઠતિ, ઉત્થાય સાગરસ્સ દારુકસ્ય સર્વતઃ સમન્તાંઽ માર્ગ
ગવેષણ કર્તી૨ વાસગૃહસ્ય=શયન-ગૃહસ્ય દ્વાર પ્રિયટિતમ્=ઉદ્ઘાટિત પશ્યતિ,
દૃષ્ટ્વા એવમગ્રાદીત્-ગતઃ સ સાગરદારુકઃ, ઇતિ કૃત્વા 'ઓહ્યમણસકૃપ્પા' અપહ
તમનઃ સકલ્પા=નષ્ટમગ્નૌ રા, યાત્ત ધ્યાયતિ=આર્તધ્યાન કરોતિસ્મ । તતસ્તદન
ન્તર મદ્રા સાર્થવાદી 'કલ્પ' કલ્પે=દ્વિતીયદિવસે પ્રાદુઃ પ્રમાતાયાં રજન્યા યાત્ત
તેજસા જ્વલતિ=દીપ્તમાને મૃચે ઉદિતે દામચેટીના=દામપુર્ણી શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા

'તત્ત્વ સૂમાલિકા દારિયા' ઇત્યાદી ।

ટીકાર્થ-(તત્ત્વ) ઉસકે ગ્રાદ (સૂમાલિકા દારિયા) સુકુમારિકા દારિકા
(તત્ત્વો મુદ્ગત્તરસ્સ પહિબુદ્ધા પહચયા જાવ અપાસમાણી) એક મુદ્ગત્ત
કે ઘાદ જગ પહી-સો ઉમ પતિવ્રતા ને વહા અપને પત્તિકો જય નહીં દેખા
તથ (સયણિજ્ઞાઓ ઉદ્દેહ, સાગરસ્સ દારુકસ્સ સબ્બાઓ સમતા મગ્ગણ
ગવેષણ કરેમાણી ૨ વાસગૃહસ્સ દાર વિદ્ધાહિય પાસહ, પાસિત્તા એવ
વયાસી) પલગ સે ઊઠી ઉઠકર ઉસને સાગર દારુકની વહી પર સય
ઔર ઘાર ૨ માર્ગણ ગવેષણા ફી- । જય ઉસને શયન ગૃહ કે દરવાજે
કો ઉવઢા જુઆ દેરુ-તથ ઉસે વિચાર આયા કિ (ગયે સે સાગરે ત્તિ
કદ્દુ ઓહ્યમણસકૃપ્પા જાવ ઝિયાયહ, તત્ત્વ સા મદ્દા સત્થવાહી કલ્લ
પાઝ ૦ દામચેટિય સદાવેહ) કિ સાગર ચલે ગયે હે । ઇસ પ્રકાર અપ-
હતમનઃસકલ્પ હોકર વહ વિચાર મે પહ ગઈ, ઇતને મે મદ્રા સાર્થવા

(તત્ત્વ સૂમાલિકા દારિયા ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ-(તત્ત્વ) ત્યારણાઃ (સૂમાલિકા દારિયા) સુકુમારિકા દારિકા
(તત્ત્વો મુદ્ગત્તરસ્સ પહિબુદ્ધા પહચયા જાવ અપાસમાણી) એક મુદ્ગત્ત પહી
બાળી ગઈ તે પતિવ્રતાએ ત્યા પોતાના પતિને બ્યારે બોધા નહિ ત્યારે

(સયણિજ્ઞાઓ ઉદ્દેહ, સાગરસ્સ દારુકસ્સ સબ્બાઓ સમતા મગ્ગણગવેષણ
કરેમાણી ૨ વાસગૃહસ્સ દાર વિદ્ધાહિય પાસહ, પાસિત્તા એવ વયાસી)

અથા ઉપરથી બીલી થઈ અને ત્યારથી તેણે ત્યાજ આનંદામ ચોમેર
સાગર દારુકની માર્ગણા-ગવેષણા કરી બ્યારે તેણે શયનગૃહના બારણાને
ઉઘાટેલું બોધુ ત્યારે તેને વિચાર આવ્યો કે

(ગયે સે સાગરે ત્તિરુદ્ધુ ઓહ્યમણમકૃપ્પા જાવ ઝિયાયહ, તત્ત્વ સા
મદ્દા સત્થવાહી કલ્લ પાઝ દામચેટિય સદાવેહ)

સાગર જતા રહ્યા છે આ રીતે અપહત મન સકલ્પવાળી થઈને તે

विप्पजहाय इहमागओ ब्रह्मिं सियज्जणियाहि य मंउणियाहि
य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमइ सोच्चा
जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग-
रयं दारयं एवं वयासी-दट्ठुण पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स
गिहाओ इहं हव्वमागत्ते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता !
एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं
एव वयासी-अवि आइ अह ताओ ! गिरिपडणं वा तरुप
डण वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा
विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणसं वा गिद्धापिट्ठ वा
पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं
सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे
कुडुतरिए सागरस्स एयमइ निसामेइ निसामित्ता लज्जिए
विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनि-
क्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
सुकुमालिय दारिय सदावेइ सदावित्ता अके निवेसेइ निवे-
सित्ता एव वयासी-किण्णं तुम पुत्ता ! सागरएण दारएणं
मुक्का ?, अहंणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जाव्वं
मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि
समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘ तएण ’ इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका
दारिका ततो ब्रह्मर्षीवरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सतो पवित्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

શયનીયાત્=ગયાત ઉત્તિષ્ઠતિ, ઉત્થાપ સાગરસ્સ દારકસ્ય સર્વતઃ સમન્તાં માર્ગે
ગગવેપણ કુર્વતી? વાસગૃહસ્ય=શયનગૃહસ્ય દ્વાર વિગાદિતમ્=ઉદ્ગાદિત પશ્યતિ,
દૃષ્ટ્વા એવમવાદીત્-ગતઃ સ સાગરદારકઃ, इति कृत्वा 'ओहयमणसकृपा' अपह
તમનઃ સકલ્પા=નષ્ટમગ્નરથા, યાત્ કલ્પયતિ=આર્ત-યાન કરોતિસ્મ । તતરતદન
ન્તર મદ્રા સાર્થવાગી ' રૂઠ ' કલ્પે=દ્વિતીયદિગ્સે પ્રાદુઃ પ્રમાતાર્યા રજન્યા યાત્
તેજસા જ્વલતિ=દીપ્યમાને ગુર્યે ઉદિતે દામચેટીયા=દામપુત્રી શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા

' તણ સૂમાલિયા દારિયા ' इत्यादी ।

ટીકાર્થ-(તણ)ડસકે ગાઢ (સૂમાલિયા દારિયા) સુકુમારિકા દારિકા
(તઓ મુદ્દતતરસ્સ પહિવુદ્ધા પદ્મવયા જાવ અપાસમાણી) એક મુદ્દત
કે વાદ જગ પડી-સો ઉસ પતિવ્રતા ને વહા અપને પતિકો જવ નહીં દેવા
તથ (સયણિજ્જાઓ ઉદ્દેડ, સાગરસ્સ દારગસ્સ સબ્બાઓ સમતા મગ્ગણ
ગવેસણ કરેમાણી ૨ વાસગરસ્સ દાર વિદાહિય પામડ, પામિત્તા એવ
વયાસી) પલગ સે ઉઠી ઉઠકર ઉસને સાગર દારકની વહી પર સવ
ઔર વાર ૨ માર્ગણ ગવેપણા કી- । જવ ઉસને શયન ગૃહ કે દરવાજે
કો ઉઘડા હુઆ દેર ૧-તવ ઉસે વિચાર આયા કિ (ગયે સે સાગરે ત્તિ
કદુ ઓહયમણસક્રપા જાવ ઝિયાવડ, તણ સા મદ્રા સત્યવાહી કલ્લ
પાડ ૦ દાસચેહિય સદાવેહ) કિ સાગર ચલે ગયે હૈં । હસ પ્રકાર અપ-
હતમનઃસકલ્પ હોકર વહ વિચાર મે પડ ગઈ, ઇતને મે મદ્રા સાર્થવા

(તણ સૂમાલિયા દારિયા इत्यादि—

ટીકાર્થ-(તણ) ત્યારબાદ (સૂમાલિયા દારિયા) સુકુમારિકા દારિકા
(તઓ મુદ્દતતરસ્સ પહિવુદ્ધા પદ્મવયા જાવ અપાસમાણી) એક મુદ્દત પડી
નગી ગઈ તે પતિવ્રતાએ ત્યા પોતાના પતિને બ્યારે બેથા નહિ ત્યારે

(સયણિજ્જાઓ ઉદ્દેડ, સાગરસ્સ દારગસ્સ સબ્બાઓ સમતા મગ્ગણગવેસણ
કરેમાણી ૨ વાસગરસ્સ દાર વિદાહિય પામડ, પામિત્તા એવ વયાસી)

શયના ઉપરથી બેસી થઈ અને ત્યારપછી તેણે ત્યાજ આરુપાસ થોડેર
સાગર દારકની માર્ગણા-ગવેપણા કરી બ્યારે તેણે શયનગૃહના બારણાને
ઉઘારેલું બેથું ત્યારે તેને વિચાર આવ્યો કે

(ગયે સે સાગરે ત્તિફૂટુ ઓહયમણમક્રપ્પા જાવ ઝિયાવડ, તણ મા
મદ્રા સત્યવાહી રૂઠ પાડ દામચેહિય સદાવેહ)

સાગર જતા રહ્યા છે આ રીતે અપહત મન સકલ્પવાળી થઈને તે

विष्पजहाय इहमागओ बहूहिं रियज्जणियाहि य रुंठणियाहि
 य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठ सोच्चा
 जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग-
 रयं दारय एवं वयासी-ट्ठुणं पुत्ता ! तुमे कय सागरदत्तस्स
 गिहाओ इह हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता !
 एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्त
 एवं वयासी-अवि आइ अह ताओ ! गिरिपडणं वा तरुप
 डण वा मरुपवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेस वा
 विसभक्खणं वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्वापिट्ठ वा
 पवज वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं
 सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे
 कुडुतरिए सागरस्स एयमट्ठ निसामेइ निसामित्ता लज्जिए
 विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनि-
 क्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
 सुकुमालिय दारिय सदावेइ सदावित्ता अके निवेसेइ निवे-
 सित्ता एव वयासी-किण्णं तुम पुत्ता ! सागरएण दारएणं
 मुक्का ? अहंणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जाव
 मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि
 समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—‘तएण’ इत्यादि । ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका
 दारिका ततो मूर्ध्वोत्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पवित्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

હે દેવાનુપ્રિયે ! હે સુકુમારિકે ! કિં=કૃતઃ ચ્છલુ ત્વપ્ અપહતમનઃ સન્નિપાયા યાત્ર
ધ્યાયસિ ? તતસ્તદનન્તર સા સુકુમારિકા દારિકા તા દામચેટીમેયમયાદીત્-હે
દેવાનુપ્રિયે ! એ ચ્છલુ સાગરકો દારકો મા સુચમસુતા જ્ઞાત્યા મમ પાર્શ્વાદુત્તિષ્ઠતિ,
ઉત્થાય વાસગૃહદ્વારમ્ ' અવગુણઃ ' જાગુણયતિ=અપાટ્ટુણોતિ ઉદ્ગાટયતિ, 'યાત્ર
પ્રતિગત ' યસ્યાઃ એવ દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતસ્તામેવ દિશ પ્રતિગત । તતસ્તદનન્તર ચ્છલુ
' તઓ ' તતો મુહૂર્તાન્તરેઽહ યાત્ર-પ્રતિબુદ્ધા સતી સાગરદારકમપશ્યન્તી શયના
દુત્તિષ્ઠામિ, ઉત્થાય તમ્ય માર્ગણગવેપળ કુર્વતી વાસગૃહસ્ય દ્વાર વિપ્રાટિત પશ્યામિ
ગતઃ ચ્છલુ સ સાગરકઃ ' ઇતિ કૃત્વા=ઇતિ હેતોરહમ્ અપહતમનઃ ચ્છલુ યાત્રદ-

ચિંતા મગ્ન દેખા-દેખકર ઉસને ઉસસે પૂછા કિ હે દેવાનુપ્રિયે ! કયા
કારણ હૈ જો આપ અપહતમન' સન્નિપાયા હોકર ચિન્તા મગ્ન થની હુઈ
હો ? હસ દાસચેટી કે પ્રશ્નકો સુનકર ઉસ સુકુમારિકા ને ઉસ સે
કહા-દેવાનુપ્રિયે-સુનો-સાગરદારક મુઝે સુગ્ન પ્રસુપ્ત જાનકર મેરે
પાસ સે ઉઠે ઓર ઉઠકર વાસગૃહ કે દરવાજે કો ચ્છોલકર જહા
સે આયે થે વહાં ચલે ગયે હૈ । (તણ ન તઓ અહ મુહુત્તરસ્મ
જાવ વિહાડિય પાસામિ ગણ સે સાગરણ ત્તિકદુ ઓહયમાણ
જાવ ક્ષિયાયામિ, તણ ન સા દામચેટી સુમાલિયાણ દારિયાણ એમદ
સોચ્ચા જેણેવ સાગરદત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છઢ) ઉસકે વાદ જ્યોહી મેં
જગી-તો મેંને જય માગર દારક કો અપને પાસ નહી દેખા-તો મેં શય્યા
સે ઉઠ ઘેટી-ઓર ઉઠકર મેને ઉનકી ઘેટી પર સત્ર તરફ માર્ગણ ગવે-
પણાકી ઉસમે મેને વાસગૃહ કે દરવાજે ઉઘડા પાયા-તન મેં સમજ

જધને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને ચિંતામા ગમગીન બેઠા બેઠાને તેણે તેને
પૂછ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! શા વારણથી તમે અપહત મન સન્નિપાયા થધને
ચિંતામા બેઠા છો ? દાસચેટીના પ્રશ્નને સાંભળીને તે સુકુમારિકાએ તેને કહ્યું-
કે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાંભળો, સાગર દારક અને સુખેયી સતી બાણીને મારી
પાસેથી ઉભા થયા અને ઉભા થધને વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડીને બ્યાથી
આંખા હતા, ત્યા જતા રહ્યા છે

(તણ તઓ અહ મુહુત્તરસ્મ જાવ વિહાડિય પાસામિ ગણ સે સાગરણ
ત્તિકદુ ઓહયમાણ જાવ ક્ષિયાયામિ, તણ સા દાસચેટી, સુમાલિયાણ દારિયાણ
એમદ સોચ્ચા જેણેવ સાગરદત્તે તેણેવ ઉવાગચ્છઢ)

ત્યાર પછી બ્યારે હું બાગી ત્યારે મેં સાગર દારક ને મારી પાસે બેઠો
નહિ, હું શય્યા ઉપર ઉઠી અને બેઠી થઈ ગઈ અને ત્યાર પછી મેં અહીં જ
તેમની બધે માર્ગણ-ગવેપણા ડરી મેં બ્યારે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડું બેઠું
કે તેઓ આવ્યા ગયા છે આ વિચારથી જ હું અપહત

પ્રમણાદીન્-હે દેવાનુપિયે ! મન્ત્ર મત્તુ તા ' મહુવરસ્મ ' મહુવરો ' મર્મપે
 ' મુદ્ધોવગિય ' મુત્રાગમનિત્તં=દન્તગમનાસ્તિત્વાત્ ' ઉવળેદિ ' ઉવળય=પાપય ।
 તતઃ તાલુ સા દામચેડી મદ્યા સાથરાગા પ્યમુક્તામી ' પ્યમદ્વ ' પતમર્થપ્-
 પતદ્વચન ' તવા ડન્તુ ' દ્વિત્ત ગ મનિત્રુગોનિ, મતિથુ પ ' મુદ્ધોવગિય ' મુખ
 ધાવનિત્તં રૂક્તાતિ, મુદ્ધોવા મર્મપ તાસગ્ત; તમેરોગમન્ત્રનિ, ઉગમગ્ય સુકુમારિકાં
 દારિકામેરુકાનિના યાસ્તુ જ્ઞામતી-ભાર્તે યાન તર્તીપચ્યતિ દ્વદ્વા પ્રમણાદીન્-
 દીને દ્વિતીય દિન પ્રાનઃ કાલ પોતે તી દામપુત્રી કો તુલ્યા (મહાવિત્તા
 એવ વયાસી ગચ્છત્ત્વ ણ તુમ દેવાણુપિય । મહુવરસ્મ મુદ્ધોવગિય ઉવળેદિ
 તપ્ણ સા દામચેડી મદ્યા એવ મુક્તા સમાળી એમદ્વ તદ્વત્તિ પદ્મિ
 સુણતિ મુદ્ધોવગિય મેળદ્વ, ઉગમગ્ચિત્તા, મુમાલિય દારિય જાવ
 ક્ષિયાયમાર્ણિ પામદ્વ, પાસિત્તા એવ વયાસી-ફિન્ન તુમ દેવાણુપિયા ।
 ઓહમણમક્રુપા જાવ ક્ષિયાદિતિ ? તપ્ણ સા મુમાલિયા દારિયા ત
 દાસચેડી એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપિયા સાગરણ દારણ મમ
 સુદ્ધપસુત્ત જણિત્તા મમ પાસાઓ ઉદ્દેહ, ઉદ્ધિત્તા વાસઘરદુવાર અવગુ
 ણદ્વ, જાવ પદ્મિગણ) ધુલાકર ઉસસે પેસા કદા ફિ હે દેવાણુ પ્રિય 'ત્ત્વા,
 ઓર વધુવર કે પાસ દ્વસ દન્ત ધાવન આદિરૂપ મુખ ધાવનિકા કો લેજા
 મદ્યા કે દ્વસ કથન કો ઉસ દાસચેડી ને " તદ્વત્તિ " કદ્ધકર સ્વીકર
 કર લિયા-ઓર મુખ ધાવનિકા કો લે લિયા-ઓર લેકર ફિર વહ જહ
 વાસગૃહ થા-વહા ગઈ । વહા પહુચકર ઉસને સુકુમારિકા દારિકા કો

ચિતામા ગમગીન થઈ ગઈ એટલામા બીજા દિવસે સવારે ભદ્રાસાથ વાહીએ
 દાસપુત્રીને બોલાવી

(સદાવિત્તા એવ વયાસી ગચ્છત્ત્વ ણ તુમ દેવાણુપિય ! મહુવરસ્મ મુદ્ધોવગિય
 ઉવળેદિ, તપ્ણ સા દાસચેડી મદ્યા એવ મુક્તા સમાળી એમદ્વ તદ્વત્તિ પદ્મિસુણતિ
 મુદ્ધોવગિય મેળદ્વ, મેળિત્તા જેણે વાસઘરે તેણેવ ઉગમગ્ચિત્ત, ઉગમગ્ચિત્તા,
 મુમાલિય દારિય જાવ ક્ષિયાયમાર્ણિ પાસદ્વ પાસિત્તા એવ વયાસી-ફિન્ન તુમ
 દેવાણુપિયા ઓહમણમક્રુપા જાવ ક્ષિયાદિતિ ? તપ્ણ સા મુમાલિયા દારિયા
 ત દાસચેડી એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપિયા ! સાગરણ દારણ મમ સુદ્ધપસુત્ત
 જણિત્તા મમ પાસાઓ ઉદ્દેહ, ઉદ્ધિત્તા વાસઘરદુવાર અવગુણદ્વ, જાવ પદ્મિગણ)

બોલાવાને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપિયે ! તુ વરવધૂની પાસે
 આ દત્તધાવન વગેરે મુખધાવનિકા લઈ જા ભદ્રાના આ કથનને સાભળીને
 તે દાસચેડીએ " તદ્વત્તિ " કહીને તેને સ્વીકારી લીધું અને મુખધાવનિકા
 (દાતણ) ને લઈ લીધું અને લઈને ને જ્યાં વાસગૃહ હતું ત્યાં ગઈ ત્યાં

વિમદાય=ત્યજ્યા ઇદાગત:-કથમેત્ત્વુ યુક્ત, યત્ત્વ નિર્દોષા સુકુમારિકા વિદાય
સાગરદારકોડય સમાયાત ઇતિ । એવ મહોભિ: ' સ્વિજ્જણિયાદિ ય ' સ્વેદનિકામિ:==
સ્વેદપૂર્ણાભિસ્તયા ' સ્વટ્ટણિયાદિ ય '=સ્વટ્ટણિયામિ-વ દેશીયોડય ગચ્છ:, રોદનક્રિ-
યાયુક્તામિ: વાગ્મિ: ઉપાલભતે=સાગરદત્તો જિનદત્તસ્ય ઉપાલમ્ભ મરોતીત્યર્થ: ।

તત્ત્વ સ્વલુ જિનદત્ત: સાર્થવાદ સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદમ્યાન્તિકે એતમર્થ શ્રુત્વા
નિશમ્ય યૈવ સાગરદારકસ્ત્વૈવોપગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સાગરક દારકં સ્વપુત્રમેવ=
વશ્યમાણપ્રકારેણ અવાદીત્-હે પુત્ર ! ત્વયા સ્વલુ દુષ્ટુ=અશોભન કૃતમ્ યત્-સાગ-
રદત્તસ્ય સાર્થવાદસ્ય ગૃહાદિદ્વ હવ્યમાગત:, તત્ત્વ=તસ્માદ્ ગચ્છ સ્વલુ ત્વ હે પુત્ર !
એવમપિ=યથાસ્થિતસ્ત્વૈવ સાગરદત્તસ્ય સાર્થવાદસ્ય ગૃહમ્ । સાગરદારકો જિનદત્તં
સાર્થવાદમેવમવાદીત્-હે તાત ! અપિ=નિશ્ચયેન ' આઈ ' ઇતિ વાક્યાલકારે અહ

દારિય અદિદ્વદોસ પદ્મવય ચિપ્પજહાય દ્વ માગઓ વદ્દિ સ્વિજ્જણિયાદિ
ય સ્વટ્ટણિયાદિ ય ઉવાલભદ્) હે દેવાનુપ્રિય ! કયા ૫૪ ધાન યોગ્ય હૈ-
અથવા કુલમર્યાદા કે લાયક હૈ, યા કુલ કી યોગ્યતા કે અનુસાર હૈ
યા કુલ કો શોભિત કરે એસી હૈ, જો સાગરદારક વિના કિમી દોષકે
દેલે-પતિવ્રતા સુકુમારિકા દારિકા કો ઝોડકર યહા આ ગયા હૈ હસ
પ્રકાર અનેક સ્વેદપૂર્ણ એવ રોદનક્રિયા યુક્ત વચનોસે સાગરદત્તને અપને
સન્ધી જિનદત્તકો ઠપકા-ઉલાહના દિયા । (નળ્લજિનદત્તે સાગરદત્તસ્ત
એવમદ્વ સોચ્ચા જેણેવ સાગરે દારે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા
સાગરય દારય એવવયાસી-દુષ્ટુણ પુત્તા તુમે કય, સાગરદત્તસ્ત ગિહાઓ દ્વ
હવ્વમાગે, તેણ ત ગચ્છદ્ ન તુમ પુત્તા ! એવમવિગે, સાગરદત્તસ્ત
ગિહે, તણે સે સાગરે જિનદત્ત એવ વયાસી-અવિ આઈ અહ તાઓ !

હે દેવાનુપ્રિય ! શુ આ વાત વાજળી છે ? કુળ મર્યાદાને લાયક છે ?
અથવા તો કુળની યોગ્યતા મુજબ છે ? કુળને શોભાવનારી છે ? કે જે સાગર
દારકે ઠોડ પલ્લુ બાતના દોષ બેળા વગર પતિવ્રતા સુકુમારીકા દારિકાને ત્યજીને
અહીં આવી ગયો છે ? આ ગીતે મનને દુભાવનારા તેમજ ગળગળા થઈને
રડતા રડતા ધણા વચનોથી સાગરતે પોતાના વેવાઈ જિનદત્તને ઠપકો આપ્યો
(તણે જિનદત્તે સાગરદત્તસ્ત એવમદ્વ સોચ્ચા જેણેવ સાગરે દારે તેણેવ
ઉવાગચ્છદ્, ઉવાગચ્છિત્તા સાગરય દારય એવ વયાસી-દુષ્ટુણ પુત્તા તુમે કય
સાગરદત્તસ્ત ગિહાઓ દ્વ હવ્વમાગે, તેણ ત ગચ્છદ્ ન તુમ પુત્તા ! એવમવિગે,
સાગરદત્તસ્ત ગિહે, તણે સે સાગરે જિનદત્ત એવ વયાસી-અવિ આઈ અહ

आर्तध्यानध्यायामि । ततः सद्यः सा सागरेयी सुकुमारिकाया गारिकाया अन्तिके
 एतमर्थं श्रुत्वा, तत्रैव सागरदत्त सार्धगाह=सुकुमारिकाया पिता, तत्रैवोपा
 गच्छति, उपागत्य त सागरदत्तमेतमर्थं निवेदयति । ततस्तदनन्तरं स सागरदत्तः
 सार्धवाहो दासचेटीया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निश्चय्य आशुम्भन्तः=ग्रीध क्रोधाविष्टः
 सन् यत्रैव जिनदत्तस्य मार्गगाहस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य जिनदत्त
 सार्धगाहमेवमवादीत्-हे देवानुमिय ! किं=तथ सद्यः पयं युक्तम्=उत्तमं वा प्राप्तं=
 कुलमर्यादामनुभाष्य वा कुलाणुरूपं=कुलयोग्यतानुरूपं वा कुलमदृश्यं=कुलमाभ्यापन्न
 वा, यत् सद्यः सागरो दारयः सुकुमारिका गारिकामदृष्टदोषा=निर्दोषा पतिव्रता
 गई किं वे चले गये है हम विचार से मैं अपहृतमनः सत्कृत्य होकर
 आर्तध्यान-चिन्ता-में पड़ रही हूँ । इस प्रकार सुकुमारिका की बात
 सुनकर वह दासचेटी बहुत सोच विचार करके वहाँ से सागरदत्त
 के पास आई । (उवागच्छित्ता सागरदत्तस्त एयमद्व निवेद-तण्ण
 से सागरदत्ते दासचेटीया अति ए एयमद्व सोच्चा निसम्म आसुरस्ते
 जेणेव जिनदत्तस्त सत्थवाहस्त गिहे तेणेव उवागच्छित्ता-उवागच्छित्ता
 जिनदत्त एव वयासी) वहाँ आकर उसने सागरदत्त से इस बात को
 कहा-। इस तरह दासचेटी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे
 हृदय में धारण कर सागरदत्त बहुत अभिष-क्रुद्ध हुआ-और उसी
 समय जहाँ जिनदत्त सार्धगाह का घर था वहाँ गया । वहाँ जाकर
 उसने जिनदत्त से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एव जुत्त
 वा पत्त वा कुलाणुरूप वा कुलसरिस्स वा जन्त सागरदारणं समालिय

मनः स कल्पे यधने आर्तध्यान-चिन्ता-भा पडी छु आ रीते सुकुमारीकानी बात
 सावणीने ते दास चेटी भूषण विचार करीने त्याथी सागरदत्तनी भासे गर्ध
 उवागच्छित्ता सागरदत्तस्य एयमद्व निवेद-तण्ण से सागरदत्ते दासचेटीया
 अति ए एयमद्व सोच्चा निसम्म आसुरस्ते जेणेव जिनदत्तस्त सत्थवाहस्त गिहे
 तेणेव उवागच्छित्ता-उवागच्छित्ता जिनदत्त एव वयासी)

त्या आवी ने तेहे सागरदत्तने आ बात करी आ रीते दास चेटीना
 भूषणी बधी विगत सावणीने अने तेने हृदयभा धारण करीने सागर दत्त
 अत्यंत गुस्से थयो अने तरत न न्या जिनदत्त सार्धवाहनु घर छतु त्या
 गयो त्या नधने तेहे जिनदत्त सार्धवाहने आ प्रभावे कहु ठे

(किण्ण देवाणुप्पिया ! एव जुत्त वा पत्त वा कुलाणुरूप वा कुलसरिस्स वा
 जन्त सागरदारणं समालिय दरियं अदिद्वदोस पइनय विप्पजहाय इहमागओ
 वहुहिं खिज्जणियाहि य रुद्धणियाहि य उवालमइ)

विप्रदाय=त्यक्त्वा इहागतः—रुथमेत्तद् युक्तं, यत् निर्दोषा सुकुमारिका निहाय सागरदारकोऽत्र समायात इति । एव गृहीभिः 'खिज्जणियाहि य' खेदनिकामिः=खेदपूर्णाभिस्तथा 'रुटणियाहि य' =रुटणियाभिश्च देशीयोऽयं शब्दः, रोदनक्रियायुक्ताभिः वाग्भिः उपात्मते=सागरदत्तो जिनदत्तस्य उपात्म्यं करोतीत्यर्थः ।

तत खलु जिनदत्तः सार्थवाह सागरदत्तस्य सार्थवाहस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य यत्रैव सागरदारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरक दारक स्वपुत्रमेव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्—हे पुत्र ! त्वया खलु दुष्टु=अशोभन कृतम् यत्—सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहादिह हव्यमागतः, तत्=तस्माद् गच्छ खलु त्वं हे पुत्र ! एवमपि=यथास्थितस्तत्रैव सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहम् । सागरदारको जिनदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्—हे तात ! अपि=निश्चयेन 'आइ' इति वाक्यालंकारे अह

दारिय अदिद्वदोस पइवय चिप्पजहाय इह मागओ वहुहिं खिज्जणियाहि य रुट्ठणियाहि य उवाल्भइ) हे देवानुप्रिय ! क्या यह धान योग्य है—अथवा कुलमर्यादा के लायक है, या कुल की योग्यता के अनुसार है या कुल को शोभित करे ऐसी है, जो सागरदारक बिना किसी दोषके देखे—पतिव्रता सुकुमारिका दारिका को छोड़कर यहा आ गया है इस प्रकार अनेक खेदपूर्ण एवं रोदनक्रिया युक्त वचनोंसे सागरदत्तने अपने सबधी जिनदत्तको ठपका-उलाहना दिया । (तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठ सोच्चा जेणेय सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरय दारय एववयासी—दुट्ठण पुत्ता तुमे कय, सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेण त गच्छइ ण तुम पुत्ता ! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएण से मागरए जिणदत्त एव वयासी—अवि आइ अह ताओ !

हे देवानुप्रिय ! शु आ बात बाजणी छे ? कुण भयिहाने लायक छे ? अथवा तो कुणनी योग्यता भुज्ज छे ? कुणने शोभावनारी छे ? ते जे सागर दारक ठाई पणु आतना होय जेया वगर पतिव्रता सुकुमारिका दारिकाने त्यजने अही आवी गये छे ? आ रीते मनने दुणावनारा तेभज गणगणा यधने रउता रउता धण्डा वयनोथी सागरसे पोताना वेवाछ जिनदत्तने ठपडे आये। (तएण जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठ सोच्चा जेणेय सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरय दारय एव वयासी—दुट्ठण पुत्ता तुमे कय सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेण त गच्छइ ण तुम पुत्ता ! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएण से सागरए जिणदत्त एव वयासी—अवि आइ अह

તમાપ્તયા ગિરિપતન યા તરુપાન યા મરુપપાન યા=નિર્ગચ્છેગમન યા જમ્પપાત
 યા=અગાધજલે પતન યા, જલનપ્રવેશ યા વાત્સલ્યનો પ્રવેશ યા વિપમક્ષણ યા,
 'સત્યોવાડણ યા' સુધારવાટન યા=જો ન જાસરવિનાશન યા, 'વેદાણમ યા'
 વૈદ્યાયસ યા પળે પાશ્વમ્પ્રણ યા, તથા-પૃ. ૩૫૫૮=ટાં: સ્પર્શનં મયા ગતોદ્ધા
 દીના કલેરે પ્રવેશિતસ્ય ગરીસ્ય મ્વાપુદ્ગ મૃત્તમ્પ્રણ, યથા પ્રવચ્ચા યા, વિદશ-

ગિરિપટન યા તરુપટન યા મરુપપાન યા જલપ્પવેસ યા જલ્પપવેસ યા
 વિસમક્ષણ યા સત્યોવાડણ યા વેદાગમ યા ગિદ્ધાપિટ્ઠ યા પવજ્જ યા
 વિદેસગમણ યા અબ્ધુવગચ્છિજ્જામિ, નો ચલ્લુ અહ સાગરદત્તસ્મ ગિદ્ધ ગચ્છિજ્જા)
 જિનદત્ત સાગરદત્ત કે હસ ઝલાહને રૂપ અર્થે કો સુન
 કરકે જહાં સાગરદારક થા જહાં ગયા-પર્તાં જાકર ડસને સાગર દારક
 સે હસ પ્રકાર કતા-હે પુત્ર ! યહ તુમને અચ્ચા નર્તી ક્રિયા-જો તુમ
 સાગરદત્ત કે ઘર સે યહા હતને જરદી આ ગયે । હમલિયે હે વેદા !
 તુમ જૈસે યહા યૈટે હો વૈસે હી સાગરદત્ત કે ઘર ચલે જાઓ । તબ
 સાગરદારકને અપને પિતાં જિનદત્ત સે હન્ન પ્રકાર કતા-પિતાંજી ! મેં
 આપકી આજ્ઞા સે પર્વત સે ગિરના સ્વીકાર કર સકના હું, વૃક્ષ સે
 નીચે પડજાના સ્વીકારકર સકના હું-મરુપપાત-નિર્જલપ્રદેશ મેં જાના
 અગીકારકર સકતા હું, અગાધજલ મેં હવકર મરસકતા હું તથા જલતી
 હુઈ અગ્નિ મેં પ્રવેશ કરના, વિપકામક્ષણ કરના, શાસ્ત્ર સે શરીર કા

તાઓ ! ગિરિપટન યા તરુપટન યા મરુપપાન યા જલપ્પવેસ યા જલ્પપવેસ
 યા વિસમક્ષણ યા સત્યોવાડણ યા વેદાગમ યા ગિદ્ધાપિટ્ઠ યા પવજ્જ યા
 વિદેસગમણ યા અબ્ધુવગચ્છિજ્જામિ, નો ચલ્લુ અહ સાગરદત્તસ્મ ગિદ્ધ ગચ્છિજ્જા)
 જિનદત્ત સાગરદત્તના આ ઠપકાને સાલળીને જ્યાં સાગર દારકે હોતો
 ત્યાં ગયો અને ત્યાં જઈને તેણે સાગર દારકને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે 'પુત્ર !
 તમે આ જો ઠઈ કર્યું છે, તે સારું ન કહેવાય તમે સાગરદત્તના ઘેરથી
 આટલા જલ્દી આવતા રહ્યા આ ઠીક નથી એથી હે બેટા ! તમે અત્યારે
 જેવી સ્થિતિમા છો તેવી જ સ્થિતિમા સાગરદત્તને ઘેર જતા રહો ત્યારે
 સાગર દારકે પોતાના પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પિતાશ્રી ! તમારી આ
 સાથી હું પર્વત ઉપરથી નીચે ગળડી પડવું સ્વીકારી શકું છું, વૃક્ષ ઉપરથી
 નીચે પડી જવું સ્વીકારી શકું છું, મરુપપાત-નિર્જળ પ્રદેશમા જવું સ્વીકારી
 શકું છું, ઊંડા પાણીમા ડૂબીને મરી શકું છું, તેમજ સળગતા અગ્નિમા
 પ્રવેશવું, વિપત્તિ ભક્ષણ કરવું, શસ્ત્રનાધારથી શરીર ને કાપવું, ગળા 'સો'

गमन वा अभ्युपगच्छामि=स्यीकरोमि किंतु खलु=निश्चयेन सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य
गृहे नैवगच्छामि । ततस्त्वदा-स सागरदत्तः सार्थवाहः कुडयान्नरित = भित्तिव्य-
वधानेन स्थितः सागरस्य दारकस्य एतमर्थम्=उक्तं उच्यते निशामयति=शृणोति,
निशाम्य लज्जितः स्वयं, व्रीडितः परतः ' विडे ' विडुः=देहीयोऽयं शब्दः स्वप-
रतो लज्जितः, जिनदत्तस्य गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति । प्रतिनिष्क्रम्य
यत्रैव स्वरु गृहं तत्रोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिका दारिका शब्दयति, शब्द-
पित्वा अङ्के=उत्सदे ' निवेसेड ' निवेशयति=उपवेशयति, निवेश एवमादीत्-हे
पुत्री । किं=केन कारणेन खलु त्वं सागराण दारकेण ' मुक्ता ' मुक्ता=त्यक्ता ? ।

विदारण करना गले में फासी लगाकर मरजाना, गज, उष्ट्र आदि के
मृतकलेवर में मैं अपने आपको प्रविष्ट कराकर उस शरीरको नृत्यबुद्धि
की कल्पना से गृह पक्षियों द्वारा भक्षण करवाना यह सब मैं स्वीकार
कर सकता हूँ, इसी तरह दीक्षागृहण करना अथवा विदेश में चलेजाना
भी स्वीकारकर सकता हूँ-परन्तु मैं सागरदत्त के घरजाना स्वीकार नहीं
कर सकता हूँ । अर्थात् ये सब पूर्वोक्त आपकी आज्ञाएँ मुझे बिना किसी
सकोचके या विचारके मान्य हैं परन्तु सागरदत्तके घरजाना मुझे मान्य
नहीं है । (तएण से सागरदत्ते सत्यवाहे कुडुतरिण सागरस्स पयमद्व नि
सामेइ, निसामित्ता लज्जिए, विलीए, विडे जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनि-
क्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छट्ठ, उवागच्छित्ता
सुकुमालियं दारिय सदावेइ, सदावित्ता अके निवेसेइ, निवेसित्ता एव
वयासी, किण्ण तुम पुत्ता सागरएण दारएण मुक्का? अहं ण तुम तस्स

बेरवीने भरु, छाथी छोट वगेरेना भरेखा शरीरमा प्रवेरा करी मास शरी
रने मृतयुद्धिनी कल्पनाथी गीध पक्षीओने अवडाववु आ गंधु हु स्वीकारी
शक्नु तेम छु, तेवी न रीते दीक्षा अहणु करवी अथवा तो परदेराभा जाता
रहेवु पणु हु स्वीकारी शक्नु छु पणु हु सागरदत्तना घेर नवु स्वीकाग्वा तैयार
नथी ओटले के आ गंधी उपरनी तभारी आज्ञाओ भने केछ पणु नतनी
विचार कथा वगर मान्य छे, पणु सागरदत्तने त्या नवु मान्य नथी

(तएण से सागरदत्ते सत्यवाहे कुडुतरिण सागरस्स पयमद्व निमामेइ, निसामित्ता
लज्जिए, विलीए, विडे, जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छट्ठ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारिय सदावेइ,
सदावित्ता अके निवेसेइ, निवेसित्ता एव वयासी किण्ण पुत्ता सागरएण दारएण

તપાસવા ગિરિપતન તા સત્પાન તા મરુપપાત તા=નિર્જલપ્રદેશગમન તા જમ્પપાત
 તા=અગાધનહે પતન તા, જ્વલાપવેશ તા જમ્પદ્ગનો પ્રવેશ તા વિપમણ તા,
 'સત્યોવાડણ તા' યદ્યાપવાડન તા=ગેય ગ્રંથરચના તા, 'વેદાણમ તા'
 વૈદ્યાપસ તા વળે પાશમપ્રણ તા, તથા-શૃંગાપ્પટ=શૃંગાઃ સ્પર્શન મયા મનોદ્વા
 દીના કલેરે પ્રવેગિતસ્ય ગરીસ્ય શ્વાપુરુષા શૃંગમણ, તથા પ્રવગ્ધા તા, વિદગ્ધ

ગિરિપટ્ટણ તા તરુપટ્ટણ તા મરુપપાત તા જલપ્પવેશ તા જલણપ્પવેશ તા
 વિસમન્નવણ તા સત્યોવાડણ તા વેદાણમ તા ગિદ્વાપિટ્ઠ તા પવગ્ગ તા
 વિદેસગમણ તા અન્નુવગચ્છિજ્જામિ, નો ત્વહ અહ સાગરદત્તસ્ત ગિહ ગચ્છિજ્જા)
 જિનદત્ત સાગરદત્ત કે હમ્મર ઉત્થાને રૂપ અર્થ કો સુન
 કરકે જહાં સાગરદારક થા વહા ગયા-વર્ણા જાકર ઉમને સાગર દારક
 સે હસ પ્રકાર કતા-હે પુત્ર ! યહ તુમને અચ્છા નહીં ક્રિયા-જો તુમ
 સાગરદત્ત કે ઘર સે યહા હતને જન્દી આ ગયે । હમ્મલિયે હે બેટા !
 તુમ જૈસે યહા બેટે હો વૈસે હી સાગરદત્ત કે ઘર ચહે જાઓ । તબ
 સાગરદારકને અપને પિતા જિનદત્ત સે હમ્મ પ્રકાર કતા-પિતાજી ! મેં
 આપકી આજ્ઞા સે પર્વત સે ગિરના સ્વીકાર કર સકતા હૂં, વૃક્ષ સે
 નીચે પડજાના સ્વીકારકર સકતા હૂં-મરુપપાત-નિર્જલપ્રદેશ મેં જાના
 અંગીકારકર સકતા હૂં, અગાધજલ મેં હમ્મર મરસગતા હૂં તથા જલતી
 હુઈ અગ્નિ મેં પ્રવેશ કરના, વિપકામક્ષણ કરના, શસ્ત્ર સે શરીર કા

તાઓ ! ગિરિપટ્ટણ તા તરુપટ્ટણ તા મરુપપાત તા જલપ્પવેશ તા જલણપ્પવેશ
 તા વિસમન્નવણ તા સત્યોવાડણ તા વેદાણમ તા ગિદ્વાપિટ્ઠ તા પવગ્ગ તા
 વિદેસગમણ તા અન્નુવગચ્છિજ્જામિ, નો ત્વહ અહ સાગરદત્તસ્ત ગિહ ગચ્છિજ્જા)
 જિનદત્ત સાગરદત્તના આ કપકને સાલણીને બ્યા : સાગર દારક હોતો
 ત્યા ગયો અને ત્યા બધને તેણે સાગર દારકને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર !
 તમે આ જે કંઈ કંઈ છે, તે સારુ ન કહેવાય તમે સાગરદત્તના ઘેરથી
 આટલા બંદી આવતા રહ્યા આ ઠીક નથી એથી હે બેટા ! તમે અત્યારે
 જેવી સ્થિતિમા છો તેવી જ સ્થિતિમા સાગરદત્તને ઘેર જતા રહો ત્યારે
 સાગર દારકે પોતાના પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પિતશ્રી ! તમારી આ
 સાથી હું પર્વત ઉપરથી નીચે ગળડી પડવું સ્વીકારી શકું છું, વૃક્ષ ઉપરથી
 નીચે પડી બહુ સ્વીકારી શકું છું, મરુપપાત-નિર્જલ પ્રદેશમા બહુ સ્વીકારી
 શકું છું, ઊંડા પાણીમા ડૂબીને મરી શકું છું, તેમજ સળગતા અગ્નિમા
 પ્રવેશવું, વિષનું ભક્ષણ કરવું, શસ્ત્રનાઘાથી શરીર ને ઘાવવું, ગજામા

जाव अन्निज्जमाणमग्ग, तएण से सागरदत्ते कोडुवियपुरिसे
सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे ण देवाणुप्पिया ।
एय दमगपुरिस विउलेण जमणपाणखाइमसाइम पलोभेहि
पलोभित्ता गिह अणुप्पवेमेह अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग
खडघडग ते एगते एडेह एडित्ता अलकारियकम्म कारेह
कारित्ता पहाय कयवलि० जाव सव्वालकारविभूसिय करेह
करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइम भोयावेह भोया-
वित्ता मम अतिय उवणेह, तएण कोडुवियपुरिसा जाव
पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवा
गच्छइ उवागच्छित्ता तं दमग असण उवप्पलोभेति उवप्प-
लोभित्ता सय गिह अणुपवेसिति अणुपवेसित्ता त खडगम-
ल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडति,
तएण से दमगे तसि खडमल्लगंसि खडघडगंसि य एगते
एडिज्जमाणसि महया२ सदेण आरसइ, तएण से सागरदत्ते
तस्स दमगपुरिसस्स त महया२ आरसियसद्द सोच्चा निसम्म
कोडुवियपुरिसे एव वयासी-किण्ण देवाणुप्पिया । एस
दमगपुरिसे महया महया सदेण आरसइ ? तएण ते कोडु-
वियपुरिसा एव वयासी-एस णं सामी । तसिखडमल्लगनि
खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया महया सदेण
आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुवियपुरिसे एव
वयासी-मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया । एयस्स दमगस्स त

અહ સલુ ત્તાં તન્ને દાસ્યામિ ગમ્ય ગન્દ સ્વમિશાભમિઝગિતા કાતા પ્રિયા મનોજા
મનોમા=મનોગતા મવિષ્ણિ. ઇન્દ્રિયા મુકુમારિકા દારિકાં તામિશ્વિદ્યામિશાંમિ
'સમાસાસેદ' સમાસાસરતિ સમાસાસન પ્રતિગિર્જવતિ=મધ્યાપવતિ ॥ ૧૦ ॥

મૂલપ-તપણ સે માગરદત્તે ણગ મહં દમગપુગિસ પાસડ
દડિસડનિવસણ સડગમહુગઘડગહસ્થગયં મચ્છિયામહસ્સેહિ

દહામિ જસ્સ ણ તુમ ઇટ્ટા જાગ મળામા મવિસ્સમિત્તિ મુમાલિય દારિય
તાહિ ઇટ્ટાહિ યગ્ગહિ સમાસાસેદ, સમાસાસિત્તા પડિવિસડ્ઝેદ) વર્ણ
મિત્તિ કે પીઠે છુપા દુઆ માગરદત્ત સાર્થવાદ સાગર-કે ઉન વચનો કો
સુન રહા થા । સો સુન કરતે સ્વયં યહા લજ્જિત દુઆ તથા વૂસગેસે બી
ઉસે ઘડી શર્મ આઈં હસ તર્ગ સ્વ ઓર પર સે લજાના દુઆ વહ જિન
દત્ત કે ઘર સે ગાંર નિકળ ગયા । ઓર જાકર અપને પર પહુંચા ।
ઘરા પહુંચ કર ઉમને અપની પુત્રી સુકુમારિકા દારિકા કો બુલાયા
-બુલાને પર જય ગા આ ગઈં તપ ઉસે ઉમને અપની મોદી મેં બેઠા લિયા
બેઠાનેકે વાદ ફિર ઉમને ઉમસે પૂઝા બેટી । માગરને તુમ્હેં કિસ કારણ
સે છોડ દિયા હૈ મેં તુમ્હેં ઉસી કે દુગા । કિ જિસ કે નિચે તુમ અઞ્જી
તરહ ઇટ્ટા, કાન્તા, પ્રિયા, મનોજા એવ મનોમા હોઓગી, હસ પ્રકાર ઉસને
સુકુમારિકા દારિકાનો ઉનર ઇષ્ટ વચનો દ્વારા અઞ્જી તરહ આશ્વાસન
દિયા-ઘૈર્ય વંધાયા-ઓર આશ્વાસન દેકર ઉસે વિસર્જિન કરદિયા । સુ૦૧૦

મુક્કા ? અહ ણ તુમ તસ્સ દાહામિ જસ્સ ણ તુમ ઇટ્ટા જાગ મળામા મવિસ્સસિત્તિ
સુમાલિય દારિય તાહિ ઇટ્ટાહિ યગ્ગહિ સમાસાસેદ, સમાસાસિત્તા પડિવિસડ્ઝેદ)
ત્યા જ ભીંતની પાછળ છુપાઈને માગરદત્ત સાર્થવાદ સાગરની તે બધી
વાતને સાંભળી રહ્યો હતો । સાંભળી તે બહુજ લજ્જિત થયો તેમજ બીજા
ઓથી પણ તે ખૂબજ લજ્જિત થયો આ રીતે 'જાતે' અને બીજાઓથી
લજાતો તે જિનહત્તના ઘેરથી બહાર નીકળી ગયો અને નીકળીને પોતાને ઘેર
પહોંચ્યો ત્યા જઈને તેણે પોતાની પુત્રી સુકુમારિકા દારિકાને બોલાવી બેસાડે
તે સુકુમારિકા દારિકા આવી ગઈ ત્યારે તેને પોતાના બોળામા બેસાડી લીધી
બેસાડીને તેણે તેને પૂછ્યું હે બેટી ! શા કારણથી સાગરે તને ત્યજી છે ? તને
હુ તે પુરુષને જ આપીશ કે જેના માટે તુ મારી રીતે ઈચ્છા, કાતા પ્રિયા,
મનોજા અને મનોમા થશે આ રીતે તેણે સુકુમાર દારિકાને પોતાના ઇષ્ટ વચ
નોથી સારીરીતે આશ્વાસન આપ્યું અને ત્યાર પછી તેને વિદાય આપી ~ ૧૦॥

जाव अन्निज्जमाणमग्गं, तएण से सागरदत्ते कोडुवियपुरिसे
 सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ।
 एयं दमगपुरिस विउलेण जमणपाणखाइमसाइम पलोभेहि
 पलोभित्ता गिह अणुप्पवेमेह अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग
 खडघडग ते एगते एडेह एडित्ता अलकारियकम्म कारेह
 कारित्ता पहाय कयवलि० जाव सन्वालकारविभूसिय करेह
 करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइम भोयावेह भोया-
 वित्ता मम अतिय उवणेह, तएण कोडुवियपुरिसा जाव
 पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवा
 गच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेति उवप्प-
 लोभित्ता सय गिह अणुपवेसिति अणुपवेसित्ता त खडगम-
 ल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडति,
 तएण से दमगे तसि खडमल्लगंसि खडघडगंसि य एगते
 एडिज्जमाणसि महया२ सदेण आरसइ, तएण से सागरदत्ते
 तस्स दमगपुरिरास्स तं महया२ आरसियसइ सोच्चा निसम्म
 कोडुवियपुरिसे एव वयासी-किण्णं देवाणुप्पिया । एस
 दमगपुरिसे महया महया सदेण आरसइ ? तएणं ते कोडु-
 वियपुरिसा एव वयासी-एस ण सामी । तसि खडमल्लगसि
 खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया महया सदेण
 आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुवियपुरिसे एव
 वयासी-मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया । एयस्स दमगस्स त

खंड जाव एडेह पासे ठयेह जहा णं पत्तिय भवइ, ते वि
तहेय ठविति. तण्णं ते कोटुवियपुगिसा तस्स दमगस्स
अलंकारियम्मकरेति करित्ता सयपागसहस्मपागेहिं तिछेहिं
अवभगेति अवभंगिण. सुमाणे सुगभिगधुव्वट्ठणेणं गाय उव्व-
ट्ठिति२ उप्पिणोदगेणं गधोदगेण सीतोदगेणं प्पहारणेति पम्हल
सुकुमाल गंधकासाइयाण । गायाइ ल्हहति ल्हहिता हंमल-
क्खणं पट्टसाडगं परिहेति परिहिता सव्वालकारविभूतियं
करेति करित्ता त्रिडल असणपाणखाइमसाइमं भोयावेति
भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेति, तण्ण सागरदत्ते सूमा-
लिय दारिय प्पहाय जाव सव्वालकारविभूतियं करित्ता त
दमगपुरिस एव वयासी-देवाणुप्पिया। मम धूया इट्ठा एय
णं अह तव भारियत्ताए दलामि भद्वियाए भद्वओ भवि-
ज्जासि, तण्ण से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स ण्यमट्ट पडिसु-
णेति पडिसुणिता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघर
अणुपविसइ अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि
तलिमसि निवज्जइ, तण्ण से दमगपुरिसे सूमालियाए इम
एयारूव अगफास पडिसवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव
सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ
निग्गच्छित्ता खंडमल्लग खडघडगं च गहाय मारामुक्के विव
काए जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए, तण्ण
सा सूमालिया जाव गण्णं से दमगपुरिसे त्तिकट्ठु ओहय-
मण जाव ज्ञियाउइ ॥ सू० ११ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स सागरदत्त सार्वभौम
होऽन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् काले ‘उत्पि आगासतलगसि’ उपरि आका-
शतलके=प्रासादोपरिभागे, सुहानिसण्णे ‘सुखेनोपविष्ट’, राजमार्गमवलोकमानः
२ तिष्ठति । तत खलु स सागरदत्त एक महान्त ‘दमगपुरिस’ द्रमनपुरुष
‘दमग’ इति देशीयः शब्दः दरिद्रपुरुष पश्यति, किम्भूतम् ? इत्याह—‘दडिखंड
निवसण’ दण्डिखण्डनिवसन=दण्डि—कृतसन्धान जीर्णवस्त्र तस्य खण्ड तदेव निव-
सन परिधानवस्त्र यस्य स दण्डिखण्डनिवसनस्तम्, तथा—, खडमल्लग घडगहत्थगय
खण्डमल्लरुघटरुहस्तगत=खण्डमल्लरु—खण्डशराव स्फुटितशराव मिश्रापात्र, तथा
खण्डघटरुह=खण्डरूपो घट’ स्फुटितस्य घटस्य भागः स एव जम्पात्र, एतद्
द्वय हस्तगत यस्य तम्, ‘मच्छियामहस्सेहि जाव अनिज्जमाणमग्ग’ मक्षिकास
हसै यावत् अन्वीयमानमार्गं, शरीरवस्त्रादेर्मलिनत्वात् तत्पृष्ठतो मक्षिका आप

‘तएण से सागरदत्ते’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण से सागरदत्ते) इसके बाद सागरदत्तने किसी एक समय
“उत्पि आगासतलगसि” अपने प्रासाद के ऊपर सुख पूर्वक बैठी हुई
स्थिति में राजमार्ग का अवलोकन करते समय (एग मह दमगपुरिस
पासइ) एक अत्यंत दरिद्र पुरुष को देखा (दडिखंडनिवसण खंडगम
ल्लगघडगहत्थगय मच्छियासहस्सेहि जाव अनिज्जमाणमग्ग) जो
जीर्णवस्त्र के जुड़े हुए चिथड़े को पहिने था और जिसके हाथ में खड-
मल्लकया—फुटा हुआ मिट्टि के खप्पर था—तथा पानी पीने के
लिये फुटे हुए घट का एक खप्पर था । हजारों मक्षिका जिसके पीछे
पीछे, शरीर और वस्त्रों के मलिन होने से भिन्न २ करती हुई उड़ रही

‘तएण से सागरदत्ते’ इत्यादि ॥

टीका—(तएण से सागरदत्ते) त्पार बाद सागरदत्त के एक एक वपत्त (उत्पि आगा
सतलगसि) पोताना भेलेनी ७पर सुपेथी भेसीने राजमार्गनु अवलोडनउरतो हुते।
त्यारे तेले (एग मह दमगपुरिस पासइ) ओउ भूणअ दरिद्र—क गाव—पुरुषने लेथे।
(दडिखंडनिवसण खडगमल्लगघडगहत्थगय मच्छियासहस्सेहि जाव अनिज्जमा-
णमग्ग) तेले नूना वस्त्रना रीथराओ। पडेरेला हुता अने तेना हाथमा
“अउमल्लक हुतु” ओउते के कुटी गयेला भाटीना पासणुने ओउ ककडे। हुते।
तेमज्जपाणी पीवा भाटे कुटेली भाटलीनु ओउ अणपर हुतु हुतरे भाणीओ।
तेनीपाछण पाछण—शरीर अने वस्त्रोनी भलीनताने वीधे उडी रही हुती,

तन्तीत्यर्थः । ततः गन्तुं सागरदत्तं कोटुपियपुत्रिणां शङ्क्यति, गन्तव्यत्वा
 पत्रमरादीन् हे देवानुप्रियाः । यूयं गन्तुं एतं द्रमगपुरुषं चन्द्रपुरुषं, विपुलेन अश्व
 नपानसाधस्राणेन प्रलोभयत प्रलोभ्य गृहमनुमतेनपान, अनुमतेन स्वदकमल्लम् =
 खण्डशराय खण्डघटक = रानीयपात्र ' से ' तस्य द्रमगपुरुषस्य एकान्ते = एकान्त
 स्थाने ' एदेह ' निक्षेपयत, निक्षेप्य अलंकारिकम् = केवलसन्नेदनादिक
 नापितादिभिः फामयत, फामयित्वा स्नात कृतयत्किर्माणं यावत् सर्वालङ्कार-

धी । (त एण से सागरदत्ते कोटुपियपुत्रिसे सदावेह, सदावित्ता एवं
 वयासी-तुवमे ण देवानुप्रिया ! एयं दमगपुत्रिस विउलेण असणपाण-
 खाइम साइम पलोमेह, पलोमित्ता गिह अणुपवेसेह, अणुपवेसित्ता
 खडगमल्लग खडघटक त एगते एदेह एडित्ता अलंकारिकम्म कारेह
 कारित्ता ण्हाय कययलि० जाव सन्वालकारविभूसिय करेह करित्ता मणु
 ण्ण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयावित्ता मम अतियउवणेह)
 इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया । बुलाकर उसने
 इस प्रकार कहा देवानुप्रियो । तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको विपुल अशन,
 पान, खाद्य और स्वाग्रूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर
 फिर इसे घर में भीतर करलो । जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब
 तुमलोग इसके ये खडमल्ल (फटी लंगोटी) और खडघटक इससे छुड़ा
 कर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रखदो । बाद में नापित (नाई)
 को बुलाकर इसके सुन्दर ढग से बाल घनबाओ नखआदि जो बढ़ रहे

(त एण से सागरदत्ते कोटुपियपुत्रिसे सदावेह, सदावित्ता एय वयासी-तुवमेण देवा
 नुप्रिया ! एयं दमगपुत्रिस विउलेण असणपाणखाइमसाइम पलोमेह, पलोमित्ता गिह
 अनुपवेसेह, अणुपवेसित्ता खडगमल्लग खडघटक त एग ते एदेह, एडित्ता अल
 कारिकम्म कारेह कारित्ता ण्हाय कययलि० जाव सन्वालकारविभूसिय करेह करित्ता
 मणुण्ण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयावित्ता मम अतिय उवणेह)
 त्थारपणी सागरदत्ते आज्ञाकारी पुत्रिने जोलाव्या जोलावीने तेमने आ
 प्रभाण्णे कहु-हे हे देवानुप्रियो ! तमे लोजे आ दरिद्र पुत्रिने पुत्रिण प्रभा
 णुमा अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य इय चार जतना आहारनी लायय आये
 लायय आपीने तेने घरनी अदर जोलावी हो न्यारे ते घरमा आवी नय
 त्थारे तमे तेनी पासेना अडमल्ल अने अडघटक लधने तेने जोजत सुरक्षित
 स्थानमा भूझी हो त्थारपणी हुआमने जोलावीने तेना सरस रीते बाण कपावी
 नाणे अने वधी गयेला नथ वजेरने कपावी नाणे त्थार तेने स्नान

विभूषित कुरुत कृत्वा 'मणुष्ण' मनोज्ञ=रुचिरम् अशनपानस्वाद्यस्याद्य भोजयत
भोजयित्वा ममान्तिक=समीपप्रपन्नयत । ततः खलु कौटुम्भिकपुरुषा यावत्-प्रति-
शृण्वन्ति='तथाऽस्तु' इति कृत्वा तदाज्ञा स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स द्रमरुप-
रुपः=रङ्गपुरुषः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त द्रमरु रुचिरेण विपुलेनाशनादिना
प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य सः कृद्गमनुप्रवेशयन्ति, अनुप्रवेश्य त खण्डकमलक खण्डक-
घटक च तस्य द्रमरुपुरुषस्यैकान्ते 'एडति' निक्षेपयन्ति, तत खलु स द्रमरु
स्वस्मिन् खण्डमलके खण्डघटके च एकान्ते 'एडिज्जमाणसि' निक्षेप्यमाणे
सति महता २ शब्देन 'आरसइ' आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य
द्रमरुपुरुषश्च त महान्त 'आरसियइ सह' आरन्दनशब्दं श्रुत्वा निश्चय्य कौटु-

हैं उन्हें कटवाओ । उमके प्रश्नात् इसे स्नान कराओ । बाद में इससे पशु
पक्षी आदिको अनादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह
बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलकारों से विभूषित
करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एवं
स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-खिलाकर के बाद में फिर
हमारे पास इसे ले आओ । (तएण कौटुम्भिकपुरिसा जाव पडि-
सुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेति, उवप्पलोभित्ता सय गिह
अणुपवेसिति अणुपविसित्ता, त खडमल्लग खडगघडग च तस्स दम-
गपुरिस्स एगते एडेंति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खड-
घडगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सहेण आरसइ, तएण
से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिस्स त महया २ आरमियसइ सोच्छो

करावो स्नान कराव्या जाइ तेना डाथेथी पशु-पक्षी वगेरेने आन्न वगेरेने
भाग आपवा इय अतिकर्म्म करावडावो न्यारे बलिकर्म्मनी विधि पत्ती नय
त्यारे तमे दोडो ओने अधी नतना अल कारोथी शणुगारे शणुगारीने तेने
भनोअ, अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य इय आर नतना आहारो नभाडो
नभाडया पछी तेने अभारी पासो लई आवो

(तएण कौटुम्भिकपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमग-
पुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेते उवप्पलो-
भित्ता सयगिह अणुपवेसिति, अणुपविसित्ता, त खडमल्लग खडगघडग च
तस्स दमगपुरिस्स एगते एडेंति तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खडघड-
गसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सहेण आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स
दमगपुरिस्स त महया २ आरमियसइ सोच्छो नितम्ह कौटुम्भिकपुरिसे एव वयासी)

तन्तीत्यर्थः । ततः खट्वं मागदत्तं पात्रमिदं पुरुषाय शृण्वति, तत्रापि सा
 एवमासीत् हे देवानुमित्राः । त्वं गतुं गतं द्रमपुरुषं = द्रुपदं, त्रिपुलेन अत्र
 नपानत्वाद्यस्यानेन प्रयोगयत मन्त्रोऽयं गृहमनुपयोगिन, अनुपयोग्यं गृहकमल्लङ्घनं =
 खण्डगमलं खण्डघटकं = गानीयपात्रं ' से ' तस्य द्रमपुरुषस्य पठान्ते = एकात
 स्थाने ' एदेह ' निभषयत, निक्षेप्य अलंकारिकम् = केवलतन्त्रेदनादिक
 नापितादिभिः कायत, कारयित्वा स्नात कृतमलिशर्माणं यावत् सर्वालङ्कार-
 भी । (तएण मे सागरदत्ते कोट्टुपियपुरिसं सदावेइ, सदाविता एव
 वयासी-तुम्हेण देवानुमित्रा ! एयं दमगपुरिसं त्रिउलेणं असणपाण
 खाइम साइम पलोमेइ, पलोमिक्का गिह अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता
 खडगमल्लग खडघटग त एगते एदेह एडित्ता अलंकारिकम्म कारेह
 कारित्ता ण्हाय कययलि० जाव सन्नालंकारविभूसिय करेह करित्ता मणु
 ण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयायित्ता मम अतियउवणेह)
 इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया । बुलाकर उसने
 इस प्रकार कहा देवानुमित्रो । तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको त्रिपुल अशन,
 पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर
 फिर इसे घर में भीतर करलो । जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब
 तुमलोग इसके चे खडमल्ल (फटी लंगोटी) और खडघटक इससे छुड़ा
 कर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रखदो । बाद में नापित (नाई)
 को बुलाकर इसके सुन्दर ढग से बाल धनवाओ नखआदि जो बढ़ रहे

(तएण से सागरदत्ते कोट्टुपियपुरिसं सदावेइ, सदाविता एव वयासी-तुम्हेण देवा
 नुमित्रा ! एयं दमगपुरिसं त्रिउलेण असणपाणखाइमसाइम पलोमेइ, पलोमिक्का गिह
 अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग खडघटग त एग ते एदेह, एडित्ता अल
 कारिकम्म कारेह कारित्ता ण्हाय कययलि० जाव सन्नालंकारविभूसिय करेह करित्ता
 मणुण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयायित्ता मम अतिय उवणेह)
 त्थारपणी सागरदत्ते आज्ञाकारी पुरुषोंने जोलाव्या । जोलावीने तेभने आ
 प्रभाणे छुड्ड-ठे डे देवानुमित्रो । तमे बोडो आ दरिद्र पुरुषने पुण्ण प्रभा
 छुमा अशन, पान, भाद्य अने स्वाद्य रूप आर जतना आहारनी लावय आपो
 लावय आपीने तेने घरनी अदर जोलावी दो ब्यारे ते प्रभा आवी जय
 त्थारे तमे तेनी पावेना अडमल्ल अने अडघटक लधने तेने ओकात सुरक्षित
 स्थानमा भूडी हो त्थारपणी डुअमने जोलावीने तेना सरस रीते वाण कपावी
 नाओ अने वधी गयेला नथ वजेरेने कपावी नाओ त्थारपणी तेने स्नान

विभूषित कुरुत कृत्वा 'मणुष्ण' मनोज्ञ=रुचिरम् अशनपानखाद्यस्याद्य भोजयत
भोजयित्वा ममान्तिरु=समीपमुपनयत । ततः खलु मौढुम्भिकपुरुषा यावत्-प्रति-
शृण्वन्ति='तथाऽस्तु' इति कृत्वा तदाज्ञा स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स द्रमरु-
रुपः=रङ्गपुरुषः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त द्रमरु रुचिरेण विपुलेनाशनादिना
प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य स्वक गृहमनुप्रवेशयन्ति, अनुप्रवेश्य त खण्डकमल्लक खण्डक-
घटक च तस्य द्रमरुपुरुषस्यैकान्ते 'एडति' निक्षेपयन्ति, ततः खलु स द्रमरु-
सस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके च एकान्ते 'एडिज्जमाणसि' निक्षेप्यमाणे
सति महता २ शब्देन 'आरसड' आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य
द्रमरुपुरुषस्य त महान्त 'आरसियड सद्' आक्रन्दनशब्द श्रुत्वा निगम्य कौडु-

हैं उन्हें कटवाओ । उसके प्रश्नात् इसे स्नान कराओ । बाद में इससे पशु
पक्षी आदिको अ नादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह
बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलंकारों से विभूषित
करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एवं
स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-गिलाकर के बाद में फिर
हमारे पास इसे ले आओ । (तएण कौडुवियपुरिसा जाव पडि-
सुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवाग
च्छित्ता त दमगं असण उवप्पलोभेति, उवप्पलोभित्ता सयं गिहं
अणुपवेसिति अणुपविसित्ता, त खडमल्लग खडगघडग च तस्स दम-
गपुरिसस्स एगते एडेंति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खड
घडगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सदेणं आरसइ, तएण
से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महया २ आरमियसद् सोच्चा

करो। स्नान कराव्या आह तेना हाथेथी पशु-पक्षी वगेरेने। अन्न वगेरेने।
लाग आपवा इप अलिकर्म उवागडावे। न्यारे अलिकर्मनी विधि पती नय
त्यारे तमे दोडो अने अधी नतना अलकारोधी शणुगारे। शणुगारीने तेने
मनोज्ञ, अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य इप चार नतना आहारो जभाडो।
जभाडया पछी तेने अमारी पाये लई आवे।

(तएण कौडुवियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमग-
पुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेते उवप्पलो-
भित्ता सयंगेइ अणुपवेसिति, अणुपविसित्ता, त खडगमल्लग खडगघडग च
तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेंति तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खडघड-
गसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सदेण आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स
दमगपुरिसस्स त महया २ आरमियसद् सोच्चा निसम्म कौडुवियपुरिसे एव वयासी)

म्बिकपुष्पानेयमादीन्-इ देवानुप्पियाः । किं-इतन कारणेन खलु एव द्रमपुष्पो
महता २ शब्देन आरगति=आनन्दति ? । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः एव
मयदन्-एव खलु दे स्वागिन । तस्मिन् नगदघटके गण्डघटके गमनान्ते निक्षिप्य-
माणे महता २ शब्देन आरगति=आनन्दति । ततः खलु ग मागमनः सार्थवाह
स्तान् कौटुम्बिकपुरुषान् एवमादीन्-इ देवानुप्पियाः । गा खलु गृय पतस्य

निसम्म कौटुम्बिकपुरिसे एव वयासी) इस प्रकार की उन कौटुम्बिक
ने सागरदत्त सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और
स्वीकारकर घटा जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप
चतुर्विध आहार से घार २ लुमाया लुमाकर वे उसे अपने घर तक
ले आये और अत में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन
लोगोंने उस दमक पुरुष के फटे हुए मिट्टी के दीपक के खड को, तथा
फटे हुए घड़े के सप्पर को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख
दिया । जब उस दमकपुरुषने अपने खडमल्लक (फटी लंगोटी) को और
खडघटकको अपने से लेकर एकान्त स्थानमें रखा जाता हुआ देखा-तो
वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आज्ञाको सुनकर और
उसे अपने वित्त में धारण कर सागरदत्तने कौटुम्बिक पुरुषो से इस
प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसदमगपुरिसे महया २ सदेण
आरसह ३ तण्ण ते कौटुम्बिकपुरिसा एव वयासी एसण सामी ! तसि
खडमल्लगसि खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया २ सदेण

आ जतनी सागरदत्तनी आज्ञाने ते कौटुम्बिक पुरुषोके सारी रीते
स्वीकारी दीधी स्वीकार्या आह तेओ हरिद्र भाणुसनी पासे गया त्या जधने
तेमणे तेने आलाओये अने अशन, पान वगेरे इध बार जतना आहारनी
वारवार लाइय आपी । लवयावीने तेओ तेने घर सुधी लध आवा अने
छेवटे तेने घरभा हाणल करी दीधो तयारपछी ते बोकोओ ते हरिद्र भाणुसनी
पासेथी कूटेला भाटीना वासणुने कटके तेमज कूटेला भाटलाना अप्परने लधने
सुरक्षित स्थाने भूकी दीधु ब्यारे ते हरिद्र भाणुसे चेताना अउमल्लकने अने
अउघटने पोतानी पासेथी छीनवीने ओकात स्थानभा भूजता जेथु त्यारे ते
ओटेथी घाटा पाडीने रडवा लाओये तेना रडवाना आवाजने सालणीने अने
तेने पोताना वित्तभा धारण करीने सागरदत्तने कौटुम्बिक पुरुषोने आ प्रमाणे कछु
(किण्ण देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सदेण आरसह, तण्ण
ते कौटुम्बिकपुरिसा एव वयासी एसण सामी ! तसि खडमल्लगसि खडघडगसि
एगते एडिज्जमाणसि महया २ सदेण आरसह, तण्ण से

द्रमकपुरुषस्य तत् खण्डमल्लक खण्डघट्टक यावत्-एकान्ते 'एडेह' निक्षेपयत अस्य परोक्षे मा स्थापयतेत्यर्थ, किन्तु पार्श्वे स्थापयत, यथा खलु 'पत्तिय' प्रत्ययः= विश्वामो भवति । तेऽपि कोटुम्भिकपुरुषास्तथैव स्थापयन्ति । तत खलु ते कौटु-
आरसह, तण्ण से सागरदत्ते मत्थवाहे ते कौटुविय पुरिसे एव वयासी) हे देवानुप्रियो ! क्या कारण है जो वह दमक पुरुष जोर २ से रो रहा है ? तब उन कौटुम्भिक पुरुषों ने ऐसा कहा कि हे स्वामिन् ! इसने ज्योंही अपने खडमल्लक को और घटखड को लेकर एक ओर सुरक्षित स्थान में रखे जाते हुए देखा वैसे ही यह घड़े जोर २ से रोने लगा है । ऐसा सुनकर सागरदत्त ने उन कौटुम्भिक पुरुषों से इस प्रकार कहा-
(माण तुव्हे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्म त खड जाव एडेह, पासे ठवेह, जहाण पत्तिय भवइ, तेवि तहेव ठवेति, तण्ण ते कौटुविय पुरिसा तस्स दमगस्स अलकारियकम्म करेति, करित्ता सयपांग सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेति, अब्भगिए समाणे सुरभिगधुव्व-
ट्टणेण गाय उव्वट्ठिति, २ उस्सिणोदगेण गधोदगेण सीतोदगेण ण्हावेति) हे देवानुप्रियो ! तुम लोग इस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खड को और फूटे हुए घड़े के खप्पर को इससे लेकर परोक्ष में- अदृश्य स्थान में-मत रखो किन्तु इस के पास में ही-समक्षरखो, जिससे इसे अपना विश्वास बना रहे । इस प्रकार सागरदत्त की बात कौटुविय पुरिसे एव एव वयासी)

हे देवानुप्रियो ! शा कारखथी आ हरिद्र भाणुस भोटेथी घाटा पाडी पाडीने रडी रडो छे ? त्थारे ते कौटुगिज पुत्थोअे आ प्रभाळे कहु के हे स्वामिन् ! पोताना अउमत्तल्ल अने अउधट्टकने तेनी पायेथी लधने पील सुरक्षित स्थाने लध जता जेठने आ हरिद्र भाणुस भोटेथी रडवा लाग्यो छे आ प्रभाळे सालणीने सागरदत्ते कौटुगिज पुत्थोने आ प्रभाळे कहु के—

(माण तुव्हे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स त खड जाव एडेह पासे ठवेह, जहाण पत्तिय भवइ, ते वि तहेव ठवेति, तण्ण ते कौटुवियपुरिसा तस्स दमगस्म अलकारियकम्म करेति, करित्ता सयपांगसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेति अब्भगिए समाणे सुरभिगधुव्वट्टणेण गाय उव्वट्ठिति २ उस्सि णोदगेण गधोदगेण सीतोदगेण ण्हावेति)

हे देवानुप्रियो ! तमे बोडो आ हरिद्र पुत्थाना कूटेला माटीना दीपकना कट्टकाने अने कूटेला घडाना अण्णरने अनी पासेथा लधने दूर अकालमा भूकथो नहिं पण्ण अनी पासे ज-अनी साये अ भूकी राणो जेथी अने विश्वास रडे

म्विकपुरुषानेवगारासीत्-इ देवापुत्रियाः । त्रिंशेता वारणेन गन्तुं पण्डितपुत्रो
महता २ शब्देन आरसति=आश्चर्यं दति ? । ततः गन्तुं ते कौटुम्बिकपुरुषाः पण्डित-
गणदन्-एव खलु हे स्वामिन् ! तस्मिन् गन्तव्यं गन्तव्यं गन्तव्यं निश्चे-
माणे महता २ शब्देन आरसति=आश्चर्यं दति । ततः गन्तुं गन्तव्यं गन्तव्यं गन्तव्यं
स्तान् कौटुम्बिकपुरुषान् पण्डितान्-इ देवापुत्रियाः । गन्तुं गन्तुं गन्तुं

निसम्म कौटुम्बिकपुरिसे एव वयासी) इस प्रकार की उन कौटुम्बिक
ने सागरदत्ता सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और
स्वीकारकर चला जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप
चतुर्विध आहार से पार २ दुमाया लुमाका वे उसे अपने घर तक
ले आये और अतः में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन
लोगोंने उस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के गड को, तथा
फूटे हुए घड़े के स्वरूप को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख
दिया । जब उस दमकपुरुषने अपने खड्गमल्लक, फटी लंगोटी को और
खड्गदत्तको अपने से लेकर एकान्त स्थानमें रखा जाता हुआ देखा-तो
वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आज्ञाको सुनकर और
उसे अपने चित्त में धारण कर सागरदत्तने कौटुम्बिक पुरुषों से इस
प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसदमगपुरिसे महया २ सदेण
आरसइ ३ तएण ते कौटुम्बिकपुरिसा एव वयासी एसण सामी ! तस्मि
खड्गमल्लगसि खड्गदत्तगसि एगते एडिज्जमाणसि महया २ सदेण

आ जतनी सागरदत्तनी आज्ञाने ते कौटुम्बिक पुरुषोंने सारी रीते
स्वीकारी लीधी स्वीकार्यां आइ तेओ । हरिद्र भाणुसनी पासे गया त्या जधने
तेभण्णे तेने जोलाओ । अने अशन, पान वगेरे इध चार जतना आहारनी
वारवार लाइल्य आपी । ललयावीने तेओ तेने घर सुधी लई आओ । अने
छेवटे तेने धरमा दाण्डल करी दीधो । त्यारपछी ते लोकोओ ते हरिद्र भाणुसनी
पासेथी कूटला माटीना वासणुने कटके तेभण्णे कूटला माटलाना अप्परने लधने
सुरक्षित स्थाने भूकी दीधु न्यारे ते हरिद्र भाणुसे पेताना अउमत्तकने अने
अउमत्तकने पेतानी पासेथी छीनवीने जोलात स्थानमा मृत्ता जोथु त्यारे ते
भोटेथी घाटा पाडीने रडवा लाओ । तेना रडवाना आवाजने सालणीने अने
तेने पेताना चित्तमा धारण करीने सागरदत्ते कौटुम्बिक पुरुषोंने आ प्रमाणे कहु
(किण्ण देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सदेण आरसइ, तएण
ते कौटुम्बिकपुरिसा एव वयासी एसण सामी ' तस्मि खड्गमल्लगसि खड्गदत्तगसि
एगते एडिज्जमाणसि महया २ सदेण आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्यवादे ते

रूपयित्वा 'हंसलक्षण' हंसलक्षण = हंसस्वरूप तदिव शुक्ल स्वरूप यस्य तत्, 'पट्टसाङ्ग' पट्टशाटक=क्षौमवस्त्र 'परिहृति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालङ्कार-विभूषित कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति । ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिका दारिद्र्या स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारभूषिता कृत्वा तं दमरुपुरुषम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अनादीत्-हे देवानुप्रिय ! एषा खलु मम दुहिता इष्टा, एता खलु अहं तव भार्यात्वेन ददामि

पट्टसाङ्गं परिहृति, परिहृत्वा सञ्चालकारविभूषितं करोति, करित्वा विडल असनपाणसाङ्गमसाङ्गं भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्त उवर्णन्ति) जय शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोंछाजा चुका-तब फिर उन्होंने हंस चिह्नवाला अथवा हंस के जैसा शुभ्रपट्टशाटक-क्षौमवस्त्र उसको पहिराया । क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया । भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये (तएण सागरदत्ते ममालिय दारिय ण्हाय जाव सञ्चालकार विभू सिय करित्ता त दमरुपुरिस एव वयासी-एसण देवानुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण अहं तव भारियत्ताए दलामि) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत् समस्त अलङ्कारों से विभूषित करके उस दमरु पुरुष से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह मेरी लड़की है । और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

(ल्हृत्ता हंसलक्षणपट्ट साङ्ग परिहृति, परिहृत्वा, सञ्चालकारविभूषितं करोति, करित्वा विडल असनपाणसाङ्गमसाङ्गं भोजयन्ति, भोजयित्वा, सागरदत्तस्त उवर्णन्ति)

अथारे शरीरना भवा अगो २२२ रीते लुछाई गया त्यागे तेआओ हंसचित्रित अथवा तो हंस जेवु २२७ धाणु पट्टसाटक-क्षौम वस्त्र पहिराओधु क्षौम वस्त्र पहिरावीने तेने त्रिपुल अशन, पान, आद्य अने स्वाद्य रूप आर नातना आहारे नभाउया नभाउया पजी तेआ तेने सागरदत्तनी पाने लध गया

(तएण सागरदत्ते ममालिय दारिय ण्हाय जाव सञ्चालकारविभूषितं करित्ता त दमरुपुरिस एव वयासी-एसण देवानुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण अहं तव भारियत्ताए दलामि)

सागरदत्ते पोतानी सुकुमारिका दारिकाने स्नान करावीने यावत् अधी नातना अलङ्काराधी शष्पगारीने ते हरिद्र माण्डने आ प्रभाणु कहुं हे देवानुप्रिय ! आ भारी पुत्री छे अने मने णहुं न छिट्, प्रिय, कान्त, भनोश

मित्रपुत्रास्तस्य द्रुमस्य=रुद्रपुत्रस्य अन्तरिक्षं काश्यपि कारयिमा अत्र
पाक मन्त्रपाकस्तल्लग्नयति मन्त्रयति । अभ्यन्तः सत् गुरुभिर्गन्तोद्वर्तनेन=
सुगन्धिपिष्टेन गात्रमुर्जयति, उड गं उष्णोदकेन गन्तोदकेन शीतोदकेन
स्नपयन्ति, स्नपयित्वा 'पद्मलसुकुमारगघकासाइयाप' प, मरुसुकुमारगघ-
कासायिकया=पद्मल=रुद्र, मरुती मरुतोमयुक्ता अत्र गघ सुकुमारा तथा कपायेण
रक्ता सादी शाययिमा तथा गात्राणि 'लूहि' मन्त्रयति = प्रोच्यति,

मुनरु उन आदेशकारी पुरुषों ने पैसा डी किया-अर्थात् उसके मन्त्रक
पद और प्रत्युत दोनों को ही उसके समस्त उन्तोने रख दिया ।
हमके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उस दमक पुरुषका भालकारिक कर्म
करवाया । अब उसका अन्त्री तरफ अलकारिक कर्म निष्पन्न हो चुका-
तब उसके बाद उस दमक पुरुष केशरीर की उन लोगों ने शनपाक और
महद्य पाकवाले तैल से मालिश की-मालिश करनेके पश्चात्, सुगन्धि
पिष्टक-सुगन्धितपिटी-से उसके शरीर का उपटन किया उस सुगन्धित
पिटी को उसके शरीर पर रगड़ कर मला इससे जो उसके शरीर
पर मल जमा हुआ था वह चिकनाट्ट के सवन्ध से उस पिटीद्वारा
निकल गया । जब उनके शरीर का उद्वर्तन हो चुका-तब फिर उन
लोगों ने उसे उष्णोदक से गर्वोदक से, पच शीतोदक से स्नान कराया ।
स्नान कराकर बाद में उसका शरीर (पद्मलसुकुमारगघकासाइयाप
गायाइ लूहि) पद्मल-रुद्रवाली-सुदुरोमयुक्त-सुकुमार-नरम, रंगी
हुई दवाल से-अगोठी-से-तौलिया से पोंछा । (लूहिस्ता हंसलक्वण

आ रीते सागरदत्तनी वात सावणीने ते आशादगी पुत्रेण्ये ते प्रभाषे न
कथुं अन्वे के तेना भलकण्ड अने घटण्डने तेनी साभे न भूडी दीक्षा
त्यारपछी ते कौटुम्बिक पुत्रेण्ये ते हरिद्र भावुसना वाण अने नभ कपाव्या
न्यारे आकाम सरस रीते पुत्र यध गथु त्यारे तेव्याये हरिद्र भावुसना
शरीरने शतपाक अने सहस्रपाकवाणा तेवथी मालिश कर्था आह
सुगन्धिपिष्ट-सुगन्धित पीडी-तेना शरीरे वोगीने उपन उथुं अथी तेना
शरीर उपर नेटवो मेल हुतो ते पीडीनी स्निग्धताने वीधे साइ यध गथो
न्यारे तेना शरीरे पीडी वोगाध गध त्यारे ते वोकैये तेने गरम पाणीथी,
सुवासित पाणीथी अने ठंडा पाणीथी स्नान करावु स्नान करावा आह तेना
शरीरने (पद्मल सुकुमार गघ कासाइयाप गायाइ लूहि) पद्मल-इवाटावाणा
मुकोमण, नरम रंगीन दुवावथी वधु

रूपयित्वा 'हसलक्षण' इसलक्षण = हमस्वरूप तदिव शुक्ल स्वरूप यस्य तत्, 'पट्टसाङ्ग' पट्टशाटक=क्षौमवस्त्र 'परिहेंति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालंकार-विभूषित कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति । ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिका दारिद्र्या स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारभूषिता कृत्वा त दमगपुरम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अगादीत्-हे देवानुप्रिय ! एषा खलु मम दुहिता इष्टा, एता खलु अहं तव भार्यात्वेन ददामि

पट्टसाङ्गं परिहेंति, परिहित्वा सञ्चालकारविभूषितं करेति, करित्वा विडल असनपाणगाडमसाडम भोजयेंति, भोजयित्वा सागरदत्तस्त उवर्णेति) जब शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोंछाजा चुका-तब फिर उन्होंने हँस चिह्नवाला अधवा हँस के जैसा शुभ्रपट्टशाटक-क्षौमवस्त्र उसको पहिराया । क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया । भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये (तएण सागरदत्ते ममालिय दारिय ण्हाय जाव सञ्चालकार विभू सिय करित्ता त दमगपुरिम् एव वयासी-एसण देवानुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण अहं तव भारियत्ताए दलामि) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित करके उस दमक पुरुष से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह मेरी लड़की है । और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

(लूहित्वा हसलक्षणपट्ट साङ्गं परिहेंति, परिहित्वा, सञ्चालकारविभूषितं करेति, करित्वा विडल असनपाणगाडमसाडम भोजयेंति, भोजयित्वा, सागरदत्तस्त उवर्णेति)

ज्यादे शरीरना जवा अजो सरस रीते लुछाई गया त्याडे तेज्याजे हे सञ्चित्रित अथवा तो हे म नेबु २२७ घाणु पट्ट-शाटक क्षौम वस्त्र पहिरावधु क्षौम वस्त्र पहिरावीने तेने विपुल अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य इय आर जतना आढाशे जभाड्या जभाड्या पत्री तेज्या तेने सागरदत्तनी पाने लई गया

(तएण सागरदत्ते ममालिय दारिय ण्हाय जाव सञ्चालकारविभूषितं करित्ता त दमगपुरिम् एव वयासी-एसण देवानुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण अहं तव भारियत्ताए दलामि)

सागरदत्ते पोतानी सुकुमारिका दारिकाने स्नान करावीने यावत् जधी जतना अलंकाराधी शल्यगारीने ते दरिद्र माणुसने आ प्रभाणु कछु हे हे देवानुप्रिय ! आ भारी पुत्री छे अने मने जहु ज छिट, प्रिय, कान्त, मनोम

‘મદિયાણ’ મદિક્રયા=માગ્યતાગિન્યાડનવાન્નમપિ મદિક્રો માગ્યશાલી મપિન્યસિ ।
 તતઃ સ્વલ્લ તા દમકપુરુષઃ માગ્યતાગિન્યતમર્થ મતિગુણોતિ=મ્પ્રીરગેતિ, પ્રતિશ્રુત્ય
 સુકુમારિકયા દારિકયા સાર્થ સાસગૃહમનુપ્રતિગતિ, સુમારિકયા દારિકયા સાર્થ
 ‘તલિગસિ’ તત્યે=ગયનીયે ‘નીપન્ન’ નિપીદતિ ઉપગિતિ । તતઃ મલ્લ મ દમક
 પુરુષ સુકુમારિકાયા દમ=પૂર્વોક્તમ્ પત્ન્યુપ=પૂર્વોક્તસ્તપમ્ અહ્નપમ્ પટિમ્પેદેર
 પ્રતિસવેદયતિ=પ્રત્યનુમતિ યેપં યથા સાગરસ્થ=યેપર્ણન માગરદાગૃહ મોધ્યમ્,
 ચાવત્-અત્ર વાસન્દ્યાદિદ દ્રષ્ટ્યમ્-’ ઝમિપત્રાદીના સ્પર્ગાદપ્યનિદ્વતર તદ્વ
 સ્પર્શ શત્ત્રા સાગરદારવત્ દમકપુરુષોઽપિ તાં સુકુમારિકા સુત્રમસુમા પ્રાન્ત્રા,
 ઘયનીયાદત્તિષ્ઠિતિ, અમ્યુત્થાય તમટ્ઠાદ્ નિર્ગન્તિ, નિર્ગમ્ય સ્વડમલ્લગ=ફુટિ

મનોઝ પવે મનોમ છે । મેં અપની હમ પુત્રી કો તુમ્હે તુમારી ખાયાં કે
 રૂપ મેં પ્રદાન કરતા હું (મદિયાણ મદઓ મપિજ્જસિ, તણ્ણ સે દમગ
 પુરિસે સાગરદત્તસ્મ યયમટ્ઠ પટિ ૦૨ સુમાલિયાણ દારિયાણ સદ્ધિ વાસ
 ઘર અણુપવિસદ્, અણુપવિસિત્તા સુમાલિયાણ દારિયાણ સદ્ધિ તલિગસિ
 નિવજ્જહ) હસ માગ્યશાલિની સે તુમ સી માગ્યશાલી વનજાઓગે ।
 દમકપુરુષ ને સાગરદત્ત વે હસ કયનરૂપ અર્થ કો અગીકાર કરલિયા,
 ઔર ફિર વહ પસ સુકુમારિકા દારિકા કે સાય વાસગૃહ મેં પ્રવિષ્ઠ
 હુઆ । વહા જાકર વહ હસ સુકુમારિકા દારિકા કે સાય સાય પક હી
 પલગ પર-ચેઠ ગયા-સોગયા (તણ્ણ સે દમગપુરિસે સુમાલિયાણ હમ
 યયારૂવ અગફાસ પટિ સવેદેઠ, સેમ જહા સાગરસ્મ જાવ મયણિજ્જાઓ
 અમ્યુટ્ટેઠ, અમ્યુટ્ટિત્તા વાસઘરાઓ નિર્ગચ્છહ, નિર્ગચ્છિત્તા સ્વડમલ્લગ

અને મનોમ છે હું માગી આ પુત્રીને તમને તમારી પત્નીના રૂપમા અપું છું ।
 મદિયાણ મદઓ મપિજ્જસિ, તણ્ણ સે દમગપુરિસે સાગરદત્તસ્મ યયમટ્ઠ પટિ ૦ ૨
 સુમાલિયાણ દારિયાણ સદ્ધિ વાસઘર અણુપવિસદ્, અણુપવિસિત્તા સુમાલિયાણ
 દારિયાણ સદ્ધિ તલિગસિ નિવજ્જહ)

આ ભાગ્યશીલાથી તમે પણ ભાગ્યશાળી થઈ જશો તે દરિદ્ર પુરૂષે
 સાગરદત્તની એ વાતને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારબાદ તે સુકુમારિકા દારિકાની
 સાથે વાસગૃહમાં પ્રવિષ્ઠ થયો ત્યાં જઈને તે દરિદ્ર માણસ સુકુમારિકા દારિ
 કાની સાથે એક જ શય્યા ઉપર બેસી ગયો ।

(તણ્ણ સે દમગપુરિસે સુમાલિયાણ હમ યયારૂવ અગફાસ પટિસવેદેઠ,
 સેમ જહા સાગરસ્મ જાવ મયણિજ્જાઓ અમ્યુટ્ટેઠ, અમ્યુટ્ટિત્તા વાસઘરાઓ નિર્ગ
 ચ્છહ નિર્ગચ્છિત્તા સ્વડમલ્લગ સ્વડઘડગ વ ગદાય મ

तमिक्षापात्र, खण्डघटक=स्फुटितपानीयपात्र च गृहीत्वा 'मारासुक्के चित्र काण' मारासुक्तइय काकः मारा-शून्य प्राणिधरान ततो मुक्तः निःसृतः काक इव, अथवा-माराद्-मारकपुरुषात् तदीयहस्तादित्यर्थः. मुक्त-विच्छुटित काक इव शीघ्रतया यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशः प्रतिगतः । ततः खलु सा सुकुमारिका यावद्-ततो गृह्णन्तिर प्रतिगुह्य मती पतिमपश्यन्ती शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रमकपुरुषस्य मार्गणगवेपण कुर्वाणा वामगृहस्य द्वार विधाटित पश्यति

एडपडग च गहाय मारासुक्के चित्र काण जामेव दिस पाउब्भूण तामेव दिस पडिगण) उस समय उस दमक पुरुष को उस सुकुमारिका दारिका का वह पूर्वोक्त तथा पूर्वोक्त स्वरूपवाला अगस्पर्शी अनुभव में आया । शेष वर्णन सागरदारक की तरह जानना चाहिये । इस तरह वह दमक पुरुष भी अमिषत्रादिकों के स्पर्श से भी अतिक्रान्तिष्ठ उसके अगस्पर्शी को जानकरके, सागरदारक की तरह, सुख प्रसुप्त उस सुकुमारिका दारिका को जान उसे छोड़ने के लिये पलंग से उठा और उठकर उस वास घर से बाहर निकला-निकलकर खडमटलक-फूटे हुए निक्ष्वापात्र को तथा खडपटलक-फूटे हुए पानी पीने के पात्र को-लेकर वन्यस्थान से अथवा मारक पुरुष के हाथ से मुक्त हुए काक की तरह वह बहुत जल्दी जहा से आया या उसी ओर चल दिया (तण्ण सा मूमालिया जाव गण्ण से दमगपुरिसे त्ति कहुहु ओहमण जाव श्रियायइ) इसके थोड़ीदेर बाद वह सुकुमारिका दारिका जगी और पनिको अपने पास न

दिस पाउब्भूण तामेव दिस पडिगण)

ते वणते ते दग्गि भाणुसने सुकुमारिका दारिकाना अ गोनो स्पर्श पडेत्ता वणुन ढरवाभा आब्बा प्रभाणुने कठोर ज लाग्गे (अर्द्धी सागरदारक जेवु ज वणुन समञ्ज जवु जेधजे) आ रीते ते दग्गि भाणुस पणु तरवारना स्पर्श करता पणु वधारे अनिष्टकर तेनो स्पर्श जण्णीने सागर दारकनी जेमज सुभेथी सूध गयेदी ते सुकुमारिका दारिकाने जेजिने, तेनो त्याग ढरवा भाटे पलंग उपरथी जेत्तो थये अने जेत्तो थजिने वामगृहनी गडार नीकज्यो अने नीकजीने अ उभटलक-फूटेला निक्ष्वापात्र तेमज अ उधटक-फूटेला पाण्णी पीवा भाटेना पात्रने लठने वधस्थानथी अथवा तो भाउक (डिमक) पुइयता हाथथी मुक्त थयेला जगजानी जेम ते तराथी न्याथी ते आब्बो छनो ते तरइ ज जतो रद्धो (तण्ण सा मूमालिया जाव गण्ण से दमगपुरिसे त्ति कहु ओहमण जाव श्रियायइ) थोडा वणत पछी ते सुकुमारिका दारिका जगी अने पतिने पोतानी यासे न जेधने

‘भद्रियाण’ भद्रिया=भाग्यशास्त्रिणाऽप्यान्वमपि भद्रतो भाग्यशास्त्री भद्रियमि ।
 ततः खलु स दमकपुरुषः भाग्यशास्त्रमन्तमर्थं प्रतिगृह्णाति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य
 सुकुमारिका दारिका साधं वासगृहप्रविशति, सुकुमारिका दारिका साधं
 ‘तलिगसि’ तत्त्ये=गयनीये ‘नीयन्ते’ निषीदति उपविशति । ततः खलु स दमक
 पुरुष सुकुमारिकाया इम=पूरोक्तम् एतत्पू=पूरोक्तस्वरूपम् अङ्गभूतं पटिमवेदे
 प्रतिसंवेदयति=प्रत्यनुभवति शेष यथा सागरस्त्व=शेषवर्णनं भाग्यशास्त्रस्य बोध्यम्,
 यावत्-अत्र यावत्=तदादि द्रष्टव्यम्-‘जगिष्यशास्त्रिणां स्पर्शादप्यनिवृत्तं तदत्र
 स्पर्शं ज्ञात्वा सागरदासस्य दमकपुरुषोऽपि ता सुकुमारिका सुवप्रसुप्ता पान्ता,
 शयनीयादतिष्ठति, अभ्युदयाय वागृहात् निर्गच्छति, निर्गत्य साटमल्लग=पुटि

मनोज्ञ एवं मनोम है । मैं अपनी इस पुत्री को तुम्हें तुम्हारी भार्या के
 रूप में प्रदान करता हूँ (भद्रियाण भद्रओ भद्रिज्जसि, तण्णं से दमग
 पुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ट पटि०२ सुमालियाण दारियाण सद्धिं वास
 घर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुमालियाण दारियाण सद्धिं तलिगसि
 निवज्जइ) इस भाग्यशास्त्रिणी से तुम भी भाग्यशाली बनजाओगे ।
 दमकपुरुष ने सागरदत्त के इस कनकरूप अर्थ को अंगीकार कर लिया,
 और फिर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ वासगृह में प्रविष्ट
 हुआ । वहा जाकर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ एक ही
 पलंग पर-बैठ गया-मोगया (तण्णं से दमगपुरिसे सुमालियाण इम
 एयारुव अगफास पडि सवेदेइ, सेस जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ
 अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टित्ता वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खडमल्लग

अने मनोम छे हुं भारी आ पुत्रीने तभने तभारी पत्नीना इपमा अपुं छु ।
 भद्रियाण भद्रओ भद्रिज्जसि, तण्णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ट पटि० २
 सुमालियाण दारियाण सद्धिं वासघर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुमालियाण
 दारियाण सद्धिं तलिगसि निवज्जइ)

आ लाज्यशीलाश्री तमे पाप लाज्यशाली थई ज्यो ते हरिद्र पुत्रे
 सागरदत्तनी ओ बातने स्वीकारी लीधी अने त्यारणाइ ते सुकुमारिका दारिकानी
 साथे वासगृहमा प्रविष्ट थयो त्या जघने ते हरिद्र भावस सुकुमारिका दारि
 कानी साथे ओक ज शय्या उपर जेसी गयो

(तण्णं से दमगपुरिसे सुमालियाण इम एयारुव अगफास पडिसवेदेइ,
 सेस जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्टित्ता वासघराओ निग्ग
 च्छइ निग्गच्छित्ता खडमल्लग खडघडगं च गहाय मारामुक्के)

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटी शब्दयति, शब्दयित्वा एवमगदीत्-यावत् सागरदत्तरयैतमयं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तवर्णनमनुमन्वेयम्, तथा-वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति । एमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकुमारिकामार्तध्यानं ध्यायन्ती पश्यति, दृष्ट्वा एवमगदीत्-हे देवानुप्रिये । किं खलु त्वम् अपहतमनः संकल्पा ध्यायसि ? ततः सुकुमारिका ता दासचेटीमेवमगदीत्-स द्रमरूपुरूपो मा मुरामसुप्ता ज्ञात्वा मम पार्श्वोदुत्थाय निर्गतः, ततोमुहूर्त्तान्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती ' गतः सद्रमरूपुरूप, इति कृत्वा ऽऽर्त-यानं ध्यायामि

सद्वावेह, सद्वाचित्ता एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमह निवेदेह) सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहा यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र गत वर्णन जोड़लेना चारिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा कि तू वधू और वर के लिये यह सुख बोन की सामग्री दतौन आदि-लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई-और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये । क्या कारण है जो अपहतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रही हो-तब सुकुमारिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह दमक पुरूप मुझे यहा सुख प्रसुप्त जान छोडकर चला गया है । जब मैं थोडी देरचाद उठी तो मैने उसे अपने पास नहीं देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमह निवेदेह) सुकुमारिका दारिकानी माता भद्राये भीता दिवसे न्यारे सवार थर् गथु अने सूर्य उठ्य पाम्ये। त्तारे तेहे दासीने जोलावी अने जोलावीने आ प्रभाहे कहु-अर्ही यावत् शण्ठथी पडेलाना सूत्रनी नेम न वरुन भमण लेवु नेधये नेमके लद्राये तेने जोलावीने आ प्रभाहे कहु के वधू अने वरना भुण प्रक्षासन भाटे हातवु वगेरे लर् न न्यारे लद्राये तेने आ प्रभाहे कहु त्तारे ते दासी वासगृहमा गध अने त्या नर्धने तेहे सुकुमारिका दारिकाने आर्तध्यान करती नेध त्तारे आ प्रभाहे तेनी हावत नेधने तेहे कहु के हे देवानुप्रिये ! शा कारवुथी तमे अपहतमन संकल्प थर्धने आर्तध्यान करी रह्या छे। त्तारे सुकुमार दारिकाये ते दासीने आ प्रभाहे कहु-के ते दरिद्र भावुभ मने अर्ही सुपेथी सूतेवी छोडीने नतो रह्यो छे न्यारे थोडा वणत पछी हु नगी त्तारे मे तेने-भारी पासे नेथे नडि अने मे वासगृहना पारवुने पवु शुद्ध

दृष्ट्वा एवमवादीत् 'इति कृत्वा, अरुणमन मन्त्रा यावद्-आर्तध्यान
ध्यायति ॥ सू० ११ ॥

मूलम्-तएणं सा भद्रा कल्ल पाउ० दासचेडिं सदावेइ सदा-
वित्ता एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ट निवेदेइ, तएणं
से सागरदत्ते तहेव संभत्ते समाने जेणेव वासहरे तेणेव उवा
गच्छइ उवागच्छित्ता सुमालिय दारियअकेनिवेसेइ निवेसित्ता
एवं वयासी-अहो ण तुम पुत्ता ! पुरा पोराणा णं जाव पच्चणु-
वभवमाणी विहरसि त मा ण तुम पुत्ता ! ओहयमण जाव
झियाहि तुम ण पुत्ता मम महाणससि त्रिपुल असण४ जहा
पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि, तएण सा सुमालिया
दारिया एयमट्ट पडिसुणेइ पडिसुणित्ता माहणससि विपुल
असणं जाव दलमाणो विहरइ ॥ सू० ११ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । ततः खलु सा भद्रा सार्धवाही=मुकुमारिका
दारिकाया जननी ' कल्ल ' कल्पे द्वितीयदिनसे प्रादुः प्रभाताया रजन्या यावद्-

देखकर पलंग से उठी । उठकर उसने उस दमकपुरुषकी मार्गणा एव
गवेषणा की । उसमें उसने वासगृह के द्वार को खुला हुआ देखा । देख
कर उसने विचारा कि वह दमक पुरुष अब चला गया है । ऐसा सोचकर
वह अपहृत मन, सकल्प होकर यावन् आर्त ध्यान करने लगी ॥ सू० ११ ॥

' तएण सा भद्रा कल्ल ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा भद्रा कल्ल पाउ० दासचेडिं

शय्या उपरथी जेणी थर् जेणी थर्ने तेहे ते दरिद्र भाणुसनी शोध जेण करी
तेहे विचार कर्यो के ते दरिद्र भाणुस तो जेतो रह्यो छे आ रीते विचार करीने
ते अपहृतमन सकल्पा थर्ने यावत् आर्तध्यानमा इणी गछ ॥ सूत्र ११ ॥

' तएण सा भद्रा कल्ल ' इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्यारणाम (सा भद्रा कल्ल पाउ० दासचेडिं) सदा

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटी शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् सागरदत्तस्यैतमर्थं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तप्रणनमनुमन्वेयम्, तथा-
वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति । एषमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकु-
मारिकामार्तध्यानं ध्यायन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु
त्वम् अपहतमनः संकल्पा ध्यायसि ? ततः सुकुमारिका ता दासचेटीमेवमवा-
दीत्-स द्रमरूपरूपो मां सुरप्रसुप्ता ज्ञात्वा मम पार्श्वोदुत्थानं निर्गतः, ततोमुद्धर्ता-
न्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती ' गतः स द्रमरूपरूप, इति कृत्वा ऽऽर्त-यानं ध्यायामि

सद्वायेह, सद्वावित्ता एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमद्व निवेदेह)
सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल
हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को
बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहां यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र
गत वर्णन जोड़लेना चाहिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा
कि तू वधू और वर के लिये यह मुख बाने की सामग्री दतौन आदि
-लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई
-और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा
तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये । क्या कारण है जो
अपहतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रही हो-तब सुकुमा-
रिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह दमक पुरुष मुझे
यहां सुख प्रसुप्त जान छोड़कर चला गया है ! जब मैं थोड़ी देरबाद
उठी तो मैंने उसे अपने पास नहीं देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमद्व निवेदेह) सुकुमारिका दारिकानी माता
भद्राये जीला दिवसे न्यारे सवार थर्ग गथु अने सूर्य उदय पारये। त्पारे
तेणे दासीने जोलावी अने जोलावीने आ प्रभाणे कछु-अर्द्धी यावत्
शण्ठथी पडेलांना सूत्रनी जेम ज वषुन समल्ल वेवु जेधजे जेमके भद्राये
तेने जोलावीने आ प्रभाणे कछु के वधू अने वरना मुण प्रक्षासन भाटे
हातवु वगेरे लर्ग ला न्यारे भद्राये तेने आ प्रभाणे कछु त्पारे ते दासी
वासगृहमा गध अने त्या जर्धने तेणे सुकुमारिका दारिकाने आर्तध्यान करती
जेध त्पारे आ प्रभाणे तेनी डालत जेधने तेणे कछु के हे देवानुप्रिये ! शा
कारवुथी तमे अपहतमन सकल्प थर्धने आर्तध्यान करी रह्या छे त्पारे
सुकुमार दारिकाये ते दासीने आ प्रभाणे कछु-के ते दरिद्र भाणुअ मने अर्द्धी
मुणथी सूतेवी छोडीने जतो रह्यो छे न्यारे थोडा वणत पछी हु लागी त्पारे
मे तेने-भारी पासे जेथे नडि अने मे वासगृहना पारवाने पछु पुर्व

તત્. સા દાતચેટી સાગરદત્તસ્ય સાગરદત્તસ્ય ગમીપમાગ'ગૌમર્થે નિવદ્યનીતિ
 યોજના યોધ્યા । તત્ તત્ સાગરદત્તસ્યગૌમર્થે ' ગમીતે ' સમ્રાન્ત = ઉદ્વિગ્નઃ
 સન્ યત્રીય સાગરદત્તગૌમર્થગતિ, ઉપાગત્ય સુદુર્ગારિશ દારિગામન્ નિવસ્યતિ,
 નિવેશ્ય તમગાત્રીન્-અહો । ઇત્યાધર્મે ચલુ દે પુત્રિ ' ત્વ ' પુત્રા ' પૂતા=પૂર્વમવેષુ
 ' પોરાણાણ ' પુરાણાનામ્=મહાત્માલક્ષણાં, યાન્=મત્ર યાન્-ઉદનેદ
 યોધ્યમ્-' દુષિણાણં દુષણવાણ વદ્ધાં પાણાણ કમ્માણ યાગમ પત્તિતિ
 દેસા તપ મં સમદ્ધ ગર્હ કિ યત્ યદા સે ચલા ગયા હૈ । હમ પ્રકાર મં
 ચિન્તા મેં પડ રહી હૈ । સુકુમારિકા કો હમ યાત્ર કો સુનરુ દામચેટી
 ને ડગી સમય વત્તા સે ચાપિમ આકર સાગરદત્ત કો હમ યાત્ર કી
 સ્વપર દી-" હમ પ્રકાર યત્ પુરોક્ત પાઠ યત્ લગા લેના ચાહિયે-(તત્તણ
 સે સાગરદત્તે તદેવ સમતે સમાણે જેણેવ વાસદરે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગ
 ચ્છિત્તા સૂમાલિય દારિય અકે નિવેસેદ, નિવેસિત્તા એવ વયાસી,
 અહોણ તુમ પુત્તા પુરા પોરાણાણ જાવ પચ્છણુમ્ભવમાગી વિહરસિ ત માણ
 તુમં પુત્તા ઓદયમણ જાવ સિયાહિ-તુમ ન પુત્તા મમ મહાણસસિ વિપુલ
 અસણ ૪ જહા પુટ્ટિલા જાવ પરિમાણમાણો વિહરાહિ) હસકે વાદ વહ સાગ
 રદત્ત પહિલે જૈસા ઉદ્વિગ્ન ચિત્ત હોકર જહા વાસગૃહ યા વહા ગયા । વહાં જા
 કર હમને સુકુમારિકા દારિકા કો અપની ગોદમેં થૈઠા લિયા ઓર થૈઠાકર
 કહને લગા-હેપુત્રિ ! તુમને પહિલે મત્રોમેં જો દુશ્ચોર્ણ દુષ્પરાક્રાન્ત, (કઠિન
 તાઈસે ભોગને યોગ્ય એવ કૃત જ્ઞાનાવરણીય આદિ અશુભ કર્મ ઉપાર્જિત

એથુ ત્યારે મને ચાલસપહે ખાત્રી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો ।
 આ રીતે હું ચિંતામાં પડી છું સુકુમારિકાની આ વાત સાંભળીને દારીએ તરત જ
 સાગરદત્તને ખબર આપી આ રીતે અહીં પહેલાનો પાઠ બાંધી દેવો બેઠાં
 તત્તણ સે સાગરદત્તે તદેવ સમતે સમાણે, જેણેવ વાસદરે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગ
 ચ્છિત્તા સૂમાલિય દારિય અકે નિવેસેદ, નિવેસિત્તા એવ વયાસી અહો ન તુમ પુત્તા !
 પુરા પોરાણાણ જાવ પચ્છણુમ્ભવમાગી વિહરસિ ત માણ તુમ પુત્તા ઓદયમણ જાવ
 સિયાહિ-તુમ ન પુત્તા મમ મહાણસસિ વિપુલ અસણ ૪ જહા પુટ્ટિલા જાવ પરિમાણ
 માણી વિહરાહિ)

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહેલાની જેમ બાહુન ચિત્તવળો થઈને જ્યાં વાસ
 ગૃહ હતું ત્યાં આવ્યો ત્યાં આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને પેતાના ખોળામાં
 બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ ! તે પહેલાં ભવમા
 જે કઈ દુશ્ચીર્ણ, દુષ્પરાક્રાન્ત અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે મેં ઉપા

પિસેસ ' હિતિ-દુશ્ચીર્ણાના-દુશ્ચરિતાના યાદ્મનોજનિત મૃપાયાદાદિકર્મણામિત્યર્થઃ,
કિં ભૂતાના તેષા? દુષ્પરાક્રાન્તાના-કાયિકાનાં પ્રાણિર્હિંસાદ્વત્તાદાનાદીના, કૃતાના
પ્રકૃતિસ્થિત્યનુભાગપ્રદેશભેદેન ચદ્વાના પાપાના=અશુભાના કર્મણા=જ્ઞાનાવરણી-
યાદીના પાપકર્મ-અશુભ, ફલટુત્તિરિણેષમ્, પ્રત્યનુભવન્તી=વેદ્યન્તી વિહરસિ=
પતેસે તત્=તસ્માદ્ માં સ્વલુ ત્વ હે પુત્રિ ! અપહતમનઃમન્ડલપા યાન્દ્ધ્યાય=
આર્તવ્યાન માં કુરુ હત્યર્થઃ, ત્વ સ્વલુ હે પુત્રિ ! મમ ' મહાણસસિ ' મહાનસે-
પાપશાલાયા ત્રિપુલ્મશન પાન સ્વાય સ્વાય યથા પોટ્ટિલા યાવત્ પરિમાજયન્તી=
શ્રમણાદિભ્યઃ પ્રતિભાગ કુર્વતી ' વિહરાહિ ' વિહર=તિષ્ઠ । તતઃ સ્વલુ સા સુકુ-

કિયે-પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ ઓર પ્રદેશ ય રૂઠે ભેદસે વાંધે હૈં-અન્હીં
પુરાને અશુભ જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોં કે તુમ અશુભ ફલ વિશેષ કો
હસ સમય ભોગ રહી હો । પૂર્વ ભવોં મેં જો પાપ કિયે હૈં વેરી યહાં ”
“ પુરાણ ” શબ્દ સે ગૃહીત દુષ્ટ હૈં । પાપ શબ્દ યહાં અશુભ જ્ઞાનાવર-
ણીય આદિ કર્મોં કા વોધક હૈં । યે અશુભ જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મ
જીવ અશુભ મન, વચન ઓર કાય કી પ્રવૃત્તિ સે જન્ય મૃપાવાદ આદિ
ક્રિયાઓ સે, તથા પ્રાણિર્હિંસા, અદત્તાદાન આદિ કુકૃત્યોં સે વાધતા
હૈં । વાંધતે સમય ઇનમેં પ્રકૃતિ, સ્થિતિ અનુભાગ ઓર પ્રદેશ વધરૂપ
વિભાગ હો જાતા હૈં । અધિક સ્થિતિ ઓર અધિક અનુભાગ વધ ઇનમેં
સકલેશ પરિણામો સે પડતા હૈં । હસલિયે હે પુત્રિ ! તુમ અપહતમન
સકલ્પ હોકર યાવત્ આર્તવ્યાન મત કરો । તુમ તો મેરી ભોજન શાલા
મેં ચતુર્વિંશ આહાર તૈયાર કરા કર પોટ્ટિલા કી તરહ શ્રમણ આદિ

શ્રિત ય્યાં હતા-પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ બધના ભેદથી બાંધ્યા
છે અત્યારે તુ તેજ પહેલાના અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોના અશુભ ફળ
વિશેષને ભોગવી રહી છે પૂર્વ ભવમાજે પાપ કરવામા આવ્યા હોય તેને
અહીં “ પુરાણ ” શબ્દથી અહણ કરવામા આવ્યા છે અહીં પાપ ગણદાશુભ
જ્ઞાનાવરણીય વગેરે ડોરોને સ્પષ્ટ કરે છે આ બધા અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે
કર્મો જન અશુભ-મન, વચન, અને કાયની પ્રવૃત્તિથી જન્ય મૃપાવાદ વગેરે
ક્રિયાઓથી તેમજ પ્રાપ્તિઓ િહિંયા, અદત્તાદાન વગેરે કુકર્મોથી બાંધે છે બાંધતી
વખતે એઓમા પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ બધડપ વિભાગ થઇ
બધ છે અધિક સ્થિતિ અને અધિક અનુભાગ બધ તેઓમા સકલેશ પરિ-
ણામોથી પડે છે એથી હે પુત્રિ ! તમે અપહત મન સકલ યજ્ઞને યાવત્

તતઃ સા દાસચેટી સાગરદત્તસ્ય સાર્થસાક્ષ્ય મમીવમાગ્યૌમર્મં નિવદ્યતીતિ
 યોજના યોધ્યા । તત રતઃ સા સાગરદત્તસ્યૌમર્મ 'મમર્મે' સમ્ભાત્ત=ઉદ્વિગ્નઃ
 સન્ યજીય સામગૃહતર્જીરોપાગત્તિ, ઉપાગત્ય સુકુમારિસં દારિયામદ્વે નિવસ્યતિ,
 નિવેશ્ય એવમસાદીન્-મહો । ઇત્યાગર્મે ચતુ દે પુત્રિ 'તા' પુત્રા' પુત્રા=પૂર્વમત્રેષુ
 'પોરાણાણ' પુરાણાનામ્=મતીતકાલકૃતનાના, યાન્=મત્ર યાન્-ઝડનેદ
 યોધ્યમ્-'દુષિન્નાણ દુષ્પરાણાણ વદ્યાં પાત્રાણ કમ્માણ પાત્રમ કમ્ત્રિતિ

દેવતા તપ મેં સમક્ષ ગઈં ફિ ત્ત યત્તા સે ચત્ત્યા ગયા છે । ઇમ પ્રકાર મેં
 ચિન્તા મેં પડ રહી છે । સુકુમારિકા ફો ઇમ યાન કો સુનકર દામચેટી
 ને ડમી સમય યત્તા સે ચાપિમ આકર સાગરદત્ત કો ડત્ત યાન કી
 સ્વર દી-'' હસ પ્રકાર યત્ત પૂર્વોક્ત પાઠ યત્તા લગા લેના ચાલિયે-(તણ
 સે સાગરદત્તે તદેવ સમતે સમાણે જેણેવ ચામહરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગ
 ચ્છિત્તા સૂમાલિય દારિય અકે નિવેસેડ, નિવેસિત્તા એવ વયાસી,
 અરોણ તુમ પુત્તા પુરા પોરાણાણ જાવ પચ્ચણુબ્બરમાગી વિહરસિં ત માણ
 તુમ પુત્તા ઓહ્યમણ જાવ સ્થિપાદિ-તુમ ણે પુત્તા મમ મહાણસસિ વિપુલ
 અસણ ૪ જહા પુટ્ટિલા જાવ પરિમાણમાણો વિહરાહિ) ઇસ્કે વાદ વહ સાગ
 રદત્ત પહિલે જૈસા ઉદ્વિગ્ન ચિત્ત હોકર જહા વાસગૃહ યા વહા ગયા । વહાં જા
 કર ડસને સુકુમારિકા દારિકા કો અપની ગોદમેં પેઠા લિયા ઓર થૈઠાકર
 કહને લગા-હેપુત્રિ । તુમને પહિલે મયોમેં જો દુશ્ચોર્ણ દુષ્પરાજ્ઞાન્ત, (કઠિન
 તાઈસે ભોગને યોગ્ય એવ કૂન જ્ઞાનાવરણીય આદિ અશુભ કર્મ ઉપાર્જિત

જેથુ ત્યારે મને ચોક્કસપણે ખાત્રી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો છે
 આ રીતે હું ચિંતામાં પડી છું સુકુમારિકાની આ વાત સાંભળીને દાસીએ તરત જ
 સાગરદત્તને ખબર આપી આ રીતે અહીં પહેલાનો પાઠ બાંધી દેવો જોઈએ
 તણ સે સાગરદત્તે તદેવ સમતે સમાણે, જેણેવ ચામહરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ, ઉવાગ
 ચ્છિત્તા સૂમાલિય દારિય અકે નિવેસેડ, નિવેસિત્તા એવ વયાસી અરોણ તુમ પુત્તા !
 પુરા પોરાણાણ જાવ પચ્ચણુબ્બરમાગી વિહરસિં ત માણ તુમ પુત્તા ઓહ્યમણ જાવ
 સ્થિપાદિ-તુમ ણે પુત્તા મમ મહાણસસિ વિપુલ અસણ ૪ જહા પુટ્ટિલા જાવ પરિમાણ
 માણી વિહરાહિ)

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહેલાની જેમ બાકુજ ચિત્તવળો થઈને જ્યાં વાસ
 ગૃહ હતું ત્યાં આવ્યો ત્યાં આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને જે તાના બોળામાં
 બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ ! તે પહેલાં ભવમાં
 જે કઈ દુશ્ચીર્ણ, દુષ્પરાજ્ઞાન્ત અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે મેં ઉપા

મિસેસ ' હિતિ-દુશ્ચીર્ણાના-દુશ્ચરિતાના પ્રાદ્મનોજનિત મૃપાનાદાદિકર્મણામિત્યર્થઃ, કિં ભૂતાના તેષા? દુષ્પરાક્રાન્તાના-કાયિકાના પ્રાણિર્હિંસાઽદત્તાદાનાદીના, કૃતાનાં પ્રકૃતિસ્થિત્યનુભાગપ્રદેશભેદેન ચદ્વાના પાપાના=અશુભાના કર્મણા=જ્ઞાનાવરણી-યાદીના પાપમ્-અશુભ, ફલવૃત્તિવિશેષમ્, પ્રત્યનુભવન્તી=વેદયન્તી વિહરસિ=વર્તસે તત્=તસ્માદ્ માં સ્વલુ ત્વ હે પુત્રિ ! અપહતમનઃમચ્છલા પ્રાદ્ધ્યાય=આર્તપ્રાપ્તિ માં કુરુ ઇત્યર્થઃ, ત્વ સ્વલુ હે પુત્રિ ! મમ ' મહાજનસિ ' મહાજનસે-પારુશલાયા વિપુલમજનં પાપ સ્વાચ્ચ યથા પોદિલા યાવત્ પરિભાજયન્તી=શ્રમણાદિભ્યઃ પ્રવિભાગ કુર્વતી ' વિહરાદિ ' વિહર=તિષ્ઠ । તતઃ સ્વલુ સા સુકુ-

કિયે-પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ ઓર પ્રદેશ વધકે ભેદસે વાંધે હૈ-ઝન્હીં પુરાને અશુભ જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોં કે તુમ અશુભ ફલ વિશેષ કો હસ સમય ભોગ રહી હો । પૂર્વ ભરોં મેં જો પાપ કિયે હૈં વેલી યહા " "પુરાણ " શબ્દ સે ગૃહીત હુઅ હૈં । પાપ શબ્દ યહાં અશુભ જ્ઞાનાવર-ણીય આદિ કર્મોં કા વોધક હે । યે અશુભ જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મ જીવ અશુભ મન, વચન ઓર કાય કી પ્રવૃત્તિ સે જન્ય મૃપાનાદ આદિ ક્રિયાઓ સે, તથા પ્રાણિર્હિંસા, અદત્તાદાન આદિ કુકૃત્યોં સે વાંધતા હૈ । વાંધતે સમય હનમેં પ્રકૃતિ, સ્થિતિ અનુભાગ ઓર પ્રદેશ વધરૂપ વિભાગ હો જાતા હૈ । અધિક સ્થિતિ ઓર અધિક અનુભાગ વચ્ચે હનમેં સંકલેશ પરિણામો સે પડતા હૈ । હસલિયે હે પુત્રિ । તુમ અપહતમનઃ સંકલ્પ હોકર યાવત્ આર્તધ્યાન મત કરો । તુમ તો મેરી ભોજન શાલા મેં ચતુર્વિંશ આહાર તૈયાર કરા કર પોદિલા કી તરહ શ્રમણ આદિ

નિત દર્શા હતા-પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ વધના ભેદથી બાંધ્યા છે અત્યારે તુ તેજ પહેલાના અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોના અશુભ ફળ વિશેષને ભોગવી રહી છે પૂર્વ ભગવાને પાપ કરવામા આવ્યા હોય તેને અહીં " પુરાણ " શબ્દથી ગ્રહણ કરવામા આવ્યા છે અહીં પાપ ગણે અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોને સ્પષ્ટ કરે છે આ બધા અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મો શુધ્ધ અશુભ-મન, વચન, અને કાયની પ્રવૃત્તિથી જન્ય મૃપાવાદ વગેરે ક્રિયાઓથી તેમજ પ્રાણીઓની હિંમા, અદત્તાદાન વગેરે કુકર્મોથી બાંધે છે બાંધતી વખતે એઓમા પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ વધરૂપ વિભાગ થઇ બધ છે અધિક સ્થિતિ અને અધિક અનુભાગ બધ તેઓમા સંકલેશ પરિ-ણામથી પડે છે એથી હે પુત્રિ ! તમે અપહત મન સક પ થડને યાવત્

મારિકા દારિકા જનમર્થ મનિગ્રગોતિ=સ્તોસ્તોતિ, મનિશ્રુત્ય મદાનમે તિપૂમ્મ
નપાનસાઘ ત્યાપ યામ્ 'દમ્પાણી' દ્વદી તિહરનિ=આસ્મે મ્મ ॥ ૬૦-૧૨ ॥

મૂળ-તેણ કાલેણ તેણં સુનાણં ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ
બહુસુયાઓ એવં જહેવ તેયલિણાણ સુઘવયાઓ તહેવ સનોસ
હ્વાઓ તહેવ સંઘાડઓ જાવ અણુપતિદ્ધે તહેવ જાવ સૂમાલિયા
પહિલામિત્તા એવ વયાસી-એવં સલ્લુ અજ્ઞાઓ ! અહ સાગરસ્સ
અણિદ્ધા જાવ અમણામા નેચ્છઈ ણં સાગરણ મમ નામ વા જાવ
પરિભોગં વા, જસ્સ ૨ તિ ય ણં દિજ્ઞામિ તસ્સ ૨ તિ ય ણં
અણિદ્ધા જાવ અમણામા ભવામિ, તુઘ્મે ય ણં અજ્ઞાઓ ! બહુ-
નાયાઓ એવ જહા પુદ્ધિલા જાવ ઉવલલ્લે જે ણ અહ સાગરસ્સ
દારિયાણ ઇદ્ધા કતા જાવ ભવેજ્ઞામિ, અજ્ઞાઓ તહેવ ભણંતિ
તહેવ સાવિયા જાયા ચિતા તહેવ સાગરદત્ત સત્થવાહં આપુ-
ચ્છઈ જાવ ગોવાલિયાણં અતિપ્પ પવ્વહિયા, તણ્ણ સા સૂમા-

જનોં કે લિયે વિતરણ કરતી રહો (તણ્ણ સા સૂમાલિયા દારિયા એવ
મદ્ધ પહિસુણેઈ પહિસુણિત્તા મહાણસસિ ત્રિપુલ અસણ જાવ દલમાળી
વિહરઈ) હસ તરહ પિતા સાગરદત્ત કે સમજાને પર ઉમ્મ સુકુમારિકા
દારિકા ને અપને પિતા કે હમ કયન કો સ્વીકાર કર કે વહ મહાનસ
ભોજન શાલા મેં નિપ્પત્ત ચતુર્વિવ આહાર કો અમણાદિ જનોં કે લિયે
વિતરણ મી કરને લગી ॥ સૂત્ર ૧૨ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ તુ મારી લોજન શાળામા ચાર બાતના આહારો
તૈયાર કરાવડાવીને પોદ્ધિલાની જેમ અમણ વગેરે જનોને આપતી રહે

(તણ્ણ સા સૂમાલિયા દારિયા એવમદ્ધ પહિસુણેઈ, પહિસુણિત્તા મહાણસસિ
ત્રિપુલ અસણ જાવ દલમાળી વિહરઈ)

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમબવવામા આવેલી તે સુકુમારિકા દારિ
કાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધુ અને સ્વીકારીને તે લોજનશાળામા
તૈયાર થયેલા ચારે બાતના આહારોને અમણ વગેરેને આપવા ૮

लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवंभयारिणी बहूहिं
चउत्थछट्टम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा
अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवाग-
च्छइ उवागच्छित्ता वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एववयासी-
इच्छामि णं अज्जाओ । तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समानी चंपाओ
वाहि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणि-
क्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए,
तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एवं वयासी-
अम्हे ण अज्जे । समणीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव
गुत्तवंभयारिणीओ नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव
सण्णिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए, कप्पइ ण अम्ह अतो
उवस्सयस्स विइपरिविखत्तस्स सघाडिवज्जियाए णं समतल
पइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एय-
मट्ट नो सइहइ नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठं अ०३ सुभूमि-
भागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ‘ गोवा-
लियाओ अज्जाओ ’ गोपालिना=गोपालिनामन्यः आर्याः=साधव्यः, ‘ गहुस्सु-
याओ ’ गहुश्रुता=श्रुतपारगामिन्यः, एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव ‘ तेतल्लिणाए ’
तेतल्लिजाते=चतुर्दशे तेतल्लिपुत्राध्ययने वर्णिताः ‘ सुव्वयाओ ’ सुप्रताः=सुव्रता-

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण—तेण समएण) उस काल और उस समय में
(गोवालियाओ अज्जाओ गहुस्सुयाओ एव जहेव तेयल्लिणाए सुव्वयाओ

‘ तेण कालेण—तेण समएण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण—तेण समएण) ते काले अने ते समये
(गोवालियाओ अज्जाओ गहुस्सुयाओ एव जहेव तेयल्लिणाए सुव्वयाओ

મારિયા દારિકા એનર્થ મનિગ્ગાતિ=મોરોતિ, મનિશ્રુત્ય મહાનમે વિપુલમ્મ
નપાનલાય લાય ચામ્ ' દલ્માણી ' વદતી વિહરતિ=આસ્તે મ્મ ॥ સુ. ૧૨ ॥

મૂલ્-તેણં કાલેણં તેણં સનણં ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ
વહુસ્સુયાઓ એવં જહેવ તેયલિણાણ સુઠવયાઓ તહેવ સનોસ
હ્વાઓ તહેવ સંઘાડઓ જાવ અણુપવિટ્ઠે તહેવ જાવ સૂમાલિયા
પહિલાભિત્તા એવ યયાસી-એવં સલ્લુ અજ્ઞાઓ ! અહ સાગરસ્સ
અણિટ્ટા જાવ અમણામા નેચ્છઈ ણં સાગરણ મમ નામં વા જાવ
પરિભોગ વા, જસ્સ ૨ વિ ય ણં ઢિજ્ઞામિ તસ્સ ૨ વિ ય ણં
અણિટ્ટા જાવ અમણામા ભવામિ, તુઠ્ઠમે ય ણં અજ્ઞાઓ । વહુ-
નાયાઓ એવ જહા પુટ્ટિલા જાવ ઉવલલ્લે જે ણં અહ સાગરસ્સ
દારિયાણ ઇટ્ટા કતા જાવ ભવેજ્ઞામિ, અજ્ઞાઓ તહેવ ભણંતિ
તહેવ સાવિયા જાયા ચિત્તા તહેવ સાગરદત્ત સત્થયાહં આપુ-
ચ્છઈ જાવ ગોવાલિયાણં અતિણ પવ્વઈયા, તણં સા સૂમા

જનોં કે લિયે વિતરણ કરતી રહો (તણ સા સૂમાલિયા દારિયા એ
મટ્ટ પહિસુણેઈ પહિસુણિત્તા મહાણસસિ વિપુલ અસણ જાવ દલ્માણી
વિહરઈ) હસ તરહ પિતા સાગરદત્ત કે સમજાને પર ઉમ્મ સુકુમારિકા
દારિકા ને અપને પિતા કે હસ કથન કો સ્વીકાર કર કે વહ મહાનસ
ભોજન શાલા મેં નિપ્પન્ન ચતુર્વિધ આહાર કો અમણાદિ જનોં કે લિયે
વિતરણ મી કરને લગી ॥ સુત્ર ૧૨ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ તુ મારી લોજન શાળામા ચાર બાતના આહારો
તૈયાર કરાવડાયીને પોટિલાની જેમ અમણ વગેરે જનોને આપતી રહે

(તણ સા સૂમાલિયા દારિયા એમટ્ટ પહિસુણેઈ, પહિસુણિત્તા મહાણસસિ
વિપુલ અસણ જાવ દલમાણી વિહરઈ)

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમજાવવામા આવેલી તે સુકુમારિકા દારિ
કાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધુ અને સ્વીકારીને તે લોજનશાળામા
તૈયાર થયેલા ચારે બાતના આહારોને અમણ વગેરેને આપવા લા ૧૨

लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवंभयारिणी वट्ठहिं
चउत्थछट्ठम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा
अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवाग-
च्छइ उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-
इच्छामि णं अज्जाओ । तुव्वमेहि अव्वभणुन्नाया समाणी चंपाओ
वाहि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणि-
क्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए,
तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एवं वयासी-
अम्हे ण अज्जे । समणीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव
गुत्तवंभयारिणीओ नो खलु अम्ह कप्पइ वहिया गामस्स जाव
सण्णिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए, कप्पइ ण अम्ह अतो
उवस्सयस्स विइपरिविखत्तस्स संघाडिवद्धियाए णं समतल
पइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एय-
मट्ठ नो सइहइ नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठ अ०३ सुभूमि-
भागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् ऋत्वे तस्मिन् समये ‘ गोवा-
लियाओ अज्जाओ ’ गोपालिना=गोपालिमानाम्न्यः आर्याः=साध्व्यः, ‘ गहुस्सु-
याओ ’ गहुथुता=श्रुतपारगामिन्य, एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव ‘ तेतलिणाए ’
तेतलिज्ञाते=चतुर्दशे तेतलिपुराध्ययने वर्णिताः ‘ सुव्वयाओ ’ सुत्रताः=सुत्रता-

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण—तेण समएण) उस काल और उस समय में
(गोवालियाओ अज्जाओ गहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

‘ तेण कालेण—तेण समएण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण—तेण समएण) ते जणे अने ते सभये
(गोवालियाओ अज्जाओ गहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

नाम्न्य साध्यः, 'तद्देव समोमद्वाओ' तथैव सगराणां नुतनाद् गोपालिकाः
समागताः । 'तदेव सगराडओ जाव अणुपचिद्दे' तथैव सगराडओ यावत् अनुप-
चिद्दे गोपालिकानामार्गणागेर गंधादः गारा सुकुमारिकाया जेऽनुमण्डिः ।
तथैव यावत् सुकुमारिका ता आर्गा अनादिना प्रतिलम्ब्य एव न्यमानमका-
रेण आदीत्-हे आर्गा ! एव यत् अह सागरस्य दारदम्प्यानिष्टा यावत्-
अकान्ता अग्रिया अमनोमा अमनोमा मनः प्रीत्याऽग्नि, नेच्छति गलु साग-
रको मम नाम वा गोत्र वा श्रोतुम्, किं पुनर्यावत् मया वा परिभोग वा, यत्र
मम नामाऽपि श्रोतु नेच्छति तत्र का गार्ता परिभोगस्य, अह तु तेन सर्वथा परि-
त्यज्यतेति भावः । अपि च यस्मै यस्मै खलु 'दिज्जामि' दीयं=स्वपित्रा प्रदत्ता
भवामि, तस्य तस्यापि च खलु अनिष्टा यावत् अमनोमा=मनः प्रतिलुला भवामि,
हे आर्गा ! यूयं च खलु 'बहुनापाओ' बहुजाताः ज्ञानातिगययुक्ताः, 'एव

तद्देव समोमद्वाओ तद्देव सगराडओ जाव अणुपचिद्दे तद्देव जाव सुमा-
लिया पडिलभित्ता एव वपासी) गोपालिका नामकी आर्थिका जो श्रुत
पारगामिनी थीं इस प्रकार से कि जिस प्रकार से तैललि प्रधान नामक
चौदहवें अध्ययन में सुत्रता माध्वी वर्णित हुई है-थीं-वे उसी तरह से
वहा आई । इनका एक सगाडा था, यावत् सुकुमारिका के घर में
गोचरी के लिये प्रवेश किया । सुकुमारिका ने बड़ी भक्ति के साथ
उन्हें आहार पानी दिया-और देकर वह फिर इस प्रकार से उनसे
कहने लगी-(एवखलु अज्जाओ ! अह सागरस्स अणिट्ठा, जाव अम-
णामा, नेच्छइ ण सागरए मम नाम वा जाव परिभोग वा जस्स २ वि-
य ण दिज्जामि तस्स-तस्स वि य ण अणिट्ठा, जाव अमणामा भवामि
तुब्भे य ण अज्जाओ ! बहुनापाओ, एव जह्वा पुट्टिला जाव उवलद्धे
तद्देव समोमद्वाओ तद्देव सगराडओ जाव अणुपचिद्दे तद्देव जाव सुमालिया पडि-
लभित्ता एव वपासी)

गोपालिका नामे आर्थिका हे जे श्रुत पारगामिनी હતી તેતલીપ્રધાન
નામના ચૌદમા અધ્યયનની સુત્રતા માધ્વી જેવી હતી તેવા જ તે પણ હતી
સુત્રતા સાધ્વીની જેમ જ તે યાવત્ સુકુમારિકાના ઘેર તે ગોચરી માટે ગઈ
સુકુમારિકાએ ખૂબ જ ભક્તિ-ભાવથી તેમને આહારપાણી આપ્યું અને આપીને
તે તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગી—

(એવે સ્વલુ અજ્જાઓ અહ સાગરસ્સ અણિટ્ઠા, જાવ અમણામા નેચ્છઈ જ
સાગરણ મમ નામ વા જાવ પરિભોગ વા જસ્સ ૨ વિ ય ણ દિજ્જામિ તસ્સ તસ્સ
વિ ય ણ અણિટ્ઠા, જાવ અમણામા ભવમિ તુબ્ભે ય ણ)

યથા પોટિલા યાદ્ ઉપલબ્ધમ્ અયમર્થ.-યથા તેતલિપુત્રમોર્યા પોટિલા સ્વમર્ત-
વસીકરણોપાયમર્દશનાર્થ સુવ્રતા સાધ્વી પૃચ્છતિસ્મ, તથા-સુકુમારિકા દારિકા
ગોપાત્રિકા મત્રાટક પૃષ્ઠતી, તાદશ ચૂર્ણયોગાદિમુપલ-મન્નાત મિમ્ ? યેનાહ
સાગરમ્ય દારુકસ્યેષ્ટા કાન્તા યાવદ્ ભવેય યાર્યાસ્તયૈવ મળન્તિ=યથા પોટિલિ

જે ન અહ સાગરસ દારુગસ્સ ઇદ્વા કતા જાવ ભવેજ્ઞામિ, અજ્ઞાઓ
તહેવ મળતિ, તહેવ માવિયા જાયા, તહેવ ચિંતા, તહેવ સાગરદત્ત સત્ય-
વાહ આપુચ્છજ્ઞ જાવ ગોવાલિયાણ અનિષ્ટ પવ્વજ્ઞા) હે આર્યાઓ !
મેં અપને પતિ સાગર દારુક કે અનિષ્ટ પનો હુ યાવત્ અકાન્ત
અપ્રિય અમનોજ્ઞ એવ અમનોમ મનઃ પ્રતિકૂલ યની હુઈ હું । વે મેરા નામ
ગોત્ર કુઝ મી સુનના નહીં ચાહતે હે । તો પિર ઉનકે સાથ પરિભોગ
કરને કી તો ખાત રી કયા હૈ । મુજે તો ઉન્હોને સર્વયા હી ઝોડ દી હૈ ।
અપિચ-મેરે પિતા મુજે જિસ ૨ વ્યક્તિ કે લિયે દેતે હ-મેં ઉસ ૨ વ્યક્તિ
કે લિયે મી અનિષ્ટ આદિ પન જાતો હું । હે આર્યાઓ ! આપ તો બહુ-
શ્રુત હ અનેક શાસ્ત્રો કી જ્ઞાતા હૈ-જ્ઞાન કે અતિશય સે સપન્ન હૈ ।
હસ પ્રકાર ઉસ સુકુમારિકા ને પોટિલા કી તરહ અપને પતિ કો વશ
મેં કરને કે વિષય મેં ઉનસે ઉપાય પૂઝા પોટિલાને અપને પતિ તેતલિપુત્ર
કો વશમેં કરને કો પહિલે જૈસે સુવ્રતા સાધ્વી કે સગદેસે ઉપાય પૂઝા
થા-ઔર કહા આપકો યદિ કોઈ ઇરા ચૂર્ણ આદિ કા પ્રયોગ ઉપલબ્ધ

અન જહા પોટિલા જાન ઉત્તરે જોગ અહ સાગરસ દારુગસ્સ ઇદ્વા કતા જાવ
ભવેજ્ઞામિ, અજ્ઞાઓ તહેવ મળતિ, તહેવ માવિયા જાયા, તહેવ ચિંતા,
તહેવ સાગરદત્ત સત્યવાહ આપુચ્છજ્ઞ જાવ ગોવાલિયાણ અનિષ્ટ પવ્વજ્ઞા)

હે આર્યાઓ ! મારા પતિ સાગરદારુક માટે હુ અનિષ્ટ થઈ ગયેલી હુ
યાવત્ અકાન્ત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ ચૂકી હુ તેઓ મારા
નામ ગોત્ર કઈ પણ સાલળયા ઈજના નથી ત્યારે તેમની માથે પરિભોગ
કરવાની તો ખાત ન શી કરવી તેઓએ મને એકદમ ન જે છોડી દીધી છે
અને મારા પિતાએ મને જે જે માણસને આપે છે તે બધા માટે પણ હું અનિષ્ટ
વગેરે થઈ બહુ હે આર્યાઓ ! તમે તો બહુશ્રુત છો, ઘણા શાસ્ત્રોને
બોણા છો, જ્ઞાન સપન્ન છો આ રીતે પોટિલાની જેમ ન સુકુમારિકા દારિ-
કાએ પણ પતિને વશમા કરવા માટેના ઉપાયોની પૂછપરછ કરી પોટિલાએ
પોતાના પતે તેતલિપુત્રને વશમા કરવા માટે પડેલા સુનના સાધ્વીના સધા
શધી જેમ ઉપાયો પૂઝ્યા હતા તેમજ તેણે પણ તેમને કહ્યું કે-જે એવો

કયા પૃષ્ઠા સુવ્રતાયાઃ સગટકસ્થિતાઃ ગા-ગમ્તામરોચન્, તથૈવ ગોપાલિકા
 સપાટરવાઃ આર્યા મળન્તિ=મળન્તિ સ્મેર્યં । 'તથૈવ ગામિયા જાયા' તથૈવ
 શ્રાવિયા જાતા=પોદિલા વન્ ગુરુમારિકા દારિકાન્વિ શ્રાવિકા જાતા । તથૈવ
 ચિન્તા-પોદિલાસ્તેવ પથાન્=મવજ્ઞા ગ્રહીતુ મિન્તા ગુરુમારિકાયા મનસિ પ્રાપ્ત
 થૂંતા । ગુરુમારિકા સાગરદત્ત સાર્થગાહ=મ્પિતર તથૈવ=પથા સ્વપતિ પોદિલા,
 તદ્વદ્ આપૃન્નતિ, યાદ્ ગોમાશિજનામન્તિકે મવજિતા=દીક્ષા ગૃહીતમ્તી । તતઃ
 સ્વલ સા સુકુમારિકા આર્યા=સાધ્વી જાતા સા કિ બૂતા-ઈર્યાસમિતા યાદ્ ગુપ્ત
 હો તો મી પતા દીજિયે કિ જિમ્સે મેં અપને પતિ સાગરદારક કો
 ઇષ્ટ, કાન્ત યાવત્ મનોમ યનજાઉં । ગોપાલિકા કા કે સધાડે કી હન
 આર્યાઓં ને સુકુમારિકા કો, પોદિલા કો સુવ્રતા સાગ્રી કી તરહ
 સમજાયા-વહ ડસી તરહસે શ્રાવિકા યન ગઈ । પોદિલા કી તરહ ડસ
 સુકુમારિકા ને મી પાદ મેં દીક્ષા લેને કા મન મેં વિચાર કિયા-
 પોદિલાને જિસ તરહ અપને પતિ સે આજ્ઞા લેકર દીક્ષા ધારણ કી
 થી-ડસી પ્રકાર ડસ સુકુમારિકા ને મી અપને પિતા સાગરદત્ત સે
 પૂછકર ગોપાલિકા આર્યા કે સમીપ દીક્ષા ધારણ કર લી । (તણ સા
 સૂમાલિયા અજ્ઞા જાયા ઈરિયા સમિયા જાવ ગુત્તવમયારિણી વહૃદિ
 ઘડત્થ છટ્ટદ્વમ જાવ વિહરહ, તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા અન્નયા કયાઈ
 જેણેવ ગોવાલિયા અજ્ઞાઓ તેણેવ ડવાગચ્છહ) ડસ તરહ વહ સુકુમા
 રિકા આર્યા યન ગઈ । વહ ઈર્યાસમિતિ આદિ કા પાલન કરને લગી

કોઈ ચૂર્ણ વગેરેના પ્રયોગ મળી શકે તો પણ અને બતાવી દો કે જેથી હું
 મારા પતિ સાગરદારકના માટે ફરી ધૃષ્ટ, કાત, યાવત્ અને મ મધ બહુ
 ગોપાલિકા સધાડાની તે આર્યાઓએ-સુવ્રતા-સાધ્વીએ જેમ પોદિલાને સમ
 જાવી તેમજ સમજાવી અને છેવટે તે શ્રાવિકા બની ગઈ પોદિલાની જેમજ
 તે સુકુમારિકાએ પણ ત્યારપછી દીક્ષા લેવાનો મનમાં મધ્યમ વિચાર કરી લીધો
 પોદિલાએ જેમ પોતાના પતિની આજ્ઞા લઈને દીક્ષા ધારણ કરી હતી તેમજ
 સુકુમારિકાએ પણ પોતાના પતિ સાગરદત્તને પૂછીને ગોપાલિકા આર્યાની
 પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી લીધી

(તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા જાયા ઈરિયા જાવ ગુત્તવમયારિણી વહૃદિ
 ચડત્થ છટ્ટદ્વમ જાવ વિહરહ, તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા અન્નયા કયાઈ જેણેવ
 ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ તેણેવ ડવાગચ્છહ)

આ રીતે આર્યા થઈ ગઈ, તે ધર્મ સમિતિ વગેરેનું પાલન
 કરવા લાગી.

મહાવતની રક્ષા

ब्रह्मचारिणी सा बहुभिश्चतुर्थपष्ठाष्टमभक्तैर्यात-तप कर्मभिरात्मान भावयन्ती
विहरति=भास्तेस्म । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव
गोपालिका आर्यास्तत्रोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, उन्दित्वा
नमस्यित्वा एवमवादीत्=हे आर्या ! इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती
चम्पानगर्या वहिः सुभूमिभागस्योद्यानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे
पष्ठपष्ठेन-पष्ठमक्तानन्तर पुन पष्ठभक्तेन ' अणिक्रित्तेण ' अनिक्रित्तेन
=अविश्रान्तेन-अन्तररहितेन, तप-कर्मणा ' सूर्याभिमुखी ' सूर्याभिमुखी ' आया
वेमाणी ' आतापयन्ती-आतापना कुर्वती विवर्त्तुम् ' इति । ततस्तदनन्तर
ता गोपालिका आर्याः सुकुमानिकामार्यामेवमवादिषुः-हे आर्ये ! त्रय खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी । अनेक चतुर्थ,
पष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित
भी करने लगी । एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या
साध्वी-जहा गोपालिका आर्या विराज मान थी वहा गई-(उद्यान-
च्छित्ता वदह, नमसह, वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अ-
ज्जाओ ! तुमेहिं अन्मणुन्नाया समाणी चपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स
उज्जाणस्स अदूर सामते छट्ठ छट्ठेण अणिक्रित्तेण तवोक्कमे ण सूर्या
भिमुखी आयावेमाणी विहरित्तेण) वहां जाकर उसने उन्हें वदना
की, नमस्कार किगो ' वदना एव नमस्कार कर फिर वह इस-
प्रकार कहने लगी-हे भद्रत ! मे आप से आज्ञा प्राप्त कर चपा नगरी से
बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अतररहित छट्ठ छट्ठ
की तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूं ।
(तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सुमालिय एव वयासी-अम्हेण

अतुथ, पष्ठ, अष्टम लक्ष्ता वगेरे तपस्याओथी पोताने लावित पणु करवा
लागी ओक दिवसनी बात छे के ते सुकुमारिका आर्या साध्वी ज्या गोपालिका
आर्या विश्रमान होती त्या गध (उद्यानच्छित्ता वदह, नम सह, वदित्ता, नम-
सित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ ! तु मेहिं अन्मणुन्नाया समाणी च पाओ
बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठ छट्ठेण अणिक्रित्तेण तवो
क्कमेण सूर्याभिमुखी आयावेमाणि विहरित्तेण) त्या बधने तेणु तेभने वदना करी
नमस्कार कर्वा वदना तेभज नमस्कार करीने तेणु आ प्रभाणु कहु के छे
बदत ! आपनी आज्ञा भेगवीने हु य पा नगरीमा गहार सुभूमिभाग नामना
उद्याननी पाने अतर रहित छट्ठ छट्ठनी तपस्या करता सूर्याभिमुखी बधने
आतापना करवा धिउ छु (तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सुमालिय

કયા પૃષ્ઠા સુમનાયાઃ સપાટકસ્થિતાઃ સાન્નિધ્યામગીનન્, તથૈવ ગોપાલિકા
 સપાટયા' આર્યા મળન્નિ=રતિ સ્મેર્યં । 'નદૈવ માત્રિયા જાયા' તથૈવ
 શ્રાવિયા જાતા=પોદિયા વન્ ગુરુમારિકા દારિયાઽપિ શ્રાવિયા જાતા । તથૈવ
 ચિતા-પોદિલાપ્તેવ પદાન્=પદ્મજ્યા ગદીઽ િન્ઠા ગુરુમારિકાયા મનમિ માદુ
 ભૂતા । ગુરુમારિકા માગરદત્ત સાર્થસાદ=અપિતર તથૈવ=યયા સ્વપતિ પોદિયા,
 તદ્વદ્ આપૃન્નતિ, યાદ્ ગોપાલિકાનામન્નિકે મત્રનિતા=દીપ્તિ ગૃહીતમતો । તતઃ
 સ્વહ સા ગુરુમારિકા આર્યા=માધ્યો જાતા મા કિ બૂતા-ઈર્યાસમિના યાદ્ ગુપ
 હો તો મી યતા દીજિયે કિ જિમસે મેં અપને પતિ સાગરદારક કો
 હૃદ, કાન્ત યાવત્ મનોમ યનજાઁ । ગોપાલિકા કે સપાટી કી હન
 આર્યાઓં ને ગુરુમારિકા કો, પોદિયા કો સુવ્રતા સાગ્રી કી તરહ
 સમજાયા-વહ વસી તરહસે શ્રાવિયા યન ગઈ । પોદિલા કી તરહ હસ
 ગુરુમારિકા ને મી ઘાદ મેં દીક્ષા લેને કા મન મેં ત્રિચાર કિયા-
 પોદિલાને જિસ તરહ અપને પતિ સે આજ્ઞા લેકર દીક્ષા ધારણ કી
 થી-વસી પ્રકાર હસ ગુરુમારિકા ને મી અપને પિતા સાગરદત્ત સે
 પૂછકર ગોપાલિકા આર્યા કે સમીપ દીક્ષા ધારણ કર લી । (તણ સા
 સૂમાલિયા અજ્ઞા જાયા ઈરિયા સમિયા જાત ગુત્તવભયારિણી વહૃદિ
 ચત્થ છદ્દમ જાવ વિતરહ, તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા અજ્ઞયા કયાઈ
 જેણેવ ગોવાલિયા અજ્ઞાઓ તેણેવ ડવાગચ્છહ) હસ તરહ વહ ગુરુમા
 રિકા આર્યા યન ગઈ । વહ ઈર્યાસમિતિ આદિ કા પાલન કરને લગી

કેઈ થૂર્ણ વગેરેના પ્રયોગ મળી યાકે તો પણ મને ખતાવી દો કે જેથી હું
 મારા પતિ સાગરદારકના માટે ફરી ઇષ્ટ, કાત, યાવત્ મનોમ થઈ બહુ
 ગોપાલિકા સપાટાની તે આર્યાઓએ-સુમતા-સાધ્વીએ જેમ પોદિલાને સમ
 જાવી તેમજ સમજાવી અને છેવટે તે શ્રાવિકા બની ગઈ પોદિલાની જેમજ
 તે ગુરુમારિકાએ પણ ત્યારપછી દીક્ષા લેવાનો મનમા મક્કમ વિચાર કરી લીધો
 પોદિલાએ જેમ પોતાના પતિની આજ્ઞા લઈને દીક્ષા ધારણ કરી હતી તેમજ
 ગુરુમારિકાએ પણ પોતાના પતિ સાગરદત્તને પૂછીને ગોપાલિકા આર્યોની
 પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી લીધી

(તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા જાયા ઈરિયા જાત ગુત્તવભયારિણી વહૃદિ
 ચત્થ છદ્દમ જાવ વિતરહ, તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા અજ્ઞયા કયાઈ જેણેવ
 ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ તેણેવ ડવાગચ્છહ)

આ રીતે ગુરુમારિકા આર્યા થઈ ગઈ, તે ઇર્યા સમિતિ વગેરેનું પાલન
 કરવા લાગી અને નવકોટીથી પ્રહાયથર્થ મહામતની રક્ષા

ब्रह्मचारिणी सा बहुभित्तुर्थपष्टाष्टमभक्तैर्यात्-तप कर्मभिरात्मान भावयन्ती
विहरति=भास्तेस्म । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव
गोपालिका आर्यास्तत्रोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, रन्दित्वा
नमस्यित्वा गवमयादीत्=हे आर्या ! इच्छामि खलु सुष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती
चम्पानगर्या वदिः सुभूमिभागस्योधानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे
पष्ठपष्ठेन-पष्ठमक्तानन्तर पुन पष्ठमन्तेन ' अणिकित्तेण ' अनिष्टित्तेन
=भविश्रान्तेन-भन्तररहितेन, तप.कर्मणा ' सुराभिमुही ' सूर्याभिमुखी ' आया
वेमाणी ' आतापयन्ती-आतापना कुर्वती विहर्तुम् ' इति । ततस्तदनन्तर
ता गोपालिका आर्याः सुकुमानिकामार्यामेवमयादिषु.-हे आर्ये ! त्वं खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी । अनेक चतुर्थ,
पष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित
भी करने लगी । एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या
साध्वी-जहा गोपालिका आर्या विराज मान थी वहा गई-(उवाग-
च्छित्ता वदह, नमसह, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अ-
ज्जाओ ! तुभेहिं अभणुन्नाया समाणी चपाओ चाहिं सुभूमिभागस्स
उज्जाणस्स अदूर सामते छट्ट छट्टेण अणिकित्तेण तवोकम्मे ण सुरा
भिमुही आयावेमाणी विहरित्तेण) वहा जाकर उसने उन्हें वदना
की, नमस्कार किया ! वदना एव नमस्कार कर फिर वह इस-
प्रकार कहने लगी-हे भदत ! मे आप से आज्ञा प्राप्त कर चपा नगरी से
बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अतररहित छट्ट छट्ट
की तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूँ ।
(तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सुमालिय एव वयासी-अम्हेण

चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम भक्त वगैरे तपस्याओंकी पीताने भावित पशु करवा
लागी ओक द्विषन्ती बात छे के ते सुकुमारिका आर्या साध्वी तथा गोपालिका
आर्या विराजमान होती त्या गथ (उवागच्छित्ता वदह, नम सह, वदित्ता, नम-
सित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ ! तुभेहिं अभणुन्नाया समाणी चपाओ
बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ट छट्टेण अणिकित्तेण एवो
कम्मेण सुराभिमुही आयावेमाणि विहरित्तेण) त्या गधने तेबु तेभने वदना करी
नमस्कार कर्या वदना तेभज नमस्कार करीने तेबु आ प्रभाबु कहु के छे
सदत ! आपनी आज्ञा मेणवीने हु य पा नगरीमा गहार सुभूमिभाग नामना
उद्यानगी पाये अतर रहित छट्ट छट्टनी तपस्या करता सूर्याभिमुखी गधने
। धिच्छु छु (तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सुमालिय

निर्ग्रन्थः ईर्ष्यानिपातः ईर्ष्यानिमित्तमुक्ताः, गान्-गुणाश्चारीणः स्म,
तस्माद् नो खलु अस्माकं कर्मणः परिणामः यदि-प्रामाद गान् रानिषाद्
पष्ठ पठेत् 'जाव विहरित्' गान् विहरित् प्रामादे यदि मद्रगे गाघीना
स्थितिः शीलभगदिनारण मदीति भावः । किं कर्तव्यं सलु अम्माम् 'जा'
अन्तः=अभ्यन्तर 'उवस्तपस्त' उपाधयस्य=गतोः, विम्भूतस्य 'वित्तिपरि
वित्तस्त' वृत्तिपरित्तस्त=मित्र्यादिना सर्वत्र समावृत्तस्य, 'मत्राडिपट्टियाए'
सद्वाटिका मतिरद्वायाः=मतिरद्वाटिकायाः मर्षयाऽनुदाटितगात्राया इत्यर्थः
'समतलपट्टियाए' समतलपट्टिकाया=भूमौ समतलपट्टिया स्थापितकरणपुगन्नाया
आयावित्तए' आतापयितुम्=आतापना कर्तुं कल्पते इति पूर्ण मध्यन्धः । ततः

अज्जे ! समणीओ निग्गथोआ ईरियासामियाओ जाव गुत्तभभचारि
णीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ चत्थियागामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं
जाव विहरित्तए) इस प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर
गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारिका का आर्या से इस प्रकार कहा है
आर्ये ! हम लोग निर्ग्रन्थ श्रमणिया हैं । ईर्ष्या आदि समित्तियों का
पालन करती हैं । और नौ कोटि से गल्लचर्य की रक्षा करती हैं । इस
लिये हम लोगो को ग्राम से यावत् सविदेश से बाहिर रह कर षष्ठ षष्ठ
की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण
करना कल्पित नहीं है । कारण-ग्रामादि के बाहिर प्रदेश में साध्वियों
का रहना शीलभग आदि का निमित्त बन जाता है । (कप्पइ ण अम्ह
अतो उवस्तपस्त विहपरिवित्तस्त सघाडिपट्टियाए ण समतल पट्टि
याए आयावित्तए) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एव वयासी-अम्हेण अज्जे ! समणीओ निग्गथोईरिया सामियाओ जाव गुत्त
भभचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं
जाव विहरित्तए) आ रीते सुकुमारिका साध्वीनु कथन साध्वीने गोपालिका
आर्याओ सुकुमारिका आर्याओने आ प्रभाओ कहुं के आर्ये ! आपओ निग्रन्थ
श्रमणीओ छीओ धर्मा वगेरे समित्तियोंनु पालन करीओ छीओ, अने नव
कोटिथी प्रक्षयर्थनु रक्षण करीओ छीओ ओथी आपओ गामथी यावत्
सन्निवेशथी जहार रहीने पष्ठ पठनी तपस्या करनी यावत् सूर्याभिमुखी यधने
आतापन योग धारण करवो कल्पित नहीं करण के-गाम वगेरेथी जहारना प्रदे
शमा साध्वीओओ रडेवु शीलभग विगेरेनु निमित्त थर्मा बन छै (कप्पइ ण
अम्ह अतो उवस्तपस्त विहपरिवित्तस्त सघाडिपट्टियाए ण समतलपट्टियाए आया
वित्तए) आपओने तो ओ न कल्पित छै के आपओ भीति, अने

खलु सा सुकुमारिका गोपालिखानामार्याणामेतमर्थं नो श्रद्धाति ' नो पत्तिगइ ' नो पत्त्येति=नो पित्तसिति, ' नो रोएड ' नो रोचते, एतमर्थम् अश्रद्धाना अपत्त्यन्ती, अरोचमाना सति सुभूमिभागस्य उद्यानस्य अदूरसामन्ते पष्ठ-पष्ठेन यावत्-तप र्मणा सूर्याभिमुखी भूत्वा-आतापना कुर्वती विहरति ॥ सू० १३ ॥

मूलम्-तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्टी परिवसइ, नरवइ दिण्णवियारा अम्मापिइनिययनिप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्डा जाव अपरिभूया, तत्थ ण चंपाए देवदत्ता नामं गणिया हांत्था सुकुमाला जहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्टीए अन्नया पच गोट्टिलगपुरिस्सा देवदत्ताए गणियाए सद्धि सुभूमिभागस्स

कि जो भित्ति आदि से सब तरफ से परिक्षिप्त है भीतर ही अपने शरीर को शाटिका से अच्छी तरह सवृत्त करती हुई और भूमि पर दोनों चरणों को बराबर स्थापित कर आतापना ले (तण सा सुमालिया गोवालियाए एयमट्ट नो सदहइ, नो पत्तिगइ नो रोएड एयमट्ट अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामन्ते छट्ट छट्टेण जाव विहरइ) इस गोपालिका आर्याके कथन ऊपर उस सुकुमारिका आर्या को श्रद्धा नहीं जमी उस पर उसे विश्वास नहीं आया, वह उसे रुचा नहीं । इस तरह वह उसे अश्रद्धा अप्रतीति और अरुचि का विषय बनाती हुई सुभूमिभाग नामक उद्यान के पास पष्ठ पष्ठ भी तपस्या करती हुई वह सूर्याभिमुख होकर आतापना करने लगी ॥ सू० १३ ॥

परिक्षिप्त उपाग्रयणी अदूरव पोताना शरीरने शाटिका-साडीना मारी गीते ढाडीने अने भूमि उपर णने चरणोने बराबर स्थापित करीने आतापना लधये (तण सा सुमालिया गोवालियाए एयमट्ट नो सदहइ नो पत्तिगइ नो रोएड, एयमट्ट अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामन्ते छट्ट छट्टेण जाव विहरइ) गोपालिका आर्याना कथन उपर सुकुमार आर्याने श्रद्धा थरि नहि, तेना उपर तेने विश्वास थये नहि ते तेने गरुथ पणु नहि आ गीते ते ते कथन प्रत्ये अश्रद्धा, अप्रतीति अने अरुचि धरावती सुभूमिभाग नामना उद्यानणी पामे पष्ठ पष्ठणी तपस्या करती सूर्याभिमुखी थरिने आतापना करवा लागी ॥ सू० १३ ॥

निर्ग्रन्थः ईर्ष्यापरिज्ञा=ईर्ष्यामयित्वयुक्ता, यावत्-तुमात्रापरिणः स्म, तस्माद् नो खलु अस्माकं कृतं- 'वर्ज्या' परि-प्रामाद् यावत् सन्निवेशाद् पृष्ठ पठेत् 'जाव विहरित्' यावत् विहरेत् ग्रामादे र्वादि मन्त्रे गाध्वीना स्थितिः शीलभगादिधारण गरीतीति भावः । किं कल्पते खलु अस्माकम् 'अतो' अन्तः=अभ्यन्तर 'उवस्सयस्स' उपाश्रयस्य=रगतेः, विष्मूतस्य 'वित्तिपरि' विखत्तस्स 'वृत्तिपरिचित्तस्य=मित्र्यादिना र्ग्यतः समाग्रतस्य, 'सघाडियद्वियाए' सह्यादिका मतिरद्वाया =मतिरद्वयादिकायाः र्ग्यवाऽनुदादितगात्राया र्ग्य 'समतलपइयाए' समतलपदिकाया =भूमौ समतलउया स्थापितरणयुगलाया आयावित्तए' जातामयित्वम्=आतापना कृत् कल्पते इति पूर्णं सम्बन्धः । ततः

अज्जे ! समणीओ निग्गयोओ ईरियासामियाओ जाव गुत्तपमचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सणिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए) इस प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से उस प्रकार कहा है आर्ये ! हम लोग निर्ग्रन्थ भ्रमणियाँ हैं । ईर्ष्या आदि समितियों का पालन करती हैं । और नौ कोंटि से ब्रह्मचर्य की रक्षा करती हैं । इस लिये हम लोगो को ग्राम से यावत् मन्त्रिदेश से बाहिर रह कर पष्ठ पष्ठ की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण करना कल्पित नहीं है । कारण-ग्रामादि के बाहिर प्रदेश में साध्वियों का रहना शीलभग आदि का निमित्त बन जाता है । (कप्पइ ण अम्ह अतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स सघाडियद्वियाए ण समतल पइ याए आयावित्तए) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एव वयासी-अम्हेण अज्जे ! समणीओ निग्गयोओ ईरिया सामियाओ जाव गुत्तपमचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सणिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए) आ दीते सुकुमारिका साध्वीनु कथन सालणीने गोपालिका आर्याओ सुकुमारिका आर्याने आ प्रभाए कछु के आर्ये ! आपणु निर्ग्रन्थ भ्रमणीओ छीओ धर्या वगेरे समितिओनु पालन करीओ छीओ, अने नव कोंटिथी प्रहस्यर्थनु रक्षाय करीओ छीओ जेथी आपणु गामथी यावत् सन्निवेशथी गडार रहीने पष्ठ पष्ठनी तपस्या करवी यावत् सूर्याभिमुखी यधने आतापन योग धारण करवो कल्पित नथी करणु के-गाम वगेरेथी गडारना प्रदेशमा साध्वीओओ रहवु शीलभग विगेरेनु निमित्त बर्ध जन छे (कप्पइ ण अम्ह अतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स सघाडियद्वियाए ण समतलपइयाए आयावित्तए) आपणुने तो ओ ओ कल्पित छे के आपणु जीत

वेद्याविहारकृतनिकेता - वेद्यागृहकृतनिवासा, तथा- 'नाणाविहअविणयप्प-
हाणा' नानाविधाऽविनयप्रधाना, तथा-आद्या=धनधान्यसम्पन्ना, यावद् अपरि-
भूता=परैरनभिभूता, आसीत् । तत्र खलु चम्पाया नगर्यां देवदत्ता नाम 'गणिया'
गणिका=वेद्या, आसीत्, सा किम्भूतेत्याह-सुकुमारपाणिपादा, चतुष्पष्टिकला-
विशारदा 'जहा अडणाए' यथा अण्डज्ञाते=अण्डनामके तृतीये ज्ञाता-ययने
यथाऽस्यावर्णनं तद्वदिह बोध्यम् । ततः खलु तस्या ललिताया गोष्ठ्या अन्यदा=
अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्तममे, पञ्च 'गोष्ठिहगपुरिसा' गोष्ठिकपुरुषा=मण्डलीपुरुषाः
समानवयस्का इत्यर्थः देवदत्तया गणिकया नार्यं सुभूमिभागस्योद्यानस्योद्यानश्रिय=
उद्यानशोभां प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति । तत्र खलु एको गोष्ठिकपुरुषो देवदत्ता

नाणाविह अविणयप्पहाणा, अड्डा जाव अपरिभूया) इसने अपनी सेवासे
राजानो प्रसन्न कर रखा था-सो उसकी कृपा से यह बिलकुल स्वच्छद
थे । अपने माता पिता आदि कुटुम्बी जनो की यह परचाह नहीं किया
करते थे-उनको इन पुरुषों से बिलकुल भय नहीं था । वेद्याओं के
घर में पड़े रहना-यही इनका एक काम था । अनेक प्रकार के अविनय
प्रधान रूप अनाचारों का सेवन करना यही उनका काम था ।
पैसे की-द्रव्यकी उनके- पाम कमी नहीं थी । कोई इनको कुछ कह
सुन नहीं सकता था । (तत्थ ण चपाण देवदत्ता नाम गणिया होत्था,
सुकुमाला, जहा अडणाए, तएण तीसे ललियाए गोठ्ठीए अन्नया पच
'गोष्ठिहगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जा-
णस्स उज्जाणसिरि पच्चणुवभवमाणा विहरति) उसी चपा नगरी में

जाव अपरिभूया) ते भङ्गीओ चे तानी मेवाथी राजाने प्रसन्न कइल्लो इतो
तेभनी कृपाथी ते भङ्गी ओट्ठम अचछदपण्णु आथरती इती पोताना माता
पिता वगेरे कुटुम्बी लोगी पण्णु तेओ दइकार करता न इता तेओने आ
वडील्लोनी ठाँपण्णु ज्ञाननी जीउ इती नहि, वेद्याओना घेर पड्या रडेपु इक्षत
ओअ ओमनु ओक मात्र जम इतु अनेक प्रकारना अविनयपूण्णु आथरण्णो उरवा
ओअ तेओना एवमनु मुख्य काम इतु धननी तेओनी पामे पोटा इती नहि
ठाँपण्णु नागरिकनी ओट्ठवी पण्णु ताकात नहोती ते तेओ तेभने कंठपण्णु कडे ।
(तत्थ ण चपाण दे-दत्ता नाम गणिया होत्था, सुकुमाला, जहा अडणाए, तएण
तीसे ललियाए गोठ्ठीए अन्नया पच गोष्ठिहगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं
सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरि पच्चणु-भवमाणा विहरति) तेअ थ पा

उज्जाणस्स उज्जाणसिं पच्चणुब्भयमाणा विहरति, तत्थ ण
एगे गोद्विलगपुरिस्स देवदत्तं गणियं उच्छंगे भरइ एगे पिट्ठओ
आयत्त धरइ एगे पुप्फपूरयं रगउ एगे पाए रगइ एगे
चामरुक्खेवं करेइ तएण मा सुमालिया अज्जा देवदत्तं गणिय
तेहिं पंचहिं गोद्विलगपुरिसेहिं सट्ठि उरालाडं माणुस्सगाइ
भोगभोगाइ भुंजमाणी पासइ तएण तीसे इमेयारूपेसंकप्पे
समुप्पज्जित्था-अहो पांडसा इत्थिया पुरा पोरानाणं कम्माणं
जाव विहरइ, तं जइ णं वेइ इमस्स सुचरियस्स तव-
नियमवभचेरत्तास्स कल्लाणे फलवित्तिविमंगे अरिय तो
णं अहमवि आगमिस्सेणं भयग्गहणेणं इमेयारूपाइ उरा-
लाइ जाव विहरिउज्जामि त्तिम्हु नियाणं करेइ करित्ता
आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ ॥सू० १४॥

टीका—‘तत्थ ण चपाए’ इत्यादि । तत्र खलु चम्पाया नगर्यां ललिता
नाम्नी ‘गोद्वी’ गोष्ठी=मण्डली परिवसति किं भूतो सा गोष्ठीत्याह—‘नरवइदिण्ण
वियारा’ नरपतिदत्तविचारा नरपतिना दत्तो विचारः समतिर्यस्यै सा तथा—सेवा
दिना सन्तुष्टान्नरपतेर्लब्धस्यतन्त्रता, तथा—‘अम्मापिइ निययनिप्पिवासा’
अम्बापितृनिजकृति पिपासा=मातापित्रादि निरपेक्षा, ‘वेसविहारकय निकेया’

‘तत्थ ण चपाए ललिया नाम’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तत्थ ण चपाए ललिया नाम गोद्वी परिवसइ) उस
चपानगरीमें ‘ललिता’ इस नामकी गोष्ठी-मण्डली-रहती थी । (नरवइ
दिण्णविधारा, अम्मापिइ नियय निप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया,

‘तत्थ ण चपाए ललिया नाम’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तत्थ ण चपाए ललिया नाम गोद्वी परिवसइ) ते च पा
नगरीमा ‘ललिता’ नामे गोष्ठी ‘मण्डली’ रहती હતી (नरवइ, दिण्णविधारा
अम्मापिइ निययनिप्पिवासा, वेसविहारकयनिकेया, नाणाविहअविणयवहाणा, अइत्ता

ગણિકામુક્તકે ધરતિ એ 'વિદ્વો' પુત્ર: 'માયવન' આપા=ત્વ ધરતિ, એક: 'પુષ્પપૂરયં' પ્રાપ્તપૂરય-પુષ્પાણા રાનાતિએ 'ગ' રચયતિ, ધન: પાદો-અત્તકયાદિના રચયતિ । ૫-: 'ચામકારો' ચામરે-અપ=ચામરીજન કરોતિ । તત- તત્તુ મા મૃદુમાગિસા આર્ગ દેરાગા ગણિકા તે 'પન્નમિર્ગો' દેવદત્તા નામ કી એક ગણિકા રાતી થી । યત્ ચોમડ વત્તાઓ મેં નિષ્ણાત થી । દસકે પાથ પેર આદિ મપ હી અગમ્ય ધન તેં અધિક સુકુમાર થે । મયૂર અટ નામ કે તૃતીય જ્ઞાતાધ્યયન મેં ઝમરા જેસા ધર્ષન ક્રિયા ગયા હૈ-ધૈમા હી ધર્ષન દસકા યત્ જાનના બાહિયે । એક સમય કી ઘાત હૈ કિ ગોષ્ઠી કે ૫, દુરુપ કિ જો મમાન વચસવાહે થે દેવદત્તા ગણિકા કે સાથે ડસ સુભુમિભાગ ઉગ્રાન મેં આયે-ઔર વહા કી ઉઘાન કી શોભા કા નિરીક્ષણ કરતે છત્ત ડધર-ડધર ધૂમને લગે-(તત્થ ણ ણે ગોઢિલ્લગ પુરિસે દેવદત્તા ગણિય ઉચ્છગે ધરદ, ણે વિદ્વઓ આયવત્ત ધરેદ, ણે પુષ્પપૂરય રણદ, ણે પાળ રણદ, ણે ચામરુવલેવ ધરેદ, તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા દેવદત્તા ગણિય તેહિ પચહિ ગોઢિલ્લગપુરિસેહિ સદિ ઉગલાઈ માણુસસગાઢ મોગમોગાઢ મુજ માણી પાસદ) વહા એક ડસ મટલી કે પુરુપ ને દેવદત્તા ગણિકા કો અપની ગોદી મેં વૈઠાયા, એક દસરે-મટલી કે પુરુપ ને ડસકે પીઠે સે ડમકે ડપર છત્તો તાના, એક તીસરે પુરુપને ડસકે નિમિત્ત પુષ્પોં કી રચના રચી, ચૌથે પુરુપ ને ડમકે ડોનોં પૈરોં મેં માતુર લગાગા પાચવેં ને

નગરીમા દેવદત્તા નામે એ ગણિકા રહેતા હતી તે ૬૪ કળાઓમા નિપુણ હતી, તેના હાથ-પગ વગેરે બધા અંગો અતીવ સુઢોમળ હતા મથૂરી અડ નામના ત્રીજા અધ્યયનમા દેવદત્તાનું જેવું વર્ણન કરવામા આવ્યું છે તેવું જ વર્ણન અહીં પણ બાણી લેવું બોધ્યું એક દિવસની વાત છે કે ગોષ્ઠી-મડળીના પાથ માણુસો ઢે બેઝો સરખા ઉમરવાળા હતા-દેવદત્તા ગણિકાની સાથે તે સુભૂમિભાગ ઉગ્રાનમા ગયા અને ત્યાની ઉઘાન શોભાનું નિરીક્ષણ કરતા આમ તેમ કરવા લાગ્યા (તત્થ ણ ણે ગોઢિલ્લગપુરિસે દેવદત્તા ગણિય ઉચ્છગે ધરદ, ણે વિદ્વઓ આયવત્ત ધરેદ, ણે પુષ્પપૂરય રણદ, ણે પાળ રણદ, ણે ચામરુવલેવ ધરેદ તણ સા સૂમાલિયા અજ્ઞા દેવદત્તા ગણિય તેહિ પચહિ ગોઢિલ્લગપુરિસેહિ સદિ ઉગલાઈ માણુસસગાઢ માગમોગાઢ મુજમાણી પાસદ) ત્યાં તે મડળીના એક માણુસે દેવદત્તા ગણિકાને પોતાના ખોળામા બેસાડી બીજા માણુસે તેની ઉપર છત્રી તાણી, ત્રીજા માણુસે તેના માટે ખુખેડી રચના કરી, ચોથા માણુસે તેના પગમા લાલ રંગ લગાવ્યો, પાંચમા માણુસે તેના ઉપર ચામર

माणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं
अह अगारवासमज्झे वसामि तथा णं अह अप्पवसा, जया
णं अह मुंडे भवित्ता पव्वइया तथा णं अहं परवसा, पुव्वि च
णं ममं समाणीओ आढायतिर इयाणि नो आढंतिर त सेयं
खलु मम कल्ल पाउ० गोवालियाण अतियाओ पडिनिक्खमित्ता
पाडिएक उवस्सय उवसंपज्जित्ताण विहरित्तिए त्तिकट्ठु एव
संपेहेइ संपेहित्ता कल्ल पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ
पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पाडिएकं उवस्सय उवसपज्जि-
त्ताणं विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्ठिया
अनिवारिया सच्छदमई अभिक्खण अभिक्खणं हत्थे धोवेइ
जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा
ओसण्णविहारी कुसीलार संसत्तार वहुणि वासाणि सामण्ण-
परियागं पाउणइ अद्धमासियाए सल्लेहणाए तस्स ठाणस्स
अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे
अण्णयरसि विमाणसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाण
देवीणं नव पलिओवमाईं ठिई पणत्ता, तत्थ णं सूमालियाए
देवीए नव पलिओवमाईं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या ‘सरीर

‘तएण सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा सरीर वडसा

‘तएण सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि—

(तएण) त्या२५४ (सा सूमालिया अज्जा सरीरवडसा जाया यावि

रिज्जामित्ति कट्टु ' विहरामि ' इति कृत्वा ' निगण ' निदान करोति, कृत्वा
आतापनभूमितः प्रत्ययरोहति-आतापना पत्तिगज्जति ॥ सू० १४॥

मूलम्-तएणं सा सूमालिया अज्जा सरीरवाउसा जाया
यावि होत्था, अभिक्खण अभिक्खणंर हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ
सीसं धोवेइ मुहं धोवेइ धणंतगड धोवेइ कम्पंतराइ धोवेइ
गोज्झतराइ धोवेइ जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा
चेएइ तत्थ वि च णं पुब्बामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ
पच्छा ठाणं वाइ चेइए, तएणं ताओ गोवालियाओ सूमालियं
अज्ज एव वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया । अज्जे अम्हे सम-
णीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव वभचेरधारिणीओ
नो खल्ल कप्पइ अम्हं सरीरवाउसियाए होत्तए, तुम च णं
अज्जे ! सरीरवाउसिया अभिक्खणं अभिक्खण हत्थे धोवेसि
जाव चेएसि, तं तुम णं देवाणुप्पिए । तस्स ठाणस्स आलो-
एहि जाव पडिवज्जाहि, तएण सा सूमालिया गोवालियाणं
अज्जाणं एयमट्ठ नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी
अपरिजाणमाणी विहरइ, तएण ताओ अज्जाओ सूमालिय
अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलति जाव परिभवति,
अभिक्खणं अभिक्खण एयमट्ठ निवारोति, तएणं तीए सूमा-
लियाए समणीहिं निगंथीहि हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

को भोगू । ऐसा विचार कर उसने निदान बघ किया और करके फिर
वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आ गई ॥ सू० १४॥

अथ कुर्यां अने करीने ते आतापन भूमिथी आतापना लधने पोताना स्थाने
आवी गछी ॥ सूत्र १४ ॥

माणीए इमेयारूवे अज्झतिथिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं
अह अगारवासमज्जे वसामि तया णं अह अप्पवसा, जया
णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तया णं अहं परवसा, पुव्वि च
णं मम समाणीओ आढायतिर इयाणि नो आढतिर त सेयं
खलु मम कल्ल पाउ० गोवालियाणं अतियाओ पडिनिम्बमित्ता
पाडिएक उवस्सयं उवसपज्जित्ताण विहरित्तिए त्तिकट्टु एव
संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ
पडिनिम्बमइ पडिनिम्बमित्ता पाडिएकं उवस्सय उवसपज्जि-
त्ताणं विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया
अनिवारिया सच्छदमई अभिक्खण अभिक्खणं हत्थे धोवेइ
जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा
ओसण्णविहारी कुसीलार संसत्तार बहूणि वासाणि सामण्ण-
परियागं पाउणइ अद्धमासियाए सलेहणाए तस्स ठाणस्स
अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे
अणयरसि विमाणसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाणं
देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई पणत्ता, तत्थ णं सूमालियाए
देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या ‘चरीर

‘तएण सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा) सरीर घउसा

‘तएण सा सूमालिया अज्जा’ इत्यादि—

(तएण) त्या२५७ (सा सूमालिया अज्जा) सरीरवत्ता जाया यावि

रिज्जामिति पट्टु ' ' तिहरामि ' इति कृत्वा ' भिगानं ' निदान करोति, कृत्वा
आतापनभूमित्वा प्रत्यरोदति आतापना पण्डितानि ॥ सू० १४ ॥

मूल्य-तएण सा सूमालिया अज्जा सरीरवउत्ता जाया
यावि होत्था, अभिक्खण अभिक्खणर हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ
सीसं धोवेइ सुह धोवेइ धणंनराइ धोवेइ कम्पतराई धोवेइ
गोज्झतराई धोवेइ जत्थ ण ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा
चेणइ तत्थ वि च णं पुब्बानेव उदएणं अवमुक्खइत्ता ताओ
पच्छा ठाणं वा३ चेइए, तएण ताओ गोवालियाओ सूमालिय
अज्ज एव वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया । अज्जे अम्हे सम-
णीओ निगंथीओ ईरियासमियाओ जाव वभचेरधारिणीओ
नो खल्ल कप्पइ अम्हं सरीरवाउसियाए होत्तए, तुम च णं
अज्जे ! सरीरवाउसिया अभिक्खण अभिक्खणं हत्थे धोवेसि
जाव चेएसि, तं तुमं ण देवाणुप्पिए । तस्स ठाणस्स आलो-
एहि जाव पडिवज्जाहि, तएण सा सूमालिया गोवालियाणं
अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी
अपरिजाणमाणी विहरइ, तएण ताओ अज्जाओ सूमालियं
अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलति जाव परिभवति,
अभिक्खणं अभिक्खण एयमट्ठ निवारंति, तएणं तीए सूमा-
लियाए समणीहिं निगंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

को भोग्य । ऐसा विचार कर उसने निदान बघ किया और करके फिर
वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आगई ॥ सू० १४ ॥

अथ कथं अने करीने ते आतापन भूमिथी आतापना लधने पोताना स्थाने
आवी गइ ॥ सूत्र १४ ॥

ततः खलु गोपात्रिणा आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषुः एव खलु हे देवानुप्रिये ! आर्ये ! त्वं श्रमण्य-तपस्विन्यः निर्ग्रन्थ्यः ब्राह्मभ्यन्तरग्रन्थि-रदिताः ईर्ष्यामिता यावद् गुह्यब्रह्मचर्यधारिण्य' स्म', नो खलु ब्रह्मतेऽस्माकं सरीरावसिषाए' शरीरवद्विज्ञा 'होत्तए' भवितुम् इति त्वं च खलु हे आर्ये ! शरीरवावसिषा जाता अमोघण=पुन पुनरतिशयेन हस्तौ धामि =प्रक्षालयसि, यावत्-स्थानं वा शय्या वा म्याज्यायभूमिं वा जलेनाभ्युक्ष्य 'चेणसि' चेतयसि स्नानादिकं करोषीत्यर्थः । तत्=तस्मात् त्वं खलु हे देवानुप्रिये ! तत् स्थानम् 'आलोणहि' आलोचय, स्नातिचारं प्रकाशयेत्यर्थः । यावत् 'पड्विज्जाहि' प्रतिपश्यस्व=प्रायश्चित्तं स्वीकुरु' इत्यर्थः । ततः खलु सा सुकु-

लिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से कहा-(एव खलु देवानुप्रिया ! अज्जे अम्हे समणीओ निर्गंधीओ ईरियात्तमियाओ जाव यमचेर धारिणिओ, नो खलु कप्पह् अम्ह सरीरावसिषाण होत्तए, तुमच णं अज्जे सरीरावसिषा, अभिक्खण २ हत्थे धोवेसि, जाव चेणसि) हे देवानुप्रिये ! हम आर्याणि निर्ग्रन्थ श्रमणिया हैं । ईर्ष्या आदि पांच सम्मि-नियोंका पालन करती हैं । नौकोटि ब्रह्मचर्य संहितमहाव्रतको पालन करती हैं । अतः हम लोगों को अपने शरीर के संस्कार करने में परायण बनना कल्पित नहीं है । हे आर्ये ! तुम शरीर संस्कार करने में परायण बन चुकी हो । बार २ तुम हाथों को धोनी हो यावत् स्नान को शय्या को, और स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानीसे धोकर नियत करती हो (त तुम णं देवानुप्रिये ! तस्स ठाणस्म आलोणहि, जाव पड्विज्जाहि) इस लिये हे देवानुप्रिये ! तुम उस स्थान की आलोचना करो-अपने अतिचारों को प्रकाशित करो यावत् उनका प्रायश्चित्त लो ।

सुकुमारिका आर्याने आ प्रभाषे कलु उे-(एव खलु देवानुप्रिया ! अज्जे अम्हे समणीओ निर्गंधीओ ईरियात्तमियाओ जाव यमचेर धारिणिओ नो खलु कप्पह् अम्हे सरीरावसिषाण होत्तए, तुम च णं अज्जे सरीरावसिषा, अभिक्खण २ हत्थे धोवेसि जाव चणसि) हे देवानुप्रिये ! अम्हे आर्याओ निर्ग्रन्थ श्रमणीओ छीओ, ईर्ष्या वजेरे पाच सम्मितीओनु अम्हे पालन करीओ गीओ, नव कोटिओ ब्रह्मचर्य महाव्रत धारण करीओ छीओ ओथा पोताना गरीरने स-स्कार करेओ ओ आपणु माओ योग्य जणाय नहि हे आर्ये ! तम्हं यणीन्ना संस्था रमा परायण यनी बूझी छी । तम्हं बार २ हाथीने धुओ छी यावत् स्थानने, शय्याने अने स्वाध्यायभूमिने पहिलेहीं न पानीसे धोई नहि करी छी । (त तुम णं देवानुप्रिये ! तस्स ठाणस्स आलोणहि, जाव पड्विज्जाहि) अम्ह

પડતા ' સરીલ્લકુતા સરીલ્લકુતાગરાગા જાગા ગાગનાત્, ગરીસ ૨ પુનઃ
પુનઃ દસો ' ધાવેડ ' ધારતિ=વસાવતિ, વાસી ધારતિ ' સીંગ ' ગોપેન્દ્રિ
ધારતિ, ગુરુ ધારતિ, ' ધગારાડ ' માગાતરાગિ ધારતિ ' કાગાગાદ ' કક્ષા
ન્તરાગિ ધારતિ, ' ગોગાગાડ ' ગુગાન્તરાગિ ગુલવદેશ ધારતિ, યગગડ ' ઠાળ
વા ' સ્થાનગ-ઉપવેગનાર્થે સ્થાન ' સેજ્જ ગા ' ગચ્ચા ગા ' નિસીહિય ગા ' નેપે-
ધિકી સ્થાનગભૂમિ વા ' ચેણડ ' ચેતયતિ-કરોતિ, તત્રાપિ ચ ગગડૂ પૂર્મિગોડકેન
' અન્મુસ્લહ્તા ' અન્મુસ્લહ્તા=અભિગિચ્ચ, તત્ર પથાત્ ' ઠાળ ગા ' સ્થાન વા ગચ્ચા
વા નેપેધિરી ગા ચેણડ ' ચેતયતિ-કરોતિ ।

જાયા યાત્રિ હોત્યા-અભિક્ષણ ૨ હ્ત્યે યોવેહ, પાળ ધોવેહ, સીસ
ધોવેહ, મુહ ધોવેહ, ધળતરાહ ધોવેહ, કક્ષાતરાહ ધોવેહ, ગોગ્ગતરાહ
ધોવેહ) વહ છુકુમારિકા આર્યા જરીર સસ્કાર કરને મેં મી તત્પર થન
ગઈ । વાર ૨ વહ જાથ યોને લગી, પૈર ધોને લગી, શિર ધોને લગી,
મુગ્ધ ધોને લગી, સ્તનાતરોં કો ધોને લગી, કક્ષાઓં કો ધોને લગી
ઔર ગુલ પ્રદેશ કો ધોને લગી । (જત્થ ણ ઠાળ વા સેજ્જ વા નિસીહિય
વા ચેણડ તત્થ વિય ણ પુગ્ગામેવ ઉદ્દણ અન્મુસ્લહ્તા તઓ પચ્છા ઠાળ
વા ૩ ચેણડ, તણ તાઓ ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ સૂમાલિય અજ્ઞ એવ
વયાસી) હસી તરહ વહ જતાં અપના બેઠને કે લિધે સ્થાન વનાતી,
જાગ્યા-પાથરતી, સ્વાધ્યાય સ્થાન કરતી, વહા મી વહ પહિછે સે હી
હસે જલ સે સીંચ દેતી-તથ જાકર વહાં વહ અપના સ્થાન, જાગ્યા એવ
સ્વાધ્યાય ભૂમિ નિયત કરતી । ઇસ પ્રકાર કી પરિસ્થિતિ દેલ્લ કર ગોવા

હોત્યા-અભિક્ષણ ૨ હ્ત્યે ધોવેહ, પાળ ધોવેહ, સીસ ધોવેહ, મુહ ધોવેહ, ધળતરાહ
ધોવેહ, કક્ષાતરાહ ધોવેહ ગોગ્ગતરાહ ધોવેહ) તે છુકુમારિકા આર્યા જરીર-સસ્કાર
રના કામમા પડેવાઈ ગઈ વારવાર હાથ ધોવા લાગી, પગ ધોવા લાગી, માથુ
ધોવા લાગી, મુગ્ધ ધોવા લાગી, સ્તનોના વચ્ચેના સ્થાનને ધોવા લાગી, બગલોને
ધોવા લાગી, અને શુભ સ્થાનોને ધોવા લાગી (જત્થ ણ ઠાળ વા સેજ્જવા નિસી
હિય વા ચેણડ તત્થ વિ ણ પુગ્ગામેવ ઉદ્દણ અન્મુસ્લહ્તા તઓ પચ્છા ઠાળ
વા ૩ ચેણડ તણ તાઓ ગોવાલિયાઓ અજ્ઞાઓ સૂમાલિય અજ્ઞ એવ વયાસી)
આ પ્રમાણે જ તે જના પોતાનુ બેસવાનુ સ્થાન નક્કી કરતી, કે પથ રી પાથરતી
અથવા તો સ્વાધ્યાય માટે બેસવાનુ સ્થાન નક્કી કરતી ત્યા પહેલેથી જ તે સ્થાનને
પાણી છાટતી હતી અને ત્યારપછી તે ત્યા પોતાનુ સ્થાન-જાગ્યા અને સ્વાધ્યાય
સ્થાન નક્કી કરતી હતી આ જાતની પરિસ્થિતિ બેઠને ગોવાલિકા તે

भूतः, यदा=यावत् काल खलु अहमनारवासमभ्ये वमामि, तदा=तावत् काल खल्वह 'अप्पसा' आत्मवशाग्नाधीना आसम्, यदा खल्वह मुण्डा भूत्वा प्रव्रजिता तदा खल्वह परवशा पराधीना जाता । 'पुर्व्वि' पुरा पूर्व्वस्मिन् काले च खलु 'मम' मा श्रमण्यः 'आदायति' २ आद्वियन्त, तथा परिजानन्ति, उदानीं नो आद्वियन्ते नो परिजानन्ति, 'त' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुर्भूत प्रभातया रजन्या यावज्ज्वलति सूर्ये अभ्युदते गोपालिकानामार्याणामन्तिमात् प्रतिनिष्क्रम्य 'पाडिण्क' पार्यक्य=पार्यक्याश्रय पृथग्भूतम् अन्ग्रमित्यर्थः 'उव-

यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(जयाण अम्ह आगारवासमज्जे वसामि तयाण अह अप्पसा जयाण अह मुडे भवित्ता पव्वइया तयाण अह परवसा, पुर्व्वि च ण मम समणीओ आदायन्ति, इयाणि णो आदति २ तं सेय खलु मम कल पाउंगोवालियाण अतियाओ पडिनिक्खमित्ता पडिण्क उवस्सयं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ) जन तक मे घर में रही तब तक स्वाधीन रही-और अब जब से मुंडित होकर प्रव्रजित हुई हूँ तब से पराधीन बन रही हूँ । पहिले ये श्रमणिया मेरा आदर करती थी-मेरी बात मानती थी परन्तु अबतो कोई भी न मेरा आदर करती है-और न मेरी बात ही मानती है । इस लिये मुझे अब वही उचित होगा कि मैं दूसरे दिन जब प्रातः काल होने पर सूर्य प्रकाश से चमकने लगे-तब मैं गोपालिकों आर्याके पास रो निकल कर किसी दूसरे भिन्न उपा

शेक टोठ ठरी त्यारे तेने आ जतने आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उद्भव्ये ठे (जयाण अम्ह आगारवासमज्जे वमामि तयाण अह अप्पसा जयाण अह मुडे भवित्ता पव्वइया तयाण अह परवसा पुर्व्वि च ण मम समणीओ आदायति, इयाणि णो आदति २ तं सेय खलु मम पाउंगोवालियाण अति याओ पडिनिक्खमित्ता पडिण्क उवस्सयं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्ठु एव सपेहेइ) न्या मुधी हु घरमा रही त्या मुधी स्वाधीन रही पणु न्यारथी मुंडित थईने प्रव्रजित थई हु त्यारथी पराधीन थई गई हु पडेला आ श्रमणीओ भारे आदर करती હતી, भारी बात मानती હતી पणु अत्यारे तो કોઈ પણ भारે આદર નથી કરતુ અને भारી बात પણ માનતુ નથી તેથી भारે માટે એ જ ઉચિત છે કે ણી? દિવસે મવારે સૂર્ય ઉદય પામતા જ હુ ગોપાલિકા આર્યાની પાસેથી નીડળીને કોઈ ણીના ઉપાશ્રયે જતી રહુ છું-તેને તેણે વિચાર કર્યો (સપેહિયા) વિચાર કરીને તે (કહવા)

मारिका आर्या गोपालिकानामार्याणामेवमर्थ 'नो आढाह' नाद्रियते, नो परिजानीते तद्वाने ध्यान न ददाति, । अनाद्रियमाणा=भनार कुरती, अपरि जानाना=ध्यानमददाना विहरति=ग्राहते । तन' गलु ताः गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामभीक्ष्णं=पुनः पुनरभिदीर्षति विवर्ति निवर्ति यावत् परि भवन्ति । अभीक्ष्णं=पुनः पुनः, 'एवमद्वं' एवमर्थम् उक्तमर्थं शरीरशोभाकरण जलमक्षेपादिक निवारयन्ति=मनिषेयन्ति । तन' गलु 'तीण' तस्याः सुकुमारिकाया श्रमणीभिर्निग्रन्थीभिः दीन्यमानाया यावद् सार्थमाणाया अपमेतदूषाः=वक्ष्यमाणस्वरूप आध्यात्मिको यावन्मनोगतः सङ्कपो-तिहारः समुद्भवतः=माह

(तएण सा सुमालिया गोपालियाण अज्जाण एवमद्व नो आढाह, नो परिजानाह, अणाढायमाणी, अपरिजानमाणी, विहरइ) सुकुमारिका आर्या ने गोपालिका आर्या के इस कथन रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से नहीं देखा, उनके चचनों पर उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इस तरह उनके चचनों का अनादर और उन पर ध्यान नहीं देती हुई वह रहने लगी (तएणं ताओ अज्जाओ सुमालिय अज्ज अभिस्खण २ एवमद्व निवारंति, तएण तीसे सुमालियाण समणीहि निगधीहि हीलि जज्जाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयास्वे अज्जत्थिए जाव समुपज्जित तथा) इस के पश्चात् उन गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या की बार २ अवहेलना की, उस पर वे गुस्सा भी हुई उसकी निंदा भी की यावत् उसका तिरस्कार भी किया। बार २ उसे शरीर की शोभा करने से और जल का सिंचन करने से रोका। तब उसे इस प्रकार का

छे देवानुप्रिये ! तब ते स्थाननी आलोचना करे-पोताना अतिथारने प्रका शित करे यावत् तेना भाटे प्रायश्चित्त करे (तएण सा सुमालिया गोपालियाण अज्जाण एवमद्व नो आढाह, नो परिजानाह, अणाढायमाणी, अपरिजानमाणी, विहरइ) सुकुमारिका आर्याओ गोपालिका आर्याओ आ कथनरूप अर्थने आदरनी दृष्टिही जेयो नहि, तेभना वचनेओ उपर तेणे कुछ पक्ष विचार क्यो नहि आ दीते तेभना वचनेओ अनादर अने ते प्रत्ये जेहरकार यउने ते पोताने वधत पसार करवा लागी (तएण ताओ अज्जाओ सुमालिय अज्ज अभिस्खण २ एवमद्व निवारंति, तएण तीसे सुमालियाण समणीहि निगधीहि हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयास्वे अज्जत्थिए जाव समुपज्जित तथा) त्बारपछी ते गोपालिका आर्याओ ते सुकुमारिका आर्याओ वारवार अवहेलना करी, तेनी तरङ्ग तेभणे गुस्सेओ पक्ष यतायेओ, तेना निंदा करी यावत् तेना तिरस्कार पक्ष क्यो तेने वारवार शरीरने शोभाववा जइल तेभओ जणउ पि अदल

सस्य 'उपाश्रयम् उपसंवध विदुर्मिति' राण्य मंप्रेक्ष्य दन्त्ये मादुर्भूतममा-
ताया रजन्या यापञ्चलनियमै उदिते ति गोपालिका नामार्गणामन्तिनाम् प्रति
निष्प्रामति, प्रतिनिष्प्रम्य 'पाटिपद' मार्थम्य-गृह्यगृह्यमन्यमुपाश्रयमुपसंवध
खलु विहरति-आगत स्म।

ततः खलु ता सुकुमारिका आर्या 'अणोहट्टिया' अनप्यघट्टिका अपवार-
रहिता-उच्छृङ्खला अभिनययतीति यात्र 'अनिवारिया' अनिवार्या दुर्निवा-
'सच्छदमई' सच्छदमतिः-गारित्रधर्मानुरोधरहितभाता, अमीक्ष्य-पुन पुन-
ईस्तौ धावति-प्रक्षालयति यावत्-स्थान या शय्या या नेपेथिनी वा जलेनाभ्युक्ष्य-
चैतयति-स्थानादिक करोतीत्यर्थः। तत्रापि च खलु पार्श्वस्था, पार्श्वम्यविहारिणी,

अथ मे चली जाऊँ इस प्रकार का उमने प्रचार किया (सपेक्षिता)
ऐसा विचार करके (करल पा० गोपालियाण अज्जाण) दूसरे ही दिन-
प्रातः काल जब सूर्योदय हो गया-तब वह गोपालिका आर्या के (अति-
याओ) पास से (पट्टिनिक्रमिस्ता) निकल कर-(पट्टिपदक) निष्प्र-
दूसरे (उवस्सय) उपाश्रय को (उवसपज्जिजाण विहरइ) प्राप्तकर,
वहा रहने लगी-अर्थात् दूसरे उपाश्रय में चली आई। (तण्ण सा
सुमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छदमई अभिक्खण
अभिक्खण हत्थे धोवेइ जाव चेणइ) यरा वर सुकुमारिका आर्या बिना,
किसी रोक टोक के स्वच्छद घनकर रहने लग गई। वहाँ उसे कोई
रोकने वाला रहा नहीं-सो जो मन में आया वह करने लग गई-इस-
तरह वह चोरित्र धर्म के भाव से रहित बन गई। बार २ अपने हाथों
को धोती यावत् स्थान, शय्या, और स्वाध्याय की भूमि को धोकर वहा

गोपालियाण अज्जाण) भीजे दिवसे सवारे न्यारे सूर्य उदय पाभ्यो त्यारे ते
गोपालिका आर्यानी (अतियाओ)-पासेथी (पट्टिनिक्रमिस्ता) नीकणीने (पट्टिपदक)
भीण (उवस्सय) उपाश्रयने (उवसपज्जिजाण विहरइ) भेणवीने त्या रेडेवा
लागी, ओटवे के भीण उपाश्रयमा जाती रही (तण्ण सा सुमालिया अज्जा
अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छदमई अभिक्खण हत्थे धोवेइ जाव चेणइ) त्या
ते सुकुमारिका आर्या कोठपणु जतनी रोक टोक वगर स्वच्छतापूर्वक रेडेवा
लागी त्या तेने कोठ रोक-टोक करनार हत्तु नहि ओटवे ने प्रभाण्णे तेनी
धच्छा यती ते प्रभाण्णे ज ते आथरती हती आ रीते ते आरित्र धर्माना
भावथी रहित जनी गध बारवार ते पोताना हाथेने धोती हती यावत् स्थान,
पथारी अने स्वाध्यायना स्थानने धोधने त्या पोतानु स्थान नच्छी करती-हती

अवसन्ना, अवसन्नविहारिणी, कुशीला कुशीलविहारिणी, समक्ता, समक्तविहारिणी, बहूनि वर्षाणि आमण्यपर्याय पालयति, पालयित्वा अर्धमामिक्या सलेखनयात्स्य स्थानस्याऽनालोचिता अप्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा, ईशाने कल्पेऽन्यत मस्मिन् विमाने मायुर्यादि पाचनाममये आचार्याणां विमानसख्याया विस्मरणेन निश्चयाभावादन्यतमस्मिन्नित्युक्तम्, देवगणिरुतया उपपन्ना । तत्रैकैकासा-देवीनां नवपल्योपमानि स्थितिः प्रवृत्ता ॥ सु० १५ ॥

अपना स्थान नियत करती । इस प्रकार (तत्त्र विद्य ण पासत्था पासस्थ विहारी, ओसण्णा ओसण्णविहारी कुमीलारं समत्तारं बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउण्ड) वहा उम सुकुमारिका ने पार्श्वस्था पार्श्वस्थ विहारिणी, अवसन्ना, अवसन्न विहारिणी, कुशीला, कुशील विहारिणी, समक्ता, समक्त विहारिणी बनकर अनेक वर्षों तक आमण्य पर्याय का पालन किया (पाउणिस्ता अद्धमासियाए) पालन करके वह अर्धमास की सलेखना धारण कर (कालमासे) अपनी मृत्यु के अपसर (काल किच्चा) पर मरी-सो मरकर (अणालोइय अपडिक्कता) अपने पापों की अनालोचना करने से वह प्रतिक्रान्त नहीं बन सकने के कारण (ईसाणे कप्पे) ईशानकल्प में (अण्णयरसि विमाणसि) किसी एक विमान में (देवगणियत्ताए उववण्णा) देवगणिका के रूप में उत्पन्न हुई । (तत्थेगइयाण देवीण नवपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, तत्थण सूमा-लियाए देवीए नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता) वहा कितनिक देवियों

आ रीते (तत्त्र विद्य ण पासत्था पासस्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुशीलाऽसत्ता २ बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउण्ड) त्या ते सुकुमारिकाये पार्श्वस्था, पार्श्वस्थ विहारिणी, अवसन्ना, अवसन्न विहारिणी, कुशीला, कुशील विहारिणी, समक्ता, समक्त विहारिणी थधने धण्ण वषो सुधी आमण्य पर्याय पालन कर्तुं (पाउणिस्ता अद्धमासियाए) पालन करीने ते अर्धमामिक्या सलेखना धारण करीने (कालमासे) पोताना मृत्यु काणे (काल किच्चा) ते मरेणु पाभी अने मरेणु पाभीने (अणालोइय अपडिक्कता) पोताना पापानी आलोचना न करवाथी प्रतिक्रान्त न बननी शक्वना कारणे ते (ईसाणे कप्पे) ईशान कल्पमा (अण्णयरसि विमाणसि) कैई ऐक विमानमा (देवगणियत्ताए उववण्णा) देवगणिकाना रूपमा जन्म पाभी (तत्थेगइयाण देवी ण नवपलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता, तत्थण सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता) त्या उटलीक देवीओनी स्थितिचप पत्थोपननी कडे

મૂલમ્—તેર્ણ કાલેણ તેણ સમર્પણં દ્રહેત્ર જંબુદ્વીપે ભારહે વાસે
 પંચાલેસુ જળવણસુ કપિલપુરે નામ નયરે હોત્થા, વન્નઓ તત્થ
 ણં દુવણ નામં રાયા હોત્થા, વન્નઓ, તસ્સ ણં ચુલનીદેવી
 ધટ્ટજ્જુણે કુમારે જુવરાયા, તણં સા સૂમાલિયાદેવી તાઓ
 દેવલોયાઓ આઠમ્મવણં જાવ ષડ્ધત્તા હંહેવ જંબુદ્વીપે દ્વીપે ભારહે
 વાસે પંચાલેસુ જળવણસુ કપિલપુરે નયરે દુવયસ્સ રણ્ણો ચુલ-
 નીણ દેવીણ કુર્ચ્છિસિ દારિયત્તાણ પચ્ચાયાયા, તણ સા ચુલ-
 નીદેવી નવણ્હ માત્તાણ જાવ દારિયં પયાયા, તણં સા તીસે
 દારિયાણ નિવ્વત્તવારસાહિયાણ હમ ણ્યારૂવ ગોણં ગુણાણિપ્પણં
 નામધેજ્જં જમ્હાણ એસ દારિયા દુવયસ્સ રણ્ણો ધૂયા ચુલનીણ
 દેવીણ અત્તયા ત હોઠ ણં અમ્હં હમીસે દારિયાણ નામધિજ્જે
 દોવર્હ, તણં તીસે અમ્માપિયરો હમ ણ્યારૂવ ગુણ ગુણાણિ
 પ્પન્ન નામધેજ્જ કરિતિ દોવર્હ, તણ સા દોવર્હ દારિયા પંચ
 ધાઇપરિગ્ગહિયા જાવ ગિરિકદરમહ્છીણ હવ ચપગલયા નિવાય

કી સ્થિતિ નૌ પલ્લોપમ કી કહી ગઈ છે—સો હસ સુકુમારિકાદેવી કી
 વહા નૌ પલ્લોપમ કી સ્થિતિ હુઈ । યહા જો ” કિસી એક વિમાન મેં ”
 એસા અનિશ્ચયાત્મક પદઆધો છે ઉસકા તોત્પર્ય યહ છે કિ માધુર્યાદિ
 વાચના કે સમય મેં આચાર્યોં કો વિમાન સંખ્યા કા વિસ્મરણ હો જાને
 સે ઉસકા નિશ્ચય નહી રહા । અતઃ એસા કહાં ગયા છે ॥ સૂ. ૧૫ ॥

વામા આવી છે તે તે સુકુમારિકા દેવીની પણ ત્યા નવપલ્લોપમની સ્થિતિ
 થઈ અહીં જે “કોઈ એક વિમાનમા” આ બાતનુ અનિશ્ચયાત્મક પદ આપ્યું
 છે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે માધુર્યાદિ વાચનાના સમયે આચાર્યોંને વિમાન
 સંખ્યાનું વિસ્મરણ થઈ જવાથી તે વિધે નિશ્ચય રહ્યો નહિ એથી આ પ્રમાણે
 હેવામા આપ્યું છે ॥ સૂ. ૧૫ ॥

निन्वाघायंसिसुहंसुहेणं परिवड्डइ । तएणं सा दोवई रायवरकन्ना
उम्मुक्कवालभावा जाव उक्किट्टसरीरा जाया जावि होत्था, तएणं
तं दोवई रायवरकन्नं अणण्या कयाई अंतेउरियाओ पहायं
जाव विभूसिय करोति करित्ता दुवयस्स रण्णोपाएवंदिउं पेसति
तएण सा दोवइ राय० जेणेव राया तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहण करेइ, तएणं से दुवए
राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ निवेसित्ता दोवइए रायवर-
कन्नाए रुवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ
रायवरकन्नं एव वयासी-जस्स णं अहपुत्ता । रायस्स वा जुवरायस्स
वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि तत्थ ण तुम सुहिया वा
दुक्खिया वा भविज्जासि, तएण मम जावजीवाए हिययडाहे
भविस्सइ, तं ण अहं तत्र पुत्ता । अज्जयाए सयंवर विरियामि,
अज्जयाए ण तुम दिण्णसयवरा जण्णं तुम सयमेव रायं वा
जुवराय वा वरेहिसि से ण तव भत्तारे भविस्सइ त्तिरुहु ताहिं
इत्ताहिं जाव आसासेइ आसासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १६ ॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव
जम्बूद्वीपे भारते वर्षे पञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुर=काम्पिल्यपुरनामक नगर

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस
समय में (इहैव जम्बूद्वीपे भारते वासे पञ्चालेषु जनपदेषु कपिलपुरे नाम
नगरे होत्था) इसी जम्बूद्वीप में भारत वर्ष में पांचाल जनपद में

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते क्षणे अने ते समये (इहैव जम्बूद्वीपे
भारतवासे पञ्चालेषु जनपदेषु कपिलपुरे नाम नगरे होत्था) आ जम्बूद्वीपभा
भारत वर्षभा पांचाल जनपदभा कपिलपुर नामे नगर छत्तु (वनजो) आ
नगरनु वस्तुन औपपातिक सूत्रभा करवाभा आग्य छे त्याथी पाठकेअने नक्षी

मासीत्, वर्गक=अस्य नगरस्य वर्णनमपपातिकमप्रादु बोध्यम् । तत्र सख्य
द्रुपदो नाम राजाऽसीत्, चुलनी नाम्नी त्री मायाऽभवत्, तस्या पुत्रः 'धृष्ट-
जुणो' धृष्टद्युम्नो नाम इमारो युवराजोऽभवत् ।

ततः खलु सा सुकृमारिका देवी तस्मात् देवलोकदायु क्षयग यावत्-
व्युत्था इष्टैर् जम्बूद्वीपे द्वीपे भारतं तत्र पांचालेषु जनपदेषु कापित्यपुरे नगरे
द्रुपदस्य राज्ञः=चुलन्या देव्याः कुक्षौ दारित्तया=पुत्रीत्वेन 'पंचापाया' प्रया-
याता=नमुत्पन्ना । ततः खलु सा चुलनीदेवी नमाना मोमानां ननुमतिपणानां
यावत् दारिका पुरीं गता=प्रजनितवती । ततः खलु सा तस्या दारिकाया

कापित्यपुर नाम का नगर था । (चनओ) उम नगर का वर्णन औप-
पातिक सूत्र में किया गया है सो तर्ज से जान लेना चाहिये । (तत्थ
ण दुवए नाम राया होत्था वन्नओ तस्म ण चुलणीदेवी, धृष्टजुणे कुमार
जुवराया, तण्ण सा सुमालिया देवी ताओ देवलोकयाओ आउत्तावण
जाव चइत्ता इहेव जजुदीवे दीवे, भारहे वासे पांचालेसु जणवएसु कपि
लपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए
पंचापाया) वहाके राजाका नाम द्रुपद था । राजाका वर्णन भी पहिले
जैसा ही जानना चाहिये । इस की रानी का नाम चुलनीदेवी था ।
कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था-यह युवराज था । वह सुकृमारिका आर्या
का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के
कारण चबकर इसी जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पांचाल
जनपद में कापित्यपुर नगर में द्रुपद राजा की चुलनीदेवी की कुक्षि में
पुत्री रूपसे अवतरित हुआ । (तण्ण सा चुलणीदेवी नवण्ह मासाण जाव

देवु लेधओ (तत्थ ण दुवए नाम राया होत्था, वन्नओ, तस्म ण चुलणी देवी
धृष्टजुणे कुमारे, जुवराया, तण्ण सा सुमालिया देवी ताओ देवलोकयाओ आ-
उत्तावण जाव चइत्ता इहेव जजुदीवे दीवे भारहे वासे पांचालेसु जणवएसु कपिल
पुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पंचापाया) त्वाना
राजानु नाम द्रुपद इत्तु राजानु वरुण पथु औपपातिक सूत्रमा वक्षित ओषिक्
राजानी लेमञ्ज जल्लि देवु लेधओ-तेनी, राणीनु नाम चुलनी, देवी इत्तु तेना
पुत्रनु नाम धृष्टद्युम्न इत्तु धृष्टद्युम्न, युवराज इतो, सुकृमारिका आर्यानां एव
ते आल देवलोकथी आयु वगेरे क्षय थवा गहल युवीने आन जजुद्वीप
नामना, द्वीपमा, भरत क्षेत्रमा, पांचाल, जनपदमा, कापित्यपुर नगरमा द्रुपद
राजानी चुलनी देवीना उदरमा पुत्री रूपे अवतरित थये । (त एण सा चुलणी

‘निम्बत्तारसाहियाए’ निम्बत्तद्वादशाहिकाया=द्वादशेऽहनि संप्राप्ते इदमेतद्रूप
नाम कृतवती यस्मात् खलु एषा दारिका द्रुपदस्य राज्ञो ‘धूया’ दुहिता-पुत्री
चुलनीया देव्या ‘अत्तिया’ आत्मजा=अहजाता, तस्माद् भवतु खल्वस्माकमस्या
दारिकाया नामधेय ‘द्रौपदी’ इति । ततः खलु तस्या अम्बापितरौ इमेतद्रूप
गोणे=गुणोभास गुणनिष्पन्न=गुणसपन्न, नामधेय कुरुतः । ततः सा द्रौपदी दारिका
पञ्चधात्रीभिर्यावद् गिरिकन्दरमालीने चम्पकवृता निर्वातनिर्व्याघाते सुखे
सुखेन परिवर्धते स्म ।

दारिय पयाया तएण सा तीसे दारियाए निम्बत्तारसाहियाए इम एया
रुव गोण गुणणिष्फण नामधेज्ज जम्हाण एस दारिया दुवयस्स रण्णो
धूया चुलणीए देवीए अत्तिया त होउण-अम्ह इमीसे दारियाए नामधिज्जे
दोवई) गर्भ के जब नौ मास अच्छी तरह समाप्त हो चुके तब चुलनी-
देवी ने एक पुत्री को जन्म दिया । पुत्री को उत्पन्न हुए १२ वां दिन
लगा-तब चुलनी मानाने उसका इस रूप से गुणनिष्पन्न नामरखा क्यों
कि यह द्रुपदराजा की पुत्री है और सुख चुलनी के उदर से उत्पन्न हुई
है-इसलिये इस हमारी कन्या को नाम द्रुपदी रहो इस तरह के विचार-
से (तीसे अम्मा पियरो) माता पिता ने उसका (इम एयारुव गुण
गुणनिष्फन्न नामधेज्ज करिंति दोवई) इस तरह का गुणनिष्पन्न नाम
द्रौपदी रख दिया । (तएण) इसके बाद-(सा दोवई दारिया पचधाइ
परिगहिया जाव गिरिकन्दरमल्लीणइव चम्पगलया निवायनिव्वाघायसि
सुह सुहेण परिवड्डेइ) वह द्रौपदी दारिका पाच धायमानाओं से युक्त

देवी नवण्ह मासाण जाव दारिय पयाया तएण सा तीसे दारियाए निम्बत्तार
साहियाए इम एयारुव गोण गुणणिष्फण नामधेज्ज जम्हाण एस दारिया
दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तिया त होउण अम्ह इमीसे दारियाए
नामधिज्जे दोवई) गर्भना नवमास न्यारे ‘स’पुष्प’पणे समाप्त थया तयारे
चुलनी देवीअे अेक पुत्रीने जन्म आय्ये पुत्रीना जन्म पछी न्यारे अगि
थार दिवस पूरा थया अने गारभा निवम गउ थये तयारे चुलनी माताअे
विचार कये ० दुपद राजनी आ न्यापुत्री छे अने भारा गर्भथा जन्म
पाभी छे आ प्रभाअे आनु नाम द्रौपदी राणीअे तो साइ आभ विचारीने
(तीसे अम्मापियरो) मातापिताअे ‘(इम एयारुव गुण गुणनिष्फन्न नाम
धेज्ज करिंति दोवई) आ जीते से कन्यानु शुण निष्पन्न नाम द्रौपदी पाउथु
(तएण) तयारपी (सा दोवई दारिया पचधाइपरिगहिया जाव गिरिकन्दर
मल्लीण इव चम्पगलया निवायनिव्वाघायसि मए मएण परिगहिये) दौपदी

मासीत्, वर्णकाः=अस्य नगरस्य वर्णनमीपपातिरुग्रपाद् बोध्यम् । तत्र 'सह
द्रुपदो नाम राजाऽऽसीत्, चुलनी नाम्नी देवी भार्याऽभवत्, तस्य पुत्रः 'धृष्ट-
ज्युणे' धृष्टद्युम्नो नाम कुमारो युवराजोऽभवत् ।

ततः खट्व गा सुकृमारिका देवी तस्माद् देवलोकदायुःस्येन यावत्-
स्युक्ता इत्येव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते तं पचालेषु जनपदेषु कापिल्यपुरे नगरे
द्रुपदस्य राज्ञः=चुलनी देव्याः कृत्वा दारिद्र्यतया=पुत्रीभ्यः 'पञ्चायाया' प्रया-
याता=गच्छत्या । ततः गत्वा मा चुलनीदेवी नवाना भोगानां यद्व्यतिर्णाना
यान् दारिका पुरीं प्रजाता=प्रजनितवती । ततः खट्व गा तस्या दारिकाया

कापिल्यपुर नाम का नगर था । (चन्नजो) उस नगर का वर्णन औष-
पातिक मूत्र में किया गया है जो उहाँ में जान लेना चाहिये । (तत्थ
ण दुवण नाम राया होत्था वन्नजो तस्स ण चुलनीदेवी, धट्टज्जुणे कुमारे
जुवराया, तण्ण सा सुमालिया दवी ताओ दवल्लोयाओ आउत्तवण्ण
जाव चहत्ता इहेव जम्बूद्वीपे दीपे, भारते वासे पचालेषु जणवण्ण कपि-
ल्लपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीण देवीण कुच्छिन्दि दारियत्ताण
पञ्चायाया) वहाँके राजाका नाम द्रुपद था । राजाका वर्णन भी पहिले
जैसा ही जानना चाहिये । इस की रानी का नाम चुलनीदेवी था ।
कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था—यह युवराज था । वह सुकृमारिका भार्या
का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के
कारण चक्कर इसी जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पचाल
जनपद में कापिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की चुलनीदेवी की कुक्षि में
पुत्री रूपसे अवतरित हुआ । (तण्ण सा चुलणीदेवी नवण्ह मासाण जाव

देवु भेधथे (तत्थ ण दुवण नाम राया होत्था, वन्नजो, तस्सण चुलणी देवी
धट्टज्जुणे कुमारे, जुवराया, तण्ण सा सुमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आ-
उत्तवण्ण जाव चहत्ता इहेव जम्बूद्वीपे दीपे भारते वासे पचालेषु जणवण्ण कपिल-
पुरे नगरे दुवयस्स रण्णो चुलणीण देवीण कुच्छिन्दि दारियत्ताण पञ्चायाया) ताना
राजानु नाम द्रुपद इत्तु राजानु वर्णन पण्य औषपातिक सूत्रमा वर्णित कोषिक
राजानी जेसण्ण लक्ष्मी देवु भेधथे—तेनी, राज्ञीनु नाम चुलनी देवी इत्तु तेनी
पुत्रनु नाम धृष्टद्युम्न इत्तु धृष्टद्युम्न, युवराज इतो, सुकृमारिका भार्याना एव
ते जाना देवलोकथी आयु वगैरे क्षय भवा भूदल, यदीने आर्य, जम्बूद्वीप
नामनाः द्वीपभा, भरतक्षेत्रभा, पचाल-जनपदभा, कापिल्यपुर नगरभा द्रुपद
राजानी चुलनी देवीना उदरभा पुत्री रूपे अवतरित थये । (तण्ण सा चुलणी

निवेद्यति, निवेद्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातविस्मयः=आश्चर्य प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वयमेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीव 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःख भविष्यति ।

तएण से दुवए राया दोवड दारिय अके निवेसेह, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवड, रायवरकन्त एव वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहा द्रुपद राजा था वहा आई। वहा आकर उसने चढ़ना करने के लिये द्रुपद राजा के ज़ोही दोनों पैरों को पकड़ा कि इतने में उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलडस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूँगा वहाँ तुम सुखी और दुःखी दोनों भी हो सकती हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (त ण अहं पुत्ता !

से दुवए राया दोवड दारिय अके निवेसेह, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवड रायवरकन्त एव वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी कन्या राजा द्रुपद छेत्ता त्या गर्ध त्या ज्जने तेहे द्रुपद राजाने वदन करवा भाटे जने पगे। पडउया त्यारे तेज्जाजे द्रौपदी दारि-काने पोताना जेज्जाभा मेसाडी द्रौपदी कन्यारे जेज्जाभा जेसी गर्ध त्यारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना इय, यौवन ज्जने लावण्यथी सविशेष विस्मित थये ज्जने विस्मित थज्जने तेहे ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभाहे कहु— (जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलडस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिय यडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! तु तने जे राजाने के युवराजने लार्थाना इयभा आपीश त्या तुं सुणी पणु थर्ध थर्ध तेम छे ज्जने इणी पणु तेथी ज्जने

તત સલુ સા દ્રૌપદી રાજવરણ્યા ઝમ્મુક્કપાલ્માવા યાત્ વરુપ્ટા, ડરુક્ટ
 ધરીરા જાતા ચાપ્યમર્ત્ત । તન ગલુ તા દ્રૌપદી રાજારણ્યામન્યદા કદાચિદ
 'અને ડરિયાઓ' આન્ત ધુગિય = પ્રન્નાઃ પુત્રર્નિન્યઃ સ્ત્રિયઃ સ્નાતાં યાત્-વન્ના
 કફારત્રિભૂપિતાં કુર્વન્તિ ઋત્ત દ્રુપદસ્ય રાજ પાટી ચન્દિતુ 'પેમેન્તિ' પ્રેપયન્તિ,
 તતઃ સલુ મા દ્રૌપદી રાજવરણ્યા ચર્વણ દ્રુપદો રાજા તર્પેમોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય
 દ્રુપદસ્ય રાજઃ પાદપ્રદણ કરોતિ, તનઃ સલુ મ દ્રુપદો ગત્તા દ્રૌપદી ટાગિકામદ્દે

હોકર હસ તરફ પલને પુપને લગી કિ જિમ તરફ ગિરિ ક્રી કદરા કે
 પ્રદેશમેં ઉત્પન્ન હુઈ ચપકલ્તા ચાગ રહિત નિરુપદ્રવ સ્થાનમેં આનન્દ કે
 સાથ પલતી પુપતી હૈ । (તણ સા દોવઈ રાયવરકન્ના ઝમ્મુક્કપાલ
 ભાવા, જાવ ડરિકટસરીરા જાયા યાચિ હોત્થા, તણ ત દોવઈ રાયવ-
 રકન્ન અળ્ળયા કયાઈ અતે ડરિયાઓ ણ્હાય જાવ વિભૂસિય કરેતિ,
 કરિત્તા દુવયસ્સ રણ્ણો પાપ વદિઝ પેસતિ) વહ રાજવર કન્યા દ્રૌપદી
 ધાલભાવ રહિત હોકર જય યોચન અવસ્થા વાલી હો ચુકી તથા હસ કે
 શરીર મેં લાયળ્ય કી ચમક સે વિપય સૌન્દર્ય આ ગયા-અતઃ ડસ સમય
 વહ વિશેષરૂપ સે ડરુક્ટ શરીર વાલી વનગઈ । કિસી ાક દિન કી વાત
 હૈ કિ અતઃ પુર કી સ્ત્રિયોં ને દ્રૌપદી કો સ્નાન કરાકર યાવત્ વજ્રાલ
 કાર સે વિભૂષિત કિયા-ઔર વિભૂષિત કર કે દ્રુપદ રાજા કી વરણ
 વંદના કરને કે લિયે મેજ દિયા (તણ સા દોવઈ રાયઽ જેણેવ દુવપ
 રાયા તેણેવ ડવાગચ્છઈ, ડવાગચ્છિત્તા, દુવયસ્સ રણ્ણો પાપગમ્હણ કરેઈ,

હારિત પાથ ધાયમાતાઓથી યુક્ત થઈને આ પ્રમાણે લાલિત પાલિત થવા
 માઠી જેમકે પર્વતની કદરાના પ્રદેશમાં હપન્ન થયેલી અપકલ્તા નિર્વાત,
 નિરુપદ્રવ સ્થાનમાં સુખેથી મોટી થતી ન હોય । (તણ સા દોવઈ રાયવર
 કન્ના ઝમ્મુક્કપાલમાવા જાવ ડરિકટસરીરા જાયા યાચિ હોત્થા, તણ ત દોવઈ
 રાયવરકન્ન અળ્ળયા કયાઈ અતે ડરિયાઓ ણ્હાય જાવ વિભૂસિય કરેતિ કરિત્તા
 દુવયસ્સ રણ્ણો પાપ વદિઝ પેસતિ) તે રાજવર કન્યા, દ્રૌપદી અથપણુ વટાવીને
 જ્યારે યુવાવસ્થા સપન્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના શરીરમાં લાવણ્યના અમકથી
 સવિશેષ સૌન્દર્ય દ્રીષી ઉઠ્યુ તેથી તે વળતે તે વિશેષ રૂપથી ઉત્કૃષ્ટ શરીર
 વાળી થઈ ગઈ હતી કેાંઈ એક દિવસની વાત છે કે રણુવાસની સ્ત્રીઓએ દ્રૌપ
 દીને સ્નાન કરાવ્યુ યાવત્ વજ્રલકારેથી વિભૂષિત કરી અને વિભૂષિત કરીને
 દ્રુપદ રાજાની ચરણ વદણા કરવા માટે મોકલી (તણ સા દોવઈ રાયઽ જેણેવ
 દુવપ રાયા તેણેવ ડવાગચ્છઈ, ડવાગચ્છિત્તા, દુવયસ્સ રણ્ણો પાપ

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविष्मह' जातविस्मयः=आश्चर्य प्राप्तं स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वयं मेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीव 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःखं भविष्यति ।

तएण से दुवण राया दोवड दारिय अके निवेशेइ, निवेशित्ता, दोवईण रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्येण य जायविम्हए दोवड, रायवरकन्न एव वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहा द्रुपद राजा था वहा आई। वहा आकर उसने चढ़ना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योंही दोनों पैरों को पकड़ा कि इतने में उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्मइ) हे पुत्रि ! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूँगा वहाँ तुम सुखी और दुःखी दोनों भी हो सकती हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (न ण अहं पुत्ता !

से दुवण राया दोवड दारिय अके निवेशेइ, निवेशित्ता, दोवईण रायवरकन्नाए रूपेण य जोव्वणेण य लावण्येण य जायविम्हए दोवड रायवरकन्न एव वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी न्या राजा द्रुपद छत्ता त्या गर्ध त्या जधने तेछे द्रुपद राजाने वडन करवा भाटे छने पगे। पडउया त्यारे तेज्जाअे द्रौपदी दारिकाने पोताना जेज्जाभा जेसाडी द्रौपदी न्यारे जेज्जाभा जेसी गर्ध त्यारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना रूप, यौवन अने लावण्यथी भविशेष विस्मित थयो अने विस्मित थधने तेछे ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभाछे कछु—(जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिय यडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! हु तने जे राजाने के युवराजने लायोना रूपमा आपीश त्या तुं सुणी पछु थर्ध शके तेम छे अने दुणी पछु तेथी भने

तत खलु सा द्रौपदी राजवरण्या उन्मुक्तवाग्भावा यावत् दृष्ट्वा, उत्कृष्ट
 घरीरा जाता चाप्यमवत् । ततः खलु तां द्रौपदीं राजवरण्यामन्यदा क्वचिद्
 'अते उरियाओ' आन्तः पुनित्यः प्रश्नः पुरनिन्यः स्त्रियः स्नातां यावत्-वस्त्रा
 ककारविभूषिता कुर्यन्ति कृत्वा मुपदस्य राग पात्री रन्दिह 'पेसति' प्रेषन्ति,
 ततः खलु सा द्रौपदी राजवरण्या ययैव मुपदो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य
 मुपदस्य रागः पादग्रहण करोति, ततः खलु स मुपदो राजा द्रौपदीं दारिकामहे

होकर हम तरह पलने पुपने लगी कि जिम तरह गिरि की कदरा के
 प्रवेशमें उत्पन्न हुई चपकलता वा रहित निरुपद्रव स्थान में आनन्द के
 साथ पलती पुपती है । (तएण सा दोवई रायवरकक्षा उन्मुक्कवाल
 भावा, जाव वक्किट्टसरीरा जाया यावि होत्था, तएण त दोवई रायव
 रकन्न अण्णया कयाई अते उरियाओ ण्हाय जाव विभूसिय करेति,
 करित्ता दुवयस्स रण्णो पाण वदिउ पेसति) वह राजवर कण्या द्रौपदी
 बालभाव रहित होकर जय यौवन अवस्था वाली हो चुकी तब इस के
 शरीर में लावण्य की चमक से विषय सौन्दर्य आ गया-अतः उस समय
 यह विशेषरूप से उत्कृष्ट शरीर वाली बन गई । किसी एक दिन की बात
 है कि अतः पुर की स्त्रियों ने द्रौपदी को स्नान कराकर यावत् बाल
 कार से विभूषित किया-और विभूषित कर के मुपद राजा की चरण
 बंदना करने के लिये भेज दिया (तएण सा दोवई राय० जेणेव दुवए
 राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पायगग्हण करेइ,

दारिका पाय धायभाताओथी युक्ता यधने आ प्रभाण्णे लासित पासित थवा
 भाडी जेभडे पर्वतनी कदराना प्रदेशमा उत्पन्न थयेली अ पडलता निर्वात,
 निःपद्रव स्थानमा सुजेथी भोठी थती न डोय ! (तएण सा दोवई रायवर
 कक्षा उन्मुक्कवालभावा जाव वक्किट्टसरीरा जाया यावि होत्था, तएण त दोवई
 रायवरकन्न अण्णया कयाई अते उरियाओ ण्हाय जाव विभूसिय करेति करित्ता
 दुवयस्स रण्णो पाण वदिउ पेसति) ते राजवर क-या, द्रौपदी अथपण्य वटावीने
 न्यादे युवावस्था सपन्न थई गछ त्यारे तेना शरीरमा लावण्यना चमकथी
 सविशेष सौंदर्य दीपी उठ्यु तेथी ते वभते ते विशेष रूपथी उत्कृष्ट शरीर
 वाली थई गछ छती केछ ओके द्विसनी वात छे के रणुवासनी स्त्रीओओ द्रौप
 दीने स्नान कराओय यावत् पञ्चदशकरोथी विभूषित करी अने विभूषित करीने
 दुपद राजानी यरण्य पदण्य करवा माटे भोकेली (तएण सा दोवई राय० जेणेव
 दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पायगग्हण करेइ, तएण

निवेद्यति, निवेक्ष्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातविस्मयः=आश्चर्य प्राप्तं स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य या भार्यात्वेन स्वयं मेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता या भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीव 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःखं भविष्यति ।

तएण से दुवए राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए ह्वेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ, रायवरकन्न एव वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहा द्रुपद राजा था वहां आई। वहा आकर उसने वदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योंही दोनो पैरो को पकड़ा कि इतने मे उम द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूंगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनो भी हो सकनी हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (तं ण अहं पुत्ता !

से दुवए राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए ह्वेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ रायवरकन्न एव वयासी) तो राजवर कन्या द्रौपदी न्या राजा द्रुपद हुता त्या गर्ध त्या जघने तेछे द्रुपद राजाने वदन करवा भाटे अने पगे। पकड्या त्यारे तेओओ द्रौपदी दारिकाने पोताना ओणाभा ओसाडी द्रौपदी न्यारे ओणाभा ओसी गर्ध त्यारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना इध, यौवन अने लावण्यथी सविशेष विस्मित थयो अने विस्मित थधने तेछे ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभाछे कहु— (जस्स ण अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिय यडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! हु दने जे राजाने के युवराजने लायोनो इधमा आपीश त्या न जणी पण गर्ध शके तेम छे अने हु भी पछु तेथी भने

तत्तत्समात् खल्वहं हे पुत्रि ! तत्र ' अज्जयाण ' अपगया-णु दिग्गसेषु अन्येषु
दिनेषु इत्यर्थः स्वयंवरं वरगामि-वारगामि अतन्नाम्यन्वदिग्गसेष्वेव खलु ख
' दिग्गसयवरा ' दत्तस्वयवरा=द्विगते इति वरः, अन्यगाम्ययवरा दृतः स्वयवरः, स
दत्त कन्याया पित्रादिना गम्यते । दत्तस्वयवरा भविष्यतीति भावः । ' दत्तस्वय
वरा ' इतिपदं व्यानक्षान् पथयति- ' जणं तुम ' इत्यादि । य खलु तत्र स्वयमेव रा
जान वा युवराज या परिष्यसि, स खलु तत्र भर्ता भविष्यति ' इतिकृत्वा=उत्पु-
ष्त्वा ताभिरिष्टाभिर्याचिन्=गान्भिराश्वासयति, आश्वास्य प्रतिनिर्मज्जयति ॥ सू० १६ ।

मूलम्-तएण से दुवण राया दूयं सदावेइ सदावित्ता एव
वयासी-गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया । वारवइ नयरि तरथ ण
तुम कण्ह वासुदेवं समुद्विजयपामोस्सवे दस दसारे वलदेव-
पामुक्खे पच्चमहावीरे उग्गसेणपामोस्सवे सोलसरायसहस्से
पज्जुण्णपामुक्खाओ अद्दधुट्ठाओ कुमारकोडीओ सवपामोस्खाओ

अज्जयाए सयवर विरयामि, अज्जयाए ण तुम दिग्ग सयवरा जण्ण
तुम सयमेव राय वा जुवराय वा वरेहिसि से ण तव भत्तारे भविस्सइ
त्ति कद्दु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, असासित्ता पडिविसज्जेइ)
इस लिये हे पुत्रि । मैं थोड़े ही दिनों मैं तुम्हारा स्वयवर करवाने
वाला हूँ । तुम इन दिनों मे दत्तस्वयवरा हो जाओगी, सो तुम जिस
राजाको या युवराज को अपनी इच्छानुसार चरोगी वही तेरा भर्ता
बन जायगा । इस तरह कहकर राजा ने अपनी पुत्री को दृष्ट आदि
विशेषणों वाली वाणी से आश्वासित किया और फिर आश्वासित
करके उसे वहाँ से भेज दिया ॥ सू० १६ ॥

एवमप्यन्तं दुष्प्रथमा कश्चे (त ण अहं पुत्ता ! अज्जयाए सयवर विर
यामि, अज्जयाए ण तुम दिग्गसयवरा जण्ण तुम सयमेव राय वा जुवराय
वा वरेहिसी से ण तत्र भत्तारं भविस्सइ, त्ति कद्दु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ
आसासित्ता पडिविसज्जेइ) हे पुत्रि ! थोड़ा दिवसोभाए दु तमारा माटे
स्वयंवर करवाने । तु त्वारे तु स्वयंवरमा दत्त स्वयंवरा यथं नश्चे ने राज
के युवराजने तु त्वारी पसइगी आपश्चे तेज त्वारे पति थश्चे आ प्रभाण्णे
कलीने राजाणे पोतानी पुत्रीने दृष्ट वज्जे विशेषणोयी युक्तं पथ्यने । वडे
आश्वासनथी आश्वासित करीने तेने त्वायी विहाय करी ॥ सू० १६ ॥

सट्टि दुदंतसाहस्सीओ वीरसेणपामोक्खाओ इक्कीसं वीरपुरिस-
साहस्सीओ महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं वलवगसाहस्सीओ
अन्ने य वहवे राईसरतलवरमाडंवियकोडुवियडब्भसिट्ठिसेणा-
वइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त
अंजलि मत्थए कट्ठु जएण विजएण वद्धावेहि वद्धावित्ता एव
वयाहि—एव खलु देवाणुप्पिया । कपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स
रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स
भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सइ त ण
तुब्भे देवाणुप्पिया । दुवयं राच अणुगिण्हेमाणा अकालपरि-
हीणं चेव कपिल्लपुरे नयरे समोसरह, तएण से दूए करयल
जाव कट्ठु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठ पडिसुणेति पडिसुणित्ता
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कोडुवियपुरिसे
सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ।
चाउग्घंट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेति, उवट्ठवित्ता
तएण से दूए ण्हाए जाव अलकार० सरीरे चाउग्घंट आसरह
दुरुहइ दुरुहित्ता वट्ठुहि पुरिसेहि सन्नद्ध जाव गहियाऽऽह पह-
रणेहि सट्ठि सपरिवुडे कपिल्लपुर नयरं मज्झ मज्झेणं निगच्छइ
पच्चालजणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवाग-
च्छइ, सुरट्ठाजणवयस्स मज्झमज्झेणं जेणेव वारवइ नयरी तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता वारवइ नयरिं मज्झ मज्झेण अणुप-
विसइ अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स वाहिरिया

उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता चाउघंट आस-
 रहं ठयेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोन्हइ पच्चोन्हित्ता मणुस्सग्गु-
 रापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हं वासुदेवे तेणेव
 उवागच्छइ उवागच्छिता कण्हं वासुदेवे समुद्धविजयपामुक्खे
 य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव
 समोसरह । तएण से कण्हं वासुदेवे तस्स दूयस्स अतिए
 एयमद्व सोच्चा निसम्म हट्ट जाव हियएतंदूय सक्को इ सम्मा-
 णेइ सम्माणित्ता पडिवित्तज्जेइ ॥ सू० १७ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । तत्तदादनन्तर स दुपदो राजा दूत शब्द
 यति, शब्दयित्वा एवमयादीन्-गच्छ खलु एव हे दंगानुमिय । द्वारपती=द्वारकां
 नगरीम्, तत्र खलु त्व कृष्ण वासुदेव, समुद्धविजयप्रमुखान् दश दशार्हान्, बलदेव
 प्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसद्व्याणि, प्रमुन्नप्रमुखाः
 अर्धचतुर्थीः कुमारकोटीः=प्रमुन्नप्रमुखान् सार्धत्रिजोडिराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः
 पण्डिदुर्दान्तसाहसी=साम्बप्रमुखान् पण्डिसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एक
 विंशतिवीरपुरुषसाहसी=वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन

‘तएण से दुवण’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण से दुवण राया दूय सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी
 गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया ! वारवइ नयरिं-तत्थण तुम कण्ह वासुदेव समु-
 द्धविजय पामोक्खे दसदसारे बलदेव पामोक्खे पञ्च महावीरे उग्रसेन पामो-
 क्खे सोलसरायसहस्से पज्जुणपामोक्खाओ अद्दुट्ठाओ कुमारकोडीओ
 सबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्धत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्कयीसं

‘तएण से दुवण’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण से दुवण राया दूय सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-गच्छ ण
 तुम देवाणुप्पिया ! वारवइ नयरिं-तत्थण तुम कण्ह वासुदेवसमुद्ध विजयपामोक्खे
 दसदसारे बलदेवपामोक्खे पञ्च महावीरे उग्रसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण
 पामोक्खाओ अद्दुट्ठाओ कुमारकोडीओ सबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्धत साहस्सीओ वीर
 सेन पामोक्खाओ इक्कयीस वीरपुरिससाहस्सीओ मय बलव

प्रमुखाः पट्टपञ्चाशत् बलवत्साहस्रीः=महासेनप्रमुखान् पट्टपञ्चाशत्सप्तममितवल
वतो राज्ञः, अन्थाश्च गृह्णन् राजेश्वरतलवग्माडयिककौटुम्बिकेभ्यश्चेष्टिसेनापति सार्य-
वहप्रभृतीन् करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तमञ्जलिं मस्तके कृत्वा जयेन विज-
येन=जयविजयशब्देन 'वद्धावेहि' वर्धय=जमिनन्दय वर्धयित्वा एव ब्रूहि-हे
देवानुप्रिया' । एष खलु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्या, सुव्या
देव्या आत्मजाया वृष्ट्युन्नकुमारस्य भगिन्या', द्रौपद्या राजवरकन्यकाया स्वय

वीर पुरिससाहस्सीओ महासेनपामोक्त्वाओ छप्पन्न बलवगसाहस्सी
ओ अन्नेय यहवे राई सरतलवरमाडयिकोडुंयिहवभसेष्टिसेणावह
सत्थवाहपभिइओ करयलपरिगहिय दसनह सिरसावत्त अजलिं
मत्थए कट्टु जण्ण विजण्ण वद्धावेहि वद्धावित्ता एव वयाहि) इस्
द्रुपद् राजाने अपने एक दूत को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा
कहा-देवानुप्रिय ! तुम द्वारका नगरीको जाओ वहा तुम कृष्ण पासुदेव
को, समुद्र विजय प्रमुख दश दशार्हों को, बलदेव प्रमुख पांच महावीरों
को, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजाओ को प्रद्युम्न प्रमुख ३॥)
साठे तीन करोड राजकुमारों को ६० हजार दुर्दान्त, साम्ब प्रमुखो
को २१ हजार वीरसेन प्रमुख वीरों को ५६ हजार महासेन प्रमुख
उलिष्ठ राजाओ को, तथा और भी अनेक राजेश्वर तलवर, माडयिक,
कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्यवाह आदिको को दोनों अपने
हाथो की दशनखो वाली अजलि बनाकर और उसे मरतक से घुमाकर
नमस्कार करना तथा "जय विजय" शब्दोच्चारण करते हुए उन्हें
बधाई देना-उनका अभिनन्दन करना । बधाई देकरके फिर उन से ऐसा

गसाहस्सीओ अन्नेय यहवे राईसरतलवरमाडयिकोडुंयिहवभसेष्टिसेणावहसत्थवाह
पभिइओ करयल परिगहिय दसनह सिरसावत्त अजलिं मत्थए कट्टु जण्ण विज
ण्ण वद्धावेहि, वद्धावित्ता एव वयाहि) त्थारपथी द्रुपद् राज्ञे पोताना ओ
इतने ओलाओये अने ओलावीने तेने कल्लु डे डे देवानुप्रिय । तमे द्वारका
नगरीमा जओये त्था तमे कृष्णवासुदेवने, भगदेव प्रमुण पाय भडापीरने,
उग्रसेन प्रमुण सोण हज्जर राजओने, प्रद्युम्न प्रमुण साध त्रल्लु करेड राज
कुमारने, ६० हज्जर दुर्दान्तसाण प्रमुओने, २१ हज्जर वीरसेन प्रमुण वीरने,
५६ हज्जर महासेन प्रमुण उलिष्ठ राजओने तेमज्ज गील्ल पल्लु भधा गजेश्वर,
तलवर, माडयिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्यवाह वगेदने पोताना
अने दश नपोवाणा छाथेनी अजलिं जतावीने तेने मस्तके भूझीने नमस्कार
करेने तथा 'जय विजय' शब्दोच्चारण करता भधाने तमे अखिन दित

उवट्टाणसाला तेणेउ उवागच्छइ उवागच्छिता चाउघट आस-
 रहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहठ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवणु-
 रापरिनिखत्ते पायविहारचारेणं जेणेउ कण्हं वासुदेवे तेणेउ
 उवागच्छइ उवागच्छिता कण्हं वासुदेवे समुद्विजयपामुक्खे
 य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ कग्गल त चेव जाय
 समोसरह । तएण से कण्हं वासुदेवे तस्स दूयस्स अतिए
 एयमह सोच्चा निसम्म हट जाव हियएत दूय सको इ सम्मा-
 णेइ सम्माणित्ता पडिविसज्जेड ॥ सू० १७ ॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । तस्मादनन्तर स दुवसे राजा दूत शब्द
 यति, शब्दयित्वा एममादीत्-गच्छ गच्छ २३ दे देयानुमिय । द्वारसी=द्वारका
 नगरीम्, तत्र सखु त्व कण्ण वासुदेव, समुद्विजयप्रमुखान् दशदशार्हान्, बलदेव
 प्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसहस्राणि, प्रयुन्नप्रमुखाः
 अर्धवत्सुर्धो. कुमारकोटीः=प्रद्युन्नप्रमुखान् सार्धत्रिंशोद्विराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः
 पण्डितदुर्दान्तमाहस्ती.=साम्बप्रमुखान् पण्डितसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एक
 विंशतिवीरपुरुषमाहस्ती=वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन

‘ तएण से दुवण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण से दुवए राया दूय सहावेइ, सहावित्ता एव वयासी-
 गच्छ ण तुम देवाणुप्पिया । वारवइ नयरिं-तएण तुम कण्ह वासुदेव समु
 द्विजय पामोक्खे दसदसारे बलदेव पामोक्खे पच महावीरे उग्रसेन पामो
 क्खे सोलसरायसरस्से पज्जुणपामोक्खाओ अहुट्ठाओ कुमारकोडीओ
 सबपामोक्खाओ सट्ठि दुइत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्करीस

‘ तएण से दुवण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण से दुवए राया दूय सहावेइ, सहावित्ता एव वयासी-गच्छ ण
 तुम देवाणुप्पिया । वारवइ नयरिं-तएण तुम कण्ह वासुदेवसमु द्विजयपामोक्खे
 दसदसारे बलदेवपामोक्खे पच महावीरे उग्रसेनपामोक्खे सोलसरायसरस्से पज्जुण
 पामोक्खाओ अहुट्ठाओ कुमारकोडीओ सबपामोक्खाओ सट्ठि दुइत साहस्सीओ वीर
 सेन पामोक्खाओ इक्करीस वीरपुरिससाहस्सीओ महासेनपामोक्खाओ छप्पन बलव

स्नातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घण्टमश्वरथ 'दुरुह' दूरोहति-आरो-
हति । दूरुह्य बहुभिः पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहिया' इति
अत्र यावत्-ऊर्ध्वेनैव गोध्यम्-सन्नद्धवस्त्रमियकृत्पट्टेहि, उष्णीलियसरासनपट्टगेहि,
पिण्डगेविज्जगमद्धाविद्धिमिलवरचिन्धपट्टेहि, गहियाऽऽउहपरणेहि इति । सन्नद्ध-
वस्त्रवर्मितरुवचैः उत्पीडितशरासनपट्टकैः, पिण्डगैवेयकवद्धविद्धिमिलवरचिह्न-
पट्टैः गृहीतायुधमहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृता, बद्धा-कशाग्रन्धनेन सवद्धा,
वर्मिता-भङ्गे परिहिताः रुवचा यै स्ते सन्नद्धवस्त्रवर्मितरुवचास्तैः, तथा-उत्पीडि-
तशरासनपट्टकैः, उत्पीडितानि=गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टानि धनुः
प्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टका रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्वारिणस्तैः,

वह जहा अपना घर था वहाँ आया । वहा आकर उसने कौटुम्बिक
पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों ! तुम लोग
शीघ्र ही चार घटों से युक्त अश्वरथ को घोड़े जोतकर यहा ले आओ ।
उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया । वे चार घटा वाले उस रथ में
घोड़े जोतकर उसे वहा ले आये (तएण से दूए ण्हाए जाव अलकार०
सरीरे चाउघट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता बहहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव
गहियाऽऽउहपरणेहिं सिद्धिं सपरिवुडे कपिलपुरनयर मज्झ मज्जे ण
निग्गच्छइ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को
समस्त अलकारों से विभूषित किया । बाद में वह उस चतुर्घट वाले
अश्वरथ पर सवार हो गया । उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर
कवच पहिर रखा है ऐसा अनेक पुरुष ये जयापर पाण को आरोपित
करने से वक्री भूत हुआ धनुष जिनके हाथों में हैं ऐसे अनेक धनुर्धारी

पोतानु धर इतु त्या आब्बे। त्या आवीने तेबु कौटुम्बिक पुश्चोने भोलाब्बा
अने भोलावीने तेभने कहु के हे देवानुप्रिय । तमे सत्तरे आर घट्टीओवाणे।
अश्वरथ नेतरिने अही आवे। कौटुम्बिक पुश्चोने तेभने कयुं आर घट्टी
ओवाणे। अश्वरथ नेतरिने त्या लध आव्या (तएण से दूए ण्हाए जाव
अलकार० सरीरे चाउघट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता बहहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध
जाव गहियाऽऽउहपरणे हिं सिद्धिं सपरिवुडे कपिलपुरनयर मज्झ मज्जेण
निग्गच्छइ) त्थारमाइ इते स्नान कयुं यावत् पोताना शरीरने ण्धी लततना
अलकारेथी गणुगारुं त्थारपछी ते इत चतुर्घटवाणा अश्वरथ उपर सवार
थइ गये। ते इतनी नाये ण्णतरथी सुमन्ने थयेला घण्टा पुश्चो इता
अन्यथा-उपर ण्ण थहाववाथी पक थइ गयेला धनुषो नेभना इथोमा छे

परो भविष्यति, तत्=तस्मान् सन्तु यूय दे देवानुमियाः । द्रुपद राजानमनुवृण्वन्
' अकालपरिहीण चेत् ' कालचित्स्मरहितमेव काम्पित्यपुरं नगरे मन्त्रमगत, ततः
खलु स दूतः करबलं यावन्-अग्रजि मन्त्रके कन्या द्रुपदस्य सन्तु एतमर्थं प्रति
शृणोति, प्रतिश्रुत्य ययौ स्वम् गृह तत्रैवोपागच्छति उपागत्य श्रीदुर्मिषपुरुषान्
शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-मित्रमेव भो देवानुमिया चतुर्थदृष्ट=पञ्चचतु
ष्टययुक्तम् अश्वरथ युक्तमैवोपस्थापयत । यावन्-उपस्थापयति । ततः खलु स दूतः

कहना-(एव खलु देवानुमिया ! कपिलपुरे नगरे दुवयस्त रण्णो धूयाण
चुल्लीणीण देवीण अत्तयाण धट्टज्जुणकुमारस्स भगिणीण द्रोपदीण रायवर
कण्णाए सयवरे भविस्सई, त ण तुम्हे देवानुमिया ! दुवय राय अणु
मिण्हे माणा अकालपरिहीण चेत् कपिलपुरे नगरे समोसरह) हे देवा
नुमियो ! कपिलपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की
आत्मजा, धृष्टशुम्भ कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयवर
होनेवाला है, इसलिये हे देवानुमियो ! आप लोग द्रुपद राजाके ऊपर
अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र कपिलपुर नगर में पधारे । (तण्ण से
दूए करबल जाव कइहु दुवयस्स रण्णो एयमट्ट पडिसुणेंति पडिसुणित्ता
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुविय पुरिसे सदा-
वेह, सदावित्ता एव वयासी, लिप्पामेव भो देवानुमिया ! चाउग्घट
आसरह जुत्तामेव उवट्टवेह जाव उवट्टवेति) दूतने द्रुपद राजा के इस
कथन को दोनों हाथ जोडकर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर

कहने अखिनइत्त कथां भाद तमे तेज्जेने आ प्रभावे विनती वरन्ते (एव
खलु देवानुमिया ! कपिलपुरे नगरे दुवयस्स रण्णो धूयाण चुल्लीणी देवीए
अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्य भगिणीए द्रोपदीए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सई, त
ण तुम्हे देवानुमिया ! दुवय राय अणुमिण्हेमाणा अकालपरिहीण चेत् कपिल
पुरे नगरे समोसरह) हे देवानुमियो ! कपिलपुर नगरमें द्रुपद राजा की पुत्री
चुलनी देवी की आत्मजा, धृष्टशुम्भकुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी की
स्वयवर थवाने छे ओथी हे देवानुमियो ! तमे द्रुपद राजा ऊपर दूपा करीने
सत्तरे कपिलपुर नगरमें पधारे । (तण्ण से दूए करबल जाव कइहु दुवयस्स
रण्णो एयमट्ट पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवा
गच्छित्ता कोडु वियपुरिसे सदावेह, सदावित्ता एव वयासी लिप्पामेव भो देवा
नुमिया ! चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्टवेह जाव उवट्टवेति) द्रुपद राजा की
आज्ञाने इत्ते ण ने हाथ जोडीने स्वीकारी लीधी स्वीकार कथा ते न्या

स्नातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घटमश्वरथ 'दुरुह' दूरोदति-आरो-
हति । दुरुह बहुभिः पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहिया' इति
अत्र यावत्-उद्देनैव गोप्यम्-सन्नद्धवद्धवम्भियकृपहिं, उप्पीलियसरासनपट्टगेहिं,
पिणद्धगेविज्जगवद्धाविद्धिमिलवरचिन्धपट्टेहिं, गहियाऽऽउहपरणेहिं इति । सन्नद्ध-
वद्धवर्मितकवचैः उत्पीडितशरासनपट्टकैः, पिणद्धग्रेवैयकवद्धविद्धिमिलवरचिह्-
पट्टैः गृहीतायुधप्रहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृता, वद्धा=कशाग्रन्धनेन सन्नद्धा,
वर्मिताः=भङ्गे परिहिताः कवचा ये स्ते सन्नद्धवद्धवर्मितकवचास्ते, तथा-उत्पीडि-
तशरासनपट्टकैः उत्पीडितानि=गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टानि धनुः
प्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टका रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्वारिणस्तेः,

वह जहा अपना घर था वहाँ आया । वहाँ आकर उसने कौटुम्बिक
पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों ! तुम लोग
शीघ्र ही चार घटों से युक्त अश्वरथ को घोड़े जोतकर यहा ले आओ ।
उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया । वे चार घटा वाले उस रथ में
घोड़े जोतकर उसे वहा ले आये (तएण से दूण प्हाए जाव अलकार०
सरीरे चाउघट आसरह दुरुह, दुरुहत्ता बहहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव
गहियाऽऽउहपरणेहिं सिद्धि सपरिबुडे कपिलपुरनयर मज्झ मज्जे ण
निग्गच्छइ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को
समस्त अलकारों से विभूषित किया । याद में वह उस चतुर्घट वाले
अश्वरथ पर सवार हो गया । उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर
कवच पहिर रखा है ऐसा अनेक पुरुष थे जयापर घाण को आरोपित
करने से वक्री भूत हुआ धनुष जिनके हाथों में हैं ऐसे अनेक धनुर्धारी

पोतानु घर डतु त्या आव्हे त्या आव्हीने तेहे कौटुम्बिक पुरुषोने भोलाव्या
अने भोलावीने तेभने कछु के डे देवानुप्रिय । तमे सत्वणे थार घटडीओवाणो
अश्वरथ नेतरीने अडी आवो कौटुम्बिक पुरुषोने तेभने कछु थार घटडी
ओवाणो अश्वरथ नेतरीने त्या लछ आव्हा (तएण से दूण प्हाए जाव
अलकार० सरीरे चाउघट आसरह दुरुह दुरुहत्ता बहहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध
जाव गहियाऽऽउहपरणे हिं सिद्धि सपरिबुडे कपिलपुरनयर मज्झ मज्जेण
निग्गच्छइ) थारमाह इते स्नान कछु यावत् पोताना शरीरने भधी नतना
अलकारोथी गणुगाथु थारपछी ते इत थतुर्घटवाणा अश्वरथ उपर सवार
थछ गथे ते इतनी नाये भणतरथी सुमन्न थयेला धणा पुरयो इता
प्रत्यया उपर आणु यदाववाथी वक थछ गथेला धनुषो नेमना डोथेमा छ

परो भविष्यति, तत्=तस्मान् रालु यूय हे देवानुमियाः । द्रुपद राजानमनुगृह्य
 'अकालपरिहीण चेत्' कात्रविन्मरहितमेव काम्पित्यपुरे नगरे समवसरत, ततः
 खलु स दूतः करतलं यायन्-अग्रलि मन्त्रके कृत्वा द्रुपदस्य राजं गतमर्थं प्रति
 शृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वयं गृह तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कीदृमिकपुरुषान्
 शब्दयति शब्दयित्वा परममादीत्-निममेव भो देवानुमिया, चतुर्गट=पञ्चाक्षर
 पद्ययुक्तम् अभ्यर्चयं युक्तमेवोपस्थापयत । यायन्-उपस्थापयति । ततः यदुस दूतः

कहना-(एव रालु देवानुमिया ! कपिलपुरे नगरे दुवयस्म रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए
 अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्म भगिणीए दोउईए रायवरकण्णए सयवरे भविस्सई, त
 ण तुम्हे देवानुमिया । दुवय राय अणु
 गिण्हे माणा अकालपरिहीण चेत् कपिलपुरे नगरे समोसरह) हे देवा
 नुमियों ! कापिलपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की
 आत्मजा, धृष्टगुम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयंवर
 होनेवाला है, इसलिये हे देवानुमियों ! आप लोग द्रुपद राजाके ऊपर
 अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र कापिलपुर नगर में पधारे । (तएण से
 दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ट पडिसुणेंति पडिसुणिक्का
 जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कीडुवियपुरिसे सदा-
 वेइ, सदावित्ता एव वयासी, खिप्पामेव भो देवानुमिया ! चाउग्घट
 आसरह जुत्तामेव उवट्टवेइ जाव उवट्टवेति) दूतने द्रुपद राजा के इस
 कथन को दोनों हाथ जोड़कर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर

करने अलिखित कथा पाठ तमे तेओने आ प्रभाखे विनती करने (एव
 रालु देवानुमिया ! कपिलपुरे नगरे दुवयस्म रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए
 अत्तयाए धट्टज्जुणकुमारस्य भगिणीए दोउईए रायवरकण्णए सयवरे भविस्सई, त
 ण तुम्हे देवानुमिया । दुवय राय अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीण चेत् कपिल
 पुरे नगरे समोसरह) हे देवानुमियों ! कापिलपुर नगरमें द्रुपद राजा की पुत्री
 चुलनी देवी की आत्मजा, धृष्टगुम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी को
 स्वयंवर थवाने छे ओथी हे देवानुमियों ! तमे द्रुपद राजा ऊपर कृपा करीने
 सत्तरे कापिलपुर नगरमें पधारे । (तएण से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स
 रण्णो एयमट्ट पडिसुणेति, पडिसुणिक्का जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवा
 गच्छित्ता कीडु वियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवा
 नुमिया ! चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्टवेइ जाव उवट्टवेति) द्रुपद राजा की
 आज्ञाने हुते भने हाथ जोडीने स्वीकारी बीधी स्वीकार कथा पाठ ते अथा

बाहिरुपरस्थानशाला-आरथानमण्डपः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथ
स्थापयति, स्थापयित्वा 'रहाओ' रथात् 'पञ्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति-प्रत्यवत-
रति, प्रत्यवस्थ 'मनुस्सवग्गुरापारिस्सित्ते' मनुष्यवागुरापारिस्सित्तः=मनुष्यसमूह
परिवृतः, स दूतः पादविहारचारेण=पादाभ्यां गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवो
पागच्छति, उपगत्य कृष्ण वासुदेव ममुद्रविजयप्रमुखश्च दशदशार्हान् यावत्
बलवत्साहस्रीः, अस्तलपरिगृहीतदशनख शिरावर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा
एवमवादीत्-'त चेव' तदेव-अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णनं यो यम् यावत्-सम्यक्सरत

वासुदेवस्त बाहिरिया उवट्टाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
चाउघट आसरह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पञ्चोरुहइ, पञ्चोरुहित्ता
मणुस्सवग्गुरापारिस्सित्ते पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव
उवागच्छइ) बहा आकर द्वारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से
होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहां कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उप-
स्थानशाला-सभामण्डप या बहा गया । वहाँ पहुँचकर उसने अपने चार
घटावाले अश्वरथ को खड़ा कर दिया । रोक दिया-उसके रुकते ही वह
उससे नीचे उतरा । उतर कर वह मनुष्योंके समूहसे परिभिन (युक्त) हो
कर पैदल ही जहा कृष्ण वासुदेव थे बहा गया । (उवागच्छित्ता कण्ह
वासुदेवममुद्रविजयपामुक्खे य दस दसारे जाय बलवगसाहस्रीओ
करयल त चेव जाव ममोसरह) जहाँ जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को
समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्होंको यावत् महासेन प्रमुख ५६, हजार व-
लिष्ट राजाओंको दोनों हाथों की अञ्जलि कर और उसे मस्तक पर रखकर

वैरस्त बाहिरिया उवाट्टणमाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघट आस
रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पञ्चोरुहइ पञ्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापारिस्सित्ते पाय
विहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) तथा आनीने ते द्वारा
वती नगरीना मध्यमार्गं गथने नगरमा प्रविष्ट थये अने त्थारपट्टी ते तथा
कृष्ण-वासुदेवनी भाव्य उपस्थानशाला-दीवाने आभ-(मत्ता भ ३५) छती तथा
गथे तथा पट्टोत्तीने तेण्णे पोताना आर घट्टीओपाणा रथने ओभे राभ्थे
अने पोते नीचे उतर्यो उतर्यो पट्टी ते पोताना नोकरे-सेवकनी साथे जना
कृष्ण-वासुदेव छता तथा गथे (उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेवसमुद्रविजयपामुक्खे
य दस दसारे जाय बलवगसाहस्रीओ करयल त चेव जाव ममोसरह) तथा
जधने तेण्णे कृष्ण-वासुदेवने समुद्र विजय प्रमुख दशार्होने यावत् महासेन
प्रमुख ५६ हजार वलिष्ट राजाओने जने हाथनी अञ्जलि भतापीने तेने

તથા-પિનદગ્રેયેવત્પદ્મારિટિમલ્લારિદ્ધપદ્મે - પિનદાનિ - પરિધતાનિ ગ્રેયેવ
 ફાણિ-ચ્છદ્ધૂપણાનિ ચૈ સ્તે તથા, વદ્ધ-આરોપિત સયોનિતઃ આરિદ્ધ-મસ્તકે
 પરિધત. ચિમલઃ-સ્વચ્છ. ત્રઃ તિદ્ધપદ્મઃ-સ્વપક્ષબોધકચિહ્ન : ચૈસ્તે તથા,
 તતો દ્વિપદ્મરૂપધારય. તથા-શુદ્ધીનાયુતપદ્મર્ણ. = પ્રાયુધાનિ અસાણિ, પ્રદરણાનિ-
 શસ્ત્રાણિ શુદ્ધીનાનિ ચૈસ્તે શુદ્ધીતાયુધપદરણા ચૈ, સાર્થ સંપરિધતઃ કામ્પિત્યપૂર
 નગર મધ્યમધ્યેન મધ્યમાર્ગેણ નિર્ગન્હતિ, પચ્ચાલજનપદસ્ય મધ્યમધ્યેન ચૈવ
 ' દેસપ્પતે ' દેશપ્રાન્ત-દેશસીમા તત્તૈરોપાગન્હતિ, ઉપાગત્ય 'સુરદ્વાજનવયસ'
 સૌરાષ્ટ્રજનપદસ્ય મધ્યમધ્યેન ચૈત્ર દ્વારવતી નગરી તત્તૈરોપાગન્હતિ ઉપાગત્ય
 દ્વારવતી નગરી મધ્યમધ્યેન અણુપવિસદ્ધ, અણુપવિસિદ્ધ ચૈત્ર કળાગ્ય વાનુદેવસ્ય

પુરુષ થે, જિન્હોને ગલ્લે મેં આમૂપણોં કો પહિરરવસે હેં ઓર મસ્તક કે
 ડુપર સ્વચ્છ, સ્વપક્ષબોધક ચિહ્ન ધારણ કિયા હેં તેસે અનેક વ્યક્તિ
 થે । તથા આયુધ ગદ્ય પ્રદરણોં કો લેકર અનેક સૈનિક જન ઇસકે
 આસપાસ હો કર ચલ રહે થે । સો ઘર દૂત ઇન સય કે સાધ ૨ ડસ
 કાંપિત્યપુર નગર કે ધીચોંધીચ સે લોકર નિકલા । (પચ્ચાલજનવયસ
 મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ દેસપ્પતે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ-સુરદ્વા જનવયસ મજ્જ
 મજ્જેણ જેણેવ દારવદ નયરી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ) ચલતે ૨ વહ પાચાલ
 જનપદકે ધીચોંધીચ સે હોતા છુઆ જહા પર અપને દેશકી સીમા કા
 અન્ત થા વહા આયા । વહા આકર વહ સૌરાષ્ટ્ર દેશકે ધીચસે નિક
 લતા છુઆ જહા દ્વારવતી નગરી થી વર્ણ આયા-(ઉવાગચ્છિત્તો દાર
 વદ નયરી મજ્જ મજ્જેણ અણુપવિસદ્ધ, અણુપવિસિદ્ધા જેણેવ કળાગ્ય

એવા ધણા ધનુર્ધરો તેની સાથે હતા, જેઓએ ગળામા આભૂષણો પહેરેલા
 અને મસ્તક ઉપર સ્વચ્છ સ્વપક્ષ બોધક ચિહ્ન પટો બાધી રાખેલા એવા પણ
 અનેક પુરોહો તેની સાથે હતા આયુધ અને પ્રદરણોને ઉચકીને પણ ધણા સૈનિકો
 તેની બંને બાજુએ ચાલી રહ્યા હતા આ રીતે તે ફક્ત તેઓ બધાની સાથે
 કાંપિત્યપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળ્યો (પચાલ જનવયસ મજ્જ મજ્જેણ
 જેણેવ દેસપ્પતે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ સુરદ્વા જનવયસ મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ દારવદ નયરી
 તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ધ) આમ પોતાની યાત્રા પૂરી કરીને તે ફક્ત પાચાલ જનપદની
 વચ્ચેવચ્ચે જ્યાં પોતાના દેશની હદ પૂરી થતી હતી ત્યાં આગ્યો ત્યાં આવીને
 તે સૌરાષ્ટ્ર દેશની વચ્ચે થઈને જના દ્વારવતી નગરી હતી ત્યાં આગ્યો (ઉવાગ
 ચ્છિત્તા દારવદ, નયરિ મજ્જ મજ્જેણ, અણુપવિસદ્ધ, ૭

बाहिरस्थानशाला-आरथानमण्डपः, तत्रोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथं
स्थापयति, स्थापयित्वा 'रहाओ' रथात् 'पचोरुह' मत्परोहति-प्रत्यवत्त-
रति, प्रत्यवत्त 'मनुस्सवग्गुरापरिकिस्से' मनुष्यवागुरापरिकिस्सः=मनुष्यसमूह
परिवृतः, स दूतः पादविहारचारेण=पादाभ्यां गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवो-
पागच्छति, उपगत्य कृष्ण वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखश्च दशदशार्हान् यावत्
बलवत्साहसीः, वस्तुपरिगृहीतदशनख शिरावर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा
एवमवादीत्- 'त चेव' तदेव-अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णनं गो-न्यम् यावत्-सम्भवसरत्

वासुदेवस्त बाहिरिया उवाट्टाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
चाउवट आसरह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहित्ता
मनुस्सवग्गुरापरिकिस्से पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव
उवागच्छइ) वहा आकर छारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से
होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहां कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उप-
स्थानशाला-सभामण्डप था वहां गया । वहां पहुँचकर उसने अपने चार
घटावाले अश्वरथ को खड़ा कर दिया । रोक दिया-उसके श्रुते ही वह
उससे नीचे उतरा । उतर कर वह मनुष्यों के समूह से परिक्रित (युक्त) हो
कर पैदल ही जहाँ कृष्ण वासुदेव थे वहाँ गया । (उवागच्छित्ता कण्ह
वासुदेवसमुद्रविजयप्रमुखे य दम दसारे जाय बलवगसाहसीओ
करयल त चेव जाव ममोसरह) वहाँ जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को
समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्हों को यावत् महासेन प्रमुख ५६, हजार ब-
लिष्ठ राजाओं को दोनों हाथों की अञ्जलि कर और उसे मस्तक पर रखकर

देवस्त बाहिरिया उवाट्टाणमाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउवट आम-
रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ पचोरुहित्ता मनुस्सवग्गुरापरिकिस्से पाय
विहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) त्या आनीने ते छारा
वती नगरीना मध्यभागे थधने नगरमा प्रविष्ट थये अने त्यारपछी ते न्या
कृष्ण-वासुदेवनी भाव्य उपस्थानशाला-दीवाने आभ- (सभा म० ३५) छती त्या
गये। त्या पछेआनीने तेले पोताना थार घट्टीजोवाणा रथने छिलो राभ्ये।
अने पोते नीचे उतये। उतयो पछी ते पोताना नोकरे-मेवकनी भाये न्या
कृष्ण-वासुदेव छता त्या गये। (उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेवसमुद्रविजयप्रमुखे
य दम दसारे जाय बलवगसाहसीओ करयल त चेव जाव ममोसरह) त्या
जधने तेले कृष्ण-वासुदेवने समुद्र विजय प्रमुख दशार्होंने यावत् महासेन
प्रमुख ५६ हजार बलिष्ठ राजाओं ने धने हाथनी अञ्जलि अतावीने तेने

इति पर्यन्तम्, अयमर्थः—काम्पिल्यपुरनगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति, तस्माद् गृय द्रुपदः राजानमनुगृह्णन्त पालरिन्म्वरहितं काम्पिल्यपुरे नगरे समागन्तुमिति सा दूतः प्रोक्तवान् इति ।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्य दूतस्यान्तिके गतमर्थं श्रुत्वा निश्चयम् हृष्टतुष्टः यावत्-दर्शनेन रितर्पः हृदयस्त दूतं गत्वा गच्छति तथा समानयति, सत्कार्यं समान्यं प्रतिनिर्भयति ॥ सू० १७ ॥

મૂલમ્—તएણ સે કળહે વાસુદેવે કોઢુવિયપુરિસે સદાવેદ સદાવિત્તા એવ વયાસી—ગચ્છહ ણં તુમં દેવાણુપ્પિયા ! સભાપ સુહમ્માએ સામુદાઇય ભેરિં તાલેહિ, તएણ સે કોઢુવિયપુરિસે કર ચલ જાવ કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ એયમદ્દ પહિસુણેઢ પહિસુણિત્તા

નમસ્કાર ક્રિયા । યદા પર 'एव खलु देवाणुप्पिया,' સે લેઠર સમોસરહ "તકકા પૂર્વોક્ત પાઠ ઇસકે દ્વારા કલા ગયા લગા લેના ચાલિયે—જિસકા તાત્પર્ય યહ હૈ કિ કાંપિલ્યપુર નગર મેં દ્રુપદ રાજા કી પુત્રી દ્રૌપદી કા સ્વયવર હોને વાલા હૈ સો આપલોગ દ્રુપદ રાજા કે ઉપર ક્રુપા કર કે ઉસમેં શીઘ્ર પધારે । ઇસ પ્રકાર (તएણ સે કળહે વાસુદેવે તસ્સ દૂયસ્સ અતિએ એયમદ્દ સોચ્ચા નિસમ્મ હદ્દ જાવ હિયએ ત દૂય સવ્કારેદ સમ્મા ણેઢ સવ્કારિત્તા સમ્માણિત્તા પહિવિસજ્જેઢ) કૃષ્ણ વાસુદેવ ને ઉસ દૂત કે મુખસે જય ઇસ સમાચાર કો સુના—તો વે સુનકર ઔર ઉસે હૃદયમેં ધારણ કર વદ્ધત હી અધિક હર્ષિત એવ સતુષ્ટ હુએ । દૂતકા ઉન્હોને સત્કાર ક્રિયા, સન્માન ક્રિયા । વાદમે ઉસે વહા સે વિસર્જિત કર દિયા ॥સૂ० ૧૭॥

મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યો અહીં ' एव खलु देवाणुप्पिया ' થી સમોસરહ ' સુધીને પાઠ ઇત વડે કહેવામા આવેલો છે એમ સમજી લેવું જોઈએ તેની મતલબ એ છે કે કાંપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીને સ્વયવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરણાની કરીને તેમા સાતવરે પધારો આ રીતે (તएण સે કળહે વાસુદેવે તસ્સ દૂયસ્સ અતિએ એયમદ્દ સોચ્ચા નિસમ્મ હદ્દ જાવ હિયએ ત દૂય સવ્કારેદ સમ્માણેદ સવ્કારિત્તા સમ્માણિત્તા પહિવિસજ્જેઢ) કૃષ્ણ-વાસુદેવે ઇતના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાલજ્યા ત્યારે સાલણીને અને તેઓને બરાબર હૃદયમા ધારણ કરીને અત્યંત હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઈને તેમણે ઇતનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું ત્યારપછી તેમણે ઇતને વિદાય કર્યો ॥ સૂત્ર ૧૭ ॥

जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छिता सामुदाइय भेरि महया महया सदेणं तालेइ
 तएणं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समु-
 द्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामुक्खाओ
 छप्पणं बलवगसाहस्सीओ णहाया विभूसिया जहा विभव
 इड्डिसकारसमुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेण
 जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता कर-
 यल जाव कण्हे वासुदेवे जएणं विजएणं बद्धावेति, तएणं
 से कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वया-
 सी-खिप्पामेव भो । देवाणुप्पिया । अभिसेक्क हत्थिरयण
 पडिकप्पेह हयगय जाव पच्चपिणंति, तएणंसे कण्हे वासुदेवे
 जेणेव मज्झणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता समुत्तजा-
 लाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभ गयवइ नरवई
 दुरूढे, तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खेहि दसहि
 दसारेहि जाव अणंगसेणापामुक्खेहि अणेगाहि गणियासाह-
 स्सीहि सुद्धि सपरिबुडे सव्विड्डीए जाव रवेण चारवइ नयरि
 मज्झं मज्झेण निग्गच्छइ निग्गच्छिता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झं
 मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता
 पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेण जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे
 तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सूण १८ ॥

टीका—‘तण्ण से’ इत्यादि । नतं गल्लु म ऋणो वासुदेवः कौटुम्बिक
 पुरुष शब्दयति, गच्छयित्वा णमरादीन्-गच्छ गल्लु त्व हे देवानुप्रिय । समाया
 सुधर्माया ‘सामुदाइय’ सामुदायिकि भेरि ताडय, नतः गल्लु स कौटुम्बिक
 पुरुष करतव्यं वासु-मस्तकेऽज्जि ऋणा गान् ऋणस्य वासुदेवस्सैतमर्थं
 मतिगृणोति, मतिश्रुत्य यजेत् समाया सुधर्माया ‘सामुदाइया’ सामुदायिकी
 भेरी तत्रैवोपागच्छति, उपागम्य सामुदायिकी भेरी महत्ता २ शब्देन ताडयति,
 येन महाशब्दो भवति, तथा भेरी ताडयति स्मे’ इत्यर्थः, ततस्तदनन्तरं खलु तस्या

‘तण्ण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तण्ण इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेवने
 (कौटुम्बिकपुरिस सहावेइ) अपने कौटुम्बिक पुरुष को बुलाया, बुला
 कर (एव बयासी) उनसे ऐसा कहा—(गच्छह ण तुम देवानुप्रिया !
 समाए सुहम्माए सामुदाइय भेरिं तालेहि) हे देवानुप्रिय तुम सुधर्मा
 समामें जाओ और वहा जाकर सामुदाय की भेरी को बजाओ (तण्ण
 से कौटुम्बिक पुरिसे करघल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स ण्यमढ पडि
 सुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेइ) समाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव
 उवागच्छह, उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया २ सहेण तालेइ) इस
 प्रकार की कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को उस पुरुष ने बड़े विनय के साथ
 अपने दोनों हाथों को मस्तक पर रखकर स्वीकार कर लिया—और
 स्वीकार करके फिर वह सुधर्मा समा मे जहा वह सामुदायिकी भेरी थी
 वहा आया । वहा आकर उसने उस सामुदायिकी भेरी को इसतरह से

‘तण्ण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तण्ण) त्थारपणी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण-वासुदेवे (कौटुम्बिक
 पुरिस सहावेइ) पोताना कौटुम्बिक पुरुषोने ओलाव्वा अने ओलावीने (एव
 बयासी) तेभने आ प्रभावे कल्लु के—(गच्छह ण तुम देवानुप्रिया ! समाए
 सुहम्माए सामुदाइय भेरिं तालेहि) हे देवानुप्रिय ! तमे सुधर्मा सलामा न्नाओ
 अने त्या जघने सामुदायिकी भेरी बगाडो (तण्ण से कौटुम्बिकपुरिसे कर
 घल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स ण्यमढ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेइ समाए
 सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेइ उवागच्छह उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया २
 सहेण तालेइ) अतनी कृष्ण-वासुदेवनी आज्ञाने ते पुरुषे भूणज नअ
 पळे अने भूमीने स्वीकारी वीधी, स्वीकार कर्या पछी ते त्याथी
 न्या सुधर्मा भेरी छनी त्या जघने तेले मोटो अवाज
 थाय बगाडी (तण्ण ताए भेरीए

सामुदायिक्या भैया/ताडिताया सत्या समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्द्ध यावत्-
महासेन प्रमुखा पट्टपञ्चाशद्वलवत्साहस्र्याः=पट्टपञ्चाशत्-सहस्रप्रमिता बलवन्तो
राजानः स्नाता यावद्-सर्वालकारविभूषिता यथाविभवंद्विसत्कारसमुदयेन
'अप्येगइया' अप्येग-यावद्=केचिद् हयारूढा=अश्वारूढाः केचिद् गजारूढाः,
केचिद् रथारूढा, केचिद् पादविहारचारेण यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपाग-
च्छति, उपागत्य करतल० यावत् कृष्ण वासुदेव जयेन विजयेन=जयविजय
शब्देन वर्धयन्ति । ततः खलु कृष्णो वासुदेव कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति, शब्द-
यित्वा एतन्मवादीन्-भो देवानुप्रियाः ! क्षिप्रमेव 'अभिसेकं' अभिषेक्य गज

बडे नल से बजायी कि जिससे उससे बड़ी भारी आवाज निकली
(तएण ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाण समानीए समुद्रविजय
पामोरूखा दस दसारा जाव महासेण पामुक्खाओ छप्पण बलवगसाह
स्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव इड्ढी सक्कारसमुदएण
अत्थेगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवाग
च्छति) इस तरह उस सामुयिकी भेरी के बजने पर समुद्रविजय आदि
दश दशार्द्ध ने यावत् ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओ ने
स्नान किया । यावत् समस्त अलकारों से विभूषित होकर एव सबके
सब अपने विभव ऋद्धि और सत्कार के अनुसार जहा कृष्ण वासुदेव
थे वहा आये । इनमे कितनेक घोडों पर कितनेक हाथियों पर कितनेक
रथों पर बैठकर आये और कितनेक पैदल ही चलकर आये (उवाग-
च्छित्ता करयल जाव कण्ह वासुदेव जएण विजएण बद्धावेति, तएणं से
कण्हे वासुदेवे कौटुम्भिय पुरिसे सदावेइ सदाविता एव बयासी, खिप्पामेव

तालियाए समानीए समुद्रविजयपामोरूखा दस दसारा जाव महासेण पामु
क्खाओ छप्पण बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव इड्ढी
सक्कारसमुदएण अप्येगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव
उवागच्छति) आ रीते ते सामुयिकी भेरी पगाउवाभा आवी तयारे समुद्र विजय
पगेरे दश दशार्द्धो ये यावत् ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओये
स्नान उरु यावत् तेओ सबे समस्त अलकारोथी सुसज्ज थउने पोताना
विभव अने सत्कारनी साथे न्या कृष्ण-वासुदेव उता त्या गमा आमा डेटलाक
घोडाओ उपर, डेटलाक हाथीओ उपर, डेटलाक रथो उपर अवार थउने त्या
पडोअ्या उता तो डेटलाक पगे आवीने न कृष्ण-वासुदेवनी पामे डाउर थया
उता (उवागच्छित्ता करयल जाव कण्ह वासुदेव जएण विजएण बद्धावेति
तएण से कण्हे वासुदेवे कौटुम्भियपुरिसे सदावेइ सदाविता एव बयासी खिप्पा

ટીકા—‘તણ સે’ ઇત્યાદિ । તનઃ તત્ત્વ મ ક્ષણો સામુદેયઃ કૌટુમ્બિક પુરુષ શબ્દયતિ, શબ્દયિત્વા ષમસાર્દન-ગત્ત તત્ત્વ સ્વે દેવાનુપ્રિય । સમાયા સુધર્માયા ‘સામુદાય’ સામુદાયિકી ભેરિ તાડય, તતઃ તત્ત્વ મ કૌટુમ્બિક પુરુષ કસ્તત્ત્વ યાત્-મસ્તકડગ્ગિ ક્ષ્યા ગાત્ ક્ષ્યામ્ય સામુદેયસ્તમર્થ મતિગ્રણોતિ, મતિશ્રુત્ય યર્ગ્ય સમાયા સુધર્માયા ‘સામુદાય’ સામુદાયિકી ભેરી તર્ગ્યોપાગમન્ત્રિતિ, ઉપાગમ્ય સામુદાયિકી ભેરી મહતા ૨ શબ્દન તાડયતિ, યેન મહાશબ્દો ભવતિ, તથા ભેરી તાડયતિ સ્મે’ત્યર્થઃ, તતસ્તદનન્તર સત્ત્વ તસ્યા

‘તણ સે કળ્હે વાસુદેવે’ ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થ—(તણ હસકે યાદ (સે કળ્હે વાસુદેવે) ડન કૂળ વાસુદેવને (કોટુમ્બિકપુરિસ સહાવેહ) અપને કૌટુમ્બિક પુરુષ કો બુલાયા, બુલા કર (વ્ય વયાસી) ડનસે જેસા કહા—(ગચ્છત્ત્વ તુમ દેવાનુપ્રિયા ! સમાય સુહર્માય સામુદાય ભેરિ તાલેહિ) હે દેવાનુપ્રિય તુમ સુધર્મા સમામે જાઓ ઓર વહા જાકર સામુદાય કી ભેરી કો વજાઓ (તણ સે કોટુમ્બિક પુરિસે કરચલ જાવ કળ્હેસ્સ વાસુદેવસ્સ ઇયમમદ્ પઢિ સુણેડ, પઢિસુણિત્તા જેણેવ ‘સમાય સુહર્માય સામુદાય ભેરી તેણેવ ઉવાગચ્છત્ત્વ, ઉવાગચ્છિત્તા સામુદાય ભેરિ મહયા ૨ સદેણ તાલેહિ) હસ પ્રકાર કી કૂળ વાસુદેવ કી આજ્ઞા કો ડસ પુરુષ ને વહે વિનય કે સાથ અપને ડોનોં હાથોં કો મસ્તક પર રાગકર સ્વીકાર કર લિયા—ઓર સ્વીકાર કરકે ફિર વહ સુધર્મા સમા મે જહા વહ સામુદાયિકી ભેરી ઓ વહા આયા । વહા આકર ડસને ડસ સામુદાયિકી ભેરી કો હસતરહ સે

‘તણ સે કળ્હે વાસુદેવે’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણ ત્યારપછી (સે કળ્હે વાસુદેવે) તે કૃષ્ણ-વાસુદેવે (કોટુમ્બિક પુરિસ સહાવેહ) પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને (વ્ય વયાસી) તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—(ગચ્છત્ત્વ તુમ દેવાનુપ્રિયા ! સમાય સુહર્માય સામુદાય ભેરિ તાલેહિ) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સુધર્મા સલામા બાઓ અને ત્યા બાંધને સામુદાયિકી ભેરી વજાડો (તણ સે કોટુમ્બિકપુરિસે કર ચલ જાવ કળ્હેસ્સ વાસુદેવસ્સ ઇયમમદ્ પઢિસુણેડ પઢિસુણિત્તા જેણેવ સમાય સુહર્માય સામુદાય ભેરી તેણેવ ઉવાગચ્છત્ત્વ ઉવાગચ્છિત્તા સામુદાય ભેરિ મહયા ૨ સદેણ તાલેહિ) આ બાતની કૃષ્ણ-વાસુદેવની આજ્ઞાને તે પુરુષ ખૂબજ નમ્ર પછે બને હાથોને મસ્તકે મૂકીને સ્વીકારી લીધી, સ્વીકાર કર્યા પછી તે ત્યાથી જ્યા સુધર્મા સમામા સામુદાયિકી ભેરી હતી ત્યા બાંધને તેણે મોટો અવાજ થાય તેમ તે સામુદાયિકી ભેરીને વગાડી (તણ તણ ભેરી

वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखैर्दशार्हं यावत् अनङ्गसेनाप्रमुखवाभिरनेवाभिर्गणिका
साहस्रीभिः सार्धं सपरिवृतः सर्वद्वर्था=छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपण-
वपटहभेर्यादिरवेण द्वारवती नगर्या मध्यमध्येन=निर्गच्छति, निगत्य सौराष्ट्रजन-
पदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशप्रान्त-देशमीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चा-
लजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव शम्पित्यपुर नगर तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=
गन्तु प्रवृत्तः ॥ सू० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहा स्नान घर थो बहा गये-बहा जाकर उन्होंने मुक्ताओं
सहित गवाक्षो से सुन्दर उम स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके
फिर सर्व अलकारो से विभूषित होकर वे नरपति अजन गिरि के शिखर
जैसे-विशाल कृष्णवर्ण चाले गजपति पर आरुढ़ हो गये । (तएणं से
कण्हे वासुदेवे समुद्रविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणग
सेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्व
ड्डीए जाव रवेण चारवडनयारिं मज्झ मज्झेण निगगच्छइ, निगगच्छित्ता
सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पचाल जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव कपिल्लपुरे नगरे
तेणेव पहारेत्त गमणाण) आरुढ़ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय
आदि दश दशार्हो यावत् अगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओं के साथ
२ उन्न आदि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शङ्ख, पणव, पटह,
भेरी आदि बाजो की तुमुल ध्वनि पूर्वक द्वारावती नगरी के बीच से

त्यागपछी ते कृष्ण-वासुदेव जया स्नानघर छतु त्या गया त्या जेने तेमछे
भोती जडेला गवाक्षोथी श्मशानी लागता स्नानघरभा स्नान कयु अने त्या
पछी भधा अलङ्कारोथी विभूषित थधने-नरपति अजनगिगिना शिखर जेवा
विशाल कृष्ण वर्णवाणा गजपति उपर भवार यई गया (तण्ण से कण्हे
वासुदेवे समुद्रविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणगसेणा पामुक्खेहिं
अणेगाहिं गणियामाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सत्विट्ठीए जाव रवेण चारवडनयारिं
मज्झ मज्झेण निगगच्छइ निगगच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव
देसप्पते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचालजणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव
कपिल्लपुरे नगरे तेणेव पहारेत्त गमणाण) भवार थध ने तेजो भमुद्र विजय
वगेरे दश दशार्हो यावत् अगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओंनी साथे छत्र
विगेरे राजचिह्न रूप विभूतिथी युक्त थधने शङ्ख, पणव, पटह, भेरी वगेरे
तुमुल ध्वनि स्थाने द्वारावती नगरीनी वन्धे वधने पसार थया त्याथी पसार

रत्नमम सुगन्धस्तिन परिस्पृश्यत-गज शिखर, ह्यगमजगमपदातिरूप चतुरङ्गवत्
 सज्जीकृत, एतां गमाज्ञा प्रत्यर्पयत, इति तत्तमे वीटुम्बिरपृष्णाः ' तथास्तु '
 इत्युत्वा तदाज्ञा स्वीकृत्य सर्व सपाग वाहन यत्न न मर्ग मञ्जोक्तमस्माभिरिति
 यावत् प्रत्यर्पयन्ति=निन्दयन्ति स्म । ततः सद्यः म कृष्णो गामुदेयो गीर मञ्जन
 गृह तर्जोपागच्छति, मञ्जनगृह स्वीकृतमित्याह- ' ममृताजालाकुलाभिरामे ' समु
 क्तजालाकुलाभिराम मुक्ताभिः मरितानि जालानि गमा गम्भिरादु गृहमतपसा
 भिराम सुन्दरम्, उपागत्य स तत्र स्नान कृत्या गाम्-मर्शलकाराभिभूषित,
 अन्ननगिरिकूटसन्निभम्=उन्नतर द्यामार्णमित्यर्थ, गजपति=रम्बितु गुरग दस्तिन
 नरपति=श्री कृष्णवासुदेव. ' द्रुष्टे ' द्रुष्टः=गमाष्टः, ततः सद्यः स कृष्णो

भो देवानुपिया ! अभिसेक हस्तिरयण पटिकल्पेह, ह्यगम जाव
 पञ्चस्विणति) वहा आकर उन्हेने दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण वासुदेव
 को नमस्कार करते हुए जय विजय जयों द्वारा चर्चाई दी-इसके बाद
 उन कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उससे इस
 प्रकार कहा-भो देवानुपियो ! तुमलोग जीव ही मेरे मुख्य हाथी को
 सजाओ-तथा-हय, गज, रथ और पदातिरूप चतुरग युक्त सेना को भी
 सजाकर तैयार करो । पीछे हमको इसको खबर दो । इसके बाद उन
 कौटुम्बिक पुरुषों ने-" तथास्तु " कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार लिया
 और स्वीकार करके यत्न और वाहन सब हमने सज्जित कर दिये हैं
 इस प्रकार की खबर उन्हें पीछे कर दी । (तपण से कण्हे वासुदेव जेणेव
 मञ्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समुत्तजालाकुलाभिरामे
 जाव अजणगिरि कूटसन्निभ गयवइ नरवई दुरुद्धे) इसके पश्चात् वे

मेव भो देवानुपिया ! अभिसेक हस्तिरयण पटिकल्पेह, ह्यगमजाव पञ्चस्विणति)
 त्या वर्धने तेजोअने ने हाथ जोडीने ' जयविजय ' शब्दोधी कृष्ण-वासुदेवने
 नमस्कार करता अलिनहित कथा त्यारपछी कृष्ण-वासुदेवे कौटुम्बिक पुरुषोंने
 बोलाव्या अने बोलावीने तेजोअने आ प्रभाळे कळु के छे देवानुपियो । सत्परे
 तमे मारा मुख्य हाथीने तेमज जीव पक्ष घोडा, हाथी, रथ अने पायदलनी
 चतुर गिष्ठी सेनाने सुसज्ज कशे अने सेना सुसज्ज थई जय त्यारे अभने जणेर
 आपो त्यारपछी कौटुम्बिक पुरुषोअने ' तथास्तु ' कहीने तेमनी आज्ञा स्वीकारी
 क्षीधी अने स्वीकारीने तेजो पोताना काममा परेवाछ गया ज्यारे काम थई
 गयु त्यारे तेजोअने " सेना अने वाहन तैयार छे " आ आतनी जणेर आपी
 (तपण से कण्हे वासुदेव जेणेव मञ्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता
 समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अजणगिरिकूटसन्निभ गयवइ नरवई दुरुद्धे)

वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखैर्देवैर्हो यौवत् अनङ्गसेनाप्रमुखवाभिरनेकाभिर्गणिका
साहस्रीभिः सार्धं सपरिवृतः सर्वद्वर्गा=छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपण-
वपटद्वयेर्यादिरवेण द्वारवती नगर्या मध्यमध्येन=निर्गच्छति, निर्गत्य सौराष्ट्रजन
पदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशप्रान्त-देशमीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चा-
लजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव राग्विल्यपुर नगर तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=
गतु प्रवृत्तः ॥ सू० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहां स्नान घर धो बहा गये-बहा जाकर उन्होंने मुक्ताओं
सहित गवाक्षों से सुन्दर कम स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके
फिर सर्व अलंकारों से विभूषित होकर वे नरपति अजन गिरि के शिखर
जैसे-विशाल कृष्णवर्ण वाले गजपति पर आरुढ़ हो गये । (तपण से
कण्हे वासुदेवे समुद्रविजयपामोक्षेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंग
सेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया माहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्व
डूण जाव रवेण दारवटनपरिं मज्झ मज्जेण निगच्छइ, निगच्छिस्ता
सुरद्धा जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छिस्ता पचाल जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव कपिलपुरे नयरे
तेणेव पहारेत्थ गमणाण) आरुढ़ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय
आदि दश दशार्हों यावन अगमेना प्रमुख हजारों गणिकाओं के साथ
२ उन्न जादि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शङ्ख, पणच, पट्ट,
मेरी आदि बाजों की तुमुल बनि पूर्वक द्वारावती नगरी के बीच से

त्यागपथी ते दृष्टु-वासुदेव व्या स्नानघरं छतु त्या गया त्या जेने तेभक्षे
भोती जेडा अवाथोथी श्मशान्य लागता स्नानघरभा स्नान वयु अने त्या
पथी पवा अवा दारोथी विभूषित थाने-नरपति अजनगिगिता शिखर जेवा
विशाल दृष्टु वर्णवाणा गजपति उपर भवा थो गया (तपण से कण्हे
वासुदेवे समुद्रविजयपामोक्षेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणा पामुक्खेहिं
अणेगाहिं गणियामाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सच्चिद्रीण जाव रवेण दारवटनपरिं
मज्झ मज्जेण निगच्छइ निगच्छिस्ता सुरद्धा जणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव
देसप्पते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिस्ता पचालजणवयस्स मज्झ मज्जेण जेणेव
कपिलपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाण) भवार १४ ने तेणेव समुद्र विजय
वगेरे दश दशार्हों यावत् अगमेना प्रमुख छत्रादि गणिकाओं की साथे छत्र
विगेरे गजचिह्न उप विभूतिथी युक्त थाने शङ्ख, पणच, पट्ट, मेरी वगेरे
तुमुल बनि स्थाने द्वारावती नगरीनी वय्हे वाने पसार थया त्याथी पसार

मूलम्—तएण से दुवण राया दोअं दूयं सदावेइ सदावित्ता
एव वयासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउर नयरं
तत्थ ण तुमं पंडुरायं सपुत्तय जुह्मिहत्तलं भीममेण अज्जुण
नउल महदेव दुज्जोहणं भाइसयसमग्ग गगेय विदुर टाणं
जयइह सउणी किवं आमत्थाम करयल जाव कट्ठु तहेव समो-
सरह, तएण से दूण एव वयासी जहा वामुदेवे नवर भेरी
नत्थि जाव जेणेव कपित्तपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए२।
एएणेव कमेणं तच्चं दूय चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्ह अग-
राय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थ दूय
सुत्तिमइ नयरिं तत्थ ण तुमं तिसुपाल दमघोससुय पचभाइ-
सयसपग्गिबुड करयल तहेव जाव समोसरह । पंचमग्ग दूय
हत्थसीसनयर तत्थ ण तुमं दमदत्त राय करयल तहेव जाव
समोसरह । छट्ठ दूयं महुर नयरिं तत्थ ण तुम धरं राय करयल
जाव समोसरह । सत्तम दूयं रायगिहं नयरं तत्थ ण तुम सह-
देव जरासिधुसुय करयल जाव समोसरह । अट्ठम दूय कोडिण
नयर तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समो-
सरह । नवम दूय विराडनयर तत्थ ण तुम कीचग्ग भाउसय
समग्गं करयल जाव समोसरह । दसमं दूय अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले । निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचो बीच से चलकर
घटा आये जहाँ देश की सीमा थी । उस सीमा पर आकर के फिर वे
पांचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहा कापिल्य पुर नगर था उस
और चल दिये ।

थधने

अथ धनि पोताना देशनी छट्ठ मुथी पडोआ।

अथ धने जना क्षपित्यपुर नगर छट्ठ ते

नगरेसु अणेगाइ रायसहस्साइ जाव समोसरह । तएण से दूए
तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर जाव समोसरह । तएण ताइं
अणेगाइं रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा
निसम्म हट्ट० तं दूय सक्कारेति सक्कारित्ता सम्माणेति सम्मा-
णित्ता पडिविसज्जिति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा वहवे रायस-
हस्सा पत्तेय२ ण्हाया सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया
भडचडगररहपहकर० सएहितो२ नगरेहितो अभिनिग्गच्छति२
जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १९ ॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । तत् यत्तु स द्रुपदो राजा द्वितीय दूत शब्द-
यति, शब्दयित्वा एवमगादीत्-गन् यत्तु त्व पाण्डु राज मपुत्रन्=पुत्रै महित

‘ तएण से दुवण राया ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) उस के बाद (से दुवण राया) उस द्रुपद राजाने
(दोच्च दूय सदावेइ) अपने दूनरे दूनको बुलाया (महावित्ता एव वयासी)
बुलाकर उससे ऐसा कहा-गच्छण तुम देवानुप्पिया हत्थिणाउर नयर
तत्थ ण तुम पडुराय मपुत्तय जुहिट्ठिल भीमसेण अज्जुण नवल सह-
देव दुज्जोहण भाइसयसमग गगेय त्रिदुर दोण जयइह सउणीक्किव
आसत्थाम करयल जाव कइहु तहेव समोसरह) बुलाकर उससे ऐसा
कहा हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ-वहा जाकर तुम पुत्र

‘ तएण से दुवण राया ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्याग्यही (से दुवण राया) ते द्रुपद राजाने (दोच्च दूय
सदावेइ) योताना श्रीन दूतने बोलाव्ये (महावित्ता एव वयासी) बोला
वीने तेने आ प्रभाछे उहुं उ (गच्छण तुम देवानुप्पिया हत्थिणाउर नयर,
तत्थ ण तुम पडुराय मपुत्तय जुहिट्ठिल भीमसेण अज्जुण नवल सहदेव दुज्जो
हण भाइसयसमग गगेय त्रिदुर दोण जयइह सउणी क्किव आसत्थाम करयल
जाव कइहु तहेव समोसरह) हे देवानुप्रिय ! तमे हस्तिनापुर नगरमां नव्ये

मूलम्—तएण से दुण गवा दोअं दूयं सदावेइ सदावित्ता
 एव वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया । हत्थिणाउ नयरं
 तत्थ णं तुम पंडुराय सपुत्तय जुह्मिठिल्ल भीमनेणं अज्जुण
 नउल महदेव दुज्जोहणं भाइसयसमगं गंगेयं विटुर दोणं
 जयइह सउणी किं आमत्थाम करयल जाव कट्ठं तहेव समो
 सरह, तएण से दूण एव वयासी जहा वामुदेवे नवर भेरी
 नत्थि जाव जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहरेत्थ गमणाए२ ।
 एएणेव कमेणं तच्चं दूय चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्ह अंग-
 राय सेह नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह । चउत्थ दूय
 सुत्तिमइ नयरिं तत्थ णं तुम सिसुपाल दमघोसमुय पंचभाइ
 सयसपग्गिबुड करयल तहेव जाव समोसरह । पचमग दूय
 हत्थसीसनयर तत्थ ण तुम दमदत्त राय करयल तहेव जाव
 समोसरह । छट्ठ दूयं महुर नयरिं तत्थ ण तुम धर राय करयल
 जाव समोसरह । सत्तम दूय रायगिहं नयर तत्थ ण तुम सह-
 देव जरासिधुसुय करयल जाव समोसरह । अट्ठम दूय कोडिण
 नयर तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समो
 सरह । नवम दूय विराडनयर तत्थ णं तुम कीयग भाउसय
 समगं करयल जाव समोसरह । दसम दूय अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले । निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचो बीच से चलकर
 घटा आये जहाँ देश की सीमा थी । उस सीमा पर आकर के फिर वे
 पांचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहाँ कापिल्य पुर नगर था उस
 और चल दिये ।' सू० १८

थधने तेओ सौराष्ट्र देशनी वच्चे थधने पोताना देशनी छट्ठ सुभी पडोअा
 त्याथी तेओ पायाल जनपदनी वच्चे थधने जना कापिल्यपुर नगर छट्ठ ते
 तरइ रवाना थया ॥ सूत्र १८ ॥

નયરે તેણેવ પહારેત્ય ગમણા ૨ ઇણેવ કમેણ તચ્ચ દૂય ચપાનયરિં
તત્થ ણ તુમ કણ્ણ અગરાય સેલ્લ નદિરાય કરયલ તહેવ જાવ સમોસરહ
ચત્થ દૂય સુત્તિમઙ્ગ નયરિં, તત્થ ણ તુમ સિસુપાલ દમધોમસુય પચ-
ભાઙ્ગસયસપરિવુઢ કરયલ તહેવ જાવ સમોસરહ) ઇસ કે વાદ દૂત
અપને રાજા કી આજ્ઞા પ્રમાણ કર વહા સે હસ્તિનાપુર કો ચલા ગયા ।
વહાં પહુંચ કર ઉસને પાંડુરાજા આદિ સે વહે વિનય પૂર્વક ઇસ પ્રકાર
કહા-કાપિલ્યપુર મેં દ્રૌપદી કા સ્વયંવર હોગા-સો આપ સવ કૃપાકર
શીઘ્રાતિશીઘ્ર વહા પારે । ઇસ તરહેકે સમાચાર દેકર વહ દૂત પાંડુરાજા
આદિ સે સન્માનિત હોકર વહા સે વાપિસ હો ગયા । પાંડુરાજા આદિ
સ્નાન કર સર્વાલકારો સે વિભૂષિત હોકર ગજાલુદ્ધ હો, ચતુરગિણી
સેના કે સાથ અપની ઋદ્ધિ આદિ કે અનુસાર યાવત્ જહા કાપિલ્યપુર
નગર થા ઉસ ઓર ચલ દિયે । ઇસ તરહ કૃષ્ણ વાસુદેવ કી તરહ યહાં
પર સવ પાઠ લગા લેના ચાહિયે । ઉસ પાઠ સે ઇસ મે વિશેષતા કેવલ
હતની હૈ કિ વે સવ જય દ્વારાવતી નગરી સે કાપિલ્યપુર નગર કો જાને
કે લિયે નિકલે તો ઉનકે સાથ ભેરી થી-યહા વહ નહી હૈ । ઇસી ક્રમ
સે દ્રુપદ ને ત્રીસરે દૂત કો બુલાયા-બુલાકર ઉસસે મી ઇસી પ્રકાર સે

પુરે નયરે તેણેવ પહારેત્ય ગમણા ૨ ઇણેવ કમેણ તચ્ચ દૂય ચપાનયરિં
તત્થ ણ તુમ કણ્ણ અગરાય સેલ્લ નદિરાય કરયલ તહેવ જાવ સમોસરહ ચત્થ
દૂય સુત્તિમઙ્ગ નયરિં તત્થ ણ તુમ સિસુપાલ દમધોમસુય પચભાઙ્ગસયસ-
પરિવુઢ કરયલ તહેવ જાવ સમોસરહ) ત્યારપછી દૂત પોતાના રાજાની આજ્ઞા
પ્રમાણે ત્યાથી હસ્તિનાપુર તરફ રવાના થઈ ગયો ત્યા પહોંચીને તેણે પાંડુ
રાજા વગેરે રાજાઓને નમ્રપણે આ રીતે વિનંતિ કરી કે-કાપિલ્યપુરમાં
દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થશે તો આપ સૌ કૃપા કરીને સત્વરે ત્યા પધારો આ
રીતે સમાચારો આપીને તે દૂત પાંડુરાજા વગેરેથી સન્માન પામીને ત્યાથી
પાછા ફર્યો પાંડુરાજા વગેરે બધાઓ પણ સ્નાન વગેરેથી પરવારીને તેમજ સર્વા
લકારેથી સુમન્ય થઈને હાથીઓ ઉપર સવાર થયા અને પોતા પોતાની ચતુ-
રગિણી સેના તેમજ ઋદ્ધિની સાથે યાવત્ જે તરફ કાપિલ્યપુર નગર હતું
તે તરફ રવાના થયા આ પ્રમાણે કૃષ્ણ-વાસુદેવની જેમજ અહીં પણ વર્ણન
સમજી લેજો બેઠાં કૃષ્ણ-વાસુદેવના પાઠમાં પાંડુરાજા કરતા એટલી વિશેષતા
હતી કે તેઓ જ્યારે દ્વારાવતી નગરીની બહાર નીકળ્યા ત્યારે તેમની સાથે
ભેરી પણ હતી, પાંડુરાજાની સાથે ભેરી ન હતી આ પ્રમાણે કૃપદ રાજાએ
રાજા દૂતને બોલાવ્યો અને તેને પણ આ રીતે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે

युधिष्ठिर भीमसेनम् अर्जुनं नकुलं, गादेयं दुर्योधनं भातगनदमम् = गतभातमिः
 सहितं, गादेय=भीष्म, विदुर द्रोण जयद्रथं शकुनिं 'किं' रूपम् = कृपाचार्यं,
 अश्वत्थामानं परतः० गात्रं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, तथैव गमयामास यथा पूर्वमुक्तं
 तथैवात्र 'समागमरत' इति पर्यन्तं योग्यम् अथ गात्रः-जयविजयशब्देन सर्वत्र
 एव द्रुहि-कापिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयमतो भविष्यति
 तस्माद् खलु हे देवानुमित्राः । यूयं द्रुपदं राजानमनुवृणुत. कालविम्बवदित-
 मेव कापिल्यपुरे नगरे समागमरत । ततः स दूतो द्रुपदस्य यवनस्त्रीजन्यदस्तिना
 पुरं गत्वा पाण्डुराजादिष्वेवमावादीत् = 'कापिल्यपुरे द्रौपद्या' स्वयमतो भविष्यति
 तत्र शीघ्रमागच्छत' इति ततोऽसौ दूतः पाण्डुराजादिना सम्मानितो विमर्शितश्च
 'जहा वासुदेवे' यथा-वासुदेवः कृष्णस्तद्वदपि विज्ञेयम्-'नवर' विशेषस्तु
 'मेरी नत्थि' मेरीनारित, कृष्णवासुदेव इव पाण्डुराजादिः स्नात मर्वाल्फार
 विभूषितो गजारुदश्चतुरङ्गसेनया सपरिवृतः सर्वदुर्घा युक्तो यागत् यज्ञेय कापिल्य
 पुरं नगरं तत्रैव आधारयद् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्तः ।

सहित पाण्डुराज को, युधिष्ठिर को, भीमसेन को, अर्जुन को नकुल को,
 सहदेव को, सौभार्द्यों सहित दुर्योधन को, गागेय भीष्म पितामह को
 विदुर को, द्रोण को जयद्रथ को, शकुनि को, कृपाचार्य को, और द्रोणा
 चार्य के पुत्र अश्वत्थामा को पहिले दोनों हाथों की अङ्गुलि बनाकर
 और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार करना उन सबको जय विजय
 आदि शब्दों से यथा देना । वधाकर फिर इस प्रकार कहना कि
 कापिल्य पुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर है, इस
 लिये हे देवानुमित्रों ! आप सब द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके बिना
 किसी विलम्ब के शीघ्रही कापिल्यपुर नगर में पधारें । (तएण से द्रुप
 एव वधासी-जहा वासुदेवे नवर मेरी नत्थि, जाव जेणेव कापिल्यपुरे

अने त्या जेधने तमे पुत्रे सहित पाण्डुराजने, युधिष्ठिरने, भीमसेनने, अर्जु
 नने नकुलने सहदेवने, सौ भाईजो सहित दुर्योधनने, गागेय भीष्म पिता
 महने, विदुरने, द्रोणने, जयद्रथने, शकुनिने, कृपाचार्यने अने द्रोणाचार्यना
 पुत्र अश्वत्थामाने सौ पहिला करणद्ध धने-अङ्गुलि बनावीने तेने मस्तक
 भूझीने नमस्कार करणे अने 'जय विजय' शब्दोथी तेजोने अलिखित
 करणे त्थारपळी तमे तेमने आ प्रभाषे विनती करणे के कापिल्यपुर नगरमा
 द्रुपद राजाणी पुत्री द्रौपदीना स्वयंवर थवानो छे जेथी हे देवानुमित्रो ! आप
 सौ द्रुपद राजा ऊपर भडेरणाणी करीने सत्वरें कापिल्य न पधारो
 (तएण से द्रुप एव वधासी-जहा वासुदेवे नवर मेरी नत्थि

नगरे तेणेव पतारेत्य गमणाए २ एणेव कमेण तच्च दूय चपानयरि
तत्थ ण तुम कण्ण अगाराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह
चउत्थ दूयं सुत्तिमइ नयरि, तत्थ ण तुम सिंसुपाल दमघोमसुय पच
भाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) इस के बाद दूत
अपने राजा की आज्ञा प्रमाण कर वहा से हस्तिनापुर को चला गया।
वहाँ पहुँच कर उसने पांडुराजा आदि से बड़े विनय पूर्वक इस प्रकार
कहा—कापिल्यपुर में द्रौपदी का स्वयवर होगा—सो आप सब कृपाकर
शीघ्रातिशीघ्र वहा प्यारे। इस तरहके समाचार देकर वह दूत पांडुराजा
आदि से नन्मानित होकर वहाँ से वापिस हो गया। पांडुराज आदि
स्नान कर सर्वालकारो से विभूषित होकर गजावृद्ध हो, चतुरगिणी
सेना के साथ अपनी क्रुद्धि आदि के अनुसार यावत् जहा कापिल्यपुर
नगर या उस ओर चल दिये। इस तरह कृष्ण वासुदेव की तरह यहा
पर सब पाठ लगा लेना चाहिये। उस पाठ से इस में विशेषता केवल
इतनी है कि वे सब जय द्वारावती नगरी से कापिल्यपुर नगर को जाने
के लिये निकले तो उनके साथ भेरी बी—यहा वह नहीं है। इसी क्रम
से दुपद ने तीसरे दूत को बुलाया—बुलाकर उससे भी इसी प्रकार से

पुरे नगरे तेणेव पतारेत्य गमणाए २ एणेव कमेण तच्च दूय चपानयरि
तत्थ ण तुम कण्ण अगाराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ
दूय सुत्तिमइ नयरि तत्थ ण तुम सिंसुपाल दमघोमसुय पचभाइसयसप-
रिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) त्या२५७ दूत पोताना राजांनी आज्ञा।
प्रमाणे त्याथी हस्तिनापुर तरफ रवाना થઇ ગયો। त्या પહોંચીને તેણે પાડુ
રાજા વગેરે રાજાઓને નમ્રપણે આ રીતે વિનંતિ કરી કે—કાપિલ્યપુરમાં
દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થશે તો આપ સૌ કૃપા કરીને સત્વરે ત્યાં પધારો। આ
રીતે સમાચારો આપીને તે દૂત પાડુરાજ વગેરેથી સન્માન પામીને ત્યાંથી
પાછો ફર્યો। પાડુરાજ વગેરે બધાઓ પણ સ્નાન વગેરેથી પરચારીને તેમજ સર્વા
લકારેથી સુસજ્જ થઈને હાથીઓ ઉપર સવાર થયા અને પોતા પોતાની ચતુ
રગિણી સેના તેમજ ક્રુદ્ધિની સાથે યાવત જે તરફ કાપિલ્યપુર નગર હતું
તે તરફ રવાના થયા। આ પ્રમાણે કૃષ્ણ—વાસુદેવની જેમજ અહીં પણ વર્ણન
સમજી લેવું બોધ્યું। કૃષ્ણ—વાસુદેવના પાઠમાં પાડુરાજ કરતા એટલી વિશેષતા
હતી કે તેઓ બ્યારે દ્વારાવતી નગરીની બહાર નીકળ્યા ત્યારે તેમની સાથે
ભેરી પણ હતી, પાડુરાજની સાથે ભેરી ન હતી। આ પ્રમાણે ૩૫૬ રાજાઓ
રાજા દૂતને બોલાવ્યો અને તેને પણ આ રીતે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે

पतनैः क्रमेण तृतीय दूत शब्दगनि, शब्दगि-ता परमयादीन्-गच्छ गच्छ त्व
हे देवानुमिष ! चम्पानगरीम्, नमः गच्छ कर्ण=कर्णनामाय-अहराजम्=अहरदेश-
स्याधिपति, तथा ' जेल ' द्रौप्य=द्रौप्यनामकः नन्दिगण=नन्दिदेशाधिप करतल
परिगृहीत दशनम्ब गायन्-मस्तकेऽजलि हृत्वा जयो विजयेन पर्यागिन्ता एव
ब्रूहि- ' तथैव ' तथैव=पूर्वद्वय बोध्यम्-तत् यथा-"काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य
राजः पुत्र्या द्रौपया स्वयवरो भविष्यति, तस्माद् गच्छ हे देवानुमिषाः । गृह्य
द्रुपद राजानमनुगम्य त गोघमेव काम्पिल्यपुरे नगरे गमयमरत " इति एव द्रुपदो
राजा चतुर्थ दूत शब्दयित्वा परमयादीन्-गच्छ गच्छ त्व शुक्तिमती नगरीं, तत्र
गच्छ त्व शिशुपाल दमघोषमुत्त पञ्चभ्रातृवत्पण्डित करतल० गायन्मस्तकेऽजलि
कृत्वा ब्रूहि- ' तथैव गायत् समयमरत ' यथा पूर्वमुक्त तद्वदत्र ' गमयमरत ' इति

कहा-कि हे देवानुमिष ! तुम चम्पानगरी जाओ वना अगदेश के अधि-
पति कर्ण राजा को तथा नन्दिदेश के अधिपति द्रौपराजा को कर
तल परिगृहीत दशनम्बवाली अजलि मस्तक पर रखकर नमस्कार करना
चाहें जय विजय शब्दों से उन्हें घेराई देकर पूर्व की तरह ऐसा
कहना-कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर
होने वाला है, सो हे देवानुमिषों ! आपलोग द्रुपद राजा पर कृपा करके
जल्दी से जल्दी काम्पिल्यपुर नगर पधारें । इसी तरह द्रुपद ने चौथे दूत
को बुलाकर उससे ऐसा ही कहा-कि तुम शुक्तिमती नगरी में जाओ
वहा जाकर दमघोष के पुत्र तथा पाचसौ अपने भाइयों से युक्त
शिशुपाल राजा से करतल परिगृहीत दशनम्बवाली अजलि मस्तक
पर रखकर कहना, पहिले की तरह ऐसा कहना कि काम्पिल्यपुर नगरमें

यथा नगरीमा जग्मो, त्या अज देशना अधिपति कर्ण राजने तेभज नदि
देशना अधिपति द्रौपराजने हाथेनी अजलि अनापीने तेने मस्तके भूझीने
नमस्कार करणे अने जय-विजय शब्दोथी तेभने अलिनिहित करणे त्यापछी
तेभने विनती करणे ते काम्पिल्यपुर नगरमा द्रुपद राजाणी पुत्री द्रौपदीने
स्वयवर थवानो छे तो हे देवानुमिषो तमे सो द्रुपद राजा उपर कृपा करीने
अविलग्न काम्पिल्यपुर नगरमा आवो आ रीते द्रुपद राजाये बोधा इतने
जोलाव्यो अने तेने पणु आ प्रभावे कछु के तमे शक्तिमती नगरमा जग्मो
अने त्या जग्मने हमबोपना पुत्र शिशुपाल राजने ज चोताना पाचसो
लाभजो सहितकरणद्ध थपने अजलि मस्तके भूझीने विनती आ
प्रभावेना समाचार आपजे के काम्पिल्यपुर नगरमा द्रुपद २

पर्यन्त वाच्यमित्यर्थः । एतद्द्रुपदो राजा पञ्चमरु दूत शब्दयित्वा एवमवादीत्-
गच्छ खलु त्व हस्तिशीर्षनगर, तत्र खलु त्व दमदन्त=दमदन्तनामक राजान कर-
तन्परिगृहीतदशनम् यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-‘ तथैव यावत् समवसरत ’
इति पूर्ववदेवात्रापि ‘ समवसरत ’ इति पर्यन्त वान्यम् एव स द्रुपदो राजा पष्ठ दूत
शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्व मथुरा नगरी, तत्र खलु त्व धर=धरनामक
राजान ‘ करतल० यावत् समवसरत ’ अत्रापि पूर्ववद्दूतगमनादिक बोध्यम्, एव
सप्तम दूत शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छ खलु त्व राजगृह नगरम्, तत्र खलु त्व
सहदेव जरासिन्धुसुत ‘ करतल० यावत् समवसरत ’ इति पूर्ववत्-द्रौपद्याः स्वय-
वरस्य मार्ता कथयित्वा ‘ काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत ’ इति ब्रूहि । तत्र स

द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है-सो आप कृपा
करके शीघ्र ही वहा पधारें । (पचमग दूय हत्थिसीसनयर तत्थ ण तुम
दमदन्त राय करयल तद्देव जाव समोसरह, छट्ट दूय मधुर नयरिं तत्थ ण
तुम धर राय करयल जाव समोसरह सत्तम दूय रायगिह नयर तत्थ ण
तुम सहदेव जरासिन्धुसुय करयल जाव समोसरह, अट्ठम दूय कोडि-
ण्णं नयर तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तद्देव जाव समोसरह,
नवम दूय विराडनयर तत्थ णं तुम कीयग भाउसयसमग्ग करयल जाव
समोसरह, दसम दूय अवसेसेसु गामागरनगरेसु अणेगाइ रायसहस्साइ
जाव समोसरह) इसी तरह पाचवे दूत को हस्तिशीर्षनगर में दमदन्त
नाम के राजा के पास छठे दूत को मथुरा नगरी में धर राजा के पास,
सातवे दूत को राजगृह नगर मे जरासिन्धु के पुत्र सहदेव के पास

दीने। स्वयंवर थवानो छे ऐथी तमे दूथा करीने अविदण त्या पधारै।
(पचमग दूय हत्थिसीसनयर तत्थ ण तुम दमदन्त राय करयल तद्देव जाव
समोसरह छट्ट दूय मधुर नयरिं तत्थ ण तुम धर राय करयल जाव समोसरह
सत्तम दूय रायगिह नयर तत्थ ण तुम सहदेव जरासिन्धु सुय करयल जाव
समोसरह अट्ठम दूय कोडिण्ण नयर तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल
तद्देव जाव समोसरह नवम दूय विराडनयर तत्थ ण तुम कीयग भाउसय
समग्ग करयल जाव समोसरह, दसम दूय अवसेसेसु गामागर नगरेसु अणेगाइ
रायसहस्साइ जाव समोसरह) आ प्रभाण्णे पायभा इतने हस्तिशीर्ष नगरभा
दमदन्त नामना राजानी पासे, छट्ठा इतने मथुरा नगरीभा धर राजानी पासे,
सातभा इतने राजगृह नगरभा जरासिन्धुना पुत्र सहदेवनी पासे, आठभा
इतने कीडित्त नगरभा वीरभक्तना पुत्र इन्धिम राजानी पासे, नवभा इतने

पतनैर क्रमेण तृतीय दूत शब्दयति, शब्दयिषा णमसादीन्-गच्छ गच्छ त्वं
हे देवानुमिय ! चम्पानगरीम्, तत्र गच्छ कर्ण=कर्णनामम्-अहं राजम्=अहं देश-
स्याधिपति, तथा 'नेलु' द्रौप्य=द्रौप्यनामक. नन्दिगा=नन्दिदेशाधिप करतल-
परिगृहीत दशानम् यावत्-मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा जयेन विजयेन पर्यायिषा एव
ब्रूहि- 'तथैव' तथैव=पूर्वम्-तद् यथा-"काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य
राजः पुत्र्या द्रौप्याः स्वयवरां भविष्यति, तस्माद् गच्छ हे देवानुमिया.। गृह्य
द्रुपद राजानमनुश्रुतः शीघ्रमेव काम्पिल्यपुर नगरे गमयसरत" इति एव द्रुपदो
राजा चतुर्थं दूत शब्दयित्वा णमसादीत्-गच्छ गच्छ त्वं शुक्तिमती नगरी, तत्र
गच्छ त्वं शिशुपाल दमघोषपुत्र पञ्चभ्रातृवत्तमपगित्त करतल० यावन्मस्तकेऽञ्जलि
कृत्वा ब्रूहि- 'तथैव यावत् समयसरत' यथा पूर्वमुक्तं तद्वद्व 'गमयसरत' इति

कहा-कि हे देवानुमिय ! तुम चम्पानगरी जाओ यहा अगदेश के अधि-
पति कर्ण राजा को तथा नन्दिदेश के अधिपति द्रौपराजा को कर
तल परिगृहीत दशानम्वाली अजलि मस्तक पर रखकर नमस्कार करना
बाद में जय विजय शब्दों से उन्हें बधाई देकर पूर्व की तरह ऐसा
कहना-कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर
होने वाला है, सो हे देवानुमियों ! आपलोग द्रुपद राजा पर कृपा करके
जल्दी से जल्दी काम्पिल्यपुर नगर पधारे। इसी तरह द्रुपद ने चौथे दूत
को उलाकर उससे ऐसा ही कहा-कि तुम शुक्तिमती नगरी में जाओ
वहा जाकर दमघोष के पुत्र तथा पाचसौ अपने भाइयों से युक्त
शिशुपाल राजा से करतल परिगृहीत दशानम्वाली अजलि मस्तक
पर रखकर कहना, पहिले की तरह ऐसा कहना कि काम्पिल्यपुर नगरमें

यथा नगरीमा गच्छो, त्या अग देशना अधिपति कर्ण राजने तेमज नदि
देशना अधिपति शैत्यराजने छोथोनी अजलि गनावीने तेने मस्तके भूझीने
नमस्कार करले अने जय-विजय शब्दोथी तेमने अखिन दित करले तयारपछी
तेमने विनती करले के काम्पिल्यपुर नगरमा द्रुपद राजनी पुत्री द्रौपदीने
स्वयवर थवानो छे तो छे देवानुमियो तमे सौ द्रुपद राज छपर कृपा करीने
अविलग काम्पिल्यपुर नगरमा आवो आ रीते द्रुपद राजने बोधा इतने
जोलाव्यो अने तेने पछु आ प्रभाछे कछु के तमे शक्तिमती नगरमा गच्छो
अने त्या जधने दमघोषना पुत्र शिशुपाल राजने ज्योताना, पाचसो
भाइयो सहितकरणद्ध यधने अजलि मस्तके भूझीने विनती करता आ
प्रभाछेना समायार आपजे के काम्पिल्यपुर नगरमा द्रुपद

સરતિ, નિર્ગત્ય યત્રૈવ ગ્રામાકરનગરેષુ અનેકાનિ રાજસહસ્રાણિ, તત્રૈવોપાગચ્છતિ
ઉપાગત્ય યાત્-સમવસરત, ' સમવસરત ' ઇતિ પર્યન્ત દત્તવાક્ય પૂર્વવદ્ વોધ્યમ્ ।
તતઃ સ્વલુ તાનિ અનેકાનિ રાજસહસ્રાણિ તસ્ય દત્તમ્યાન્તિકે એતમથં શ્રુ વા
નિશમ્ય હૃષ્ટતુષ્ટાઃ સન્તઃ દત્ત સત્કારયન્તિ=સત્કૃત કુર્વન્તિ સમાનયન્તિ, સત્કાર્ય,
સમાન્ય પ્રતિવિસર્જયન્તિ ।

તતઃ સ્વલુ તે વાસુદેવપ્રમુક્તા વહુસહસ્રસરયકા રાજાનઃ, =પ્રત્યેક ૨ સ્નાતાઃ

જેણે જ ગામાગર જાવ સમોસરહ) વહુ દશવા દૂત ઉસી તરફ સે-
પહિલે કે દૂતોં કે સમાન કાપિલ્ય નગર સે નિકલા ઓર નિકલ કર
જહાં ગ્રામ આકર ઓર નગર થે-વહા પર અનેક રાજસહસ્ત્રોં કે પાસ
ગયા-વહા જાકર શિષ્ટાચાર પૂર્વક ઉસને સબ સે ઇસ પ્રકાર કહા કિ
કામ્પિલ્યપુર નગર મેં દુપદ રાજા કી પુત્રી દ્રૌપદી કા સ્વયવર હોને વાલા
હે-સો આપમત્ર લોગ દુપદ રાજા કે ઉપર કૃપા કરકે જલ્દી કાંપિલ્ય
પુર નગર પધારે (તણ તાઝ અણેગાઝ રાયસહસ્તાઝ તસ્સ દૂયસ્સ
અતિણ ઇયમદ્દુ સોચ્ચા નિસમ્મ હદ્દુ ત દૂય સન્કારેતિ, સન્કારિત્તા
સમ્માણેતિ, સમ્માણિત્તા પહિવિસજ્જેતિ) ઇસ પ્રકાર વે અનેક સહસ્ત્ર
રાજા ઉસ દૂત કે મુગ્ધ સે ઇસ સમાચાર કો સુન કર ઓર ઉસે અપને
અપને ૨ હૃદયોં મેં અવધારિત કર વજ્જન હી અધિક આનન્દ સે પ્રમુદિત
બનકર પરમ સતોપ કો પ્રાપ્ત હુણે । ઉન્હોને ઉસ દૂત કા સત્કાર ક્રિયા
સત્કાર કરકે સન્માન કિયા ઓર સન્માન કરકે ફિર ઉસે પીઠે વિસર્જિત
કર દિયા-મેજદિયા । (તણ તે વાસુદેવપ્રમુક્તા વહુવે રાયસહસ્તા પત્તેય

સમોસરહ) તે દશમે દૂત બધાની બેમ કાપિલ્ય નગરથી નીકળ્યો અને
નીકળીને જ્યાં ગ્રામ આકર અને નગર હતા ત્યાં અનેક મહાનો રાજાઓની
પાસે ગયો ત્યાં જઈને નમ્રપણે તેણે સહુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે કાપિલ્ય
નગરમાં દુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીને સ્વયવર થવાનો છે તો આપ સૌ દુપદ
રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલબ્ધ કાપિલ્ય નગરમાં પધારો (તણ તાઝ
અણેગાઝ રાયસહસ્તાઝ તસ્સ દૂયસ્સ અતિણ ઇયમદ્દુ સોચ્ચા નિસમ્મ હદ્દુ ॥
દૂત સન્કારેતિ મન્કારિત્તા, સમ્માણેતિ, સમ્માણિત્તા, પહિવિસજ્જેતિ) આ રીતે
સહસ્રો રાજાઓ તે દૂતના મુખથી આ પ્રમાણે સાંભળીને અને તેને
પોતાના હૃદયમાં ધારણ કરીને ખૂબ જ પ્રમત્ત તેમજ પરમ મતુષ્ઠ થયા
તેઓએ દૂતને સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું ત્યારપછી દૂતને તેઓએ
વિદાય આપી (તણ તે વાસુદેવપ્રમુક્તા વહુવે રાયસહસ્તા પત્તેય ૨ પંચાયા

द्रुपदो राजा अष्टम दूत शब्दयित्वाऽऽरादीन्-गच्छ गच्छ न कोण्डिन्यनगरं तत्र
 खलु त्वं 'स्वर्ण' रुक्मिण्य-रुक्मिणागच्छ भोग्यमसुतं परतल तथैव यावत् सम्य
 सरतः पूर्णम् 'ममामृत' इति पर्यन्तं यावत् । प । स द्रुपदो राजा नाम दूत
 शब्दयित्वाऽऽरादीन्-गच्छ गच्छ तत्र विराटनगरं, तत्र गच्छ त्वं 'कीचक' कीचक-
 कीचकनामकं राजानं गतभावगृहितं करतलं यावत् सम्यमगच्छ अत्रापि व्याख्या
 पूर्णम् । एवम् स द्रुपदो राजा दशम दूत शब्दयित्वाऽऽरादीन्-अत्रोपगच्छ ग्रामास्त
 नगरेषु अनेकानि राजन्यस्राणि यावत् सम्यगरत, अत्रापि व्याख्या पूर्ववत्,
 ततस्त्वदनन्तरं खलु स दूतस्त्वयि=पूर्वोक्तदूतस्य निर्गच्छति कापिल्यनगरं नि-
 में आठवें दूत को कौण्डिन्य नगर में भीष्मक के पुत्र रुक्मि राजा के
 पास में नौवें दूत को विराट नगर में मौ भाट्यो से युक्त कीचक के
 पास में, और दशम दूत को अजिष्ठ ग्रामों में आरुरों में एव नगरों
 में हजारों राजाओं के पास जाने के लिये कहा । इन दूतों को राजा
 द्रुपद ने यह समझा दिया कि तुम लोग जब इन राजाओं के पास जाओ
 तब पहिले उन्हें दानों द्वारा जोड़कर नमस्कार करना और कहना कि
 कापिल्य पुर नगर में द्रुपदकी पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है
 सो आप लोग उस में द्रुपद राजा उपर दया कर के शीघ्र से शीघ्र
 पधारें । राजाकी आज्ञानुसार तीसरे दूतसे लेकर नौवें दूत तक समस्त
 दूत जिन्हे २ जहाँ २ जाने को कहा था-वे वहाँ चले गये । वहाँ जाकर
 उन्होंने ने जैसा द्रुपद राजा ने इन से करने एव कहने को कहा था-वैसा
 ही उन्हो ने वहाँ किया और कहा । इस तरह पहिले की तरह वहाँ
 तक सब व्याख्या समझलेनी चाहिये । (तण्ण से दूए तहेव निगच्छइ,

विशट नगरमा सो आछओथी युक्त द्वीपकनी पासे अने दशमा इतन जाकी
 रही गयेला जीव आभोमा आकरोमा अने नगरमा डंगरे राजओनी पासे
 जवा हुकम क्यो आ भधा इतोने राज द्रुपद जवा पडेला आ बात सरस
 रीते समजवी दीधी इती के ज्यारे तमे राजओनी पासे जओ त्यारे सो
 पडेला पोताना जने हाथ जोडीने तेओने नमस्कार करजे अने त्थारपछी तमे
 तेभने विनती करजे के कापिल्य नगरमा द्रुपदनी पुत्री द्रौपदीने स्वयंवर थवानो
 छे तो आप सो द्रुपद राज उपर कृपा करीने अविलज त्या पधारो राजनी
 आज्ञा सुजण त्रीज इतथी माडीने नवमा इत सुनीना भधा इतो जवा जवा
 तेओने जवालु छतु त्या त्या पडेला त्या पडेथीने तेओओ द्रुपद राजओ
 जेभ आज्ञा करी इती तेभज तेओओ क्युं अने वहु, अर्द्ध - - - नी जेभज
 समझ लेवु जेधजे (तण्ण से दूए तहेव निगच्छइ, जाव

सरति, निर्गत्य यत्रैव ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसदस्याणि, तत्रैवोपागच्छति
उपागत्य यावत्-समवसरत, 'समवसरत' इति पर्यन्त दत्तवाक्य पूर्ववद् बोध्यम् ।
ततः खलु तानि अनेकानि राजसदस्याणि तस्य दत्तम्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा
निश्चय्य दृष्टतुष्टाः सन्तः दूत सत्कारयन्ति=सत्कृत कुर्वन्ति समानयन्ति, सत्कार्यं,
समान्य प्रतिविमर्जयन्ति ।

ततः खलु ते वासुदेवमुख्या बहुसदस्यसत्थका राजानः,=प्रत्येकं २ स्नाताः

जेणेन गामागर जाव समोसरह) वह दशवां दूत उसी तरह से-
पहिले के दूतों के समान कापिल्य नगर से निकला और निकल कर
जहाँ ग्राम आकर और नगर थे-वहाँ पर अनेक राजसदस्यों के पास
गया-वहाँ जाकर शिष्टाचार पूर्वक उसने सब से इस प्रकार कहा कि
काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला
है-सो आपमच लोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके जल्दी कांपिल्य
पुर नगर पधारे (तएण ताड अणेगाड रायसहस्साड तस्स दूयस्स
अतिए एयमदु सोच्चा निसम्म हट्ठं त दूय सस्कारेति, सक्कारित्ता
सम्माणेति, सम्माणित्ता पडिविसज्जेति) इस प्रकार वे अनेक सहस्र
राजा उस दूत के मुख से इस समाचार को सुन कर और उसे अपने
अपने २ हृदयों में अवधारित कर उठून ही अधिक आनन्द से प्रमुदित
बनकर परम सतोष को प्राप्त हुए । उन्होंने उस दूत का सत्कार किया
सत्कार करके सम्मान किया और सम्मान करके फिर उसे पीछे विसर्जित
कर दिया-भेज दिया । (तएण ते वासुदेवमुख्या नहवे रायसहस्सा पत्तेय

समोसरह) ते दशमे दूत अधानी जेम कापील्य नगरथी नीकल्ये अने
नीकलीने ज्या आम आडर अने नगर छेता त्या अनेक महुओ राजाओंनी
पामे गये। त्या जधने नअपछे तेछे सहुने आ प्रभाछे कहु के कापिल्य
नगरमा द्रुपद राजाणी पुत्री द्रौपदीने स्वयंवर थवाने छे तो आप भी द्रुपद
राज उपर कृपा उरीने अविलज कापिल्य नगरमा पवारे (तएण ताड
अणेगाड रायसहस्साड तस्स दूयस्स अतिए एयमदु सोच्चा निसम्म हट्ठं त
दूय सस्कारेति सक्कारित्ता, सम्माणेति, सम्माणित्ता, पडिविसज्जेति) आ रीते
सहुओ राजाओ ते इतना मुण्ठथी आ मभाचार सालणीने अने तेने
पोताना इहयमा धारण करीने जूमज प्रमन्न तेमज पग्ग मतुए थया
तेओओ इतने मत्कार क्यो अने मन्मान क्युं त्पारपटी इतने तेओओ
विहाय आपी (तएण ते वासुदेवमुख्या नहवे रायसहस्सा पत्तेय २ प्दाया

સન્નદરદરમિતવચ્ચા ચારુ સુદીતામુપશ્ચરણા' હસ્તિય-પવરગતા હયગચરણ
મહામટચટ્ટરમકરગન્ધરિસિતા' = મહાગચરણમકરગન્ધરિસિતા, સ્વકેભ્યઃ
સ્વકેભ્યોમભિનિર્ગમ્યન્તિ, અભિનિર્ગમ્ય ચર્ચય પદ્યાગે જનપદસ્ત્રેય માધાગ્યન્
ગમનાયન્ગન્તુ મટ્રાઃ ॥ સુ૦ ૧૯ ॥

મૂલમ્—તણ્ણ સે દુવણ્ણ રાયા કોહુવિયપુરિમે મહાવેદ્ સદ્ધા
વિત્તા એવ વયાસી—ગચ્છહણં તુમં દેવાણુપ્પિયા । કંપિલ-
પુરે નયેરે વહિયા ગગાણ્ણ મહાનદીણ્ણ અદૂરસામતે એગ મહ
સયવરમંડવ કરેહ અણેગચંભસયસન્નિવિટ્ઠં લીલહિય સાલ
ભજિઆગ જાવ પચ્છપ્પિણતિ, તણ્ણ સે દુવણ્ણ રાયા દોચ્ચંપિ
કોહુવિયપુરિસે સદ્ધાવેદ્ સદ્ધાવિત્તા એવં વયાસી—ચિપ્પામેવ

૨૫૫યા સન્નદરદરમિતવચ્ચા હયગચરણ મહયા મટચટ્ટરમકરગન્ધરિસિતા' = મહયા મટચટ્ટરમકરગન્ધરિસિતા ૨ નગરેહિતો અભિનિર્ગમ્યન્તિ ૨ જેણે પાચાહે જળવણ તેણે પહારેત્થ ગમણાણ) યાદમેં જય દૂત સમાચાર દેકર વાપિસ કાપિલ્ય પુર નગર મેં ઓચુકે તય વાસુદેવ પ્રમુખ વે અનેક શાસ્ત્રરાજા પ્રત્યેક સ્નાન સે નિવટે, ઓર મજાકર અપનેર જારીર પર કચ્ચ પહિરા, યાદત્ત વાસુધ ઓર પ્રજ્ઞાનોં કો અપને ૨ સાય લિયા, અપને ૨ પ્રધાન હાથિ નેં પર ચઢે ઓર નાથી ઘોડે રથ ઓર મહામટોં ક સમુદાય સે ઝિર હુણ હોકર વે સય અપને રાજ મટલોંસે-નગરોં સે-નિકલે-નિલકર જહા પાંચાલ જનપદ યા ઉત્ત ઓર ચલ દિયે ॥ સુ૦ ૧૯

સન્નદરદરમિતવચ્ચા હયગચરણ મહયા મટચટ્ટરમકરગન્ધરિસિતા' = મહયા મટચટ્ટરમકરગન્ધરિસિતા ૨ નગરેહિતો અભિનિર્ગમ્યન્તિ ૨ જેણે પાચાહે જળવણ તેણે પહારેત્થ ગમણાણ) ત્યારપછી જ્યારે બધા હતા સમાચાર આપીને કાપિલ્યપુર નગર પાછા આવી ગયા ત્યારે વાસુદેવ પ્રમુખ ઘણા હબરો રાજાઓએ સ્નાન કર્યો અને ત્યારબાદ પોતાના શરીર ઉપર કપડો ધારણ કર્યા યાવત્ વાસુધો અને પ્રહરણોને પોતાની સાથે લીધા ત્યારપછી તેઓ બધા પોતપોતાના પ્રધાન હાથીઓ ઉપર ચઢી અને હાથી, ઘોડા, રથ અને મહામટોના સમુદાયની સાથે નગરોથી નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યાં જ્યાં ॥ સુત્ર ૧૬

भो देवाणुप्पिया । वासुदेवपामुक्खाण वहुणं रायसहस्साणं
 आवासे करेह तेवि करेत्ता पच्चप्पिणांति, तएण दूवए
 वासुदेवपामुक्खाण वहुणं रायसहस्साण आगम जाणेत्ता
 पत्तेयर हत्थिखध जाव परिवुडे अग्घ च पज्ज च गहाय सवि-
 ङ्गिण कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासु-
 देवपामुक्खा वहुव रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ उवाग-
 च्छित्ता ताइ वासुदेवपामुक्खाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ
 सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसि वासुदेवपामुक्खाण
 पत्तेयर आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव
 सयार आवासा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिख-
 धाहितो पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता पत्तेय खधावारनिवेस
 करेति करित्ता मएर आवासे अणुपविसति अणुपविसित्ता
 सएसुर आवासंसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य
 सत्तुयट्ठा य वहुहि गधवेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य
 उवणच्चिज्जमाणा य विहरति, तएणं से दुवए राया कपिल्ल-
 पुर नगर अणुपविसइ अणुपविसित्ता विउल असण४ उवक्ख-
 डावेइ उवक्खडावित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव
 वयासी-गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया । विउल असण४ सुर
 च सज्ज च मय च सीधु च पसण्ण च सुवहुप्फवत्थगंधम-
 ल्लालकार च वासुदेवपामोक्खाण रायसहस्साण आवासेसु
 साहरह, तेवि साहरति, तएण त वासुदेवपामुक्खा त विउलं

સત્તદ્વદ્વર્મિતપત્તા યાતદ્ સુદીનામૃતપ્રમણાઃ ૨ધ્વિન્નપ્રવરગતા હયગજરથ
મહામદનટ્ટરમકરગન્ધપરિણાતાઃ=મદનગરમહામૃતમૃતપરિણાતા, ધ્વજેભ્યઃ
સ્વકેભ્યોમિનિર્ગછન્તિ, અમિનિર્ગત્ય ચરંત પદ્માઓ જનપત્તત્રૈવ પ્રાધાન્ય
ગમનાય=ગન્તુ પ્રગ્તાઃ ॥ સૂ૦ ૧૯ ॥

મૂલ્ય-તણ્ણ સે દુવ્વણ રાયા કોહુંવિયપુરિસે સદાવેડ સદા
વિત્તા એવ વયામી-ગચ્છહણતુમં દેવાણુપ્પિયા ! કપિલ્લ
પુરે નયરે વહિયા ગંગાણ મહાનર્દીણ અદૂરસામંતે એગ મહ
સયરમડવ કરેહ અણેગત્વંભસયસન્નિવિટ્ઠ લીલદ્વિય સાલ
ભજિઆગ જાવ પચ્છપ્પિણતિ, તણ્ણં સે દુવ્વણ રાયા દોચ્ચંપિ
કોહુંવિયપુરિસે સદાવેડ સદાવિત્તા એવ વયામી-લિપ્પામેવ

૨૦જાયા સત્તદ્વદ્વર્મિતપત્તા યાતદ્ સુદીનામૃતપ્રમણાઃ ૨ધ્વિન્નપ્રવરગતા હયગજરથ
મહામદનટ્ટરમકરગન્ધપરિણાતાઃ=મદનગરમહામૃતમૃતપરિણાતા, ધ્વજેભ્યઃ
સ્વકેભ્યોમિનિર્ગછન્તિ, અમિનિર્ગત્ય ચરંત પદ્માઓ જનપત્તત્રૈવ પ્રાધાન્ય
ગમનાય=ગન્તુ પ્રગ્તાઃ ॥ સૂ૦ ૧૯ ॥

સત્તદ્વદ્વર્મિતપત્તા યાતદ્ સુદીનામૃતપ્રમણાઃ ૨ધ્વિન્નપ્રવરગતા હયગજરથ
મહામદનટ્ટરમકરગન્ધપરિણાતાઃ=મદનગરમહામૃતમૃતપરિણાતા, ધ્વજેભ્યઃ
સ્વકેભ્યોમિનિર્ગછન્તિ, અમિનિર્ગત્ય ચરંત પદ્માઓ જનપત્તત્રૈવ પ્રાધાન્ય
ગમનાય=ગન્તુ પ્રગ્તાઃ ॥ સૂ૦ ૧૯ ॥

काइं आसणाइं अत्थुपचत्थुयाइ रएहर एयमाणत्तिय पच्च-
प्पिणह, ते वि जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा
वहवे रायसहस्सा कल्ल पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थि-
संधवरगया सकोरट० सेयवरचामराहि हयगय जाव परिवुडा
सत्विङ्गीए जाव रवेणं जेणेव सयंवेरे तेणेव उवागच्छइ उवाग-
च्छित्ता अणुपविमत्ति अणुपविसित्ता पत्तेयर नामकिएसु आस-
णेषु निनीयति ढोवड रायवरकण्ण पडिवालेमाणा चिट्ठति,
तएण से पडुए राया कल्ल ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखध-
वरगए सकोरट० हयगय० कपित्ठपुरे मज्झमज्झेण निग्गच्छंति
जेणेव सयवरमडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा वहवे रायसहस्सा
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेसि वासुदेवपामुक्खाण
करयल० वद्वावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामर गहाय
उववीयमाणे चिट्ठति ॥ सू० २० ॥

टीका—‘ तएण से ’ इत्यादि । ततः खडु स दुपदो राजा कौडुम्बिकपुरु-
षान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छत खलु यूय इ देवानुप्पिया !
काम्बिल्यपुरस्य नगरस्य बहि प्रदेशे गङ्गाया महानया अदूरसामन्ते=नातिदूर-
नातिमनापे एह महान्त सम्वरमण्डपं कुरुत कोटशनित्याह—‘ अणेग ’ इत्यादि ।

‘ तएण से दूए राया कोडुविय पुरि से ’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (दूए राया) दुपद राजा ने (कोडुविय
पुरिसे सदावेइ) कौडुम्बिकपुरुषों को बुलाया (सदावित्ता एव वयासी)
बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा—(गच्छइ ण तुम देवानुप्पिया) कपित्ठपुरे
नगरे बहिया गगाए महानईए अदूरसामते एग मह सयवरमडव करेह,

‘ तएण से दूए राया कोडुविय पुरिसे ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (दूए राया) दुपद राजा ने (कोडुवियपुरिसे
सदावेइ) कौडुम्बिक पुरुषों ने बोला—ना. (सदावित्ता एव वयासी) बोलातीने
तेमने आ प्रभावे कछु के (गच्छइ ण तुम देवानुप्पिया) कपित्ठपुरे नगरे
बहिया गगाए महानईए अदूरसामते एग मह सयवरमडव करेह, अणेगसमस-

असणध जाव पसन्नं च आसाणमाणाध विहरति, जिमियाभुत्तु-
 त्तरागया वि य णं समाणा आयता जाव मुहासणवरगया
 वहूहि गधव्वेहि जाव विहरति, तण्णं मे दुवण गया पुव्वाव-
 रण्हकालसमयांसि कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी
 गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया । कपिल्लपुरं सघाउग जाव पहे
 वासुदेवपामुक्खाण य रायसहस्साण आवासेमुहत्तिखधवरगया
 महयार सहेण जाव उग्घासेमाणा एव वटह-एव खल्ल देवा-
 णुप्पिया कल्ल पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए
 अत्तयाए धट्टज्जुणस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए
 सयवरे भविस्सइ, त तुब्भे ण देवाणुप्पिया । दुवय रायाणं
 अणुगिणहेमाणा पहाया जाव विभूसिया हत्तिखधवरगया सको-
 रट० सैयवरचामर० हयगयरह० महया भडचडगरेण जाव
 परिकिस्सत्ता जेणेव सयवरमटवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 पत्तेय २ नामकिएसु आसणेसु निसीयहर दोवइ रायकण्णपडि-
 वालेमाणा २ चिट्ठह, घोसण घोसेहर मम एयमाणत्तियं पच्च-
 प्पिणह, तएण ते कोडुविया तहेव जाव पच्चप्पिणति, तएण
 से दुवए राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी
 -गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । सयवरमडप आसियसमज्जि-
 ओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुजावयारकलिय काला-
 गरुपवरकुदुरुक्कतुरुक्क जाव गधवट्ठिभूय संचाइमचकलिय करेह
 करित्ता वासुदेवपामुक्खाण वहुण रायसहस्साण

અને કસ્તુરમાળાનિવિદ્ય=મોરના ફાળાનુકૂળ, 'લીલટિયમાલમજિઆગ' લીલા
સ્થિતશાલમજિઆગ=શ્રીગ્યામિયા ગાઝમજિઆગ-પુત્તલિકામજિઆગ, ગામ-
'તથાસ્તુ' એટલે કે કાટુમ્બિકપુરુષાગમના સ્વીકાર્ય તથા સપાય,
પ્રત્યર્પયન્તિ=મળવોનિર્મિત એટલે નિર્દોશનિર્મિત। તત્ત્વ મદ્રુપગોરાજા 'દોચપિ'
દ્વિતીયપારમપિ કોટુમ્બિકપુરુષાગમના, ગ્રન્થપિત્ત પામરાગોર-હે દેવાનુ
પ્રિયા: 'અપ્રમેય ગામુદેવમદ્રુપાણા ગ્રન્થ પામરાગમાળામા આગામ-ગામસ્થાન
કુલત=અચપત, તેડપિ કોટુમ્બિકપુરુષા 'પરણા' ક્રન્થા=ગામુદેવગદીના નિવાસપિ
પૃથક્ પૃથક્ યોગ્ય ગામસ્થાન પ્રિયામ પ્રત્યર્પયન્તિ=દ્રુપગાય રાજે રચયન્તિ। તત્ત્વ:
અનેગ વ્યભસયસન્નિવિદ્ય લીલટિયમાલમજિઆગ ગામ પચ્ચપિગતિ) હે દે
વાનુપ્રિયો ! તુમલોગ જાઓ-ઓઃ કાપિત્થપુર નગરકેળાદિ ગગામહા
નદી કે નઅતિદૂર આર ન અતિ સમીપ-અગિત સ્થાન-મેં એક ગ્રન્થામી
સ્વયંવરમંડપ વનાઓ । જો અનેક નેત્રોં દામોંસે પુત્ત હો તથા જિસમેં
વિવિધ પ્રકાર કી કીડા કરતી હૃદ પુત્તલિકાં સજા કર લગાઈ ગઈ
હોં । યાવત્ "તથાસ્તુ" કહ્ કરે એ લોગોં ને રાજા કી હસ આજા કો
માન લિયા આર ઉસી આજાકે અનુમાર સ્વયંવર મંડપ વના કરે હસકો
ખર રાજાકો કર દી । (તથા સે દ્રુપ રાયા દોચપિ કોટુમ્બિક પુરિસે
સદાવેદ સદાવિત્તાણ વચાસી-લિપ્થામેય દેવાણુપ્રિયા । વાસુદેવ પાસુ
કલાણ ગ્રન્થ રાયસહસ્તાણ આવાસે કરેહ તે પ્રિ કરેતા પચ્ચપિગતિ
હસકે વાદ દ્રુપદ રાજા ને દુમરે કાટુમ્બિક પુરુષોં કા ગુલાયા-ગુલાકાર
અનેસે પેસા કરેહ-હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ શીઘ્રાતિશીઘ્ર વાસુદેવ

યસન્નિવિદ્ય લીલટિયમાલમજિઆગ ગામ પચ્ચપિગતિ) હે દેવાનુપ્રિયો ! કાપિત્થ
પુર નગરની બહાર મહા નદી ગ ગાથી વધારે દૂર નહોં તેમજ વધારે નજીક પણ નહિ
એવા યોગ્ય સ્થળે એક બારે વિશાળ સ્વયંવર મંડપ તૈયાર કરે કે જે પ્રજા
સે કડો થાભલાઓવાળો હોય, તેમજ જેમા અનેક બાતની કીડા કરતી પૂત
ળીઓ સજાવીને મૂકવામા આવી હોય તે લોકોએ પણ 'તથાસ્તુ' કહીને
રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને ત્યારપછી તેમની આજ્ઞા મુજબ જ સ્વયં
વર મંડપ તૈયાર કરીને રાજાને તેની બાબત આપી । (તથા સે દ્રુપ રાયા
દોચપિ કોટુમ્બિકપુરિસે સદાવેદ, સદાવિત્તાણ વચાસી-લિપ્થામેય દેવાણુપ્રિયા ।
વાસુદેવ પાસુકલાણ ગ્રન્થ રાયસહસ્તાણ આવાસે કરેહ, તે પ્રિ કરેતા પચ્ચપિગતિ)
ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ ખીન કોટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને
તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો અવિલગ્ન વાસે

खलु दुपदो राजा वासुदेवप्रमुखानां गृह्णा राजसहस्राणाम् आगम=आगमन
 ज्ञात्वा प्रत्येक २ हस्तिस्कधरगतः, ह्यगजरथमहाभटममूहपरितृत, ज-यं=
 पानार्थं जल पार्थं=चरणप्रक्षालनार्थमुदकं च गृहीत्वा सर्वद्वर्वा छत्रचामरादिरूपया
 काम्बिल्यपुरतो निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ते वासुदेवप्रमुखा गृहसहस्रमुखका-
 राजानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तानि वासुदेवप्रमुखाणि बहूनि राजमन्त्राणि=
 तान् बहुसहस्रसंख्याकान् वासुदेवप्रमुखान् राज्ञः, अर्घ्येण च पात्रेण च सत्कार-

प्रमुख अनेक सहस्र राजाओं को बैठने के लिये पृथक् स्नान घनाओ ।
 उन्होंने राजाकी आज्ञानुसार बैसा ही किया और इसकी खबर राजा को
 कर दी । (तत्पण दूवण वासुदेव प्रमुखानां गृहण रायसहस्राण आगम
 जाणेत्ता पत्तेय २ हत्थिखध जाव पड्डिबुडे अग्व च पज्ज च गहाय सन्धि
 ड्ढी कपिल्लपुराओ निगगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव ते वासुदेव पामोक्खा
 बह्वे रायसहस्रा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइ वासुदेवपामु-
 क्खाइ अग्वेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ) इसके बाद दुपद
 राजा वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को आगमन जानकर अपने प्रधान
 हस्ती पर आलूट हो हय, गज, रथ तथा महाभटों के समूह के साथ २
 प्रत्येक राजा के लिये अर्घ्य-पीने के लिये पानी, पात्र-चरण प्रक्षालन के
 जल-लेकर छत्रचामर आदि अपनी राजविभूतिसे युक्त होकर काम्बिल्य
 पुर नगर से निकले-निकलकर जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा ये बहा
 गये । बहा जाकर उन्होंने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का अर्घ्य

હત્તરો રાજાઓને બેસવા માટે જુબા જુબા સ્નાન તૈયાર કરો તે લોકોએ પણ
 રાજાની આજ્ઞા મુજબજ બધું કામ પતાવી દીધું અને કામ થઈ ગયાની ખબર
 રાજા સુધી પહોંચાડી દીધી (તદ્દન દુનદ વાસુદેવપ્રમુખાણ ગ્રહૂણ રાય
 સહસ્રાણ આગમ જાણેતા પતેય ૨ હત્થિખધ જાવ પડિબુડે અગ્વ ચ પજ્જ ચ
 ગહાય સન્ધિવ્હોપ કપિલ્લપુરાઓ નિગગચ્છઈ, નિગચ્છિત્તા જેગવ તે વાસુદેવપ્રમુખા
 ગ્રહ્વે રાયસહસ્રા તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા તાઈ વાસુદેવપ્રમુખા
 અગ્વેણ ય પજ્જેણ ય સક્કારેઈ, સમ્માણેઈ) ત્યારબાદ વાસુદેવ પ્રમુખ હત્તરો
 રાજાઓનું આગમન સાલગાને દુપદ રાજા પોતાના પ્રધાન હાથી ઉપર સવાર
 થયા અને ઘોડા, હાથી, રથ તેમજ મહાભટોના સમૂહની સાથે દરેક દરેક
 રાજાને માટે અર્ધ-પીવા માટે પાણી-લઈને છત્ર ચામર વગેરે પોતાની રાજ-
 વિભૂતિથી યુક્ત થઈને કાપિલપુરથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને ત્યાં
 વાસુદેવ પ્રમુખ હત્તરો રાજાઓ હતા ત્યાં પહોંચ્યા ત્યાં જ અને તેમણે તે

યતિ, સમાનયતિ, સત્કાર્ય મત્કારક ૩૩, નાનપ તેવાં તા દુરેવામુ તાગા પ્રત્યક્ષ
પૃથક્ - આરામ 'પ્રવશ્ત' તિતરતિ । ૧૧. તત્તુ ને તાસુદેવમનુષા યતિવ મ્કા
=નિજા ૨ જાવનાન્વૈશાપાગન્ગિ, ટયાન ૫ ઈન્નિમ્કન્વાર્ ક્ષત્રયગોઢિ
પ્રત્યક્ષ પ્રત્યેક ૨ સ્કન્ધાસારનિશ કુર્તિ, ૭-૮ સકે મ્કે આગમેષ્વપિ
શન્તિ, અનુપરિશ્વ ન્કેપુ સ્કપુ આગમેષુ-શ્રામેષુ ચ ક્ષત્રેષુ ચ સનિપ્પા
ઉપરિશ્વ તથા 'સનુષ્ઠા' તા મર્ગિતિ. પરિતિવશર્થા ૧ તદ્ગુર્નિર્નર્તિશ 'નાડ
ઈદિ ય' નાટીશ 'ઉગિજ્જમાગા ૫' ઉપગીશમાનાગ. 'ઉગિજ્જમાગા ૫'

ઔર પાગ સે સત્કાર ક્રિયા-સન્માન ક્રિયા । (સત્કારિત્તા, સન્માનિત્તા,
તેસિં વાસુદેવપાસુક્ષ્માણ પત્તેય ૨ આગાસે ત્રિવરઢ, તળળ તે વાસુદેવ
પાસુક્ષ્મા જેણેય સયા ૨ આવાસા તેણેય ઉવાગચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા હ્થિ
સધાહિ તો પચ્ચોરુહતિ, પચ્ચોરુહિત્તા પત્તેય ત્રવાગારનિવેસ કરેતિ)
સત્કાર સન્માન કરકે ડન્ગેન ડન મય વાસુદેવ પ્રમુખોં કા પ્રત્યેક કે
લિયે પૃથક્ આવાસ-સ્થાન-દિયા, । ઇસકે પથાત્ વે વાસુદેવ પ્રમુખરાજા
જહા અપના ૨ સ્થાન નિયન વા-વરા મયે । વરા જાકર કે અપને ૨
હાથિયોં પર સે નીચે ડતરે ઔર ડતર કરકે ડન્ગેન અપની ૨ સ્કન્ધા
વાર સ્થાપિત કર દો-અર્થાત્ સૈન્ય કો ઢહરા દિયા । (કરિત્તા સપ ૨
આગાસે અણુ) ઢહરા કર કિર વે અપને ૨ આવાસોં મેં પ્રવિષ્ટ હુપ
(અણુપવિસિત્તા સપસુ ૨ આગાસેસુ ય આસણેસુ ય સયણેસુ ય સન્નિ
સન્ના ય સનુષ્ઠા ય વહ્દિં મ ગચ્વેદિ ય નાડપદિ ય ઉગિજ્જમાગા ય

વાસુદેવ પ્રમુખ હામરો રાજાઓનુ અર્થ અને પાઘથી સત્કાર તેમજ સન્માન
કર્તુ (સત્કારિતા સન્માનિત્તા તેનિ વાસુદેવપાસુક્ષ્માણ પત્તેય ૨ આગાસે ત્રિવરઢ,
સળળ તે વાસુદેવપાસુક્ષ્મા જેણેય સયા ૨ આવાસા તેણેય ઉવાગચ્છદ, ઉવા
ગચ્છિત્તા હ્થિસધાહિતો પચ્ચોરુહતિ, પચ્ચોરુહિત્તા પત્તેય ત્રવાગારનિવેસ
કરેતિ) સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે વાસુદેવ પ્રમુખ ઢરેડે ઢરેડે
રાજાને જુડ જુડ આવાસ સ્થાન આંચુ ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ
જ્યા પોતપોતાનુ આવાસ સ્થાન નક્કા કરવામા આંચુ હતુ ત્યા ગયા ત્યા
જ્યને તેઓ પોતપોતાના હાથીઓ ઉપરથી નીચે ડતર્યા અને ડતરીને તેઓએ
પોતપોતાની સ્કન્ધાવાર-છાવણી સ્થાપિત કરી એટલે કે સનાને પડાવ નાખ્યો ।
(કરિત્તા સપ ૨ આગાસે અણુ) છાવણી નાખીને તેઓ પોતપોતાના આવાસ
સ્થાનમા પ્રવિષ્ટ થયા (અણુપવિસિત્તા સપસુ ૨ આગાસેસુ ય આસણેસુ ય સયણે
સુ ય સન્નિસન્ના ય સનુષ્ઠા ય વહ્દિં મ ગચ્વેદિ ય નાડપદિ ય

उपनृत्यमानाश्च गीत श्राव्यमाणाश्च, नृत्य द र्यमानाश्च विहरन्ति । ततः रुद्रपदो राजा प्राग्विल्यपुर नगरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य विपुलम्-अशन स्वाद्य स्वाद्यम् उपस्कारयति, मन्थारयति, उपस्कार्य कौटुम्बिकपुरपान् ॥ ६५ ॥ शब्दयित्वा एवम-गदीत-गच्छत रलु यूय हे देव-दुप्रियाः ! विपुलम्, अशन प स्वाद्य स्वाद्य सुरा च मज्ज च मांसं च सीधु च प्रसन्ना च सीधुः प्रसन्ना च यदि निजेणे, तदा सुरहु पुष्करवस्त्र-धमाल्यालङ्कार च वासुदेवप्रसुराणा राजसहस्र आवासेषु ' साहरह सहरत=उपनयत, तेऽपि कौटुम्बिकपुरपास्तधैव सहरन्ति

उवणच्चिज्जमाणा य विहरति तण्णं से दुरण राया कपिल्लपुर ॥ अणुपविमइ, अणुपविमिस्सा विउल असण ४ उवस्सखडावेह) होकर के वे अपने अपने आवास स्थानों में आसनों पर एव विस्तार पर जाकर अच्छी तरह बैठ गये छेद गये । वहाँ छेदे हुए उनकी जने गधवोंने, अनेक नाट्यकारों ने स्तुति की-उनकी प्रशंसा के गीत गाए, नाटक दिखलाया । हमके बाद द्रुपद राजा कापिल्यपुर नगर के भीतर आये-वहाँ आकर के उन्होंने विपुलमात्रा में अशन, पान, स्वाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया-पकवाया । (उवस्सखडाविस्सा कौटुम्बिकपुरिसे सदावेह सदाविस्सा एव वयामी-(गच्छह णं तुमे देवानुप्पिया ! विउल असण ४ सुर च मज्ज च सीधु च पसण्ण च सुरहु पुष्करवस्त्र-धम-लङ्कार च वासुदेवपासोदखाण रायसहस्रमाण आवासेसु साहरह) तैयार करवा कर फिर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो तुमलोग जाओ और इस

उवणच्चिज्जमाणा य विहरति, तण्णं से दुरण राया कपिल्लपुर ॥ अणुपविमइ अणुपविमिस्सा विउल असण ४ उवस्सखडावेह) प्रवेशीने तेजो पोतपोताना आसने। उपर नागी रीते जेसी गया, भई गया त्या सुध गयेला तेजोनी धनु ॥ ६५ ॥, धला नाट्यकारोंने स्तुति करी, तेमनी प्रशंसा गीते गाया अने नाटके भजव्या तारपथी द्रुपद राजा कापिल्यपुर नगरमा आया त्या आधीने तेजोने पुण प्रमाणमा अशन, पान भात्र अने स्वाद्य इ। आनतने आहार तैयार भगवडव्यो (उवस्सखडाविस्सा कौटुम्बिकपुरिसे सदावेह सदाविस्सा एव वयामी गच्छह णं तुमे देवानुप्पिया ! विउल असण ४ सुर च मज्ज च मांसं च सीधु च पसण्ण च सुरहुपुष्करवस्त्रधमलङ्कार च वासुदेवपासोदखाण रायसहस्रमाण आवासेसु साहरह) तैयार करवाने तेमने कौटुम्बिक पुरुषोंने ओलाव्या अने ओलावाने तेजोने वहु ठे ठे देवानुप्रियो । तेने

यति, समानयति, सत्कारार्थं सत्कारं कृत्वा, समान्य तेषां वासुदेवप्रसूत्यां प्र यत्नं
 पृथक् २ आवास 'वियरइ' स्तिरति । ततः यत्नं ते वासुदेवप्रसूत्या यत्रैव स्या
 २=निजा २ आवासात्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागच्छन्ति इति स्वरूपं पश्यन्ति इति
 प्रत्यक्षं प्रत्येकं स्वरूपात्तत्रैवोपागच्छन्ति, इति स्वरूपं पश्यन्ति इति
 शान्ति, अनुपविश्य स्वरूपे स्वरूपे जायतेषु-आमनेषु च यदनेषु च मनिष्या
 उपविष्टाश्च तथा 'सतुपद्वा' सत्प्रवर्तिताः परिवर्तिताश्च । यद्वा निर्गन्तव्यं च 'नाड
 एहि य' नाडौ च 'उपगच्छन्माणा य' उपगच्छन्माणा य । 'उपगच्छन्माणा य'

और पाव से सत्कार किया-सन्मान किया । (सत्कारित्वा, सम्मानित्वा,
 तैस्ति वासुदेववासुस्यां पत्तय २ आवासे वियरइ, तत्तण ते वासुदेव
 वासुस्या जेणेय सया २ आवासा तेणेय उवागच्छइ, उवागच्छित्वा इति
 खधाहिं तो पच्योरुहति, पच्योरुहित्वा पत्तय सयात्तत्रैवोपागच्छन्ति
 सत्कार सन्मान करके उन्होंने उन नय वासुदेव प्रसूत्यों को प्रत्येक के
 लिये पृथक् २ आवास-स्थान-दिया, । इसके पश्चात् वे वासुदेव प्रसूतराजा
 जहा अपना २ स्थान नियत या-दहा गये । वहा जाकर के अपने २
 हाथियों पर से नीचे उतरे और उतर करके उन्होंने अपनी २ स्कन्धा-
 वार स्थापित कर दी-अर्थात् स्थान को ठहरा दिया । (करित्वा सए २
 आवासे अणु०) ठहरा कर फिर वे अपने २ आवासों में प्रविष्ट हुए
 (अणुपविसित्वा सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्नि-
 सन्ना य सतुपद्वा य बहूहि गव्वेहि य नाडणहि य उवागच्छन्माणा य

वासुदेव प्रसूत ६ भद्रा राज्ञोऽनु अर्धे अने पाधथी सत्कार तेभ्यः सन्मान
 कर्तुं (सत्कारित्वा सम्मानित्वा तैस्ति वासुदेववासुस्यां पत्तय २ आवासे वियरइ,
 तत्तण ते वासुदेववासुस्या जेणेय सया २ आवासा तेणेय उवागच्छइ, उवा
 गच्छित्वा इति प्रवर्तिताः पच्योरुहति, पच्योरुहित्वा पत्तय सयात्तत्रैवोपागच्छन्ति
 करेति) सत्कार तेभ्यः सन्मान करीने तेभ्यो वासुदेव प्रसूत ६ भद्रा
 राज्ञे लुङ् लुङ् आवास स्थान आण्यु त्थारपणी वासुदेव प्रसूत ६ भद्रा
 ल्या पोतपोतानु आवास स्थान नक्का करवाभा आण्यु इतु त्या गया त्या
 न्धने तेभ्यो पोतपोताना हाथीभ्यो उपर्यथी नीचे उतर्या अने उतरिने तेभ्यो
 पोतपोतानी स्कन्धावार-छावणी स्थापित करी ओटले के सनाने पडाव नाण्यो
 (करित्वा सए २ आवासे अणु०) छावणी नाभीने तेभ्यो पोतपोताना आवास
 स्थानमा प्रविष्ट तथा (अणुपविसित्वा सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणे
 सु य सन्निसन्ना य सतुपद्वा य बहूहि गव्वेहि य नाडणहि य

पविष्टा बहुभिर्गन्धर्वैर्यादृ नाट्यैवोपगीयमाना उपनृत्यमानाश्च विहरन्ति=
आसते स्म इत्यर्थः ।

तत रत्न स मुण्डो राजा पूर्वापराह्नजालसमये कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति,
शब्दयित्वा एवमनादीत्-गच्छत खलु हे देवानुमित्राः । काम्पित्यपुरे नगरे शृगा-
टक यावत्-त्रिचतुरचत्तर महापथपथेषु वासुदेवप्रसूतानां च रात्रमहस्त्राणामावा
सेषु आवासस्थानेषु हस्तिस्त्रयसरगता मत्ता २ शब्देन=उच्चैः स्वरैः यावद्
उद्गोषयन्तः २ एव वदन्-एव खलु हे देवानुमित्राः । मध्ये-आगामीनि द्वितीय

गधर्वो ने नाना प्रकार के स्तुत्यात्मक गीत गाये और नाट्यकारों ने
नृत्य दिखलाये । (तपण से दुवण राया पुञ्जावणकालसमयमि कौटु-
म्बिकपुरिसे सदावेद, सदाचित्ता एव बयासी, गच्छत ण तुमे देवानुमित्रा ।
कपिलपुरे सघोटग जाव पहेसु वासुदेवप्रसूतानां य राय सहस्त्राण
य आवाससु हस्तिस्त्रयसरगता महता २ मद्देण जाव उग्वोसेमाणा २
एव वदन्, एव खलु देवानुमित्रा । रत्न पाउ० दुवणस रणगो धूयाण
चुलणीण देसीण अत्तयाण वट्टजुणस्स भगिणीण दोवईण रायवरकन्नाण
सयवर भविस्सइ) हमके बाद दुवणराजा ने पूर्वापराह्न जाल के समय
में कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे
देवानुमित्रों ! तुमलोग हाथी पर बैठकर काम्पित्यपुर नगर में जाओ
और वहाँ शृगाटक यावत् त्रिचतुरचत्तर महापथ आदि मार्गों में
जो वासुदेव प्रसूत राजा के आवासस्थान हैं उनके समीप बड़े जोर २

उपर शांतिपूर्वक होती गया तेमना भने-विनोद भाटे गधर्वोञ्च अनेक
जतना स्तुत्या भद जीतो गाथा अने नाट्यअदोञ्च नृत्य करी जताव्या

(तपण से दुवण राया पुञ्जावणकालसमयमि कौटुम्बिकपुरिसे सदावेद,
सदाचित्ता, एव बयासी, गच्छत ण तुमे देवानुमित्रा । कपिलपुरे सघोटग जाव
पहेसु वासुदेवप्रसूतानां य महता २ मद्देण जाव उग्वोसेमाणा २ एव वदन्,
एव खलु देवानुमित्रा । रत्न पाउ० त्रयस्म रणगो धूयाण चुलणीण देसीण
अत्तयाण वट्टजुणस्स भगिणीण दोवईण रायवरकन्नाण सयवर भविस्सइ)

त्यारपछो दुप शब्दको पूर्वापराह्न जालना समये कोटुम्बिक पुङ्गोने
जोलाव्या अने जोलाव्याने तेमने आ प्रभासे उल्लु उ दे देवानुमित्रो । तसे
कोडो छानी उपर कोटीने जाम्पित्यपुर नगरमा जालो अने त्याना शृगाटक
यावत् त्रिच अतुल्य अत्तर महापथ वजेदे भार्जोमा-हे भार्जोनी पासे वासुदेव
प्रसूत राजाजोना आवास घरा छे तेरी पाने जलु भोटा सादे आजतनी

તતઃ સ્વલુ તે વાસુદેવપ્રમુલાસ્તદ્ વિપુલમ્, અસન પાન ગ્વાથ સ્વાથ યાત્ર
પ્રસન્ના ચ ' આસાયમાણા ' આસાદન્તો વિહરન્તિ, અપિ ચ સ્વલુ ' જિમિયા '
જિમિતાઃ-શુક્તચન્તઃ, ' શુક્તત્તરાગયા ' શુક્તોત્તરાગતાઃ શુક્તોત્તર=ભોજનાનન્તરમ્
આગતાઃ શુવતેસ્યત્ર ભાવેક્તઃ ભોજનસ્થાનાદાસપ્રવદેજે પ્રુષ્પપક્ષાલનાર્થમાગતાઃ સન્ન
' આયતા ' આચાન્તાઃ-ક્રત્તચુલ્લુચા, યાત્ર-મુલામનરગતાઃ=આમનરે સુખો-

અશન, પાન, ગ્વાથ સ્વાથરૂપ ચતુર્વિધ આહાર કો સુરા મન્ય, મીધુ ઔર
પ્રસન્ન મદિરા કો ઔર અનેક વિધ દ્રવ્ય પુષ્પોં કો વન્ત્રોં કો ગવમાલ્ય
અથ અલકારો કો વાસુદેવ પ્રમુખ રાજસહસ્રોં કે આગમ સ્થાનોં પર છે
જાઓ. (તે વિ સાહરતિ) રાજા કી આજ્ઞાનુસાર વે સત્ર ઉન
અશનાદિવસ્તુઓં કો વહા પર છે ગયે. (તણ તે વાસુદેવપામુ-
ક્ષા ત વિઝલ અસણ ૪ જાવ પસન્ન ચ આસાયમાણા ૪ વિહરતિ)
ઇસથે માદ ઉન વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓં ને ઉસ આનીન વિપુલ
અશનાદિરૂપ પ્રસન્ના મદિરા તત્ર કી આહાર કી સામગ્રી કો ગ્વાથા
(જિમિયા શુક્તત્તરાગયા વિ ય ણ સમાણા જાત્ર સુદામણવરગયા વહૃર્હિ
ગધવ્વેર્હિ જાવ વિહરતિ) સ્વા પી કર જવ વે નિશ્ચિન્ત હો ચુકે ઔર
મુખ્ય પ્રક્ષાલન કે લિયે ભોજન સ્થાન સે ડઠકર દૂસરે નિકટ સ્થાન પર
આયે-તવ ઉન્હોને કુલ્લા કિયા-ઔર ફિર સુન્દર અપને ૨ આસનોં પર
શાંતિ પૂર્વક આકર બેઠ ગયે. ઇન્કે બેઠતે હી મનોવિનોદ કે લિયે

લોહા જાઓ અને આ અશન, પાન, ખાથ, સ્વાથ રૂપ ચાર જાતના આહાર
રને સુરા, મધ, માસ, મીધુ અને પ્રસન્ન મદિરાને અને ઘણી જાતના આ
પુષ્પોને, વન્ત્રોને, ગધમાલ્ય અને અલકારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજમહાશ્વરોના
આવાસ સ્થાને પહોચાડો (તે વિ સાહરતિ) રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે તેઓ
બધાએ તે ખાથ પદાર્થોને રાજાઓના આવાસ સ્થાને પહોચાડી દીધા (તણ
વે વાસુદેવપામુક્ષા ત વિઝલ અસણ ૪ જાવ પસન્ન ચ અસાયમાણા ૪ વિહરતિ
ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓએ ત્યા પહોચાડવામા આવેલા પુષ્પ
પ્રમાણમા અશન વગેરેથી માડીને પ્રસન્ન મદિરા સુધીના બધી જાતના આહાર
સામગ્રી વગેરેસુ મૂળ રૂચિપૂર્વક પાન કર્યું

(જિમિયા શુક્તત્તરાગયા વિ ય ણ સમાણા આયતા જાત્ર સુદામણવરગયા
વહૃર્હિ ગધવ્વેર્હિ જાવ વિહરતિ)

જમી પરવારીને ન્યાયે તેઓ નિશ્ચિત થઈ ચૂકયા ત્યારે તેઓ મુખ
પ્રક્ષાલન માટે લોજન ત્યાનથી ઊભા થઈને બીજા પાસેના ત્યા
તેઓએ ઠાગળા ઠયો અને ત્યારપછી તેઓ ફરી પોતપો

मण्डपस्तौरोपागच्छत, उपागत्य प्रत्येक 'नामकिण्डसु' नामाङ्कितेषु स्व स्व नामानुरूपतेषु आमनेषु निषीदत, निषद्य द्रौपदीं राजकन्या 'पडिवालेमाणा २' प्रतिपादयन्तः २ प्रतीक्षमाणा २ तिष्ठत इति घोषणा घोषयत, घोषयित्वा ममैतामज्ञप्तिका प्रत्यर्पयत, ततः खलु ते काण्डुम्बिकारतयैव यावत् प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु स द्रुपदो राजा काण्डुम्बिकारूपान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुमित्राः ! सयवरमण्डपम् "आमियसमञ्जियोलि" आसितसमञ्जितोपलिप्तम्=आसितम्-जम्भक्षेपेणाद्रीकृत, समाजित-कवचरात्रपनयनेन सशोधितम्, उपलिप्त-मृद्गोमयादिभिरनुलिप्त, तथा-सुगन्धगन्धिय सुगन्धगन्धिवन-अगुरुगुग्गुलुर्करसरलदाहादिजनितसुगन्धयुक्त, 'पञ्चवर्गपुष्कजोवयारकलिय' पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जपचारमन्त्रिन । 'कालागुरुपवरकुन्दुरुकुरुकुरु-ताय गन्धवटिभूय' कालागुरुपवरकुन्दुरुकुरुकुरुकुरु-यावद्-गन्धवर्तिभूत, न यान्त्रिकदेन-प्रादञ्जनमनननननुद्गुयाभिराम' इति बोध्यम् ।

तत्र कस्ताव हो । मण्डप में आकर प्रत्येक जन अपने अपने नामवाले आसन पर बैठजावे । बैठकर फिर वहा वहा राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करें । (घोसण पोसेह २ मम गयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) इस प्रकार की घोषणा करो और जन तुमलोग ऐसी घोषणा कर चुको तब इसकी हमें पीछे खबर दो । (तएण ते कोडुमिया तहेव जाव पच्चप्पिणति) उन काण्डुम्बिक पुरुषों ने नृपाज्ञानुसार ऐसा ही किया-यावद् में हमलोग आपकी आज्ञानुसार घोषणा कर चुके हैं ऐसी सूचना राजा के पास भेज दी । (तएण से द्रवण राया कोडुमिय पुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया । सयवरमण्डप आमियसमञ्जियोलि सुगन्धवरगन्धिय पच्चवर्गपुष्कजोवयारकलिय कालागुरुपवरकुन्दुरुकुरुकुरुकुरु जाय गन्धवटिभूय मचाहमचकलियं

मण्डपमा आनीने दरेडे दरेड पोतपोताना नामवाणा आसन उपर भेभी जाय त्या भेभीने तेओ राजवर कन्या द्रौपदीना आगमननी प्रतीक्षा करे (घोसण पोसेह २ मम गयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) आ रीने तमे घोषणा करे अने आम धर्ष जाय त्यारे भने भयर आपो (तएण ते कोडुमिया तहेव जाव पच्चप्पिणति) ते कोडुम्बिक पुरुषोओ राजनी आज्ञा प्रमाणे न थधु काम पतापी दीधु अने 'अमे होडोओ आपनी आज्ञा अनुसार घोषणा करी छे ' ओवा भयर नाननी पासे पडोयापी दीवी

(तएण से द्रवण राया कोडुमियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया ! मयवरमण्डप आमियसमञ्जियोलि सुगन्धवरगन्धिय पच्चवर्गपुष्कजोवयारकलिय कालागुरुपवरकुन्दुरुकुरुकुरुकुरु जाय गन्धवटि-

दिक्से मादुर्भूतमभाताया राज या तेजसा ज्वलति सूर्येऽभ्यद्वते द्रुपदस्य रामो
 दुहितुः=पुत्र्या, चुलन्यादेव्या आत्मजाया, धृष्टद्युम्नस्य भगिन्या द्रौपद्या राजार-
 फ्न्याया स्वयवरो भगिन्याति, तत्=तस्मात् रज्जु हे देवानुप्रिया । गृह द्रुपद
 राजानमनुकृतः रनाता यावत्-सर्गलङ्कारविभूषिता-हस्तिश्वधवरगताः सको-
 रण्टमाल्यदाग्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतरचामरैरदधूगमानैश्च युक्ताः द्यग-
 जरथमहाभटकरेण चतुर्द्वलेन यावत् परिसिप्ता=परिवृता यज्ञेय स्वयवर-

से ऐसी घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रिय ! कल नृपेन्द्रिय होने
 पर द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा और धृष्टद्युम्न की
 सहिन राजवर कन्या-द्रौपदी का स्वयवर होगा (त त्वमेव देवानुप्रिया ।
 दुपय रायाण अणुगिष्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हस्तिश्वधवरगया
 सकोरण्ट० सेयवर चामर० ह्य गयरह० महया भटचटगरेण जाव
 परिधिखत्ता जेणेव सयवर मटवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता पत्तेयर
 नामकिपसु आसणेसु निसीयह २ दोवड रायकण्ण पडिवालेमाणा २
 चिट्ठह) इस लिये हे देवानुप्रियो ! आपलोग द्रुपदराजा के ऊपर कृपा
 करके स्नान आदि से निषट कर एव समस्त अलकारों से विभूषित
 होकर जहाँ स्वयवर मंडप है वहाँ पधारे । आते समय हाथियों पर
 बैठकर आवे । कोरण्ट पुष्पों की मालाओं से सुशोभित छत्र उस
 समय आप सब के ऊपर तने हों और श्वेत सुन्दर चामर ऊपर दोरे जा
 रहे हों । हय, गज, रथ एव महाभटों का समूहरूप चतुरगदल आप

घोषणा करे । हे देवानुप्रियो ! आवती काले सवार यता द्रुपद राजनी पुत्री
 चुलनी देवीनी आत्मजा अने धृष्टद्युम्ननी गहनेन राजवर कन्या द्रौपदीने।
 स्वयवर धरे

(त त्वमेव देवानुप्रिया ! दुपय रायाण अणुगिष्हेमाणा ण्हाया जाव विभू-
 सिया हस्तिश्वधवरगया सकोरण्ट० सेयवरचामर० ह्य गयरह० महया भटचट-
 गरेण जाव परिधिखत्ता जेणेव सयवरमटवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता
 पत्तेय नामकिपसु आसणेसु निसीयह २ दोवड रायकण्ण पडिवाले माणा २ चिट्ठह)

ज्येष्ठी हे देवानुप्रियो ! तमे लोकें द्रुपद राजा ऊपर भडेरजानी करीने
 स्नान वगेरेथी परवारीने तथा समस्त अलङ्कारेथी विभूषित यधने न्या
 स्वयवर मंडप छे, त्या हाथीज्यां ऊपर सवार यधने पधारे । कोरट पुष्पोनी
 माणाज्यानी शोभतु छत्र ते वधते तमारा ऊपर ताबेलु डोवु जेधजे अने
 सङ्केत यमरे पणु तमारा ऊपर डोणाना डोवा जेठजे हाथी, रथ अने भडा
 लटोना समूह इय अतुरगिष्ठी सेना तमारी साथे डोवी २

मण्डपस्त्वैरोपागच्छत. उपागत्य प्रत्येक ' नामकिण्ठसु ' नामाङ्कितेषु स्व स्व नामाक्षत्सुतेषु आसनेषु निषीदत, निषद्य द्रौपदी राजकन्या ' पङ्क्तिवालेमाणा २ ' प्रतिपालयन्त २ प्रतीक्षमाणा. २ तिष्ठन् इति घोषणा घोषयत, घोषयित्वा समैतामाक्षतिका प्रत्यर्पयत, ततः खलु ते कौटुम्भिकारतथैव यावत् प्रत्यर्पयन्ति । तत खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्भिकपुरूपान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमरादीन्-गच्छन् खलु यूय हे देवानुप्रिया. । सयवरमण्डपम् " आमियसम-ज्जिओवलित " आसित्समार्जितोपलिप्तम्=आसित्तम्-जन्मप्रक्षेपेणार्जितं, समा-र्जित-कनकरायपनयनेन सशोभितम्, उपलिप्त-मृद्गोमयादिभिरनुलिप्त, तथा-सुगन्धगन्धिव सुगन्धगन्धिव-अगुरुगु-गुठरुपरलदाहादिजनितसुगन्धयुक्त, ' पञ्चवर्णपुष्पजोवयारकलिय ' पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जपचारमन्त्रित । ' कालागुरुपवर-कुटुङ्कुरुव-जाय गन्धवृद्धिभूय ' कालागुरुपवरकुटुङ्कुरुकुरुकुरु-यावद्-गन्धवर्ति-भूत, न य यावत्तुवेन-गुडज्ज्ञामयनयनगन्धुद्गुयाभिराम ' इति रोध्यम् ।

तत्र क सा २ हो । मण्डप में आकर प्रत्येक जन अपने अपने नामवाले आसन पर बैठजावे । बैठकर फिर वहा वहा राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करें । (घोसण घोसेह २ मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) इस प्रकार की घोषणा करो और जब तुमलोग ऐसी घोषणा कर चुको तब इसकी हमें पीछे खबर दो । (तण्ण ते कोटुमिया तहेव जाव पच्चप्पिणत्ति) उन कौटुम्भिक पुरुषों ने नृपाज्ञानुसार ऐसा ही किया-यावद् मे हमलोग आपको आज्ञानुसार घोषणा कर चुके हैं ऐसी सूचना राजा के पास भेज दी । (तण्ण से दुवए राया कोटुमिय पुरिसे सदावेह, सदावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया । सयवरमण्डप आमियसमज्जिओवलित्त सुगन्धवरगन्धिय पच्चवणपुष्पपुजोवयार-कलिय कालागुरुपवरकुटुङ्कुरुकुरुकुरु जाय गन्धवृद्धिभूय मचाहमचकलियं

मण्डपमा आनीने दरेके दरेक पोतपोताना नामवाणा आसन उपर जेन्नी जय त्या जेन्नीने तेज्या राजवर कन्या द्रौपदीना आगमननी प्रतीक्षा करे (घोसण घोसेह २ मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) आ रीते तमे घोषणा करे अने आम धर्म जय त्यारे अने भग्ने आपे । (तण्ण ते कोटुमिया तहेव जाव पच्चप्पिणत्ति) ते कौटुम्भिक पुरुषो जे राजनी आज्ञा प्रमाणे जे जेधु काम पतावी दीधु अने ' अमे बोडोअे आपनी आज्ञा अनुसार घोषणा करी छे ' जेवा भग्ने राजनी पासे पछोआडी दीवी

(तण्ण से दुवए राया कोटुमियपुरिसे सदावेह, सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया । सयवरमण्डप आमियसमज्जिओवलित्त सुगन्धवरगन्धिय पच्चवणपुष्पपुजोवयारकलिय कालागुरुपवरकुटुङ्कुरुकुरुकुरु जाय गन्धवृद्धि-

धूपदधमानमघमघायमानगन्गोदधूताभिराम, तत्र कालागुरु कृष्णागुरु, प्रवर-
कुन्दुरुक-चीडानामको गन्धद्रव्यविशेषः, तुरुष्क च सितरुक्, धूपश्च गन्धद्रव्यस्यो
गम इति द्वन्द्वः, यद्वा-इतत्पन्थ नी यो धूपध्वस्य दत्तानस्य य सुभिर्ममना
यमानः-अतिशयान्, गन्ध उद्भूतस्तेनाभिरामो रमणीय स तथा त तथा-
ग यतिपूग यति-ग यन्धुदेनातद्भूत-तत्सहामोभ्यातिशयात् तथा-
'मचाइमचकलिय' मन्त्रातिमश्मलित कुरत, कृत्वा यामुदेवमुत्वाणा नहूनां

करेह, करिस्ता वासुदेव पाशुस्त्राग बहूग रायसहस्ताग पतेय २ नाम
काइ आसगाइ अत्पुपवच पुगाइ १९६ २ एवमाणत्ति पचवणिगह)
इसके बाद धूपदराजा न कोहुम्भिक पुरुषा को बुझाया और बुलाकर
उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रेया ! तुम लोग जाना-और स्वयंवर मंडप
को आसित्त कर-जललिवन से जाई करे, समार्जित करा-
कचर आदि को उससे बाहिर कर उसे साक करो एवं उपलित
करो मित्र तथा गावर से उसे लोपो । सुगधरगधिन करो उसमें-
अगुरु, गुग्गुलु, कपूर आदि को जलाकर उनकी गर से उसे सुगंध
युक्त बनाओ पचरग क पुष्पा क पुज उसमें जगह २ रखो । कृष्णा-
गुरु प्रवर कुन्दरुक्, तुरुष्क औरान इनके चूर्ण को वहां आम्र में
खूब जलाकर उनके गर से उसे बहुत ही अधिक मनोभिराम
यनाभा उपादा नया-उस एसा करदा कि जेसस ऐसा ज्ञान हा कि
यह एक सुगन्धित द्रव्य को वर्तिका है । वहा मचा के ऊपर मचा को

भूय मचाइमचकलेय करेह, करिस्ता वासुदेवपाशुस्त्राग बहूग रायसहस्ताग पतेय
२ नामकाइ आसगाइ अत्पुपवच पुगाइ १९६ २ एवमाणत्ति पचवणिगह)

त्यारपछी ६५० राज्ञे ओदुमिक पुश्चोने गोलाभा अने गोलापीने
कहु के डे वेवातुत्रियो । तमे बोका लोओ अने स्वयंवर मंडपने आनिकत
करा-पाछी छाटो, समार्जित करो, कचरा वगेरे साक करो, अने उपलित
करो, ओटले के भाटी तेमज छावुथी लीपो सुगधर गधिन करो ओटले क
ते स्थाने अगुरु, गुग्गुलु, कपूर वगेरेनो धूप करीने तेनी सुगधथी ते स्थानने
सुवासित करो पचवर्षुना पुष्पपुजना समूहो स्थाने स्थाने गोठवाने तमे मंडपनी
शोलाभा अलिवृद्धि करो कृष्णागुरु, प्रवर, कुन्दरुक्, तुरुष्क, लोणान आ
गंधा पहाथोना चूर्णने अग्निमा नापीने ते स्थानने सुगधथी भूषण २ म
छीय जनावी हो ते स्थानने तमे ओवु मन्त्र सुगधमय जना । ते तेथी
ते सुगन्धित द्रव्योनी वर्तिका (अगुरुत्ता) वेवु लागे २

રાજમહત્તાણા પ્રત્યેક ૨ નામાદ્વિગાન્યાસનાનિ 'અત્યુપચ્ચત્યુપાઃ' આસ્તૃત પ્રત્યવસ્તૃતાનિ=આચ્છાદિત્ર પ્રત્યાચ્છાદિતાનિ 'રણ' રચયત, રચયિત્ત્વા એતામા ક્ષતિર્ના પ્રત્યર્પયત, તેઽપિ=કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ, યાત્ પ્રત્યર્પયન્તિ । 'તણ તે' વાસુદેવપ્રભુઃ, ગુહ્યમહત્તમલયકારાજાન 'કઠ' કલ્પે પ્રાદુર્ભૂતપ્રમાનાયા રજન્વા યાવન્ તેજના ડગતિ મૂર્ધગ્મ્યુગ્ગતે સ્નાતા યાત્ સર્ગલક્ષારવિમૂષિતા હસ્તિ-સ્તંબરગતા સ્ફોરમ્માલ્યદામ્ના ડોળ ત્રિયમાણેન ચેતરચામરમ્દ્વિગમ્યમાનૈશ્વ ડુક્તા હય ગજ-યાત્-રખદાનિમમૂઢે પરિવૃતા સર્પદ્વર્ગા યાત્ 'શદ્વણત્પટ હાદીનાં રવેણ યત્રે સ્થાને સચયરણ્ડવસ્ત્રગેયોગાગન્ઠન્તિ, ઉપાગત્યાનુપવિશન્તિ, અનુપવિશ્ય પ્રત્યેક ૨ 'નામક્રિણુ' નામાદ્વિતેષુ=સ્વરચનામાસચ્યુક્તેષુ નામનેષુ નિષીદન્તિ=ઉપનિશન્તિ, નિપય દ્રોપદી રાજરૂપ્યા 'પઢિચાલેમાણા' પ્રતિ-પાલયન્ત =પ્રતીક્ષમાણાસ્તિષ્ઠન્તિ ।

રણો । ડન પર વાસુદેવ પ્રભુજી રાજાઓ કે પ્રત્યેક કે નામ કે આસનો કો આરતુન-શુભવસ્ત્ર સે ઢકકર પ્રત્યવસ્તૃત-ઔર ડિતીય શુભવસ્ત્ર સે આચ્છાદિત કર રણો । રણ કર ફિર રમે પીટે હસ સચ કાર્ય કે સમાસ હોને કી સચર દો । (તે વિ જાવ પન્ચવિણતિ) હસ પ્રકાર રાજા કી આજાનુમાર ડન કૌટુમ્બિક પુરુષો ને સચ કાર્ય ડચિત રૂપ મેં કરકે પીટે રાજા કો " સચ કાર્ય આજાનુસાર યચોચિત હો ચુકા હૈ " ડેસી સચર કરદી । (તણ તે વાસુદેવવાસુદેવ વહવે રાયસહસ્તા કલ્લ પાડ૦ પઢાયા જાવ વિશ્વમિયા હતિચ્ચધવગયા સ્ફોરટ૦ સેયચર-ચામરાહિ હય ગય જાવ પરિવુડા સન્વિડ્ડીય જાવ રવણ જેણેવ સચચરે તેણેવ ડચાગચ્છઠ, ડચાગચ્છિત્તા અણુવિસતિ, અણુવિસિત્તા પત્તેય નામક્રિણુ આસણેસુ નિસીયતિ, દોવહ રાયચરકણ પઢિચાલેમાણા ૨

મચોની ગોઠવણ કરે । ત્યા તમે વાસુદેવ પ્રભુજી દરકે દરકે રાજાના નામથી અકિત થયેલા આસનોને આસ્તૃત-સ્વરૂપ વસ્ત્રથી ઢાકીને, પ્રત્યાવસ્તૃત અને ધીમ સ્વરૂપ વસ્ત્રથી ઢાકે । આ બધુ કામ પતાવીને તમે અમને ખબર આપો । (તે વિ જાવ પન્ચવિણતિ) આ રીતે રાજાની આજ્ઞા માલગીને તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ તે સુગમજ બધુ કામ પતાવી દીધુ અને ત્યારપછી ' તમારી આજ્ઞા સુગમ કામ બધુ પતી ગયુ છે ' એવી ખબર રાજાની પાસે પહોંચાડી

(તણ તે વાસુદેવવાસુદેવ વહવે રાયસહસ્તા કલ્લ પાડ૦ પઢાયા જાવ વિશ્વમિયા હતિચ્ચધવગયા સ્ફોરટ૦ સેયચરચામરાહિ હય ગય જાવ પરિવુડા સન્વિડ્ડીય જાવ રવેણ જેણેવ સચચરે તેણેવ ડચાગચ્છઠ, ડચાગચ્છિત્તા અણુવિસતિ, અણુવિસિત્તા પત્તેય નામક્રિણુ આસણેસુ નિસીયતિ, દોવહ રાયચરકણ

ततः सख 'पट्ट' पाण्डु नामको राजा 'कलु' वस्त्र-पात. काछे स्नातो
 यावत् सर्वाङ्गकारिभूषितो हस्तिस्त्रयसरगतः सकोरण्टमात्रदाम्ना छत्रेण त्रिय
 माणेन श्वेतरचामरैरुद्धूयमानेन युक्तो हयगजरथपदातिनमूहेन परित्त. सर्व-
 द्वर्चा यावत्-रथेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यम येन मन्त्रभूत्या निर्गच्छति,
 निर्गत्य यत्रैव स्वयंरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा वहुनदस्रसरयका राजानमस्त-
 र्जवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां करतल्यभिगृहीतदशनस्य

चिह्नानि) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब
 रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब
 स्नान यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढ़े
 हुए ध्रियमाण कोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते
 हुए उद्धूयमान श्वेन वरचामरों से वीज्यमान होते हुए पथ हय, गज
 यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के
 अनुमार यावत् शय्य पणव पट्ट आदि के साथ २ जरा वह स्वयंवर
 मंडप था-वहाँ आये। वहाँ आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए।
 प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अग्नि आसनों पर पृथक्
 २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएण
 से पट्टण रागा कल्ल ण्हाण जाय विभूसिण सकारदं हयगयं कपिल्लपुर
 मज्झमज्जेण निगच्छति-जेणेव मयवरमडवे जेगेय वासुदेय पाण्डु
 क्राया उहवे रायमहस्सा तेणेय उवागच्छह, उवागच्छित्ता तेनि वासुदेव
 पट्टियाळेमाणा २ चिह्नि)

त्यारपणी वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं की भाँति द्विसे न्याये रात्रि
 पसार था। गंध अने सवार यथा सूर्य उदय पाये। त्यारे स्नान वगेरेथी
 परवारीने पोताना गरीरने यथा आलूषणोथी शलुगारीने, हाथोंको उपर
 सवार थे, सुगंधित कोरट पुष्पोंकी भाजाओंकी शोषित अने छत्रकी युक्त
 था उत्तम श्वेत आभरोंकी वीज्यमान यथा तेभज घोडा, हाथी यावत् रथ
 पदाति समूहकी परिवृत्त यथा पोताना राजन पैलव अनुसार यावत् शय्य
 पणव पट्ट वगेरे वासुदेव साथे न्याय स्वयंवर मंडप छेता त्या गया
 त्यां न्छने तेओ प्रविष्ट यथा अने प्रविष्ट यधने तेओ पोत
 पोताना न रागनेओ उपर जेभी गया अने राजवर कन्या
 द्रौपदीनी

जाय विभूसिण हस्तिस्त्रयसरगतः सकी
 पायुक्त्वा वदवे रायमहस्ता तेणेय

शिर आदत्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्षयित्वा कृष्णस्य वासुदेवस्य
श्वेतवर्चामर रूहीच्छा 'उपवीयमाणे' उपवीजयन् चामराद्धननेन सेवमान
स्तिष्ठति ॥ सू० २१ ॥

पानुगत्याण करयलवद्धाघित्ता कृष्णस्य वासुदेवस्य सेववरचामर गणाय
उपवीयमाणे चिह्नति) इस के बाद पाटु नामक राजा प्रातः काल स्नान
से निवृत्त कर और समस्त अलङ्कारों से विभूषित होकर अपने पट्ट
गजराज पर चढ़ कर कापिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्व-
यवर मंडप में आये। जत्र ये गजराज पर चढ़े हुए आरहे थे उस समय
इन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से विरजित छत्र, छत्रधारियों ने
तान रखा था। चामर धोरने वाले शुभ्र चामर धोर रहे थे। हथ, गज,
रथ एक पदादि समूहरूप चतुरगिणी सेना इनके साथ चल रही थी।
राजसी हाटगाट से ये सुसज्जित थे। विविध राजे साथ में व्रजते हुए-
आरहे थे। मंडप में आकर ये जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे
हुए थे-बैठा गये। वहां जाकर उन्होंने उन वसुदेव प्रमुख हजारों राजाओं
को दोनों हाथ जोड़ कर बड़ी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जय
विजय शब्दों द्वारा उन्हें बधाई दी। बधाई देकर फिर ये कृष्ण वासुदेव
के ऊपर श्वेतचामर लेकर धोरते हुए वहां बैठ गये ॥ सू० २० ॥

उवागच्छद्, उवागच्छित्ता तेषां वासुदेवपानुगत्याण करयलवद्धाघित्ता ऋद्धम्स
वासुदेवस्य सेववरचामर गणाय उपवीयमाणे चिह्नति)

त्यारपछी पाटु नामक राजा सवार स्नानधी परवागीने समस्त अलङ्का-
रधी पोताना राशीरने शब्धगानीने अने पोताना मुष्ण गजराज उपर सवार
थहुने कापिल्यपुर नगरनी वस्त्रेटी पमार थहुने स्वयंवर मंडपमा आव्या
ब्यारे तेओ गजराज उपर भेगीने आवता छता त्यारे जोगट पुष्पानी भाणा
ओधी शोभित छत्र छत्रधारीओओ ताछेवु छतु आमर ढागनाराओ श्वेत
आमर ढाणी रक्षा छता, घोडा, हाथी, रथ अने पदाति समूह रूप चतुरगिणी
सेना तेमनी साथे साथे आली गही छती राजमा हाथी तेओ मुमन्जित
छता, अनेक नतना वालओ वागी रक्षा छता मंडपमा आवीने तेओ ब्या
वासुदेव प्रमुख छमर राजओ भेठेवा छता त्या गया ब्या वासुदेव प्रमुख
राजओ भेठेवा छता त्या तेमनी पामे बर्तने तओओ वासुदेव प्रमुख सव
राजओने पूज न नम्रपहुने छथ भेडीने नमस्कार कया ब्य विजय
शब्दोधी तेओने अलिनहित कया अलिनहित कया जाद तेओ कृष्ण वासु-
देवनी उपर श्वेत आमर ढागता त्या भेसी गया ॥ सू० २० ॥

ततः सख 'पट्ट' पाण्डु नामको राजा 'कल' गल्ये-मात्र. काळे स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो दस्तिस्त्रयसरगव सकोरण्टमाल्यदाम्ना ग्रेण त्रियमाणेन श्वेतसरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्तो हयगजरथपदातिनमूढेन परिवृतः सर्वद्वर्चा यावत्-रजेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमयेन मयेभूता निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव सरपरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहुमहस्यस्यका राजानमस्त-त्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां करतलपद्मिन्द्रीतशसनस्य

चिह्निति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलङ्कारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढ़े हुए ध्रियमाण कोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान भेन वरचामरों से वीज्यमान होते हुए एव हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शङ्ख पणव पट्ट आदि के साथ २ जहा वह स्वयंवर मंडप था-वहाँ आये। वहाँ आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अर्कित आसनों पर पृथक् २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएण से पट्ट राया कल ण्हाण जाय विभूतिए सकारटं हयगयं कपिल्लपुर मज्झमज्झेण निगच्छति-जेणेव मयपरमण्डवे जेणेव वासुदेव पावु कत्वा बह्वे रायमहस्सा तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता तेनि वासुदेव पडिवाळेमाणा २ चिह्निति)

त्यारपणी वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं की भाँति द्विसे न्याये रात्रि भसार यर्ध गर्ध अने सवार यथा सूय उदय पाग्यो त्यारे स्नान वगेरेथी परवारीने पोताना शरीरने भधा आलूषणोथी शङ्खगारीने, छाथीओ उपर सवार थ'ने, सुग धित कोरट पुष्पोनी भाणाओथी शोषित अने छत्रथी युक्ता यर्ध उत्तम श्वेत आभरेथी वीज्यमान यथा तेभज घोडा, छाथी यावत् रथ पदाति समूहथी परिवृत यथा पोताना राजन पैलव अनुसार यावत् शङ्ख पणव पट्ट वगेरे वाज्जोनी साथे जना स्वयंवर मंडप छतो त्या गया त्या जधने तेओ भधा मंडपमा प्रविष्ट थया अने प्रविष्ट थयने तेओ पोत पोताना नामाकित जुद्ध जुद्ध गागनेओ उर जेमी गया अने राजवर कन्या द्रौपदीनी प्रतीक्षा करवा लाग्या

(तएण से पट्ट राया कल ण्हाण जाय विभूतिए हयगयं कपिल्लपुर मज्झमज्झेण निगच्छति-जेणेव मयपरमण्डवे जेणेव वासुदेव पावु कत्वा बह्वे २

शिर आहतं मरुतैः ऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा कृष्णस्य वासुदेवस्य
श्वत्वरचामरं दृष्ट्वा 'उत्तरीयमाणे' उपवीजयन् चामराद्धननेन सेवमान
स्तिष्ठति ॥ सु० २१ ॥

पामुखाण करयल वद्धावित्ता कण्ठरम वासुदेवस्य सेववरचामर गदाय
उत्तरीयमाणे चिह्नि) इस के बाद पांडु नामक राजा प्रातः काल स्नान
से निघट कर और समस्त अलंकारों से विभूषित होकर अपने पट्ट
गजराज पर चढ़ कर कांपिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्व-
यवर मंडप में आये। जब ये गजराज पर चढ़े हुए आरहे थे उस समय
इन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से विरजित छत्र, छत्रधारियों ने
तान रखा था। चामर धोरने वाले शुभ्र चामर धोर रहे थे। हय, गज,
रथ एक पदादि समूह रूप चतुरगिणी सेना इनके साथ चल रही थी।
राजसी ढाटगाट से ये सुसज्जित थे। विविध राजे साथ में वजते हुए-
आरहे थे। मंडप में आकर ये जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे
हुए थे-वहां गये। उठा जाकर उन्होंने उन वसुदेव प्रमुख हजारों राजाओं
को दोनों हाथ जोड़ कर बड़ी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जब
विजय शब्दों द्वारा उन्हें बगई दी। बधाई देकर फिर ये कृष्ण वासुदेव
के ऊपर श्वत्वरचामर लेकर टोरते हुए वहां बैठ गये ॥ सु० २० ॥

उवागच्छद्, उवागच्छत्ता तैर्मि वासुदेवपामुखाण करयल वद्धावित्ता कण्ठरम
वासुदेवस्य सेववरचामर गदाय उत्तरीयमाणे चिह्नि)

त्यारपछी पांडु नामक राजा सवार स्नानथी परवारीने समस्त अलं-
कारी पोताना सरीरने शङ्खगारीने अने पोताना शुभ्र गजराज उपर सवार
थपे कांपिल्यपुर नगरनी वन्देदी पमार थपे स्वयं मंडपमा आग्या
न्यारे तेजो गजराज उपर भेरीने आवता हुता त्यारे जगट पुष्पानी भाणा
ओधी शोभित छत्र छत्रवागीओओ ताछेवु हुतु आमर देवनाराओ श्वेत
आभरे देणी नद्या हुता, घोडा, हाथी, ग्व अने पदाति समूह उप चतुरगिणी
सेना तेमनी साथे आली गही हुती गजमा हाकथी तेजो सुसज्जित
हुता, अने नतना वालओ वागी नद्या हुता मंडपमा आवीने तेजो न्या
वासुदेव प्रमुख हजारे राजओ भेटेवा हुता त्या गया न्या वासुदेव प्रमुख
राजओ भेटेवा हुता त्या तेमनी पाओ नधने तेजोओ वासुदेव प्रमुख सर्व
राजओने भूषण न नम्रपछे अने साथ भेडीने नमस्कार कया नथ विजय
शब्दोधी तेजोने अलिखित कया अलिखित उयो आइ तेजो कृष्ण वासु
देवनी उपर श्वेत आमर देणता त्या भेसी गया ॥ सूत्र २० ॥

ततः खलु 'पट्ट' पाण्डु नामको राजा 'कट' गन्ध-भाग पाठे स्नातो यावत् सर्वाङ्गधारिभूषितो दस्तिस्त्रयस्त्रयत्वं सत्कोरुणमाल्यदायना मन्त्रेण त्रियमाणेन श्वेतरचामरैरुद्धूयमानेन युक्ता हयगजस्थपदातिनमृदेन परिहृतः सर्वद्वर्षा यावत्-स्त्रेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमयेन मयेभूता निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वयंरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रभुत्वा बहुमन्त्रसंयुक्ता राजानमन्त्र-जीवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रभुत्वाणां वरतन्त्रमिष्टदीतश्चनस

चिह्निति) इस के बाद वे वासुदेव प्रभुत्व लज्जारी राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलङ्कारों से विभूषित होकर, हाथियों पर बड़े हुए ध्रियमाण वोरट पुष्पों की माला से सिराजिर छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेन वरचामरों से वीज्यमान होते हुए पथ हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शय्य पणव पट्ट आदि के साथ २ जरा वह स्वयंवर मंडप था-वहाँ आये। वहाँ आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अर्कित आसनो पर पृथक् २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएण से पट्टे राया कल्ल ण्हाण जाय विभूतिण सकारटं हयगयं कपिल्लपुर मज्झमज्झेण निगच्छति-जेणेव मयवरमडवे जेणेव वासुदेव पाहु क्त्वा बहवे रायमहस्सा तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता तेहिं वासुदेव पडिवाळेमाणा २ चिह्निति)

त्यारपणी वासुदेव प्रभुत्व लज्जारी राजा द्विसे न्याये रात्रि पसार थई गई अने सवार थता सूर्य उदय पाभ्यो त्यारे स्नान वगेरेथी परवारीने पोताना गरीशने जधा आलूषण्योथी शय्यगरीने, हाथीओ उपर सवार थ'ने, सुग धित डोरट पुष्पोनी माणाओथी शोभित अने छत्रथी युक्ता थई उत्तम श्वेत थामरेथी वीज्यमान थता तेभ-य घोडा, हाथी यावत् रथ पदाति समूहथी परिवृत्त थता पोताना राजन वैलाव अनुसार यावत् शय्य पणव पट्ट वगेरे पाणओनी साथे जना स्वयंवर मंडप हुतो त्या जना त्या जधने तेओ जधा मंडपमा प्रविष्ट थया अने प्रविष्ट थउने तेओ पोत पोताना नामाकित लुढ लुढ ग्रासनो उपर बेभी गरा अने राजवर कन्या द्रौपदीनी प्रतीक्षा करवा लाग्या

(तएण से पट्टे राया कल्ल ण्हाण जाय विभूतिण दस्तिस्त्रयस्त्रय सको रेटं हय गयं मयवरमडवे जेणेव वासुदेव पाहुक्त्वा तेणेव

વસ્ત્રાણિ પરિધાય ' જિણપટિમાણ અચ્છણં કરેડ ' જિનપ્રતિમાના, કામદેવ પ્રતિ-
માનામર્ચન કરોતિ વિવાહવિધિ નિર્વિઘ્ન સપન્નાર્થ મિતિ ભાવઃ ' કરિત્તા ' કૃત્વા
' જેણેવ અતેહરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ ' યકૈવાન્તઃપુર તત્રૈવો પાગચ્છતિ ॥ સૂ૦ ૨૧ ॥

દ્રોપદીચર્ચા

યત્તુ—“ જિણપટિમાણ અચ્છણં કરેડ ” ઇતિ પાઠ સમાશ્રિત્ય ભગવતોઽર્હતઃ
પૂજન જૈનધર્માનુયાયિભિઃ કર્તવ્યમિત્યાહુસ્તમિત્યાત્વવિલસિતમ્, અસ્ય પાઠસ્ય
ચરિતાનુવાદરૂપત્વેન વિધાયકત્વાસમ્ભવાત્ । વિધિવાક્ય દિ જિનાજ્ઞાયા વોધક
ત્વેન વિધાયકં ભવતિ, યથા—ભગવતા વિધેયતયોપદિષ્ટ પદવિધાયક્યક ચતુર્વિધ-
જિન પ્રતિમા કા કામદેવ કી પ્રતિમા કા નિર્વિઘ્ન વિવાહકાર્ય કે લિયે
અર્ચન કરતી હૈ અર્ચન કર કે ફિર વહ (જેણેવ અતે હરે તેણેવ ઉવા-
ગચ્છડ) જહાં અત પુર થા વહા ચલી ગઈ ॥ સૂ૦ ૨૧ ॥

દ્રોપદી ચર્ચા

જો “જિણપટિમાણ અચ્છણં કરેડ” ઇસ પાઠકા આશ્રય લેકર પ્રતિ-
માપૂજન કી ઉપયોગિતા કહતે હુણે યહ કહતે હૈ, કિ “ અર્હત ભગવાન
કી પ્રતિમા કી પૂજા જૈનધર્મ કે પાલકો કો કરના ચાહિયે ” યહ ઉનકા
કથન મિત્યાત્વ કા વિલાસ હી હૈ । વયો કિ યહ “ જિનપટિમાણ ”
ઈત્યાદિ વાક્ય ચરિત કા હી અનુવાદક હૈ—અતઃ એસે વાગ્ય કિસી
સુર્ય અર્થ કે વિધાયક નહોં હુઆ કરતે હૈ । ચારિતાનુવાદ સે તો નિર્ફ
જિસ વ્યક્તિ ને જો ૨ આચરણ કિયો હૈ ઉસકા હી વોધ હોતા હૈ । શાસ્ત્ર
વિહિત માર્ગકે નિર્દેશક વિધિવાક્ય હુઆ કરતે હૈ—વયોં કિ કિ એસે
વાક્ય જિન ભગવાન કી આજ્ઞાકે વિધાયક હોતે હૈ । જિસ પ્રકાર પદ

પ્રતિમાનુ ગમદેવની પ્રતિમાનુ નિર્વિઘ્ને વિવાહનાય સપત્ત થવાના હેતુથી
અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને (જેણેવ અતેહરે તેણેવ ઉવાગચ્છડ)
અથા રણવાસ છે તે તરફ જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

દ્રોપદી અર્થો

કેટલાક “જિણપટિમાણ અચ્છણં કરેડ” આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજન
ની ઉપયોગિતા મિદ્ધ કરતા આ પ્રમાણે કહે છે કે “ અર્હત ભગવાનની
પ્રતિમાનુ પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવું જોઈએ ” તેમનુ આ
કથન સત્યથી બહુ દૂર છે એટલે કે આ વાત સાવ અસત્યથી પૂર્ણ છે કેમકે
આ “ જિનપટિમાણ ” વગેરે વાક્ય અગ્નિના જ અનુવાદક છે એટલા માટે
એવા વચનો કોઈ વિશેષ અથને સ્પષ્ટ કરનારા હોતા નથી અસ્તિતાનુવાદથી
તો ફક્ત જે માણ્યે જે તે આચરણ કર્યું છે, ફક્ત તેનુ જ જ્ઞાન થાય તેમ
છે શાસ્ત્રવિહિત માર્ગને બતાવનારા તો વિધિ વાગ્યો જ થાય છે જેવી રીતે

मूलम्—तएण सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कय-
कोउयमगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाई वत्थाई
पवरपरिहिया जिणपडिमाण अच्चण करेइ, करित्ता जेणेव
अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर सा द्रौपदी राजवरकन्या
यज्ञेव मज्जनगृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नाता ‘कयवलिकम्मा’ कृतवलि-
कर्मा अन्नादिषु पायसादिप्राणिनां सविभागो प्रतिरुर्म्म तन् कृत यया सा तथा
कृतवौतुकमद्गलप्रायश्चित्ता ‘सुद्धप्पावेमाइ’ शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि
प्रवेश्यानि—सभाया प्रवेष्टु योग्यानि, यत्परिधानेन सभाया लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्ती
त्यर्थः, मद्गलानि=शुभानि वस्त्राणि ‘पवरपरिहिय’ प्रवरपरिहिता—प्रवरविधिना
प्रवरेण शोभाकारेण विधिना परिहिता=परिधानेन धृतवती आर्पित्यात् वर्त्तरिक्तः,

‘तएण सा दोवई रायवर कन्ना’ इत्यादि ॥

टीका—(तएण) इस के बाद (सा दोवई रायवर कन्ना) वह राजवर
कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) जहां स्नान घर था (तेणेव उवागच्छइ)
उस ओर गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउयमगल
पायच्छित्ता) घटा जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, तत्पश्चात् फिर
उसने कारु पक्षि आदि को अन्नादि का भाग देने रूप वलि कर्म किया
कौतुक मगल प्रायश्चित्त किये । (सुद्धप्पावेमाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर
परिहिया) सभा में प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मातलिक वस्त्र
अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपडिमाण अच्चण करेइ)

‘तएण सा दोवईरायवरकन्ना’ इत्यादि—

टीका—(तएण) त्य २५छी (सा दोवई रायवरकन्ना) ते राजवर कन्या द्रौपदी
(जेणेव मज्जणघरे) जया स्नानघर छतु (तेणेव उवागच्छइ) त्या गई
(उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कय कोउयमगलपायच्छित्ता) त्या जधने
तेछे स्नानघरमा स्नान कथुं स्नान जयां जाइ तेछे कागडा वगेर पदीओने
अन्न वगेरेने भाग अर्पाने पतिरुर्म्म कथुं—कौतुक मगल प्रायश्चित्त कयां
(सुद्धप्पावेमाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमड)
सभाभा प्रवेशया योग्य स्वरत्त भागतिक वस्त्रो तेछे सरम रीते पडेयां,
त्या २५छी ते स्नानघरथी अछार नीकणी (जिणपडिमाण अच्चण) - २५

વસ્ત્રાણિ પરિધાય ' જિણપટિમાણ અચ્છણં કરેડ ' જિનપ્રતિમાના, કામદેવ પ્રતિ-
માનામર્ચન કરોતિ વિવાહવિધિ નિર્વિઘ્ન સપન્નાર્ય મિતિ માનઃ ' ફરિત્તા ' કૃત્વા
' જેણેવ અતેરે તેણેવ રવાગચ્છહ ' ચક્રવાન્તઃપુર તત્રૈવો- પાગચ્છતિ ॥ સૂ૦ ૨૧ ॥

દ્રૌપદીચર્ચા

યત્નુ-“ જિણપટિમાણ અચ્છણં કરેડ ” ઇતિ પાઠ સમાશ્રિત્ય ભગવતોઽર્હતઃ
પૂજન જૈનધર્માનુયાયિભિઃ કર્તવ્યમિત્યાહુન્તન્મિત્યાત્વવિલક્ષિતમ્, અસ્ય પાઠસ્ય
ચરિતાનુવાદરૂપત્વેન વિધાયકત્વાસમ્ભવાત્ । વિધિવાક્ય દિ જિનાઘ્રાયા વોધક
ત્વેન વિધાયક ભવતિ, યથા-ભગવતા વિધેયતયોપદિષ્ટ પદ્ધિવાક્યક ચતુર્વિધ-
જિન પ્રતિમા કા કામદેવ કી પ્રતિમા કા નિર્વિઘ્ન વિવાહકાર્ય કે લિયે
અર્ચન કરતી હૈ અર્ચન કર કે ફિર વહ (જેણેવ અતે રે તેણેવ રવા-
ગચ્છહ) જહાં અત પુર થા વહાં ચલી ગઈ ॥ સૂ૦ ૨૧ ॥

દ્રૌપદી ચર્ચા

જો “જિણપટિમાણ અચ્છણં કરેડ” હસ પાઠકા આશ્રય લેકર પ્રતિ-
માપૂજન કી ઉપયોગિતા કહતે હુણ્ણ કહતે હૈ, કિ “ અર્હત ભગવાન
કી પ્રતિમા કી પૂજા જૈનધર્મ કે પાલકો કો કરના ચારિયે” યહ ઉનકા
કથન મિથ્યાત્વ કા વિલાસ હી હૈ । કયો કિ યહ “ જિનપટિમાણ ”
હર્યાદિ વાક્ય ચરિત કા હી અનુવાદક હૈ-અતઃ એસે વાક્ય કિસી
મુરય અર્થ કે વિધાયક નહોં હુઆ કરતે હૈ । ચારિતાનુવાદ સે તો મિર્ફ
જિસ વ્યક્તિ ને જો ૨ આચરણ કિયા હૈ ઉસકા હી યોધ હોતા હૈ । શાસ્ત્ર
વિહિત માર્ગકે નિર્દેશક વિધિવાક્ય હુઆ કરતે હૈ-કયોં કિ કિ એસે
વાક્ય જિન ભગવાન કી આજ્ઞાકે વિધાયક હોતે હૈ । જિસ પ્રકાર પદ્

પ્રતિમાનુ ડામદેવની પ્રતિમાનુ નિર્વિઘ્ને વિવાહકાર્ય સપન્ન યવાના હેતુથી
અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને (જેણેવ અતેરે તેણેવ રવાગચ્છહ)
ન્યા રણવાસ છે તે તરફ જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

દ્રૌપદી અર્થા

કેટલાક “જિણપટિમાણ અચ્છણં કરેડ” આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજ
નની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરતા આ પ્રમાણે કહે છે કે “ અર્હત ભગવાનની
પ્રતિમાનુ પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવું જોઈએ ” તેમનું આ
કથન સત્યથી ખરું હરે છે એટલે કે આ વાત સાવ અનત્યથી પૂર્ણ છે કેમકે
આ “ જિનપટિમાણ ” વગેરે વાક્ય ચરિતના જ અનુવાદક છે એટલા માટે
એવા વચનો કોઈ વિશેષ અર્થને સ્પષ્ટ કરનારા હોતા નથી ચરિતાનુવાદથી
તો ફક્ત જે માણસે જે તે આચરણ કર્યું છે, ફક્ત તેનું જ જ્ઞાન થાય તેમ
છે શાસ્ત્રવિહિત માર્ગને ખતાવનારા તો વિધિ વાક્યો જ થાય છે જેવી રીતે

मूलम्—तएणं सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जनघरे
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कय-
कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाई वत्थाइ
पवरपरिहिया जिणपटिमाण अच्चण करेइ, करित्ता जेणेव
अतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततस्तन्मन्तर सा द्रोपदी राजसरन्धा
यज्ञैर मज्जनघृह तर्गोपागच्छति, उपागत्य स्नाता ‘कयवलिकम्मा’ कृतवलि-
कर्मो अत्रादिषु त्रायसादिप्राणिना संविभागो वलिकर्म तन् कृत यथा सा तथा
कृतवौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता ‘सुद्धप्पावेमाइ’ शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि
प्रवेशानि—सभाया प्रवेष्टु योग्यानि, यत्परिवानेन सभाया लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्ती
त्यर्थः, मङ्गलानि=शुभानि वस्त्राणि ‘पवरपरिहिय’ प्रवरपरिहिता—प्रवरविधिना
प्रवरेण शोभाकारेण विधिना परिहिता=परि गतेन धृतवती आर्पित्यात् वर्तारिक्तः,

‘तएण सा दोवई रायवर कन्ना’ इत्यादि ॥

टीका र्थ—(तएण) इस के बाद (सा दोवई रायवर कन्ना) वह राजवर
कन्ना द्रोपदी (जेणेव मज्जनघरे) जहाँ स्नान घर था (तेणेव उवागच्छइ)
उस ओर गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउयमंगल
पायच्छित्ता) वहाँ जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, नहाकर फिर
उसने कारु पक्षि आदि को अन्नोदि का भाग देने रूप व्रत कार्य किया
कौतुक मंगल प्रायश्चित्त किये । (सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाई वत्थाइ पवर
परिहिया) सभा में प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मांगलिक वस्त्र
अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपटिमाण अच्चण करेइ)

‘तएण सा दोवई रायवरकन्ना’ इत्यादि—

टीका र्थ—(तएण) त्य २५७ (सा दोवई रायवरकन्ना) ते राजवर कन्ना द्रोपदी
(जेणेव मज्जनघरे) कन्ना स्नानघर छतु (तेणेव उवागच्छइ) त्या गई
(उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कय कोउयमंगलपायच्छित्ता) त्या अर्थने
तेछे स्नानघरमा स्नान कथुं स्नान करी जाइ तेछे कागडा वगे पक्षीओने
अन्न वगेदेना भाग अर्पाने पवित्रमं कथुं—कौतुक मंगल प्रायश्चित्त कथी
(सुद्धप्पावेमाइ मंगल्लाई वत्थाइ पवरपरिहिया मज्जनघराओ पडिनिवत्तमइ)
सभाया प्रवेशया योग्य स्वच्छ मांगलिक वस्त्रो तेछे सरस रीते पहिया,
त्यारपणी ते स्नानघरथी जहार नीकजी (जिणपटिमाण अच्चण करेइ) उन

ચારિતાનુવાદવચનસ્ય વિધાયકત્વાદ્ગ્રીકારે સૂર્યાભદેવચરિતે શસ્ત્રાદિવસ્તુ-
નામર્ચનસ્ય શ્રૂયમાણતયા તન્મતે તદપિ વિધેય સ્યત્ ।

દ્રૌપદ્યપિ તત્ર સત્ત્વ પ્રતિમાયા ભગવતોર્હતઃ પૂજન ન કૃતમ્, જૈનપ્રવચને
પ્રતિમાપૂજનસ્ય વિધાનાભાગાત્, પ્રતિમાપૂજનસ્ય પદ્મકાયજીર્વહિંસાસા-યતયા જૈન
ધર્મત્ત્વામાધાચ ।

તથાહિ—પ્રતિમાપૂજાઽદ્ગ્રીકારે તદર્થ પદ્મકાયર્હિંસાઽવશ્યભાવિની, એવ ચ
જાતા હૈ કિ વહ્ ઉન્હીં મે ચિત્ત લગાકર ઔર મન કો તન્મય કરકે
હસે ઉભય કાલ મેં અવશ્ય કરેં ।

ચરિત કે અનુવાદક કથન કરને વાળે-વાચ્ય કો યદિ વિધેય રૂપ
સે સ્વીકાર ક્રિયા જાય તો સૂર્યાભદેવકે ચરિત મેં સદ્ગાદિ શસ્ત્ર આદિ
વસ્તુઓં કીં ભી પૂજા સુની જાતી હૈ-અનં ઉનમેં ભી પૂજ્યતા આજાનો
ચાહિયે ઔર હસ પ્રકાર સે પૂજન કે પક્ષપાતિયોં કો ઉનકા પૂજન ભી
વિધેય કોટિ મે માનછેના ચાહિયે ।

દ્રૌપદી ને ભી વહા પ્રતિમા મે જો ભગવાન અર્હત કી પૂજન નહીં
કો ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ એક તો જૈન પ્રવચન મે પ્રતિમા પૂજન કે
વિધાન કા અભાવ હૈ ઔર દૂસરે-યહ પ્રતિમા પૂજન પદ્મ કાયકે જીવોં
કી વિરાધના દ્વારા સાધ્ય હોતી હૈ, હસલિયે હસ પ્રતિમા પૂજન મે જિને-
ન્દ્ર દ્વારા પ્રતિપ્રાદિત-ધર્મ આત્મકલ્પણસાધકરૂપ સમ્યગ્દર્શનાદિક કા
અભાવ હૈ । પદ્મ કાયકે જીવોં કી વિરાધના સે જો સાધ્ય હુઆ કરતા
હૈ વહા સચ્ચે ધર્મ કે દર્શન તક ભી દુર્લભ હૈં અતઃ પ્રતિમા પૂજન

ન હોય તેની એ ફરજ થઇ પડે છે કે તે તેઓમા જ પોતાનુ ચિત્ત પરાવીને
મનને તલલીન કરીને તેને બને કાળમા અવશ્ય આવશે

ચરિતને અનુવાદકે રૂપે બતાવનાર વાક્યને બે વિધેય રૂપમા સ્વીકારવામા
આવે તો સૂર્યાભદેવના ચરિતમા શસ્ત્ર વગેરે વસ્તુઓની પણ પૂજની વાત
સાબળવામા આવે છે એથી તેમનામા પણ પૂજ્યતા આવી જવી જોઇએ અને
આ રીતે પૂજનના પક્ષપાતીઓએ તેમની પૂજા પણ વિધેયના રૂપમા માન્ય
કરવી જોઇએ

દ્રૌપદીએ પણ ત્યા પ્રતિમામા ભગવાન અર્હતનુ પૂજન કર્યું નથી
તેનુ કારણ એ છે કે પ્રથમ તો જૈન પ્રવચનમા પ્રતિમા-પૂજનનુ વિધાન નથી
અને બીજુ આ પ્રતિમા પૂજન પદ્મકાયના જીવોની વિરાધના દ્વારા સપત્ર હોય
છે, તેથી આ પ્રતિમા પૂજનમા જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપ્રાદિત ધર્મ-આત્મકલ્યાણ
સાધકે રૂપ સમ્યગ્-દર્શન વગેરેનો અભાવ છે પદ્મકાયના જીવોની વિરાધનાથી

सघस्य कर्तव्य भवति ।

तथा चोक्तम्—समणेण सावणं य अस्सकायवयं इदं जम्हा ।

अतो अहोनिस्सत्त य, तम्हा आग्मय नाम ॥ १ ॥ इति (अनुयोगद्वा०)

छाया—श्रमणेन श्रावकेण च अवश्यकर्तव्यक भवति यस्मात् ।

अन्तेऽहर्निशस्य च तस्माद् आवश्यक नाम ॥ १ ॥

“ ज इम समणे वा समणी वा सावण वा साविद्या वा ।

तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओकाल छव्विह आग्मस्य करेति (अनु०)

छाया—यदिद श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा ।

तच्चित्तः तन्मना यावद् उभयकाल पड्विधमावश्यक नाम ॥ २ ॥

आवश्यक कार्यों को प्रतिपादन करने वाले वाक्य जिन प्रभु की आज्ञा के निर्देशक होने से साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध सघ को उपादेय माने जाते हैं । शास्त्र में भी यही पात कही गई है

‘ समणे ण सावणं य ’ इत्यादि

शास्त्र विहित पद आवश्यक कर्तव्य चतुर्विध श्रीसघ को रात्री एव दिनके अतिम भागमें अवश्य करन चाहिये । उनके किये बिना मुनि का मुनिपन नहीं और श्रावकका श्रावकपन नहीं । अतः पद आवश्यक कार्य अवश्य करने योग्य होनेसे आवश्यक रूप से प्रतिपादित हुए हैं ।

“ ज इम समणे वा समणी वा सावण वा साविद्या वा तच्चित्ते तम्मणे वा जाव उभओ काल ” इत्यादि ।

इसलिये जब ये आवश्यक हैं तब चाहे साधु हो या साध्वी हो श्रावक हो या श्राविका हो कोई भी क्यों न हो उसका यह कर्तव्य हो

छ आवश्यक धायेना प्रतिपादन करनारा वाक्यो छन प्रभुनी आज्ञाना निर्देशक होवाने कारणे साधु साध्वी श्रावक श्राविका इप चतुर्विध सधना भाटे योग्य गल्लाय छे शास्त्रमा पल्लु आ प्रभाळे कडेवाभा आण्हु छे —

“ समणेण सावणं य ’ इत्यादि

शास्त्रविहित छ प्रवर्तना आवश्यक कर्तव्यो चतुर्विध सधने रात्रि तेमज्ज दिवसना अतिम भागमा योक्कस पल्ले आग्रवा जेठ्ठो तेना आग्रव पगर मुनिउ मुनिपल्लु नथी अने श्रावकउ श्रावकपल्लु नथी ओटला भाटे छ आवश्यक कार्य योक्कस करवा योग्य होवाथी आवश्यक उपथी प्रतिपादित करवाभा आण्हा छे

“ ज इम समणे वा समणी वा सावण वा साविद्या वा तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओ काल इत्यादि—आ प्रभाळे न्यारे तेजो ‘ आवश्यक ’ छे, त्यारे लवे साधु होय छे साध्वी होय तेमज्ज श्रावक होय छे श्राविका होय

चारितानुवादवचनस्य विधायस्तत्राङ्गीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तु-
नामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेय म्यत् ।

द्रौपद्यऽपि तत्र सल्ल प्रतिमाया भगवतोऽर्हतः पूजनं न कृतम्, जैनप्रवचने
प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात्, प्रतिमापूजनस्य पट्टकायजीवर्हितासा-यतया जैन
धर्मत्वाभावाच्च ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं पट्टकायर्हिताऽवश्यभाविनी, एव च
जाता है कि वह उन्हीं में चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके
इसे उभय काल में अवश्य करें ।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले—वाक्य को यदि विधेय रूप
से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में सङ्गादि शस्त्र आदि
वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है—अनः उनमें भी पूज्यता आजानी
चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी
विधेय कोटि में मानलेना चाहिये ।

द्रौपदी ने भी वहा प्रतिमा में जो भगवान् अर्हत की पूजन नहीं
की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन में प्रतिमा पूजन के
विधान का अभाव है और दूसरे—यह प्रतिमा पूजन पट्ट काय के जीवों
की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन में जिने-
न्द्र द्वारा प्रतिपादित—धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्पददर्शनादिक का
अभाव है । पट्ट काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता
है वहा सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

न डोय तेनी ओ इरज थध पडे छे के ते तेओभा न पोतानु चित्त परावीने
भनने तट्ठीन उरीने तेने अने ठाणभा अवश्य आचरे

अरितने अनुवाद इधे गतावनार वाक्यने जे विधेय रुपमा स्वीकारवामा
आवे तो सूर्याभदेवना अरितमा शस्त्र वगेरे वस्तुओनी पण पूजनी वात
भासणवामा आवे छे ओथी तेमनामा पण पूज्यता आनी नवी नेधजे अने
आ रीते पूजनना पक्षपातीओजे तेमनी पूज पण विधेयना रुपमा भान्य
करवी नेधजे

द्रौपदीजे पण त्या प्रतिमामा भगवान् अर्हतनु पूजन कथुं नथी
तेनु कारण जे छे के प्रथम तो जैन प्रवचनमा प्रतिमा-पूजननु विधान नथी
अने भीनु आ प्रतिमा पूजन पट्टकायना लोवानी विराधना द्वारा स पत्र डोय
छे, तेथी आ प्रतिमा पूजनमा जेनेन्द्र वडे प्रतिपादित धर्म-आत्मकल्याण
साधक रुप सम्पद-दर्शन वगेरेना अभाव छे पट्टकायना लोवानी विराधनाया

સઘસ્ય કર્તવ્ય ભવતિ ।

તથા ચોક્તમ્—સમણેણ સાવણેણ ય અવસ્સકાયવચ્ચ દુવ્વ જમ્હા ।

અતો અહોનિસસસ ય, તમ્હા આવસ્સય નામ ॥ ૧ ॥ इति (अनुयोगद्रा०)

છાયા—શ્રમણેણ શ્રાવકેણ ચ અવશ્યકર્તવ્યક ભવતિ યસ્માત્ ।

અન્તેઽહર્નિશસ્ય ચ તસ્માદ્ આવશ્યક નામ ॥ ૧ ॥

“ જ હમ સમણે વા સમણી વા સાવણ વા સાવિયા વા ।

તચ્ચિત્તે તમ્મણે જાવ ઉમઓકાલ છન્વિદ્દ આવસ્સય કરેતિ (અનુ०)

છાયા—યદિદ શ્રમણો વા શ્રમણી વા શ્રાવકો વા શ્રાવિકા વા ।

તચ્ચિત્તઃ તન્મના યાવદ્ ઉમયકાલ પઠ્ઠવિધમાવશ્યક નામ ॥ ૨ ॥

આવશ્યક કાર્યો કો પ્રતિપાદન કરને ચાહે વાચ્ય જિન પ્રભુ કી આજ્ઞા
કે નિર્દેશક હોને સે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકારૂપ ચતુર્વિધ સઘ
કો ઉપાદેય માને જાતે હૈં । શાસ્ત્ર મેં બી યહી પાત કરી ગઈ હૈ

‘ સમણે ણ સાવણેણ ય ’ ઇત્યાદિ

શાસ્ત્ર વિહિત પદ્ આવશ્યક કર્તવ્ય ચતુર્વિધ શ્રીસઘ કો રાત્રી
અવ દિનકે અતિમ ભાગમે અવશ્ય કરન ચાહિયે । ડનકે કિયે વિના મુનિ
કા મુનિપન નહીં ઓર શ્રાવકકા શ્રાવકપન નહીં । અત પદ્ આવશ્યક
કાર્ય અવશ્ય કરને યોગ્ય હોનેસે આવશ્યક રૂપ સે પ્રતિપાદિત હુવ હૈં ।

“ જ હમ સમણે વા સમણી વા સાવણ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે
તમ્મણે વા જાવ ઉમઓ કાલ ” ઇત્યાદિ ।

હસલિયે જવ યે આવશ્યક હૈં તવ ચાહે સાધુ હો વા સાધ્વી હો
શ્રાવક હો વા શ્રાવિકા હો કોઈ બી કયો ન હો ડસકા યદ્ કર્તવ્ય હો

છ આવશ્યક કાર્યોના પ્રતિપાદન કરનારા વાક્યો છન પ્રભુની આજ્ઞાના નિર્દે-
શક હોવાને કારણે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સઘના માટે
યોગ્ય ગણાય છે શાસ્ત્રમા પણ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે —

“ સમણેણ સાવણેણ ય ’ ઇત્યાદિ

શાસ્ત્રવિહિત છ પ્રકારના આવશ્યક કર્તવ્યો ચતુર્વિધ સઘને રાત્રિ તેમજ દિવ
સના અતિમ ભાગમા ચોક્કસ પણે આચરવા બેઠઁએ તેના આચરણ વગર મુનિતુ
મુનિપણુ નથી અને શ્રાવકનુ શ્રાવકપણુ નથી એટલા માટે છ આવશ્યક કાર્ય
ચોક્કસ કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે

“ જ હમ સમણે વા સમણી વા સાવણ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે જાવ
ઉમઓ કાલ ઇત્યાદિ—આ પ્રમાણે બ્યારે તેઓ ‘ આવશ્યક ’ છે, ત્યારે ભલે
સાધુ હોય કે સાધ્વી હોય તેમજ શ્રાવક હોય કે શ્રાવિકા હોય , એકમ

ચારિતાનુવાદવચનસ્ય વિધાયકત્વાદ્ગ્રીકારે સૂર્યાભદેવચરિતે શસ્ત્રોદિવસ્તુ-
નામર્ચનસ્ય શ્રૂયમાણતયા તન્મતે તદપિ પ્રિયેય સ્ય.ત્ ।

દ્રૌપદ્યઽપિ તત્ર રસ્ય પ્રતિમાયા ભગવતોર્હત. પૂજન ન કૃતમ્, જૈનપ્રવચને
પ્રતિમાપૂજનસ્ય વિધાનાભાવાત્, પ્રતિમાપૂજનસ્ય પટ્કાયજીર્વાર્હિસાસા-યતયા જૈન
ધર્મત્ત્વાભાવાચ ।

તથાહિ—પ્રતિમાપૂજાઽદ્ગ્રીકારે તદર્થ પટ્કાયર્હિસાઽવશ્યભાવિની, એવ ચ
જાતા હૈ કિ વહ ઉન્હીં મે ચિત્ત લગાકર ઓર મન કો તન્મય કરકે
હસે ઉભય કાલ મેં અવશ્ય કરેં ।

ચરિત કે અનુવાદક કથન કરને વાલે-વાક્ય કો યદિ વિધેય રૂપ
સે સ્વીકાર કિયા જાય તો સૂર્યાભદેવકે ચરિત મેં સદ્ગાદિ શસ્ત્ર આદિ
વસ્તુઓ કી ભી પૂજા સુની જાતી હૈ-અન' ઉનમેં ભી પૂજ્યતા આજાની
ચાહિયે ઓર હસ પ્રકાર સે પૂજન કે પક્ષપાતિયોં કો ઉનકા પૂજન ભી
વિધેય કોટિ મે માનછેના ચાહિયે ।

દ્રૌપદી ને ભી વહા પ્રતિમા મે જો ભગવાન અર્હત કી પૂજન નહીં
કો ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ એક તો જૈન પ્રવચન મેં પ્રતિમા પૂજન કે
વિધાન કા અભાવ હૈ ઓર દૂસરે-યહ પ્રતિમા પૂજન પટ્કાય કે જીવો
કી વિરાધના દ્વારા સાધ્ય હોતી હૈ, હસલિયે હસ પ્રતિમા પૂજન મે જિને-
ન્દ્ર દ્વારા પ્રતિપ્રાદિત-ધર્મ આત્મકલ્પણસાધકરૂપ સમ્પદદર્શનાદિક કા
અભાવ હૈ । પટ્કાય કે જીવોં કી વિરાધના સે જો સાધ્ય હુઆ કરતા
હૈ વહા સચ્ચે ધર્મ કે દર્શન તક ભી દુર્લભ હૈં અતઃ પ્રતિમા પૂજન

ન હોય તેની એ ફરજ થઈ પડે છે કે તે તેઓમા જ પોતાનુ ચિત્ત પરોવીને
મનને તત્કલીન કરીને તેને બને કાળમા અવશ્ય આવશે

ચરિતને અનુવાદક રૂપે બતાવનાર વાક્યને જો વિધેય રૂપમા સ્વીકારવામા
આવે તો સૂર્યાભદેવના ચરિતમા શસ્ત્ર વગેરે વસ્તુઓની પણ પૂજની વાત
સામળવામા આવે છે એથી તેમનામા પણ પૂજ્યતા આવી જવી જોઈએ અને
આ રીતે પૂજનના પક્ષપાતીઓએ તેમની પૂજા પણ વિધેયના રૂપમા માન્ય
કરવી જોઈએ

દ્રૌપદીએ પણ ત્યા પ્રતિમામા ભગવાન અર્હતનુ પૂજન કર્યું નથી
તેનુ કારણ એ છે કે પ્રથમ તો જૈન પ્રવચનમા પ્રતિમા-પૂજનનુ વિધાન નથી
અને બીજુ આ પ્રતિમા પૂજન પટ્કાયના જીવોની વિરાધના દ્વારા સપત્ર હોય
છે, તેથી આ પ્રતિમા પૂજનમા જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપ્રાદિત ધર્મ-આત્મકલ્પણ
સાધક રૂપ સમ્પદ-દર્શન વગેરેનો અભાવ છે પટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી

પ્રાણાતિપાતરિમળવ્રતિના મુનીના પ્રતિમાપૂજોપદેશે સ્વધર્મસ્ય મૂળોચ્છેદ સ્યા
 દેવ । અતઃપર-જિનમણીતાગમે પ્રતિમાપૂજાયાચિધિર્નોવલભ્યતે । પ્રતિમાસ્થાપનાર્થ
 ભગીકાર કરને મેં उस पूजन के समय में पद काय के जीवों की विरा-
 धना जय अवश्यभावी है तब भला । हम इसे विधेय मार्ग कैसे मान
 सकते हैं, और कैसे यह स्वीकार किया जा सकता है कि इस पूजन
 का कर्त्ता सच्चे धर्म का उपामक है तथा प्रतिमापूजन को धर्म माना
 जावे तो एक बड़ा भारी दोष यह भी आकर उपस्थित होता है कि सर्व
 प्रकार के हिंसादिक पापों से सर्वथा विरक्त महाव्रती मुनिजन जय इस
 प्रतिमापूजनरूप धर्म का उपदेश करेंगे तब वे भी कारितादिरूप कराने
 आदि रूप से इसके कर्त्ता होने के कारण अपने मुनिधर्म के मूलतः ही
 विध्वंसक माने जायेगे । मुनिजन हिंसादिक सावन्ध व्यापारों के कृत,
 कारित एवं अनुमोदना इन तीन करण एवं तीन योग से त्यागी हुआ
 करते हैं । जय ये प्रतिमापूजन रूप धर्म का गृहस्थों के लिये व्याख्यान
 देंगे तब उनके व्याख्यान से प्रेरित हो गृहस्थ जन उस ओर अपनी
 प्रवृत्ति चालू करने वाले होंगे, और उस प्रकार के उनके व्यवहार से
 इस कार्य में पदकाय के जीवों की विराधना होने से उस विराधना

જે સાથ થાય છે તેમા તેા સાચા ધર્મના દર્શન સુદ્ધા હુલ્લભ છે એટલા
 માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામા તે પૂજન કરતી વખતે પદકાયના જીવોની
 વિરાધના જ્યારે થોડાસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા
 આધારે માન્ય કરીએ અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર
 કરીએ કે આ જાતનું પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે ? જે પ્રતિમા
 પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમા એક ભારે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકાર
 રના હિંમા વગેરે પાપોથી સવથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો જ્યારે આ
 પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ
 કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલત
 વિધ્વસક ગણાશે મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવધ વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને
 અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે જ્યારે તેઓ
 પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનું ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમના
 વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આચરશે જ અને આ જાતના તેમના
 આચરણોથી આ કામમા પદકાય જીવોની વિરાધના હોવાથી તે વિરાધનાને
 કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહા
 મતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે ? એથી-ધર્મ
 સાક્ષને ધ્વજતા પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમા જ ને.

દેવાયતનપ્રતિમાઽઽરામકૃપાદિકરણે તદુપદેશદાને ચ પૃથિવીકાયર્હિસાયા અવ-
શ્યમાવ. । દેવાયતનાદિકરણે પૂજાઙ્ગતયાસ્નાન પ્રતિમાસ્તપનપશ્ચક્ષાલનાદિક-
રણે ચ તદુપદેશદાને ચાપ્કાયવિરાગનમપિ, તથા-પૂજાઙ્ગધૂપદીપારાત્રિકસમ્પા-
દન ચાગ્નિકાયવિરાધનયા વિના ન સમ્ભવતિ, વાયુકાયર્હિસન તુ ધૂપદીપારાત્રિકા

કે કરાને ચાલે યે ઉપદેશક મુનિજન માને જાયેગે-તવ ઇનકે અર્હિસાદિ
મહાવ્રત ત્રિયોગ ઓર ત્રિકરણ વિશુદ્ધ કેસે રહ સકેગે ? અતઃ લામ કી
ચાહના મેં ઇન વિચારોં કી ભૂલ મેં હી વહી ભારી ભૂલ હોને સે યે
અપને ધર્મ કે સત્ચે આરાધક નહીં માને જા સકેગે । ઇસલિયે યહ
ઘાત અવશ્ય માનની ચાહિયે કિ જિન પ્રણીત આગમ મેં પ્રતિમાપૂજન
કી વિધિ નહીં પાઈ જાતી હૈ ।

હસી પ્રકાર પ્રતિમા સ્થાપન, પ્રતિમા પ્રતિષ્ઠા કરવાના, મંદિર વગેરે
બનાવવાના એવ ઉસ પ્રતિમા કી પૂજા નિમિત્ત વગીચા તથા કુઆ આદિ
કા કરવાના યે ઘાતે પૃથિવી કાયિક જીવોં કી હિંસા કે કારણ હેં અતઃ
ત્યાજ્ય હૈ । ઇનકે બનાવને આદિ કા જો ઉપદેશ કરતે હેં વે ભી
પૃથિવીકાયિક જીવોં કી હિંસા સે મુક્ત નહીં હો સકતે હેં । હસી પ્રકાર
પૂજન કા અગ હોને સે સ્નાન, પ્રતિમા કે અભિષેક તથા પૂજન કે વસ્ત્રોં
કે ધોને સાફ કરને મેં ઓર ઉસકે ઉપદેશ દેને મેં અપ્કાય કે જીવો
કી વિરાધના હોતી હૈ, ધૂપચેના, દીપક જલાના, આરતી ઉતારના
યે સય ઘાતે અગ્નિકાયિક જીવોં કી વિરાધના કે વિના નહીં હો સકતી
હૈ અર્થાત્ ઇનમેં અગ્નિકાયિક જીવો કી વિરાધના અવશ્યભાવિની હૈ ।

બેસથે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાથે આરાધક ગણાશે નહિ એટલા માટે
આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી બોધએ કે ‘અન પ્રણીત’ આગમમા
પ્રતિમા-પૂજનની વિધિ મળતી નથી

આ પ્રમાણે પ્રતિમા-સ્થાપન, -પ્રતિમા-પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મંદિર વગેરે
બનાવવા અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉઘાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર
કરાવવા એ પૃથિવ-કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે-એટલા માટે ત્યાજ્ય
છે તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથિવ-કાયિક
જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઈ શકતા નથી આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન,
પ્રતિમાને અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામા અને તેના ઉપદેશમા પણ
અપ્કાયના જીવોની વિરાધના હોય છે ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી
ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સલવી
શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમા અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે

પ્રાણાતિપાતવિરમણવ્રતિના મુનીના પ્રતિમાપૂજનોપદેશે સ્વર્ગમસ્ય મૂળોચ્છેદ સ્યા
 દેવ । અતઃ૫૨-જિનમણીતાગમે પ્રતિમાપૂજાયારિધિર્નોવલ્ભ્યતે । પ્રતિમાસ્થાપનાર્થે

ભગીકાર કરને મેં ઉસ પૂજન કે સમય મેં ઘટ કાચ કે જીવોં કી વિરા
 ઘના જય અવશ્યમાવી હૈ તપ મલા । હમ હસે વિધેય માર્ગ કેસે માન
 સકતે હૈ, ઓર કેસે ઘટ સ્વીકાર ક્રિયા જા સકના હૈ કિ હસ પૂજન
 કા કર્તા સત્ત્વે ધર્મ કા ઉપામક હૈ તથા પ્રતિમાપૂજન કો ધર્મ માના
 જાવે તો એક ઘડા ભારી દોષ ઘટ મી આકર ઉપસ્થિત હોતા હૈ કિ સર્વ
 પ્રકાર કે હિંસાદિક પાપોં સે સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજન જય હસ
 પ્રતિમાપૂજનરૂપ વર્મ કા ઉપદેશ કરેંગે તત્ર વે મી કારિતાદિરૂપ કરાને
 આદિ રૂપ સે હસકે કર્તા હોને કે કારણ અપને મુનિધર્મ કે મૂલતઃ હી
 વિધ્વસક માને જાયેંગે । મુનિજન હિંસાદિક સાવચ વ્યાપારોં કે કૃત,
 કારિત એવ અનુમોદના હન તોન કરણ એવ તોન યોગ સે ત્યાગી હુઆ
 કરતે હૈ । જય યે પ્રતિમાપૂજન રૂપ ધર્મ કા ગૃહસ્થો કે લિયે વ્યાખ્યાન
 દેંગે તથા ઉનકે વ્યાખ્યાન સે પ્રેરિત હો ગૃહસ્થ જન ઉસ ઓર અપની
 પ્રવૃત્તિ ચાલુ કરને વાળે હોંગે, ઓર ઉસ પ્રકાર કે ઉનકે વ્યવહાર સે
 હસ કાર્ય મેં ઘટકાચ કે જીવોં કી વિરાઘના હોને સે ઉસ વિરાઘના

જે સાધ્ય થાય છે તેમા તો સાચા ધર્મના દર્શન સુદા હુલ્લ છે એટલા
 માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામા તે પૂજન કરતી વખતે ઘટકાચના જીવોની
 વિરાઘના જગાદે થોડકસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા
 આધારે માન્ય કરીએ અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર
 કરીએ કે આ જાતનુ પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે ? જે પ્રતિમા
 પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમા એક ભાદે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકાર
 રના હિંસા વગેરે પાપોથી સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો જગાદે આ
 પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ
 કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલત
 વિધ્વસક ગણાશે મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવચ વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને
 અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે જગાદે તેઓ
 પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનુ ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમના
 વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આચરશે જ અને આ જાતના તેમના
 આચરણોથી આ કામમા ઘટકાચ જીવોની વિરાઘના હોવાથી તે વિરાઘનાને
 કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહા
 વ્રતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે ? એથી ધર્મ-
 જ્ઞાનને ઇચ્છતા પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમા જ

દેવાયતનપ્રતિમાઽઽરામકૃપાદિકરણે તદુપદેશદાને ચ પૃથિવીકાયર્હિસાયા અવ-
શ્યમાવઃ । દેવાયતનાદિકરણે પૂજાઙ્ગતયાસ્નાન પ્રતિમાસ્નપનપદ્મશ્ચાલનાદિક-
રણે ચ તદુપદેશદાને ચાપ્કાયવિરાધનમપિ, તથા-પૂજાઙ્ગદ્રૂપદીપારાત્રિકસમ્પા-
દન ચાગ્નિકાયવિરાધનયા વિના ન સમ્ભવતિ, વાયુકાયર્હિસન તુ ધૂપદીપારાત્રિકા

કે કરાને ચાલે યે ઉપદેશક મુનિજન માને જાયેગે-તવ ઇનકે અર્હિસાદિ
મહાવ્રત ત્રિયોગ ઔર ત્રિકરણ વિશુદ્ધ કૈસે રહ સકેગે ? અતઃ લાભ કી
ચાહના મે ઇન વિચારોં કી ભૂલ મેં હી વહી ભારી ભૂલ હોને સે યે
અપને ધર્મ કે સત્ત્વે આરાધક નહીં માને જા સકેગે । ઇસલિયે યહ
વાત અવશ્ય માનની ચાલિયે કિ જિન પ્રણીત આગમ મેં પ્રતિમાપૂજન
કી વિધિ નહીં પાઈ જાતી હૈ ।

હસી પ્રકાર પ્રતિમા સ્થાપન, પ્રતિમા પ્રતિષ્ઠા કરવાના, મદિર વગેરે
બનવાના ઇવ્હ ઉસ પ્રતિમા કી પૂજા નિમિત્ત વગીચા તથા કુઆ આદિ
કા કરવાના યે વાતે પૃથિવી કાયિક જીવોં કી હિંસા કે કારણ હૈં અતઃ
ત્યાજ્ય હૈ । ઇનકે બનવાને આદિ કા જો ઉપદેશ કરતે હં વે ભી
પૃથિવીકાયિક જીવોં કી હિંસા સે મુક્ત નહીં હો સકતે હં । હસી પ્રકાર
પૂજન કા અગ હોને સે સ્નાન, પ્રતિમા કે અભિષેક તથા પૂજન કે વસ્ત્રોં
કે ધોને સાફ કરને મે ઔર ઉસકે ઉપદેશ દેને મેં અપ્કાય કે જીવો
કી વિરાધના હોતી હૈ, ધૂપખેના, દીપક જલ્લાના, આરતી ઉતારના
યે સવ વાતે અગ્નિકાયિક જીવોં કી વિરાધના કે વિના નહીં હો સકતી
હૈ અર્થાત્ ઇનમેં અગ્નિકાયિક જીવો કી વિરાધના અવશ્યમાવિની હૈ ।

એસશે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાચા આરાધક ગણાશે નહિ એટલા માટે
આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી બોધ્યો કે 'જન પ્રણીત' આગમમા
પ્રતિમા-પૂજનની વિધિ મળતી નથી

આ પ્રમાણે પ્રતિમા-સ્થાપન, -પ્રતિમા-પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મદિર વગેરે
બનાવવા અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉઘાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર
કરાવવા એ પૃથ્વી-કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે-એટલા માટે ત્યાજ્ય
છે તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથ્વી-કાયિક
જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઈ શકતા નથી આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન,
પ્રતિમાનો અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામા અને તેના ઉપદેશમા પણ
અપ્કાયના જીવોની વિરાધના હોય છે ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી
ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સંભવી
શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમા અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે

દિમિથામરાદિધીજનૈર્નૃત્યગીતવાદિત્રૈથ સચિશ્વર ભરતિ, વનસ્પતિઝાયપિરાગન ચ પ્રતિમાપૂજાનિમિત્તકેઽનન્તકાયકોમલપ્રિચિપ્તપુષ્પવપ્રસપ્દે નિયત ભરતિ । પૃથિ-
વીકાયાઘાથિતા યદુચિધનિસ્પગધહીનદીનદુર્બલપ્રકૃતિમીરુસગોપિાશરીયા દ્વીન્દ્રિ-
યાદિ પચ્ચેન્દ્રિયાન્તાલ્પમા જીરા અપિ છેદાભેદનસ્યાભયવિનાશજનિતાનન્તદુઃખે
સ્તીત્રતરવેદનામુપલભ્યેતસ્તતઃ સ્વલિતપતિતા ત્રિવન્તે ।

ધૂપકેધુ આ સે, દીપ તથા આરતી કી જ્યોતિ સે ચમર આદિ કે ઢોરને
સે, નૃત્ય કરને સે, ગીત ગાતે સમય મુજ સે નિકલે હુગ ગર્મ ઘાયુ સે,
અથ વાજોં કે ઘજાને સે ઘાયુકાયિક જીવોં કી વિરાધના હોતી હુઈ સ્પષ્ટ
માલૂમ દેતી હૈ । વનસ્પતિ કાયિક જીવોં કી વિરાધના મી ડસ સમય
હસ પ્રકાર સે હોતી હૈ, કિ-મૂર્તિ પૂજન કે લિયે ડસકે પૂજક અનન્ત
કાયિક એસે કોમલ અનેક પ્રકાર કે ફલ, પુષ્પ ઓર પત્રોં કા
સગ્રહ જો કરતા હૈ હસ પ્રકાર હસ પૂજન મેં પટ્કાયિક જીવોં કી હિંસા
કા આરંભ સ્પષ્ટ દેખા જાતા હૈ । તથા ત્રસ કાયિક જીવોં કા મી હસકે
નિમિત્તહનન હોતા હૈ ઓર વહ હસ પ્રકાર સે-કિ જય પૃથિવીકાયિક
કાદિ જીવોં કા આરંભ પ્રતિમા આદિ કે નિર્માણ મેં યા દેવ આયતન
(મન્દિર) આદિ કે કરાને મેં કિયા જાતા હૈ તો ડસ સમય ડસકે
આશ્રિત જો ઘહુત સે અનેક જાતિ કે નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ,
પ્રકૃતિ સે મયશીલ તથા સગોપિત શરીરવાળે એસે દ્વીન્દ્રિયાદિકસે લેકર
પચ્ચેન્દ્રિય તક જિતને મી ત્રસ જીવ રહતે હૈં વે સય કે સય છેદન,
ભેદન, અથ સ્વાશ્રય કે વિનાશ જનિત અનન્ત દુઃખોં સે સતસ હોકર

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને
ઢોળવાથી તેમજ વાજાઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે
તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરા
ધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ
અનન્ત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા
કરે છે આમ આ પૂજકો પદ્મ-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે
ત્રસ-કાયિક જીવોનું પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથિવ-કાયિક
વગેરે જીવોના આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમાં અથવા તો દેવ-આયતન
(મંદિર) વગેરે બનાવવામાં કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા
અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી બીકણ તેમજ સગો
પિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકમાં માડીને પચ્ચેન્દ્રિય સુધીના ત્રસ
જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના

ધર્મસ્ય લક્ષણ દિ-જિનાજ્ઞાપયોજ્યપ્રવૃત્તિષ્વત્ત્વમ્, “ આણાણ મામગ ધમ્મ ”
 इति भगवद्वचनात्, किं च-अगारानगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भग-
 वता-“ अणगारधम्मो ताव ” इत्यादिना सर्वप्राणातिपातविरमणादि-रात्रिभो-
 जनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिदं कथितम्—

‘अयमाउसो ! अणगारसामइए धम्मं पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उव-
 ष्हिए निग्गये वा निग्गयी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ’ (औपपातिसूत्रम्)
 अयमायुप्पमन् ! अनगारसामायिकरुः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्तः ।
 एतस्य धर्मस्य ‘ शिक्षायामुपस्थितः ’=आराधकः, निर्ग्रंथो वा निर्द्रंथी वा विहर-
 ओर वहा से गिर पड़कर अन्त में मर जाते हैं ।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृत्ति करना यही धर्म का लक्षण है । भग-
 वान का भी आचाराङ्गसूत्र अ-६ उ २ सू-८ में यही कथन है
 “ आणाए मामग धम्म ” इति । प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश
 दिया उस समय उन्होंने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक-
 १ सागारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म । “ अन-
 गार धम्मो ताव ” इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि
 से विरक्त होना यहा से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना
 यहा तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है
 उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि “ अयमाउसो
 अणगारसामइए धम्मं पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवविहिए
 निग्गये वा निग्गयी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ ” हे
 आयुमन् ! यह अनगारसामायिकरु-मुनियो का सिद्धान्त विषयक

હ ખોલો ન તત્ત થઈને અને ત્યાથી પડી જઈને, બ્રહ્મ થઈને અતે મૃત્યુને ભેટે છે
 જિનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવું એ જ ધર્મનું લક્ષણ છે આચારાંગ
 સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ માં પણ લગવાને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે “ આણાણ
 મામગ ધમ્મ ઇતિ ” પ્રભુએ ન્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેમણે
 આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ આગાર ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર
 મુનિનો ધર્મ “ અનગારધમ્મો તાવ ” વગેરે સૂત્રથી મમન્ત જીવોની વિરા-
 ધના વગેરેથી વિરક્ત થવું અહીંથી માડી રાત્રિ-ભોજનનો સંપૂર્ણપણે ત્યાગ
 કરવો અહીં સુધી જે કંઈ કહ્યું છે તે બધું અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામાં
 આવ્યું છે ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમાં તેજોશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે—
 (અયમાઉસો અણગારસામઇએ ધમ્મે પણ્ણત્તે, એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાપ, ઉવવિહિ
 નિગ્ગયે વા નિગ્ગયી વા વિહરમાણે આણાણ આરાહપ ભવહ) હે આયુમન્ !

દિમિથામરાદિવીજનૈર્નૃત્યગીતવાન્નૈશ્વ સચિશ્વ મયતિ, વનસ્પતિઝાયવિરાધન વ
પ્રતિમાપૂજાનિમિત્તકેઽનન્તકાયકોમલપ્રિથિફલપુષ્પવત્સપદે નિયત મયતિ । પૃથિ
વીકાયાઘાશ્રિતા વહુપ્રિથનિસ્પરાધહીનદીનદુર્બલપ્રકૃતિગીરુસગોપિતગરીરા દ્વીન્દ્રિ-
યાદિ પચ્ચેન્દ્રિયાન્તાસ્રમા જીરા અપિ છેદનભેદનસ્રાગયતિનાશજનિતાનન્તદુઃખે
સ્તીવ્રતરવેદનામુપલભ્યેતસ્તતઃ સ્વલિતપતિતા મિવન્તે ।

ધૂપકેધુ આ સે, દીપ તથા આરતી કી જ્યોતિ સે ચમર આદિ કે ટોરને
સે, નૃત્ય કરને સે, ગીત ગાતે સમય મુગ્ય સે નિરુલે હુગ ગર્મ વાયુ સે,
અથ વાજોં કે વજાને સે વાયુકાયિક જીવોં કી વિરાધના હોતી છુઈ સ્પષ્ટ
માલુમ દેતી હૈ । વનસ્પતિ કાયિક જીવોં કી વિરાધના બી ઇસ સમય
ઇસ પ્રકાર સે હોતી હૈ, કિ-મૂર્તિ પૂજન કે લિયે ડસકે પૂજક અનન્ત
કાયિક એસે કોમલ અનેક પ્રકાર કે ફલ, પુષ્પ ઓર પત્રોં કા
સગ્રહ જો કરતા હૈ ઇસ પ્રકાર ઇસ પૂજન મેં પદ્ધકાયિક જીવોં કી હિંસા
કા આરમ સ્પષ્ટ દેખા જાતા હૈ । તથા ઘસ કાયિક જીવોં કા બી ઇસકે
નિમિત્તહનન હોતા હૈ ઓર વહ ઇસ પ્રકાર સે-કિ જય પૃથિવીકાયિ-
કાદિ જીવોં કા આરમ પ્રતિમા આદિ કે નિર્માણ મેં યા દેવ આયતન
(મન્દિર) આદિ કે કરાને મેં કિયા જાતા હૈ તો ડસ સમય ડસકે
આશ્રિત જો વહુત સે અનેક જાતિ કે નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ,
પ્રકૃતિ સે ભયશીલ તથા સગોપિત શરીરવાળે એસે દ્વીન્દ્રિયાદિકસે લેકર
પચ્ચેન્દ્રિય તક જિતને બી ઘસ જીવ રહતે હૈં વે સય કે સય છેદન,
ભેદન, અથ સ્વાશ્રય કે વિનાશ જનિત અનત દુઃખોં સે સતત હોકર

થવાની જ છે ધૂપના પ્રમાણથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને
ઢાળવાથી તેમજ વાળઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે
તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરા
ધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજ કરનારાઓ
અનન્ત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા
કરે છે આમ આ પૂજના પદ્ધ-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે
ઘસ-કાયિક જીવો પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથિવ-કાયિક
વગેરે જીવોનો આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમાં અથવા તેા દેવ-આયતન
(મંદિર) વગેરે બનાવવામાં કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા
અનેક જાતના નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી બીકણ તેમજ સગો
પિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માડીને પચ્ચેન્દ્રિય સુધીના જેટલા ઘસ
જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનન્ત

ધર્મસ્ય લક્ષણ દિ-જિનાઙ્ગમયોજ્યપ્રવૃત્તિવત્ત્વમ્, “ આણાણ મામગ ધમ્મ ”
 इति भगवद्वचनात्, किं च-अगाराणगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भग-
 वता-“ अणगारधम्मो ताव ” इत्यादिना सर्वप्राणातिपातविरमणादि-रात्रिभो-
 जनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिदं कथितम्—

‘अयमाउसो ! अणगारसामइए धम्मं पणत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उव-
 द्विए निग्गये वा निग्गयी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ’ (औपपातिसूत्रम्)
 अयमायुप्पमन् ! अनगारसामायिकः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्तः ।
 एतस्य धर्मस्य ‘ शिक्षायामुपस्थितः ’=आराधकः, निर्ग्रथो वा निर्ग्रथी वा विहर-
 ओर वहा से गिर पड़कर अन्त में मर जाते हैं ।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृत्ति करना यही धर्म का लक्षण है । भग-
 वान का भी आचाराङ्गमृत्र अ- ६ उ २ सू- ८ में यही कथन है
 “ आणाण मामग धम्म ” इति । प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश
 दिया उस समय उन्होंने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक-
 १ खानगारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म । “ अन-
 गार धम्मो ताव ” इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि
 से विरक्त होना यहा से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना
 यहा तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है
 उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि “ अयमाउसो
 अणगारसामइए धम्मं पणत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवद्विए
 निग्गये वा निग्गयी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ ” हे
 आयुमन् ! यह अनगारसामायिक-मुनियो का सिद्धान्त विषयक

હ ખોથા ન તપ્પ થઈને અને ત્યાથી પડી જઈને, બ્રહ્મ થઈને અતે મૃત્યુને ભેટે છે

જિનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવું એજ ધર્મનું લક્ષણ છે આચારાગ
 સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ માં પણ લખવાને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે “ આણાણ
 મામગ ધમ્મ ઇતિ ” પ્રભુએ ન્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યાંજ તેમણે
 આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ માગાર ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર
 મુનિનો ધર્મ “ અનગારધમ્મો તાવ ” વગેરે સૂત્રથી સમસ્ત જીવોની વિરા-
 ધના વગેરેથી વિરક્ત થવું અહીંથી માઠી રાત્રિ-ભોજનનો સંપૂર્ણપણે ત્યાગ
 કરવો અહીં સુધી જે કંઈ કહ્યું છે તે બધું અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામાં
 આવ્યું છે ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમાં તેઓશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે—
 (અયમાઉસો અણગારમામહા ધમ્મે પણત્તે, એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાપ, ઉવદ્વિપ
 નિગ્ગયે વા નિગ્ગયી વા વિહરમાણે આણાપ આરાહપ ભવહ) હે આયુમન !

દિમિથામરાદિવીજનૈર્નૃત્યગીતવાદિત્રૈય સચિદ્ર મયતિ, ચનસ્પતિશાયપ્રિરાધન ચ
પ્રતિમાપૂજાનિમિત્તકેઽનન્તકાગ્નોમલપ્રિચિદ્રપુરુષપ્રસપદે નિયત મયતિ । પૃથિ
વીકાયાઘાઘ્રિતા વહુચિનિરપરાધીનદીનદુર્બલપ્રકૃતિભીરુસગોપિતારીરા દ્વીન્દ્રિ-
યાદિ પચ્ચેન્દ્રિયાન્તાદ્યમા જીરા એપિ છેદાભેદનસ્થાભયવિનાશજનિતાનન્તદુઃખે
સ્તીત્રતરવેદનામુપલભ્યેતસ્તતઃ સ્વલિતપતિતા પ્રિવન્તે ।

ધૂપકેધુ આ સે, દીપ તથા આરતી કી જ્યોતિ સે ચમર આદિ કે ટોરને
સે, નૃત્ય કરને સે, ગીત ગાતે સમય યુગ સે નિકલે હુગ ગર્મ વાયુ સે,
એવ વાજોં કે ઘજાને સે વાયુકાયિક જીવોં કી વિરાધના હોતી છુઈ સ્પષ્ટ
માલુમ દેતી હૈ । ચનસ્પતિ કાયિક જીવોં કી વિરાધના ખી ઇસ સમય
ઇસ પ્રકાર સે હોતી હૈ, કિ-મૂર્તિ પૂજન કે લિયે ડસકે પૂજક અનન્ત
કાયિક એસે કોમલ અનેક પ્રકાર કે ફલ, પુષ્પ ઓર પત્રોં કા
સગ્રહ જો કરતા હૈ ઇસ પ્રકાર ઇસ પૂજન મેં પદ્ધકાયિક જીવોં કી હિંસા
કા આરમ સ્પષ્ટ દેખા જાતા હૈ । તથા ઘસ કાયિક જીવોં કા ખી ઇસકે
નિમિત્તહનન હોના હૈ ઓર વહ ઇસ પ્રકાર સે-કિ જર પૃથિવીકાયિક
કાદિ જીવોં કા આરમ પ્રતિમા આદિ કે નિર્માણ મેં યા દેવ આયતન
(મન્દિર) આદિ કે કરાને મેં કિયા જાતા હૈ તો ડસ સમય ડસકે
આશ્રિત જો વહુત સે અનેક જાતિ કે નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ,
પ્રકૃતિ સે મયશીલ તથા સગોપિત શરીરવાળે એસે દ્વીન્દ્રિયાદિકસે લેકર
પચ્ચેન્દ્રિય તક જિતને ખી ઘસ જીવ રહતે હૈં વે સય કે સય છેદન,
ભેદન, એવ સ્વાશ્રય કે વિનાશ જનિત અનન્ત દુઃખોં સે સતસ હોકર

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને
ઢાળવાથી તેમજ વાળઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે
તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરા
ધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ
અનન્ત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા
કરે છે આમ આ પૂજામાં પરુ-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે
ત્રસ-કાયિક જીવોનું પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથિવ-કાયિક
વગેરે જીવોનો આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમાં અથવા તો દેવ-આયતન
(મન્દિર) વગેરે બનાવવામાં કરવામાં આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા
અનેક જાતના નિરપરાધી, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી ખીકણુ તેમજ સગો
પિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માંડીને પચ્ચેન્દ્રિય સુધીના જેટલા ત્રસ
જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનન્ત

છાયા—અયમાયુષ્મન્ ! અગારસામયિકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞતઃ, એતસ્ય ધર્મસ્ય શિક્ષાયામુપસ્થિતઃ’=આરાધકઃ શ્રમણોપાસકો વા શ્રમણોપાસિકા વા વિદ્યમાણા આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ । ઇતિ ॥

અત્રાપિ એતસ્ય દ્વાદશત્રિધસ્ય ધર્મસ્પારાધકુ એવ શ્રમણોપાસકુ આજ્ઞાયા આરાધકુ ઇતિ યોધયતાઽઽજ્ઞૈઃ ધર્મસ્ય મૂલમિતિ વોધિતમ્ ।

આચારાદ્રસુત્રેઽપિ પ્રથમાઞ્ચયને તૃતીયોદેશે ભગવતાઽભિહિતમ્—“ જાણ સદ્દાણિમ્લવતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા—વિજહિતા વિમોક્તિય પુવ્વસંજોગ । પળયા વીરા મહાવીરિં । લોગ ચ આણાણ અભિસમેચ્છા અકુતોભય ।” ઇતિ

આયુષ્યમન્ ! યહ ગૃહસ્થ કા ધર્મ કહા ગયા હૈ । હસ ધર્મ કી શિક્ષા મૈં ઉપસ્થિત-શ્રમણોપાસક-મુનિજનોં કૈં ભક્ત એસે શ્રાવકજન અથવા શ્રાવિકાજન તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કૈં આરાધક માને જાતે હૈં । હસ સૂત્ર મૈં બી યહી પ્રકટ કિયા ગયા હૈ કિ હસ ૧૨ પ્રકાર કૈં ધર્મ કા આરાધક હી શ્રમણોપાસક-શ્રાવક, શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કા આરાધક હૈ હસ પ્રકાર સમજાનેવાલે શ્રી જિનેન્દ્ર દેવ ને આજ્ઞા હી ધર્મ કા મૂલ હૈ યહ સમજાયા હૈ ।

આચારાગ સૂત્ર કૈં પ્રથમ અ યયનકૈં તૃતીય ઉદ્દેશે મૈં ભગવાન ને યહ કહા હૈ “ જાણ સદ્દાણિમ્લવતે તમેવ મણુપાલિજ્ઞા વિજહિતા વિમોક્તિય પુવ્વસંજોગ । પળયા વીરા મહાવીરિં લોગ ચ આણાણ અભિસમેચ્છા અકુતોભય ’ કિ જિસ શ્રદ્ધા ઉત્સાહ સે “અર્હંત પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત સમ્યગ્દર્શનાદિક મોક્ષકે માર્ગ હૈ યા નહીં હૈ” હસ પ્રકાર સર્વ

આણાણ આરાહણ મગ્ગ ” હે આયુષ્મન્ ! આ ગૃહસ્થ ધર્મ બતાવવામા આબ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્તજન-શ્રાવકો અથવા તો શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે આ સૂત્રમા પણ આ પ્રમાણે જ સ્પષ્ટ કરવામા આબ્યુ છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આરાધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આરાધકો છે આ રીતે સમજાવનારા શ્રી જિનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનું મૂળ છે આમ સમજાવ્યું છે આચારાગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદ્દેશકમા ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—“ જાણ સદ્દાણિમ્લવતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા વિજહિતા વિમોક્તિય પુવ્વ સંજોગ । પળયા વીરા મહાવીરિં લોગ ચ આણાણ અભિસમેચ્છા અકુતોભય ” કે જે શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી “ અર્હંત પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે મોક્ષના માર્ગો છે કે નહિ ” આ રીતે સર્વ આગમ વિષયક સર્વ શકા તેમજ

માણ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ । એતસ્ય ધર્મસ્યારાધક પવાજ્ઞાયા આરાધક
 ઇત્યુક્ત્યાઽઽઞ્ચૈવ ધર્મસ્ય પ્રકાશકતવા મૂલમિતિ ચોધિતમ્ । તદનન્તર ચ ભગવતા-

“ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આદિસ્વહ । ત જહા—પચ અણુવ્વયાઈ, તિણ્ણિ-
 ગુણવ્વયાઈ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઈ ” ઇત્યાદિના દ્વાદશવિધં ધર્મ નિરુપ્ય કથિતમ્ ।

‘ અયમાડમો ! અગારસામણ્ણ ધમ્મે પળ્લસે ’ એવસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ ઉવ
 ટ્ઠિણ સમણોવાસણ વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવહ ” ઇતિ ।

ધર્મ કહા ગયા હૈ—અર્થાત્ મુનિયોં કા યદ્ધ ધર્મ કતા ગયા હૈ । ઇસ
 ધર્મ કી શિક્ષા મેં જો ઉપસ્થિત હોતા હૈ અર્થાત્ જો ઇમ ધર્મ કી-
 આરાધના કરતે હૈ—ચાહે વે સાધુ હૈં ચાહે સાધ્વી હૈં કોઈ બી હો વે
 જિનેન્દ્ર ભગવાન કી આજ્ઞા કે આરાધક હોતે હૈ । ઇસ ધર્મ કી આરા-
 ધના કરનેવાલા જીવ હી જિનેન્દ્ર કી આજ્ઞા કા આરાધક માના ગયા હૈ
 ઇસ કથન સે “ જિસ વાત મેં ભગવાન કી આજ્ઞા હો વહી ધર્મ કા મૂલ
 હૈ અન્ય આજ્ઞા વિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હૈ ” યહ વાત સમજાઈ ગઈ હૈ ઇસ કે
 વાદ ભગવાન ને “ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આદિસ્વહ તં જહા—પચ
 અણુવ્વયાઈ, તિણ્ણિગુણવ્વયાઈ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઈ ” ઇસ સૂત્ર સે યદ્ધ
 પ્રકટ કિયા હૈ કિ ગૃહસ્થ કા ધર્મ ૧૨ પ્રકાર કા હૈ ૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણ
 વ્રત ઓર ૪ શિક્ષાવ્રત । ઇસ પ્રકાર સે કથન કર “ અયમાડસો અગાર
 સામણ્ણ ધમ્મે પળ્લસે એવસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ, ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ
 વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવહ ” ઇતિ—હે

આ અનગાર સામાયિક મુનિયોના સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામા આબ્યો છે
 એબ્બે કે આ મુનિઓના ધર્મ કહેવામા આબ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા જે
 ઉપન્થિત હોય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે—ભલે તેઓ સાધુ
 હોય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હોય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના
 આરાધકો હોય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારો જીવ જ જીનેન્દ્રના આરા-
 ધક ગણાય છે આ કથનથી એ વાત સમજાવવામા આવી છે કે જે વાતમા
 ભગવાનની આજ્ઞા હોય તે જ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરુદ્ધ બીજી આચરણ અધર્મ
 છે ત્યારપછી ભગવાન વડે “ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આદિસ્વહ ત જહા પચ
 અણુવ્વયાઈ, તિણ્ણિ ગુણવ્વયાઈ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઈ ” આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ
 કરવામા આબ્યુ છે કે ગૃહસ્થનો ધર્મ ૧૨ પ્રકારનો છે—૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણવ્રત
 અને ૪ શિક્ષાવ્રત આ રીતે “ અયમાડસો અગારસામણ્ણ ધમ્મે પળ્લસે એવસ્સ
 ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ વા સમણોવાસિયા વા

છાયા—અયમાયુષ્મન્ ! અગારસાનયિકો ધર્મઃ પ્રજ્ઞસઃ, એતસ્ય ધર્મસ્ય શિક્ષાયામુપસ્થિતઃ—આરાધકઃ શ્રમણોપાસકો વા શ્રમણોપાસિકા વા વિહરમાણા આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ । ઇતિ ॥

અત્રાપિ એતસ્ય દ્વાદશધિષ્ય ધર્મસ્યારાધક એવ શ્રમણોપાસક આજ્ઞાયા આરાધક ઇતિ યોધયતાઽઽજ્ઞૈર્ ધર્મસ્ય મૂલમિતિ યોધિતમ્ ।

આચારાદ્મુત્રેઽપિ પ્રથમાઽન્યયને તૃતીયોદ્દેશે ભગવતાઽભિહિતમ્—“ જાણ સદ્વાણિસ્વતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા—વિજહિતા વિમોક્તિય પુવ્વસંજોગ । પળયા વીરા મહાવીરિં । લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોભય ।” ઇતિ

આયુષ્યમન્ ! યહ મૃત્યુસ્થ કા ધર્મ કહા ગયા હૈ । ઇસ ધર્મ કી શિક્ષા મૈં ઉપસ્થિત-શ્રમણોપાસક-મુનિજનોં કે ભક્ત એસે શ્રાવકજન અથવા શ્રાવિકાજન તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કે આરાધક માને જાતે હૈં । ઇસ સૂત્ર મૈં બી યહી પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ કિ ઇસ ૧૨ પ્રકાર કે ધર્મ કા આરાધક હી શ્રમણોપાસક-શ્રાવક, શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કા આરાધક હૈ ઇસ પ્રકાર સમજાનેવાલે શ્રી જિનેન્દ્ર દેવ ને આજ્ઞા હી ધર્મ કા મૂલ હૈ યહ સમજાયા હૈ ।

આચારાગ સૂત્ર કે પ્રથમ અ ઘયનકે તૃતીય ઉદ્દેશે મૈં ભગવાન ને યહ કહા હૈ “ જાણ સદ્વાણિસ્વતે તમેવ મણુપાલિજ્ઞા વિજહિતા વિમોક્તિય પુવ્વસંજોગ । પળયા વીરા મહાવીરિં લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોભય ” કિ જિસ શ્રદ્ધા ઉત્સાહ સે “અર્હંત પ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત સમ્યગ્દર્શનાદિક મોક્ષકે માર્ગ હૈ યા નહીં હૈ” ઇસ પ્રકાર સર્વ

આણાણ આરાધક ભવત્” હે આયુષ્મન્ત ! આ ગૃહસ્થ ધર્મ બતાવવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્ત/જન-શ્રાવકો અથવા તે શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે આ સૂત્રમા પણ આ પ્રમાણે જ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આગધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આગવકો છે આ રીતે મમજાવનાના શ્રી જીનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનું મૂળ છે આમ સમજાવ્યુ છે આચારાગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદ્દેશકમા ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે—“ જાણ સદ્વાણિસ્વતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા વિજહિતા વિમોક્તિય પુવ્વ સંજોગ । પળયા વીરા મહાવીરિં લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોભય ” છે જે શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી “ અર્હંત પ્રભુ ૧૨ પ્રતિપાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે શિક્ષાના માર્ગો છે કે નહિ ” આ રીતે સર્વ આગમ વિવેક સર્વ શકા તેમજ

માણ આજ્ઞાયા આરાધકો ભરતિ । એતસ્ય ધર્મસ્યારાધક પવાજ્ઞાયા આરાધક
 ઇત્યુક્ત્વાઽઽજૈવ ધર્મસ્ય પ્રકાશકતવા મૂલમિતિ ઘોષિતમ્ । તદનન્તર ચ મગતા-

“ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આહસ્સહ । ત જહા—પચ અણુવ્વયાઙ, તિણ્ણ-
 ગુણવ્વયાઙ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઙ ” ઇત્યાદિના દ્વાદશવિધ ધર્મ નિરૂપ્ય કથિતમ્ ।

‘ અયમાડમો । અગારસામણ્ણ ધમ્મે પણ્ણત્તે ’ એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ ઉવ
 ટ્ઠિણ સમણોવાસણ વા સમણોગમિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવઙ ” ઇતિ ।

ધર્મ કહા ગયા હૈ—અર્થાત્ મુનિયોં કા યહ ધર્મ કરા ગયા હૈ । ઇસ
 ધર્મ કી શિક્ષા મેં જો ઉપસ્થિત હોતા હૈ અર્થાત્ જો ઇસ ધર્મ કી-
 આરાધના કરતે હૈ—ચાહે વે સાધુ હોં ચાહે સાધ્વી હોં જોડ બી હો વે
 જિનેન્દ્ર ભગવાન કી આજ્ઞા કે આરાધક હોતે હૈં । ઇસ ધર્મ કી આરા-
 ધના કરનેવાલા જીવ હી જિનેન્દ્ર કી આજ્ઞા કા આરાધક માના ગયા હૈ
 ઇસ કથન સે “ જિસ વાત મેં ભગવાન કી આજ્ઞા હો વહી ધર્મ કા મૂલ
 હૈ અન્ય આજ્ઞા વિરુદ્ધ પ્રવૃત્તિ હૈ ” યહ વાત સમજાઈ ગઈ હૈ ઇસ કે
 ઘાદ ભગવાન ને “ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આહસ્સહ ત જહા—પચ
 અણુવ્વયાઙ, તિણ્ણગુણવ્વયાઙ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઙ ” ઇસ સૂત્ર સે યહ
 પ્રકટ કિયા હૈ કિ ગૃહસ્થ કા ધર્મ ૧૨ પ્રકાર કા હૈ ૫ અણુવત, ૩ ગુણ
 વ્રત ઓર ૪ શિક્ષાવ્રત । ઇસ પ્રકાર સે કથન કર “ અયમાડમો અગાર
 સામણ્ણ ધમ્મે પણ્ણત્તે એયસ્સ ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ, ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ
 વા સમણોવાસિયા વા વિહરમાણે આણાણ આરાહણ ભવઙ ” ઇતિ—હૈ

આ અનગાર સામાયિક મુનિઓનો સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે
 એટલે કે આ મુનિઓનો ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા જે
 ઉપસ્થિત હોય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે—ભલે તેઓ સાધુ
 હોય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હોય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના
 આરાધકો હોય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારો જીવ જીનેન્દ્રના આરા-
 ધક ગણાય છે આ કથનથી એ વાત સમજાવવામા આવી છે કે જે વાતમા
 ભગવાનની આજ્ઞા હોય તે જ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરુદ્ધ બીજી આચરણ અધર્મ
 છે ત્યારપછી ભગવાન વડે “ અગારધમ્મ દુવાલસવિહ આહસ્સહ ત જહા પચ
 અણુવ્વયાઙ, તિણ્ણ ગુણવ્વયાઙ ચત્તારિ સિક્ખાવયાઙ ” આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ
 કરવામા આવ્યું છે કે ગૃહસ્થનો ધર્મ ૧૨ પ્રકારનો છે—૫ અણુવત, ૩ ગુણવત
 અને ૪ શિક્ષાવ્રત આ રીતે “ અયમાડમો અગારસામાણ્ણ ધમ્મે પણ્ણત્તે એયસ્સ
 ધમ્મસ્સ સિક્ખાણ ઉવટ્ઠિણ, સમણોવાસણ વા સમણોગમિયા વા વિહરમાણે

‘પણ્યા’ પળતા = પ્રાપ્તાઃ કઠિનતરતપ સયમારાધનેન પ્રાપ્તવન્ત ઇત્યર્થઃ । અયમેવ માર્ગો મોક્ષમાપ્તિકરોઽશ્વેપસયમિસેવિત્ત્વાત્, તીર્થદ્ધરાદિમહાપુરુષા અપિ માર્ગમિમમતુરીલિતવન્ત ઇતિ ત્રિશ્વસનીયતયા શિષ્યાણા શ્રદ્ધાપૂર્વક પ્રવૃત્તિર્યથા સ્વાદિતિમાત્ર ।

કશ્ચિન્મન્દધીઃ શિષ્યોઽનેકદૃષ્ટાન્તૈર્ગોચમાનોઽપિ અપ્કાયાદિજીવેષુ ન શ્રદ્ધાતીતિ તપુદિશ્ય કથયતિ-હે શિષ્ય ! તપ મતિર્યથાપિ અપ્કાયજીવવિષયે ન

બીર દો પ્રકાર કે હોતે હૈ ? દ્રવ્યબીર ઓર દુસરે ભાવબીર । સયમ કે અનુષ્ઠાન કરને મેં જો શક્તિસપન હૈં વે ભાવબીર હ । વે જીવ સમ્યગ્દર્શન આદિ લક્ષગરુપ હસ મહાવિસ્તૃતમાર્ગ કો કિ જો મહાપુરુષો દ્વારા સેવિત દુઆ હૈ કઠિનતર તપ ઓર સયમ કી આરાધના સે પ્રાપ્ત કર લિયા કરતે હૈં । કહેનેકા સાર યહો હૈ કિ ભાવબીર યહી અપને ચિત્તમેં વિચાર ક્રિયા કરતે હૈં કિ સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્ચારિત્ર ઓર સમ્યગ્તપ રુપ હી માર્ગ હૈ ક્યો કિ ડસી સે મુક્તિ કી પ્રાપ્તી હોતી હૈ-હસીલિયે હસ માર્ગકા સમસ્ત સયમીજીવોને પૂર્વ મેં સેવન કિયા હૈ ઓર તો ક્યા સ્વય તીર્થદ્ધરા પ્રભુ ને બી ડસી માર્ગ કી પરિશીલના કી હૈ । હસલિયે હસ માર્ગ મેં પ્રવૃત્તિ સર્વહિત વિધાયી હૈ હસ પ્રકાર યહ માર્ગ વિશ્વાસ યોગ્ય હોને સે શિષ્યજન બી શ્રદ્ધાપૂર્વક હસમે પ્રવૃત્તિ કરે ।

કોઈ મન્દબુદ્ધિવાલા શિષ્ય અનેક દૃષ્ટાન્તો દ્વારા સમજાવે જાને પર બી યદિ અપ્કાય આદિ જીવોં કી શ્રદ્ધા સે રહિત હોતા હૈં તો ડસે

૧ દ્રવ્ય-બીર, ૨ ભાવ-બીર સયમના અનુષ્ઠાનમા જે શક્તિશાળી છે તે ભાવ બીર છે આ બધા જીવો સમ્યાગ્-દર્શન વગેરે લક્ષણ રૂપ આ વિસ્તૃતમાર્ગને કે જે મહાપુરુષો વડે સેવવામા આવ્યું છે-કઠણ તપ અને મયમની આરાધનાથી મેળવી લે છે કહેવાની મતલબ એ છે કે ભાવ-બીરો પોતાના મનમા આ પ્રમાણે જ વિચાર કરતા રહે છે કે ખરી રીતે સમ્યાગ્ જ્ઞાન, સમ્યાગ્ દર્શન, સમ્યાગ્ ચારિત્ર રૂપ જ માર્ગ છે કેમકે મુક્તિની પ્રાપ્તિ એનાથી જ થાય છે એટલા માટે જ પહેલા થઈ ગયેલા બધા જીવોએ આ માર્ગનું જ અનુસરણ કર્યું હતું તીર્થદ્ધરા પ્રભુએ જાતે પણ આ માર્ગની જ પરિશીલતા કરી છે એથી આ માર્ગમા પ્રવૃત્ત થવું તે બધી રીતે હિતાવહ છે આ પ્રમાણે આ માર્ગ વિશ્વમનીષ હોવા બદલ શિષ્યો પણ શ્રદ્ધા રાખીને તેમા પ્રવૃત્ત થાય કેમકે મહાબુદ્ધિ ધરાવનાર શિષ્ય ઘણા દૃષ્ટાંતો વડે સ્પષ્ટ કરવામા આવવા છતાં પણ જો અપ્કાય વગેરે જીવોની શ્રદ્ધાથી રહિત હોય છે તો

યયા શ્રદ્ધયા-સમ્યક્ત્વેન ' વિમોચિય ' વિમોત્તસિત્તાં=ગદ્ગાં-સર્વશક્તાં દેશ શક્તાં ચેત્યર્થઃ, યથા- ' વિમાર્હતો મોક્ષમાર્ગોઽસ્તિ ન યા ' ઇતિ સર્વાગમવિપયિકા શક્તા સર્વશક્તા, તથા- " કિમપ્રકાયાગ્યો જીવાઃ સન્તિ ન યા " ઇતિ દેગશક્તા । તથા ' પુવ્રસન્નોગં ' પૂર્વસંયોગ=માતાપિત્રાદિસમ્યન્ધં ધનધાન્યાગ્નજનાદિસમ્બન્ધ વા, इदमुपलक्षण-તેન પથાત્સયોગમપિ શ્વશુરાદિકૃત, ' ત્રિજિહ્વા ' ત્રિધા=પરિત્યજ્ય ' ણિફલ્લસે ' નિષ્ક્રાન્તઃ=પ્રવ્રજિતઃ । ' ત ' તા શ્રદ્ધામ્ ' અણુપાન્નિજ્ઞા એવ ' અનુપાલયેદેવ-નિરતિચાર રક્ષેદિત્યર્થઃ ।

અથ- ' પરિશીલિતમાર્ગોઽનુગમ્યતે ' ઇતિ લોકરીત્યા શિષ્યશ્રદ્ધાદ્દીકરણાય પૂર્વમહાપુરુષાચરિતોઽય માર્ગ ઇતિ ।

વીરાઃ—ભાવવીરાઃ સંયમાનુષ્ઠાને ધીર્યવન્તઃ ' મહાવીરિ ' મહાવીરિ=મહાવીરિ-સમ્યગ્દર્શનાદિલક્ષણો મહામાર્ગ મહાપુરુષસેવિતત્યાત્, તામહાવીરિયિ

આગમ વિપયક સર્વશક્તા કા તથા " અપ્ર કાયિકાદિક જીવ હૈ યા નહી " इस प्रकार की देशशक्ता और माता पिता आदि के साथ के संबधरूप पूर्व संयोग एव धन, धान्य, स्वजन आदि संबध, उपलक्षण से श्वशुर आदिरूप प्रश्नात् संयोग का परित्याग कर यह जीव ससार आदि पदार्थों को हेय समझ उनसे सर्वथा विरक्त हो जाता है उस श्रद्धा का अतिचार आदि को से रक्षा करनी चाहिये-उस श्रद्धा का अतिचार रक्षि होकर मुनि को पालन करना चाहिये । जो मार्ग परिशीलित होता है उस पर अनेक प्राणी चलते हैं यह लौकिकरीति है । इसीरीति के अनुसार शिष्यों की श्रद्धा को दृढ करने के लिये " यह मार्ग पूर्व में महापुरुषों द्वारा सेवित किया गया है " हमें समझाने के लिये सूत्रकार " पणया वीरा महावीरि " इस अंश का कथन करते हैं

" અપ્રકાયિક વગેરે જીવો છે કે નથી " આ જાતની દેશ શક્તા અને માતા પિતા વગેરેની સાથેના સબધ રૂપ પૂર્વ સંયોગ અને ધન, ધાન્ય, સ્વજન વગેરે સબધ ઉપલક્ષણથી ' શ્વશુર ' વગેરે રૂપ પ્રશ્નાત્ સંયોગને પરિત્યાગ કરીને આ જીવ સસાર વગેરે પદાર્થોને હેય સમજીને તેમના તરફ મ પૂણ પછે વિરક્ત થઈ જાય છે તે શ્રદ્ધાની અતિચાર વગેરેથી રક્ષા કરવી જોઈએ તે મહાનુ પાલન મુનિએ અતિચાર વગર થઈને તરફ જોઈએ તે માર્ગ પરિશીલિત હોય છે તે તરફ ધણા પ્રાણીઓ જાય છે, આ લૌકિક પ્રથા છે આ પ્રથા પ્રમાણે શિષ્યોની શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવા માટે " આ માર્ગ મહા પુરુષો વડે સેવવામા આવ્યો છે " આ વાત સમજાવવા માટે સૂત્રકાર " પણયા વીરા મહાવીરિ " આ વચનને ટાકે છે વીર એ પ્રકાર

‘પણયા’ પ્રણયા = પ્રાપ્તિ: કઠિનતરતપ સયમારાધનેન પ્રાપ્તવન્ત દ્વયર્થ: । અય મેવ માર્ગો મોક્ષોનાત્તિકરોડ્ગેપસયમિસેવિતત્વાત્, તીર્થદ્ધરાદિમહાપુરુષા અપિ માર્ગેમિમમનુશીલિતવન્ત ઇતિ વિશ્વસનીયતયા શિષ્યાણા શ્રદ્ધાપૂર્વક પ્રવૃત્તિર્યથા સ્યાદિતિમાત્ર ।

કશ્ચિન્મન્દગ્રી: શિષ્યોડ્ગેનદૃષ્ટાન્તૈર્મોઽયમાનોડપિ અપ્કાયાદિજીવેષુ ન શ્રદ્ધાતીતિ તદ્દુદિશ્ય કથયતિ-હે શિષ્ય ! તવ મતિર્યથાપિ અપ્કાયજીવવિપયે ન

વીર દો પ્રકાર કે હોતે હૈં ? દ્રવ્યવીર ઓર દુસરે ભાવવીર । સયમ કે અનુષ્ઠાન કરને મૈં જો શક્તિસપ્નન હૈં વે ભાવવીર હ । વે જીવ સમ્યગ્દર્શન આદિ લક્ષ્મરૂપ હસ મહાવિસ્તૃતમાર્ગ કો કિ જો મહાપુરુષો દ્વારા સેવિત દુઆ હૈ કઠિનતર તપ ઓર સયમ કી આરાધના સે પ્રાપ્ત કર લિયા કરતે હૈં । કહેનેકા સાર યહો હૈ કિ ભાવવીર યહી અપને ચિત્તમેં વિચાર ક્રિયા કરતે હૈં કિ સમ્યગ્જ્ઞાન, સમ્યગ્દર્શન, સમ્યગ્ચારિત્ર ઓર સમ્યગ્તપ રૂપ હી માર્ગ હૈ ક્યોં કિ હસી સે મુક્તિ કી પ્રાપ્તી હોતી હૈ-હસીલિયે હસ માર્ગકા સમસ્ત સયમીજીવોને પૂર્વ મૈં સેવન ક્રિયા હૈ ઓર તો ક્યા સ્વય તીર્થકર પ્રમુ ને બી હસી માર્ગ કી પરિશીલના કી હૈ । હસલિયે હસ માર્ગ મૈં પ્રવૃત્તિ સર્વહિત વિધાયી હૈ હસ પ્રકાર યહ માર્ગ વિશ્વાસ યોગ્ય હોને સે શિષ્યજન બી શ્રદ્ધાપૂર્વક હસમે પ્રવૃત્તિ કરે ।

કોઈ મન્દબુદ્ધિવાલા શિષ્ય અનેક દૃષ્ટાન્તો દ્વારા સમજાવે જાને પર બી યદિ અપ્કાય આદિ જીવો કી શ્રદ્ધા સે રહિત હોતા હૈ તો ઉસે

૧ દ્રવ્ય-વીર, ૨ ભાવ-વીર સયમના અનુષ્ઠાનમા જે શક્તિશાળી છે તે ભાવ વીર છે આ બધા છવે સમ્યાગ્-દર્શન વગેરે લક્ષણ રૂપ આ વિસ્તૃતમાર્ગને કે જે મહાપુરુષો વડે સેવવામા આવ્યુ છે-કઠણ તપ અને સયમની આરાધનાથી મેળવી લે છે કહેવાની મતલબ એ છે કે ભાવ-વીરો પોતાના મનમા આ પ્રમાણે જ વિચારો કરતા રહે છે કે ખરી રીતે સમ્યાગ્ જ્ઞાન, સમ્યાગ્ દર્શન, સમ્યાગ્ ચારિત્ર રૂપ જ માર્ગ છે કેમકે મુક્તિની પ્રાપ્તિ એનાથી જ થાય છે એટલા માટે જ પહેલા થઈ ગયેલા બધા છવેએ આ માર્ગનુ જ અનુસરણ કર્યું હતું તીર્થકર પ્રણયે જાતે પણ આ માર્ગની જ પરિશીલતા કરી છે એથી આ માર્ગમા પ્રવૃત્ત થવુ તે બધી રીતે હિતાવહ છે આ પ્રમાણે આ માર્ગ વિશ્વસનીય હોવા બદલ શિષ્યો પણ શ્રદ્ધા રાખીને તેમા પ્રવૃત્ત થાય કોઈક મદ બુદ્ધિ ધરાવનાર શિષ્ય ઘણા દૃષ્ટાંતો વડે અપ્પટ કરવામા આવવા છતા પણ જો અપ્કાય વગેરે છવેની શ્રદ્ધાથી રહિત હોય છે તો

પરિસ્ફુરતિ, તદ્વિપયે વિશેષજ્ઞાનાભાગાત્, તથાપિ ભગવદાજ્ઞયા શ્રદ્ધા નિતરં
વિધેયેત્યાશયેનાદ—“લોગ ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોમય” ઇતિ ।

“લોગ” લોકમ્ અત્ર લોકશબ્દેન પ્રકરણપદાદધ્યાય લોક એ ગૃષ્ઠે,
તમપ્રકાયલોક, ચ શબ્દેન અન્યાથાપ્રકાયાશ્રિતાન્ જીવાન્ “આણાણ” આજ્ઞયા
તીર્થંકર વચનેન “અભિસમેચા” અભિસમેત્ય આભિગુરવેન સમ્યગ્જ્ઞાતા, અપ્ર
કાયાદયો જીવા સન્તીત્યેયમનુ યેત્યર્થઃ, “અકુતોમય” નાસ્તિ કુતશ્ચિત્

સમજ્ઞાનેકે લિયે સૂત્રકાર કહતે છે કે હે શિષ્ય ! તુમ્હારી બુદ્ધિ અપ્રકા
યિક આદિ જીવોની શ્રદ્ધા કરનેમેં ડન ચિપયક વિશેષજ્ઞાનકે અભાવસે
યદિ સમર્થ નહીં હૈ, તૌ ખી ભગવાન્ કી આજ્ઞા સે તુમ્હેં ડનકે ત્રિપય મેં
અપની શ્રદ્ધા કો દૂષિત નહીં હોને દેના ચાહિયે—અર્થાત્ ભગવાન કી
આજ્ઞા પ્રમાણ માનકર તુમ્હેં ડનકે ચિપય મેં અપની અતિશય શ્રદ્ધા
જાગ્રત કરની ચાહિયે । સૂત્રકાર હસી અભિપ્રાય સે કહતે હૈ કે “લોગ
ચ આણાણ અભિસમેચા અકુતોમય” ઇતિ । અપ્રકાય રૂપ લોક કો
તથા “ચ” શબ્દ સે અન્ય અપ્રકાય કે અશ્રિત જીવોં કો તીર્થંકર
પ્રભુ કી આજ્ઞા સે અઢી તરહ જાનકર ડનકી આજ્ઞાનુસાર ડનકા
અસ્તિત્વ માનકર આત્મકલ્યાણ કે અભિલાષી મુનિયોં કો સયમ કા
પાલન કરના ચાહિયે । સૂત્રસ્થલોક શબ્દ યહા પ્રકરણ કે વશ સે અપ્ર
કાય કા ઘોષક હૈ । “ચ” શબ્દ સે તદાશ્રિત અન્ય જીવોં કા ગ્રહણ
હુઆ હૈ । “અકુતોમય” શબ્દ કા અર્થ સયમ હૈ કહીં સે ખી કિસી

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય ! તમારી બુદ્ધિ અપ્રકાયિક
વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામા તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે
જો સમર્થ નથી તો પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને
દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને
મદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રત્યે પોતાની વધારેમા વધારે શ્રદ્ધા
જાગ્રત કરવી જોઈએ સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે “લોગ ચ આણાણ
અભિસમેચા અકુતોમય” ઇતિ । અપ્રકાય રૂપ લોકને તેમજ ‘ચ’ શબ્દથી
બીજા અપ્રકાયાશ્રિત જીવોને તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને
તેમની આજ્ઞા સુજ્ઞ તેમનું આસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ધ્યેયનારા મુનિ-
ઓએ સયમનું પાલન કરવું જોઈએ સૂત્રમા આવેલો ‘લોક’ શબ્દ અહીં
પ્રકરણ પશાત્ અપ્રકાયનો વાચક છે ‘ચ’ શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનું
ગ્રહણ થયું છે ‘અકુતોમય’ શબ્દનો અર્થ સયમ છે કોઈ પણ જગ્યા
એથી કોઈ પણ રીતે જીવોને જેનાથી ભય હોતો નથી તે અ.

કેનાપિ પ્રકારે પ્રાણિના મય યસ્માત્ સોઽકુતોમયઃ = સયમસ્તમ્, “અણુપાલિજ્ઞા” અનુપાલયેત્તિ પૂર્વોક્તેન સમ્બન્ધ. । સર્વદા જીવાભિરક્ષણરૂપસયમાનુપાલને સાવધાનતયા યતનઃ કાર્યઃ इत्यर्थः ।

અત્ર “જાણ સદ્વાણ નિઃશ્વતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા વિજહિતા વિસોત્તિયં પુન્વસજોગ” इत्यनेन શ્રદ્ધાયા આરાધ્યત્વે જિનાજ્ઞાયાઃ સદ્ધાયાત્ શ્રદ્ધાયા ધર્મત્વ સિદ્ધમ્ ।

શ્રદ્ધાદૃઢીકરણમપિ ચ ધર્મસ્તદર્થ “પણયા વીરા મહાવીરિ” इति भगवदुपदेशस्य सद्भावात् ।

“લોગ ચ આણાણ અભિસમેન્ચા” इत्यनेनाज्ञायाः पदकायजीवतत्त्वज्ञान-हेतुत्वेन वर्णनात् तत्त्वज्ञानस्य धर्मत्वम् ।

મો પ્રકાર સે જીવો કો જિસસે મય નહીં હોતા હૈં વહ અકુતોમય-સયમ હૈં ભાવ હસકા યહી હૈં કિ આત્મ કલ્યાણ કે ઇચ્છુક મુનિયોં કો જીવોં કે સરક્ષણ રૂપ સયમ કો આરાધના કરને મેં સાવધાનતા પૂર્વક પ્રયતનશીલ રહના ચાહિયે । યહા “જાણ સદ્વાણ નિઃશ્વતે તમેવમણુપા-લિજ્ઞા, વિજહિતા વિસોત્તિય પુન્વસજોગ” હસ સૂત્રાશ સે યહ વાત સમજાઈ ગઈ હૈં કિ શ્રદ્ધા કો આરાધના મેં જિનેન્દ્ર કો આજ્ઞા કા સદ્ભાવ હૈં અનઃ વહા ધર્મ હૈં । અપિ ચ શ્રદ્ધા કો દૃઢતા કરના યહ મો ધર્મ હૈં । હસી નિમિત્ત “પણયા વીરા મહાવીરિ” યહ ભગવાન કા ઉપદેશ હૈં ।

“લોગ ચ આણાણ અભિસમેન્ચા” હસ સૂત્રાશ સે યહ પ્રકટ હોતા હૈં કિ જન જિનેન્દ્ર કો આજ્ઞા પદ્ કાધિક જીવોં કે વાસ્તવિક જ્ઞાન હોને મેં હેતુરૂપ સે વર્ણિત દુઈ હૈં તો હસ સ્થિતિ મેં તત્ત્વજ્ઞાન ધર્મ હૈં ।

છે મતલબ એ છે કે આત્મકલ્યાણ ઇચ્છનારા મુનિઓને જીવોની રક્ષા રૂપ સયમની આગધના કરવામા સાવધાન થઈને પ્રયતન કરતા રહેવું જોઈએ અહીં “જાણ સદ્વાણ નિઃશ્વતે તમેવમણુપાલિજ્ઞા, વિજહિતા વિસોત્તિય પુન્વસજોગ” આ સૂત્રાશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે કે શ્રદ્ધાની આરાધનામા જીનેન્દ્રની આજ્ઞાને મહાભાવ છે એટલા માટે તેજ ધર્મ છે અને શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવી તે પણ ધર્મ છે આ નિમિત્તે જ “પણયા વીરા મહાવીરિ” આ ભગવાનનો ઉપદેશ છે

“લોગ ચ આણાણ અભિસમેન્ચા” આ સૂત્રાશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે બ્યારે જીનેન્દ્રની આજ્ઞા પદ્કાધિક જીવો વિષે વાસ્તવિક જ્ઞાન કરાવવા માટે જ કરવામા આવી છે ત્યારે આવી પરિસ્થિતિમા તત્ત્વજ્ઞાન ધર્મ છે.

પરિસ્ફુરતિ, તદ્વિપયે વિશેષજ્ઞાનાભાગાત્, તથાપિ ભગવદાજ્ઞયા શ્રદ્ધા નિતરાં વિધેયેત્યાશયેનાદ—“લોગ ચ આણાઞ અભિસમેચા અકુતોભય” ઇતિ ।

“લોગ” લોકમ્ અત્ર લોકશબ્દેન પ્રકરણચાદકાય લોક એવ ગૃણ્ણતે, તમપ્રકાયલોક, ચ શબ્દેન અન્યાથાપ્રમાયાશ્રિતાન્ જીવાન્ “આણાઞ” આજ્ઞયા તીર્થકર વચ્ચેન “અભિસમેચા” અભિસમેત્ય આમિમુગ્ધ્યેન સમ્યગ્જ્ઞાત્યા, અપ્રકાયાદયો જીવા સન્તીત્યેસમયુ યેત્યર્થ, “અકુતોભય” નાસ્તિ કુતશ્ચિત્

સમજ્ઞાનેકે લિયે સૂત્રકાર કહતે કે કિ હે શિષ્ય ! તુમ્હારી બુદ્ધિ અપ્રકા યિક આદિ જીવોકી શ્રદ્ધા કરનેમેં ઉન વિષયક વિશેષજ્ઞાનકે અભાવસે યદિ સમર્થ નહીં હૈ, તૌ ખી ભગવાન્ કી આજ્ઞા સે તુમ્હેં ઉનકે વિષય મેં અપની શ્રદ્ધા કો દૂષિત નહીં હોને દેના ચાહિયે—અર્થાત્ ભગવાન કી આજ્ઞા પ્રમાણ માનકર તુમ્હેં ઉનકે વિષય મેં અપની અતિશય શ્રદ્ધા જાગ્રત કરની ચાહિયે । સૂત્રકાર હસી અમિપ્રાય સે કહતે હૈ કિ “લોગ ચ આણાઞ અભિસમેચા અકુતોભય” ઇતિ । અપ્રકાય રૂપ લોક કો તથા “ચ” શબ્દ સે અન્ય અપ્રકાય કે અશ્રિત જીવોં કો તીર્થકર પ્રભુ કી આજ્ઞા સે અચ્છી તરહ જાનકર ઉનકી આજ્ઞાનુસાર ઉનકા અસ્તિત્વ માનકર આત્મકલ્યાણ કે અભિલાષી મુનિયોં કો સયમ કા પાલન કરના ચાહિયે । સૂત્રસ્થલોક શબ્દ યહા પ્રકરણ કે વશ સે અપ્રકાય કા ઘોષક હૈ । “ચ” શબ્દ સે તદાશ્રિત અન્ય જીવોં કા ગ્રહણ હુઆ હૈ । “અકુતોભય” શબ્દ કા અર્થ સયમ હૈ કહી સે ખી કિસી

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય ! તમારી બુદ્ધિ અપ્રકાયિક વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામા તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે જો સમર્થ નથી તો પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને મદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રત્યે પોતાની વધારેમા વધારે શ્રદ્ધા જાગ્રત કરવી જોઈએ સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે “લોગ ચ આણાઞ અભિસમેચા અકુતોભય” ઇતિ । અપ્રકાય રૂપ લોકને તેમજ ‘ચ’ શબ્દથી બીજા અપ્રકાયાશ્રિત જીવોને તીર્થકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને તેમની આજ્ઞા મુજબ તેમનું આસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ધ્યેયનારા મુનિઓએ સયમનું પાલન કરવું જોઈએ સૂત્રમા આવેલો ‘લોક’ શબ્દ અહીં પ્રકરણ વશાત્ અપ્રકાયનો વાચક છે ‘ચ’ શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનું ગ્રહણ થયું છે ‘અકુતોભય’ શબ્દનો અર્થ સયમ છે કોઈ પણ જગ્યાએથી કોઈ પણ રીતે જીવોને જેનાથી ભય હોતો નથી તે

सर्वे पाणा, सर्वे भूया, सर्वे जीवा, सर्वे सत्ता न हतव्या न अज्जावेयव्या, न किलायव्या, न उद्देव्यव्या ।

एस धम्मे सुद्धे णितिण सासण, समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए ।

आर्हतधर्मएव श्रद्धेय इति बोधयितुं श्रीसुधर्मास्वामीप्राह—“ से वेमि ” इत्यादि । तीर्थं परै स्वस्वजिष्येभ्यो यत् सम्यक्त्वमुक्तं तदहं ब्रवीमि । यद्वा— ‘ से ’ इत्यस्य ‘ स ’ इतिच्छाया । येन मया भगवतः श्री वर्धमानरवामिनरतीथ-वरस्य सप्ताशे तद्वचनतरतस्त्वज्ञानं लब्धं, सोऽहं ब्रवीमि ।—भगदुक्तार्थमेव कथयामि, तस्मान्मम वाक्यं श्रद्धेयमितिभावः ।

पाणा, सर्वे भूया, सर्वे जीवा, सर्वे सत्ता न हतव्या, न अज्जावेयव्या, न परिघेत्तव्या, न परितावेयव्या न किलामेयव्या, न उद्देव्यव्या । एस धम्मे सुद्धे णितिण समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए ” (आ. सू० अ० ४ उ० १ सू० १) श्री सुधर्मा स्वामी इस सूत्र द्वारा जम्बूस्वामी को यह समझाते हैं कि अर्हतप्रभु द्वारा प्रतिपादित धर्म ही श्रद्धा करने योग्य हैं—वे इसमें कहते हैं कि तीर्थंकर देवो ने अपने २ शिष्यों के लिये जिस सम्यक्त्व का कथन किया है वही तत्त्व उन तीर्थंकर प्रभु के वचनो द्वारा श्रवण कर मैं तुम्हें समझाता हूँ अर्थात् मैं अपनी निजी कल्पना से इस विषय में कुछ भी न कह कर जो कुछ तुम्हें समझाऊँगा वह तीर्थंकर प्रभु की मान्यतानुसार ही समझाऊँगा अतः इस में सदेह के लिये थोड़ी सी भी जगह नहीं है—इसलिये इस मेरे कथन का मूल-स्रोत जय श्री तीर्थंकर प्रभु का उपदेशश्रवण है तब यह श्रद्धेय—श्रद्धा करने योग्य आवश्यक है भगवान् का यह आदेश है—कि जितने भी

पाणा, सर्वे भूया, सर्वे जीवा, सर्वे सत्ता न हतव्या, न अज्जावेयव्या, न परिघेत्तव्या, न परितावेयव्या, न किलामेयव्या, न उद्देव्यव्या । एस धम्मे सुद्धे णितिण समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए ” (आ. सू. अ. ४ उ. १ सू. १) श्री सुधर्मा स्वामी आ. सूत्र वडे श्री ज. भू. स्वामीने आ. प्रमाणे समज्जवे छे के अर्हत प्रभु वडे प्रतिपादित धर्म ज. श्रद्धेय छे, तेज्जो आ. सूत्रमा कडे छे के तीर्थंकर देवो जे पानपोताना जिष्यो माटे ज. सम्यक्त्वतु निरूपयुं कयुं छे ते ज. तत्त्व तीर्थंकर प्रभुना सुप्रती श्रवणुं कयुं जाइ छे तमने समज्जवी रह्यो छु जेट्ठे के छु पोतानी भेजे आमा उछिं पयुं उभेयां वगर तीर्थंकर प्रभुनी मान्यता सुजण ज. तमने समज्जवीण जेनी आमा उकाने माटे मडेज पयुं स्थान नथी आ प्रमाणे न्यारे मारा कथनने भूण स्रोत श्री तीर्थंकर प्रभुनु उपदेश छे तारे ते श्रद्धेय ज. छे भगवाननी आ प्रमाणे आसा छे के

‘અકુતોભય’ इत्यस्य—“अणुपालिज्जा” इत्यनेनान्यथाद् अकुतोभय-सयमम् अनुपालयेदित्यपि भगवदाक्षैर, तथा च सयमस्याऽऽराध्यतया विमानात् सयमस्य धर्मत्वं बोध्यम् ।

अपर च—उत्तराध्ययनसूत्रे—“धम्माण कासवो मुह” इत्युक्तम् “धम्माण” धर्माणां श्रुतधर्माणां चारित्र्यमाणां च “कासवो” काश्यपः काश्यपगोत्रीयः श्रीमहावीरवर्धमानस्वामी “मुह” मुख उक्ता उच्यते ।

अहिंसादौ खलु भगवतोऽर्हत आह्वा उच्यते, पश्यागमेषु । यथा—आचाराङ्गसूत्रे—

“से वेमि—जे य अतीता, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमिस्सा अरहता भगवतो, ते सन्वे वि एवमाइस्सवति एव भासति एव पण्णवेति एव परुवेति—

‘अकुतोभय’ इस पद का “अणुपालिज्जा” इस क्रियापद के साथ अन्वय करने से यह अर्थ होता है कि अकुतोभयरूप सयम का पालन करना चाहिये, यह भी जब भगवान को आज्ञा ही है तो इससे यह जान स्पष्ट हो जाती है कि भगवान को आज्ञा से सयम आराधन करने लायक होने से धर्म रूप है । अपर च—उत्तराध्ययन सूत्र में “धम्माण कासवो मुह” यह कहा है इसका भाव यह है कि श्रुत एवं चारित्र्य धर्मों के मुख-वक्ता-काश्यप गोत्रीय श्री महावीर वर्धमान स्वामी हैं । देखो उन्हो ने आगमों में अहिंसादिक महावतों के पालने का मुमुक्षुओं= मोक्षाभिलाषियों के लिये इस प्रकार आज्ञा प्रदान की है “से वेमि—जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहता भगवतो ते सन्वे वि एवमाइस्सवति एव भासति एव पण्णवेति एव परुवेति” सन्वे

‘अकुतोभय’ આ પદનો ‘અણુપાલિજ્જા’ આ ક્રિયાપદની સાથે અન્વય કરવાથી આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે કે અકુતોભય રૂપ સયમનું પાલન કરવું જોઈએ આ પશુ ભગવાનની જ આજ્ઞા છે તો જોનાથી આ વાત સ્પષ્ટ થઈ જાય છે કે ભગવાનની આજ્ઞાથી ‘સયમ’ આરાધવા યોગ્ય હોવાથી ધર્મરૂપ છે અને વળી ‘ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર’ માં “ધમ્માણ કાસવો મુહ” આ પ્રમાણેના ઉલ્લેખ છે જોનો અર્થ જોમ થાય છે કે શ્રુત અને ચારિત્ર ધર્મોના મુખ્ય-વક્તા-કાશ્યપ ગોત્રીય શ્રી મહાવીર વર્ધમાન સ્વામી છે તેઓશ્રીએ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોના પાલન કરનારા મોક્ષ ઇચ્છનારા લોકોને માટે આગ-જોમા આ જાતની આજ્ઞા કરી છે કે —

“સે વેમિ—જે ય અતીતા જે ય પડુપ્પન્ના જે ય આગમિસ્સા અરહતા ભગવંતો છે સન્વે વિ એવમાઈસ્સવતિ એવ ભાસતિ એવ પણ્ણવેતિ એવ સન્વે

તયોરપિ ગ્રહણમ્, તથા ચ-‘ એમાચલ્યુ, એમાલ્યાસ્યન્તિ ’ ઇત્યાપિ યોજની-
યમ્ । એં સર્વાસુ ક્રિયાસુ યોજનીયમ્ । તથા-એવ “ માસન્તિ ” માપન્તે=સુર-
નરપરિપદિ સર્વજીવાના સ્વસ્વમાપાપરિણામિન્યાડર્ધમાગધ્યા માપયા દ્રુવન્તિ ।
તથા-એવ “ પળ્લવેતિ ” પ્રજ્ઞાપયતિ=હેતુદૃષ્ટાન્તાદિના પ્રકર્ષેણ યોધયન્તિ । તથા-
એવ ‘ પરુષેતિ ’ પ્રરુપયન્તિ=તત્તદ્વેદ પ્રદર્શ્ય પ્રકર્ષેણ નિર્ણયન્તિ ।

નનુ સર્વેડપ્યર્હન્તો ભગવન્તઃ-ક્રિમાલ્યાન્તીત્યાદિજિજ્ઞાસાયમાહ-‘ સન્વે-
પાળા ’ ઇત્યાદિ । સર્વે=નિરવશેષાઃ, પ્રાણાઃ=પ્રાણિનઃ, ધૃતિવ્યાદયઃ સ્થાવરા

કર પરિગ્રહ રૂપ સે સગ્રહ કરને યોગ્ય, અન્ન, પાન આદિ કે નિરોધ એ
ગર્માસર્દો આદિમેં રાલને સે કમી મી પીઢા પહુંચાને યોગ્ય ઓર વિષપ્ર
દાન એ શસ્ત્ર કે આગ્રાત સે વિનાશ કરને યોગ્ય નહી હું ।

સૂત્ર મેં “ આદિક્ષતિ-આલ્યાન્તિ ” યહ વર્તમાનકાલિક-ક્રિયા
પદ અતીત ઓર અનાગતકાલિક ક્રિયાપદ કા ઉપલક્ષક હૈ । અતઃ
હસ સે યહ અર્થ પ્રતીત હોતા હૈ કિ ડન તીર્થકર પ્રભુઓ ને વર્તમાન
મેં જૈસા કહા હૈ વૈસા હી ડન્હોં ને યા અન્ય ભૂત કાલિક તીર્થકરોં
ને ભૂત કાલ મેં મી કહા હૈ એ આગામી કાલમે મી વૈ વૈસા હી કહેંગે ।
હસી પ્રકાર “ માસન્તિ, પળ્લવેતિ ” ઇત્યાદિ ક્રિયાપદો કે સાથ મી
અતીત ઓર અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોકા સબધ નર લેના ઑલિયે । હસ
કથન સે સૂત્રકાર ને ડનકે કથન મેં પરસ્પર મેં વિરુદ્ધ અર્થકી પ્રરૂપણા
કા અભાવ પ્રદર્શિત ક્રિયા હૈ જો કુહ ડન્હો ને કહા હૈ । વહ ભૂત,
ભવિષ્યત ઓર વર્તમાન કાલ મેં સે કિસી મી કાલ મેં કિસી મી

એલુ સમજાને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેના
નિરોધ અને ગર્મી, ઠડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય
અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા “ આદિક્ષતિ આલ્યાન્તિ ” આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત
તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના
અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે
કહ્યું છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તેા બીજા ભૂતકાલિક તીર્થકરોએ ભૂત-
કાળમા પણ કહ્યું છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ
રીતે “ માસન્તિ, પળ્લવેતિ ” વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અના-
ગત કાલિક ક્રિયાપદોના સબધ જોડવો જોઈએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના
કથનમા પરસ્પરમા વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાના અભાવ જતાવ્યો છે તેમણે જે

ભગવદુક્તાર્થમાદ-“ જે ય અતીતા ” ઇત્યાદિ । યે ચ અતીતાઃ=અતીતકાલિયાઃ, યે ચ ‘પદુપ્પન્ના’ પ્રત્યુત્પન્નાઃ=વર્તમાનકાલિકાઃ પશ્ચમાતેષુ પશ્ચેરવતેષુ પશ્ચમદ્વારિદેહેષુ વર્તમાનાઃ, યે ચ “ આગમિસ્મા ” આગામિનઃ=ભવિષ્યત્કાલભાવિનઃ, તે સર્વેઽપિ અર્હન્તો ભગવન્તઃ ૫૪=૩૬૫માણમયારેણ “ આશ્વસતિ ” આશ્વાન્તિ=પરમશ્રાવસરે વ્યયન્તિ । અત્ર વર્તમાનગ્રહણમુપલક્ષણં તેનાતીતાનાગ-

ભૂતકાલ મેં તીર્થકર હુજ હે, વર્તમાન કાલ મેં મી પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત તથા પાંચ મહાવિદેહ સમ્પન્થી જિતને મી તીર્થકર હે ઓર ભવિષ્યત કાલ મેં જો તીર્થકર હોમે ઉન મય ને જય ઉનસે કિમી ને પ્રશ્ન ક્રિયા, તો એક યહી ઉત્તર દિયા હે દેવ ઈવ મનુષ્યોં કી સમા મેં અપની સર્વભાષા મેં પરિણમિત હુઈ અર્ધમાગધીરૂપ દિવ્યધ્વનિ દ્વારા ઉન્હો ને સમસ્ત જીવો કો યહી સમસાયા હે, ઓર હેતુ, દૃષ્ટાન્તો દ્વારા હસી વાત કી પુષ્ટિ કી હે । વક્તવ્ય વિષય કે ભેદ ઓર પ્રભેદોં કો પ્રકટ કરતે હુજ ઉન્હોં ને અચ્છી તરહ સે યહી પ્રરૂપણા કી હે કિ સમસ્ત પ્રાણી પૃથિવી આદિક એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોં સે લેકર દ્વીન્દ્રિયાદિક પચેન્દ્રિય જીવ પર્યન્ત ઘસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગામરૂપ સમસ્ત ભૂત, નરકગતિ, તિર્યચ્છગતિ, મનુષ્યગતિ ઈવ દેવગતિ કે સમસ્ત જીવ, ઈવ અપને દ્વારા કિયે ગયે કર્મોં કે ઉદય કે ફલ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ આદિ કા અનુભવ કરને વાલે સમસ્ત સત્ત્વ વળ્ડ આદિ દ્વારા કર્મોં મી તાહન કરને યોગ્ય, ઘાત કરને યોગ્ય, યે મેરે આધીન હેં એમા લ્યાલ

ભૂતગામમા જેટલા તીર્થ કર થયા છે, વર્તમાનગામમા પણ પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત તથા પાંચ મહાવિદેહ સમ્પન્થી જેટલા તીર્થ કરે છે અને ભવિષ્યગામમા જેટલા તીર્થ કરે થશે તે બધામાથી ન્યારે કોઈએ પ્રશ્ન કયો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની મલામા પોતાની સર્વ ભાષામા પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યધ્વનિમા તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાન્તો વડે આ વાતનુ જ સમર્થન કર્યું છે વક્તવ્ય વિષયનો ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતા તેઓએ સરમ રીતે એજ પ્રશ્નજવા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથિવ વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માંડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પચેન્દ્રિય જીવ સુધીના ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ તિર્યચ્છ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામા આવેલા કર્મોના ઉદયના ફળ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્ત્વો હડ જે કોઈ પણ વખત તાહન કરવા યોગ્ય કે ઘાત યોગ્ય, કે એઓ /

તયોરપિ ગ્રહણમ્, તથા ચ-‘ એમાચચ્ચુ, એમાચ્યાસ્યન્તિ ’ ઇત્યાપિ યોજનો-
યમ્ । એવં સર્વામ્ ક્રિયામ્ યોજનોયમ્ । તથા-એવ “ માસન્તિ ” માપન્તે=સુર-
નરપરિપદિ સર્વજીવાના સ્વસ્વભાપારિણામિન્યાઽર્ધમાગમ્યા માપયા દ્રુવન્તિ ।
તથા-એવ “ પળ્લવેતિ ” મજ્ઞાપયન્તિ=હેતુદૃષ્ટાન્તાદિના પ્રકરેણ ગ્રોધયન્તિ । તથા-
એવ ‘ પરુવેતિ ’ પ્રરુપયન્તિ=તત્તદ્વેદ પ્રદર્શ્ય પ્રરુપેણ નિર્ણયન્તિ ।

નનુ સર્વેઽપ્યર્હન્તો ભગવન્તઃ-કિમાચ્યાન્તીત્યાદિજિજ્ઞાસાયમાહ-‘ સર્વે-
પાણા ’ ઇત્યાદિ । સર્વે=નિસ્વશેષાઃ, પ્રાણાઃ=પ્રાણિનઃ, ધૃતિવ્યાદયઃ સ્થાવરા

કર પરિગ્રહ રૂપ સે સગ્રહ કરને યોગ્ય, અન્ન, પાન આદિ કે નિરોધ એવ
ગર્મીસર્દી આદિમેં રલ્લને સે કમ્બી મ્બી પીઢા પહુંચાને યોગ્ય ઓર વિપ્ર-
દાન એવ શસ્ત્ર કે આગ્રાત સે વિનાશ કરને યોગ્ય નહી હું ।

સૂત્ર મેં “ આદિસ્ત્વતિ-આચ્યાન્તિ ” યહ વર્તમાનકાલિક-ક્રિયા
પદ અતીત ઓર અનાગતકાલિક ક્રિયાપદ કા ઉપલક્ષક હૈ । અતઃ
હસ સે યહ અર્થ પ્રતીત હોતા હૈ કિ ડન તીર્થકર પ્રમુખો ને વર્તમાન
મેં જૈસા કહા હૈ વૈસા હી ડન્હોં ને યા અન્ય ભૂત કાલિક તીર્થકરોં
ને ભૂત કાલ મેં મ્બી કહા હૈ એવ આગામી કાલમે મ્બી વે વૈસા હી કહેંગે ।
હસી પ્રકાર “ માસન્તિ, પળ્લવેતિ ” ઇત્યાદિ ક્રિયાપદોં કે સાથ મ્બી
અતીત ઓર અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોંકા સબધ રર લેના ચાહિયે । હસ
કથન સે સૂત્રકાર ને ડનકે કથન મેં પરસ્પર મેં વિરુદ્ધ અર્થકી પ્રરુપણા
કા અભાવ પ્રદર્શિત ક્રિયા હૈ જો કુછ ડન્હો ને કહા હૈ । વહ ભૂત,
ભવિષ્યત ઓર વર્તમાન કાલ મેં સે કિસી મ્બી કાલ મેં કિસી મ્બી

એણુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, ડે અન્ન, પાન વગેરેનો
નિરોધ અને ગર્મી, ઠંડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય
અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા “ આદિસ્ત્વતિ આચ્યાન્તિ ” આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત
તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના
અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થ કર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે
કહ્યું છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તો બીજા ભૂતકાલિક તીર્થ કરોએ ભૂત
કાળમા પણ કહ્યું છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ
રીતે “ માસન્તિ, પળ્લવેતિ ” વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અના-
ગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઈએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના
કથનમા પરસ્પરમા વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

ભગવદુક્તાર્થમાદ-“ જે ય અતીતા ” इत्यादि । ये च अतीताः=अतीतकालिणः, ये च ‘पद्मपक्षा’ प्रत्युत्पन्नाः=वर्तमानकालिकाः पञ्चभरतेषु पञ्चवत्तेषु पञ्चमहाविदेहेषु वर्तमानाः, ये च “ आगमिण्या ” आगाभिनः-भविष्यत्कालमाभिनः, ते सर्वेऽपि अर्हन्तो भगवन्तः ॥ ४ ॥=इदमणप्रकारेण “ आश्वखति ” आख्यान्ति=परमश्रावसरे कथयन्ति । अत्र वर्तमानप्रकरणमुपलक्षणं तेनातीतानाम-

ભૂતકાલ મેં તીર્થ કર હુજ હું, વર્તમાન કાલ મેં મી પાંચ ભરત, પાંચ એરઘત તથા પાંચ મહાવિદેહ સમ્પન્ધી જિતને મી તીર્થ કર હું ઓર ભવિષ્યત કાલ મેં જો તીર્થ કર હોંગે ઉન સવ ને જય ઉનસે કિસી ને પ્રશ્ન કિયા, તો એક યહી ઉત્તર દિયા હૈ દેવ યવ મનુષ્યોં કી સભા મેં અપની સર્વભાષા મેં પરિણમિત હુઈ અર્ધમાગધીરૂપ દિવ્યશ્વનિ દ્વારા ઉન્હો ને સમસ્ત જીવોં કો યહી સમસાયા હૈ, ઓર હેતુ, દૃષ્ટાન્તો દ્વારા હસી યાત કી પુષ્ટિ કી હૈ । વસ્તવ્ય વિષય કે ભેદ ઓર પ્રભેદોં કો પ્રકટ કરતે હુજ ઉન્હોં ને અચ્છી તરફ સે યહી પ્રરૂપણા કી હૈ કિ સમસ્ત પ્રાણી પૃથિવી આદિક એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોં સે લેકર દ્વીન્દ્રિયાદિક પચેન્દ્રિય જીવ પર્યન્ત બ્રહ્મ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામરૂપ સમસ્ત ભૂત, નરકગતિ, તિર્યચ્ચગતિ, મનુષ્યગતિ યવ દેવગતિ કે સમસ્ત જીવ, એવ અપને દ્વારા કિયે ગયે કર્મોં કે ઉદય કે ફલ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ આદિ ક્રા અનુભવ કરને વાલે સમસ્ત સત્ત્વ દળદ આદિ દ્વારા કર્મોં મી તાહન કરને યોગ્ય, યાત કરને યોગ્ય, યે મેરે આધીન હૈં એસા ક્યાલ

ભૂતકાળમા જેટલા તીર્થ કર થયા છે, વર્તમાનકાળમા પણ પાંચ ભરત, પાંચ એરઘત તથા પાંચ મહાવિદેહ સમ્પન્ધી જેટલા તીર્થ કરો છે અને ભવિષ્યકાળમા જેટલા તીર્થ કરો થશે તે બધામાથી જ્યારે કોઈએ પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની સભામા પોતાની સર્વ ભાષામા પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યશ્વનિમા તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાન્તો વડે આ વાતનુજ સમર્થન કર્યું છે વસ્તવ્ય વિષયનો ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતા તેઓએ સરસ રીતે એજ પ્રશ્નજવા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથ્વી વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માંડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પચેન્દ્રિય જીવ મુખીના ત્રમ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ તિર્યચ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામા આવેલા કર્મોના ઉત્થળા રૂપ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્ત્વો હક વડે કોઈ પણ વખત તાહન કરવા યોગ્ય કે યાત કરવા યોગ્ય, કે એઓ

તયોરપિ ગ્રહણમ્, તથા ચ-‘ એવમાચક્ષ્યુ, એવમાર્યાસ્યન્તિ ’ ઇત્યપિ યોજની-
યમ્ । એવ સર્વામ્ ક્રિયામ્ યોજનીયમ્ । તથા-એવ “ ભાસન્તિ ” ભાવન્તે=સુર-
નરપરિપદિ સર્વજીવાના સ્વસ્વભાષાપરિણામિન્યાઽર્ધમાગધ્યા ભાવયા બ્રુવન્તિ ।
તથા-એવ “ પળ્લવેતિ ” પ્રજ્ઞાપયન્તિ=હેતુદૃષ્ટાન્તાદિના પ્રકર્ષેણ ગોધયન્તિ । તથા-
એવ ‘ પરુવેતિ ’ પ્રરુપયન્તિ=તત્તદ્વેદ પ્રદર્શ્ય પ્રકર્ષેણ નિર્ણયન્તિ ।

નનુ સર્વેઽપ્યર્હન્તો ભગવન્તઃ-ક્રિમાહ્યાન્તીત્યાદિજિજ્ઞાસાયમાહ-‘ સન્વે-
પાણા ’ ઇત્યાદિ । સર્વે=નિસ્વશેષાઃ, પ્રાણાઃ=પ્રાણિનઃ, પૃથિવ્યાદયઃ સ્થાવરા

કર પરિગ્રહ રૂપ સે સગ્રહ કરને યોગ્ય, અન્ન, પાન આદિ કે નિરોધ એવ
ગર્મીસર્દી આદિમેં રચને સે કમી મી પીડા પહુંચાને યોગ્ય ઓર વિપ્ર
દાન એવ શસ્ત્ર કે આઘાત સે વિનાશ કરને યોગ્ય નહીં હૈં ।

સૂત્ર મેં “ આદ્યસ્તિ-આહ્યાન્તિ ” યહ વર્તમાનકાલિક-ક્રિયા
પદ અતીત ઓર અનાગતકાલિક ક્રિયાપદ કા ઉપલક્ષક હૈં । અતઃ
હસ સે યહ અર્થ પ્રતીત હોતા હૈં કિ ઉન તીર્થકર પ્રભુઓ ને વર્તમાન
મેં જૈસા કહા હૈં વૈસા હી ઉન્હોં ને યા અન્ય ભૂત કાલિક તીર્થકરોં
ને ભૂત કાલ મેં મી કહા હૈં એવ આગામી કાલમે મી વે વૈસા હી કહેંગે ।
હસી પ્રકાર “ ભાસન્તિ, પળ્લવેતિ ” ઇત્યાદિ ક્રિયાપદોં કે સાથ મી
અતીત ઓર અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોંકા સબધ રૂર લેના ચાહિયે । હસ
કથન સે સૂત્રકાર ને ઉનકે કથન મેં પરસ્પર મેં વિરુદ્ધ અર્થકી પ્રરૂપણા
કા અભાવ પ્રદર્શિત કિયા હૈં જો કુછ ઉન્હો ને કહા હૈં । વહ ભૂત,
ભવિષ્યત ઓર વર્તમાન કાલ મેં સે કિસી મી કાલ મેં કિસી મી

એવુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેના
નિરોધ અને ગર્મી, ઠડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય
અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા “ આદ્યસ્તિ આર્યાન્તિ ” આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત
તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી જોના વડે આ બાતના
અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે
કહ્યું છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તેા બીજા ભૂતકાલિક તીર્થકરોએ ભૂત
કાળમા પણ કહ્યું છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ
રીતે “ ભાસન્તિ, પળ્લવેતિ ” વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અના
ગત કાલિક ક્રિયાપદોના સબધ જોડવો જોઈએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના
કથનમા પરસ્પરમા વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

દીપ્તિયાદિપદ્મોદ્ગદ્યપર્ય-તાદ્રસાથેત્યર્થઃ, દીપ્તિયાદિમાણાના યથાસમ્ભવધાર
ણાત્ તેષુ પ્રાણિત્વમસ્તીતિ ભાવઃ । તથા-સર્વે ' યૂયા ' યૂતાઃ=ભવન્તિ ભવિષ્ય-
ન્ત્યભૂત્તિતિ યૂતાઃ-ચતુર્દશભૂતગ્રામરૂપાઃ, તથા-સર્વે જીવા=જીવન્તિ જીવિ-
ષ્યત્યજીવિષુ રિતિજીવાઃ-નારકતિર્યદ્મનુષ્યદેવાઃ, તથા-સર્વે "સત્તા" સત્તાઃ=

પ્રમાણ દ્વારા ઘાથિત નહીં હો સકને સે પૂર્વાપર વિરોધ રહિત હી કહા
હે । "પ્રાણ" શબ્દ સે સૂત્રકાર ને ત્રસ ઓર સ્થાવર પ્રણિયો કા
મરણ કિયા હૈ । ય્યો કિ ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણો મેં સે ઇનકો અપને ૨
ધોગ્ય પ્રાણો કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ । અતઃ ઇનકે સદ્ભાવ સે હી
યે પ્રાણી કહે જાતે હે । " ભવન્તિ, ભવિષ્યન્તિ, અનૂવન્ "યહ
ભૂત શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હૈ । ઇસકા ભાવ યહી હૈ કિ જો વર્તમાન
મેં સત્તા વિશિષ્ટ હૈ, આગામી કાલ મેં સત્તા વિશિષ્ટ રહેંગે ણવ ભૂત-
કાલ મેં બી જો સત્તા વિશિષ્ટ થે । ઇસ વ્યુત્પત્તિ સે સૂત્રકાર ને યહ
પ્રદર્શિત કિયા હૈ કિ પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કિસી બી કાલ મેં ઉત્પાદ
ઓર વ્યય ધર્મ વિશિષ્ટ હોતે હુગ બી અપની ૨ સત્તા સે રહિત નહીં
હોતે હે । ય્યો કિ દ્રવ્ય કા " ઉત્પાદવ્યયધૌવ્ય સત્ " ઉત્પાદ, વ્યય
ઓર ધૌવ્ય યે સ્વભાવ હૈ । ઇસસે યહ વાત નિશ્ચિત કોટિ મેં આતા હૈ
કિ કિસી બી નવીન પદાર્થ કા ઉત્પાદ નહીં હોતા હૈ ઓર ન સત્
પદાર્થ કા વિનાશ હી હોતા હૈ । " સતો વિનાશઃ અસતશ્ચોત્પાદો ન "
" જીવન્તિ, જીવિષ્યન્તિ, અજીવિષુ " યહ જીવ શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હૈ ।

કહ કહુ છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાથી કોઈ પણ કાળમા ગમે
તે પ્રમાણ દ્વારા ઘાથિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહુ છે,
" પ્રાણ " શબ્દ વડે સૂત્રકારે ત્રસ અને સ્થાવર પ્રાણીઓનું ગ્રહણ કહુ છે
કેમકે ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણીમાથી એમનામા પોતપોતાને યોગ્ય પ્રાણોનો સદ્ભાવ
મળે છે એથી એમના સદ્ભાવથી જ તેઓ પ્રાણી કહેવાય છે " ભવન્તિ,
ભવિષ્યન્તિ, અનૂવન્ " આ ભૂત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે
છે કે વર્તમાનકાળમા જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ છે, તેઓ ભવિષ્યકાળમા સત્તા
વિશિષ્ટ રહેશે અને ભૂતકાળમા પણ જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ હતા આ વ્યુત્પત્તિ
વડે સૂત્રકારે એ બતાવ્યું છે કે દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ કોઈ પણ કાળમા
જેને વ્યયધર્મ વિશિષ્ટ હોવા છતાંયે પોતપોતાની સત્તાથી રહિત હોતા
કે દ્રવ્યનો " ઉત્પાદવ્યયધૌવ્ય સત્ " ઉત્પાદ, વ્યય અને ધૌવ્ય
એથી એ વાત ચોક્કસ રીતે સ્પષ્ટ થાય છે કે કોઈ પણ નવીન
, થતો નથી અને સત્ પદાર્થનો વિનાશ પણ થતો નથી
અસતશ્ચોત્પાદો ન " " જીવન્તિ, જીવિષ્યન્તિ, અજીવિષુ " આ

સ્વકૃતર્મજન્યમુલ્લેખાનુભવિનઃ । અત્ર સર્વપ્રાણિણુ પુન પુનર્દયાકરણાય પર્યાયશબ્દપ્રયોગઃ ।

‘ ન હત્ત્વ્વા ’ ન હન્ત્વ્વા: = દણ્ડાદિર્ભિન્ તાડયિત્વ્વા इत्यर्थ, “ ન અજ્ઞા-
વેય્વા ” નાનાપયિત્વ્વા: = ન પાતયિત્વ્વા इत्यर्थ; “ ન પરિવેત્ત્વા ” ન પરિ-
ગ્રહીત્વ્વા = હમે મમાયત્તા इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकृतव्या, “ ન પરિતા-

જો જીતે હે, જીવેંગે ઓર જિયે હૈ, ઇસ કથન સે સૂત્રકાર ને જીવ મેં
ત્રિકાલ મેં ભી જીવનત્વ ધર્મ કા અભાવ નહીં હોતા હૈ ત્હ પ્રદર્શિત
કિયા હૈ ચાહે જીવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાલા ભી હો તો ભી વ્હ જીવન
અવસ્થા સે રહિત નહીં હોતા હૈ ઇસસે વૃક્ષાદિકો મેં અચેતનતા માનને
વાલે બૌદ્ધ આદિકોં કા મન્તવ્ય સ્થિતિ હોતા હૈ ।

સૂત્ર મેં પ્રાણી, ભૂત, ઓર સત્ત્વ ઇન એકાર્થક પર્યાયવાચી શબ્દોં કા
જો સૂત્રકાર ને પ્રયોગ કિયા હૈ ઇનકા મુખ્ય પ્રયોજન “ સમસ્ત જીવોં મેં
વારવાર દયા કરની ચાહિયે ” હૈ ।

ત્હ વીતરાગપ્રભુ દ્વારા પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાતવિરમણરૂપ ધર્મશુદ્ધ
પાપાનુબન્ધ રહિત હે । ઇસ કથન સે સૂત્રકાર ને ઇસ વાત ની પુષ્ટિ કી
હૈ જો અવીતરાગ-શાન્ત્ય આદિ દ્વારા ધર્મરૂપ સે પ્રતિપાદિત હુઆ હૈ
તથા જિસે ઇન્હોંને ધર્મરૂપ સે સ્વીકાર કિયા હૈ વ્હ વાસ્તવિક ધર્મ નહીં
હૈ । કારણ કિ ઇનમેં હિંસાદિક દોષો કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ ઇનકે

एव शण्डनी व्युत्पत्ति छे जेओ एवे छे, एवमे अने एवम्वा छे आ कथन
वडे सूत्रकारे एवमा त्रिकाणमा पणु एवमत्व धर्मना अभाव थतो नथी आ
वात स्पष्ट करी छे लखे ते एव ओक धन्द्रिय अवस्थावाणो डोय छताओ ते
एवम अवस्थाधी रहित थतो नथी आ कथनथी वृक्ष वगेरेमा अचेतता
माननारा बौद्ध वगेरेना मतनु भउन थर्छ ज्ञाय छे

સૂત્રકારે સૂત્રમા જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્ત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય
વાચી શબ્દોના જે પ્રયોગ કર્યો છે તેનું ખાસ કારણ “ બધા જીવોમા વારવાર
સહય રહેવું જોઈએ ” તે જ છે

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ
પાપાનુબન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુષ્ટ કરી છે કે જે
અવીતરાગ-શાન્ત્ય વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપદિત થયો છે તેમજ તેમણે
જેને ધર્મ-રૂપથી સ્વીકાર્યો છે તે બેરબર ધર્મ નથી કેમકે તેમા હિંસા વગેરે
દોષોના સદ્ભાવ છે અસર્વજ તથા રાગચુક્ત લોકો દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને

દ્વીન્દ્રિયાદિપન્થેન્દ્રિયપર્ય-તાવસાથેત્યર્થઃ, ઈન્દ્રિયાદિમાણાનાં યથાસમ્પ્રધાર-
ણાત્ તેષુ પ્રાણિશ્વમસ્તીતિ માવઃ । તથા-સર્વે 'મૃયા' મૃતાઃ=મરન્તિ મરિવ્ય-
ન્ત્યમૃત્વનિતિ મૃતાઃ-ચરુદશમૃતગ્રામરૂપાઃ, તથા-સર્વે જીવા=જીવન્તિ જીવિ-
વ્યત્યજીવિષુ રિતિ જીવાઃ-નારકતિર્યદ્મનુવ્યવેશઃ, તથા-સર્વે "સત્તા" સત્તાઃ=

પ્રમાણ દ્વારા ગ્રાહિત નહીં હો સકને સે પૂર્વાપર વિરોધ રહિત હી કહા
હે । "પ્રાણ" શબ્દ સે સૂત્રકાર ને ત્રસ ઓર સ્થાવર પ્રાણિયો કા
ગ્રહણ કિયા હૈ । ક્યો કિ ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણો મેં સે इनको अपने २
યોગ્ય પ્રાણો કા સદ્વાચ પાયા જાતા હૈ । અતઃ इनके सद्वाच से ही
ये प्राणी कहे जाते हैं । "મરન્તિ, મરિવ્યન્તિ, અમૃત્વન્" યહ
મૃત શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હૈ । હસકા માવ યહી હૈ કિ જો વર્તમાન
મેં સત્તા વિશિષ્ટ હૈ, આગામી કાલ મેં સત્તા વિશિષ્ટ રહેંગે યવ મૃત-
કાલ મેં મી જો સત્તા વિશિષ્ટ યે । હસ વ્યુત્પત્તિ સે સૂત્રકાર ને યહ
પ્રદર્શિત કિયા હૈ કિ પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કિસી મી કાલ મેં ઉત્પાદ
ઓર વ્યય ધર્મ વિશિષ્ટ હોતે હુણ મી અપની ૦ સત્તા સે રહિત નહીં
હોતે હૈ । ક્યો કિ દ્રવ્ય કા "ઉત્પાદવ્યયધૌવ્ય સત્" ઉત્પાદ, વ્યય
ઓર ધૌવ્ય યે સ્વભાવ હૈ । હસસે યહ વાત નિશ્ચિત કોટિ મેં આતા હૈ
કિ કિસી મી નવીન પદાર્થ કા ઉત્પાદ નહીં હોતા હૈ ઓર ન સત્
પદાર્થ કા વિનાશ હી હોતા હૈ । "સતો વિનાશઃ અસતશ્ચોત્પાદો ન"
"જીવન્તિ, જીવિવ્યન્તિ, અજીવિષુ" યહ જીવ શબ્દ કી વ્યુત્પત્તિ હૈ ।

કહ કહુ છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાથી કોઈ પણ કાળમા ગમે
તે પ્રમાણ દ્વારા ગ્રાહિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહુ છે,
"પ્રાણ" શબ્દ વડે સૂત્રકારે ત્રસ અને સ્થાવર પ્રાણીઓનુ ગ્રહણ કર્યું છે
કેમકે ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણીમાથી એમનામા પોતપોતાને યોગ્ય પ્રાણોને સદ્ભાવ
મળે છે એથી એમના સદ્ભાવથી જ તેઓ પ્રાણી કહેવાય છે "મરન્તિ,
મરિવ્યન્તિ, અમૃત્વન્" આ ભૂત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે
છે કે વર્તમાનકાળમા એઓ સત્તા વિશિષ્ટ છે, તેઓ ભવિષ્યકાળમા સત્તા
વિશિષ્ટ રહેશે અને ભૂતકાળમા પણ એઓ સત્તા વિશિષ્ટ હતા આ વ્યુત્પત્તિ
વડે સૂત્રકારે એ બતાવ્યું છે કે દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થે કોઈ પણ કાળમા
ઉત્પાદ અને વ્યયધર્મ વિશિષ્ટ હોવા છતાંયે પોતપોતાની સત્તાથી રહિત હોતા
નથી કેમકે દ્રવ્યનો "ઉત્પાદવ્યયધૌવ્ય સત્" ઉત્પાદ, વ્યય અને ધૌવ્ય
સ્વભાવ છે એથી એ વાત ચોક્કસ ગીતે સ્પષ્ટ થાય છે કે કોઈ પણ નવીન
પદાર્થનો ઉત્પાદ થતો નથી અને સત્ પદાર્થનો વિનાશ પણ નથી
"સતો વિનાશઃ અસતશ્ચોત્પાદો ન" "જીવન્તિ, જીવિવ્યન્તિ, અજીવિષુ" આ

स्वकृतकर्मजन्यसुखदुःसानुभविनः । अत्र सर्वाणिषु पुन पुनर्दयाकरणाय पर्यायशब्दप्रयोगः ।

‘न हतव्या’ न हन्तव्याः=दण्डादिभिर्न ताडयितव्या इत्यर्थः, “न अज्जा-वेयव्या” नातापयितव्याः=न प्रातपितव्या इत्यर्थः, “न परिवेत्तव्या” न परि-ग्रहीतव्या=इमे ममायत्ता इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकृतव्या, “न परिता-

जो जीते हं, जीवेंगे और जिये हैं, इस कथन से सूत्रकार ने जीव में त्रिकाल में भी जीवनत्व वर्म का अभाव नहीं होता है यह प्रदर्शित किया है चाहे जीव एक इन्द्रिय अवस्थावाला भी हो तो भी वह जीवन अवस्था से रहित नहीं होता है इससे वृक्षादिकों में अचेतनता मानने वाले बौद्ध आदिकों का मन्तव्य खंडित होता है ।

सूत्र में प्राणी, भूत, और सत्त्व इन एकार्थक पर्यायवाची शब्दों का जो सूत्रकार ने प्रयोग किया है उनका मुख्य प्रयोजन “समस्त जीवों में बारबार दया करनी चाहिये” है ।

यह वीतरागप्रभु द्वारा प्रतिपादित प्राणातिपातविरमणरूप धर्मशुद्ध पापानुन्ध रहित है । इस कथन से सूत्रकार ने इस बात की पुष्टि की है जो अवीतराग-शास्त्र आदि द्वारा धर्मरूप से प्रतिपादित हुआ है तथा जिसे उन्होंने धर्मरूप से स्वीकार किया है वह वास्तविक धर्म नहीं है । कारण कि इनमें हिंसादिक दोषों का सङ्काव पाया जाता है इनके

एव शब्दानी व्युत्पत्ति છે જેઓ એવે છે, એવગે અને એવ્યા છે આ કથન વડે સૂત્રકારે એવમા ત્રિકાળમા પણ એવનત્વ ધર્મને અભાવ થતો નથી આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે ભવે તે એવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાળો હોય છતાંએ તે એવન અવસ્થાથી રહિત થતો નથી આ કથનથી વૃક્ષ વગેરેમા અચેતના માનનારા બૌદ્ધ વગેરેના મતનુ ખડન થઈ જાય છે

સૂત્રકારે સૂત્રમા જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્ત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય વાચી શબ્દોને જે પ્રયોગ કર્યો છે તેનુ ખાસ કારણ “બધા એવોમા વારવાર સદય રહેવુ નોંધએ” તે જ છે

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ પાપાનુન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુષ્ટ કરી છે કે જે અવીતરાગ-શાસ્ત્ર વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપદિત થયો છે તેમજ તેમણે જેને ધર્મ-રૂપથી સ્વીકાર્યો છે તે ખરેખર ધર્મ નથી કેમકે તેમા હિંસા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ છે અસર્વજ તથા રાગયુક્ત હોકો દ્વારા પ્રતિપદિત હોવાને

વેચ્યા” ન પરિતાપયિતવ્યા = અન્નપાનાદ્યરોધનેન મીઠાપાતપાદી સ્થાપનેન ચ ન પીડનીયાઃ, “ ન કિંચમેચ્યા ” ન ક્ષામયિતવ્યાઃ = ન સ્વેદયિતવ્યાઃ = ન વિપ શસ્ત્રાદિના મારયિતવ્યાઃ ।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वार्हद्भगवत्प्ररूपितः, धर्मः=मर्ममाणिप्राणातिपातविरमण रूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थ । आर्हतमर्मोदन्पस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्वज्ञसरागोपदिष्टत्वेन द्विसाद्विदोपसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः । अत एव-एष नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चमु महाविदेहेषु

સદ્ભાવ કા કારણ ઉસમેં અસર્વજ્ઞ ઓર સરાગિયોં દ્વારા પ્રણીતતા હી હૈ પૂર્ણ જ્ઞાનીયો દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ હી શુદ્ધ હોના હૈ ઇસકા કારણ ઉનમેં રાગ દ્વેષ કા સર્વથા અભાવ હી હોતા હૈ । અસર્વજ્ઞ યા રાગદ્વેષકલુષિત-ચિત્તવાલોં દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ ઇસલિયે શુદ્ધ નહીં હોતા હૈ કિ વે એક તો ઉસ વિષય કે પૂર્ણ જ્ઞાતા નહીં હોતે, દૂસરી અપની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિ કો પુષ્ટ કરને કે લિયે ઉસકી અન્યથા બી પ્રરૂપણા કર દેતે હૈ । એસા ધર્મ શાશ્વતિક નિત્ય નહીં હોતા હૈ-ચ્યોં કિ એસા ધર્મકા વિશિષ્ટ જ્ઞાનિયોં-કેવલજ્ઞાનિયો દ્વારા જીવોં કા કલ્યાણ કી કામના સે નિરાકરણ કર દિયા જાતા હૈ । વીતરાગપ્રતિપાદિત ધર્મ હી અવિનાશી રહતા હૈ, ઓર ઉસીસે જીવોં કા સદા કલ્યાણ હોતા રહતા હૈ । ઇસમે અન્ય થાપ્રરૂપણાકે લિયે થોડી સી બી જગહ નહી મિલતી હૈ । પંચ મહાવિદેહ ક્ષેત્રોંમેં અવ બી ઇસ શુદ્ધ ધર્મકા સદ્ભાવ હૈ । ઇસી અપેક્ષા ઇસે સૂત્રકારને નિત્ય-અવિનાશી કહા હૈ । શાશ્વતગતિરૂપ મુક્તિ કા કારણ હોને સે

લીધે જ તેમા હિંસા વગેરે સદોષતા છે પૂર્ણજ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગે જ શુદ્ધ હોય છે કેમકે તેઓમા સપૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવ જ હોય છે અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગે શુદ્ધ એટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સપૂર્ણપણે બાજુતા નથી અને ઘીબુ તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુષ્ટ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રરૂપણા પણ કરી જોસે છે એવો ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનું વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવલજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઈને નિરાકરણ કરવામા આવે છે વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મ જ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનું કલ્યાણ થતુ રહે છે આમા અન્યથા પ્રરૂપણા માટે અવકાશ જ નથી અત્યારે પણ પંચવિદેહ ક્ષેત્રમા આ શુદ્ધ ધર્મનો સફળાવ છે આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથી જ સૂત્રકારે નિ, ૧ કહ્યો છે શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો હોવાથી આ ધર્મ

सद्भावात् । तथा-शाश्वतः=शाश्वतगतिकारणत्वात् । यद्वा-यतो नित्यस्तस्माच्छाश्वत इति । अयमेव धर्मः श्रद्धेयो ग्राह्यश्चेत्यत्र हेतु प्रदर्शयन् विशेषणान्तरमाह-समेत्य इत्यादि । लोक पट्ट जीपनिकाय दुःखदावानलान्तर्गतित, समेत्य=केवलज्ञानेन प्रत्यक्षतया विज्ञान, खेदज्ञैः=सर्वप्राणिदुःखाभिज्ञैस्तीर्थकरैः प्रवेदितः=आदिष्ट । 'प्रवेदित' इत्यनेन धर्मोऽयं मया न स्वमनीषया कल्पितः' इति च सुधर्मस्वामिना शिष्यमुद्दिष्य सूचितम् । अनुयोगद्वारे—

यह शाश्वत माना गया है अथवा हेतु हेतुमद्भाव से भी यों कह सकते हैं कि जिस कारण से यह नित्य है इसी कारण से यह शाश्वत माना गया है । अतः प्रत्येक मुमुक्षु जीवों द्वारा यह धर्म श्रद्धेय श्रद्धा करने योग्य एव ग्राह्य-आराधन करने योग्य है इस विषय में पूर्वोक्तरूप से सूत्रकार हेतु का कथन कर उस धर्म की प्ररूपणा करने के कारण का प्रदर्शन करते हुए "समेत्य लोक खेदज्ञैः प्रवेदितः" कहते हैं कि समस्त प्राणीयों के दुःखों के वेत्ता केवलज्ञानी प्रभु ने इस पट्टजीव निकायरूप लोक को प्रत्यक्षरूप से साक्षात् दुःखरूपी दावानल से जलता हुआ देखकर इस शुद्ध, शाश्वतिक धर्म का कथन किया है ।

भावार्थ—अनन्त सासारिक दुःखों से सतस्र समस्त ससारी जीवों को साक्षात् हस्तामलकवत् देखकर दुःखों से उनके उद्धार के निमित्त चोतराग केवलज्ञानियों ने ही इस धर्म की प्ररूपणा की है । मैं ने अपनी ओर से इसका कथन नहीं किया है । इस प्रकार श्री सुधर्मास्वामी अपने शिष्य जम्बूस्वामी को समझाते हैं ।

वामा आये। छे अथवा हेतु-हेतु भद्भावथी पणु ओम कडी शकाय छे के के कारणने लधने आ नित्य छे ते कारणथी न आ शाश्वत मानवामा आये। छे ओथी हरेठ मोक्षने ध्यनाना लवे वडे आ धर्म श्रद्धेय-श्रद्धा करवा येअ अने ग्राह्य आराधवा योग्य छे आ विषे सूत्रकार पूर्वोक्त इपे हेतुनु कथन करीने ते धर्मनी प्ररूपणा करता "समेत्य लोक खेदज्ञैः प्रवेदित" कडे छे के अधा प्राणीओना हु जेने जाणुनारा केवणज्ञानी प्रभुओ आ पदलव निकाय इप लोकेने प्रत्यक्ष इपमा साक्षात् हु अ इपी दावानलमा सणगता नेधने शुद्ध, शाश्वतिक धर्मनु कथन कयुं छे—

भावार्थ—ससारना अधा लवेने अनन्त सासारिक हु जोथी हुस्ता भलकवत् सतस्र नेधने तेमना उद्धार माटे चोतराग केवणज्ञानीओ ओ न आ धर्मनु निरूपण कयुं छे ओ चोतानी मेजे आ कथन कयुं नथी श्री सुधर्मास्वामी चोताना शिष्य न पू स्वामीने आ प्रभाषे समजवे छे

વેયઞ્ચા" ન પરિતાપયિતવ્યા =અન્નપાનાદયરોપનેન ધીષ્ણાતપાદૌ સ્થાપનેન ચ ન પીડનીયાઃ, " ન ક્રિયામેયઞ્ચા " ન ક્રામયિતવ્યાઃ=ન સેદયિતવ્યાઃ=ન વિપ શસ્ત્રાદિના મારયિતવ્યાઃ ।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वार्हद्भगवत्प्ररूपितः, धर्मः=गर्भमाणिप्राणातिपातविरमण रूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थ । आर्हततर्मादन्यस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्गनसरागोपदिष्टत्वेन द्विसाद्विदोपसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः । अत एव-एष नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चसु महाविदेहेषु

સદ્ભાવ કા કારણ ઉસમેં અસર્વજ્ઞ ઓર સરાગિયોં દ્વારા પ્રણીતતા હી હૈ પૂર્ણ જ્ઞાનીયો દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ હી શુદ્ધ હોતા હૈં ડસકા કારણ ઉનમેં રાગ દ્વેષ કા સર્વથા અભાવ હી હોતા હૈ । અસર્વજ્ઞ યા રાગદ્વેષકલુષિત-ચિત્તવાલોં દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ ડસલિપે શુદ્ધ નહીં હોતા હૈં કિં વે એક તો ઉસ વિષય કે પૂર્ણ જ્ઞાતા નહીં હોતે, દૂસરી અપની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિ કો પુટ કરને કે લિપે ઉસકી અચયા ખી પ્રરૂપણા કર દેતે હૈં । એસા ધર્મ શાશ્વતિક નિત્ય નહીં હોતા હૈ-ચ્યોં કિં એસા ધર્મકા વિશિષ્ટ જ્ઞાનિયોં-કેવલજ્ઞાનિયો દ્વારા જીવોં કા કલ્યાણ કી કામના સે નિરાકરણ કર દિયા જાતા હૈ । વીતરાગપ્રતિપાદિત ધર્મ હી અવિનાશી રહતા હૈ, ઓર ઉમ્મીસે જીવોં કા સદા કલ્યાણ હોતા રહતા હૈ । ડસમે અન્ય ધાપ્રરૂપણાકે લિપે ધોડી સી ખી જગહ નહીં મિલતી હૈ । પચ મહાવિદેહ ક્ષેત્રોંમેં અવ ખી ડસ શુદ્ધ ધર્મકા સદ્ભાવ હૈ । ડસી અપેક્ષા ડસે સૂત્રકારને નિત્ય-અવિનાશી કહા હૈ । શાશ્વતગતિરૂપ મુક્તિ કા કારણ હોને સે

લીધે જ તેમા દિસા વગેરે સદોપતા છે પૂર્ણ જ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગે જ શુદ્ધ હોય છે કેમકે તેઓમા મપૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવ જ હોય છે અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગ શુદ્ધ એટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સપૂર્ણપણે બાજુતા નથી અને બીજી તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુટ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રરૂપણા પણ કરી બેસે છે એવા ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનું વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવલજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઈને નિરાકરણ કરવામા આવે છે વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મ જ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનું કલ્યાણ થતું રહે છે આમા અન્યથા પ્રરૂપણા માટે અવકાશ જ નથી અત્યારે પણ પચવિદેહ ક્ષેત્રમા આ શુદ્ધ ધર્મનો સંભાવ છે આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથી જ સૂત્રકાર નિર્ણય કરી છે શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો ક. હોવાથી આ ધર્મ

સદ્ગતિ । તથા-શાશ્વતઃ=શાશ્વતગતિકારણત્વાત્ । યદ્વા-યતો નિત્યસ્તસ્માચ્છા-
શ્વતઃ હતિ । અયમેવ ધર્મઃ શ્રદ્ધેયો ગ્રાહ્યથેત્યત્ર હેતુ પ્રદર્શયન્ વિશેષણાન્તરમાહ-
સમેત્યૈત્યાદિ । લોક પદ્ જીવનિકાય દુઃસ્વદાવાનલ્લાન્ત-પતિત, સમેત્ય=કેવ-
લજ્ઞાનેન પ્રત્યક્ષતયા વિજ્ઞાન, સ્વેદજ્ઞૈઃ=સર્વપ્રાણિદુઃસામિત્તૈસ્તીર્થકરૈઃ પ્રવેદિતઃ=
આદિષ્ટ । ' પ્રવેદિતઃ ' ઇત્યનેન ધર્મોઽય મયા ન સ્વમનીપયા કલ્પિતઃ ' ઇતિ ચ
સુધર્મસ્વામિના શિષ્યમુદિષ્ય સૂચિતમ્ । અનુયોગદ્વારે—

યદ્ શાશ્વત માના ગયા હૈ અથવા હેતુ હેતુમદ્વાવ સે મી યો કહ
સકતે હૈ કિ જિસ કારણ સે યદ નિત્ય હૈ હસી કારણ સે યદ શાશ્વત
માના ગયા હૈ । અતઃ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ જીવો દ્વારા યદ ધર્મ શ્રદ્ધેય શ્રદ્ધા
કરને યોગ્ય એવ ગ્રાહ્ય-આરાધન કરને યોગ્ય હૈ હસ વિષય મે પૂર્વોક્ત-
રૂપ સે સૂત્રકાર હેતુ કો કથન કર ઉસ ધર્મ કો પ્રરૂપણા કરને કે
કારણ કા પ્રદર્શન કરતે હુએ “ સમેત્ય લોક સ્વેદજ્ઞૈઃ પ્રવેદિત ” કહતે
હૈ કિ સમસ્ત પ્રાણીયો કે દુઃખો કે વેત્તા કેવલજ્ઞાની પ્રભુ ને હસ પદ્ જીવ
નિકાયરૂપ લોક કો પ્રત્યક્ષરૂપ સે સાક્ષાત્ દુઃસ્વરૂપી દાવાનલ સે જલતા
હુઆ દેખકર હસ શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મ કા કથન કિયા હૈ ।

ભાવાર્થ-અનન્ત સાસારિક દુઃખો સે સતત સમસ્ત સસારી જીવો
કો સાક્ષાત્ હસ્તામલકવત્ દેખકર દુઃખો સે ઉનકે ઉદ્ધાર કે નિમિત્ત
ચોતરાગ કેવલજ્ઞાનિયોને હી હસ ધર્મ કો પ્રરૂપણા કી હૈ । મેં ને અપની
ઓર સે હસકા કથન નહીં કિયા હૈ । હસ પ્રકાર શ્રી સુધર્માસ્વામી
અપને શિષ્ય જમ્બૂસ્વામી કો સમજાતે હૈ ।

વામા આચ્યો છે અથવા હેતુ-હેતુ મદ્લાવથી પણ એમ કહી શકાય છે કે
જે કારણને લઈને આ નિત્ય છે તે કારણથી જ આ શાશ્વત માનવામા આચ્યો
છે એથી દરેક મોક્ષને ઇચ્છનારા જીવો વડે આ ધર્મ શ્રદ્ધેય-શ્રદ્ધા કરવા
યોગ્ય અને ગ્રાહ્ય આરાધવા યોગ્ય છે આ વિષે સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત રૂપે હેતુનું
કથન કરીને તે ધર્મની પ્રરૂપણા કરતા “ સમેત્ય લોક સ્વેદજ્ઞૈઃ પ્રવેદિત ” કહે
છે કે બધા પ્રાણીઓના હૃદયોને જાણનારા કેવળજ્ઞાની પ્રભુએ આ પદ્ જીવ
નિકાય રૂપ લોકને પ્રત્યક્ષ રૂપમા સાક્ષાત્ હુએ રૂપી દાવાનળમા સળગતા
જોઈને શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મનું કથન કર્યું છે—

ભાવાર્થ—સાસારના બધા જીવોને અનન્ત સાસારિક દુઃખોથી હસ્તા
મલકવત્ સતત જોઈને તેમના ઉદ્ધાર માટે વીતરાગ કેવળજ્ઞાનીઓ એ જ આ
ધર્મનું નિરૂપણ કર્યું છે એ પોતાની મેળે આ કથન કર્યું નથી શ્રી સુધર્મા
સ્વામી પોતાના શિષ્ય જમ્બૂસ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે

“ જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ સવ્વજીવાણ ।
ન હણહ ન હણાવેહ ય, સમમણહ તેણ સો સમણો । ઈતિ ”

છાયા-યથા મમ ન પ્રિય દુઃખ, જાત્વા એમેવ સર્વજીવાનામ્ ।
ન ઇન્તિ ન ઘાતયન્તિ ચ સમમ્ અણતિ તેન સ સમણઃ ॥

ચ શબ્દાત્ ધનતથાન્યાન્ન સમણુજાનીત ઇત્યનેન પ્રકારેણ ‘સમમણતિ’ તિ સર્વજીવેષુ તુલ્ય વર્તેતે યતસ્તેનાસૌ શ્રમણ ઇતિ ગાથાર્થ ।

‘એસ ધમ્મે સુદ્ધે’ ઇત્યનેન આર્હત ધર્મસ્ય હિંસાદિ દોષાભાવાદ્ગમતા શુદ્ધ સ્વમુક્તમ્ । શુદ્ધધર્મરોધકત્વાન્ન ચ દ્વાદશાદ્ગચાઃ પ્રવચનત્વમાગમત્વ સર્વોત્કૃષ્ટત્વ ચ સિદ્ધયતિ । પ્રવચનસ્ય સ્વરૂપ માહાત્મ્ય ચાઽગમેયુ ભગવતાઽભિહિતમ્ ।

અનુયોગદ્વાર મેં-

જહ મમ ણ પિય દુ.ખ જાણિય એમેવ સવ્વજીવાણ ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય સમમણહ તેણ સો સમણો ॥ ઇતિ ।

જિસ પ્રકાર દુઃખ મુદ્ધે ઇષ્ટ નહીં હૈ, ઉસી તરહ વહ દુ.ખ કિસી મી સસારી જીવો કો ઇષ્ટ નહીં હૈ એસા સમજ્ઞ કર જો જીવો કી વિરાધના સ્વય નહી કરતા ઓર ન દૂસરોં સે કરવાતા હૈ તથા સમસ્ત જીવોં મેં તુલ્યતા કી ભાવના રખતા હૈ વહી શ્રમણ હૈ । શ્રમણ હોને મેં ચે પૂર્વોક્ત વાતે હેતુ-કારણ હૈં ।

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” ઇસ સૂત્રાશ સે શ્રી સુધર્માસ્વામી ને તીર્થંકર કથિન વર્મ મેં હિંસાદિક દોષોં કે અભાવ સે શુદ્ધતા કા કથન કિયા હૈ । ઇસ શુદ્ધ ધર્મ કા બોધક-બોધ કરાનેવાલી હોને સે હી દ્વાદશાગી મેં પ્રવચનતા, આગમતા એવ સર્વોત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ હોતી હૈ । ભગવાન ને

અનુયોગદ્વારમા-જહ મમ ણ પિય દુ.ખ જાણિય એમેવ સવ્વજીવાણ ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય સમમણહ તેણ સો સમણે ॥ ઇતિ ।

જેમ મને દુ.ખ ગમતું નથી તેમજ તે દુ.ખ સસારના કોઈ પણ જીવને ગમે જ નહિ આમ સમજીને જેઓ જીવોની વિરાધના પોતે કરતા નથી અને બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમા તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ રાખે છે તેઓ જ ‘શ્રમણ’ છે આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટેહેતુ કારણ છે

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” આ સૂત્રાશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ તીર્થંકર કથિત ધર્મમા હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનું કથન કર્યું છે આ શુદ્ધ ધર્મના બોધક-બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાગીમા પ્રવચનતા આગમતા સર્વોત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે ભગવાને આગમોર્મા પ્રવચનનું સ્વરૂપ

યથા ભગવતીસૂત્રે—

પવચન ભતે ! પવચન, પાવચણી પવચન ? । “ ગોયમા ! અરહા તાવ ણિયમા પાવચણી । પવચનં પુણ દુવાલસંગે ગણિપિહગે । ત જહા—આયારો જાવ દિટ્ઠિવાઓ । ઇતિ, (શ. ૨૦ ઉ. ૮)

ભતે ! હે મહન્ત ! “ પવચન ” પ્રવચન—કિ પ્રવચન, ઉત—“ પાવચણી ” પ્રવચની પ્રવચનમ્ ? । “ ગોયમા ! ” હે ગૌતમ ! ‘ અરહા ’ અર્હન્ ‘ તાવ ’ તાવત્ નિયમાત્પ્રવચની । પ્રવચન પુન ‘ દુવાલસંગે ’ દ્વાદશાંગી “ ગણિપિહગે ” ગણિપિટકમ્ । તદ્ યથા—“ આયારો જાવ દિટ્ઠિવાઓ ” આચારાઙ્ગાદિ યાવત્ દૃષ્ટિવાદઃ । ઇતિ,

પુનસ્તત્રૈવ—“ સે નૂણ ભતે ! તમેવ સચ્ચ નીસક જ જિણેહિં પવેહ્ય ? ।

પ્રવચન કા સ્વરૂપ ઔર ઉસકા પ્રભાવ—માહત્મ્ય આગમોં મેં કહા હૈ । જૈસે ભગવતી સૂત્ર મેં “ પવચન ભતે ! પવચન, પાવચણી પવચન ? ગોયમા ! અરહા તાવ ણિયમા પાવચણી । પવચન પુણ દુવાલસંગે ગણિપિહગે । ત જહા—આયારે જાવ દિટ્ઠિવાઓ । ઇતિ (શ. ૨૦ ઉ. ૮)

ભાવાર્થ—ગૌતમસ્વામી પૂછતે હૈં હે ભગવન્ ! પ્રવચન પ્રવચન હૈ—યા પ્રવચની પ્રવચન હૈ ? ઇસ અશ કા સમાધાન કરતે છુળ ભગવાન્ કહતે હૈં—હે ગૌતમ ! ગણિપિટક જો આચારાંગ સે લેકર દૃષ્ટિવાદ તક દ્વાદશાંગ આગમ હૈં વહ સમસ્ત પ્રવચન હૈં । ઇસ પ્રવચન કો અર્થત પ્રકટ કરનેવાલે શ્રી તીર્થકર પ્રભુ પ્રવચની હૈં । વસી ભગવતી સૂત્ર મેં ઔર મી યહ કહા હૈં કિ—“ સે નૂણ ભતે ! તમેવ સચ્ચ નિસક જ જિણેહિં પવેહ્ય ? હતા ગોયમા ! તમેવ સચ્ચ સે નૂણ ભતે ! એવ મણે

માહાત્મ્ય કહ્યો છે જેમકે ભગવતી સૂત્રમા “ પવચન ભતે ! પવચન પાવચણી પવચન ? ગોયમા ! અરહા તાવ ણિયમા પાવચણી । પવચન પુણ દુવાલસંગે ગણિપિહગે । ત જહા—આયારો જાવ દિટ્ઠિવાઓ । ઇતિ (શ. ૨૦ ઉ. ૮)

ભાવાર્થ—ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે હે ભગવન્ ! પ્રવચન પ્રવચન છે કે પ્રવચની પ્રવચન છે ? આ શકાનું સમાધાન કરતા ભગવાન કહે છે—કે હે ગૌતમ ! ગણિપિટક—કે જે આચારાંગથી માંડીને દૃષ્ટિવાદ સુધી દ્વાદશાંગ આગમ છે તે સમસ્ત પ્રવચન છે અર્થત આ પ્રવચનને પ્રકટ કરનારા શ્રી તીર્થકર પ્રભુ પ્રવચની છે તે ભગવતી સૂત્રમા જ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યું છે કે—(સે નૂણ ભતે તમેવ સચ્ચ નીસક જ જિણેહિં પવેહ્ય ? હતા ગોયમા ! તમેવ સચ્ચ સે નૂણ ભતે ! એવ મણે ઘારેમાણે એવ પકરેમાણે અણાપ આરાહ્ય

“ જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ મગ્ગજીવાણ ।
 ન હણહ ન હણાવેહ ય, સમમણહ તેણ સો સમણો । ઇતિ ”
 છાયા-યથા મમ ન પ્રિય દુઃખ, જાત્વા એમેવ સર્વજોયાનામ્ ।
 ન હન્તિ ન ઘાતયન્તિ ચ સમમ્ અણતિ તેન સ સમણઃ ॥

ચ શબ્દાત્ ઘનતથાયાન સમણુજાનીત્વ ઇત્યનેન પ્રકારેણ ‘સમમણતિ’ તિ સર્વજીવેષુ તુલ્ય યત્તે યતસ્તેનાસી શ્રમણ ઇતિ ગાયાર્થ ।

‘એસ ધમ્મે સુદ્ધે’ ઇત્યનેન આર્હત ધર્મસ્ય ઠિતાદિ ટોયામાગાદ્ગમતા શુદ્ધ ત્વમુક્તમ્ । શુદ્ધધર્મબોધકત્વાન્ન ચ દ્વાદશાદ્ગયાઃ પ્રવચનત્વમાગમત્વ સર્વોત્કૃષ્ટત્વ ચ સિધ્યતિ । પ્રવચનસ્ય સ્વરૂપ માહાત્મ્ય ચાડ્ગમેષુ ભગવતાઽભિહિતમ્ ।

અનુયોગદ્વાર મેં-

જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ સવ્વજીવાણ ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય સમમણહ તેણ સો સમણો ॥ ઇતિ ।

જિસ પ્રકાર દુઃખ સુદ્ધે દ્રષ્ટ નહીં હૈ, ડસી તરહ વહ દુઃખ કિસી ખી સસારી જીવો કો દ્રષ્ટ નહીં હૈ એસા સમજ કર જો જીવોં કી વિરાધના સ્વય નહી કરતા ઓર ન દૂસરોં સે કરવાતા હૈ તથા સમસ્ત જીવોં મેં તુલ્યતા કી ભાવના રાખતા હૈ વહી શ્રમણ હૈ । શ્રમણ હોને મેં યે પૂર્વોક્ત ઘાતે હેતુ-કારણ હૈ ।

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” હસ સૂત્રાશ સે શ્રી સુધર્માસ્વામી ને તીર્થંકર કથિન વર્મ મેં હિંસાદિક દોષો કે અભાવ સે શુદ્ધતા કા કથન કિયા હૈ । હસ શુદ્ધ ધર્મ કા બોધક-બોધ કરાનેવાલી હોને સે હી દ્વાદશાગી મેં પ્રવચનતા, આગમતા એવ સર્વોત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ હોતી હૈ । ભગવાન ને

અનુયોગદ્વારમા—જહ મમ ણ પિય દુઃખ જાણિય એમેવ સવ્વજીવાણ ।

ન હણહ ન હણાવેહ ય સમમણહ તેણ સો સમણે ॥ ઇતિ ।

જેમ મને દુઃખ ગમતું નથી તેમજ તે દુઃખ સસારના કોઈ પણ જીવને ગમે જ નહિ આમ સમજને જેઓ જીવોની વિરાધના પોતે કરતા નથી અને બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમા તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ રાખે છે તેઓ જ ‘શ્રમણ’ છે આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટેહેતુ કારણ છે

“ એસ ધમ્મે સુદ્ધે ” આ સૂત્રાશથી શ્રી સુધર્માસ્વામીએ તીર્થંકર કથિત ધર્મમા હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનું કથન કર્યું છે આ શુદ્ધ ધર્મના બોધક-બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાગીમા પ્રવચનતા આગમતા અને સર્વોત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે ભગવાને આગમોર્મા પ્રવચનનું સ્વરૂપ અને

છાયા—ઈદમેવ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સત્યમ્ અનુત્તર, કૈનલિક, પ્રતિપૂર્ણ, નૈયા-
યિક, સમૃદ્ધ, શલ્યકર્ત્તન, સિદ્ધિમાર્ગ, મુક્તિમાર્ગ, નિર્ણાણમાર્ગ, નિર્ણાણમાર્ગ,
અવિતથમ્, અમન્દિગ્ધમ્, અન સ્થિતા જીવાઃ સિદ્ધ્યન્તિ, બુદ્ધ્યન્તે, મુચ્યન્તે,
પરિનિર્વાન્તિ, સર્વે દુઃસ્વાનામન્ત કુર્વન્તિ ।

અન્યચ્ચ—ઈમં ચ ણ સન્વજગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુક-
હિય ” ઇતિ (પ્રશ્ન૦ સવર૦)

છાયા—‘ ઇદ ચ સ્વલુ સર્વજગજીવરક્ષણદયાર્થાય પ્રવચન ભગવતા
સુરુથિતમ્ ’ ઇતિ ।

ધર્મધ્યાનસ્યાઽઽજ્ઞાવિચયાદિ ભેદેન ચાતુર્વિધ્ય પ્રદર્શયતા ભગવતા—પ્રાધાન્યા-
દાજ્ઞાવિચયઃ પ્રાથમ્યેન પ્રોક્ત ।

ભાવાર્થ—ઈસ કા સ્પષ્ટ હૈ । ઇસમેં સૂત્રકાર ને મુખ્યરૂપ સે યંહી યાત
પ્રકટ કી હૈ કિં ઇસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગ મેં સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોંકા
વિનાશ કર સિદ્ધદશાસપન્ન હો જાતે હૈ । ઇસ અવસ્થાકી પ્રાપ્તિ હોના
હી જીવોં કે સમસ્ત દુઃખોં કા વિનાશ હૈ ।

અન્યચ્ચ—ઈમં ચ ણ સન્વજગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા
સુકહિય ” ઇતિ—(પ્રશ્ન સંવર૦)

ઈસ પ્રવચન કી પ્રરૂપણા કરને કા શ્રી તીર્થકર પ્રભુ કા યહી એક
ઉદ્દેશ રહા હૈ કિ સમસ્ત સસારીજન ઇસ પ્રવચન કે અભ્યાસ સે સર્વ
જગત કે જીવોં કી રક્ષા કરે ઓર ઉનકી દયા પાલે ।

ધ્યાન કા વર્ણન કરતે હુણ ભગવાન ને ઉસ ધ્યાન કે ૪ મેદ કહે
હૈ । ઉનમેં ધર્મધ્યાન કે આજ્ઞાવિચય આદિ જો ૪ પાયે પ્રકટ કિયે

આ ડથનનો લાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ
વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ
કર્મોના વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળ
વવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

અન્યચ્ચ—ઈમં ચ ણ સન્વ જગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુકહીય
” ઇતિ—(પ્રશ્ન૦ સવર૦)

શ્રી તીર્થ કર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો
છે કે બધા સસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વ જીવોની
રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા
ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-પ્રિયથ વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે

હતા ગોયમા ! તમેવ સત્ત્વં । સે નૂન ભતે ! એ મણે ધારેમાણે એ પરુરેમાણે આણાએ આરાહાએ મરહ ? । હતા ગોયમા ! ત ચેવ ” તિ ।

છાયા—અથ નૂન મદન્ત । તદેવ સત્ય નિશ્ચક્ક યજિનૈઃ પ્રવેદિતમ્ ? । હન્ત ગૌતમ ! તદેવ સત્યમ્ । અથ નૂન મદન્ત ? એવ મનસિ ધારયન એવ પ્રકુર્વન્ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ? હન્ત ગૌતમ ! તદેવ ” ઈતિ ।

આવશ્ય સૂત્રેઽપિ—“ઇળમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિ-
પુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ સહ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્ઞાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ
અવિતહમસદિદ્ધ । ઇત્થ ઠિયા જીવા સિદ્ધન્તિ ઘુજ્ઞન્તિ મુચ્ચન્તિ પરિણિવ્વાણતિ
સન્નવદુ સ્વાણમંત કરતિ ।

ધારેમાણે એવ પરુરેમાણે આણાએ આરાહાએ મરહ ! હતા ગોયમા ! ત
ચેવ ઇતિ ” હસ સૂત્ર કા ભાવાર્થ યહ હૈ કિ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ (મોક્ષાભિ-
લાષી) જન કો અપને હૃદય મેં હસ વાત કા પૂર્ણદૃઢ વિશ્વાસ રચના
ચાહિયે કિ જો જિનેન્દ્ર દેવ ને પ્રતિપાદિત કિયા હૈ વહી વાસ્તવિક તત્ત્વ
હૈ—વસમેં કિસી મી પ્રકાર કી શકા કે લિયે સ્થાન નહી હૈ હમ પ્રકાર
કે દૃઢ વિશ્વાસ સે વસે અપને મન મેં ધારણ કરનેવાલા ઓર વસકે
અનુસાર હી અપની પ્રવૃત્તિ કરનેવાલા મોક્ષાભિલાષીજન તીર્થંકરપ્રમુક્તી
આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈ આવશ્યકસૂત્રમેં મી યહી વાત કહી ગઈ હૈ

“ ઇળમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયા
ઉય સસુદ્ધ સહ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગં મુત્તિમગ્ગં નિજ્ઞાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ
અવિતહમસદિદ્ધ । ઇત્થ ઠિયા જીવા સિદ્ધન્તિ ઘુજ્ઞન્તિ મુચ્ચન્તિ પરિણિ
વાણતિ સન્નવદુ સ્વાણમંત કરતિ ।

મરહ ! હતા ગોયમા ! ત ચેવ ઇતિ) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે
કરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમા સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી
થવી જોઈએ કે જે જિનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તેજ વાસ્તવિક તત્ત્વ
છે તેમા લગીરે શંકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમા
કરનાર અને તે મુજબજ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની
આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એજ વાત કહેવામા આવી
છે—(ઇળમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ
સહ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્ઞાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ અવિતહમસદિદ્ધ ।
ઇત્થ ઠિયા જીવા સિદ્ધન્તિ ઘુજ્ઞન્તિ મુચ્ચન્તિ પરિણિવાણતિ સન્નવદુ સ્વાણમંત કરતિ ।

છાયા—ઇદમેવ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સત્યમ્ અનુત્તર, કેમલિક, પ્રતિપૂર્ણ, નૈયા-
યિક, સમૃદ્ધ, શલ્યકર્ત્તન, સિદ્ધિમાર્ગ, મુક્તિમાર્ગ, નિર્વાણમાર્ગ, નિર્વાણમાર્ગ,
અવિતયમ્, અમન્દિરધમ્, અપ્ર સ્થિતા જીવાઃ સિદ્ધયન્તિ, બુદ્ધ્યન્તે, મુચ્યન્તે,
પરિનિર્વાન્તિ, સર્વે દુઃખાનામન્ત કુર્મન્તિ ।

અન્યચ્ચ—ઇમ ચ ણ સન્વજગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુક-
હિય ” ઇતિ (પ્રશ્ન૦ સવર૦)

છાયા—‘ ઇદ ચ સ્વલુ સર્વજગજીવરક્ષણદયાર્યાય પ્રવચન ભગવતા
મુકથિતમ્ ’ ઇતિ ।

ધર્મધ્યાનસ્યાઽઽજ્ઞાવિચયાદિ મેદેન ચાતુર્વિધ્ય પ્રદર્શયતા ભગવતા-પ્રાધાન્યા-
દાજ્ઞાવિચયઃ પ્રોથમ્યેન પ્રોક્ત ।

ભાવાર્થ—ઇસ કા સ્પષ્ટ છે । ઇસમેં સૂત્રકાર ને મુખ્યરૂપ સે યહી વાત
પ્રકટ કી છે કે ઇસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગ મેં સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોંકા
વિનાશ કર સિદ્ધદશાસપન્ન હો જાતે હેં । ઇસ અવસ્થાકી પ્રાપ્તિ હોના
હી જીવોં કે સમસ્ત દુઃખોં ના વિનાશ છે ।

અન્યચ્ચ—ઇમં ચ ણ સન્વજગજીવરક્ષણદ્વાય પાવયણ ભગવયા
સુકહિયં ” ઇતિ—(પ્રશ્ન સવર૦)

ઇસ પ્રવચન કી પ્રરૂપણા કરને કા શ્રી તીર્થંકર પ્રભુ કા યહી એક
ઉદ્દેશ રહા છે કે સમસ્ત સત્સારીજન ઇસ પ્રવચન કે અભ્યાસ સે સર્વ
જગત કે જીવોં કી રક્ષા કરે ઓર ઉનકી દયા પાલેં ।

ધ્યાન કા વર્ણન કરતે હુએ ભગવાન ને ઉસ ધ્યાન કે ૪ મેદ કહે
હેં । ઉનમેં ધર્મધ્યાન કે આજ્ઞાવિચય આદિ જો ૪ પાયે પ્રકટ ક્રિયે

આ ધ્યનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકાર એ જ
વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ
કર્મોના વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળ
વવી એ જ જીવોના સધળા દુખનો વિનાશ છે

અન્યચ્ચ—ઇમ ચ ણ સન્વ જગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુકહીય
” ઇતિ—(પ્રશ્ન૦ સવર૦)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો
છે કે બધા સમાજીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વ જીવોની
રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા

હતા ગોયમા ! તમેવ સત્ત્વ । સે નૂન ભતે ! ણ્ય મણે ધારેમાણે ણ્ય પકરેમાણે આણાણ આરાદ્દા ભવઈ ? । હતા ગોયમા ! ત ચેવ ” તિ ।

છાયા—અથ નૂન ભદન્ત । તદેવ સત્ય નિશ્ચય યજ્ઞિનૈઃ પ્રવેદિતમ્ ? ।
હન્ત ગૌતમ ! તદેવ સત્યમ્ । અથ નૂન ભદન્ત ? એવ મનસિ ધારયન એવ પ્રકુર્વન્
આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ? હન્ત ગૌતમ ! તદેવ ” ઇતિ ।

આવશ્ય સૂત્રેઽપિ—“ઈળમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિ-
પુન્ન નેયાઉય સમુદ્ધ સહ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ
અવિત્તહમસદિદ્ધ । ઇત્થ ઠિયા જીવા સિજ્ઞતિ વુજ્ઞતિ મુચ્ચતિ પરિણિવાપતિ
સન્વદુ સ્વાણમંત કરતિ ।

ધારેમાણે એવ પકરેમાણે આણાણ આરોહણ ભવઈ । હતા ગોયમા ! ત
ચેવ ઇતિ ” હસ સૂત્ર કા ભાવાર્થ યદ્દ હૈ કિ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ (મોક્ષાભિ-
લાષી) જન કો અપને હૃદય મેં હસ યાત કા પૂર્ણદૃઢ વિશ્વાસ રખનાં
ચાહિયે કિ જો જિનેન્દ્ર દેવ ને પ્રતિપાદિત કિયા હૈ વહી વાસ્તવિક તત્ત્વ
હૈ—ઉસમેં કિસી ભી પ્રકાર કી શકા કે લિયે સ્થાન નહી હૈ હસ પ્રકાર
કે દૃઢ વિશ્વાસ સે ઉસે અપને મન મેં ધારણ કરનેવાલા ઓર ઉસકે
અનુસાર હી અપની પ્રવૃત્તિ કરનેવાલા મોક્ષાભિલાષીજન તીર્થંકરપ્રમુકી
આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈ આવશ્યક સૂત્રમેં ભી યહી યાત કરી ગઈ હૈ

“ ઈળમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયા
ઉય સમુદ્ધ સહ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ
અવિત્તહમસદિદ્ધ । ઇત્થ ઠિયા જીવા સિજ્ઞતિ વુજ્ઞતિ મુચ્ચતિ પરિણિ-
વાપતિ સન્વદુ સ્વાણમંત કરતિ ।

ભવઈ । હતા ગોયમા ! ત ચેવ ઇતિ) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે
દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમા સંપૂર્ણપણે આ યાતની યાતરી
થવી જોઈએ કે જે જિનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તેજ વાસ્તવિક તત્ત્વ
છે તેમા લગીરે શકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમા
કરનાર અને તે મુજબજ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની
આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એજ યાત કહેવામા આવી
છે—(ઈળમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન નેયાઉય સમુદ્ધ
સહ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ અવિત્તહમસદિદ્ધ !
ઇત્થ ઠિયા જીવા સિજ્ઞતિ વુજ્ઞતિ મુચ્ચતિ પરિણિવાપતિ સન્વદુ કરતિ ।

છાયા—ઇદમેવ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન સત્યમ્ અનુત્તર, કૈવલિક, પ્રતિપૂર્ણ, નૈયા-
યિક, સમૃદ્ધ, શલ્યકર્ત્તન, સિદ્ધિમાર્ગઃ, મુક્તિમાર્ગઃ, નિર્વાણમાર્ગઃ, નિર્વાણમાર્ગઃ,
અવિતથમ્, અમન્દિગ્ધમ્, અર સ્થિતા જીવાઃ સિદ્ધ્યન્તિ, બુદ્ધ્યન્તે, મુચ્યન્તે,
પરિનિર્વાન્તિ, સર્વે દુઃખાનામન્ત કુર્વન્તિ ।

અન્યચ્ચ—ઇમ ચ ણ સવ્વજગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુક-
હિય ” ઇતિ (પ્રશ્ન૦ સવર૦)

છાયા—‘ ઇદ ચ ત્વહુ સર્વજગજીવરક્ષણદયાર્યાય પ્રવચન ભગવતા
સુકથિતમ્ ’ ઇતિ ।

ધર્મધ્યાનસ્યાઽઽજ્ઞાવિચયાદિ ભેદેન ચાતુર્વિધ્ય પ્રદર્શયતા ભગવતા-પ્રાધાન્યા-
દાજ્ઞાવિચયઃ પ્રોથમ્યેન પ્રોક્ત ।

ભાવાર્થ—ઇસ કા સ્પષ્ટ છે । ઇસમેં સૂત્રકાર ને મુરયરૂપ સે યહી યાત
પ્રકટ કી હૈ કિં ઇસ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગ મેં સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોંકા
વિનાશ કર નિદ્ધદશાસપન્ન હો જાતે હૈં । ઇસ અવસ્થાકી પ્રાપ્તિ હોના
હી જીવોં કે સમસ્ત દુઃખોં કા વિનાશ હૈ ।

અન્યચ્ચ—ઇમ ચ ણ સવ્વજગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા
સુકહિય ” ઇતિ—(પ્રશ્ન સવર૦)

ઇસ પ્રવચન કી પ્રરૂપણા કરને કા શ્રી તીર્થકર પ્રભુ કા યહી એક
ઉદ્દેશ રહા હૈ કિ સમસ્ત સત્તારીજન ઇસ પ્રવચન કે અભ્યાસ સે સર્વ
જગત કે જીવોં કી રક્ષા કરે ઓર ઉનકી દયા પાલેં ।

ધ્યાન કા ઘર્ષણ કરતે હુગ ભગવાન ને ઉસ ધ્યાન કે ૪ ભેદ કહે
હૈં । ઉનમેં ધર્મધ્યાન કે આજ્ઞાવિચય આદિ જો ૪ પાપે પ્રકટ કિયે

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખામ કરીને સૂત્રકારે એ જ
યાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ
કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળ
વવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

અન્યચ્ચ—ઇમ ચ ણ સવ્વ જગજીવરક્ષણદયદ્વાય પાવયણ ભગવયા સુકહીય
” ઇતિ—(પ્રશ્ન૦ સવર૦)

શ્રી તીર્થ કર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો
છે કે બધા સત્તારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની
રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા
ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે આ ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે

હતા ગોયમા ! તમેય સત્ત્વ । સે નૂળ ભતે ! ણ્ય મણે ધારેમાણે ણ્ય પકરેમાણે આણાણ આરાહણ ભવહ ? । હતા ગોયમા । ત ચેવ ” તિ ।

છાયા—અથ નૂન ભદન્ત । તદેવ સત્ય નિદ્ધશઙ્ક યજ્ઞિનૈઃ પ્રવેદિતમ્ ? । હન્ત ગૌતમ ! તદેવ સત્યમ્ । અથ નૂન ભદન્ત ? એવ મનસિ ધારયન્ એવ પ્રકુર્વન્ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ? હન્ત ગૌતમ ! તદેવ ” ઈતિ ।

આવશ્ય સૂત્રેઽપિ—“ઈળમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિ-
પુન્ન નેયાઉય સમુદ્ધ સહ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ
અવિતહમસદિદ્ધ । इत्थ ठिया जीवा सिद्ध्यति बुद्ध्यति मुच्चति परिणिच्वाएति
सव्वदु ख्वाणमत करति ।

ધારેમાણે એવં પકરેમાણે આણાણ આરાહણ ભવહ । હતા ગોયમા । ત
ચેવ ઇતિ ” હસ સૂત્ર કા ભાવાર્થ યદ્દ હૈં કિ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ (મોક્ષાભિ-
લાષી) જન કો અપને હૃદય મેં હસ યાત કા પૂર્ણદૃઢ વિશ્વાસ રાખના
ચાહિયે કિ જો જિનેન્દ્ર દેવ ને પ્રતિપાદિત કિયા હૈં વહી વાસ્તવિક તત્ત્વ
હૈં—ઉસમેં કિસી ભી પ્રકાર કી શકા કે લિયે સ્થાન નહીં હૈં હમ પ્રકાર
કે દૃઢ વિશ્વાસ સે ઉસે અપને મન મેં ધારણ કરનેવાલા ઓર ઉસકે
અનુસાર હી અપની પ્રવૃત્તિ કરનેવાલા મોક્ષાભિલાષીજન તીર્થંકરપ્રમુકી
આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈં આવશ્યકસૂત્રમેં ભી યહી યાત કરી ગઈ હૈં

“ ઇળમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયા
ઉય સમુદ્ધ સહ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ ણિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ
અવિતહમસદિદ્ધ । इत्थ ठिया जीवा सिद्ध्यति बुद्ध्यति मुच्चति परिणि
च्वाएति सव्वदुःख्वाणमत करति ।

ભવહ ! હતા ગોયમા । ત ચેવ ઇતિ) આ સૂત્રને ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે
દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમાં સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી
થવી જોઈએ કે જે જિનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્ત્વ
છે તેમાં લગીરે શકા નથી આ ભતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમાં
કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની
આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમાં પણ એ જ વાત જોડવામાં આવી
છે—(ઇળમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયાઉય સમુદ્ધ
સહ્ગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્જાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ અવિતહમસદિદ્ધ !
इत्थ ठिया जीवा सिद्ध्यति बुद्ध्यति मुच्चति परिणिच्वाएति सव्व ५ કરતિ ।

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्यम् अनुत्तर, कैवलिक, प्रतिपूर्ण, नैया-
यिक, सधृष्ट, शल्यकृत्तन, सिद्धिमार्गः, मुक्तिमार्गः, निर्माणमार्गः, निर्वाणमार्गः,
अवितथम्, अमन्दिग्यम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्ध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते,
परिनिर्वाणन्ति, सर्वे दुःखानामन्त कुर्यन्ति ।

अन्यच्च—इमं च ण सत्त्वजगज्जीवरक्षणदयद्वयाए पावयण भगवया सुक-
हिय ” इति (प्रश्न० संवर०)

छाया—‘ इदं च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचनं भगवता
मुकयितम् ’ इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्यं प्रदर्शयता भगवता—प्राधान्या-
दाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्तः ।

भावार्थ—इस का स्पष्ट है । इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात
प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका
विनाश कर सिद्धदशासपन्न हो जाते हैं । इस अवस्थाकी प्राप्ति होना
ही जीवों के समस्त दुःखों का विनाश है ।

अन्यच्च—इमं च ण सत्त्वजगज्जीवरक्षणद्वयाए पावयण भगवया
सुकहिय ” इति—(प्रश्न संवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थकर प्रभु का यही एक
उद्देश रहा है कि समस्त सत्तारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व
जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पावे ।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे
हैं । उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पावे प्रकट किये

आ दथनने लावार्थं स्पष्ट छे आभा भास करीने सूत्रकारे छे न
वात स्पष्ट रीते बतावी छे छे आ निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्गमा स्थित छव अष्ट
कर्मोना विनाश करीने सिद्धि दशा सपन्न थर्ष लाय छे आ अवस्था भेग
पवी छे न छवोना सधणा दुःखनो विनाश छे

अन्यच्च—इमं च ण सत्त्व जगज्जीवरक्षणदयद्वयाए पावयण भगवया सुकहिय
” इति—(प्रश्न० संवर०)

श्री तीर्थकर प्रभुने आ प्रवचननी प्ररूपणा करवानो छे न उद्देश रक्षो
छे छे भधा सत्तारीजनो आ प्रवचनना अभ्यासथी जगतना सर्वे छवोनी
रक्षा करे अने तेभनी दया पावे

ध्याननुं वखुन करता लगवाने तेना आर लेहो वखुन्या छे तेओमा
धर्मध्यानना आज्ञा-विचय वगेरे आ० उपभेदो स्पष्ट करवाभा आब्या छे

હતા ગોયમા ! તમેવ સત્ત્વ । સે નૂન ભતે ! ણ મણે ધારેમાણે ણ પકરેમાણે આણાણ આરાદ્દા ભવહ ? । હતા ગોયમા । ત ચેવ ” તિ ।

છાયા—અથ નૂન ભદન્ત । તદેવ સત્ય નિશ્ચક્ક યજ્ઞિનૈઃ પ્રવેદિતમ્ ? । દન્ત ગૌતમ ! તદેવ સત્યમ્ । અથ નૂન ભદન્ત ? એવ મનસિ ધારયન્ એવ પ્રકુર્વન્ આજ્ઞાયા આરાધકો ભવતિ ? દન્ત ગૌતમ ! તદેવ ” ઈતિ ।

આવશ્ય સૂત્રેડપિ—“ઈણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિ-
પુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ સલ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્ઞાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ
અવિત્તહમસદિદ્ધ । इत्यठिया जीवा सिज्झति पुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति
सव्वदुखाणमत्त करति ।

ધારેમાણે એવ પકરેમાણે આણાણ આરાદ્દા ભવહ । હતા ગોયમા । ત
ચેવ ઈતિ ” હમ સૂત્ર કા ભાવાર્થ યહ હૈ કિ પ્રત્યેક મુમુક્ષુ (મોક્ષાભિ-
લાષી) જન કો અપને હૃદય મેં હસ યાત કા પૂર્ણદૃઢ વિશ્વાસ રાખનાં
ચાહિયે કિ જો જિનેન્દ્ર દેવ ને પ્રતિપાદિત કિયા હૈ વહી વાસ્તવિક તત્ત્વ
હૈ—ઉસમેં કિસી ભી પ્રકાર કી શકા કે લિયે સ્થાન નહી હૈ હમ પ્રકાર
કે દૃઢ વિશ્વાસ સે ઉસે અપને મન મેં ધારણ કરનેવાલા ઓર ઉસકે
અનુસાર હી અપની પ્રવૃત્તિ કરનેવાલા મોક્ષાભિલાષીજન તીર્થંકરપ્રભુકી
આજ્ઞાકા આરાધક હોતા હૈ આવશ્યક સૂત્રમેં ભી યહી યાત કહી ગઈ હૈ

“ ઈણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયા
ઉય સસુદ્ધ સલ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્ઞાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ
અવિત્તહમસદિદ્ધ । इत्यठिया जीवा सिज्झति पुज्झति मुच्चति परिणि
व्वाएति सव्वदुखाणमत्त करति ।

ભવહ ! હતા ગોયમા । ત ચેવ ઈતિ) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે
દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમાં સંપૂર્ણપણે આ યાતની ખાતરી
થવી જોઈએ કે જે જિનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્ત્વ
છે તેમાં લગીરે શકા નથી આ યાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમાં
કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની
આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમાં પણ એ જ યાત કહેવામાં આવી
છે—(ઈણમેવ નિગ્ગય પાવયણ સત્ત્વ અણુત્તર કેવલિય પહિપુન્ન નેયાઉય સસુદ્ધ
સલ્લગત્તણ સિદ્ધિમગ્ગ મુત્તિમગ્ગ નિજ્ઞાણમગ્ગ નિવ્વાણમગ્ગ અવિત્તહમસદિદ્ધ !
इत्यठिया जीवा सिज्झति पुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति सव्व दुखाणमत्त करति ।

હૈ, અનવધ હૈ, હમ મેં પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કા વિવેચન ઘટુત હી અચ્છી તરહ સે કિયા ગયા હૈ અતઃ યહ મહાર્થ હૈ હસકા પ્રભાવ મી અદ્વિતીય હૈ હસકી છત્રછાયા મેં આને સે પ્રત્યેક મન્ય જીવ આત્મક સ્થાણ કે અપને અન્તિમ લક્ષ્ય કી સિદ્ધિ કર લિયા કરતે હૈં। હસ મેં પ્રતિપાદિત તત્ત્વ સામાન્યજન નહી જ્ઞાત કર સકતે હૈં-દ્રવ્યાર્થિક ઔર પર્યાયાર્થિક નયરૂપ દો દૃષ્ટિયા જિનકે પાસ હૈં-વે હી હસમેં પ્રતિપાદિત વિષય કો અચ્છી તરહ જ્ઞાત કર સકતે હૈં। હસમેં જો મી કુઝ કથન સર્વજ્ઞ મગગાન્ ને કિયા હૈ વહ ઈન્દ્રી દો દૃષ્ટિયો કો સામને રલ્લકર કિયા ગયા હૈ યદિ ઁક દૃષ્ટિ કો હી પ્રધાન રલ્લકર હસકે તત્ત્વ કો સમક્ષને કી ચેષ્ટા કો જાય તો વહ પ્રતિપાદ્ય વિષય ટીક ૨ નહી સમક્ષા જા સકતા હૈ। તયા હસ પ્રકાર કી પ્રરૂપણા અન્યથા મી જ્ઞાત હોને લગની હૈ હસલિયે દૂસરી દૃષ્ટિ કો સામને રલ્લકર હી વહ વિષય ટીક ૨ રીતિ સે સમક્ષ મેં આ સકતા હૈ, અતઃ હસી અભિપ્રાયસે હસે નિપુણ જનવેશ કહા હૈ તયા હસ મેં પ્રત્યેક પદાર્થ કો ઉત્પાદન વ્યય ઔર ધ્રૌવ્ય આત્મક કહા ગયા હૈ-વહ મી દ્રવ્ય ઔર પર્યાય કી અપેક્ષા સે હી કહા ગયા હૈ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા સે પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ ધ્રૌવ્યરૂપ

અતીવકુશળ છે દરેક દરેક જીવો નો આ હીતકારી છે અનવધ છે, એમા દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થો વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામા આવ્યું છે એથી આ મહાર્થ છે આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામા આવવાથી દરેક લબ્યજીવ આત્મકદયાણુ વિષયક પોતાની અતિમ લક્ષ્મી સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે આમા પ્રતિપાદિત તત્ત્વ સામાન્ય લોકો બહુ શક્તા નથી દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે તેઓ જ આમા પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે સર્વજ્ઞ ભગવાને આમા જે કંઈ કહ્યું છે તે બધું આ પૂર્વોક્ત બે દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યું છે નો એક-દૃષ્ટિને જ પ્રધાન સમજીને તેના તત્ત્વને બહુવાની ચેષ્ટા કરવામા આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ તેમજ આ બતાની પ્રરૂપણા અથવા પણ માહુમ થવા માટે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય તરસ રીતે સમજી શકાય તેમ છે આ પ્રયોજનથા જ આને ‘નિપુણજન-વેશ’ કહેવામા આવ્યો છે તેમજ આમા જો દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય આત્મક કહેવામા આવ્યો છે તે-પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામા આવ્યો છે દ્રવ્યની

યથા ભગવતી સૂત્રે--(શ્લોક ૨૫ ૩૦ ૭)

“ધર્મ્યે જ્ઞાણે ચતુર્વિદ્ધે પળ્લવે, ત જહા-આણાવિચય” અવાયવિચય, વિવાગવિચય, સઠાણવિચય ॥

છાયા—ધર્મધ્યાન ચતુર્વિધ પ્રજ્ઞપ્તમ્ । તદ્ યથા-આજ્ઞાવિચયઃ, અપાય વિચય, વિપાકવિચયઃ, સસ્થાનવિચયઃ ।

અત્ર પ્રસન્નવશાદ્ આજ્ઞાવિચય એવ વ્યાખ્યાયયતે—

આજ્ઞાવિચયશ્ચ-આજ્ઞાયાઃ પર્યાલોચન, આજ્ઞા-સર્વજ્ઞપણીત આગમ, તમાજ્ઞા મિત્ય વિચિત્રુયાત્=પર્યાલોચયેત્ - પૂર્વાપરવિશુદ્ધમતિનિપુણામગ્રેષ્ઠજીવકાયહિતા

હૈં ઉન મેં સર્વ પ્રથમ આજ્ઞાવિચય કો જો કહા હે ઉસકા કારણ યરી હૈ કિ જોષ ત્રીન પાયોં (ભેદોં) મેં પ્રધાન હૈ । ભગવતી સૂત્ર શ. ૨૫ ૩-૭ મેં દેલો યહ વર્ણન હસ પ્રકાર સે હુઆ હૈ-ધર્મ્યે જ્ઞાણે ચતુર્વિદ્ધે પળ્લવે, ત જહા-આણાવિચય, અવાયવિચય, વિવાગવિચય, સઠાણવિચય ॥

અર્થ—ધર્મધ્યાન ૪ પ્રકાર કા હૈ (૧) અજ્ઞાવિચય (૨) અપાયવિચય (૩) વિપાકવિચય (૪) સસ્થાનવિચય ।

પ્રસન્નવશ યદાં આજ્ઞાવિચય પર વિવેચન કિયાં જાતા હૈ-તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કા વિચય-પર્યાલોચન-વિચાર કરના સો આજ્ઞાવિચય હૈ સર્વજ્ઞ કથિત આગમ કા નામ આજ્ઞા હૈ । ઉસ આગમરૂપ આજ્ઞા કા હસ પ્રકાર સે વિચાર કરના ચાહિયે-યહ પ્રભુ પ્રતિપાદિત આગમ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત હોને સે વિશુદ્ધ હૈ, પ્રત્યેક સૂક્ષ્મ અન્નરિત ઓર દૂરાર્થ કે પ્રતિપાદન કરને મેં અતિનિપુણ હૈ, પ્રત્યેક જીવોં કા યહ હિતકારી

તેઓના બે સૌ પ્રથમ આજ્ઞા વિચયનો જે ઉલ્લેખ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ એ જ છે કે બાકી રહેલા ત્રણ ઉપલેક્ષોમાં તે મુખ્ય છે ભગવતી સૂત્ર શ. ૨૫ ૩ ૭ માં એના માટે બેબે બેધએ તથા આનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે-ધર્મ્યે જ્ઞાણે ચતુર્વિદ્ધે પળ્લવે, ત જહા-આણાવિચય, અવાયવિચય, વિવાગવિચય, સઠાણવિચય ॥

અર્થ—ધર્મધ્યાનના ચાર પ્રકાર છે (૧) આજ્ઞા-વિચય, (૨) અપાય વિચય, (૩) વિપાક વિચય, (૪) સસ્થાન વિચય

પ્રસન્નવશ અહીં આજ્ઞાવિચય વિષે વર્ણન કરવામાં આવે છે તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનો વિચય-પર્યાલોચન-વિચાર કરવો તે આજ્ઞાવિચય છે સર્વ જ્ઞકથિત આગમનું નામ આજ્ઞા છે તે આગમરૂપ આજ્ઞાનો આ રીતે વિચાર કરવો બેધએ કે આ પ્રભુ પ્રતિપાદિત આગમ પૂર્વાપર વિશેષ ॥ બહુ વિશુદ્ધ છે, કરેક સૂક્ષ્મ અતરિત અને દૂરાર્થના

હૈ, અનવય હૈ, હમ મેં પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ કા વિવેચન વહુત હી અચ્છી તરહ સે કિયા ગયા હૈ અતઃ યહ મહાર્થ હૈ હસકા પ્રભાવ મી અઢિતીય હૈ ઇસકી છત્રઝાગા મેં જાને સે પ્રત્યેક મન્ય જીવ આત્મક ત્યાગ કે અપને અન્તિમ લક્ષ્ય કી સિદ્ધિ કર લિયા કરતે હૈં । ઇસ મેં પ્રતિપાદિત તત્વ સામાન્યજન નહી જાત કર સકતે હૈં-દ્રવ્યાર્થિક ઔર પર્યાયાર્થિક નયરૂપ દો દૃષ્ટિયા જિનકે પાસ હૈં-વે હી ઇસમેં પ્રતિપાદિત વિષય કો અચ્છી તરહ જાત કર સકતે હૈં । હમમેં જો મી કુછ કયન સર્વજ્ઞ મગગાન્ ને કિયા હૈ વહ ઇન્હી દો દૃષ્ટિયો કો સામને રલ્લકર કિયા ગયા હૈ યદિ ઇક દૃષ્ટિ કો હી પ્રમાન રલ્લકર ઇસકે તત્વ કો સમજ્ઞને કી ચેષ્ટા કો જાય તો વહ પ્રતિપાદ્ય વિષય ઠીક ૨ નહી સમજ્ઞા જા સકતા હૈ । તયા ઇસ પ્રકાર કી પ્રરૂપણા અન્યથા મી જાત હોને લગતી હૈ ઇમલિયે ટૂસરી દૃષ્ટિ કો સામને રલ્લકર હી વહ વિષય ઠીક ૨ રીતિ સે સમજ્ઞ મેં આ સકતા હૈ, અન ઇસી અભિપ્રાયસે ઇસે નિપુણ જનવેચ કહા હૈ તયા ઇસ મેં પ્રત્યેક પદાર્થ કો ઉત્પાદન વ્યય ઔર ધ્રોવ્ય આત્મક કહા ગયા હૈ-વહ મી દ્રવ્ય ઔર પર્યાય કી અપેક્ષા સે હી કહા ગયા હૈ દ્રવ્ય કી અપેક્ષા સે પ્રત્યેક જીવાદિક પદાર્થ ધ્રોવ્યરૂપ

અતીવકુશળ છે દરેકે દરેકે જીવો નો આ હીતકારી છે અનવય છે, એમા દરેકે દરેકે જીવ વગેરે પદાર્થનું વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામા આવ્યું છે એથી આ મહાર્થ છે આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામા આવવાથી દરેકે લબ્યજીવ આત્મકદ્વયાણુ વિષયક પોતાની અતિમ લક્ષ્મી સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે આમા પ્રતિપાદિત તત્વ સામાન્ય લોકો બહુ શકતા નથી દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે તેઓ જ આમા પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે સર્વજ્ઞ ભગવાને આમા જે કંઈ કહ્યું છે તે બધું આ પૂર્વોક્ત બે દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યું છે નો એક-દૃષ્ટિને જ પ્રમાણ સમજીને તેના તત્વને બાણવાની ચેષ્ટા કરવામા આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ તેમજ આ બાતની પ્રરૂપણા અન્યથા પણ મહામ થવા માટે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય સરસ રીતે સમજી શકાય તેમ છે આ પ્રયોજનથી જ આને 'નિપુણજન-વેધ' કહેવામા આવ્યો છે તેમજ આમાં નો દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રોવ્ય આત્મક કહેવામા આવ્યો છે તે પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામા આવ્યો છે દ્રવ્યની

મનવદાં મહાર્થાં મહાનુભાવેં નિપુણજનચિજ્ઞેયા દ્રવ્યપર્યાયપ્રવચ્ચવતીમનાગ્રનિ
ધનામ્ । અસ્ય પ્રવચનસ્યાડઽઘન્ટરહિતત્વ ચ ભગવતા નન્દીસૂત્રે નિગદિતમ્—

“ ઇચ્છેદ્ય દુવાલસગ ગણિપિઢગ ન કયાહ્ નાસી ॥ ”

ઇત્યેતદ્ દ્વાદશાઙ્ગ ગણિપિટક ન કદાપિ નાસીત્ ॥ ઇત્યાદિ ।

હૈં ઓર પર્યાય કી અપેક્ષા સે ઉત્પાદન વ્યયરૂપ હૈ, હસલિયે મી જિન પ્રતિપાદિત આગમરૂપ આજ્ઞા સ્વયં દ્રવ્ય ઓર પર્યાય કે વિસ્તાર ચાલી હૈ । અથવા જીવાદિક મમસ્ત ૬ દ્રવ્યો કી ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત પર્યાયેં હસમે પ્રતિપાદિત હુઈ હૈં, અથવા કોઈ મી દ્રવ્ય કમી મી પર્યાય રહિત નહીં હો સકતા હૈ—સ્વભાવ પર્યાયેં ઓર વ્યજ્જન પર્યાયે, વિભાવ પર્યાયે ઓર અર્થપર્યાયે પ્રત્યેકક્ષણ મેં સમસ્તદ્રવ્યોં મેં હોતી રહતી હૈં, ઇત્યાદિરૂપ સે દ્રવ્ય ઓર પર્યાયો કા પ્રતિપાદન હસ આજ્ઞા મેં ભગવાન ને પ્રદર્શિત કિયા હૈ હસ અપેક્ષા મી યહ દ્રવ્ય ઓર પર્યાય કે વિસ્તાર ચાલી માની ગઈ હૈ તથા યહ અનાદિ અનન્ત હૈ ન કમી હસ આજ્ઞા કી આદિ હુઈ હૈ ઓર ન કમી હસકા વિનાશ હોગા । નદીસૂત્ર મેં મી પ્રવચન કી અનાદિ અનન્તતા કે વિષય મે “ ઇચ્છેદ્ય દુવાલસગ ગણિપિઢિગ ન કયાહ્નાસી ” યહી કહા હૈ—એસા કોઈ સા મી કાલ નહીં થા કિ જિસ કાલ મેં હસ દ્વાદશાગરૂપ ગણિપિટકકા સદ્ભાવ નહીં થા ।

અપેક્ષાથી દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ ધ્રોવ્યરૂપ છે અને પર્યાયની અપેક્ષાથી ઉત્પાદ વ્યયરૂપ છે એટલા માટે પણ જિન પ્રતિપાદિત આગમરૂપ આજ્ઞા પોતે દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપચ (વિસ્તાર) વાળી છે અથવા તો જીવ વગેરે બધા ૬ દ્રવ્યોના ત્રિકાલ વર્તી સમસ્ત પર્યાયો આમા પ્રતિપાદિત થયા છે, અથવા કોઈ પણ દ્રવ્ય કોઈ પણ દિવસે પર્યાય રહિત થઈ શકતુ નથી સ્વભાવ પર્યાયો અને વ્યજ્જન પર્યાયો, વિભાવ પર્યાયો અને અર્થ પર્યાયો દરેક ક્ષણમા બધા દ્રવ્યોમા થતી રહે છે ઇત્યાદિ રૂપથી દ્રવ્ય અને પર્યાયોનુ પ્રતિપાદન આ આજ્ઞામા લગવાને બતાવ્યુ છે આ અપેક્ષાથી પણ આ દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપચ (વિસ્તાર) વાળી માનવામા આવી છે તેમજ આ અનાદિ અનન્ત છે કોઈ દિવસ આજ્ઞાની આદિ થઈ નથી અને કોઈ પણ દિવસે આનો વિનાશ થશે નહિ નદીસૂત્રમા પણ પ્રવચનની અનાદિ અનન્તતાને લગતી (ઇચ્છેદ્ય દુવાલસગ ગણિપિઢિગ ન કયાહ્નાસી) એ જ વાત કહેવામા આવી છે એવો કોઈ પણ કાળ હોતો નહિ કે તે કાળે આ દ્વાદશાગ રૂપ ગણિપિટકનો સદ્ભાવ હોતો નહિ આ રીતે આ આગમની મહત્તા અથવા તો

इत्थ चागममाहात्म्यपर्यालोचनरूपस्य धर्मध्यानस्याऽऽ - र्हताऽऽज्ञाविष-
यत्वाद् धर्मध्यानस्य धर्मत्व सिद्धम् । तथा-हिंसादि-दोषलेशेनाप्यसंपृक्तस्य शुद्ध
धर्मस्य बोधकत्वादहिंसाप्रधानस्य प्रवचनस्य श्रद्धेयत्व च सिद्धम् ।

अहिंसायामर्हतो भगवत आज्ञा प्रदर्शिता, एव सयमेपि तदाज्ञा वर्तते । यथा
-ज्ञाताधर्मकथाऽद्भुते-(प्रथमा ययने)

“ तएण समणे भगव महावीरे मेह कुमार सयमेव पग्वावेइ, जाव सयमेव
आयार जाव धम्ममाइक्खइ एव खलु देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठियव्व णिसीइयव्व

इस प्रकार इस आगम की महत्ता अथवा उसके महात्म्य का विचार
करना यही आज्ञाविचय नामक धर्मध्यान का प्रथम भेद है । इस ध्यान
में अर्हत्प्रभु की आज्ञा का ही विचार होता है-अतः इस ध्यान में उन
की आज्ञा का विषय करनेवाला होने से धर्मरूपता सिद्ध है तथा हिंसा-
दिक दोष के लेश से भी रहित ऐसे शुद्ध धर्म का बोधक होने से
अहिंसाप्रधान इस प्रवचन में श्रद्धेयता सिद्ध होती है ।

इस पूर्वोक्त प्रकार से अहिंसा में अर्हत् भगवान् की आज्ञा का
प्रदर्शन कर अब सयममें भी उनकी आज्ञा इसी प्रकार की है यह प्रकट
करने के लिये सर्व प्रथम ज्ञाताधर्मकथाद्भुत सूत्र से इस विषय की पुष्टि
करते हुए सूत्रकार कहते हैं ।

“ तएण समणे भगव महावीरे मेह कुमार सयमेव पग्वावेइ, जाव
धम्ममाइक्खइ, एव खलु देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठियव्व णिसी-

ત્યને લગતો વિચાર કરવો એ જ આજ્ઞા-વિચય નામક ધર્મધ્યાનનો પ્રથમ
લેહ છે આ ધ્યાનમાં અર્હત પ્રભુની આજ્ઞા વિષે જ વિચાર હોય છે તેથી
આ ધ્યાનમાં તેમની આજ્ઞાનો વિષય પ્રતિપાદિત થયો છે માટે આમાં ધર્મ
રૂપતા સિદ્ધ છે તેમજ હિંસા વગેરે દોષોથી પણ રહિત શુદ્ધ કર્મનો બોધક
હોવાને કારણે અહિંસા પ્રધાન આ પ્રવચનમાં શ્રદ્ધેયતા નિદ્ધ થાય છે

આ પ્રમાણે પૂર્વાકૃત રીતે અર્હત ભગવાનની અહિંસાના વિષે આજ્ઞા
બતાવીને હવે આગળ સૂત્રકાર સયમ માટે પણ તેઓશ્રીની આજ્ઞા આ રીતે જ
છે આ વાત સ્પષ્ટ કરવાને માટે સૌ પ્રથમ જ્ઞાતા-ધર્મકથાદ્ભુત સૂત્રથી આ
વિષયની પુષ્ટિ કરતા કહે છે—

“ તए ण समणे भगव महावीरे मेह कुमार सयमेव पग्वावेइ, जाव सय
मेव आयार जाव धम्ममाइक्खइ, एव खलु देवाणुप्पिया ! गतव्व चिट्ठि-

તુયટ્ટિયવ્વ ભુજિયવ્વ માસિયવ્વ, एउ उट्ठाए उट्ठाए पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं
सजमेण सजमियव्वं, अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएयव्व " इति, ।

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरो मेघ कुमार स्वयमेव प्रराजयति, यावत्
स्वयमेव आचार यावद् धर्मेमारयाति-एउ खलु हे देवानुप्रिय ! गन्तव्य, स्यात्तव्य'
निपत्तव्य, रग्वर्तयितव्य भोक्तव्य भाषितव्यत्, एउमुत्थाय उट्थाय प्राणेषु भूतेषु
जीवेषु सत्त्वेषु सयमेन सगन्तव्यम्, अस्मिन् खलु अर्थे नो प्रमादयितव्यम् । इति,
दशवैकालिक सूत्रे ऽपि—

“ जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय सए ।
जय भुंजतो भासतो पावरुम्म न चण्हई ॥ ”

इयव्व तुयट्टियव्व भुजियव्व मासियव्व एउ उट्ठाए उट्ठाए पाणेहिं भूयेहिं
जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्व, अस्सिच ण अट्ठे णो पमाएयव्व”

श्रमण भगवान् महावीर ने स्वयं अपने ही हाथों से मेघकुमारको
जय भागवती दीक्षा प्रदान की उनके लिये मुनि विषयक आचार
आदि का जय उन्होने उपदेश दिया तब उन्होने उसे यही समझाया
कि हे देवानुप्रिय ! चलते, ठहरते, बैठते, लेटते, आहारकरते और बात
चित्त करते समय प्राणियो, भूतो, जीवो, और सत्वो में सदा सयम
से ही प्रवृत्ति करनी चाहिये । मुनि का यही कर्तव्य है कि वह प्रत्येक
शारीरिक एवं वाचनिक क्रियाओ में, सयमित प्रवृत्ति करें । इस प्रकार
की प्रवृत्तिशील होने से ही मुनि द्वारा अपने सयम की रक्षा होती है
इस विषय में मुनि को कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिये । दशवै
कालिक सूत्र में भी यही कहा है—“ जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय

यव्व ણિસીદ્ધિયવ્વ તુયટ્ટિયવ્વ ભુજિયવ્વ, માસિયવ્વ, एउ उट्ठाए उट्ठाए पाणेहिं
भूयेहिं जावेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्व अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएयव्व ”
श्रमण भगवान् महावीर ने स्वयं अपने ही हाथों से मेघकुमारने न्याये
सागवती दीक्षा आपी અને તેને મુનિવિષયક આચાર વગેરેને લગતો ઉપદેશ
આપ્યો ત્યારે તેઓશ્રીએ તેને ઉપદેશમાં એ જ વાત સમજાવી કે હે દેવાનુ
પ્રિય ! ચાલતા ઊભા રહેતા, બેસતા, સૂઈ જતા, આહાર કરતા અને વાતચીત
કરતા પ્રાણીઓ, ભૂતો, જીવો અને સત્ત્વોમાં હંમેશા સયમથી જ પ્રવૃત્તિ કરતા
રહેવું જોઈએ મુનિની એ જ ફરજ છે કે તે દરેક શારીરિક અને વાચનિક ક્રિયા
ઓમાં સયમિત પ્રવૃત્તિ કરે આ રીતે પ્રવૃત્તિશીલ થઈને રહેવાથી જ મુનિઓ
પડે સયમની રક્ષા થાય છે આ બાબતમાં મુનિએ કોઈ પણ દિવસે પ્રમાદ
કરવો જોઈએ નહિ દશવૈકલિક સૂત્રમાં પણ એજ વાત કહેવામાં છે
જય ચરે જય ચિટ્ઠે જયમાસે જયસણ, જય મુંજતો માસતો

છાયા-યતં ચરેત્ યત નિષ્ઠેત્, યતમાસીત યત શયીત ।

યત મુજ્જાનો ભાપમાન પાપમર્મ ન વત્તાતિ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

તત્રૈવ-‘ સંજમ નિહુઓ ચર ” ઇત્યાદિ । છાયા-સયમ નિમૃતશ્વર ’ ઇતિ ।

સયમે તીર્થંકરસ્યાજ્ઞા પ્રદર્શિતા, દ્વાર્નાં તપસિ તદાજ્ઞા પ્રદર્શયતે । યથા-દશ

વૈકાલિક સૂત્રે-(દ્વિતીયાધ્યયને)

“ આયાવયાહી ચય સોગમહ ” ઇતિ । “ આયાવયાહી ” આતાપય=આતાપનારૂપતપોધર્મારાધનેન તનુ શોષય, “ સોગમહ ” સૌકુમાર્યં “ ચય ” ત્યજન્ પરિહર ।

સગ, જય મુજતો ભાસતો પાવકમ્મ ન વધઈ” સકલ સયમિયો કો પૂર્ણ સાવધાન તા પૂર્વક હી ચલના ચાહિયે ઔર પૂર્ણ સાવધાનતા પૂર્વક હી બૈઠના ચાહિયે । ઉઠને બૈઠને મેં તથા આહારાદિ ક્રિયા કરને ઔર ઘોલને ચોલને મેં સદા ઉસે અપની યાનાચારમય પ્રવૃત્તિ પર હી લક્ષ્ય રખવા ચાહિયે । હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ કરને સે વહ સાધુ પાપકર્મ કા વધ નહીં કરતો હૈ । હસલિયે હે મેઘકુમાર ! તુમ “ સયમ નિમૃતશ્વર ” હસ સકલ સયમ કી અચ્છી તરહ સે-યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ સે રક્ષા કરો-પાલન કરો । ઉસ પ્રકાર સે સયમ કી આરાધના મેં તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા કા પ્રદર્શન સૂત્રકાર ને કિયા હૈ । અવ તપ કે આરાધન કરને મેં ઉનકી વ્યા આજ્ઞા હૈ-વે ગ્રહ સ્પષ્ટ કરતે હૈ “ આયાવયાહી ચય સોગમહ ” (દશવૈકાલિક દ્વિતીય અધ્યયન) ‘ હે મુને ! સુકુમાલપને કો છોડ આતાપનાછે ’ આતાપનારૂપ તપધર્મ કી આરાધના સે મુનિ કો ચાહિયે

બધા સયમી લોડોએ સ પૂર્ણપણે સાવધાન થઇનેજ ચાલવું જોઇએ અને પૂર્ણ સાવધાન થઇને જ બેસવું જોઇએ ઉઠવા બેસવામા તેમજ આહાર વગેરે ક્રિયા કરવામા અને બોલવા ચાલવામા હ મેશા તેને યોતાની યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ ઉપર જ લક્ષ્ય આપવું જોઇએ આ ગીતે પ્રવૃત્તિ કરવાથી તે સાધુ પાપ-કર્મનો બધ કરતો નથી એથી હે મેઘકુમાર ! તમે “ સયમ નિમૃતશ્વર ” આ સકલ સયમની સારી રીતે યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ વડે રક્ષા કરો-આનુ પાલન કરો આ રીતે સૂત્રકારે સયમની આરાધના વિષે પ્રભુની આજ્ઞાનુ પ્રદર્શન કર્યું છે હવે તપની આરાધના કરવામા તેઓશ્રીની આજ્ઞા ગી છે ? તે નૃત્રકાર અહીં સ્પષ્ટ કરે છે-“ આયાવયાહી ચય સોગમહ ” (દશવૈકાલિક દ્વિતીય અધ્યયન) હે મુનિ ! સુકોમળતાને ત્યજીને આતાપના સ્વીકારે આતાપના ઉપ તપધર્મના આરાધનાથી મુનિ યોતાના શરીરને કૃથ (દુર્બળ) બનાવે અને શાગીરિક

તુયદ્વિયચ્ચ શુજિયચ્ચ માસિયચ્ચ, એવં ઉદ્ઘાય ઉદ્ઘાય પાણેહિં ભૂયેહિં જીવેહિં સત્તેહિં સજમેણ સજમિયચ્ચ, અસ્મિં ચ ણ અદ્દે ણો પમાણ્યચ્ચ ” ઇતિ, ।

તતઃ સ્વલુ શ્રમણો ભગવાન્ મહાવીરો મેવ કુમાર સ્વયમેવ પ્રત્રાજયતિ, યાવદ્ સ્વયમેવ આચાર યાવદ્ ધર્મેમાસ્વાતિ—એવં સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિય ! ગન્તવ્ય, સ્યાતવ્યં નિપત્તવ્ય, ત્તગ્ગર્ત્તયિતવ્ય ભોક્તવ્ય માપિતવ્યત્, એવમુત્થા ય ઉત્થાય પાણેષુ ભૂતેષુ જીવેષુ સત્ત્વેષુ સયમેન સયન્તવ્યમ્, અસ્મિંચ સ્વલુ અર્થે નો પ્રમાદયિતવ્યમ્ । ઇતિ, દશવૈકાલિક સૂત્રે ડપિ—

“ જય ચરે જય ચિદ્દે જયમાસે જય સપ્ ।

જય શુજતો માસતો પાવકમ્મ ન વર્ધે ॥ ”

હ્યચ્ચ તુયદ્વિયચ્ચ શુજિયચ્ચ માસિયચ્ચ એવં ઉદ્ઘાય ઉદ્ઘાય પાણેહિં ભૂયેહિં જીવેહિં સત્તેહિં સજમેણ સજમિયચ્ચ, અસ્મિંચ ણ અદ્દે ણો પમાણ્યચ્ચ ”

શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને સ્વયં અપને હી લાથોં સે મેવકુમારકો જય ભાગવતી દીક્ષા પ્રદાન કી ઉમકે લિયે મુનિ વિષયક આચાર ઓદિ કા જય ઉન્હો ને ઉપદેશ દિયા તવ ઉન્હો ને ઉસે યહી સમજાયા કિ હે દેવાનુપ્રિય ! ચલતે, ઠહરતે, વૈઠતે, હેટતે, આહારકરતે ઓર વાત ચિત કરતે સમય પ્રાણિયો, ભૂતો, જીવો, ઓર સત્ત્વો મેં સદા સયમ સે હી પ્રવૃત્તિ કરની ચાહિયે । મુનિ કા યહી કર્તવ્ય હૈ કિ વહ પ્રત્યેક શારીરિક એવ વાચનિક ક્રિયાઓ મેં, સયમિત પ્રવૃત્તિ કરેં । હિસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિશીલ હોને સે હી મુનિ દ્વારા અપને સયમ કી રક્ષા હોતી હૈ હિસ વિષય મેં મુનિ કો કમી ભી પ્રમાદ નહી કરના ચાહિયે । દશવૈકાલિક સૂત્ર મેં ભી યહી કહા હૈ—“ જય ચરે જય ચિદ્દે જયમાસે જય

ચચ્ચ ણિસીહ્યચ્ચ તુયદ્વિયચ્ચ શુજિયચ્ચ, માસિયચ્ચ, એવં ઉદ્ઘાય ઉદ્ઘાય પાણેહિં ભૂયેહિં જીવેહિં સત્તેહિં સજમેણ સજમિયચ્ચ અસ્મિં ચ ણ અદ્દે ણો પમાણ્યચ્ચ ”

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જાતે પોતાના હાથથી જ મેઘકુમારને જ્યારે ભાગવતી દીક્ષા આપી અને તેને મુનિવિષયક આચાર વગેરેને લગતો ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેઓશ્રીએ તેને ઉપદેશમાં એ જ વાત સમજાવી કે હે દેવાનુપ્રિય ! ચાલતા ઊભા રહેતા, બેસતા, સૂઈ જતા, આહાર કરતા અને વાતચીત કરતા પ્રાણીઓ, ભૂતો, જીવો અને સત્ત્વોમાં હ મેં સયમથી જ પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવું ભોધ્યું મુનિનીએ જ કરજ છે કે તે દરેક શારીરિક અને વાચનિક ક્રિયાઓમાં સયમિત પ્રવૃત્તિ કરે આ રીતે પ્રવૃત્તિશીલ થઈને રહેવાથી જ મુનિઓ વડે સયમની રક્ષા થાય છે આ બાબતમાં મુનિએ કેઈ પણ દિવસે પ્રમાદ કરવો ભોધ્યો નહિ દશવૈકાલિક સૂત્રમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે (જય ચરે જય ચિદ્દે જયમાસે જયસપ્, જય શુજતો માસતો

છાયા-યતં ચરેત્ યત તિષ્ઠેત્, યતમાસીત યત શયીત ।

યત મુજ્જાનો ભાપમાનં પાપકર્મ ન વત્તાતિ ॥ ૧ ॥ ઇતિ ।

તત્રૈવ-‘ સંજમ નિહુઓ ચર ’ ઇત્યાદિ । છાયા-સયમ નિમૃતશ્ચર ’ ઇતિ ।

સયમે તીર્થંકરસ્યાજ્ઞા પ્રદર્શિતા, દ્વાર્નાં તપમિ તદાજ્ઞા પ્રદર્શ્યતે । યથા-દશ-
દૈકાલિક સૂત્રે-(દ્વિતીયાધ્યયને)

“ આયાવયાદી ચય સોગમલ્લ ” ઇતિ । “ આયાવયાદી ” આતાપય=આતા-
પનારૂપતપોધર્મારાધનેન તત્તુ જોપય, “ સોગમલ્લ ” સૌકુમાર્યં “ ચય ” ત્યજ=
પરિહર ।

સત્, જયં મુજતો ભાસતો પાવકર્મ ન વધઈ” સકલ સયમિયો કો પૂર્ણ
સાવધાનતા પૂર્વક હી ચલના ચાહિયે ઔર પૂર્ણ સાવધાનતા પૂર્વક હી વૈઠના
ચાહિયે । ડઠને વૈઠને મેં તથા આહારાદિ ક્રિયા કરને ઔર ઘોલને ચાલને
મેં સદા ડસે અપની યનાચારમય પ્રવૃત્તિ પર હી લક્ષ્ય રગ્વના ચહિયે ।
હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ કરને સે વહ સાધુ પાપકર્મ કા વધ નહીં કરતો
હૈ । હસલિયે હે મેઘકુમાર ! તુમ “ સયમ નિમૃતશ્ચર ” હસ સકલ
સયમ કી અચ્છી તરહ સે-યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ સે રક્ષા કરો-પાલન
કરો । હસ પ્રકાર સે સયમ કી આરાધના મેં તીર્થંકર પ્રભુ કી આજ્ઞા
કા પ્રદર્શન સૂત્રકાર ને કિયા હૈ । અવ તપ કે આરાધન કરને મેં ડનકી
વયા આજ્ઞા હૈ-વે વહ સ્પષ્ટ કરતે હૈં “ આયાવયાદી ચય સોગમલ્લ ”
(દશવૈકાલિક દ્વિતીય અધ્યયન) ‘ હે મુને ! સુકુમાલપને કો છોડ
આતાપનાલ્લે ’ આતાપનારૂપ તપધર્મ કી આરાધના સે મુનિ કો ચાહિયે

બધા મયમી લોડોએ સપૂર્ણપણે સાવધાન થાનેજ ચાલવુ જોઈએ અને પૂર્ણ
સાવધાન થાને જ બેસવુ જોઈએ ઉઠવા બેસવામા તેમજ આહાર વગેરે ક્રિયા
કરવામા અને બોલવા ચાલવામા હ મેશા તેને પોતાની યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ
ઉપર જ લક્ષ્ય આપવુ જોઈએ આ ગીતે પ્રવૃત્તિ કરવાથી તે સાધુ પાપ-કર્મનો
બધ કરતો નથી એવી હે મેઘકુમાર ! તમે “ સયમ નિમૃતશ્ચર ” આ સકલ
સયમની સારી રીતે યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ વડે રક્ષા કરો-આનુ પાલન કરો
આ ગીતે સૂત્રકારે સયમની આરાધના વિષે પ્રભુની આજ્ઞાનુ પ્રદર્શન કર્યું છે
હવે તપની આરાધના કરવામા તેઓશ્રીની આજ્ઞા ગી છે ? તે સૂત્રકાર અહીં
સ્પષ્ટ કરે છે-“ આયાવયાદી ચય સોગમલ્લ ” (દશવૈકાલિક દ્વિતીય અધ્યયન)
હે મુનિ ! સુકુમાળતાને ત્યજીને આતાપના સ્વીકારો આતાપના ઉપ તપધર્મની
આરાધના ગી મુનિ પોતાના શરીરને કૃથ (દુર્બળ) બનાવે અને શારીરિક

કિંચ શ્રમણસ્ય સાન્ત્યાદિદશવિધે ધર્મે તપસઃ પાઠો વર્તતે, તસ્માત્ તપોધર્મ
ઈતિ વિજ્ઞાયતે । તથાચોક્તં સમવાયાગસૂત્રે-(સમવાય ૧૦)

“ દસવિદે સમણધર્મે પળ્લન્તે, ત જહા-(૧) સંતી, (૨) મુત્તી (૩) અજ્જવે
(૪) મહવે (૫) લાઘવે (૬) સચ્ચે (૭) સંજમે (૮) તવે (૯) ચિયાણ
(૧૦) વંમચેરવાસે ।

અહિંસાદીના જિનાશાપ્રયોજ્યપ્રવૃત્તિકારૂપસ્ય ધર્મલક્ષણસ્ય સદ્ભાવાદ્
ધર્મત્વ સિદ્ધ ।

ઉક્ત ધર્મસ્ય લક્ષણ, લક્ષ્યા અહિંસાદયશ્ચ મોક્તાઃ, તત્રાહિંસાસયમતપોરૂપો ધર્મ
ઉત્કૃષ્ટ મદ્ગલ યોગ્યમ્ ।

તથાચોક્તં દશવૈકાલિકસૂત્રે-(પ્ર૦ અ૦ ૧)

“ ધમ્મો મગલમુક્ષિટ્ઠ' અહિંસા સંજમો તવો ।

દેવાવિ ત નમસતિ જસ્સ ધમ્મે સયા મણો ॥ ”

કિં વહ અપને શરીર કો કૃશ કરેં એવ શારીરિક સુકુમારતા કા મોહ
છોડે । ઉત્તમ ક્ષમા આદિક જો શ્રમણોં કે દશપ્રકાર કે ધર્મ કહે ગયે
હૈં, ઉનમેં તપ કા મો કથન આયા હૈ, અતઃ તપ મેં ધર્મરૂપતા સિદ્ધ હી
હોતી હૈ । સમવાયાગ સૂત્ર મે શ્રમણ કે દશ પ્રકાર કે ધર્મોં કા કથન
કરતે હુણ સૂત્રકાર ને યહી કહા હૈ-“ દસવિદે સમણધર્મે પળ્લન્તે,
ત જહા-સંતી, મુત્તી, અજ્જવે, મહવે, લાઘવે, સચ્ચે, સંજમે, તવે,
ચિયાણ વંમચેરવાસે ।

इन अहिंसादिक महाव्रतों में धर्मरूपता इसलिये सिद्ध होनी है कि
वहा पर जिनेन्द्र प्रभु की आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्तिरूप धर्म के लक्षण का
सद्भाव पाया जाता है इस प्रकार धर्म का लक्षण और उसके लक्ष्यभूत
अहिंसादिकों का कथन है । ये अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म ही

સુકુમારતાનો મોહ ત્યજી દે ઉત્તમ ક્ષમા વગેરે શ્રમણોના દશ પ્રકારના ધર્મ
કહેવામા આવ્યા છે તેઓમા તપનુ કથન છે એથી તપમા ધર્મરૂપતા સિદ્ધ
થાય જ છે સૂત્રકારે સમવાયાગ સૂત્રમા શ્રમણના દશ પ્રકારના ધર્મનુ કથન
કરતા આ પ્રમાણે જ કહ્યું છે—

“ દસવિદે સમણધર્મે પળ્લન્તે -ત જહા-સંતી, મુત્તી, અજ્જવે, મહવે, લાઘવે,
સચ્ચે' સંજમે, તવે ચિયાણ વંમચેરવાસે । ”

આ અહિંમા વગેરે મહાવ્રતોમા ધર્મરૂપતા એટલા માટે સિદ્ધ થાય છે
કે તેઓમા જિનેન્દ્ર પ્રભુની આજ્ઞા પ્રયોજ્ય પ્રવૃત્તિ રૂપ ધર્મના લક્ષણનો સદ્-
ભાવ છે આ રીતે ધર્મનુ લક્ષણ અને તેના લક્ષ્યભૂત અહિંસા - છે
અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મ - ઉત્કૃષ્ટ મગળ

ઝાયા—ધર્મો મગ્ગલમુક્કિદ્ધમ્ અહિંસા સંયમસ્તપઃ ।

દેવા અપિ ત નમસ્યન્તિ, યસ્ય ધર્મે સદા મનઃ ॥

નન્વહિંસા-સંયમ-તપો-રૂપો ધર્મો મગ્ગલમુક્કિદ્ધમિત્યેતદ્વચઃ ત્રિમાઝાસિદ્ધમ્
આહોસ્વિદ્ યુક્તિસિદ્ધમપિ ?

અત્રોચ્યતે—ઉભયસિદ્ધમપિ, તથાહિ-જિનવચનત્વા-દાઝાસિદ્ધમ્ અનુમાનમ-
પ્યત્વર્તતે—‘ અહિંમાસયમતપોરૂપો-ધર્મો મગ્ગલમુક્કિદ્ધમ્’ ઇતિ પ્રતિજ્ઞા, ‘ દેવાદિ

ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપ હૈં દશવૈકાલિકસૂત્ર મેં યહી કહા હૈં “ ધમ્મો મગલ-
મુક્કિદ્ધ અહિંસા સજમો તવો । દેવા વિ ત નમસતિ જસ્સ ધમ્મે સયા-
મણો ” ધર્મ હી ઉત્કૃષ્ટ મગલ હૈં । અહિંસા સયમ ઓર તપ યે હી ધર્મ
હૈં । જિસકા અન્તઃ કારણ હસ ધર્મ સે સદા યુક્ત રહતા હૈં ઉસકે લિયે
દેવ ઓ નમસ્કાર કરતે હૈં ।

શકા-અહિંસા, સંયમ ઓર તપરૂપ ધર્મ મેં જો ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા
કહી હૈં વહ આજ્ઞાસિદ્ધ હૈં હસલિયે કહી હૈં કિ યુક્તિ સે સિદ્ધ હૈં હસ-
લિયે કહી હૈં ? આર્થ-અહિંસાદિકોં મેં ઉત્કૃષ્ટમગલતા કિસ પ્રમાણ સે
સિદ્ધ હૈં ? આગમ સે યા અનુમાન સે ?

ઉત્તર-હનમેં ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા આગમ ઓર યુક્તિ દોનોં સે સિદ્ધ
હૈં । જિનેન્દ્ર કે વચન હોને સે હનમેં આજ્ઞાસિદ્ધતા હૈં તથા અનુમાન સે
પ્રસિદ્ધ હોને સે યુક્તિ સિદ્ધતા હૈં । “ ધમ્મો મગલમુક્કિદ્ધ ” ઇત્યાદિ
ગાથા દ્વારા હનમેં જિનેન્દ્રવચનરૂપ આગમતાં પૂર્વ મેં હી પ્રદર્શિત કી જા
ચુકી હૈં અનુમાન પ્રસિદ્ધતા હમ પ્રકાર હૈં-અનુમાન કે પાંચ અંગ હોતે

સૂત્રમા એ જ વાત કહેવામા આવી છે-“ ધમ્મો મગલમુક્કિદ્ધ-અહિંસા સજમો
તવો । દેવા વિ ત નમસતિ જસ્સ ધમ્મે સયા મણો ” ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મગલ
છે અહિંસા સયમ અને તપ એ જ ધર્મ છે જેનુ અન્ત ડરણુ આ ધર્મથી
સદા યુક્ત રહે છે તેને દેવો પણ નમન કરે છે

ગકા-અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મને જે ઉત્કૃષ્ટ મગલ રૂપ
કહેવામા આવ્યો છે તે આજ્ઞાસિદ્ધ છે માટે કહેવામા આવેલ છે કે યુક્તિથી
સિદ્ધ છે એટલા માટે કહેવામા આવે છે ? ભાવાર્થ-અહિંસા વગેરેમા ઉત્કૃષ્ટ
મગલતા કયા પ્રમાણથી સિદ્ધ છે ? આગમથી કે અનુમાનથી ?

ઉત્તર-આમા ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા આગમ અને યુક્તિ બનેથી સિદ્ધ છે
જિનેન્દ્રનાવચનો દેવાથી આમા આજ્ઞા સિદ્ધતા છે તેમજ અનુમાનથી પ્રસિદ્ધ
દેવા બદલ યુક્તિ સિદ્ધતા છે “ ધમ્મો મગલમુક્કિદ્ધ ” વગેરે ગાથા વડે
આમા જિનેન્દ્ર પ્રવચનરૂપ આગમતા પહેલા બતાવવામા આવી જ છે અને અનુ-

કિંચ શ્રમણસ્ય શાન્ત્યાદિદશવિધે ધર્મે તપસઃ પાઠો વર્તતે, તસ્માત્ તપોધર્મ
ઈતિ વિજ્ઞાયતે । તથાચોક્ત સમવાયાગસૂત્રે—(સમવાય ૧૦)

“ દસવિધે સમણધર્મે પળ્લસે, ત જહા—(૧) સ્વતી, (૨) મુત્તી (૩) અઙ્ગવે
(૪) મદ્દવે (૫) લાપવે (૬) સચ્ચે (૭) સજમે (૮) તવે (૯) ચિયાણ
(૧૦) વંભચેરવાસે ।

અહિંસાદીનાં જિનાણાપયોજ્યપ્રવૃત્તિસ્વરૂપસ્ય ધર્મલક્ષણસ્ય સદ્ભાવાદ્
ધર્મત્વ સિદ્ધ ।

ઉક્ત ધર્મસ્ય લક્ષણ, લક્ષ્યા અહિંસાદયમ્ પ્રોક્તાઃ, તન્નાહિંસાસયમતપોરૂપો ધર્મ
ઉત્કૃષ્ટ મદ્ગલ વોધ્યમ્ ।

તથાચોક્ત દશવૈકાલિકસૂત્રે—(પ્ર૦ અ૦ ૧)

“ ધમ્મો મગલમુક્ષિટ્ઠ અહિંસા સંજમો તવો ।

દેવાન્નિ ત નમસતિ જસસ ધમ્મે સયા મળો ॥ ”

કિં વહ અપને શરીર કો કૃશ કરેં એવ શારીરિક સુકુમારતા કા મોહ
હોડે । ઉત્તમ ક્ષમા આદિક જો શ્રમણોં કે દશપ્રકાર કે ધર્મ કહે ગયે
હેં, ઉનમેં તપ કા ખો કથન આયા હૈ, અતઃ તપ મેં ધર્મરૂપતા સિદ્ધ હી
હોતી હૈ । સમવાયાગ સૂત્ર મેં શ્રમણ કે દશ પ્રકાર કે ધર્મોં કા કથન
કરતે હુણ સૂત્રકાર ને યહી કહા હૈ—“ દસવિધે સમણધર્મે પળ્લસે,
તં જહા—સ્વતી, મુત્તી, અઙ્ગવે, મદ્દવે, લાપવે, સચ્ચે, સજમે, તવે,
ચિયાણ વંભચેરવાસે ।

હન અહિંસાદિકં મહાવ્રતોં મેં ધર્મરૂપતા હસલિયે સિદ્ધ હોની હૈ કિ
વહા પર જિનેન્દ્ર પ્રભુ કી આજ્ઞા પ્રયોજ્ય પ્રવૃત્તિરૂપ ધર્મ કે લક્ષણ કા
સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈ હસ પ્રકાર ધર્મ કા લક્ષણ ઓર ઉસકે લક્ષ્યભૂત
અહિંસાદિકોં કા કથન હૈ । યે અહિંસા, સયમ ઓર તપરૂપ ધર્મ હી

સુકુમારતાનો મોહ ત્યજી દે ઉત્તમ ક્ષમા વગેરે શ્રમણોના દશ પ્રકારના ધર્મ
કહેવામા આના છે તેઓમા તપનુ કથન છે એથી તપમા ધર્મરૂપતા સિદ્ધ
થાય જ છે સૂત્રકારે સમવાયાગ સૂત્રમા શ્રમણના દશ પ્રકારના ધર્મનુ કથન
કરતા આ પ્રમાણે જ કહ્યું છે—

“ દસવિધે સમણધર્મે પળ્લસે—ત જહા—સ્વતી, મુત્તી, અઙ્ગવે, મદ્દવે, લાપવે,
સચ્ચે, સજમે, તવે ચિયાણ વંભચેરવાસે । ”

આ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોમા ધર્મરૂપતા એટલા માટે સિદ્ધ થાય છે
કે તેઓમા જિનેન્દ્ર પ્રભુની આજ્ઞા પ્રયોજ્ય પ્રવૃત્તિ રૂપ ધર્મના લક્ષણનો સદ્
ભાવ છે આ રીતે ધર્મનુ લક્ષણ અને તેના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરે
અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મગળ ૩

“ ધર્માધર્મવ્યવસ્થાયા, શાસ્ત્રમેવ નિયામકમ્ ।

તદુક્તાઽઽસેવનાદ્ ધર્મસ્ત્વધર્મસ્તદ્વિપર્યયાત્ ॥ ” ઇતિ,

આગમ સે હી જાત કર સકતે હૈં । ઘટપટાદિકો કી તરહ ઉસે સ્પષ્ટ રૂપ સે દેખનહીં સકતે હૈં । ડસીલિયે વહ દુર્જેય હૈ । જો અનુમાન ઓર આગમ સે ગમ્ય હોતા હૈ વહ અગ્નિ આદિ કી તરહ કિસી ન કિસી કે પ્રત્યક્ષ હોતા હૈ યહ સ્પષ્ટ સિદ્ધાન્ત હૈ । તીર્થંકર પ્રમુ ને કિ જો રાગ ઓર દ્વેષ સે સર્વથા રહિત હૈં, ત્રિકાલવર્તી સમસ્ત પદાર્થોંકો જો હસ્તામલક વત્ સ્પષ્ટ જાનતે હૈં, ૩૫ વાણી કે અતિશય સે જો યુક્ત હૈં અપને કેવલજ્ઞાન ત્વી આલોક સે ઉસે વિશદરૂપ સે જાન લિયા હૈં । હમ છદ્મસ્થોં કે લિયે હનકે વચનોં કે સિવાય હસ વિષય કા નિયામક ઓર કુછ નહીં હૈ । અતઃ ઉનકે કથનાનુસાર હી ધર્મ ઓર અધર્મ કા સ્વરૂપ હમ સસારી જીવ જાન સકતે હૈં યા જાનતે હૈં । “ ધર્માધર્મવ્યવસ્થાયા શાસ્ત્રમેવ નિયામક, તદુક્તા સેવનાત્ ધર્મસ્ત્વધર્મસ્તદ્વિપર્યયાત્ ”-ધર્મ ઓર અધર્મ કે સ્વરૂપ કી વ્યવસ્થા કરને વાલે કેવલ સર્વજ્ઞભગવાન કે વચન સ્વરૂપ આગમ હી હૈ । અતઃ ઉનકે દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ કા સેવન કરના ધર્મ ઓર ઉસસે વિપરીત માર્ગ કા સેવન કરના અધર્મ હૈ

ભાવાર્થ-જીવોકો ધર્મકી પ્રાપ્તિ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા પ્રદર્શિત માર્ગ

સમજી શકીયે છીએ ‘ ઘટ પટ ’ વગેરેની જેમ તેને સ્પષ્ટ પણે જોઈ શકતા નથી એથી જ તે દુર્જેય છે જે અનુમાન અને આગમથી ગમ્ય હોય છે તે અગ્નિ વગેરેની જેમ કોઈને કોઈને પ્રત્યક્ષ હોય છે આ એક સ્પષ્ટ સિદ્ધાન્ત છે રાગ અને દેશથી સંપૂર્ણ પણે રહિત એવા તીર્થંકર પ્રભુએ-કે જેઓ ત્રિકાળવર્તી બધા પદાર્થોંને હસ્તામલકવત્ સ્પષ્ટ રીતે જાણે છે, ૩૫ વાણીના અતિશયથી જેઓ યુક્ત છે-પોતાના કેવળજ્ઞાન રૂપી આવોડથી તેને વિશદ રૂપથી જાણી લીધું છે અમારા જેવા છદ્મસ્થોંને માટે એમના વચનો સિવાય આ વિષયનો નિયામક ખીજો કોઈ નથી એથી અમે તેમના કથા સુજળ જ ધર્મ અને અધર્મનું સ્વરૂપ જાણી શકીયે છીએ “ ધર્માધર્મ-વ્યવસ્થાયા શાસ્ત્ર મેવ નિયામક, તદુક્તાસેવનાત્ ધર્મસ્ત્વધર્મસ્તદ્વિપર્યયાત્ ” ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપની વ્યવસ્થા કરનાર ફક્ત સર્વજ્ઞ ભગવાનના વચન સ્વરૂપ આગામો જ છે એથી તેમના વડે દર્શાવવામા આવેલા માર્ગનું સેવન કરવું એજ ધર્મ અને તેથી વિરુદ્ધ માર્ગનું સેવન કરવું અધર્મ છે ભાવાર્થ-સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા

માન્યત્વાત્, इति हेतुः । अर्हदादिवत् इति दृष्टान्तः । इह यो यो देवादिमान्यः स स उत्कृष्ट मङ्गल यथाऽर्हदादयः, 'तथा चाय धर्मः' इत्युपनयः, तस्माद् देवादि मान्यत्वादुत्कृष्ट मङ्गलमिति निगमनम् ।

वस्तुतस्तु धर्माधर्मस्वरूप सू. मत्यान्वयस्थैर्दुर्ज्ञेय, केवल सर्पेन रागादिदोष रहितेन पञ्चत्रिंशद्वचनातिशयस्य नेन केवलिना तीर्थकोण केवलालोकेन सुत्रेय भवति । छद्मस्थानां तु भगवद्वचनमेव नियामक, तथाचोक्तम्—

हैं—१ प्रतिज्ञा, २ हेतु, ३ दृष्टान्त, उपनय ४ और ५ निगमन । अर्हत भगवान की तरह देवादिकों द्वारा मान्य होने से अहिंसा, तप और सयमरूप धर्म उत्कृष्ट मंगल हैं ।

इस अनुमान वाक्य में “अहिंसा, सयम और तप रूप धर्म उत्कृष्टमंगल है” यह प्रतिज्ञा है “देवादिकों द्वारा मान्य होने से” यह हेतु है । “अर्हन्त की तरह” यह दृष्टान्त है पक्ष में हेतु के दुहराने से उपनय और प्रतिज्ञा के दुहराने से निगमन सिद्ध हैं जैसे—“जो जो देवादिकों द्वारा मान्य होता है वह २ उत्कृष्ट मंगल होता है जैसे अर्ह-त प्रभु—ये भी देवादिकों द्वारा मान्य हैं । इस प्रकार पक्ष में हेतु के दुहराने रूप उपनय है इसलिये “वे भी उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं” इस प्रकार प्रतिज्ञा के दुहराने रूप निगमनवाक्य है ।

વાસ્તવ મેં તો ધર્મ ઓર અધર્મ કા સ્વરૂપ સૂક્ષ્મ હોને સે હમ ડ્વચ સ્થોં કે લિયે અત્યંત પરીક્ષ હૈ—હસ લિયે હમ ડસે સિર્ફ અનુમાન યા

માન પ્રસિદ્ધતા આ પ્રમાણે સમજવી જોઈએ અનુમાનના પાંચ અંગો હોય છે—પ્રતિજ્ઞા ૧, હેતુ ૨, દૃષ્ટાન્ત ૩, ઉપનય ૪, અને નિગમન ૫,

અહીં ત ભગવાનની જેમ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવા બદલ અહિંસા, તપ અને સયમ રૂપ ધર્મ ઉત્કૃષ્ટ-મંગલ છે

આ અનુમાન વાક્યમાં “અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ઉત્કૃષ્ટ મંગલ છે” આ પ્રતિજ્ઞા છે ‘દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવાથી આ હેતુ છે અહીં તની જેમ’ આ દૃષ્ટાન્ત છે પક્ષમાં હેતુને જેવડાવવાથી ઉપનય અને પ્રતિજ્ઞાને જેવડાવવાથી નિગમન સિદ્ધ છે જેમકે “દેવ વગેરે દ્વારા જે જે માન્ય હોય છે તે તે ઉત્કૃષ્ટ-મંગલ હોય છે જેમ અહીં ત પ્રભુ પણ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય છે આથી તે પક્ષમાં હેતુને જેવડાવવાથી ઉપનય છે, માટે “તેઓ પણ ઉત્કૃષ્ટ મંગલ સ્વરૂપ છે” આથી તે પ્રતિજ્ઞાને જેવડાવવા રૂપ નિગમન વાક્ય છે

વસ્તુતઃ ધર્મ તેમજ અધર્મનું સ્વરૂપ સૂક્ષ્મ હોવાથી અમારા જેવા છદ્મરથો માટે તે અતીવ પરીક્ષ છે એથી અમે ક્રૂર તેને અનુમાન કે આગમથી

સ્વયમેવ ભગવતા-અહિંસાતંત્ર્યમતપસાં વર્મત્વ,તથા - તેપામૃતકૃષ્ણમદ્ગલસ્વરૂપ-
ત્વેન પ્રાધાન્ય ચ ઋણિત, તત્રાપ્યહિંસાયા.-સર્વધર્મમૂલત્વેન પ્રધાન્યાત્ પ્રથમ સ્થાન
પ્રદત્તમ્ । તસ્ય સર્વપ્રધાનસ્યાઽહિંસાધર્મસ્ય પટ્ટકાવોપમર્દનસાધ્યે મૂર્તિપૂજને
મૂલતઃ સમુચ્છેદ કેવલાલોકેન સાક્ષાત્ પશ્યન્ ભગવાનર્હન્ મૂર્તિપૂજનાર્થમાજ્ઞા પ્રદ
ધાદિત્યાકાશકુતુમિયાત્યન્તમસદેવ બોધ્યમ્ ।

સ્પષ્ટ રૂપ સે જ્ઞાન કે વિષય નહીં હો સકતે હિં । અતઃ, એસે વિષયો
મેં સર્વજ્ઞ કે ચચન હી પ્રમાણ કોટિ મેં અગીકાર કરનાં ચાહિયે ।

ભગવાન ને સ્વયં હી અહિંસા, સયમ ઓર તપ મેં ધર્મરૂપતા તથા
અકૃષ્ણ મગલરૂપ હોને સે પ્રધાનતા કહી હૈ । અહિંસા મેં જો પ્રધાન
રૂપતા કહી ગઈ હૈ ઉસકા મુખ્ય કારણ યહ હૈ કિ વહ સમસ્તધર્મો
કા મૂલ હૈ ઓર હસીલિયે ઉસે ડન્હો ને સર્વપ્રયત્નસ્વાન દિયા હૈ જત્ર
યહ વાત હૈ તો વિચારના ચાહિયે કિ ભગવા મૂર્તિપૂજા કી આજ્ઞા કૈસે
દે સકને હિં । ક્યોં કિ વહ પૂજા પટ્ટકાવ્ય કે જીયો કી વિરાધના સે
સા ય હોતી હૈ । હસ વિરાધના મેં અહિંસા ધર્મ કા મૂલતઃ હી અભાવ
સમાયો હુઆ હૈ । અર્થાત્ મૂર્તિપૂજા મેં ઉત્ત પ્રમુપતિવાદિન અહિંસા ધર્મ
કા સર્વથા ઉચ્છેદ હો જો જાતા હૈ-મૂર્તિપૂજા કરને વાલા પૂજક અહિંસા
ધર્મ કા રક્ષક નહીં હો સકતા હૈ-પ્રત્યુત ઉસે હિંસા કા હી દોષ લગતા
હૈ હસ પ્રકાર સ્વયં ભગવાન જય અપને કેવલ જ્ઞાન સે હસ વાત કો

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકારવા બેઠ્યો

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ
અકૃષ્ણ મગલરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બતાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા
દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનું
મૂળ છે અને એથી તેને યોગે સૌ પ્રથમ સ્થાન અપાયું છે બ્યારે એવી
વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવું બેઠ્યો કે ભગવાન મૂર્તિપૂજની આજ્ઞા ટેવી રીતે
આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો પટ્ટકાવના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય
હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મનો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ
થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા
ધર્મનો સંપૂર્ણ પછે ઉચ્છેદ જ થઈ બચે છે મૂર્તિપૂજ કરનાર પૂજારી અહિંસા
ધર્મનો રક્ષક થઈ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ
આવેલો પડે છે આ રીતે બ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

પર ચલનેસે હી હો સકતી હૈ, હસસે ત્રિપરીત માર્ગ પર ચલને સે નહીં । અતઃ જો જીવ ધર્મ કો સાક્ષાત્કાર કરના ચાહતે હેં ઉનકા કર્તવ્ય હૈ કિ વે સર્વજ્ઞ ભગવન દ્વારા કથિત માર્ગ કા સેવન કરે ઓર ઉસ સે ભિન્ન માર્ગ કા પરિત્યાગ કરે । હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ સે વે ધર્મ ઓર અધર્મ કે સ્વરૂપ કે જ્ઞાતા યન જાતે હેં । હસ કથન સે શકાકાર કી હસ આશકાકા યર્હા પરિહાર ક્રિયા ગયા હૈ કિ જો ઉસમેં પહિલે યદ્ય પ્રશ્ન ક્રિયા કિ અર્હિસાદિકોં મેં જો ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા હૈ વહ કિસ પ્રમાણ સે હૈ । સૂત્રકારને આગમ ઓર અનુમાન દોનો પ્રમાણોં સે ઉનમેં ઉત્કૃષ્ટ મગલતા સિદ્ધ કી હૈ હસ કથન સે ંક યાત ઓર હમેં યદ્ય જ્ઞાત હોતી હૈ કિ સર્વજ્ઞ કથિત સિદ્ધાન્ત કી જાચ કે લિયે જયતક તર્ક કા જોર ચલતા રહે બુદ્ધિમાન તયતક અપની તર્કણા કી કસોટી પર ઉસે કસતા રહે-પર જય તર્ક કી સમાપ્તિ હો જાવે-તર્કણા શક્તિ કુઠિત હો જાવે-તો ઉસ વ્યક્તિ કા કર્તવ્ય હૈ વહ આગમ પ્રમાણ સે હી ઉસ સિદ્ધાન્ત કા અનુસરણ કરે । ફિર ઉસે ઉસ વિષય મેં તર્ક કરને કી આવશ્યકતા નહીં હૈ ક્યોં કિ સૂક્ષ્માદિક પદોર્થ સર્વજ્ઞ કે સિવાય છદ્મસ્યોં કે

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર આલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઇ શકે તેમ છે, એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ એથી જે જીવો ધર્મનું પ્રત્યક્ષ દર્શન ઈચ્છતા હોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનું સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગનો ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઇ જાય છે આ કથનથી શકાકારની એ આશકાનો અહીં પરિહાર કરવામા આવ્યો છે કે જે તેમા પહેલા આ પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે કે અહિંસા વગેરે મા જે ઉત્કૃષ્ટ મગળ રૂપતા છે તે કયા પ્રમાણના આધારે છે ? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બંને-પ્રમાણો થી તેઓમા ઉત્કૃષ્ટ મગળતા સિદ્ધ કરી છે એ કથન વડે ખીજી આ વાતનું પણ જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યાં સુધી તર્કની શક્તિ કાયમ રહે જુદ્ધિમાનો ત્યાં સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા રહે-પણ જ્યાં તર્કની શક્તિ મદ થઇ જાય-તર્કણા શક્તિ કુઠિત થઇ જાય ત્યારે તે વ્યક્તિ ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નું અનુસરણ કરે પછી તે વિષયમા જ તેને મીનમેષ કરવી જોઇએ નહિ કેમ કે સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્યોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

સ્વયમેવ ભગવતા-અહિંસાસંયમતપસાં ધર્મત્ત્વ, તથા - તેષામુત્કૃષ્ટમન્ગલસ્વરૂપ-
ત્વેન પ્રાધાન્ય ચ વર્ણિત, તત્રાપ્યહિંસાયા.-સર્વધર્મમૂલત્વેન પ્રાધાન્યાત્ પ્રથમ સ્થાન
પ્રદત્તમ્ । તસ્ય સર્વપ્રધાનન્યાઽહિંસાધર્મસ્ય પટ્ટકાયોપમર્દનસાધ્યે મૂર્તિપૂજને
મૂલતઃ સમુચ્ચેદ કેવલાલોકેન સાક્ષાત્ પશ્યન્ ભગવાનર્હન્ મૂર્તિપૂજનાર્થમાજ્ઞા પ્રદ-
દ્યાદિત્યાકાશકુલુપમિવાત્યન્તમસદેવ ગ્રોધ્યમ્ ।

સ્પષ્ટ રૂપ સે જ્ઞાન કે વિષય નહીં હો સકતે હૈં । અતઃ એસે વિષયોં
મેં સર્વજ્ઞ કે વચન હી પ્રમાણ કોટિ મેં અગીકાર કરનાં ચાહિયે ।

ભગવાન ને સ્વયં હી અહિંસા, સયમ ઓર તપ મેં ધર્મરૂપતા તથા
ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપ હોને સે પ્રધાનતા કહી હૈં । અહિંસા મેં જો પ્રધાન
રૂપતા કહી ગઈ હૈં ઉસકા મુખ્ય કારણ યહ હૈં કિ વહ સમસ્તધર્મો
કા મૂલ હૈં ઓર હસીલિયે ઉસે ઉન્હો ને સર્વપ્રથમસ્થાન દિયા હૈં જય
યહ ખાત હૈં તો વિચારના ચાહિયે કિ ભગવા મૂર્તિપૂજા કી આજ્ઞા કેસે
દે સકને હૈં । કયોં કિ વહ પૂજા પટ્ટકાય કે જીરોં કી વિરાધના સે
સાધ્ય હોતો હૈં । ઇસ વિરાધના મેં અહિંસા ધર્મ કા મૂલતઃ હી અમાર
સમાધા હુઆ હૈં । અર્થાત્ મૂર્તિપૂજા મેં ઉસ પ્રભુપ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મ
કા સર્વથા ઉચ્ચેદ હો હો જાતા હૈં-મૂર્તિપૂજા કરને વાલા પૂજક અહિંસા
ધર્મ કા રક્ષક નહીં હો સકના હૈં-પ્રત્યુત ઉસે હિંસા કા હી દોષ લગતા
હૈં ઇસ પ્રકાર સ્વયં ભગવાન જય અપને કેવલ જ્ઞાન સે ઇસ ખાત કો

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકાર-
વા એછા

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ
ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બનાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા
દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનું
મૂળ છે અને એથી તેને મૌએ સૌ પ્રથમ સ્થાન અર્થુ છે બ્યારે એવી
વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવું એછા કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા દેવી રીતે
આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો પટ્ટકાયના છવોની વિરાધનાથી સાધ્ય
હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મતો, મુખ્યત્વે અલાવનો જ સમાવેશ
થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા
ધર્મનો સંપૂર્ણ પછે ઉચ્ચેદ જ થઈ બાક છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા
ધર્મનો રક્ષક થઈ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ
ઓડવો પડે છે આ રીતે બ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

પર ચલનેસે હી હો સકતી હૈ, દસસે ઝિપરીત માર્ગ પર ચલને સે નહીં । અતઃ જો જીવ ધર્મ કો સાક્ષાત્કાર કરના યાદતે ઈં ઉનકા કર્તવ્ય હૈ કિ વે સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગ કા સેવન કરં ઓર ઉસ સે ભિન્ન માર્ગ કા પરિત્યાગ કરે । હસ પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિ સે વે ધર્મ ઓર અધર્મ કે સ્વરૂપ કે જ્ઞાતા થન જાતે હિં । હસ કથન સે શકાકાર કી હસ આશકાકા યર્થ પરિહાર ક્રિયા ગયા હૈ કિ જો ઉસમેં પહિલે યદ્ પ્રશ્ન ક્રિયા કિ અહિંસાદિકોં મેં જો ઉત્કૃષ્ટ મગલરૂપતા હૈ વહ કિસ પ્રમાણ સે હૈ । સૂત્રકારને આગમ ઓર અનુમાન દોનો પ્રમાણોં સે ઉનમેં ઉત્કૃષ્ટ મગલતા સિદ્ધ કી હૈ હસ કથન સે એક યાત ઓર રમેં યદ્ જ્ઞાત હોતી હૈ કિ સર્વજ્ઞ કથિત સિદ્ધાન્ત કી જાચ કે લિયે જયતક તર્ક કા જોર ચલતા રહે બુદ્ધિમાન તયતક અપની તર્કના કી કસૌદી પર ઉસે કસતા રહે-પર જય તર્ક કી સમાપ્તિ હો જાવે-તર્કના શક્તિ કુઠિત હો જાવે-તો ઉસ વ્યક્તિ કા કર્તવ્ય હૈ વહ આગમ પ્રમાણ સે હી ઉસ સિદ્ધાન્ત કા અનુસરણ કરેં । ફિર ઉસે ઉસ વિષય મેં તર્ક કરને કી આવશ્યકતા નહીં હૈ કયોં કિ સૂક્ષ્માદિક પદોર્થ સર્વજ્ઞ કે સિવાય છદ્મસ્થોં કે

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર ચાલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઇ શકે તેમ છે , એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ એથી જ જીવો ધર્મનું પ્રત્યક્ષ દર્શન ઇચ્છતાહોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનું સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગના ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઇ જાય છે આ કથનથી શકાકારની એ આશકાનો અહીં પરિહાર કરવામા આવ્યો છે કે જે તેમા પહેલા આ પક્ષ કરવામા આવ્યો છે કે અહિંસા વગેરે મા જે ઉત્કૃષ્ટ મગળ રૂપતા છે તે કયા પ્રમાણના આધારે છે ? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બંને-પ્રમાણો થી તેઓમા ઉત્કૃષ્ટ મગળતા સિદ્ધ કરી છે એ કથન વડે ખીજા આ વાતનુ પશુ જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યા સુધી તર્કની શક્તિ કાયમ રહે બુદ્ધિમાનો ત્યા સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા રહે-પશુ જ્યારે તર્કની શક્તિ મદ થઇ જાય-તર્કણા શક્તિ કુઠિત થઇ જાય ત્યારે તે વ્યક્તિ ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નુ અનુસરણ કરે પછી તે વિષયમા જ તેને મીનમેળ કરવી જોઇએ નહિ કેમ કે સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્થોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

સ્વયમેવ ભગવતા-અહિંસાસંયમતપસાં ધર્મત્વ,તથા - તેપામુત્કૃષ્ટમંગલસ્વરૂપ
ત્વેન પ્રાવાન્ય ચ વર્ણિત, તત્રાપ્યહિંસાયા -સર્વધર્મમૂલત્વેન પ્રધાન્યાત્ પ્રથમ સ્થાન
પદત્તમ્ । તત્ત્વ સર્વપ્રધાનન્યાઽહિંસાધર્મસ્ય પદ્મકાયોપમર્દનસાધ્યે મૂર્તિપૂજને
મૂલતઃ, સમુચ્ચેદ કેવલાલોકેન સાક્ષાત્ પશ્યન્ ભગવાનર્હન્ મૂર્તિપૂજનાર્થમાજ્ઞા પ્રદ-
ધાદિત્યાકાશકુસુમમિત્રાત્પન્તમસદેવ વૌખ્યમ્ ।

સ્પષ્ટ રૂપ સે જ્ઞાન કે વિષય નહીં હો સકતે હૈ । અતઃ, એસે વિષયોં
મેં સર્વજ્ઞ કે વચન હી પ્રમાણ કોટિ મેં અગીકાર કરનાં चाहिये ।

ભગવાન ને સ્વયં હી અહિંસા, સંયમ ઓર તપ મેં ધર્મરૂપતા તથા
ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપ હોને સે પ્રધાનતા કહી હૈ । અહિંસા મેં જો પ્રધાન
રૂપતા કહી ગઈ હૈ ઉસકા મુખ્ય કારણ યહ હૈ કિ વહ સમસ્તધર્મોં
કા મૂલ હૈ ઓર હસીલિયે ઉસે ઉન્હો ને સર્વપ્રથમસ્થાન દિયા હૈ જય
યહ યાત હૈ તો વિચારનાં चाहिये કિ ભગવા મૂર્તિપૂજા કી આજ્ઞા કૈસે
દે સકતે હૈ । ક્યોં કિ વહ પૂજા પદ્મકાય કે જીયો કી વિરાધના સે
સાંચ હોતી હૈ । હસ વિરાધના મેં અહિંસા ધર્મ કા મૂલતઃ હી અભાવ
સમાપા હુઆ હૈ । અર્થાત્ મૂર્તિપૂજા મેં ઉસ પ્રભુપ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મ
કા સર્વથા ઉચ્ચેદ હો હો જાતા હૈ-મૂર્તિપૂજા કરને વાલા પૂજક અહિંસા
ધર્મ કા રક્ષક નહીં હો સકતા હૈ-પ્રત્યુત ઉસે હિંસા કા હી દોષ લગતા
હૈ હસ પ્રકાર સ્વયં ભગવાન જય અપને કેવલ જ્ઞાન સે હસ યાત કો

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકારવા બોધબો

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સંયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ
ઉત્કૃષ્ટ મંગલરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બતાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા
દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોંનું
મૂળ છે અને એથી તેને ઓએ ઓ પ્રથમ સ્થાન અર્ધ્યું છે બ્યારે એવી
વાત છે બ્યારે આપણે વિચારવું બોધબો કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે
આપી શકે તેમ છે ? કમ કે તે પૂજા તો પદ્મકાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય
હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મતો, મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ
થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા
ધર્મનો સંપૂર્ણ પછે ઉચ્ચેદ જ થઈ બાક છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા
ધર્મનો રક્ષક થઈ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ
ઓઢવો પડે છે આ રીતે બ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

एव लक्ष्याः समालोचिताः, इदानीमलक्ष्या उच्यन्ते—हिंसादौ जिनाज्ञाविरुद्धा प्रवृत्तिर्भवति लोकाणा तस्मादधर्मा हिंसादय एव तस्य धर्मलक्षणस्यालक्ष्या भवन्ति। धर्माधर्मस्वरूपोपधनार्थं हि भगवताऽऽनन्दके नाम—स्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो निक्षेपः प्रदर्शितः। तत्र भागवतश्रवणे एव तीर्थकराज्ञायाः सद्भावाद्

साक्षात् जानते हैं तो फिर वे ही मूर्तिपूजा करने की आज्ञा देंगे यह मान्यता आकाशपुष्पकी तरह सर्वथा असत्य ही है यह स्वयं समझने जैसी बात है जहाँ हिंसा है वहाँ धर्म नहीं है अहिंसामें ही सच्चाधर्म है।

इस प्रकार धर्म के लक्ष्यभूत अहिंसा आदि का यहाँ तक विचार किया। अब उससे विपरीत हिंसादिकों का विचार करते हैं—

हिंसा आदि पाप हैं—इन में प्रवृत्ति करने की आज्ञा जिन भगवान ने नहीं दी है फिर भी जो प्रवृत्ति करते हैं वे उस आज्ञा से बहिर्भूत हैं। अतः, जिनाज्ञा से विरुद्ध प्रवृत्ति होने से जीवों के लिये धर्म प्राप्ति के बदले इनसे अधर्म की ही प्राप्ति होती है। जिन से जीवों को अधर्म की प्राप्ति होती हो, वे स्वयं अधर्म हैं। हिंसादिक पापों में अधर्मता होने का कारण उनमें धर्म के लक्षण का अभाव है। इसीलिये ये धर्म के लक्षण के अलक्ष्य हुए हैं। इस धर्म और अधर्म के स्वरूप को समझाने के लिये भगवान ने आवश्यकसूत्र में नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव

વાતને સ્પષ્ટપણે પ્રત્યક્ષરૂપમા બાણે છે તો પછી તેઓ જ મૂર્તિપૂજા કરવાની આજ્ઞા આપે એવી માન્યતા આકાશ પુષ્પની જેમ સંપૂર્ણપણે અસત્ય જ સિદ્ધ થાય છે આપણે પોતે પણ આ વાત સમજી શકીએ તેમ છીએ કે બધા હિંસા છે ત્યાં ધર્મ નથી અહિંસામા જ સાચો ધર્મ છે

આ રીતે ધર્મના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરે ને માટે અહીં સુધી વિચાર કરવામા આવ્યો છે હવે આગળ તેથી વિરુદ્ધ હિંસા વગેરેની બાબતમા વિચાર કરવામા આવે છે—

હિંસા વગેરે પાપ છે—આમા પ્રવૃત્ત થવાની આજ્ઞા જિન ભગવાનને કોઇને પણ આપી નથી છતાં જેઓ તેમા પ્રવૃત્તિ કરે છે તેઓ તે આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત છે એથી જિનાજ્ઞાની પ્રતિકૂળ પ્રવૃત્તિ હોવાથી જીવોને ધર્મ પ્રાપ્તિના સ્થાને એમનાથી અધર્મની જ પ્રાપ્તિ થાય છે જીવોને જેનાથી અધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે તે પોતે અધર્મ છે હિંસા વગેરે પાપોમા અધર્મતા હોવાને લીધે તેઓમા ધર્મના લક્ષણોને અભાવ છે એટલા માટે જ તેઓ ધર્મના લક્ષણથી અલક્ષ્ય થયા છે આ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને સમજાવવા ને

ધર્મત્ત્વ, અન્યદિધેષ્વાવશ્યકેષુ રાગદ્વેષદિસાદિદોષસદ્ભાવેન મોક્ષમાર્ગોપદેશે પ્રવૃત્તરય તીર્થંકરરય ચાડ્ડણ્યા અભાવેન ન તત્ર ધર્મલક્ષણ સમનુગચ્છતિ, તેષાં મોક્ષસાધકસ્વાભાવાજ્ઞેનધર્મપદ લઘુ-મનર્હત્વાત્ । તથાચોક્તમનુયોગદ્વારે--

“સે કિં ત નામાવસ્સય ? । નામાવસ્સયં જસ્સ ણ જીવસ્સ વા અજીવસ્સ વા

કે ભેદ સે ૪ ચાર નિક્ષેપોં કા કથન ક્રિયા હૈ ઉનમેં નામ સ્થપના ઓર દ્રવ્યરૂપ ધર્મ નિક્ષેપ કે આરાધન કરને કી ભગવાન ને જીવોં કો આજ્ઞા નહીં દી હૈ વયો કિં હનસે જીવોં કો ધર્મ કી પ્રાપ્તિ નહીં હોતી હૈ । ધર્મ કી પ્રાપ્તિ કરાને ચાલા કેવલ ભાવ નિક્ષેપરૂપ આવશ્યક હૈ । હસકી આરાધના સે હી જીવોં કો ધર્મ પ્રાપ્ત હુઆ કરતા હૈ-અતઃ હસ મેં હી ધર્મરૂપતા પ્રકટ કી ગઈ હૈ ઘાત્રી કે હસકે અતિરિક્ત નિક્ષેપોં મેં-આવશ્યકો મેં રાગદ્વેષ ઓર હિંસા આદિ દોષોં કા સદ્ભાવ હોને સે એવ મોક્ષ માર્ગ કે ઉપદેશપ્રદાન કરને મેં પ્રવૃત્ત તીર્થંકરો કી હનકે આરાધન કરને મેં આજ્ઞા કા અભાવ હોને સે ધર્મ કે લક્ષણ કા સમન્વય હી નહીં હોતા હૈ । મુક્તિ કા જો સાધક હોતા હૈ વહી જૈન-ધર્મ હૈ । હન ૩ નિક્ષેપરૂપ આવશ્યકોં મેં મુક્તિ કી સાધકતા કા અભાવ હૈ-હસલિયે યે જૈનધર્મ કે પદકો સ્વપ્ન મેં બી પ્રાપ્ત નહીં કર કતે હૈં ।

અનુયોગદ્વાર મેં ઘટી ઘાત કહી ગઈ હૈ--

સે કિં ત નામાવસ્સય ? નામાવસ્સયં જસ્સ ણ જીવસ્સ અજીવસ્સ

આવશ્યકસૂત્રમા નામ, સ્થાપના દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી ચાર નિક્ષેપો તુ કથન કર્યું છે તેઓમા નામ, સ્થાપના, અને દ્રવ્યરૂપ ધર્મ નિક્ષેપને આગધવાની ભગવાને જીવોને આજ્ઞા આપી નથી કેમ કે એમનાથી જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી ધર્મની પ્રાપ્તિ ડરાવનારો કેવળ ભાવનિક્ષેપરૂપ આવશ્યક છે એની આરાધનાથી જ જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે એથી આમા જ ધર્મરૂપતા બતાવવામા આવી છે એના સિવાયના બીજા નિક્ષેપોમા-આવશ્યકોમા-રાગદ્વેષ અને હિંમા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ હોવાથી અને મેક્ષ માર્ગના ઉપદેશ આપવામા પ્રવૃત્ત તીર્થંકરોની એમની આરાધના કરવાની આજ્ઞાનો અભાવ હોવાથી ધર્મના લક્ષણોનો સમન્વય જ થતો નથી મુક્તિનો જે સાધક હોય છે તે જ જૈન-ધર્મ છે આ ૩ નિક્ષેપરૂપ આવશ્યકોમા મુક્તિની સાધકતાનો અભાવ છે માટે એઓ જૈન ધર્મના પદને સ્વપ્નમાયે મેળવા શકે નેમ નથી

અનુયોગદ્વારમા એ જ વાત કહેવામા આવી છે--

સે કિં ત નામાવસ્સય ? નામાવસ્સયં જસ્સ ણ જીવસ્સ અજીવસ્સ વા જીવાણ વા

जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्म वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नाम कज्जइ, से त नामावस्सय ।

अथ किं तत् नामावश्यक ? नामावश्यकं—यस्य खलु जीवस्य वा अजीवस्य वा जीवाना वा अजीवानां वा, तदुभयस्य वा तदुभयेषां वा आवश्यकमिति नाम क्रियते तदेतन्नामावश्यकम् ।

“ से किं त ठवणावस्सय ? जण्ण कट्ठकस्मे वा पोत्थकस्मे वा चित्तकस्मे वा लेप्पकस्मे वा गथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा सघादमे वा अवखे वा वराडए वा एगो वा अणोगो वा सम्भावठवणा वा असम्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से त ठवणावस्सय ।

छाया—अथ किं तत् स्थापनावश्यकम् ? स्थापनावश्यकं यत् खलु काष्ठकर्म वा पुस्तकर्म वा चित्रकर्म वा लेप्यकर्म वा ग्रन्थिम वा वेष्टिम वा पुरिम वा सङ्घातिम

वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नाम कज्जइ से त नामावस्सय ।

से किं त ठवणावस्सय ? जण्ण कट्ठकस्मे वा पोत्थकस्मे वा चित्तकस्मे वा लेप्पकस्मे वा गथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा सघादमे वा अवखे वा वराडए वा एगो वा सम्भावठवणा वा असम्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से त ठवणावस्सय

भाषार्थ—जीव, अजीव अथवा तदुभय स्वरूप आदि पदार्थों में “ यह आवश्यक है ” इस प्रकार नाम संस्कार करना वह जीव अजीव आदि नाम आवश्यक है इस नाम आवश्यक में आवश्यक के वास्तविक गुणादि कुछ भी नहीं होते हैं—सिर्फ लोक व्यवहार के लिये ही इस प्रकार की वहा पर निक्षेपविधि करली जाती है काष्ठ, पुस्तक चित्र

अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नाम कज्जइ से त नामावस्सय ।

से किं त ठवणावस्सय ? जण्ण कट्ठकस्मे वा पोत्थकस्मे वा चित्तकस्मे वा लेप्पकस्मे वा गथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा सघादमे वा अवखे वा वराडए वा एगो वा अणोगो वा सम्भावठवणा वा असम्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से त ठवणावस्सय ।

भाषार्थ—एव, अएव अथवा तदुभय स्वरूप वगैरे पदार्थों में “ या आवश्यक है ” या शीते नाम संस्कार करने के एव अएव वगैरे ‘ नाम आवश्यक ’ है या नाम आवश्यक या आवश्यक ना वास्तविकगुण वगैरे कुछ न होता नहीं इतना लोकव्यवहार ना भाटे न या जतनी त्या निक्षे

વા અક્ષ વા વરાટક વા ઇકો યા અનેકો યા સદ્ભાવસ્થાપના વા અસદ્ભાવસ્થાપના વા ' આવશ્યક ' -મિતિ સ્થાપના સ્થાપ્યતે, તદેતત્ સ્થાપનાવશ્યકમ્ ।

ભાવાવશ્યકસ્વરૂપશૂન્યે ગોપાલદારકાદૌ આવશ્યકેતિ નામકરણે નામના- નામમાત્રેણાવશ્યક નામાવશ્યક ગોપાલદારકાદિર્ભવતિ । સ્થાપનાઽપિ ભાવાવશ્યક

एव अक्ष-शतरज की गोटी आदि में एक अथवा अनेक आवश्यक क्रिया करने वाले श्रावक आदि को तदाकार अथवा अतदाकार लिखित चित्र स्थापना आवश्यक (निक्षेप) है यह स्थापना दो प्रकार की है एक सद्भाव स्थापना और २ दूसरी असद्भावस्थापना । सद्भाव स्थापना में जिसकी स्थापना की जाती है उसकी सर्व आकृति कोतरी रहती है-असद्भूत स्थापना में इस प्रकार की आकृति आदि नहीं रहती हैं वहां पर केवल सकेत ही है जैसे शतरज की गोटिया में यह प्यादा है यह बजीर है, यह हाथी है इत्यादि सिर्फ कल्पना ही कल्पना रहती है-वहां उनका कोई भी आकार कोतरा नहीं रहता है । नाम निक्षेप में जिस प्रकार भाव आवश्यक शून्यता रहती है उसी प्रकार स्थापना में भी यही बात रहती है किसी गोपाल (ग्वालिये) के लड़के का " आवश्यक " इस प्रकार का नाम जिस प्रकार भाव आवश्यक रहित नाम निक्षेप में है उसी प्रकार भाव आवश्यक के स्वरूप से शून्य स्थापना निक्षेप में भी " यह आवश्यक है " यह स्थापना निक्षेप है ।

આવે છે, કાષ, પુરતક, ચિત્ર અને અક્ષ-શતરજ ની સોગડી વગેરેમાં એક કે અનેક આવશ્યક ડિયા કરનાર શ્રાવક વગેરેનું તદાકાર કે અતદાકાર લેખિત ચિત્ર-સ્થાપન આવશ્યક (નિક્ષેપ) છે આ સ્થાપના બે પ્રકારની છે એક સદ્ભાવ સ્થાપના અને બીજી અસદ્ભાવ સ્થાપના સદ્ભાવ સ્થાપનામાં જેની સ્થાપના કરવામાં આવે છે તેની આકૃતિ સંપૂર્ણપણે કોતરેલી હોય છે અસદ્ભૂત સ્થાપનામાં આ બાતની આકૃતિ વગેરે રહેતી નથી ત્યાં ફક્ત ચક્રેતજ છે જેમ શેતરજની સોગડીઓમાં આ પાયદળ છે, આ વજ્ર છે, આ હાથી છે વગેરે ફક્ત કોરી કલ્પના જ હોય છે તેમાં તેમની કોઈપણ બાતની આકૃતિ કોતરેલી હોતી નથી નામ નિક્ષેપમાં જેમ ભાવ આવશ્યક શૂન્યતા રહે છે તેમજ સ્થાપનામાં પણ એ જ વાત હોય છે કોઈ ગોવાળિયાના પુત્રનું ' આવશ્યક ' આ બાતનું નામ જેમ ભાવ આવશ્યક રહિત નામ નિક્ષેપમાં છે તે પ્રમાણે જ ભાવ આવશ્યકતા સ્વરૂપથી શૂન્ય સ્થાપના નિક્ષેપમાં પણ " આ આવશ્યક છે " આ સ્થાપના નિક્ષેપ છે

સ્વરૂપશૂન્યે કાષ્ઠકર્માદૌ ક્રિયતે । અતો મા-શ-યે ત્રિયમાણત્વાદિશેષાદનયો
નાસ્તિ કશ્ચિદ્ ભેદ इत्याशयेनाह—

“જામદ્વવળાણ કો પડવિસેસો ? । છાયા-નામરથાપનયોઃ યઃ પ્રતિનિશેષઃ ।।
અત્રોત્તરમુચ્યતે—

‘જામ આવકહિઅ, ઠવળા ઇત્તરિઆ વા હોજ્જા આવકહિઆ વા’ ॥ છાયા-
નામ-યાવત્કથિક, સ્થાપના-ઇત્તરિકા વા ભવેદ્ યાવત્કથિકા વા ।

‘જામ આવકહિઅ’ નામ યાવત્કથિક-આશ્રયદ્રવ્યસ્થાસ્તિત્વકથા યાવ
દનુવર્તતે इत्यर्थः, સ્થાપના તુ ‘ઇત્તરિઆ વા’ ઇત્તરિઆ વા અલ્પકાલસ્થાયિની
વા ‘હોજ્જા’ સ્યાત્, યાવત્કથિકા વા, અય માયઃ-કાચિત્-સ્થાપના સ્વાશ્રય
દ્રવ્યસ્ય સદ્ભાવેડપિ, મધ્યકાલ એવ નિવર્તતે, કાચિત્-તત્સત્તા યાવદગતિષ્ઠતે

શકા—જિસ પ્રકાર માવ આવશ્યક કે સ્વરૂપ સે શૂન્ય ગાપાલ કે
લઢકે આદિ મેં “આવશ્યક” હસ પ્રકાર કા નામનિશેષરૂપ આવશ્યક
હે ઉસી પ્રકાર માવ આવશ્યકકે સ્વરૂપસે શૂન્ય કાષ્ઠધર્મ આદિકોં મેં મી
યહી ઘાત હે । અતઃ માવ આવશ્યકકે સ્વરૂપકી શૂન્યતાકી અપેક્ષા સે
હન દોનોમેં કોઈ મી અન્તર નહી હે । તો ફિર હન દોનોમેં કયા ભેદ હે !

ઉત્તર—“જામ આવકહિઅ ઠવળા ઇત્તરિઆ વા હોજ્જા આવકહિઆ-
વા” હસ પ્રકાર કી શકા ઠીક નહીં-કયોં કિ નામ યાવત્કથિત હોતા
હે સ્થાપના ઇત્તરિકા ઓર યાવત્કથિક દોનોં પ્રકાર કી હોતી હે । અપને
આશ્રયભૂત દ્રવ્યકા જવતક અસ્તિત્વ-સદ્ભાવ રહતા હે તવતક નામનિ
શેષ રહતા હે ! ઇત્તરિકા શબ્દ કા અર્થ અલ્પકાલીન હે ચિત્ર એવ અક્ષ
આદિકોં મેં યહ સ્થાપના અલ્પકાલીન હોતી હે । હસ પ્રકાર નામ ઓર

શકા—જેમ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય ગોવાળિયાના યુગ વગે
રેમા “આવશ્યક” આ જાતનુ નામ નિશેષ રૂપ આવશ્યક છે તેમજ ભાવ
આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય કાષ્ઠધર્મ વગેરેમા પણ એ જ વાત છે એથી ભાવ
આવશ્યકના સ્વરૂપની શૂન્યતાની દૃષ્ટિએ આ બનેમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત
નથી, ત્યારે આ બનેમા ભેદ શો છે ?

ઉત્તર—(જામ આવકહિઅ ઠવળા ઇત્તરિઆ વા હોજ્જા આવકહિઆ વા)
શકા યોગ્ય નથી કેમકે નામ યાવત્ કથિત હોય છે સ્થાપના ઇત્તરિકા અને
યાવત્કથિત બને પ્રકારની હોય છે પોતાને આશ્રયભૂત દ્રવ્યનુ બધા સુધી સદ્
ભાવ-અસ્તિત્વ રહે છે ત્યા લગી નામ નિશેષ રહે છે । ઇત્તરિકા શબ્દનો અર્થ
અલ્પકાલીન છે ચિત્ર અને અક્ષ (રમવાના પાસા) વગેરેમા એ સ્થાપના
અલ્પકાળ માટે હોય છે આ રીતે નામ અને સ્થાપનામા

ઈતિ । એવ ચ-નામસ્થાપનયોર્માત્રશૂન્યત્વેનાધારસામ્યેઽપિ ભેદઃ સ્વસ્વાવસ્થાનકાલ-
કૃત એવ ભગવતા પ્રદર્શિત । યદ્યપિ ગોપાલદારકાદૌ વિદ્યમાનેઽપિ કદાચિદ-
નેકનામપરિવર્તન લોકે વચ્ચિદ્ દૃશ્યતે, તથા ચ કાલકૃતોઽપિ ભેદો નાસ્તિ,
તથાપિ-ગ્રહ્યઃ સ્થલે નામ્નો યાવત્કથિશ્ચત્વમેવ દૃશ્યતે, નામ્નઃ પરાવર્તન તુ
વચ્ચિદ્વિરલતયોપલ્ભ્યતે । અતોઽલ્પસ્થલવ્યાપિત્વેન નામ્ન દ્વિરિકતા ભગવતા
ન વિચક્ષિતા । નામ્નોઽલ્પકાલિમ્તાકલ્પને તૃત્ત્વમ્પરુષણાપત્તિરિતિ વોધ્યમ્ ।

સ્થાપનામેં ભાવનિક્ષેપકી શૂન્યતાકી અપેક્ષાસે સમાનતા આતી હૈ તો ખી
અપનેર કાલકી અપેક્ષાસે ઇનમેં હમ પ્રકાર ભેદ-અન્તર માના ગયા હૈ ।

શકા—નામનિક્ષેપ મેં જો યાવત્કથિકતા પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ, વહ
ઠીક નહી હૈ-કારણ કિ હમ દેખતે હૈ નામવાન દ્રવ્ય-ગોપાલદારક
આદિ કે વિદ્યમાન રહતે હુએ ખી ઉસ મેં અનેક નામો કા પરિવર્તન
હોતા રહતા હૈ । કખી ઉસકા “આવશ્યક” યહ નામ હોતા હૈ, તો
“ઈન્દ્ર” યહ નામ રલ્લ લિયા જાતા હૈ । ફિર “આવશ્યક” હસ નામ
નિક્ષેપ મેં યાવત્કથિકતા કૈસે આ સકતી હૈ ?

ઉત્તર-શકા ઠીક હૈ હસ પ્રકાર સે વિચાર કરને પર કાલકૃત
અન્તર યદ્યપિ ઉન દોનોં મેં નહીં માલૂમ હોતા હૈ-તો ખી હસ વાત કી
યહાં પર વિચક્ષા નહી હૈ હસકા કારણ યહી હૈ કિ યહ નામપરિવર્તન
અલ્પસ્થલવર્તી હોનેસે વ્યાપ્ય હૈ । યહ વાત સવ જગહ નહીં હોતી । કહીં
ર હી હોતી હૈ યહ સામાન્યકથન હૈ-વિશેષ નહી । સામાન્યરૂપ સે નામ

શૂન્યતાની અપેક્ષાથી સમાનતા આવી જાય છે, છતાંયે પોતપોતાના કાળની
અપેક્ષાથી તેઓમા આ જાતનો ભેદ અન્તર માનવામા આવ્યો છે

શકા—નામ નિક્ષેપમા જે યાવત્કથિકતા જતાવવામા આવી છે, તે ઉચિત
નથી કારણ કે નામવાળુ ગોપાલદારક વગેરેના વિદ્યમાન રહેતા પણ તેમા
અનેક નામોનુ પરિવર્તન થતુ રહે છે કોઈ વખતે તેનુ નામ ‘આવશ્યક’
રાખવામા આવે છે તો કોઈ વખત ‘ઈન્દ્ર’ નામ રાખવામા આવે છે તો
પછી ‘આવશ્યક’ આ નામ નિક્ષેપમા યાવત્કથિત કેવી રીતે આવી શકે છે ?

ઉત્તર—શકા ઉચિત છે આ રીતે વિચાર કરવાથી જો કે કાળકૃત અન્તર
તેઓ ખનેમા જણાતુ નથી છતાંયે આ વાતની અહીં વિવક્ષા નથી એનુ
કારણ આ પ્રમાણે છે કે આ નામ પરિવર્તન અલ્પ-સ્થલવર્તી હોવાથી વ્યાપ્ય
છે, આ વાત બધે સ્થાને હોતી નથી કોઈક કોઈક સ્થાને જ હોય છે અહીં

યતુ-ઉપલક્ષણમાત્ર ચેદ કાલમદનેતયોર્ભેદકથનમ્-અપરસ્યાપિ વદુમકાર-
ભેદસ્ય સમ્ભવાત્, इत्युक्त, तदुत्सृजप्ररूपणम् यथोत्सृजप्ररूपणमभियानामनिक्षेपे
इत्वरिकताया. यच्चित् समवेऽपि भगवताऽनुक्तस्यादुपलक्षणमिति न स्वीकृतं तथैव
स्थापनाया कालातिरिक्तस्य भेदहेतोः कल्पनेऽप्युत्सृजप्ररूपणं प्रसज्येत कालान्यकृत

યાવત્કથિક હી હોતા હૈ । इसी अपेक्षा को लक्ष्य में रखकर भगवान ने
उसमे इत्वरिकता का कथन न कर केवल यावत्कथिकता का ही कथन
किया है यदि नाम में जो केवल इत्वरिकता ही मानी जावेगी-तो यह
बात सिद्धान्त से यहिर्भूत होने से मानने वाले के लिये उत्सृजप्ररूपणा
करने की आपत्ति का दोष आवेगा-क्यों कि शास्त्र में भगवान ने नाम
निक्षेप में केवल यावद्रूप्य भविता ही प्रदर्शित की है ।

જો વ્યક્તિ હસ શકા કા ઉસ પ્રકાર સે સમાધાન કરતે હૈં કિ
“કાલ કે ભેદ સે જો નામ ઓર સ્થાપના મે ભેદ કહા ગયા હૈં વહ
કેવલ ઉપલક્ષણ માત્ર હૈ-હસસે અન્ય અનેક પ્રકારોં સે બીં હન દોનોં મેં
પરસ્પર ભેદ હૈં વહ વાત જાની જોતી હૈ” સોં ઉનકા વહ કથન શાસ્ત્ર-
મર્યાદા કે વિરુદ્ધ હૈં જિસ પ્રકાર નામ નિક્ષેપ મેં કહી ૨ ઇત્વરિકતા
હોને પર બીં ભગવાન દ્વારા સ્વીકૃત ન હોને સે વહ ઉપલક્ષણરૂપ સે
સ્વીકૃત નહીં કી ગઈ હૈ-ઉસી પ્રકાર સ્થાપના મેં બીં કાલકૃત ભેદ કે

સામાન્ય કથન છે વિશેષ નહિ સામાન્ય રૂપથી નામ યાવત્ કથિત જ હોય
છે આ વાતને સામે રાખીને જ ભગવાને તેમા ઇત્વરિકતાનુ કથન ન કરતા
ફક્ત યાવત્કથિકતાનુ કથન કર્યું છે જે નામમા ફક્ત ઇત્વરિકતા જ માનવામા
આવશે તો આ વાત સિદ્ધાન્તની બહાર હોવાથી માનનાર માટે ઉત્સૂજ પ્રરૂ-
પણા કરવા રૂપ દોષ આવશે કેમકે શાસ્ત્રમા ભગવાને નામ નિક્ષેપમા ફક્ત
યાવદ્-રૂપ્ય-ભાવિતા જ બતાવી છે

જે માણસો આ શકાનુ સમાધાન આ પ્રમાણે કરે છે કે “કાલના
લેક્ષ્ય જે નામ અને સ્થાપનામા તક્ષવત બતાવવામા આવ્યો છે તે ફક્ત
ઉપલક્ષણ માત્ર છે એથી બીજા અનેક પ્રકારોથી પણ આ બનેમા પરસ્પર
તક્ષવત છે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે = જેથી તેમનુ આ કહેવું શાસ્ત્ર-મર્યાદાથી
વિપરીત છે જેમ નામ-નિક્ષેપમા કોઈક કોઈક ઠેકાણે ઇત્વરિકતા હોવા છતાંયે
ભગવાન વડે સ્વીકૃત ન હોવાથી તે ઉપલક્ષણ રૂપથી સ્વીકારવામા આવી નથી,
તેમ સ્થાપનામા પણ કાલકૃત ભેદ સિવાય બીજા વડે

ભેદસ્ય ભગવતાઽનુક્તત્વાત્ । एतेन—“ यत् कैश्चिदुक्तं यथा प्रतिमा रूपस्थापनादर्शनाद् भावः समुल्लसति नैव नामश्रवणमात्रादिति नामन्यापनयोर्भेदः, यथा चेन्द्रादेः प्रतिमारूपस्थापनाया, लोकरूपोपपाचितेऽत्र पूजाप्रवृत्ति समीहितलाभादयो-दृश्यन्ते, नैव नामेन्द्रादौ, इत्यपि तयोर्भेदः । एवमन्यदपि तावन्मिति तदुत्सृज्यप्रल

સિવાય અન્ય દ્વારા અન્તર ભેદ માનને મેં ઉત્સુત્ર પ્રરૂપણા કરને કા દોષ આતા હૈ, કારણ કિ ભગવાન ને કાલકૃત ભેદકે સિવાય સ્થાપના નિક્ષેપ મેં અન્ય ઔર કિસી દૂસરી અપેક્ષા સે ભેદ કા કથન નહીં કિયા હૈ इस प्रकार के कथन से “ यह बात भी जो दूसरों ने कही है कि नाम और स्थापना में इस प्रकार से भी भेद है—कि “ जिस प्रकार अर्हत की प्रतिमारूपस्थापना के देखने-दर्शन करने से भावों की जागृति होती है, उस प्रकार नाम निक्षेपरूप अर्हत नाम के सुनने से भावों की जागृति नहीं होती है । अथवा-इन्द्रादिक की प्रतिमारूप स्थापना में जिस प्रकार से लौकिकजनों की उस प्रतिमा से कुछ मागने की इच्छा उसके पूजन करने की भावना और उस प्रतिमा द्वारा उनके अभिलषित मनोरथों की पूर्ति होती हुई देखी जाती है उस प्रकार नामरूप इन्द्र में उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति और अभिलषित मनोरथों की पूर्ति होनी हुई नहीं देखी जाती है । इसी तरह और भी ऐसी कई बाने हैं जो नाम और स्थापना में अन्तर कराती है । यह सब कालकृत भेद के सिवाय

ઉત્સુત્ર પ્રરૂપણા રૂપ દોષ થઈ બાક છે કારણ કે ભગવાને કાલકૃત ભેદ સિવાય સ્થાપના નિક્ષેપમા બીજી કોઈ અન્ય દષ્ટિએ ભેદ-કથન કર્યું નથી આ બાતના કથનથી “ આ વાત પણ જે બીજાઓએ કહી છે કે નામ અને સ્થાપનામા આ રીતે પણ તફાવત છે કે “ જેમ અહીં તની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનાને લેવા એટલે કે દર્શન કરવાથી ભાવોની જાગૃતિ થાય છે, તેમ નામ નિક્ષેપ રૂપ અહીં તના નામને સાંભળવાથી પણ ભાવોની જાગૃતિ હોતી નથી અથવા તે ઇન્દ્ર વગેરેની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનામા જેમ લૌકિક માણુઓની તે પ્રતિમાથી કંઈક માગણી કરવાની ઇચ્છા, તેની પૂર્ણ કરવાની ભાવના અને તે પ્રતિમા વડે તેમના અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી દેખાય છે તેમ નામ રૂપ ઇન્દ્રમા તેમની આ બાતની પ્રવૃત્તિ અને અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી ભેવામા આવતી નથી આ પ્રમાણે બીજી પણ ઘણી બાબતો છે જે નામ અને સ્થાપનામા અતર કરાવે છે.

પણા જનિતાનન્તસમારજનક્રમ્ । આગમે યદિદમ્પ્રાઠમ્યતે-“ તદ્દાહવાણ અરહતાણ ભગવતાણ નામગોયમવળયાણ મહાફલં ।” ઇતિ, તત્ર નાસ્તિ નામનિક્ષેપસ્ય વિષયઃ । “ અરહતાણ ભગવતાણ ” ઇત્યુત્થયા તસ્મિન્નર્થે પ્રયુક્તસ્ય નામ્ન ઈત્યર્થેન મહા ફલસમ્ભવાત્, ગોપાલદારકાદૌ પ્રયુક્તસ્ય નામ્ન ઈત્યર્થેન તુ ગોપાલદારકાર્થ સ્થૈવ યોધાદાત્મપરિણામધુદિહેતુત્વ તસ્ય નાસ્તીતિ । નામનિક્ષેપસ્યલે ભગવતોઽ ઈતઃ સ્મરણાસમ્ભવઃ, તસ્ય ભાવગુન્યત્વાત્, અતઃ તુ નામગોત્રાભ્યા મગવદર્હતઃ સમ્બન્ધ પઠ્યન્તપદપ્રયોગાદેવ દર્શયતા ભગવતા નામનિક્ષેપો ન વિવક્ષિતઃ । ભાવજિન

નામ ઓર સ્થાપના મેં ભેદ કરપના કા કથન ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપક રોને સે અનન્ત સસાર કા જનક હૈ અતઃ હેય હૈ । “ તદ્દાહવાણ અરહતાણ ભગવતાણ નામગોયસવળયાણ મહાફલ ” આગમ મેં જો યહ સૂત્ર લિખા હુઆ દેલા હૈ ઉસકા અભિપ્રાય નામનિક્ષેપ પરક નહીં હૈ । અર્થાત્-હસ સૂત્ર સે નામ નિક્ષેપ કી પુષ્ટિ નહીં હોતો હૈ । યદિ સૂત્રકાર કો હસ સૂત્ર સે જો નામનિક્ષેપ કી પુષ્ટિ કરના ઇષ્ટ હોતા તો “ અરહતાણ ભગવ તાણ હસ પદ કે સ્વતન્ત્ર દેને કી કોઈ લાસ આવશ્યકતા નહીં થીં । અતઃ યહ યાન માનની ચાહિયે કિ અરહત ભગવાન કે હી નામગોત્ર કે શ્રવણ સે મહાફલ હોતા હૈ । કિસી ગોપાલ કે લઢકે મેં નિક્ષિપ “ અરહત ” હસ નામ કે સુને સે નહીં । ઉસ મેં પ્રયુક્ત મી ઉસ નામ કે શ્રવણ સે તો કેવલ ઉસ ગોપાલ દારકરૂપ અર્થ કા હી બોધ હોતા હૈ । “ અરહત ” યહ નામ જિસરૂપ કે સકેત સે અરિ-

આ બધુ કાલકૃત લેહ સિવાય નામ અને સ્થાપનામા લેહ કલ્પનાનુ કથન ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપક હોવાથી અનન્ત સસારનુ જનક છે એથી ત્યાજ્ય છે “ તદ્દાહવાણ અરહતાણ ભગવતાણ નામ ગોયસવળયાણ મહાફલ ” આગમમા જે આ સૂત્ર મળે તેનો અભિપ્રાય નામનિક્ષેપપરક નથી એટલે કે આ સૂત્ર પડે નામ નિક્ષેપ-પુષ્ટિ થતી નથી જે સૂત્રકારને આ સૂત્ર પડે નામ-નિક્ષેપની પુષ્ટિ કરવું ઇષ્ટ લાગતુ હોત તો “ અરહતાણ ભગવતાર્ણ ” આ પદને સ્વતન્ત્ર રૂપમા મૂકવાની કોઈ ખાસ આવશ્યકતા હતી નહિ એથી આ વાત માની લેવી જોઈએ કે અરહત ભગવાનના નામ ગોત્ર-શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે કોઈ ગોપાળના પુત્રમાં નિક્ષિપ “ અરહત ” આ નામને સામગવાથી નહિ તેમા પ્રયુક્ત પણ તે નામના શ્રવણથી તો ફક્ત તે ગોપાળના પુત્ર રૂપ અર્થ-નો જ બોધ હોય છે “ અરહત ” આ નામ જે રૂપના સકેતથી અનિહત પ્રભુમા સકેતિત થયુ છે-તે રૂપના સકેતથી જ ગોપાળના

હંત પ્રભુ મેં મકેતિત હુઆ છે-ઉસી રૂપ સે સકેત સે ગોપાલ કે પુત્ર મેં મકેતિત નહીં હુઆ છે ! લૌકિક વ્યવહારકે લિયે હી કેવલ “અરહત” એસા ઉસકા નામ કરલિયા ગયા છે. નામ નિક્ષેપ મેં જિસકા નિક્ષેપ કિયા જાતા છે ઉસ જાતિ કે દ્રવ્ય, ગુણ ઓર કર્મ-ક્રિયા આદિ નિમિત્ત કી અનવેક્ષા રહતી છે હમ નિમિત્ત કે સદ્ભાવ મેં વહ નામ નિક્ષેપ કા વિષય નહીં માના જાતાહે. ભાવ નિક્ષેપ કા હી વહ વિષય હોતા છે અતઃ યહ નિશ્ચિત હોતા છે કિ અરહત ભગવાન કે હી નામ ગોત્ર કે શ્રવણ કે મહાફલ સૂત્રકાર ને પ્રકટ કિયા છે યદિ નામનિક્ષેપ સે યહ ફલ પ્રાપ્ત હોને લગતા તો ફિર ભાવનિક્ષેપ કી આવશ્યકતા હી કયા થી. ઉસકે શ્રવણ માત્ર સે હી જીવોં કે આત્મિક ભાવોં મેં શુદ્ધિરૂપ મહાફલ કા લાભ હોને લગતા. તથા જિસકા “અરિહન” યહ નામ છે યહ સ્વયં અરિહત પ્રભુ કી તરફ મહાપવિત્ર, ૩૪ અતિશયોં સહિત ૮ પ્રાતિહાર્ય આદિ વિભૂતિ સપન્ન હો જાના. પરંતુ એસા નહીં હોતા છે અતઃ યહ માનના વાલિયે કિ યહ સૂત્ર ભાવનિક્ષેપ કી હી પુષ્ટિ વિધાયક છે-નામનિક્ષેપ કા નહીં. નામનિક્ષેપ સે ભગવાન અરિહત કી સ્મૃતિ ભી નહીં કરાઈ જાતી છે-કારણ કિ વહ નામનિક્ષેપ સ્વયં ઉસ પ્રકાર કે ભાવોં સે શૂન્ય છે. અનુભૂત પદાર્થ કી સ્મૃતિ હુઆ કરતી

થયુ નથી લૌકિક વ્યવહાર માટે ક્રુત “અરહત” આવુ નામ પાડવામા નામનિક્ષેપમા જેનો નિક્ષેપ કરવામા આવે છે તે જાતિના દ્રવ્ય, ગુણ અને કર્મ-ક્રિયા વગેરે નિમિત્તની અવેક્ષા રહે છે આ નિમિત્તના મદ્દલાવમા તે નામ-નિક્ષેપનો વિષય માનવામા આવતો નથી ભાવ નિક્ષેપનો જ તે વિષય હોય છે એથી એ મિદ્ધ થાય છે કે અરહત ભગવાનના જ નામ ગોત્રના શ્રવણથી જ સૂત્રકારે મહાક્ષણ બતાવ્યું છે જો નામનિક્ષેપથી આ મળ મળી શક્યુ હોત તો પછી ભાવનિક્ષેપની આવશ્યકતા જ, શી હતી ? તેના શ્રવણ માત્રથી જ છવેની આત્મિક ભાવોમા શુદ્ધિ રૂપ મહાક્ષણનો લાભ થવા માડતો તેમજ જેનુ “અરિહત” આ નામ છે તે પોતે અરિહત પ્રભુની જેમ મહા પવિત્ર, ૩૪ અતિશયો સહિત, ૮ પ્રતિહાર્ય વગેરે વિભૂતિઓથી સપન્ન થઇ જાત, પણ આવું થનુ નથી એથી એમ સમજી લેવુ જોઇએ કે આ સૂત્રથી ભાવનિક્ષેપની જ પુષ્ટિ થાય છે-નામ નિક્ષેપની નહિ નામ નિક્ષેપથી ભગવાન અરિહતની સ્મૃતિ પણ કરવામા આવતી નથી કારણ કે તે નામ-નિક્ષેપ બંને તે જાના ભાવોથી રહત છે અનુભૂત પદાર્થનુ સમજુ થવા કરે છે જેનુ

હે जिसका "अरिहंत" यह नाम रखा गया है उसके देने से अरिहंत की स्मृति हो भी कैसे सकती है-स्मृति तो अरिहंत की जब हो सकती कि जब उसमें उनकी स्मृति के बिहू होते-वह स्वयं उस प्रकार के हेतु हो सकती है माना कि श्रवण कर्त्ता शस्त्र आदिको में अरिहन्प्रभु के गुणों का वर्णन पढ़कर चित्त में उकेर कर भले ही "अरिहंत" इस नामके श्रवण से उनका स्मरण कर सकता है। परंतु गोपालदासकाही में कुल नाम से उनका स्मरण उसे नहीं हो सकता-उस नाम से तो उसमें ही संकेतित उस शब्द से उस गोपाल दारूप अर्थ का ही उसे बोध होगा। यदि अरिहंत नाम के सुनने से सुनने वाले को अरिहंत पदार्थ का भान होता हैतो वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना गया है भावनिक्षेप का ही वह विषय है। थोड़ा बहुत भी किमी अपेक्षा से सादृश्य होने पर एक पदार्थ को देखकर सदृश दूसरे पदार्थ का स्मरण हो जाता है परन्तु प्रकृत में गोपालदासरूप अरिहंत नामनिक्षेप में ऐसा कौन सा सादृश्य है जो वह अरिहंत का स्मरण करा सके। अतः नाम और गोत्र के साथ साक्षात् भगवान् अरिहंत का सब प्रपञ्ची विभक्ति द्वारा प्रदर्शित करने वाले सूत्रकार ने इस सूत्र में नामनिक्षेप का कोई

“अरिहंत” आ नाम राખવામા આવ્યું છે તેને જોવાથી અરિહંત સ્મૃતિ પણ કેવી રીતે થઈ શકે તેમ છે? સ્મૃતિ તો અરિહંતની ત્યારે જ થઈ શકે કે ત્યારે તેમા તેમની સ્મૃતિના ચિહ્નો હોય, તે પોતે આ જાતના ભાવોથી સંહિત થયેલા હોય ત્યારે તે કેવી રીતે તેમની સ્મૃતિનું કારણ થઈ શકે છે? આ વાત આપણે સ્વીકારી શકીએ તેમ છીએ કે શ્રવણ-કર્તા શાસ્ત્ર વગેરેમા અરિહંત પ્રભુના ગુણોનું વર્ણન વાંચીને ચિત્તમા ધારણ કરીને ભને ‘અરિહંત’ આ નામના શ્રવણથી તેમનું સ્મરણ કરી શકે છે પણ ગોપાળદાસક વગેરેમા કૃત નામથી તેનું સ્મરણ થઈ શકતું નથી તે નામ વડે તો તેમા જ સંકેતિત તે શબ્દથી તે ગોપાળદાસક રૂપ અર્થનો જ તે બોધ થશે જો અરિહંત નામ શ્રવણથી સાલગનારને અરિહંત પદાર્થોનું જ્ઞાન થાય છે ત્યારે તે નામનિષેપનો વિષય જાનવામા આવ્યો નથી ભાવનિષેપનો જ તે વિષય છે કોઈ પણ રીતે થોડું પણ સરખાપણું હોવાથી એક પદાર્થને જોઈને તેના સરખા બીજા પદાર્થનું સ્મરણ થઈ જાય છે પણ પ્રકૃતમા ગોપાળદાસક રૂપ અરિહંત નામનિષેપમા એવું કંઈ જાતનું સરખાપણું છે કે જે તે અરિહંતનું સ્મરણ કરાવી શકે? એથી નામ અને ગોત્રની સાથે સાક્ષાત્ ભગવાન અરિહંતનો સળધ પછી વિગતિત વડે દર્શાવનારા સૂત્રકારે આ સૂત્રમા નામનિષેપનો કોઈ પણ વિષય પ્રતિપાતિ કયો નથી

તથા ભક્ત્યા તામાકૃતિ સ્મરતો જનસ્ય ભાગ્યોદ્ધાસઃ સમચતુઃ તદાઽઽકૃતેર્ભાગિનેન સમન્ધાત્, પરતુ સ્થાપનાયા આશ્રયાશ્રયિભાગસમ્મન્થો નાસ્તિ ભાગિનેન સહ । ભાવજિનાત્મનસ્તગ્રાહન સ્થાપનંતુ જિનાગ્રાહ્ય પ્રયત્નવિરુદ્ધ ધર્તુમશક્ત્ય, કથ તર્હિ-ભાવજિનસમ્મન્ધાભાગે પ્રતિમા ભાગજિનતદ્ગુણ ગા સ્મારયિતુ શક્તા મવેત ।

કા ભાવોદ્ધાસ હોતા હૈ, ડમી પ્રકાર સે ભક્તિ કે આવેશ સે ખી ડનકી ડસ આકૃતિ કા ડસ સમય સ્મરણ કરને ચાહે પ્રાણી કો ડસ પ્રકાર કે ભાવોદ્ધાસ કા સદ્ભાવ હો સકતા હૈ । ડસકા નિપેધ નહી હૈ । ર્યોં કિ સ્મૃતિ કે આધારભૂત જિન પરમાત્મા ડસ કાલ મેં સ્વય વિધમાન હૈ । ડન કે અભાવ મેં ડહેં નહી દેખને ચાહે પ્રાણિયોંકો ખી ડનકી ડસ પ્રતિમા સે ડસી પ્રકાર કા ભાગ્યોદ્ધાસ હોતા હૈ યહ માન્યતા કેવલ ઇક કલ્પના માત્ર હૈ વાસ્તવિક નહીં । ડસકે સમાધાન કે નિમિત્ત જો યહ કહા જાતા હૈ કિ ડસ પાપાણ પ્રતિમા મેં જિન ભગવાન કી આત્મા કા મન્ત્રાદિકોં દ્વારા આહ્વાન કિયા જાતા હૈ અતઃ ડસ પ્રતિમા કે દર્શન સે સાક્ષાત્ ભાવ જિનકે હી દર્શન હોતે હૈ સો યહ માન્યતા સર્વથા અસત્ય હૈ-કારણ કિ મોક્ષ મેં પ્રાપ્ત આત્માઓં કા પાપાણ આદિ પ્રતિમાઓં મેં અપની માન્યતા સિદ્ધ કરને કે લિયે આહ્વાન આદિ માનના ગર્વયા જિનસિદ્ધાન્ત સે વિરુદ્ધ હૈ મોક્ષ પ્રાપ્ત આત્માઁ કહી પર ખી કિસી ખી કાલ મેં આહ્વાન કરને સે નહી આતી હૈં ઇસી જિન શાસન કી આજ્ઞા હૈ ડસ તરહ સે ડસ પાપાણ આદિ કી આત્માઓં કા

છે, તેમ ભક્તિના આવેશથી પણ તેમની એ આકૃતિનુ તે સમયે સ્મરણ કરનાર પ્રાણીને તે જાતના ભાવોદ્ધાસની અનુભૂતિ થઈ શકે છે આને નિપેધ નથી કેમકે સ્મૃતિમા તે આકૃતિના આધારભૂત જન પરમાત્મા તે કાળમા જાતે વિધમાન છે તેમના અભાવમા તેમને નહિ જોનારા પ્રાણીઓને પણ તેમની તે પ્રતિમાથી તે પ્રમાણેનો જ ભાવોદ્ધાસ થાય છે, આ માન્યતા ફક્ત એક કોરી કલ્પના જ છે, વાસ્તવિક નથી જોના સમાધાન માટે જે આમ કહેવામા આવે છે કે તે પથ્થરની પ્રતિમામા જન ભગવાનના આત્માનુ મત્રો વગેરેથી આવાહન કરવામા આવે છે, જોથી તે પ્રતિમાના દર્શનથી પ્રત્યક્ષ ભાવજન ના જ દર્શન થાય છે, તો આ માન્યતા સાવ અસત્ય છે કારણ કે મોક્ષમા પ્રાપ્ત આત્માઓનુ પથ્થર વગેરે પ્રતિમાઓમા પોતાની માન્યતા સિદ્ધ કરવા માટે આહ્વાહન વગેરે માનવુ તે તો જન સિદ્ધાન્તથી સાવ વિરુદ્ધ છે મોક્ષ પ્રાપ્ત આત્માઓ કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ કાળે આવાહન કરવાથી આવતા નથી, એવી જન શાસનની આજ્ઞા છે આ રીતે તે પથ્થર ના

સર્વથા કુપ્રાવચનિકદ્રવ્યાવશ્યકૃત્વ પ્રતિમાપૂજન કુર્વન્તઃ કારયન્તથ મિથ્યા-
દૃષ્ટિવ પ્રાપ્નુન્તિ ન તુ સમ્પત્ત્વમિતિ ।

દ્રવ્યાવશ્યક-દ્વિવિધ-આગમતો નોઆગમતથ । યસ્ય જન્તોરાવશ્યકશાસ્ત્ર
શિક્ષિતાદિગુણોપેત ભવતિ, સ જન્તુસ્ત્રાવશ્યકશાસ્ત્રે શિષ્યાધ્યાપનરૂપયા વાચનયા
ગુરુ પ્રતિમશ્રવણયા મચ્છનયા, પુનઃ પુનઃ સૂત્રાર્થાભ્યાસરૂપયા પરાવર્તનયા, તથા

અહ્વાન હોને સે આના માન લિયા જાય તો ફિર उस प्रतिमा में सजी-
वता मानने में क्या दोष है इसलिये यह स्वीकार करना ही चाहिये ।
कि भावजिन के अभाव में वह प्रतिमा भावजिन एव उनके गुणों का
स्मरण करवाने में सर्वथा समर्थही है । जय यह निश्चित मिद्धान्त है तो
फिर इसकी पूजनादि करने कराने से जो मनुष्य समर्पित की प्राप्ति
होना मानते हैं वे उस विधवा कि दशा जैसे हैं जो अपने पति की
फोटो या मूर्ति के दर्शन एव सहवास आदि से सन्तान की उत्पत्ति की
कामना करती हो । इसलिये कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक की तरह
यह प्रतिमापूजनादि कर्म करने कराने वाले दोनों ही जन मिथ्यात्वरूप
दृष्टि के ही पात्र हैं, सम्यक्त्व के नहीं ।

द्रव्य निक्षेपरूप आवश्यक, आगम और नोआगम के भेद से दो
प्रकार का है । उसमे जिस प्राणी के आवश्यक शास्त्र शिक्षितादिगुणों
से युक्त है वह प्राणी उस आवश्यक शास्त्र में, शिष्यों का पढानेरूप

તે આત્માઓનું આવાહન હોવાથી આવવું માની લઇએ તો પછી તે પ્રતિ-
માને સજીવ માનવામા શેા વાધો છે? એટલા માટે આપણે આ વાત ન્વીકાર-
વી જ નોડીએ કે ભાવજીનના અભાવમા તે પ્રતિમા ભાવજીન અને તેમના
શુશ્રોણુ ક્ષમણુ ડરાવવામા મ પૂર્ણપણે સમર્થ જ છે ન્યારે આ મિધ્ધાન્ત નિશ્ચિત
રૂપે માન્ય થયેલો છે ત્યારે તેનું પૂજન વગેરે કરાવવાથી જે લોકો મમઝિતની
પ્રાપ્તિ થવી માને છે તેમની તો વિધવા જેવી દશા છે કે જે પોતાના પતિની
છબી કે મૂર્તિના દર્શન અને સહવાસ વગેરેથી સતાન મેળવવાની ઇચ્છા કરતી
હોય । એટલા માટે કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ આ પ્રતિમા પૂજન
વગેરે કાર્ય કરનાર તેમજ કરાવનાર બંને માણસો મિથ્યાત્વ રૂપ દૃષ્ટિના જ
પાત્ર છે, સમ્યક્ત્વના નથી

દ્રવ્ય નિક્ષેપ રૂપ આવશ્યક આગમ તેમજ નોઆગમના ભેદથી બે
પ્રકાર છે તેમા જે પ્રાણી આવશ્યક શાસ્ત્ર શિક્ષિત વગેરે શુશ્રોથી યુક્ત છે તે
પ્રાણી તે આવશ્યક શાસ્ત્રમા શિષ્યોને ભણાવવા રૂપ વાચનાથી, શરૂ-પ્રતિ તદ્

ધર્મરૂપયા વર્તમાનોપ્યનુપયોગે સતિ આગમતો દ્રવ્યાદયકમ્, 'અનુપયોગો દબ્' इति उच्यते । अनुपयोगो भावशून्यता ।

વાચના સે, ગુરુ કે પ્રતિ તદ્વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણરૂપ પૃચ્છના સે વાર વાર સૂત્ર ઓર અર્થ કે અભ્યાસરૂપ પરાવર્તન સે તથા ધર્મરૂપા સે વર્તમાન હોતા હુઆ મી અનુપયુક્ત અવસ્થાસપન્ન હોને સે આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । અનુપયોગ કા નામ હી દ્રવ્ય હૈ ।

ભાવાર્થ—“ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણ તુ યહ્લોકે તદ્-વ્યમ્” યહ દ્રવ્યનિક્ષેપ કા લક્ષણ હૈ । ભૂતપર્યાય યા ભવિષ્યત્ પર્યાય કા જો કારણ આધાર હોતા હૈ, વહ દ્રવ્ય હૈ જિસ પ્રકાર કિસી રાજા કે યુવરાજ કો રાજા કહ દિયા જાતા હૈ યદ્યપિ વહ અમી વર્તમાન મૈ રાજારૂપપર્યાય સે યુક્ત નહીં હૈ—આગે ઉસે રાજપર્યાય પ્રાપ્ત હોગી, પરન્તુ ફિર મી ઉસે વ્યવહાર મૈ લોગ રાજા કહતે હૈ । યહ ભવિષ્યત્ પર્યાય કી અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપકા વિષય હૈ । જોપહિલે રાજા થા—કારણ વજ જય વહ રાજાગદી કા પરિત્યાગ કર દેતા હૈ—તથા મી લોગ ઉસે રાજા કહતે હૈ । યહા ઉસ રાજા મૈ યદ્યપિ વર્તમાન સમય મે રાજપર્યાય સે યુક્તતા નહીં હૈ તૌ મી ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે હી ઉસે રાજા કહા જાતા હૈ । યહ ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે રાજપર્યાય કા આધાર હોને કે કારણ દ્રવ્ય નિક્ષેપ કા વિષય હૈ પ્રકૃત મે હસ નિક્ષેપ કી આયોજના હસ પ્રકાર સે

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણ રૂપ પૃચ્છનાથી, વારવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવર્તનથી તથા ધર્મરૂપાથી વર્તમાન હોવા છતાંયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનું નામ જ દ્રવ્ય છે

ભાવાર્થ—“ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણ તુ યહ્લોકે તદ્ દ્રવ્યમ્” આ દ્રવ્ય નિક્ષેપનું લક્ષણ છે ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત્ પર્યાયનો જે કારણ આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે જેમ કોઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામાં આવે છે એ કે તે વર્તમાનમાં રાજા રૂપ પર્યાયથી યુક્ત નથી આગળ તેને રાજા પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાંયે તેને વ્યવહારના લોકો રાજા કહે છે આ ભવિષ્યત્ પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે જે પહેલા રાજા હતો—પણ કોઈ કારણસર રાજાગદીનો તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણ લોકો તેને રાજા કહે છે અહીં તે રાજામાં એ કે વર્તમાન સમયમાં રાજા પર્યાયથી યુક્તતા નથી છતાંયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામાં આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામાં આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજાપર્યાયનો આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે પ્રકૃતમાં આ

જવ નો આગમનો દ્રવ્યાવશ્યકગુન્યતે-અવ નો શબ્દ સર્વથા પ્રતિપેદ્ય દેશતઃ પ્રતિપેદ્યપિ ચ વર્તતે । તથા ચ સર્વથા-આગમાભાવમાશ્રિત્ય દ્રવ્યાવશ્યક, તથા હોતી છે કિ જો વર્તમાન મેં આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જ્ઞાતા નહીં છે આમે મદિવ્યત્ કાલ મેં વસ શાસ્ત્ર કા જ્ઞાતા હોમે વસે તથા જો મૃતકાલ મેં વસ શાસ્ત્ર કા જ્ઞાતા થા અવ વર્તમાન કાલ મેં વસકા જ્ઞાતા નહોં છે-વસે આવશ્યક હમ પ્રકાર જાનના યા કહના યદ્રવ્યનિક્ષેપ કી અપેક્ષા આવશ્યક છે । હમકે મૂલ મેં દો મેદ હેં ? આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ ઓર દૂસરા નો આગમદ્રવ્યનિક્ષેપ । આવશ્યક શાસ્ત્ર આદિ કા જો જ્ઞાતા હો, શિષ્યોં કો જો વસે પઢાતા હો, વસ વિષયક ગુરુ આદિ કે નિકટ જો તાત્ત્વિક ચર્ચા આદિ મી કરતા હો હસ પ્રકાર વાચના, પ્રચ્છના-પર્ય-ટના અનુપ્રેક્ષા ઓર ધર્મોપદેશરૂપ પાંચો પ્રકાર કે સ્વાધ્યાય સે જો વસકી પર્યાલોચના કર રહા છે-પરંતુ વસમે વપયોગ નહોં છે-અનુપયુક્ત છે વહ આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે । હસમે આવશ્યક શબ્દ કે અર્થ કા જ્ઞાન હી આગમરૂપ સે વિવક્ષિત છે । અતઃ આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જ્ઞાતા હોતા હુઆ મી વસમે અનુપયુક્ત આત્મા આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે યહ વાત નિશ્ચિત હુઈ ।

નો આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હસ પ્રકાર છે-જહા આગમ કા સર્વથા અભાવ યા આગમ કે ંક દેશ કા અભાવ વિવક્ષિત હોતા

જના એ રીતે હોય છે કે વતમાનમા જે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તે જાસ્ત્રનો જ્ઞાતા થશે તેને તેમજ જે ભૂતકાળમા તે જાસ્ત્રનો જ્ઞાતા હતો હમણા વર્તમાનકાળમા તેનો જ્ઞાતા નથી તેને, ' આવશ્યક ' આ રીતે જાણવું કે કહેવું આ દ્રવ્યનિક્ષેપની અપેક્ષાએ આવશ્યક છે એના મૂળ રૂપે બે લેહો છે-૧ આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ અને બીજો નો આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ આવશ્યક શાસ્ત્ર વગેરેનો જે જ્ઞાતા હોય, જે શિષ્યોને ભણાવતો હોય, તદ્દ વિષયક શુદ્ધ વગેરેની પાસે જઈને જે તાત્ત્વિક અર્થો વગેરે થણ કરતો હોય, આ રીતે વાચના, પ્રચ્છના, પર્યટના, અનુપ્રેક્ષા અને ધર્મોપદેશ રૂપ પાંચે જાતના સ્વાધ્યાયથી જે તેની પર્યાલોચના કરી રહ્યો છે, થણ તેમા તેનો ઉપ યોગ નથી, અનુપયુક્ત છે, તે આગમની અપેક્ષાદ્રવ્ય ' આવશ્યક ' છે એમા આવશ્યક સમ્પદના અર્થનું જ્ઞાન જ આગમ રૂપથી વિવક્ષિત છે એવી આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાતા હોવા છતાંયે તેમા અનુપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, આ વાત સિદ્ધ થઈ છે

નો આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક એ પ્રમાણે છે કે જ્યાં આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ છે આગમના એક દેશનો અભાવ વિવક્ષિત હોય છે તે નો

ધર્મક્રયા વર્તમાનોપ્યનુપયોગે સતિ આગમતો દ્રવ્યાવશ્યકમ્, 'અનુપયોગો દ્રવ્ય' ઇતિ વચનાત્ । અનુપયોગો માત્રાન્યતા ।

વાચના સે, ગુરુ કે પ્રતિ તદ્વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણરૂપ વૃત્તના સે ચાર ચાર સૂત્ર ઓર અર્થ કે અભ્યાસરૂપ પરાવર્તન સે તથા ધર્મક્રયા સે વર્તમાન હોતા હુઆ મી અનુપયુક્ત અવસ્થાસપન્ન હોને સે આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । અનુપયોગ કા નામ હી દ્રવ્ય હૈ ।

ભાવાર્થ—“ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણ તુ યલ્લોકે તદ્ દ્રવ્યમ્” યહ દ્રવ્યનિક્ષેપ કા લક્ષણ હૈ । ભૂતપર્યાય વા ભવિષ્યત્ પર્યાય કા જો કારણ આધાર હોતા હૈ, વહ દ્રવ્ય હૈ જિસ પ્રકાર કિસી રાજા કે યુવરાજ કો રાજા કહ દિયા જાતા હૈ યદ્યપિ વહ અમી વર્તમાન મૈ રાજારૂપપર્યાય સે યુક્ત નહીં હૈ—આગે ઉસે રાજપર્યાય પ્રાપ્ત હોગી, પરન્તુ ફિર મી ઉસે વ્યવહાર મૈ લોગ રાજા કહતે હૈ । યહ ભવિષ્યત્ પર્યાય કી અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપકા વિષય હૈ । જોપહિલે રાજા થા—કારણ વજ જય વહ રાજાગદી કા પરિત્યાગ કર દેતા હૈ—તવ મી લોગ ઉસે રાજા કહતે હૈ । યહાં ઉસ રાજા મૈ યદ્યપિ વર્તમાન સમય મે રાજપર્યાય સે યુક્તતા નહીં હૈ તૌ મી ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે હી ઉસે રાજા કહા જાતા હૈ । યહ ભૂતકાલ કી અપેક્ષા સે રાજપર્યાય કા આધાર હોને કે કારણ દ્રવ્ય નિક્ષેપ કા વિષય હૈ પ્રકૃત મે હસ નિક્ષેપ કી આયોજના હસ પ્રકાર સે

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણ રૂપ વૃત્તનાથી, વારવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવર્તનથી તથા ધર્મક્રયાથી વર્તમાન હોવા છતાંયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનું નામ જ દ્રવ્ય છે

ભાવાર્થ—“ભૂતસ્ય ભાવિનો વા ભાવસ્ય હિ કારણ તુ યલ્લોકે તદ્ દ્રવ્યમ્” આ દ્રવ્ય નિક્ષેપનું લક્ષણ છે ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત્ પર્યાયનો જે કારણ આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે જેમ કોઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામાં આવે છે એ કે તે વર્તમાનમાં રાજા રૂપ પર્યાયથી યુક્ત નથી આગળ તેને રાજા પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાંયે તેને વ્યવહારમાં લોકો રાજા કહે છે આ ભવિષ્યત્ પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે જે પહેલાં રાજા હતો—પણ કોઈ કારણસર રાજગાદિનો તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણ લોકો તેને રાજા કહે છે અહીં તે રાજામાં એ કે વર્તમાન સમયમાં રાજા પર્યાયથી યુક્તતા નથી છતાંયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામાં આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામાં આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજાપર્યાયનો આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિક્ષેપનો વિષય છે પ્રકૃતમાં આ

जय नोआगमतो द्रव्यावश्यकमुच्यते-जय नो शब्दः सर्वथा प्रतिषेधे देशतः प्रतिषेधेऽपि च वर्तते । तथा च सर्वा-आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यक, तथा होती है कि जो वर्तमान में आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नहीं है आगे भविष्यत् काल में उस शास्त्र का ज्ञाता होंगे उसे तथा जो भूतकाल में उस शास्त्र का ज्ञाता या अब वर्तमान काल में उसका ज्ञाता नहीं है-उसे आवश्यक इस प्रकार जानना या कहना यहद्रव्यनिक्षेप की अपेक्षा आवश्यक है । इसके मूल में दो भेद हैं ? आगम द्रव्य निक्षेप और दूसरा नोआगमद्रव्यनिक्षेप । आवश्यक शास्त्र आदि का जो ज्ञाता हो, शिष्यों को जो उसे पढ़ाता हो, उस विषयक गुरु आदि के निकट जो तान्त्रिक चर्चा आदि भी करता हो इस प्रकार वाचना, प्रच्छन्ना-पर्यटना अनुप्रेक्षा और धर्मोपदेशरूप पांचो प्रकार के स्वाध्याय से जो उसकी पर्यालोचना कर रहा है-परन्तु उसमें उपयोग नहीं है-अनुपयुक्त है वह आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है । इसमें आवश्यक शब्द के अर्थ का ज्ञान ही आगमरूप से विवक्षित है । अतः आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता होता हुआ भी उसमें अनुपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है यह बात निश्चित हुई ।

नो आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक इस प्रकार है-जहा आगम का सर्वथा अभाव या आगम के एक देश का अभाव विवक्षित होता

जना ये शीते होय छे के वर्तमानमा के आवश्यक शास्त्रनो ज्ञाता नथी, भविष्यकालमा ते शास्त्रनो ज्ञाता थये तेने तेमज के भूतकालमा ते शास्त्रनो ज्ञाता छेतो । उमण्ठा वर्तमानकालमा तेनो ज्ञाता नथी तेन, 'आवश्यक' आ शीते जलजु के छडेजु आ द्रव्यनिक्षेपनी अपेक्षाये आवश्यक छे जेना भूण इपे जे छेदे छे-१ आगम द्रव्य निक्षेप अने गीते नोआगम द्रव्य निक्षेप आवश्यक शास्त्र वगेरेनो के ज्ञाता होय, के शिष्येने लण्ठावतो होय, तद् विषयक गुड वगेरेनी पासे जधने के तान्त्रिक अर्था वगेरे पणु करतो होय, आ शीते वाचना, प्रच्छन्ना, पर्यटना, अनुप्रेक्षा अने धर्मोपदेश इप पाये जतना स्वाध्यायथी के तेनी पर्यालोचना करी रह्यो छे, पणु तेमा तेनो उपयोग नथी, अनुपयुक्त छे, ते आगमनी अपेक्षाद्रव्य 'आवश्यक' छे जेमा आवश्यक राखटना अर्थानु ज्ञान ज आगम इपथी विवक्षित छे जेदी आवश्यक शास्त्रना ज्ञाता होवा छताये तेमा अनुपयुक्त आत्मा आगमनी अपेक्षा द्रव्य आवश्यक छे, आ बात सिद्ध थई छे

नोआगमनी अपेक्षा द्रव्य आवश्यक जे प्रमाणे छे के जया आगमनो स पूरुपणु अभाव के आगमना जेद देशनो अभाव विवक्षित होय छे ते नो

દેશત આગમાભાસાશ્રિત્ય દ્રવ્યાવશ્યક ચ-નો-આગમનો દ્રવ્યાવશ્યકમ્ । તત્-ત્રિવિ-
ધમ્-જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીરદ્રવ્યાવશ્યક, તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક ચેતિ ।

હૈ-વહ નો આગમ કી અપેક્ષા સે દ્રવ્ય આવશ્યક માના ગયા હૈ । " નો
આગમ " મેં નો શબ્દ સર્વથા આગમ કે અભાવ કા અન્યથા ઉસકે एक
દેશ કે અભાવ કા યોધક હૈ । હમકે જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીર-
દ્રવ્યાવશ્યક, ઔર તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક, હન પ્રકાર ત્રીન ભેદ હૈ ।
આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જો પહિલે (ભૂતકાલ મેં) જ્ઞાતા યા-તથા દૂસરોં કે
લિયે હસ શાસ્ત્ર કા ઉપદેશ આદિ બી જિસને પહિલે દિયા હૈ તેસે
જીવ કા અચેતન શરીર જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યક હૈ જો જીવ હસ સમય
આવશ્યક શાસ્ત્ર કા જ્ઞાતા નહીં હૈ ભવિષ્યત્ કાલ મેં ઉમકા જ્ઞાતા
ચનેગા ઉસકા વહ સચેતન શરીર ભવિષ્યત્ કાલ મેં આવશ્યક શાસ્ત્ર
કે જ્ઞાન કા આધાર હોને કી અપેક્ષા સે, ભવ્યશરીરદ્રવ્યાવશ્યક હૈ ।
તદ્વ્યતિરિક્તદ્રવ્યાવશ્યક લૌકિક કુપ્રાવચનિક ઔર લોકોત્તર કે ભેદ
સે ૩ પ્રકાર કા હૈ । લૌકિકજનોં દ્વારા આચરિત આવશ્યક કર્મ લૌકિક
દ્રવ્યઆવશ્યક હૈ । જૈસે રાજસભા મેં જાને વાલે રાજા, યુવરાજ, તલ
વર (કોટ્ટપાલ) આદિ જન પ્રાતઃ કાલ મેં ઉઠકર રાજસભા મેં જાને કે
લિયે પ્રથમ પ્રામાતિક વિધિયો સે નિપટતે હૈ-મુખ ધોતે હૈ, દાનોં કો

આગમની અપેક્ષાથી દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામા આવ્યો છે " નોઆગમ " મા
નો શબ્દ આગમના સંપૂર્ણપણે અભાવનો કે તેના એક દેશના અભાવનો
બોધક છે તેના જ્ઞશરીર દ્રવ્યાવશ્યક, ભવ્યશરીર દ્રવ્યાવશ્યક અને તદ્વ્યતિ-
રિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક આ પ્રમાણે ત્રણ ભેદો છે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જે પહેલા
(ભૂતકાળમા) જ્ઞાતા હતો તેમજ બીજાઓ માટે આ શાસ્ત્રનો ઉપદેશ વગેરે
પણ જેણે પહેલા આપ્યો છે એવા જીવનુ અચેતન શરીર જ શરીર દ્રવ્યાવશ્યક
છે જે જીવ અત્યારે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તેનો
જ્ઞાતા થશે તેનુ તે સચેતન શરીર ભવિષ્યકાળમા આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાનનો
આધાર હોવાને કારણે ભવ્ય શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે તદ્વ્યતિરિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક
લૌકિક કુપ્રાવચનિક અને લોકોત્તર એમ ત્રણ પ્રકારનો છે લૌકિક માણસો
વડે આચરિત આવશ્યક કર્મ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે જેમ રાજસભામા
જનારા રાજા, યુવરાજ, વલ્લવર (કોટ્ટપાલ) વગેરે લોકો સવારે ઉઠીને રાજ
સભામા જવા માટે પ્રથમ પ્રામાતિક વિધિઓથી પરવારે છે, મુખ ધુએ છે,

જ્ઞાતયાનિતિ-જ્ઞ, તસ્ય શરીર ત્રશરીર તદેવ દ્રવ્યાવશ્યકમિતિ વિગ્રહઃ । જીવ પરિત્યક્તમાવશ્યકશાસ્ત્રાનવતઃ ત્રરીર જ્ઞશરીરદ્રવ્યાવશ્યકમ્ । યઃ કશ્ચિદ્ જીવઃ જન્મકાલાદારભ્ય અતેનૈવ આત્મેન - ગૃહીતેન શરીરસમુન્નયેન, ચિનોપદિપ્તેન ભાવેન આવશ્યકમિત્યેતત્ પદ=જ્ઞાન આગામિનિ માર્ગે શિષિપ્યતે ન તાવન્નિષ્પત્તે, તત્ત્વજીવાધિષ્ઠિત શરીર ભવ્યશરીરદ્રવ્યાવશ્યકમિતિ । જ્ઞશરીર-ભવ્યશરીરવ્યતિ રિક્ત દ્રવ્યાવશ્યક ત્રિવિધમ્-ભૌતિક, કુપ્રાવચનિક, લોકોત્તરિક ચેતિ ।

લૌકિક દ્રવ્યાવશ્યકમ્ ' યે રાજેશ્વરતલવરાદય પ્રભાતસમયે-મુલધાવન-દન્તપ્રક્ષાલન-તૈલ-રુદ્ધતરુ-મર્પપ-દૂર્વા-દર્પણ-ધૂપ-પુષ્પ-માતૃ-ગન્ધ-તામ્બૂલ-ચલ્લાદિકાનિ દ્રવ્યાવશ્યકાનિ કુર્વન્તિ, કૃત્વા પશ્ચાદ્ રાત્રકુલદેવકુલાદૌ ગન્ઠન્તિ, તત્-તેષા સમ્પન્ધિમુલધાવનાદિ ।

કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યકમ્ ' યે ઇમે ચરકચીરિકાદયઃ પાપઙ્કસ્થા, ઇન્દ્ર-સ્કન્દ-રુદ્ર-શિવ-વૈશ્રવણ-દેવ-નાગ-યક્ષ-ભૂત-મુકુન્દાઽઽર્યા-દુર્ગા- કોટિક્રિયાળામ્ - ઉપલેપનસમાર્જનાઽઽર્પણધૂપપુષ્પગન્ધમાલ્યાદિકાનિ દ્રવ્યાવશ્યકાનિ કુર્વન્તિ તેષા તદ્ ઇન્દ્રસ્કન્દાદેરુપલેપનાદિ । કુત્સિત પ્રવચન યેષા તે કુપ્રવચના સ્તેષામિદ્ કુપ્રાવચનિકમ્ । ઉપલેપન ચન્દનપદ્મેન, સમાર્જન-સ્નપનાનન્તર વલ્લેખ જલપ્રોચ્છનમ્ આર્વર્પણ=ગન્ધોદકેન, ' ગુલાવજલ ' રત્યાદિ ભાષાપ્રસિદ્ધેન ।

નામાવશ્યકમ્-આવશ્યકનામકો ગોપાલદારકાદિઃ, સ્થાપનાવશ્યકમ્-આવસાક કરતે હ, સ્નાન કરતે હૈ । સુગંધિત તૈલ લગાતે હૈ ઇત્યાદિ આવશ્યક કાર્ય કરતે હૈ । પીછે રાજસભા મે યા દેવકુલ મે જાતે હે । ડનકા યહ મુલ ધાવન આદિ કાર્ય લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક હૈ । ચરક ચીરિક આદિ પાલ્હડિયો દ્વારા જો ઇન્દ્ર, સ્કન્દ, રુદ્ર, વૈશ્રવણ, દેવ, નાગ ઓર યક્ષાદિકોં કી સ્તૂતિયો કા ચ્દન સે લેપન, અભિષેક કરાને કે ઘાદ વચ્ચ સે સ્તૂતિસ્થ જલ કા પોછના મદિર મૈં યા ડન સ્તૂતિયો પર ગુલાવ જલ કા ટિહકાવ આદિ કરના યે સબ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક હૈ ।

દાત સાફ કરે છે, સ્નાન કરે છે, સુગંધિત તેલ લગાવે છે, વગેરે આવશ્યક કાર્યો કરે છે ત્યારપછી રાજસભામાં અથવા તો દેવકુળમાં બાય છે તેમનું મુખ ધોવું વગેરે કામ લોકિક-દ્રવ્ય આવશ્યક છે ચરક ચીરિક વગેરે પાપ ડીઓ વડે જે ઇન્દ્ર, સ્કન્દ, રુદ્ર, શિવ, વૈશ્રવણ દેવ, નાગ અને યક્ષો વગેરેની મૂર્તિઓનું ચદનથી અભિષેક કરાવ્યા બાદ વચ્ચથી મૂર્તિના પાણીને લૂંછવું, મદિરમાં કે તે મૂર્તિઓ ઉપર ગુલાબજળનું સિંચવું વગેરે કરવું આ બધું કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક છે આ પ્રમાણે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્યના લેવથી આ

અવશ્યકરૂપાત કસ્યચિત્ કા'ટસ્માદિષુ પ્રતિકૃતિઃ, દ્રવ્યાવશ્યક ચ આશ્ય
કોપયોગગન્યા દેહાગમક્રિયા, અવ્યાવશ્યકેષુ ઉપયોગાગાત્રેન ચતુર્ગુણરહિતત્વેન
ચ કર્મનિર્જરાગ્નનકૃત્યામારાદારાચ્ચન્ન જિનાગ્નાસ્મિન, તસ્માદેતત્ત્રિવિમાત
અવશ્યક ધર્મપદવાચ્ય ન ગચતીતિ નિશ્ચયાદન્યમેવ । ત્રીકોત્તરિન્દ્રવ્યાવશ્યક પ્રવ

હસ પ્રકાર નામ, સ્થાપના ઓર દ્રવ્ય કે ભેદ સે યદ આવશ્યક ત્રીન
પ્રકાર કા હોતા હૈ । કિસી ગોપાલ કે પુત્ર કા “આવશ્યક” હમ પ્રકાર
કા કૃતનામ સસ્કાર નામ આવશ્યક હૈ । આવશ્યક ત્રિયાઓ સે યુક્ત
કિસી વ્યક્તિ કી કાષ્ઠ આદિ મેં તદાકાર રૂપ સે યા અતદાકારરૂપ સે
પ્રતિકૃતિતો કલ્પના કરના યા ઉસે ઘનાહેના યદ સ્થાપના આવશ્યક હૈ ।
આવશ્યક મેં ઉપયોગ સે શૂન્ય પ્રાણી કી જો ભી આગમ ઓર નો આગમ
કી અપેક્ષા સે ક્રિયાઈ હૈ વે સત્ર દ્રવ્ય આવશ્યક હૈં । હન ત્રીનો આવ
શ્યકો મે ઉપયોગ-ભાવરૂપ-આવશ્યક કે અભાવ સે તથા ચારિત્રગુણ
તદનુકૂલ પ્રવૃત્તિ કે આચરણ સે રહિત હોને સે કર્મોં કી નિર્જરા કરાને
મેં સાધકપના નહી હૈ । અતઃ જિનેન્દ્રદેવ ને હનકે આરાધન કરને કી
આજ્ઞા પ્રદાન નહી કી હૈ । ધર્મ કો હી આરાધન કરને કી ઉન્હોને આજ્ઞા
દી હૈ કયોં કિ વહી કર્મોં કી નિર્જરા કરાને મેં સાધક હૈ । હન ત્રીનો
મેં કર્મોં કી નિર્જરા કરાને કા અભાવ હોને સે ધર્મસ્વરૂપતા નહી હૈ ।
ધર્મપદ વાચ્ય ભી વે નહી હૈં । હસીલિયે વે ત્રીનો ધર્મ કે લક્ષણ સે શૂન્ય
હોને સે ઉસકે અલબ્ધ હૈ, એસા મમજ્ઞાના ચાહિયે । લોકોત્તરિક દ્રવ્ય

આવશ્યક ત્રણ પ્રકારનુ હોય છે કેઈ ગોપાળના પુત્રનો ‘આવશ્યક’ આ
રીતે કરેલો સસ્કાર નામ આવશ્યક છે આવશ્યક ક્રિયાઓથી યુક્ત કેઈ
વ્યક્તિની કાષ્ઠ વગેરેના તદાકાર રૂપથી કે અતદાકાર રૂપથી પ્રતિકૃતિની કલ્પના
કરવી કે પ્રતિકૃતિનુ નિર્માણ કરવુ તે સ્થાપના આવશ્યક છે આવશ્યકમાં
ઉપયોગથી રહિત પ્રાણીની જે કદાપણ આગમ અને નો આગમની અપેક્ષાથી
ક્રિયાઓ છે તે બધી દ્રવ્ય આવશ્યક છે આ ત્રણે આવશ્યકોમાં ઉપયોગ ભાવ
રૂપ આવશ્યકના અભાવથી તેમજ ચારિત્રગુણ તદનુકુળ પ્રવૃત્તિના આચરણ વગર
થઈ જવાથી કર્મોની નિર્જરા કરાવવામાં સાધકપણુ નથી તેથી જીનેન્દ્ર દેવે
તેમના આરાધનની આજ્ઞા આપી નવી ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓ
શ્રીએ આજ્ઞા આપી છે કેનડે વર્મજ કર્મોની નિર્જરા કરાવવામાં સાધક છે
આ ત્રણેમાં કર્મોની નિર્જરા કરાવવાનો અભાવ હોવાને કારણે ધર્મસ્વરૂપતા
નથી એ ધર્મપદ વાચ્ય પણુ નથી તેથી આ ત્રણે ધર્મના લક્ષણથી રહિત
હોવાને કારણે તેના અલબ્ધ છે એમ સમજવુ જોઈએ માગાયિક વગેરે લોકો

ચનોક્ત સદપિ જિનાજ્ઞાયાઐ સ્વન્દ્રન્દિહારિભિર્મૂલોત્તરગુણરહિતૈ પટ્કાયનિરતુ
કમ્પૈરતુપયોગપૂર્વક ક્રિયમાણ ગામાયિકાદિકમ્ તથ વર્મપદવાચ્ય ન ભવિતુર્મહતિ,
તત્રાપિ નિર્જરાજનરૂત્વાભાવેન વિવેચતયા જિનાજ્ઞાયા અભાવાત્ ।

एवमेव-नामजिनः स्थापनाजिनस्तथा द्रव्यजिनश्च निर्जराजनरूपाभावा
दाराध्यत्वेन जिनाज्ञाया अभावात् । तदाराजन धर्मपदवान्य न भवितुर्महति ।

આવશ્યક સમાયિક આદિ હે ઇનકે કરને કા વિગ્નાન યદ્યપિ પ્રવચન
શાસ્ત્ર મેં વિહિત હૈ તો મી ડસે જો ધર્મ કા અલક્ષ્ય ચતાયા ગયા હૈ
ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ યે જન જિનદેવ કી આજ્ઞા સે ગટિભૂત બને
હુણ, સ્વેચ્છાચારી, મૂલગુણ ઓર ઉત્તર ગુણો સે રહિત ઇવ પટ્કાય
કે જીવોં કી રક્ષા કરને મેં આસાવધાન મનુષ્યો દ્વારા અનુપયોગપૂર્વક
કરને મેં આતે હૈં તન યે દ્રવ્ય આવશ્યકરૂપ સે કહે જાતે હૈં । ઓર
હસીલિયે યે ધર્મપદ કે વાચ્ય નહીં હૈં અર્થાત્ ધર્મરૂપ નહીં હૈં । જહા
ધર્મરૂપતા નહીં હૈ વહા કર્મોં કી નિર્જરા કારકત્વ મી નહીં હૈ । યહ
સર્વ સમ્મત સિદ્ધાન્ત હૈ । મગલોન ને જો ડમ અવસ્થા મેં ઇન્હેં વિધેય
નહીં કહા હૈ ઉસકા યહી કારણ હૈ । અતઃ જિસ પ્રકાર નામ આવ-
શ્યક, સ્થાપનો આવશ્યક ઓર દ્રવ્ય આવશ્યક યે ત્રીન નિક્ષેપ આરા
યરૂપ સે તીર્યકર પ્રભુ ને અનવિધેય કહે હૈ, ઉસી પ્રકાર સે નામજિન
સ્થાપનાજિન તથા દ્રવ્યજિન મી આરાધ્ય નહીં હૈં । ઇનકી આરાધના
કરને મેં જો ધર્મ કી પ્રાપ્તિ હોના કહતે હૈ યા માનતે હૈં ડન્હેં જિન

તત્ર દ્રવ્ય આવશ્યક છે પ્રવચન શાસ્ત્રમા એમના આચરણતુ વિધાન વિહિત
છે છતાયે એને જે ધર્મના અલક્ષ્ય રૂપમા બતાવવામા આવ્યો છે તેની મત
લબ્ધ એ છે કે જ્યારે તે જનદેવની આજ્ઞાથી બહિષ્કૃત અનેકા સ્વેચ્છાચારી,
મૂળગુણ તેમજ ઉત્તર ગુણોથી રહિત અને પટકાય જીવોની રક્ષા
કરવામા અસાવધાન માણ્યો વડે અનુપયોગ પૂર્વક આચરવામા આવે
ત્યારે તે દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપમા ડહેવાય છે એથી તે ધર્મપદ વાચ્ય
નથી એટલે કે ધર્મ રૂપ નથી જ્યા ધર્મરૂપતા નથી ત્યા કર્મોની નિર્જરા
કારકતા પણ નથી આ સર્વમા ય સિદ્ધાન્ત છે લગવાને જે આ અવસ્થામા
એમને વિધેય કહ્યા નથી તેનું કારણ પણ એ જ છે એટલા માટે જેમ નામ
આવશ્યક, સ્થાપના આવશ્યક અને દ્રવ્ય આવશ્યક આ ત્રણ નિક્ષેપોને આરાધ્ય
રૂપથી તીર્યકર પ્રભુએ અવિધેય કહ્યા છે, તેમજ નામ જિન, સ્થાપના જિન
તેમજ દ્રવ્યજિન પણ આરાધ્ય નથી એમની આરાધના કરવામા જે ધર્મની
પ્રાપ્તિ થવી બતાવવામા આવે છે કે માનવામા આવે છે, તેમને જિન લગવાનની

एव च प्रतिमापूजनमपि धर्मलक्षणस्य लक्ष्यं न भवति, तत्र धर्मत्वाभाव निश्चयात् । 'मोक्षकामो जिनप्रतिमा पूजयेत्' इत्येवमर्हतो भगवन् आज्ञायाः प्रवचनेऽनुपलब्धेः । धर्मविषये सर्वत्र भगवदाज्ञोपलभ्यते-दृश्यते हि आगम्यकार्यं भगव

भगवान की आज्ञा से चर्हिभूत ही समझना चाहिये । यदि इन निक्षेपों की या स्थापनानिक्षेप की आराधना करने से आराधक जीवों को धर्म का लाभ होता तो वे उनकी आराधना करने का मग्य जीवों को अब इय २ उपदेश देते । इस प्रकार की स्वमनः कल्पित प्रवृत्ति से उनकी पूजा आदि करने में पट्टकाय के जीवों की कितनी विरागना होती है यह एक स्वानुभवगम्य बात है । अतः जहाँ आरम्भ है वहाँ धर्म नहीं है । जहाँ धर्म नहीं है उसकी आराधना से कर्मों की निर्जरा भी नहीं हो सकती है । इस प्रकार से नाम स्थापना और द्रव्यजिन आदि तीन निक्षेप भी धर्म के लक्षण से शून्य होने से उसके अलक्ष्य माने गये हैं । जब स्थापना जिन ही उसका अलक्ष्यभूत है, तो फिर जिन की प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा आदि कार्य भी धर्मलक्षण से शून्य होने से वह भी उसका अलक्ष्य है ऐसा निश्चित हो जाता है भगवान ने इस प्रकार की आज्ञा शास्त्र में कहीं भी नहीं दी है " मोक्षकामो जिन प्रतिमा पूजयेत् " कि मुक्ति की अभिलाषा वाला प्राणी जिन प्रतिमा की पूजा करें । धर्मकी आराधना करने की ही उन्होंने ने आगम में आज्ञा

આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત જ સમજવા બોધ્યો આ નિક્ષેપોની કે સ્થાપના નિક્ષેપોની આરાધના કરવાથી આરાધક જીવોને ધર્મના લાભ થતો હોય ત્યારે તો તેઓ તેમની આરાધના કરવા માટે ભગ્ય જીવોને ચોક્કસ ઉપદેશ આપતા આરીતે પોતાના મનથી જ કલ્પના કરીને તેમની પૂજા વગેરે કરવામાં પટ્ટકાય જીવોની ટેટલી બધી વિરાધના હોય છે તે બાતેજ અનુભવવા બેવી વાત છે જોટલા માટે જ્યા આરભ છે ત્યા ધર્મ તો નથી જ અને જ્યા ધર્મ નથી તેની આરાધનાથી કર્મોની નિર્જરા પણ થઈ શકે તેમ નથી આ રીતે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્ય જિન વગેરે ત્રણ નિક્ષેપો પણ ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવા બદલ તેને અલક્ષ્ય માનવામાં આવ્યા છે જ્યારે સ્થાપના જિન જ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે, ત્યારે જિનની પ્રતિમા બનાવીને તેની પૂજા વગેરે કાર્યો પણ ધર્મલક્ષણથી રહિત હોવાથી તે પણ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે આવી ચોક્કસ ખાત્રી થઈ બાત છે ભગવાને આ બાતની આજ્ઞા શાસ્ત્રમાં કોઈ પણ સ્થાને કરી નથી " મોક્ષકામો જિનપ્રતિમા પૂજયેત્ " કે મોક્ષની ઇચ્છા રાખનારો પ્રાણી જિન પ્રતિમાનુ પૂજન કરે ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓથીએ ' આજ્ઞા

દાજ્ઞા, દર્શનાર્થ જ્ઞાનાર્થ ચ ભગવદાજ્ઞા પુનરહિંસાસયમતપઃસવરાદિવિધિરપિ
શાસ્ત્રે પ્રદર્શિતઃ પરતુ પ્રતિમાપૂજનાર્થમાજ્ઞા ક્વાપિ નોપલ્ભ્યતે શાસ્ત્રેષુ, પ્રત્યુત
કુપ્રાવચનિકુદ્રવ્યાવશ્યકલક્ષણાક્રાન્તત્વેન પ્રતિમાપૂજન જૈનાગમવિરુદ્ધમિતિ
સૂચિતમ્। ઇન્દ્રાદિપૂજન દિ કુપ્રાવચનિકસ્ય નોઆગમતો દ્રવ્યાવશ્યકસ્યોદાહ-
રણતયા ભગવતા પ્રદર્શિતમ્। તેન સર્વ પ્રતિમાપૂજન કુપ્રાવચનિક તાદૃશદ્રવ્યાવ-
શ્યકે ભગવતા નિશ્ચિત્તમિતિ મુસ્થિ પ્રતીયતે। પટ્કાયદિમાસાગ્ર્યાયાઃ પૂજાયા

પ્રદાન કી હૈ જૈસે-આવશ્યક, દર્શન ઓર જ્ઞાન કી આરાધના પ્રત્યેક
મોક્ષાભિલાષી ભવ્ય જન કો કરના ચાહિયે-ઇસ પ્રકાર કે આવશ્યક
આદિ કી આરાધના કરને કા સ્પષ્ટ ઉત્તરે આગમો મેં મિલતા હૈ-તથા
જિસ પ્રકાર ડન્હોને અહિંસા, સયમ, તપ ઓર સવર આદિ કી વિધિ
શાસ્ત્રોં મેં પ્રદર્શિત કી હૈ-ઉસ પ્રકાર ન તો ડન્હોને પ્રતિમા પૂજન કી
કહીં ન આજ્ઞા પ્રદાન કી હૈ ઓર ન ઉસ કી વિધિ હી કહી હૈ કુપ્રા-
વચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કે લક્ષણ સે યુક્ત હોને સે પ્રત્યુત પ્રતિમાપૂજન
કો જૈન આગમ સે વિરુદ્ધ હી સૂચિત ક્રિયા હૈ। કુપ્રાવચનિયોં દ્વારા
માન્ય ઇન્દ્રાદિકોં કે પૂજન કો ભગવાન નો આગમ કી અપેક્ષા સે દ્રવ્ય
આવશ્યક કે ઉદાહરણ રૂપ મેં પ્રકટ કિયા હૈ ઇસસે હી યહ યાત સ્પષ્ટ
હો જાતી હૈ કિ ડન્હોને અન્ય સમસ્ત પ્રતિમા પૂજન કો બી ઇસી કુપ્રા-
વચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક કી તરહ દ્રવ્ય આવશ્યક મેં રખા હૈ। પ્રવચન
મેં કુત્સિતતા-ઘોટાપન કુશાસ્ત્રતા હિંમાદિક મોઘ્ય પૂજા આદિ કાર્યોં

કરી છે જેમ આવશ્યક, દર્શન અને જ્ઞાનની આરાધના દરેક દરેક મોક્ષ
ધંડનારા લભ્ય જનને કરવી ઘટે છે જેમ આવશ્યક વગેરેની આરાધના કરવા
વિધેને ઉદ્દેશ આગમોમા મળે છે, તેમજ જેમ તેમણે અહિંસા, સયમ, તપ
અને સવર વગેરેની વિધિ શાસ્ત્રોમા બતાવી છે તેમ તેમણે ડોઢ પણુ સ્થાને
પ્રતિમા પૂજનની આજ્ઞા કરી નથી અને તેની વિધિ પણુ બતાવી નથી
પ્રતિમા પૂજને કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકના લક્ષણથી યુક્ત હોવા બદલ જૈન
આગમોથી વિરુદ્ધ બતાવવામા આવી છે કુપ્રાવચનીઓ વડે માન્ય ઇન્દ્ર
વગેરેના પૂજનને ભગવાને આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્ય આવશ્યકના ઉદાહરણ
રૂપમા બતાવ્યું છે એથી આ વાત સ્પષ્ટ સમજી શકાય તેમ છે કે તેમણે
બીજી પણુ બીજી પ્રતિમા પૂજને પણુ આ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ
દ્રવ્ય આવશ્યકમા જ સ્થાન આપ્યું છે પ્રવચનમા કુત્સિતતા કુશાસ્ત્રતા હિંમા
વગેરે સાધ્ય પૂજા વગેરે કાર્યોની સુધ્ધિ કરવાથી જ સંભવે છે બીજા ચરદ

વિધાયકત્વવા પ્રવચનસ્ય કૃતિસતત્ત્વ, તેનેય ચેન્દ્રાદિપૂજનસ્ય કુપ્રાવચનિત્વ ભવતિ । એ પ્રરૂપયતો મગચતોઽર્હતઃ પ્રતિમાયા પૂજનસ્ય પ્રમદ્ન એ તદાની નાસીત્—હિંસામયત્વાત્પૂજનસ્ય, તેન પ્રવચને મગચતા પ્રતિમાપૂજનપ્રતિપેધો વિશિષ્ય નોક્ત । પ્રતિપેધવાક્ય હિ તદૈય સાર્થકં, યદાપ્રતિપે-યમ્પોઽર્થઃ કયચિત્ પ્રસક્તો ભવતિ । જિનપ્રતિમાપૂજન હિ ન તાગ્લૌકિકદ્રવ્યાવશ્યક, નાપિ લોકોત્તરિક દ્રવ્યાવશ્યક, જિનો હિ લોકોત્તરો દેવસ્તત્પૂજનમપિ સ્યાન્ચેત્ લોકોત્તરિકમેવ

કો પુષ્ટિ કરને સે હી આતી હૈ । અન્ય ચરક આદિ સમસ્ત પ્રવચનો મેં હન્દી હિંસાદિક કર્મોં કે કરને કા વિધાન સ્પષ્ટરૂપ સે પાયા જાતા હૈ । હસીલિયે યે કુપ્રવચન માને ગયે હેં । હનકે ધારા પ્રદર્શિત હન્દ્રાદિક પૂજન બીં હસી નિમિત્ત સે કુપ્રાવચનિક કહા ગયા હૈ । જૈન શાસ્ત્રોં મેં પ્રતિમાપૂજન કે નિપેધ કા સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ જો દેખને મેં નહીં આતા હૈ, લસકા યહ કારણ હૈ કિ જિસ સમય પ્રભુ ને હન્દ્રાદિક કે પૂજન કા કુપ્રાવચનિક રૂપ માનકર નિપેધ કિયા હસ સમય હનકે સમક્ષ અર્હત કી પ્રતિમા કે પૂજન કા પ્રસંગ હી નહીં થા, નહીં તો હસકા બીં લે સ્વતન્ત્ર રૂપ સે નિપેધ કરતે—દૂસરે—પ્રતિમા પૂજન કાર્ય હિંસામય કાર્ય હૈ—ભગવાન ને ધર્મ કે લિયે બીં હિંસા કરને કા આદેશ નહીં દિયા હૈ અતઃ જલ વીતરાગ શાસ્ત્ર મેં હિંસા કા વિધાન હી નહીં હૈ—તપ હસકા બીં વિધાન કૈસે લે કરતે પ્રતિપેધ વાક્ય હસી સમય સાર્થક માના જાતા હૈ જલ પ્રતિપેધ્યરૂપ પદાર્થ કિસી બીં રૂપ સે પ્રસક્ત હોતા હૈ ।

ચીરિક વગેરે બધા પ્રવચનોમા એ જ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનું વિધાન સ્પષ્ટ રૂપે જોવામા આવે છે એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામા આવે છે એમના વડે પ્રદર્શિત ઇન્દ્ર વગેરેનું પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચનિક કહેવાય છે જૈન શાસ્ત્રોમા પ્રતિમા પૂજનના નિપેધનો સ્પષ્ટપણે જે ઉલ્લેખ જોવામા આવતો નથી તેનું કારણ પણ એ છે કે જ્યારે પ્રભુએ ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિપેધ કર્યો ત્યારે તેમની સામે અહંતાની પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતંત્ર રૂપથી નિપેધ કર્યો હોત બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનું કાર્ય હિંસા મય છે, ભગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી એટલા માટે જ્યારે વીતરાગ શાસ્ત્રમા હિંસા વિષેનું વિધાન જ નથી ત્યારે આનું વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે પ્રતિપેધ વાક્ય ત્યારે જ સાર્થક છે જ્યારે પ્રતિપેધરૂપ પદાર્થ હોઈ પણ રૂપથી પ્રસક્ત હોય છે

સ્યાત્ લોકે તુ તસ્ય સમાવેશાનર્હતયા લૌકિસ્ત્વાસમયાત્ । પ્રવચને ભગવતા યત્
સામાયિકાદિ પદ્ધિધાવશ્યક પ્રસ્થિત તદેવ સ્વચ્છન્દવિદારિભિઃ પટ્કાયર્દિ-
સકૈર્જિનાજ્ઞાનાદૈ ક્રિયમાણ લોકોત્તરિક-દ્રવ્યાવશ્યકમ્ । તત્ર પદ્ધિધાવશ્યકે
નિનપ્રતિમા પૂજનસ્ય પ્રવેશાત્ તસ્ય લોકોત્તરિક-દ્રવ્યાવશ્યકે સમાવેશો ન સમન્વતિ ।

યદ્ પ્રતિમાપૂજનરૂપ કાર્ય ન લૌકિક દ્રવ્ય અવશ્યક હૈ ઓર ન લોકો
ત્તર દ્રવ્ય અવશ્યક હી હૈ ।

શકા—પ્રતિમા પૂજન લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક નહો હૈ યદ્ તો આપ
કા કહના ઠીક હૈ, ક્યો કિ યદ્ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યકો સે સર્વથા
મિત્ર હૈ । પરન્તુ ઇસે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક માનને મેં આપકો ક્યા
ચિવાદ હૈ । ક્યો કિ પ્રભુ સ્વયં લોકોત્તર દેવ માને જાતે અતઃ ડનકા
પૂજન મી લોકોત્તરિક હી માનના ચાહિયે ?

ઉત્તર—પ્રવચન મેં ભગવાન જો સામાયિક આદિ છદ્ પ્રકાર કે
આવશ્યકો કા વર્ણન કિયો હૈ—વે જત્ર જિન આજ્ઞા પાદ્ય-સ્વચ્છન્દવિ-
હારી ઓર પટ્કાય કી વિરાધના કરને મેં નિરત અનુપયુક્ત પુરુષો દ્વારા
કરને મેં આતે હૈ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપ સે પ્રતિપાદિત કિયે
ગયે હૈ । ડન પદ્ધત્રકાર કે આવશ્યકો મેં પ્રતિમાપૂજન કા કોઈ અધિકાર
હી નહી હૈ । અતઃ ઇસે કૈસે લોકોત્તરિક આવશ્યક માના જા સકતા હૈ ।

પૂજનરૂપ કાર્ય માટે ન તો લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને ન તો લોકોત્તર
દ્રવ્ય આવશ્યક છે

શકા —પ્રતિમા પૂજન લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક નથી તમારી આ વાત
તો ઉચિત છે કેમ કે આ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યકોથી મ પૂર્ણપણે ભિન્ન છે
પણ અને લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામા તમને શો વાધો છે ? કેમકે
પ્રભુ જાતે લોકોત્તર દેવ મનાય છે ત્યારે તેમનુ પૂજન પણ લોકોત્તરિક જ
માનવુ જોઈએ ?

ઉત્તર—પ્રવચનમા ભગવાને જે સામાયિક વગેરે છ જાતના આવશ્યકોનુ
વર્ણન કર્યું છે તેઓ બ્યારે જિન-આજ્ઞા બાદ્ય સ્વચ્છન્દ વિહારી અને પદ્-
કાયની વિરાધના કરવામા નિરત અનુપયુક્ત પુરુષો વડે આચરવામા આવે છે
લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામા આવે છે આ છ જાતના
આવશ્યકોમા પ્રતિમા પૂજનનો કોઈ અધિકાર જ નથી એટલા માટે લોકો-
ત્તરિક આવશ્યક કેવી રીતે માની શકાય ?

ત્રિધાયકૃતયા પ્રવચનસ્ય કૃત્મિતત્વ, તેનેય ચેન્દ્રાદિપૂજનસ્ય કુપ્રાવચનિશ્વ
 ભવતિ । એ પ્રરૂપયતો ભગવતોર્હતઃ પ્રતિમાયા પૂજનસ્ય પ્રગદ્ગ પત્ર તદાનીં
 નાસીત્-હિંસામયત્પૂજનસ્ય, તેન પ્રવચને ભગવતા પ્રતિમાપૂજનપ્રતિપદો વિગિચ્ય
 નોક્ત । પ્રતિપેધનામય હિ તદૈવ સાર્થક, યદાપ્રતિપે-યમ્પોર્ધઃ કથચિત્ પ્રસક્તો
 ભવતિ । જિનપ્રતિમાપૂજન હિ ન તાયહ્નીફિકદ્રવ્યાપશ્યક, નાપિ લોકોત્તરિક
 દ્રવ્યાવશ્યક, જિનો હિ લોકોત્તરો દેવસ્તપૂજનમપિ સ્યા-ચેત્ લોકોત્તરિકમેવ

કો પુષ્ટિ કરને સે હી આતી હૈ । અન્ય ચરક આદિ સમસ્ત પ્રવચનોં મેં
 હન્દી હિંસાદિક કર્મોં કે કરને કા ત્રિધાન સ્પષ્ટરૂપ સે પાયા જાતા હૈ ।
 હસીલિયે યે કુપ્રવચન માને ગયે હિં । હનકે દ્વારા પ્રદર્શિત હન્દ્રાદિક
 પૂજન મી હસી નિમિત્ત સે કુપ્રાવચનિક કહા ગયા હૈ । જૈન શાસ્ત્રોં મેં
 પ્રતિમાપૂજન કે નિપેધ કા સ્પષ્ટ ઉલ્લેખ જો દેખને મેં નહીં આતા હૈ,
 હસકા યહ કારણ હૈ કિ જિસ સમય પ્રમુ ને હન્દ્રાદિક કે પૂજન કા
 કુપ્રાવચનિક રૂપ માનકર નિપેધ કિયા હસ સમય હનકે સમક્ષ અર્હત
 કી પ્રતિમા કે પૂજન કા પ્રસંગ હી નહીં યા, નહીં તો હસકા મી બે
 સ્વતન્ત્ર રૂપ સે નિપેધ કરતે-દૂસરે-પ્રતિમા પૂજન કાર્ય હિંસામય કાર્ય
 હૈ-ભગવાન ને ધર્મ કે લિયે મી હિંસા કરને કા આદેશ નહીં દિયા હૈ
 અતઃ જબ ચીતરાગ શાસ્ત્ર મેં હિંસા કા વિધાન હી નહીં હૈ-તય હસકા
 મી વિધાન કૈસે બે કરતે પ્રતિપેધ વાક્ય હસી સમય સાર્થક માના
 જાતા હૈ જબ પ્રતિપેધ્યરૂપ પદાર્થ કિસી મી રૂપ સે પ્રસક્ત હોતા હૈ ।

ચીરિક વગેરે બધા પ્રવચનોમા એ જ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનું વિધાન
 સ્પષ્ટ રૂપ જોવામા આવે છે એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામા આવે છે
 એમના વડે પ્રદર્શિત ઈન્દ્ર વગેરેનું પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચ
 નિક કહેવાય છે જૈન શાસ્ત્રોમા પ્રતિમા પૂજનના નિપેધનો સ્પષ્ટપણે જે ઉલ્લેખ
 જોવામા આવતો નથી તેનું કારણ પણ એ છે કે જ્યારે પ્રભુએ ઈન્દ્ર વગેરેના
 પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિપેધ કર્યો ત્યારે તેમની સાથે અહંતની
 પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતન્ત્ર
 રૂપથી નિપેધ કર્યો હોત બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનું કાર્ય હિંસા
 મય છે, લગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી એટલા
 માટે જ્યારે ચીતરાગ શાસ્ત્રમા હિંસા વિષેનું વિધાન જ નથી ત્યારે આનું
 વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે પ્રતિપેધ વાક્ય ત્યારે જ સાર્થક ગણાય છે
 જ્યારે પ્રતિપેધ્યરૂપ પદાર્થ કોઈ પણ રૂપથી પ્રસક્ત હોય છે ,

ચિત્રાદય इति प्रवृत्तम् । एष च जिनपूजन-कुप्रावचनिक-नोआगमतो द्रव्या-
वश्यक प्रतिमाया क्रियमाणत्वात्, इन्द्रादिपूजनवत्, अन्यनुमानेनापि कुप्रावचनिक
द्रव्यावश्यकतया धर्मपदमाच्य न भवतीति ।

उत्तर—यद्यपि कुप्रावचन में प्रतिमा पूजा का विधान स्वतन्त्ररूप
से नहीं किया गया है, तो भी कामपूजक प्रणियों के मनोरथ को पूर्ण
करने वाले-मनुष्य के मृत-निर्जीव देह की पूजा की तरह प्रतिमा में
होनी हुई पूजा भी कुप्रावचनिकी है ।

इस प्रकार हम अनुमानसे कह सकते हैं । उसमें प्रवचनमें पूजाके
आधार का निर्णय करते समय सामान्यरूप से पूजा के आधारभूत
जितने भी प्रतिमा चित्र आदि पूज्य हैं वे सब गृहीत हुए हैं । इस
प्रकार प्रतिमा की सर्व पूजा का आधार प्रतिमा और चित्र आदि है ।
इसलिये वह कुप्रावचनिक है । इस प्रकार हम कहते हैं । हम कथन से
यह व्याप्ति सिद्ध होती है कि इन्द्रादिक पूजन की तरह प्रतिमा में जो
जो पूजाएँ की जाती हैं वे सब कुप्रावचनिकी हैं । अतः जिन पूजन भी
प्रतिमा में किये जाने पर नोआगम की अपेक्षा से कुप्रावचनिक द्रव्य
आवश्यक ही है, और इसीलिये वह धर्मपद का वाच्य नहीं है यह बात
स्पष्टरूप से सिद्ध हो जाती है इसमें अनुमान प्रयोग उस प्रकार से
करना चाहिए ।

ઉત્તર —જો કે કુપ્રવચનમા પ્રતિમા પૂજનનું વિધાન સ્વતંત્ર રૂપમા કર
વામા આવ્યું નથી છતાય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા-માણુમના મૃત
નિર્જીવ શરીરની પૂજની જેમજ પ્રતિમાની કરવામા આવેલી પૂજ પણ કુપ્રા
વચનિકી છે આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ તે કુપ્રવચનમા
પૂજના આધારને નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજના આધારભૂત
જેટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનું ગ્રહણ થયું છે

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે
જેટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ આ કથનથી એ
વ્યસિસિદ્ધ થાય છે કે ઈન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમા જે જે
પૂજઓ કરવામા આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે જેટલા માટે જિન
પૂજ પણ પ્રતિમામા આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય
આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપ વાચ્ય નથી આ વાત સ્પષ્ટપણે સિદ્ધ
થઈ ગય છે આમા અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે

કુપ્રવચનેઽર્હત પૂજાવિધાન વિશિષ્ટનામ તથાપિ મામપૂરકમૃતમનુષ્યપૂજનવત્
તસ્ય પૂજા પ્રતિમાયા ક્રિયમાણા કુપ્રાચરિનીતિ ચકુઃ શ્રવ્યતે । તસ્મિન્ કુપ
વચને હિ પૂજાધારનિર્ણયાચ્ચરે સામાન્યનં પૂજ્યમ્ય મર્મસ્યાપિ પૂજાધારઃ પ્રતિમા

ભાવાર્થ—શકાકાર ને પ્રતિમાપૂજન કો લોકોત્તરિક આવશ્યક
માનકર દ્રવ્ય આવશ્યક મેં જો उसका समावेश करना चाह है सो
उसकी इस आशका का समाधान करते हुए सूत्रकारने यह कहा है
कि जिन आज्ञा पाद्य एव सामायिक आदि में अनुपयुक्त पुरुषो द्वारा
किये गये सामायिक आदि पद विध आवश्यक कार्य ही लोकोत्तरिक
द्रव्य आवश्यक में परिगणित किये गये हैं । इनमें प्रतિमा पूजा को
कोई संबंध ही नहीं है—प्रतिमा पूजा पद विध आवश्यक कार्यों में परि-
गणित ही नहीं हुई है । अतः उसका वहां पर किसी भी प्रकार का
सम्बन्ध नहीं होने से उसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में नहीं गिना
जा सकता है अतः इसका समावेश केवल कुप्राचनिक द्रव्य आवश्यक
में ही हुआ है ऐसा मानना चाहिये ।

शका—कुपवचन में इन्द्रादिकों की पूजा करने के विधान की तरह
प्रतिमा पूजा का विधान तो पाया नहीं जाता है फिर आप इसे कुप्रा-
वचनिक में अन्तर्भूत कैसे कह सकते हैं ?

ભાવાર્થ — શકાકારે પ્રતિમા પૂજનને લોકોત્તરિક આવશ્યક માનીને દ્રવ્ય
આવશ્યકમાં તેનો સમાવેશ કરવાની જે ઇચ્છા બતાવી છે તેની તે
શકાનું સમાધાન કરતા સૂત્રકારે આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે જિન આજ્ઞા બાદ્ય
અને સામાયિક વગેરેમાં અનુપયુક્ત પુરુષો વડે કરવામાં આવેલા સામાયિક
વગેરે છ બાતના આવશ્યક કાર્યો જ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં પરિગણિત
કરવામાં આવ્યા છે એનાથી પ્રતિમા પૂજનો કોઈ સબધ જ નથી પ્રતિમા
પૂજા પદવિધ આવશ્યક કાર્યોમાં પરિગણિત જ થઈ નથી એટલા માટે ત્યા
તેનો કોઈ પણ રીતે સબધ નહિ હોવાથી લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેની
ગણના થઈ શકે તેમ નથી એથી ફક્ત દ્રવ્ય આવશ્યકમાં જ થયો છે આમ
માની લેવું જોઈએ

શકા —કુપ્રવચનમાં ઈન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવાના વિધાનની જેમ પ્રતિમા
પૂજાનું વિધાન તો મળતું નથી ત્યારે તમે એને કુપ્રવાચનિકમાં કેવી રીતે
સમાવિષ્ટ કરી શકો ?

ચિત્રાદય ઇતિ પ્રતિપત્તમ્ । એવં ચ જિનપૂજન-કુપ્રાવચનિક-નોઆગમતો દ્રવ્યા-
વશ્યક પ્રતિમાયા ક્રિયામાણત્વાત્ , ઇન્દ્રાદિપૂજનવત્ , રત્યનુમાનેનાપિ કુપ્રાવચનિક
દ્રવ્યાદશ્યકતયા ધર્મપદવાચ્ય ન ભવતીતિ ।

ઉત્તર—યદ્યપિ કુપ્રવચન મેં પ્રતિમા પૂજા ના વિધાન સ્વતન્ત્રરૂપ
સે નથી ક્રિયા ગયા છે, તો મી કામપૂરક પ્રણિયોં કે મનોરથ કો પૂર્ણ
કરને ઘાલે-મનુષ્ય કે મૃત-નિર્જીવ દેહ કી પૂજા કી તરફ પ્રતિમા મેં
હોતી હુઈ પૂજા મી કુપ્રાવચનની કી છે ।

હસ પ્રકાર હમ અનુમાનસે કર સકતે હેં । ઉસમેં પ્રવચનમેં પૂજાકે
આધાર ના નિર્ણય કરતે સમય સામાન્યરૂપ સે પૂજા કે આધારભૂત
જિતને મી પ્રતિમા ચિત્ર આદિ પૃથક્ હ વે સત્ ગૃહીત હુઈ હ । હસ
પ્રકાર પ્રતિમા કી સર્વ પૂજા ના આધાર પ્રતિમા ઓર ચિત્ર આદિ છે ।
હસલિયે વહ કુપ્રાવચનિક છે । હસ પ્રકાર હમ કહતે હેં । હમ કથન સે
યહ વ્યાસિ સિદ્ધ હોતી છે કિ ઇન્દ્રાદિક પૂજન કી તરફ પ્રતિમા મેં જો
જો પૂજાઈ કી જાતી હેં વે સત્ કુપ્રાવચનિકી હે । અત જિન પૂજન મી
પ્રતિમા મેં કિયે જાને પર નોઆગમ કી અપેક્ષા સે કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય
આવશ્યક હી છે, ઓર હમીલિયે વહ ધર્મપદ ના વાચ્ય નહીં છે યહ વાત
સ્પષ્ટરૂપ સે સિદ્ધ હો જાતી છે હમમેં અનુમાન તથાગ ડસ પ્રકાર સે
કરના ચાહિત્ ।

ઉત્તર—જો કે કુપ્રવચનના પ્રતિમા પૂજનનું વિધાન સ્વતન્ત્ર રૂપમાં કર
વામાં આવ્યું નથી છતાંય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા-માણુમના મૃત
નિર્જીવ શરીરની પૂજાની જેમજ પ્રતિમાની કરવામાં આવેલી પૂજા પણ કુપ્રા-
વચનિકી છે આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ તે કુપ્રવચનના
પૂજના આધારને નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજના આધારભૂત
જેટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનું ગ્રહણ થયું છે

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજાનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે
જેટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ આ કથનથી એ
વ્યસિમિદ્ધ થાય છે કે ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમાં જે જે
પૂજા કરવામાં આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે એટલા માટે જિન
પૂજા પણ પ્રતિમામાં આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય
આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપદ વાચ્ય નથી આ વાત સ્પષ્ટપણે મિદ્ધ
થઈ ગય છે આમાં અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે

અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે-પ્રિયમિતક્રિયાનુભવયુક્તો ચોર્ધ ન માત્ર, ભાવ તદ્વતોરભેદોપચારાદ્ ભાવઃ । યથા-ऐश्वर्यरूपायाइन्द्रनक्रियाया अनुभवात्इन्द्रोभाव उच्यते । ભાવશાસી આવશ્યક ચ, ભાવમાશ્રિત્ય તા આવશ્યક ભાગવશ્યમ્ ।

“ જિનપૂજન નો આગમતો કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક પ્રતિમાર્ગ ક્રિયમાણત્વાન્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવત્ ” । અતઃ હમ સમસ્ત પ્રવૃત્ત કથન સે યહ ઘાત સ્પષ્ટ હો જાતી હૈ કિ વત્ પ્રતિમાપૂજન કાર્ય લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપ સે ભી પ્રસક્ત હોતા તો ભગવાન્ હસકા અવરૂપ પ્રતિ પેધ કરતે ।

અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે - અત્ર ભાવ આવશ્યક ત્યા હૈ હસકા કથન સૂત્રકાર કરતે હૈ-વર્તમાન સમય મેં ઉસ વિવક્ષિતરૂપ પર્યાય સે યુક્ત દ્રવ્ય કા નામ ભાવ હૈ । ભાવ યત્પિ વર્તમાન ક્રિયા રૂપ માના ગયા હૈ, ફિર ભી યહાં પર ઉસ ક્રિયા સે યુક્ત દ્રવ્ય કો જો ભાવ કહા હૈ ઉસકા કારણ દ્રવ્ય ઓર પર્યાય કા અભેદ સબધ હૈ । ભગવાન દ્રવ્ય કે વિના નહી રહ સકતા હૈ । ભાવ દ્રવ્ય કો ટક પર્યાય હૈ, વહ નિરાશ્રય હોની નહીં હૈ-અતઃ જિસ દ્રવ્ય કે આશ્રય વહ રહેગી ઉન દોનો મેં અભેદોપચાર સે ઉસ પર્યાય સે ઉપલક્ષિત ઉસ દ્રવ્ય કો હી ભાવ કહ દિયા હૈ । જિસ પ્રકાર ऐश्वर्यरूप इंदन (देदीप्यमान होना)

“ જિનપૂજન નો આગમતો કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક પ્રતિમાયા ક્રિયમાણ ત્વાત્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવત્ ”

એટલા માટે આ પૂર્વોક્ત કથનથી આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે તે પ્રતિમા પૂજન ગર્થ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક પણ નથી જો તે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકરૂપે પણ પ્રસક્ત હોત તો ભગવાન તેનો ચોક્કસ પ્રતિપેધ કરત

‘ અથ ભાવાવશ્યકમુચ્યતે ’ —હવે આવશ્યક શુ છે એનુ સ્પષ્ટીકરણ સૂત્રકાર કરે છે-વર્તમાન સમયમા તે વિવક્ષિત રૂપ પર્યાયથી યુક્ત દ્રવ્યનુ નામ ભાવ છે જો કે ભાવ વર્તમાન ક્રિયારૂપ માનવામા આવ્યો છે, છતાય અહીં તે ક્રિયાથી યુક્ત દ્રવ્યને જ ભાવ બતાવ્યો છે તેનુ કારણ દ્રવ્ય અને પર્યાયનો અભેદ સબધ છે ભાવ ભગવાન દ્રવ્ય વગર રહી શકતો નથી ભાવ દ્રવ્યની એક પર્યાય છે, તે નિરાશ્રય હોતીજ નથી એથી જો દ્રવ્યના આશ્રયે તે રહેશે તેઓ બનેમા અભેદોપચારથી તે પર્યાયથી ઉપલક્ષિત તે દ્રવ્યને જ ભાવ કહી દીધો છે જેમ ऐश्वर्य इंदन (देदीप्यमान થયું) ક્રિયાના અનુભ

તદ્ ઢિનિધમ્- (૧) આગમત્ = આગમમાશ્રિત્ય, (૨) નોઆગમત્ = આગમાભાવમાશ્રિત્ય ।

આગમતો ભાવાવશ્યકમાદ—

“ સે કિં ત આગમયો ભાવાસ્તય ? આગમઓ ભાવાવશ્યક જાણે ઉવચ્ચે, સેત આગમઓ ભાવાસ્તય ” । (અનુયોગ૦)

અથ કિં ત આગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ?, ઉત્તરમાદ—“ જ્ઞાયક ઉપયુક્ત ” આગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ।

અર્થ—આવશ્યકપદાર્થજન્મત્તજનિતસર્વેગેન વિશુદ્ધમાનપરિણામસ્તા ઓપયુક્ત સાંવાદિરાગમતો જ્ઞાનાવશ્યકમ્, અભાવાવશ્યકાર્થજ્ઞાનરૂપ્યાગમસ્યાન

ક્રિયા કે અનુભવ સે ઉપલક્ષિત શચીપતિ ભાવ દ્વન્દ્વ રૂપા જ્ઞાતા હૈ । હસી પ્રતાર જો આવશ્યક રૂપ ક્રિયા કે અનુભવસે યુક્ત હે વહી આત્મા ભાવાવશ્યક રૂપજ્ઞાતા હૈ । ભાવરૂપ જો આવશ્યક હૈ વહ, અથવા ભાવ કો આશ્રય કરકે જો આવશ્યક હૈ વહ ભાવાવશ્યક હૈ ।

યહ ભાવ આવશ્યક ઓ દો પ્રતાર કા હૈ—૧ આગમ કી અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક ઔર દુસરા નો આગમ કી અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક । હનમેં “ જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આગમતો ભાવાવશ્યક ” જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આત્મા આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક માના ગયા હૈ । આવશ્યકરૂપ પદાર્થ કા જો જ્ઞાતા હૈ ઉસકા નામ જ્ઞાયક હૈ । આવશ્યકરૂપ પદાર્થ કે જ્ઞાન સે જનિત સર્વેગ દ્વારા વિશુદ્ધ હુઈ પરિણામો કો નામ ઉપયોગ હૈ । હમ ઉપયોગ સે વિશિષ્ટ જો સાધુ આદિ જન હૈં વે આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક હૈ । ક્યોં કિ હનમેં આવશ્યકરૂપ પદાર્થ

વધી ઉપલક્ષિત શચીપતિ ભાવ દ્વન્દ્વ ઢહેવાય છે તેમજ ને આવશ્યકરૂપ ક્રિયાના અનુભવથી યુક્ત છે તે આત્મા ભાવાવશ્યક ઢહેવાય છે ભાવરૂપ ને આવશ્યક છે તે અથવા ભાવને આશ્રય કરીને ને આવશ્યક છે તે ભાવાવશ્યક છે

આ ભાવ આવશ્યક પદ્ધતિ જે પ્રકારનો છે—૧, આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક અને ૨, નો આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક એમનામાં “ જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આગમતો ભાવાવશ્યક ” જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક માનવામાં આવ્યો છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થનો ને જ્ઞાતા છે તેનું નામ જ્ઞાયક છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનથી જનિત સર્વેગવડે વિશુદ્ધિ પામેલા પરિણામોનું નામ ઉપયોગ છે આ ઉપયોગથી વિશિષ્ટ ને સાધુ વગેરે લોકો છે તેઓ આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે કેમકે તેઓમાં આવ-

સત્ત્વાત્, ભાગ્યવશ્યકતા ચાત્રાવશ્યકાર્થજ્ઞાનજનિતોપયોગપરિણામવત્ત્વાદ્મા - માશ્રિત્યાવશ્યકમિતિ વ્યુત્પત્તે' । इन्मुक्त भवति आशयकार्थस्य आशयकोपयोगपरिणाम आगमतो भावावश्यक, सागदिस्तु तादृशपरिणामवत्सागमतो भावावश्यकमुच्यते । इदमाशयकोपयोगपरिणामस्य भावश्यक धर्मपदवाच्य, श्रुतधर्मान्तर्गतत्वात्, अत्र जिज्ञासायाः सत्त्वात् ।

નોઆગમતોભાગ્યવશ્યક ત્રિવિધ-લૌકિક, કુમારવનિક, લોકોત્તરિક ચેતિ લૌકિક ભાગ્યવશ્યક પૂર્વાદ્ધે ભારતસ્ય વાચન યજ્ઞ વા, અપરાદ્ધે રામાયણસ્ય

કે જ્ઞાનરૂપ આગમ કા સદ્ગત પાયા જાતા હૈ । इसलिये साधु आदि जनों में आगम की अपेक्षा से आवश्यकता और इस आवश्यक के अर्थ ज्ञान से जनित उपयोगरूप परिणामों की विशिष्टता होने से भाव रूपता आती है । अतः " भाग को आश्रित करके जो आवश्यक है वह भाव आवश्यक है " यह कथन सुसंगत हो जाता है

ભાવાર્થ-“આવશ્યક” इस पद के अर्थज्ञान से विशिष्ट तथा तदनुकूल उपयोग परिणति सपन्न आत्मा ही आगम की अपेक्षा से भावावश्यक कहा गया है । ये भावावश्यक साधु आदि हैं । क्योंकि ये ही उस प्रकार की परिणति वाले होते हैं । अतः श्रुतधर्म के अन्तर्गत होने से यह भावावश्यक ही धर्म पद का वाच्य कहा गया है और ऐसे ही धर्म की आराधना करने की भगवानने आज्ञा प्रदान की है ।

નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક ત્રીન પ્રકાર કા માના ગયા હૈ । (૧) લૌકિક (૨) કુમારવચનિક ઓર લોકોત્તરિક । પૂર્વાદ્ધ મેં

શ્યકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનરૂપ આગમનો સદ્ભાવ મળે છે એટલા માટે સાધુ વગેરે લોકોમા આગમની અપેક્ષાથી આવશ્યકતા અને આ આવશ્યકતાના અર્થ જ્ઞાનથી જનિત ઉપયોગરૂપ પરિણામોની વિશિષ્ટતા હોવાથી ભાવરૂપતા આવે છે એટલા માટે “ ભાવને આશ્રિત કરીને જે આવશ્યક છે તે ભાવ આવશ્યક છે ” આ કથ સુસંગત થઈ પડે છે

ભાવાર્થ — “ આવશ્યક ” આ પદના અર્થ જ્ઞાનથી વિશિષ્ટ તેમજ તદનુકૂળ ઉપયોગ પરિણતિ સપન્ન આત્મા જ આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યક સાધુ વગેરે છે કેમકે એ લોકો જ આ જાતની પરિણતિવાળા હોય છે એથી શ્રુતધર્મના અંતર્ગત હોવા બદલ આ ભાવાવશ્યક જ ધર્મ પદવાચ્ય કહેવામા આવ્યો છે અને આ જાતના ધર્મની આરાધના કરવાની ભગવાને પણ આજ્ઞા કરી છે

નો આગમની અપેક્ષાએ ભાવ આવશ્યકના ત્રણ પ્રકારો છે - (૧) લૌકિક (૨) કુમારવચનિક (૩) અને લોકોત્તરિક પૂર્વાદ્ધમા ભારતનુ વા , શ્રવણ

वाचनं श्रवणं वा । लोके हि भारतस्य वाचनं श्रवणं पूर्वाह्ने एव क्रियमाणं दृश्यते, तथा रामायणस्य वाचनं श्रवणमपराह्ण एव क्रियमाणं दृश्यते, उपरीत्ये दोषदर्शनात् । ततश्चेत्य लोकेऽपश्यत्तृणीयतयाऽऽपश्यत्तत्वं तदाचक्रस्य श्रोतुश्च तदर्थोपयोगपरिणामसत्त्वाद् भावत्वं, तदाचक्रं पुस्तकरूपत्रादिपरिवर्तनरूपया हस्ताभिनयरूपया च क्रियया युक्तो भवति, श्रोतापि च गात्रसयतत्वं-रसरसपुटीकरणादि

भारत का वाचना अथवा सुनना, अपराह्ण में रामायण का वाचना या सुनना ये सब लौकिक भाव आवश्यक हैं । लोक में भारत का वाचना अथवा सुनना पूर्वाह्णमें ही किया जाता है । रामायणका वाचन और श्रवण अपराह्ण में ही होता हुआ देखा जाता है । इससे विरुद्ध प्रवृत्ति करने से अनेक प्रकार के दोषों का भोजन बनना पड़ता है, इस प्रकार लोक में भारतादिक ग्रन्थों का वाचना आदि कार्य नियमित समय में अवश्य करने योग्य होने की वजह से आवश्यक रूपमें माना गया है । अतः इसमें इस प्रकार से आवश्यक रूपना आ जाता है । तथा इनके वाचने वालों में या सुनने वालों में उनके अर्थ के प्रति उपयोगात्मक परिणाम के सद्भाव से भावरूपता आती है । क्यों कि जबतक उनके वाचने वाले में उनके अर्थ के प्रति उपयोगात्मक परिणाम की जागृति नहीं होगी तब तक वे उन पुस्तकों के पत्रों आदि का परावर्तन करने रूप क्रिया और श्रोताओं को अनेक अर्थ की संगति बैठाने के लिये हस्त आदि के संचालनरूप अभिनय क्रिया का उपयोग ही

अपराह्णमा रामायणं वाचनं ते श्रवणं वा अथ लौकिक भाव आवश्यक छे लोकमा भारतं वाचनं अथवा तो श्रवणं पूर्वाह्णमा एव करवामा आवे छे रामायणं वाचनं अने श्रवणं अपराह्णमा एव यत्तु नेवामा आवे छे अथी विरुद्ध आशय छे करवाथी भावस घड़ी जातना होयाने पात्र थछ पडे छे आ प्रभावे भारत वगेरे अथी वाचन वगेरे कार्य नियमित समयमा आवश्यक करवा योग्य होवा पहल आवश्यक रूपमा मानवामा आवे छे अथी आमाआ गीते आवश्यक उपलब्ध आवी जाय छे तेमज्ज ओमनु वाचन करनाराओमा तेमना तरङ्ग उपयोगात्मक परिणामना सद्भावथी भावरूपता आवे छे केमके न्यासुधी तेमनु वाचन करनाराओमा तेमना अर्थ प्रत्ये उपयोगात्मक परिणामनी जागृति थशे नहि, त्या सुधी तेओ ते पुस्तकना पत्रा वगेरेना परावर्तन करवा उप किया अने श्रोताओना भाटे अनेक जातना अर्थनी संगति ओसाउवा भाटे साथ वगेरेना हस्तनयनरूप अभिनय किया उपयोग एव केवी दीते करी थके.

ક્રિયાયાન્ ભગતિ, એ તથોઃ ક્રિયાપત્રેન નોઆગમત્ત, “કિરિયાઽગમો નહોઈ”
 इति वचनात् । क्रियारूपे देशे आगमाभावाद् नोआगमत्तमपि, अत्र नो शब्दस्य
 देशनिषेधोऽप्युक्त्यात् । लोके भारतादाशगमत्त उपपत्त्यते, तस्माद्देशत आगमो
 ऽस्त्यपि । तस्माद् पूर्वाह्णेऽपराह्णे यथानिर्दिष्टकाले भारताद्युपयुक्तो यदस्य भारतादि
 वाचयति शृणोति या, तद् वाचन श्रवण च लौकिक भाषाप्रत्ययमिति बोध्यम् ।

કેસે કર સકતે હૈ । પરન્તુ હસ સમય હસ પ્રકાર કી ટે સમસ્ત ક્રિયાઈ
 उनमें प्रत्यक्ष ही देखने में आती हैं । इसी प्रकार श्रोताजन भी अटल
 होकर उनके सुनने में तन्मय हो जाते हैं । समय २ पर राध जोड़ने
 रूप क्रियाएँ भी करते हैं । इस प्रकार की क्रियाएँ मे युक्त होने से उन
 सुनने वाचने वालों में नो आगमना भी है क्योंकि “ किरिया आगमो
 न होइ ” क्रिया आगम नहीं मानी जाती है ऐसा निष्ठात का कथन
 है । “ नो आगम ” में नो शब्द आगम के एक देश का वाचक है ।
 इसलिये क्रियारूप एक देश में पूर्णरूप से आगम का अभाव होने से
 आगम की एक देशता उसमें मानने में आती है । भारतादिक पुस्तकों
 में आगमता का कथन लोक की अपेक्षा से ही किया गया जानना
 चाहिये । क्यों कि लोक में अन्य व्यवहारी जन इनमें आगमता का
 व्यवहार करते हुए देखे जाते हैं । इस प्रकार पूर्वाह्न या अपराह्न में
 किसी भी निर्दिष्ट समय में भारतादिक ग्रन्थों का ज्ञाता उनमें उपर्युक्त
 होकर जो उनका वाचना आदि कार्य करता है—या जो श्रोताजन उप

પણ તે વખતે આ જાતની આ બધી ક્રિયાઓ તેઓમા પ્રત્યક્ષરૂપે જોવામા
 આવે છે આ રીતે શ્રોતાઓ પણ તત્કાલીન થઇને સાલગવા માટે કે ચોગ્ય
 સમયે તેઓ હાથ જોડવારૂપ ક્રિયાઓ પણ કરે છે આ જાતની ક્રિયાઓથી
 યુક્ત હોવા બદલ તે વાચનારા તેમજ સાલગનારાઓમા નો આગમતા પણ
 છે કેમકે “ કિરિયા આગમો ન હોઈ ” ક્રિયા આગમ માનવામા આવતી નથી
 આ સિદ્ધાન્તનું કથન છે “ નો આગમ ” મા નો શબ્દ આગમના એક દેશનો
 વાચક છે એટલા માટે ક્રિયારૂપ એકદેશમા આગમનો સંપૂર્ણપણે અભાવ
 હોવાથી તેમા આગમની એકદેશતા માનવામા આવે છે ભારત વગેરે શ્રેયોમા
 આગમતાનું કથન લોકની અપેક્ષાથી જ કરવામા આવ્યું છે કેમકે લોકમા
 બીજી વ્યવહારી લોકો પણ એમા આગમતારૂપ વ્યવહાર કરતા જોવાય છે આ
 રીતે પૂર્વાહ્ન કે અપરાહ્નમા કોઈ પણ નિર્દિષ્ટ સમયમા ભારત વગેરે શ્રેયો નો
 જ્ઞાતા તેઓમા ઉપયુક્ત થઇને જે તેમનું વાચન વગેરે કાર્ય કરે છે । તે

કુપાવચનિક ભાગ્યવશ્યમન્યતે—યે ઇમે ચરકચીરિકાદયો યાવત્ પાપણ્ડસ્થા
ઉપયુક્તો યથાવસર ચદયશ્યમ્-ઈજ્યા-ઝલિ-હોમ-જપો-ન્દુરુક્ષનમસ્કારાદિક ભાવ
રૂપમાવશ્યક કુર્વન્તિ તેષા તત્ કુપાવચનિક ભાગ્યવશ્યકમ્ ।

તત્ર-ઈજ્યા-સન્ધ્યોપાસનમ્, અઝલિ-ઝલાઝલિ સૂર્યાય દીયતે, હોમ-
નિત્યહવનમ્, જપ-ગાયત્રી, ઉન્દુરુક્ષ-અય દેશીયઃ શબ્દ ધૂપાર્ચકઃ, નમ-
સ્કારઃ=વન્દનમ્, એતેષા ચરકાદિભિ પાપણ્ડસ્યૈરવશ્ય ક્રિયામાણત્વાદાવશ્ય-
કરતમ્ । તદર્થોપયોગશ્રદ્ધાદિપરિણામસદ્ભાવાત્ ભાગ્યત્વમ્ । ચરકાદીના તદર્થોપ-

યુક્ત હોકર ઉન્હે સુનતે હૈં વહ સત્ર વાચના સુનના આદિ કાર્ય નો
આગમ કી અપેક્ષા સે લોકિક ભાવ આવશ્યક હૈ ।

જો ચરક ચીરિકાદિ જન ઉપયુક્ત હોકર અપને આવશ્યક કાર્ય
સ્વરૂપ ઇજ્યા, ઝજલિ, હોમ જપ, ઉન્દુરુક્ષ, ઓર નમસ્કાર આદિ ભાવ
રૂપ આવશ્યક કરતે હૈં, ડનકે ચે સત્ર કાર્ય કુપાવચનિક ભાવ આવ
શ્યક હૈં સ.યા કી ઉપાસના કરના ઇજ્યા હૈં, સૂર્ય કે લિયે ઝલકી
અઝલિ દેના અઝલિ હૈં, નિત્ય હવન કરના હોમ, ગાયત્રી કા પાઠ
કરના જપ, ધૂપ કા યેના ઉન્દુરુક્ષ ઓર નમસ્કાર કરના વન્દના
કર્મ હ । ચે સત્ર કાર્ય ચરકાદિ જનો દ્વારા પ્રતિદિન અવશ્ય કરને
યોગ્ય હોને હૈં-અતઃ ડનમેં ડન્હી કી માન્યતાનુસાર આવશ્યકપના
કહા ગયા હૈં ડનકે કરને મેં ડનકે અન્તઃ કારણ મેં ડનકે અર્થ કે પ્રતિ
ઉપયોગ એવ શ્રદ્ધા ઓદિરૂપ પરિણતિ કા સદ્ભાવ પાયા જાતા હૈં । ઇસ

જે શ્રોતાઓ ઉપયુક્ત થઈને તેમનું શ્રવણ કરે છે તે બધું વાચન શ્રવણ
વગેરે યથા નો આગમની અપેક્ષાએ લોકિક ભાવ આવશ્યક છે

જે ચરક ચારિક વગેરે લોકો ઉપયુક્ત થઈને આવશ્યક કાર્યસ્વરૂપ
ઇજ્યા, અઝલિ, હોમ, જપ, ઉન્દુરુક્ષ અને નમસ્કાર વગેરે ભાવરૂપ
આવશ્યકો કરે છે, તેઓના આ બધા કાર્યો કુપાવચનિકભાવ આવશ્યક
છે મધ્યાની ઉપાસના કરવી એ ઇજ્યા છે, સૂર્યને માટે પાણીની અઝલિ
આપવી તે અઝલી છે, દરરોજ હવન કરવો તે હોમ, ગાયત્રી પાઠ કરવો
તે જપ અને ધૂપ કરવો તે ઉન્દુરુક્ષ અને નમસ્કાર એ વદના કર્મ છે
આ બધા યથા ચરક વગેરે લોકો વડે હમેશાં અવશ્ય કરવાયોગ્ય હોય છે
એટલા માટે આમા તેમની માન્યતા સુજ્ઞ બ આવશ્યકપણુ કહેવામા આવ્યું
છે એમના આચરણથી તેમના હૃદયમા તેના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગ અને શ્રદ્ધા
વગેરે રૂપ પરિણતિ નો સદ્ભાવ મળે છે આ અપેક્ષાએ ત્યા ભાવતા અને

યોગરૂપો દેશ આગમ, કરશિરઃ સયોગાદિદ્વિત્યારૂપો દેગમ્તુ નોઆગમ, તથા ચ દૈશિકાગમાભાગાશ્રિત્ય નો આગમત્વમપિ, નોશન્દસ્થાનાપિ દેગનિષ ધપરત્વાત્ ।

લૌકિક કુપ્રાવચનિક ચ નોઆગમતો માત્રાસ્યક ન ધર્મપદસાન્યમ્, તત્ત્વ જિનાજ્ઞાયા અભાસાદિતિ ચોધ્યમ્ ।

અર્થે કિં લોકોત્તરિક નોઆગમતો માત્રાસ્યકમ્ ? ઉચ્યતે અનુયોગદ્વારે ।

“ જળ્ણ ક્ષમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે

અપેક્ષા સે વહાં ભાવતા ઔર ંકદશ સે આગમતા ખી હૈ । ડ્યોં કિ હાથોં કા જોડના નમસ્કાર કરના આદિ રૂપ જો ખી ક્રિયાં હૈ વે મથ નો આગમ હૈ । હસ અપેક્ષા હનમેં પૂર્ણરૂપ સે આગમપનો ન હોકર આગમ કી ંક દેશતા હી હૈ ચરક ચીરીકાદિ ઠારા માન્ય ગ્રન્થોં કી નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓં કા હી વહા સદ્ભાવ હૈ ઔર ડન્હી કે અર્થ મે ડનકા ઉપયોગાદિરૂપ પરિણામ હૈ । હસલિયે યે મત્ત ચરક ચીરીકાદિ કી ક્રિયાં નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક હૈ । યહા પર ખી નો શબ્દ દેશ નિપેધ પરક હૈ અર્થાત્ આગમ કે ંક દેશ કા વાચક હૈ યે લૌકિક ઔર કુપ્રાવચનિક જિન્હેં નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવાવશ્યકરૂપ મેં પ્રકટ ક્રિયા ગયા હૈ ધર્મપદ કે વાચ્ય નહીં હૈ । ડ્યોં કિ હન કી આરાધના સે જીવો કે કર્મોં કી નિર્જરા નહીં હોતી હૈ । અત્ત તીર્થ કર પ્રભુ ને હનકે આરાવન કરને કી આજ્ઞા પ્રદાન નહીં કી હૈ ।

નો આગમ કી અપેક્ષા સે લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક હસ પ્રકાર

એકદેશથી આગમતા પણ છે કેમકે હાથ જોડવા, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ જે ક્રિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે આ દૃષ્ટિએ એમનામા આગમતા સપૂણ પણ નથી શકત આગમ ॥ એકદેશતા જ છે ચરક ચીરિક વગેરે વડે માન્ય શ્રદ્ધોની નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓનો જ ત્યા સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અર્થમા તેમનો ઉપયોગ વગેરેરૂપ પરિણામ છે એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિકા વગેરેની ક્રિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે અહીં પણ નો શબ્દ દેશનિપેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે આ લૌકિક અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમા પ્રગટ કર વામા આગમ છે-ધર્મપદના વાચ્ય નથી કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના ડોનોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થંકર પ્રભુએ એમને આરાધવાની આજ્ઞા કરી નથી

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છે —
જળ્ણ ક્ષમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તલ્લેસે

તલ્લેસે તદ્જ્ઞવમિષ્ તત્તિવ્જ્ઞવમાણે તદ્દ્રોપડત્તે તદ્દપ્પિયક્રમણે તદ્ભાવગા
માવિષ્ અણ્ણત્થ કત્થહ મણ અરુરેમાણે ઉમ્મખોકાલ આવસ્સય કરેહ, સે ત લોગુ
ત્તરિય ભાવાવસ્સય, સે ત નોઆગમતો ભાવાવસ્સય, સે ત ભાવાવસ્સય ॥'

ડાયા-યત્પલુ શ્રમણો યા શ્રમણી વા શ્રાવકો યા શ્રાવિકા યા તદ્ધિત્તસ્તન્મ-
નસ્કસ્તલ્લેશ્યસ્તદ્ધ-પાસિતસ્તત્તીત્રા યસાયસ્તદર્થોપયુક્તમ્તદર્પિત્તરણસ્તદ્ધાવના-
માવિત અન્નપ કુપ્પચિન્મનોડુર્કાન્ ઉમ્મખાલ યત્ આરશ્યક સામાયિકાદિ કરોતિ
તેપાં તલ્લોગુત્તરિક ભાવાવસ્સયમ્ । તેપાં તદ્ નોઆગમતો ભાવાવસ્સયમ્ તદે-
તદ્ભાવાવસ્સયમ્ ।

અત્રાપ્યવશ્ય કરણીત્ત્વાદાવશ્યક વ, તર્થોપયોગશ્રદ્ધાદિપરિગામન્ય તદ્ધા-
વાદ્ ભાવત્વમ્, રજોત્તરણપમાર્જિત્ત્વાવ્યાપારયથારત્તિત્ત્વનન્દનત્તરણાન્તર તત્ત્રિધિ

દૈ-જળ્ણ હમે મમણે વા મમગી વા સાવજો વા સાવિયા વા તદ્ધિત્તે
તદ્મણે તલ્લેસે તદ્જ્ઞવમિષ્ તત્તિવ્જ્ઞવમાણે તદ્દ્રોપડત્તે તદ્દપ્પિઅ-
કરણે તદ્ભાવગામાવિષ્ અણ્ણત્થ કત્થહ મણ અરુરેમાણે ઉમ્મખોકાલ
આવસ્સય કરેતિ, સે ત લોગુત્તરિય ભાવાવસ્સય, સે ત નો આગમતો
ભાવાવસ્સય સે ત ભાવાવસ્સય (અનુયોગદ્વાર)

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જો સામાયિક આદિ
આવશ્યક ક્રિયાઓં કો તદ્ધિત્તે દોકર (ઉનમેં હી ચિત્ત લગાકર) તદ્ધન
દોકર ઉનમેં હી અન્ત કરણકો ઇત્થાદિ સુદ્ધમે કથિત વિત્તિકે
અનુમાર દોનોં કાલોં મે કરતેહેં વહ ઉનકોં કાર્ય નો આગમ કી અપેક્ષા
સે લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક હૈ । યે સામાયિક આદિ ક્રિયાઓં
અવશ્ય કરને યોગ્ય હોને સે આવશ્યક હૈ । કર્તાં કા ઉનકે અર્થ મેં
ઉપયોગ રૂપ ઇય શ્રદ્ધા આદિ રૂપ પરિણામ કા મદ્ધાવ હોને સે ઉનમેં

તદ્જ્ઞવમિષ્ તત્તિવ્જ્ઞવમાણે તદ્દ્રોપડત્તે તદ્દપ્પિઅકરણે તદ્ભાવગામાવિષ્
અણ્ણત્થ કત્થહ મણ અરુરેમાણે ઉમ્મખોકાલ આવસ્સય કરેતિ, સે ત લોગુત્તરિય
ભાવાવસ્સય, સે ત નો આગમતો ભાવાવસ્સય, સે ત ભાવાવસ્સય (અનુયોગદ્વાર) ।

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જે સામાયિક વગેરે આવ-
શ્યક ક્રિયાઓને તદ્ધિત્તે થઇને (તેમનામા મન પરાવીને) તદ્વીન વાને
તેમનામા જ મન લગાવીને વગેરે સૂત્રમા કથિત વિત્તિકે મન્નણ બને વ ત
કર છે તેમતુ તે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લોનેનકિ કાવ મન્નણ
છે આ સામાયિક વગેરે ક્રિયાઓ અવશ્ય હોવા યોગ્ય હોવાની અવગણના છે
કર્તાનો તેમના અર્થમા ઉપયોગરૂપ પરિણામનો મદ્ધાવ હોવાની અવગણના છે
ભાવતા પણ છે રહેહરણવા ભૂમિ વગેરેનું પ્રમાણે સ્વરૂપ, સ્વરૂપ, સ્વરૂપ

યોગરૂપો દેશ આગમ, કરશિરઃ મયોગાર્દિત્યારૂપો દેશસ્તુ નોઆગમ, તથા
ચ દૈશિકાગમાભાવમાશ્રિત્ય નો આગમત્વમપિ, નોશન્દમ્યાચાપિ દેશનિષ
ધપરત્વાત્ ।

લૌકિક કુપ્રાવચનિક ચ નોઆગમતો ભાવાવશ્યક ન ધર્મવદત્તન્યમ્, તત્ર
જિનાજ્ઞાયા અભાવાદિતિ મોખ્યમ્ ।

અથ કિં લોકોત્તરિક નોઆગમતો ભાવાવશ્યકમ્ ? ઉચ્યતે અનુયોગદ્વારે ।

“ જળ્ણ ક્ષમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે

અપેક્ષા સે વહાં ભાવતા ઓર ઇકદશ સે આગમતા મી હૈ । ક્યોં કિ
હાથોં કા જોડના નમસ્કાર કરના આદિ રૂપ જો મી ક્રિયાઈ હૈ યે મથ
નો આગમ હૈ । હસ અપેક્ષા હનમેં પૂર્ણરૂપ સે આગમપનાં ન હોકર
આગમ કી ઇક દેશતા હી હૈ ચરક ચીરીકાદિ દ્વારા માન્ય ગ્રન્થોં કી
નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓં કા હી વહાં સદ્ગાત્ર હૈ ઓર ઉર્ત્તી કે અર્થ સે ઉનકા
ઉપયોગાદિરૂપ પરિણામ હૈ । હસલિયે યે મત્ર ચરક ચીરીકાદિ કી
ક્રિયાઈ નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવ આવશ્યક હૈ । યહા પર મી નો
શબ્દ દેશ નિષેધ પરક હૈ અર્થાત્ આગમ કે ઇક દેશ કા વાચક હૈ યે
લૌકિક ઓર કુપ્રાવચનિક જિન્હેં નો આગમ કી અપેક્ષા સે ભાવાવશ્ય
કરૂપ મેં પ્રકટ કિયા ગયા હૈ ધર્મવદ કે વાચ્ય નહીં હૈ । ક્યોં કિ હન
કી આરાધના સે જીવોં કે કર્મોં કી નિર્જરા નહીં હોતી હૈ । અતઃ તીર્થ
કર પ્રભુ ને ઉનકે આરાધન કરને કી આજ્ઞા પ્રદાન નહીં કી હૈ ।

નો આગમ કી અપેક્ષા સે લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક હસ પ્રકાર

એકદેશથી આગમતા પણ છે કેમકે હાથ બેડના, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ
જે કિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે આ દૃષ્ટિએ એમનામા આગમતા
સપૂર્ણપણે નથી ફક્ત આગમ ॥ એકદેશતા જ છે ચરક ચીરિક વગેરે વડે
માન્ય ગ્રંથોની નિર્દિષ્ટ કિયાઓના જ ત્યા સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અથમા
તેમનો ઉપયોગ વગેરેરૂપ પરિણામ છે એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિકા
વગેરેની કિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે અહીં પણ નો
શબ્દ દેશનિષેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે આ લૌકિક
અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમા પ્રગટ કર
વામા આગમ છે—ધર્મવદના વાચ્ય નથી કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના
કર્મોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થકર પ્રભુએ એમને આરાધવાની
આજ્ઞા કરી નથી

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છે —
જળ્ણ ક્ષમે સમણે વા સમણી વા સાવઓ વા સાવિયા વા તચ્ચિત્તે તમ્મણે તલ્લેસે

तल्लेसे तज्यमिण तत्तिवज्जममाणे तद्वोपउत्ते तदपिअकरणे तव्भावणा
माविण अणत्थ कत्थइ मण अरुरेमाणे उभओकाल आवम्मसय करेत्ति, से त लोगु
त्तरिय भावावस्सय, से त नोआगमतो भावावस्सय, से त भावावस्सय ॥'

छाया-यत्फलु अमणो वा अमणी वा आयओ वा आविका वा तच्चित्तस्सन्म-
नस्सुत्तल्लेइयस्सत्त-परमितन्ततीजा-पदसायस्सन्दर्योपयुक्तस्तदर्थितस्सरणरतद्भावना-
भावित अन्यत्र कुत्रचिन्मनोऽदुर्गन् उभयकाल यत् आवश्यक सामायिकादि करोति
तेषां तद्वोक्तोरित्तरि भावावश्यम् । तेषां तद् नोआगमतो भावावश्यम् तदे-
तद्भावावश्यम् ।

आप्यवश्य करणीयत्वादावश्यक च, तदर्थोपयोगश्रद्धादिपरिणामस्य मद्भा-
वाद्भावत्वम्, रजोरणममार्जिनाव्यापारयथारातिरुवन्दनकरणात्तर सत्रिपि
है-जण्ण इमे ममणे वा ममणी वा सात्रओ वा साविया वा तच्चित्तस्से
तम्मणे तल्लेसे तदज्जमिण तत्तिवज्जममाणे तद्वोपउत्ते तदपिअ-
करणे तव्भावणाभाविण अणत्थ कत्थइ मण अरुरेमाणे उभओकाल
आवम्मसय करेत्ति, से त लोगुत्तरिय भावावस्सय, से त नो आगमतो
भावावस्सय से त भावावस्सय (अनुयोगद्वार)

अमण अथवा अमणी आयओ अथवा आविका जो सामायिक आदि
आवश्यक क्रियाओ को तच्चित्त होकर (उनमें ही चित्त लगाकर) तद्गन
होकर उनमें ही अन्त करणको एकाग्ररत वृत्तादि सूत्रमें कथित विधिके
अनुसार दोनों कालों में करतेह वह उनकी कार्य नो आगम की अपेक्षा
से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक है । ये सामायिक आदि क्रियाएँ
अवश्य करने योग्य होने से आवश्यक है । कर्त्ता का उनके अर्थ में
उपयोग रूप एव श्रद्धा आदि रूप परिणाम का मद्भाव होने से उनमें

तदज्जमिण तत्तिवज्जममाणे तद्वोपउत्ते तदपिअकरणे तव्भावणाभाविण
अणत्थ कत्थइ मण अरुरेमाणे उभओकाल आवम्मसय करेत्ति, से त लोगुत्तरिय
भावावस्सय, से त नो आगमतो भावावस्सय, से त भावावस्सय (अनुयोगद्वार) ।

श्रमण अथवा श्रमणी आवक अथवा आविका के सामानिक वगेरे आव-
श्यक क्रियाओंने तच्चित्त थधने (तेमनामा मन परावीने) तत्तीन वज्जे
तेमनामा न मन लगावीने वगेरे सूत्रमा कथित निधि सुत्थ जने पणत
कर छे तेमनु ते कार्य नो आगमनी अपेक्षाओं लोकोत्तरिक भाव आवश्यक
छे आ सामायिक वगेरे क्रियाओं अवश्य कत्वा योग्य होवाथी आवश्यक् छे
कर्त्ता तेमना अर्थमा उपयोगइय परिणामनो सद्भाव होवाथी तेमनामा
भावता पणु छे रत्तेइत्थुथी भूमि वगेरेनु प्रमाणन करवु, वदना वगेरे कृति

પદ્ધતિચાર્યકરણપાયાઃ ક્રિયાયા અનામમ્ સન નોભાગમત્ત મોષ્યમ્, અત્રાપિ
નો-ગદ્ધ્ય ટેગાઃ પ્રતિષેધસ્તાન । ઇદમ્ ઓતોતરિક નો આગમતો ભાગત્ત
ઇવમ્ ધર્મપદવા-પમ્ તત્ર પ્રિતેષતયા મમતોડ્ઠત આગાયાઃ મદ્ધારાન્ । અન્યેડ્ધિ
ધર્મલક્ષણમેરમાદુ—

“તત્રનાદવિરુદ્ધાચ-અનુષ્ઠાન યથોદિતમ્ ।

મૈત્ર્યાદિમાત્રમમિથ્ર તદ્ધર્મ ઇતિ કીર્ત્યતે ” ॥ ૧ ॥

આગમતા બી છે રજોતરણ સે ભૂમિ આદિ કા પ્રમાર્જન કરના, વડના
આદિ કૃતિ કર્મ કરના આદિ પ્રિથિ પૂર્વક જો પદ્ધિ આવશ્યક કરને
રૂપ ક્રિયાતે હિ પ્રેક્ષ્ય “ક્રિયા આગમો ન હોઈ” હમ્ નિયમ કે
અનુસાર આગમ નથી હિ । અતઃ દન મેં આગમ કે નક દેશ અમાય
શ્રી અપેક્ષા સે નો આગમતા છે । યર્ણ પર શ્રી નો સ્વદ્ધ સમ્પૂર્ણ રૂપ સે
આગમતા પ્રતિષેધ પદ્ધતિ નોતર ઉમરે નક દેશ કા શ્રી પ્રતિષેધક છે ।
અતઃ યે સામાયિક પ્રાપ્તિ પદ્ધતિ આવશ્યક નોઆગમ સી અપેક્ષા સે
લોકાત્તરીક માત્ર આવશ્યક છે । ઓર દનકે શ્રી આરાધન કરને કી
જિતેન્દ્ર દેવમે મળ્ય જીવોં કો આજ્ઞા દી છે । કારણ કિ યે ધર્મપદ કે
વાચ્ય છે દનકી આરાધના સે મળ્યજીવોં કે કર્મોં કી નિર્જરા હોતી છે ।

દુસરોં ને શ્રી હમ્ પ્રકાર યર્મ કા લક્ષણ જ્ઞાતા છે—

તત્રનાદવિરુદ્ધાચ-અનુષ્ઠાન યથોદિતમ્ ।

મૈત્ર્યાદિમાત્રમમિથ્ર તદ્ધર્મ ઇતિ કીર્ત્યતે ॥

કર્મ આય વા વગેરે વિધિપૂર્વક જે પદ્ધિ આવશ્યક કરવારૂપ ક્રિયાઓ છે
તેઓ સવે “ક્રિયા આગમો ન હોઈ” આ નિયમ મુજબ આગમ નથી એટલ
માટે એમનામા આગમના એકદેશ અભાવની અપેક્ષાથી નો આગમતા છે
અહીં પણ નો શબ્દ સંપૂર્ણ રૂપથી આગમનો પ્રતિષેધ પરત નથી પણ તેના
એકદેશનો જ પ્રતિષેધક છે એટલા માટે સામાયિક વગેરે આ પદ્ધિ આવ
શ્યકો નો આગમની અપેક્ષા એ લોકાત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે એને જિતેન્દ્ર
દેવે એમની આરાધના કરવાની જ બળ્ય જીવોને આજ્ઞા કરી છે હમ્કે આ
બધા ધર્મપદના વાચ્ય છે એમની આરાધનાથી બળ્ય જીવોના કર્મોની
નિર્જરા થાય છે

તેઓ પણ આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ બતાવ્યું છે—

૧૫ તત્રનાદવિરુદ્ધાચ-અનુષ્ઠાન યથોદિતમ્ ।

મૈત્ર્યાદિમાત્રમમિથ્ર તદ્ધર્મ ઇતિ કીર્ત્યતે ॥

અસ્યવ્યાર્યાવચનાદિતિ ન્યયલોપે પશ્ચમી, વચનમનુસન્ધેત્પર્યઃ । વચનમ્—
અમાગઃ । ક્રીદશાદ્ વચનાદિન્યા—અવિરુદ્ધાત્-વપન્હેદતાપેષુ અવિપટમાનાત્,
તત્ર વિધિપ્રતિષેધયોર્ગાદુન્નેનોપર્ણન યદશુદ્ધિઃ, પરે પટે તથોગક્ષેમકારિક્રિયોપદ-
ર્શન દેદશુદ્ધિઃ, પ્રિપતિપેવતદ્વિરયાણા જીવાદિપદાર્થાનાં ચ સ્યાદ્વાદપરીક્ષયા
યાથાત્મ્યેન સમર્થન તાપશુદ્ધિઃ । તન્વાવિરુદ્ધ વચન જિનપ્રણીતમેવ, નિમિત્તશુદ્ધેઃ

અવિરુદ્ધ આગમ સે તથાદિત એવ મૈત્રી આદિ ભાવનાઓ સે મિશ્રિત
જો અનુષ્ઠાન છે તે ધર્મ છે । તપ્પર્ય-વચન શબ્દ ના અર્થ આગમ છે ।
આગમ મેં અવિરુદ્ધતા રૂપ, તાપ, ઓર દેદ દ્વારા પરીક્ષિત હોને પર હી
આતી છે । જિસ પ્રકાર સુવર્ણ કી પરીક્ષા કપ-કસાંટી પર કરને સે
તાપ-અગ્નિ મે તપાને સે ઓર દેદ-છેત્ની વગેરે દ્વારા કાઢને સે હોતી
છે, ઉસી પ્રકાર આગમ કી શુદ્ધિ કી પરીક્ષા મી ઇન ત્રીન ઉપાયો દ્વારા
કી જાતી છે । વિધિ ઓર પ્રતિષેધ ના ઘટલના સે જિસ શાસ્ત્ર મેં
વર્ણન છે, વહ શાસ્ત્રરૂપ સે શુદ્ધ કરા જાતા છે । પદ પદ પર જિસ
શાસ્ત્ર મેં ઇનકે યોગ ઓર ક્ષેમકરિ ક્રિયાઓ કા કથન ક્રિયા ગયા
મિલતા છે વહ શાસ્ત્ર દેદસે શુદ્ધમાના જાતા છે । વિધિ એવ પ્રતિષેધ તથા
ઇન કે વિષયભૂત જીવાદિક પદાર્થો કા સ્વાદ્વાદ ઢગ સે જહા પર ચર્ચા
સમર્થન ક્રિયા જાતા છે સસભગી દ્વારા જહા પર ઇનકા સુન્દર શૈલી સે
વિવેચન કરને મે આના છે વહ શાસ્ત્ર તપ ઉપાયદ્વારા શુદ્ધ માના જાતા

અવિરુદ્ધ આગમથા યથોદિત અને મૈત્રી વગેરે ભાવનાઓથી મિશ્રિત જે
અનુષ્ઠાન છે તે ધર્મ છે તપ્પર્ય—વચન શબ્દનો અર્થ આગમ છે આગ
મમા અવિરુદ્ધતા, ડપ, તાપ અને દેદ વડે પરીક્ષિત થયા પછી જ આવે છે
જેમ મોનાની પરીક્ષા કપ-કસાંટી ઉપર કરવાથી તાપ અગ્નિ ઉપર તપાવવાથી
અને દેદ-છેત્ની વગેરેથી તપવાથી હોય છે, તેમજ આગમની શુદ્ધિની પરીક્ષા
પણ આ ત્રણે ઉપાયો વડે કરવામા આવે છે વિધિ અને પ્રતિષેધનુ મોટા
પ્રમાણમા જે શાસ્ત્રમા વર્ણન છે, તે શાસ્ત્ર તપથી શુદ્ધ ઢહેવાય છે ડગલે ને
પગલે જે શાસ્ત્રણા એમના યોગ અને ક્ષેમકરિ ક્રિયાઓનુ ધ્યન કરવામા
આવ્યું છે તે શાસ્ત્ર ઉદ્દેશી શબ્દ માનવામા આવે છે વિધિ અને પ્રતિષેધ
તેમજ એમના વિષયભૂત જીવ વગેરે પદાર્થોનો સ્વાદ્વાદના રૂપથી ન્યા યથાર્થ
વર્ણન કરવામા આવે છે, સપ્તભગી વડે ન્યા સુન્દર શૈલીમા એમનુ વિવેચન
કરવામા આવે છે, તે શાસ્ત્ર તપ ઉપાયવડે શુદ્ધ માનવામા આવે છે આ ત્રણે

પદ્ધતિપાત્રકરુણરૂપાયા' ક્રિયાયા અનાગમ'તાત્ત્વ નોભાગમત્ત્વ મો-યમ્, અત્રાપિ નો-શબ્દસ્ય દેશતઃ પ્રતિષેધસ્ત્યાન્ । યદમ્ લોકોત્તરિક નો ભાગમતો માત્રાવશ્યક ધર્મપદવાચ્યમ્ તત્ત્વ પ્રિયેતયા ભગવતોર્દેશ આત્માયા' મદ્યાતાન્ । અન્યેષામિ ધર્મલક્ષણમેત્યાદુ'—

“ રચનાદવિરુદ્ધાદ્ય-દનુષ્ઠાન યથોક્તિમ્ ।

મૈત્ર્યાદિભાગસમિશ્રં તદ્ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે ” ॥ ૧ ॥

ભાવતા સી હૈ રજોદરણ સે ભૂમિ આદિ કા પ્રમાર્જન કરના, વદના આદિ કૃતિ કર્મ કરના આદિ વિધિ પૂર્વક જો પદ વિધિ આવશ્યક કરને રૂપ ક્રિયાઈ હે વે જન “ કિરિયા આગમો ન હોઈ ” હમ નિયમ કે અનુમાર આગમ નહીં હૈ । અત્ત ઇન મેં આગમ કે ત્ત્વ દેશ અમાત્ર મી અપેક્ષા સે નો આગમતા હૈ । યહાં પર મી નો તાન્ત્ર સમ્પૂર્ણ રૂપ સે આગમકા પ્રતિષેધ પરક ન હોત્તર ઉસકે ત્ત્વ દેશ કા હી પ્રતિષેધક હૈ । અત્ત ધે સામાયિક આદિ પદ્ધતિ આવશ્યક નો આગમ કી અપેક્ષા સે લોકોત્તરીક ભાવ આવશ્યક હૈ ' ઓર ઇનકે હી આરાધન કરને કી જિનેન્દ્ર દેવને ભગ્ય જીવોં કો આજ્ઞા દી હૈ । કારણ કિ ધે ધર્મપદ કે વાચ્ય હૈ ઇનકી આરાધના સે ભગ્યજીવોં કે કર્મોં કી નિર્જરા હોતી હૈ ।

દૂમરોં ને મી હસ પ્રકાર યમ કા લક્ષણ ત્હા હૈ—

રચનાદવિરુદ્ધાદ્યદનુષ્ઠાન યથોક્તિમ્ ।

મૈત્ર્યાદિભાગસમિશ્રં તદ્ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે ॥

કર્મ આય વા વગેરે વિધિપૂર્વક જે પદવિધિ આવશ્યક કરવારૂપ ક્રિયાઓ છે તેઓ સવે “ કિરિયા આગમો ન હોઈ ” આ નિયમ મુજબ આગમ નથી એટલા માટે એમનામા આગમના એકદેશ અભાવની અપેક્ષાથી ના આગમતા છે અહીં પણ નો શબ્દ સંપૂર્ણ રૂપથી આગમનો પ્રતિષેધ પરક નથી પણ તેના એકદેશનો જ પ્રતિષેધક છે એટલા માટે સમાયિત વગેરે આ પદવિધિ આવશ્યકો નો આગમની અપેક્ષા એ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે અને જિનેન્દ્ર દેવે એમની આરાધના કરવાની જ ભગ્ય જીવોને આજ્ઞા કરી છે એમકે આ બધા ધર્મના વાચ્ય છે એમની આરાધનાથી ભગ્ય જીવોના કર્મોની નિર્જરા થાય છે

બીજાઓએ પણ આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ બતાવ્યું છે —

રચનાદવિરુદ્ધાદ્યદનુષ્ઠાન યથોક્તિમ્ ।

મૈત્ર્યાદિ ભવસમિશ્રં તદ્ધર્મં ઇતિ કીર્ત્યતે ॥

कारणस्वरूपानुविधायि कार्यं, तत्र दुष्टकारणाऽऽरब्ध कार्यमदुष्ट भवितुमर्हति,
निम्नजीजादिषु यष्टिरिवेति । अन्यथा-कारणव्यवस्थोपरमप्रसङ्गात् ।

यच्च-यद्वृत्ताप्रणयनप्रवृत्तेषु तीर्थान्तरीयेषु रागादिमत्स्वपि घृणाक्षरोत्किरण

रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरगरिषून् इति जिनः ” राग द्वेष आदिक जो
अन्तरग शत्रु हैं इन पर जिसने विजय पायी है वे ही जिन कहलाते
हैं जिस प्रकार तपन (सूर्य) दहन (अग्नि) आदि शब्द यथोनाम तथा
गुण वाले हुआ करते हैं, इसी प्रकार “ जिन ” यह नाम भी यथा
नाम तथा गुण वाला है यथा नाम तथा गुण का होना ही नाम की
सार्थकता है । जिन्होंने ने इन अन्तरग शत्रुओं को परास्त नहीं किया
उनके वचनो में परस्पर अविरुद्धार्थता नहीं आसकती है-क्यों कि वहा
पर निमित्त की शुद्धि नहीं हैं । इसीलिये अजिन प्रणीत वचन अवि-
रुद्ध नहीं होते हैं । लोक में भी जिस प्रकार नीम के बीज से इक्षु की
उत्पत्ति देखने में नहीं आती उसी प्रकार सदोष कारण से उत्पन्न हुआ
कार्य भी निर्दोष नहीं होना है । कार्य में निर्दोषता कारण कि निर्दोषता
पर आधार रखती है । न्याय शास्त्र का भी यही सिद्धान्त है “ कारण
स्वरूपानुविधायि कार्य ” कि कार्य, कारण के स्वरूप का अनुविधायक
होता है । यदि इस प्रकार की व्यवस्था न मानी जावे तो फिर
कार्य कारण भाव की व्यवस्था ही नहीं बन सकती है । हर एक पदार्थ

“ जयति रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरगरिषून् इति जिन ” रागद्वेष वगैरे के
अन्तरग शत्रुओं के तेमना उपर जेभेले विजय भेजव्यो के तेओ न जिन
कडेवाय के जेम तपन (सूर्य) दहन (अग्नि) वगैरे शब्दो नाम जेवा न
शुशुवाणा डोय के, ते प्रभावे न “ जिन ” आ नाम पक्ष नाम प्रभावे न
शुशुवाणु के जेवु नाम तेवा शुशु डोवा के न नामनी सार्थकता के जेभेले
आ अन्तरग शत्रुओंने डराव्या नयी तेमना वचनोभा परस्पर अविरुद्धार्थता
आवी शकती नथी हेम के त्या निमित्तनी शुद्धि नथी ओटला भाटे अजिन
प्रणीत वचनो अविरुद्ध होना नथी बोझा पक्ष जेम बीमडाना जी०थी शेरडीनी
उत्पत्ति जेवाभा आवती नथी तेमन सदोष कारणुथी उत्पन्न थयेवु कार्य पक्ष
निर्दोष होतु नथी कार्यभा निर्दोषता जरणुनी निर्दोषता उपर आधारित डोय के
न्यायशास्त्रने पक्ष ओ० सिद्धांत के, “ कारणस्वरूपानुविधायिकार्य ” के कार्य कार
णुना स्वप्नो अनुविधाता डोय के जे आ जतनी व्यवस्था मानवामा आवे

વચનસ્ય દિ વક્તા નિમિત્તમન્તરદ્વયમ્, તસ્ય ન રાગદ્વેષમોહપારતન્ત્યમશુદ્ધિઃ, તેભ્યો વૈતથયવચનપટ્ટચે, ન ચૈવાશુદ્ધિર્જિને મગાતિ, જિનત્વવિરોધાત્, જયતિ રાગદ્વેષ મોહરૂપાન્તરજ્ઞાન રિપૂનિતિ શન્દાર્યાનુપપન્ને. તપનદહનાદિશઙ્કરાત્, અન્વર્થતયા ચાસ્યામ્યુપગમાત્, નિમિત્તશુદ્ધ્યભાવાદ નાજિનપ્રણીતવચનમવિરુદ્ધમ્ । યત —
 હૈ । ઇન ત્રીનોં ઉપાયોં સે પરીક્ષિત આગમ હી પરિશુદ્ધ કહા ગયા હૈ ।
 અવિરુદ્ધ વચન કા નામ હી આગમ હૈ ।

ઇન કપાદિકોં સે જો આગમ મેં શુદ્ધતા આતી હૈ ઉસકા કારણ નિમિત્ત કી શુદ્ધિ હૈ । નિમિત્ત શુદ્ધ જિન પ્રણીત વચન હી હૈં । અન્ય પ્રણીત વચન નહીં । નિમિત્ત મેં ભી શુદ્ધિ કા કારણ રાગ, દ્વેષ ઓર મોહ કા અભાવ હૈ । વચન કા અન્તરગ કારણ વક્તા હી કૃત્રા કરતા હૈ વક્તા કી પ્રમાણતા સે હી વચન-આગમ મેં પ્રમાણતા આતી હૈ । હસી લિધે રાગ દ્વેષ આદિ સે કલુષિત વ્યક્તિયોં કે વચન પ્રમાણ કોટિ મેં નહીં આતે હૈં । ક્યોં કિ રાગ દ્વેષ આદિક સદ્ભાવ મેં વચનોં મેં પરસ્પર વિરુદ્ધ અર્થ કી પ્રરૂપકતા સ્વયં હી આ જાતી હૈ અતઃ યહ નિશ્ચિત સિદ્ધાન્ત હૈ કિ જહાં પર ઇનકા સર્વથા અભાવ હૈ વહી સત્તા આગમ કા પ્રણેતા હો સકતા હૈ । ઓર ઉસી આગમ મેં અવિરુદ્ધતા હૈ । એસા અવિરુદ્ધ આગમ જિન પ્રણીત હી હો સકતા હૈ ક્યો કિ ઉનમેં પૂર્વોક્ત રાગ દ્વેષ આદિ દ્વારા અશુદ્ધિ કા સર્વથા અભાવ હો ચુકા હૈ । હસ કે સર્વથા દૂર હોને સે હી વે “ જિન ” હસ પ્રકાર કી સત્તા વાલે હુય હૈં । “ જયતિ

ઉપાયોથી પરીક્ષિત આગમ જ પરિશુદ્ધ કહેવામા આવ્યો છે અવિરુદ્ધ વચનનું નામ જ આગમ છે કય વગેરેથી આગમમા જે શુદ્ધતા આવે છે તેનું કારણ નિમિત્તની શુદ્ધિ છે જિન પ્રણીત વચનો જ નિમિત્તશુદ્ધ છે બીજાઓ વડે પ્રણીત વચનો નહિ નિમિત્તમા પણ શુદ્ધિનું કારણ રાગ દ્વેષ અને મોહનો અભાવ છે વચનનું અતરંગ કારણ બોલનાર જ હોય છે બોલનારા (વક્તા) ની પ્રમાણતાથી જ વચન-આગમમા પ્રમાણતા આવે છે એટલા માટે જ રાગ દ્વેષ વગેરેથી કલુષિત માણસોના વચનો પ્રમાણ કોટિમા આવતા નથી કેમકે રાગદ્વેષ વગેરે મહુભાવ વચનોમા પરસ્પર વિરુદ્ધ અર્થની પ્રગટતા બંને જ આવી બાય છે એટલા માટે આ નિશ્ચિત સિદ્ધાન્ત છે કે જ્યાં એમનો સંપૂર્ણ અભાવ છે તે જ સાચા આગમનો પ્રણેતા થઈ શકે છે અને તે આગમમા જ અવિરુદ્ધતા છે એવું અવિરુદ્ધ આગમ જિન પ્રણીત જ થઈ શકે છે કેમકે તેમનામા પૂર્વોક્ત રાગદ્વેષ વગેરે વડે અશુદ્ધિ ને સંપૂર્ણપણે અભાવ થઈ ચૂક્યો છે અશુદ્ધિ સર્વ રીતે મટી જવાથી તેઓ ‘ જિન ’ સંન છે

સોદગમનુષ્ઠાન ધર્મ ? કહેવા—‘યથોદિતમ્’ યથા યેન પ્રકારણ કાર્યાધારાનુસારરૂપેણ—ઉદિત=પ્રતિપાદિત, તત્રૈવાવિરુદ્ધરચને કિતિ ગમ્યમ્ ।

અન્યથા—

જો જદાયા ન કુણદ, મિચ્છાદિટ્ટી તત્તો ઉ કો ખનો ? ।

વદ્દે મિચ્છત્ત, પરસ્સ સક જણેમાણો ॥ કિતિ ।

કાયા-પો યથાવાદ ન કરોતિ, મિચ્છાદિષ્ટિસ્તતસ્તુ કોડન્યઃ ।

વર્ધયતિ મિચ્છાત્ત, પરસ્ય ગદ્ધાજનયન્ ॥ કિતિ ।

પુનરપિ કીદશમિત્પાટ—‘મેઝ્યાદિભાવસમિશ્રમ્’ કિતિ । મેઝ્યાદયઃ=મૈત્રી મુદિતા કરુણા માધ્યસ્થત્વના યે ભાવાઃ=અન્તઃસ્પર્શપરિણામા, તત્પૂર્વકાશ્ર

યાય સે કરી ૨ અવિરુદ્ધ અર્થ પ્રતિપાદકતા સો વહ ડનકી નિજ કી ઘર કી વસ્તુ નહીં હૈ—ડસકા મૂલ સોત અવિરુદ્ધ અર્થ કા પ્રરૂપક જિન પ્રણિત આગમ હી હૈ । યાત્રી યાત્ર માર્ગાનુસારી બુદ્ધિવાલે વ્યક્તિ મે મી સમજ લેનો યાહ્યે । વહ જો કુચ ની સત્યાર્થ કરતા હૈ ડસકા મૂલ કારણ જિનપ્રણિત આગમ કા મહારા હી હૈ । શ્લોક કથિત “યથોદિત” પદ કસ યાત્ર કા સમર્થન કરતા હૈ કિ દેશ કાલ આદિ કી આરાધના કે અનુસાર જો આચાર-અનુષ્ઠાન પ્રતિપાદિત કિયા ગયા હૈ । ડસસે જો અવિરુદ્ધ કહા ગયા હૈ—વહી ધર્મ હે કસસે વિપરીત નહીં । “મેઝ્યાદિ ભાવ સમિશ્રમ્” કસ પદ ઢારા સૂત્રકાર યહ પ્રતિપાદિત કરતે હૈ કિ વહ અનુષ્ઠાન મૈત્રી, મુદિતા, કરુણા ઓર માધ્યસ્થ કન ચાર લક્ષણો સે યુક્ત હોતા હૈ । યે ધર્મ કે તાહ્ય ચિહ્ન હૈ । કનકે સદ્ભાવ સે આત્મા મે

અર્થ પ્રતિપાદકતા પશુ ડે તે તેમની યોતાની વસ્તુ તેા નથી જ ડેમકે તેના મૂળિયા તેા અવિરુદ્ધ અર્થના પ્રકરક જિનપ્રણિત આગમમા જ છે એ જ યાત્ર માર્ગાનુસારી બુદ્ધિવાળી વ્યક્તિમા પશુ સમજ લેવી જોઈએ તે જે કંઈ પશુ સત્યાર્થ કહે ડે તેતુ મૂળ કારણ જિન પ્રણિત આગમ જ ડે શ્લોક કથિત “યથોદિત” પદ આ યાત્ર ને સ્પષ્ટ કરે છે ડે દેશકાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આચાર-અનુષ્ઠાન-પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે, તેનાથી જે અવિરુદ્ધ કહેવામા આવ્યુ છે તે ધર્મ છે એનાથી વિપરીત નહિ “મેઝ્યાદિ ભાવસમિશ્રમ્” આ પંચકે સૂત્રકાર આ યાત્ર સ્પષ્ટ કરે છે કે તે અનુષ્ઠાન મૈત્રી, મુદિતા, કરુણા અને માધ્યસ્થ આ ચાર લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે આ બધા ધર્મના તાહ્ય ચિહ્નો છે એમના સદ્ભાવથી આત્મામા ધર્મનુ અસ્તિત્વ

વ્યવહારેણ ચચિત્ કિંચિદપિરુદ્ધમપિ ચચનમુપલબ્યતે, માર્ગાનુસાંગિગુદ્ધૌ તા પ્રાણિનિ ચચિત્, તદપિ જિનમણીતમેય, તન્મૂલકત્વાત્ તમ્ય ।

હર एक का कार्य और कारण हो जायगा । अतः आगमस्य कार्य की शुद्धि के लिये निमित्त रूप कारण शुद्धि का होना अवश्य आवश्यकीय माना गया है ।

प्रश्न—आपने जो कहा कि आगम में अचिरुद्धता उसके कारणभूत प्रणेता के अधीन है—मो यह बात हमें मान्य है । परन्तु इससे यह बात तो सिद्ध नहीं होती है कि वे अचिरुद्ध वचन जिन भगवान के ही हैं' अन्य के नहीं—कारण कि अन्य सिद्धान्तकारों के वचनों में भी किसी अंशसे अचिरुद्धार्थता देखी जाती है । अतः उन्हें सदोप मान कर आप जो उनमें अनासत्ता सिद्ध करते हैं मो यह बात कैसे मान्य हो सकती है ?

उत्तर—शका तो ठीक है—परन्तु विचार करने से इनका उत्तर भी सहजरूप में मिल जाता है । अन्य सिद्धान्तकारों ने जो कुछ रचनाएँ की हैं—वे सब उन्होंने ने अपनी इच्छानुसार ही की हैं । अपनी निज कल्पना में जो कुछ उन्हें सूझा वही उन्होंने ने लिखा है । उनकी रचनाओं में पूर्वापर विरोध स्पष्ट प्रतीत होता है इससे उनमें रागादिक दोषों का अस्तित्व सिद्ध होता है । अब रही उनके वचनों में घुणाक्षर

નહિ તો તથા કારણ ભાવની વ્યવસ્થા બની શકે તેમ નથી કહેવું પડતું કહેવું કનુ કાર્ય અને કારણ થઈ જશે એટલા માટે આગમરૂપ કાર્યની શુદ્ધિ માટે નિમિત્તરૂપ કારણ શુદ્ધિ થવી જોઈએપણે આવશ્યકીય માનવામાં આવી છે

અથ —તમે કહ્યું કે આગમમાં અચિરુદ્ધતા તેના કારણભૂત પ્રણેતાના અધીન છે—એ વાત એમને માન્ય છે પણ એનાથી આ વાત તો સિદ્ધ થતી નથી કે તે અચિરુદ્ધ વચનો જિન ભગવાનના જ છે, બીજાઓના નહિ કેમકે બીજા સિદ્ધાંતકારોના વચનોમાં પણ ડોષ પણ અથે અચિરુદ્ધાર્થતા જોવામાં આવે છે એટલા માટે તેમને દોષયુક્ત માનીને તમે જો તેમનામાં અનાપ્તતા સિદ્ધ કરો છો આ વાત કેવી રીતે માન્ય થઈ શકે તેમ છે !

ઉત્તર —શકા તો કીડ છે, પણ વિચાર કરવાથી આનો જવાબ પણ સરળ રીતે મળી શકે તેમ છે બીજા સિદ્ધાંતકારોએ જે રચનાઓ કરી છે તે બધી તેમણે પોતાની ઈચ્છા મુજબ જ કરી છે પોતાની કલ્પનાથી જે કંઈ તેમને યોગ્ય લાગ્યું તે તેમણે લખ્યું છે તેમની રચનાઓમાં પૂર્વાપર વિરોધ સ્પષ્ટ રીતે દેખાઈ આવે છે એનાથી તેઓમાં રાગ વગેરે દોષો છે એવી વાત સિદ્ધ થાય છે હવે ઘુણાક્ષર ન્યાયથી ડોષક કોઈક સ્થાને તેમના -

પશ્ચમી, તથા ચ-ચનપ્રયોજ્યપ્રવૃત્તિત્વ લક્ષણમિતિ ન કુત્રાપ્યવ્યાસિદોપાવશાઃ
પ્રીતિમવત્યસદ્ધાનુષ્ઠાનાનામપિ ચનપ્રયોજ્યત્યાજનપાયાદિતિ ।

કિં ચ--હિંસાદિપાપપરિહારો વર્મસિદ્ધેર્લિંગમિત્યાર્દતા સ્વીકૃયતિ ।
તથા ચોક્તમ્-

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્ય પાપજુગુપ્સાઽય નિર્મલો યોધઃ ।

લિંગાનિ ધર્મસિદ્ધેઃ, પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વ ચ ॥ ઇતિ ।

પાપજુગુપ્સા=પાપપરિહારઃ ।

પદકાયવ્રથમાધ્ય પ્રતિમાપૂજન કુર્વતા ધર્મસિદ્ધિ કથ સ્યાદિતિ વિચારયન્તુ
મુધિય । અપર ચ—

પ્રતીત નહીં હોતા હું તપોં કિં વચનાનુષ્ઠાન ધર્મ ત્તા અર્થ વચન કે
અનુસાર હોને વાલા અનુષ્ઠાન ધર્મ હૈ ઉસમે કોઈ જાતકા લોપ
નહીં આતા હૈ । ”

કિંચ—હિંસાદિક પાંચ પાપોં કા પરિત્યાગ વર્મ સિદ્ધિ ત્તા ચિહ્ન
હૈ હસ પ્રકાર કી માન્યતા જૈનિયોં કી હૈ । શાસ્ત્રાન્તર મે યહી વાત
પ્રકટ કી ગઈ હૈ—

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્ય પાપજુગુપ્સાઽય નિર્મલો યોધઃ ।

લિંગાનિ ધર્મસિદ્ધેઃ પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વ ચ ॥ (પોડશ-ગ્રંથ ૪ પ્રકરણ)

ઉદારતા-હૃદય કી વિપાલતા, દાક્ષિણ્ય-સર્વ જીવોં કે અનુગત
પ્રવૃત્તિ, પાપજુગુપ્સા-પાપ કા પરિત્યાગ, નિર્મલયોધ-તત્ત્વજ્ઞાન, ઔર
જન પ્રિયત્વ યે ૫ ધર્મસિદ્ધિ કે લક્ષણ હૈં । અવ યહા પર વિચારને કી
વાત યહ હૈ કિં જય પાપ કા પરિહાર કરના યહ વર્મસિદ્ધિ કા લક્ષણ

આવશ્યકતા જણાતી નથી કેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મનો અર્થ વચન મુજબ થનાર
અનુષ્ઠાન ધર્મ છે આમા ઠોધ પણ જાતનો દોષ નથી

કિંચ—હિંમા વગેરે પાપ પાપોના પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનુ ચિહ્ન છે આ
જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે શાસ્ત્રા તરમા પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ
રવામા આવી છે —

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્ય પાપજુગુપ્સાઽય નિર્મલો યોધઃ ।

લિંગાનિ ધર્મસિદ્ધેઃ પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વ ચ ॥ (પોડશગ્રંથ ૪ પ્રકરણ)

ઉદારતા—હૃદયની નિશાલતા, દાક્ષિણ્ય-બધા જીવોને અનુકૂળ થઈ પડે
તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા-પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ યોધ-તત્ત્વજ્ઞાન, અને
જનપ્રિયત્વ આ પાંચે ધર્મસિદ્ધિના લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત
વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ વર્મસિદ્ધિનુ લક્ષણ

વાઘચેષ્ટાવિશેષાઃ, તૈઃ સમિશ્ર=સપ્રકૃત, મૈત્ર્યાદિમાયાના નિ શ્રેયસામ્યુદયધર્મમ્
લત્વેન શાસ્ત્રાન્તરેષુ પ્રતિપાદનાત્ । તત્પ્રતિયમનુષ્ઠાન ધર્મ ઇતિ કીર્ત્યન્તે
શબ્દતે સુધીભિરિતિ ।

નન્વેય વચનાનુષ્ઠાન ધર્મ ઇતિ પ્રાપ્ત, તથા ૩ મીતિભક્ત્યસદ્ધાનુષ્ઠાનેષ્વ
વ્યાપ્તિરિતિ ચેન્ન-૨૬ તુ વચનાદિત્યગ્ર વેદાત્ પ્રવૃત્તિર્નિત્યત્રેય પ્રયોજ્યત્વાર્થિકા

ધર્મ કા અસ્તિત્વ જાના જાતા હૈ અન્ય મિદ્ધાન્તકારો ને મી કન્ને નિ.
શ્રેયસ ઓર સ્વર્ગ કે કારણભૂત ધર્મ કા મૂલ કહા હૈ । અતઃ જો
આગમ સે અચિરદ્વ હૈ, કાલ ઓટિ કી આરાધના કે અનુસાર જો
આરાધિત હોતા હૈ ઓર જો મૈત્રી આદિ પાર ભાવનાઓ સે ગર્ભિત હૈ
એસા અનુષ્ઠાન હી ધર્મ હૈ । એસે હી ધર્મ કી આરાધના કરને કા ગણ
ધર આદિ કા આદેશ હૈ ।

ભાવાર્થ-તીર્થકર કથિત આગમ કે અનુસાર હોને વાલે અનુષ્ઠાન કા
નામ ધર્મ હૈ । હસકા ફલિતાર્થ યહી હૈ કિ જિસ અનુષ્ઠાન મે તીર્થકર
પ્રભુ દ્વારા કથિત આગમ સે વિરોધ નહીં જાના હૈ વહી ધર્મ હૈ । તથા
ચ-પ્રીતિ ભક્તિ ઓર અસંગ રૂપ અનુષ્ઠાનો મેં હસ લક્ષણ કી અપ્રાપ્તિ
નહીં હોતી હૈ ક્યોં કિ વરા પર મી હસ લક્ષણ કા સદ્ભાવ પાયા જાતા
હૈ “ વાચનાનુષ્ઠાન ધર્મઃ ” હન પ્રકાર કે રૂઢન મે “ વેદાત્ પ્રવૃત્તિઃ ”
કી તરહ પ્રયોજ્ય અર્થ મેં પચમી વિભક્તિ હુઈ હૈ અતઃ જિસ પ્રવૃત્તિ કા
પ્રયોજ્ય વચન હૈ વહ ધર્મ હૈ । (વાચનાનુષ્ઠાન ધર્મ) યહા સે લેકર
(પ્રીતિ ભક્તિ અસંગાનુષ્ઠાન ઇત્યાદિ તક) લિખને કી આવશ્યકતા

જાણવામા આવે છે બીજા સિદ્ધાંતકારોએ પણ આ બતાવે નિ શ્રેયસ અને
સ્વર્ગના કારણભૂત ધર્મનું મૂળ બતાવ્યું છે એથી જે આગમથી અવિરુદ્ધ છે
કાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આરાધિત હોય છે અને જે મૈત્રી વગેરે
આર ભાવનાઓથી યુક્ત છે એવું અનુષ્ઠાન જ ધર્મ છે એવા જ ધર્મની
આરાધના કરવા માટે જાણધર વગેરેના આદેશ છે

ભાવાર્થ — તીર્થકર કથિત આગમમુજબ આશ્ચર્યેવા અનુષ્ઠાનનું નામ
ધર્મ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે ક્ષિત થયો છે કે જે અનુષ્ઠાનમા તીર્થકર પ્રભુ
વડે કથિત આગમથી વિરોધ જણાતો નથી તે જ ધર્મ છે તેમજ પ્રીતિ,
ભક્તિ અને અસંગ રૂપ અનુષ્ઠાનમા આ લક્ષણની અપ્રાપ્તિ પણ હોતી નથી
કેમકે ત્યાં પણ આ લક્ષણનો સદ્ભાવ મળે છે “ વાચનાનુષ્ઠાન ધર્મ ” આ
બાતના કથનમા “ વેદાત્ પ્રવૃત્તિ ” ની જેમ પ્રયોજ્ય અર્થમા પચમી વિભક્તિ
થઈ છે એટલા માટે જે પ્રવૃત્તિનું પ્રયોજ્ય વચન છે તે ધર્મ છે (વાચના
નુષ્ઠાન ધર્મ) અહીંથી માંડીને પ્રીતિ ભક્તિ અસંગાનુષ્ઠાન વગેરે

પશ્ચમી, તથા ચ-વચનપ્રયોજ્યપ્રવૃત્તિમત્ત્વ લક્ષણમિતિ ન કુત્રાપ્યવ્યાસિદોપાવસાશઃ
પ્રીતિભક્ત્યસદ્ધાનુષ્ઠાનાનામપિ વચનપ્રયોજ્યત્વાજ્ઞપાયાદિતિ ।

કિં ચ--હિંસાદિપાપપરિહારો વર્મસિદ્ધિર્લિધ્મિત્યાર્હતા સ્વીકુર્વતિ ।
તથા ચોક્તમ્-

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્ય પાપજુગુપ્સાઽથ નિર્મલો બોધઃ ।

લિધ્ધાનિ ધર્મસિદ્ધે, પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વ ચ ॥ ઇતિ ।

પાપજુગુપ્સા=પાપપરિહારઃ ।

પદકાગવધમાધ્ય પ્રતિમાપૂજન કુર્વતા ધર્મસિદ્ધિ કવ સ્યાદિતિ વિચારયન્તુ
શ્રુતિય । અપર ચ--

પ્રતીત નહીં હોતા હૈ વર્ગો કિં વચનાનુષ્ઠાન ધર્મ કા અર્થ વચન કે
અનુસાર હોને ચાલા અનુષ્ઠાન ધર્મ હૈ ઇસમે કોઈ જાતકા દોષ
નહીં આતા હૈ । ”

કિંચ--હિંસાદિક પાંચ પાપોં કા પરિત્યાગ વર્મ સિદ્ધિ તા ચિહ્ન
હૈ ઇસ પ્રકાર કી માન્યતા જૈનિયો કી હૈ । શાસ્ત્રાન્તર મે ચહી ચાત
પ્રકટ કી ગઈ હૈ--

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્ય પાપજુગુપ્સાઽથ નિર્મલો બોધઃ ।

લિધ્ધાનિ ધર્મસિદ્ધે પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વ ચ ॥ (પોહશ-ગ્રંથ ૪ પ્રકરણ)

ઉદારતા-હૃદય કી વિપાલતા, દાક્ષિણ્ય-સર્વ જીવોં કે અનુકૂલ
પ્રવૃત્તિ, પાપજુગુપ્સા-પાપ કા પરિત્યાગ, નિર્મલબોધ-તત્ત્વજ્ઞાન, ઔર
જન પ્રિયત્વ યે ૫ ધર્મસિદ્ધિ કે લક્ષણ હૈં । અવ યહા પર વિચારને કી
વાત યહ હૈ કિં જય પાપ કા પરિહાર કરના યહ ધર્મસિદ્ધિ કા લક્ષણ

આવશ્યકતા જણાતી નથી ટેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મનો અર્થ વચન મુજબ થનાર
અનુષ્ઠાન ધર્મ છે આમા ડોઢ પણ જાતનો દોષ નથી

કિંચ--હિંસા વગેરે પાપ પાપોના પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનું ચિહ્ન છે આ
જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે શાસ્ત્રા તરમા પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ
રૂપમા આવી છે --

ઔદાર્યં દાક્ષિણ્ય પાપજુગુપ્સાઽથ નિર્મલો બોધઃ ।

લિધ્ધાનિ ધર્મસિદ્ધે પ્રાયેણ જનપ્રિયત્વ ચ ॥ (પોહશગ્રંથ ૪ પ્રકરણ)

ઉદારતા-હૃદયની નિશાલતા, દાક્ષિણ્ય-બધા જીવોને અનુકૂળ થઈ પડે
તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા-પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ બોધ-તત્ત્વજ્ઞાન, અને
જનપ્રિયત્વ આ પાંચે ધર્મસિદ્ધિના લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત
વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ ધર્મસિદ્ધિનું લક્ષણ

એકેન્દ્રિયાત્પદજીવનિકાયજીવના રક્ષણં ધર્મસ્ત મૂલમિતિ યન્તામર્તા
પદ્માયચિરાધનાસાધ્યાયાઃ પ્રતિમાપૂજાયા ઋત્તીચારે જનતામેવ નદ્યતિ, જન
ધર્મસ્ય મૂલતસ્તત્ર મમુન્દેદાત્ ।

તથા ચોક્તમ્-જીવદયસચ્ચવયણ, પરધનપરિવજ્જણ મુસીલ ચ ।

સ્વતી પર્વિત્યનિ-ગ્ગહો ય ધમ્મસ્સ મૂલાઈ ॥ દર્શનશુદ્ધિ-૨ તત્ત્વ)

હૈ તો પ્રતિ મા કા પૂજન કરને ગાલે કેં ઇસ્કા પરિહાર કેસે હો સકતા
હૈ । ક્યોં કિં યહ પહિલે હી પ્રકટ કિયા ગા જુકા હૈ કિં યહ પ્રતિમા
પૂજન કાર્ય પદ્ કાય કે આરમ્બ કે વિના સાધ્ય હો ની નહીં સકતા ।
અતઃ પ્રતિમાપૂજન કાલે કો ધર્મસિદ્ધિ કા લાભ માનના યહ ઇક મનગ
હન કલ્પના હી હૈ-શાસ્ત્રોચ કલ્પના નહીં । શાસ્ત્ર મેં તો યહી જિનેન્દ્ર
દેવ કી આજ્ઞા હૈ કિં એકેન્દ્રિય આદિ પદ્ નિકાય કે જીવોં કી રક્ષા
કરના હી પ્રત્યેક જૈન માત્ર કા કર્તવ્ય હૈ, ઓર યહી ધર્મ કા મૂલ હૈ
જન હસ પ્રકાર કી વીતરાગ પ્રભુ કી આજ્ઞા હૈ-તો ફિર યહ તો સોચો
કી પદ્નિકાય કી વિરાગના સે સાધ્ય હસ પ્રતિમાપૂજન કી માન્યતા મેં
જૈનત્વ કા રક્ષણ હી કેસે હો સકતા હૈ-। પ્રત્યુત જૈનધર્મ કા ઇમ્ પ્રકાર
કી માન્યતા મે સમૂલત નાશ હી હો જાતા હૈ ।

જીવદયસચ્ચવયણ પરધનપરિવજ્જણ મુસીલચ ।

સ્વતી પર્વિદિય નિગ્ગહોય ધમ્મસ્સ મૂલાઈ ॥ (દર્શન શુ ૨ તત્ત્વ)

છે ત્યારે પ્રતિમાની પૂજા કરનારાઓ માટે આનો પરિહાર ટેવી રીતે થઈ શકે
તેમ છે, ટેમઠે આ વાત પહેલા જ પ્રગટ કરવામા આવી છે કે આ પ્રતિમા
પૂજન કાર્ય પદ્કાયના આરમ્બ વગર સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી એથી પ્રતિમા
પૂજનવાળા માટે ધર્મસિદ્ધિનો લાભ સમજી લેવો આ એક ખોટી કલ્પના
માત્ર છે સાશ્ત્રીય કલ્પના નથી સાશ્ત્રમા તો જિનેન્દ્રદેવની એ જ આજ્ઞા છે કે
એકેન્દ્રિય વગેરે પદ્કાયના જીવોની રક્ષા કરવી જ દરેકે દરેક જૈનનું કર્તવ્ય
છે અને એ જ ધર્મનું મૂળ છે ત્યારે આ જાતની વીતરાગ પ્રભુની આજ્ઞા છે
ત્યારે આ વાત ઉપર તો વિચાર કરીએ કે પદ્કાય નિકાયની વિરાધનાથી સાધ્ય
આ પ્રતિમા પૂજનની માન્યતામા જૈનતનુ રક્ષણ જ કેવી રીતે થઈ શકે છે
આ જાતની માન્યતાથી તો જૈન ધર્મનો મૂળરૂપે વિનાશ જ થઈ જાય છે

જીવદયસચ્ચવયણ પરધનપરિવજ્જણ મુસીલ ચ ।

સ્વતી પર્વિદિયનિગ્ગહોય ધમ્મસ્સ મૂલાઈ ॥ (દર્શન - તત્ત્વ)

जीवाश्वेतनादिलिङ्गव्यङ्ग्या एकेन्द्रियादय तेषा दया=रक्षणं जीवदयेति ।
इत्स्वत्व प्राकृतप्रभम् । धर्ममूल भवति नि सर्वत्र क्रियाऽध्याहारः कार्यः ।

प्रतिमापूजन विशुद्धपरिणामजन्यत्वादुपादेयमितिकथन निर्मूलम्--

धर्माङ्गेषु दयायाः प्रावान्यात् प्राथम्य वर्तते । हिंसासाध्याया प्रतिमापूजाया
दयाया अभावाद् धर्माङ्गत्वं न सिध्यति । तथा च विशुद्धात्मपरिणामरूप धर्म
प्रति कारणत्व प्रतिमापूजनस्य न सम्भवति । अन्यच्च--

इस लोको में यही बात कही गई है । जीवों की दया करना सत्य
बोलना, पर धन के हरण करने का त्याग करना, कुशील का त्यागना,
क्षमाभाव रखना, पाचों इन्द्रियों को बश में रखना ये सब धर्म के मूल
हैं । जिस प्रकार बिना मूल-जड़ के वृक्ष की स्थिति आदि नहीं हो
सकती है-उसी प्रकार उनके बिना भी धर्मरूपी महावृक्ष की जीवात्मा
और में स्थिरता नहीं हो सकती है जो व्यक्ति "प्रतिमा के पूजने से
विशुद्ध परिणामों की आत्मा में जागृति होती है" इस बात का सम-
र्थन करते हुए उपयोगिता सिद्ध करते हैं उनका यह कथन बिल्कुल ही
निर्मूल है क्योंकि धर्म में सर्वप्रथम स्थान दया को ही दिया गया है
जीवों की हिंसा से साध्य इस प्रतिमापूजन में उस दया का संरक्षण
ही नहीं होता है-इसलिये उसे धर्म का अंग कैसे माना जा सकता है
जो धर्म का ही अंग नहीं बनता है उससे कैसे परिणामों में विशुद्धता
की जागृति हो सकती है अतः यह प्रतिमापूजन धर्म प्राप्ति में कारण
नहीं है ऐसा मानना चाहिये ।

આ પ્રકારે જો જ વાત બતાવવામાં આવી છે કે જીવ ઉપર દયા
કરવી, સત્ય બોલવું, પારકાના ધનને લઈ લેવાની વૃત્તિને દૂર કરવી, કુશીલને
ત્યાગ કરવો, ક્ષમાભાવ રાખવો, પાંચ ઇન્દ્રિયોને વશમાં રાખવી આ બધા
ધર્મના મૂળ છે જેમ મૂળ-જડ વગરના વૃક્ષની સ્થિતિ વગેરે જ થઈ શકે
તેમ નથી તેમજ એમના વગર પણ ધર્મરૂપી મહાવૃક્ષની જીવાત્માઓમાં સ્થિરતા
થઈ નહીં તેમ નથી જે વ્યક્તિ "પ્રતિમાના પૂજનથી વિશુદ્ધ પરિણામોની
આત્મામાં જાગૃતિ આવે છે" આ વાતને યોગ્ય માનીને આની ઉપયોગિતા
નિષ્ફળ કરે છે, તેમજ આ કથન સાવ નિર્મૂળ-વ્યર્થ છે એમને ધર્મમાં સૌ
પ્રથમ સ્થાન દયાનેજ આપવામાં આવે છે જીવોની હિંસાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા
પૂજનમાં તે દયાની રક્ષા જ થતી નથી એટલા માટે આને ધર્મનું અંગ કેવી
રીતે માની શકીએ અને જે ધર્મનું જ અંગ થઈ શકતું નથી તેનાથી કેવી રીતે
પરિણામોમાં વિશુદ્ધતાની જાગૃતિ થઈ શકે એટલા માટે આ પ્રતિમાપૂજન
ધર્મપ્રાપ્તિમાં કારણ નથી આમ માની લેવું બોધ્યું

ધર્માલમ્બનાનિ સ્થાનાઙ્ગસૂત્રે ભગવતા પ્રશ્નानि--

“ધમ્મ ણ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પળ્લત્તા ।

ત્ત જહા--ઉઘાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીર ” ॥ ૩તિ ।

ભગવતા ધર્માલમ્બનાનિ પચૈવ કથિતાનિ । તત્ર “છઘાયા” ઇત્યુક્ત્યા ગણરાજાદીનામપિ સગ્રહે સત્યપિ પુનસ્તેષા ત્રિશિષ્યોપન્યાસઃ પ્રાધાન્યરૂપોપનાર્થઃ

અન્યથ-“ધમ્મ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પળ્લત્તા-તજહા-છઘાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીર” इति-ભગવાન ને ધર્મ કે છઠ્ઠકાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ ઓર શરીર હસ પ્રકાર યે છઠ્ઠ આલમ્બન સ્થાન સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર મેં કહે હૈં । इनमें जिन प्रतिमा का कथन नहीं किया है-इससे यह भलीभांति विदित हो जाता है कि जिन प्रतिमा और उसका पूजन धर्म का अवलम्बन रूप नहीं है यदि जिन प्रतिमा का पूजन कार्य धर्म का अवलम्बनरूप सिद्धान्तकारों की दृष्टि में मान्य होता तो वे अवश्य इन स्थानों के कथन करते-जिस प्रकार छहकाय, गण, राजा इत्यादि का कथन किया है । यद्यपि “छहकाय” इस एक पद से ही गण, राजा आदि का स्वतः कथन सिद्ध हो जाता है, क्योंकि इन सब का समावेश उसी एक पद में हो जाता है । फिर भी इनका भिन्न २ रूप से जो नाम निर्देश किया है उसका कारण ये धर्म के प्रधान आलम्बन रूप हैं इस बात को प्रकट करने के लिये ही किया गया है । इसी प्रकार

અને ખીજુ પણ કહ્યું છે કે “ધમ્મ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પળ્લત્તા-તજહા છઘાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીર ” इति, ભગવાને ધર્મના છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલમ્બનસ્થાન સ્થાનાઙ્ગ સૂત્રમાં કહ્યાં છે આ બધામાં જિન પ્રતિમાનું કથન કરવામાં આવ્યું નથી એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનું પૂજન ધર્મનું અવલમ્બન નથી બે સિદ્ધાન્તકારોની દૃષ્ટિમાં જિન પ્રતિમાના પૂજનનું કાર્ય ધર્મના અવલમ્બન રૂપમાં માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનું પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ રાજા વગેરેનું કથન કર્યું છે તેમ કર્યું હોત બે કે “પદ્ધકાય” આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનું સ્વતઃ કથન સિદ્ધ થઈ બાકી છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમાં જ થઈ બાકી છે, છતાં આ બધાનો સ્વતઃ રૂપમાં જે નામ નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ આ છે કે તે સર્વે ધર્મના પ્રધાન આલમ્બનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામાં આવ્યો છે આ પ્રમાણે બે

દર્શનવન્દનપૂજનાદિના જિનપ્રતિમાયાઃ સમ્યક્ત્વશુદ્ધિहेतुत्वाऽष्टकर्मक्षयहेतुत्वं સ્વીકારે તુ અસ્યા અપિ નિશ્રાસ્થાનત્વેન નિશ્રાસ્થાનેષુ વિશિષ્ય તદુપન્યાસમકૃત્વા “પચ નિસ્સાઠાણા પળ્ળત્તા” ઇતિ કથન પ્રિરુદ્ધયતે । તસ્માત્ જિનપ્રતિમાયા નિશ્રાસ્થાનેષ્વનભિધાનાત્ પ્રતિમાયા ઝર્માલમ્બનત્વ ન સિધ્યતિ । એવ ચ તત્પૂજન કુશલાત્મપરિણામવિશેપસ્ય ધર્મસ્ય કારણ નાસ્તીતિ વિશ્વસનીયમ્ ।

પ્રતિમાપૂજાયમારમ્ભઃ પરિગ્રહશ્રાવણ્ય ભાવી । તાભ્યા વિના પૂજાયા અસ ભવાત્ તથાઽપિ-પ્રતિમાપૂજોપદેશકાઃ એવ વદન્તિ—

યદિ જિન પ્રતિમા મી દર્શનવન્દના ઑર પૂજાદિક ઢારા સમ્યક્ત્વશુદ્ધિ એવ અષ્ટકર્મોં કે ક્ષય કા કારણ હોતી તો ઉસકા મી ધર્મ કા આલમ્બનરૂપ હોને સે યહા પર વિશેપરૂપ સે શાસ્ત્રકાર કો કથન કરના ચહિયે થા ! પરન્તુ ણેસા તો સૂત્રકાર ને કિયા નહોં હૈ । ફિર મી યદિ ઉસે ધર્મ કા અવલમ્બનરૂપ સ્વીકાર કિયા જાય તો ડસ સૂત્ર મેં પ્રતિપાદિત ‘પાચ હી નિશ્રાસ્થાન હૈં’ ” ડસ કથન સે વિરોધ આતા હૈ કારણ કિ ઉન સ્થાનોં સે અતિરિક્ત એક ઑર જિનપ્રતિમાપૂજન ધર્મ કા આલમ્બન રૂપ સ્થાન વઢ જોતા હૈ અતઃ ‘પચ નિસ્સાઠાણા પળ્ળત્તા’ ડસ સૂત્ર પ્રદર્શિત ઉપન્યાસ સે યહ વાત પુષ્ટ હોતી હૈ કિ જિન પ્રતિમા ધર્મ કો આલમ્બન સ્થાન નહી હૈ । યહ તો ઉસ કે પક્ષપાતિયોં કે હી દિમાગ કી એક ઉટપટાગ સૂઝ હૈ યહ જાનતે હુએ મી કિ જિનપ્રતિમાપૂજન મેં આરમ્ભ ઑર પરિગ્રહ અવશ્યભાવી હૈ, ડનકે વિના વહ કથમપિ સાધ્ય હો નહી સકતી હૈ, તો મી જિનપૂજાકે ઉપદેશક લેવ્ડ હૈ કિ જનતા કો

દર્શન વન્દના અને પૂજા વગેરે વડે સમ્યક્ત્વ શુદ્ધિ અને અષ્ટ કર્મોના ક્ષયનું કારણ હોત તો ધર્મના આલબનરૂપ હોવા બદલ અહીં વિશેષરૂપમા શાસ્ત્ર ગરે વડે તેનું કથન કરવું જોઈએ પણ સૂત્રગરે આવું કંઈ કંઈ નથી છતાં જો તેને ધર્મના અવલબનરૂપે સ્વીકારીયે તો આ સૂત્રમા પ્રતિપાદિત “પાચ જ નિશ્રાસ્થાનો છે” આ કથનથી વિરોધ જાણે થાય છે કેમકે તે સ્થાનોથી અતિરિક્ત એક જીજ્ઞા જિનપ્રતિમા પૂજન ધર્મના આલબનરૂપ સ્થાનની વૃદ્ધિ થઈ જાય છે એથી “પચ નિસ્સાઠાણા પળ્ળત્તા” આ સૂત્ર પ્રદર્શિત ઉપન્યાસથી આ વાત પુષ્ટ થાય છે કે જિનપ્રતિમા ધર્મનું આલબન સ્થાન નથી આ તો ફક્ત તેના તરફદારીઓના મસ્તિષ્કની જ વ્યર્થની કલ્પના છે જિનપ્રતિમા પૂજનમા આરભ અને પરિગ્રહ અવશ્યભાવી છે એના વગર તે કોઈ પણ સંજોગે સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી આવું જાણવા છતાં બહુ ડંખ સાથે કહેવું પડે છે કે જિન પૂજના ઉપદેશકો સમાજને “પૂયાણ કાય

ધર્માલ્મ્બનાનિ સ્થાનાઙ્ગસૂત્રે ભગવતા પ્રણતાનિ—

“ધમ્મ ણ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પળ્લગ્ગાત્તા ।

ત જહા—ઉપ્પાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીર ” ॥ ઇતિ ।

ભગવતા ધર્માલ્મ્બનાનિ પશ્ચેત્ર કવિતાનિ । તત્ર “ ઉપ્પાયા ” ઇત્યુક્ત્યા ગણરાજાદીનામપિ સગ્રહે સત્યપિ પુનસ્તેષા વિશિષ્ટોપન્યાસઃ પ્રાધાન્યરચોપનાર્થઃ

અન્યચ—“ ધમ્મ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પળ્લગ્ગાત્તા—તજહા—છ ઉપ્પાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીર ” ઇતિ—ભગવાન ને ધર્મ કે છઠ્ઠાકાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ ઓર શરીર ઇસ પ્રકાર ચે છઠ આલ્મ્બન સ્થાન સ્થાનાઙ્ગસૂત્ર મેં કહે હૈં । इनमें जिन प्रतिमा का कथन नहीं किया है—इससे यह भलीभांति विदित हो जाता है कि जिन प्रतिमा और उसका पूजन धर्म का अवलम्बन रूप नहीं है यदि जिन प्रतिमा का पूजन कार्य धर्म का अवलम्बनरूप सिद्धान्तकारों की दृष्टि में मान्य होता तो वे अवश्य इन स्थानों के कथन करते—जिस प्रकार छठ्ठाकय, गण, राजा इत्यादि का कथन किया है । यद्यपि “ छठ्ठाकय ” इस एक पद से ही गण, राजा आदि का स्वतः कथन सिद्ध हो जाता है, क्योंकि इन सब का समावेश उसी एक पद में हो जाता है । फिर भी इनका भिन्न २ रूप से जो नाम निर्देश किया है उसका कारण ये धर्म के प्रधान आलम्बन रूप हैं इस बात को प्रकट करने के लिये ही किया गया है । इसी प्रकार

અને બીજી પછી કહ્યું છે કે “ધમ્મ ચરમાણસ્સ પચ નિસ્સાઠાણા પળ્લગ્ગાત્તા—ત જહા ઉપ્પાયા, ગણો, રાયા, ગિહવર્હ, સરીર ” ઇતિ, ભગવાને ધર્મના છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલબનસ્થાન સ્થાનાંગ સૂત્રમાં વધ્યા છે આ બધામાં જિન પ્રતિમાનું કથન કરવામાં આવ્યું નથી એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનું પૂજન ધર્મનું અવલબન નથી બે સિદ્ધાન્તકારોની દૃષ્ટિમાં જિન પ્રતિમાના પૂજનનું કાર્ય ધર્મના અવલબન રૂપમાં માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનું પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ, રાજા વગેરેનું કથન કર્યું છે તેમ કર્યું હોત બે કે “ પદ્ધકાય ” આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનું સ્વત કથન સિદ્ધ થઈ જાય છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમાં જ થઈ જાય છે, છતાં આ બધાનો સ્વતત્ર રૂપમાં જે નામ નિર્દેશ કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ આ છે કે તે સર્વે ધર્મના પ્રધાન આલબનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામાં આવ્યો છે આ પ્રમાણે બે ને ૫ પછી

‘દો દ્વાણાઈ’ દ્વે સ્થાને=દ્વે રસ્તુર્ની ‘અપરિયાણિત્તા’ અપરિત્યાગ=અપરિત્યાગ
‘પ્રત્યાગ્રસ્મપરિગ્રહાનર્થાય’ ઇત્યવિજ્ઞાય અલ મમામ્યામિતિ પરિહારામિમુલ્ય-
દ્વારેગ પ્રત્યાગ્રહાનપરિત્યાગપ્રત્યાગ્રહાય ચ વ્રત્તદત્તત્ત્વ તથો પ્રવૃત્તઃ, ‘આયા’
આત્મા=જીવ, નો કેવલિગ્રહણ=જિનોસ્ત ધર્મ લભેત શ્રવણતથા-શ્રવણમાત્રેન
શ્રોતુમિત્યર્થ. | જૈનધર્મશ્રવણાનર્હો ભવતીતિ માત્રઃ | તદ્ યથા આરમ્ભઃ-પ્રાણા
તિપાતાદિરૂપ, પાપસ્થાનમ્ પરિગ્રહ.-વનધાન્યાદિસગ્રાઃ |

દ્વે સ્થાને અપરિગ્રહાય - અપરિત્યાગ=અર્થકારણમજ્ઞાત્વા પ્રત્યાગ્રહાનપરિગ્રહાય
અપ્રત્યાગ્રહાય ચ તત્ર પ્રવૃત્તઃ ‘આયા’ આત્મા-જીવઃ કેવલ યોર્ધિ=અર્થાત્
સમ્યક્ત્વ ન વુધ્ધેત=ન પ્રાપ્નુયાદિત્યર્થ |

પાને કે બી યોગ્ય વન સકતી હૈ ” યહ સૂત્ર હમે યહ શિક્ષા દેતા હૈ કિ
મલો જિસ પરિગ્રહ ઓર આરમ્ભયુક્ત આત્મામેં કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મ સુનને
તક કી બી યોગ્યતા નહી હૈ ઓર ન જિસમેં સમ્યક્ત્વ કા અનુભવ હૈ,
હૈ હમ આત્મા મેં “ યહ પ્રતિમા સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ કા કારણ હોતા
” હસ પ્રકાર કી માન્યતા આકાશ કે ફૂલ કે સમાન ઇક કલ્પના
માત્ર હી હૈ | અતઃ યહ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત્ત હોતા હૈ કિ હસ પ્રતિમાપૂજન
મે ન તો ધર્મ કે કોઈ મૌલિકતત્ત્વ કા સમાવેશ હૈ ઓર ન ધર્મ કા કોઈ
અગ હી હૈ | યહ ન તો ધર્મ કા આલમ્બનરૂપ હૈ ઓર ન ધર્મ કે લક્ષણ
સે હી યુક્ત હૈ | ફિર બી હસે ધર્મ પદ કા વાચ્ય માનના કેવલ સ્પષ્ટ
રૂપ સે ઉત્સૂત્ર ગરૂપણામાત્ર હૈ હસ પ્રકાર શાસ્ત્રીયમર્ચાદા કે વિરુદ્ધ હસ
પ્રતિમા પૂજન કા ઉપદેશ દેને વાલે તથા પ્રતિમાપૂજન કરાને વાલે ઉપ-

બની શકે તેમ નથી “ આ સૂત્ર અમને આ જાતની લલામપુ કરે છે કે જે
પરિગ્રહ અને આરમ્ભયુક્ત આત્મામા કેવલિ પ્રજ્ઞત્વ ધર્મ માલગવા સુધીની
પણ યોગ્યતા નથી અને જેમા સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણ નથી તે આત્મામા
“ તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનું કારણ હોય છે ” આ જાતની માન્યતા આકા
શના પુખ્તની જેમ એક જોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તો બીજી શું છે ? એટલા
માટે એ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત્ત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમા ધર્મના ન કોઈ
મૌલિક તત્ત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે ધર્મનું કોઈ પણ એક અગ છે આ
ધર્મનું આલમ્બનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણ નથી છતાં ય તેને
ધર્મ પદવાચ્ય માનવું તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રકરણા માત્ર છે આ રીતે શાસ્ત્રની
મર્ચાદાથી વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

अपि च—“ पूयाए कायवहो, पडिक्कुटो सो उ किं तु जिणपूया ।

सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ निरवज्जा ” ॥१॥

आया-पूजाया कायवधः प्रतिकृष्टं सतु रिन्तु जिनपूजा ।

सम्पत्त्वधुद्धिहेतु-रिति भावनीया त निरवद्या ॥१॥

सर्वमेतदुत्सृज्यप्ररूपणम्—श्रूयतां प्रवचनं तावत्—

दो टाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलपणत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए ।
त जहा-आरमे चेव परिग्गहे चेव । दोटाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल
बोधिं बुज्झिज्जा । त जहा-आर मे चेव परिग्गहे चेव ॥ (स्था २ ठा १३.) इति

“ पूयाए कायवहो पडिक्कुटो सो उ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ,
त्ति भावणीया उ निरवज्जा ॥ १ ॥ इस प्रकार की उत्सृज्य प्ररूपणा द्वारा
भ्रम में ही डालते रहते हैं। हमें तो बुद्धि पर तरस आता है कि वे क्यों
नहीं इस सिद्धान्त को समझने की चेष्टा करते हैं कि—“ दोटाणाइ अप
रियाणित्ता आया णो केवलपणत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-
आरमे चेव परिग्गहे चेव । दोटाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल
बोधिं बुज्झिज्जा त जहा-आरमे चेव परिग्गहे चेव (स्था २ ठा १३.)
ये दो धनधान्य आदि रूप परिग्रह और प्राणातिपात आदि रूप आरभ
स्थान अनर्थ के कारण हैं । जब तक आत्मा ज परिज्ञा से इन्हें जान कर
और प्रत्याख्यान परिज्ञा से इनका परित्याग नहीं कर देती है तब वह
ब्रह्मदत्त की तरह केवल द्वारा कथित धर्म के सुननेका अधिकारी नहीं
हो सकती है और न इन दोनों के त्याग किये बिना वह सम्पत्त्व को

वहो पडिक्कुटो सोउ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ निर
वज्जा ॥ १ ॥ आ ज्ञातनी उत्सृज्य प्ररूपणा वडे भ्रमभा न नाभी राभे छे
अभने तो तेमनी बुद्धि उपर दया आवे छे के तेजो आ सिद्धातने सम
भववानी ओशिश केम नहि करता होय ? केमने “ दो टाणाइ अपरियाणित्ता
आयाणो केवलपणत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरमे चेव परिग्गहे
चेव । दो टाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलबोधिं बुज्झिज्जा त जहा-
आरमे चेव परिग्गहे चेव (स्था० २ ठा० १३०) आ ये धन धान्य वगेरे
इप परिग्रह अने प्राणातिपात वगेरे इप आरभ स्थान अनर्थना कारण
ल्या सुधी आत्मा स परिज्ञा वडे अभने ज्ञाणीने अने प्रत्याख्यान परिज्ञावडे
अभने परित्याग करती नही त्या सुधी ते ब्रह्मदत्तनी जेम डेवलिपडे कथित
धर्मने सालगवा भाटे अधिकारी (योग्य पात्र) गणुछे ते नही अने
ते अभने त्या सुधी त्याग करे नहि त्या सुधी ते सम

‘દો દ્વાળાઙ’ દ્વે સ્થાને=દ્વે રસ્તુની ‘અપરિયાણિતા’ અપરિજ્ઞાય=અપરિજ્ઞયા
 ‘પ્રતાવારમ્પરિગ્રહાનર્થાય’ ફલવિજ્ઞાય અલ મમામ્યામિતિ પરિહારાભિમુખ્ય
 દ્વારેણ પ્રત્યાખ્યાનપરિજ્ઞયા અપ્રત્યાખ્યાય ચ વ્રત્તદત્તાન્ તથો પ્રવૃત્તઃ, ‘જાયા’
 આત્મા=જીવ, નો કેરલિગ્રહસ્ત=જિનોક્ત વર્મ લમેત શ્રવણતયા-શ્રવણભાવેન
 પ્રોત્તુમિત્યર્થઃ । જૈનર્મશ્રવણાનર્હો મરતીતિ ભાવઃ । તદ્ યથા આરમ્ભઃ-પ્રાણા
 તિષ્ઠાવાદિરુપ, પાપસ્થાનમ્ પરિગ્રહઃ-અનવાન્યાદિસગ્રહઃ ।

દ્વે સ્થાને અપરિજ્ઞાય - અપરિજ્ઞયાનર્થપ્રારણમજ્ઞાત્વા પ્રત્યાખ્યાનપરિજ્ઞયા
 અપ્રત્યાખ્યાય ચ તત્ર પ્રવૃત્તઃ ‘જાયા’ આત્મા-જીવઃ કેવલ પ્રોર્થિ=અર્થાત્
 સમ્યક્ત્વ ન વુધ્ધેત=ન પ્રાપ્તુયાદિત્યર્થ ।

પાને કે બી યોગ્ય વન સક્રી છે ” વહ સૂત્ર હમેં વહ શિક્ષા દેતા હૈ કિ
 મલો જિસ પરિગ્રહ ઓર આરમ્બયુક્ત આત્મામેં કેવલિ પ્રજ્ઞસ વર્મ સુનને
 તક કી બી યોગ્યતા નથી હૈ ઓર ન જિસમેં સમ્યક્ત્વ કા અનુભવ હૈ,
 હૈ હસ આત્મા મેં “ વહ પ્રતિમા સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ કા કારણ હોતા
 ” હસ પ્રકાર કી માન્યતા આકાશ કે ફલ કે સમાન ઇક કલ્પના
 માત્ર હી હૈ । અતઃ વહ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત્ત હોતા હૈ કિ હસ પ્રતિમાપૂજન
 મેં ન તો ધર્મ કે કોઈ મૌલિકતત્ત્વ કા સમાવેશ હૈ ઓર ન ધર્મ કા કોઈ
 અગ હી હૈ । વહ ન તો ધર્મ કા આલમ્બનરૂપ હૈ ઓર ન ધર્મ કે લક્ષણ
 સે હી યુક્ત હૈ । ફિર બી હસે ધર્મ પદ કા વાચ્ય માનના કેવલ સ્પષ્ટ
 રૂપ સે ઉત્સૂત્ર રૂપણામાત્ર હૈ હસ પ્રકાર શાસ્ત્રીયમર્યાદા કે વિરુદ્ધ હસ
 પ્રતિમા પૂજન કા ઉપદેશ દેને વાલે તથા પ્રતિમાપૂજન કરાને વાલે ઉપ-

બની શહે તેમ નથી “ આ સૂત્ર અમને આ જાતની ભલામણ કરે છે કે જે
 પરિગ્રહ અને આરમ્બયુક્ત આત્મામા દેવલિ પ્રજ્ઞત્વ ધર્મ આલમ્બના સુધીની
 પણ યોગ્યતા નથી અને જેમા સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણ નથી તે આત્મામા
 “ તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનું કારણ હોય છે ” આ જાતની માન્યતા આકા-
 શના પુષ્પની જેમ એક જોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તો બીજું શું છે ? એટલા
 માટે એ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત્ત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમા ધર્મના ન કોઈ
 મૌલિક તત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે ધર્મનું કોઈ પણ એક અગ છે આ
 ધર્મનું આલમ્બનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણ નથી છતાં ય તેને
 ધર્મ પદવાચ્ય માનવું તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રકૃષ્ટા માત્ર છે આ રીતે શાસ્ત્રની
 મર્યાદા-વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

અપિ ચ—“ પૂયાણ કાયરો, પઢિકુટ્ટો સો ડ કિં તુ જિણપૂયા ।

સમ્મત્તસુદ્ધિહેડ, તિ માયણીયા ડ ગિરવજ્ઞા ” ॥૧॥

ડાયા-પૂજાયા કાયવધઃ પ્રતિરુષ્ઠઃ સનુ કિન્તુ જિનપૂજા ।

સમ્પક્તવધુદ્ધિહેતુ-રિતિ માયનીયા ત નિરવયા ॥૧॥

સર્વમેતદુત્સૂત્રપ્રરૂપણમ્—શ્રૂયતાં પ્રવચન તાસ્—

દો દ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલિપણ્ણત્ત ધમ્મ લમેજ્ઞ સવળયાણ ।

ત જહા-આરમે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ । દોદ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલ
બોધિં બુદ્ધિજ્ઞા । ત જહા-આરમે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ ॥ (સ્થા. ૨ ઠા ૧૩) રિતિ

“ પૂયાણ કાયરો પઢિકુટ્ટો સો ડ કિં તુ જિણપૂયા । સમ્મત્તસુદ્ધિહેડ,
તિ માયણીયા ડ ગિરવજ્ઞા ॥ ૧ ॥ ” હસ પ્રકાર કી ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા દ્વારા
બ્રમ મેં હી ઢાલતે રહતે હૈં । હમેં તો બુદ્ધિ પર તરસ જાતા હૈ કિં વે કયોં
નહીં હસ સિદ્ધાન્ત કો સમજાને કી ચેષ્ટા કરતે હૈં કિ-“ દોદ્વાળાઈ અપ
રિયાણિત્તા આયા ણો કેવલિપણ્ણત્ત ધમ્મ લમેજ્ઞ સવળયાણ । ત જહા-
આરમે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ । દોદ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલ
બોધિં બુદ્ધિજ્ઞા ત જહા-આરમે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ (સ્થા ૨ ઠા ૧૩.)
ચે દો ધનધાન્ય આદિ રૂપ પરિગ્રહ ઓર પ્રાણાતિપાત આદિ રૂપ આરભ
સ્થાન અનર્થ કે કારણ હૈ । જય તક આત્મા જ્ઞ પરિજ્ઞા સે ઇન્નેં જાન કર
ઓર પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞા સે ઇનકા પરિત્યાગ નહીં કર દેતી હે તય વહ
બ્રહ્મદત્ત કી તરહ કેવલિ દ્વારા કથિત ધર્મ કે સુનનેકા અધિકારી નહીં
હો સકતી હૈં ઓર ન ઇન દોનોં કે ત્યાગ કિયે બિના ચક્ર સમ્પસ્ત્વ કો

વહો પઢિકુટ્ટો સોડ કિં તુ જિણપૂયા । સમ્મત્તસુદ્ધિહેડ, તિ માયણીયા ડ ગિર
વજ્ઞા ॥ ૧ ॥ આ જાતની ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા વડે બ્રમમા જ નાખી રાખે છે
અમને તો તેમની બુદ્ધિ ઉપર દયા આવે છે કે તેઓ આ સિદ્ધાન્તને સમ
જાવવાની કોશિશ કેમ નહિ કરતા હોય ? કેમકે “ દો દ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા
આયા ણો કેવલિપણ્ણત્ત ધમ્મ લમેજ્ઞ સવળયાણ । ત જહા-આરમે ચેવ પરિગ્ગહે
ચેવ । દો દ્વાળાઈ અપરિયાણિત્તા આયા ણો કેવલિબોધિં બુદ્ધિજ્ઞા ત જહા-
આરમે ચેવ પરિગ્ગહે ચેવ (સ્થા ૦ ૨ ઠા ૦ ૧ ૩૦) આ બે ધન ધાન્ય વગેરે
રૂપ પરિગ્રહ અને પ્રાણાતિપાત વગેરે રૂપ આરભ સ્થાન અનર્થના કારણ છે
જ્યાં સુધી આત્મા જ્ઞ પરિજ્ઞા વડે એમને જાણીને અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાવડે
એમને પરિત્યાગ કરતી નથી ત્યાં સુધી તે બ્રહ્મદત્તની જેમ કેવલિવડે કથિત
ધર્મને સાલળવા માટે અધિકારી (યોગ્ય પાત્ર) ગણાઈ શકે તેમ નથી અને
તે એમને જ્યાં સુધી ત્યાગ કરે નહિ ત્યાં સુધી તે સમ્પસ્ત્વ ને ૨ યોગ્ય

તથા-સમ્યક્ત્વશુદ્ધયર્થ કર્મક્ષયાર્થ ચ પ્રતિમાપૂજને પ્રત્યક્ત્વ જીવસ્ય પદ્માયો
પર્મર્દનસાધ્યપૂજયા જ્ઞાનાવરણીયસ્ય દર્શનમોહનીયસ્ય ચ કર્મણો વૃદ્ધી સત્યા સમ્ય-
ક્ત્વમ્ય કેવલિ પ્રજ્ઞસર્મન્યાઽપિ પ્રાપ્તિઃ કાલત્રયેઽપિ ન સમપતિ કિંપુન કર્મક્ષયાશા
સમ્યક્ત્વમાત્મનઃ ક્ષાયોપશમિકો ભાવઃ । પ્રતિમા તુ ન ક્ષયોપશમસ્વરૂપા, ન
ચાપિ ક્ષયોપશમહેતુ, જ્ઞાનાવરણીયદર્શનમોહનીયકર્મનિર્જરાજનકત્યાભાવાત્,
દેશતઃ કર્મક્ષયો હિ નિર્જરા તા પ્રતિતપસ એવ કારણત્યાત્ । ઉક્ત ચોત્તરાધ્યયનમુત્તે-

પ્રકાર સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ અથવા કર્મોં કા ચિનાશ પ્રતિમાપૂજનસે નહીં
હોતા હૈ, પ્રત્યુત જિસ પ્રકાર વહ ન્ધિરચુક્ત વસ્ત્રરુધિર સે સાફ કિયે
જાને પર અધિક મલિન હો જાતા હૈ ઉસી પ્રકાર પદ્માય કી વિરાધના
સાધ્ય ઇસ પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન જીવ ભી જ્ઞાનાવરણીય ઓર દર્શન
મોહનીય કર્મ કી વૃદ્ધિ કરતા હુઆ અધિકાધિક મલિન હોતા રહતા હૈ
વહ કમી ભી ઇનકી વૃદ્ધિમેં સમ્યક્ત્વ ઓર કેવલિ પ્રજ્ઞસર્મ કા પાને
વાલા નહી ઘન સકતા હૈ । ઇસલિયે કર્મોં કે ક્ષય કરને કી આશા સે
પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન મનુષ્ય અપને કર્મોં કા ઇસ કાર્યસે ક્ષય કરતા
હૈ યહ એક દુરાશામાત્ર હૈ અરે ! જત્ર ઇસ કાર્ય સે જીવ સમ્યક્ત્વ ઓર
કેવલિપ્રજ્ઞસર્મ તક કે ભી લાભ સે સદા વચિત રહતા હૈ તો ઉસસે
ફિર કર્મ ક્ષય માનના યહ કોરી કલ્પના માત્ર હી હૈ । સમ્યક્ત્વ યહ
જીવ કા ક્ષાયોપશમિક ભાવ હૈ । પ્રતિમા ન ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ હૈ ઓર
ન ઉસ ક્ષયોપશમ મેં કારણ રૂપ હી હૈ । કારણ કિ ઇસ સે જ્ઞાનાવર-
ણીય ઓર દર્શનમોહનીય કર્મ કી નિર્જરા નહી હોતી હૈ । કર્મોં કા

ખરડાયેલુ વસ્ત્ર લોહીવડે માદ ડરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ પદ્માયની
વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમા તલ્લીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય
દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે તે
કોઈ પણ સમયે જોમની વૃદ્ધિમા સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞસર્મને જોળવી
શકનાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે કર્મોને ક્ષય કરવાની આશાથી પ્રતિમા
પૂજનમા તલ્લીન માણસ પોતાના કર્મોને આ કાર્ય (પ્રતિમાપૂજન) થી ક્ષય
કરવા માગે છે તે દ્રવ્ય દુરાશા માત્ર છે ત્યારે આ કાર્યથી જીવ સમ્યક્ત્વ
અને કેવલિપ્રજ્ઞસર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ
ક્ષયની આશા રાખવી તે જોટી દૃષ્ટિના માત્ર જ છે સમ્યક્ત્વ જીવનો ક્ષયો
પશમિત્ત ભાવ છે હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયો
પશમમા કારણ રૂપ છે કેમકે જોનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય

યત્ર કેવલિપ્રજ્ઞધર્મસ્ય શ્રવણાયાપિ યોગ્યતા ન ભવતિ, સમ્યક્ત્વમ્ ચ નાનુ
ભવ., તત્ર સમ્યક્ત્વશુદ્ધિદેહત્વ ગગનદુગુમયન્મનોરિત્તપમાત્મ । यस્ય પ્રતિમા
પૂજનસ્ય નાસ્તિ ધર્મમૂલત્વ ન ચાસ્તિ ધર્માદ્વિત્વ, નાપિ ધર્માલમ્બનત્વ, ન ચાપિ
ધર્મલક્ષણસમન્વિત, તસ્ય ધર્મપદ્યાન્યત્વત્તપને - મુસ્પષ્ટમેતોત્સુત્તપરૂપણમ્ ।
ભગવતાઽર્હતા-પ્રવચને અનુપટિષ્ઠસ્ય પ્રતિમાપૂજનસ્યોપદેશકરણેન ભ્રાન્તિ જનયતાં
પ્રતિમાપૂજન કારયતા ચ કા ગતિઃ સ્યાદિતિ સમાલોચનીય મુધીમિ' । અપર ચ-

દોહિં ઠાળેહિં આયા કેવલિપદ્મત્ત ધમ્મ લમેજ્જા સવળયાપ્ ત જહા સ્વણ
વેવ ઉત્તસમેણ વેવ એવ જાત્ત મળપજ્જનનાળ ઉપ્પાદેજ્જા ત જહા-સ્વણ વેવ ઉત્ત
સમેણ વેવ । (સ્થા° ૨ ઠા° ૪ ૩૦)

“સ્વણ વેવ” इति ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मण उदय
प्राप्तस्य क्षयण, अनुदितस्य चोपशमेन=क्षयोपशमेनेत्यर्थ' । अत्र पदद्वयेन क्षयोप
शमरूपोऽर्थो गृह्यते । यावत् करणात्-“केवल गोहिं शुद्धेज्जा ।”

કેવલિપ્રજ્ઞધર્મસ્ય શ્રવણ તથા સમ્યક્ત્વ ચ જ્ઞાનાવરણીયસ્ય દર્શનમોહનીયસ્ય
ચ કર્મણ, ક્ષયોપશમાદેવ લભ્યતે इति भगवता प्रतिशोधितम् । इदमत्र बोध्यम्
नहि रुधिरलिप्तवस्त्रस्य रुधरेण प्रक्षालने शुद्धिर्भवति प्रत्युत मलिनतरत्वमेव,

દેશક તથા પ્રેરક કી વાસ્તવિક વસ્તુસ્થિતિ સે જનતા કો અધિકાર મેં
રખને કે કારણ કયા ગતિ હોગી यह स्वय बुद्धिमानों को विचार ने
जैसी बात है ।

અપર ચ—દોહિં ઠાળેહિં આયાકે વલિપદ્મત્ત ધમ્મ લમેજ્જા સવળ
યાપ્-ત જહા इत्यादि सूत्र—

इसका भावार्थ यह है—जीव केवलियों द्वारा प्रजप्त धर्म का श्रवण
तथा सम्यक्त्व का लाभ ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म के क्षय
और क्षयोपशम से ही करता है प्रतिमापूजन से नहीं । जिस प्रकार
रुधिर से मैले वस्त्र की सफाई रुधिर में ही धोने से नहीं होती, उसी

પૂજન કરાવનારા ઉપદેશકો પ્રેરકરૂપ થઈને યથાર્થ વસ્તુસ્થિતિથી સમાજને
અધારામાં રાખે છે તે બદલ તેમની શી દશા થશે તે વિદ્વાનો મમણ શકે છે

અને બીજી પાસુ કે—દોહિં ઠાળેહિં આયા કેવલિપન્નત્ત ધમ્મ લમેજ્જા
સવળયાપ્-ત જહા—ઇત્યાદિ સૂત્ર—

આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે કેવલિઓ વડે પ્રજાપ્ત ધર્મનું શ્રવણ
તેમજ સમ્યક્ત્વનો લાભ એવ જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શન મોહનીય કર્યાના ક્ષય
અને ક્ષયોપશમથી કરે છે પ્રતિમાપૂજનથી નહિ જેમ લોહીથી ખરડાયેલા
વસ્ત્રની સાફસૂદી લોહી વડે ધોવાથી થતી નથી તેમજ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિ
અથવા તે કર્મોના વિનાશ પ્રતિમાપૂજનથી થતો નથી બલકે જેમ તે લોહીથી

તથા-સમ્યક્ત્વશુદ્ધયર્થં કર્મક્ષયાર્થં ચ પ્રતિમાપૂજને પ્રવૃત્તસ્ય જીવસ્ય પદ્મકાયો
પમર્દનસાધ્યપૂજયા જ્ઞાનાવરણીયસ્ય દર્શનમોહનીયસ્ય ચ કર્મણો વૃદ્ધૌ સત્યાં સમ્ય-
ક્ત્વમ્ય કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મસ્યાઽપિ પ્રાપ્તિઃ કાલજયેઽપિ ન સમપતિ કિંપુન કર્મક્ષયાશા

સમ્યક્ત્વમાત્મનઃ ક્ષાયોપશમિસો ભાવઃ । પ્રતિમા તુ ન ક્ષયોપશમસ્વરૂપા, ન
ચાપિ ક્ષયોપશમદેત, જ્ઞાનાવરણીયદર્શનમોહનીયકર્મનિર્જરાજનકૃત્વાભાવાત્,
દેશતઃ કર્મક્ષયો હિ નિર્જરા તા પ્રતિતપસ એવ કારણત્વાત્ । ઉક્ત ચોત્તરાધ્યયનમુને-

પ્રકાર સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ અથવા કર્મોં કા વિનાશ પ્રતિમાપૂજનસે નહીં
હોતા હૈ, પ્રત્યુત જિમ પ્રકાર વહ નિરયુક્ત વસ્ત્રરુધિર સે સાફ કિયે
જાને પર અધિક મલિન હો જાતા હૈ ઉસી પ્રકાર પદ્મકાય કી વિરાધના
સાધ્ય ઇસ પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન જીવ ભી જ્ઞાનાવરણીય ઔર દર્શન
મોહનીય કર્મ કી વૃદ્ધિ કરતા હુઆ અધિકાધિક મલિન હોતા રહતા હૈ
વહ કમી ભી ઇનકી વૃદ્ધિમે સમ્યક્ત્વ ઔર કેવલિ પ્રજ્ઞસ ધર્મ કા પાને
વાલા નહીં ઘન સકતા હૈ । ઇસલિયે કર્મોં કે ક્ષય કરને કી આશા સે
પ્રતિમાપૂજન મેં લવલીન મનુષ્ય અપને કર્મોં કા ઇસ કાર્યસે ક્ષય કરતા
હૈ યહ એક દુરાશામાત્ર હૈ અરે ! જવ ઇસ કાર્ય સે જીવ સમ્યક્ત્વ ઔર
કેવલિપ્રજ્ઞસ ધર્મ તક કે ભી લાભ સે સદા વચિત રહતા હૈ તો ઉસસે
ફિર કર્મ ક્ષય માનના યહ કોરી કલ્પના માત્ર હી હૈ । સમ્યક્ત્વ યહ
જીવ કા ક્ષાયોપશમિક ભાવ હૈ । પ્રતિમા ન ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ હૈ ઔર
ન ઉસ ક્ષયોપશમ મેં કારણ રૂપ હી હૈ । કારણ કિ ઇસ સે જ્ઞાનાવર-
ણીય ઔર દર્શનમોહનીય કર્મ કી નિર્જરા નહીં હોતી હૈ । કર્મોં કા

ખરડાયેલુ વસ્ત્ર લોહીવડે માત્ર ઢરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ પદ્મકાયની
વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમા તલ્લીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય
દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે તે
કેાઈ પણ સમયે એમની વૃદ્ધિમા સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞસ ધર્મને મેળવી
શકનાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે કર્મોને ક્ષય ઢરવાની આશાથી પ્રતિમા
પૂજનમા તલ્લીન માણસ પોતાના કર્મોને આ કાર્ય (પ્રતિમાપૂજન) થી ક્ષય
કરવા માગે છે તે ક્ષત દુરાશા માત્ર છે જ્યારે આ કાર્યથી જીવ સમ્યક્ત્વ
અને કેવલિપ્રજ્ઞસ ધર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ
ક્ષયની આશા રાખવી તે ખોટી કલ્પના માત્ર જ છે સમ્યક્ત્વ જીવનો ક્ષયો
પશમિત્ત ભાવ છે હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયો
પશમમા કાણુ રૂપે છે કેમકે એનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય

“ભવકોઢીસંચિય કમ્મ તપસા નિઝ્જરિઝ્જહ ।” (અ ૩૦, ગા ૬) તત્ત્વાર્થ સૂત્રેઽપિ—

“તપસા નિર્જરા ચ” (અ ૧ મુ ૪ ।

અન ચકારઃ સત્તરમમુચ્યવાર્થઃ । મમિતિગુપ્તિધર્માનુપ્રેક્ષાપરીપતનયચારિત્રૈઃ સવરો ભવતિ, તપસા તુ નિર્જરા સારોઽર્થિ ચેતિ માત્રઃ સમ્યક્ત્વગામ સમ્યગ્દર્શન, તદ્વચ સ્થાનાઙ્ગસૂત્રમ્—(સ્વા ૦ ૨૩૦ ૧) દ્વિવિત્ર પ્રોક્ત । તિમર્ગસમ્યગ્દર્શનમ્ અભિગમમમ્યગ્દર્શન ચેતિ । નિસર્ગતઃ=સ્વભાવતઃ—ન પરીપદેશતો યદુત્પત્તે, તદ્નિર્માર્ગસમ્યગ્દર્શનમ્ । અભિગમાત્—મદ્ગુરુપદેશતો યદુત્પત્તે, તદ્અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમ્ ।

एक देश क्षय होना निर्जरा है । इस निर्जरा के प्रति कारणता तो तप में पतालाई गई है । देखो उत्तराध्ययन सूत्र में यही बात कही है—

‘ भवकोडी सचिच कम्म तपसा निज्जरिज्जह ’ करोड़ों भजों में सचित कर्मों की जीव तप से निर्जरा कर दता है । तत्त्वार्थ सूत्र में भी “ तपसा निर्जरा च ” इस सूत्र द्वारा यही बात कही गई है—तप से निर्जरा और सवर दोनों होते हैं । सूत्रम्य “ च ” शब्द से सवर का ग्रहण हुआ है ।

भावार्थ—इसका यही है कि पाच समिति, ३ गुप्ति, १० यतिधर्म १२, अनुप्रेक्षा, २२ परीपदों का जीतना एव ५ प्रकार का चारित्र्य पालना—इनसे सवर होता है और तप से सवर एव निर्जरा दोनों ही होते हैं । स्थानाङ्गसूत्र में सम्मगदर्शन दो प्रकार का कहा गया है—१ निसर्ग

કર્મના નિર્જરા થઈ રહે તેમ નથી કરોના એકદેશના ક્ષય થવો તે નિર્જરા પ્રત્યે ધારણતા તો તપમા બતાવવામા આવી છે, જુઓ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા એ જ વાત સ્પષ્ટ કરી છે—

“ ભવકોડી સચિચ કમ્મ તપસા નિઝ્જરિઝ્જહ ” કરોડો ભવોમા સચિત કર્મોની નિર્જરા જીવ તપથી કરી નાખે છે તત્ત્વાર્થ સૂત્રમા પણ “ તપસા નિર્જરા ચ ” આ સૂત્રપદે એ જ વાત કહેવામા આવી છે કે તપથી નિર્જરા તેમજ સવર બને થાય છે “ સૂત્રમા આવેલ “ ચ ” શબ્દથી સવરનુ ગ્રહણ કરવામા આવ્યું છે

ભાવાર્થ—આનો આ પ્રમાણે છે કે પાચ સમિતિ, ૩ ગુપ્તિ, ૧૦ યતિધર્મ, ૧૨ અનુપ્રેક્ષા ૨૨ પરીપદોને જીતવા અને ૫ પ્રકારના ચારિત્રનુ પાલન કરવું આ બધાથી સવર થાય છે અને તપથી સવર અને નિર્જરા બને થાય છે સ્થાનાંગસૂત્રમા સમ્યગ્દર્શન બે પ્રકારનુ બતાવવામા આવ્યું

કેચિત્તુ--અભિગમશબ્દાર્થો નિમિત્તમપિ, તત્ત્વ પ્રતિમાદિ ઋતિ
 યદન્તિ, તન્મોહનીયકર્મોદયવિન્નિન્નમ્ -- અભિગમમમ્યગ્દર્શને હિ પ્રતિમાનિ-
 મિત્તકત્વ ન સંભવતિ શ્રવણાદિના ક્ષયોપશમદેતોરેષ સદ્ગુણસ્પર્શમ્યાનાભિગમન
 ઓર દૂસરા અભિગમ । જો સમ્યગ્દર્શન જીવોં કો મ્વમાત્ર સે હી ટોતા
 હૈ । સદ્ગુરુ કે ઉપદેશ સે જો જીવ કો પ્રાપ્ત હોતા હે વહ અભિગમ
 સમ્યગ્દર્શન હૈ । નિર્ગમ ઓર અભિગમ મેં અન્નરગ કારણદર્શન મોહ
 નીય કર્મ કા ક્ષયોપશમ આદિ સમાન હૈ પરન્તુ હસકે હોને પર ખી જો
 જીવ કો સદ્ગુરુ કે ઉપદેશ સે પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહ અભિગમ ઓર જો
 હસકે વિના પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહ નિર્ગમ સમ્યગ્દર્શન હૈ કોઈ ૨ વ્યક્તિ
 અભિગમ શબ્દ કા અર્થ નિમિત્ત પરક ખી કરતે હૈ ઓર વહ નિમિત્ત
 “પ્રતિમા આદિ હૈ” એમા માનતે હૈ । પરન્તુ યહ ઉનકા કવન કેદલ
 મોહ કર્મ કા હી વિલાસ હૈ ક્યો નિ અભિગમ સમ્યગ્દર્શન મેં પ્રતિમા
 રૂપ નિમિત્ત કલા સંભવિત નહીં હોતી હૈ--વહા તો શ્રવણ આદિ સે
 દર્શન મોહનીય કર્મ કે ક્ષયોપશમ કે કારણરૂપ સદ્ગુણ કે ઉપદેશ કા
 હી અભિગમ શબ્દ સે ગ્રહણ હુઆ હૈ । યદિ સમ્યગ્દર્શન કી ઉત્પત્તિ
 મેં વહ કારણ હોતા તો ઉસ કા ગ્રહણ નિમિત્તરૂપ સે હોતા પરન્તુ એમા
 તો હોતા નહીં હૈ--કારણ કિ વહ અચેતન હૈ ઉસ સે પ્રવચન કે અર્થ
 કા ઉપદેશ હોતા નહીં હૈ । પ્રવચન કે અર્થ કે ઉપદેશ સ્નેહિના શ્રોતા-
 ઓં કો પ્રવચન કા અર્થ જ્ઞાન કેસે હો સકતા હૈ ? અર્થજ્ઞાન હુપ વિના

છે ૧ નિર્ગમ અને ૨ અભિગમ સદ્ગુરુના ઉપદેશથી નહિ પણ જીવોને
 સ્વભાવથી જ જે સમ્યગ્દર્શન થાય છે તે નિર્ગમ સમ્યગ્દર્શન છે સદ્ગુરુના
 ઉપદેશથી જે જીવને સમ્યગ્દર્શન પ્રાપ્ત થાય છે તે અભિગમ સમ્યગ્દર્શન છે
 નિર્ગમ અને અભિગમમાં અતરંગ કારણ દર્શનમોહનીય કર્મનો ક્ષયોપશમ
 વગેરે સમાન જ છે પણ જોના હોવા છતાં જીવને જે સદ્ગુરુના ઉપદેશથી
 મળે છે તે અભિગમ અને જે જોના વગર મળે તે નિર્ગમ સમ્યગ્દર્શન છે
 દેહથી કે વ્યક્તિઓ અભિગમ શબ્દનો અર્થ નિમિત્ત પરક પણ કરે છે અને તે
 નિમિત્ત “પ્રતિમા વગેરે છે” એવું માને છે પણ આવું કથન તેમના ક્ષેત્ર
 મોહ કર્મનો જ વિલાસ છે કેમકે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં પ્રતિમા રૂપ નિમિ-
 ત્તના સંભવિત થઈ ગયે તેમ નથી ત્યાં તો શ્રવણ વગેરેથી દર્શનમોહનીય
 કર્મના ક્ષયોપશમના કાળગુરૂપ સદ્ગુણના ઉપદેશનું જ અભિગમ ગણ્યું શકાય
 થયું છે જો સમ્યગ્દર્શનની ઉત્પત્તિમાં તે કાળગુરૂ હોત તો તેનું શ્રદ્ધા નિમિત્ત
 રૂપથી થાત પણ આવું કંતુ નથી કેમકે તે અચેતન છે તેનાથી પ્રવચનના
 અર્થનો ઉપદેશ થઈ શકે નથી પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ માલગ્યા વિના

શબ્દેન પ્રહણાત્ સમ્યક્ત્વં हि तत्त्वार्थश्रद्धानस्त्वं, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जैरामूलक, निर्जैरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य, तत्र च सदगुरुरूपदेश कारण, न तु प्रतिमा । सो हि सदगुरुस्तु प्रवचनार्थमुपदेशदुमसमर्था, तस्या जडत्वात्, । नापि सा निर्जैराहेतु, विनयादितपोरूपकर्म की निर्जैरा नहीं हो सकती है । निर्जैरा के अभाव में दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय उपशम आदि रूप सમ्यक्त्व की उत्पत्ति सम्भवित नहीं है । अतः अभिगम सમ्यग्दर्शन में सदगुरु का उपदेश ही निमित्त माना गया है और उसीका ग्रहण वत्ता पर उस शब्द से हुआ है प्रतिमा का नहीं-इसी का खुलाशा "सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जैरामूलक - निर्जैरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य, तत्र च सदगुरुपदेशः कारण न तु प्रतिमा " अर्थ इन पंक्तियों में लिखा गया है । तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है । वह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जैरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी कर्मों की निर्जैरा हुए बिना तत्त्वज्ञान हो ही नहीं सकता है विनय, वैयावृत्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जैरा के कारण हैं तप की आराधना में सदगुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा सबंध से अभिगम सम्यग्दर्शन में सदगुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत हुआ है प्रतिमा नहीं-कारण वह सदगुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાઓને પ્રવચનનું અર્થજ્ઞાન કેવી રીતે થઈ શકે? અર્થજ્ઞાન વગર કોઈની નિર્જૈરા પણ થઈ શકતી નથી નિર્જૈરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ સંભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામાં આવ્યો છે અને તે શબ્દથી તેનું જ અહણ થયું છે પ્રતિમાનું નહિ આનું જ સ્પષ્ટીકરણ "સમ્યક્ત્વ हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जैरामूलक निर्जैरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य, तत्र च सदगुरुरूपदेश कारण न तु प्रतिमा " આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે તત્ત્વાર્થનું શ્રદ્ધાન કરણ તે સમ્યક્ત્વ છે તે શ્રદ્ધાન પ્રવચનના અર્થજ્ઞાનનું મૂળ કારણ નિર્જૈરા જ માનવામાં આવે છે પોતાના પ્રતિપક્ષી કર્મોની નિર્જૈરા થયા વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતું નથી વિનય, વैयाવૃત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ નિર્જૈરાના કારણ છે તપની આરાધનામાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે આ રીતે પરપરા સંબંધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે ગૃહીત થયો છે નહિકે પ્રતિમા કેમકે તે સદ્ગુરુના ઉપદેશની જેમ

ત્વાભાવાત્, કથ તદ્દિ સમ્યક્ત્વ પ્રતિમાયાઃ સભવતિ ? કથમપિ નહિ । અત એવો પદેશસ્ય સમ્યક્ત્વ પ્રતિ કારણત્વ પ્રદર્શયન્ ભગવાનવાદીત્-ઉત્તરાચયનમૂત્રે-
(અ૦ ૨૮ ગા૦ ૧૫)

“ તદ્દિયાણ તુ ભાવાણ સઘ્માવે ઉવણ્ણમણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિચારિય ॥” ઇતિ ।

ઝાયા—તયાના તુ ભાવાના સઘ્માવ ઉપદેશનમ્ ।

ભાવેન શ્રદ્ધપત્ સમ્યક્ત્વ તદ્ વ્યાખ્યાતમ્ ॥

જીવાજીવાદિપદાર્થોના સઘ્માવે યદ્ ઉપદેશન=ગુરોરુપદેશઃ, તદ્ ભાવેન-
અન્તઃકરણેન યન્નત મોહનીયકર્મણઃ ક્ષયેણ ક્ષયોપશમેન ના યાઽભિરુચિરુત્પદ્યતે,
તત્ સમ્યક્ત્વ તીર્યકરૈર્વ્યાખ્યાતમ્ ।

કે અર્થ કા ઉપદેશ કરને મેં અચેતન હોને સે સર્વથા અસમર્થ હે કર્મોં
કી નિર્જરા મેં મી વહ હેતુ રૂપ નહી હોતી હૈ-કારણ કિ કર્મોં કી
નિર્જરા કે હેતુ તો વિનયાદિક તપ હી માને ગયે હૈં, પ્રતિમા વિનયાદિ
તપ સ્વરૂપ નહી હૈ । અત પ્રતિમા મેં સમ્યક્ત્વ કી ઉત્પત્તિ મે કારણતા
કિસી મી પ્રકાર સભવિત નહી હોતી હૈ-ઉત્તરાચયન મૂત્ર મેં સદ્ગુરુ
કે ઉપદેશ કો સમ્યક્ત્વ કે પ્રતિ કારણ પ્રકટ કરતે હુણ સિદ્ધાન્તકાર
કહતે હૈ કિ-તદ્દિયાણ તુ ભાવા ણ સઘ્માવે ઉવણ્ણમણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિચારિય ॥” ઇતિ ॥

જીવ ઔર અજીવ આદિ પદાર્થો કા સદ્ગુરુ ને જો યથાવસ્થિત
સ્વરૂપ પ્રકટ કિયા હૈ, ઝમકા ઝસીરૂપ સે અન્તઃ કરણ સે શ્રદ્ધાન
કરને વાલે પ્રાણી કે દર્શન મોહનીય કર્મ કે ક્ષય અથવા ક્ષયોપશમ

પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ કરવામાં અચેતન હોવા બદલ સંપૂર્ણપણે અસમર્થ
છે કારણ કે કર્મોની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તપોજ્ઞાન માનવામાં આવ્યા
છે પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામાં સમ્યક્ત્વની
ઉત્પત્તિમાં કારણતા કોઈ પણ રીતે સંભવી શકે તેમ નથી ઉત્તરાચયન મૂત્રમાં
સદ્ગુરુના ઉપદેશને સમ્યક્ત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતા સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

તદ્દિયાણ તુ ભાવાણ સઘ્માવે ઉવણ્ણમણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિચારિય ॥” ઇતિ ॥

જીવ અને અજીવ વગેરે પદાર્થોનું જે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરુએ પ્રકટ
કર્યું છે તેનું તે સ્વરૂપી અત કરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહ
નીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનું નામ જ

શબ્દેન ગ્રહણાત્ સમ્યક્ત્વ હિ તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ, તત્ત્વ પ્રવચનાર્થજ્ઞાનાદેવ, પ્રવચનાર્થજ્ઞાનં ચ નિર્જરામૂલક, નિર્જરા ચ વિનયવૈયાવૃત્ત્યસ્વાધ્યાયરૂપતપોવિશેષેભ્ય, તત્ર ચ સદ્ગુરુરૂપદેશ કારણ, ન તુ પ્રતિમા । સા हि गद्गुरुरा प्रवचनार्थमुपदेशमुपसमर्था, तस्या जडत्वात्, । नापि सा निर्जराहेतु' । विनयादितपोरूपकर्म की निर्जरा नहीं हो सकती है । निर्जग के जमाव में दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय उपशम आदि रूप सम्यक्त्व की उत्पत्ति सम्भवित नहीं है । अतः अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्त माना गया है और उसीका ग्रहण चरा पर उस शब्द से हुआ है प्रतिमा का नहीं-इसी का खुलाशा " सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञानं च निर्जरामूलक - निर्जरा च विनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरुरूपदेशः कारणं न तु प्रतिमा " अर्थ इन पक्तियों में लिखा गया है । तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है । यह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी कर्मों की निर्जरा हुए बिना तत्त्वज्ञान हो ही नहीं सकता है विनय, वैयावृत्त्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जरा के कारण हैं तप की आराधना में सद्गुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा सबंध से अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत हुआ है प्रतिमा नहीं-कारण वह सद्गुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાઓને પ્રવચનનું અર્થજ્ઞાન ઠેવી રીતે થઈ શકે ? અર્થજ્ઞાન વગર ઈર્ષ્યાની નિર્જરા પણ થઈ શકતી નથી નિર્જરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ સંભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામાં આવ્યો છે અને તે શબ્દથી તેનું જ શ્રદ્ધા થયું છે પ્રતિમાનું નહિ આનું જ સ્પષ્ટીકરણ " સમ્યક્ત્વ હિ તત્ત્વાર્થશ્રદ્ધાનરૂપ, તત્ત્વ પ્રવચનાર્થજ્ઞાનાદેવ, પ્રવચનાર્થજ્ઞાન નિર્જરામૂલક નિર્જરા ચ વિનયવૈયાવૃત્ત્યસ્વાધ્યાયરૂપતપોવિશેષેભ્ય, તત્ર ચ સદ્ગુરુરૂપદેશ કારણ ન તુ પ્રતિમા " આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે તત્ત્વાર્થનું શ્રદ્ધાન કરવું તે સમ્યક્ત્વ છે તે શ્રદ્ધાન પ્રવચના અર્થજ્ઞાનનું મૂળ કારણ નિર્જરા જ માનવામાં આવે છે એવાના પ્રતિપક્ષી કોયોની નિર્જરા થયા વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતું નથી વિનય, વૈયાવૃત્ત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ નિર્જરાના કારણ છે તપની આરાધનામાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે આ રીતે પરપરા સંબંધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમાં સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્ત રૂપમાં ગૃહીત થયો છે નહિકે પ્રતિમા કેમકે તે સદ્ગુરુના ઉપદેશની જેમ

ત્વાભાવાત્, કથ તદ્દિ સમ્યક્ત્વ પ્રતિમાયાઃ મભવતિ ? તથમપિ નહિ । અત્ત એવો પદેશસ્ય સમ્યક્ત્વ પ્રતિ કારણત્વ પ્રદર્શયન્ મગવાનવાદીત્-ઉત્તરાચ્યયનસૂત્રે-
(અ૦ ૨૮ ગા૦ ૧૫)

“ તદ્દિયાણ તુ ભાવાણ સન્ભાવે ઉવ્વસણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિચારિય ॥ ઇતિ ।

ઝાયા—તઽયાના તુ ભાવાના સન્ભાવ ઉપદેશનમ્ ।

ભાવેન શ્રદ્ધતઃ સમ્યક્ત્વ તદ્ વ્યારયાતમ્ ॥

જીવાજીવાદિપદાર્થોના સન્ભાવે યદ્ ઉપદેશન=ગુરોરુપદેશ., તદ્ ભાવેન-
ખન્ત'કરણેન શ્રદ્ધત મોહનીયકર્મણઃ ક્ષયેણ ક્ષયોપશમેન યા યાઽભિરુચિરૂપદ્યતે,
તત્ સમ્યક્ત્વ તીર્થરૂરેવ્યાખ્યાતમ્ ।

કે અર્થે કા ઉપદેશ કરને મેં અચેતન હોને સે સર્વથા અસમર્થ હૈ કમોં
કી નિર્જરા મેં ખી વહ હેતુ રૂપ નહી હોતી હૈ-કારણ કિ કમોં કી
નિર્જરા કે હેતુ તો વિનયાદિક તપ હી માને ગયે હૈં, પ્રતિમા વિનયાદિ
તપ સ્વરૂપ નહી હૈં । અત્ત પ્રતિમા મેં સમ્યક્ત્વ કી ઉત્પત્તિ મે કારણતા
કિસી ખી પ્રકાર સમ્ભવિત નહી હોતી હૈ-ઉત્તરાચ્યયન સૂત્ર મેં સદ્ગુરુ
કે ઉપદેશ કો સમ્યક્ત્વ કે પ્રતિ કારણ પ્રકટ કરતે હુએ સિદ્ધાન્તકાર
કહતે હૈં કિ-તદ્દિયાણ તુ ભાવા ણ સન્ભાવે ઉવ્વસણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિચારિય ॥ ઇતિ ॥

જીવ ઔર અજીવ આદિ પદાર્થો કા સદ્ગુરુ ને જો યથાવસ્થિત
સ્વરૂપ પ્રકટ કિયા હૈ, ઉસકા ઉસીરૂપ સે અન્તઃ કરણ સે શ્રદ્ધાન
કરને વાલે પ્રાણી કે દર્શન મોહનીય કર્મ કે ક્ષય અથવા ક્ષયોપશમ

પ્રવચનના અર્થોના ઉપદેશ કરવામા અચેતન હોવા બદલ સંપૂર્ણપણે અસમર્થ
છે ઠારણ કે ઠર્મોની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તથોજ માનવામા આવ્યા
છે પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામા સમ્યક્ત્વની
ઉત્પત્તિમા કારણતા ડોહ પણ રીતે મલવી શકે તેમ નથી ઉત્તરાચ્યયન સૂત્રમા
સદ્ગુરુના ઉપદેશને સમ્યક્ત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતા સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

તદ્દિયાણ તુ ભાવાણ સન્ભાવે ઉવ્વસણ ।

ભાવેણ સદ્દહતસ્સ સમ્મત્ત ત વિચારિય ॥ ઇતિ ॥

છવ અને અછવ વગેરે પદાર્થોનુ જે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરુએ પ્રકટ
કયું છે તેનુ તે રૂપથી અત્ત કરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહ
નીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનુ નામ જ

યદિ પ્રતિમાઽપિ સમ્યક્ત્વગમે નિમિત્ત સ્થાત્તર્હિ ભગાતા સ્થાનાદ્મયે
પ્રતિમાનિમિત્તત્વેન સમ્યક્દર્શનમ્ તૃતીયભેદોઽપિ ગાન્ય., તસ્યાનુક્તત્વાદ્
પ્રતિમાયાઃ સમ્યક્ત્વગમે નિમિત્તત્વ નાસ્તીતિ યો યમ્ । કિં ચ—

પ્રાણાતિપાતસા યાયા. પ્રતિમાપૂજાયાઃ સમ્યક્ત્વશુદ્ધિદેવતૃત્વ યન્તઃ સ્વ
દુર્ગતિં ન પશ્યન્તિ મોહાન્ધ્રાઃ, સ્થાનાદ્મયે હિ પ્રાણાતિપાતમ્ય દુર્ગતિહતૃત્વ
પદર્શિતમ્—

પચર્હિ ઠાળેર્હિ જીવા દુઃખઃ મન્છતિ । ત તદ્વા-પ્રાણાદ્યાપ્ણ, મુસાપાપ્ણ,
અદિન્નાદાપ્ણેણ, મેહુપ્ણેણ, પરિમ્ગહેણ ” ઇતિ । (સ્થા ૫ ઠા ૧ ૩)

સે જો કુચિ ઉત્પન્ન હોતી છે उसी का नाम सम्यग्दर्शन है ऐसा तीर्थंकर
પ્રભુને કહ્યા છે યદિ સમ્યક્ત્વ કી પ્રાપ્તિ મે પ્રતિમા નિમિત્ત હોતી તો
સ્થાનાદ્મ સૂત્ર મેં જો “દોર્હિ ઠાળેર્હિ આયા કેવલિ પન્નત ધમ્મ લભેજ્ઞા
સવળયાણ ” એસા કહ્યા છે વહા યદિ સમ્યક્ત્વ કે લાભ મેં પ્રતિમા મી
નિમિત્ત હોતી તો ઉસકે નિમિત્ત હોને સે દો સ્થાનોં કી જગદ્ સમ્યક્ત્વ
કી પ્રાપ્તિ મેં ત્રીન સ્થાનોં કા કથન સૂત્રકાર કો કરનાં ચાહિયે યા પરન્તુ
વહા દો સ્થાનોં કે અતિરિક્ત તૃતીયસ્થાન કા કથન હુઓં નહીં હે, અતઃ
इससे यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा
નિમિત્ત નહીં છે । ફિર મી પ્રાણાતિપાત દ્વારા સાધ્ય પ્રતિમા પૂજન કો
મોહ કે આવેશ સે કયે હુણ વ્યક્તિ સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ કા કારણ બત
લાતે હુણ અપની દુર્ગતિ કા કુહા મી રૂપાલ નહીં કરતે હુ યહી એક
બડે આશ્ચર્ય કી બાત છે દેવો પ્રાણાતિપાત કો સ્થાનાદ્મ સૂત્ર મેં દુર્ગતિ

સમ્યગ્દર્શન છે, આમ તીર્થંકર પ્રભુએ કહ્યું છે જે સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમા
નિમિત્ત રૂપે હોત તો સ્થાનાગ-સૂત્રમા જે “દોર્હિ ઠાળેર્હિ આયા કેવલિપન્નત
ધમ્મ લભેજ્ઞા સવળયાણ ” આ પ્રમાણે કહ્યું છે, ત્યાં જે સમ્યક્ત્વના લાભમા
પ્રતિમા પણ નિમિત્ત થઈ શકત તો તેને નિમિત્ત રૂપે થવા બદલ જે સ્થાનોની
જગ્યાએ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમા ત્રણ સ્થાનોનું કથન સૂત્રકારે કરવું જોઈતું હતું,
પણ ત્યાં તો જે સ્થાનો સિવાય ત્રીજા સ્થાનનું કથન થયું જ નથી એથી આ
સિદ્ધાંતની ખાત્રી થાય છે કે સમ્યક્ત્વના લાભમા પ્રતિમા નિમિત્ત નથી
છતાં જે પ્રાણાતિપાત વડે “સાધ્ય પ્રતિમા પૂજનને અજ્ઞાનની નિદ્રામા પડેલી
વ્યક્તિએ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનું કારણ બતાવતી ચોતાની દુરવસ્થા તરફ સહેજ
પણ ભેટી નથી તે એક બહુ નવાઈ જેવી વાત છે જુઓ પ્રાણાતિપાતને
સ્થાનાગસૂત્રમા દુર્ગતિનું જ કારણ બતાવવામા આવ્યું છે—(પચર્હિ ઠાળેર્હિ

કિં ચ-યયા લોકે સુગાના સુવર્ણમાત્રસામ્યેના શુદ્ધસુવર્ણેઽપિ પ્રવૃત્તિમવલોક્ય
શુદ્ધાશુદ્ધપરીક્ષણાત્ર ત્રિચક્ષણઃ કપચ્છેદતાપા આદિચક્ષ્ણે, તયાઽત્રાપિ પરીક્ષણીયે
શ્રુતચારિત્રરૂપે વર્મે સ્પાદય સમાદરણીયા ભવન્તિ ।

પ્રાણિયાદીના પાપસ્થાનાના યસ્તુ શાસ્ત્રે પ્રતિપેદ્ય, તયા સ્વાધ્યાયધ્યાનાદીના
યત્ર તત્ર વિધિ સ ધર્મરૂપ । પ્રાણિયમપર્કગતિ પૂજને તુ ધર્મત્વબુદ્ધિર્મોહવશાદેવ
ભવતિ, શાસ્ત્રે પ્રાણિયસ્ય પ્રતિપેદ્યાત્ । અનસ્તત્ર નાસ્તિ કપશુદ્ધિઃ ।

કા હી કારણ કહા છે “ પચર્હિ ઠાણેર્હિ જીવા દુગ્ગાહ ગચ્છતિ-ત
જહા-પાણાહવાણ, સુતાવાણ્ણ, અદિન્નાદાણેણ, મેહુણેણ, પરિગ્ગહેણ
इति । (સ્થા ૫ ઠા ૧૩) ઠન પાચો સ્થાનો સે જીવ દુર્ગતિ કે પાત્ર
ચનતે હૈ - પ્રાણાતિપાત સે, મૃષાવાદ સે. અદત્તાદાન સે મૈથુન સે
ઔર પરિગ્રહ સે । કિશ્ચ-લોક મૈં જિસ મૈં જિસ પ્રકાર મોછેમાલે વ્ય-
ક્તિયો કી સુવર્ણનાત્ર કી સમાનતા સે અશુદ્ધ સ્વર્ણ મૈં મી યહ સચ્ચા
સુવર્ણ હૈ ઇસ પ્રકારકી પ્રવૃત્તિ કો દેખકર સુવર્ણપરીક્ષકુ જન ઉસકે
સમ્યક્ત્વ ઔર અસમ્યક્ત્વ પરીક્ષાકે લિયે કપ છેદ ઔર તપ રૂપ ઉપાયો
કા અત્તલમ્બન કરતે હૈ ઉસી પ્રકાર પરીક્ષણીય ઇસ શ્રુતચારિત્રરૂપ વર્મ
કી પરીક્ષા કે લિયે સૂત્રકારોં ને કપાદિક પરીક્ષા કે સાધનો કા ઉપયોગ
કિયા હૈ પ્રાણિવવાદિક પાપસ્થાનો કા શાસ્ત્ર મૈં જો નિપેદ્ય કા વિધાન
હુઆ હૈ તયા સ્વા. યાચ ય્વ અધ્યયન આદિ કા જો વહા પર વિધાન
કિયા ગયા હૈ યહી વર્મ કા કપ હૈ પૂજન મૈં યહ ધર્મ કપ નહી હૈ કયોં
કિ વહ પ્રાણિ વધ કે સર્પક સે દૂષિત હૈ-અતઃ ફિર મી જો ઉસમે ધર્મ

જીવા દુગ્ગાહ ગચ્છતિ-તજહા-પાણાહવાણ, સુતાવાણ, અદિન્નાદાણેણ, મેહુ
ણેણ પરિગ્ગહેણ इति) (સ્થા ૫, ઠા ૧૩) આ પાચે સ્થાનોથી છવ દુર્ગ
તિને થોગ્ય હરે છે-પ્રાણાતિપાતથી, મૃષાવાદથી, અદત્તાદાનથી, મૈથુનથી અને
પરિગ્રહથી અને બીજી પછુ કે લોકમા જેમ લોળા માણસોની સુવર્ણમાત્રની
સમાનતાથી અશુદ્ધ સુવર્ણમા પછુ ‘ આ સોનુ અર છે, ’ આ બાતની પ્રવૃત્તિ
જોધને સુવર્ણ પરીક્ષકો તેના ખરા-ખોટાની પરીક્ષા માટે કપ, છેદ અને તાપ
રૂપ ઉપાયોના આસરે લે છે તેમજ પરીક્ષણીય આ શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મની
પરીક્ષા માટે સૂત્રકારોએ કપ વગેરે પરીક્ષાના સાધનોના ઉપયોગ કર્યો છે
પ્રાણિ વધ વગેરે પાપસ્થાનોનું શાસ્ત્રમા જે નિપેદ્ય ઉપ વિધાન થયું છે તેમજ
સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરેનું જે ત્યા વિધાન કરવામા આવ્યું છે તેજ
ધર્મની ઠસોટી-કપ છે પૂજનમા આ ધર્મ કપ નથી કેમકે તે પ્રાણિવધના
સર્પકથી દૂષિત છે છતાંય તેમા ધર્મત્વની બુદ્ધિ રાખવામા આવે છે તે દક્ષ

યત્ર વિધિ' પ્રતિષેધપ્રતિ દ્વય કદાચિન્ સ્વરૂપતો વિપરીત્યન ગતિ, યથાત્-
સ્વાધ્યાય પાનાદી નિયમતઃ પ્રવૃત્તયા વિધિપરિશુદ્ધિઃ, તથા દિંમાદો નિયમતો
નિવૃત્તયા પ્રતિષેધપરિશુદ્ધિર્ભવતિ, સ ધર્મ-ત્રેદ ઉચ્યતે । પ્રતિમાપૂજાયા તુ નાસ્તિ
ત્રેદશુદ્ધિઃ, તસ્યાઃ પટ્ટકાયોપમર્દનસાધ્યત્વેન પ્રતિપક્ષપરિશુદ્ધગ્ભાગાત્ ।

પ્રવચને જીવાજીવાદીના તત્ત્વાના યથાવસ્થિતસ્વરૂપનિરૂપણ મોક્ષમાધક
મિત્યેષ નિશ્ચયસ્તાપશુદ્ધિઃ । યથા વહ્નો તાપનેન દુર્ગરસ્ય યથાવસ્થિતસ્વરૂપાવિ-
ર્ભાવ તથા-પ્રવચનોક્તતત્ત્વાનુમન્યાનેન ધર્મસ્ય સ્વરૂપમાવિર્ભવતિ । એવ પ્રતિમા
પૂજાયા પ્રવચનોક્તસત્તરનિર્જરાતચલસપાનાનાક્રાન્તત્ત્વાનામ્ભિ તાપશુદ્ધિઃ ।

ત્વકી બુદ્ધિ હોતી હૈ વત્ કેવલ મોહકા હી આવેજા હૈ । પ્રાણિવધ શાસ્ત્ર
સે નિષિદ્ધ હૈ । જહાં પર વિધિ ઓર પ્રતિષેધ યે દોનોં કમી મી અપને
સ્વરૂપ સે વિપરીતપને કો પ્રાપ્ત નહીં હોતે હૈ વત્તા પર ત્રેદ સે શુદ્ધિ
માની જાતી હૈ જિસ પ્રકાર સ્વાધ્યાય ઓર અધ્યયન આદિ શુભ કાર્યો
મેં નિયમ સે શાસ્ત્ર મેં પ્રવૃત્તિ પ્રદર્શિત કી ગઈ હૈ ઓર હિંસાદિ કાર્યો
સે હસમે નિયમ સે નિવૃત્તિ કહી ગઈ હૈ । પ્રતિમા પૂજન મેં યહ છેદ
શુદ્ધિ નહીં હૈ । ક્યો કિ હસમે પ્રતિષેધ સે પરિશુદ્ધિ કા અભાવ હૈ હસ
કા કારણ યહ હૈ કિ વત્ પટ્ટકાય કે જીવોં કે ઘાત સે સાધ્યકાર્ય હૈ ।
પ્રવચન મેં જીવ ઓર અજીવ આદિ તત્ત્વો કે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ કા
વર્ણન હી મોક્ષકા સાધક હૈ હસ પ્રકાર કા નિશ્ચય હી તાપ શુદ્ધિ હૈ ।
જિસ પ્રકાર અગ્નિ મે તપાને સે સ્વર્ણ કા યથાવસ્થિત સ્વરૂપ પ્રકટ હોતા
હૈ । હસી પ્રકાર પ્રવચન કથિત તત્ત્વો કે અનુમન્ધાન સે ધર્મ કે સ્વરૂપ
કા અવિર્ભાવ હોતા હૈ હસ પ્રતિમાપૂજન મે વર્મતત્ત્વકે અવિર્ભાવ કરને

અજ્ઞાનનો જ બિલરો છે પ્રાણિવધ શાસ્ત્રનિષિદ્ધ છે બધા વિધિ અને પ્રતિષેધ
આ બન્ને કોઈ પણ વખતે પોતાના સ્વરૂપથી વિપરીતાવસ્થામાં પરિવર્તિત થતા
નથી ત્યાં છેદથી શુદ્ધિ માનવામાં આવે છે જેમ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન
વગેરે શુભ કાર્યોમાં નિયમથી શાસ્ત્રમાં પ્રવૃત્તિ બતાવવામાં આવી છે અને
હિંસા વગેરે કાર્યોથી તેમાં નિયમથી નિવૃત્તિ બતાવવામાં આવી છે પ્રતિમા
પૂજનમાં આ છેદ શુદ્ધિ નથી કેમકે આમાં પ્રતિષેધથી પરિશુદ્ધિનો અભાવ છે
આનું કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે પટ્ટકાયના જીવોના ઘાતથી સાધ્ય કાર્ય છે
પ્રવચનમાં જીવ અને અજીવ વગેરે તત્ત્વોના યથાવસ્થિત સ્વરૂપનું વર્ણન જ
મોક્ષનું સાધક છે આ બંનેનો નિશ્ચય જ તાપ શુદ્ધિ છે જેમ અગ્નિમાં તપા
વવાથી સોનાનું યથાવસ્થિત સ્વરૂપ પ્રગટ થાય છે તેમજ પ્રવચન કથિત તત્ત્વોના
અનુમધાનથી ધર્મના સ્વરૂપનો અવિર્ભાવ થાય છે આ નિ । ધર્મ

એમિઃ કૃપાદિમિઃ પરિશુદ્ધસ્યૈવ ઝર્મત્વ સમરતિ તાદૃશસ્યૈવ ધર્મફલ
જનન્ત્યાત્ ।

યથા-આચાર્યકર્માદિદોષદૂષિતાદારાદિદાને ધર્મશુદ્ધિયા ત્રિયમાણે ધર્મ-
વ્યાપ્રાત્, યથા યા ઇન્દ્રાદિપૃજાદૌ ઝર્મવ્યાપ્રાત્, તથૈવ ધર્મશુદ્ધિયા પ્રતિમાપૂજનેડપિ
ધર્મવ્યાપ્રાત્ સ્યાત્, તસ્ય જીવોપપ્રાત્હેતુત્વાત્ ।

“ પ્રતિમાપૂજા-ધર્મવ્યાપ્રાત્પત્તી, આગમોક્તન્યાયનિગૃહીતત્વાત્, અયોગ્ય-
પ્રમદ્યાદાનપત્, ઇન્દ્રાદિપૃજાવદ્ વા ” इत्याद्यनुमानेनापि प्रतिमापूजाया धर्म-
व्याप्रातो भवतीति प्रियमनीयम् । उक्त च—

કી યોગ્યતા તરુ મી નહીં છે । કારણ કિ ચહ પ્રવચન કથિત મલ્લ
ઔર નિર્જરા તત્ત્વ કે લક્ષણ સે યુક્ત નહીં છે-અતઃ ડસમેં તાર શુદ્ધિ
મી નહીં છે । ઇન કપાદિમો ઢોરા પરિશુદ્ધ હુઈ પસ્તુ મે હી ઝર્મના
આતી છે ઔર વહી ચર્ચા મે ધર્મ કે ફલકા પ્રદાન હોતા છે । પ્રતિમાપૂ
જન મે ચહ પ્રાત્ નહીં છે-અતઃ વહ ધર્મસ્થ નહીં છે ।

કિંચ-ઝર્મશુદ્ધિ સે રનાયે ગયે, પરન્તુ આચાર્યકર્મ આદિદોષો સે
દૂષિત એસે આહાર કે દાન મેં તયા ઇન્દ્ર આદિકો કા પૂજન કરને મેં જિસ
પ્રકાર ઝર્મ કા વ્યાપ્રાત્ માના ગયા છે, ડસી પ્રકાર ધર્મશુદ્ધિ સે કી ગઈ
પ્રતિમા કા પૂજન મે મી જીવો કા પ્રાત્ હોને સે ધર્મ કા વ્યાપ્રાત્ હોતા
છે । ઇમલિયે આગમ કથિત મિદ્ધાન્ત કે અનુમાર યહ પ્રતિમાપૂજન ઉપો-
દેય કોટિ મેં નહીં આના છે । ફિર મી જો ઇસે કરતે હૈ-કરાતે હૈ-વે
આગમ કથિત મિદ્ધાન્ત સે સર્વથા વારા હ-ઔર ધર્મ કા વ્યાપ્રાત્ કર-

તત્ત્વને આવિર્ભૂત કરવા સુધીની પણ ક્ષમતા નથી, કેમકે આ પ્રવચન ડથિત
સવર અને નિર્જરા તત્ત્વના લક્ષણથી યુક્ત નથી એટલા માટે આમા તાપ
શુદ્ધિ પણ નથી આ ડય વગેરે વડે પરિશુદ્ધ થયેલી વસ્તુમા જ ધર્મતા આવે
છે અને તે જ માત્રા સ્વરૂપમા ધર્મના રૂપને આપનાર છે પ્રતિમા પૂજનમા
આ વાત નથી એથી તે ધર્મ રૂપ નથી

ધર્મશુદ્ધિથી તૈયાર કરવામા આવેલા, પણ આધારમ્ વગેરે દોષો વડે
દૂષિત એવા આહારના દાનમા તેમજ ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવામા જેમ ધર્મનો
વ્યાપ્રાત્ માનવામા આવ્યો છે, તેમ જ ધર્મશુદ્ધિ રાખીને કરવામા આવેલા
પ્રતિમા પૂજનમા પણ જીવોનો પ્રાત્ હોવાથી ધર્મનો વ્યાપ્રાત્ હોય છે એટલા
માટે આગમ કથિત મિદ્ધાન્ત મુજબ આ પ્રતિમા પૂજન ઉપાદેય કોટિમા
આવતુ નથી છતાં યે જે આને કરે છે, કરાવે છે તેઓ આગમ ડથિત મિદ્ધા
તથી સર્વથા બાહ્ય છે અને ધર્મના વ્યાપ્રાત્ક છે એવી અયોગ્યને આપેલી

“ પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ, શાસ્ત્રોક્તન્યાયવાધિતે ।

દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો, ધર્મ-વ્યાપાત ઇવ હિ ” ॥ દારિદ્ર્યાપ્તકમ્

યત્તુ-જિનપ્રતિમાયા દર્શન ચન્દન ચાવદયપ્રમંસ માધુનામિદિ ચન્દનાદિકૃત્યા
મક્તપાન ન કરવને તેવામિત્યાદુસ્તધર્મલમ્—

અદોરાત્રકૃત્યેષુ માધુરલ્પેષુ જિનપ્રતિમાર્શનાદેરનુક્તત્વાત્ । શૃણુ તામદોરાત્ર-
કૃત્ય માધુનામ્—

નેવાલે છે અતઃ અયોગ્ય કો દીક્ષા દાન કી તરફ જવરા ઇન્દ્રાદિક ક
પૂજન કી તરફ યદ્ પ્રતિમાપૂજન આગમોક્ત ન્યાય સે નિગાઠન હોને સે
ધર્મ કા વ્યાધાન કરનેવાલા હૈ જેમા ત્રિ-ગ્રામ કરના ચાલિયે । ત રા ચ
અનુમાનપ્રયોગોડય-પ્રતિમાપૂજા ધર્મવ્યાધાતવતી આગમોક્તન્યાયનિગાઠ
તત્વાત્ અયોગ્યપ્રવ્રજ્યાદાનવત્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવદ્વા । ઇમ અનુમાન મેં દિયા
ગયા હેતુ અસિદ્ધ નહી હૈ-અયો કિ “ પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ શાસ્ત્રોક્તન્યા
યવાધિતે - દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો ધર્મવ્યાધાત ઇવ હિ ” દૃષ્ટાન્ત મેં ઇસ
હેતુ કા ઇસ શ્લોક દ્વારા કથિત પ્રકાર સે સદ્વાચ પાંચા હી જાતા હૈ ।

જો યદ્ કહા જાનો હૈ કિ જિનપ્રતિમા કે દર્શન ચન્દન કિયે વિના
સાધુઓં કો આહાર પાની કરના કલ્પનીય નહી હૈ-અતઃ. ઇસકા દર્શન
ચન્દન કરના સાધુઓં કે લિયે આવશ્યક હૈ વહ ચિલકુલ નિર્મૂલ હૈ-
કારણ કિ દિનરાત સવધી જિતને બી સાધુઓં કે કલ્પ હ્ ઇન મેં ઇસ
વાત કા કહી બી કથન કિયા હુઆ નહી મિલતા હૈ-દિનરાત સવધી
સાધુઓં કે ચે કૃત્ય હૈ—

દીક્ષાની જેમ અથવા તો ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજાની જેમ આ પ્રતિમાપૂજન આગમ
કથિત ન્યાયથી નિરાકૃત હોવા બદલ ધર્મને નાશ કરનાર છે આમ માની જ
લેણુ એટલે “ તથા ચ અનુમાનપ્રયોગોડય પ્રતિમાપૂજા ધર્મવ્યાધાતવતી આગમો
ક્ત્યાયનિરાકૃતત્વાત્ અયોગ્ય-પ્રવ્રજ્યાદાનવત્ ઇન્દ્રાદિપૂજનવદ્વા । આ અનુમાનમા
આપેલ હેતુ અસિદ્ધ નથી, કારણ કે-પ્રવ્રજ્યાદિવિધાને ચ શાસ્ત્રોક્તન્યાયવાધિતે
-દ્રવ્યાદિભેદતો જ્ઞેયો ધર્મવ્યાધાત ઇવ હિ । દૃષ્ટાન્તમા આ હેતુને આ શ્લોક
વડે જે કથિત પ્રકાર છે તેનો સદ્ભાવ મળે છે

જે એમ કહેવામા આવે છે કે જીન પ્રતિમાના દર્શન કર્યા વગર સાધુ
ઓને આહાર પાણી કરણુ યોગ્ય નથી એથી તેના દર્શન વન્દન કરવા સાધુ
ઓના માટે આવશ્યક છે તે માવ જોટી વાત છે કેમકે દિવસ અને રાત્રિને
લગતા સાધુઓને માટે જેટલા કટપ છે તેમા આ વાતનુ કથન કયાયે નથી
દિવસ અને રાત્રિના સાધુઓના આ નીચે લખ્યા મુજબ કૃત્યે

पढम पोरिसि सज्झायं, नीए ज्ञाण जियायए ।

तइयाए भिक्खायरिय, चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥

पढम पोरिमि सज्झाय, नीए ज्ञाण जियायए ।

तइयाए निमोक्ख च, चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥ इति,

(उत्तराध्ययनसूत्रे २६ अ)

किं च-सामायिकाद्यापश्यकेष्वपि प्रतिमादर्शनादेरनुक्तत्वाद् जिनाज्ञाया एव च धर्ममूलत्वात्तस्य धर्मत्व न सि यति ।

यत्तु-पुष्पादिसमभ्यर्चनरक्षणो द्रव्यस्तवः साधुना हेय एव श्रावकेण तु उपादेयोऽपि तथा चाह-भाष्यकारः-

अकसिणपवत्तगाण, विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो ।

ससारपयणुरणो दब्बत्थए ऋवदिट्ठतो (भाष्यकारः ४२)

पढम पोरिसि सज्झाय नीए ज्ञाण जियायए ।

तइयाए भिक्खायरिय चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥

पढम पोरिसि सज्झाय नीए ज्ञाण जियायए ।

तइयाए निमोक्ख च चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥

(उत्तरा सूत्र २६ अ-)

अर्थस्पष्ट है । इसी प्रकार साधुओं के जो सामायिक आदि आवश्यक कृत्य हैं, उनमें भी प्रतिमा के दर्शन आदि करना नहीं कहा है । धर्म का मूल तो जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा की आश्रयना करने में है इसलिये दर्शन वगैरह ये धर्म के मूल नहीं हैं । भाष्यकारने जो इस गाथा द्वारा " अकसिण पवत्तगाण विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो । ससार पयणुरणो दब्बत्थए ऋवदिट्ठतो " (भाष्यकार ४२) यह कहा है कि

पढमे पोरिसि सज्झाय नीए ज्ञाण जियायए ।

तइयाए भिक्खायरिय चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥

पढमे पोरिसि सज्झाय नीए ज्ञाण जियायए ।

तइयाए निमोक्ख च चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥ (उत्तरासूत्र-२६ अ)

अर्थ-भरण व छे आ रीते साधुओंना के सामायिक वगेरे आवश्यक कृत्यो के तेमनामा पणु प्रतिमाना दर्शन वगेरे करवाणी बात दही नथी धर्मनु मूल तो छेनेन्द्र भगवाननी आज्ञाने आश्रयनामा आवे के भाटे दर्शन वगेरे आ पथा धर्मना मूल नथी भाष्यकारे ने आ गाथा पडे-(अकसिण पवत्तगाण विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो । ससारपयणुरणो दब्बत्थए

અઠસ્તનપર્યંકાનાં ઝાઝસ્તનસયમમટ્તચિમતા ઝિન્નારિસ્તાના=ટેગરિસ્તીના
શ્રાવકાણામ્ એવ દ્રવ્યસ્તવ* રાત્રુ મૃક્ત એવ । ક્ષિંભૂનોડ્યમિત્યાદ-સત્તાર પ્રતનુ
કરણઃ=સમારક્ષયતારમઃ સ્ત્યર્થ* । નનુ દ્રવ્યન્તરો દેય મઠર્થયામુન્દરઃ સ કથ
શ્રાવકાણા મુક્ત ? । ક્ત્યાસદ્વ્યાદ-રૂપપ્પટ્ટાન્ત ઇતિ-

યથા લોકે કેડપિ જલામાસત્તરુણાટ્ટગા. પિપામાપનોડનાધર્મ રૂપ સનન્તિ
તે રૂપસનના મૃત્તિકામર્દવાદિમિથ મલ્લિના મયન્તિ, પથ્થાત્ તદુદ્યમેન જલેન
તેપા તૃષ્ણાયાસ્તયા મૃન્મર્દમમત્સ્ય ચ નાશો મયતિ તદનન્તરમપિ તે તદન્યે ચ

શ્રવણોં કે લિયે ઉપાદેય ધી પુષ્પ આદિકો ઢારા મગધાન કી પ્રજા સ્વ
રૂપ દ્રવ્યસ્તવ સાધુઓં કે લિયે દેય હી હૈ । ચ્યોં કિ સાધુ નર્વ આરમ
ઔર પરિગ્રહ કે સર્વ ય ત્યાગી હૈ-શ્રાવક નથી વે દેશ વિરતિ સપન્ન હૈ ।
અતઃ ઉનકે લિયે દ્રવ્યસ્તવ સસાર કા ક્ષય કારક માના ગયોં હૈ રૂપ
કા દૃષ્ટાન્ત દેક્તર માગ્યકાર ને ઇમ ઢાકા કા પરિહાર ક્રિયા હૈ કિ જિસ
પ્રકાર જલ કે અભાવ સે પિપાસા કો દૂર કરને કે લિયે કોઈ ૨ મનુષ્ય
રૂપ કો ઘોડતે હૈ ઔર ઉસે ઘોડતે સમય મિટ્ટી ઔર કીચઢ સે મલિન
મી હો જાતે હૈ પરન્તુ પથ્થાત્ ઉસ રૂપ મે નિકલે રૂપ જલ સે વે ઉસ
કીચઢ ઔર લગી હુઈ મિટ્ટી કો સાફ કર દેતે હૈ ઔર સમય ૨ પર
અપની પિપાસા કી મી શાતિ કરતે રહતે હ । દુમરે ઔર મી લોક
ઉસસે લોભ ઉઠાતે હૈ । ડસ પ્રકાર ઉસ જલયુક્ત કુર્ષ સે ઘોડને વાલે
વ્યક્તિયોં કો તયા ઔર મી અન્યજનોં કો સમય ૨ પર અનેક પ્રકાર સે
લાભ હોતા રહતા હૈ । ઠીક હસી તરહ હસ દ્રવ્યસ્તવ મે જો કિ સયમ

કૃષદિદ્વિતો ।) (માગ્યકાર ૪૨) આ પ્રમાણે ઢહુ ડે ડે શ્રાવકોને માટે ઉા
દેય હોવા છતા પુષ્પ વગેરે વડે ભગવાનની પૂજા સ્વરૂપ દ્રવ્યસ્તવ સાધુઓના
માટે તો ત્યાગ્ય જ છે, દેમકે સાધુ સર્વ આરભ અને પરિગ્રહના સ પૂણ પથે
ત્યાગી હોય છે શ્રાવક નથી, તેઓ દેશ વિરતિ સ પન્ન છે એટલા માટે તેમને
સામે રાખીને વિચાર ઢરીએ તો દ્રવ્યસ્તવ સસારને ક્ષય ઢરનાર માનવામા
આન્થો છે રૂપનુ દષ્ટાત આખીને લાભ્યકારે આ શડાને દૂર કરી છે ડે જેમ
પાણીના અલાવને લીધે પીડાઇને તરસ મટાડવા માટે ડેટલાક માણુમે વાવ
ખોદે છે અને તે વખતે તેઓ માટી અને કાઢવથી ખરડાઈ જાય છે પણ ત્યાર
પછી વાવમાથી નીડળતા પાણીથી જ તેઓ કીચઢ તેમજ શરીરે એટલી માટીને
સાફ કરી નાખે છે અને વખતો વખત ખોતાની તરસ પણ મટાડે છે બીજા
પણ ડેટલાક લોકો તેનાવી લાભ મેળવે છે આ રીતે તે પાણી ભરેલી વાવથી

લોકા જલેન સુચિનો મવન્તિ एव द्रव्यस्तत्र तद्यप्यसयमो भवति तथापि तत एव सा परिणामशुद्धिर्भवति, या तद् असयमोपार्जितमन्यच्च निरवशेषं क्षपयति इति ।

“ तस्माद्वિરતાविरतैः श्रावकैरेव द्रव्यस्तत्र वर्तव्य ।

शुभानुगन्धी प्रभूतनिर्जराफल इति कृत्वा ” इत्यુक्तम्-

તદસત્-અત્ર દિ કપદદૃષ્ટાન્તો ન સઘટતે કૃષ્ણવનનેન જલમુત્પદ્યતે ડતિ સરૂલ લોકમત્યક્ષ, કિન્તુ પદ્મકાચવ્ર કર્તવ્ય કારયતશ્ચ વર્મમૂલભૂતાયા દયાયા એવ

કી રક્ષા નહીં થોતી હૈ, તો મી યહ કર્તા કો પરિણામો મે શુદ્ધિ કા હૈતુ હોતા હૈ । ડસસે કર્તા ડસ દ્રવ્યસ્તવ કૈ કરને મે ડદ્ભૂત અસયમ ઢારા ડપાર્જિત પાપો કા સમ્પૂર્ણરૂપ સે ઘિનાગ કર દેતા હૈ । ડસલિયે ઘિરતાઘિરત (અરૂદેશ સયમ ની આરાવના કરનેઘાલે પચમગુણસ્થાન-ઘર્તી શ્રાઘકો ઢારા યહ દ્રવ્યસ્તવ કર્તવ્ય કોટિ મેં આને સે ડપાદેય હૈ । કારણ કિ યહ ડનકે ન્લિયે શુભાનુગન્ધી ડૌર કર્મોં કી અધિક નિર્જરા રૂપ ફલ કા પ્રદાતા હોતા હૈ ” યહ સત્ શાષ્યકાર કા કયન ઢીક નહીં હૈ । કારણ કિ ડન્હો ને જો કૃષ્ણ ઘા દૃષ્ટાન્ત દેકર ડસ ઘિપય કી પુષ્ટિ કરની ઘાહિયે, ડસસે પ્રકૃત ઘિપય કી ઘાસ્તઘિક પુષ્ટિ નહીં થોતી હૈ । યહ તો પ્રત્યેક લૌકિક જન કૈ પ્રત્યક્ષ અનુભવ મે આને જૈસી ઘાત હૈ કિ રૂપ કૈ ઘોદને સે જલ નિકલતા હૈ ડમ મેં તો ત્રિઘાદ કી કોઈ જલ-રત હી નહીં હૈ, કિન્તુ પ્રતિમા કી પૂજા કરને ડૌર કરાનેઘાલો સે ઘદ્

જોદનાર ઢોડોને તેમજ ખીજા પશુ ઘણા માણુમેને ઘળતો ઘખત ઘણી રીતે લાભ થતા રહે છે ઢીઢ આ પ્રમાણે જ દ્રવ્યસ્તવમા જે કે સયમની રક્ષા થતી નથી, છતાં ય તે ઢર્તાના માટે પરિણામમા શુદ્ધિતુ ડગપુ હોય છે તેનાથી કતાં તે દ્રવ્યસ્તવના કળામા ડદ્ભૂત અસયમ ઘડે મેળઘેલા પાપોનો મ પૂર્ણ પશુ ઘિનાશ કરી નાજે કે એથી ઘિરતાઘિરત (એકદેશ સયમની આશઘના કરનાર પચમ શુભુસ્થાનઘર્તી) શ્રાઘજો ઘડે આ દ્રવ્યસ્તવ ઢર્તવ્ય ઢોટિમા આવઘાથી ડપાદેય છે ઢારણ કે તે તેમના માટે શુભાનુગન્ધી અને કર્મોની ઘધારે નિર્જરા રૂળને આપનાર છે લાઘ્યકાગ્નુ આ મધુ ઢયન ઘોગ્ય નથી, ઢારણ કે તેઓએ જે ઘાવતુ દૃષ્ટાત આપીને આ ઘિપયની પુષ્ટિ ઢરઘા પ્રયત્ન કથી કે, તેનાથી પ્રકૃત ઘિપયની ઘાસ્તઘિક રૂપમા પુષ્ટિ ઘતી જ્ઘેઘામા આવતી નથી દરેકે દરેક માણુરના માટે આ તો એક પ્રત્યક્ષ અનુભવ કરી શકાય તેવી હઢીઢત છે કે ઘાવ જોદઘાથી પાણી નીઢજે છે, આમા તો અર્થાની ઢોઈ ઘાત જઢજીમી થતી નથી પશુ પ્રતિમાની પૂજા કરનાર અને કરાવનારાઓથી

કાય કે જીવો કી રક્ષા નહીં હો સકતી હૈ-અનસે અનકી વિરાધના હોતી હૈ । ऐसी परिस्थिति में धर्म के मूलभूत सिद्धान्त का ही जय वहां अभाव है तब उस पूजन कार्य के उनके परिणामों में शुद्धि मानना यह कथन शास्त्र से विरुद्ध और प्रत्यक्ष आदि समस्त प्रमाणों से घाहित होता हुआ किसी भी समझदार व्यक्ति को मान्य नहीं हो सकता है प्रतिमा पूजनके पक्षपाती जो इस प्रकार अपने पक्षमें तर्क करते हैं कि-

सम्यक् स्नात्योचिते काले सस्नाप्य च जिनान् क्रमात् ।

पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधिः ॥

તથા-જિનપ્રભસૂરિકૃતપૂજાવિધૌ-સરસસુગંધિચઢ્વેણ અગેસુ પૂજ કાઝળ પવગકુસુમેહિ ગઘગ્રાસેહિ ચ પૂષ્પ સઢ્વેણ સુગંધિભિઃ સરસૈરભૂપતિતૈર્વિકાશિભિરસહિતદલૈઃ પ્રત્યગ્રૈશ્ચ પ્રકીર્ણૈર્નાનાપ્રકારગ્રથિતૈર્વા પુષ્પૈઃ પૂજયેત્" इति-तथा-कुसुमकरपयगवर्धवधूयनेवेज्जफलजलेहि पुणो अद्विविहकम्मदलनी अददुपयारा हवइ पूया" इति किञ्च-

जिनभवन जिनविम्ब जिनपूजा जिनमत च यः कुर्यात् ।

तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि ॥

પદ્માય જીવોની રક્ષા થઈ શકતી નથી, તે કાર્યથી તો તેમની વિરાધના જ હોય છે આવી પરિસ્થિતિમાં ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તોનો જ ત્યાં અભાવ છે ત્યારે તે પૂજા રૂપ કાર્યથી તેમના પરિણામોમાં શુદ્ધિ માનવી આ વાત શાસ્ત્રથી વિરુદ્ધ અને પ્રત્યક્ષ વગેરે બીજા બધા પ્રમાણોથી બાધિત થતી હોઈ પણ સમજી ભાણસના માટે તો માન્ય થઈ શકે તેમ નથી પ્રતિમા પૂજનની તરફદારી કરનારાઓ પોતાની વાતને પુષ્ટ કરવા માટે જે આ બાતની ખોટી દલીલો સામે મૂકે છે કે-

सम्यक् स्नात्योचिते काले सस्नाप्य च जिनान् क्रमात् ।

पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधिः ॥

તથા-જિનપ્રમુસૂરિકૃતપૂજાવિધૌ-સરસ-સુરહિચઢ્વેણ અગેસુ પૂજ કાઝળ પવગકુસુમેહિ ગઘગ્રાસેહિ ચ પૂષ્પ સઢ્વેણ સુગંધિભિઃ સરસૈરભૂપતિતૈર્વિકાશિભિરસહિત દલૈઃ પ્રત્યગ્રૈશ્ચ પ્રકીર્ણૈર્નાનાપ્રકારગ્રથિતૈર્વા પુષ્પૈઃ પૂજયેત્ । इति तथा कुसुमकरपयगवर्धवधूयनेवेज्जफलजलेहि पुणो अद्विविहकम्मदलनी अददुपयारा हवइ पूया" इति किञ्च-

जिनभवन जिनविम्ब जिनपूजा जिनमत च यः कुर्यात् ।

तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि ॥

સમુન્દેદાત્ પરિણામશુદ્ધિરુત્પદ્યત્ત્વમિતિ પ્રવચનવિરુદ્ધ કલ્પન સર્વપ્રમાણપ્રાધિત્ત્વ કસ્યાનુમત ભવેત્ । અપિ તુ ન કસ્યાપિ ।

(આચારાદ્ગમૂત્રે ભગવતાઽભિહિતમ્ (૫ ૧ ૩ ૧)

“ ઇમસ્મ ચેવ જીવિયસ્સ પરિવદ્ધમાણણપૂયણાણ જાહમરણમોયણાણ દુક્ખવપ-
હિધાયહેઽ સે સયમેવ પુઠ્ઠવિસત્થ સમારમ્મ, અણ્ણેહિં વા પુઠ્ઠવિમત્થ સમારમાવેહ,

ભાવાર્થ—પૂજક ઉચિત સમય મેં અચ્છી તરફ સ્નાન કરકે જિનેન્દ્ર
કા અભિષેક કર પુષ્પ આદિકોં સે ડન કી પૂજા કરે । જિનપ્રભન્નુરિ દ્વારા
વિરચિત પૂજાવિધિ મેં મી પૂજા કે વિષય મેં ટરી વિધિ પ્રદર્શિત કી
ગઈ હે સરસ સુગંધિત ચદન સે ભગવાન કે નવ અગો મેં તિલકરૂપ
પૂજન કર પૂજક સુગંધિત, જમીન પર નહીં ગિરે ટુળ, પત્ર વિનાકે તાજે
પચ જાતિ તે પુષ્પોં દ્વારા પ્રભુ કી પૂજા કરે । પુષ્પ, અક્ષત, ગંધ, પ્રદીપ,
ધૂપ, નૈવેદ્ય ફળ ઔર જલ ઇન આઠ દ્રવ્યો સે આઠ કર્મોં કો નાશ કર
નેવાલી અષ્ટપ્રકારી પૂજા હોતી હૈ । જિનમંદિર, જિનપ્રતિમા જિનપૂજા
ઔર જિનમત કો જો કરતા હૈ, ડસ મનુષ્ય કે દાય મેં મનુષ્યગતિ દેવ-
ગતિ ઔર મોક્ષ કે સુખ આ જાતે હૈ—અર્થાત્ વહ મનુષ્ય ઇન ગતિયો
કે સર્વોત્તમ સુખ ભોગ કર મોક્ષસુખ કા મોક્તા બન જાતા હૈ—સો ઇસ
પ્રકાર કા યહ પૂજન વિષયક સમસ્ત કથન પ્રવચન સિદ્ધ હી હૈ ક્યોંકી
આચારાંગસૂત્ર મેં ભગવાન ને “ઇમસ્સ ચેવ જીવિયસ્સ પરિવદ્ધમાણ
પ્રયણાણ જાહમરણમોયણાણ દુક્ખપરિધાયહેઽ સે સયમેવ પુઠ્ઠવિસ-

ભાવાર્થ—પૂજા ડનાર યોગ્ય અમથે સારી રીતે સ્નાન ડગીને છનેન્દ્રનો
અભિષેક કરે તેમજ પુષ્પ વગેરેથી તેમની પૂજા કરે છનપ્રભાસુરિ વડે વિર-
ચિત પૂજાવિધિમા પણ પૂજના વિષયમા આ વિધિજ બતાવવામા આવી છે
મરસ સુગંધિત ચદનથી ભગવાનના નવ અંગોમા તિલક રૂપ પૂજન ડગી પૂજા
ડનાર સુવાસયુક્ત, જમીન ઉપર પડેલા નહિ, પત્ર વગરના તાબ, પાચ જાતિના
પુષ્પોથી પ્રભુની પૂજા ડરે પુષ્પ, અક્ષત, ગંધ, પ્રદીપ, ધૂપ, નૈવેદ્ય, ફળ અને
પાણી આ આઠ દ્રવ્યોથી આઠ ડમેની નષ્ટ કરનારી અષ્ટ પ્રકારની પૂજા હોય
ઢે છન મંદિર, છન પ્રતિમા, છન પૂજા અને છન મતને જે કરે છે, તે
માણસની પાસે મનુષ્ય ગતિ, દેવગતિ અને મોક્ષના સુખો આવી જાય છે
એટલે કે તે માણસ આ ગતિઓના સર્વોત્તમ સુખો ભોગવીને મોક્ષ સુખને
ભોગવનાર બની જાય છે, માટે આ જાતનુ આ પૂજનને લગતુ બધુ ડધન
પ્રવચન સિદ્ધ જ છે, કેમકે આચારાંગ સૂત્રમા ભગવાને—(ઇમસ્સ ચેવ જીવિ-
યસ્સ પરિવદ્ધમાણણપૂયણાણ જાહમરણમોયણાણ દુક્ખપરિધાયહેઽ સે

अण्णे वा पुढविमन्थं समारगते समणुजाणइ । त से अहियाण त से अणोहिण ।" इति-
जीवः कस्मै प्रयोजनाय पृथिवीनायस्य समारम्भ करोतीत्याह- "इमस्स
चेव" इत्यादि । अस्मैय=क्षणभक्षुरस्य, "जीयिस्स" जीवनस्य-जीवनस्यार्थे,
तथा परिवन्दनमाननपूजनाय=परिव दन प्रशंसा, तदर्थं यथाऽऽर्थगृहादिकरणे,
मानन=सत्कारः तदर्थं, यथा कीर्तिस्त्वभादिकरणे, पूजन=साधन । प्रतिमापूजन
च, तत्र स्वपूजन-घटारत्नादिपुरस्कारलाभस्तदर्थं, तथा-प्रतिमापूजना च प्रति
मादिरचने तथा-जातिमरणमोचनाय, तथा दुःखमविनाशहेतु-दुःखमिच्छायां ।

एव समारम्भ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थ समारभावेइ, अण्णे वा पुढवि
सत्थ समारभते समणुजाणइ । त से अहियाण त से अणोहिण" इति-
इस सूत्र में "जीव किस प्रयोजन के लिये पृथिवीकाय का समारम्भ
करता है" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यह कहा है कि यह जीव इस
क्षणभक्षुर जीवन के लिये परिवन्दन-प्रशंसा के लिये-आश्चर्योत्पादक
गृह आदि बनवाने के लिये मान-सत्कार के लिये कीर्तिस्त्व आदि कराने
में, अपनी प्रतिष्ठा के लिये चन्द्र रत्नरत्नमाल आदि पुरस्कार में तथा
प्रतिमापूजन के लिये प्रतिमादि बनवाने में तथा जाति-परलोक में सुख
के लिये देवमन्दिर आदिके बनवाने में, मरण-जिनकी मृत्यु हो चुकी है
ऐसे अपने पिता आदि की स्मृति के लिये स्तूप आदि की रचना कराने
में, मोचन-मुक्ति प्राप्ति के लिये देव प्रतिमा आदि बनवाने में अथवा
अनेक प्रकारके दुःखोंके विनाशके लिये वर्तमानकालमें स्वयं भी पृथिवी

सममेव पुढविसत्थ समारम्भइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थ समारभावेइ, अण्णेवा
पुढविसत्थ समारभते समणुजाणइ त से अहियाण त से अणोहिण) इति-
"एव शा भाटे पृथिवीकायना समारम्भ उदे ठे" को अवाप्तना जवाण
आपता आ प्रभावे कडेवामा आठ्यु छे के आ एव आ क्षणुल्लुग एवम
भाटे परिवदन-प्रशंसा भाटे आश्चर्योत्पादक घर वगेरे बनाववामा, मान-सत्कार
भाटे कीर्तिस्त्वो वगेरे तैयार कराववामा, पोतानी प्रतिष्ठा भाटे चन्द्र, रत्न,
कामण वगेरे रूप पुरस्कार तेमज प्रतिमा पूजन भाटे प्रतिमा वगेरे बना
ववामा जाति परलोकमा सुख प्राप्ति थाय तेना भाटे देव-मन्दिरा वगेरे तैयार
कराववामा, मरण-जो मरण पाव्या छे तेना पोताना पिता वगेरेनी यादमा
स्तूप, समाधि वगेरे बनाववामा, मोचन-मुक्ति भेजववा भाटे देव-प्रतिमा
वगेरे बनाववामा अथवा तो घड़ी लतना दुःखाना विनाश भाटे वर्तमान
कालमा पोते पणु पृथिवीकायना विनाश स्वइय द्रव्यलाभ

સઃ જીવનપરિચ્છન્નમાનનપૂજનાદ્યર્થ જનઃ સ્વયમેવ પૃથિવીશસ્ત્ર સમારમ્ભતે
 =પૃથિવ્યુપમર્દન દ્રવ્યમાયશસ્ત્ર વ્યાપારયતિ । અન્યૈર્સા પૃથિવીશસ્ત્ર સમારમ્ભયતિ
 =ઉયોજયતિ । પૃથિવીશસ્ત્ર સમારમ્ભમાણાન્ અન્યાન સમનુજાનાતિ અનુમોદયતિ ।
 એવમતીતાનાગતા+યા, તથા મનોવાકાયૈશ્વ પૃથિવીશસ્ત્રસમારમ્ભભેદા ખવગન્તવ્યાઃ ।
 પૃથિવીશસ્ત્ર સમારમ્ભમાણઃ કિં ફલ પ્રાપ્નોતીત્યાહ—“ ત સે અદિધાપ ” ઇત્યાદિ ।
 “ ત ’ તત્=પૃથિવીકાયસમારમ્ભણ, “ સે ” તસ્ય=પૃથિવીશસ્ત્ર સમારમ્ભમાણસ્ય
 “ અદિધાપ ” અદિતાપ=અજ્ઞપાણાય ભવતીતિ શ્લેષઃ । “ ત ’ તત્ = તદેવ ચ
 પૃથિવીકાયસમારમ્ભણમેવ ચ “ સે ” તસ્ય પૃથિવીશસ્ત્ર સમારમ્ભમાણસ્ય “ અયો-
 દીપ ” અયોગ્યે સમ્યક્ત્વાલાભાય જિનર્મપ્રાપ્ત્યભાવાય ચ મયતિ ।

પૃથિવીકાયસમારમ્ભણ દિ-કૃતકારિતાનુમોદિતભેદેન ત્રિવિધમ્, તરયાતીત-

કાય કે ચિનાશસ્ત્રરૂપ દ્રવ્ય માવ જસ્ટકા વ્યાપાર કરતા હૈ, દૂસરોં સે
 કરાતા હે ઓર ઇમ શસ્ત્ર કા પ્રયોગ કરને વાલે પ્રાણિયોકી અનુમોદના
 કરતા હૈ ઇસી પ્રકાર નૂત ઓર ભવિષ્યત કાલ મેં મનવચન ઓર કાય
 સે(ત્રિયોગ ઓર ત્રિકરણકે સત્ત્વસે) યદ્ જીવ પૃથિવી કાયકા સમારમ્ભ
 કરને ગલા હુઆ હૈ ઓર હોગા । અતઃ જિસ પ્રકાર વર્તમાન મેં ત્રિયોગ
 ઓર ત્રિકરણ કે સત્ત્વ સે ઇસ પૃથિવી કાય સમારમ્ભ કે ભેદ હોતે હૈં
 ઇસી પ્રકાર નૂત ઓર ભવિષ્યત કાલ મેં ખી ડનકે સત્ત્વ ઇત્તકે ભેદ
 જાનલેના ચાહિયે । યદ્ પૃથિવી કાય કા સમારમ્ભરૂપ શસ્ત્રકા પ્રયોગ
 પ્રયોક્તા જીવકો કમ્ખી ખી કલ્યાણ ણવ સમ્યક્ત્વ કે લાભ જિનર્મ
 કી પ્રાપ્તિ કી પ્રાપ્તિ કરાને વાલા નહી હોતા હૈ ।

માવાર્થ—પૃથિવીકાય કા સમારમ્ભ તૂન, કારિત ઓર અનુમોદના

(ગાય) કરે છે, ખીજાઓ પામે કરાવે છે અને આ ગત્રનો પ્રયોગ કરનાર
 પ્રાણીઓની અનુમોદના કરે છે આ પ્રમાણે ભૂત અને ભવિષ્યકાળમા મન,
 વચન અને કાયથી (ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના મળધથી) આ છવ પૃથિવ
 કાયનો સમારભ કરનાર થયો છે અને થશે એટલા માટે જેમ વર્તમાનકાળમા
 ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના મળધથી આ પૃથિવકાય સમારભના ભેદ (પ્રકાર)
 હોય છે તેમજ ભૂત અને ભવિષ્યત કાળમા પણ તેમના મળધ તેમજ ભેદ
 બહુી લેવા જોઈએ આ પૃથિવકાયના સમારભ રૂપ શસ્ત્રનો પ્રયોગ પ્રયોક્તા
 છવના માટે ઘડાપ કટ્યાણુ સમ્યક્ત્વનો લાભ તેમજ છન ધર્મની પ્રાપ્તિ
 કરાવનાર થતો નથી

લાવાર્થ—પૃથિવકાયનો સમારભ કૃત, ગતિ અને અનુમોદનાના ભેદથી
 ત્રણ પ્રકારનો છે અતીત અને અનાગત કાળના ભેદોથી તેના ખીજ ત્રણ ત્રણ

अण्णे वा पुढ्विसत्थ समारभते समणुजाणइ । त से अहियाण त से अयोदीए ।” इति
जीवः कस्मै प्रयोजनाय पृथिवीमायस्य समारम्भ करोतीत्याह—“ इमस्स
चेव ” इत्यादि । अस्यैव=क्षणभगुरस्य, “ जीयिस्म ” जीवनस्य=जीवनमार्थे,
तथा परिवन्दनमाननपूजनाय=परिवन्दन प्रशंसा, तदर्थं यथाऽऽर्थ्यं गृहादिकरणे,
मानन=सत्कारः तदर्थं, यथा कीर्तिस्त्वन्मादिकरणे, पूजन=स्नपूजन प्रतिमापूजन
च, तत्र स्वपूजन-वस्त्ररत्नादिपुरस्कारलाभस्तदर्थं, तथा-प्रतिमापूजनार्थं च प्रति
मादिरचने तथा-जातिमरणमोचनाय, तथा दुःसमप्रतिघातेन-दुःखनिवृत्तयर्थं ।

त्य समारम्भ, अण्णेहिं वा पुढ्विसत्थ समारभावेइ, अण्णे वा पुढ्वि
सत्थ समारभते समणुजाणइ । त से अहियाण त से अयोदीए ” इति—
इस सूत्र में “ जीव किस प्रयोजन के लिये पृथिवीमाय का समारम्भ
करता है ” इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यह कहा है कि यह जीव इस
क्षणभगुर जीवन के लिये परिवन्दन-प्रशंसा के लिये-आश्रयोत्पादक
गृह आदि बनवाने में मान-सत्कार के लिये कीर्तिस्त्वन्मा आदि कराने
में, अपनी प्रतिष्ठा के लिये वस्त्र रत्नकमल आदि पुरस्कार में तथा
प्रतिमापूजन के लिये प्रतिमादि बनवाने में तथा जाति-परलोक में सुख
के लिये देवमन्दिर आदिके बनवाने में, मरण-जिनकी स्मृत्यु हो चुकी है
ऐसे अपने पिता आदि की स्मृति के लिये स्तूप आदि की रचना कराने
में, मोचन-मुक्ति प्राप्ति के लिये देव प्रतिमा आदि बनवाने में अथवा
अनेक प्रकारके दुःखोंके विनाशके लिये वर्तमानकालमें स्वयं भी पृथिवी

सममेव पुढ्विसत्थ समारम्भ, अण्णेहिं वा पुढ्विसत्थ समारभावेइ, अण्णे वा
पुढ्विसत्थ समारभते समणुजाणइ त से अहियाण त से अयोदीए) इति—
“ एव शा भाटे पृथिवीकायने समारभा उरे ॐ ” ओ भवाक्षणे न्वाभ
आपता आ प्रभाणे कडेवामा आब्यु छे के आ एव आ क्षणुल्लगुर एवन
भाटे परिवन्दन-प्रशंसा भाटे आश्रयोत्पादक घर वगेरे बनाववामा, मान-सत्कार
भाटे कीर्तिस्त्वन्मा वगेरे तैयार कराववामा, पोतानी प्रतिष्ठा भाटे वस्त्र, रत्न,
कामण वगेरे रूप पुरस्कार तेमज प्रतिमा पूजन भाटे प्रतिमा वगेरे बना
ववामा नति परलोकमा मुञ्च प्राप्ति थाय तेना भाटे देव-मन्दिर वगेरे तैयार
कराववामा, मरण-जिनकी स्मृत्यु पाभ्या छे तेवा पोताना पिना वगेरेनी यादमा
स्तूप, समाधि वगेरे बनाववामा, मोचन-मुक्ति भेजववा भाटे देव-प्रतिमा
वगेरे बनाववामा अथवा तो धरणी नतना दुःखोना विनाश भाटे वर्तमान
कालमा पोते पणु पृथिवीकायना विनाश स्वइय द्रव्यलाभ

મલમ્બ, કિં પુનસ્તત્ર પટ્કાયસમારમ્ભણે સ્વર્ગપરગ્લામસ્ય સમ્ભવ । પરિવન્દન-
માનનપૂજનાર્થ જાતિમરણમોચનાર્થ દુઃખપ્રતિઘાતાર્થ ચ યે જીવાઃ પૃથિવીકાયાદિ-
સમારમ્ભ કુર્વન્તિ, તે તત્કાલ વિપરીતમેવ લભન્તે યતોઽસૌ સમારમ્ભઃ અગ્રોધિમહિત
ચોત્પાદયતીત્યુક્ત મગ્નતા । પરતુ તત્ર પ્રતિમાપૂજના શાસ્ત્રવિરુદ્ધમેવ કવયતિ-
પ્રતિમાપૂજાયા સ્વાભ્યુદયમોક્ષાર્થ ક્રિયામાણઃ પટ્કાયસમારમ્ભઃ સ્વલ્પ અગ્રોધિમ-

જીવ કે લિયે યહ અફેલા પૃથિવીકાય કા સમારમ્ભ હી અહિત કા કર્તા
ઔર મોક્ષ કે માર્ગ સે ચચિત રચ્વનેવાલા કહા ગયા હૈ તો મલા કિસ
કાર્ય મેં પટ્કાય કે જીવોં કા સમારમ્ભ હોતા હૈ, ડસ કાર્ય સે અથવા
ડસ પ્રકાર કે સમારમ્ભ સે જીવોં કો સ્વર્ગ ઔર અપવર્ગ (મોક્ષ) કા
લાભ કેસે હો સકના હૈ ? અર્થાત્ કિમી તરહ નહીં હો સકતા ।

જો મનુષ્ય પરિવદન માનન ઔર પૂજન કે નિમિત્ત તથા જાતિ ઔર
મરણ કે મોચન કે નિમિત્ત ણ્વ દુઃખો કે વિનાશ કરને કે નિમિત્ત
પૃથિવીકાય આદિ કા સમારમ્ભ કરતે હૈ, વે ડસમા વિપરીત હી ફલ
મોગતે હૈ યહ વાત અઠ્ઠી તરહ સે પ્રકટ કી જા ચુકી હૈ । ક્યોં કિ
પ્રતિમાપૂજા વોધ ણ્વ રિત પ્રાપ્તિ કે લક્ષ્ય કો લેઝર કે હી કી જાતી હૈ
-પરન્તુ ઇસ લક્ષ્ય કી સિદ્ધિ ન હોઝર ડસસે ડલ્ડા કર્તા જીવ અવોધ
ણ્વ અહિત કા પ્રાપ્ત હી હોતા હૈ ટેસા શ્રી મહાવીર પ્રભુ કા કવન હૈ ।
ફિર મી ઇસકે વક્ષવાતી જન ઇસ વાત પર ધ્યાન ન ડેકર શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ
હી કવન કરતે હૈ-વે યહ કહતે હૈ “ કિ ઇસ પ્રતિમાપૂજન મેં માના કિ

માર્ગથી હર દેહી દેનાર બતાવવામા આવ્યો છે ત્યારે કયા ધર્મમા પટ્કાયના
ભવેનો સમારભ હોય છે, તે ધર્મથી અથવા તો તે જાતના સમારભથી
ભવને સ્વર્ગ અને અપવર્ગ (મોક્ષ) નો લાભ ડેવી ગીને સંભવી શકે તેમ
છે ? એટલે કે ડોઠ પણ કાણે ભવને આ કાયથી સ્વર્ગ કે મોક્ષનો લાભ
થઈ જાકતો નથી

જે માણસ પરિવદન, માનન અને પૂજનના માટે તેમજ જાતિ અને
મરણના મોચન માટે અને દુઃખોના વિનાશ માટે પૃથિવિકાય વગેરેનો સમા
રભ કરે છે, તેઓ તેનું ઉત્કૃષ્ટ ફળ લોગવે છે આ વાત સારી ગીતે સમ
બતાવવામા આવી છે, ડેમકે પ્રતિમા પૂજા બોધ તેમજ હિત પ્રાપ્તિના લક્ષ્યને
લઈને જ કરવામા આવે છે પણ આ લક્ષ્યની સિદ્ધિ ન થતા તેનાથી સાવ
વિપરીત કતા ભવ અબોધ અને અહિતને મેળવે છે જોવું જ શ્રી મહાવીર
પ્રભુએ કહ્યું છે જનાય પ્રતિમા પૂજના ડેટલાડ તરફગીઓ આ વાતને લક્ષ્યમા
ન રાખતા શાસ્ત્ર વિરુદ્ધ જ ધ્યનને વળગી રહે છે તેઓ આ પ્રમાણે કહે છે

વર્તમાનાનાગતભેદેન પ્રત્યેક પ્રૈવિધ્યે નવથા ભવતિ । નવત્રિધસ્યાપિ પૃથિવીકાય
સમારમ્ભણસ્ય મનોવાવાયયોગભેદેન પ્રત્યેક પ્રૈવિ ૧ મત્સર્ગિર્ગિર્ભક્તા ભવતિ । ૧૪
વિધપૃથિવીકાયસમારમ્ભપ્રવૃત્તઃ સત્ત્વ પટ્ટકાયારમ્ભસંપાતજન્યઘોરતરગુરિતાર્જનન
દુરન્તસસારદાવાનલજ્વાલાન્તઃપાત માપ્યાનતનરકનિગોદાદિદુઃગમનુભવન્ ન
કદાચિત્ કલ્યાણ શાશ્વતમૃત્વમદ મોક્ષમાર્ગ મામોતીતિભાવ ॥

મગરતા પૃથિવીકાયસમારમ્ભણપટ્ટકાયાદિસમારમ્ભણમપ્યહિતાયામોષયે
ચ ભવતીત્યપિ તૈત્રેય પ્રસ્તુતમ્ । ચૈત્રેયસ્ય પૃથિવીકાયસ્ય સમારમ્ભણે સમ્યક્ત્વ
કે ભેદ સે ત્રીન પ્રકાર કા હૈ-હમકે અત્તીત ઓર અનાગત કાલ કે ભેદ
સે ત્રીન ૩ પ્રકાર કા ઓર હો જાતે હૈ ડસ પ્રકાર યહ ત્રીનો કાલોં કી
અપેક્ષા સે ૯ પ્રકાર કા હૈ । હન નવ પ્રકારોં કે સોવ-મન વચન ઓર
કાય હન ત્રીનો કા ગુણા કરને સે યહ ૨૭ પ્રકાર કા માના ગયા હૈ ડસ
પ્રકાર ત્રિકરણ ઓર ત્રિયોગ કે સપ્ત સે ૨૭ પ્રકાર કે ડસ પૃથિવીકાય
કે સમારમ્ભ મેં પ્રવૃત્ત જીવ પટ્ટકાય કે આરમ્ભ કે સપાત જન્ય ઘોરતર
પાપોં કે અર્જન સે દુરન્ત સમાર રૂપી દાવાનલ કી જ્વાલા કે મધ્ય મેં
નિમગ્ન બન અત મેં અનન્ન નરક નિગોદાદિકોં કે દુઃખો કા અનુભવ
કરતા હુઆ કમી મી નિજ કરવાળ કા મોક્ષા ણ્વ શાશ્વત સુખ કો
પ્રદાન કરને વાલે મોક્ષ કે માર્ગ કા પથિક નહીં બન સકતા હૈ પૃથિવી
કાય કે સમારમ્ભ કી તરહ અપૂકાય આદિ કા સમારમ્ભ મી હસ
જીવાત્મા કો સદા અહિતકારી ઓર અવોધ કા દાતા હૈ યહ વાત મી
વર્ણ પર (આચારાગ સૂત્ર મેં) મગવાન ને કહી હૈ અવ વિચારિણ-જબ

લેહો થઈ જાય છે આ રીતે આ ત્રણે કાળોની અપેક્ષાએ નવ પ્રકારનો છે
આ નવ પ્રકારોની સાથે મન, વચન અને કાય અને ત્રણેનો ગુણાકાર કરવાથી
આ ૨૭ પ્રકારનો માનવામા આવ્યો છે આ પ્રમાણે ત્રિકરણ અને ત્રિયોગના
સબધથી ૨૭ પ્રકારના આ પૃથ્વિકાયના સમારભમા પ્રવૃત્ત જીવ પટ્ટકાયના
આરભના સ પાત જન્મ ઘોરતર (લય કર) પાપોને કારણે દુરત સસાર રૂપી
દાવાનલના અગ્નિમા પડીને છેવટે અનત નરક નિગોદ વગેરે દુ જોને અનુ
ભવતો કદ પિ પોતાના કલ્યાણનો લોકતા થઈને અને શાશ્વત-સુખને આપનાર
મોક્ષ માર્ગનો પથિક (વટેમાર્ગ) બની શકતો નથી પૃથ્વિકાયના સમારભની
જેમ અપૂકાય વગેરેનો સમારભ પણ આ જીવાત્મા માટે હંમેશા અહિતકારી
અને અવોધ (અજ્ઞાન) આપનારો છે આ વાત પણ આચારાગ સૂત્રમા
ભગવાને કહી છે હવે આટલું તો આપણે પણ સમજી શકીએ છીએ કે જ્યારે
જીવના માટે ક્ષત પૃથ્વિકાયનો સમારભ જ જ્યારે અહિત કરનાર અને મોક્ષના

સમારંભમાળ' અ-ગ્યાન્ અનેકરૂપાન્ પ્રાણાન્ વિદિસતિ । એષઃ=પૃથિવીશસ્ત્રસમાર-
મ્ભઃ સ્વલુ નિશ્ચયેન ગ્રન્થઃ=ગ્રન્થતે=અધ્યતે જીવોડનેનેતિ ગ્રન્થઃ, અષ્ટવિધકર્મગ્રન્થઃ,
ગ્રન્થજનકૃત્વાદ્ ગ્રન્થ ઇત્યુચ્યતે । તથા-એષ મોહઃ ત્રિપર્યાસ વીપરીતજ્ઞાનરૂપ
ઇત્યર્થ તથા-એષ મારઃ=નિગોદાદિમરણરૂપઃ । તથા-એષ સ્વલુ નરકઃ=નારક
જીવાના દશવિધયાતનાસ્થાનમ્ । ઇત્યર્થમ્-એતદર્થ કર્મગ્રન્થ-મોહ મરણ-નરક-
રૂપ ગ્રોર દુઃસ્વપ્ન ફળં પ્રાપ્ય પુન પુનરેતદર્થમેવ લોકઃ=અજ્ઞાનગણવર્તી જીવઃ
ગૃહ્ઃ=લિપ્તુરસ્તિ । યદ્યપિ ત્રિપર્યાસભોગાસક્તો લોક શરીરાદિપરિપોષણાર્થ
પરિવન્દનમાનનપૂજનાર્થ જાતિમરણમોચનાર્થ દુઃસ્વપ્નપ્રતિષ્ઠાતાર્થ ચ પૃથિવી-
શસ્ત્રસમારંભ કરોતિ, તથાપિ તત્ફલ કર્મગ્રન્થમોહમરણનરકરૂપમેવ લભતે, અતઃ
પૃથિવીકર્મસમારંભસ્ય તદેવ ફલ મપતીતિ માત્ર' । તદેવ પ્રવચનવિરુદ્ધપ્રરૂપણ

કરારને ચાલા હોને સે ગ્રન્થસ્વરૂપ, વિપરીત જ્ઞાન કા જનક હોને સે મોહ-
રૂપ, નિગોદાદિ જીવોં કા ઇસ મે મરણ હોતા હૈ-હસલિયે માગ સ્વરૂપ
તથા નારકિયો કી દશ પ્રકાર કી યાતનાં કા હેતુ હોને સે યહ નરકરૂપ
માના ગયા હૈ । ઇસ પ્રકાર યહ જીવ ઇમ પૃથિવીકાષ કે સમારંભરૂપ
શસ્ત્ર કે ફલસ્વરૂપ કર્મગ્રન્થ, મરણ ઓર નરકરૂપ ઘોરતર દુઃખોં કો
ભોગતા હુઆ મી અજ્ઞાન કે આધીન હોકર ડસી શસ્ત્ર કે પ્રયોગ કરને
કા ફિર મી અમિલાપી હો રહા હૈ । યદ્યપિ વિષય ભોગોં મેં આસક્ત
યના હુઆ યહ જીવ શરીર આદિ કી પુષ્ટિ પરિવદન, માનન, પૂજન ઇવ
જાતિ ઓર મરણ કે મોચન કે લિયે તથા દુઃખોં કે વિનાશ કે લિયે
પૃથિવીકાષ કે સમારંભરૂપ શસ્ત્ર કા પ્રયોગ કરતા હૈ-પરન્તુ ફિર મી
ઇસકા યહ કર્મગ્રન્થ, મોહ, મરણ, નરકરૂપ ફલ કા હી ભોક્તા યનતા

જ્ઞાનાવરણીય વગેરે ડર્મોના બધ કરાવનાર હોવા બદલ ગ્રન્થ સ્વરૂપ, વિરુદ્ધ
જ્ઞાને ઉત્પન્ન ઠરનાર હોવાથી મોહ રૂપ, નિગોદ વગેરે જીવોના આમા મરણ
વાય છે માટે માર સ્વરૂપ તેમજ નારકીઓની દશ પ્રકારની યાતનાના કારણ
રૂપ હોવાથી આ નરક રૂપ માનવામા આવ્યું છે આ રીતે આ જીવ આ
પૃથિવિકાયાના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રના રૂપ સ્વરૂપ ડર્મબધ, મરણ અને નરક રૂપ
ઘોરતર હુ જોને ભોગવવા છતા પણ અજ્ઞાનવાચ થઇને તેજ શસ્ત્રનો પ્રયોગ
કરવા માટે રૂઝી તૈયાર થઈ રહ્યો છે જો કે વિષય ભોગોમા આમકા બનેલો
આ જીવ શરીર વગેરેની પુષ્ટિ પરિવદન, માનન, પૂજન અને જાતિ મરણના
ભોચન માટે તેમજ હુ જોને દૂર કરવા માટે પૃથિવિકાયાના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રનો
પ્રયોગ કરે છે પણ છતાંયે તે ડર્મગ્રન્થ, મોહ, મરણ અને નરક રૂપ રૂપને
ભોગવનાર જ બને છે એટલા માટે આપણે ચોક્કસ કહી શકીએ તેમ છીએ

હિત નોત્પાદયતિ, પ્રત્યુત ચોધિ નરામરણિસુતારુપ દિત ચ સમ્યગ્ જનયતીતિ,
તદેતત્ સાક્ષાત્ મરચનપિરુદ્ધમિતિ ।

કિં ચ આચારાદ્વસ્ત્રે પૃથિવીકાયસમારમ્ભસ્ય કન્ધમુદ્વત્ત્વા મગચતા પુનરભિદિ
તમ્—‘એમ સહુ ગયે, એસ સહુ મોદે એસ સહુ મારે, એમ સહુ નિરયે, ઇન્ચત્ય
ગઢિણ લોણ, જમિણ વિરુપરુવેહિં સત્થેહિં પુઢવિકમ્મસમારમ્ભેણ પુઢવિસત્થ સમા
રમમાણે અણ્ણે અણેગરુવે પાણે વિહિંસહ ।’ (આ ૧ અ ૨ ૩૦)

છાયા— એપ સહુ ગ્રન્થઃ, એપ સહુ મોદે, એપ સહુ મારે, એપ સહુ નરક
ઇત્યર્થ મુદ્ધો લોકઃ, યદિમ વિરુપરુવે શત્તૈઃ પૃથિવીર્મમમારમ્ભેણ પૃથિવીશત્ત

પદ્ધકાય કા સમારમ્ભ હોતા હૈ—પરન્તુ યહ મમારમ્ભ સ્વાભ્યુદય ઇવ સુક્તિ
પ્રાપ્તિ કે નિમિત્ત હી ક્રિયા જાતા હૈ—અતઃ યહ કર્તા જીવોં કો ન અહિત
કા હી ઉત્પાદક હોતા હૈ ઓર ન ચોધિ કે લાભ સે વચિત રહ્તા હૈ
પ્રત્યુત યહ ઉન્હેં ચોધિ ઇવ નર અમર ઓર મોક્ષ કે સુખ સ્વરૂપ હિત
કા પ્રદાન કરને વાલા હી હોતા હૈ ” સો હમ પ્રકાર કા ઉનક્ષા યહ કયન
સાક્ષાત્ શાસ્ત્ર સે વિરુદ્ધ હી હૈ—યહ વાન આચારાગ સુત્ર સે ખલી ખાંતિ
પુષ્ટ હોતી હૈ ઉમમેં પૂર્વોક્તરીતિ સે પૃથિવીકાય કે સમારમ્ભ કા ફલ કહ
કર ફિર યહ કહ્તા ગયા હૈ—“એમ સહુ ગયે, એસ સહુ મોદે, એસ સહુ
મારે, એમ સહુ નરયે, ઇન્ચત્ય ગઢિણ લોણ, જમિણ વિરુપરુવેહિં સત્થેહિં
પુઢવિકમ્મસમારમ્ભેણ પુઢવિસત્થ સમારમ્ભમાણે અણ્ણે અણેગરુવે પાણે
વિહિંસહ ” (આ ૧ અ-૨ ૩૦) યહ પૃથિવીકાય કા સમારમ્ભરૂપ શસ્ત્ર
નિશ્ચય સે જીવોં કો અષ્ટપ્રકાર કે જ્ઞાનાવરણીય આદિ કર્મોં કા બન્ધ

કે—આપણે થોડા વખત માટે આમ પણ માની લઈએ કે આ પ્રતિમા પૂજ
નમા પદ્ધકાયનો સમારભ થાય છે—પણ આ સમારભ સ્વાભ્યુદય અને સુક્રિતની
પ્રાપ્તિ માટે જ કરવામા આવે છે એટલા માટે આ કર્તા જીવોના માટે અહિ
તનો ઉત્પાદક પણ હોતો નથી અને બોધિના લાભથી પણ તેઓને વચિત
રાખનો નથી આ તો તેમને બોધિ અને નર અમર અને મોક્ષના સુખ સ્વરૂપ
હિતને આપનાર જ હોય છે પણ તેમનું આ ડયન પ્રત્યક્ષ રૂપમા શાસ્ત્રથી
વિરુદ્ધ જ છે આ વાત આચારાગ સૂત્રથી સારી પેઠે પુષ્ટ થઈ જાય છે તેમા
પૂર્વોક્ત રીતથી પૃથિવિકાયના સમારભનું ફળ ગતાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું છે—

‘એસ સહુ ગયે, એસ સહુ મોદે, એસ સહુ મારે એસ સહુ નરયે, ઇન્ચત્ય
ગઢિણ લોણ જમિણ વિરુપરુવેહિં સત્થેહિં પુઢવિકમ્મસમારમ્ભેણ પુઢવિસત્થ
સમારમ્ભમાણે અણ્ણે અણેગરુવે પાણે વિહિંસહ ” (આ ૧ અ ૨ ૩૦)

આ પૃથિવિકાયનું સમારભ રૂપ શસ્ત્ર ચોક્કસ જીવોના

પ્રકારના

યત્તુ-બ્રાહ્મીલિપિરિત્ત પ્રતિમા વન્ધ્યા, ' નમો વમીએ લિવીએ " ઇતિપદ યદ્ વ્યાખ્યાપનત્તેરાદાપુવન્યસ્ત તત્ર બ્રાહ્મીલિપિરક્ષરવિન્યાસ', સા યદિ શ્રુતજ્ઞાનસ્યાઽઽ કારસ્થાપના, તદા તદ્વન્ધ્યત્વે સાકારસ્થાપનાયા ભગવત્પ્રતિમાયા. સ્પષ્ટમેવ વન્ધ્યત્વમ્ તુલ્યન્યાયાદિત્યુક્તં, તન્મોહનોયકર્મોદયવિલમ્બિતમ્-

શ્રુતજ્ઞાનરૂપસ્ય ભાવશ્રુતસ્ય સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાનવતઃ, શ્રુતપઠનાદિક્રિયાવતઃ સા ચાદેશ્વિચારિક ભવતિ, શ્રુતતદ્વતોરમેદોષચારાત્ સા ચાદિ શ્રુતમુન્યતે । સ્થાપનાવશ્યકસ્ય સ્થાપનાશ્રુતસ્ય ચ તથૈવાનુયોગદ્વારે ભગવતા વર્ણનાત્ । યદેવ લિપિઃ શ્રુતજ્ઞાનમ્ય સ્થાપનારૂપન્ય ન પ્રાપ્નોતિ । તસ્માત્ પ્રતિમાયા બ્રાહ્મીલિપિદૃષ્ટાન્ત પ્રદર્શનમુત્તમ્પ્રરૂપણમ્ ।

કિન્ચ—પ્રતિમાપૂજન કી પુષ્ટિ કે લિયે “ નમો વમીએ લિવીએ ” વ્યાખ્યાપ્રજ્ઞસિ કી આદિ મેં લિયે હુવ ડસ સૂત્ર કે વલ પર જો ઉસકે પક્ષપાતી જન યહ કહતે હૈં—“ કિ અક્ષર વિન્યાસરૂપ બ્રાહ્મીલિપિ જિસ પ્રકાર શ્રુતજ્ઞાન કે આકાર કી સ્થાપનારૂપ હોકર વન્ધ્ય-વન્દનીય માની ગઈ હૈ ઉસી પ્રકાર સાકાર સ્થાપનારૂપ ભગવાન કી પ્રતિમા મેં બી વન્દનીયતા સ્પષ્ટ હી હૈ ” સો યહ ક્યન વિચાર કરને પર ઠીક નહીં બૈઠતા હૈ ।

તચાશિ—શ્રુતજ્ઞાનરૂપ ભાવશ્રુત કી સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાનસપન્ન, ઔર શ્રુત કે પઠન કી ક્રિયા વિશિષ્ટ એસે જો સાધુ આદિજન હૈં ઉનકે ચિત્ર આદિ સ્વરૂપ પડતી હૈં અર્થાત્ શ્રુતજ્ઞાની સાધુ આદિ કે ચિત્રસ્વરૂપ હી શ્રુતજ્ઞાનરૂપ ભાવશ્રુતકી સ્થાપના હોતી હૈં । બ્રાહ્મીલિપિ અક્ષર વિન્યાસ હૈં । યહ શ્રુતજ્ઞાન કી સ્થાપના હૈં । યર્હા શ્રુતજ્ઞાની સાધુ આદિ કો જો

અને બીજી પણ કે-પ્રતિમા પૂજનની પુષ્ટિ માટે “ નમો વમીએ-લિવીએ ” વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞસિની ગરૂઆતમા આવેલા આ સૂત્ર સુજ્ઞ બે તેની તરફદારી કરનારા માણુમે આમ કહે છે કે “ અક્ષર વિન્યાસ રૂપ બ્રાહ્મી લિપિ જેમ શ્રુતજ્ઞાનના આકારની સ્થાપના રૂપ થઈને વન્ધ્ય-વન્દનીય માનવામા આવી છે, તેમજ આકાર-સ્થાપના રૂપ ભગવાનની પ્રતિમામા પણ વન્દનીયતા સ્પષ્ટ દેખીતી વાત જ છે પરંતુ આ ક્યનનો પણ વિચાર કર્યા બાદ યોગ્ય લાગતું નથી તેમજ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાન સપન્ન અને શ્રુતના પઠનની ક્રિયા વિશિષ્ટ એવા જે સાધુ વગેરે લોકો છે તેમના ચિત્ર વગેરે સ્વરૂપ હોય છે એટલે કે શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેના સ્વરૂપ જ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના હોય છે બ્રાહ્મી-લિપિ અક્ષર વિન્યાસ છે તે શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના છે અહીં શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેને જે ભાવશ્રુત રૂપ કહેવામા આવ્યો છે તે શ્રુતજ્ઞાન

પરાઃ સર્વદોષનિર્મુક્ત શુદ્ધમદ્વિતીયમનય જૈનધર્મ સાચપૂજાપદેજેન કુપ્રાવચનિ કોપમેય કુર્વન્તઃ સસારદાવાનલે જનન્ પાતયન્તઃ મય ચ મોહનીયકર્મદિયક્ષા દન્ધા ઇય સન્માર્ગતો નિપતન્તઃ સ્યાત્માનમહિતેન મિથ્યાત્વેન ચ પુનઃ પુનઃ સયો જયન્તિ । યદિ મૃગતૃષ્ણાઽપિ કેપાપિત્વ પિપાસાદુલાનાં સ્વચ્છજલધારાદિની ભવેત્, તદા પ્રતિમાપૂજાપિ તેષા દ્રવ્યલિદ્ધિના પરિણામશુદ્ધિ સપાદિની અષ્ટવિ ધર્મદલની નરામરશિવસુખત્રિધાયિની ભવેદિતિ ચો-યમ્ ।

હૈ । અતઃ પ્રતિમાપૂજન કા ઉપદેશ નિશ્ચિત છે કિ પ્રવચનમાર્ગ સે વિરુદ્ધ હૈ । હસ વિરુદ્ધ પ્રરૂપણા કરને મેં તત્પર મનુષ્ય સર્વ દોષોં સે રહિત, શુદ્ધ ઓર અદ્વિતીય એવ અનવચ્ચ હસ જૈનધર્મ કો સાચપૂજા કે ઉપદેશ સે કુપ્રાવચનિક કી તરહ કલકિત-સદોષ કર સસારરૂપી દાવાનલ મેં મોલે માલે પ્રાણિયો કો ઢાલ રહે હૈ ઓર સ્વય મી મોહનીય કર્મ કે ઉદય સે અન્ધ કી તરહ ઘન કર સન્માર્ગ સે ચિમુચ્છ હોતે હુએ અપની આત્મા કો અહિત ઓર મિથ્યાત્વ કે કલક સે કલપિત કર રહે હૈ । અરે-કહીં મૃગતૃષ્ણા સે મી પ્યાસે વ્યક્તિયોં કી પ્યાસ બુદ્ધતી હૈ ? યદિ નહીં, ફિર મૃગતૃષ્ણા તુલ્ય હસ પ્રતિમા પૂજન સે કર્તા કી સમ્યક્ત્વ ઓર હિત કી પ્રાપ્તિ હોને રૂપ પ્યાસ કેસે બુદ્ધ સકતી હૈ-સોચો । હા । યદિ એમા હોતા કિ મૃગતૃષ્ણા સ્વચ્છજલ કી ધારા વહાકર પ્યાસે પ્રાણિયો કી તૃપ્તા કો શાંત કરતી-તો યહ પ્રતિમા પૂજન મી દ્રવ્યલિદ્ધિ યોં કે પરિણામો મેં શુદ્ધિ કરતી હુઈ ઉનકે અષ્ટકર્મોં કો દલને વાલી ઓર ઉન્હેં નર, અમર એવ શિવસુખ પ્રદાન કરને વાલી મી હો સકતી ।

કે પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ પ્રવચન માર્ગથી વિરુદ્ધ છે આ જાતની વિરુદ્ધ પ્રરૂપણા કરવામા તત્પર માણસ બધા દોષોથી રહિત, શુદ્ધ અદ્વિતીય અને અનવચ્ચ આ જૈન ધર્મને આવધ પૂજના ઉપદેશથી કુપ્રાવચનિકની જેમ કલકિત દોષયુક્ત બનાવીને સસાર રૂપી દાવાનલમા લોળા પ્રાણીઓને ન ખી રહ્યો । અને જાતે પણ મોહનીય કર્મના ઉદયથી આધજાની જેમ થઈને સન્માર્ગથી દૂર થતા પોતાના આત્માને અહિત અને મિથ્યાત્વના કલકથી કલુપિત કરી રહ્યો છે મૃગજળથી પણ કોઈ દિવસે તરસ્યા માણસોની તરસ મટી શકી છે ? જો આવું નથી તો પછી મૃગજળ જેવી આ પ્રતિમા પૂજનથી કર્તાની સમ્યક્ત્વ અને હિતની પ્રાપ્તિ થવા રૂપ તરસ કેવી રીતે મટી શકે તેમ છે જોમૃગજળ નિર્ભજ પ્રાણીને અરે થઈને તરસ્યા પ્રાણીઓની તરસ મટાડી શકત તો આ પ્રતિમા પૂજા પણ દ્રવ્યલિગિઓના પરિણામોમા શુદ્ધિ કરનારી તેમના આઠ કર્મોને નષ્ટ કરનારી અને નર, અમર અને શિવ-સુખ આપનારી ?

ચારાદ્વાદિક પ્રતિપૂર્ણરોપ ઋઠોઘ્નિપ્રમુક્ત પઠિતપત સાન્ન્યાદેસ્તદર્થજ્ઞાનાભાવે સતિ દ્રવ્યશ્રુતત્વ મરતિ, તથેચાનુયોગદ્વારે દ્રવ્યશ્રુતસ્ય વર્ણનાત્ । વર્ણસકેતરૂપા લિપિન્તુ ન શબ્દાત્મિકા, યતો વર્ણસ્યેયોચ્ચારણમુપપન્નતે, ન તુ તત્સકેતસ્ય લિપિમત પુસ્તકાદેસ્તુ શ્રુત ચિહ્નિત યાવદ્ વાચનોપગત ન મરિતુમર્દતિ અતસ્તસ્ય દ્રવ્યશ્રુતત્વ ન સમરતિ યય પુનસ્તદ્ગતત્રિપેસ્તત્સમયઃ ? કમપિ નહિ ।

કિં ચ-દ્રવ્યશ્રુતસ્ય વ્યવસ્થાવેગે નાસ્તિ, અનુપયુક્તવાચ્ચરણગુણશૂન્યત્વાન્ચ, તસ્માદ્ ભાવશ્રુતસ્યૈવ વ્યવસ્થાપાત્તી દ્રવ્યશ્રુતનમસ્કારકલ્પન ભ્રાન્તિમૂલકમેવ । 'નમો વમીષ્ણ લિવીષ્ણ' અસ્યાયમર્થ-વર્ણાત્મકમાપાસકેતરૂપા લિપિર્વાત્મીલિપિઃ

પ્રકાર દ્રવ્યશ્રુત કા વર્ણન અનુયોગદ્વાર મેં કિયા ગયા મિલતા હૈ । અકાર આદિ વર્ણરૂપ સે સકેતિત લિપિ મે શબ્દાન્મકના આમી નહી સકતી હૈ-કયો કિ વર્ણ કા હી ઉચ્ચારણ હોતા હૈ-ઉસકે સકેત કા નહી । લિપિયુક્ત પુસ્તકાદિ મેં મી વાચના આદિ કુઝ નહી હોતા હૈ । વયોં કિ વહ જહ હૈ-ચેતન મેં હી યે વાચના પૃચ્છના આદિ હોતે હૈ । અતઃ ઉસ મેં દ્રવ્યશ્રુતતા માનના સર્વથા અયુક્ત હૈ ઇસલિયે વહ નિશ્ચિત હોતા હૈ કિ અકાર આદિ વર્ણરૂપ સે સકેતિત લિપિ મેં ઓર ઇસ લિપિ વિશિષ્ટ પુસ્તકાદિક મેં દ્રવ્યશ્રુતતા કિંચિત માત્ર મી સમવિત નહી હૈ ।

કિંચ-અનુપયુક્ત હોને સે ઓર ચરણગુણ શૂન્ય હોને સે દ્રવ્યશ્રુત મેં ઘટતા આ હી નહી સકતી હૈ । ભાવશ્રુત મેં હી ઉપયોગ સહિત ઓર ચરણગુણ યુક્તતા હોને સે ઘટતા આતી હૈ-અતઃ દ્રવ્યશ્રુત મે નમસ્કાર કરને કી કલ્પના કરના કેવલ ભ્રાન્તિમૂલક હી હૈ "નમો વમીષ્ણ

આ મીને દ્રવ્યશ્રુતત્વ વર્ણન અનુયોગ દ્વારમા કવ્વામા આબ્યુ છે અઢાર વગેરે વર્ણરૂપથી સ કેતિત લિપિમા શબ્દાત્મકતા આતી શકે તેમ નથી કેમકે ઉચ્ચારણ તેા દ્રવ્યતુ જ થાય છે, તેના સ કેતતુ નહિ લિપિ યુક્ત પુસ્તકો વગેરેમા પણ વાચના વગેરે ડર્દ જ હોતુ નથી કેમકે તે જહ છે, ચેતનમા જ વાચના પૃચ્છના વગેરે થાય છે એથી તેમા દ્રવ્યશ્રુતતા માનવી આવ અયોગ્ય છે એથી એ વત ચોદસ થાય છે કે અઢાર વગેરે વર્ણરૂપથી સ કેતિત લિપિમા અને આ લિપિ વિશિષ્ટ પુસ્તક વગેરેમા દ્રવ્યશ્રુતતા યોડી પણ સભવિત નથી અને ધીબ્ધ પણ કે-અનુપયુક્ત હોવાથી અને ચરણગુણ શૂન્ય હોવાથી દ્રવ્યશ્રુતમા ઘટતા આવી જ રાહતી નથી ભાવશ્રુતમા જ ઉપયોગ સહિત અને ચરણગુણ યુક્તતા હોવાથી વદના આવે છે એટલા માટે દ્રવ્યશ્રુતમા નમસ્કાર કરવાની ઉદ્દેશના કરવી આતિમૂલક જ છે "નમો વમીષ્ણ લિવીષ્ણ" આનેા અર્થ

યતુ-અમયદેવીયવૃત્તા સજ્ઞાક્ષરરૂપ દ્રવ્ય શ્રુત નમસ્કાર્વનાઃ-‘ જમો વમીષ લિવીષ ’ ઇત્યુક્ત તદ્ બ્રાન્તિમૂલકમ્ પુસ્તકમર્તિન્યા જનારાદિવર્ણસકેતરૂપાયા લિપેદ્રવ્યશ્રુતત્વ ન સમયતિ યત શ્રુત નામ ઢાદશાગીરૂપમર્હત્પ્રવચન શાસ્ત્ર યસ્ય કસ્યચિજ્જીવસ્ય નિશ્ચિત સ્થિત જિત યાદ્ યાનનોપગત મયતિ ન જન્તુસ્તત્ર વાચનાપચ્છનાદિમિર્વર્તમાનોઽપિ શ્રુતોપયોગાભાસાદાગમમાશ્રિત્ય દ્રવ્યશ્રુતમ્, આ

ભાવશ્રુતરૂપ કહા ગયા છે-વહ શ્રુતજ્ઞાન ઔર શ્રુતવાન મેં અભેદ કે ઉપચાર સે હી કહા ગયા સમજાના ચાહિયે। ડસી ત્પ સે હી મગવાન ને અનુયોગ દ્વાર મેં સ્થોપના આગમ્યક ઔર સ્થાપના શ્રુત કા કથન કિયા હૈ। અતઃ લિપિ મેં ભાવશ્રુત કી રૂપના સે શ્રુતજ્ઞાન કી સ્થાપના માનના કથમપિ યુક્તિ સગત નહીં હૈ। ડસી પ્રકાર લિપિ ને દ્રવ્યશ્રુતતા મી નહીં આતી હૈ। કયો કિ ઢાદશાગીરૂપ અર્હત પ્રવચન કા નામ શ્રુત હૈ। શ્રુતજ્ઞાન કા જ્ઞાના જય ઉસમે અનુપયુક્ત અવસ્થાનવાલા હૈ। તત્ર વહી આગમ કી અપેક્ષા દ્રવ્યશ્રુત કહા જાના હૈ। સજ્ઞા અક્ષર રૂપ આકૃતિ કો દ્રવ્યશ્રુત નહીં કહા હૈ। હમ કથન સે હસ ગત કી પુષ્ટિ હોતી હૈ કિ-અમયદેવ ચિરચિત વૃત્તિ મે “ જમો વમીષ લિવીષ ” હસ પદ કા અર્થ સજ્ઞા અક્ષરરૂપ દ્રવ્યશ્રુત પરક માનકર જો નમસ્કાર કિયા ગયા હૈ -વહ બ્રાન્તિમૂલક હૈ, કયો કિ પુસ્તક મેં રહી હુઈ મકેતિત અકાર આદિ વર્ણ કી આકૃતિ મે દ્રવ્યશ્રુતતા સમ્બવિત નહીં હોતી હૈ। વાચના, પૃચ્છના આદિ સે અધિગત શ્રુત મે અનુપયુક્તજ્ઞાતા હી દ્રવ્યશ્રુત હૈ હસી

અને શ્રુતવાનમા અભેદોપચારથી જ કહેવાયેલા સમજવો જોઈએ આ રૂપધીજ લગવાને અનુયોગદ્વારમા સ્થાપના આવશ્યક અને સ્થાપના શ્રુતનુ કથન કર્યું છે જોટલા માટે લિપિમા લાવશ્રુતની કલ્પનાથી શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના માનવી કોઈ પણ રીતે યોગ્ય નથી આ પ્રમાણે જ લિપિમા દ્રવ્યશ્રુતતા પણ આવતી નથી કેમકે દ્વાદશાગી રૂપ અર્હત પ્રવચનનુ નામ શ્રુત છે આ શ્રુતજ્ઞાનનો જ્ઞાતા જ્યારે તેમા અનુપયુક્ત અવસ્થાવાળો હોય છે ત્યારે તે આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્યશ્રુત કહેવાય છે સજ્ઞા અક્ષર રૂપ આકૃતિને દ્રવ્યશ્રુત કહી નથી આ કથનથી આ વાતની પુષ્ટી થાય છે કે અભયદેવ ચિરચિત વૃત્તિમા “ જમો વમીષ લિવીષ ” આ પાનો અર્થ સજ્ઞા અક્ષર રૂપ દ્રવ્ય શ્રુતપરક માનીને જે નમસ્કાર કરવામા આવ્યા છે તે બ્રાતિમય છે, કેમકે પુસ્તકમા રહેલી સ કેતિત અકાર વગેરે વર્ણની આકૃતિમા દ્રવ્યશ્રુતતા સમ્બવિત નથી હોતી વાચના, પૃચ્છના વગેરેથી અધિગત શ્રુતમા અનુપયુક્ત જ્ઞાતા જ શ્રુત છે

ભાવલિપિં પ્રતિ સમુપજાતભક્તિઃ શ્રીસુધર્મા સ્વામી લિપિજ્ઞાનરય માહાત્મ્ય પ્રકટ-
યન્ ભાવશ્રુત પ્રતિ ભાવલિપે' કારણતયાઽભ્યર્હિતત્વેન તત પૂર્વં ભાવલિપિવન્દન
કૃતવાન્, તત્પશ્યાદ્ ભાવશ્રુત નમસ્કુર્વન્વાદીત્ ' નમઃ સુયસ્મ ' ઇતિ ।

યત્તુ-અભયદેવસરિણા સ્વકૃતટીકાયામુક્તમ્ ' જિણપટ્ટિમાણ અચ્ચળ કરેટ '
તિ એસ્યા વાચનાયામેતાવદેવ દ્રશ્યતે । વાચનાન્તરે તુ-' જ્ઞાયા જાવ સન્વાલ
કારવિભૂસિય મઙ્ગળધરાઓ પટ્ટિનિસ્સમઈ પટ્ટિનિસ્સમિત્તા જેનામેવ જિણવરે
તેણામેવ ઉવાગચ્છટ્ટ ઉવાગચ્છિત્તા જિણવર અણુપવિસઙ્ગ ૨ ત્તા, જિણપટ્ટિમાણ
સમ્મહરૂપ શ્રુત કો લિપિવન્દ કરને કી ઇચ્છા સે શ્રી સુધર્માસ્વામી તિ
જિન કી ભક્તિ શ્રુતયો યક ભાવલિપિ કે પ્રતિ જામૃત હુઈ હૈ લિપિજ્ઞાન
કે માહાત્મ્ય કો પ્રકટ કરતે હુગ ભાવશ્રુત કો નમસ્કાર કરને કે પશ્હિલે
ભાવલિપિ કો હી નમસ્કાર કરતે હે ક્યોં કિ ભાવશ્રુત કે પ્રતિ ભાવ
લિપિ કો હી કારણતા હૈ, ઓર ઇસી નિમિત્ત સે યહ ઉમકી અપેક્ષા
પૂજ્ય માની ગઈ હૈ ભાવલિપિ કો નમસ્કાર કરને કે પશ્ચાત્ હી ઉન્હો ને
" નમ-સુયસ્મ " ભાવશ્રુત કો નમસ્કાર ઇસ સૂત્ર દ્વારા કિયા
હૈ । " જિણપટ્ટિમાણ અચ્ચળ કરેટ " ઇસ પાઠ કો લેકર જો ટીકાંકાર
અભયદેવ સૂરિ ને જિનપ્રતિમા કિ પૂજન કરને કી વાન કહી હે-સો ઠીક
નહી હૈ । ક્યોં કિ માલૂમ હોતા હૈ, કિ ઉન્હેં મૂલ પાઠ કા નિશ્ચય હી
નહી હુઆ હૈ-કારણ કિ એક વાચના મે તો યહી પાઠ મિલ્તા હૈ-તવ
કિ દૂસરી વાચના મેં " જ્ઞાયા જાવ સન્વાલકારવિભૂસિયા મઙ્ગળ
રાઓ પટ્ટિનિસ્સમઈ, ૨ જેનામેવ જિણવરે તેણામેવ ઉવાગચ્છટ્ટ, ૨

પ્રતિપાદન કરનારા શબ્દોના સમૂહરૂપ શ્રુતને લિપિવન્દ કરવાની ઇચ્છાથી શ્રીસુધર્મા
સ્વામી-કે જેમની શ્રુતબોધક ભાવલિપિ પ્રત્યે ભક્તિ ઉત્પન્ન થઇ છે-લિપિ
જ્ઞાનના માહાત્મ્યને પ્રગટ કરતા ભાવશ્રુતને નમસ્કાર કરતા પહેલા ભાવલિપિ
ને જ નમસ્કાર કર્યા છે કેમકે ભાવશ્રુત પ્રત્યે ભાવલિપિ જ કાચ્યુતા છે અને
આ કારણથી જ આ તેના કરતા પૂજ્ય માનવામાં આવી છે ભાવલિપિને નમ
સ્કાર કર્યા બાદ જ તેમણે " નમ સુયસ્મ " આ સૂત્ર વડે ભાવશ્રુતને નમ
સ્કાર કર્યા છે " જિણપટ્ટિમાણ અચ્ચળ કરેટ " આ પાઠના આધારે જે ટીકા-
ગર અભયદેવસૂરિએ જિનપ્રતિમાની પૂજાની વાત કહી છે તે યોગ્ય નથી કેમકે
તેમને મૂળ પાઠને નિશ્ચય જ થયો નથી એમ જણાઇ આવે છે કારણ કે એક
વાચનામાં તો એ જ પાઠ મળે છે ત્યારે બીજી વાચનામાં —

(જ્ઞાયા જાવ સન્વાલકારવિભૂસિયા મઙ્ગળધરાઓ પટ્ટિનિસ્સમઈ ૨ જેના
મેવ જિણવરે તેણામેવ ઉવાગચ્છટ્ટ, ૨ જિણવર અણુપવિસઙ્ગ, જિણપટ્ટિમાણ આલોપ

બ્રાહ્મીશબ્દસ્ય ભાવાર્થકત્વાત્, ઉત્તર ચામરકોષે—‘બ્રાહ્મી તુ ભારતી ભાષા ગીર્વાણ ચાણી સરસ્વતી’ इति । यद्वा-अष्टादशपरकारा लिपि श्रीमन्नाभेयजिनेन ब्राह्मिना मिका स्वमुक्ता पदार्थिता तस्मात् सा लिपिर्ब्राह्मीत्युच्यते । त्रिपिज्ञानस्य श्रुतज्ञानोपयोगितया भावश्रुतहेतु त्रिपिज्ञानरूप भावलिपि रन्द्मान श्रीगुप्तर्मा स्वामी प्राह—‘ नमो वभीए लिपीए ’ उति । श्रुतज्ञान प्रति त्रिपिज्ञान कारण, यतो लिपिज्ञानेन वत्सकेतितशब्दस्मरण, तवस्तदर्थज्ञान जायते । तस्माद् भगवदुक्ता र्थस्य प्रतिबोधनाय तन्बोधकशब्दज्ञातरूप श्रुत लिपिरुद्ध कर्तुं काम’ श्रुतबोधिका

लिपीए ” इसका अर्थ इस प्रकारसे समझना है—अक्षर आदि वर्णात्मक भाषा के सकेतरूप लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि है—ब्राह्मी शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है अक्षर कोष में भी यही पात कही है—“ ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाण चानी सरस्वती ” । अथवा—श्री आदिनाथ प्रभु ने अपनी ब्राह्मी नाम की पुत्री को १८ प्रकार की लिपि कही थी इसलिये भी उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि इस प्रकार से पड़ गया है । श्रुतज्ञान में उपयोगी होने से इस लिपि के ज्ञान को भावश्रुत का कारण माना है । इसलिये लिपि ज्ञानरूप भाव लिपि को बदन करते हुए श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं “ नमो वभीए लिपीए ” । श्रुतज्ञान के प्रति लिपि ज्ञान कारण है—क्यों कि लिपि के ज्ञान से अक्षरादि वर्णात्मक लिपि रूप से सकेतित उस उस शब्द का स्मरण होता है और उससे उसके अर्थ का ज्ञान होता है । अतः भगवान द्वारा प्रतिपादित अर्थ को समझाने के लिये उस अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्दों के

આ પ્રમાણે સુસંગત બેસી શકે છે કે—અક્ષર વગેરે વર્ણાત્મક ભાષાના સ કેત રૂપ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ છે બ્રાહ્મી શબ્દ ‘ ભાષા ’ આ અર્થમાં પ્રયુક્ત થયો છે અક્ષરકોશમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે કે “ બ્રહ્મી તુ ભારતી ભાષા ગીર્વાણાણી સરસ્વતી ” અથવા તેા શ્રી આદિનાથ પ્રભુએ પોતાની બ્રાહ્મી નામની પુત્રીને અઢાર પ્રકારની લિપિઓ બતાવી હતી એટલા માટે પણ આ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ પડી ગયું છે શ્રુતજ્ઞાનમાં ઉપયોગી હોવાથી આ લિપિના જ્ઞાનને ભાવશ્રુતનું કારણ માનવામાં આવ્યું છે એથી લિપિજ્ઞાન રૂપ ભાવલિપિને વદન કરતા શ્રીસુધર્માસ્વામી કહે છે કે “ નમો વ મ્મીએ લિપીએ ” શ્રુતજ્ઞાનના પ્રતિ લિપિજ્ઞાન કારણ છે કેમકે લિપિના જ્ઞાનથી અક્ષર વગેરે વર્ણાત્મક લિપિ રૂપથી સ કેતિત તે શબ્દનું અક્ષર થાય છે અને તેનાથી તેના અર્થનું જ્ઞાન થાય છે એટલા માટે ભગવાનદ્વારા પ્રતિપાદિત અર્થને સમજાવવા

તદનન્તર પુનઃ પ્રતિમાપૂજકૈઃ સ્ત્રીકૃતે-મૂલપાઠે-‘ તિસ્સુત્તો મુદ્ધાણ વરણિ-
યલ્લસિ નમેઢ ’ ઇતિ દ્વયતે, ‘ નમેઢ ’ ઇત્યપ ટીકાકારઃ-‘ નિવેસંઢ ’ ઇતિલિખિત્વા
નિવેશયતીત્યર્થ ઉક્તઃ, તેનાત્ર-મૂલપાઠસ્ય સ્વસ્ત્રકપોલકલ્પિતત્વ સિ-યતિ, ટ્રૌપ-
ધાશ્ચરિતે ટીકાકૃતાઽમયદેવસૂરિણા પુનરીદ્દશઃ પાઠો લઘ્વઃ-

‘ ઈસિં પચ્ચુત્તમતિ ૨ત્તા, કરયલ્લ ૦ જાવ કદ્દુ એવ વયાસી-નમોત્થુ ણ અરિ-
હતાણ મગવતાણ જાવ સપત્તાણ વદ્દઃ નમસઢ ૨ જિણવરાઓ પહિનિસ્સમઢ ’ ઇતિ
ઇમ પાઠ ટીકાયા ત્રિલિરય ટીકાકાર પ્રાઢ-

‘ તત્ર વન્દતે=ચૈત્યવન્દનપ્રિપિના પ્રસિદ્ધેન, નમસ્યતિ=પશ્ચાત્ પ્રણિયાનાદિયોગે-
નેતિ વૃદ્ધા ’ । ન ચ ટ્રૌપધા પ્રણિપાતદ્વંદ્વમાત્ર ચૈત્યવન્દનમિદિદિત સૂત્રે ઇતિ સૂત્ર-

મેં જૈસા પાઠ રુચા હેં ઉમને ઉસી પ્રકાર મ્હલ પાઠ મેં જિન કત્તપના કા
પાઠ પ્રદિસત્ત કરકે પાઠ ભેદ કર દિવા હૈ । અતઃ સ્વકપોલકલ્પિત હોને
સે અસલી મૂલ પાઠ કા નિશ્ચય હી નહીં હોતા હૈ, ટ્રૌપદી કે ચરિત મેં
ટીકાકાર અમયદેવસૂરિ કો ટસ પ્રકાર કો પાઠ ઉપલબ્ધ હુઆ-ઈસિં
પચ્ચુત્તમતિ ૧, કરયલ્લ ૦ જાવ કદ્દુ એવ વયાસી-નમોત્થુ ણ અરિહતાણ
મગવતાણ જાવ સપત્તાણ વદ્દઃ, નમસઢ ૨, જિણવરાઓ પહિનિસ્સમઢ
ઇતિ ” પાઠ વો લિખકર ઉન્હો ને ટીકા કી । વન્દતે-નમસ્યતિ પદ કે
અર્થ કા સુલાશા કરતે હુએ વે કહતે હૈં કિ પ્રમિદ્ધ ચૈત્યવન્દન વિધિ કે
અનુસાર નમન કરના વદના ઓર ઇસકે વાઢ પ્રણિવાન આઠિ કે યોગ
સે નમસ્કાર કરના નમન હે જેસા સિદ્ધાન્ત વૃત્તોં કા હૈ । સૂત્ર મેં જવ
ટ્રૌપદી કા પ્રણિપાત દ્વંદ્વશ માત્ર ચૈત્યવદન કહાં હૈ-અર્થાત્ દ્વંદ્વ કી
તરહ પ્રણામ કરને રપ ચૈત્યવદન કહા ગયા હૈ-તો ઇસી સે યહ

કઈક ઉમેરો ટરીને પાં લેલ ટરી નાખ્યો છે એટલા માટે સ્વપોતાતલિપત
હોવા બદલ અસલ મૂળપાઠનો નિશ્ચય જ થઈ ગયે તેમ નથી ટ્રૌપદી ચરિતમા
ટીકાકાર અમયદેવસૂરિનો આ ભાવનો પાં મળ્યો છે કે-(ઈસિં પચ્ચુત્તમતિ
૨, કરયલ્લ ૦ જાવ કદ્દુ એવ વયાસી-નમોત્થુ ણ અરિહતાણ મગવતાણ જાવ
સપત્તાણ વદ્દઃ, નમસઢ ૨, જિણવરાઓ પહિનિસ્સમઢ ઇતિ) આ પાઠને લખીને
તેમણે ટીકા કરી છે ‘ વન્દતે ’ ‘ નમસ્યતિ ’ પદના અર્થથી સ્પષ્ટીકરણ કરતા
તેઓ કહે છે કે પ્રમિદ્ધ ચૈત્ય વદન વિધિ સુગ્ધ નમન કરવું વદના અને
ત્યારપછી પ્રણિવાન વગેરેના યોગથી નમસ્કાર કરવો નમન છે, વૃદ્ધોનો આ
ભાવનો સિદ્ધાન્ત છે સૂત્રમા બ્યારે પ્રણિપાત દ્વંદ્વ માત્ર ચૈત્યવદન કહ્યું છે
ત્યારે એનાથી જ આ વાત સિદ્ધ થઈ બાક છે કે બીજા ત્રાવકોને પણ આ

આલોણ પગામ કરેઈ ૨ જા, લોમહત્યય પરામુસઃ ૨ જા, ૧૧ જહા સુરિયામો જિણપહિમાઓ અન્હેઈ તહેવ માણિયવ જાઝ ધૂવ હહઈ ' તિ । તેન મૂળપાઠસ્ય નિશયસ્તસ્ય નામૂઠિતિ ટિહાયતે ।

અતઃ પર ચ- ' વામ જાણુ અગેઈ દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ જિવેસેઈ ૨ ' ઇતિ પ્રતિમાપૂજકે સ્વીકૃતો મૂળપાઠસ્તઃ વર્તતે, ટીકાકારસ્તુ- ' દાહિણ જાણુ ધરણીતલસિ નિહદ્દુ ' ઇતિ પાઠ ટીકાયા ટિલિન્ય નિગદતિ- ' નિહદ્દુ ' નિહત્ય સ્થાપતિન્નેત્યર્થઃ, ' જિવેસેઈ ' ઇત્યગ- ' નિહદ્દુ ' ઇતિ પાઠભેદઃ ક્રતઃ । તેના પ્યેતદ્ વિદિત ધરતિ-યસ્ય યાદશ મનમ્યમિરુચિત સ તાદગમિદ મૂળપાઠ પ્રલપયતિ સ્મ ઇતિ ।

જિણધર અણુપવિસઠ જિણપહિમાણ આલોણ પગામ કરેઈ, ૨ લોમહત્યય પરામુસઠ, ૨ ૧૧ જહાસુરિયામો જિણપહિમાઓ અન્હેઈ તહેવ માણિયવ જાઝ ધૂવ હહઈ " તિ યહ પાઠ મિલતા હૈ ।

इसके बाद " वाम जाणु धरणीतलसि जिबेसेई २ " ऐसा पाठ मिलता है-और यही पाठ प्रतिमा पूजको को समत है । परन्तु टीकाकार श्री अभयचरि ने " दाहिण जाणु धरणीतलसी निहदु " ऐसा पाठ टीकामें रखकर ' निहदु ' इस पद की टीका " स्थापना करके " ऐसी की है । इस प्रकार " जिबेसेई " की जगह ' निहदु ' ऐसा पाठ भेद किया गया है । इसी प्रकार प्रतिमा पूजको द्वारा स्वीकृत " तिस्रुत्तो मुद्राणं धरणीतलसि नमेइ " इस मूल पाठ में भी परिवर्तन " नमेइ " किया पद में " निवेशयति " इस रूप से कर दिया है । इससे यह बात निश्चित होती है कि जिस के मन

પગામ કરેઈ, ૨ લોમહત્યય પરામુસઠ, ૨ ૧૧ જહા સુરિયામો જિણપહિમાઓ અન્હેઈ તહેવ માણિયવ જાઝ ધૂવ હહઈ) તિ,

આ પાઠ મળે છે ત્યારપછી " વામ જાણુ ધરણિયલસિ જિવેસેઈ ૨ " આ જાતનો પાઠ મળે છે અને એ જ પાઠ પ્રતિમા પૂજના તરફદારીએને માટે સમત રૂપ છે પણ ટીકાકારશ્રી અભયચરિએ " દાહિણ જાણુ ધરણીતલસી નિહદ્દુ " આ જાતનો પાઠ ટીકામાં કહીને " નિહદ્દુ ", આ પદની ટીકા-સ્થાપના કરીને આ પ્રમાણે કહી છે આ રીતે " જિવેસેઈ " ના અર્થને " નિહદ્દુ " આ જાતનો પાઠ ભેદ કરવામાં આવ્યો છે આ રીતે જ પ્રતિમા પૂજના તરફદારીએ વડે સ્વીકૃત (તિસ્રુત્તો મુદ્રાણ ધરણીતલસિ નમેઈ) આ મૂળપાઠમાં પણ " નમેઈ " ક્રિયાપદમાં " નિવેશયતિ " આ જાતનું પદિ વર્તન કરી નાખ્યું છે આથી આ વાતની ખાતરી થાય કે જેના મનમાં જેવો પાઠ ગમ્યો તેણે તે પ્રમાણે જ કાવે તેમ પોતાની કલ્પના પાઠમાં

નાનિ વિધિનિપેક્ષાધકાનિ ભવન્તિ અન્યથા સૂર્યાદેવાદિવક્તવ્યતાયા પૂર્ણાં શસ્ત્રાદિયસ્તૂનામર્ચન શૂરતે ઇતિ તદપિ વિવેચ સ્યાત્ ’ ।

અત્રેદ મો યમ્—‘ ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદ્વંડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે’ ઇત્યાદિ વાક્યસન્દર્ભેણ ટીકાકારેણાભયદેવસૂરિણા દ્રૌપદ્યા વન્દનમેવ કૃત ન તુ પૂજનાદિકમિતિ પ્રોધયતા તાવાનેન પાઠઃ સ્વીકૃત ઇતિ । તરમાદ્ વિધિરૂપણ પ્રતિ માપૂજનાય ભગવતોઽર્હત આજ્ઞા ન લભ્યતે ઇતિ વાદસ્તાપદાસ્તામ્, ચરિતાનુવાદ-રૂપેણાપિ શાસ્ત્રે ભગવતોઽર્હતપ્રતિમાપૂજન કાપિ નોક્તમિતિ સિદ્ધમ્ । એવ ચાયમે-

હૈ ચરિતાનુવાદરૂપ વાક્ય મેં વિધિ ઓર નિપેધ વોધકતા સભવિત નહીં હોતી હૈ ઇસી વ્યેય સે “ ન ચ ચરિતાનુવાદવચનનિ વિધિનિપેધ સાધકાનિ ભવન્તિ ” એમા માના જાતા હૈ નહીં તો ફિર, સૂર્યાભદેવ દ્વારા જિસ પ્રકાર વહુત શસ્ત્ર આદિ વસ્તુઓં કા પૂજન કરના સુના જાતા હૈ ડસી પ્રકાર પ્રતિમા પૂજકોં કે લિયે મી ડનકા પૂજન વિવેચ માન લેના ચાહિયે ।

માવાર્થ—“ ન ચ દ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદ્વંડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે ” ઇત્યાદિ વાક્ય કે દ્વારા ટીકાકાર અભયસૂરિ ને ડતના હી પાઠ સ્વીકૃત કિયા હૈ કિ દ્રૌપદી ને મિર્ફ વદના હી કી હૈ, પ્રતિમાપૂજન નહીં ઇસલિયે ઇમસે ઘટ વાત સિદ્ધ હો જાતી હૈ જય ચરિતાનુવાદ રૂપ સે મી શાસ્ત્ર મેં કહી મી ભગવાન ને અર્હત કી પ્રતિમા કા પૂજન નહીં કહા હૈ । તવ વિધિરૂપ સે પ્રતિમા પૂજન કે લિયે ભગવાન અર્હત કી આજ્ઞા હૈ એસી માન્યતા કોરી કલ્પનામાત્ર હી હૈ । ઇસ પ્રકાર સ્થાનક-

કાંઈ પણ સ્થાને ડહી નથી ચરિતાનુવાદ રૂપ વાક્યના વિધિ અને નિપેધ બોધકતા સભવિત થતી નથી આ વ્યેયથી (ન ચ ચરિતાનુવાદવચનનિ વિધિ નિપેધસાધકાનિ ભવન્તિ) એમ માનવામા આવે છે નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ વડે જેમ ઘણા શસ્ત્રો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સભવાય છે તેમજ પ્રતિમા પૂજકોના માટે પણ એમની પૂજા વિધેય રૂપમા માની લેવી જોઈએ

ભાવાર્થ—“ ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદ્વંડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે ” વગેરે વાક્ય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠોના જ સ્વીકાર કર્યો છે કે દ્રૌપદીએ કૃત વદના જ કરી છે પ્રતિમા પૂજા નહિ એથી આ વાત સ્પષ્ટ રીતે મિદ્ધ થઈ જાય છે કે બીજારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પણ શાસ્ત્રમા કોઈ પણ સ્થાને ભગવાને અર્હતની પ્રતિમાના પૂજન વિષે કહ્યું નથી ત્યારે વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા કૃત કે માત્ર જ છે આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સપ્રદાયની આ માન્યતા

પ્રમાણ્યાદન્યસ્યાપિ શ્રાવણાદેસ્તાવદન તદિતિ મન્તવ્ય, ચરિતાનુવાદરૂપત્વાદસ્ય,
 इति । न चैत्यस्य मन्तव्यमित्यत्रान्ययः । द्रौपदी मणिपातदण्डरुमात्र-दण्डरूपम
 ममात्ररूप चैत्यरन्दन-प्रतिमा-रन्दन कृतवतीत्यर्थं पुद्गलाऽन्योपि श्रावक एतत्सूत्र
 प्रमाणमाश्रित्य तावदेव तत् मणिपातदण्डरुमात्र रन्दन कुर्यादिति न मन्तव्यम्,
 तत्र कारणमाह ' चरितानुवाटरूपत्वादस्य ' इति । अम्य एतत्सूत्रस्य चरितानु
 वाटरूपत्वात् ज्ञातप्रदर्शकतया यथावृत्तस्य तत्त्ववसितस्यानुवाटरूपत्वात्, न तु
 भगवता ' जय चरे जय चिद्ध ' इत्यादिनात् कचिदात्र प्रदत्ता ।

तस्मादस्य विधिनिषेधोपपत्त्य न समवतीत्याह- ' न च चरितानुવાटरव

વાત મી સિદ્ધ હો જાતી છે કિ અન્ય શ્રાવકોં કો મી इसी प्रकार
 वन्दन नमन करना चाहिये-सो इस प्रकार का कथन ठीक नहीं
 है । कारण कि यह चरितानुवाद रूप है ।

ભાવાર્થ-કોઈ અન્ય શ્રાવક જન એસા સમજીને કિ સૂત્રમે જય દ્રૌપદી
 ने दण्डकी तरह होकर चैत्यवन्दन किया है तो हमी सूत्रकी प्रमाणता लेकर
 हमें भी इसी तरहसे प्रणाम करना चाहिये सो इस प्रकार की मान्यता
 उनकी ठीक नहीं है कारण कि यह चरित का ही अनुवादक है । चरितका
 अनुवादक वाक्य विधेयरूप से मान्य नहीं होता है । यह सूत्र चरित का
 अनुवादक रूप है-इसका यह भाव है कि यह वाक्य ज्ञात अर्थ का
 प्रदर्शक होने से पहिले जो जो बातें २ जिस २ रूपमें हो चुकी हैं उन
 सब का अनुवादक रूप है । " जय चरे जय चिद्धे " इत्यादि सूत्र की
 तरह यह विधि वाक्य नहीं है । इसीलिये भगवान ने प्रतिमा के पूजन
 और वदना, नमन करने आदि की आज्ञा कही भी सूत्र में नहीं दी

પ્રમાણે જ વદન નમન કરવા બોધ્યો તો આ બાતનુ કથન યોગ્ય નથી, કેમકે
 આ ચરિતાનુવાદ રૂપ છે

ભાવાર્થ-ગમે તે શ્રાવક આમ સમજીને કે સૂત્રમા જય દ્રૌપદીએ
 दण्डकारे धधने चैत्य वन्दन कर्तुं छे तो आ सूत्रने ज प्रमाण स्वश्य भानीने
 અમારે પણ આ પ્રમાણે જ પ્રણામ કરવા બોધ્યો તો તેમની આ વાત પણ
 ઠીક ઝઢી શકાય તેમ નથી, કેમકે આ ચરિતનો જ અનુવાદક છે ચરિતનું
 અનુવાદક વાક્ય વિધેય રૂપમા માન્ય હોતું નથી આ સૂત્ર ચરિતનો અનુ
 વાદક રૂપ છે આનો ભાવ એ છે કે આ વાક્ય જ્ઞાત અર્થનો પ્રદર્શક
 હોવાથી જે જે વાતો જે રૂપમા થઈ ચૂકી છે તે બધાનું અનુવાદક રૂપ છે-
 ' જય ચરે જય ચિદ્ધે ' ઇત્યાદિ સૂત્રની જેમ આ વિધિવાકર

નાનિ વિધિનિપેધસાધકાનિ ભવન્તિ જન્યથા સૂર્યાદિવાદિવક્તવ્યતાયા વહુના શસ્ત્રાદિવસ્તુનામર્ચન શ્રૂયતે ઇતિ તદપિ ત્રિવેય સ્યાત્' ।

અત્રેદ મો યમ્—' ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે' ઇત્યાદિ વાચ્યસન્દર્ભેણ ટીકાકારેણાભયદેવસૂરિણા દ્રૌપદ્યા વદનમેવ કૃત ન તુ પૂજનાદિકમિતિ મોધયતા તાવાનેય પાઠઃ સ્વીકૃત ઇતિ । તસ્માદ્ વિધિરૂપણ પ્રતિ માપૂજનાય ભગવતોર્હત આજ્ઞા ન લભ્યતે ઇતિ વાદસ્તામદાસ્તામ્, ચરિતાનુવાદ-રૂપેણાપિ શાસ્ત્રે ભગવતોર્હતપ્રતિમાપૂજન ક્વાપિ નોક્તમિતિ સિદ્ધમ્ । એવ ચાયમે-
 હૈ ચરિતાનુવાદરૂપ વાચ્ય મેં વિધિ ઓર નિપેધ વોધકતા સમ્ભવિત નહીં હોતી હૈ ઇસી વ્યેય સે " ન ચ ચરિતાનુવાદવચનાનિ વિધિનિપેધ-સાધકાનિ ભવન્તિ " એમા માના જાતા હૈ નહીં તો ફિર, સૂર્યાભદેવ દ્વારા જિસ પ્રકાર વહુત શસ્ત્ર આદિ વસ્તુઓં કા પૂજન કરના સુના જાતા હૈ ડસી પ્રકાર પ્રતિમા પૂજકોં કે લિયે મી ડનકા પૂજન વિધેય માન લેના ચાહિયે ।

માવાચ્ય—" ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે " ઇત્યાદિ વાચ્ય કે દ્વારા ટીકાકાર અભયસૂરિ ને ડતના હી પાઠ સ્વીકૃત કિયા હૈ કિ દ્રૌપદી ને સિર્ફ વદના હી કી હૈ, પતિમાપૂજન નહીં ઇસલિયે ઇમસે યહ વાત સિદ્ધ હો જાતી હૈ જય ચરિતાનુવાદ રૂપ સે મી શાસ્ત્ર મેં કહો મી ભગવાન ને અર્હત કી પ્રતિમા કા પૂજન નહીં કહા હૈ । તવ વિધિરૂપ સે પ્રતિમા પૂજન કે લિયે ભગવાન અર્હત કી આજ્ઞા હૈ એમી માન્યતા કોરી કલ્પનામાત્ર હી હૈ । ઇસ પ્રકાર સ્થાનક-

કા.૫ પશુ ચ્યાને ડગી નથી ચરિતાનુવાદ રૂપ વાચ્યના વિધિ અને નિપેધ વોધ તા સભવિત થતી નથી આ વ્યેયથી (ન ચ ચરિતાનુવાદવચનાનિ વિધિ-નિપેધસાધકાનિ ભવન્તિ) એમ માનવામા આવે છે નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ વડે જેમ ઘણા ગણો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સભળાય છે તેમજ પ્રતિમા પૂજકોના માટે પશુ એમની પૂજા વિધેય રૂપમા માની લેવી જોઈએ

ભાવાચ્ય—" ન ચ દ્રૌપદ્યા પ્રણિપાતદણ્ડકમાત્ર ચૈત્યવદનમભિહિત સૂત્રે " વગેરે વાચ્ય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠનો જ સ્વીકાર કર્યો છે કે દ્રૌપદીએ ફક્ત વદના જ કરી છે પ્રતિમા પૂજા નહિ એથી આ વાત સ્પષ્ટ રીતે મિદ્ધ થઈ જાય છે કે બ્યારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પશુ શાસ્ત્રમા કોઈ પશુ ચ્યાને ભગવાને અર્હતની પ્રતિમાના પૂજન વિધે કહ્યું નથી ત્યારે વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા ફક્ત કેપના માત્ર જ છે આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સમ્રદાયની આ માન્યતા

તદ્વૃષ' સ્થાનકયાસિના મિદ્ધાન્તઃ શાસ્ત્રાનુકૂલઃ સત્ય ઇતિ નિર્ણયતામ્ । અર્હત્ત્વં
નમપિ દ્રૌપદા ન કૃતમિત્યગ્રે સપ્રમાણ નિરુપગિવ્યામ' ।

કિં ચ-પ્રતિમાપૂજનાના પ્રમાણભૂતે મહાનિશીથમૂત્રેઽપિ 'પ્રતિમાપૂજાયાઃ
સામગ્રતયા તદર્થં જિનાલયપ્રધાન નામગ્ર મયનોતિ મત્વા દ્રવ્યલિંગિમિઃ પૃષ્ટેન
કુવલયપ્રભનામ્નાઽનગરેણ નિગમ્નિત નામગ્રમિદ્ર નાદ નાદમાત્રેણાપિ કુર્વે' ઇતિ ।
તદેવમનેન મળતાસતા તીર્થસ્નામગોત્ર કર્મનિર્ણયમ્ । ઇત્યમગ્રાપીકૃતશ્ચ
મયોદધિઃ । તતસ્તૈઃ સંચરેકમત કૃત્યા તસ્ય નામગ્રાચાર્ય ઇતિ નામ વત્ત પ્રસિ
દ્ધિનીત ચ । ઇતિ પ્રતિજોધિતમ્ ।

વાસી સપ્રદાય કી યદ માન્યતા નિર્દોષ યદ શાસ્ત્રાનુકૂલ ઓર સત્ય હૈ
કિ અર્હત કી પ્રતિમા વનારૂર પૂજના ગાત્ર જિનમાર્ગ સે ત્રિપરીત માર્ગ
હૈ । અર્હત કી પ્રતિમા કી વન્દના મી દ્રૌપદી ને નહી કી હૈ ઇસ વાત
કો મી હમ આગે પ્રમાણ દેરૂર પુષ્ટ કરેંગે ।

કિન્ચ-પ્રતિમાપૂજકો દ્વારા પ્રમાણરૂપ સે સ્વીકૃત મહાનિશીથ સૂત્ર
મેં મી યરી સમજાયા ગયા હૈ કિ પ્રતિમાપૂજન સ્વયં યદ સાવચકર્મ હૈ,
ઉસકે નિમિત્ત જનાલય આદિ વનવાના મી સાવચકર્મ હ । એસા સમ
જ્ઞકર-કુવલયપ્રભનામક આચાર્ય ને દ્રવ્ય લિંગિયોં દ્વારા પૂઠે જાને પર
યહી ઉત્તર દિયા હૈ કિ યે સ્વયં સાવચકર્મ હૈ, મેં અપને વચનો સે મી
ઇસ વિષય કા જરા મી મહન નહીં કર સકના હૈ' ઇસ પ્રકાર કહને
વાલે ઉન કુવલયપ્રભનામક આચાર્યને તીર્થકર નામ ગોત્ર કર્મ ઉપાર્જન
કરકે ઇકમવાવતારી બને । સાવચકર્મ નિષેધ કરને વાલે હોને સે

નિર્દોષ તેમજ શાસ્ત્રાનુકૂલ અને સત્ય છે કે અર્હતની પ્રતિમા બનાવીને પૂજવી
શાસ્ત્રવિહિત માર્ગથી ઉલટો માર્ગ છે અર્હતની પ્રતિમાની વદના પણ દ્રૌપ
દીએ કરી નથી, આ વાતને પણ અમે આગળ સપ્રમાણસિદ્ધ કરવા પ્રયત્ન કરીશું
અને બીજી પણ કે-પ્રતિમા પૂજકો વડે પ્રમાણ રૂપે સ્વીકૃત મહાનિશીથ
સૂત્રમા પણ એ જ વાત સમજાવવામા આવી છે કે પ્રતિમા પૂજન બંતે એક
સાવધ કર્મ છે તેના નિમિત્તે જનાલય વગેરે બનાવવા તે પણ સાવધ કર્મ છે
એમ બીજીને જ કુવલયપ્રભ નામના આચાર્યે દ્રવ્યલિંગિયો વડે પૂછાએલા
પ્રશ્નના ઉત્તરમા આ પ્રમાણે જ કહ્યું છે કે આ બધું સાવચકર્મ છે હું મારા
વચનોથી પણ આ વિષયનું જરાય પણ મહન કરી શકું તેમ નથી આ રીતે
કહેનાર તે કુવલયપ્રભ નામક આચાર્યે તીર્થ કર નામ ગોત્રકર્મ ઉપાર્જન કરીને
એક લવાવતારી બન્યા સાવચકર્મ નિષેધ કરનાર હોવાથી તે એ

भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कथयति—‘अस्या ऋषभादिचतुर्विंशतिशयाः प्राक् अतीतकालेन याऽतीता चतुर्विंशतिका, तरया मत्सदृश सप्तद्वस्त-तनुर्धर्मशीलामा चरमतीर्थङ्करो यभून् तस्मिन् तीर्थङ्करो सप्ताश्वर्याणि अभूवन् । असयतपूजाया प्रवृत्तायामनेके श्राद्धेभ्यो दृहीतद्रव्येण स्वस्वकारितचैत्यनिवासि नोऽभून्, तत्रैको मरुततन्त्रिः कुलप्रभनामाऽनगारो महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यगणपरिवृतः समागतः, तैर्नन्दितोक्तम्, तदेव तत्त्वप्रकरणं प्रदर्श्यते, तथा हि—महानिशीथमत्रे पञ्चमाययने—

जहा ण भयम् । जह तुमहिहा एगवानारत्तिय चाउम्पात्तिय पउजियताण-मिन्त्राण अणेगे चेइयालया भवति नूनं तज्ज्ञाणणीए ता कीरउ अणुगहमम्भाण

उन चैत्यवासियो ने मिहफर उनका नाम ‘सावधाचार्य’ रख दिया, और प्रसिद्ध भी कर दिया । जैसे-भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कहते हैं-इस ऋषभादि चौबीसी के पहले भूतकालमें जो चौबीसी होगई है उस चौबीसीमें मेरे जैसा सात हाथप्रमाण शरीर वाला धर्म श्री नामका अतिम तीर्थंकर हो गया है, उस तीर्थंकर के समयमें सात आश्चर्य हुए थे, उनमें “असयतपूजा” नामका एक आश्चर्य था । उस असयतपूजाकी प्रवृत्ति होनेपर बहुतसे साधु श्रावकों के पैसों से अपने अपने बनवाये हुए चैत्योंमें निवास करते थे अर्थात् चैत्यवासी हो गये थे, वहा पर एक उग्रम कांतिवाले कुवलयप्रभ नाम के मुनि महानपस्वी उग्रविहारी शिष्यपरिवार सहित पगरे थे, उनको उन चैत्यवासियो ने बदना कर के जो कहा सो इस प्रकार है । जिस पाठ का वह कथानक है वह पाठ इस प्रकार है-

तेमनु नाम “सावधाचार्य” ओ प्रभावे शम्भु अने प्रसिद्ध पणु उरु जेमठे लगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतमने उडे ठे ठे-आ ऋषभादि चौबीसीना पड़ेला भूतकालमा जे चौबीसी थई गछ छे ते चौबीसीमा भारा जेवा सात हाथ प्रभाणु शरीरवाणा धर्मश्री नामना छेत्ता तीर्थंकर थई गया ठे ते तीर्थंकरना समयमा मात आश्चर्यो थया छत्ता, तेमा “असयतपूजा” नामनु ओउ आश्चर्य छत्तु ते असयत पूजणी प्रवृत्ति थई तयारे अनेक साधु-श्रावकेना पैसाथी पोतपोताना भाटे अनावरावेला चैत्येमा वास करता छत्ता अर्थात् चैत्यवासी थछ गया छत्ता त्या ओउ ग्राम वलुवाणा कुवलयप्रभ नामना मुनिमहागुरु छे जेओ महा तपस्वी, उग्र विहारी छत्ता, तेओ पोताना शिष्य परिवार सहित त्या पधार्या छत्ता तेमने ते चैत्यवासीजाओ बदना करीने जे उछु ते आ प्रभावे छे—

इहेव चाउम्मासिय । ताहे भणिय तेण महाणुभागेण - गोयमा ! जहा भो भो पियवण ! जइ वि जिणालए तहा वि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण पि आयरिज्जा । एव च समयसारपर तत्त जहट्टिय अविपरीत णीसक भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिगीण साट्टवेसधारीण मज्जे गोयमा ! आसकलिय तित्थयर नामरम्मगोय तेण कुवलयप्पमेण, एगमवावसेसीकओ भवोयही ॥ इति ।

छाया-यथा खलु भगवन् ! यदि त्वमिहापि एकवर्षात्रिक चानुर्मासिक प्रयो
गणामिच्छया अनेके चैत्यालया भवन्ति नून । तद्ध्यानात्पन्ना तस्मान् करोतु
अनुग्रहमस्मास्म 'इह चातुर्मासिस्म' । उदा भणित तेन महानुभागेण - गौतम !
यथा भो भो पियवदा ! यद्यपि जिनालय , तद्यपि सावधमिदं नाह दाहमात्रे
णापि आचरामि । एव च समयसारपर तत्त यथास्थितम् अविपरीत निश्च
भणता तेषा मिच्छादिट्ठिलिङ्गिना साट्टवेसधारीणा मध्ये गौतम ! आसकलिय तीर्थ
करनामरुगमोत्र तेन कुवलयप्पमेण एगमवावसेसीकृतो भवोदधि' ॥ इति

“जहा ण भयव ? जइ तुममिहाइ एकवर्षासारत्तिय चाउम्मा
सिय पडजियताणमिच्छाए अणेगे चेइयालया भवति नून तज्झाण
णत्तीण, ता कीरउ अणुग्गहम्महाण इहेव चाउम्मासिय । ताहे भणिय
तेण महाणुभागेण गोयमा ! जहा भो भो पियवण जइवि जिणालए
तहा वि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण पि आयरिज्जा । एव च
समयसारपर तत्त जहट्टिय अविपरीत णीसक भणमाणेण तेसिं मिच्छदि
ट्ठिलिगीण साट्टवेसधारीण मज्जे गोयमा ! आसकलिय तित्थयरनाम
गोत्त तेण कुवलयप्पमेण एगमवावसेसीकओ भवोयही । इति (महा
निशीथ पञ्चम अध्ययन) इस सूत्रका भावार्थ इस प्रकार है-

हे भगवन् ! आप यहा एक वर्षात्रिक चारमहिने ठहरे

“जहा ण भयव ! जइ तुममिहाइ एकवर्षासारत्तिय चाउम्मासिय पड
जियताण मिच्छाए, अणेगे चेइयालया भवति नून तज्झाणत्तिए ता कीरउ
अणुग्गहम्महाण इहेव चाउम्मासिय । ताहे भणिय तेण महाणुभागेण गोयमा ।
जहा भो भो पियवण जइवि जिणालए तहावि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण
पि आयरिज्जा । एव च समयसारपर तत्त जहट्टिय अविपरीत णीसक
भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिगीण साट्टवेसधारीण मज्जे गोयमा ! आसकलिय
तित्थयरनामगोत्त तेण कुवलयप्पमेण एगमवावसेसीकओ भवोयही । इति
(महानिशीथ पञ्चम अध्ययन) आ सूत्रेणो भावार्थ आ प्रभाते छे - - - ।

હેમગન્ ! ઝહ યદિ યથા સલુ ત્વમ્ ઇન્દ્રપારાત્રિક ચાતુર્માસિક તિષ્ઠસિ
પ્રયોક્તૃણામ્=પ્રવર્તકાનામ્ રૂપ્યા-આજ્ઞયા અનેકે ચૈત્યાલયા નૂન ભવન્તિ=મનિ-
પ્યન્તિ, તત્ તન્માદ્ નિવાસાર્થમાજ્ઞામુપાદાય રૂઢેઽ ચાતુર્માસિક કુરુ તાવદસ્માક
મનુગ્રહ કુરુ મનુગ્રહાજ્ઞયા વહ્યચૈત્યાલયા મનિપ્યન્તિ। તતશ્ચાસ્માકમુપકારઃ ક્રિય-
તામિતિ ભાવ' । તદા તેષા સામગ્રવૃજાયા પ્રવૃત્તાના દ્રવ્યલિંગિના વચન શ્રુત્યા તેન
મહાનુભાવેન કુવલયપ્રમનામ્નાડનગારેણ મળિતમ્=ઉક્તમ્, યથા-મો મો પ્રિય
વદા । મો દેવાનુપ્રિયા' । યદ્યપિ જિનાલય, તથાપિ સાવધમિદ્ જિનમ્ભવને કૃતે

-અર્થાત્ યહી પર ચૌમાસા વ્યતીત કરે । પ્રવર્તનોં કી આજ્ઞા સે
યહાં પર અનેક ચૈત્યાલય ગન જાયેગે । ડસ લિયે આપ યહી પર
ચૌમાસા વ્યતીત કરને કા અનુગ્રહ કરેં । હમારે ઉપર આપકા વહા
હી અનુગ્રહ હોગા । આપકે ઉપદેશ સે નિશ્ચય સમઝિયે અનેક
ચૈત્યાલયોં કા નિર્માણ હો જાયગા । રૂન પ્રકાર સે ડન દ્રવ્યલિંગિયો
સે પ્રાર્થિત હોને પર મહાનુભાવ કુવલયપ્રમ આચાર્ય ને રૂઠા કિ હે દેવા
નુપ્રિય । યદ્યપિ તુમ જિનાલય કે વિષય મે કહતે હો-પરન્તુ-મેં રૂસ
કાર્ય કો ડરવાને મેં શ્રેય નહી દેખતા હું-કારણ કિ યહ સાવધકાર્ય
હે જિન મ્ભવન વનવાના ઓર ડસકે વનવાને કી પ્રેરણા કરના રૂન
ડોનોં પ્રકાર કી પ્રવૃત્તિયોં મેં પૃથિરીકાય આદિ છહ પ્રકારકે જીવોં કી
વિરાધના હોતી હે રૂસી પ્રકાર સે પૂજન કરને મેં મી પદ્કાય કે જીવ
નિકાર્યોં કા આરમ્ભ અવઙ્મયમાવી હે । રૂસલિયે અનેક પ્રકાર કે પદ્-
કાય કે જીવોં કે વિગ્રાત કા હેતુ જાને સે પૂજન કે નિમિત્ત મી જિન
મ્ભવન કા વનવાના સાવધનર કાર્ય હે રૂસે સાવધનર કાર્ય કા મેં કિમ્તી
મી પ્રકારસે ઉપદેશ નહી દૂગા । મેં કમી મીરૂસા ઉપદેશ નહી દૂગા કિ

તમે અહીં એન્દ્રપારાત્રિક-આર માસ-રોક્ષાઓ-એટલે કે અહીં તમે ચોમાસુ પુર
કરો પ્રવર્તકોની અસાધી અહીં ઘણા ચૈત્યાલયો બની જશે એથી તમે અહીં જ
ચોમાસુ પુર કરવાની કૃપા કરો, અમારા ઉપર તમારો ભાર અનુગ્રહ થશે
તમારા ઉપદેશથી અમને ચોક્કસ ખાતરી છે કે ઘણા ચૈત્યાલયોનું નિર્માણ થઈ
જશે આ રીતે દ્રવ્ય લિંગિઓની પ્રાર્થના સાભળીને મહાનુભાવ કુવલયપ્રભ
આચાર્ય ષ્ઠુ કે હે દેવાનુપ્રિય । જો કે તમે જીનાલયના વિષે ડહો છો, પણ
મને આ ડામ કનાવવામા શ્રેય લાગતુ નથી, કેમકે આ સાવધકર્મ છે જીન
ભવન બનાવવુ અને તેને બનાવવાની પ્રેરણા આપવી આ બને જાતની પ્રવૃ
ત્તિઓમા પૃથિરિકાય વગેરે છ જાતના જીવોની વિરાધના થાય છે આ રીતે
પૂજા કરવામા પણ પદ્કાયના જીવનિકાર્યોનો આરભ અવશ્યભાવી છે એટલા
માટે ઘણી જાતના પદ્કાયના જીવોના વિધાતના માટે હેતુરૂપ હોવા બદલ
પૂજના માટે પણ જીનમ્ભવન બનાવવુ સાવધનર કાર્ય છે એવા સાવધનર કાર્ય

કારિતે ચ પૃથિવીકાયાપિપ્પજીરનિકાયસિગ્ધના, નૈવ જિન્વજાયાગપિ તસ્માન્
 પૂજાર્થસ્ત્રાપ્તિનભયનિધાન સારથતર, વત્તરપટ્ટમાયતીયોપયાતદેતુન્નાત્ નાહ
 વાહ્માત્રેણાપિ ઉપદેશદાનરૂપેણ સામ્યોગમાત્રેણાપિ આચારમિત્તે ચિનાગ્ચ ર્તુ
 મુપદેશ ન કરિष્યામીત્યર્થઃ । અથ ચ=એને ન પકારેણ, સમયમારપર શાતસિદ્ધાન્ત
 સારાડશેષશ્રેઠ તત્ત્વત્રિકરણત્રિયોગ પ્રાણાતિપાતો વર્જનીય સ્ત્યાપિત્ય યથાસ્થિત
 યથાવસ્થિતસ્વરૂપ પ્રમાણભૂત, અતિપરીત=ત્રિવર્ચકાનાત્રિયમ, તિશ્નઃ=સત્યવર્જિત
 વચન મળતા=સ્વયંતા, તેષા મિત્યાદિપિન્દિના મિત્યાદિપિન્દિના કૃતીર્થિત્તમ્ભવજી
 યોપયાતકાગ્નિસાધુપેયારિણા=મધ્યે હે ગૌતમ ! આગ્નિલિતમ્=સન્યક્ સદૃ
 હીતમ્ ઉપાર્જિતમિત્યર્થ । સ્મિપાર્જિતમિત્યાહ-તીર્થકરનામગોત્ર નેન કુલવ્યવ
 મેણ, એકમવાચ્યેપી કૃતો મયોદધિ' । સુગમમેતત્ ।

જિસ મેં જિનાલય બનવાને જા વિચાર લે । હસ પ્રકાર પ્રવચન સિદ્ધા
 ન્ત કી સારભૂત વસ્તુસ્થિતિ કો યથાર્થ રૂપ સે વિજ્ઞા કિસી સકોચ કે
 પ્રકટ કરને વાલે ઉન યુનિરાજ ને ઉન સાધુપેય ધારી દ્રવ્યલિંગિયોં કે
 ઘીચ કિ જો મિત્યાદિષ્ટિયો કી તરહ જીવોં કી હિસા કરને મે પ્રવૃત્ત
 થે ઉનકે સામને હસ પ્રકાર શુદ્ધ પ્રરૂપણા કારનેસે હે ગૌતમ ! તીર્થકર
 નામ ગોત્ર કર્મ કા વધ કિયા-ઔર સસાર મી ઉનકા ઇક ભવ માત્ર
 ઘાકી રહ ગયા હસ ઉદ્ધરણ સે ચલી મમજના ચાહિયે-કિ જવ પ્રતિમા
 પૂજન કે લિયે મી મદિર બનવાના સાવધ કર્મ હૈ ઔર હસ સાવધકાર્ય
 કા ઉપદેશ દેના મી સાધુ કે લિયે વર્જનીય હૈ-હસી અભિપ્રાય સે
 કુલવ્યવસ્થા સ્થિર ને હસ કાર્ય કો નિષેધ કિયા-હસ નિષેધ સે ઉન્હે
 તીર્થકર નામ-ગોત્ર કર્મ કો વધ હુઆ ઔર સસાર મી ઉનકા ઇકભવ
 માત્ર બાકી વચા-તો ફિર સર્વ પ્રકાર સે સાવધ કર્મો કા પરિત્યાગ

માટે હુ કોઈ પણ રીતે ઉપદેશ આપવા તૈયાર નથી, હુ આ જાનને ઉપદેશ
 કોઈપણ વખતે આપવા તૈયાર નથી કે જેમા જીનાયત બતાવવાનું વિધાન
 સરખું હોય આ રીતે પ્રવચન સિદ્ધાન્તની સારભૂત વસ્તુસ્થિતિને માથા રૂપમા
 વગર કોઈ પણ જાતના સ કેચે-પ્રગટ કરનારા તે યુનિરાજે તે સાધુ વેષધારી
 દ્રવ્ય લિંગિજોની સામે કે જેઓ મિત્યાદિષ્ટિવાળાઓની જેમ જોની હિંમ
 કરવામા પ્રવૃત્ત હતા-શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરી આ જીને ગુરુ પ્રરૂપણા કરવાથી હે
 ગૌતમ ! તીર્થકર નામ-ગોત્રકર્મનો વધ કર્યો અને ન સાર પણ એક ભવ
 જેટલો જ શેષ રહ્યો આ ઉદ્ધારણથી આપણે જોજ વાત મમજવી જેઇએ કે
 જ્યારે પ્રતિમા પૂજન માટે પણ મદિર બનાવવું સાવધ કર્મ છે અને આ
 સાવધકાર્યનો ઉપદેશ કરવો પણ સાધુના માટે જાન્ય છે આ હેતુથી જ
 કુલવ્યવસ્થા સ્થિર અને કાર્યનો નિષેધ કર્યો છે આ નિષેધથી તે

અર્થે પ્રોધ્યમ્-યન પ્રતિમાપૂજાર્થ ક્રિયામાપસ્ય જિનાલ્પસ્ય પાત્રોપદેશઋણ સામ્યગિતિ જાનતા તત્પરિવર્જને કૃતે તીર્થકર નામગોત્ર કર્મ મધુપાર્જિત, તત્ત્વ સર્વથા માવધમાર્ગ પરિવર્જયતા સર્વપ્રાણિરક્ષણાર્થમર્દિસામ્ય સર્વતઃ પ્રચારયતા પ્રવચન-સિદ્ધાન્તસાર વિજાનતાં સયમમાર્ગે પ્રવૃત્તિમતા સમ્યક્ત્વશુદ્ધિમતા પ્રતિ-માપૂજામકુર્વતા તન્નિપેયયતા મિ નામાત્મનઃ કલ્યાણકર કાર્યમગ્નિષ્ટમ્. ઇતિ ।

અથ વિચારસમયે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વાતી નાસોદિતિ ધર્મ્યતે-જૈનાગમાના વિદ્વાસ = સમ્યગ્નિદ વદન્તિ-સનિદાનમ્ય જીવસ્ય નિદાનફલપ્રાપ્તિર્ધાવન ભવતિ, તાવદસી સમ્યક્ત્વરશ્ચિતો જૈનવર્માદૂ દૂર દુઃખાવતિષ્ઠતે ।

કરને વાળે, સમસ્ત પ્રાણિયો કો રક્ષા કે નિમિત્ત અહિંસાધર્મ કા પ્રચાર કરને વાળે, પ્રવચન સિદ્ધાન્ત કે સાર કો જાનને વાળે, સયમમાર્ગ મે પ્રવૃત્તિ વાળે, સમ્યક્ત્વ કી શુદ્ધિ સે વિગ્રિષ્ટ ઓર પ્રતિમા કી પૂજા નહી કરને વાળે જ્ય ઉસકા નિપેય કરને વાળે યેસે સયમિયોં કા અથ ઓર કૌનસા યેસા કાર્ય નાકી રહા હૈ જો ઉનકી આત્મા કે લિયે કલ્યાણ કા સાધન ન હો ।

અથ યહા ફક્ત વાન કા વર્ણન કિયા જાતા હૈ કિ વિચાર કે સમય દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વવાલી નહી થી ।

જૈન આગમોં કા ખલીખાંતિ પરિશીલન કરને વાળે વિદ્વાન ઇસ વાતકો અચ્છી તરફ જાતે હૈ કિ જિમ જીવ ને જો નિદાન કિયા હૈ-જવતક ઉસકે ફલ કી પ્રાપ્તિ ઉમ જીવ કો નહી હો જાતી-તવતક વહ જીવ સમ્યક્ત્વ સે વચિત રાત્કર જિનવર્મ સે દૂર હી રહતા હૈ ।

નામ-ગોત્ર ધર્મનો ખવ વયો અને મસાર પશુ તેમને માટે એકલવ બેટ લોજ શેપ રહો હતો તે પછી સર્વ જીવે સાવધકર્મનો પરિત્યાગ કરનાજ બધા પ્રાણીઓની રક્ષાના નિમિત્તે અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરનારા પ્રવચન સિદ્ધાન્તના પારને જાણનાજ, સયમ માગમા પ્રવૃત્તિ કરનારા, સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિથી વિશિષ્ટ અને પ્રતિમા પૂજા નહિ કરનારા અને તેને નિપેદ્ય કરનારા એવા સયમીઓનું એવું યજુ કામ શેપ રહ્યું છે કે જે તેમના આત્માના કલ્યાણનું સાધનરૂપ ન હોય ?

હવે અહીં આ વાતનું વર્ણન કરવામા આવે છે કે લક્ષના વખતે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વવાળી ન હતી

જૈન આગમોનું સારી રીતે પરિશીલન કરનારા વિદ્વાનો આ વાતને માની પેઠે બાપુ છે કે જે જીવે જે નિદાન યજુ છે-બધા સુધી તેના રણની પ્રાપ્તિ તે જીવને થઈ જતી નથી ત્યા સુધી તે જીવ સમ્યક્ત્વથી વચિત રહીને જીવ ધર્મથી દૂર રહે છે

“ पुत्रकयनियामेण चोद्भज्यमाणी २ जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ते पच पडवे तेण दसद्वयणेण कुसुमदामेण आवेदियपरिवेदिय करेइ, करित्ता, एव वयासी-एएण मए पच पडवा वरिया । ’ इति सूत्रपाठ प्रामाण्याद् विवाहसमये पूर्ववृत्तिनिदानाधीनतया सम्यक्त्वरहित्य द्रौपद्या आसीत् अतस्तस्यास्तदानीं श्राविकात् न सिध्यति युगपत् पञ्चाना पतीना वरणेन तस्योः पूर्वसंस्कारोदयशब्दाद् विपुलसुखभोगलालसाऽपि स्वाभाविकी, अतः सा कौमारे वयसि श्राविका नासीदिति युक्तिसिद्धस्यार्थस्यापलापः केन शक्यते कर्तुम् ।
द्रौपदी तस्य पूजन कृतवतीति जिज्ञासाया निर्णयते—

“ पुत्रकयनियामेण चोद्भज्यमाणी २ जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता ते पच पडवे तेण दसद्वयणेण कुसुमदामेण आवेदिय परिवेदिय करेइ । करित्ता एव वयासी-एएण मए पंच पडवा वरिया ” इस प्रकार के इस प्रमाणिक सूत्र पाठ से यह स्पष्टरीति से विदित हो जाता है कि विवाह के समय पूर्ववृत्त निदान के अधीन होने से द्रौपदी सम्यक्त्व रहित थी इसी लिये उस समय उस में श्राविकापना भी सिद्ध नहीं होता है । तथा एक ही साथ पात्र पांडवों को पतिरूप से वरण करने से उसके पूर्व संस्कार के उदय से विपुल सुख भोगने की लालसा भी स्वाभाविकी ज्ञात होती है इसलिये वह कुमार अवस्था में श्राविका नहीं थी इस युक्ति सिद्ध अर्थ का अपलाप कौन कर सकता है ।

द्रौपदी ने किस की पूजा की इस प्रकार की जिज्ञासा होने पर

“ पुत्रकयनियामेण चोद्भज्यमाणी २ जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता, ते पच पडवे तेण दसद्वयणेण कुसुमदामेण आवेदियपरिवेदिय करेइ । करित्ता एव वयासी-एएण मए पच पडवा वरिया ”

आ ज्ञातना आ प्राभाषिक सूत्रपाठ्यी आ २५८ इयमा भाद्रुम अर्थ ज्ञाय छे के लक्षणा वणते पूर्ववृत्त निदानने स्वाधीन होवाने कारणे द्रौपदी सम्यक्त्व रहित छती अटवा भाटे ते समये तेमा श्राविकापणु सिद्ध अर्थ शके तेम नथी तेमज ओकी साथे पावे पांडवाने पतिरूपमा वरण करवाथी तेना पूर्व संस्कारोना उदयथी विपुल सुख भोगववानी छच्छा पणु स्वाभाविकी भाद्रुम साथ छे ओथी ते कुमार अवस्थाभा श्राविका छती नछि आ युक्ति अर्थनो परिहार कोणु करी शके तेम छे

द्रौपदीअ केनी पूजा करी ? आ ज्ञातनी अज्ञानने साथे

અલ્પાંશૌભાગ્યપ્રચુરભોગમામનયા કામદેવસ્યૈવ પૂજન તદાનીમુપપદ્યતે ।
કામપૂજન વિવાદોત્સરે વિસ્તરતો મળતીતિ લોકે પ્રસિદ્ધમસ્તીતિ પ્રતિમાપૂજનોડપિ
શ્રી વર્ધમાનમૂરિ' પ્રોક્તવાન । સ્પષ્ટ ચૈતત્ તદ્વિચિતે આચારદિનકરે દ્વિતીય-
વિભાગે--“ પરમમયે ગણપતિકર્ન્દર્પસ્થાપનમ્ । ગણપતિકર્ન્દર્પસ્થાપન સુગમ
લોકપ્રસિદ્ધમ્ । ” इति ।

ટીકાકાર નિર્ણય કરતે હે-

અલ્પાંશૌભાગ્ય એવ પ્રચુર ભોગ કો ઇચ્છા સે કામદેવ કા હી
પૂજન ઉમ સમય દ્રૌપદી ને કિયા હૈ-યહી વાત સગત થૈઠતી હૈ । લોક
મેં भी यही व्यवहार देखा जाता है कि विवाह के समय अच्छी तरह
गाजे बाजे के साथ कામ દેવકા પૂજન લોગ કિયા કરતે હૈ । ઇસ વાત
કો વર્ધમાન મૂરિ भी जो प्रतिमापूजन के पक्षपाती हैं स्वीकार करते
हैं और ऐसा ही कहते हैं । इमी बात का स्पष्टीकरण उन्होंने ने स्वनि-
र्मित आचारदिनकर के द्वितीय विभाग में किया है-वे लिखते हैं कि-
—“ परममये गणपतिकर्दपस्थापनम् । गणपतिकर्दपस्थापन सुगम
लोकप्रसिद्धम् ” इति ।

લૌકિક શાસ્ત્રમેં ગણપતિ એવ કર્દર્પ (કામદેવ) કી સ્થાપના હોતી
હૈ અતઃ ગણપતિ ઓર કર્ન્દર્પકા સ્થાપન કરના સુગમ ઓર લોકપ્રસિદ્ધ હૈ ।

કાર નિર્ણય કરતા કહે છે કે—

અખંડ શૌભાગ્ય તેમજ પ્રચુર ભોગની ઇચ્છાથી જ તે મમયે દ્રૌપદીએ
કામદેવનું જ પૂજન કર્યું છે, આ વાત જ થોડાં લોકોમાં પણ આ
ભતનો જ વહેવાર જોવામાં આવે છે કે લગ્નના વખતે વાત જોની સાથે સારી
રીતે કામદેવનું પૂજન લોગે કરતા રહે છે આ વાતને વર્ધમાનમૂરિ પણ કે
તેઓ પ્રતિમા પૂજનના તરફદાર છે-સ્વીકાર કરે છે અને આ પ્રમાણે જ કહે
છે આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ તેમણે સ્વનિર્મિત આચાર દિનકરના બીજા વિભા
ગમાં કર્યું છે તેઓ લખે છે કે—

“ પરમમયે ગણપતિકર્દર્પસ્થાપનમ્ । ગણપતિકર્દર્પસ્થાપન સુગમ લોક
પ્રસિદ્ધમ્ ” इति ।

લૌકિક શાસ્ત્રમાં ગણપતિ અને કર્દર્પ (કામદેવ) ની સ્થાપના થાય છે તેથી
ગણપતિ કર્દર્પની સ્થાપના કરવી તેજ સુગમ અને લોકપ્રસિદ્ધ છે

“ જિનપટિમાણ અન્નચણ કરેહ ” એવ જિનશબ્દ સામદેયપર : જિનશબ્દસ્ય
ચદ્વોઽર્થા. કોશાદૌ પ્રસિદ્ધા. સન્તિ । યથા—

અર્હન્નપિ જિનઐવ, જિન સામાન્યકેવલી ।

કદ્વપોઽપિ જિનઐવ, જિનો નારાયણો હરિઃ ॥ ૬૩૮ (૬૩મી નામમાળા)

વિજયગચ્છીયઃ શ્રીગુણસાગરસૂરિરપિ ઢાલસાગરનામકે કાવ્યે વષ્ટવષ્ટે
દ્રૌપદ્યા પૂજ્યદેવ નિર્ણયવાન્ । ઉક્ત ચ તેન—

કરિ પૂજા કામદેવીની ખાલે દુવડી નાર ।

દેવ ! દયા કરી મુશ્કને મલો દેવો મરતાર ॥ ૧ ॥

અર્હન્ સકલર્મ કપાયમોહપરીપાન્ ચરતીતિ જિન ઉચ્ચતે । સામાન્ય

“ જિનપટિમાણ અન્નચણ કરેહ ” હવ સૂત્ર મેં જિન શબ્દ જિતેન્દ્ર
મગવાન કા ચાચક નહીં હે, કિન્તુ કામદેવ કા ચાચક હે ત્યોં કિ જિન
શબ્દ કે અનેક અર્થ કોષાદિક ગ્રન્થોં મેં પ્રસિદ્ધ થયા—

અર્હન્નપિ જિનઐવ જિન સામાન્યકેવલી ।

કદ્વપોઽપિ જિનઐવ જિનો નારાયણો હરિઃ ॥

હતિ (૬૩મી નામમાળા)

વિજય ગચ્છીય શ્રી ગુણસાગર સૂરિ ને શ્રી “ ઢાલસાગર ” નામ
કે કાવ્ય મેં ડઠવેં સહ મેં દ્રૌપદી કે આરાધ્ય દેવ કા નિર્ણય કિયા
હૈ । ડન્હોંને લિખા હૈ—

કરિ પૂજા કામદેવ ની ખાલે દુવડી નાર ।

દેવ ! દયા કરી મુશ્કને મલો દેવો મરતાર ॥ ૧ ॥

હવ સૂત્ર મેં અર્હન્ત મગવાન કો ‘ જિન ’ હવડિયે કહા ગયા હૈ

“ જિનપટિમાણ અન્નચણ કરેહ ”

આ સૂત્રમા એન શબ્દ એન્દ્ર લગવાનને વાચક નથી પણ કામદેવને
વાચક છે કેમકે એન શબ્દના ઘણા અર્થો ગોષ વગેરે ગ્રન્થોમા પ્રસિદ્ધ છે એમકે—

અર્હન્નપિ જિનઐવ જિન સામાન્યકેવલી ।

કદ્વપોઽપિ જિનઐવ જિનો નારાયણો હરી ॥ ૬૩૮ (૬૩મી નામમાળા)

વિજયગચ્છીય શ્રી ગુણસાગરસૂરિએ પણ ‘ ઢાલસાગર ’ નામના કાવ્યના
છઠ્ઠા અંકમા દ્રૌપદીના આરાધ્યદેવને નિર્ણય કરતા તેમણે કહ્યું છે કે—

કરિ પૂજા કામદેવની ખાલે દુવડિનર ।

દેવ ! દયા કરી મુશ્કને મલો દેવો મરતાર ॥ ૧ ॥

આ સૂત્રમા અર્હન્ત લગવાનને ‘ એન ’ એટલા માટે કે તેમણે

કેવલી પ્રવચાતકર્મ્યનુષ્ટય જયતીતિ જિન ઉચ્યતે । વિણ્ણુઃ સ્વમુજવલેન સ્વઙ્ક-
ત્રય જયતીતિ જિન ઉચ્યતે । જિનશબ્દસ્ય નામદેવોઽર્થશ્ચાપિ મગતઃ, યત' સસા
રિણા કામદેવશરિતિ-ત્રેન લોકજગત્કારિત્વાઙ્ગિનત્વ કામસ્યોપપદ્યતે । રૂપરહિત
મ્યાપિ સિદ્ધમ્ય પ્રતિમા પૂજાન્નેન શાન્નાનુક્તામપિ પ્રતિમાપૂજકાઃ પ્રકલ્પયન્તિ,
તદ્વદનસ્વાપિ કામસ્વ લોકિશાન્દ્રમિદ્ધ તદ્વચાનમનુસૂત્ય પ્રતિમા પ્રસ્લ્પત ઇતિ

કિ ઉર્હા ને સ્મનમ્ન કપાય, કર્મ, મોટ ઓર પરીપહોં જો જીતા હૈ ।
સામાન્ય કેવલી 'જિન' ઉસલિયે કહે ગયે હૈં કિ ઉર્હોં ને ચાર ઘનચો
નિચા કસો જો અપની આત્મા સે સમ્મલ નષ્ટ કર દિયા હૈ । વિણ્ણુ
'જિન' ઉસલિયે કરલાયે જિ ઉર્હોં ને અપને કુચરત સે મરતરલક
કે છત્ત લહોં મે સે ત્રીન સ્વોં જો અપને વશ ક્રિયા હૈ રૂની લિયે યે
અર્દ્ધચક્રી મો કહલાતે હૈ । કામદેવ જો 'જિન' ઉસ લિયે કરા ગયા હૈ
કિ ઉસકે વશ સમગત ત્રિલોક હૈ ત્રિલોક મેં કોઈ મો પ્રાણી જેમા નહોં
વચા કિ જિસે ઇસ ને અપને વશ મે ન ક્રિયા રો ।

જાના—દ્રૌપદી ને કામદેવ કી મૂર્તિ કી પૂજા કી-આપ કી વહ
વાત ઉસ સમય માની જા સકની-જય કિ કામદેવ કી મૂર્તિ વન
સકતી હોતી ? પરન્તુ કામદેવ કી મૂર્તિ તો વન નહીં સકની ક્યોં કિ
વહ તો અમૂર્તિક-અશરીર-અગ્નિ હૈ । અગવાલે જી ની મૂર્તિ વનતી
હૈ-અનગ કી નહીં ।

ખવા વ્ધાય કર્મ, મોહ અને પરિવેશને છુટ્યા છે સામાન્ય ડેવલી "જન"
એટલા માટે ડોવામા આવ્યા છે કે તેમણે ચાર ધનપતિઓના ડોને પોતાના
આત્માથી મમળ નષ્ટ કરી નાખ્યા છે વિષ્ણુ 'જન' એટલા માટે ડોવાય
છે કે તેમણે પોતાના કુચર ગળથી લગતખડના છ ખડોમાથી જણ ખડોને
પોતાને વશ કર્યા છે એથી તેઓ અર્દ્ધચક્રી પણ ડોવાય છે કામદેવને 'જન'
એટલા માટે કહેવામા આવ્યો છે કે તેના વશમા ત્રો લોકો છે ત્રણે લોકોમા
એણે ગોડ પ્રાણી રહ્યું નથી કે જેને કામદેવે પોતાના વશમા ક્યું ન હોય

શકા—દ્રૌપદીએ કામદેવની મૂર્તિની પૂજા કરી તે તમારી આ વાત ત્યારેજ
ચોગ્ય ઠી શકાય કે જ્યારે કામદેવની મૂર્તિ બની રાહતી હોય ? પણ કામદેવની
મૂર્તિ તો તૈયાર થઈ શકે તેમ નથી કેમકે તે તો અમૂર્તિક-અશરીર અનગ
કે અગવાળાની જ મૂર્તિ બને છે, અનગની નહિ

नास्त्यय सशय । लक्ष्मीगौर्यादिदेव्या अपि स्वामीष्टपतिप्राप्तियामनया पूजन लोके प्रसिद्धमस्ति । लौकिकमन्त्रद्वारा मन्त्ररत्नमण्डपया कामदेवाराधनस्याभीष्टपतिराभहेतुत्वं निगदितम्—

“ कन्यामिष्टामवाप्नोति, सापीष्ट पतिमाप्नुयात् ॥ ” इति ।

अधुनाऽपि परिणयनमयमे कुलदेवपूजन लोके क्रियमाणं दृश्यते । कामदेवोऽपि

उत्तर—यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि मूर्ति प्रजक जन अनङ्ग-सिद्धों की भी तो मूर्ति बनाकर उसकी पूजा क्रिया करते हैं । यद्यपि सिद्धों की मूर्ति बनाने की आज्ञा शास्त्रों में नहीं मिली गई है—तौ भी मूर्तिप्रजक जन अपनी कल्पना से उनकी भी मूर्ति बनाकर पूजा करते ही हैं—

उसी प्रकार लौकिकशास्त्र प्रसिद्ध अनङ्ग कामदेव की भी लोग अपनी कल्पनासुर मूर्ति बनाकर पूजते हैं । इस में आपत्ति की कौनसी बात है ।

लक्ष्मी, गौरी आदि देवियों की भी पूजा लोक में अपने को अभि-लषिन पनि प्राप्ति की कामना से स्त्रियों द्वारा की ही जाती है । लौकिक मन्त्र शास्त्र में मन्त्ररत्नमण्डप में कामदेव का आराधन—“ कन्यामिष्टा मवाप्नोति सापीष्ट पतिमाप्नुयात् ” इस श्लोकार्थद्वारा उचिउत पति प्राप्ति का कारण कहा गया है ।

वर्तमान समय में भी देखो ! विवाह के समय में लोक में कुल देवता का पूजन क्रिया ही जाता है यह कुल देवता का पूजन ही एक

उत्तर—आ बात योग्य नहीं, कामदेव मूर्ति पूजा करना ही लोग अनङ्ग सिद्धोंनी मूर्ति बनावीने तेनी पूजा करता रहे छे जे के शास्त्रोभा सिद्धोनी मूर्ति बनाववानी आज्ञा करवामा आवी नहीं छताथ मूर्ति पूजक लोक पोतानी कल्पनाथी तेमनी पण मूर्ति बनावीने पूजा करे छे तेमज लौकिक शास्त्र प्रसिद्ध अनङ्ग कामदेवनी पण लोक पोतानी कल्पना सुजण मूर्ति बनावीने तेने पूजे छे, आमा बाधा जेवी केध बात नहीं

लक्ष्मी, गौरी वगैरे देवीओनी पूजा लोकभा पोतानी छेज सुजण पति भेजववानी कामनाथी ओओ वडे करवामा आवे छे लौकिक मत्र शास्त्रभा मत्र रत्न मण्डपभा कामदेवतु आराधन “ कन्यामिष्टामवाप्नोति सापीष्ट पति माप्नुयात् ” आ अर्द्धश्लोक वडे धर्मित प्रतिप्राप्तिनु जरण अताववामा आब्यु छे

वर्तमान समयभा पण आपणे जेधओ तो लगना समये लोकभा कुण देवतानु पूजन करवामा आवे छे आ कुणदेवतानु पूजन ॥ २१८

रागवता गृहस्थानां कुलदेवत्वेन व्याख्यायमाण आसीत् । द्रौपद्याऽपि स्वकुलदेवः पूजित इति युक्तमुत्पश्यामः ।

अत्र—“ नमोऽस्त्यु ण अरिहताण ” इति पाठस्तु प्रवचनविमूढ एव वर्तते, लौकिककुलदेवप्रतिमाऽर्चनप्रकरणे लोकोत्तरस्य भगवतोऽर्हतः प्रमत्ताभावात् । पूर्वभक्तनिदानवत्या कामभोगानुरक्त्या द्रौपद्या नामदेवार्चनसमये कामभोगविरतस्य वीतरागमार्गोपदेशकस्य वीतरागस्य भगवतोऽर्हतो वचनं नैव शास्त्रानुकूलम् । अत्र परिणयासरे कुलदेवपूजनप्रसंगे भगवतोऽर्हतः प्रसङ्गएव नास्ति,

तरह से कामदेव का पूजन अनुसरण है । एक समय या कि जब कामदेव ही, रागशाली गृहस्थ जनो के लिये कुल देवता के रूप से वैवाहिक व्यवहार में मान्य होता था । द्रौपदीने भी उस समय जो कुल देवता का पूजन किया—वह कामदेव का ही पूजन किया यही युक्ति मगन बैठती है । इस पूजन के प्रकरण में जो “ नमोऽस्त्यु ण अरिहताण ” यह पाठ आता है वह प्रवचन विमूढ ही है क्योंकि लौकिककुलदेवता की प्रतिमा के अर्चन-प्रकरण में लोकोत्तर अर्हत भगवान के प्रकरण का संध ही क्या है । उस समय जब कि वह पूर्व भक्त में किये गये निदान से युक्त थी—और कामभोग में अनुरक्त हृदयवाली थी उस के लिये कामदेवका अर्चन(पूजन) करनेका समय ही स्पष्टरूपसे ज्ञात होता है कामभोगों से विरत वीतराग मार्ग के उपदेशक वीतरागप्रभु अर्हत भगवान की पूजन वचना का नहीं । यही सिद्धान्त शास्त्रानुकूल है—अन्य नहीं । अरे कहीं

कामदेवना पूजननु अनुसरणु छे ओक वणत ओवे। हतो के न्यारे कामदेव, रागशाली गृहस्थ लोकाने भाटे दुग देवताना रुपभा लक्ष-संख्ये व्यवहारभा मान्य गणाते। हतो। द्रौपदीओ पणु ते सभये के कुण देवतानु पूजन कथुं ते कामदेवनु न पूजन कथुं हतु ओ न वात जरोणर लागे छे आ पूजनना प्रकरणुभा के “ नमोऽस्त्यु ण अरिहताण ” आ पाठ आवे छे ते प्रवचन विमूढ न छे केभके लौकिक कुणदेवतानी प्रतिमाना अर्चन-प्रकरणुभा लोकोत्तर अर्हत भगवानना प्रकरणुभा संख न शी रीते योग्य कही शक्य ते वणते के न्यारे ते पूर्व लवभा कदेवा निदानथी युक्त हती अने कामभोगभा अनु रक्त हृदयवाणी हती ओवी न्यतिभा तो तेना भाटे कामदेवनी अर्चना कर वाने। वणत न स्पष्ट रुपे नखाव आवे छे कामभोगाथी विरत वीतराग मार्गना उपदेशक वीतराग प्रभु अर्हत भगवाननी पूजा वचना भाटे ते वणत योग्य कही शक्य नहि आ सिद्धांत न शास्त्रानुकूल छे नीको नहि युद्धभां

નાસ્ત્યન સશય । લક્ષ્મીગૌર્યાદિદેવ્યા અપિ સ્વામીષ્ઠપતિપ્રાપ્તિમામનયા પૂજન
લોકે પ્રસિદ્ધમસ્તિ । લૌકિકમન્ત્રશાસ્ત્રે મન્ત્રરત્નમઝજપાયા કામદેવાગધનસ્યામી
પ્રત્યપતિશામદેહુત્તર નિગદિતમ્—

“ કન્યામિષ્ટામવાપ્નોતિ, સામીષ્ઠ પતિમાપ્નુયાત્ ॥ ” ઇતિ ।

અનુનાડપિ પરિણયનમયે કુલદેવપૂજન લોકે ક્રિયામાપ દશ્યતે । કામદેવોડપિ

ઉત્તર—યદ કહના ટીક નથી છે ત્યો કિ મૂર્તિ પૂજક જન અનન્ન-
સિદ્ધોં કી ખી તો મૂર્તિ ઘનાકર ડરાકી પૂજા ક્રિયા કરતે હ । ત્યપિ
સિદ્ધોં કી મૂર્તિ ઘનાને કી આજ્ઞા જાજ્ઞોં મેં ન હી ગઈ હૈ-તો ખી
મૂર્તિપૂજક જન અપની કલ્પના સે ડનકો ખી મૂર્તિ ઘનાકર પૂજા
કરતે હી હૈ—

ડસી પ્રકાર લૌકિકશાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ અનન્ન કામદેવ કી ખી લોગ અપની
ફરનાસુર મૂર્તિ ઘનાકર પૂજતે હ । ડસ મેં આપ્તિ કી કૌનસી વાત હૈ ।

લક્ષ્મી, ગૌરી આદિ દેવિયોં કી ખી પૂજા લોક મેં અપને કો અભિ-
લ્પિત પતિ પ્રાપ્તિ કી કામના સે સ્ત્રિયોં ઢારા કી રી જાની હૈ । લૌકિક
મન્ત્ર શાસ્ત્ર મેં મન્ત્રરત્નમઝૂપા મેં કામદેવ કા આરાધન—“ કન્યામિષ્ટા
મવાપ્નોતિ સામીષ્ઠ પતિમાપ્નુયાત્ ’ ઇમ શ્લોકાર્થઢારા ઇન્દિઢિત પતિ પ્રાપ્તિ
કા કારણ કહા ગયા હૈ ।

વર્તમાન સમય મેં ખી દેખો ! ત્રિવાહ કે સમય મેં લોક મેં કુલ
દેવતા કા પૂજન ક્રિયા હી જાતા હૈ યદ કુલ દેવતા કા પૂજન હી ઇક

ઉત્તર—આ વાત યોગ્ય નથી, કેમકે મૂર્તિ પૂજા કરનારા લોકો અનગ
સિદ્ધોની મૂર્તિ યનાવીને તેની પૂજા કરતા રહે છે જે કે શાસ્ત્રોમા બિઢ્ધોની
મૂર્તિ યનાવવાની આજ્ઞા કરવામા આવી નથી છતાય મૂર્તિ પૂજક લોકો પોતાની
કલ્પનાથી તેમની પણ મૂર્તિ યનાવીને પૂજા કરે જ છે તેમજ લૌકિક શાસ્ત્ર
પ્રસિદ્ધ અનગ કામદેવની પણ લોકો પોતાની કલ્પના મુજબ મૂર્તિ યનાવીને
તેને પૂજે છે, આમા વાધા જેવી કોઈ વાત નથી

લક્ષ્મી, ગૌરી વગેરે દેવીઓની પૂજા લોકમા પોતાની ઇચ્છા મુજબ પતિ
મેળવવાની કામનાથી સ્ત્રીઓ વડે કરવામા આવે જ છે લૌકિક મત્ર શાસ્ત્રમા
મત્ર રત્ન મઝૂપામા કામદેવનુ આરાધન “ કન્યામિષ્ટામવાપ્નોતિ સામીષ્ઠ પતિ
માપ્નુયાત્ ” આ અર્ધશ્લોક વડે ઇન્દિઢિત પ્રતિપ્રાપ્તિનુ કારણ યતાવવામા આવ્યુ છે

વર્તમાન સમયમા પણ આપણે જોઈએ તો લક્ષ્મી સમયે લોકમા કુળ
દેવતાનુ પૂજન કરવામા આવે જ છે આ કુળદેવતાનુ પૂજન રીતે

ભગવતા ગૃહસ્થાના કુલદેવત્વેન વ્યાખ્યાનમાણ આસીત્ । દ્રૌપદ્યાઽપિ સ્વકુલદેવઃ પૂજિત ઇતિ યુક્તમુત્પશ્યામઃ ।

અત્ર—“ નમોઽયુગ્મં અરિહતાણ ” ઇતિ પાઠસ્તુ પ્રવચનચિન્દ્ર એવ વર્તેતે, લૌકિકકુલદેવપ્રતિમાઽર્ચનપ્રકરણે લોકોત્તરસ્ય ભગવતોઽર્હત* પ્રમજ્ઞાભાવાત્ । પૂર્વભવકૃતનિદાનવત્યા નામભોગાનુરક્ત્યા દ્રૌપદ્યા નામદેવાર્ચનસમયે નામભોગ-ચિરતસ્ય વીતરાગમાર્ગોપદેશકસ્ય વીતરાગસ્ય ભગવતોઽર્હતો વદન નૈવ શાસ્ત્રાનુ-કૂલ્મ્ । અત્ર પરિણયાપસરે કુલદેવપૂજનપ્રસન્દે ભગવતોઽર્હત પ્રસન્નપ્રવ નાસ્તિ,

તરહ સે નામદેવ ના પૂજન અનુસરણ હૈ । ઇક સમય યા કિ જવ કામ-દેવ હી, રાગશાલી ગૃહસ્થ જનો કે લિયે કુલ દેવતા કે રૂપ સે વૈવાહિક વ્યવહાર મેં માન્ય હોતા યા । દ્રૌપદીને મી ઉમ સમય જો કુલ દેવતા કા પૂજન કિયા-વહ કામદેવ કા હી પૂજન કિયા યહી યુક્તિ મગન પૈઠતી હૈ । હસ પૂજન કે પ્રકરણ મેં જો “ નમોઽયુગ્મ અરિહતાણ ” યહ પાઠ આતા હૈ વહ પ્રવચન ચિન્દ્ર હી હે સ્થો કિ લૌકિકકુલદેવતા કી પ્રતિમા કે અર્ચન-પ્રકરણ મેં લોકોત્તર અર્હત ભગવાન કે પ્રકરણ કા સંબધ હી ક્યા હૈ । ઉસ સમય જવ કિ નહ પૂર્વ ભવ મેં કિયે ગયે નિદાન સે યુક્ત થી-ઔર કામભોગ મેં અનુરક્ત હૃદયવાલી થી ઉસ કે લિયે કામદેવકા અર્ચન(પૂજન) કરનેકા સમય હી સ્પષ્ટરૂપસે જ્ઞાત હોતા હૈ કામભોગો સે ચિરત વીતરાગ માર્ગ કે ઉપદેશક વીતરાગપ્રમુ અર્હત ભગવાન કી પૂજન વદના કા નહીં । યહી સિદ્ધાન્ત શાસ્ત્રાનુકૂલ હૈ-અન્ય નહીં । અરે કહીં

કામદેવના પૂજનનુ અનુસરણ છે એક વખત એવો હતો કે ન્યારે કામદેવ, રાગશાળી ગૃહસ્થ લોકોને માટે કુળ દેવતાના રૂપમાં લક્ષ-સંબધી વ્યવહારમાં માન્ય ગણાતો હતો. દ્રૌપદીએ પણ તે સમયે જે કુળ દેવતાનું પૂજન કર્યું તે કામદેવનું જ પૂજન કર્યું હતું એ જ વાત ખરેખર લાગે છે આ પૂજનના પ્રકરણમાં જે “ નમોઽયુગ્મ અરિહતાણ ” આ પાઠ આવે છે તે પ્રવચન વિન્દ્ય જ છે કેમકે લૌકિક કુળદેવતાની પ્રતિમાના અર્ચન-પ્રકરણમાં લોકોત્તર અર્હત ભગવાનના પ્રકરણમાં સંબધ જ શી રીતે થોડા કહી શકાય તે વખતે કે ન્યારે તે પૂર્વ ભવમાં કરેલા નિદાનથી યુક્ત હતી અને કામભોગમાં અનુરક્ત હૃદયવાળી હતી એવી નિયતિમાં તેના માટે કામદેવની અર્ચના કરવાનો વખત જ સ્પષ્ટ રૂપે જણાઈ આવે છે કામભોગથી વિરત વીતરાગ માર્ગના ઉપદેશક વીતરાગ પ્રમુ અર્હત ભગવાનની પૂજા વદના માટે તે વખત થોડા કહી શકાય નહિ આ સિદ્ધાન્ત જ શાસ્ત્રાનુકૂળ છે બીજો નહિ યુધ્ધમાં

દ્રૌપદ્યાઃ પૂર્વભગ્નનિદાનફલપ્રાપ્ત્યમાનેન સમ્યક્તરરહિતત્વાત્ । યસ્ય પૂજનં તસ્યૈવ વન્દનં તુ ન્યાયોપપન્નમ્ભવતિ, અત્ર પૂજનં કુલદેવતાયાઃ, વન્દનં તુ શ્રીરામ ગત્યર્હત્ત્વમ્ભવતિ લોકન્યાયવિરુદ્ધમ્ । તસ્માન્ દ્રૌપદ્યા શ્રીરામગત્યર્હતો વન્દનમપિ તદાનોં ન કૃતમિતિ સર્વપ્રમાણસિદ્ધમ્ ।

અત્રાભયદેવશ્રિણા સ્વરૂપતૃત્તી યદુક્તમ્ પચમ્યાં ચાવનાયામેતાવદેવ દૃશ્યતે
“ જિણપદિમાળ અચ્ચળ કરેડ ” ઈતિ ।

વીરરસકેમિવાય યુદ્ધમેં જાનેવાલે વીરકે લિયે મન્હારરાગ મી આનદદાયી હો સકતા હૈ ? । કમી નહીં પરિણય-વિચારકે અગસર મેં કુલદેવતા કી હી પૂજા કરને કા પ્રસંગ હોતા હૈ-ન કિ ભગવાન અર્હત કી । અતઃ હસ પ્રકાર કા પ્રસંગ માનનો ણક મનગદ્ગત કલ્પના માત્ર હી હૈ । વધોં કિ હસ સમય દ્રૌપદી પૂર્વભવ મેં કિયે હુણ નિદાન કી ફલ પ્રાપ્તિ કે અભાવ સે સમ્યક્ત્વ રહિત થી, ફિર ઉસે ઉસ સમય કામદેવ કી હી હચ્છિત ફલ પ્રાપ્તિ કે લિયે પૂજા કી સૂઝેગી, યા ઉમકે અભાવ કો કરને વાલે જિન ભગવાન કી પૂજા કી । યહ સ્વયં વિચારને જૈસી વાત હૈ જિસ કા પૂજન કિયા જાતા હૈ ઉસી કી વદના કી જાતી હૈ-પૂજન તો હો કુલદેવતારૂપ કામદેવ કા ઓર વદનો કી જાય વીતરાગ પ્રભુ શ્રી અરિહત દેવ કી । હસ પ્રકાર કો માન્યતા તો લૌકિકરીતિ સે મી વિરુદ્ધ પડતી હૈ । હસલિયે સર્વ પ્રમાણો સે યહ સિદ્ધ હોતા હૈ કિ દ્રૌપદી ને જિનપ્રતિમા કા પૂજન નહીં કિયા ।

જનાર લડવૈયા માટે વીર રસ સિવાયનો મહાર રાગ પણ શુ આનંદ ખમી
કનાર થઈ શકે છે ? નહીં જ લગ્નના સમયે તો ભગવાન અહીં તની પૂજા કરતા તો
કુળદેવતાની પૂજા કરવાનો પ્રસંગ જ યોગ્ય લેખાય છે એટલા માટે આ જાતના
પ્રસંગની વાત માનવી એ મનમાની કલ્પના માત્ર જ છે કેમકે આ સમયે
દ્રૌપદી પૂર્વભવમા કરેલા નિદાનની ફળ પ્રાપ્તિના અભાવને લીધે સમ્યક્ત્વથી
રહિત હતી અને એવી સ્થિતિમા ઇચ્છિત ફળ પ્રાપ્તિ માટે તેને કામદેવની
પૂજા કરવાની ઇચ્છા થાય કે તેનાથી વિરુદ્ધ ફળ આપનાર જીન ભગવાનની
પૂજાની ? આ જાતે વિચાર કરવા યોગ્ય વાત છે જેની પૂજા કરવામા આવે છે
તેને જ વદના કરવામા આવે છે પૂજા તો કુળ દેવતારૂપ કામદેવની થાય અને
વદના વીતરાગ પ્રભુ શ્રી અરિહત દેવની કરવામા આવે આ જાતની માન્યતા
તો લૌકિક રીતિથી પણ વિરુદ્ધ છે આ પ્રમાણે બધી રીતે વિચારતા આ
સિદ્ધ થાય છે કે દ્રૌપદીએ જીન પ્રતિમાનુ પૂજન કર્યું નથી.

વાચનાન્તરે તુ ‘પ્રહ્યા’ ઇત્યાદિ, તથા-દ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદ્વંડક્રમાગ્ર ચૈત્યવન્દનમભિહિત સૂત્રે ઇતિ, તદપ્યત્ર પાઠે મિદ્ધાન્તવિરુદ્ધપાઠપ્રક્ષેપસમાવર્તાં મધોતયતિ । અત્ર યદ્વાચ્ય તત્પ્રાગેવ નિગદિતમ્ ।

મૂલમ્-તણ તં દોવડરાયવરકન્નં અતેઝરિયાઓ સન્વા-
લંકારવિભૂસિય કરેતિ કિ તે ? વરપાયપત્તણેઝરા જાવ ચેહિયા-
ચક્કવાલમયહરગવિદપરિચ્છિન્તા અતેઝરાઓ પહિણિચ્છમહ-
પહિનિચ્છમિન્તા જેણેવ વાહિરિયા ડવટ્ટાણસાલા જેણેવ ચાડ-
ગ્ધટે આસરહે તેણેવ ડવાગચ્છહ ડવાગચ્છિન્તા કિહ્હાવિયાણ
લેહિયાણ સદ્ધિ ચાડગ્ધટં આસરહ દુરુહહ, તણ સે ધટ્ટજ્જુણે
કુમારે દોવડ્ઢણ કણ્ણાણ સારત્થં કરેહ, તણ સા દોવડ્ઢ રાય-
વરકણ્ણા કંપિલ્લપુરં નયર મજ્ઝ મજ્ઝેણ જેણેવ સયવરમહવે તેણેવ
ડવાગચ્છહ ડવાગચ્છિન્તા રહ ઠવેહ રહાઓ પચ્ચોરુહહ પચ્ચોરુ-

અભયદેવ સૂરિ ને સ્વરચિત વૃત્તિ મેં જો યહ કહા હૈ કિ એક વાચના
મેં “ જિનપહિમાર્ણ અચ્છણ કરેહ ” દૂસરી અન્ય વાચના મેં “ પ્રહ્યા
ઇત્યાદિ-તથાદ્રૌપદ્યાઃ પ્રણિપાતદ્વંડક્રમાગ્ર ચૈત્યવન્દનમભિહિત સૂત્રે ઇતિ ”
સો યહ ઉનકા કયન હસ યાન કી સમાવના કો પ્રકટ કરતા હૈ કિ હસ
પાઠ મેં સિદ્ધાન્ત સે ત્રિરુદ્ધ પાઠ કા પ્રક્ષેપ હુઆ હૈ । હસ વિષય મેં જો
કુઠ હમેં સમાયાન કાના યા વહ હમને પહિલે હો કર દિયા હૈ ।

॥ દ્રૌપદી પૂજાચર્ચા સમાપ્ત ॥

અભયદેવસૂરિએ સ્વરચિત વૃત્તિમા જે એ ડહુ છે કે એક વાચનામા
“ જિનપહિમાર્ણ અચ્છણ કરેહ ” બીજી વાચનામા ‘ પ્રહ્યા ઇત્યાદિ-તથા દ્રૌપદ્યા
પ્રણિપાતદ્વંડક્રમાગ્ર ચૈત્યવન્દનમભિહિત સૂત્રે ઇતિ । ” તે મતનુ આ કથન આ
વાતને પ્રકટ કરે છે કે આ પાઠમા સિદ્ધાન્તથી વિરુદ્ધ એવા પાઠનો પ્રક્ષેપ
થયો છે આ વિષે જે કંઈ યોગ્ય સ્પષ્ટીકરણ કરવાનું હતું તે અમે પહેલા
કરી દીધું છે

દ્રૌપદી પૂજા ચર્ચા સમાપ્ત

हिता किङ्गावियाए लोहियाण य सद्धि सयंवरमंडपं अणुप-
 विसड अणुपविसित्ता करयल तेसि वामुदेवपामुग्धाण वट्ठणं
 रायवरसहस्साणं पणाम करेइ, तएण सा दोवई रायवर० एग
 मह सिरिदामगंड किं ते ? पाडलमहियचपय जाव सत्तच्छया-
 ईहि गंधद्धाणि मुयत परमसुहफास दरिसणिजं गिणहइ, तएण
 सा किङ्गाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लग दप्पण
 गहेऊण सललिय दप्पणसकतविचसदासिण य से दाहिणेण
 हत्थेण दरिसए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीर महु-
 रभणिया सा तेसि सुव्वेसिं पत्थिवाण अम्मापिऊण वससत्तसा
 मत्थगोत्तविक्रतिकंति बहुविह आगममाहप्परूवजोव्वणगुण
 लावणणकुलसीलजाणिया कित्तण करेइ, पढम ताव वणिहपुगवाणं
 दसदसारवीरपुरिसाण तेलोक्कवलवगाण सत्तुसयसहस्समाणा-
 वमहगाण भवसिद्धिपवरपुडरीयाण चिल्लगाण वलवीरियरूव-
 जोव्वणगुणलावन्नकित्तिया कित्तण करेइ, ततो पुणो उगसेण-
 माईणं जायवाण, भणइ य—सोहग्गरूवकल्लिए वरेहि वरपुरिस-
 गधहत्थीणं । जो हु ते होइ हिययदइओ, तएणं सा दोवई
 रायवरकन्नगा वट्ठण रायवरसहस्साणं मज्झ मज्झेण समतिच्छ-
 माणी२ पुव्वकयणियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पच पडवा
 तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ते पचपडवे तेण दसद्ववण्णेण
 कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ करित्ता एव वयासी-
 एएण मए पच पडवा वरिया, तएणं तेसि

बहूणि रायसहस्राणि मह्यारसदेणं उग्घोसेमाणा २ एव वयति
 सुवग्गिय खलु भो । दोवइए रायवरकन्नाए २ त्तिमट्टु सयवरमड-
 वाओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमिक्का जेणेव सया २ आवासा
 तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, तएण धट्टज्जुण्णे कुमारे पच
 पडवे दोवइं रायवरकण्ण चाउग्घट आसरह दुरूहइ दुरूहिक्का
 कपिल्लपुर मज्झ मज्झेण जाव सय भवण अणुपविसइ, तएणं
 दुवए राया पच पडव देवइ रायवरकन्न पट्टय दुरूहेइ दुरूहिक्का
 सेया पीएहि कलसेहि मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम कारवेइ
 पचण्ह पडवाण दोवइए य पाणिग्गण करावेइ तएण
 से दुवए राया दोवइए रायवरकण्णयाए इम एयाख्वं
 पीईदाण दलयइ, त जहा — अट्ट हिरण्णकोडीओ जाव अट्ट
 पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्ण च विउल धणक्कणग जाव
 दलयइ तएण से दुवए राया ताइ वासुदेवपामोक्खाणं विउ-
 लेणं असण्ण वत्थगव जाव पडिविसज्जेइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—‘तएण त’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ता द्रौपदी राजवरकन्या
 ‘अतेउरियाओ’ आन्तः पुरिक्ख= अन्तःपुरवर्तिन्य स्त्रियः सर्वाङ्कारविभू-
 पिता कुर्वन्ति, ‘किं ते’ तन्-तत्सौन्दर्यं किं वर्णयामि तद् वाचाऽभिलषितु न

तए ण त दोवइ रायवरकन्न इत्यादि ।

टीकार्थ—(तए ण) इसके बाद (त दोवइ रायवरकन्न) उस राजवर कन्या
 द्रौपदी को (अतेउरियाओ मन्वाङ्कारविभूसिय करेति) अतः पुर
 की स्त्रियो ने समस्त अलङ्कारो से विभूषित किया । (किं ते) उस समय

तएण त दोवइ रायवरकन्न इत्यादि—

टीकार्थ—(तए ण) त्याग्यती (त दोवइ रायवरकन्न) ते राजवर कन्या
 द्रौपदीने (अते उरियाओ-मन्वाङ्कारविभूसिय करेति) श्रुत्यामनी श्रीओओ
 समस्त अलङ्कारो शब्दगारी (किं ते) ते समयना तेना और्ध्वानु पर्वण

શક્યત્ इत्यर्थः । 'उरपायपत्तणेउरा' उरपाटमाप्तनूपुरा=उरणम्यापित प्रशस्त
नूपुरा यात्-चेडियाचणवालमयहरगविन्दपरिक्लिता चेडिकाचणवालमयहरग
चन्द्रेण-अनेकदासीमयहरगमूढेन परिसिन्ना-परिट्टता, अन्तःपुरात् प्रतिनिष्कामति
-निः सरति, प्रतिनिष्कम्य यत्रैव गच्छा=गच्छिः प्रदेशस्था 'उवद्वाणसाला' उप
स्थानशाला=आस्थानमण्डप-सभामण्डपइत्यर्थः, यत्रैव चार्तुगटोऽश्वरथस्तत्रोपाग
च्छति, उपागत्य 'किट्ठावियाए' क्रीडिकया-क्रीडनधात्र्या कीट्टया कीडिकया
इत्याह 'लेडियाए' इति लेखिकया=राजकुलप्रशनामादिपरिचारिकया साथ

કે ઉસકે સોન્દર્ય કા હમ કયા વર્ણન કરે । 'ઉર પાણી ઢારા' કહને કે
યોગ્ય નહીં હૈ અર્થાત્ ઘાળી સે ઉસકા વર્ણન નહીં હો સકતા હૈ । (વર
પાંચપત્તણેઝરા જાત્ર , ચેડિયાચણવાલમયહરગવિન્દપરિક્લિતા અતે
ઝરાઓ પટિનિસ્તમિત્તા) ચરણોં મેં સ્થાપિત કિયે ગયે હૈ-પહિરાયે ગયે
હૈ-પ્રશસ્તનૂપુર જિસકો ણેસી વહ દ્રૌપદી યાવત અનેક સમસદાર
દાસિયોં કે મહોમહિમ સમૂહ સે પરિક્લિષ્ટ હોકર-અત.પુર સે બાહિર
નિકલી । (પટિનિસ્તમિત્તા જેણેવ બાહિરિયા ઉવદ્વાણસાલા જેણેવ
ચાઝગઘટે આસરહે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિતા કિટ્ઠાવિયાએ લેરિ
યાએ સદ્ધિ ચાઝગઘટ આસરહ દુરુદ્દહ) બાહિર નિકલકર વહ જહાં
બાહિર મેં સભામણ્ડપ ઓર હસમેં બી જહા ચારઘટો વાલા અશ્વરથ થા
બહા આઈ । વહા આકર વહ અપની ક્રીડનધાત્રી કે કિ જો લેખિકા
રાજકુલ, વશ નામ આદિ કી પરિચાયિકા યી સાથે ઉસ ચારઘટોવાહે

આપણે કેવી રીતે કરી શકીએ વાણી વડે તેનું વર્ણન અશક્ય છે એવો
કે વાણીમા એટલી શક્તિ નથી કે તેના સૌંદર્યનું સચોટ વર્ણન કરી શકે
(ઉરપાંચપત્તણેઝરા જાત્ર ચેડિયાચણવાલમયહરગવિન્દપરિક્લિતા અતેઝરાઓ
પટિનિસ્તમિત્તા)

પગોમા જેણે સુદર નૂપુર પહેર્યા છે એવી તે દ્રૌપદી ઘણી ચતુર દાસી
એથી વીંટળાઈને રણુવાસથા બહાર નીકળી
(પટિનિસ્તમિત્તા જેણેવ બાહિરિયા ઉવદ્વાણમાલા જેણેવ ચાઝગઘટે આસરહે તેણેવ
ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિતા કિટ્ઠાવિયાએ લેડિયાએ સદ્ધિ ચાઝગઘટ આસરહ દુરુદ્દહ)

બહાર નીકળીને તે જ્યાં બહારના સભા-મંડપમા ચાર ઘટવાળો અશ્વ
રથ હતો ત્યાં આવી ત્યાં આવીને તે પોતાથી ક્રીડન ધાત્રી-કે જે લેખિકા
રાજકુલ, વશ નામ વગેરેની પરિચારિકા હતી-તેની સાથે તે ચાર ઘટવાળા
અશ્વરથ ઉપર સવાર થઈ ગયું

चातुर्घण्टमश्वरथं 'दुरुहड' दूरोहति=आरोहति । ततस्तदनन्तरं धृष्टद्युम्नः कुमारो द्रौपद्याः कन्यायाः 'सारथ्य' सारथ्य-सारथिर्म करोति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या कापिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन यज्ञैव स्वयम्बरमण्डपस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति रथात् प्रत्यरोहति प्रत्यवस्था क्रीडिकया लेखिकया च सार्धं स्वयम्बरमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य करतलपरिगृहीत दशनख शिरावर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तेषां वासुदेवमुखानां गृह्ण राजवरसह-
अश्वरथ में सवार हो गई । (तएण से धृष्टजुण्णे कुमारे दोवईण कन्हाए सारथ्य करेइ, तएण सा दोवइ रायवरकण्णा कपिल्लपुर नगर मज्झ-मज्झेण जेणेव सयवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ) उस के सवार होते ही धृष्टद्युम्न कुमार ने उस द्रौपदी कन्या का सारथ्य किया-उसके रथ पर सारथि का काम किया-द्रौपदी के रथ को हाका । इस तरह धृष्टद्युम्न के द्वारा हाके गये रथ पर बैठी हुई वह राजवर कन्या द्रौपदी कापिल्य पुर नगर के बीच से होकर जहा स्वयम्बर-मण्डप था उस ओर चल दी । (उवागच्छित्ता रह ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किङ्गावियाण लेहियाण सद्धिं सयवरमंडव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाण गृह्ण रायवरसहस्साण पणाम करेइ) वहां पहुंचकर उसने रथ को खड़ा करवा दिया-रथके खड़े होते ही वह उससे नीचे उतरी, नीचे उतर कर वह उस लेखिका क्रीडन धात्री के साथ स्वयम्बर मण्डप में प्रविष्ट हुई । प्रविष्ट होकर के उसने अपने दोनों हाथों को जोड़ कर उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को प्रमाण

(तएण से धृष्टजुण्णे कुमारे दोवईण कन्हाए सारथ्य करेइ, तएण सा दोवइ रायवरकण्णा कपिल्लपुर नगर मज्झ मज्झेण जेणेव सयवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ)

कन्या ने ते सवार थई गई त्या ने कुमार धृष्टद्युम्ने ते द्रौपदी राजवर कन्याना रथ उपर जेसीने सारथीनु काम सलाज्यु आ प्रमाणे धृष्ट मन वडे छाकवाभा आवेता ते रथ उपर सवार थईने ते राजवर कन्या द्रौपदी कापिल्यपुर नगरनी मध्ये थईने कन्या स्वयम्बर मंडप हुते त्या रत्नाना थई

(उवागच्छित्ता रह ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किङ्गावियाण लेहियाण सद्धिं सयवरमंडव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेव पामुक्खाण गृह्ण रायवरसहस्साण पणाम करेइ)

त्या पछोसीने तेले रथने थोलावडाओ, नगरे रथ थोले त्या ने ते रथ उपरथी नीचे उतरी, नीचे उतरीने ते लेखिका क्रीडन धात्रीनी साथे स्वयम्बर मंडपमा प्रविष्ट थई प्रविष्ट थईने तेले वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओंने थोलांना जेने साथ जोडीने नमस्कार कर्था

साणा प्रणामं करोति, ततः खलु गा द्रौपदी राजवरकन्या एक महत् श्रीदामकाण्डं
 'किं ते' किं तत्-तत्सौन्दर्यमौग-व्यवर्णनं किं करोमि ? तद् अपूर्वमिति भावः ।
 'पाटलमल्लियचपय जाव सत्तच्छयार्द्धि' पाटलमल्लिकानम्पक-यावत् सप्तच्छ
 दादिभिः 'गन्धद्वार्णि' गन्धध्वार्णि गन्धनमि 'सुयनं' मुष्मत्-इदत् प्रकाशप्रदित्यर्थः
 परमसुखस्पर्श दर्शनीय गृह्णाति । ततः खलु गा त्रीटिका-त्रीटनयात्री यावत्-
 सुरूपा जाव 'वामहस्तेण चिल्लग दप्पण' यावत् वामहस्तेन चिल्लग दर्पणम् अत्र
 यावच्छब्देनेदं यो यम्-सामाप्रियवत्त चोद्दहनणम्म उस्सुयकर विधित्तमणिरयण
 घट्टच्छुद्ध' इति । स्याभाविस्सर्प-स्याभाविस्सो नैमर्गिको घर्षो घर्षण यत्र स तथा
 त दर्पणमित्यन्वयः । स्यामादेव विषणमित्यर्थः, तथा-उत्तुर्दशनस्योत्तुस्यार-
 तरुणलोसरय प्रेक्षणाभिधापजनन, तथा-विचित्रमणिरत्नयद्धरुक्=विचित्रमणि
 रत्नैर्नद्धः छरुको-मुष्टि ग्रहणभ्यान, यन्न्य त तथा त, तथा-'चिल्लग' देदीप्य
 मान, दर्पण-वामहस्तेन " गहेउण " गृहीत्या 'सललिय' मललित 'दप्पण

क्रिया (तएण सा दोवई रायवरकन्या एग मह सिरिदामगड किं ते ?
 पाटलमल्लियचपय जाव सत्तच्छयार्द्धि गन्धद्वार्णि सुयत परमसुहृषास
 दरिसणिज्ज गेण्ड) उसके बाद उस राजवर कन्या द्रौपदी ने एक
 बड़ा विस्तृत श्री दामकाण्ड-जिस की सुन्दरता और सुगन्धि का हम क्या
 वर्णन करें-जो अपूर्व था-पाटल-गुलाब के पुष्पों से, मल्लिका-मोघरा के
 पुष्पों से यावत् सप्तच्छद वृक्ष के पुष्पों के गूथा गया था और जिस में
 से नासिका को तृप्ति करने वाली गन्ध निकल रही थी ।

जिसका स्पर्श परम सुखदायक था-तथा जो दर्शनीय था अपने हाथ
 में लिया (तएण सा किङ्कायिया जाव सुहवा जाव वामहस्तेण चिल्लग
 दप्पण गहेउण मललिय दप्पणसकतविवसदसिए य से दाहिणेण

(तएण सा दोवई रायवरकन्या एग मह सिरिदामगड किं ते ! पाटलम
 ल्लिय चपय जाव सत्तच्छयार्द्धि गन्धद्वार्णि सुयत परमसुहृषास दरिसणिज्ज गेण्ड)

त्यारपछी ते राजवर कन्या द्रौपदीजे ओक बहुत मोटो लारे श्रीदामकाण्डने
 ठे जेनी सुन्दरतातु वर्णन थई थके तेम नथी अने जे अपूर्व हुतो-पाटल
 गुलाबना पुष्पोथी, मल्लिका-मोघरांना पुष्पोथी, अम्पाना पुष्पोथी यावत्
 सप्तच्छद वृक्षना पुष्पोथी ते तयार उरवामा आयो हुतो अने जेमाथी
 नासिकाने तृप्ति थाय तेवी सुवास प्रमरी रही हुतो जेने स्पश अत्यंत
 सुगन्धारी तेमज्जे दर्शनीय हुतो-हाथमा लीघो।

(तएण सा किङ्कायिया जाव सुहवा जाव वामहस्तेण चिल्लग दप्पण गहे
 ऊण सललिय दप्पणसकतविवसदसिए य से दाहिणेण हस्तेण दरिसए पवर

सकृत्प्रियसदसि ए य ' दर्पणमक्रान्तविम्बसदृशितान्=दर्पणे संक्रान्तानि यानि
राजा विम्बानि-प्रतिविम्बानि, तैः सदृशिताः=प्रतिबोधितास्ताश्च प्रवरराजसिंहा-
सिंहसदृशरान् श्रेष्ठनृपान् दक्षिणेन हस्तेन ' से ' तस्या ' द्रौपद्या ' दरिसि ए '
दर्शयति उह वर्मणः सम्बन्धमात्रविवक्षाया पृष्ठी । तथा-' फुडविसयविसुद्ध-
रिभियगभीरमहुरभणिया ' स्फुटविशदविशुद्धरिमितगम्भीरमधुरमणिता= अर्थत'

हृत्प्रेण दरिसि ए प्रवरराजसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीरमहुर-
भणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊण वससत्तसामत्थ-
गोत्तचित्रकतिकतिउहुविहआगममहाप्पस्वजोव्वणगुणलावण कूल
जाणिया कित्तण करेइ) इसके बाद उस क्रीडन धाय ने अपने हाथ
में एक चमकता हुआ दर्पण लिया । यहा दर्पण के इन और विशेषणों
का यावत् शब्द से ग्रहण हुआ है वे विशेषण ये हैं ' सामावियधसं
चोद्धज्जणस्स उस्सुयकर विचित्तमणिरयणवद्धल्लह ' इनका अर्थ इस
प्रकार है-यह दर्पण स्वभावतः चिकना था । तथा तरुणजनों के चित्त
में अपने को देखने की अभिलाषा का जनक था । मुष्टि से पकड़ने का
जो इसका स्थान था वह विचित्र मणि-रत्नों से निर्मित था । उस
दर्पण में जिन २ सिंह जैसे शूरवीर राजाओं के उस समय प्रतिविम्ब
पड़े हुए थे उन प्रतिविम्बों को लेकर उस धायने उन श्रेष्ठ राजाओं को
उस द्रौपदी के लिये अपने दक्षिण हाथ से बतलाया । बतलाते समय
उन्हें दिखाते समय-वह गात्री बिलकुल अर्थ की अपेक्षा स्फुट एवं वर्ण

रायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थि
वाण अम्मापिऊण वससत्तसामत्थगोत्तचित्रकतिकतिउहुविहआगममहाप्पस्वजोव्वण
गुणलावण कूलजाणिया कित्तण करेइ)

त्यारपणी ते क्रीडनधात्रीके पोताना हाथमा ओके यमकतो अरीसो दीधो
अही ' अरीसा ' भाटे य वत् शब्दधी नीके लब्ध्या भुज्जण विशेषणानु पणु
अल्लु सभयु लेधके (सामावियधस चोद्धज्जणस्स उस्सुयकर विचित्त
मणिरयणवद्धल्लह) आ विशेषणानु स्पष्टीकरण आ प्रमाणे छे-ते अरीसो
स्वाभाविक रीते दीधो हुतो, तेभज तरुण श्रीमाना चित्तमा तेने लेवानी
सल्लज लावे धञ्जल लज्जत थाय तेवो हुतो ते अरीसानो हाथो विचित्र
मणीरत्नोधी जडेलो हुतो ते अरीसामा सिद्ध जेवा शूरवीर जे जे राजाओ
देभाया ते धात्रीके ते राजाओने पोताना जमणु हाथधी सकेत कनीने
अताव्या अतावती वणने अने सभलपती वणते ते धाय अर्थनी अपेक्षाधी

સ્ફુટ, ધર્મિયો વિગત સ્ફુટવિગત-ગદાર્થદોષરહિત, રિમિત-સ્વયુક્ત ગમ્भीર-
મેઘધ્વનિયત્, મધુર-મિય શ્રવણગુણદ, મળિત માપિત યમ્યા ત્રીટિકાયા સા
તથા, સા ક્રીટિકા તેવા ગર્વેવા પાર્થિયાનાં 'અમ્માપિઝણ' માતાપિત્રોઃ
'વસતત્તસામત્યગોત્તવિગતિકૃતિયદ્વિદિશાગમમાદ્યપ્રજોત્ત્રણગુણલાવણ્યકુન્સી
લજાણિયા' વશતત્તસામ યગોત્ત્રિકાન્તિશાન્તિયદ્વિધાગમમાદ્યાત્મ્યપયોત્રનયુ
ગલાવણ્યકુન્સીલજાણિકા=વજ-શ્રિવશાદિક, સત્તમ્-આપત્ત્યુ વૈર્યમ્ સામર્થ્ય=
પલ ગોત્ર=ગૌતમગોત્રાદિ, વિક્રાન્તિ-વિક્રમ, કાન્તિ-પ્રમા, વજ્રવિધાગમ અનેક
શાસ્ત્રવિજારદ, માદ્યાત્મ્ય-મહાનુભાવતા, તથા-રૂપયોત્રનગુણલાવણ્યાનિ ચ તથા-
કુલ-વજસ્યાગાન્તરભેદ, શીલ ચ-સ્વમાત્ર ચ જાનાતિ યા મા 'ક્રિતણ' કીર્તન=
વશાદિવર્ણન કરોતિ સ્મ । પ્રથમ તાવત્-'વઢિપુગવાણ' વઢિપુદ્ગવાના 'દસ
દસારવીરપુરિસાણ' દશાના દશાર્દ્રાણા સમુદ્વિજયાદીના ત્રીપુરુષાણા, 'તેલોગ
વલવગાણ' ત્રેલોક્યવલવતા 'સત્તુમયસહસ્તમાણાવમદગાણ' શત્રુશતસહસ્તમાનાવ
મદકાના, તથા-'મવસિદ્ધિવરપુઢરીયાણ' મવસિદ્ધિવરપુઢરીયાણા=મવતિ

કી અપેક્ષા વિગત એસી વિશુદ્ધ-શબ્દાર્થ દોષ રહિત-સ્વર યુક્ત મેઘ
ધ્વનિ સમાન ગમ્भीર મધુર વાણી સે માપણ કરતી જાતી થી । ઉસ
માપણ મે વહ ઉન સવ રાજાઓં કે માતા, પિતા, વજ, સત્ત, સામર્થ્ય,
ગોત્ર, વિક્રમ, કાન્તિ, અનેક શાસ્ત્રોં કા જ્ઞાતૃત્વ, માદ્યાત્મ્ય, તથા રૂપ,
યૌવન ગુણ, લાવણ્ય, કુલ એવ જીલ કી જ્ઞાતા હોને કે કારણ ઇન સવ
કા વર્ણન કરતી જાતી થી । વશ સે હરિવશ આદિ કા ઓર કુલ
સે વશકે અવાન્તર ભેદ કા કથન હોતા હૈ । (પદમ તાવ વઢિપુ
ગવાણ દસદસારવીરપુરિસાણ તેલોક્યવલવગાણ સત્તુમયસહસ્તમાણાવ
મદગાણ મવસિદ્ધિવરપુઢરીયાણ ચિત્તલગાણ વલવીરિયરૂવજોવ્વણ

એકદમ સ્ફુટ અને વર્ણની અપેક્ષાથી વિગત એવી વિશુદ્ધ એટલે કે શબ્દાર્થ
દોષરહિત-સ્વરયુક્ત, મેઘધ્વનિ જેવી ગમ્भीર મધુરવાણીનું ઉચ્ચારણ કરી રહી
હતી પોતાના ભાષણ વડે તે ધાય બધા રાજાઓના માતા પિતા વજ, સત્ત,
સામર્થ્ય, ગોત્ર, વિક્રમ, કાન્તિ, શાસ્ત્રજ્ઞાન, મહાત્મ્ય તેમજ રૂપ, યૌવન, ગુણ,
લાવણ્ય, કુળ અને શીલ વગેરેની બાબતમા બહુજાર હતી એટલે બધું વર્ણન
કરતી જતી હતી વશથી હરિવશ વગેરે અને કુળથી વધારે અવાન્તર ભેદ
કથન થયું છે

(પદમ તાવ વઢિપુગવાણ દસદસારવીરપુરિસાણ તેલોક્યવલવગાણ સત્તુ
મયસહસ્તમાણાવમદગાણ મવસિદ્ધિવરપુઢરીયાણ ચિત્તલગાણ વલવીરિયરૂવ

ભાવિની સિદ્ધિરેપા, તે ભવસિદ્ધિકાસ્તેપા મધ્યે પરપુઠરીકાળીત્ર ચે શ્રેષ્ઠાસ્તે તથા તેપા, તથા ' ચિહ્ન્યાણ ' તેજસા દેદીપ્યમાનાના ' ચિહ્ન ' इति देशी शब्दः । તથા- ' વલગીરિયરૂઝજોગ્વણગુણલાવણકિત્તિયા ' વલગીર્યરૂપયૌવન-ગુણલાવણ કીર્તિકા=વલ-કાયિક, વીર્યમ્-ઉત્સાહઃ, રૂપ-મૌન્દર્ય, યૌવન-તારુણ્ય, ગુણાન્-ઓદાર્યગામ્ભીર્યાદીન્, લાવણ્ય-યૌવનયોજન્ય કાન્તિવિશેષ, કીર્તયતિ યા સા તથા, સા ક્રીડિકાયાત્રી કીર્તન કરોતિ સ્મેત્યર્થ । અત્ર પૂર્વોક્તમપિ વિશેષણ કિંચિદ્ વિશેષરોધનાર્થ પુનઃ કથિતમ્ ।

તતસ્તદનન્તર પુનઃ સા ક્રીડનધાત્રી ' ડગસેનમાઈણ જાયવાણ ' ડગસેના દીના યાદનાના વલગીર્યાદિ કીર્તન કરોતિ કૃત્વા મળતિ ચ=સા યાત્રી દ્રોપદી ગુણલાવણ કિત્તિયાકિત્તણં કરેડ) સવસે પહિલે ડસ ક્રીડન ધાત્રી ને વૃષ્ણિવશ કે પુગવ સમુદ્રવિજય આદિદશ દશાહોં કે કિ જો ત્રૈલોક્ય મેં મી વિશિષ્ટ વલશાલી માને જાતે થે, લાવો શત્રુઓ કે માન કો મર્દન કરને વાલે થે, ભવસિદ્ધિક પુરુષોં મેં જો શ્રેષ્ઠ કમલ કે જૈસે માને ગયે હેં, ઓર જો અપને સ્વાભાવિક તેજ સે સદા દમકતે રહતે થે વલ કા, વીર્ય કા, રૂપ કા, યૌવન કા, ગુણો કા, લાવણ્ય કા, કીર્તિકા હોને કે કારણ કીર્તન-વર્ણન ક્રિયા । શારીરિક શક્તિકા નામ વલ, ઉત્સાહ કા નામ વીર્ય, સૌન્દર્ય કા નામ રૂપ તારુણ્ય કા નામ યૌવન હૈ । ઓદાર્ય ગામ્ભીર્ય આદિ ગુણ હૈ । યૌવન વય સે જય જો કાંતિ શરીર મેં આતી હૈ વહ લાવણ્ય હૈ (તઓ પુણો ડગસેનમાઈણ જાયવાણ મળહ ય સોહગગરૂવકલિય વરેદિ વર પુરિસગધદત્યીણ જો હુ તે હોઈ દિયવ દહઓ, તણ સા દોવઈ રાયવરકન્નગા વઢ્ઢાં રાયવરસદસ્સાણ મજ્જ

જોગ્વણગુણલાવણકિત્તિયા કિત્તણ કરેડ)

તે ક્રીડન ધાત્રીએ સૌ પહેલા વૃષ્ણિવશમા પુગવ (શ્રેષ્ઠ) સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાહોંનુ-ડે જેઓ ત્રણે લોકોમા પણ વિશિષ્ટ ગન્તિયાળી ગણાતા હતા, લાખો શત્રુઓના માનનુ મર્દન કરનારા હતા, ભવસિદ્ધિક પુરુષોમા જેઓ ડમળ II જેમ શ્રેષ્ઠ ગણાતા હતા અને જેઓ પોતાના સ્વાભાવિક તેજથી હમેશા પ્રગણતા રહેતા હતા, બળ, વીર્ય, રૂપ, યૌવન, ગુણો, લાવણ્ય, કીર્તિ વગેરેથી સપન્ન હતા-વર્ણન કયુ ગાત્રીરિડ શક્તિનુ નામ બળ, ઉત્સાહનુ નામ વીર્ય, સૌન્દર્યનુ નામ રૂપ અને તારુણ્યનુ નામ યૌવન છે ઓદાર્ય, ગામ્ભીર્ય ગુણો છે યુવાવસ્થામા જે શરીર કાંતિવાળુ થાય છે તેને લાવણ્ય કહેવામા આવે છે

(તઓ પુણો ડગસેનમાઈણ જાયવાણ મળહ ય સોહગગરૂવકલિય વરેદિ વરપુરિસગધદત્યીણ જો હુ તે હોઈ દિયવદહઓ તણ તં દોવઈ રાયવરકન્નગા

पुनराह— 'सोहगस्वरुल्लिख' इत्यादि, पञ्चमप्रान्ययमुखेनन्याया- 'वस्पुरि
सगधहृत्थीण' गौरपुरुषगन्धहस्तिना=हस्तिपु गन्धहस्तिन इय ये विशिष्टगुणसद्भा
वात् पुरुषेषु सर्वतः श्रेष्ठास्ते यस्वरुपगन्धहस्तिनस्तेषा म ये 'सोहगस्वरुल्लिख'
सौभाग्यरूपरुल्लितः-अतिशयेन सौभाग्यमौन्दर्यसमन्वित, यः खलु न तत्र हस्य
दयित=हृदयप्रियः 'होह' भवति, त 'वरेहि' यस्य=पतिमात्रेण स्वीकृत इत्यर्थः ।

ततस्तदनन्तर खलु द्रौपदी राजारुण्या गृह्णा राजारसहस्राणा मध्यमघ्न
'समच्छमाणी २' समतिक्रामन्ती=गच्छन्ती 'पुञ्चक्यणिग्याणेण' पूर्वकृतनि
दानेन=सुकुमारिकामये भर्तृपञ्चक्रामिल्लपरूप निग्नान कृत तेन, 'चोदज्जमाणी २'
प्रेर्यमाणा २ यज्ञोप पञ्च पाण्डवास्तत्रैरोपागच्छति, उपागत्य तान् दशार्धवर्णेन-
पञ्चवर्णेन कुसुमदाम्ना 'आवेदियपरिवेदिय' आरेष्टितपरिवेष्टितान् करोति,
मज्झेण समतिच्छमाणी २ पुञ्चक्यणिग्याणेण चोदज्जमाणी २ जेणेव
पचपडवा तेणेव उवागच्छत्त) इसके बाद उस कीटन धाय ने पादव
वश्याले उग्रसेन आदि पादवों के पलवीर्य आदि का वर्णन किया-
उसने द्रौपदी से कहा ये जैसे हाथियों में गधहस्ती श्रेष्ठ होता है उसी
तरह ये पुरुषों में विशिष्ट गुणोंके सद्भाव के कारण सर्व प्रकार से श्रेष्ठ
हैं-उनके बीच में जो तुझे सौभाग्यरूप सरुलित प्रतीत हो और तेरे
हृदय को प्यारा लगे-उसे तू पतिरूप से चरले । इसके बाद वह राजार
कन्या द्रौपदी उन हजारों राजाओं के बीच से होनी हुई सुकुमारिका के
भव में हुन निदान के प्रभाव से चार २ प्रेरित होकर जटा पाच पाडव
थे-वहा पहुँची-(उवागच्छित्ता ते पच पाडवे तेण दसद्वरणेण कुसुम
दामेण आवेदियपरिवेदिय करेइ, करित्ता एव वयासी, एएण मए पच

गृह्ण रायवरसहस्राण मज्जे मज्जेण समतिच्छमाणी २ पुञ्चक्यणिग्याणेण चोद-
ज्जमाणी २ जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छत्त)

त्यारपछी कीटन धायीजे उग्रसेन वगेरेनु वण्णन उयुं अने कहु के-
डाथीओभा जेम गध हस्ती उत्तम गणाय ठे तेमए पुइषोभा सविशेष
गुणवान जेवा जेओ पछी रीते सारा ठे, आ पछामा तने जे सौभाग्य
शाणी लागता होय अने तने जेओ गमता होय तेओने तु पति इयमा
स्त्रीकारी वे त्यारपछी ते राजवर कन्या द्रौपदी ते डल्लरे राजाओनी वगैथी
पसार थधने पोताना सुकुमारिकाना लवमा करेला अबिलापथी प्रेराधने न्या
पाथ पाडवे डता त्या पडोथी

(उवागच्छित्ता ते पच पाडवे तेण दसद्वरणेण कुसुमदामेण आवेदिय
परिवेदिय करेइ, करित्ता एव वयासी, एएण मए पचपडवा

कृता एवमवादीत्-एते खलु पञ्च पाण्डवा मया वृता इति । ततः खलु ' ताड
वासुदेवपामोक्षवाऽ बहूणि रायसहस्राणि ' तानि वासुदेवप्रमुखाणि बहूनि राज-
सहस्रसंख्याका वासुदेवप्रमुखा राजान इत्यर्थः । मदता २ शब्देनोद्धोषयन्त एव
वदन्ति-सुवृत्त खलु भोः ! द्रौपद्या राजवरकन्यया इति कृत्वा-इत्युक्त्या स्वयवर-
मण्डपात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वया स्वका आवा-
सान्तर्गोत्रोपागच्छन्ति । ततः खलु धृष्टद्युम्नः कुमारः पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं
राजवरकन्या चातुर्यमथरथ ' दुरूहः ' दूरोदयति=आरोहयति दूरोत्त काम्पि-

पडवा वरियो, तएण तेसि वासुदेवपामोक्षवाण बहूणि रायसहस्राणि,
महया २ महेण उग्घोसेमाणा २ एव वयति, सुवरिय खलु भो ! दोव
इए रायवरकन्याए त्ति रुद्धु सयवरमडवाओ पडिनिक्खमति, पडि
निक्खमिता जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छड) वहा पट्टव
कर उसने उन पाचो पाडवो को उस पचवर्णवाली माला से अवेष्टित
परिवेष्टित कर दिया । करके फिर वह इस प्रकार कहने लगी-ये पांच
पाडव मने पतिरूप से वर लिये हैं । इसके बाद उन वासुदेव प्रमुख
हजारो राजाओं ने बडे २ जोर के शब्दो से ऐसा कहा इस राजवर
कन्या द्रौपदीने बहुत अच्छे वर वरे ऐसा कहकर वे उस स्वयंवर मंडप
से बाहिर हो गये । बाहिर आकर फिर वे जहा अपने २ आवास स्थान
ये वहा चले आये । (उवागच्छिता तएण धट्टज्जुण्णे कुमारे पच पडवे
दोवड रायवरकण्ण चाउग्घट आसरह दुरूहः, दुरूहिता कपिल्लपुर

तेसि वासुदेवपामोक्षवाण बहूणि रायसहस्राणि, महया २ सहेण उग्घोसेमाणा २
एव वयति, सुवरिय खलु भो ! दोवइए रायवरकन्याए २ त्ति रुद्धु सयवरमड
वाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमिता जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छड)

त्या पडोत्थिने तेले ते पाथ पाडवाने पाथ वरुवाणी भाणाथी अवे
ष्टित, परिवेष्टित उरी वीधा त्यारपणी तेओने कडेवा लागी के डे पाथ
पाडवो । मे तमने पति रुपमा वरी वीधा छे त्यारणह ते वासुदेव प्रमुख
हजारो राजाओओे जहु मोटा सादथी आ प्रमाओे कहु के आ राजवर कन्या
द्रौपदीओे जहु ५ सारा वरो पसद कथा छे आभ कहीने तेओे सवे स्वयंवर
मंडपमाथी जहार नीकणी गया जहार नीकणीने तेओे न्या पोताना आवास
स्थानो हता त्या जता रह्या

(उवागच्छिता तएण धट्टज्जुण्णे कुमारे पचपडवे दोवड रायवरकण्णं चाउ
ग्घट आसरह दुरूहः, दुरूहिता कपिल्लपुर मज्झ मज्जे ण जाव सय भवण अणु-

ત્યપુરસ્થ મધ્યમધ્યેન યાતૃ સ્વર્ગં ભવનમનુપવિશતિ, તતઃ ગત્ય દુપદો રાજા
 પશ્ચ પાણ્ડ્યાન્ દ્રૌપદીં રાજસરક્ન્યાં 'પટ્ટય' પટ્ટક=પટ્ટકોપરિ 'દુરુહેઃ' દુરો
 હપતિ=ધારોહયતિ, દુરોપ શ્વેતપોતઃ કન્યશ્ચ 'મજ્જાવેઃ' મજ્જયતિ=સ્નપયતિ
 અગ્નિહોમ વિગ્રહવિધિનાઽગ્ની હોમ યાસ્યતિ, પશ્ચાન્ના પાણ્ડ્યાના દ્રૌપદ્યાશ્ચ પાણિ
 ગ્રહણ કારયતિ, અત્ર પશ્ચાન્ના પાણ્ડ્યાનામિતિ સમ્યન્ધસામાન્યે પટ્ટી । તતઃ સ્વલુ
 સ દુપદો રાજા દ્રૌપદ્યા રાજસરક્ન્યાયા । ઇમેતદ્વૃપ ધીતિદાન યાતુરદાન વ્રતાતિ,
મજ્જ મજ્જેણ જાત્ર સયમ્ભવણ અણુપવિસઠ્ઠ, તર્ણાં દુત્રાગ રાયા પચ પઢવે
દોવઢ રાપચરકન્ન પટ્ટય દુરુહેઢ, દુરુહિત્તા સેયાપીર્ણિ કલસેર્હિ
મજ્જાવેઢ, મજ્જાવિત્તા અગ્નિહોમ કારવેઢ, પચ્છ પઢવાણ દોવઢય ય
પાણિગ્રહણ કરાવેઢ,) ઇમ્મકે પાદ ધૃષ્ટદ્યુમ્નકુમાર ને ઉન પાચ પાહવો
કો ગથ રાજસર કન્યા દ્રૌપદી કો ચારઘટો સે ચુક્ત ઉસ અશ્વરથ પર
ઘેઠાયા-ઘેઠાકર વાપિલ્પપુર નગર કે ધીચ સે હોતા હુઆ વહ જશ
અપના ભવન ધો વહાં આયા વહાં આકર વહ ઉસમેં ઉન સત્ર કે સાંધ
પ્રવિષ્ટ હુઆ । ઇસકે વાદ દુપદ રાજા ને ઉન પાંચો પાંડવોં કો ઓર
રાજસર કન્યા ઉસ દ્રૌપદી કો એક પટ્ટક પર ઘેઠા દિયા-ઘેઠાકર ફિર
ઉસને ઉનકા શ્વેત પીત કલશોં સે ચાદી સોને કે ઘઢોં સે-અભિષેક
કરવાયા અભિષેક કરવા ફર ફિર ઉસને અગ્નિ હોમ કરવાયા-ઓર
ઉસકી સાક્ષી પૂર્વક પાંચો-પાહવોં કે સાથ અપની કન્યા દ્રૌપદી કા
પાણિ ગ્રહણ સસ્કાર કરવા દિયા । (તર્ણ સે દુવે રાયા દોવઢે રાય

પવિસઠ્ઠ, તર્ણ દુત્રા રાયા પચ પઢવે દોવઢ રાયસરકન્ન પટ્ટય દુરુહેઢ, દુરુહિત્તા
 સેયાપીર્ણિ કલસેર્હિ મજ્જાવેઢ મજ્જાવિત્તા અગ્નિહોમ કારવેઢ, પચ્છ પઢવાણ
 દોવઢય ય પાણિગ્રહણ કરાવેઢ)

ત્યારપછી ધૃષ્ટદ્યુમ્ન કુમારે તે પાંચ પાહવોને અને રાજસર કન્યા દ્રૌપ
 દીને આર ઘટવાળા તે અશ્વરથ ઉપર બેસાડયા અને બેસાડીને ડાબે ધપુર
 નગરની વચ્ચે થઈને જ્યાં પોતાનું ભવન હતું ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેઓ
 સર્વે તેમાં પ્રવિષ્ટ થયા ત્યારપછી પૂર્વ રાજ્યએ તે પાંચે પાહવોને અને રાજ
 સર કન્યા તે દ્રૌપદીને એક પટ્ટક ઉપર બેસાડી દીધા અને બેસાડીને તેણે
 તેમને સંદેહ, અને પીળા કળશોથી-એટલે કે ચાંદી અને સોનાના કળશોથી
 અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવીને તેણે અગ્નિહોમ કરાવડાવ્યો અને તેની
 સાક્ષીમાં પોતાની કન્યા ^૧ ^૨ હસ્તમેળાપ તેઓની સાથે કરાવી દીધી

तद यथा-अष्ट हिरण्यकोटीः, यावत्=अष्ट रजतकोटी, अष्ट सुवर्णकोटी, अष्ट 'पेमणकारीओ' प्रेणकारिणीः, आज्ञाकारिणीः दासचेटीः-दासपुत्री, अत्र च विपुल धनजनक-यावत् धन-गणिमादिक, कनकम् अघटितस्वर्ण, यावच्छब्देन-रत्न-कर्कतनादीनि, मणयश्चन्द्रकान्ताद्याः मौक्तिकानि च शङ्खश्च प्रतीत एव शिलाप्रवालानि च विद्रुमाणि रक्तरत्नानि-पद्मरागादीनि तान्येव सद् विद्यमान यत् सार=प्रधान स्थापतेयं द्रव्यं तद् ददाति स्म ।

ततः खलु स द्रुपदो राजा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रमन्यकान् रातः विपुलेन अशनपानवाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा वस्त्रगन्धादिभिर्यावत् सत्कारयति समानयति, सत्कार्यं समान्यं प्रतिविसर्जयति ॥ सू० २२ ॥

वरकृष्णयाए इमं गद्यास्व पीईटाण दलयइ, त जहा-अट्टहिरण्यकोटीओ जाव अट्टपेसणकारीओ दासचेटीओ, अण्ण च विउल वणकणग जाव दलयइ, तण्ण से दुवए राया ताइ वासुदेव पामोक्खाणं विउलेण असण ४ वत्थगध जाव पडिविसज्जेइ) इसके बाद द्रुपद राजाने राजवर कन्या उस द्रौपदी के लिये इतना इस प्रकार प्रीति दान दिया आठ हिरण्य कोटि-चादी के बने हुए आठ करोड आभूषण, सुवर्ण के बने हुए आठ करोड आभूषण यावत् आज्ञा कारिणी ८ आठ दासियों और भी बहुत सा गणिमादिक रूप धन, अघटित सुवर्ण, कर्कतनादि रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणि, मौक्तिक, शङ्ख, विद्रुम, पद्मरागादि रक्त रत्न । यह सब सारभूत द्रव्य उसके लिये प्रदान किया । इसके बाद द्रुपदराजा ने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार एवं वस्त्र गंध आदि से सत्कृत सम्मानित कर अपने यहा से विदा कर दिया ॥ सू० २२ ॥

दलयइ, त जहा अट्ट हिरण्यकोटीओ जाव अट्ट पेसणकारीओ दासचेटीओ, अण्ण च विउल वणकणग जाव दलयइ, तण्ण से दुवए राया ताइ वासुदेव पामोक्खाणं विउलेण असण ४ वत्थ गध जाव पडिविसज्जेइ)

त्यारपटी द्रुपद राज्ञे राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रभाषे प्रीतिदान आभ्यु के आ० हिरण्य-कोटि-आदीना आ० करोड आभूषणो यावत् आज्ञा पामोक्खारी आ० दासीओ अने गीन्नु पणु धणु गण्णिम वगेरे ३५ धन, अघटित सुवर्ण, कर्कतना वगेरे रत्न, चन्द्रकान्त वगेरे मणि, मौक्तिक, शङ्ख, विद्रुम, पद्मराग वगेरे रक्त रत्नो आभ्या आ गधु सारभूत धन द्रौपदीने आभ्यु त्यागपटी द्रुपद राज्ञे ते वासुदेव प्रमुख हजारो राजाओने अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य ३५ आर नतना आहारो अने वस्त्र, गंध वगेरेथी सद् दत्त सम्मानित करीने पाताना नगरथी विहाय कथो ॥ सूत्र २२ ॥

व्यपुस्य मन्थयन् यावत् स्वयं भगवन्नुपविशति, ततः खलु द्रुपदो राजा
 पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजारकन्या 'पट्टय' पट्टक=पट्टकोपरि 'दुरुहेड' दूरो
 हयति=मारोहयति, दूरोय 'वेतर्पातैः कन्यैः' 'मज्जावेड' मज्जयति=मनयति
 अग्निहोम पित्राहरिभिर्नाम्नी होमं कारयति, पञ्चाना पाण्डवाना द्रौपद्याश्च पाणि
 ग्रहणं कारयति, अत्र पञ्चाना पाण्डवानामिति सम्बन्धसामान्ये पठ्यते । ततः खलु
 स द्रुपदो राजा द्रौपद्यां राजारकन्यायाः समेतद्रूपं प्रीतिदानं यौतुग्दानं दत्ताति,
 मज्जं मज्जेण जात्रं सयम्भवनं अणुपरिमहं, तण्णं दुवणं राया पच पडवे
 दोवडं रायवरकन्नं पट्टयं दुरुहेडं, दुरुहित्तां सेयापीण्हिं कलसेहिं
 मज्जावेडं, मज्जावित्तां अग्निहोमं कारवेडं, पचण्हं पडधानं दोवडं य
 पाणिगगहणं करावेडं,) इसके बाद धृष्टद्युम्नकुमार ने उन पांच पाण्डवों
 को एवं राजारकन्या द्रौपदी को चारघटों से युक्त उस अन्वरथ पर
 बैठाया-बैठाकर कापित्थपुर नगर के बीच से होता हुआ वह जहाँ
 अपना भवन भी वहाँ आया वहाँ आकर वह उसमें उन सत्र के साथ
 प्रविष्ट हुआ । इसके बाद द्रुपद राजा ने उन पाँचों पाण्डवों को और
 राजारकन्या उस द्रौपदी को एक पट्टक पर बैठा दिया-बैठाकर फिर
 उसने उनका श्वेत पीत कलशों से चादी सोने के घड़ों से-अभिषेक
 करवाया अभिषेक करवा कर फिर उसने अग्नि होम करवाया-और
 उसकी साक्षी पूर्वक पाँचों-पाण्डवों के साथ अपनी कन्या द्रौपदी का
 पाणि ग्रहण सस्कार करवा दिया । (तण्णं से दुवणं राया दोवडं राय

पविसदं, तण्णं दुवणं राया पच पडवे दोवडं रायवरकन्नं पट्टयं दुरुहेडं, दुरुहित्तां
 सेयापीण्हिं कलसेहिं मज्जावेडं मज्जावित्तां अग्निहोमं कारवेडं, पचण्हं पडधानं
 दोवडं य पाणिगगहणं करावेडं)

त्यारपछी धृष्टद्युम्न कुमारे ते पांच पाण्डवोंने अपने राजारकन्या द्रौप
 दीने चार घटवाजा ते अन्वरथ उपर जेसाडीयां अपने जेसाडीने उषि यपुर
 नगरनी पन्थे थधने ज्वा पोतानु लवन हुनु त्वा गया त्या ज्वाते तेओ
 सवे तेमा प्रविष्ट थया त्यारपछी द्रुपद राजाते ते पांच पाण्डवोंने अपने राज
 वर कन्या ते द्रौपदीने ओके पट्टक उपर जेसाडी दीधा अपने जेसाडीने तेबे
 तेमने सक्षे, अपने पीणा कणशोथी-ओटले के चादी अपने सोनाना कणशोथी
 अलिषेक करावडाओये अलिषेक करावीने तेबे अग्निहोम करावडाओये अपने तेनी
 साक्षीमा पोतानी कन्या द्रौपदीने हस्तजेणाय तेओनी साथे करावी दीधा

(तण्णं से दुवणं राया दोवडं रायवरकणवाए इय

सयाइं२ आवासाइ तेणेव उवा० तहेव जाव विहरंति, तएणं
से पंडुराया हत्थिणाउरणयरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता
कोडुविय० सदावेइ सदावित्ता एव वयासी-तुब्भेण देवाणु-
प्पिया । विउल असण४ तहेव जाव उवणेति, तएण ने
वासुदेवपामोक्खा वहवे राया ण्हाया कयवलिकम्मा तं
विउल असणं४ तहेव जाव विहरति, तएणं से पंडुराया
पच्च पडवे दोवडं च देवि पट्टयं दुरुहेइ दुरुहित्ता सेयपी-
एहिं कलसेहि ण्हावेति ण्हावित्ता कल्लाणकारि करेइ करित्ता
ते वासुदेवपामोक्खे वहवे रायसहस्से विउलेण असण४
पुप्फवत्थेण राद्धारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएण ताइ
वासुदेवपामोक्खाइ बहूहि जाव पडिगयाइ ॥ सू० २३ ॥

टीका-‘तएण से’ इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु पाण्डु राजा तेषां वासुदेव
प्रमुखानां बहूनां राजमहत्तानां करतलपरिगृहीतं दगनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं
कृत्वा एवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्पिया ! इस्तिनापुरे नगरे पञ्चानां पाण्ड-
वानां द्रौपद्याश्च देव्याः कल्याणकरो भविष्यति तत्-तस्मात् यूयं खलु हे देवानु-
प्पियाः-मामनुगृह्यत, अकालपरिहीनः=कालविलम्बरहितः-शीघ्रं समयसरतः=आग-

‘तएण से पंडुराया’ इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से पंडुराया) उस पांडुराजा ने (तेसिं
वासुदेव पामोक्खा ण) उन वासुदेव प्रमुख (पट्टण राय० करयल
एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पियां) हत्थिणाउरे नगरे पच्चण्ह पडवाण
दोवडए देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम

तएण से पंडुराया इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्वान्पत्नी (से पंडुराया) ते पांडु राज्ञो (ते सिं
वासुदेवपामोक्खाण) ते वासुदेव प्रमुखा

(वट्टण राय० करयल एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे
नगरे पच्चण्ह पडवाण दोवडए, देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ त तुब्भेण देवाणु-
प्पिया ! मम अनुगृह्यमाणा अकालपरिहीनां समयसरतः)

मूलम्—तएण से पड्डुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण बहूणं
 राय० करयल एव वयासी- एवं खल्ल देवाणुप्पिया । हत्थि-
 णाउरे नयरे पंचण्ह पंडवाणं दोवइए य देवीए कल्लणकरे
 भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया । मम अणुगिण्हमाणा
 अकालपरिहीण समोसरह, तएण वासुदेवपामोक्खा पत्तेय२
 जाव पहारेत्थ गमणाए । तएणं से पंडुराया कोडुवियपुरिसे
 सदा० २ एव वयासी-गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया । हत्थि-
 णाउरे पचण्ह पडवाणं पच पासायवडिसए कारेह अब्भु-
 गयमूसिय वण्णओजावपडिरुवे, तएण ते कोडुवियपुरिसा
 पडिसुणेति जाव करावेति, तएण से पंडुए पचहि पडवेहिं
 दोवईए देवीए सद्धिं हयगयसपरिवुडे कपित्तपुराओ पडि-
 निक्खमइ२ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए, तएणं से
 पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता
 कोडुंवि० सदावेड सदावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे
 देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरस्स नयरस्स वहिया वासुदेवपा-
 मुक्खाणं बहूण रायसहस्साण आवासे कारेह अणेगखमसय
 तहेव जाव पच्चप्पिणत्ति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे
 रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छइ, तएणं
 से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमण जाणित्ता
 हट्टतुट्टे ण्हाए कयवलि० जहा दुवए जाव जहारिह आवासे
 दलयइ, तएण ते वासुदेव पा० बहवे . . . जेणेव

मेघकुमार-प्रासादवद् वर्णन विज्ञेयम् यावद् अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टान् प्रति
रूपान्=शोभासौन्दर्यसम्पन्नान् । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः-‘तथाऽस्तु’
इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=आज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य हस्तिनापुरं गत्वा पञ्च
प्रासादावतसकान् यावत् कारयन्ति । ततस्तदनन्तरं पाण्डुराजा पञ्चभिः पाण्डवै
द्रौप्या देव्या च सार्धं हयगजरथपदातिसपरिहृतः काम्पिल्यपुरात् प्रतिनिष्क्रामति-
प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव हस्तिनापुरं नगरं तत्रैवोपागतः ।

ततः खलु स पाण्डुराजा तेषां वासुदेवमुखानामागमनं ज्ञात्वा कौटुम्बिक-
पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमप्रादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुमियाः !

पहुत ऊंचे हो । इन प्रासादों का वर्णन प्रथम अध्ययन में उक्त मेघ
कुमार के प्रासादों जैसा जानना चाहिये । यावत् ये प्रासाद अनेक स्त-
म्भशत से युक्त हो-शोभा सौन्दर्य से संपन्न हों । (तएण ते कोटुम्बिक
पुरिसा पडिमुणेति, जा करावेति) राजा की इस प्रकार की आज्ञा को
उन कौटुम्बिक पुरुषों ने मान लिया और हस्तिनापुर जाकर उन्होंने
पांच प्रासाद कथित रूपसे बनवा दिये । (तएण से पडुण पचहिं पडवेहि
दोवइए देवीए सद्धि हय गय सपरिखुडे कपिलपुराओ पडिनिक्खमइ २
जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए) इसके बाद वे पांडुराजा पांडवों
और द्रौपदी देवी को साथ लेकर हय, गज, आदि चतुरगिणी सेना के
साथ २ काम्पिल्यपुर नगर से चल दिये-चलकर जहां हस्तिनापुर नगर
था-वहां आये (तएण से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमणं

पाये पाडवे। भाटे पाय उत्तम भडेल गनावडावे। भडेल छिया डोवा जेधये
आ भडेलोतु पलुंन पडेला अन्वयनभा पलुंनवाभा आवेला मेघ कुमादेना।
भडेलो जेवु जल्लो लेवु जेधये यावत् आ गधा भडेलो धल्ला से डो। थालला
ओधी युक्त तेमज शोला तथा सौदर्य संपन्न डोवा जेधये (तएण ते
कोटुम्बिक पुरिसा पडिमुणेति जाव करावेति) आ जलनी राजनी आज्ञाने
कौटुम्बिक पुरुषो जे नवीकारी लीधी अने हस्तिनापुर जग्ने तेओ जे डडेवा
मुज्जं ज पाय भडेलो तैयार करावी दीधा

(तएण से पडुर पचहिं पडवेहिं दोवइए देवीए सद्धि हयगयसपरिखुडे
कपिलपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए)

त्यारपछी ते पांडु राजा पाये पाडवे। अने द्रौपदी देवीने लधने साथे
घोडा, हाथी वगेदनी चतुरगिणी सेनानी साथे काम्पिल्यपुर नगरनी गडार
नीकज्या अने नीकजीने जया हस्तिनापुर नगर डहुं त्या पडोअ्या

(तएण से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमणं जाणित्ता कोटुम्बिक०

મન કુન્ત । તતઃ સ્વલુ વાસુદેવપ્રમુખા પ્રત્યેક ૨ યાવત્ પ્રાધારયત્ ગમનાય-
હસ્તિનાપુર નગર ગતુ મૃત્વા ઇત્યર્થઃ ।

તતઃ સ્વલુ સ પાન્ડનામકો રાજા કૌટુમ્બિકપુરુષાન્ શ્રદ્ધયતિ, શ્રદ્ધયિત્વા
પ્રથમવાદીત્-ગચ્છત સ્વલુ યુય દે દેવાનુપ્રિયાઃ । હસ્તિનાપુરે પશ્ચાર્ના પાન્ડવાનાં
પશ્ચ ' પાસાયવર્હિસપ ' પ્રાસાદાયતંસકાન્ વારયત । કિં ભૂતાનિત્યાહ-' અમ્બુ-
ગમયમૃસિય ' અમ્બુદ્રતોચ્છિન્તાન્-અત્યુચ્ચાનિત્યર્થઃ । પર્ણક-પ્રથમાધ્યયનોક્ત-

અણુગિણ્માણા અકાલપરિણીણ સમોસરહ) હજારોં રાજાઓં સે અપને
દોનોં હાથોં કી અજલિ કરકે ઓર ઉસે શિર પર રત્નકર કે ઘડી નમ્રતા
કે સાથ નમસ્કોર કરકે-હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુપ્રિયો ! હસ્તિનાપુર
નગર મેં પાચ પાઢવોં ઓર દ્રૌપદી દેવી કા કલ્યાણકાંરી ઉત્સવ હોગા
હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ સય મેરે ઉપર અનુગ્રહ કરકે શીઘ્ર સે
શીઘ્ર પધારે । (તણ વાસુદેવપામોક્ત્યા પત્તેય ૨ જાવ પહારેત્થ ગમ
ણા) હમ કે યાદ વે વાસુદેવ પ્રમુખ પ્રત્યેક જન વર્હા હસ્તિના પુર
જાને કે લિયે પ્રસ્થિત હો ગયે । (તણ સે પહુરાયા કોટુમ્બિકપુરિસ
સદાવેહ ૨ પ્રથ વયાસી-ગચ્છહ જતુન્મે દેવાણુપ્પિયા હત્થિણાઝરે પચ્છહ
પહવાણ પચ પાસાયવર્હિસપ કારેહ, અમ્બુગમયમૃસિય વણ્ણઓ જાવ પહિ
રુવે) હતને મેં પાહુરાજા ને કૌટુમ્બિકપુરુષોં કો બુલાયા ઓર બુલાકર
ઉનસે એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ લોગ હસ્તિના પુર જાઓ વહા
જાકર પાવોં પાઢવોં કે લિયે પાંચ શ્રેષ્ઠ પ્રાસાદ વનવાઓ । વે પ્રાસાદ

હજારો રાજાઓને પોતાના બને હાથોની અજલિ બતાવીને અને તેને
મસ્તકે મૂકીને ખૂબ જ નમ્રપણે નમસ્કાર કર્યા અને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી
કે હે દેવાનુપ્રિયો ! હસ્તિનાપુર નગરમાં પાચે પાઢવો તેમજ દ્રૌપદી દેવીના
કલ્યાણકારી ઉત્સવ થશે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સૌ મારા ઉપર કૃપા
કરીને સત્વરે ત્યાં પધારો । (તણ વાસુદેવપામોક્ત્યા પત્તેય ૨ જાવ પહારેત્થ
ગમણા) ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેક રાજા ત્યાંથી હસ્તિનાપુર જવા
ઉપડી ગયા

તણ સે પહુરાયા કોટુમ્બિકપુરિસ સદાવેહ ૨ પ્રથ વયાસી-ગચ્છહ જ
તુન્મે દેવાણુપ્પિયા હત્થિણાઝરે પચ્છહ પહવાણ પચ પાસાયવર્હિસપ કારેહ,
અમ્બુગમયમૃસિય વણ્ણઓ જાવ પહિરુવે)

તે વખતે પાહુ રાજાએ કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવ્યાને
તેઓને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે હસ્તિનાપુર જાઓ

उपागत्य तथैव यावद् विहरन्ति । ततः खलु स पाण्डु राजा हस्तिनापुर नगर-
मनुपविशति, अनुपविश्य कौटुम्बिकरूपान् शङ्कयति, शङ्कयित्वा एवमवादीत्-
यूयं खलु हे देवानुप्रियाः । त्रिपुलम् अग्नपानपानखाद्यस्वाद्य, उपस्कारयत,
उपस्कार्य यज्ञेयं वासुदेवप्रमुखाम्स्तर्जोपनयत । तथैव यावद् उपनयन्ति, ततस्ते
कौटुम्बिकरूपास्तथैव त्रिपुलमग्नादि चतुर्विधाऽऽहारमुपस्कारयन्ति उपस्कार्य
यावद् वासुदेवादीनामन्तिके-उपनयन्ति=उपस्थापयन्ति ।

नगरं या वहा आगये । (तएणं से पडुराराया तेसि वासुदेवपामोक्त्वा
ण आगमण जाणित्ता हट्टुट्टे ण्हाण कयमलिकम्मे जहा दुवण जाव जहा
रिह आवासे दलयति, तएण ते वासुदेव पा० उहवे रायमहस्सा जेणेव
सयाइ २ आयासाइ तेणेव उवाग० तहेव जाव विहरति) वासुदेव
प्रमुख उन हजारों राजाओं का आगमन जानकर पाडुराजाने हर्षित एवं
संतुष्ट होकर स्नान किया वायसादि पक्षियों के लिये अन्नादि का देने
रूप मलिकर्म किया- जिस प्रकार इन्द्र राजाने यथा योग्य आवास-
स्थान इन्हीं के लिये दिये थे उसी तरह पाडुराजा ने भी उन्हें जो जिस
के योग्य स्थान था वह आवासस्थान दिया । पश्चात् वे वासुदेव प्रमुख
हजारों राजा जहा अपने २ ठहरने के लिये आवासस्थान थे वहा गये
वहा जाकर वे उसी तरह से ठहर गये । (तएण से पडुराराया हत्थिणा
उर नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, कोडु पिय० सदावेइ, सदावित्ता
एव वयासी-तुम्हेण देवाणुप्पिया ! विउल असण ४ तहेव जाव उव

(तएण से पडुराराया तेसि वासुदेवपामोक्त्वा आगमण जाणित्ता हट्टुट्टे
ण्हाण कयमलिकम्मे जहा दुवण जाव जहारिह आवासे दलयति, तएण ते वासुदेव
पा० उहवे रायमहस्सा जेणेव सयाइ २ आयासाइ तेणेव उवाग० तहेव
जाव विहरति)

वासुदेव प्रमुख ते डुब्बरे राज्ञोनु आगमन मासणीने डुप्पि तेमज्ज
संतुष्ट वर्धने पाडु राज्ञो स्नानं कथं कागडा वगेरे पक्षीओना माटे अन्न
वगेरेना लाग अधीने मलिकर्मं कथं इपह गन्तव्ये जेम ते राज्ञोने यथा
योग्य आवास स्थानो रडिवा माटे आप्प्या हुता तेमज्ज पाडु राज्ञो पणु
तेओ मधाने उचित आवासो आप्प्या त्थारपणी तेओ वासुदेव प्रमुख डुब्बरे
राज्यो न्या पोतपोताना रोकवाना आवागो हुता त्या गया, त्या पडोयीने
तेओ त्या रोकधि गया

(तएण से पाडुराराया हत्थिणाउर नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता,
कोडुपिय० सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी-तुम्हेण देवाणुप्पिया ! विउल असण

હસ્તિનાપુરસ્ય નગરસ્ય યદિઃ પ્રદેશે વાસુદેવપ્રમુખાણાં વહ્નના રાજમાસ્રાણામાશ્રા
 સાન્ કારયત, કૌટુમ્બિકાસાન્ ૩ યાદ-‘અણેગમ્ભ’ ઇત્યાદિ । અનેકસ્તમ્ભ
 શતમનિરિષ્ટાન્ , તથેવ-યથાડગ્રાસાન્ કારયિતુ પાણ્ડના કથિત, તથેવ કારયિત્વા
 કૌટુમ્બિકપુરુષા યાત્ પ્રત્યર્પયન્તિ-રાત્રે નિવેદયન્તિ સ્મ । નન’ મયુ વાસુદેવ
 પ્રમુખા ગદ્ સહસ્રમન્યકા રાજાનો યતીય સ્વકાઃ સ્વકા આચાસ્ત્રીઓપાગચ્છન્તિ,
 જાણિત્તા કૌટુમ્બિક૦ સદાવેદ સદાવિત્તા ૧૧ વયાસી-ગચ્છ ૧૧ તુમ્હે
 દેવાણુપિયા ! હતિથિનાડરસ્ત નગરસ્ત યદિયા વાસુદેવપામોક્ત્વાણ
 વહ્ન રાયસહસ્તાણ આવાસે કરેહ) તાં આકર ડન પાંડુગજા ને ડન
 વાસુદેવ પ્રમુખ હજારોં રાજાઓં કા આગમન જાનકર કૌટુમ્બિક પુરુષોં
 કો ઘુલાયા ઓર ઘુલાકર ડનસે હમ પ્રકાર કતા-હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ
 લોગ જાઓ ઓર હસ્તિનાપુર નગર કે ગાદિ વાસુદેવ પ્રમુખ હજારોં
 રાજાઓં કો ઠહરને કે લિયે આચાસોં કો યનવાઓ (અણેગમ્ભસય
 તહેવ જાવ પચ્ચપિણતિ, તણ તે વાસુદેવપામોક્તા ગદ્ રાયસહસ્તા
 જેણેવ હતિથિનાડરે તેણેવ ડવાગચ્છતિ) યે આવાસ અનેક સેકઢોંસ્તઓં
 સે યુક્ત હો । હસ પ્રકાર જૈસે આચાસોં કો યનવાને કે લિયે પાંડુ રાજા
 ને ડન કૌટુમ્બિક પુરુષોં સે કતા યા-વૈસે હી આચાસ ડન કૌટુમ્બિક
 પુરુષોં ને યનવાદિયે ઓર યનવાકર પીટે હસકી ગરર ઓ રાજા કો
 કરદી । હમકે યાદ વે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારોં રાજા જહા હસ્તિનાપુર

સદાવેદ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-ગચ્છ ૧૧ તુમ્હે દેવાણુપિયા ! હતિથિનાડરસ્ત
 નગરસ્ત યદિયા વાસુદેવપામોક્ત્વાણ વહ્ન રાયસહસ્તાણ આવાસે કરેહ)

ત્યા આવીને તે પાંડુ રાજાએ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારે રાજાઓને
 આવી ગયેલા જાણીને પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને જોલાવ્યા અને જોલાવીને
 તેમને આ પ્રમાણે વદ્ય કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જોડો જાઓ અને હસ્તિનાપુર
 નગરની બહાર વાસુદેવ પ્રમુખ હજારે રાજાઓને રહવા માટે આવાસો બનાવો ।

(અણેગમ્ભસય૦ તહેવ જાવ પચ્ચપિણતિ, તણ તે વાસુદેવપામોક્ત્વા
 વહ્ન રાયસહસ્તા જેણેવ હતિથિનાડરે તેણેવ ડવાગચ્છતિ)

આ બધા આવાસો સેકઢો સ્ત્રોત્રી યુક્ત હોવા બોધએ આ રીતે પાંડુ
 રાજાએ જે જાતના આવાસો બનાવડાવવાનો હુકમ કર્યો હતો તે કૌટુમ્બિક
 પુરુષોએ તે જ જાતના આવાસો બનાવડાવી દીધા અને બનાવડાવીને કામ પુર
 થઈ જવાની રાત્રીને બપોર આવી ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારે રાજાઓ
 ત્યાં હસ્તિનાપુર નગર હતું ત્યાં આવી ગયા

स्नपयित्वा ' कल्याणकारि ' कल्याणकारि-शुभकारकं कर्म कारयति, कारयित्वा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रसंख्यकान् राज्ञो विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा पुष्पवस्त्रादिभिः सत्कारयति, समानयति, सत्कार्यं समान्य यावत् प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानो यावत् प्रतिगताः ॥ सू० २३ ॥

मूलम्—तएण ते पच पडवा दोवईए देवीए सद्धि कल्ला-
कल्लि वारवारेण ओरालाइ भोगभोगाइं जाव विहरति, तएण
से पडू राया अन्नया कयाइं पचहि पडवेहि कोंतीए देवीए

को और द्रौपदी देवी को एक पट्टक पर बैठाया—बैठाकर उन का श्वेत पीत कलशों से चादी और सोने के घड़ों से स्नान करवाया स्नान कर-
वाकर फिर उसने उनका शुभकारक कर्म करवाया । (करित्ता ते वासु-
देव पामोक्खे वहवे रायसहस्से विउलेण असण ४ पुप्फवत्थेण सक्कारेइ
सम्माणेइ जाव पडिविमज्जेइ, तएण ताइ वासुदेवपामोक्खाइ चट्ठहिं
जाव पडिगयाइ) शुभकारक कर्म करवाकर बाद में उन वासुदेव प्रमुख
हजारों राजाओं का उस पाटुगज ने विपुल अशन पान आदिरूप
चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्रादि से खूब सत्कार किया सम्मान
किया । यावत् फिर उन्हें अपने यहांसे अच्छी तरह से निदा कर दिया ।
इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहा २ से जो २ आये थे
वहा २ चले गये ॥ सू० २३ ॥

पावे पाडवे अने द्रौपदी देवीने ओक पट्टक ७५० जेसाउया अने जेसाडीने
सक्के तेमज पीणा उणशेथी ओटले के थादी अने सोनाना कणशेथी तेमने
स्नान उगव्यु स्नान कराव्या जाइ तेमणे तेमनी पासेथी शुल कर्मा करावडाव्या

(करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे वहवे रायसहस्से विउलेण असण पुप्फवत्थेण
सक्कारेइ, सम्माणेइ जाव पडिविमज्जेइ तएण ताइ वासुदेवपामोक्खाइ चट्ठहिं
जाव पडिगयाइ)

शुल कर्मा कराव्या जाइ ते वासुदेव प्रमुख डल्लरो राजन्थोने ते पाडु
राजन्थे विपुल अशन-पान वगेरे ३५ चतुर्विध आहाव्या तेमज पुष्प वस्त्र
वगेरेथीभूज सत्कार कर्थो अने सम्मान कर्थु यावत् त्यारपछी तेन्थोने त्याथी
सारी रीते निदाय कर्था वासुदेव प्रमुख डल्लरो राजन्थो पणु न्याथा आव्या
डला त्या जता रक्षा ॥ सूत्र २३ ॥

તત સ્વલ્લ તે વાસુદેવપ્રમુખા મહત્તો રાજાનઃ સ્નાતાઃ કૃતવત્ક્રિમાનઃ =
 કાકાદિજીવેભ્યઃ કૃતાન્નાદિસપ્તિમાગાઃ, તદ્ વિપુલમ્ અશન પાન યાગ સ્વાય
 તથૈવ-આસ્વાદયન્તો વિશ્વાદયન્ત પરિસુજ્ઞાના યાગદ્ વિહરન્તિ=આસતેસ્મ ।
 તતસ્તદનન્તર મ પાણ્ડરાના તાન પશ્ચ પાણ્ડરાન્ દ્રોપદી ચ દેવી 'પટ્ટય' પટ્ટક=
 પટ્ટકોપરિ 'દુરુહેદ' દુરોદયત્તિ=આરોદયતિ । આરોય યેતવીતૈઃ કલયૈઃ સ્તપયતિ,

ળેતિ, તળણ તે વાસુદેવપામોક્ત્વા મહત્તે રાયા પઢાયા કયમલિકમ્મા ત
 વિઝલ અસળ ૪ તહેવ જાવ વિહરતિ-તળણ સે પઢુરાયા પચપઢવે દોવઠ
 ચ દોવિં પટ્ટય દુરુહેદ, દુરુહિત્તા સેયપીર્ણિ પઢાવેતિ, પઢાવિત્તા કલ્લાણ
 કારિ કરેદ) હસ કે વાદ પાઢુરાજા ને હસ્તિનાપુર નગર મેં પ્રવેશ ક્રિયા
 પ્રવેશ કર કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો ઘુલાયા ઘુલાકર ઉનસે તેસા કરા હે
 દેવાનુપ્રિયો । તુમ લોગ વિપુલ માત્રામેં અશનાદિ રૂપ ચતુર્વિધ આહાર
 ઘનવાઓ ઘનવાકર ફિર ઉસે જહા વાસુદેવ પ્રમુખ રાજા ઠરે હુળ હેં
 વહા લેજાઓ । હસ પ્રકાર કી અપને રાજાકી આજ્ઞાનુસાર ઉન્હોને વૈસા
 હી ક્રિયા-ચતુર્વિધ આહાર ઘનવાયા ઓર ફિર ઉસે વાસુદેવ આદિ
 રાજાઓ કે પાસ પહુંચા દિયા । આહાર કે પહુંચને પર ઉન વાસુદેવ
 પ્રમુખ રાજાઓં ને સ્નાન ક્રિયા યલિકર્મ ક્રિયા-કાકા આદિ જીવોં કે
 લિયે જૂન અન્નમેં સે વિભાગ દેનેરૂપ ક્રિયાકી-વાદમેં ઉન્હોં ને ઉસ ચતુ
 વિધ આહાર કો ક્રિયા । હસકે પશ્ચાત્ પાઢુરાજા ને ઉન પાચોં પાઢવોં

૪ તહેવ જાવ ઉવળેતિ, તળણ તે વાસુદેવપામોક્ત્વા મહત્તે રાયા પઢાયા કયમલિક
 કમ્મા ત વિઝલ અસળ ૪ તહેવ જાવ વિહરતિ-તળણ સે પઢુરાયા પચ પઢવે દોવઠ
 ચ દેવિં પટ્ટય દુરુહેદ, દુરુહિત્તા સેયપીર્ણિ કલસેર્ણિ પઢાવેતિ પઢાવિત્તા
 કલ્લાણકારિ કરેદ)

ત્યારપછી પાઢુરાજા હસ્તિનાપુર નગરમા પ્રવિષ્ટ થયા પ્રવિષ્ટ થઇને
 તેઓએ કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું
 કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો વિપુલ માત્રામા અશન વગેરે રૂપ ચાર ભતનો
 આહાર ખનાવડાવો ખનાવડાવીને તમે તે આહારને જ્યાં વાસુદેવ પ્રમુખ
 રાજાઓ રોકાયા છે ત્યાં લઈ જાઓ, આ રીતે પોતાના રાજાની આજ્ઞા સાલ
 ખીને તે લોકોએ તે પ્રમાણે જ કયું તેઓએ ચાર ભતના આહારો ખના
 વડાવ્યા અને ત્યારપછી તે આહારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓની પાસે પહોં
 ચાડી દીધા આહાર પહોંચાડી દીધા બાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓએ સ્નાન
 કર્યું અને કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન લાગ આપીને બલિકર્મ કર્યું ત્યાર
 પછી તેઓએ તે ચાર ભતના આહારને જમ્યા ત્યારબાદ રાજાઓ તે

तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वदइ णमसइ महरिहेण
 आसणेणं उवणिमतेइ, तएण सेकच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए
 दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुरायं
 रज्जे जाव अतेउरेय कुसलोदतं पुच्छइ, तएण से पडूराया कौन्ती-
 देवी पच य पडवा कच्छुल्लनारय आढति जाव पज्जुवासंति,
 तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारय असजय अविरय अपडिहयप-
 च्चक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु नो आढाइ नो परिचाणइ नो अब्भु-
 ट्ठेइ नो पज्जुवासइ ॥ सू० २४ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततस्तस्मिन्मन्तर खलु ते पञ्चपाण्डवा
 द्रौपद्या देव्या सार्धं ‘कल्लकल्लि’ कल्याकल्लये प्रतिदिनम् वारवारेण उदारान्
 भोगभोगान् यावद् शुभ्राना विहरन्ति । तत खलु स पण्ड राजाऽन्यदा कदाचित्
 पञ्चभिः पाण्डवैः कुन्त्या देव्या द्रौपद्या देव्या च सार्धं ‘अतो अतेउरपरियाल’

‘तएण ते पच पडवा’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) हमके नाइ (ते पच पडवा) वे पाँचों पांडव (दोवईए
 देवीए) द्रौपदी देवी के साथ—(कल्लकल्लि वारवारेण ओरालाड भोग
 भोगाड जाव विहरति—तए ण से पडूराया अन्नया कयाई पचई पडवेई
 कौन्तीए देवीए दोवईए देवीए य सद्धि अतेउरपरियालसद्धि सपरिवुडे
 सीहासणवरगए यावि विहरइ) प्रतिदिन बारी बारी से उदारकाम
 भोगों को भोगने लगे एक दिन की बात है—कि पांडु राजा किसी एक
 समय पाँचों पांडवों एव अपनी पत्नी कुन्ती देवी और पुत्रवधू द्रौपदी

टीकार्थ—“तएण ते पच पडवा इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्वारपत्नी (ते पच पडवा) ते पाच पांडवे। (दोवईए
 देवीए) द्रौपदी देवीनी साथे

(कल्लकल्लि वारवारेण ओरालाड भोगभोगाड जाव विहरति—तएण
 से पडूराया अन्नया कयाई पचई पडवेई कौन्तीए देवीए दोवईए देवीए य
 सद्धि अतेउरपरियालसद्धि सपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ)

हरदोः चानाक्षन्ती उदार भोग भोगत्वा लाग्या, ओक दिनसनी बात

दोवइए देवीए य सछि अंतो अंतेउरपरियालसद्धि सपरिवुडे
 सीहासणवरगए यावि विहरइ, इम च ण कच्छुल्लणारए दस
 णेण अइभइए विणीए अतो२ य कल्लसहिया मज्झन्थोवत्थिए
 य अल्लीणसोमपियदसणे सुखे अमइलसगलपरिहिए काल
 मियचम्मउत्तरासगरट्ठयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदि-
 त्तसिए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलवागलघरे हत्थकयकच्छभीए
 पियगवत्थे धरणिगोयरप्पहाणे सुवरणावरणिओवयणिउप्पयणि
 लेसणीसु य सकामणिअभिओगपणत्ति गमणीथभणीसु य
 बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य वेस
 वरस्स य पज्जुन्नपईवसवअनिरुद्धणिसद-उम्मुयसारणगयसुमुह
 दुम्मुयहातीण जायवाणं अद्धुट्ठाण कुमारकोडीण हिययदइए
 सथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भडणाभिलासी बहुसु य सम
 रसयसपराएसु दसणरए समतओ कलहसदक्खण अणुगवेस
 माणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोककवलवगाणआम
 तेऊण त भगवई पक्कमणिं गगणगमणदच्छ उप्पइओ गगणमभि
 लघयतो गामागरनगरनिगमखेडकब्बडमडवदोणसुहपट्टणासम
 सवाहमहस्समडिय थिमियमेइणीतल वसुह ओलोइतो रम्म हत्थि-
 णाउर उवागए पडुरायभवणपि अइवेगेण समोवइए, तएणं से
 पडुराया कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ पासित्ता पवहि पड-
 वेहि कुतीए य देवीए सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता
 कच्छुल्लनारय सत्तट्ठपयाइपच्चुगच्छइ • ।

રહ્યવચ્છે' કાલમૃગવર્મોત્તરાસગરચિતવક્ષા:-કૃષ્ણમૃગવર્મોત્તરાસજ્ઞેન રચિત શોભિત વક્ષો यस્ય સ તથા, કૃષ્ણમૃગવર્મોત્તરીપવસ્ત્રધારકઃ । તથા-‘દઢકમઢલુહત્યે’ દઢકમઢલુહસ્ત:-‘જડામઢલુહત્તસિરણ’ જડામુકુટદીપ્તશિરઃ, જણોવદ્યગણે-તિયમુજમેહલાવાગલધરે’ યજ્ઞોપવીતગણેત્રિકામુજ્જમેહલાવલકલધર:-તત્ર યજ્ઞોપવીત યજ્ઞસૂત્ર ગણેત્રિકા-રુદ્રાક્ષકૃત કલાચિકાભરણ, મુજ્જમેહલા-મુજ્જમય કટિ બન્ધનસૂત્ર વલ્કલ વૃક્ષત્વક, તેર્પા ધારકઃ સ્કન્ધોપરિયજ્ઞસૂત્રધારી, કરમૂલે ધૃત રુદ્રાક્ષમાલઃ, મુજ્જમયકટિસૂત્રધારી, શરીરે પરિધૃતવલ્કલ હત્યર્થઃ । ‘હત્યક્રયકચ્છમીષ’ હસ્તકૃતકચ્છપિકા:-હસ્તે કૃતા કચ્છપિકા-વીણા યેન સ તથા, ‘પિયગંધન્વે’ પ્રિયગન્ધર્વ:-ગાનમિયઃ, ‘ધરણિગોચરપ્પહાણે’ ધરણિગોચરપ્રધાન-ધરણિગોચરાણા-ભૂમિચારિણા જનાના મધ્યે પ્રધાનસ્તસ્યા કાશેઽપિ વિહરણશીલત્વાત્

ચમ્મઽત્તરાસગરહ્યવચ્છે દઢકમઢલુહત્યે, જડામઢલુહત્તસિરણ, જન્નો વહ્યગણેતિય મુજમેહલાવાગલધરે, હત્યક્રયકચ્છમીષ, પિયગંધન્વે, ધરણિગોચરપ્પહાણે, સવરણાવરણિઓવયણિઽપ્પયણી લેસણીસુયસકામણિ અભિઓગપ્પણત્તિ ગમણીયમણીસુ ય વહુસુ વિજ્ઞાહરીસુ વિજ્ઞાસુ વિસ્સુયજ્ઞસે) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासग से सुशोभित था । दण्ड और कमण्डलु इनके हाथोंमें था । जटारूपी मुकुट से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था । यज्ञसूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका कलाई का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुज्जमेखला-मुज का बना हुआ कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्होंने धारण कररक्खी थी । हाथमें कचछपिका-वीणा ले रक्खी थी । गान इन्हें बहुत प्रिय था । भूमि गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे-क्यों कि ये आकाश में भी विहार

(કાલમિયચમ્મઽત્તરાસગરહ્યવચ્છે દઢકમઢલુહત્યે જડામઢલુહત્તસિરણ, જન્નોવહ્ય ગણેતિયમુજમેહલાવાગલધરે, હત્યક્રયકચ્છમીષ પિયગંધન્વે, ધરણિગોચરપ્પહાણે, સવરણાવરણિઓવયણિઽપ્પયણિલેસણીસુ ય સકામણિ અભિઓગપ્પણત્તિ ગમણીયમણીસુ ય વહુસુ વિજ્ઞાહરીસુ વિજ્ઞાસુ વિસ્સુયજ્ઞસે)

તેમનુ વક્ષસ્થળ કાળા હરણના ચર્મરૂપ ઉત્તરાસગમાં શોભતુ હતુ ૬૩ અને કમઢળ તેમના હાથોમાં હતા જટા રૂપી મુકુટથી તેમનુ મસ્તક પ્રકાશિત થઈ રહ્યુ હતુ યજ્ઞ સૂત્ર-જનેઊ, ગણેત્રિકા-કાડામાં પહેરવાની આલ રહ્યુ રૂપ રૂદ્રાક્ષની માળા, મુજ-મેખલા-મુજનુ બનેલુ કેડમાં પહેવાનુ બન્ધન સૂત્ર અને વૃક્ષકની છાલ તેઓએ ધારણ કરેલી હતા હાથમાં તેઓએ કચ્છ પિકા-વીણા ધારણ કરેલી હતી સંગીત તેમને ખૂબજ ગમતુ હતુ ભૂમિ ગોચરીઓ તેઓ પ્રધાન હતા કેમકે તેઓ આકાશમાં વિચરણ કરતા

अन्तः=अतःपुरस्य मासादमग्नये अतःपुरपरिवारेण 'परियाल' इति लुप्तवृत्ती
 यान्त साधं सपरितृतः सिंहासनरगतश्चापि निदरति । 'इमं च' अस्मिन् समये
 खलु 'कञ्जुल्लणारण' कञ्जुल्लनाम्नामसिद्धो नारदः दर्शनेन 'अहमद' ^ए
 अतिभद्रकः=भद्रदर्शनः 'विणीण' विनीतः=नम्रो राखत 'अतो य' अन्तः-
 कलुषदयः, 'मञ्जुत्थोवत्तिए य' माध्यस्थोपस्थित=यागतो मध्यस्थभाव प्राप्तः
 'अल्लीणसोमपियदसणे' आलीनसौम्यमियदर्शनः आलीनानामाश्रिताना सौम्यम्
 =आलोककं, मिय = प्रीतिकारक दर्शन यस्य स तथा, मुरूपः - सुन्दराकृतिक,
 तथा-'अमइलसगलपरिहिए' अमलिनसङ्कटपरिहित=अमलिन सफलम्-अल-
 ण्डम् परिहित-खलुलसखरूप परिधान यस्य स तथा, 'कालमियचमउत्तरासण

के साथ अतःपुर के प्रसाद के भीतर अन्त पुरपरिवार के साथ
 सिंहासन पर बैठे हुए थे-कि (इमं च ण) इसी समय (कञ्जुल्लणारण
 पडुरायभवणसि अइवेगेण समोवइए दसणे ण अइमदए, विणीए,
 अतोय कलुसहियए मञ्जुत्थोवत्तिए य, अल्लीणसोमपियदसणे सुरुवे
 अमइलसगलपरिहिए) पादुराजा के भवन में कञ्जुल्लनाम से प्रसिद्ध
 नारद गगन-आकाश-मार्ग से यद्दे वेगसे उतर कर आये। नारद देखने
 में अति भद्र थे। ऊपर से बड़े विनीत थे। परन्तु भीतर में इनका
 हृदय बहुत अधिक कलुषित था। केवल ऊपर से ये माध्यस्थ भाव
 सपन्न थे। अपने आश्रित व्यक्तियों को इनका दर्शन आलोकक एवं
 प्रीति कारक होता था। आकृति उनकी बड़ी सुन्दर थी। इनका बल्कल
 रूप परिधान अमलिन-सफ स्वच्छ और खण्ड रहित था। (कालमिय

छे के ते पाडु राजा ठाई ओक वणते पाये पाडवे, पोतानी पत्नी कुती देवी
 अने पुत्र वधु द्रौपदीनी साथे खण्डवासना भडेवनी अदर पोताना परिवारनी
 साथे निडासन उपर ओका हुता (इमं च ण) ते वणते

(कञ्जुल्लणारण पडुरायभवणसि अइवेगेण, समोवइए दसणे ण अइमदए
 विणीए अतोय कलुसहियए मञ्जुत्थोवत्तिए य, अल्लीणसोमपियदसणे सुरुवे
 अमइलसगलपरिहिए)

पाडु राजा भवनमा कञ्जुल्ल नाम्नी पडायेला नारद गगन-आकाश
 मार्गंथी अहुं ञ वेगंथी उतरिने आब्या नारद देणावमा अत्यंत लद्रे हुता
 उपर उपरंथी तेओ ओकदम बिनम्र हुता पणु अतर तेभनु भन भूण ञ
 कलुषित हुतु इकत उपर उपरंथी ञ तेओ माध्यस्थ लाव सपन्न हुता
 आश्रित व्यक्तिओने तेभनु दर्शन आहुलादक अने प्रीतिकारक हुतु तेभनी
 आकृति भूण ञ सुंदर हुती तेभनु वडकल रूप परिधान, ओकदम स्वच्छ-निर्मल
 हुतु अने अउरहित हुतु

रह्यवच्छे' कालमृगचर्मोत्तरामगरचितवक्षाः-कृष्णमृगचर्मोत्तरासङ्गेन रचित शोभित
वक्षो यस्य स तथा, कृष्णमृगचर्मोत्तरीयवस्त्रधारक' । तत्रा- 'दण्डकमण्डलुहस्त्ये'
दण्डकमण्डलुहस्तः- 'जडामण्डदित्तसिरए' जटामुकुटदीप्तशिरस्क', जण्णोवद्यगणे-
त्तियमुजमेहलावागलधरे ' यन्नोपवीतगणेत्रिका मुजमेखलावलकलधरः-तत्र यन्नो-
पवीत यन्नसूत्र गणेत्रिका-रुद्राक्षकृत कलाचिकाभरण, मुजमेखला-मुजमय कटि
बन्धनसूत्र वलकल वृक्षत्वक्, तेषां धारक. स्कन्धोपरियज्ञसूत्रधारी, करमूले धृत
रुद्राक्षमाला, मुजमयकटिसूत्रधारी, शरीरे परिधृतवलकल इत्यर्थः । ' इत्थकयकच्छ
भीए ' हस्तकृतकच्छपिका-इस्ते कृता कच्छपिका-वीणा येन स तथा, ' पियग
धन्वे ' पियगन्धर्वः-गानमिय, ' धरणिगोयरप्पहाणे ' धरणिगोचरप्रधान-
धरणिगोचराणा-भूमिचारिणा जनाना मध्ये प्रधानस्तस्या काशेऽपि विहरणशीलत्वात्

चम्भउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहस्त्ये, जडामण्डदित्तसिरए, जन्नो
वद्यगणेत्तिय मुजमेहलावागलधरे, इत्थकयकच्छभीए, पियगधन्वे, धर-
णिगोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणी लेसणीसुयसकामणि
अभिओगपण्णत्ति गमणीयभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु
विस्सुयजसे) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासग से
सुशोभित था । दण्ड और कमण्डलु इनके हाथोंमें था । जटारूपी मुकुट
से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था । यज्ञसूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका कलाई
का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुजमेखला-मुज का बना हुआ
कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्होंने धारण कररक्खी थी ।
हाथमें कच्छपिका-वीणा ले रक्खी थी । गान इन्होंने बहुत प्रिय था । भूमि
गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे-अथो कि ये आकाश में भी विहार

(कालमियचम्भउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहस्त्ये जडामण्डदित्तसिरए,
जन्नोवद्य गणेत्तियमुजमेहलावागलधरे, इत्थकयकच्छभीए पियगधन्वे, धरणि-
गोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य सकामणि अभि-
ओगपण्णत्ति गमणीयभणीसुय बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे)

तेमनु वक्षस्थल काणा हरखुना यमइय उत्तरासगथा शैलतु इतु
दंड अने कमण्डलु तेमना हाथेमा इता जटा इपी मुकुटथी तेमनु मस्तक
प्रकाशित थई रह्यु इतु यज्ञ सूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका-काशमा पडेरवाना आल
रख्यु इय रुद्राक्षनी माला, मुज-मेखला-मुजनु जनेतु डंडमा पडोवानु ज धन
सूत्र अने वृक्षकी छाल तेओओ धारख्यु करेवी इता हाथमा तेओओ कर
पिका-वीणा धारख्यु करेवी इती संगीत तेमने भूमज गमर्तु इतु भूमि
गोचरीओने वर्ये-तेओ प्रधान इता डेभडे तेओ आकाशमा विथख्यु करता

“ સવરણીરણિઞ્ચયણિઉષ્ણણિઞ્ચેત્તણીમુ ય ” મંચરણ્યારણ્યવપતન્યુત્પતની
 શ્લેષણીપુ ચ ' સવરણી-સમ્પાન્તર્ધાનકામિણી વિદ્યા, આવરણી-પરમ્યાન્તર્ધાન
 કારિણી વિદ્યા, અવપતનીઅધોઽવતરણી વિદ્યા, ઉત્પતની-ઉર્ગમનકારિણી વિદ્યા,
 શ્લેષણી-ચ્છલેષાદિયન્ મન્થાનકારિણી વિદ્યા, તામુ, તથા-‘ સક્રામણિ અભિ
 ઓગપ્ણન્તિ ગમણીથમણીમુ ય ’ મક્રમણ્યમિયોગપદ્મપ્તિગમનીસ્તમ્ભનીપુ ચ-
 સક્રામણી-વિદ્યા-વિશેષઃ યયા-પરશરીરાદૌ પ્રવેદ્યુ ગ્વનોતિ, સા વિદ્યા, અભિ
 યોગ, સ્વર્ણાદિનિર્માણવિદ્યા યશીકરણવિદ્યા ચ, પ્રજ્ઞસિ.=અવિદિતાથંત્રોધિની ગમની

કરતે થે । સવરણી, આવરણી અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી ઇતિ વિદ્યા
 ઓ મેં તથા સક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞસિ, ગમનો સ્તમ્ભની ઇતિ નાના
 પ્રકાર કી વિદ્યા પર સમન્ધો વિદ્યાઓ મેં ઇતિ કીર્તિ વિરચાત થી ।
 જિસ વિદ્યા કે પ્રભાવ સે અપને આપકો અન્તર્ધાન કર દિયા જાતા
 જાતા હૈં ઉસકા નામ સવરણી વિદ્યા હૈં । દૂસરા જિસ વિદ્યા સે અન્ત
 ધાન કરદિયા જાતા હૈં ઉસ વિદ્યા કા નામ આવરણી વિદ્યા હૈં । જિસ
 વિદ્યા કે પ્રભાવ સે ડૂપર સે નીચે ઉતરા જાતા હૈં ઉસકા નામ અવ
 પતની ઓર જિસકે પ્રભાવ સે ઉર્વ મેં ગમન કિયા જાતા હૈં ઉસકા
 નામ ઉત્પતની વિદ્યા હૈં । ચ્છલેષ આદિ કી તરહ જો ચિપકા વર્તી હૈં
 વહ શ્લેષણી વિદ્યા હૈં । જિસ વિદ્યા કે વલ સે દૂસરે કે શરીરમેં પ્રવિષ્ટ
 હોના હોના હૈં-એસી પરશરીરપ્રવેશકારિણી વિદ્યાકા નામ સક્રમણી
 વિદ્યા હૈં । સ્વર્ણ આદિ કે બનાવે કી જો નિપુણતા હૈં-તથા પરકો

હતા સવરણી, આવરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા
 જોમા તેમજ સક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞસિ, ગમની, સ્તમ્ભની આ અનેક
 જાતની વિદ્યાધર સબધી વિદ્યાજોમા તેમની કીર્તિ જોએર પ્રસરેલી હતી જે
 વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સવરણી વિદ્યા
 છે જે વિદ્યાથી જીવને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે આવરણી કહેવાય છે જે
 વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના
 પ્રભાવથી ઉર્વ (આકાશ) માં ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનું નામ ઉત્પ
 તની છે । વગેરેની જેમ જે ચોટાડી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે જે
 વિદ્યા । ના શરીરમાં પ્રવેશી શકાય જોવી પરકાય પ્રવેશ કરિણી
 ડિ । જે સોનું વગેરે બનાવવામાં જે નિપુણતા છે

જે શક્તિ છે તે વિદ્યા

-गमनप्रकर्षसाधिका-आकाशगामिनी च विद्याविशेषः-स्तम्भनी-स्तम्भनकारिणी
विद्या, तासु 'रुद्रमु विज्जाहरीमु विज्जासु' रुद्रमु-नानाविद्यासु विद्याधरीषु=विद्या-
धर सम्पन्निषु विद्यासु 'विस्मयजसे' विश्रुतयशा -विद्यासु नैपुण्या=विद्यातकीर्तिः,
इष्ट=प्रियः, रामस्य=उलदेवस्य केसरस्य=कृष्णवासुदेवस्य च पुन केपा प्रियः-
त्याह-'पञ्जुन्नर्षैवस्य अनिरुद्धनिमदउस्सुयमारणयसुमुहदुम्मुहार्डण जायवाण'
प्रद्युम्न प्रतीपशाम्बानिरुद्धनियोत्सुकसारणगजसुमुखदुर्मुखादीना यादवानाम्,
प्रद्युम्नादीना सख्यामाह-प्रद्युम्न, प्रतीप, शाम्बः, अनिरुद्धः, निपथः, उत्सुकः,

वश मे करने कि जो शक्ति है उस विद्या का नाम अभियोग विद्या है।
अविदित अर्थ जिस के प्रभाव से विदित हो जावे वह प्रज्ञप्ति विद्या
गमन प्रकर्ष की साधक तथा आकाश में गमन कराने वाली विद्या
गमनी विद्या स्तम्भन कराने वाली विद्यास्तम्भनी विद्या है। (इष्टे
रामस्य य केसरस्य य पञ्जुन्नर्षैवस्य अनिरुद्धनिसदउस्सुय सारण
गयसुमुह दुम्मुहार्डण जायवाण अनुद्वाण कुमारकोडीण हिययदइए
सयवण कलहजुद्धकोलाहलपिण, भडणाभिलासी, बहुसु य समर
सयसपराएसु दसणरण, समतओ कलहसदस्खण अणुगवेसमाणे,
असमाहिकरे दमारवरवीरपुरिसतिलोक्कचलवगाण, आमतेऊण त
भगवई पक्कमणि गगणगमणदच्छ चप्पइओ गगणमभिलघयतो
गामागरनगरनिगमखेडकन्नडमडवदोणमुहपट्टणासमसवाहसहस्समडिय
थिमिणमेइणीतल वसुह आलोइतो रम्म हत्थिणाउर उवागण) वलदेव एव
कृष्ण वासुदेव को ये इष्ट थे तथा साठे तीन करोड, प्रद्युम्न, प्रतीप,
साम्ब, अनिरुद्ध निपथ उत्सुक, सारण, गज सुकुमाल सुमुख दुर्मुख

विद्या छे अविदित अर्थ जेना प्रलाब्धी जाली शक्य ते प्रज्ञप्ति विद्या, गमन
प्रकर्षनी साधिका तेमज आकाशमा गमन कराना विद्या गमनी विद्या छे
वा १ छे स्तम्भन करानारी विद्या स्तम्भनी विद्या छे (इष्टे रामस्य य केस-
रस्य य पञ्जुन्नर्षैवस्य अनिरुद्धनिसदउस्सुयसारणगयसुमुहदुम्मुहार्डण जायवाण
अनुद्वाणकुमारकोडीण हिययदइए सयवण कलहजुद्धकोलाहलपिण, भडणाभिलासी,
बहुसयसमरसयसपराएसु दसणरण समतओ कलहसदस्खण अणुगवेसमाणे अस
माहिकरे दमारवरवीरपुरिसतिलोक्कचलवगाण, आमतेऊण त भगवई, पक्कमणि
गगणगमणदच्छ चप्पइओ गगणमभिलघयतो गामागरनगरनिगमखेडकन्नडमडव दोण
मुहपट्टणासमसवाहसहस्समडिय थिमिण मेइणीतल वसुह आलोइतो रम्म हत्थिणाउर
उवागण) वलदेव तेमज कृष्ण वासुदेवने तेओ इष्ट होता अने आठ त्रय करोड प्रद्युम्न,
प्रतीप, साम्ब, अनिरुद्ध, निपथ, उत्सुक, सारण, गज सुकुमाल, सुमुख दुर्मुख
वराय कुमाराने भाटे तेओ हृदयहयित होता ओटले के अण ज प्रिय होता ओटला

“ સરણાચરણિઓચણિઉપ્પણિલેસળીમુ ય ” મરણ્યાચરણપતન્યુત્પત્તની
 શ્લેષળીમુ ચ ‘ સરળી-સમ્પાન્તર્ધાનકારિણી વિદ્યા, આચરળી-પરિસ્યાન્તર્ધાન
 કારિણી વિદ્યા, અવપતનીઅપ્રોચવતરળી વિદ્યા, ઉત્પતની-ઋગમનકારિણી વિદ્યા,
 શ્લેષળી-ચ્છલેષાદિચ્છ મન્ધાનકારિણી વિદ્યા, તામુ, તથા-‘ મક્રામણિ અભિ
 ઓગપ્પણત્તિ ગમળીથમળીમુ ય ’ મક્રમણમિયોગમણ્ણત્તિગમનીસ્તમ્મનીમુ ચ-
 સક્રામળી-વિદ્યા-વિશેષઃ યથા-પરણીરાદો પ્રવેદુ ગ્ગનોતિ, સા વિદ્યા, અભિ
 યોગઃ સ્વર્ણાદિનિર્માણવિદ્યા યજીકરણવિદ્યા ચ, પ્રજ્ઞસિ-અવિદિતાર્થવોધિની ગમની

કરતે થે । સવરળી, આચરળી અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષળી इन विद्या
 ओं में तथा सक्रमणी, अभियोग, प्रज्ञसि, गमनो स्तम्भिनी इन नाना
 प्रकार की विद्यायः सम्बन्धी विद्याओ में इनकी कीर्ति विख्यात थी ।
 जिस विद्या के प्रभाव से अपने आपको अन्तर्धान कर दिया जाता
 जाता है उसका नाम सवरणी विद्या है । दूसरा जिस विद्या से अन्त
 र्धान करदिया जाता है उस विद्या का नाम आचरणी विद्या है । जिस
 विद्या के प्रभाव से ऊपर से नीचे उतरा जाता है उसका नाम अव
 पतनी और जिसके प्रभाव से ऊर्ध्व में गमन किया जाता है उसका
 नाम उत्पतनी विद्या है । च्छलेष आदि की तरह जो चिपका देती है
 वह श्लेष्पणी विद्या है । जिस विद्या के बल से दूसरे के शरीरमें प्रविष्ट
 होना होता है-ऐसी परशरीरप्रवेशकारिणी विद्याका नाम सक्रमणी
 विद्या है । स्वर्ण आदि के बनाने की जो निपुणता है-एव परकी

હતા સવરણી, આચરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા
 જોખાં તેમજ સક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞસિ, ગમની, સ્તમ્ભની આ અનેક
 જાતની વિદ્યાધર સમઘી વિદ્યાજોખા તેમની કીર્તિ જોખેર પ્રસરેલી હતી જે
 વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સવરણી વિદ્યા
 છે જે વિદ્યાથી ખીજને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે આચરણી કહેવાય છે જે
 વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના
 પ્રભાવથી ઉપ (આકાશ) મા ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનું નામ ઉત્પ
 તની છે વજ્ર લેપ વગેરેની જેમ જે જોટાટી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે જે
 વિદ્યાના બાધથી ખીજના શરીરમાં પ્રવેશી શકાય એવી પરકાય પ્રવેશ કરણી
 વિદ્યાનું નામ સક્રમણી વિદ્યા છે સોનું વગેરે બનાવવામાં જે નિપુણતા છે
 અને ખીજને વશવર્તી કરવાની જે શક્તિ છે તે

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये चलन्त नेमिनाथापेक्षया तेषाम्, 'आमतेऊण त भगवई' आमन्त्र्य=प्रयुज्य ता भगवतीं-विद्या, कीदृशीं विद्यामित्र्याह—'पक्रमणि' प्रक्रमणीं=प्रकृष्टगमनशक्ति शालिनीं 'गगणगमणदच्छ' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पडओ' उत्पतितः, गगनमभिलङ्घयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुल्लङ्घयन् 'ग्रामागरनगरनिगमखेटस्सर्पटमडवद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित' ग्रामाकरनगरनिगमखेटस्सर्पटमडवद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित, तत्र अष्टादशकरग्राक्षो ग्रामः, आकरः=स्वर्णाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगर, निगम=वणिग्ग्राम खेट=धूलीप्रकार, स्सर्पट=कुत्सितनगर, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिनास्ति तन्मडम्ब यत्र जलस्थलमार्गाभ्यां, भाण्डान्यागच्छति तत् द्रोणमुख, पत्तन=द्वेधा-जलपत्तन स्थलपत्तन, यत्र पर्यतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहति स सवाह एतैः सहस्रैर्मण्डितं, स्तिमितमेदिनीतल, 'वसुह' वसुधा भूमि 'ओलोइतो' अवलोकयन्=पश्यन् रम्य हस्तिनापुर नगरमुपागतं पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनादवतीर्ण इत्यर्थः ।

ततः सख स पाण्डुराज कच्छुल्लनारय 'कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्त पश्यति-दृष्ट्वा पञ्चभि पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय दशार्हं ये उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे । गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एव आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके ये आकाश में उड़ा करते थे । ये नारद, गमन से आकाशतल को उल्लघन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, स्सर्पट, मडव, द्रोणमुख, पत्तन, सवाह इनके सहस्रों से मण्डित हुई ऐसी स्तिमितमेदनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वहा से गगनमार्ग से होकर फिर ये पाण्डुराज के भवन में पहुँचे । ऐसा समय यहां लगाना (तर्ण से पाण्डुराज कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ) इस के बोद पाण्डुराज ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पामित्ता) तो

गमनभा विशिष्ट शक्ति आपनारी अने आकाशभा उडाडीने लध ननार ते भगवती प्रक्रमणी विधाना गणथी तेओ आकाशभा उडता रडेता डता आरीते आ नारद गमनथी आकाशने ओगणीने मडसो आम, आकर नगर, निगम जेट स्सर्पट, मडव, द्रोणमुख, पत्तन, सवाहोथी, मण्डित अने स्तिमित पृथ्वीने जेता अभ्युत्थि हस्तिनापुर नगरभा आव्या अने त्याथी आकाश मार्गभा धधने पाण्डुराजना भवनभा पडोअ्या (तर्ण से पाण्डुराज कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ) त्यारभाड पाण्डुराजने कच्छुल्लनारदने ज्यारे आवता जेथा (पामित्ता) त्यारे जेधने (पचहि पडवेहि) कुवीए देवीए सद्धि आसणाओ

સારણ', ગજસુકુમાલ', સુમુખઃ, દુર્મુખ, इत्यादयो यादवकुमारास्तेषा 'अद्भुतान्
 कुमारकोटीण' 'अर्धचतुर्थीनां' कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिममिताना यादव
 कुमाराणामित्यर्थः 'द्विययदक्ष' इदयदयितः=इदयमियः, 'सथाय' 'सस्ता
 यः-यादवाना प्रशसकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलमियः=रुद्धो=विवाद, युद्ध=
 शस्त्रादिभिः प्रहरण, कोलाहलो=जनाना महाध्वनिः, पते प्रियाः प्रमोदजनका
 यस्य स तथा, 'भट्टणामिलासी' भण्डनामिलापी=मण्डन राटि-रुद्ध 'राह'
 इति भाषाया तस्यामिलापी तथा-बहुषु च समरशतमपरावेपु=समरशतसग्रामेषु
 दर्शनरत=दर्शनाऽऽसक्तः, 'समतप्रो' समन्ततः सर्वप्रकारेण-परस्पर च कलह
 'सदखण' सदाक्षण=सर्वस्मिन् क्षणे 'अणुगवेसमाणे' अनुगवेपयन्=अन्वेष
 यन्, 'असमाहिकरे' असमाधिकरः-चित्तविक्षेपकारकः चित्तस्यास्थैर्यकर केण
 चित्तस्य विक्षेपकइत्याह—'दसारवरवीरपुरिसतिलोकबलपगाण' दशार्हवरवीर
 पुरुषत्रैलोक्यबलपगा-दशार्हा.-समुद्रविजयादयो दशसख्यका त एव वरा श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यन्त प्रिय थे। इसी
 कारण यादवों के प्रशसक थे। कलहविवाद युद्ध एव मनुष्यों का कोलाहल
 ये सब इन्हें बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राह
 (लडाई) के ये अभिलाषी बने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न
 किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस
 घात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसग्राम के देखने में
 इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय
 में ये कलह की गवेपणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा
 त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોના વખાણ કરનારા હતા કવહ-કકાસ, વિવાહ, યુધ્ધ
 અને માણસોના શોરબકાર આ બધું તેમને બહુ જ ગમતું હતું આ બધાથી
 તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કણ્યો તેમને ખૂબજ ગમતો હતો એટલે
 કે દરેક સ્થાને ગમે તે કારણને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કકામ કણ્યો
 કેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક ભેટા રહેતા હતા એકઠો યુદ્ધોના
 ખીલતસ દૃશ્ય બેવામા તેમને ખૂબ જ આનંદનો અનુભવ થતો હતો તેઓ
 બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લડાવવાની શોધમા જ ચોટી રહેતા
 હતા નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોક્યમા સર્વિશેષ બગવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરુષ સમુદ્ર
 વિજય વગેરે દશ દશાહો હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કદ તા.

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये बलवन्तः नेमिनाथापेक्षया तेषाम्, 'आमतेऊण त भगवई' आमन्त्र्य=प्रयुज्य ता भगवतीं-विद्या, कीदृशीं विद्यामित्याह—'प्रक्रमणी' प्रक्रमणी=प्रकृतगमनशक्ति शालिनी 'गगणगमणदञ्च' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पडओ' उत्पतितः, गगनममिलह्वयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुल्लङ्घयन् 'गामागरनगरनिगमखेट कर्णटमडणद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित' ग्रामाकरनगरनिगमखेट=कर्णटमडणद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित, तत्र अष्टादशकरग्राह्यो ग्रामः, आकरः=स्वर्णाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगर, निगम=वणिग्ग्राम खेट=धूलीप्रकार, कर्णट=कुत्तिसतनगर, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिनास्ति तन्मण्डपं यत्र जलस्थलमार्गाभ्यां, भाण्डान्यागच्छति तत् द्रोणमुख, पत्तनं=द्वधा-जलपत्तन स्थलपत्तन, यत्र पर्यतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहति स संवाह एतैः सहस्रैर्मण्डित, स्तिमितमेदिनीतल, 'वसुह' वसुधा भूमि 'ओलोइतो' अलोकयन्=पश्यन् रम्य हस्तिनापुर नगरमुपागतः पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनादवतीर्ण इत्यर्थः ।

ततः सख्यं स पाण्डुराजा कच्छुल्लनारय 'कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्त पश्यति-दृष्ट्वा पञ्चभिः पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय दशार्हं ये उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे । गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एव आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके ये आकाश में उड़ा करते थे । ये नारद, गमन से आकाशतल को उल्लङ्घन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, कर्णट, मडण, द्रोणमुख, पत्तन, सवाह इनके सहस्रों से मण्डित हुई ऐसी स्तिमितमेदिनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वहा से गगनमार्ग से होकर फिर ये पांडुराज के भवन में पहुँचे । ऐसा सत्रय यहाँ लगाना (तर्पण से पांडुराजा कच्छुल्लनारय एज्जमाणं पासइ) इन के योद् पांडुराजा ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पामित्ता) तो

गमनमा विशिष्ट शक्ति आपनारी अने आकाशमा उडाडीने लध जतार ते भगवती प्रक्रमणी विद्यानां गणथी तेज्या आकाशमा उडता रडेता डता आरीते आ नागद गमनथी आकाशने ज्ञाणगीने महओ आभ, आकर नगर, निगम खेट कर्णट, मडण, द्रोणमुख, पत्तन, सवाहोथी, मण्डित अने स्तिमित पृथ्वीने लेता अभलीय हस्तिनापुर नगरमा आब्या अने त्याथी आकाश मार्गमा यधने पांडुराजना भवनमा पडोअ्या (तर्पण से पांडुराजा कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ) त्थारणाइ पांडुराजने कच्छुल्लनारदने न्यारे आवता लेया (पामित्ता) त्यागे लेधने (पचहि पडवेहि कुलीए वेवीए सद्धि आसणाओ

મારણ; ગજસુકુમાલ; સુગુપ્ત; દુર્મુખ, इत्यादयो यादवकुमारास्तंषा 'अद्भुतान्
 कुमारकोटीण' अर्धचतुर्थीनां कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिममिताना यादव-
 कुमाराणामित्यर्थः 'द्विषयदर्शन' इदयदयितः=इदयमियः, 'सथानप' सस्ता-
 रकः-यादवाना प्रशसकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलमियः=कलहो=विवाद, युद्ध-
 शस्त्रादिभिः प्रहरण, कोलाहलो=जनाना महाभयनिः, एते प्रियाः प्रमोदजनका
 यस्य स तथा, 'भट्टणामिलासी' भण्डनाभिभाषी=मण्डन राटि-कलह. 'राह'
 इति भाषाया तस्याभिलाषी तथा-बहुषु च समरशतमपरायेषु=समरशतसंग्रामेषु
 दर्शनरत=दर्शनाऽऽसक्तः, 'समतमो' समन्ततः सर्वाप्रकारेण-परस्पर च कलह
 'सदस्त्रण' सदाक्षण=सर्वास्मिन् क्षणे 'अणुगवेममाणे' अनुगवेपयन्=अन्वेष
 यन्, 'असमाहिकरे' असमाधिकर-चित्तनिक्षेपकारकः चित्तस्यास्वैर्यकर. केषा
 चित्तस्य निक्षेपकइत्याह—'दसारवरवीरपुरिसतिलोकप्रलम्भाण' दशार्हवरवीर
 पुरुषवीरलोकप्रलम्भना-दशार्हा.-समुद्रविजयादयो दशसख्यका स एव वरा श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यन्त प्रिय थे। इसी
 कारण यादवों के प्रशंसक थे। कलहविवाद युद्ध एव मनुष्यों का कोलाहल
 ये सब इन्हें बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राह
 (लड़ाई) के ये अभिलाषी घने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न
 किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस
 बात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसंग्राम के देखने में
 इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय
 में ये कलह की गवेपणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा
 त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોના વખાણ કરનારા હતા કલહ-કકાસ, વિવાદ, યુધ્ધ
 અને માણસોના શોરબકાર આ બધું તેમને બહુ જ ગમતું હતું આ બધાથી
 તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કલ્પો તેમને ખૂબજ ગમતો હતો એ/યે
 કે દરેક સ્થાને ગમે તે કારણને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કકાસ કલ્પો
 ઠેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક જોતા રહેતા હતા સેકડો યુદ્ધોના
 ખીલતસ દ્રશ્ય જોવામા તેમને ખૂબ જ આનંદનો અનુભવ થતો હતો તેઓ
 બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લડાવવાની શોધમા જ ચોટી રહેતા
 હતા નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોક્યમા સર્વિશેષ બળવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરૂષ સમુદ્ર
 વિજય વગેરે દશ દશાહી હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કદ તા.

સયતસ્તયા વિધો ન ભવતિ યઃ સોઽસયતઃ=સયમરહિત ઇત્યર્થઃ, અવિરત=અતીત કાલિન્ધપાપાન્જુગપ્સાપૂર્વક, ભવિષ્યતિ ચ સવરપૂર્વકમુપરતો નિવૃત્તો વિરતસ્તથા વિધો ન ભવતિ યઃ સોઽવિરતઃ, નિરતિરહિતઃ, અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા પ્રતિહત=વર્તમાનકાલે સ્થિત્યનુભાગદ્વાસેન નાશિત તથા પ્રત્યાખ્યાત=પૂર્વકૃતાતિ-
 ઉનકે લિયે ત્રીન ઘાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ ક્રિયા-કરકે ઉનકો વંદનાકી નમસ્કાર ક્રિયા । વંદના નમસ્કાર કરકે ફિર ઉન્હોને ઉનસે મહાન્ પુરુષોં કે બેઠને યોગ્ય આમન પર બેઠને કે લિયે પ્રાર્થના કી-ઇસ કે વાદ બે કચ્છુલ્લ નારદ જલ કે છીટો સે સિત્ત હુઅ આસન પર કિ જો દર્શન કે ઉપર આસ્તીર્ણ યા બેઠ ગયે । બેઠકર ઉન્હોને પાંડુ રાજા સે રાજ્ય કી યાવત્ અતઃ પુર કી કુશલ વર્તા પૂઝી । ઉનકે પૂઝને પર પાંડુ રાજાને કુન્તી દેવી ને ઇવ પાંચોં પાંડવોં ને ઉન કચ્છુલ્લ નારદ કો સ્વૂપ આદર ક્રિયા યાવત્ અઞ્ઞી તરહ સે ઉનકી પર્યુપાસના કી । દ્રૌપદી ને ઉન્હેં અસયત, અવિરત ઇવ અપ્રતિહત પ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા જાનકર ઉનકા આદર નહીં ક્રિયા, ઉનકે આગમન કી અનુમોદના નહીં કી ઔર ન વહ ઉનકે આને પર ઉઠી । વર્તમાન કાલિક સર્વ સાવધ અનુષ્ઠાન સે જો નિવૃત્ત હોતા હૈ વહ સયત હૈ-એસા સયત જો નહીં હોતા હૈ વહ અસયત કહલાતા હૈ । અતીત કાલ મેં હુઅ પાપોં સે જુગ-પ્સા પૂર્વક ઔર ભવિષ્યકાલ મેં ઉનસે સવર પૂર્વક જો ઉપરત હોતા

સામે જઈને તેમણે ત્રણવાર તેમની યોગેર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરી ત્યારપછી તેમણે વદન તેમજ નમન કર્યા અને પછી તેમને પોતાના કરતા મોટા માણુએને યેમવા યોગ્ય આસન ઉપર બેસવાની વિનંતી કરી ત્યારબાદ તે કચ્છુલ્લ નારદ પાણીના છાટાઓથી લીના પાથરેલા દર્ભના આસન ઉપર બેસી ગયા બેસીને તેઓએ પાંડુરાજને રાજ્યની યાવત રણુવાસની કુશળવાર્તા પૂછી પાંડુરાજ, કુન્તીદેવી અને પાંચે પાંડવોએ કચ્છુલ્લ નારદનો ખૂબજ આદર કર્યો યાવત સારી રીતે તેમની પર્યુપાસના કરી તેમને અસયત, અવિરત અને અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા બાણીને દ્રૌપદીએ તેમને આદર કર્યો નહિ તેમના આગમનની અનુમોદના કરી નહિ અને બ્યારે તેઓ આવ્યા ત્યારે પણ તે જાણી થઈ નહિ વર્તમાનકાલિક સર્વ સાવધ અનુષ્ઠાનથી જે નિવૃત્ત હોય છે તે સયત છે, આ વ્યાખ્યા મુજબ જે સયત નથી તે અસયત કહેવાય છે ભૂતકાળમાં થઈ ગયેલા પાપકર્મોની જુગપ્સાપૂર્વક અને ભવિષ્યકાલમાં તેમનાથી સવરપૂર્વક જે ઉપરત હોય છે તે વિરત છે, એવો જે મની તે અવિરત છે, એટલે કે વિગતથી રહિત છે વર્તમાનકાળમાં જેમાં

कच्छुल्लनारद सप्ताष्टपदानि मत्पुत्रं उच्यते, नारदाभिमुखमायाति, मत्पुत्रं 'तिस्रसुतो'
 त्रि. कृतः - निवार, 'आयाहिणपयाहिण' आश्लिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा
 वन्दते, नमस्यति इति, नरया, महादेव-महता योग्येन आसनेन उपनिमन्त्र
 यति । उश्वेशनार्थं मर्थयति । ततः खलु स कच्छुल्लनारद. 'उदगपरिफासियाण'
 उदकपरिस्पृष्टायां जलछटेन भिक्षायां 'दम्भोपरिपचत्तुयाए' दम्भोपरिपचत्तु
 तायां कुशो पर्याप्तीर्णाया 'भिसियाए' वृष्या आमननिशेषे निपीदति=उपविशति,
 निपद्य पाण्डु राजान राज्ये यावदन्तः पुरे च कुशलोदन्त-कुशलायार्ता पृच्छति,
 ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्तीं देवीं पञ्च च पाण्डवा, कच्छुल्लनारद 'आदति'
 आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म । ततः खलु सा द्रौपदी कच्छुल्लनारदम्
 'असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु' असयत्ता रित्तामतिहता
 मत्पाख्यातपापकमेति कृत्वा, तत्र-अगम्यतः-वर्तमानकालिकसर्पमायधानुष्ठाननिवृत्तः

देवकुर (पचहिं पडवेहिं कुन्तीण देवीण सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेह)
 ये पाचो पाडवो एव कुन्ती के साथ अपने आमन से उठे। (अब्भुट्ठित्ता
 कच्छुल्लनारय मत्तद्वयाइ पच्चुगगच्छइ) और उठकर सात आठ पैर
 कच्छुल्लनारद के सामने स्वागत निमित्त गये (पच्चुगगच्छित्तो तिस्रसु
 तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महरिहेण आस
 णेण उवणिमतेइ तएण से कच्छुल्लनारण उदगपरिफासियाए दम्भोवरि
 पचत्तुयाए भिसीयाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते
 उरेय कुसलोदन्त पुच्छइ, तएण से पडुराया कीर्तीदेवी पचय पडवा
 कच्छुल्लनारय आदति जाव पज्जुवासति, तएण सा दोवई कच्छुल्ल
 नाय असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो
 आदाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ) जाकर के इन्होंने

अब्भुट्ठेइ) तेषां पाचो पाडवो अने कुन्तीनी साथे घोलाना आसन उपरथी
 शिला तथा (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारय मत्तद्वयाइ पच्चुगगच्छइ) अने शिला
 यधने कच्छुल्ल नारदना स्वागत भाटे सात आठ उगला साथे गया।

(पच्चुगगच्छित्तो तिस्रसुतो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ,
 महरिहेण आसणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारण उदगपरिफासियाए
 दम्भोपरिपचत्तुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते
 उरेय कुसलोदन्त पुच्छइ तएण से पडुराया कीर्तीदेवी पचय पडवा कच्छुल्लनारय
 आदति जाव, पज्जुवासति, तएण सा दोवई कच्छुल्लनारय असजयअविरयअपडि-
 हयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आदाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो
 पज्जुवासइ)

સયતસ્તથા વિધો ન ભવતિ યઃ સોઽસયતઃ=સંયમરહિત ઇત્યર્થઃ, અવિરત=અતીત કાલિન્ધાપાન્જુગ્પ્સાપૂર્વક, ભવિષ્યતિ ચ સમરપૂર્વકમુપરતો નિવૃત્તો વિરતસ્તથા વિધો ન ભવતિ યઃ સોઽવિરતઃ, પ્રિતિરહિતઃ, અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા પ્રતિહત=વર્તમાનકાલે સ્થિત્યનુભાગદ્વાસેન નાશિત તથા પ્રત્યાખ્યાત=પૂર્વકૃતાતિ-

બનકે લિયે ત્રીન દાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કિયા-કરકે બનકો વંદનાકી નમસ્કાર કિયા। વંદના નમસ્કાર કરકે ફિર બનકોને બનસે મહાન્ પુત્રપોં કે વૈઠને યોગ્ય આમન પર વૈઠને કે લિયે પ્રાર્થના કી-હસ કે વાદ વે કચ્છુલ નારદ જલ કે છીટો સે સિત્ત હુઅ આસન પર કિ જો દર્મ કે ઉપર આસ્તીર્ણ યા વૈઠ ગયે। વૈઠકર બનકોને પાંડુ રાજા સે રાજ્ય કી વાવત્ અતઃ પુર કી કુજલ વર્તા પૂઝી। બનકે પૂછને પર પાંડુ રાજાને કુન્તી દેવી ને એવ પાંચો પાંડવો ને બન કચ્છુલ નારદ કો સૂચ આદર કિયા વાવત્ અચ્છી તરહ સે બનકી પર્યુપાસના કી। દ્રૌપદી ને બનકે અસયત, અવિરત એવ અપ્રતિહત પ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા જાનકર બનકો આદર નહીં કિયા, બનકે આગમન કી અનુમોદના નહીં કી ઓર ન વહ બનકે બાને પર ઉઠી। વર્તમાન કાલિક સર્વ સાવધ અનુષ્ઠાન સે જો નિવૃત્ત હોતા હૈ વહ સયત હૈ-એસા સયત જો નહીં હોતા હૈ વહ અસયત કહલાતા હૈ। અતીત કાલ મેં હુઅ પાપોં સે જુગ્પ્સા પૂર્વક ઓર ભવિષ્યકાલ મેં બનસે સવર પૂર્વક જો ઉપરત હોતા

મામે જાને તેમજો ત્રણવાર તેમની ચામેર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરી ત્યારપછી તેમજો વદન તેમજ નમન કર્યા અને પછી તેમને પોતાના કરતા મોટા માણુમોને બેસવા યોગ્ય આસન ઉપર બેસવાની વિનંતી કરી ત્યારબાદ તે કચ્છુલ નારદ પાણીના છાટાઓથી લીના પાથરેલાં ફળોના આસન ઉપર બેસી ગયા બેસીને તેઓએ પાડુરાજાને રાજ્યની વાવત્ રણવામની કુશળવાર્તા પૂછી પાડુરાજા, કુતીદેવી અને પાથે પાડવોએ કચ્છુલ નારદનો ખૂબજ આદર જ્યો વાવત્ સાગી રીતે તેમની પર્યુપાસના કરી તેમને અસયત, અવિરત અને અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા જાણીને દ્રૌપદીએ તેમનો આદર કર્યો નહિ તેમના આગમનની અનુમોદના કરી નહિ અને બ્યારે તેઓ આવ્યા ત્યારે પણ તે બેસી થઈ નહિ વર્તમાનકાલિક સર્વ સાવધ અનુષ્ઠાનથી જે નિવૃત્ત હોય છે તે સયત છે, આ બ્યાખ્યા મુજબ જે સયત નથી તે અસયત કહેવાય છે ભૂતકાળમાં થઈ ગયેલા પાપકર્મોથી જુગ્પ્સાપૂર્વક અને ભવિષ્યકાલમાં તેમનાથી સવરપૂર્વક જે ઉપરત હોય છે તે વિરત છે, એવો જે નથી તે અવિરત છે, એટલે કે વિગતથી રહિત છે વર્તમાનકાળમાં જેમાં

कञ्जुल्लनारद सप्ताष्टपदानि प्रत्युद्गच्छति, नारदाभिमुखमायाति, प्रत्युद्गत्य 'तिक्खुत्तो' नि. कृत्यः - निवारं, 'आयाहिणपयाहिण' आदक्षिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा वन्दते, नमस्पति वदित्वा, नरया, महारिहेण-महता योग्येन आसनेन उपनिमन्त्रयति । उपवेशनार्थं प्रार्थयति । ततः खलु सा कञ्जुल्लनारदः 'उदगपरिफासियाए' उदरपरिस्पृष्टाया जलच्छटेन भिक्षाया 'दम्भोवरिपच्चत्थुयाए' दम्भोपरिप्रणयस्व ताया कुशे पर्यास्तीर्णाया 'भिसियाए' वृष्या आसनप्रदेशे निवीदति=उपविशति, निपद्य पाण्डुराजान राज्ये यावदन्तः पुरे न कुशलोदन्त-कुशलातां पृच्छति, ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्ती देवी पञ्च च पाण्डवा, कञ्जुल्लनारद 'आदति' आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म । ततः खलु सा द्रौपदी कञ्जुल्लनारदम् 'असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे' चित्ति 'असयताविरताप्रतिहता प्रत्याख्यातपापकम्मे'ति कृत्वा, तत्र-अगयत-रतमानकालिससर्मापधानुष्ठाननिवृत्तः

देवकर (पचहिं पडवेहिं कुन्तीण देवीण सद्धिं आसणाओ अम्भुद्धे) ये पाचो पाडवो एव कुन्ती के साथ अपने आसन से उठे । (अम्भुद्धित्ता कञ्जुल्लनारय मत्तद्वयाइ पच्चुगच्छइ) और उठकर सात आठ पैर कञ्जुल्लनारद के सामने स्वागत निमित्त गये (पच्चुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महारिहेण आसणेण उवणिमतेइ तएण से कञ्जुल्लनारए उदगपरिफासियाए दम्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते उरेय कुसलोदत पुच्छइ, तएण से पडुराया कोतीदेवी पचय पडवा कञ्जुल्लनारय आदति जाव पज्जुवासति, तएण सा दीवई कञ्जुल्लनारय असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे' ति कइइ नो आदाइ नो परियाणइ नो अम्भुद्धेइ, नो पज्जुवासइ) जाकर के इन्हों ने

अम्भुद्धेइ) तेआ पावे पाडवे आने कुन्तीनी साथे पोताना आसन उपरथी ठीका थया (अम्भुद्धित्ता कञ्जुल्लनारय सच्चद्वयाइ पच्चुगच्छइ) आने ठीका थयने कञ्जुल्लनारदनी स्वागत भाटे सात आठ उगला साथे गया ।

(पच्चुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महारिहेण आसणेण उवणिमतेइ, तएण से कञ्जुल्लनारए उदगपरिफासियाए दम्भोपरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते उरेय कुसलोदत पुच्छइ तएण से पडुराया कोतीदेवी पचय पडवा कञ्जुल्लनारय आदति जाव, पज्जुवासति, तएण सा दीवई कञ्जुल्लनारय असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे' ति कइइ नो आदाइ नो परियाणइ नो अम्भुद्धेइ, नो पज्जुवासइ)

जाव सरीरा त इच्छामिण देवाणुप्पिया । दोवई देवीं इहमा-
 णिय, तएणं पुव्वसंगइए देवीए पउमनाभं एव वयासी - नो
 खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव वा भविस्स वा जण्ण
 दोवई देवी पचपंडवे मोत्तूण अन्नेण पुरिसेणं सद्धि ओरालाईं
 जाव विहरिस्सइ, तहा वि य णं अह तव पियट्ठतयाए दोवई
 देवि इहं हव्वमाणेमि त्तिरुद्धु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता
 ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुदे मज्झंमज्जेण जेणेव हत्थिणा-
 उरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तेण कालेणं तेणं समएण
 हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए सद्धि उप्पि आगासतलंसि
 सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएण से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहि-
 ट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवईं देवीं
 गिण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव
 पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणा-
 भस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देवीं ठावेइ ठावित्ता
 ओसोवणि अवहरइ अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया मए
 हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए
 चिट्ठइ, अतो पर तुमं जाणसित्तिरुद्धु जामेव दिसि पाउब्भूए
 तामेव दिसि पडिगए ॥ सू० २५ ॥

एउजमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अबुद्धे अबुद्धित्ता
 अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए
 उदगपरिफासियाए दम्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ
 जाव कुसलोदंत आपुच्छइ, तएणं से पउमनाभे राया णियग
 ओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लनारयं एणं वयासी-तुम्भं देवाणु
 प्पिया ! वहुणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि, त अतिव
 आइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुब्बे जा
 रिसए ण सम ओरोहे ?, तएणं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेण
 रत्ता एव बुत्ते समाणे ईसिं विहासियं करेइ करित्ता एव वयासी
 -सरिसे णं तुम पउमणाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स, के ण
 देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे ?, एव जहा मल्लिणाए एव खल्ल
 देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स
 रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पच्चणं पंड-
 वाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा दोवईए
 णं देवीए छिन्नस्सवि पायंगुट्ठयस्स अथ तव ओरोहो सतिमं पि
 कल ण अग्घतित्तिकट्ठु, पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव
 पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए
 एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म दोवईए देवीए रूवे यइ मुच्छिए ४
 दोवइए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव एवं वयासी-
 एवं खल्ल देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहेवासे

जाव सगीरा त इच्छामिणं देवाणुप्पिया । दोवई देवीं इहमा-
 णिय, तएणं पुव्वसगइए देवीए पउमनाभं एवं वयासी - नो
 खलु देवाणुप्पिया । एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्स वा जणं
 दोवई देवी पचपंडवे मोत्तुण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धि ओरालाइ
 जाव विहरिस्सइ, तहा वि य ण अह तव पियट्ठतयाए दोवई
 देवि इहं हव्वमाणेमि त्तिकहु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता
 ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुदे मज्झंमज्जेण जेणेव हत्थिणा-
 उरे णयेरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए । तेण कालेणं तेणं समएणं
 हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईएसद्धि उप्पि आगासतलंसि
 सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहि-
 ट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवइ देवीं
 गिणहइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव
 पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणा-
 भस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देवीं ठावेइ ठावित्ता
 ओसोवणि अवहरइ अवहारित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया मए
 हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए
 चिट्ठइ, अतो पर तुमं जाणसित्तिकहु जामेव दिसि पाउव्भूए
 तामेव दिसि पडिगए ॥ सू० २५ ॥

टीका-‘तण तस्स’ इत्यादि । नन. गनु तस्य कच्छुल्लनारयस्य अयमत
 नृपः आध्यात्मिकगिनित. प्रार्थितः कर्त्तव्यो भगवान्. गान्ध. मणुपयत, अहो !
 खलु द्रौपदी देवी रूपेण यावत् ‘गन्धर्वेण च पञ्चमि’ पाण्डुरैरनुसन्धामनी मा नो
 आद्रियते यावत् नो पर्युपास्ते, तत्=स्मात् तेन गलु मम द्रौपद्या दव्या ‘वि
 प्पिय करित्तए’ विमिय कर्तुम्, पाण्डुराहत्य-काममानार्थिना विमिश्रिता जाता

-तण तस्स कच्छुल्लनारयस्स इत्यादि ।

टीकार्थ-(तण) उसके बाद (तस्स कच्छुल्लनारयस्स) उन कच्छुल्ल
 नारदको (इमेयाहरे) यह इस रर (अज्झत्थिए, चिन्तिए, पत्थिए, मणो
 गए, सकप्पे समुपज्जित्था) आ ध्यात्मिक, चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत
 सकल्प उत्पन्न हुआ । (अहो ण दोवई देवी रूपेण जाव लावणणेण य पचहिं
 पडवेहिं अणुवद्धा समाणी मम णो आढाड, जाव नो पज्जुवासइ त
 सेय खलु मम दोवई देवीण विप्पिय करित्तए त्ति कहु एव सपेहेइ,
 सपेहित्ता पडुराय आपुच्छइ आपुच्छित्ता उप्पयणि विज्ज आवाहेइ
 आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लगणसमुद मज्झ
 मज्झेण पुरत्थाभिमुहे वीइवइउ पयत्ते यात्रि होत्वा) देखो-यह किनने
 आश्चर्य की बात है कि द्रौपदी देवी ने रूप यावत् लावण्य से पावों
 पाडवों के साथ भोगासक्त बनकर मेरा कोउ आदर नहीं किया है यावत्
 किसी भी प्रकार की पर्युपासना नहीं की है । इसलिये अब मुझे यही
 उचित-श्रेयस्कर है कि मैं इस द्रौपदी देवी का विप्रिय करूँ-अनिष्टकरूँ

तण तस्स कच्छुल्लनारयस्स इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तण) त्यापधी (तस्स कच्छुल्लनारयस्स) ते कच्छुल्ल नारदने
 (इमेयाहरे) आ नतने (अज्झत्थिए, चित्थिए, पत्थिए, मणोगए, सकप्पे
 समुपज्जित्था) आध्यात्मिक, चित्तित, प्रार्थित, मनोगत सकल्प उत्पन्न होने के
 (अहोण दोवई देवी रूपेण जाव लावणणेण य पचहिं पडवेहिं अणुवद्धा
 समाणी मम णो आढाड, जाव नो पज्जुवासइ त सेय खलु मम दोवई देवीए
 विप्पिय करित्तए त्ति कहु एव सपेहेइ, सपेहित्ता पडुराय आपुच्छइ आपुच्छित्ता
 उप्पयणि विज्ज आवाहेइ आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लग
 समुद मज्झ मज्झेण पुरत्थाभिमुहे वीइवइउ पयत्ते यात्रि होत्वा)

बुद्धो, आ देवी नवार्धनी बात छे के द्रौपदी देवीअ इय यावत् लाव
 द्यथी पावे पाडवानी साथे भोगासक्त थधने भारे कोर पणु रीते आदर
 कुर्यो नथी यावत् कोर पणु नतनी पर्युपासना करी नथी जेथी हवे भने
 अ न थोअ न्नुअ छे के गमे ते रीते द्रौपदीव ।

तस्मान्मद्रापहरणेन अस्याः प्रतिकूलचरणं श्रेयः इति भारः । इति कृत्वा=इति मनसि निधाय एव सगेसते=पर्यालोचयति, समेक्ष्य पाण्डु राजानमापृच्छ 'उप्ययणि विज्ज' उत्पतनीम्-विद्याम् 'आवाहेड' आवाहयति स्मरति आवाह्य, मत्वा तथा उत्कृष्टया यावत् विद्याधरगत्या लक्षणसमुद्भूतं मध्यमध्येन पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिगभिमुखः, 'वीडउड पयत्ते' व्यतिप्रजितु प्रवृत्तः=गमनतत्परश्चाप्यभवत् ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'धायईसडे' धातुकीपण्डे धातुकीपण्डनामके, द्वीपे 'पुरत्यिमद्रादिण्डुभरहवासे' पौरस्त्यार्थदक्षिणार्थ-भारतर्पण=पूर्वदिग्वर्तिनि दक्षिणार्थभरतक्षेत्रे अमरकका नाम राजधानी आसीत् । तत खलु अमरककाया राजधान्या पञ्चनाभो नाम राजाऽभवत् । स कीदृश इत्याह-'महया हिमवतमहतमलयमद्रमहिदसारे' महा-हिमयन्ममत्रयमन्दरमहेन्द्रसारः=महाहिमवानि तथा-महामलयमन्दरमहेन्द्रवत् सार=प्रधान । अन्यनृपापेक्षयाऽधिकमहत्त्वादिगुणविभूतिभिर्यस्य सम्पन्न इत्यर्थः, विस्तरतस्तु व्याख्यानं प्रयमाध्ययने कृतम्,

यह इस समय पांडवों द्वारा कृत सत्कार सम्मान से गर्विष्ठ बनी हुई है-सो विवेक रहित बन गई है-इसलिये इसके मद को उतारना चाहिये अतः इसके प्रतिकूल आचरण करना यही मुझे श्रेयस्कर है । इस प्रकार मन में रखकर उन्होंने ने विचार किया-विचार करके फिर उन्होंने ने पांडु-राज से पूछा हे राजन् हम जाते हैं-पूछकर उन्होंने ने उत्पतनी नाम की विद्या का आवाहन किया स्मरण किया-स्मरण कर के उस उत्कृष्ट यावत् विद्याधर सत्रन्धी गति से बटा से पूर्व दिशा की तरफ मुख कर के वे उड़ने में प्रवृत्त भी हो गये-(तेण कालेण तेण समणण धायईसडे दीवे पुरत्यिमद्रादिण्डुभरहवासे अमरकका नामरायहाणी होत्था-तएणं अमरककाण रायहाणीण पडमणाभे णाम राजा होत्था, महया हिमवतं

ते आ पांडवो वडे मत्तुत तेमञ्ज मन्मानीत वणि गर्विष्ठा बानी गर्ड ठे तेथी ते अविवेकी थड पडी छे, ओथी छवे ओना मदने उतारये जेओ, ओना विद्ध आचरवु नेओ, आ प्रभाछे तेओओ मनमा विचार कयो विचार उनीने तेमछे पांडुरायने पूछु ठे छे गजन् । अमे जओ, ओ प्रभाछे पूछीने तेओओ उत्पतनी नामनी विद्या आवाहन क्युं, समण क्युं मरण करीने ते उत्कृष्ट यावत् विद्याधर सत्रन्धी गतिथी त्याथी पूर्व दिशा वाली मुख करीने उडवा लाग्या

(तेण कालेण तेण समणण धायईसडे दीवे पुरत्यिमद्रादिण्डुभरहवासे अमरककाण रायहाणीण पडमणाभे णाम राया

વર્ણક = વર્ણન પૂર્વોક્તિયદ્ યોજ્યમ્, તસ્ય ચલુ પદ્મનામસ્ય રાજઃ 'સત્તદેવીસયાઈ' સત્તદેવીશતાનિ = દેવીના રાણીનાં શતાનિ - સસશતાનિભાર્યાઃ 'ઓરોહે' અવરોધે = અન્તઃ પુરે આસન્ તસ્ય ચલુ પદ્મનામસ્ય રાજઃ સુનામો નામ પુત્રો યુવરાજશ્રાપ્ય ભવત્ । તતઃ ચલુ સ પદ્મનામો રાજા અતઃ પ્રદેશે 'અતેરસિ' અન્ત પુરે 'ઓરોહસંપરિવુદે' અરોધસપરિવૃતઃ - સ્ત્રીપરિચારમપરિવૃત્', સિંહાસનવરગતો વિહરતિ - આસ્તેસ્મ ।

વળગણો તસ્સણ પડમનામસ્મ રણ્ણો સત્તદેવીસયાઈ ઓરોહે હોત્યા તસ્સ ણ પડમનામસ્સ રણ્ણો સુનામે નામ પુત્તે જુવરાયા યાવિ હોત્યા તણ્ણ સે પડમણામે રાયા અતો અતેરસિ ઓરોહસપરિવુદે સિંહાસણ વરગણ વિહરઈ) ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં ઘાતકી પડ નામ કે દ્વીપ મેં પૂર્વ દિગ્વર્તી દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્ર મેં અમરકકા નામ કી રાજધાની યી । ઉસ અમરકકા નામ કી રાજધાની મેં પદ્મનામ નામ કો રાજા રહતા થા । યહ રાજા મહા હિમવાન્ પર્વત કી તરહ તથા મહા મલય, મન્દર એવં માહેન્દ્ર કી તરહ અન્ય રાજાઓં કી અપેક્ષા અધિક મહત્વાદિગુણોં સે વિભવ સે ણથં ऐश्वर्य સે સપન્ન થા । इन पदों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रथम मेघकुमार अध्ययन में किया जा चुका है । इस राजा का वर्णन पहिले की तरह जानना चाहिये । उस पद्मनाम राजा के अतःपुर में ७०० सात सौ रानिया थीं । सुनाम नाम का पुत्र था जो युवराज था, पद्मनाम राजा के यहां एक दिन की बात है

હોત્યા, મહયા હિમવતઃવળગણો,તસ્સણ પડમનામસ્સરણ્ણો સત્તદેવી સયાઈ ઓરોહે હોત્યા તસ્સ ણ પડમનામસ્સરણ્ણો સુનામે નામ પુત્તે જુવરાયા યાવિ હોત્યા તણ્ણ સે પડમણામે રાયા અતો અતે રસિ ઓરોહસપરિવુદે સિંહાસણવરગણ વિહરઈ)

તે કાળે અને તે સમયે ઘાતકી પડ નામે દ્વીપમા પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણુર્ધ્વ ભરત ક્ષેત્રમા અમરકકા નામે રાજધાની હતી તે અમરકકા નામે રાજધાનીમા પદ્મનામ નામે રાજા રહેતો હતો તે રાજા મહા હિમાચલ પર્વ તની જેમ તેમજ મહામલય, મદર અને મહેન્દ્રની જેમ ધીન્ત ગત્તઓ કરતા વધારે મહત્તર વગેરે શુભ્રાથી, વૈભવથી અને ઐશ્વર્યથી સપન્ન હતો આ પદોનુ સવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમા કરવામા આવ્યું છે આ રાજાનુ વર્ણન પણ પહેલાની જેમ જ સમજવુ જોઈએ તે પદ્મનામ રાજાના રણવાસમા ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનામ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો એ દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનામ રાજા રણવાસમા સ્ત્રી પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા

तत खलु स कच्छुल्लनारदो यत्रैवामरकङ्काराजधानी यत्रैव पद्मनाभस्य भवन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य राज्ञो भवने ' झत्ति ' झटिति वेगेन ' समोवइए ' समुपेत = आकाशादवतीर्णः । ततः खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लं नारद एजमानम्-आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थायार्घ्येण याजदासनेन उपनिमन्त्रयति-जलमासन च ग्रहीतु प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्ल

कि अत पुर के भीतर स्त्री परिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हुए थे । (तएण से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकका रायहाणी जेणेव पउम नाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेणं समोवइए, तएण से पउमनाभे राया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ, पामित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आमणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदग परिफासियाए दम्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदत आपुच्छइ) वे कच्छुल्ल नारद जहा अमर कका राजधानी थी, जहा पद्मनाभ का भवन था वहाँ आये । आकर के वे पद्मनाभ राजा के भवन में बहुत शीघ्र वेग से उतरे । पद्मनाभ राजा ने जैसे ही कच्छुल्ल नारद को आते हुए देखा तो देखकर के अपने आसन से उठे और उठकर के उन्हो ने उन्हें अर्घ्य यावत् आसन से आमन्त्रित किया ।

(तएण से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेणं समोवइए, तएण से पउमनाभे राया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ, पामित्ता आमणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दम्भोपरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदत आपुच्छइ)

ते कच्छुल्ल नारद ज्या अमरकका राजधानी હતી, ज्या પદ્મનાભનું ભવન હતું ત્યા આવ્યા, આવીને તે પદ્મનાભ રાજાના ભવનમાં ગીત્ર વેગથી ઉતર્યા પદ્મનાભ રાજાએ જ્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આવતા જોયા ત્યારે તેઓ પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઈને તેમણે તેઓને અર્ધ યાવત

ર્ણક = ંર્ણનં પૂર્વેક્તિત્વ ંધ્યમ્, તસ્ય સ્વત્વ પદ્મનામસ્ય રાજઃ ' સત્તદેવીમયાઃ ' સત્તદેવીશત્તાનિ = દેવીના રાજીનાં શત્તાનિ - સત્તશત્તાનિમાર્ગાં ' ંરોહે ' અવરોધે = અન્તઃ પુરે આસન્ તસ્ય સ્વત્વ પદ્મનામસ્ય રાજઃ સુનામો નામ પુત્રો યુવરાજશ્રાપ્ય ભવત્ । તતઃ સ્વત્વ સ પદ્મનામો રાજા અતઃ પ્રદેશે ' જતેઽરસિ ' અતઃ પુરે ' આરોહસંપરિવુદે ' અરોધસપરિવૃતઃ - સ્ત્રીપરિવારમપરિવૃત્ત, સિંહાસનવરગતો વિહરતિ - આસ્તેસ્મ ।

ઘણ્ણઓ તસ્સણ પડમનામસ્સ રણ્ણો સત્તદેવીસયાઙ ંરોહે હોત્યા તસ્સ ણ પડમનામસ્સ રણ્ણો સુનામે નામ પુત્તે જુવરાયા યાવિ હોત્યા તણ્ણ સે પડમનામે રાયા અતો અતેઽરસિ ંરોહસપરિવુદે સિંહાસણવરગણ વિહરહ) ઉસ કાલ ંરે ઉસ સમય મેં ઘાતકી પડ નામ કે દ્વીપ મે પૂર્વ દિગ્વર્તી દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્ર મેં અમરકકા નામ કી રાજધાની થી । ઉસ અમરકકા નામ કી રાજધાની મેં પદ્મનામ નામ કો રાજા રહતા થા । યહ રાજા મહા હિમવાન્ પર્વત કી તરહ તથા મહા મલય, મન્દર ંવે માહેન્દ્ર કી તરહ અન્ય રાજાંકો કી અપેક્ષા અધિક મહસ્વાદિગુણો સે વિભવ સે ંવં ભેશ્વર્ય સે સંપન્ન થા । ંન પદોં કા વિસ્તાર પૂર્વક ઘર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયન મેં કિયા જા ચુકા હૈ । ંસ રાજા કા ઘર્ણન પહિલે કી તરહ જાનના વ્હાલિયે । ઉસ પદ્મનામ રાજા કે અતઃપુર મેં ૭૦૦ સાત સો રાનિયાં થીં । સુનામ નામ કા પુત્ર થા જો યુવરાજ થા, પદ્મનામ રાજા કે યહા ંરુ દિન કી ઘાત હૈ

હોત્યા, મહયા હિમવતં ઘણ્ણઓ, તસ્સણ પડમનામસ્સ રણ્ણો સત્તદેવી સયાઙ ંરોહે હોત્યા તસ્સ ણ પડમનામસ્સ રણ્ણો સુનામે નામ પુત્તે જુવરાયા યાવિ હોત્યા તણ્ણ સે પડમનામે રાયા અતો અતે ંરસિ ંરોહસપરિવુદે સિંહાસણવરગણ વિહરહ)

તે કાળે ંને તે સમયે ઘાતકી પડ નામે દ્વીપમા પૂર્વ દિશા તાન્દના દક્ષિણધર્મ ભરત ક્ષેત્રમા અમરકકા નામે રાજધાની હતી તે અમરકકા નામે રાજધાનીમા પદ્મનામ નામે રાજા રહેતો હતો તે ગળ મહા હિમાચલ પર્વ તની જેમ તેમજ મહામવય, મદર ંને મહેન્દ્રની જેમ બીજા ગળઓ કરતા વધારે મહત્વ વગેરે ગુણોથી, વૈભવથી ંને ંશ્વર્યથી સંપન્ન હતો આ પદોતુ સંવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમા કરવામા ંઆન્ધુ છે આ રાજાતુ વર્ણન પણ પહેલાની જેમ જ સમજતુ ભેદથી તે પદ્મનામ રાજાના રણુવાસમા ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનામ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો ંરુ દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનામ રાજા રણુવાસમા ંી પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા

देवानुप्रिय ! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु ममावरोधः ? ममान्तः पुरे यादृश्यः स्त्रियो र्तन्ते, तादृश्य स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः । ततः खलु स कञ्जुल्लनारदः पद्मनाभेन राजा एवमुक्त सन् ' ईषद् विद्वसित ' मन्दहास करोति, कृत्वा एवमत्रादीत्—हे पद्मनाभ ! सदृशस्त्वं खलु तस्य ' अगडददुर्दुरस्त ' अगडददुर्दुरस्त=कूपमण्डरुस्त यथा कूपमण्डरुः कूपाद् बहिः प्रदेशे त्रियमान न किमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रानस्थित किमपि वस्तु न वेत्सीति भावः । कञ्जुल्लनारदस्य वचन श्रुत्वा पद्मनाभः कञ्जुल्लनारद पृच्छति—' के ण देवाणुप्पिया ! से अगडददुर्दुरे ' इति । हे देवानुप्रिय ! कः खलु सोऽगडददुर्दुरः ? एव पद्मनाभेन राजा पृष्ठः सन् कञ्जुल्लनारदः प्राह—' एन यथा मल्लिणाए ' यथा मल्लिज्ञाने वर्णितमेवमत्र गोध्यम् समुद्रददुर्दुरकूपददुर्दुरयोः परस्परवार्तालापो यथा सजातस्तथा कञ्जुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः । पुनः कञ्जुल्ल-

कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते रहते हो—तो क्या हे देवानुप्रिय ! तुमने कहीं पर क्या ऐसा अतः पुर पहिले कभी देखा है—जैसा मेरा अन्तः पुर है ? पद्मनाभ राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कञ्जुल्ल नारद कुछ हँसने लगे—हँसकर तब उन्होंने उनसे इस प्रकार कहा—हे पद्मनाभ ! तुम उस कूपम ढूँक के समान हो—जो अपने निवासस्थान भूत कुए से बाहिरी प्रदेश में बियमान कुछभी नहीं जानते हो । कञ्जुल्ल नारद के वचन सुनकर के पद्मनाभ ने उन कञ्जुल्ल नारद से पूछा—देवानुप्रिय ! वह अगडददुर्दुर का आख्यान कैसा है ? तब नारद ने उनसे कहा—मल्लि नाम के अध्ययन में कूपमढूँक और समुद्र मढूँक के परस्पर में वार्तालाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है—सो नारद ने यह आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया— पुनः कञ्जुल्ल नारद उनसे

कोई पशु स्थाने अने कोई पशु द्विसे आवो भारा जेवो रणवास लेयो छे ? पद्मनाभ राजा बडे आ रीते प्रश्न पूछाजेलो ते कञ्जुल्ल नारद हसवा लाग्या, हुन्नीने तेज्जोते तेभने आ प्रभाणु उल्लु के छे पद्मनाभ ! तमे ते कूप म ढूँक जेवा छे के जे पोताना निवासस्थान कूपथी गढारना प्रदेश विषे थोडु पशु ज्ञान धरावतो नथी कञ्जुल्ल नारदना वचन सालणीने पद्मनाभे ते कञ्जुल्ल नारदने पूछ्यु के छे देवानुप्रिय ! ते अगड ददुर्दुरकु आख्यान केवी रीते छे ? त्तारे नारद तेभने मल्लि नामे अध्ययनमा वर्युववाभा आवेलो कूप म ढूँक अने समुद्र म ढूँकना वार्तालाप रूपे ते सपूषु आख्यान तेभने कही सालणाव्यु

नारदः उदरपरिस्पृष्टायां-जन्मगिपित्तायां दर्भोपरि प्रत्यस्तृतायां वृष्याम् आस
 नशेपे निपीदति, यावत् कुशलोदन्त=कुशलवार्ताम् आपृच्छति=मुखोपविष्टं वं
 कच्छुल्लनारद पद्मनाभः कुशलवार्ता पृच्छतीत्यर्थः । तत् सखु स पद्मनाभो राजा
 निजकामसोपे धीपरिवारे जातस्मिन्मयः=समुत्पन्नगर्भः, कच्छुल्लनारदम् एव-
 पश्यमाणक्रमेण, अगदीत्-हे देवानुग्रिय । त्वं बहून् ग्रामान् यावत् गृहाणि अनु-
 मविशति, तत्=तस्माद् अस्ति 'आइ' इति गाम्याङ्कारे ते=त्वया कुत्रचिद् हे

इसके बाद वे कच्छुल्लनारद जल के 'ग्रीटो' से सिंचित आसन पर जो
 दर्भ के ऊपर बिठा हुआ था बैठ गये-बैठकर उन्होंने ने पद्मनाभ राजा
 से कुशलवार्ता पूछी । पद्मनाभ राजा ने भी सुगम पूर्वक बैठे हुए उन
 कच्छुल्ल नारद से उन के कुशल समाचार पूछे । (तएण से पद्मनाभे
 राया णियमओरो हे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी-तुम्भ
 देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि त अत्थि आइ
 ते कहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुब्बे, जारिसए णं मम
 ओरोहे ? तएण से कच्छुल्लणारए पद्मनाभेण रत्ता एव वुत्ते समाणे ईसिं
 विहसिय करेइ, करित्ता एव वयासी-सरिसेण तुम पद्मणाभा । तस्स
 अगड ददुदुरस्स, केणं देवाणुप्पिया ! से अगडददुदुरे ! एव जहा मल्लि
 णए एव खलु देवाणुप्पिया !) इसके बाद पद्मनाभ राजा ने अपने
 अंतःपुर में विस्मित बनकर कच्छुल्लनारद से इस प्रकार

आसन उपर भेसवा भाटे विनती करी त्यारपछी ते कच्छुल्ल नारद पावणीना
 छाटाओथी सिंचित दर्भना उपर पाथरेला आसन उपर भेसीने पद्मनाभ राजाने
 तेओना परिवारनी कुशलताना सभाथारे पूछया पद्मनाभ राजाने पछु आसन
 उपर भुजेथी बैठेला ते कच्छुल्लनारदने कुशल सभाथारे पूछया

(तएण से पद्मनाभे राया णियमओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारय
 एव वयासी-तुम्भ देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि, त
 अत्थि आइ ते कहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपूब्बे जारिसए णं मम
 ओरोहे ? तएण से कच्छुल्लणारए पद्मनाभेण रत्ता एव वुत्ते समाणे ईसिं विह
 सिय करेइ, करित्ता एव वयासी-सरिसेण तुम पद्मणाभा । तस्स अगडददुदुरस्स
 केण देवाणुप्पिया ! से अगडददुदुरे ? एव जहा मल्लिणाए एव खलु देवाणुप्पिया !)

त्यारपछी पद्मनाभ राजाने पोताना रज्जुपासना बेलवने जेधने आश्रय
 यधने कच्छुल्ल नारदने आ प्रभावे कछु के डे देवानुग्रिय । तने बल्ला ग्राम
 यावत् धरेशभा आपण करता रहे छे तो डे देवानुग्रिय ।

देवानुप्रिय ! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु ममावरोधः ? ममान्तः पुरे
यादृश्यः स्त्रियो यतन्ते, तादृश्य स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः ।
ततः खलु स कञ्चुल्लनारदः पद्मनाभेन राज्ञा एवमुक्त सन् ' ईपद् विहसित '
मन्दहास करोति, कृत्वा एवमवादीत्—हे पद्मनाभ ! सदृशस्त्वं खलु तस्य ' अग-
डददुर्दुरस्त ' अगडददुर्दुरस्त=कूपमण्डूकस्य यथा कूपमण्डूकः कूपाद् वहिः प्रदेशे
विद्यमान न किमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रापस्थित किमपि
वस्तु न वेत्सीति भावः । कञ्चुल्लनारदस्य वचन श्रुत्वा पद्मनाभः कञ्चुल्लनारदं
पृच्छति—' के ण देवाणुप्पिया ! से अगडददुर्दुरे ' इति । हे देवानुप्रिय ! कः खलु
सोऽगडददुर्दुरः ? एव पद्मनाभेन राज्ञा पृष्ठः सन् कञ्चुल्लनारदः प्राह—' एव यथा
मल्लिणाए ' यथा मल्लिज्ञाने वर्णितमेवमत्र गोध्यम् समुद्रदुर्दुरकूपदुर्दुरयोः
परस्परवार्तालापो यथा सजातस्तथा कञ्चुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः । पुनः कञ्चुल्ल-

कहा—हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते
रहते हो—तो क्या हे देवानुप्रिय ! तुमने कहीं पर क्या ऐसा
अतः पुर पहिले कभी देखा है—जैसा मेरा अन्तः पुर है ? पद्मनाभ
राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कञ्चुल्ल नारद कुछ हँसने लगे—
हँसकर तब उन्होंने उनसे इस प्रकार कहा—हे पद्मनाभ ! तुम उस
कूपम ढूँक के समान हो—जो अपने निवासस्थान भूत कुए से बाहिरी
प्रदेश में विद्यमान कुछभी नहीं जानते हो । कञ्चुल्ल नारद के वचन
सुनकर के पद्मनाभ ने उन कञ्चुल्ल नारद से पूछा—देवानुप्रिय ! वह
अगडददुर्दुर का आख्यान कैसा है ? तब नारद ने उनसे कहा—मल्लि
नाम के अध्ययन में कूपमढूक और समुद्र मढूक के परस्पर में वार्ता-
लाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है—सो नारद ने यह
आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया— पुनः कञ्चुल्ल नारद उनसे

કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ દિવસે આવો મારા જેવો રણવાસ બેયો
છે ? પદ્મનાભ રાજા વડે આ રીતે પ્રશ્ન પૂછાએલા તે કચ્છુલ નારદ હસવા
લાગ્યા, હમીને તેઓએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પદ્મનાભ ! તમે તે કૂપ
મ ડૂક જેવા છો કે જે પોતાના નિવાસસ્થાન કૂપથી બહારના પ્રદેશ વિષે થોડું
પણ જ્ઞાન ધરાવતો નથી કચ્છુલ નારદના વચન સાંભળીને પદ્મનાભે તે કચ્છુલ
નારદને પૂછ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે અગડ દુર્દુરડુ આખ્યાન કેવી રીતે છે ?
ત્યારે નારદે તેમને મતિ નામે અધ્યયનમા વર્ણવવામા આવેલા કૂપ મ ડૂક અને
સમુદ્ર-મ ડૂકના વાર્તાલાપ રૂપે તે સંપૂર્ણ આખ્યાન તેમને કહી સંભળાવ્યું

नारदोवदति-एव यत्प्रमाणप्रकारेण खलु हे देवानुप्रिय । जम्बूद्वीपे द्वीप भारते
वर्षे हस्तिनापुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो द्रुहिता चूलन्या देव्या आत्मजा पाण्डोः
स्तुपा पश्चान्ना पाण्डवाना भार्या द्रौपदी देवी रूपेण च यावद् उत्कृष्ट शरीरा वर्तते
द्रौपयाः खलु देव्याश्चित्रस्यापि पादादुत्पत्तस्याय तमारोह्य तत्र तत्पुरवर्तिनी
काचिदपि देवी 'सयत्नमपि कठ' शततमामपि कर्त्रा नाहति, इति कृत्वा-एव
ज्ञात्वा कथयामि-द्रौपदीसदृशी नास्ति काचिदपीति । ततः कञ्चुलनारदोगन्तुकामः

फहते हैं कि हे देवानुप्रिय । सुनो-यात इस प्रकार है-(जम्बू द्वीपे द्वीप
भारते वासे हस्तिनापुरे द्रुपदस्य रण्णो धूया, चूलणीय देवीय अत्तया
पद्मस्तु स्तुप्ता, पचण्ण पडवाण भारिया दोवई देवी रूपेण य जाव उक्किह
सरीरा, दोवईण ण देवीय छिन्नस्त वि पायगुट्टयस्स अय तत्र अवरोहो सय
न्नमपि कल ण अगवई त्ति कट्टु पडमणाभ आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव पडि
गए, तण्ण से पडमणाभे राया कञ्चुल्लणारयस्स अति एणमइ सोच्चा
णिसम्म दोवईण, देवीए रूपे य च्छिण्ण दोवईण अज्जोववन्ने जेणेव पोस
हसाला तेणेव उवागच्छइ) जम्बूद्वीप नाम के प्रथम द्वीप (मध्य जम्बूद्वीप
में) में भारतवर्ष में, हस्तिनापुर नाम के नगर में द्रुपद राजा की पुत्री
चूलनी देवी की आत्मजा, पांडु राजा की स्तुपा-पुत्रवधू-पाच पांडवों
की भार्या द्रौपदी देवी है । यह रूप से यावत् उत्कृष्ट शरीर है । तुम्हारा
यह अतःपुर उसके कटे हुए पैर के अंगूठे के सौंवे अंश के बराबर

अने त्पारपथी कञ्चुल्ल तेभने कडेवा लाग्या के डे देवानुप्रिय । आत्मजा,
यात अयेवी छे के—

(जम्बू द्वीपे द्वीप भारतेवासे हस्तिनापुरे द्रुपदस्य रण्णो धूया, चूलणीय
देवीय अत्तया पद्मस्तु स्तुप्ता, पचण्ण पडवाण भारिया दोवई देवी रूपेण य जाव
उक्किहसरीरा, दोवईण ण देवीय छिन्नस्त वि पायगुट्टयस्स अय तत्र अवरोहो
सयन्नमपि कल ण अगवई त्ति कट्टु पडमणाभ आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जाव पडि
गए, तण्ण से पडमणाभे राया कञ्चुल्लणारयस्स अति एणमइ सोच्चा णिसम्म
दोवईण, देवीए रूपेय मुच्छिण्ण दोवईण अज्जोववन्ने जेणेव पोसहसाला
तेणेव उवागच्छइ)

जम्बू द्वीप नामना प्रथम द्वीपमा भारत वर्षमा हस्तिनापुर नामे नग
रमा द्रुपद राजानी पुत्री धूवनी देवीनी आत्मजा, पांडु राजानी स्तुपा-पुत्रवधू
पाच पांडवानी पत्नी द्रौपदीदेवी छे ते रूपथी यावत् उत्कृष्ट शरीरवाणी छे
तमादे आ रजुवास तेना कथायेवा अग्रहाना सोमा आगानी अरोधर पञ्च
नथी, आ अथु हु विचारपूर्वक कही रह्यो छे द्रौपदी देवी १ १ पञ्च

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कार माप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विप्रया गगनमुद्गम्यन् प्रतिगत इत्यर्थः ।

तत खलु स पद्मनाभो राजा कञ्जुल्लनारदस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा= आकर्ष्य निशम्य हयवर्धाय द्रोपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृद्धः = लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, अयुपपन्नः = एकाग्रचित्त सन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पौषधशाला प्रमार्ज्य यावदष्टम भक्त कृत्वा ' पूर्वमगतिक ' पूर्वमित्र देवम् एव=यस्यमाणप्रकारेण अगदीत् एव खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारत वर्षे इस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रोपदी देवी यावत्-उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय !

भी नहीं है। ऐसा मैं जानकर ही कह रहा हूँ। द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है। उस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहाँ से चलने के लिये अभिलाषी बन गये-तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पूछा पूछकर यावत् वे वहाँ से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये। इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एवं लावण्य में मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में विलकुल एकाग्र हो गया। इस तरह होकर, वे जहाँ पौषधशाला थी वहाँ गये। (उवगच्छित्ता पौमहसालं जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवानुप्पिया ! जम्बूद्वीपे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवानुप्पिया !

नथी आ प्रभावे कहीने ते कच्छुल्ल नारद त्याही आलषा भाटे तैरथा थई गया तेमळे पद्मनाभ राजाने जवा भाटे पूछ्यु, पूछीने यावत् त्याही तेजो पद्मनाभ राजानी पासेथी सत्कृत थईने उत्पतनी विद्याना प्रभावथी आका शने ज्योणगता जाता रह्या त्यासपछी ते पद्मनाभ राजा कञ्जुल्ल नारदना मुपथी आ समाचारने मालणीने अने तेने हृदयमा धारण करीने द्रौपदी देवीना रूप, यौवन अने लावण्यथी मूर्च्छित ४ थई गया, यावत् तेमनु मन तेमा अेकहम थोटी गयु आ स्थितिमा तेजो ज्या पौषधशाणा इती त्या गया

(उवागच्छित्ता पौमहसालं जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवानुप्पिया ! जम्बू द्वीपे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवानुप्पिया ! दोवई देवी इहमाणिय तएण पुव्वसगइय देवे पद्मनाभ एवं

નારદોદતિ-એવ યત્પમાણમકારેણ સ્વલુ દે વેગાનુમિય । જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે મારતે
 વર્ષે હસ્તિનાપુરે નગરે મુપદસ્ય રાજો દ્વિદિતા પૂલયા દેવ્યા આત્મજા પાન્થોઃ
 સ્તુપા પશ્ચાના પાન્ડરાના માર્યા દ્રૌપદી દેવી રૂપેણ ચ યાવદ્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરા વર્તતે
 દ્રૌપદ્યાઃ સ્વલુ દેવ્યાશ્ચિત્તમસ્ત્યાપિ પાદાનુષ્ટાસ્યાય તમારોધ તમાન્તઃપુરવર્તિની
 કાચિદપિ દેવી 'સયતમપિ કલ' શતતમામપિ યન્ના નાર્દતિ, ઇતિ કૃત્વા-એવ
 જ્ઞાત્વા કથયોમિ-દ્રૌપદીસદશી નાસ્તિ કાચિદપોતિ । તતઃ કચ્છુલ્લનારદોગન્તુકામઃ

કહતે હું કિ દે વેગાનુમિય । સુનો-વાત હમ પ્રકાર હૈ-(જમ્બૂ દ્વીપે દ્વીપે
 મારહે વાસે હતિયાઝરે દુવયસ્સ રણ્ણો ધૂયા, ચૂલણીય દેવીય અસયા
 પહુસ્સ સુળ્હા, પવળ્હ પહવાળ મારિયા દોવર્દ દેવી રૂપેણ ચ જાવ ઉક્કિહ
 સરીરા, દોવર્દેય ણ દેવીય છિત્તસ્સ વિ પાયગુટ્ટયસ્સ અય તવ અવરોહો સય
 ન્નમપિ કલ ણ અગર્વે ત્તિ કટ્ટુ પડમણા મ આપુચ્છહ આપુચ્છિત્તા જાવ પઢિ
 ગણ, તણ્ણ સે પડમણામે રાયા કચ્છુલ્લનારયસ્સ અતિણ્ણમઠ્ઠ સોચ્ચા
 ણિસમ્મ દોવર્દેય, દેવીય રૂપે ચ ચ્છિત્તેય દોવર્દેય અજ્જોવવન્ને જેણેવ પોમ
 હસાલા તેણેવ ઉવાગચ્છહ) જમ્બૂદ્વીપ નામ કે પ્રથમ દ્વીપ (મધ્ય જમ્બૂદ્વીપ
 મેં) મેં ભારતવર્ષ મે, હસ્તિનાપુર નામ કે નગર મેં મુપદ રાજા કી પુત્રી
 ચુલની દેવી કી આત્મજા, પાન્ડુ રાજા કી સ્તુપા-પુત્રવધૂ-પાચ પાઢવો
 કી માર્યા દ્રૌપદી દેવી હૈ । યહ રૂપ સે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીર હૈ । તુમ્હારા
 યહ અત્તાપુર ઉસકે કટે હુળ પૈર કે અગૂઠે કે સૌવે અશ કે ઘરાબર

અને ત્યારપછી કચ્છુલ્લ તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! આમળો,
 વાત એવી છે કે—

(જમ્બૂ દ્વીપે દ્વીપે મારહેવાસે હતિયાઝરે દુવયસ્સ રણ્ણો ધૂયા, ચૂલણીય
 દેવીય અસયા પહુસ્સ સુળ્હા, પવળ્હ પહવાળ મારિયા દોવર્દ દેવી રૂપેણ ચ જાવ
 ઉક્કિહસરીરા, દોવર્દેય ણ દેવીય છિત્તસ્સ વિ પાયગુટ્ટયસ્સ અય તવ અવરોહો
 સયન્નમપિ કલ ણ અગર્વે ત્તિ કટ્ટુ પડમણામ આપુચ્છહ, આપુચ્છિત્તા જાવ પઢિ
 ગણ, તણ્ણ સે પડમણામે રાયા કચ્છુલ્લનારયસ્સ અતિણ્ણમઠ્ઠ સોચ્ચા ણિસમ્મ
 દોવર્દેય, દેવીય રૂપેય મુચ્છિત્તેય દોવર્દેય અજ્જોવવન્ને જેણેવ પોસહસાલા
 તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

જમ્બૂ દ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નામે નગ
 રમાં દુપહ રાજાની પુત્રી ચૂવની દેવીની આત્મજા, પાન્ડુ રાજાની સ્તુપા-પુત્રવધૂ
 પાચ પાડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે તે રૂપથી યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે
 તમારો આ રણ્ણાસ તેના કપાયેલા અમૂઝાના સોમા ભાગની બરાબર પહુ
 નથી, આ બધુ હું વિચારપૂર્વક કહી રહ્યો છું દ્રૌપદી દેવી નારી કોઈ પહુ

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कार प्राप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विद्या गगनमुद्गम्यन् प्रतिगत इत्यर्थः ।

तत खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लनारदस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा= आकर्ष्य निश्चय्य हयवर्धाय द्रौपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृध्रः= लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, ज गुपपन्नः= एकाग्रचित्त सन् यत्रैव पोषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पोषधशाला प्रमार्ज्य यावदष्टम मक्त कृत्वा ' पूर्वसगतिक ' पूर्वपित्र देवम् एव=वन्धमाणप्रकारेण अरादीत् एव खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे इस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रौपदी देवी यावत्-उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय !

भी नहीं है। ऐसा मैं जानकर ही कह रहा हूँ। द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है। उस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहा से चलने के लिये अभिलाषी बन गये-तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पृछा पूछकर यावत् वे वहा से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये। इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एव लावण्य मे मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में विलकुल एकाग्र हो गया। इस तरह होकर, वे जहा पौषधशाला थी वहा गये । (उवागच्छित्ता पोमहसाल जाव पुण्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जयूहीवे दीवे भारहे वासे इत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया !

नथी आ प्रभाणे कहीने ते वच्छुल्ल नारद त्याथी जम्बूद्वीपे भाटे तेरवा
थध गया तेमणे पद्मनाभ राजाने जवा भाटे पूछथु यावत् त्याथी
तेओ पद्मनाभ राजानी पासोथी सत्कृत थधने उत्पतनी । वधी आका
शने ओणगता जता रह्या त्थारपछी ते पद्मनाभ
मुण्ठथी आ समाचारने सालणीने अने तेने हृदयम
देवीना रूप, यौवन अने लावण्यथी मूर्च्छित ४ थध
तेमा ओकहम ओटी गथु आ स्थितिमा तेओ जया पो

(उवागच्छित्ता पोमहसाल जाव पुण्वसगइय देव
देवाणुप्पिया ! जयू हीवे दीवे भारहे वासे इत्थिणाउरे
ण देवाणुप्पिया ! दोवई देवी इहमाणिय तएवं

દ્રૌપદી દેવીએ ' હા માણિય ' કહાનેનુમ્ । તતઃ રાત્રુ પૂર્વમગતિઃ કો દેવઃ પદ્મનાભ
નૃપમ્ । એમયાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! નો મનુષ્ય તત્ત્વ ધૂત થા મન્વદ્ વા મન્વિષ્ણુ વા,
યત્ સ્વલુ દ્રૌપદી દેવી પથ પાંડવાન સુતરાન્નેન પુરુષેણ સામુદ્રાગત્ મોગાન્
યાવદ્ વિહરતિ, તથાપિ ચ મનુષ્ય તત્ત્વ મીત્યર્થ દ્રૌપદી દેવીમિદં હૃદયપ્રાનયામીતિ

દોઢાં દેવોં હામાણિય તળણ પુનઃસગરણ દેવે પડમનાભ એ વયાસી-નો
સ્વલુ દેવાણુપિયા ! એ મૂય વા મન્વ વા મન્વિષ્ણુ વા જગ્ગ દોઢાં
દેવી પચ પડવે મોત્તુગ અન્નેણ પુરિસેણ સદ્ધિં ઓરાલાઈ જાવ વિહરિ
સ્સઈ) વહાં જારુર ઉન્નોં ને ઉમ પોપથ શાલા કો રજોહરણ
સે સાફ ક્રિયા યાવત્ અષ્ટમ ભક્ત કર કે પૂર્વ સગતિ દેવ કા આગમન
ક્રિયા દેવોં કે આનેપર પૂર્વ સગતિક દેવ સે હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુ
પ્રિય ! જમૂદ્રીપ નામ કે દ્રીપ મેં ભારત વર્ષ મેં હસ્તિનાપુર નગર મેં
પાંડવો કી માર્યા દ્રૌપદી દેવી હૈ । યત્ યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીર હૈ । હસલિયે
હે દેવાનુપ્રિય ! મેં ઉસ દ્રૌપદી દેવી કો તુમસે યદા છે આને કે લિયે
ચાહતા હૈ । પદ્મનાભ કી હસ વાત કો સુનકર પૂર્વભવ કે મિત્ર ઉસ
દેવ ને ઉસ સે તવ પેસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! પેસી વાત દ્રૌપદી કે સાથ
ન પહિલે હુઈ હૈ, ન આગે હોગી-ઑર ન અવ વર્તમાન મેં હો સક્તી હૈ,
જો દ્રૌપદી દેવી પાચ પાંડવો કો છોડકર અન્ય કિસી કૂમરે પુરુષ કે
સાથ ઉદાર યાવત્ મનુષ્ય ભવ સમગ્રી કામ સુલો કો મોમે (તદાપિ

વયાસી નો સ્વલુ દેવાણુપિયા ! એ મૂય વા મન્વ વા મન્વિષ્ણુ વા જગ્ગ દોઢાં
દેવો પચ પડવે મોત્તુગ અન્નેણ પુરિસેણ સદ્ધિં ઓરાલાઈ જાવ, વિહરિસ્સઈ)

ત્યા જગ્ગે તેમણે તે પોપથશાળાને રજોહરણથી સાફ કરી યાવત્ અષ્ટમ
ભક્ત કરીને પૂર્વ સગતિ દેવનું આવાહન કર્યું દેવ જગ્ગે આવી ગયો ત્યારે
તેમણે પૂર્વસગતિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જમૂદ્રીપ
નામના દ્રીપમાં ભરત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નગરમાં પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી
છે, તે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તે દ્રૌપદી દેવીને
તમે અહીં લઈ આવો એવી મારી ઇચ્છા છે પદ્મનાભની આ વાતને સાંભળીને
પૂર્વભવના મિત્ર મેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! દ્રૌપદી
દેવીની સાથે ચરણ ન પડેવા થયું છે ન ભવિષ્યમાં થશે અને
ન વત્
છે દ્રૌપદી દેવી પાચે પાંડવો સિવાય બીજા
તવ સબધી કામસુખો લોગવે આ

कृत्वा=उक्त्वा पद्मनाभम् आपृच्छति आपृच्छ्य तथा उत्कृष्टया देवसम्पन्धिन्या गत्या यावत् लवणसमुद्रस्य मध्यम-येन=उपरिभागेन गगनमार्गेण, यत्रैव हस्तिनापुर नगर तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरो राजा द्रौपद्या सार्धमुपरि आकाशतले=प्रासादादालिकोपरि सुरप्रसुप्तथाप्यासीत्, ततः खलु स पूर्वसगतिको देवो यत्रैव युधिष्ठिरो राजा यत्रैव द्रौपदीदेवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रौपद्यै

य ण अह तव पियद्वतया दौवई देवीं इह हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभ आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्द मज्झं मज्झेण जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) फिर भी मैं तुम्हारी प्रीति के निमित्त द्रौपदी देवी को यहाँ शीघ्र लेकर आता हूँ । ऐसा कह-कर उसने जाने के लिये उन पद्मनाभ से पूजा, पूजकर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसचन्धी गति से यावत् लवण समुद्र के बीच से होकर जहा हस्तिनापुर नगर था उस और चल दिया ! (तेण कालेण तेण सम-एण हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया, दौवईए सद्धिं उप्पि आगासतलसि सुह-पसुत्ते यावि होत्था, तएण से पुव्वसगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिले राया जेणेव दौवई देवी तेणेव उवागच्छइ) उस काल और उस समय में हस्तिनापुर नगरमें युधिष्ठिर राजाके साथ द्रौपदी आकाशतलमें-प्रासाद की अदालिका के ऊपर सोये हुए थे । वह पूर्व सगतिक देव जहा वे युधिष्ठिर राजा और जहाँ वह द्रौपदी देवी थी वहाँ आया-(उवागच्छित्ता

(तद्धानि य ण अह तव पियद्वतया दौवई देवीं इह हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभ आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्द मज्झं मज्झेण जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

छताये तमने भुश उरवा भाटे हु द्रौपदी देवीने शीघ्र अर्द्धी लध आबु छु आभ कहीने तेणे जवा भाटे पद्मनाभ राजने पूछथु पूरीने ते पोतानी उत्कृष्ट देवभव सचन्धी गतिथी यावत् लवण समुद्रनी पच्छे थधने न्या हस्तिनापुर नगर छतुं ते तरइ रवाना थये

(तेण कालेण तेण समएण हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया, देवईए सद्धिं उप्पि आगासतलसि सुहपसुत्ते यावि होत्था तएण से पुव्वसगइए देवे जेणेव जुहि-ट्ठिले राया जेणेव दौवई देवी तेणेव उवागच्छइ)

ते काले अने ते समये हस्तिनापुर नगरभा युधिष्ठिर राजा अने द्रौपदी देवी मंडलनी अगाशी उपर सूता छता ते पूर्व सगतिक देव न्या ते युधि-ष्ठिर राजा अने न्या ते दौपदी देवी छती न्या आबये

દૌપદીં દેવીમ્ ' હ્રદ માણિય ' ઇદાનેતુમ્ । તતઃ રાત્રુ પૂર્વસગતિરો દેવઃ પદ્મનાભ
 નૃપમ્ એવમવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! નો રાત્રુ ઇતદ્ ભૂત યા મવદ્ યા મવિસ્ત વા,
 યત્ સ્વલુ દ્રૌપદી દેવી પદ્મ પાંડવાત મુરત્યાઽન્યેન પૂરુષેણ સાર્ધમુદ્ગમન મોગાન્
 યામદ્ વિહરતિ, તથાપિ ચ સ્વલુ અદ તત્ પ્રીત્યર્થઃ દ્રૌપદી દેવીમિદ્ દિવ્યપ્રાનયામીતિ
 દોવર્દ દેવોં હ્રદમાણિય તત્ત્વ પુન્નસગદ્ગ દેવે પડમનાભ એવ વયાસી-નો
 સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! એવ મૂય વા મવ્ય વા મવિસ્ત વા જળગ દોવર્દ
 દેવી પદ્મ પડવે મોત્તગ અન્નેણ પુરિસેણ સદ્ધિ ઓરાલાઙ્ગ જાવ વિહરિ
 સ્સહ) વર્હા જાતર ઉન્તોં નેં ઉસ પૌપથ શાલા કો રજોહરણ
 સે સાફ ક્રિયા યાવત્ અષ્ટમ ભક્ત ફર કે પૂર્વ સગતિ દેવ કા આગ્રાહન
 ક્રિયા દેવોં કે આનેપર પૂર્વ સગતિક દેવ સે હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુ
 પ્રિય ! જંબૂદ્વીપ નામ કે દ્વીપ મેં ભારત વર્ષ મેં જ્ઞસ્તિનાપુર નગર મેં
 પાંડવો કી આર્યા દ્રૌપદી દેવી હૈં । યદ્ યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીર હૈં । હસલિયે
 હે દેવાનુપ્રિય ! મેં ઉસ દ્રૌપદી દેવી કો તુમસે યદા છે આન કે લિયે
 વાહતા હૈં । પદ્મનાભ કી હસ વાત કો સુનકર પૂર્વભવ કે મિત્ર ઉસ
 દેવ ને ઉસ સે તથ એસા કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! એસી વાત દ્રૌપદી કે સાથ
 ન પહિલે હુઈ હૈં, ન આગે હોગી-ઑર ન અવ વર્તમાન મેં હો સકતી હૈં,
 જો દ્રૌપદી દેવી પાંચ પાંડવો કો છોડકર અન્ય કિસી દુમરે પુરુષ કે
 સાથ ઉદાર યાવત્ મનુષ્ય ભવ સખની કામ સુર્વો કો ભોગે (તદાપિ
 વયાસી નો સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! એવ મૂય વા મવ્ય વા મવિસ્ત વા જળગ દોવર્દ
 દેવો પદ્મ પડવે મોત્તગ અ નેણ પુરિસેણ સદ્ધિ ઓરાલાઙ્ગ જાવ, વિહરિસ્સહ)

ત્યા જગને તેમણે તે પૌપથશાળાને રત્નોહરણથી સાદ્ કરી યાવત્ અષ્ટમ
 ભક્ત કરીને પૂર્વ સગતિ દેવનુ આવાહન કર્યું દેવ જગારે આવી ગયો ત્યારે
 તેમણે પૂર્વસગતિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! જંબૂદ્વીપ
 નામના દ્વીપમા ભરત વર્ષમા હસ્તિનાપુર નગરમા પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી
 છે, તે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તે દ્રૌપદી દેવીને
 તમે અહીં લઈ આવો એવી મારી ઇચ્છા છે પદ્મનાભની આ વાતને સાંભળીને
 પૂર્વભવના મિત્ર તે દેવે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! દ્રૌપદી
 દેવીની સાથે આ જાતનુ આચરણ ન પડેવા થયું છે ન ભવિષ્યમા થશે અને
 ન વર્તમાનમા થવાની શક્યતા છે દ્રૌપદી દેવી પાંચે પાંડવો મિવાય ખીજ
 દોઈ પુરુષની સાથે ઉદાર યાવત્ મનુષ્યભવ સખધી કામસુખો ભોગવે આ
 વાત તદ્દન અસંભવિત છે.

यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानुप्रिय ! मया हस्तिनापुराद् द्रौपदी इह हव्यमानीता तयाशोकवनिकाया तिष्ठति, अतः पर त्व जानासि ' इति कृत्वा=उक्त्वा, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० २५ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी तओ मुहुत्तरस्स पडिबुद्धा समाणी त भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एव वयासी-नो खलु अम्हं एसे सए भवणे णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेण वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधवेण वा अन्नस्स रणो असोगवणिय साहरियत्तिकट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ, तएणं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकार विभूसिए अतेउरपरियालं संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवई देवी ओहय० जाव झियायमाणी पासइ पासित्ता एव वयासी-किण्णं तुम देवाणुप्पिया । ओहय जाव झियाहि, एवं

दिया-गाढ निद्रा से रहित कर फिर वह वहाँ से जहा पद्मनाभ राजा थे बड़ा गया-वहा जाकर उसने उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! मैं हस्तिनापुर नगर से द्रौपदी को यहा ले आया हूँ । वह तुम्हारी अशोक वाटिका में ठहरी है, अत अत्र तुम जानो । ऐसा कहकर वह देव जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा की और वापिस चला गया । सू-२५

करीने ते ज्या पद्मनाभ राजा हुता त्या गथे त्या जधने तेणे तेभने आ प्रभाणे उधु के हे देवानुप्रिय ! हस्तिनापुर नगरथी द्रौपदी देवीने हु अहीं लज आये। छ ते तमारी अशोक-वाटिकाभा छे, जेथी हवे तमे न्हा। आ प्रभाणे कहीने ते देव जे दिशा तरक्षथी प्रकट थये हुतो ते ज दिशा तरक्ष पाछे जतो रह्यो ॥ सूत्र २५ ॥

દેવ્યે 'આસોવણિય' અમ્માપર્ની નિદ્રાં 'દલયઃ' દગતિ મુતમમુત્તાં દ્રૌપદી
 ગાદનિદ્રયાડડક્રાન્તાઃ ક્રાન્તાનિત્યર્થઃ । દત્તયા-ગાદનિદ્રાસ્તી કમ્પ્યા દ્રૌપદી દેવી
 યદ્દીત્યા તયા ઉત્કૃષ્ટયા દેવમમ્મન્થિન્યાગત્યા યાત્ યજીરામરકકા રાજયાની
 યજીર પદ્મનાભસ્ય ભવન તર્જીયોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પદ્મનાભસ્ય ભવને 'અસોગવ
 ણિયાણ' અશોકરનિકાયામ્ અગોરુગાટિકાયા દ્રૌપદી દેવી સ્થાપયતિ,
 સ્થાપયિત્યા 'આસોવણિ અઘરહ' અમ્માપર્ની નિદ્રામપરતિ, અપહરત્ય

દોઘરૂં દેવીણ ઓસોવણિય દલયઃ, દલિત્તા દોઘરૂં દેવિ ગિણ્દહ, ગિણ્દહ
 તીણ ઉક્કિટ્ટાણ જાવ જેણેવ અમરકકા જેણેવ પડમણાભસ્સ ભવણે
 તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પડમણાભસ્સ ભવણસિ અસોગવણિ
 યાણ દોઘહ દેવીં ઠવેહ ઠાવિત્તા ઓસોવણિ અઘરહ, અઘરિત્તા જેણેવ
 પડમણામે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા ણવ વયાસી-ણસ ણ દેવાણુ
 પ્પિયા । મણ હતિયાણાઝરાઓ દોઘરૂં હહ હવ્યમાણીયા, તવ અસોગવણિયાણ
 ચિદ્દહ, અતોપુર તુમ જાણિસિ ત્તિરુદ્દુજામેવ દિસિ પાડબ્ભૂણ તામેવ
 દિસિ પઢિગણ) વહા આકર ઉસને દ્રૌપદી દેવી કો ગાદ નિદ્રા મેં સુલા
 દિયા, સુલાકર ફિર ઉસને ઉસ દ્રૌપદી કો વહા સે ઉઠાયા-ઔર ઉઠા
 કર ફિર વહ ઉસ ઉત્કૃષ્ટ દેવભવસચ્ચી ગતિ સે ચલકર યાવત્ જહા
 અમરકકા નગરી ઔર જહા પદ્મનાભ રાજા કા ભવન થા વહા આયા-
 વહા આકર કે ઉસને પદ્મનાભ કે ભવન મેં અશોકવાટિકા મેં દ્રૌપદી
 દેવી કો રખદિયા । રખકર કે ફિર ઉસને ઉસે ગાદ નિદ્રા સે રહિત કર

(ઉવાગચ્છિત્તા દોઘરૂં દેવીણ ઓસોવણિય દલયઃ, દલિત્તા દોઘરૂં દેવિ
 ગિણ્દહ, ગિણ્દિત્તા તાણ ઉક્કિટ્ટાણ જાવ જેણેવ અમરકકા જેણેવ પડમણાભસ્સ
 ભવણે-તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિત્તા પડમણાભસ્સ ભવણસિ અસોગવણિયાણ
 દોઘરૂં દેવીં ઠવેહ ઠાવિત્તા ઓસોવણિ અઘરહ, અઘરિત્તા જેણેવ પડમણામે તેણેવ
 ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા ણવ વયાસી-ણસણ દેવાણુપ્પિયા મણ હતિયાણાઝરાઓ
 દોઘરૂં હહ હવ્યમાણીયા, તવ અસોગવણિયાણ ચિદ્દહ, અતોપુર તુમ જાણિસિત્તિ વહુ
 જામેવ દિસિ પાડબ્ભૂણ તામેવ દિસિ પઢિગણ)

ત્યા આવીને તેણે દ્રૌપદીને ગાદ નિદ્રામાં સૂવાડી દીધી, સુવાડીને તેણે
 તે દ્રૌપદીને ત્યાથી ઉઠાવી અને ઉઠાવીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવલવ સબધી ગતિથી
 ચાલીને યાવત્ જ્યાં અમરકકા નગરી અને જ્યાં પદ્મનાભ રાજાનું કામવન હતું
 ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે પદ્મનાભના ભવનમાં અશોક-વાટિકામાં દ્રૌપદી
 દેવીને મૂકી દીધી. મૂકીને તેણે ગાદ નિદ્રા કર કરી દીધી.

मेतद् भवनं नो खलु एषाऽस्माकं 'सगा' स्वका=स्वकीया, अशोकनिका, तद् न ज्ञायते खलु-अहं केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा अन्यस्य राज्ञोऽशोकनिकाया 'साहरिया' संहृता-आनीताऽस्मि' इति कृत्वा=इति विचार्य, अपहतमनःसकल्पा=अनिष्टयोगेन भग्न-मनोरथा निपादप्रपणतेत्यर्थः यावद् ध्यायति=आर्त-यान करोति ।

ततः खलु पद्मनाभो राजा स्नातो यावत् सर्वाङ्गकारविभूषितोऽन्तःपुरपरि-
वारसपरिवृतो यत्रैवाशोकनिका यत्रैव द्रौपदी देवी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

एसा अम्ह सगा असोगवणिगा, त न नज्जइ, न अहं केणई देवेणवा
दाणवेण वा किं पुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गन्धवेण वा
अन्नस्स रण्णो असोगवणिय साहरियत्ति कट्ठु ओहयमणसकप्पा
जाव झियायइ) यह मेरा निज का भवन नहीं है, यह मेरी निज की
अशोक वाटिका नहीं है। तो पता नहीं पड़ता क्या मैं किसी दूसरे
राजा की अशोकवाटिका में किसी देव, दानव, किंपुरुष, किन्नर महो-
रग अथवा, गन्धर्व के द्वारा हरण कर लाई गई हूँ। इस प्रकार के विचार
से उस का मनः सकल्प अपहत हो गया-अनिष्ट के योग से उस का
मनोरथ भग्न हो गया और वह खेदखिन्न हो गई यावत् आर्त-यान
करने लगी। (तण्ण से पडमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालकारविभू-
सिए अतेउरपरियाल सपिवुडे, जेणेव असोगवणिगा जेणेव दोवई
देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता दोवई देवी ओहय० जाव झिया-

(नो खलु अम्ह एसे सएमवणे णो खलु एसा अम्ह सगा असोगवणिगा, त न
नज्जइ न अहं केणई देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महो-
रगेण वा गन्धवेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणिय साहरियत्ति कट्ठु ओहयमण
सकप्पा जाव झियायइ)

आ भाइ लवन नहीं, आ भारी अशोक वाटिका नहीं कर्छ भभर
पडती नहीं, शुंहु णीज्ज केर्छ राजनी अशोक वाटिकाभा केर्छ देव, दानव,
किंपुरुष किन्नर, महोरग अथवा तो गन्धर्व वडे अपहृत थधने लर्छ ज्वाभा
आनी छु आ ज्ञतना विचारोथी तेनु भन उदाय थधं गयु, अनिष्टना योगथी
तेनो मनोरथ लज्ज थधं गयो अने ते जेह-भिन्न थधं गर्ज यावत् आर्तध्यान
करवा लागी

(तण्ण से पडमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालकारविभूसिए अतेउरपरियाल
सपिवुडे, जेणेव असोगवणिगा जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

खलु तुमं देवाणुप्पिया ! मम पुत्तसंगडएणं देवेणं जंबूदी-
वाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिद्धि
हस्स रण्णो भवणाओ साहरिया त मा णं तुम देवाणुप्पिया !
ओहय० जाव झियाहि, तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाईं
जाव विहराहि, तएणं सा दोवई देवी पउमणाभं एव वयासी
एव खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीये दीवे भारहे वासे बारवइए
णयरीए कण्हे णाम वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, त णं
से छण्हं मासाण मम कूप्प नो हव्वमागच्छइ तएणं अह देवा
णुप्पिया ! जं तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणाणिदेसेचिद्धि
स्सामि, तएणं से पउमे दोवईए एयमट्टं पडिसुणित्ता २ दोवईं
देवि कण्णंतेउरे ठवेइ, तएणं सा दोवई देवी छट्ट छट्टेणं अनि
विखत्तेणं आयाविलपरिग्गहिणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे
विहरइ ॥ सू० २६ ॥

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । तत् खलु सा द्रौपदी देवी ततो मुहूर्त्तान्तरे
प्रतिबुद्धा=जागरिता सती तद् भवनम् अशोक्वनिता च ‘अपञ्चभिजाणमाणी’
अप्रत्यभिजानन्ती भवनादिकमपरिचित जानन्ती एवमवादीत्—नो खलु अरमाव

—तएण सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा दोवईदेवी) वह द्रौपदीदेवी (ताओ
मुहुत्तरस्स पडिबुद्धा समाणी) ? मुहूर्त्त के बाद जगी सो जग कर
उसने (त भवण असोगवणिय च अपञ्चभिजाणमाणी एव वयासी)
उस भवन को एव उस अशोकचाटिका को अपरिचित जानकर अपने
मन में ऐसा विचार किया—(नो खलु अम्ह एसे सएभवणे, णो खलु

तएण सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थारपछी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (ताओ मुहुत्तरस्स
पडिबुद्धा समाणी) ओउ मुहुत्तं पछी जगी अने जगीने तेणे (त भवण
असोगवणिय च अपञ्चभिजाणमाणी एव वयासी) ते भवन अने ते अशोक
चाटिकने अपरिचित जालीने पोताना मनमा आ जतने।

खलु त्व हे देवानुप्रिये ! अपहतमनःसम्पत्त्या यावद् ध्याय, आर्त-यान मा कुरु
त्व मया सार्धं विपुलान् भोगभोगान् यावद् सुञ्जाना विहर=मदीयमासादे तिष्ठ' इति ।

तत खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभमेवमगादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय !
जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते यषे द्वारवत्या नगर्यां कृष्णो नाम वासुदेवो मम प्रियभातृकृ="ममप्रियस्य भर्तुर्भ्राता परिव्रमति, तद् यदि खलु म पण्णा मामाना मध्ये 'मम' मा
'कूय' देशोक्तदोष्यम्, अन्वेययितुं शक्नीतु वा नो शीघ्रमागच्छति-तत खलु

गई हो । इमलिचे हे देवानुप्रिये ! तुम आपहतमनःसकृत्प ननकर
यावत् आर्तध्यान मत करो । तुज तो अब मेरे साथ विपुल कामभोगों
को भोगती हुई मेरे प्रासाद में रहो । (तएण सा दोवई देवी पडमणाभ
एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! जम्बूद्वीवे दीवे भारहे वासे वारवइए
णयरीए कण्णे णाम वासुदेवे ममप्पियभाउए परिव्रमइ, त जइएण से
छण्ह मासाण मम कूय णो हव्व मागच्छइ तएण अह देवाणुप्पिया !
ज तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणणिदेसे चिट्ठिस्सामि तएण से
पडमे दोवईए एयमइ पडिप्पुणेइ २ दोवइ देवी कण्णतेउरे ठवेइ,
तएण सा दोवई देवी छट्ट छट्टेण अणिकिखत्तेण आयविलपरिगहिण
तवोक्कमेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ) इसके बाद उस द्रौपदी देवी
ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! सुनो-जम्बूद्वीप नाम के
द्वीप में भारतवर्षमें द्वारवती नगरी में कृष्ण वासुदेव मेरे प्रिय पतिके
भ्राता रहते हैं । वे यदि छह मासके भीतर मुझे अन्वेयण करनेके लिये या

आवी छे ऐवी छे देवानुप्रिये ! तमे अपहतमन सम्पत्त्या धधने यावत्
आर्तध्यान न करे। तमे अनुप्यलय संधी काम ले गो लोगता भारा
भडेइमा रहे।

(तएण सा दोवई देवी पडमणाभ एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जम्बू
द्वीवे दीवे, भारहे वासे वारवइए णयरीए कण्णे णाम वासुदेवे मम प्रियभाउए
परिव्रमइ, त जइएण से छण्ह मामाण मम कूय णो हव्व मागच्छइ, तएण अह
देवाणुप्पिया ! ज तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणणिदेसे चिट्ठिस्सामि
तएण से पडमे दोवईए एयमइ पडिप्पुणित्ता २ दोवई देवी कण्णतेउरे ठवेइ,
तएण सा दोवई देवी छट्ट छट्टेण अणिकिखत्तेण आयविलपरिगहिण तवोक्क-
मेण अप्पाण भावे माणे विहरइ)

त्यारपछी द्रौपदी देवीके पद्मनाभने आ प्रभावे उछु छे देवानुप्रिय ।
सासणो, जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा भारत वर्षमा द्वारवती नगरीमा कृष्ण
वासुदेव भारा प्रिय पतिना साथ रहे छे तेओ छ भद्रीनानी अहर भारी तपास

द्रौपदीं देवीमपहतमनः सकल्पां यावद् ध्यायन्तीं = आर्तध्यानं कर्तुं पश्यति दृष्ट्वा
एव = वक्ष्यमाणप्रकारेण, अयादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वं ' ओहय० जाव
झियाहि ' अपहतमनः सकल्पा यावद् ध्यायसि = त्रिपीदसि एव खलु त्वं हे देवानु
प्रिये ! मम पूर्वसगतिकेन देवेन जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् यादृ हस्तिना
पुराद् नगराद् युधिष्ठिरस्य राज्ञो भवनात् संवृता = अपहृताऽसि, ततस्तस्माद् मा

धमाणी पासइ, पासित्ता एव वयासी, क्रिण तुम देवाणुप्पिया ! मम
पुव्वसगइएण देवेण जम्बूद्वीपाओ २ भारताओ वासाओ हत्थिणापु
राओ नगराओ जुहिद्विउल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, त माण तुम
देवाणुप्पिया ! ओहय० जाव झियाहि तुम मए सद्धि विपुलाइ भोग
भोगाइ जाव विहराहि) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा नहा धोकर
यावत् सर्वाङ्कारो से विभूषित हो अपने अतःपुर परिवार से सपरि
शृत होकर जहा वह अशोक वाटिका थी-और उसमें भी जहाँ वह
द्रौपदी देवी बैठी थी-वहा आया-वहा आकर के उसने द्रौपदी देवी से
अपहत मनः सकल्पवाली यावत् आर्तध्यान करती हुई देखकर इस
प्रकार कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम क्यों अपहत मनः सकल्प होकर यावत्
आर्त ध्यान कर रही हो-खेद सिन्न हो रही हो तुम यहा हे देवानुप्रिय !
मेरे पूर्व भव के मित्र देव के द्वारा जम्बूद्वीप नाम के द्वीप से भारतवर्ष
के हस्तिनापुर नगर से युधिष्ठिर राजा के भवन से हरण कर ले आई

चिन्ता दोवई देवी ओहय० जाव झियायमाणी पासइ, पासित्ता एव वयासी
क्रिण तुम देवाणुप्पिया ! ममपुव्वसगइएण देवेण जम्बूद्वीपाओ २ भारताओ
वासाओ हत्थिणापुराओ नगराओ जुहिद्विउल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, त
माण तुम देवाणुप्पिया ! ओहय० जाव झियाहि तुम मए सद्धि विपुलाइ भोग
भोगाइ जाव विहराहि)

त्यारपणी ते पद्मनाभराज स्नान करीने यावत् सर्वालङ्काराथी विभूषित
थधने पोताना रज्जुवास-परिवारने साथे लधने न्या अशोक वाटिका छती अने
तेमा पणु न्या ते द्रौपदी देवी जेठी छती त्या आये। त्या आवीने तेछे
द्रौपदी देवीने अपहतमन सकल्पवाणी यावत् आर्तध्यान करती जेधने आ
प्रभाछे कछु के छे देवानुप्रिये ! तमे शा भाटे अपहतमन सकल्पा थधने
यावत् आर्तध्यान करी रही छे ? जेह-भिन्न थध रह्या छे ? छे देवानुप्रिये !
भारा पूर्वभवना मित्र देव वडे तमे जम्बूद्वीप नामना द्वीपना, भारत वर्षना
हस्तिनापुर नगरना युधिष्ठिर राजना लवनथी अपहृत थधने

दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण
 वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा
 अवक्खित्ता वा ? इच्छामि णं ताओ । दोवइए देवीए सब्बओ
 समता मग्गणगवेसणं कयं, तएण से पंडुराया कोडुंविपुसिसे
 सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम्भे देवाणुप्पिया ।
 हत्थिणाउरे नयरे सिघाडगतियचउक्कच्चरमहापहपहेसु महया२
 सहेण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।
 जुहिट्ठिहस्स रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवइ
 देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा कि-
 पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा
 अवक्खित्ता वा तं जो णं देवाणुप्पिया । दोवइए देवीए सुइं
 वा जाव पवित्ति वा परिकहेइ तस्स णं पंडुराया विउल अत्थ-
 सपयाण दाणं दलयइ त्तिक्कट्ठु घोसणं घोसावेहर एयमाणत्तिय
 पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुविपुसिसा जाव पच्चप्पिणंति,
 तएणं से पंडुराया दोवइए देवीए कत्थइ सुइ वा जाव अलभ-
 माणे कोती देवी सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं
 तुम देवाणुप्पिया । वारवइ णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ
 णिवेदेहि कण्ह णं पर वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसणं करेज्जा
 अन्नहा न नज्जइ दोवइए देवीए सुती वा खुती वा पवर्त्ती वा
 उवलभेज्जा, तएण सा कोती देवी पंडुरण्णा एव वुत्ता समाणी
 जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता पहाया कयवलिकम्मा हत्थिखध-

અહ હે દેવાનુપ્રિય ! યત્ ત્વ યદસિ=ચરિયસિ ' તસ્મ ' તત્ર ' આણાઓવાયવ્ય
 ણણિદેસે ' આજ્ઞાપાતવચનનિર્દેશ સ્યામ્યામિ, તત્રાજ્ઞાકારિણી વશવર્તિની ભવિ
 વ્યામીત્યર્થ, આજ્ઞા-અવશ્ય વિધેયતયા આદેશ, ઉપસાતપાન સેવાપાન, નિર્દેશ -
 કાયાણિ પ્રતિ પ્રશ્નેઠુતે યન્નિપતર્થમુત્તરમ્, ણા સમાશરદ્વદ્વઃ તત્ર, તતઃ સ્વહ
 સ પદ્મનાભો રાજા દ્રૌપદાં ણતમર્થ મતિશ્રુત્ય=ચીકૃત્ય દ્રૌપદી દેવી ' કળતેઊરે'
 કન્યાન્તઃ પુરે સ્થાપયતિ, તતઃ ચલુ સા દ્રૌપદીદેવી ' છદ્વઃ છદ્વેણ ' પષ્ઠપષ્ઠેન
 પષ્ઠમક્તનન્તર પુનઃ પષ્ઠમક્તેન, ' અનિશ્ચિત્તેણ ' અનિશ્ચિત્તેન=વિરામરહિત
 અન્તરરહિતેનેત્યર્થ, ' આયતિલપરિગદિણ ' આયતિલપરિગદિતેન તપઃ કર્મણ
 આત્માન ભાવયન્તી વિહરતિ ॥ સૂ. ૨૬ ॥

મૂલમ્-તદ્દેવતાં સે જુહાદિદે રાજાતઓ મુહુત્તંતરસ્ત પદિબુદ્ધે
 સમાણે દોવડ્ દેવિપાસે અપાસમાણો સયણિજ્ઞાઓ ઉદ્દેહ ઉદ્દિત્તા
 દોવડ્દે દેવીએ સઠ્વઓ સમતા મગ્ગણગવેસણ કરેહ કરિત્તા
 દોવડ્દે દેવીએ કથહ સુહ વા સુહ વા પવત્તિ વા અલભમાણે
 જેણેવ પહુરાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચિત્તા પહુરાયં એવંવયાસી
 એવં-ચલુ તાઓ ! મમ આગાસતલગસિ સુહપસુત્તસ્ત પાસાઓ

હેને કે લિયે યદા જલ્દી સે નહીં આયેમે તો ઉસકે બાદ હે દેવાનુપ્રિય !
 જૈસા તુમ કહોમે વૈસા મેં કરુંગી-તુમ્હારી આજ્ઞા કારિણી વશવર્તિની
 થન જાઝુંગી। એસા અર્થ “ આણાઓવાયવ્યણણિદેસે ” ઇન પદો કા
 નિકલતા હૈ। ઇસકે બાદ પદ્મનાભ રાજા ને દ્રૌપદી કે ઇસ કથન કો
 સ્વીકાર કરકે હસે કન્યા કે અન્તઃ પુર મેં રલ્લદિયા। વહા વહ દ્રૌપદી
 દેવી આયતિલ પરિગૃહીત છદ્વ છદ્વ કો અન્તર રહિત તપસ્યા સે અપને
 આપ કો ભાવિત કરતી હુઈ રહને લગી। સૂ. ૨૬

કરતા કરતા અહીં નહિ આવી શકે તો ત્યારપછી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જેમ
 કહેશે। તેમ કરીશ, હું તમારી આજ્ઞાકારિણી વશવર્તિની બની બઝશ “ અણા
 ઓવાયવ્યણણિદેસે ” આ પદોથી આ ભાવને। અર્થ નીકળે છે ત્યારપછી
 પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના તે કથનને સ્વીકારી લીધું અને તેને કયાના અન્ત
 પુરમાં મૂકી દીધી ત્યાં તે દ્રૌપદી દેવી આયતિલ પરિગૃહીત છદ્વ છદ્વની અન્તર
 રહિત તપસ્યાથી પોતાની ભાવને ભાવિત કરતી રહેવા લાગી ॥

दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण
 वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा
 अवप्पिक्खत्ता वा ? इच्छामि णं ताओ । दोवईए देवीए सव्वओ
 समता मग्गणगवेसणं कय, तएण से पडुराया कोडुंवियपुरिसे
 सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ।
 हत्थिणाउरे नयरे सिघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया२
 सदेण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।
 जुहिद्विहस्स रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई
 देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा कि-
 पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा
 अवप्पिक्खत्ता वा तं जो णं देवाणुप्पिया । दोवईए देवीए सुइं
 वा जाव पवित्ति वा परिकहेइ तस्स णं पडुराया विउल अत्थ-
 सपयाणं दाणं दलयइ त्तिक्कट्ठु घांसणं घोसावेहर एयमाणत्तिय
 पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति,
 तएणं से पडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा जाव अलभ-
 माणे कोत्ती देवीं सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं
 तुम देवाणुप्पिया । वारवइ णयरिं कणहस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ
 णिवेदेहि कणह णं पर वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसणं करेज्जा
 अन्नहा न नज्जइ दोवईए देवीए सुतीं वा खुती वा पवर्त्ती वा
 उवलभेज्जा, तएण सा कोत्ती देवी पडुरण्णा एव वुत्ता समाणी
 जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा हत्थिखध-

वरगया हस्तिणाउरं मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरु-
जणवये मज्झमज्झेण जेणेव सुग्गजणयए जेणेव वारवई णयरी
जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हस्तिखधाओ
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं
वयासी-गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया । जेणेव वारवई णयरी
तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेव करयल० एव
वयह-एवं खल्ल सामो । तुव्भं पिउच्छा कोती देवी हस्तिणा
उराओ.नयराओ इह हवमगया तुव्भ दसणं कंखइ, तएणं
ते कोडुवियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुवि-
यपुरिसाणं अतिए सोच्चा णिसम्म हस्तिखंधवरगए हयगय
वारवईए य मज्झमज्झेणं जेणेव कोती देवी तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता हस्तिखधाओ पच्चोरुह पच्चोरुहित्ता कोतीए देवीए
पायग्गहण करेइ करित्ता कोतीए देवीए सद्धि हस्तिखंध दुरुहइ
दुरुहित्ता वारावइए णयरीए मज्झमज्झेणं जेणेवसए गिहे तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता सय गिह अणुपविसइ । तएणं से
कण्हे वासुदेवे कोती देवि णहाय कयवलिकम्म जिमियभुत्त-
रागय जाव सुहासणवरगय एव वयासी सदिसउ णं पिउच्छा ।
किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोती देवी कण्ह वासुदेव
एव वयासी-एव खल्ल पुत्ता । हस्तिणाउरे णयरे जुहिट्ठिस्स
आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ
अवहिया जाव अवविस्सत्ता वा, त इच्छामि ण

देवीए मगगणगवेसणं करित्तए, तएणं से कणहे वासुदेवे कौंती
पिउच्छि एव वयासी-जं णवरं पिउच्छा । दोवइए देवीए कत्थइ
सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ
अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवइं साहत्थि उवणेमित्तिकहु कौंती
पिउत्थि सक्कारेइ समाणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कौंती
देवी कणहेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसि
पाउ० तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० २५ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स युधिष्ठिरो राजा ततो मुहूर्त्त-
न्तरे प्रतिबुद्धः सन् द्रौपदीं देवीं पार्श्वे ‘अपासमाणो’ अपश्यन्=अनवलोकयन्
शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रौपद्या देव्या सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेपण करोति,
कृत्वा द्रौपद्या देव्या ‘कत्थइ’ कुत्रापि ‘सुइ’ श्रुति सामान्यवृत्तान्त वा,
‘सुइ’ श्रुति छिकादि शब्द वा ‘पवर्त्ति’ प्रवृत्ति वा विशेषवृत्तान्त अलभमानो

तएण से जुहिठिल्ले राया इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से जुहिठिल्ले राया) वे युधिष्ठिर राजा
(तओ मुहुत्ततरस्स) एक मुहूर्त्त के बाद (पडिबुद्धे समाणे) जगे-और
जगकर उन्होंने (दोवई देवीं) द्रौपदी देवी को (पासे अपासमाणो सयणि
ज्जाओ उट्टेइ, उट्टित्ता दोवईए सव्वओ समतां मगगणगवेसण करेइ)
अपने पास जय नहीं देखा तो वे अपनी शय्या से उठे और उठकर
द्रौपदी देवीकी सयओरसे उन्होंने मार्गणा गवेपणाकी (करित्ता दोवईए
देवीए कत्थइ सुइ वा खुइ वा पवर्त्ति वा अलभमाणे जेणेव पडुराया

‘तएण से जुहिठिल्ले राया’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से जुहिठिल्ले राया) ते युधिष्ठिर राजा (तओ
मुहुत्ततरस्स) ओक मुहूर्त्त बाद (पडिबुद्धे समाणे) जाग्या अने जाग्याने
तेमणे (दोवई देवी) द्रौपदी देवीने,

(पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्टेइ, उट्टित्ता दोवईए सव्वओ समता
मगगणगवेसण करेइ)

न्याये चोत्तानी पासे ओर नहि त्यारे चोत्तानी शय्या उपरथी जिला
थया अने जिला थरने द्रौपदी देवीनी ओमेर मार्गणा गवेपणा करी

(करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा खुइ वा पवर्त्ति वा अलभमाणे

વરગયા હરિથિનાઝરં મજ્જમજ્જેણં ણિગચ્છદ્ ણિગચ્છિત્તા કુરુ
 જણવથે મજ્જમજ્જેણ જેણેવ સુરટ્ટજણપ્પ જેણેવ વારવદ્ ણયરી
 જેણેવ અગ્ગુજ્જાણે તેણેવ ઉવાગચ્છદ્ ઉવાગચ્છિત્તા હરિથિસ્થાઓ
 પચ્ચોરુહદ્ પચ્ચોરુહિત્તા કોડુવિયપુરિસે સદાવેદ્ સદાવિત્તા એવ
 વયાસી-ગચ્છહ ણં તુઘ્મે દેવાણપ્પિયા ! જેણેવ વારવદ્ ણયરી
 તેણેવ અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા કણ્ઠં વાસુદેવં કરયલં એવ
 વયહ-એવં સ્વલ્લ સામી ! તુઘ્મં પિઉચ્છા કોંતી દેવી હરિથિના-
 ઝરાઓ નયરાઓ ઇહ હવ્વમાગયા તુઘ્મં દસણં કંઘદ્, તણ્ણં
 તે કોડુવિયપુરિસા જાવ કહેંતિ, તણ્ણં કણ્ઠે વાસુદેવે કોડુવિ-
 યપુરિસાણં અતિએ સોચ્ચા ણિસમ્મ હરિથિસ્થવરગય હયગય
 વારવદ્ એ ચ મજ્જમજ્જેણં જેણેવ કોંતી દેવી તેણેવ ઉવાગચ્છદ્
 ઉવાગચ્છિત્તા હરિથિસ્થાઓ પચ્ચોરુહ પચ્ચોરુહિત્તા કોંતીએ દેવીએ
 પાયગ્ગહણ કરેદ્ કરિત્તા કોંતીએ દેવીએ સદ્ધિ હરિથિસ્થ દુરુહદ્
 દુરુહિત્તા વારાવદ્ ણયરીએ મજ્જમજ્જેણ જેણેવ સપ્પે ગિહે તેણેવ
 ઉવાગચ્છદ્ ઉવાગચ્છિત્તા સયં ગિહં અણુપવિસદ્ । તણ્ણં સે
 કણ્ઠે વાસુદેવે કોંતી દેવિં ણહાય કચ્ચલિકમ્મ જિમિયમ્મુત્ત
 રાગય જાવ સુહાસણવરગય એવ વયાસી સદિસસ ણં પિઉચ્છા !
 કિમાગમણપઓયણં ?, તણ્ણં સા કોંતી દેવી કણ્ઠ વાસુદેવ
 એવ વયાસી-એવં સ્વલ્લ પુત્તા ! હરિથિનાઝરે ણયરે જુહિટ્ઠિલ્લસ
 આગાસતલે સુહપસુત્તસ્સ પાસાઓ ટોવદ્ દેવી ણ ણજ્જદ્ કેણદ્
 અવહિયા જાવ અવચ્ચિત્તા વા, ત ઇચ્છામિ ણં

ततः खलु स पाण्डुराजा कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवा-
दीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरे नगरे शृङ्गाटकत्रिकचतुष्क-
चत्वरमहापथपथेषु महता महता शब्देनोद्गोषयन्त एव वदत-एव खलु हे देवानु-
प्रिया ! युधिष्ठिरस्य राज्ञ आकाशतलके सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वे द्रौपदी देवी न
ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा

और सब प्रकार से मार्गणा और गवेपणा करना चाहता हूँ । (तए ण
से पटुराया कोडुम्भियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी गच्छहाण
तुम्हे देवानुप्रिया ! हत्थिगाउरे नगरे, सिंघाडगतीय चउक्कचच्चर महा-
पहपहेसु महया २ सदेण उग्घोसेमाणा २ एव वयासी-एव खलु देवा-
नुप्रिया ! जुहिठ्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ
दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ, देवेण वा दानवेण वा किन्नरेण वा किंपुरि-
सेण वा महोरगेण वा गंघवेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा)
इस बात को सुनकर के उन पाटुराजा ने कौटुम्भिक पुरुषों को बुलाया
और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग हस्तिनापुर
नगर में जाओ-और वहा के शृङ्गाटक, त्रिक चतुष्क, चत्वर, महापथ
इन समस्त मार्गों में बडे जोर २ से ऐसी घोषणा चार २ करो कि हे
देवानुप्रियो ! सुनो प्रासादकी अड्डालिका पर सुखपूर्वक सोये हुए युधिष्ठिर
राजा के पास से न मालूम किसी देवने, या दानवने, किसी, किन्नरने,

गवेपण कय) अथवा भाटे डे तात ! हु थोभेर अधी रीने द्रौपदी देवीनी
मार्गण्ठा अने गवेपण्ठा करवा धंअधु छु

(तए ण से पटुराया कोडुम्भियपुरिसे सदावेइ, सदावित्ता एव वयासी गच्छइ ण
तुम्हे देवानुप्रिया ! हत्थिणाउरे नगरे, सिंघाडगतीयचउक्कचच्चरमहापह-
पहेसु महया २ सदेण उग्घोसेमाणा २ एव वयासी-एव खलु देवानुप्रिया !
जुहिठ्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण
णज्जइ, केणइ देवेण वा दानवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा
गंघवेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा)

आ बातने सालणीने पाडु रान्णये कौटुम्भिक पुरुषोने जालाव्या अने
जालावीने तेमने आ प्रभाण्णे कल्लु के डे देवानुप्रियो ! तमे दोडे हस्तिनापुर
नगरमा न्णये अने त्याना शृङ्गाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, महापथ आ अथा
मार्गोमा मोटा साडे आ नतनी घोषण्ठा करे के डे देवानुप्रियो ! सालणो,
भडेलनी अगाशी उपर सुजेथी सूता युधिष्ठिर रान्णनी पासोथी न न्णणे कोड
हेवे के दानवे अथवा तो कोड किन्नरे के किंपुरुषे अथवा कोड महोरगे के

યજ્ઞેવ પાણ્ડુરાજા તર્જીયોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પાણ્ડુ રાજાનમેવમત્રાદીત્— હે તાત !
 એવ સ્વલુ મમાકાશતલે પ્રાસાદાદ્યાન્કિપરિ ' સુષ્પસુત્તસ્સ ' સુષ્પસુત્તમ્ય પાશ્વોદ્
 દ્રૌપદી દેવી ' ણ ણજ્ઞહ ' ન જાયતે કેનાપિ દેવેન વા દાનવેન વા કિષ્કરેણ વા
 કિપુરુપેણ વા ગન્ધર્વેણ વા દતા વા નીતા=મન્યમ પ્રાપિતા વા અવક્ષિપ્તા વા= ?
 કૂપગર્તાદૌ કુચિત્ પાતિતા વા શ્વયંઃ, તત્-તસ્માદ્ ઇચ્છામિ સ્વલુ હે તાત !
 દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ સર્વત સમન્તાદ્ માર્ગણગણેષણ કર્તુમ્ ।

તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પટ્ટુરાય ણ વયામી ણ વ સ્વલુ તાઓ
 મમ આગાસતલગસિ સુષ્પસુત્તસ્મ પાસાઓ દોવઈ દેવી ણ ણજ્ઞહ, કેણહ
 દેવેણ વા દાણવેણ વા કિષ્કરેણ વા કિપુરિસેણ વા મહોરગેણ વા
 ગધર્વેણ વા હિયા વા ણીયા વા અવક્ષિપ્ત્તા વા) માર્ગણા ગવેષણા
 કરકે જય વસને દ્રૌપદી દેવી કી કરી મી શોધ, સામાન્ય સ્વર કો
 હસ કે ચિહ્નસ્વરૂપ ઝિફા આદિ કે ગદ્દ કો, અથવા પ્રવૃત્તિ-વિશેષ
 વૃત્તાન્ત કો નહીં પાયા તય વે જર્હા પાણ્ડુરાજા વે વર્હા ગયે-વર્હા જાકર
 કે ઉન્હોને પાણ્ડુરાજા સે હસ પ્રકાર કરા-હે તાત ! જય મેં પ્રાસાદ કી
 અદ્યાલિકાકે ઉપર સુખસે સો રહા થા-તય મેરે પાસસે ન માલૂમ દ્રૌપદી
 દેવી કો કિસી દેવને, દાનવને, કિષ્કરને, કિપુરુપને, મહોરગને, ગધર્વને
 હરણ કર કર્હાં રલ્લ દિયા હૈ ।-યા હસે કિસી કુપ મેં યા સ્વલુ મેં હાલ
 દિયા હૈ (ઇચ્છામિ ણ તાઓ દોવઈદે દેવીણ સન્નવઓ સમતા મગ્ગણ
 ગવેસણ કય) હસ લિણ હે તાત ! મેં દ્રૌપદી દેવી કી સવ તરફ સે

જેણેવ પટ્ટુરાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પટ્ટુરાય એવ વયાસી એવ સ્વલુ
 તાઓ મમ આગાસતલગસિ સુષ્પસુત્તસ્સ પાસાઓ દોવઈ દેવી ણ ણજ્ઞહ, કેણહ
 દેવેણ વા દાણવેણ વા કિષ્કરેણ વા કિપુરિસેણ વા મહોરગેણ વા ગધર્વેણ વા
 હિયા વા ણીયા વા અવક્ષિપ્ત્તા વા)

માર્ગણા ગવેષણા કર્યા બાદ પણ બન્યારે તેમણે દ્રૌપદી દેવીની કોઈપણ
 રીતે, સામાન્ય ખબર અને ચિહ્ન સ્વરૂપ છીંક વગેરે શબ્દને અથવા તે
 પ્રવૃત્તિ-વિશેષ વૃત્તાન્ત-ની પણ બાણ થઈ નહિ ત્યારે તેઓ બન્યા પાણ્ડુરાજા
 હતા ત્યા ગયા, ત્યા જઈને તેમણે પાણ્ડુરાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તાત !
 બન્યારે હું મહેલની અગાશીમા સૂઈ રહ્યો હતો ત્યારે મારી પાસે ન બંધે
 કોણે દ્રૌપદી દેવીનું કોઈ દેવે, દાનવે કે કિષ્કરે કે કિપુરુપે કે મહોરગે કે
 ગધર્વે હરણ કર્યું છે અથવા તે દ્રૌપદી દેવીને કોઈથે કૂવામા કે ખાડામા
 નાખી દીધી છે (ઇચ્છામિ ણ તાઓ દોવઈદે દેવીણ સન્નવઓ મગ્ગણ-

ततः खलु स पाण्डू राजा द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा यावत् प्रवृत्तिम्
अलभमानः कुन्तीं देवीं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे
देवानुप्रिये ! द्वारावतीं नगरीं कृष्णस्य वासुदेवस्य एतमर्थं निवेदय=सुखप्रसुप्ता
द्रौपदी केनाऽपि हता नीता कृपादौ प्रक्षिप्ता वेति न ज्ञायते इत्येतद्रूप वृत्तान्तं वक्ष्य,
कृष्णः खलु पर वासुदेवो द्रौपद्या मार्गणगवेपणं कुर्यात् अन्यथा न ज्ञायते द्रौपद्या
देव्याः श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा क्षुत्तिं वा उपलभेत ।

पास भेजदी । इसके बाद जब पांडुराजा ने द्रौपदी देवी की कही पर
भी श्रुती यावत् प्रवृत्ति नहीं पाई तब उन्हो ने कुत्ति देवी को बुलाया-
(सहावि० ए० वयासी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा-(गच्छहण तुम
देवानुप्पिया ! वारवद् नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमद्द निवेदेहि,
कण्हेण पर वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसण करेज्जा-अन्नहा न नज्जई,
दोवईए देवीए सुती वा खुती वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा) हे देवानुप्रि
यो ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वायुदेव के पास जाओ-और उनसे
इस अर्थका निवेदन करो कि सुख प्रसुप्त द्रौपदी को किसी ने हरलिया
है । हरण कर उसे कहीं पहुँचा दिया है या किसी कुएँ में या खड्डे में
डाल दिया है । पता नहीं पड़ता है । वे कृष्ण वासुदेव अवश्य २ ही
द्रौपदी को मार्गणा गवेपणा करेंगे । नहीं तो द्रौपदी देवी की श्रुति, क्षुत्ति
अथवा प्रवृत्ति हमें प्राप्त हो जावेगी-यह नहीं कहा जा सकता है ।

श्रुति यावत् प्रवृत्ति भेजवी नहि त्वादे तेभञ्जे कुती देवीने भोलावी (सहा
वि० ए० वयासी) अने भोलावीने तेभने आ प्रभाञ्जे क्खु—

(गच्छहण तुम देवानुप्पिया ! वारवद् नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमद्द
निवेदेहि, कण्हेण पर वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसण करेज्जा अन्नहा न नज्जई,
दोवईए देवीए सुती वा खुती वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा)

हे देवानुप्रिये ! तबे द्वारावती नगरीमा कृष्णवासुदेवनी पासो लब्धो
अने तेभने आ प्रभाञ्जे विनती करो के सुप्रथी सुतेली द्रौपदीनु कोछो
हरण करी लीधु छे हरण करीने तेने क्याक भूझी दीधी छे अथवा तो कोछ
हूवामा के आउमा नाणी दीधी छे न लब्धे शु थध गथु छे ? कृष्णवासुदेव
भने जानी छे के ब्रह्मस द्रौपदी देवीनी मार्गणा गवेपणा करथे नहितर द्रौपदी
देवीनी श्रुति, क्षुत्ति अथवा प्रवृत्तिनी लब्ध अभने थथे ज्योवी शक्यता न्नाती नथी.

ગન્ધર્વેણ વા હતા વા નીતા વા અગ્નિપ્તા વા, તત્=તસ્માદ્ યઃ ચતુરે દેવાનુ પ્રિયા ! દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ શ્રુતિ વા શ્રુતિ વા પ્રવૃત્તિ વા પરિકથયતિ, તસ્ય સહ પાન્દુ રાજા ત્રિપુલમર્થસપ્તદાન દાનં દદાતિ=શ્રુતિ કૃત્યા-શ્ચ્યુત્વા ઘોષણાં ઘોષ-યત, ઘોષયિત્વા ઇતામશ્વતિકા મત્યર્પયત । તતઃ સહ તે કૌટુમ્બિકપુરુષાસ ધૈર ઘોષણા કૃત્યા યાચદાતાં મત્યર્પયન્તિ=હે સ્વામિન ! મનદાક્ષ્યા ઘોષણા કૃતાઽસ્મામિરિતિ નિવેદયન્તિ ।

યા કિસી કિપુરુષ ને યા કિસી મહોરગ ને યા કિસી મધર્વ ને દ્રૌપદી દેવી કો હરણ કર લિયા હૈ-યા હરણકર ઉસે કહોં રરૂ દિયા હૈ અથવા કિસી કુરૂં મેં યા રૂઢે મેં ઢાલ દિયા હૈ (ત જો ન દેવાણુપ્પિયા । દોવ હૈ દેવીણ સુહ વા જાવ પવર્તિ વા પરિકહેહ, તસ્સ ન પદુરાયા વિઝલ અત્યસપયાણ દાણ દલયહ, ત્તિ કદુ ઘોમણ ઘોસાવેહ ૨ ઇયમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણહ, તણ તે કૌટુમ્બિય પુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણતિ-તણ સે પદુરાયા દોવર્દે દેવીણ કત્થહ સુહ વા જાવ અલભમાણે કોર્તી દેવી સહાવેહ) તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જો કોઈ મનુષ્ય દ્રૌપદી દેવી કી શોધ કરેના યાવત્ ઉસકે વિશેષવૃત્તાન્ત કો લાકર દેગા-હમ સે આકર કહેગા, ઉસકો પાદુરાજા વહુત અધિક માત્રા મેં અર્થ મપ્રદાન-દાન-દેગા । હસ પ્રકાર કી તુમ ઘોસપણા કરો, ઓર ઘોષણા કર કે ફિર હમેં હસકી પીઠે ખબર દો । હસ પ્રકાર રાજા કી આજ્ઞા પાકર ઉન કૌટુમ્બિક પુરુષોં ને હસી પ્રકારકી ઘોષણા કરકે હમ કી ખબર રાજાકે

ગધર્વે દ્રૌપદી દેવીનુ અપહરણ કથું છે કે હરણ કરીને તેને કયાક મૂકી દીધી છે કે કોઈ ક્વામા અથવા તો ખાદામા નાખી દીધી છે

(ત જો ન દેવાણુપ્પિયા । દોવર્દે દેવીણ સુહ વા જાવ પવર્તિ વા પરિકહેહ, તસ્સ પદુરાયા વિઝલ અત્યસપયાણ દાણ દલયહ, ત્તિ કદુ ઘોમણ ઘોસાવેહ ૨ ઇયમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણહ, તણ તે કૌટુમ્બિયપુરિસા જાવ પચ્ચપ્પિણતિ-તણ સે પદુરાયા દોવર્દે દેવીણ કત્થહ સુહ વા જાવ અલભમાણે કોર્તી દેવી સહાવેહ)

તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જો કોઈ પણ માણસ દ્રૌપદી દેવીની શોધ કરશે યાવત તેના વિષે સવિશેષ સમાચાર જાણીને અમને ખબર આપશે, અમને કહેશે, તેને પાડુ રાજા ખૂબ જ દ્રવ્ય-ધન આપશે આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને ઘોષણા થઈ જવાની અમને ખબર પણ આપો આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાલળીને તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેની ખબર રાજાને આપી ત્યારપછી બ્યારે પાડુ રાજાએ દ્રૌપદી દેવીની કોઈ સ્થાને

તતઃ સ્વલ્લ સ પાણ્ડુ રાજા દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ કુત્રાપિ શ્રુતિ યા યાવત્ પ્રવૃત્તિમ્
અલભમાનઃ કુન્તીં દેવીં શન્દયતિ શન્દયિત્યા એવમવાદીત્-ગચ્છ સ્વલ્લ ત્વં હે
દેવાનુપ્રિયે ! દ્વારવતીં નગરી કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય ઇતમર્થ નિવેદય=સુખપ્રસુતા
દ્રૌપદી કેનાપિ હતા નીતા કૃપાદૌ પ્રક્ષિપ્તા વેતિ ન જ્ઞાયતે इत्येतદ્રૂપ વૃત્તાન્ત કથય,
કૃષ્ણઃ સ્વલ્લ પર વાસુદેવો દ્રૌપદ્યા માર્ગણગવેપણ કુર્યાત્ અન્યથા ન જ્ઞાયતે દ્રૌપદ્યા
દેવ્યાઃ શ્રુતિ યા પ્રવૃત્તિ યા ક્ષુત્તિ યા ઉપલભેત ।

પાસ ભેજદી ! હાલકે વાદ જવ પાટુરાજા ને દ્રૌપદી દેવી કી કહી પર
ભી શ્રુતી યાવત્ પ્રવૃત્તિ નહીં પાઈ તય ઉન્હોં ને કુતિ દેવી કો બુલાયા-
(સદ્વાવિં ૧૦ વયાસી) ઓર બુલાકર ઉન સે એસા કહો-(ગચ્છહળ તુમ
દેવાણુપ્પિયા ! વારવઢ નયરિં કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ ઇયમઢ ણિવેદેહિ,
કળ્હેણ પર વાસુદેવે દોવર્હણ મગ્ગણગવેસણ કરેજ્જા -અન્નહા ન નજ્જઈ,
દોવર્હણ દેવીણ સુતી વા સુતીં વા પવત્તીં વા ઉવલભેજ્જા) હે દેવાનુપ્રિ
યો ! તુમ દ્વારાવતી નગરી મેં કૃષ્ણ વાયુદેવ કે પાસ જાઓ-ઓર ઉનસે
હસ અર્થકા નિવેદન કરો કિ સુલ્લ પ્રસુલ્લ દ્રૌપદી કો કિસી ને હરલિયા
હૈં । હરણ કર ઉસે કહી પઢુચા દિયા હૈં યા કિસી કુણ્ મેં યા સ્વહ્હે મે
હાલ દિયા હૈં । પતા નહી પઢતા હૈં । વે કૃષ્ણ વાસુદેવ અવશ્ય ૨ હી
દ્રૌપદી કી માર્ગણા ગવેપણા કરેંગે । નહી તો દ્રૌપદી દેવી કી શ્રુતિ, ક્ષુતિ
અથવા પ્રવૃત્તિ હમેં પ્રાપ્ત હો જાવેગી-યહ નહી કહા જા સકતા હૈં ।

શ્રુતિ યાવત્ પ્રવૃત્તિ ભેજવી નહિ ત્યાદે તેમણે કુતી દેવીને બોલાવી (સદ્વા
વિં ૧૦ વયાસી) અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું—

(ગચ્છહળ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! વારવઢ નયરિં કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ ઇયમઢ
ણિવેદેહિ, કળ્હેણ પર વાસુદેવે દોવર્હણ મગ્ગણગવેસણ કરેજ્જા અન્નહા ન નજ્જઈ,
દોવર્હણ દેવીણ સુતી વા સુતીં વા પવત્તીં વા ઉવલભેજ્જા)

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે બાબો
અને તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરો કે સુખથી સુતેલી દ્રૌપદીનું ડોહએ
હરણ કરી લીધું છે હરણ કરીને તેને ક્યાક મૂકી દીધી છે અથવા તો કોઈ
દુષ્ટામા કે ખાડામા નાખી દીધી છે ન બાણે શું થઈ ગયું છે ? કૃષ્ણવાસુદેવ
મને ખાત્રી છે કે ચોક્કસ દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા ગવેપણા કરશે નહિતર દ્રૌપદી
દેવીની શ્રુતિ, ક્ષુતિ અથવા પ્રવૃત્તિની બાણ અમને થશે એવી શક્યતા બાણાતી નથી.

गन्धर्वेण वा हता वा नीता वा अपसिप्ता वा, तन्=तस्माद् यः खलु हे देवानु
मिया । द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा परिकथयति, तस्य खलु
पाण्डु राजा विपुलमर्थसंप्रदानं दानं ददाति=इति कृत्या-इत्युक्त्वा घोषणां घोष
यत, घोषयित्वा एतामश्वत्थिकां मत्स्यर्पयत । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषास्त
येन घोषणा कृत्या यावदाह्नां मत्स्यर्पयन्ति=हे स्वामिन् । भयदाह्नया घोषणा
कृताऽस्माभिरिति निवेदयन्ति ।

या किसी किंपुरुष ने या किसी महोरग ने या किसी गधर्व ने द्रौपदी
देवी को हरण कर लिया है-या हरणकर उसे कहीं रखा दिया है अथवा
किसी कुएं में या खड्डे में डाल दिया है (त जो ण देवाणुप्पिया । दोव
ईए देवीए सुइ वा जाव पवत्ति वा परिकहेइ, तस्स ण पडुराया विउल
अत्थसपयाणं दाण दलयइ, त्ति कट्ठु घोसण घोसावेइ २ ह्यमाणत्तिय
पच्चप्पिणह, तएण ते कौटुम्बिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणति-तएण से
पडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा जाव अलभमाणे कौंतीं देवीं
सहावेइ) तो हे देवानुप्रियो ! जो कोई भी मनुष्य द्रौपदी देवी की शोध
करेगा यावत् उसके विशेषवृत्तान्त को लाकर देगा-हम से आकर
कहेगा, उसको पांडुराजा बहुत अधिक मात्रा में अर्थ संप्रदान-दान-
देगा । इस प्रकार की तुम घोसपणा करो, और घोषणा कर के फिर
हमें इसकी पीछे खबर दो । इस प्रकार राजा की आज्ञा पाकर उन
कौटुम्बिक पुरुषों ने इसी प्रकारकी घोषणा करके इस की खबर राजाके

गधर्वे द्रौपदी देवीनु अपहरणु कथुं छे के हरणु करीने तेने क्याक भूझी हीधी
छे के कोछ इवाभा अथवा तो आडाभा नाभी हीधी छे

(त जो ण देवाणुप्पिया । दोवईए देवीए सुइ वा जाव पवत्ति वा परिकहेइ,
तस्सण पडुराया विउल अत्थसपयाण दाण दलयइ, त्ति कट्ठु घोसण घोसावेइ २
ह्यमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएण ते कौटुम्बिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणति-तएण से
पडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा जाव अलभमाणे कौंती देवीं सहावेइ)

तो हे देवानुप्रियो ! जे कोछ पणु भाषुस द्रौपदी देवीनी शोध करशे यावत्
तेना विषे सविशेष समाचार नजानी अमने अजर आपशे, अमने कहेशे,
तेने पांडु राजा भूज न द्रव्य-धन आपशे आ रीते तमे घोषणा करे अने
घोषणा यथ नवानी अमने अजर पणु आपो आ रीते राजानी आज्ञा
सालणीने ते कौटुम्बिक पुरुषोअे आ प्रभावे न घोषणा करीने तेनी अजर
राजने आपी त्थारपणी व्यादे पांडु राजाअे द्रौपदी देवीनी कोछपणु स्थाने

દેવાનુપ્રિયાઃ ! યજૈવ દ્વારવતી નગરી તજૈવાનુપ્રવિશત, અનુપ્રવિશ્ય કૃષ્ણં વાસુદેવ
કરતલપરિગૃહીતદશનગ્વ શિર આવર્ત મરતકેઽજ્જલિ કૃત્વા એવ વદત એવ રલુ હે
સ્વામિન્ ! યુષ્માક પિતૃષ્વસા કુન્તી દેવી હસ્તિનાપુરાદ નગરાદ્ ઇહ હવ્યમાગતા
યુષ્માક દર્શન કાઢૂક્ષતિ । તતઃ રલુ તે કૌટુમ્બિકપુરુષા યાવત્ કથયન્તિ=કૃષ્ણ-
વાસુદેવસ્ય સમીપે કુન્તીકથિત વચન નિવેદયન્તીત્યર્થઃ । તતઃ રલુ કૃષ્ણો ગાયુ-

ઘઘ હાથી સે નીચે ઉતરી ઓર ઉતર કર કે ઉમ્મને કૌટુમ્બિક પુરુષો
કો બુલાયા- બુલાકર ઉનસે હમ પ્રકર કહા-(ગચ્છહ ણ તુભે દેવાણુ
પિયા ! જેણેવ ચારવર્ણનયરી, તેણેવ અણુપવિસહ, અણુપવિસિત્તા કણ્ઠ
વાસુદેવ કરચલ૦ એવ વયહ, એવં રલુ સામી ! તુભ પિતૃચ્છા કોતી
દેવી હત્થિનાગરાઓ નયરાઓ ઇહ હવ્વમાગયા, -તુભ દંસણ કરચહ,
તણે તે કોટુમ્બિક પુરિસાણ ખતિપે સોચ્ચા ણિસમ્મ હત્થિસલવરગણ
હયગયચારવર્ણે ય મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ કોતી દેવી-તેણેવ ઉવાગચ્છહ)
હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમ દ્વારાવતી નગરી મેં જાઓ-વહા જાકર કૃષ્ણ
વાસુદેવ કો દોનો હાયોંકી અજલિ વનાકર ઓર ઉસે મસ્તક પર રલ-
કર શિર છુકાતે હુણ નમસ્કાર કરના-વાદમે ઉનસે એસા કહના-કિ
હે સ્વામિન્ ! ઓપકી પિતૃષ્વસા-સુઆ-કુતી દેવી હસ્તિનાપુર નગર સે
ચહા અમી -આઈ હૈ-ચે ઓપકે દર્શન કરના ચાહતી હૈ । ઉન કોટુ-
મ્બિક પુરુષોને કુતી દેવી કો હસ આજ્ઞા કો શિરોવાર્ધ ઋર શ્રી કૃષ્ણ

શોકાઠ ત્યા જઈને તે હાથી ઉપરથી નીચે ઉતરી અને ઉતરીને તેણે
કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(ગચ્છહ ણ તુભે દેવાણુપિયા ! જેણેવ ચારવર્ણ નયરી, તેણેવ અણુપવિસહ,
અણુપવિસિત્તા કણ્ઠ વાસુદેવ કરચલ૦ એવ વયહ એવ રલુ સામી ! તુભ પિતૃચ્છા
કોતી દેવી હસ્તિનાગરાઓ નયરાઓ ઇહ હવ્વમાગયા, તુભ દંસણ કરચહ,
તણે તે કોટુમ્બિકપુરિસા જાવ કહેતિ, તણે કણ્ઠે વાસુદેવે કોટુમ્બિક પુરિ
સાણ અતિપે સોચ્ચા ણિસમ્મ હત્થિસલવરગણ હયગયચારવર્ણે ય મજ્જ
મજ્જેણ જેણેવ કોતી દેવી-તેણેવ ઉવાગચ્છહ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા જાઓ, ત્યા જઈને કૃષ્ણવાસુ
દેવને અને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને માથુ નીચે
નમાવીને નમસ્કાર કરજો ત્યારપછી તેમને આ પ્રમાણે વિનવતી કરજો કે હે
સ્વામિન્ ! તમારી પિતૃષ્વસા-કૌટુમ્બિક કુતી દેવી હસ્તિનાપુર નગરમાં અત્યારે
અહીં આવ્યા છે તેઓ તમને જોવા માગે છે તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ કુતી
દેવીની આ આજ્ઞાને સ્વીકારીને શ્રીકૃષ્ણવાસુદેવને આ નમાચાગ્ની જાળર આપી

તત સ્વલુ સા કૃત્તી દેવી પાણ્ના ગત્તા પામુક્તા મતી ચામ્ પ્રતિશ્રુતોતિ=
 પાણ્નપર્યાતાં સ્વીકરોતિ, મતિશ્રુત્ય-સ્વીકૃત્ય મ્નાના કૃતમતિમો દમ્તિસ્કન્ધ
 પરગા દસ્તિનાપુરમ્ મ યમ્ પા નિર્ગન્તિ, નિર્ગત્ય કુરુનનપદમ્ય=કુરુનામ
 કમ્ય દેશસ્ય મ યમ્ પેન ચૌર સૌરાષ્ટ્રનપદઃ, યગેવ દ્વારવતી નગરી, યગેવાપ્રો
 ઘાન=યત્રાન્યમ્પાનાદાગતાનાં સ્થિત્યર્થમામાનો રિધને તાદ્યા રદિ પ્રત્યગ્યુપવ
 નમ્, તગેગોપામન્તિ, ડાગત્ય દસ્તિમ્સ્ન્ધાત્ પ્રત્યપરોતિ=પ્રત્યયતરતિ, પ્રત્ય
 વસ્થ ચૌદમ્પિરપૃસ્પાન શઙ્કયતિ, શઙ્કયિત્વા પામમાત્રીદ્-ગન્તત સ્વલુ યુષ દે

(તપ્તળ સા કૌંતી દેવી પદ્મરુણા એવુ તુતા સમાળી જાવ પહિસુળેઠ,
 પહિસુળિતા, પદ્યાયા કથગલિક્રમ્મા દ્વિતિયધવરગયા દ્વિતિયાઝર મઙ્ગ
 મઙ્ગેળ ણિગચ્છદ્ધ ણિગચ્છિતા કુરુજાણવય મઙ્ગ મઙ્ગેળ જેણેવ સુરદ્ધ
 જાણવણ જેણેવ ધારવર્દે ણયરી જેણેવ અમ્મુજાણે તેણેવ ડવાગચ્છદ્ધ ડવા
 ગચ્છિતા દ્વિતિય યાઓ પચ્ચોરુહદ્ધ, પચ્ચોરુહિતા કોહુવિયપુરિસે સદા
 વેદ્ધ, સદાવિતા એવ વયાસી) હવ કે વાદ પાડુરાજા દ્વારા હવ પ્રકાર
 કહી ગઈ કૃત્તી દેવી ને પાડુરાજા કી આજ્ઞા કો સ્વીકાર કર લિયા-ઔર
 સ્વીકાર કર કે હવને સ્નાનક્રિયા-કારક આદિ પક્ષિયોં કે લિયે અન્નદેને
 રૂપ થલિ કર્મ ક્રિયા । વાદ મેં વહ દાથી કે ડપર ઘેઠકર દસ્તિનાપુર
 નગર કે ઘીચ સે હોકર નિકલી-નિકલકર વહ કુરુદેશ કે ઘીચ સે
 હોતી હુઈ જહાં સૌરાષ્ટ્ર જનપદ થા ઔર હવમેં મી જહા દ્વારવતી
 નગરી થી-વહા પર મી જહાં વહ અગ્રડધાન થા કિ હિસમેં બાહરસે
 આયે હુવ પથિક વિશ્રામ કે લિયે ઠહર જાતે થે-વહાં ગઈ । વહા જાકર

(તપ્તળ સા કૌંતી દેવી પદ્મરુણા એવુ તુતા સમાળી જાવ પહિસુળેઠ,
 પહિસુળિતા, પદ્યાયા કથગલિક્રમ્મા દ્વિતિયધવરગયા દ્વિતિયાઝર મઙ્ગ મઙ્ગેળ
 ણિગચ્છદ્ધ, ણિગચ્છિતા કુરુજાણવય મઙ્ગ મઙ્ગેળ જેણેવ સુરદ્ધજાણવણ જેણેવ
 ધારવર્દે ણયરી જેણેવ અમ્મુજાણે તેણેવ ડવાગચ્છદ્ધ, ડવાગચ્છિતા દ્વિતિય યાઓ
 પચ્ચોરુહદ્ધ, પચ્ચોરુહિતા કોહુવિયપુરિસે સદાવેદ્ધ, સદાવિતા એવ વયાસી)
 ત્યારપછી પાડુરાજા વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલી કૃત્તી દેવીએ
 પાડુરાજાની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેણે સ્નાન કર્યું કાગડા
 વગેરે પક્ષીઓને અન્નભાગ અર્પાને બલિકર્મ કર્યું ત્યારપછી તે હાથી ઉપર
 સવાર થઈને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળી નીકળીને તે કુરુદેશની
 વચ્ચે થઈને જ્યાં સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતું અને તેમા પણ જ્યાં અગ્ર ઉદ્યાન
 હતું-કે જેમા બહારથી આવનારા પક્ષિકો વિશ્રામ માટે -તેમા

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्तीं देवीं स्नाता कृतप्रलिर्माणं काकादिभ्यः
कृतान्नसविभागा जिमितशुक्तोत्तरागता जिमिता-भोजनं कृतवती शुक्तोत्तरागता-
शुक्तोत्तरकाल-भोजनोत्तरकालम्-आगता, ता तया, यावत् सुखमनवरगता=सुख
पूर्वकं विनिष्टासनोपविष्टाम् एवमवादीत्-हे पितृप्यसः । सद्विद्वन्तु किमागमनप्रयो-
जनम् ? ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे पुत्र !
हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरस्यागाशतले सुवप्रमुत्तस्य पार्थाद् द्रौपदी देवी न
ज्ञायते केनापि अहता यावद् अवशिष्टा वा, तत् तस्माद् इच्छामि खलु हे पुत्र !

चले गये । कुन्ती ने कहा जाकर स्नान किया बलिर्कर्म किया । बाद में
चतुर्विध आहार को जीमकर जत्र वे सुखपूर्णक बैठ गई तत्र कृष्ण
वासुदेव ने उनसे कहा (सद्विद्वन्तु न पिच्छन्तु ! किमागमनप्रयो-
जनम् ? तएण सा कुन्ती देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी एव खलु पुत्ता । हस्ति-
णाउरे जुहिद्विहस्स अगासतले सुवप्रमुत्तस्स पासाओ दोवई देवीण
णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवन्निस्सत्ता वा त इच्छामिण पुत्ता ! दोवई
ए देवीए मगणगवेसण करिस्सए) हे भुआजी ! कहिये-किस कारण
से आप यहां पवारी हैं ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर उस
कुन्तीने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-पुत्र ! सुनो-आने का
कारण इस प्रकार है-हस्तिनापुर नगरमें प्रासाद की अट्टालिका के
ऊपर सुखके साथ सोये हुए युधिष्ठिर के पास से द्रौपदी देवी न मालूम
किसीने हरण करली है-यावत् किसी कुए में या खड्डे में डाल दी है ।

अदर गया कुन्तीने त्या पडोथीने स्नान कयुं अने बलिर्कर्म कयुं त्या
पछी आर जतना आहारो जमीने त्यारे ते सुजेथी स्वस्थ थधने जेनी
गया त्यारे कृष्ण वासुदेवे तेभने कछु ठे —

(सद्विद्वन्तु न पिच्छन्तु ! किमागमनप्रयो-
जनम् ? तएण सा कुन्ती देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी एव खलु पुत्ता ! हस्तिणाउरे
णयरे जुहिद्विहस्स अगासतले सुवप्रमुत्तस्स पासाओ दोवई देवीण
णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवन्निस्सत्ता वा त इच्छामिण पुत्ता ! दोवईए
मगणगवेसण करिस्सए)

उठो, शा नरपुत्री तमे अच्छी आग्या छे ? आ रीते कृष्ण वासुदेवना
प्रश्नने साधनीने कुन्ती देवीके कृष्ण वासुदेवने आ प्रभावे कछु ठे छे पुत्र !
साधनो, हु ओटला भाटे अही आवी छु ठे हस्तिनापुर नगरमा भडेवनी
अगाशी उपरथी सुजेथी सुतेला युधिष्ठिरनी पासेथी न लखे डोखे द्रौपदी देवीनु
हरण करी दीछु छे यावत डोख दूवामा के ठे आडामा नाथी दीधी छे जेथी
छे पुत्र । ८ अ० १६ के — द्रौपदी देवीनी शोधजोण थनी जेईके

देवः कौटुम्भिकपुरुषाणामतिके श्रुत्या निशम्य हस्तिस्फुरागतो हयगजस्य
पदातिसपरिश्रितो द्वावत्या नगर्या मध्यमध्येन यज्ञेन कुन्ती देवी तर्जोपागच्छति,
उपागत्य हस्तिस्फुरात् प्रत्यवरोहति, प्रयत्नरुद्धं कुन्त्या देव्याः पादग्रहणं करोति,
कृत्वा कुन्त्या देव्या सार्धं हस्तिस्फुरन् 'दुरुहः दुरोहति-आरोहतीत्यर्थः। दुरुहः
द्वावत्या नगर्या मध्यमध्येन यज्ञेन स्वकं गृहं तर्जोपागच्छति, उपागम्य स्वकं
गृहमनुप्रविशति ।

वासुदेव के लिये हम समाचार की खबर करदी कृष्ण वासुदेव कौटुम्भिक पुरुषों के पास से इस समाचार को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर हाथी पर बैठ, हयगज, रथ एवं पदातिगो के साथ २ द्वारावती नगरी के बीच से होते हुए जहाँ कुन्तीदेवी थी वहाँ आये। (उवागच्छिता हस्तिखधाओ पच्चोरुहह, पच्चोरुहिता कौन्तीए देवीए पादग्रहण करेह, करिता कौन्तीए देवीए सज्जि हस्तिखध दुरुहह, दुरुहिता बारवईए गयरीए मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता सय गिह अणुपविसह, तण्ण से कण्हे वासुदेवे कौन्तीदेवीं ण्हाय कयवलिकम्म जिमियभुत्तारागय जाव सुहासणवरगय एव वयासी) वहाँ आकर वे हाथी पर से नीचे उतरे और उतरकर कुन्ती देवी के चरणों में नमन किया-चरण स्पर्श करके कुन्तीदेवी के साथ २ हाथी पर बैठ गये-बैठ कर के द्वारावती नगरी के ठीक भीतर से होकर जहाँ अपना गृह-प्रासाद-था वहाँ आये-वहाँ आकर प्रासाद के भीतर

हीथी कृष्णवासुदेवे कौटुम्भिक पुत्रपोनी भासेथी आ समाचारे साभजीने तेने
हृदयभा धारण कराने, हाथी उपर सवार थडने, घोडा, हाथी, रथ आने पाथ
हजोनी साथे द्वारावती नगरीनी वन्धे थडने न्या कुन्ती देवी हता त्या आन्नी
(उवागच्छिता हस्तिखधाओ पच्चोरुहह पच्चोरुहि । कौन्तीए देवीए पादग्रहण
करेह, करिता कौन्तीए देवीए सज्जि हस्तिखध दुरुहह, दुरुहिता बारवईए गयरीए
मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छिता, सय गिह अणु
पविसह, तण्ण से कण्हे वासुदेवे कौन्ती देवी ण्हाय कयवलिकम्म जिमियभुत्त
रागय जाव सुहासणवरगय एव वयासी)

त्या पडोच्छीने तेजो हाथी उपस्थी नीचे उतर्या आने उतरीने कुन्ती
देवीने पगे लाग्या आने पगे लागीने कुन्ती देवीनी साथे हाथी उपर सवार
थया सवार थडने न्या पोतान्ण लवन हत त्या आन्नी, त्या

તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ કુતી દેવી સ્નાતા કૃતચલિર્માણ કાકાદિભ્યઃ
કૃતાન્નસધિભાગા જિમિત્તશુક્રોત્તરાગતા જિમિતા-ભોજન કૃતવતી શુક્રોત્તરાગતા-
શુક્રોત્તરકાલ-ભોજનોત્તરકાલમ્-આગતા, તા તયા, યાવન્ સુલામનવરગતા=સુલ-
પૂર્વક ત્રિગિષ્ઠાસનોપવિષ્ઠામ્ એવમનાદીત્-હે પિતૃપત્નયઃ ! સદિગન્તુ કિમાગમનપ્રયો-
જનમ્ ? તતઃ સ્વલુ સા કુન્તી દેવી કૃષ્ણ વાસુદેવમેતમવાદીત્-એવ સ્વલુ હે પુત્ર !
હસ્તિનાપુરે નગરે યુધિષ્ઠિરસ્યાકાશતલે સુશ્વપસુપ્તસ્ય પાર્થ્વાદ દ્રૌપદી દેવી ન
જ્ઞાયતે કેનાપિ અપહતા યામદ્ અવક્ષિપ્તા વા, તન્ તસ્માદ્ ઇચ્છામિ સ્વલુ હે પુત્ર !

ચલે ગયે । કુતી ને વહા જાકર સ્નાન કિયા ચલિકર્મ કિયા । વાદ મેં
ચતુર્વિધ આહાર કો જીમકર જર વે સુખપૂર્વક થૈઠ ગઈ તર કૃષ્ણ
વાસુદેવ ને ડનસે કહા (સદિસડ ણ પિડચ્છા ! કિમાગમનપ્રયોજન ?
તણ્ણ સા કોતી દેવી કળહ વાસુદેવ ણવં વયાસી ણવ સ્વલુ પુત્તા ! હત્થિ
ણાડરે જુહિદ્વિહ્મસ અગાસતલે સુશ્વપસુત્તસ્ત પાસાઓ દોવઈ દેવી ણ
જ્ઞહ, કેળહ અવહિયા જાવ અવક્ષિપ્ત્તા વા ત ઇચ્છામિ ણ પુત્તા ! દોવઈ
પ દેવીપ મગ્ગણગવેસણ કરિત્તપ) હે શુઆજી ! કહિયે-કિસ કારણ
સે આપ યહા પવારી હું ? હસ પ્રકાર કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પૂછને પર ડસ
કુતીને ડન કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહો-પુત્ર ! સુનો-આને કા
કારણ હસ પ્રકાર હૈ-હસ્તિનાપુર નગરમેં પ્રાસાદ કી અદ્વાલિકા કે
ઉપર સુલકે સાગ મોયે હુપ યુધિષ્ઠિર કે પાસ સે દ્રૌપદી દેવી ન માલૂમ
કિસીને હરણ કરલી હૈ-યાવત્ કિસી કુળ મે યા સ્વલુ મેં ડાલ દી હૈ ।

અહર ગયા કુતીએ ત્યા પહોચીને સ્નાન કર્યું અને બલિકર્મ કર્યું ત્યાર
પછી ચાર બાતના આહારો બીને બ્યારે તે સુખેથી સ્વસ્થ થઈને બેઠી
ગયા ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે તેમને કહ્યું કે —

(સદિસડ ણ પિડચ્છા ! કિમાગમનપ્રયોજન ? તણ્ણ સા કોતી દેવી
કળહ વાસુદેવ ણવ વયાસી એવ સ્વલુ પુત્તા ! હત્થિણાડરે ણયરે જુહિદ્વિહ્મસ
આગાસતલે સુશ્વપસુત્તસ્ત પાસાઓ દોવઈ દેવી ણજ્ઞહ, કેળહ અવહિયા જાવ
અવક્ષિપ્ત્તા વા ત ઇચ્છામિ ણ પુત્તા ! દોવઈપ મગ્ગણગવેસણ કરિત્તપ)

કહો, શા કારણથી તમે અહીં આવ્યા છો ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના
પ્રશ્નને સાંભળીને કુતી દેવીએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર !
સાંભળો, હું એટલા માટે અહીં આવી છું કે હસ્તિનાપુર નગરમાં મહેલની
અગાશી ઉપરથી સુખેથી સૂતેલા યુધિષ્ઠિરની પાસેથી ન બાંધે ડોળે દ્રૌપદી દેવીનું
હરણ કરી લીધું છે યાવત ડોળ જવામાં એ કે આડામાં નાખી દીધી છે એથી
હે પુત્ર ! હું ઇચ્છુ છું કે — દ્રૌપદી દેવીની શોધખોળ થવી બેઈએ

द्रौपद्या देव्या मार्गणगवेयणं 'परित्याग' कर्तुमिति । ततः गच्छ सा कृष्णो वासु
देवः कुन्ती 'पिउच्छि' पितृपुत्रागमेयमागीन्-या नमरं ते पितृपुत्रम् । यदि
द्रौपद्या देव्या कुरापि श्रुतिं वा धृतिं वा मरुतिं वा गान् लभे, 'तो ण' तर्हि
खलु, अह पातालात् मयनाद् वा अर्धभरताद् वा-गच्छत्रयमप्यात् समन्तात्-सर्वतः
स्थानाद्, द्रौपदी देवी 'साहस्य' साहस्येन 'उपणेमि' उपनयामि, इति
कृता-इत्युक्ता कुन्ती 'पिउच्छि' पितृपुत्राग मरुताति समानयति, सत्कार्य

इस लिये हे पुत्र ! मैं चाहती हूँ कि द्रौपदी की मार्गणा एवं गवेयणा
होनी चाहिये । (तपण से कण्ठे वासुदेवे कोना पिउच्छि एव वयासी-
ज णवर पिउच्छी दोवड्ढ देवीण कत्थ सुइ वा जाव लमामि तो ण अह
पायालाओ वा भवणाओ अह भरहाओ वा, समतओ दोवड्ढ साहस्य
उवणेमि त्ति कट्ठु कोती पिउच्छि सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविस
ज्जेइ, तपणं सा कोती देवी कण्ठेण वासुदेवेण पडिविसज्जिया, समा
णी जामेव दिसि पाउ० तामेव दिसि पडिगया) तत्र कृष्ण वासुदेव ने
अपनी भुआ कुती देवी से इस प्रकार कहा-हे भुआ ! मैं और अधिक
तो क्या कहूँ-द्रौपदी देवी की यदि मैं कही पर भी श्रुतिधृति, और
प्रवृत्ति पा लेता हूँ तो मैं चाहे वह पाताल में हो, या किसीके भवन में
हो, या अर्ध भरत क्षेत्र में से कही पर भी क्यों न हो-उस द्रौपदी देवी
को सब जगह से अपने हाथों से ला कर दूँगा । इस प्रकार कहकर
उन कृष्ण वासुदेव ने अपनी पितृवसा कुती देवी का सत्कार किया।

(तपण से कण्ठे वासुदेवे कोत पिउच्छि एव वयासी ज णवर पिउच्छा
दोवड्ढ देवीण कत्थ सुइ वा जाव लमामि तो ण अह पायालाओ वा भवणाओ
अह भरहाओ वा, समतओ दोवड्ढ साहस्य उवणेमि त्ति कट्ठु कोती पिउच्छि
सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ, तपणं सा कोती देवी कण्ठेण वासुदेवेण
पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसि पाउ० तामेव दिसि पडिगया)

त्यादे कृष्ण वासुदेवे पोताना इहा कुती देवीने आ प्रभावे कछु के डे
इहा । हु पधारे शुं भु, द्रौपदी देवीनी ने हु कोठ पण स्थाने श्रुति, धृति
अने प्रवृत्ति भेजवी लक्ष तो सबे ते पाताणमा होय, कोठना लवनमा होय
के अर्ध भरत क्षेत्रमा गये त्या डेम न होय ते द्रौपदी देवीने गये त्याथी हु
लापी आपने आपीथ तेम छु आ प्रभावे कछीने ते कृष्ण वासुदेवे पोताना इहा
पितृवसा-कुतीदेवीने सत्कार कयो अने सम्मान कयुं सत्कार ने

समान्य यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णेन वासुदेवेन प्रतिविसर्जिता सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशः प्रतिगता । सू० २७ ॥

मूलम्-तएणं से कणहे वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सदावेइ
सदावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया । वार-
वइ एवं जहा-पडू तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति,
पंडुस्स जहा तएण से कणहे वासुदेवे अन्नया अतो अंतेउ-
रण्ण ओरोहे जाव विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समो-
वडए जाव णिसीइत्ता कणह वासुदेवं कुसलोदत पुच्छइ,
तएणं से कणहे वासुदेवे कच्छुल्ल एवं वयासी-तुम ण देवा-
णुप्पिया । बहूणि गामा जाव अणुपविससि, त अत्थि याइं
ते कहिं वि दोवडए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा ?, तएणं
से कच्छुल्ले कणहं वासुदेव एवं वयासी-एव खलु देवाणु-
प्पिया । अन्नया कयाइं धायर्डसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिण-
डुभरहवास अवरककारायहाणि गए, तत्थ णं मए पडमना-
भस्स रत्तो भवणसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि
होत्था तएण कणहे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी-तुब्भ
चेव ण देवाणुप्पिया । एव पुव्वकम्म, तएणं से कच्छुल्ल-
नारए कणहेण वासुदेवेणं एव वुत्ते समाने उप्पयणि विज्जं

सन्मान क्रिया, सत्कार सन्मान कर यावत् उन्हें प्रति विसर्जित कर दिया । इसके बाद वे कुन्ती देवी वहा से प्रतिविसर्जित होकर जिस दिशा से प्रकट हुईं वो-उसी दिशा की ओर चली गईं ॥ सू० २७ ॥

धरीने तेभने विदाय उर्या, त्थारपछी ते कुन्तीदेवी त्याथी विदाय भेजणीने ने दिशा तरक्ष्थी आव्या हुता ते ने तरक्ष पाछा रवाना थया ॥ सूत्र २७ ॥

तएण से कणहे वासुदेवे इत्यादि ॥ सूत्र २८ ॥

आवाहेइ आवाहिता जामेउ दिसि पाउन्मूए तामेव दिसि
 पडिगए, तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सदावेइ सदावित्ता
 एववयासी-गच्छहणं तुम देवाणुप्पिया । हत्थिणाउरपंडुस्स
 रत्तो एयमट्ट निवेदेहि एवं सल्ल देवाणुप्पिया । धायइसंडे
 दीवे पुरच्छिमहे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणांसि
 दोवइए देवीए पउत्ती उवलल्ला, त गच्छंतु पंच पडवा
 चाउरणिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए
 मम पडिवालेमाणा चिट्ठत्तु, तएण से दूए जाव भणइ,
 पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठति, तएणं से कण्हे
 वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-
 गच्छहणं तुम्हे देवाणुप्पिया । सन्नाहियं भेरिताडेह, ते वि
 -तालेति, तएणं तेसि सण्णाहियाए भेरीए सह सोच्चा
 समुद्विजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पणं वलवयसा-
 हस्सीओ सन्नद्धवद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया
 हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सु-
 हम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 करयल जाव वच्चावेति, तएण कण्हे वासुदेवे हत्थिखधवर-
 गए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण० सेयवर० हयगय० सहया
 भडचडगरपहकरेण वारवईए णयरीए मज्झ मज्जेण णिग्ग-
 च्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 पचहि पडवेहि सद्धि एगयओमिलित्ता एव ॥ १० ॥ करेइ

करित्ता पोसहसाल अणुपविसइ अणुपविसित्ता सुद्विय देवं
मणसि करेमाणेर चिट्ठइ, तएण कणहस्स वासुदेवस्स अट्ठ-
मभत्तंसि परिणममाणसि सुट्ठिओ आगओ, भणदेवाणु-
प्पिया । ज मए कायव्व, तएण से कणहे वासुदेवे सुद्विय
एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । दोवई देवी जाव पउ-
मनाभस्स भवणसि साहरिया तणं तुमं देवाणुप्पिया । मम
पंचहि पंडवेहि सद्धि अप्पच्छट्ठस्स छण्ह रहाणं लवणसमुद्दे
मगं वियरोहि, जणण अह अमरकंकारायहाणा दोवईए कूवं
गच्छामि, तएण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी-
किण्ह देवाणुप्पिया । जहा चेव पउमणाभस्स रत्तो पुव्वसं-
गइएणं देवेण दोवई जाव संहरिया तहा चेव दोवई देविं
धायइसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुर साह-
रामि, उदाहु पउमणाभ राय सपुरवल्वाहण लवणसमुद्दे
पक्खिवामि १, तएण कणहे वासुदेवे सुद्विय देव एव वयासी-
मा ण तुम देवाणुप्पिया । जाव साहराहि तुम णं देवा-
णुप्पिया । लवणसमुद्दे अप्पच्छट्ठस्स छण्ह रहाण मगं विय-
राहि, सयमेव ण अह दोवईए कूवं गच्छामि, तएण से
सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव होउ, पचहिं
पंडवेहिं अप्पच्छट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मगं वियरइ,
तएण से कणहे वासुदेवे चाउरगिणासेण पडिविमज्जेइ-पडिवि-
सज्जित्ता पचहिं पंडवेहि सद्धि अप्पच्छट्ठे छहि रहेहि लवणसमुद्दे

आवाहेइ आवाहिता जामेउ दिसि पाउवभूए तामेव दिसि
 पडिगए, तएण से कण्हे वासुदेवे दूय सदावेइ सदावित्ता
 एववयासी-गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरपंडुस्त
 रत्तो एयमट्ठं निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसंडे
 दीवे पुरच्छिमछे अवरककाए रायहाणीए पउमणाभभणंसि
 दोवइए देवीए पउत्ती उवलछा, त गच्छंतु पंच पंडवा
 चाउरगिणीए तेणाए सद्धिं सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए
 मम पडिवालेमाणा चिट्ठतु, तएण से दूए जाव भणइ,
 पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठति, तएणं से कण्हे
 वासुदेवे कोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एवं वयासी-
 गच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिताडेह, ते वि
 -तालेंति, तएण तेमि सण्णाहियाए भेरीए सद्धं सोच्चा
 समुद्विजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पणं वलवयसा
 हस्सीओ सन्नद्धवद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया
 हयगया गयगया जाव वग्गुरापारिक्खित्ता जेणैव सभा सु-
 हस्मा जेणैव कण्हे वासुदेवे तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 करयल जाव वद्धावेंति, तएण कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवर-
 गए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण० सेयवर० हयगय० महया
 भडचडगरपहकरेण चारवईए णयरीए मज्झं मज्झेण णिग्ग-
 च्छइ, जेणैव पुरत्थिमवेयाली तेणैव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
 पचहि पडवेहि सद्धि एगयओमिलित्ता ॥ १५ ॥ कोइ

वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुञ्जसज्जो णिग्गच्छामि
त्तिकट्ठु दारुयं सारहि एव वयासी-केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये
अवज्जे त्तिकट्ठु असक्कारिय असम्माणिय अवहारेणं णिच्छुभा-
वइ, तएणं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव
णिच्छूढे समाणे जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता करयल० कणहं जाव एव वयासी-एवं खल्लु अह
सामी ! तुव्वम वयणेण जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खल्लु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपु-
रुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमप्रादीत् गच्छत खल्लु यूय हे देवानुप्रिय । द्वार-
वतीं नगरीम्, ‘एव यथा पाण्डुस्तथा घोषणां प्रोपयत’-यथा पाण्डु राजा हस्ति
नापुरे घोषणा कारितवान् तद्वदित्यर्थः । तेषां कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणा

—तएण से कणहे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कणहे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव
ने (कौटुम्बिकपुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दाविस्सा)
बुलाकर (एव वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छइ ण तुव्वमे देवाणुप्पिया
वारवइ) हे देवानुप्रियों ! तुम द्वारावती नगर में जाओ (एव जहा पडु
तहा घोसण घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) वहा पांडु
राजाकी तरह घोषणा करो-अर्थात् पांडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की
खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों
द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी-इसी प्रकार की घोषणा करने के

‘तएण से कणहे वासुदेवे’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से कणहे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवे (कौटु बिय
पुरिसे सद्दावेइ) कौटु णिउ पुरुषोने ओलाब्धा (सद्दाविस्सा) ओलावानी (एव
वयासी) तेभने आ प्रभाण्णे उल्लु डे—(गच्छइ ण तुव्वमे देवाणुप्पिया वारवई)
डे देवानुप्रियो ! तमे द्वारावती नगरीमा गओ (एव जहा पडु तहा घोसण
घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) त्था पाडु राजनी जेम न घोषणा
करो ओटवे डे पाडु राजन्ने जेम द्रौपदीनी शोध कव्वा भाटेनी द्रव्य आप
वानी घोषणा हस्तिनापुर नगरमा करावी डती ते प्रभाण्णे न घोषणा करना

मज्झमज्झेणं वीइवयइ वीइवडत्ता जेणेव अमरकंका राय
हाणी जेणेव अमरकंकाण अणुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवा
गच्छित्ता रह ठवेइ ठवित्ता दारुणं सारहिं सदावेइ सदावित्ता
एवं वयासी-गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! अमरकंकारायहाणीं
अणुपविसाहिं पउमणाभस्स रण्णो वामेण पाएणं पायपीढ
अक्कमित्ता कुतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलिय भिउडिं निडाले
साहट्टु आसुरुत्ते रुट्टे कुट्टे कुविए चाडिक्किए एव वयासी- हं भो
पउमणाहा ! अपरिथयपरिथया दुरतपंतलक्खणा हीणपुन्नचा
उदत्ता सिरीहिरिधी परिवज्जिया अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण
याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे णिगच्छाहि
एस्स ण कणहे वासुदेवे पंचहि पडवेहि अप्पच्छट्टे दोवई देवीए
कूवं हव्वमागए, तएणं से दारुण सारही कणहेणं वासुदेवेण
एवं बुत्ते समणे हट्टुट्टे जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता अमरकका
रायहाणि अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे
तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एव
वयासी-एस्स ण सामी ! मम विणयपडिवित्ती इमा अन्ना मम
सामिस्स समुहाणत्तित्तिक्कट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढ
अणुक्कमइ अणुक्कमित्ता कुतग्गेणं लेह पणामइ पणामित्ता
जाव कूव हव्वमागए, तएणं से पउमणाभे दारुणेणं सारहिणा
एव बुत्ते समणे आसुरुत्ते तिवलि भिउडि निडाले साहट्टु
एव वयासी-णो अप्पिणामि णं अह देवाणुप्पिया !

वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामि
त्तिकट्ठु दारुय सारहि एव वयासी-केवलं भो । रायसत्थेसु दूये
अवज्जे त्तिकट्ठु असक्कारिय असम्माणिय अवद्वारेणं णिच्छुभा-
वइ, तएणं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव
णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एव वयासी-एवं खल्ल अहं
सामी । तुव्वम वयणेण जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खल्ल स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपु-
रुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमादीत् गच्छत खल्ल यूय हे देवानुमिय । द्वार-
पतीं नगरीम्, ‘एव यथा पाण्डुस्तथा घोषणां घोषयत’-यथा पाण्डु राजा हस्ति
नापुरे घोषणा कारितवान् तद्वदित्यर्थः । तेषां कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणा

—तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेव
ने (कौटुम्बिकपुरिसे सदावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (महाविक्ता)
बुलाकर (एव वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छइ ण तुव्वमे देवानुप्पिया
घारवइ) हे देवानुप्रियो । तुम द्वारावती नगर में जाओ (एव जहा पडु
तहा घोसण घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) वहा पांडु
राजाकी तरह घोषणा करो—अर्थात् पांडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की
खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों
द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी—इसी प्रकार की घोषणा करने के

‘तएण से कण्हे वासुदेवे’ इत्यादि

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण वासुदेवे (कौटु बिय
पुरिसे सदावेइ) कौटु बिय पुरुषोने ओलाव्वा (सदाविक्ता) ओलावीने (एव
वयासी) तेभने आ प्रभावे उल्लु ठे—(गच्छइ ण तुव्वमे देवानुप्पिया घारवई)
हे देवानुप्रियो । तमे द्वारपती नगरीमा ओलो (एव जहा पडु तहा घोसण
घोसावेति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) त्था पांडु राजानी नेम न घोषणा
करो ओटवे ठे पांडु राजाओ नेम द्रौपदीनी शोध क्वा माटेनी द्रव्य आप
पानी घोषणा हस्तिनापुर नगरमा करावी हुती ते प्रभावे न घोषणा करा

કરતા 'જાત પચ્ચપ્પિણંતિ' યાત્ મત્તપર્પયન્તિ-ત્રોપણાં કૃણા-કૃણસ્ય વાસુદેવ-
સ્થાન્તિકે તે કૌટુમ્બિક પુરુષા નિવેદયન્તિ-દ્વારપત્યાં નગર્યાં સર્વં ત્ર યોપણાકૃતા
ડસ્માભિરિતિ । 'પદ્મસ જહા' પાંડુર્ગૃધ્રવા યથા પાંડુ રૂપસ્ય વર્ણકમ્પયાડ્રાપિ
યો યઃ । યથા પાંડુરાજા દ્રૌપદ્યાઃ શુભિં યાત્ મટ્ટિં નલબ્ધમાન, તથા કૃષ્ણા
સુદેશેષિ દ્રૌપદ્યાઃ શ્રુત્યારિકુ ન પ્રાપ્તયાનિતિ ભાયઃ । તતઃ મ્હુ કૃણો વાસુદેવઃ
અન્યદા=અન્યસ્મિન્ વર્ધિમિત્ સમયે 'જતો' જન્તઃ-મ્યમામાદ જન્તઃપુરગતો
ઽવરોધે યાવદ્ વિહરતિ । 'ઇમ ચ ણ' અસ્મિન્ સમયે ચ મ્હુ 'કચ્છુલ્લણ' કચ્છુ
લ્લકો નારદો યાત્ સપચ્ચતઃ=ગગનતલાદન્તગ્ન કૃણમગ્નિ મમાગત યાત્
નિપચ=અપચિચ ગગનાલાદન્તગ્ન કૃણમગ્નિ મમાગતઃ, યાત્ નિપચ=અપચિચ

લિયે કૃષ્ણ વાસુદેવ ને અરને કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો આદેશ દિયા કિ વે
મી દ્વારાવતી મેં હસી તરફ કી ઘોષણા કરેં । અપને રાજા કી આજ્ઞાનુ
સાર ડન્હોં ને દ્વારાવતી મેં ઘોષણા કરદી ઓર ડસ કી ચ્વર પીઠે કૃષ્ણ
વાસુદેવ કો કર દો । યહા અવશિષ્ટ વર્ણન પાંડુ રાજા કે જૈસા વર્ણન
હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે । અર્થાત્ ઘોષણા કરાને પર મી દ્રૌપદી કી
કિસી મી પ્રકાર કી ચ્વર ચગૈરફ કા કોઈ મી સમાચાર પાંડુ રાજા કો
નહીં મિલા વૈસા કૃષ્ણ વાસુદેવ કો મી નહીં મિલા (તણ) તથ (સે
કળે વાસુદેવે અન્નયા અતો અતેરગણ ઓરોરે જાવ વિહરદ્ ઇમ ચ
ણ કચ્છુલ્લણ જાત સમોસરણ) વે કૃષ્ણ વાસુદેવ ઇક દિન કી બાત હૈ
કિ અપને અન્ત પુર કે પ્રાસાદ કે મીતર અન્ત પુર કી સ્ત્રિયોં કે સાથ
બૈઠે હુણ થે કિ હસી સમય વે કચ્છુલ્લ નામે નારદ આકાશ માર્ગ સે

માટે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને આજ્ઞા કરી કે તેઓ પણ
દ્વારાવતી નગરીમા આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરે પોતાના રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે
તે લોકોએ દ્વારાવતી નગરીમા ઘોષણા કરી અને ઘોષણાનુ કામ થઈ ગયું છે
તેની ખબર પણ કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે પહોંચાડી હીમી અહીં અવશિષ્ટ વર્ણન
પાંડુ રાજાનું જેવું છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવું જોઈએ એટલે કે ઘોષણા કર્યા
પછી પણ પાંડુ રાજાને દ્રૌપદી દેવીની કોઈ પણ જાતની ખબર કે સમાચાર
મળ્યા નહિ તે પ્રમાણે કૃષ્ણ વાસુદેવને પણ કોઈ પણ સમાચારો ઘોષણા
બાદ મળ્યા નહિ (તણ) ત્યારે (સે કળે વાસુદેવે અન્નયા અતો અતે
રગણ ઓરોરે જાવ વિહરદ્, ઇમચ ણ કચ્છુલ્લણ જાવ સમોસરણ) એક દિવસની
વાત છે કે તે કૃષ્ણ વાસુદેવ પોતાના મહેલની અંદર રહ્યાસની સ્ત્રીઓની
સાથે બેઠા હતા તે વખતે કચ્છુલ્લ નામે નારદ આકાશ મા

કૃષ્ણ વાસુદેવં કુશલોદન્ત=કુશલવાર્તા પૃચ્છતિ, તત્. સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ કચ્છુલ્લ નારદમેવમવાદીત્-હે દેવાનુપ્રિય ! ત્વ સ્વલુ વહૂનિ ગ્રામાકુરાદીનિ પરિભ્રામ્યસિ, તત્ર વહૂનિ ગૃહાણિ યાવદનુપવિશસિ તત્ તસ્માદસ્તિ 'આઈ' ઇતિ વામ્યાલકારે તે ત્વયા યદિ કુરચિદ્ દ્રૌપદ્યાદેવ્યા શ્રુતિર્યા યાવદ્ ઉપલબ્ધા=નાતા ? તર્હિ કથય' ઇતિ ભાવઃ । તતઃ સ્વલુ સ કચ્છુલ્લનારદ કૃષ્ણ વાસુદેવમેવમવાદીત્-એવ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ યદમન્યદાકુદાચિદ્ ધાતકીપળ્હે દ્વીપે પૌરસ્ત્યાર્થે=પૂર્વદિગ્ભાગવ વર્તિનિ, દક્ષિણાર્ધમરતવર્ષે-અમરકુકાનામ્ની રાજધાની ગત । તત્ર સ્વલુ મયા

ઉત્તરકર વદ્યા આયે-(જાવ ણિસી ઇત્તા કળ્હ વાસુદેવ કુસલોદત પુચ્છહ, તપ્પણં સે કળ્હે વાસુદેવે કચ્છુલ્લ એવ વયામી-તુમ ણ દેવાણુપ્પિયા ! વહૂણિ ગામાગર જાવ અણુપવિસસિ ત અલ્થિ આઈ તે કહિં વિ દોવઈં દેવીં સુતીં વા જાવ ઉવલદ્વા તપ્પણં સે કચ્છુલ્લે કળ્હ વાસુદેવ એવ વયામી) યાવત્ વૈટકર ઉન્હો ને કૃષ્ણ વાસુદેવ સે કુશલ વૃત્તાન્ત પૂઝા -કૃષ્ણવાસુદેવ ને તવ કચ્છુલ્લ નારદ સે એસા કહો-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ અનેક ગ્રામ આકર આદિસ્થાનોં મેં પરિભ્રમણ કરતે રહતે હો-અનેક ગૃહાદિકોં મેં આતે જાતે રહતે હો તો કરો-કહીં પર વયા તુમ્હેં દ્રૌપદી દેવીં કી શ્રુતિ ઉપલબ્ધ હુઈં હૈં-ઉસકી તુમ્હેં કિસી પ્રકાર કી કોઈં જ્વર મિલીં હૈં-ઉસકા કિસીં બી પ્રકાર કા કોઈં ચિન્હ ઉપલબ્ધ હુઆ હૈં ? હિસ પ્રકાર કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પૂઝને પર કચ્છુલ્લ નારદ ને ઉન કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હિસ પ્રકાર કહા-(ંવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! અન્નયા કયાઈ

આવ્યા (જાવ ણિસી ઇત્તા કળ્હ વાસુદેવ કુસલોદત પુચ્છહ, તપ્પણં સે કળ્હે વાસુદેવે કચ્છુલ્લ એવ વયામી, તુમ ણ દેવાણુપ્પિયા ! વહૂણિ ગામાગર જાવ અણુ પવિસસિ ત અલ્થિ આઈ તે કહિં વિ દોવઈં દેવીં સુતીં વા જાવ ઉવલદ્વા- તપ્પણં સે કચ્છુલ્લે કળ્હ વાસુદેવ એવ વયામી) ત્યા આવીને બેઠા અને બેઠીને તેમણે કૃષ્ણ વાસુદેવને કુશળ વાર્તા પૂઝી વાસુદેવે ત્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ઘણા ગ્રામ, આકર વગેરે સ્થાનોમા પરિ ભ્રમણ કરતા રહો છો, ઘણા ઘરો વગેરેમા આવજા કરતા રહો છો તો કહો, કોઈં પણ સ્થાને તમને દ્રૌપદી દેવીની શ્રુતિ મળી છે-તેના તમને કોઈં પણ જાતના મમાચારો મળ્યા છે, તેનું કોઈં પણ જાતનું ચિહ્ન તમને મળ્યું છે ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને આશળીને કચ્છુલ્લ નારદે તે કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે —

(એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! અન્નયા કયાઈ ધાયઈંસડે દીવે પુરત્થિમદ્ધ
વા ૬૨

पद्मनाभस्य राज्ञो भगने द्रौपदीदेवी यादृशी ऋष्यां चाप्यभयम्, अयं भावः-
 काचिद्द्रौपदीमदृशी दृशी पद्मनाभस्य राज्ञो भगने दृष्टा स्मिन् सा मया न सम्पद्य
 शाता नापि सम्पद्यपरिचिता, इति । ततः गच्छ कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्लनारदमेव
 मयादीत्-हे देवानुभिः यूपमाकरो गच्छ 'पश्य' इत्य 'पुत्रकर्म' पूर्वकर्म
 -पूर्वकृत कर्म, यूपमाभिरवेष्टाय कर्म पूर्वं कृतमित्यर्थः । ततः गच्छ स कच्छुल्लनारदः
 कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्तः मन उच्यते विप्रामासादयति । आगच्छ यस्याः एवदिवः
 प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः गच्छ स कृष्णो वासुदेवो दत्त शब्दयति-

धायईसठे दीचे पुरत्थिमद्व दक्षिणद्वभरहवास अमरकका रायहाणि गय
 तत्थ ण मय पडमनाभस्स रण्णो भवणसि दोई देवी जारिमिया दिट्ठ
 पुब्बा याचि होत्था, तण्ण कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एव वयासी-तुम्भ
 चेव ण देवाणुप्पिया ! एव पुत्रकम्म-तण्णं से कच्छुल्लनारद कण्हेण
 वासुदेवेण एव बुत्ते समाणे उप्पयणि विज्ज आवाहेइ, आवारिस्ता
 जामेव दिसि पाउंमुण तामेव दिसि पडिगण) सुनो मै तुम्हें बताता हूँ
 -हे देवाणुप्रिय ! मैं किसी एक समय द्वितीय धातकी खड्ग द्वीप में पूर्व
 दिग्भागवती दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में अमरकका नाम की राजधानी में
 गया हुआ था वहाँ मैंने पद्मनाभ राजा के भवन में द्रौपदी देवी जैसी
 एक नारी देखी थी-परन्तु मैं उसे अच्छी तरह नहीं जान सका-और
 न उससे परिचित ही हो सका-। नारद की ऐसी बात सुनकर कृष्ण
 वासुदेव ने उनसे कहा हे देवानुप्रिय ! आपने ही ऐसा कार्य सय से
 पहिले किया है-इसके बाद उन कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवके द्वारा

दक्षिणद्वभरहवास अमरकका रायहाणि गय, तत्थ ण मय पडमनाभस्स रण्णो
 भवणसि दोई देवी, जारिमिया दिट्ठपुब्बा याचि होत्था, तण्ण कण्हे वासुदेवे
 कच्छुल्ल एव वयासी-तुम्भ चेव ण देवाणुप्पिया ! एव पुत्र कम्म-तण्णं से कच्छुल्ल
 नारद कण्हेण वासुदेवेण एव बुत्ते समाणे उप्पयणि विज्ज आवाहेइ, आवारिस्ता
 जामेव दिसि पाउंमुण तामेव दिसि पडिगण)

साक्षणी, तमने हु गंधी विगत गतावुं छु हे देवानुप्रिय । ठाँ अके
 पभते हु धातकी पडद्वीपमा, पूर्वं दिशा तरङ्गना दक्षिणार्ध भरत क्षेत्रमा,
 अमरकका नामे राजधानीमा गये हुते । त्या मे पद्मनाभ राजाना भवनमा
 द्रौपदी देवी नारी नेछ हुती पक्षु हु तेने सारी चेठे ओगणी
 शक्यो नरि परिचित थछ शक्यो नारदनी आ वात साक्षणीने
 कृष्णवा नयि । सौ पडेला तमे न आ काम कथुं छे
 त्यार

आह्वयति, शब्दयित्वा-एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुर
पाण्डोराज्ञ एतमर्थं निवेदय-एव खलु हे देवानुप्रिय ! धातकीपण्डे द्वीपे ' पुर-
त्थिमद्वे ' पौरस्त्यार्थे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अमरककाया राजधान्या पद्मनाभभवने
द्रौपद्या देव्याः प्रवृत्तिरूपलब्धा, तत्-तस्मात् गच्छन्तु पञ्च पाण्डवाश्चतुरङ्गिण्या
सेनया सारं सपरिवृता ' पुरत्थिमवेयालीए ' ' पौरस्त्यवेलायां-पूर्वदिग्वर्तिनि
लवणसमुद्रे मा ' पडिवालेमाणा ' प्रतिपालयन्तः-प्रतीक्षमाणा स्तिष्ठन्तु, ततस्त
दनन्तरं स दूतो यावत् पाण्डोरग्रे गत्वा कृष्णवासुदेवोऽस्मै उचन भणति=कथयति=
' पडिवालेमाणा चिद्वर ' अयं भागः- ' धातकीपण्डे द्वीपे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अम-
रककाया राजधान्या पद्मनाभभवने द्रौपद्या ' प्रवृत्तिरूपलब्धा, तस्मात् पञ्च पाण्ड-

इस प्रकार कहे जाने पर अपनी उत्पत्तनीविद्याका स्मरण किया। स्मरण
करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की ओर चले
गये। (तएण से कण्ठे वासुदेवे दूय सद्वावेइ सद्वावित्ता एवं वयासी
गच्छण तुम देवानुप्रिया ! हस्तिनापुर पञ्चरत्न रण्णो पयमट्ट निवेदेहि)
इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने दूत को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा
कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ-वहाँ पाण्डु राजा से
ऐसा कहना-(एव खलु देवानुप्रिया ! धायइमडे दीवे पुरत्थिमद्वे
अमरककाए रायहाणीए पडमणाभभवणसि दोवईए देवीए पउतीं
उचलद्धा-त गच्छतु पच पडवा चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा
पुरत्थिमवेयालीए मम पडिवालेमाणा चिद्वरु) हे देवानुप्रिय ! वह वक्तव्य
विषय यह है-धातकी पंड नाम के द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध
भरत क्षेत्र में वर्तमान अमरकका नाम की राजधानी में पद्मनाभ राजा

विधातु स्मरथु कथुं स्मरथु करीने पछी तेओ ने दिशा तरइथी आओ
छता ते ने दिशा तरइ पाछा खाना थछ गया (तएण से कण्ठे वासुदेवे दूय
सद्वावेइ, सद्वावित्ता एवं वयासी-गच्छण तुम देवानुप्रिया ! हस्तिनापुर पञ्चरत्न
रण्णो पयमट्ट निवेदेहि) तयारपछी ते कृष्ण वासुदेवे इतने ओलाओ आने
ओलावीने तेने आ प्रभाछे कछु के छे देवानुप्रिय ! तमे हस्तिनापुर नगरमा
ओओ-आने त्या पाडु राजने आ प्रभाछे कछे के—

(एव खलु देवानुप्रिया ! धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्वे अमरककाए राय
हाणीए पडमणाभा भवणसि दोवईए देवीए पउतीं उचलद्धा-त गच्छतु पच पडवा
चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए मम पडिवाले माणा
चिद्वरु) छे देवानुप्रिय ! धातकी पंड नामे द्वीपमा पूर्व दिशा तरइना दक्षिणार्ध
भरत क्षेत्रमा विद्यमान अमरकका नामनी राजधानीमा पद्मनाभ राजाना अप

પદ્મનાભસ્ય રાજો ભવને દ્રૌપદીદેવી યાદશી નૃપૂર્ણાં ચાપ્યમાન્, અય માવઃ-
 કાચિદ્દ્રૌપદીમદશી દરી પદ્મનાભસ્ય રાજોભવને જ્ઞાતિં ત્વિં મા મયા ન સમ્યગ્
 જ્ઞાતા નાપિ સમ્યગ્પરિચિતા, ઇતિ । તત્ત ગતુઃ કૃણો વાસુદેવઃ કન્ધુલનારદમેવ
 મત્રાદીત્-હે દેવાનુપ્રિયાઃ યુગ્માક્રમેઽ ગતુઃ 'ગમ્' ડદ્ય 'પુગ્ગમ્મ' પૂર્વકર્મ
 -પૂર્વકૃત કર્મ, યુગ્માગિરવેદ્ય કર્મ પૂર્વ કામિત્યર્થ । તત્ત, સતુ સ કન્ધુલનારદઃ
 કૃણ્ણેન વાસુદેવેનેમુક્ત' ગત્ત ઉત્તતનાં તિયામાગદ્યતિ । આગ્રાય યમ્માઃ એવદિશ્વઃ
 પ્રાદુર્ભૂતસ્તામેઽ દિશં પ્રતિગતઃ । તતઃ ત્વતુ સ કૃણો વાસુદેવો દત્ત શંદ્યતિ-

ધાયર્દસદે દીવે પુરતિથમદ્ધ રાતિણદ્ધમરકકામ અમરકકા રાયદાણિ ગપ
 તત્થ ણ મપ પડમનાભસસ રણ્ણો મવણસિ દોઽર્દ દેવી જાગિમિયા દિદ્ધ
 પુઘ્વા યાવિ હોત્થા, તણ્ણં કળ્હે વાસુદેવે કન્ધુલ્લ ણ વયાસી-તુગ્મ
 ચેવ ણ દેવાણુપ્પિયા ! ણ પુગ્ગમ્મ-તણ્ણ સે કન્ધુલનારણ કળ્હેણ
 વાસુદેવેણ એવ ઘુત્તે સમાણે ઉપ્પયણિ વિજ્જ આવાહેદ્, આવાહિત્તા
 જામેવ દિસિ પાઠ્ઠુમ્ તામેઽ દિસિ પહિગ્ગ) સુનો મેં તુઘેં ચતાતા હં
 -હે દેવાણુપ્રિય ! મેં કિસી ણક સમય ઈતીય ધાતકી ત્વદ ઈપ મેં પૂર્વ
 દિગ્ભાગચર્તી દક્ષિણાર્ધ ભરતક્ષેત્ર મેં અમરકકા નામ કી રાજધાની મેં
 ગયા છુઆ ધો વહા મેંને પદ્મનાભ રાજા કે મવન મેં દ્રૌપદી દેવી જૈસી
 એક નારી દેલી થી-પરન્તુ મેં ડસે અઠ્ઠી તરફ નહીં જાન મકા-ઔર
 ન ડસસે પરિચિત હી હો સકા-। નારદ કી જેસી વાત સુનકર કૃણ
 વાસુદેવ ને ડનસે કહા હે દેવાનુપ્રિય ! આપને હી જેસા કાર્ય સવ સે
 પહિલે કિયા હૈ-હસકે વાદ ડન કન્ધુલ્લ નારદને કૃણ વાસુદેવકે દ્રારા

રાતિણદ્ધમરહવાસ અમરકકા રાયદાણિ ગપ, તત્થળ મપ પડમનાભસસ રણ્ણો
 મવણસિ દોઽર્દ દેવી, જાગિસિયા દિદ્ધપુઘ્વા યાવિ હોત્થા, તણ્ણં કળ્હે વાસુદેવે
 કન્ધુલ્લ એવ વયાસી-તુગ્મ ચેવળ દેવાણુપ્પિયા ! એવ પુગ્ગ કમ્મ-તણ્ણ સે કન્ધુલ્લ
 નારણ કળ્હેણ વાસુદેવેણ એવ ઘુત્તે સમાણે ઉપ્પયણિ વિજ્જ આવાહેદ્, આવાહિત્તા
 જામેવ દિસિ પાઠ્ઠુમ્ તામેવ દિસિ પહિગ્ગ)

સાભળો, તમને હુ બધી વિગત બતાવું છુ હે દેવાનુપ્રિય ! કોઈ એક
 વખતે હુ ધાતકી પદ્મીપમા, પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા,
 અમરકકા નામે રાજધાનીમા ગયો હતો ત્યાં મેં પદ્મનાભ રાજાના ભવનમા
 દ્રૌપદી દેવી જેવી એક નારી જોઈ હતી પણ હુ તેને સારી પેઠે ઓળખી
 શક્યો નહિ અને ન તેનાથી પરિચિત થઈ શક્યો નારદની આ વાત સાભળીને
 કૃષ્ણવાસુદેવે તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સૌ પહેલા તમે જ આ કામ કર્યું છે
 ત્યારપછી તે કન્ધુલનારદે કૃષ્ણ વાસુદેવની આ વાત સાભળીને ॥

શબ્દયિત્વા એવમવાદીત્-ગચ્છતિ સ્વલુ યુય દે દેવાનુપ્રિયા સાનાહિકી સૈનિકાનાં
સજ્જીભવનાર્થ નાદો યસ્યાસ્તા ભેરીં તાડયત તેઽપિ તાડયન્તિ, તતઃ સ્વલુ તસ્યા
સાનાહિક્યા ભેર્યાઃ શબ્દ શ્રુત્વા સમુદ્રવિજયપ્રમુખા દશ દશાર્હાં યાવત્ 'ઉપ્પણ
વલ્લવયસાહસીઓ' પદ્ પશ્ચાશ્વદ્ વલ્લવતાહસ્યાઃ=પદ્પશ્ચાશ્વત્સહસ્રપ્રમિતા વલ-
વન્તિ इत्यर्थः 'સન્નદ્વબદ્ધ-જાવ ગાહિયાઉહપહરણા' અત્ર યાવન્નઽવદેનૈવ દ્રષ્ટવ્યમ્-
સન્નદ્વબદ્ધવર્મિતકવચા ઉત્પીડિતશરાસનપટ્ટકાઃ પિનદ્વગ્રૈવેયકવદ્વાવિદ્ધવિમલ
વરચિહ્નપટ્ટાઃ શૃદ્ધીતાયુગ્રપહરણા इति । व्याख्याऽस्मिन्नेवा ययने पूर्वमुक्ता अप्ये-
किकाः=केचिद् हयगताः केचिद् गजगता यानद् वागुरापारिक्षिप्ताः=मनुष्यवृन्दैः
परिवृता', यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य करतलं यानद्
जयेन विजयेन वर्धयन्ति । ततः स्वलु कृष्णो वासुदेवो हस्तिस्कन्धवरगतः सको

उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम सुधर्मा सभा में जाओ वहाँ
जाकर तुम सानाहिकी भेरी बजाओ-। कौटुम्भिक पुरुषोंने ऐसा ही किया
सुधर्मा सभामें जाकर उस सानाहिकी भेरीको बजाया-। इस सानाहिकी
भेरीकी गर्जनाको सुनकर समुद्रविजय आदि दश दशार्ह यावत् ५६, हजार
प्रमित बलवीर पुरुष सन्नद्ध बद्धर्मितकवच होकर, यावत् आयुव प्रह-
रणों को लेकर तैयार सुसज्जित हो गये । यहाँ यावत् शब्द से उत्पी-
डितशरासन पट्टकाः, " पिनद्वाग्रैवेयकवद्वविद्वविमलवर्चिह्नपट्टाः "।
इस पाठ का संग्रह हुआ है । इन शब्दों की व्याख्या इसी अ ययन मे
पहिले की जा चुकी है । इनमें कितनेक घोड़ों पर, कितनेक हाथियों पर,
बैठकर अन्य मनुष्यों के समूह से परिवृत्त हो जहा वह सुधर्मा सभा
और जहा वे कृष्णवासुदेव थे वहाँ आये । (उवागच्छन्ता करतल जाव

કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સુધર્મા સભામા જાઓ, ત્યાં જઈને તમે સાનાહિકી
ભેરી વગાડો, તે કૌટુમ્બિક પુરુષોએ પણ તે પ્રમાણે જ આજ્ઞાનુ પાલન કયું
સુધર્મા સભામા જઈને તેઓએ સાનાહિકી ભેરી વગાડી સાનાહિકી ભેરીના
અવાજ સાંભળીને સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હો યાવત્ ૫૬ હજાર પ્રમિત
બળવીર પુરુષો ડવચો વગેરેથી સુસજ્જ થઈને યાવત્ આયુધ પ્રહરણોને લઈને
તૈયાર થઈ ગયા અહીં યાવત્ શબ્દથી " ઉત્પીડિતશરાસનપટ્ટકા, પિનદ્વ ગ્રૈવેયક
વદ્વાવિદ્ધવિમલવરચિહ્નપટ્ટા " આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે આ શબ્દોની વ્યાખ્યા
આ અધ્યયનમા જ પહેલા કરવામા આવી છે આમા કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર,
કેટલાક હાથીઓ ઉપર ભેમીને તેમજ કેટલાક માણસોના સમૂહોથી પરિવૃત
થઈને જ્યાં તે સુધર્મા, સભા અને જ્યાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યાં આવ્યા

अथतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिहृताः पौरस्त्यमेवागमा मां प्रतिपालयन्तस्तिष्ठन्तु' इति । एव दूतमुत्वात् कृष्णवासुदेवोक्तं यत्न श्रुत्वा तेऽपि=एव पाण्डवा यावत् तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, के भवन में द्रौपदी देवी की रापर मिली है-इमलिये पाचो पाण्डव चतुरगिणी सेना के साथ युक्त होकर लवण समुद्र की पूर्व दिग्भाग वर्तिनी वेला पर जाकर यहाँ मेरी प्रतीक्षा करें । (तण्ण से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाणो चिट्ठह, ते वि जाव चिट्ठति, तण्ण से कण्हे वासु देवे कोट्टुचियपुरिसे सहावेइ सहाविच्चा एव वयासी-गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया । सन्नाहिय भेरि ताडेह ते वि ताडति, तण्ण तीसे सण्णा हियाए भेरिण सह मोच्चा विजयपामोस्सत्ता, दस दसारा जाव छप्पण्ण बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धयद्ध जाव गहियाउहपरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव वगुरा परिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्णे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार अपने राजा कृष्णवासु देव की आज्ञा लेकर वह दूत हस्तिनापुर गया वहाँ जाकर उसने इस समाचार को पांडुराजा से कह दिया । वे पाचों पाटव इस समाचार को दूत के मुख से सुनकर चतुरगिणी सेना के साथ लवण समुद्र के पूर्व दिग्भागवर्ती तट पर जाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा में ठहर गये-। इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर

नभा द्रौपदी देवीना वावड भण्णा छे तो डवे पाये पाडवे अतुर गिणी सेनानी साथे प्रयाण करीने लवण समुद्रना पूर्व किनारा उपर पडोथीने भारी प्रतीक्षा करे

(तण्ण से दूए जाव भणइ, पडिवाले माणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठति, तण्ण से कण्हे वासुदेवे कोट्टुचिय पुरिसे सहावेइ सहाविच्चा एव वयासी गच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया । सन्नाहिय भेरि ताडेह ते वि ताडेति, तण्ण से सण्णा हियाए भेरिण सह सोच्चा समुहविजयपामोस्सत्ता, दस दसारा जाव छप्पण्ण बल वय साहस्सीओ सन्नद्धयद्धजाव गहियाउहपरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव वगुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्णे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ)

आ रीते पोताना राजा कृष्ण वासुदेवनी आज्ञा भोगीने ते दूत हस्तिनापुर तरङ्ग स्वाना थये । त्या पडोथीने तेणे पाडु राजने भधा सभायादे कही सल्लागोल्या पाये पाडवे । दूतना सुभधी आ सभाचार सालणीने पोतानी अतुर गिणी सेना साथे त्याथी प्रयाण करीने लवण समुद्रना पूर्व किनारा उपर पडोथीने त्या कृष्ण वासुदेवनी प्रतीक्षा करता रोकाई गया । तारापडी कृष्ण वासुदेवे कोट्टुचिक पुरुषोने बोलाओ आने बोलावीने तेभे

एकतः एकस्मिन् स्थाने मिलति, मिलित्वा स्कन्धावारनिवेशः सैनिकानामावास
करोति कृत्वा पौषधशालामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य “ सुद्विय देव ” सुस्थित-
सुस्थितनामान देव लवणसमुद्राधिपति मनसि कुर्वन्=स्मरन् तिष्ठति, ततः खलु
कृष्णस्य वासुदेवस्याष्टमभक्ते परिणममाणे सुस्थितो देव जागतः, जागत्य वदति-
हे देवानुप्रियाः ! भणन्तु कथयन्तु चन्मया कर्तव्यमिति ततः खलु स कृष्णो
वासुदेव सुस्थितदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! द्रौपदी देवी यावत्
पद्मानभस्य भवने सहता, तत्=तस्मात् खलु त्व हे देवानुप्रिय ! मम पञ्चभिः
पाण्डवैः सार्धं ‘ अप्पडद्वस्स ’ आत्मपण्डस्य-आत्मा-जह पण्ठो यत्र तस्य समुद्रा-
यस्य-अस्माकं पण्णामित्यर्थः, पण्णा रवाना लवणसमुद्रे मार्गं वितर=देहि,
येनाहममरकङ्का राजधानीं द्रौपद्या देव्याः ‘ क्व ’ प्रत्यानयनकृतं गच्छामि ।

वहा पहुँचकर वे पाँच पाण्डवों के साथ एक स्थान पर सम्मिलित हुए ।
सम्मिलित होकर उन्होंने अपनी सेना को ठहरने का स्थान नियत
किया-स्थान नियतकर के फिर वे पौषधशाला में प्रविष्ट हो गये वहाँ
प्रविष्ट होकर उन्हो ने लवण समुद्र के अधिपति सुस्थित देव का स्मरण
किया-। इसके बाद जब कृष्णवासुदेव का अष्टमभक्त समाप्त हो रहा
था-तब वह सुस्थित देव उनके पास आया-और कहने लगा-हे देवा-
नुप्रिय ! कहिये-मेरे लायक क्या काम है ? (तण्ण से कण्हे वासुदेवे
सुद्विय एव वयासी एव खलु देवानुप्रिया । दोवई देवी, जात्र पउमना-
भस्स भवणसि साहरिया, तएण तुम देवानुप्रिया मम पवहि पडवेहिं
सद्धिं अप्पडद्वस्स छण्ह रहाण लवणसमुदे मग्गं वियरेहि, जण्ण अह
अमरककारायहाणी दोवईए क्वं गच्छामि, तएणं से सुद्धिए देवे कण्हं

इतो त्या पडोन्था त्या पडोन्थीने तेज्जो पाथे पाडोन्थी साथे जेक स्थाने
जेकत्र थया जेकत्र धधने तेमण्णे पोताना सैन्यना पडावतु स्थान नक्की कथुं
स्थान नक्की करीने तेज्जो पौषधशालामा प्रविष्ट थया त्या जधने तेज्जो जे लवण
समुद्रना अधिपति सुस्थित देवतु स्मरण कथुं त्यारणाह न्यारे कृष्णवासुदेवने।
अष्टम भक्त पूरे। थध रह्यो इतो, त्यारे ते सुस्थित देव तेमनी पाने आण्यो
अने कडेवा लाज्यो के डे देवानुप्रिय । ओलो, मारा लायक शु काम छे ?

(तण्ण से कण्हे वासुदेवे सुद्विय एव वयासी एव खलु देवानुप्रिया ।
दोवईदेवी, जात्र पउमनाभस्स भवणसि साहरिया, तएण तुम देवानुप्रिया मम
पवहि पडवेहिं सद्धिं अप्पडद्वस्स छण्ह रहाण लवणसमुदे मग्गं वियरेहि, जण्ण
अह अमरकका रायहाणीं दोवईए क्वं गच्छामि, तएण से सुद्धिए देवे कण्हं

रष्टमात्पदाम्ना छत्रेण धार्यमाणेन श्वेतारक्षामरंरुद्रपुष्पमानिः, हयगनरथपदाति
 सपरिवृतो महागटारुप्रकरण द्वारागत्या नगर्षा म यमपन निगच्छति,
 यज्ञैव पौरस्त्यरेला तत्रोपागति उपागत्य पञ्चमि. पाण्डुः सह 'एगयओ'
 घट्वायेति, तण्ण कण्हे वासुदेवे हत्थिगधधरण मकोरटमल्लदामेण
 छत्तेण० सेयवर० तयगय० महया भट्चउगरपङ्कक्रेण चारबईण णयरीण
 मज्झ मज्जेण णिगच्छइ, जेणेन पुरतिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता पचहिं पडवेति सद्धि एगयओ मिलइ, मिलित्ता खधावा
 रणिवेस करेइ, करित्ता पोसहसाल अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुद्धिय
 देव मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ, तण्ण कणहम्म वासुदेवस्स अट्टमभत्तसि
 परिणममाणसि सुद्धिओ आगओ भण देवाणुप्पिया ! ज मए कायव्व)
 वहा आकर उन सयने कृष्णवासुदेव को दोनो हाथ जोड़कर वड़े विनय
 के साथ नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा वधाई दी। इसके
 बाद वे कृष्णवासुदेव हाथी पर सवार हुए। सवार होते ही छत्र धारियों
 ने उन पर कोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र ताना, चोमर ढोरने
 वालों ने उनपर श्वेत चामर ढोरना प्रारम्भ करदिया। इस प्रकार हय,
 गज, रथ, एवं पैदलसेना से घिरे हुए वे कृष्णवासुदेव महाभटों के
 समूह के साथ २ द्वारावती नगरी के बीच से होकर निकले, निकलकर
 जहा वह लवणसमुद्र की पूर्व दिग्भागवर्तिनी बेला थी वहा पहुँचे।

(उवागच्छित्ता करयल जाण उद्धावेति, तण्ण कण्हे वासुदेवे हत्थि खध
 वरण सकोरटमल्लदामेण छत्तेण० सेयवर० हयगय महया भट्चउगरपङ्कक्रेण
 चारबईण णयरीण मज्झ मज्जेण णिगच्छइ जेणेन पुरतिमवेयाली तेणेव उवा
 गच्छइ, उवागच्छित्ता पचहिं पडवेति सद्धि एगयओ मिलइ, मिलित्ता खधावा
 णिवेस करेइ, करित्ता पोसहसाल अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, सुद्धिय देव मणसि
 करेमाणे २ चिट्ठइ, तण्ण कणहम्म वासुदेवस्स अट्टमभत्तसि परिणममाणसि सुद्धिओ
 आगओ भणदेवाणुप्पिया ! ज मए कायव्व)

त्या पडोयीने ते पधाओ जने हाथ जोडीने बहुत जिनअताथी नम
 स्कार करता जयविजय शब्दोथी तेमने वधाभणी आपी त्थारपछी ते कृष्ण
 वासुदेव हाथी उपर सवार थया सवार थता ज छत्रधारीओओ तेमनी उपर
 कोरट पुष्पोनी माणाथी शोलतु छत्र ताएथु तेमज आभर ढाणनाराओओ
 आभर ढाणवानी शङ्खात करी आ प्रभाओ घोडा, हाथी, रथ अने पायदण्डी
 परिवृत्त थयेला ते कृष्ण-वासुदेव महाभटोना समूहनी साथे साथे द्वारावती
 नगरीनी वञ्छे थधने पसार थया अने न्या ते लवण

मवादीत्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय । यायत् सहर, त्व खलु हे देवानुप्रिय ।
लवणसमुद्रे आत्मपठस्य पण्णा रयानां मार्गं ' वियराहि ' वितर=देहि, स्वयमेव
खल्वह द्रौपद्या देव्या ' क्रव ' प्रत्यानयनकृतं गच्छामि, ततः खलु स सुस्थितो

अथवा-आपनी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्म
नाभ राजा को लवण समुद्र में डुबा दे सकती हूँ (तण्ण कण्हे वासुदेवे
सुद्विण देव एव वयासी) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस
प्रकार कहा-(माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणु
प्पिया ! लवणसमुदे अप्पउट्टस्स उण्ह रहाण लवणसमुदे मग्ग विय-
राहि सयमेव ण अह दोवईए क्रव गच्छामि, तण्ण से सुद्विण देवे कण्ह
वासुदेव एव वयासी, एव होउ, पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउट्टस्स उण्ह
रहाणं लवणसमुदे मग्ग वियरइ तण्ण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी
सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पचहिं पडवेहिं मद्धिं अप्पउट्टे छहिं
रहेहिं लवणसमुद मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमर
कका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) हे
देवानुप्रिय ! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी
देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर,
सैनिक एव वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल
हे देवानुप्रिय ! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो । मैं

तमारी आज्ञा होय तो नगर, सैनिक अने वाहन सहित पद्मनाभ राजाने
लवणसमुद्रमा डुमाडी राखु तेभ छु (तण्ण कण्हे वासुदेवे सुद्विण देव एव
वयासी) त्वारे कृष्ण-वासुदेवे ते स्वस्तिक देवने आ प्रभाणु कहु ठे—

(माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणुप्पिया ! लवण-
समुदे अप्पउट्टस्स उण्ह रहाण लवणसमुदे मग्ग वियराहि सयमेव ण अह दोवईए
क्रव गच्छामि, तण्ण से सुद्विण देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी, एव होउ,
पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउट्टस्स उण्ह रहाण लवणसमुदे मग्ग वियरइ, तण्ण से
कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पचहिं पडवेहिं
सद्धिं अप्पउट्टे छहिं रहेहिं लवणसमुद मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव
अमरकका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ)

हे देवानुप्रिय ! तमे आ प्रभाणु करवानी तस्सी हो नहिं उट्टये हे
पद्मनाभना लवणमाथी द्रौपदी देवीनु छरखु करे नहिं तेभअ पद्मनाभ गन्तने
नगर, सैनिक अने वाहन सहित लवण समुद्रमा डेके पखु नहिं तमे तो
हे देवानुप्रिय ! इत्त अमारा छम्मे रथे भाटे लवण समुद्रमा मार्ग आपे।

તત્ત્વ સ્થિતો દેવઃ કૃષ્ણ વાસુદેવમેવમાદીત્—હે દેવાનુપ્રિય ! કિં સ્વ
યથૈવ પદ્મનાભસ્ય રાજઃ પૂર્વસગતિકેન દેવેન દ્રૌપદી યાત્ મહતા, તથૈવ દ્રૌપદી
દેવી ધાતકીપણ્ડાદ્ દ્રીપાદ્ ભારતાદ્ યાત્ હસ્તિનાપુર સદરામિ । ‘ઉદાહૃ’
ઉતાહો ! =અથવા. તથય, પદ્મનાભ ગજાન મપુરવલ્લપાદનં=નગરસંનિક્ષ્ણાન
સહિત લગ્નસમુદ્દે પશ્ચિવામિ ? તતઃ રાત્રુ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ સુસ્થિત દેવમ્ એવ
વાસુદેવ તત્ર વયાસી કિંહ દેવાણુપિયા ! જહા ચેત્ર પત્રમણામસ્ત રજો
પુન્વસગદ્ગણ દેવેણ દોવર્દ જાત્ર સદરિયા, તહા ચેત્ર દોવર્દદેવિ ધાયર્દસ
હાઓ દીવાઓ ભારતાઓ જાત્ર હતિ ણાપુર સાદરામિ, ઉદાહૃ પત્રમણામ
રાયમપુરવલ્લપાદન લગ્નસમુદ્દે પશ્ચિવામિ ?) તત્ર કૃષ્ણવાસુદેવ ને
હસ સુસ્થિત દેવ સે હસ પ્રકાર કહા—હે દેવાનુપ્રિય ! સુનો—દ્રૌપદી દેવી
યોવત્ પદ્મનાભ કે ભયન મેં હરણ કર રગી ગઈ હૈ હમલિયે હે દેવાનુ
પ્રિય ! તુમ આત્મપદ્મ મેરે પાચ પાડવો કે સાથ ઊર્ધો રથોં કો લગ્ન
સમુદ્ર મેં માર્ગ પ્રદાન કરો । અર્થાત્ પાચ પાડવોં કે ઓર હટે મેરે હસ
પ્રકાર હમારે ઊર્ધ રથોં કો જાને કે લિયે રાસ્તા દો—કિં જિસસે મેં અમ
રકુકા રાજધાની મેં દ્રૌપદીદેવી કો વાપિસ લે આને કે લિયે જા સકું ।
તથ સુસ્થિત દેવ ને હન કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા—હે દેવાનુ
પ્રિય ! જિસ પ્રકાર પદ્મનાભ રાજા કે પૂર્વ સગતિક દેવને દ્રૌપદીદેવી કા
યાવત્ હરણ ક્રિયા હૈ, હસી તરહ મેં ઓ દ્રૌપદી દેવી કો ધાતકી સહ
દ્રીપ કે ભરત ક્ષેત્ર સે યાત્ હસ્તિનાપુર મેં હરણકર લા સકતા હૈ—

વાસુદેવ એવ વયાસી કિંહ દેવાણુપિયા ! જહા ચેત્ર પત્રમણામસ્ત રજો પુન્વ
સગદ્ગણ દેવેણ દોવર્દ જાત્ર સદરિયા, તહા ચેત્ર દોવર્દ દેવિ ધાયર્દસહાઓ
દીવાઓ ભારતાઓ જાત્ર હતિ ણાપુર સાદરામિ, ઉદાહૃ પત્રમણામ રાય સપુરવલ
વાહન લગ્નમસુદ્દે પશ્ચિવામિ ?)

ત્યારે કૃષ્ણ—વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુ
પ્રિય ! સાલજો, દ્રૌપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના લવનમા હરણ કરાધને રાખ
વામા આવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ‘આત્મપદ્મ’ મારા તેમજ
પાંચે પાડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમા થઈને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો
એટલે કે પાંચે પાડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા
માટે રસ્તો આપો જેથી હું દ્રૌપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરક કા
રાજધાનીમા જઈ શકું ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ—વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું
કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસગતિક દેવે જેમ દ્રૌપદી દેવીનું
યાવત્ હરણ કર્યું છે, તેમજ હું પણ દ્રૌપદી દેવીને ધાતકી ખડકીપતા ભરત
ક્ષેત્રમાથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમા હરણ કરને લાવી શકું અને જી

मवादीत्-मा खलु त्व हे देवानुप्रिय । यावत् सहर, त्व खलु हे देवानुप्रिय ।
लवणसमुद्रे आत्मपण्ठस्य पण्णा रवानां मार्गं ' पियराहि ' वितर=देहि, स्वयमेव
खल्वह द्रौपद्या देव्या ' क्रव ' प्रत्यानयनकृतं गच्छामि, ततः खलु स सुस्थितो

अथवा-आपकी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्म
नाभ राजा को लवण समुद्र में डुबा दे सकता हूँ (तण्ण कण्हे वासुदेवे
सुद्विष देव एव वयासी) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस
प्रकार कहा-(माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणु
प्पिया ! लवणसमुद्रे अप्पउट्टस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्ग विष
राहि सयमेव ण अह दोवईए क्रव गच्छामि, तण्ण से सुद्विष देवे कण्ह
वासुदेव एव वयासी, एव होउ, पचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पउट्टस्स उण्ह
रहाणं लवणसमुद्रे मग्ग विषरइ तण्ण से कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी
सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जिता पचहिं पडवेहिं मद्धि अप्पउट्टे छहिं
रहेहिं लवणसमुद्र मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमर
कका रायहाणी, जेणेव अमरकराए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) हे
देवानुप्रिय ! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी
देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर,
सैनिक एवं वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल
हे देवानुप्रिय ! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो । मैं

तमारी आना होय तो नगर, सैनिक अने वाहन सहित पद्मनाभ राजाने
लवणसमुद्रमा डुमाडी अकु तेम छु (तण्ण कण्हे वासुदेवे सुद्विष देव एव
वयासी) त्वारे कृष्ण-वासुदेवे ते स्वस्तिक देवने आ प्रभाषे कहु ठे—

(माण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम ण देवाणुप्पिया ! लवण-
समुद्रे अप्पउट्टस्स उण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्ग विषराहि सयमेव ण अह दोवईए
क्रव गच्छामि, तण्ण से सुद्विष देवे कण्ह वासुदेव एव वयामी, एव होउ,
पचहिं पडवेहिं सद्धि अप्पउट्टस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्रे मग्ग विषरइ, तण्ण से
कण्हे वासुदेवे चाउरगिणी सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जिता पचहिं पडवेहिं
सद्धि अप्पउट्टे छहिं रहेहिं लवणसमुद्र मज्झ मज्झेण वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव
अमरकका रायहाणी, जेणेव अमरकराए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ)

हे देवानुप्रिय ! तमे आ प्रभाषे करवानी तस्सी तो नहिं होत्ये ठे
पद्मनाभना भवनमाथी द्रौपदी देवीनु डरवु करे। नहिं तेमअ पद्मनाभ गन्तने
नगर, सैनिक अने वाहन सहित लवण समुद्रमा डेके। पणु नहिं तमे तो
हे देवानुप्रिय ! रा छमे रथे। माटे लवण समुद्रमा मार्ग आपे।

તત્ત્વ સ્વસ્થિતો દેવઃ કૃષ્ણ વાસુદેવમેયમયાદીન્—હ દેવાનુપ્રિય ! કિં સદ્ય
યથૈવ પદ્મનાભસ્ય રાજઃ પૂર્વમગતિકેન ત્યેન દ્રૌપદી યાવત્ મંદુતા, તથૈવ દ્રૌપદી
દેવી ધાતકીપંથાદ્ દ્વીપાદ્ ભારતાઽ યાવત્ હસ્તિનાપુર સંહરામિ । ‘ઉદાહુ’
ઉતાહો ! =અથરા. કયમ, પદ્મનાભ રાજાને મપુરસ્થાપનાન=નગરમંત્રિકાવાન
સહિત ત્વણસમુદ્દે પશ્ચિપામિ ? તત્ત્વ રાત્રુ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ સ્વસ્થિત દેવમ્ એવ
વાસુદેવ એવ વયાસી કિંણ દેવાણુપ્પિયા ! જહા ચેવ પડમનાભસ્સ રણો
પુન્વમગદ્ગણ દેવેણ દોર્ઘઃ જાત્ત મહરિયા, તહા ચેવ દોર્ઘઃ દેર્ધિ ધાયર્ધસ
ઢાઓ દીવાઓ ભારતાઓ જાત્ત હસ્તિનાપુર સાહરામિ, ઉદાહુ પડમનાભ
રાયસપુરવત્તયાળ્ણ લવણસમુદ્દે પશ્ચિપામિ ?) તપ કૃષ્ણવાસુદેવ ને
હસ સ્વસ્થિત દેવ સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિય ! સુનો-દ્રૌપદી દેવી
યોવત્ પદ્મનાભ કે ભયન મેં હરણ કર રંગી ગઈ હૈ હમલિયે હૈ દેવાનુ
પ્રિય ! તુમ આત્મપથ મેરે પાચ પાડવો કે સાથ રહો રથોં કો લવણ
સમુદ્ર મેં માર્ગ પ્રદાન કરો । અર્થાત્ પાંચ પાડવોં કે ઓર હટે મેરે હસ
પ્રકાર હમારે ઝહ રથોં કો જાને કે લિયે રાસ્તા દો-કિ જિસસે મેં અમ
રકકા રાજધાની મેં દ્રૌપદીદેવી કો વાપિસ હે આને કે લિયે જા સકૂ ।
તપ સ્વસ્થિત દેવ ને ઝન કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુ
પ્રિય ! જિસ પ્રકાર પદ્મનાભ રાજા કે પૂર્વ સગતિક દેવને દ્રૌપદીદેવી કો
યાવત્ હરણ કિયા હૈ, ઝસી તરહ મેં ઓ દ્રૌપદી દેવી કો ધાતકી લહ
દ્વીપ કે ભરત ક્ષેત્ર સે યાવત્ હસ્તિનાપુર મેં હરણકર લા સકતા હૈ-

વાસુદેવ એવ વયાસી કિંણ દેવાણુપ્પિયા ! જહા ચેવ પડમનાભસ્સ રણો પુન્વ
સગદ્ગણ દેવેણ દોર્ઘઃ જાત્ત મહરિયા, તહા ચેવ દોર્ઘઃ દેર્ધિ ધાયર્ધસઢાઓ
દીવાઓ ભારતાઓ જાત્ત હસ્તિનાપુર સાહરામિ, ઉદાહુ પડમનાભ રાય સપુરવત્
વાહણ લવણસમુદ્દે પશ્ચિપામિ ?)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુ
પ્રિય ! સાલળો, દ્રૌપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના લવનમા હરણ કરાધને રાખ
વામા આવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ‘આત્મપથ’ મારા તેમજ
પાંચે પાડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમા થઇને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો
એટલે કે પાંચે પાડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા
માટે રસ્તો આપો જેથી હું દ્રૌપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરકકા
રાજધાનીમા જઈ શકું ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું
કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસગતિક દેવે જેમ દ્રૌપદી દેવીનું
યાવત્ હરણ કર્યું છે, તેમજ હું પણ દ્રૌપદી દેવીને ધાતકી ખડકીપના ભરત
ક્ષેત્રમાથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમા હરણ કરીને લાવી શકું

પત્રિચ્ય પદ્મનાભસ્ય રાજ્ઞો વામેન પાદેન ' પાયપીઠ ' પાટપીઠમ્ સિંહાસનસલગ્ન-
સોપાનમ્ આક્રમ્ય કુન્તાગ્રેણ લેહ પત્રિકા ' પળામેહિ ' અર્પય=ટેહિ અર્પયિત્વા
' તિવલિય ' ત્રિવલિકાં રેલાત્રયયુક્તા ' મિડઈ ' મૂકુટિ- ' ગિઢાલે ' લલાટે
' સાહદ્રુ ' સંહત્ય-ઉઘ્રીય ' આમુરુતે ' આશુરુપ્તઃ=શીઘ્ર ક્રોધાવિપ્તઃ ' રુદ્ધ '
રુપ્તઃ ' કુદ્દે ' ક્રુદ્ધઃ ' કુપિણ ' કુપિતઃ ચઢિકિણ ' ચાણ્ડિકિયતઃ-રોપયુક્તઃ,
એવમવાદીત્-હ મો ! પદ્મનાભ ! ' આત્થિયપત્થિયા ' અપ્રાર્થિતપ્રાર્થિત !-મર-
ણવાઢઢક ! ' દુરતપતલલક્ષણ ! ' દુરન્તપ્રાન્તલક્ષણ ! ' પૂર્વ વ્યાખ્યાતમેતત્ ,

પાયપીઠ અક્ષમિત્તા કુન્તાગ્રેણ લેહ પળામેહિ, તિવલિયં મિડઈ ગિઢાલે
સાહદ્રુ આસુરુતે રુદ્ધે કુદ્દે કુપિણ ચઢિકિણ એવ વયાસી હ મો પડમણાહા
અપત્થિયપત્થિયા ! દુરતપતલલક્ષણા ! હીણપુણચાઢસા ! સિરિહિરિ
ધી પરિવર્જિયા ! અજ્ઞ ણ મવસિ કિન્ન તુમ ણ યાણાસિ, કળ્હસ્સ
વાસુદેવસ્સ અહવણ જુદ્ધસજ્જે ગિગચ્ઙાહિ) ૧૪ મો રોકકર વહાં
સ્થાપિત કર-દારુક સારથિ કો બુલાયા બુલાકર કે ડસસે એસા કહા-
હે દેવાનુપ્રિય તુમ જાઓ-અમરકકા રાજધાની મેં જાઓ વહાં જાકર
પદ્મનાભ રાજાકે પાદપીઠકો વામ પાદસે આક્રમિત કર, કુન્ત (ખાલા)કે
અગ્રભાગ સે ડસે પત્રિકા દો દેકર કે અપની મૂકુટી કો ખાલપર ચઢા-
કર, ઇકદમ ગુસ્સે મેં આકર, રુદ્ધ, કુપિત એવ ક્રુદ્ધ હોકર ક્રોધ કે
આવેશ સે તમ તમાતે દુષ્ણ તુમ ડસસે એસા કરો-અરે ઓ પદ્મનાભ !
અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણવાઢઢક-! દુરતપ્રાન્ત લક્ષણ ! મોલુમ હોતા હૈ

પાણ પાયપીઠ અક્ષમિત્તા કુન્તાગ્રેણ લેહ પળામેહિ, તિવલિયં મિડઈ ગિઢાલે
સાહદ્રુ આસુરુતે રુદ્ધે કુદ્દે કુપિણ ચઢિકિણ એવ વયાસી હ મો પડમણાહા !
અપત્થિયપત્થિયા ! દુરતપતલલક્ષણા ! હીણપુણચાઢસા ! સિરિ હિરિધી
પરિવર્જિયા ! અજ્ઞ ણ મવસિ કિન્ન તુમ ણ યાણાસિ, કળ્હસ્સ વાસુદેવસ્સ
અહવણ જુદ્ધસજ્જે ગિગચ્ઙાહિ)

૨૪ને જાણો રાખીને, ત્યા જ ૨૪ને મૂકીને ઢાઢક સારથિને બોલાવ્યો
અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમરકકા
રાજધાનીમા જાઓ અને ત્યા જઈને પદ્મનાભ રાજાના પાદપીઠને ડામા પગથી
આક્રમિત કરીને કુન્તા અથ લાગથા તેને પત્રિકા આપો પત્રિકા આપીને
તમે પોતાની ભગ્મદેવે ચઢાવીને, એકદમ લાલચોળ થઈને રુદ્ધ, કુપિત અને
ક્રુદ્ધ થઈને ક્રોધના આવેશમા આવીને તેને આ પ્રમાણે ઢહો કે અરે ઓ
પદ્મનાભ ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણ વાઢક ! દુરત પ્રાન્ત લક્ષણ ! (નીચ

દેવ કૃષ્ણ વાસુદેવમેવમસાદીત્-પર માતૃ ક્ષિતિ, તનોડર્મો પશ્ચમિઃ પાષ્ટકઃ સાર્વમ્
આત્મપષ્ટસ્ય પળ્લા રથાનાં યગમમુદે માર્ગે વિરતિ તત ચતુ મ કૃષ્ણો વાસુ
દેવશ્ચતુરક્ષિણીં સેના મતિરિમર્જયતિ, પ્રતિરિસર્જ્ય પશ્ચમિઃ પાષ્ટકઃ માર્ગમાત્મ
પષ્ટ પદ્મીરર્થેણમમુદ મધ્યધ્વેન ' શિશયડ ' ચતિવ-તિ-ગન્ઠતિ, વ્યતિ
વ્રજ્ય યગૈરામરક્ષા રાજરાની, ગર્ગરામરક્ષાયા અગ્રોગામ ગર્ગરોપાગન્ઠતિ,
ઉપાગત્ય રચ સ્થાપયતિ, સ્થાપયિન્તા ગ્રારુક સારર્થિ શ્ચ્ચયતિ, ગન્ઠયિન્તા એવ
મવાદીત્-ગચ્છ સ્વલ્પ ત્વ હં દેવાનુમિય । અમરકકારાજરાનોમનુમમિદ્ર, અનુ

સ્વયં હી દ્રૌપદી દેવી કો વજા સે વાપિસ લે આજ્ઞા । અથવા મૈ સ્વયં
હી દ્રૌપદી દેવી કો લેને કે લિયેં જાજ્ઞા તય ઉસ સુસ્થિત દેવ ને કૃષ્ણ
વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર ક્રા-અચ્છા જેમા હી રો-હસ પ્રકાર કહ
કર ઉસને આત્મ પષ્ટ કે છર્લો રથો કો લવણસમુદ્ર મેં માર્ગે વિતરિત
કર દિયા । તય કૃષ્ણવાસુદેવ ને અપની ચતુરગિણી સેના કો વજા સે
વાપિસ કરદિયા વાપિસ કર ફિર ઘે પાચ પાંદરોં કે સાથ ઝહો રથોં
કો-૧ એક અપને રથકો ઓર પાંચ પાંદરોંકે રથોંકો-લેકર લવણસમુદ્રકે
મીતરસે હોકર ચલને લગે । ચલતે ૨ વે જહાં અમરકકારાજધાની થો-
ઓર ઉસમેં મી જહાં વહ અગ્રોધાન થા વહાં પહુંચે । (ઉવાગચ્છિત્તારહ
ઠવેહ) વહા પહુંચ કર ઉન્હોને અપને રથ કો રોક દિયા-(ઠવિત્તા દારુય
સારર્થિ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી ગચ્છહ ન તુમ દેવાણુપિયા !
અમરકકારાયદાણી અણુપવિસાહિ ૨, પડમણામસ્ત રણ્ણો વામેણ પાણ

ત્યાં જધને હુ જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને ત્યાથી પાછી લઈ આવીશ એટલે કે
હુ જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે જધશ ત્યારે તે સુસ્થિત દેવે કૃષ્ણ-
વાસુદેવને કહ્યું કે સાહે, આમ જ કરો આ પ્રમાણે કહીને તેણે આત્મપદ્મના
છએ રથોને લવણ સમુદ્રમાં રસના આપ્યો ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે પોતાની
ચતુરગિણી સેનાને ત્યાથી પાછી વળાવી દીધી અને પાછી વળાવીને તેઓ પાંચ
પાંડવોની સાથે છએ રથોને-એક પોતાના રથને અને પાંચ પાંડવોના રથોને-
લઈને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને પસાર થવા લાગ્યા આમ પસાર થતા તેઓ
જ્યાં અમરકકારાજધાની અને તેમાં પણ જ્યાં તે અગ્રોધાન હતું ત્યાં પહોંચ્યા
(સ્વાગચ્છિત્તારહ ઠવેહ) ત્યાં પહોંચીને તેમણે પોતાના રથને ઊભો રાખ્યો.

(ઠવિત્તા દારુય સારર્થિ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી, ગચ્છહ ન તુમ
દેવાણુપિયા ! અમરકકારાજધાણી અણુપવિસાહિ ૨ વામેણ

प्रविश्य पद्मनाभस्य राज्ञो वामेन पादेन ' पायपीठ ' पादपीठम् सिंहासनसलग्न-
सोपानम् आक्रम्य कुन्ताप्रेण लेख प्रविका ' पणामेहि ' अर्पय=देहि अर्पयित्वा
' तिवलिय ' त्रिवलिका रेखात्रययुक्ता ' भिडडि ' भूकुटि- ' णिडाळे ' ललाटे
' साहदु ' सहस्य-उन्नीय ' आसुरुत्ते ' आशुरुप्तः=शीघ्र क्रोधाविष्टः ' रुद्ध
रुष्टः ' कुद्धे ' क्रुद्धः ' कुविण ' कुपितः चडिक्किण ' चाण्डिकियतः-रोषयुक्तः,
एवमवादीत्-ह भो ! पद्मनाभ ! ' आत्थियपत्थिया ' अप्रार्थितप्रार्थित !-मर-
णवाठउक ! ' दुरतपतलवखण ! ' दुरन्तप्रान्तलक्षण ! ' पूर्व व्याख्यातमेतत् ,

पायपीठ अक्रमित्ता कुन्ताग्रेण लेह पणामेहि, तिवलिय भिडडि णिडाळे
साहदु आसुरुत्ते रुद्धे कुद्धे कुविण चडिक्किण एव वयासी ह भो पउमणाहा
अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलवखणा ! हीणपुण्णचाउदसा ! सिरिहिरि
धी परिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण याणासि, कण्हस्स
वासुदेवस्स अहवण जुद्धसज्जे णिगच्छाहि) रथ को रोककर वहां
स्थापित कर-दारुक सारथि को बुलाया बुलाकर के उससे ऐसा कहा-
हे देवानुप्रिय तुम जाओ-अमरकका राजधानी में जाओ वहां जाकर
पद्मनाभ राजाके पादपीठको वाम पादसे आक्रमित कर, कुन्त (भाला)के
अग्रभाग से उसे पत्रिका दो देकर के अपनी भूकुटी को भालपर चढ़ा
कर, इकदम गुस्से में आकर, रुष्ट, कुपित एव क्रुद्ध होकर क्रोध के
आवेश से तम तमाते हुए तुम उससे ऐसा कहो-अरे ओ पद्मनाभ !
अप्रार्थित प्रार्थित ! मरणवाठउक-! दुरतप्रान्त लक्षण ! मालुम होता है

पाएण पायपीठ अक्रमित्ता कुन्ताग्रेण लेह पणामेहि, तिवलिय भिडडि णिडाळे
साहदु आसुरुत्ते रुद्धे कुद्धे कुविण चडिक्किण एव वयासी ह भो पउमणाहा !
अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलवखणा ! हीणपुण्णचाउदसा ! सिरि हिरिधी
परिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि किन्न तुमं ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स
अहवण जुद्धसज्जे णिगच्छाहि)

रथने जेवो राणीने, त्या ज रथने भूमीने दाइत सारथिने जेलाव्यो
अने जेलावीने तेने आ प्रभावे कछु के डे देवानुप्रिय ! तमे अमरकका
राजधानीमा जेवो अने त्या जेवने पद्मनाभ राजाना पादपीठने दाया पगथी
आक्रमित करीने उतना अथ लागथो तेने पत्रिका आपो पत्रिका आपीने
तमे पोतानी लम्भरो अदावीने, एकदम लावथोण यधने रुष्ट, कुपित अने
क्रुद्ध यधने क्रोधना आवेशमा आवीने तेने आ प्रभावे ठोडे के अरे ओ
पद्मनाभ ! अप्रार्थित प्रार्थित ! मरण वाठउक ! दुरत प्रात लक्षण ! (नीय

દેવ કૃષ્ણવાસુદેવમેયમગાઝીર-પર મારુ ઈતિ, તનોડમો પશ્ચમિ પાણ્ડોઃ સાર્ધમ્
આત્મપથસ્ય પળ્ળા રથાના ઝગમમુદ્રે માર્ગે વિરરિતિ તન મ્વદ્ મ દુષ્ણો વાસુ
દેવચતુરઘ્નિર્ણી સેના મતિરિમર્જયતિ, પ્રતિવિસર્જ્ય પશ્ચમિઃ પાણ્ડેયઃ સાર્ધાત્મ
પથ્થ પદ્મીરર્થે રણમમુદ્ર મધ્યધ્યેન 'વીરમયઃ' -વતિઘ-નિ-મન્વતિ, વ્યતિ
વ્રજ્ય યજ્ઞીશમરચ્છા રાજધાની, યજ્ઞીશમરચ્છાયા અગ્રોધાન નર્ગરોપાગ-છતિ,
ઉપાગત્ય રથ સ્થાપયતિ, સ્થાપયિત્વા દારુક સારર્થિ મન્વયતિ, મન્વયિત્વા એવ
મવાદીત્—ગચ્છ સ્વલ્લ ત્વ હે દેવાનુપિય ! અમરકકારાજયાનીમનુપવિશ્વ, વનુ

સ્વયં હી દ્રૌપદી દેવી કો વહા સે વાપિસ લે આઝંગા । અવત્રા મૈં સ્વય
હી દ્રૌપદી દેવી કો લેને કે લિયે જાઝંગા તપ્ત ઉસ મુસ્લિમ દેવ ને કૃષ્ણ
વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કાલા-અચ્છા જેમા હી રો-હસ પ્રકાર કહ
કર ઉસને આત્મ પથ કે છર્હો રથો કો લવણસમુદ્ર મૈં માર્ગે વિનરિત
કર દિયા । તપ્ત કૃષ્ણવાસુદેવ ને અપની ચતુરઘ્નિની સેના કો વહા સે
વાપિસ કરદિયા વાપિસ કર ફિર વે પાચ પાંડવોં કે સાથ છર્હો રથોં
કો-૧ એક અપને રથકો ઓર પાંચ પાંડવોંકે રથોંકો-લેકર લવણસમુદ્રકે
મીતરસે હોકર ચલને લગે । ચલતે ૨ વે જહા અમરકકારાજધાની થો-
ઓર ઉસમેં મી જહા વહ અગ્રોધાન ધા વહા પહુંચે । (ઉવાગ્ગચ્છિત્તા રહ
ઠવેહ) વહા પહુંચ કર ઉન્હોને અપને રથ કો રોક દિયા-(ઠવિત્તા દારુપ
સારર્હિ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી મન્વહ ન તુમ દેવાનુપિયા !
અમરકકારાયજ્ઞાણી અણુપવિસાહિર, પડમણાભસ્ત રણો વામેણ પાળ્ળ

ત્યાં જઈને હું જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને ત્યાથી પાછી લઈ આવીશ એટલે કે
હું જાતે જ દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે જઈશ ત્યારે તે સુસ્થિત હોવે કૃષ્ણ-
વાસુદેવને કહ્યું કે સાહે, આમ જ કરો આ પ્રમાણે કહીને તેણે આત્મપથના
છએ રથોને લવણ સમુદ્રમા રસનો આપ્યો ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે પોતાની
ચતુરઘ્નિની સેનાને ત્યાથી પાછી વળાવી દીધી અને પાછી વળાવીને તેઓ પાંચ
પાંડવોની સાથે છએ રથોને-એક પોતાના રથને અને પાંચ પાંડવોના રથોને-
લઈને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને પસાર થવા લાગ્યા આમ પસાર થતા તેઓ
જ્યાં અમરકકારાજધાની અને તેમા પહોંચ્યા તે અગ્રોધાન હતું ત્યાં પહોંચ્યા
(ઉવાગ્ગચ્છિત્તા રહ ઠવેહ) ત્યાં પહોંચીને તેમણે પોતાના રથને જીલો રાખ્યો

(ઠવિત્તા દારુપ સારર્હિ સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી, મન્વહ ન તુમ
દેવાનુપિયા ! અમરકકારાયજ્ઞાણી અણુપવિસાહિર વામેણ પાળ્ળ

તત્ સ્વલ્પ સ્વારુઢ સારથિઃ કૃષ્ણેન વાસુદેવેનૈવમુક્તઃ સન્ હૃષ્ટતુષ્ટો યાત્ પ્રતિશ્રુતોતિ ' તયાઽસ્તુ ' ઇતિ કૃત્વાઽઽઞ્ઞાં સ્વીકરોતિ પ્રતિશ્રુત્ય=અમર-
કઢ્કારાજધાનીમનુપ્રવિશતિ, અનુપ્રવિશ્ય યત્રૈવ પદ્મનાભસ્તૈવોપાગન્ઢતિ, ઉપાગત્ય
કરતલપરિગૃહીતદશનમ્ શિરઆપતં મસ્તકેઽઞ્જલિં કૃત્વા યાત્ વર્ધન્તિ-જયેન
વિજયેન ચાભિનન્દયતિ । વર્ધયિત્ત્વા-અમિનઢ્ય એમવાદીત્-એવા સ્વલ્પ હે
સ્વામિન્ ! મમ વિનયપ્રતિપત્તિઃ ઇયમન્યા મમ સ્વામિનો વિનયપ્રતિપત્તિઃ, " સમુ-

સમાળે હૃદ્વૃદ્ધે જાત્ પઢિસુળેઢ્, પઢિસુળિત્તા, અમરકકા રાયઢ્ઢાણિ અણુ
પવિસઢ્, અણુપવિસિત્તા જેળેવ પડમનાહે તેળેવ ઉવાગચ્છઢ્, ઉવાગ-
ચ્છિત્તા, કરચલ જાત્ વઢ્ઢાવેત્તા એવ વયાસી-એસળ સામી મમ વિળ
પપઢિવિત્તી, ઇમા અન્ના મમ સામિસ્સ સમુઢ્ઢાળત્તિ ત્તિ કઢ્ઢુ અસુરુત્તે
નામ પાણ પાયપીઢ્ અણુકમઢ્) પાચ પાઢ્ઢવોં કે સાઢ્ આત્મ પઢ્ ઠોકર
દ્રૌપદી દેવી કો લેને કે લિયે અમી અમી આયે હુએ હૈ । ઇસ પ્રકાર
કૃષ્ણવાસુદેવ કે ઢ્ઢારા કહે ગયે ડસ ઢોરુક સારથિ ને હૃષ્ટ તુષ્ટ ઠોકર
કૃષ્ણવાસુદેવ કી આઞ્ઞા સ્વીકાર કરલી । સ્વીકાર કર કે ફિર વહ
અમરકકા રાજધાની મેં પ્રવેશ કિયા વહા પ્રવેશ કર વહ વહા પહુંચા
જહા પદ્મનાભ રાજા થે । ડનકે સમીપ જાકર ડસ ને પહિલે ડન્હે ઢોનોં
ઠાયોં કી અજલિ વના કર ઓર ડસે મસ્તક પર રલ્લકર નમસ્કાર
કિયા-જય વિજય શાઢ્ઢોં સે ડન્હે વૈઢ્ઢાયા-ગઢ્ મેં ડસને ઇસ પ્રકાર
કહના પ્રારમ્ભ કિયા-હે સ્વામિન્ ! યહ તો મેરી વિનય પ્રતિપત્તિ હૈ-હૂત

સારઢ્ઢી ણ્ઢેળ વાસુદેવેળ એવ યુત્તે સમાળે હૃદ્વૃદ્ધે જાત્ પઢિસુળેઢ્ પઢિસુળિત્તા,
અમરકકા રાયઢ્ઢાણિ અણુપવિસઢ્, અણુપવિસિત્તા જેળેવ પડમનાહે તેળેવ ઉવાગ-
ચ્છઢ્, ઉવાગચ્છિત્તા, કરચલ જાત્ વઢ્ઢાવેત્તા એવ વયાસી-એમળ સામી મમ વિળય-
પપઢિવિત્તી, ઇમા અન્ના મમ સામિસ્સ સમુઢ્ઢાળત્તિ ત્તિ કઢ્ઢુ આસુરુત્તે વામપાણ
પાયપીઢ્ અણુકમઢ્)

પાથે પાડવોની સાથે આત્મપઢ્ યઢ્ને દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે આત્મારે
આવી ગયા છે આ પ્રમાણે કૃષ્ણ-વાસુદેવ પડે કહેવામા આવેલા વચ્ચેના
સાલળીને હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈને તે દારુક સારથીએ તેમની આઞ્ઞા સ્વીકારી લીધી
સ્વીકારીને તે અમરકકા રાજધાનીમા પ્રવિષ્ટ થયો પ્રવિષ્ટ યઢ્ને તે બ્યા પદ્મ
નાભ રાજા હતા તેમની પાસે જઢ્ને ઓ પહેલા તેણે બને હાથોની અજલિ
બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર ડયો અને જય વિજય શબ્દોથી
રાજાને વઢ્ઢામણી આપી ત્યારપછી તેણે આ પ્રમાણે કહેવાની રાઢ્ઢાત કરી
કે હે સ્વામી ! આ તો મારી વિનય પ્રતિપત્તિ છે ફૂતની ક્ષરજ બળવતા મે

‘દીનપુણ્યાદૃશતા !’ દીનપુણ્યચાતુર્દશિકા: — અન્નપુણ્યચાતુર્દશિકાજન્મા, ચતુર્દશીનાતો દિ ભાગ્યવાન મરતિ । તથા-‘મિત્રો મિત્રી ધી પરિવર્તિતયા !’ શ્રી ઈ ધી પરિવર્તિત ! ભૂમી રજ્જા યુદ્ધિ રહિત !, અપ ન મરમિ, કિં સ્વલ્પ ત્વ ન જાનાસિ, કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવ્ય મિત્રીં દ્રૌપદીં મૈત્રીમિદં ‘દત્ત આણમાણે’ હ્યમાનયત્, ‘ત’ તન્-તસ્માન્ ‘અમપિ’ પતામપિ=જ્ઞાતીતામપિ આદ્ પૂર્વ કાદ્ ઇન્ગતો’ इत्यस्मात्કृत प्रत्ययः, ‘અપ’ અપરા મ્વલ્ ‘જુદ્ધ સન્જે’ યુદ્ધ સન્જન:-યુદ્ધાય સન્જન.=સન્નદઃ સન્ ‘ગિગ્ગન્ગાદિ’ નિર્ગન્ગ-વદિર્નિ.મર એ સ્વલ્પ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ પદ્મમિત્રિઃ પાણ્ડવૈઃ મદ ‘અપ્પઝદ્દે’ આત્મવપ્પઝ=આત્મા વપ્પો યત્ સ સમૂદ્દે, દ્રૌપદી દેવ્યા. ‘હપ’ પ્રત્યાનયન કરું હ્યમાગત ।

તૂ અલબ્ધ પુણ્ય ચાતુર્દશિકા જન્મ ચાલા છે-તૂ-ચતુર્દશી મેં ઉત્પન્ન હુઆ નહીં હૈ-અર્થોં કિ ચતુર્દશી કે દિન ઉત્પન્ન હુઆ વ્યક્તિ ભાગ્યશાલી હોતા હૈ કિન્તુ તૂ એસા નહીં હૈ અર્થાત્ અમાગા હૈ તૂ શ્રી ઈ, યુદ્ધિ સે રહિત હૈ । યાદ રસ-યા તો આજ તૂ નહીં હૈ યા મેં નહીં હૈ તુજે યહ સ્વાલ નહીં હૈ-કિ યદ્ દ્રૌપદી દેવી કૃષ્ણ વાસુદેવ કી વરિન હૈ જિસે તૂને યહા દરણ કરવા કર મગવાઈ હૈ । અતઃ યદિ અપની કુશલ યાહતા હૈ, તો તૂ હસ દરણ કરવા કર અપને યહા મગવાઈ ગઈ દ્રૌપદી દેવી કો કૃષ્ણ વાસુદેવ કે પાસ જાકર પીઝે વાપિસ પહુંચા દે । નહીં તો યુદ્ધ કે લિયે સજ્જિત હોકર ઘર સે વાહિર નિકલ આ । (એસણ કહે વાસુદેવે) યે કૃષ્ણ વાસુદેવ (પચ્ચિં પડવેર્હિ અપ્પઝદ્દે દોવર્હ દેવીં કૂવ દ્વવમાગણ, તણ સે દારુણ સારહી કહે ણ વાસુદેવે ણ એવ બુટે

વિચારે તેમજ નીચ લક્ષણો યુક્ત) અમને એમ લાગે છે કે તું અલબ્ધ પુણ્ય ચાતુર્દશિકા જન્મવાળો છે, એટલે કે તું ચૌદશને દિવસે જન્મ્યો નથી કેમકે ચૌદશને દિવસે ઉત્પન્ન થનારી વ્યક્તિ ભાગ્યશાળી હોય છે તું શ્રી, સ્ત્રી અને યુદ્ધિ વગરનો છે બરોબર સાબળી લે કે આજે કા તો તું નહિ કે કા હું નહિ તને એટલી પણ ખબર નથી કે આ દ્રૌપદી દેવી કૃષ્ણ-વાસુદેવની બહેન છે-કે જેને તે હરણ કરાવીને અહીં મગાવી છે હવે જો તું પોતાનું ભલું ઇચ્છતો હોય તો તું આ હરણ કરાવીને પોતાને ત્યાં રાકી રાખેલી દ્રૌપદી દેવીને કૃષ્ણ-વાસુદેવની પાસે જઈને પાછી સોંપી દે નહિતર યુદ્ધના માટે તૈયાર થઈને બહાર મેદાનમાં આવી જા (એસ ણ કહે વાસુદેવે) આ કૃષ્ણવાસુદેવ

(પચ્ચિં પડવેર્હિ અપ્પઝદ્દે દોવર્હ દેવીં કૂવ દ્વવ

દારુણ

दारुक सारथिमेवमवादीत्—

केवल भोः ! ' रायसत्येसु ' राजशास्त्रेषु-राजनीतिषु दूतः ' अवज्ज्ञे ' अवध्यः= न हन्तव्यः, इत्युक्तमस्ति तस्मात् त्वा मुञ्चामि इति कृत्वा=इत्युक्त्वा त इतम् असत्कार्यं, असम्मान्य अपहारेण ' णिच्छुभावेइ ' निक्षोभयति-नि'कासयति, तत् खलु म दारुकः सारथिः पद्मनाभेनासत्कार्यं यावत्-' णिच्छे ' निक्षोभितः- निःसारितः समाणे ' सन्, यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरावर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा कृष्णं यावद् एवमवादीत्—

जुद्धसज्जो णिगच्छामि, त्ति कट्टु दारुय सारय एव वयासी-केवल भो रायसत्येसु दूये अवज्ज्ञे त्ति कट्टु असत्कारिण्य असम्मानिण्य अवहारेण णिच्छुभावेइ) तय वह पद्मनाभ जय दारुक सारथि ने इस प्रकार कहा तो इकदम क्रोधित होकर त्रिवलि युक्त भ्रुकृदि को माथे पर चढ़ा कर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिय ! मैं द्रौपदी को कृष्णवासुदेव के लिये अर्पित नहीं करता हूँ-पीछी नहीं देना हूँ—। इसके लिये मैं अभी स्वयं ही युद्ध करने को तैयार हूँ—। इस प्रकार कहकर फिर उसने उस दारुक सारथि से ऐसा कहा अरे ! राजनीति के शास्त्रों में दूत अवध्य कहा गया है-इस लिये तुझे छोड़ देना हूँ । इस तरह कहकर उसने दूत को असत्कृत और असमानित कर पीछे के दरवाजे से बाहर निकलवा दिया । (तएण दारुण सारही पउमणाभे ण असत्कारिण्य जाव णिच्छेदे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा

कण्डस्स वासुदेवस्स दोवई, एसण वह सयमेव जुद्धसज्जो णिगच्छामि त्ति कट्टु दारुय सारहि एव वयासी-केवल भो ! रायसत्येसु दूये अवज्ज्ञे त्ति कट्टु असत्कारिण्य असम्मानिण्य अवहारेण णिच्छुभावेइ)

दारुक सारथिना आ प्रभाञ्जे वयने साक्षणीने पद्मनाभ ओकदम क्रोधमा लादथेण थर्धं गथे आने लम्भरे अढावीने आ प्रभाञ्जे कडेवा लाञ्छे के डे देवानुप्रिय ! हु कृष्ण-वासुदेवने द्रौपदी कोपण स्थितिमा सोपवा तैयार नथी अेना भाटे हु अत्यारे पण सुद्ध करवा तैयार छु आ प्रभाञ्जे कडीने तेञ्जे दारुक सारथीने उहु के अरे ! राजनीतिना शास्त्रोमा इत अवध्य कडेवामा आञ्छे छे अथी तने जेतो कर छु आ प्रभाञ्जे कडीने तेञ्जे इतने अमत्कृत आने असमानित करीने पाछला गारजेथी गढार कढावी भूकथे।

(तएण दारुण सारही पउमणाभेण असत्कारिण्य जाव णिच्छेदे समाणे जेणेव कृष्णे वासुदेवे तेणेव उपागच्छइ, उपागच्छित्ता करयल्ल० कण्ड जाव एव

દાનતિ " ત્રયગુણાશિષિ.-સ્વમુત્તેન કથિતા ભારતિ:-જ્ઞાતા 'શતિ કૃત્વા 'આશુ
 રુત્તે ' આશુરુપ્તઃ શ્રીધ્ર મોખાશિષ્ટ', વામપાદેન પાદપીઠ ' અણુકમઃ ' અનુકા
 મતિ, અનુકમ્ય કુન્તામોગ લેગ-પત્રિકા ' પળામહ ' અર્પયતિ । અર્પયિત્વા યાવત્
 ' કૃત ' પ્રત્યાનયન કરું દૃવ્યમાગતઃ । તત્ત મલુ મ પશ્ચનામો દારુકેણ સાર
 થિના પરમુક્ત ' સન્ અનુરુપ્ત-શ્રીધ્રઃ મોખાશિષ્ટ, ત્રિયશિષિ રેલાત્રયયુક્તા
 ધુકુર્ટિ-' નિડાલે ' ત્રાટ્ટે-શાલમદેશે 'સાહદ્દુ' મહત્ત્વ-ઉત્ત્રાય, પદમવાદીવ-
 નો અર્પયામિ મલુ અહ દે દેવાનુપિય કૃષ્ણસ્ય ત્રામુદેવમ્ય દ્રૌપદીમ્, એ સલુ
 અહ સ્વપમેર યુદ્ધવજ્રો નિર્ગ-ત્રામિ-મયુરૈર યુદ્ધાયે વદિર્નિ મરામિ શતિકૃત્વા

કે કર્તવ્ય અનુમાર મેંને યહ આપકો નમસ્કાર ક્રિયા હૈ જય વિજય આદિ
 શબ્દોં દ્વારા ચ ગઈં દી હૈ-પરન્તુ મેરે સ્વામીકી उनके मुखसे आपके लिये
 जो आज्ञा दी गई है वह दूसरी है-और वह इस प्रकार है-इस प्रकार
 अपने मुख से कहकर वह जीघ क्रोध से भर गया, और वामपाद से
 उसके पादपीठ पर चढ़ गया । (अग्रमिता) चढ़कर फिर (कौतमेण
 लेह पणामह) फिर उसने उसके लिये कुन्त के अग्रभाग से पत्रिका
 अर्पित की । (पणामित्ता जाव कृव हन्वमागए) पत्रिका अर्पित करके
 यावत् कृष्णवासुदेव पांचो पादत्रों के साथ यहा द्रौपदी देवी को वापिस
 लेने के लिये हव्य-अभी अभी-आये हैं यह मत्र समाचार उसे सुना
 दिया । (तएण से पउमणामे दानएण सारहिणा एववुत्ते समाणे आलु
 रुत्ते त्तिवलिं मिउडिं निडाले साहदु एव वयासी णो अप्पिणामि, ण
 अह देवाणुप्पिया । कण्हस्म वामुदेवस्स दोवई, एस ण अह सयमेव

વિનયોપચાર માટે નમસ્કાર કર્યો છે તેમજ જય વિજય વિજય શબ્દો દ્વારા
 તમને વધામણી આપી છે પરંતુ મારા સ્વામીએ તેમના મુખથી તમારે માટે
 જે કંઈ આજ્ઞા આપી છે તે કંઈક બીજું જ છે અને તે આ પ્રમાણે છે કે-
 ફક્ત આમ કહીને એકદમ ક્રોધમાં લાલચોળ થઈ ગયો અને ડાબા પગથી
 તેના પાદાસન ઉપર ચઢી ગયો । (અગ્રમિતા) ચઢીને (કૌતમેણ લેહ પળા
 મહ) તેણે રાજાને કૃત (શાલા) ના અગ્રભાગથી પત્રિકા આપી । (પળામિત્તા
 જાવ કૃવ હન્વમાગર) પત્રિકા આપીને યાવત કૃષ્ણ-વાસુદેવ પાંચે પાડવાની
 સાથે અહીં દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવ્યા છે આ જાતના બધા
 સમાચારો તેને કહી સંભળાવ્યા

(તएण से पउमणामे दारुयेण सारहिणा एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ति
 वलिं मिउडिं निडाले साहदु एव वयासी-णो अप्पिणामि)

एव वयासी-ह भो दारगा । किन्न तुव्भे पउमनाभेण सद्धिं
जुज्झहिह उयाहु पेच्छहिह ? , तएण ते पंच पंडवा कण्ह
वासुदेव एवं वयासी-अम्हे णं सामी । जुज्झामो तुव्भे पेच्छह
तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहति दुरुहत्ता
जेणेव पउमनाभे राया नेणेव उवागच्छह उवागच्छत्ता एव
वयासी-अम्हे वा पउमनाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं
सपलगा यावि होत्था, तएण से पउमनाभे राया तं पंच पंडवे
खिप्पामेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धद्वधूयपडागा जाव
दिसोदिसि पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउमनाभेण रन्ना
हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा
जाव आधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०,
तएण से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी-कहणं
तुव्भे देवाणुप्पिया । पउमनाभेण रन्ना सद्धिं संपलगा ? ,
तएण ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेव एव वयासी-एवं खल्ल
देवाणुप्पिया । अम्हे तुव्भेहि अब्भणुत्ताया समाणा सन्नद्ध०
रहे दुरुहामो२ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से
कण्हे वासुदेवे तं पंच पंडवे एवं वयासी-जड णं तुव्भे देवाणु
प्पिया । एव वयता अम्हे णो पउमनाभे रायत्तिकट्टु पउमना-
भेण सद्धिं सपलगा ताओ णं तुव्भे णो पउमनाहे हयमहिय
पवर जाव पडिसेहेत्ते, त पेच्छह ण तुव्भे देवाणुप्पिया । अहं
नो पउमनाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि रहं

एव खलु अह हे स्वामिन् । युष्माकं राजेन यावत् 'णिच्छुभावेऽ' निशोमयति-
पद्मनाभः क्रोधाग्निः तत्र द्रौपदी न दास्यामीत्युक्त्वा दूतो न हन्तव्य इति कृत्वा
माममत्कार्यं, जमवान्यापहारेण निःशारयति सा ' इत्यर्थः ॥ २८ ॥

मूलम्—तएण से पउमणाभे चलवाउय सदावेइ सदावित्ता
एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । आभिसेक्क हत्थिर-
यणं पडिकप्पेह, तयाणंतर च ण से चलवाउए छेयायरियउव
देममइविकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाउ उवणेइ, तएणं से
पउमनाहे सन्नद्धं अभिसेयं दूरुहइ दूरुहिता हयगय जेणेव
कण्हे वासुदेवे तेणेव पहरेत्थ गमणाए, तएण मे कण्हे वासु
देवे पउमणाभं रायाण एजमाण पासइ पासित्ता त पंच पडवे

गच्छइ उयागच्छित्ता करयलं कण्ठ जाय एव वयासी—एव खलु अह
सामी ? तुम्ह वयणेण जाय णिच्छुभावेइ) इस प्रकार जब वह दारुण
सारथि पद्मनाभ के द्वारा असत्कृत यावत् होकर बाहिर निलगा दिया,
तब वह वहाँ से चलकर जहाँ कृष्णवासुदेव थे वहाँ आया । वहाँ आकर
उसने दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर
कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा—हे स्वामिन् ? मैंने पद्मनाभ राजा से
आपके वचन जैसे ही कहे वैसे ही उसने “क्रोध में आकर” मैं नहीं
दूंगा दूतमारने योग्य नहीं होता है—इत्यादि कहकर मुझे असत्कृत एवं
असमानित कर अपने यहाँ से पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा
दिया है ॥ सूत्र २८ ॥

वयासी—एव खलु अह सामी ! तुम्ह वयणेण जाय णिच्छुभावेइ)

आ प्रभाणु न्यारे ते हाउक सारथि पद्मनाभ राजा वडे असत्कृत यावत्
अस मानित यधने जडार कडावी भूकथे त्यारे ते त्याथी जडार आवीने न्या
कृष्ण-वासुदेव हता त्या आव्ये त्या आवीने तेणु जने हाथेथी अजलि अनावीने
अने तेने मस्तके भूकीने कृष्ण-वासुदेवने आ प्रभाणु कछु के छे स्वामी ! पद्म
नाभ राजने मे न्यारे तमारो स देश कही सलणायो त्यारे सलणतानी
साथे ज ते क्रोधमा लराउने “हु द्रौपदी देवी पछी आपीश नछि, यावत् इत
अवध्य होय छे ” वगेरे वचनेथी असत्कृत तेमज अस मानित करीने अने
तेणु पोताना लवनना पाछवा पारण्येथी जडार कडावी भूकथे ”

एवं वयासी--ह भो दारगा ! किन्न तुव्भे पउमनाभेण सद्धिं
जुज्झहिह उयाहु पेच्छहिह ?, तएण ते पंच पंडवा कण्ह
वासुदेवं एवं वयासी--अम्हे णं सामी । जुज्झामो तुव्भे पेच्छह
तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहति दुरुहिता
जेणेव पउमनाभे राया नेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता एव
वयासी--अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं
संपलगा यावि होत्था, तएण से पउमनाभे राया त पंच पंडवे
खिप्पामेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धइधूयपडागा जाव
दिसोदिसि पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउमनाभेण रत्ता
हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा
जाव आधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कणहे वासुदेवे तेणेव उवा०,
तएण से कणहे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी--कहणं
तुव्भे देवाणुप्पिया । पउमणाभेण रत्ता सद्धिं संपलगा ?,
तएण ते पंच पंडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी--एवं खलु
देवाणुप्पिया । अम्हे तुव्भेहि अब्भणुत्ताया समाणा सन्नद्ध०
रहे दुरुहामो२ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से
कणहे वासुदेवे तं पंच पंडवे एव वयासी--जइ णं तुव्भे देवाणु
प्पिया । एव वयता अम्हे णो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमना-
भेण सद्धिं संपलगं ताओ णं तुव्भे णो पउमणाहे हयमहिय-
पवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह णं तुव्भे देवाणुप्पिया । अहं
नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेण रत्ता सद्धिं जुज्झामि रहं

दुरुहइ दुरुहिता जेणेव पउमनाभे गया तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छिता सेय गोरीरतारधवल तणसांठियसिंदुवारकुंदेदुम
 झिगासं निययनलस्त हरिसजणणं रिउमेणविणासकर पच
 जणणं सख परामुसइ परामुसिता मुहवागपुरिय करेइ, तएण तस्त
 पउमणाहस्त तेणं सखसद्वेणं चलइभाए हयजाव पडिसेहिए, तएण
 से कणहे वासुदेवे धणु परामुसइ वेढो धणु पूरेइ पूरिता धणुसद्वं करेइ,
 तएण तस्त पउमनाभस्त दोझे चलइभाए तेण धणुसद्वेण
 हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएण से पउमणाभेराया तिभाग
 बलावसेसे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसम्कारपरवकमे
 आधारणिज्जत्तिकट्टु सिग्धं तुरिय जेणेव अमरकका तेणेव उवा-
 गच्छइ उवागच्छिता अमरकक रायहाणि अणुपवित्तइ अणुप
 विसित्ता दाराइ पिहेइ पिहिता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएण से कणहे
 वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता रह
 ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहिता वेउव्वियसमु
 ग्धाएणसमोहणइ, एगं मह णरसीहरूव विउव्वइ विउव्वित्ता महया
 महया सद्वेणं पाददहरयं करेइ, तएण से कणहेण वासुदेवेण
 महया महया सद्वेणं पाददहरण कएण समाणेणं अमरकका
 रायहाणी सभग्गपागारगोपुराट्टालयच्चरियतोरणपल्हत्थियपव-
 रभवणासिरिघरा सरस्सरस्त धरणियले सन्निवइया, तएण
 से पउमणाभे राया अमरकक रायहाणि सभग्ग जाव
 पासित्ता भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ सा

दोवईदेवी पउमनाभ रायं एव वयासी—किण्णं तुम देवा-
 णुप्पिया ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स
 विप्पियं करेमाणे मम इहं हव्वमाणेसि, तं एवमवि गए
 गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलग-
 वत्थणियत्थे अतेउरपरियालसपरिवुडे अग्गाइ वराइं रयणाइं
 गहाय मम पुरओ काउं कण्ह वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं
 उवेहि, पणिवइयवच्छला ण देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा, तएणं
 से पउमनाभे, दोवइए देवीए एयमट्ट पडिसुणेइ पडिसुणित्ता
 ण्हाए जाव सरणं उवेइ उवित्ता करयल० एवं वयासी—दिट्ठाण
 देवाणुप्पियाण इड्डी जावपरक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया !
 जाव खमंतु णं जाव णाह भुज्जो२ एवं करणयाएत्तिकट्ट पंज-
 लिबुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देवि साहत्थि
 उवणेइ, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी—ह
 भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया४ किण्ण तुम ण जाणसि
 मम भगिणि दोवइदेवी इह हव्वमाणमाणेत एवमवि गए णत्थि
 ते ममाहितो इयाणि भयमत्थि त्तिकट्टपउमणाभं पडिविसज्जेइ
 पडिविसज्जित्ता दोवइ देवि गिण्हइ गिण्हित्ता रहदुरूहेइ दुरूहित्ता
 जेणेव पच पडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचण्हं पडवाणं
 दोवइ देवि साहत्थि उवणेइ, तएण से कण्हे पचहि पंडवेहि सट्ठि
 अप्पच्छे छहि रहेहि लवणसमुद मज्झ मज्जेण जेणेव जवूदीवे
 दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २९ ॥

ટીકા—‘તણ સે’ इत्यादि । ततः गलु रा पञ्चनामः ‘बलवाउप’ बलव्या-
पृत-सैन्यनायक शब्दयति, शब्दयित्वा एवमरात्रीन्—शिममेव-शीघ्रमेव भो
देवानुप्रिय ! ‘आभिसेक’ आभिषेक्य प्रमान इतिरत्ता ‘पटिकप्पेह’ प्रतिक
ल्पय सुसज्जित कुरु, तदनन्तर च स बलवाउप गलु “छेयायरियउवदेसमह
विकप्पणाविगप्पेहि” छेकाचार्योपदेशमतिविस्मयनाभिवर्ण्यैः—तत्र छेकः—निपुणः,
आचार्य—कलाशिक्षक, तस्योपदेशाद् या मतिरिति ‘इतिरत्ता’ विस्मयना-विचारणा,
तज्जनितो विस्मयः—विशिष्ट रचनाशक्तियेषां तः, ‘जार उरणेइ’ यावद् उपत-

—तण से पउमणामे इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तण) इसके बाद (से पउमणामे) उन पञ्चनाम राजा ने
(बलवाउप सदावेह) अपने सैन्य नायक को गुलाया (सदावित्ता) और
घुलाकर फिर उससे (एव वयासी) इस प्रकार कहा—(विष्णामेव भो
देवानुप्रिया ! आभिसेक इतिरयण पटिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तुम
शीघ्र ही प्रधान इतिरत्तन को सुसज्जित करो । (तयाणतर च ण से
बलवाउप छेयायरिय उवदेसमह विकप्पणा विगप्पेहि निउणेहि जाव
उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुणकला शिक्षक के उपदेश
से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति
जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो शोभा करनेमें अत्यन्त निपुण थे उस
इतिरत्तन को सुसज्जित करवाया । जार उरणे ने उस इतिरत्तन को चम
कीले निर्मल वेप से शीघ्र परिवस्त्रित-करदिया । बल्लाच्छादन द्वारा

तण से पउमणामे इत्यादि—

टीकार्थ—(तण) त्याરપછી (સે પઝમણામે) તે પંચનામ રાજાએ (બલવાઉપ
સદાવેહ) પોતાના સૈન્ય નાયકને બોલાવ્યો (સદાવિત્તા) અને બોલાવીને તેને
(એવ વયાસી) આ પ્રમાણે કહ્યું કે (વિષ્ણામેવ ભો દેવાનુપ્રિયા ! આભિસેક
હતિરયણ પટિકપ્પેહ) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સત્વરે પ્રધાન હસ્તિરત્નને
સુસજ્જ કરો. (તયાણતર ચ ણ સે બલવાઉપ છેયાયરિયઉવદેસમહવિકપ્પણા
વિગપ્પેહિ નિઉણેહિ જાવ ઉવણેઇ) ત્યારપછી તે સૈન્ય નાયકે નિપુણ કલાશિક્ષ
કના ઉપદેશથી જેમણે વિશિષ્ટ રચના માટે બુદ્ધિ તેમજ કલ્પના શક્તિ મેળવી
છે, તેમજ શ્રુગાર કલામાં જેઓ અતીવ ચતુર છે તેવા માણસો વડે
હસ્તિરત્નને સુસજ્જિત કરાવ્યો જ્યારે સત્વરે તેમણે તે હસ્તિરત્નને ચમકતા
નિર્મળ વેપથી પરિવસ્ત્રિત કરી દીધો—વસ્ત્રાચ્છાદન વડે આચ્છાદિત ગાને સુથો

यति-अत्र यावच्छब्देनैव बोध्यम्-मुनिउणेहि नरेहि हस्तिरयण परिकल्पेऽ, उज्ज-
लनेवत्थ हव्वपरिवत्थिय सुसज्ज इत्यादि परिकल्पित्ता ? इति मुनिपुणैः=शोभा
करणचतुरैः, नरेहिस्तिरत्न परिकल्पयति-शोभयति किं भूतं हस्तिरत्न-उज्ज्वल-
नेपथ्यहव्वपरिवत्थित उज्ज्वलनेपथ्येन-द्युतिमन्निर्मलवेपेण शीघ्र परिवर्द्धितः
वस्त्राच्छादनमुशोभितः, तथा-सुसज्ज-घण्टाभरणादिभिः समलङ्कृत, एव परि-
कल्प्य सल्लव्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके त हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति ।
तत खलु स पद्मनाभः सन्नद्धवद्धवर्मितकवच - आभिषेय्य हस्तिरत्न दूरोदति-
आरोदति दूरुह्य हयगजरायपदातिपरिवृत्त यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव प्रापारयद्
गमनाय ।

तत खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभ राजानम् एजमानम्=आगच्छन्त
पश्यति । दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत्-ह भो ! दारकाः भो वत्सा !

आच्छादित कर सुशोभित करदिया-अर्थात्-झूल वगीरह डालकर उसे
पहुँत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घटा आभरण आदि से उसे अल-
कृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ
राजा के पास पहुँचा (तएण से पउमणामे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुह्य,
दूरुह्त्ता हयगज जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण
से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एजमाण पासइ पासित्ता ते पच पडवे
एव वयासी) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, वद्ध, वर्मित कवच
वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरुढ़ हो गया और आरुढ़
होकर हय, गज, रथ, एवं पैदल सैन्य को साथ लेकर जहाँ कृष्णवासुदेव
थे उस और चल दिया । जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता
हुआ देखा तो देखकर उन्हो ने पाच पाण्डवो से ऐसा कहा-(ह भो

क्षित करी दीधो अटले के अन्न वगेरे नाणीने णहुँअ सरस रीते सुमन्जित
करी दीधो तेमअ घट, आलरहो वगेरेथी तेने अलङ्कृत करी दीधो त्यारे ते
- सैन्य नायक ते हस्तिरत्नने लधने पद्मनाभ राजानी पासो गये।

(तएण से पउमणामे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुह्य दूरुह्त्ता हयगज जेणेव
कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण
एजमाण पासइ, पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी)

त्यारपणी ते पद्मनाभ राजा कवच तेमअ नील राओथी सल्ल वधने
ते प्रधान हस्तिरत्न उपर सवार थध गये। अने सवार थधने घोडा, हाथी,
रथ अने पायदण येनाने साथे लधने कृष्ण-वासुदेव हुता ते तरइ स्वाना
थये। कृष्ण-वासुदेवे ज्यारे पद्मनाभ राजाने आवतो जेथे त्यारे तेने लेधने पांथे

ટીકા—‘તણ સે’ इत्यादि। ततः गलु स पञ्चनामः ‘बलवाउय’ बलव्या-
पृत-सैन्यनायक शब्दयति, शब्दयित्वा पञ्चमराटीन्—क्षिप्रमेव-शीघ्रमेव भो
देवानुप्रिय ! ‘आमिसेय’ आमिपेय प्रमान हस्तिरत्न ‘पटिकप्पेह’ प्रतिक
ल्पय सुसज्जित कुरु, तदनन्तर च स बलव्यापृत गलु “छेयायरियउवदेसमइ
विरुप्पणाविगप्पेहि” छेकाचार्योपदेशमतिविरुप्पनाविरुप्पे.—तत्र छेकः—निपुणः,
आचार्यः—कलाशिक्षक, तस्योपदेशाद् या मति ‘द्विस्तस्या विरुप्पना-विचारणा,
तज्जनितो विरुप्प-विशिष्ट रचनाशक्तिर्येषा तः, ‘जाय उण्णइ’ यावद् उपत

—तण से पञ्चनामे इत्यादि ॥

टीका—(तण) उसके बाद (से पञ्चनामे) उन पञ्चनाम राजा ने
(बलवाउय सहावेइ) अपने सैन्य नायक को बुलाया (सहाविता) और
बुलाकर फिर उससे (एव बयासी) इस प्रकार कहा—(विप्पामेव भो
देवानुप्रिया ! आमिसेय हस्तिरयण पटिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तुम
शीघ्र ही प्रधान हस्तिरत्न को सुसज्जित करो। (तयाणतर च ण से
बलवाउय छेयायरिय उवदेसमइ विरुप्पणा विगप्पेहि निउणेहि जाव
उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुणकला शिक्षक के उपदेश
से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति
जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो जोभा करने में अत्यन्त निपुण थे उस
हस्तिरत्न को सुसज्जित करवाया। जब उन्हो ने उस हस्तिरत्न को बम
कीले निर्मल वेप से शीघ्र परिवस्त्रित-करदिया। बल्लाच्छादन द्वारा

तण से पञ्चनामे इत्यादि—

टीका—(तण) त्याરપછી (સે પંચનામે) તે પંચનામ રાજાએ (બલવાઉય
સહાવેઈ) પોતાના સૈન્ય નાયકને બોલાવ્યો (સહાવિતા) અને બોલાવીને તેને
(એવ બયાસી) આ પ્રમાણે કહ્યું કે (વિપ્પામેવ ભો દેવાનુપ્રિયા ! આમિસેય
હસ્તિરયણ પટિકપ્પેહ) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સત્વરે પ્રધાન હસ્તિરત્નને
સુસજ્જ કરો (તયાણતર ચ ણ સે બલવાઉય છેયાયરિયઉવદેસમઈવિરુપ્પણા
વિગપ્પેહિ નિઉણેહિ જાવ ઉવણેઈ) ત્યારપછી તે સૈન્ય નાયકે નિપુણ કલાશિક્ષ
કના ઉપદેશથી જેમણે વિશિષ્ટ રચના માટે બુદ્ધિ તેમજ કલ્પના શક્તિ મેળવી
છે, તેમજ શૃંગાર ડલાભા જેઓ અતીવ ચતુર છે તેવા માણસો વડે
હસ્તિરત્નને સુસજ્જિત કરાવ્યો બ્યારે સત્વરે તેમણે તે હસ્તિરત્નને ચમકતા
નિર્મળ વેપથી પરિવસ્ત્રિત કરી દીધો—વલ્લાચ્છાદન વડે આચ્છાદિત — સુથો

यति-अत्र यावच्छब्देनैव मोक्षम्-मुनिउणेहि नरेहि हस्तिरयण परिरूपेष्ट, उज्ज-
लनेवत्थ इवपरिवस्तिथय सुसज्ज इत्यादि परिरूपित्ता ' इति मुनिपुणैः=शोभा
करणचतुरैः, नरेहिस्तिरत्न परिरूपयति-शोभयति किं भूत हस्तिरत्न-उज्जल-
नेपथ्यहव्यपरिवस्तिथ उज्ज्वलनेपथ्येन-द्युतिमन्निर्मलवेपेण शीघ्र परिवस्तिथः
वस्त्राच्छादनमुशोभितः, तथा-सुसज्ज-ग्रन्थामरणादिभिः समलङ्कृत, एव परि-
कल्प्य समलङ्घ्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके त हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति ।
तत खलु स पद्मनाभः सन्नद्धवद्धवर्मितकवच - आभिषेक्य हस्तिरत्न दूरोहति-
आरोहति दूरुह्य हयगजरथपदातिपरिवृत यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव प्रागारयद्
गमनाय ।

तत खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभं राजानम् एजमानम्=आगच्छन्त
पश्यति । दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत्-हं भो ! दारकाः यो वत्सा !

आच्छादित कर सुशोभित करदिया-अर्थात्-झूल बगैरह डालकर उसे
पहुँत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घटा आभरण आदि से उसे अल-
कृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ
राजा के पास पहुँचा (तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुह्य,
दूरुह्त्ता हयगज जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्य गमणाए, तएण
से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एजमाण पासइ पासित्ता ते पच पडवे
एव वयासी) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, वद्ध, वर्मित कवच
वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरूढ़ हो गया और आरूढ़
होकर रथ, गज, रथ, एव पैदल सैन्य को साथ लेकर जहाँ कृष्णवासुदेव
थे उस और चल दिया । जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता
हुआ देखा तो देखकर उन्हो ने पाच पाण्डवो से ऐसा कहा-(हं भो

भित करी दीधो ओठले के ऊँच वगेरे नाणीने अहुँ सरत्त दीते सुसज्जित
करी दीधो तेमज घट, आभेरछो वगेरेथी तेने अलङ्कृत करी दीधो त्यारे ते
- सैन्य नायक ते हस्तिरत्नने लधने पद्मनाभ राजानी पाने गये।

(तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुह्य दूरुह्त्ता हयगज जेणेव
कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्य गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण
एजमाण पासइ, पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी)

त्यारपडी ते पद्मनाभ राजा कवच तेमज जीन अओथी सन्नद्ध थउने
ते प्रधान हस्तिरत्न उपर सवार थइ गये अने नवार थउने घोडा, डायी,
रथ अने पायदण मेनाने गाये लधने कृष्ण-वासुदेव उता ते तरइ रवाना
थये। कृष्ण-वासुदेवे न्याये पद्मनाभ राजाने आवतो जेथे त्यारे तेने ओधने पाये

કિં સહુ યુવ પદ્મનાભેન સાર્થ ' જુઝિહિહ ' ગુપ્તથ ! ' ડયાદુ ' ડતાદો-અથવા
' પેન્ઝિહિહ ' મેક્ષ મે, ? તતઃ સહુ ત પથ પાડવા જાગ વાસુદેવમેવમવા
દીત્-અથ સહુ હે સ્વામિન ! ગુપ્તમ., યુવ મેક્ષ અમ્ । તતઃ સહુ પથ પાડવાઃ
સન્નદ્યદ્યવર્મિતકચા ચાપદુ શૃદીતાયુધમદાણાઃ રથાન=અથ સ્વ રથોપરિ દુરો
હન્તિ=આરોહતિ દુરોગ યજીર પદ્મનાભો ગજા તઙીરોપાગન્'ઽન્તિ, ઉપાગત્ય એવ
મવડન્-'અમ્હે તા પડમણામે તા ગયા ' વચ તા ગમમ' પદ્મનાભો વા રાજા, રિતિ

દારગા ! કિન્ન તુન્મે પડમનાભેણ સદ્ધિ જુઝિહિહ ડયાદુ પેન્ઝિહિહ ?
તણ તે પડવા કર્ણ વાસુદેવ ગ્વ ગયામી) હે વત્સો ! ત્યા તુમલોગ
પદ્મનાભ કે સાથ યુદ્ધ કરોગે-યા યુદ્ધ કો દેગોગે ? તથા ડાડવો ને
કૃષ્ણવાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા-(અમ્હેણ સામી ! જુઝ્ઞામો, તુન્મે
પેન્ઝહ, તણ પચ પડવે સન્નદ્ય જાવ પદરણા રહે દુરુહતિ, દુરુહિતા
જેણેવ પડમણામે રાયા તેણેવ ડવાગચ્છતિ ડવાગચ્છિત્તા એવ વયાસી,
અમ્હે વા પડમણામે વા રાયત્તિ કદ્દુ પડમણામેણ સદ્ધિ સપલગા યાવિ
હોત્યા) હે સ્વામિન ! હમ તો યુદ્ધ કરોગે-આપ ડસ કા નિરીક્ષણ કરે ।
હસકે વાદ વે પાચો પાડવ સન્નદ્યદ્યવર્મિત કવચવાલે હોકર યાવત
આયુધ પ્રદરણો કો લે ૨ કર અપને ૨ રથો પર સવાર હો ગયે । સવાર
હોકર ફિર વે જહા પદ્મનાભ રાજા થે-ડસ ઓર ગયે-વહાં જાકર ડન્હો
ને પદ્મનાભ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-યાં તો આજ હમ નહીં યા પથ

પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું-(હ મો દારગા ! કિન્ન તુન્મે પડમનાભેણ સદ્ધિ
જુઝિહિહ ડયાદુ પેન્ઝિહિહ ? તણ તે પચ પડવા કહા વાસુદેવ એવ વયાસી)
હે વત્સ ! શુ તમે પદ્મનાભ રાજાની સાથે મેદાને ડતરશે ? કે ક્ષતા યુદ્ધને
ભેશે ? ત્યારે તે પાડવોએ કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે:-

(અમ્હેણ સામી ! જુઝ્ઞામો, તુન્મે પેન્ઝહ, તણ પચ પડવે સન્નદ્ય જાવ
પદરણા રહે દુરુહતિ, દુરુહિતા જેણેવ પડમણામે રાયા તેણેવ ડવાગચ્છતિ, ડવા
ગચ્છિત્તા એવ વયાસી, અમ્હે વા પડમણામે તા રાયત્તિ કદ્દુ પડમણામેણ સદ્ધિ
મપલગા યાવિ હોત્યા)

હે સ્વામી ! અમે તો યુદ્ધ ખેડીશુ, તમે અમારા યુદ્ધને જુઓ ત્યાર
પછી તે પાચે પાડવો ડવચથી સુસન્ન થઈને આયુધ પ્રદરણોને લગને પોત
પોતાના રથો ઉપર સવાર થઈ ગયા સવાર થઈને તેઓ પદ્મનાભ રાજા તરફ
શ્વાના થયા પદ્મનાભ રાજાની પાસે પહોંચીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે-
' આજે કા તો અમે નહિં અને કા પદ્મનાભ નહિં " આમ કહીને તેઓ
પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરવા લાગ્યા

कृत्वा=इत्युक्त्वा-पद्मनाभेन साधं योद्धुः संपलग्नाश्चाप्यभवन्, ततः खलु स पद्मनाभो राजा तान् पञ्च पाण्डवान् क्षिप्रमेव 'हयमहियपवरनिग्रडियचिन्धद्यपङ्कागा' हयमथितप्रवरनिपतितचिह्नध्वजपताकान्-तत्र हया-अथवा मथिता-पीडिताः, प्रवराः-प्रशस्ताः, चिह्न-ध्वजपताका निपातिता येषां तान्, शस्त्रास्त्रप्रहारजनित प्राप्तान् इत्यर्थः, यावद् दिशो दिशः=सर्वतः 'पडिसेहेइ' प्रतिपेययति=प्रतिनिवर्तयति स्मेत्यर्थः । ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पद्मनाभेन राजा हयमथितप्रवरनिपतित यावत् प्रतिपेयिताः सन्तः 'अत्थामा' अस्थामानः-प्रलरहिता, 'जाव' आधारणिज्जा 'अत्र यावच्छब्देन-'अवला अपीर्या' इत्यनयोः संग्रहः । अत्रालः-

नाम राजा ही नहीं " ऐना कहकर वे पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करने में सलग्न हो गये । (तएण से पउमनाभे राया ते पच पडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निवडिय जाव पडिसेहिया, समाणा, अत्थामा जाव आधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से वासुदेवे ते पच पडवे एवं वयामी कण्णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! पउमनाभेण रत्ता सद्धि सपलग्गा ? तएण ते पच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे तुम्हेहिं अम्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो २ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ) तब पद्मनाभ राजा ने उन पाँचों पाण्डवों को बहुत जल्दी पीड़ित घोड़ों वाला एव निपातित प्रशस्त चिह्नध्वज पताका वाला कर दिया । यावत् एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से भी उन्हें रोक दिया अथवा-एक दिशा से दूसरी दिशा में खदेड़ दिया । इस तरह वे पाँचों पाण्डव पद्मनाभ राजा के द्वारा पीड़ित घोड़ोंवाले, एव निपातित प्रशस्त चिह्न ध्वज पताका वाले बन गये और एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से रोक दिये गये-अथवा खदेड़ दिये गये तब बलरहित बनकर यावत्

(तएण से पउमनाभे राया ते पच पडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निग्रडिय जाव पडिसेहिया समाणा, अत्थामा जाव आधारणिज्ज, त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से कण्हे वासुदेवे ते पच पडवे एव वयामी कण्णं तुम्हे देवाणुप्पिया । पउमनाभेण रत्ता सद्धि सपलग्गा ? तएण ते पच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । अम्हे तुम्हेहिं अम्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो २ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ)

त्यारपछी पद्मनाभ राजाએ તે પાચે પડવોને થોડા વખતમા જ પીડિત ઘોડાઓવાળા તેમજ નિપાતિત પ્રશસ્ત ચિહ્નધ્વજ પતાકાવાળા બનાવી દીધા. યાવત એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ જઈ શકે નહિ તેમ તેઓએ ગસ્તો રોકી દીધા. અથવા તે એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી મૂક્યા. આવી

સન્ધીના' અગ્રીપાં - આન્તરિક્ષાક્તિરિતિ, ઊરસાદ્દીનાત્પર્યયઃ, તથા-અથા
 રણીયાઃ=આત્માન રણભૂમી ભાગ્યિનુમગ્નતાઃ, ઇતિ ઋત્તા-ઇતિ વિચાર્ય, યગૈવ
 કાગો વાસુદેવસ્તગૈરોપાગમન્તિ । તતઃ સત્ત્વ મ ઋગ્નો વાસુદેવસ્તાન્ પશ્ચ
 પાન્ડરાન્ એવ રક્ષમાણપ્રકારેણ, અગ્રીન્-'કર્ણ' કથમત્તુ યુવ દે દેવાનુ
 પ્રિયાઃ ! પશ્ચનામેન રાતા સાર્થ યોદ્ધા મમગ્નતાઃ, ૧, તાઃ સત્ત્વ તે પશ્ચ પાન્ડરાઃ
 કૃષ્ણ વાસુદેવોમમરાત્નેન્-અથ સત્ત્વ તે દેવાનુપ્રિયા ! ૨મ યુગ્માભિરભ્યનુજ્ઞાતાઃ
 સતઃ સન્નદ્વયદર્શિતકરયાઃ રથાન્ 'દુરુદામો' 'દુરોદામઃ'-આરોહામઃ આરુઢો,
 આરુઢ્ય યન્નૈવ પશ્ચનામસ્તગૈવ મમ્યા યુદ્ધાય સપગ્નતાઃ તતઃ પરાજય પ્રાપ્તા યાન્
 પ્રતિપેધિતા' ઇતિ । તતઃ સત્ત્વ ત કૃષ્ણો વાસુદેવસ્તાન્ પશ્ચ પાન્ડરાન્ એમના

રણભૂમિ મેં અપને આપકો ટીકા ને મેં મી અસમર્થ જાનકર જહા કૃષ્ણ
 વાસુદેવ થે પહા આપે । વહા પહુંચ તેહી કૃષ્ણવાસુદેવને ડનસે-ડન પાંચો
 પાંડવો સે-ડમ પ્રકાર કહા- જવ આપલોગ પરાજિત હો ગયે તો પશ્ચ
 નામ રાજા કે માથ યુદ્ધરત દુગ-લહે-તમ ડન પાંચો પાંડવો ને કૃષ્ણ
 વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા, હે દેવાનુપ્રિય ! હમલોગો ને આપ સે અભ્ય
 નુજ્ઞાત હોકર હી કચ આદિ સે સુસન્નિજત હો રધો પર આરોહણ
 ક્રિયા, ઓર આગેહગ કર જહા પશ્ચનામ રાજા થા વહાં હમલોગ પહુંચે ।
 વહા પહુંચકર હમલોગ ડનકે માથ યુદ્ધરત હો ગયે । વાદ મેં પરાજિત
 હો ગયે । ઓર પરાજિત હોકર ફિર મેંસે ઘન ગયે જો ડસને હમેં એક
 વિશા સે દુસરી દિશા મેં સ્વદેહ દિયા યા જાને સે રોક દિયા । (તણ
 સે કળહે વાસુદેવે તે પ પ) તવ કૃષ્ણવાસુદેવ ને ડન પાંચો પાંડવો સે

પરિસ્થિતિમાં લાચાર થઈને યાવત્ યુદ્ધભૂમિમાં પોતાની જાતને ટકાવી શક
 વામાં પણ અસમર્થ જાણીને પાંચે પાંડવો જ્યાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યાં
 આવ્યા ત્યાં પહોંચતા જ કૃષ્ણ-વાસુદેવે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે
 તમે લોકો પશ્ચનામ રાજાની સાથે યુદ્ધરત થઈને પરાજિત થઈ ગયા છો ? ત્યારે
 તે પાંચે પાંડવોએ કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! અમે
 બધા આપની આજ્ઞા મેળવીને કવચ વગેરેથી સુસન્નિજત થઈને રથો ઉપર
 સવાર થયા સવાર થઈને અમે જ્યાં પશ્ચનામ રાજા હતા ત્યાં ગયે ત્યાં
 પહોંચીને અમે બધા તેની સાથે યુદ્ધ કરવા લાગ્યા અને તેને પરિણામે અમે
 હારી ગયા છીએ હાર પામીને અમે એવી લચકર પરિસ્થિતિમાં સપડાઈ
 ગયા હતા કે જેથી એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ જવામાં પણ અસર્થ
 થઈ ગયા અથવા તો તેણે અમને એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી
 મૂક્યા છે (તણ સે કળહે વાસુદેવે તે પ પ) ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે પાંચ
 પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

दीत्-यदि खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! पूर्वमेव वक्तारो भवत, 'अम्हे, ' णो पउमणाभे राया ' इति 'यय भवामः, नो पञ्चनाभो राजा ' इति " वयमेव जेष्णामो न तु पञ्चनाभो राजा ' इत्यर्थः तथा-यदि पूर्वम्-इति कृत्वा-इत्येव निश्चय मनसि निधाय, पञ्चनाभेन सार्व ' सपल्लगता ' युद्धाय सपल्लगता भवत, ' तो ण तर्हि खलु ' तुम्हे, णो पउमणाहे ' यूय नो पञ्चनाभ-यूयमेव जेतारो भवेत, न तु पञ्चनाभः, तथा यूय त हयमार्थतश्चरनिपतित चिह्न उज्जपताक यावत्-पञ्चनाभ ' पडिसेहते ' प्रतिपेयेत=प्रतिनिवर्तयेत । तत्=तस्मात् ' पेच्छह ' प्रेक्षध्व, खलु

इस प्रकार कहा-(जइण तुम्हे देवाणुप्पिया ! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कइहु पउमनाभेण सद्धि सपल्लगताओ णं तुम्हे णो पउमणाहे, हय-महिय-पवर-जाव पडिसेहते, त पेच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया ! अह णो पउमणाभे राय त्ति कइहु पउमनाभेण रन्ना सद्धि जुज्झामि, रह दुरहइ, दुरुहत्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छत्ता सेय गोपीरहारधवलतणसोल्लियसिंदुवारकुदेहु सन्निगास निययवल्लस हरिसज्जणण रिउसेण्णविणासकर पचजण्ण सख परामुसइ) हे देवानुप्रिय ! तुम तो पहिले ऐसा कहते थे कि हम जीतेंगे, पद्मनाभ राजा नहीं जीतेगा-और ऐसा ही मन में विचार कर-निश्चय कर-तुमलोगों ने पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करना प्रारम्भ किया-तो तुमलोगों को ही जीतना चाहिये था । पद्मनाभ राजा को नहीं-और तुम्हीं लोग उसे पीड़ित छोड़ो वाला एव निपातितप्रश-

(जइण तुम्हे देवाणुप्पिया ! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कइहु पउमनाभेण सद्धि सपल्लगताओ ण तुम्हे णो पउमणाहे, हयमहियपवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह ण तुम्हे देवाणुप्पिया ! अह णो पउमणाभे रायत्ति कइहु पउमनाभेण रन्ना सद्धि जुज्झामि, रह दुरहइ, दुरुहत्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता सेय गोपीरहारधवलतणसोल्लियसिंदुवार कुदेहु सन्निगास निययवल्लस हरिमज्जणण रिउसेण्णविणासकर पचजण्ण सख परामुसइ)

हे देवानुप्रिय ! तब तो पड़ेवेथी न आ प्रभाण्डे छेता छता हे अभेन छतीशु, पञ्चनाभ राजा छतथे नहि आने आ प्रभाण्डे विचार करीने न तबे बोडोअे पञ्चनाभ राजांनी आये युद्धनी शङ्कात करी छती, आवी परिस्थिभा तो तभारे छत भेणववी जेधअे पञ्चनाभ राजांनी छत नहि थयी नेधअे तबे बोडो तेने पीडित बोझाओवाणो जनावत, तभने ते नहि पणु आ णधी तभाजी मननी धरुअ सद्धि थर्ध शङ्की नहि ओथी हे देवानुप्रियो । अये बुझो,

પૂય હે દેવાનુમિયા: । ‘ અદ નો પટમનામ રાગા ’ ‘ અદ નો પદ્મનામો રાજા ’ = અહમેવ જેતા મગામિ, ન તુ પદ્મનામો રાજા, ઇતિ જ્ઞાયા પદ્મનામેન રાજા સાધે યુધ્યામિ, ઇત્યુત્તયા ૨૫ ‘ દુરુદ્દઃ ’ દુરોદન્તિ-આરોગ્ગિ-મ જ્ઞાયા રાસુદેવ: પદ્મ નામેન સદ્ધ યોદ્ધુ રથમાન્દ્યાન ઇત્યર્થ: । આરુપ યૈય પદ્મનામો રાજા તગૈવો પાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય ‘ મેગ ’ શ્વેત-ગોમીઘ્દારથચલ=ગોદુગ્ધાત્-દારાચ્ચ ધવલ શુચલ ‘ તગમોલ્લિપમિદુસારહરેદમનિનાસ ’ ‘ તગમોલ્લિપા ’ મલ્લિકા અપ દેશીય: શદ્ મિન્દુસારો=નિર્ગુળ્લી, કુન્દ-કુન્દનામ્ના મમિદ્: શ્વેતપુષ્પવિશેષ: । હન્દુશ્ચન્દ્રસ્તદ્ધ સનિકાશ-પ્રમા યમ્પ મ તે, નિયપાલમ્પ ‘ નિજકાવમ્પ મ્પકો યસેનાય ‘ હરિગજગ્ગ ‘ હર્પનનન-દર્પોત્પાદક, ‘ રિડમેગ્ગ વિનાસકર ’ રિપુમેન્ય વિનાશકર=શત્રુસેન્યચલહારક પાશ્ચાનન્ય ગદ્ પાશ્ચાત્-પનામક શત્રુ ‘ પરામુખ: પરા મુશતિ હસ્તે મુહાતિ, પગમૃગ્ધ ‘ મુદ્ગાપૂરિય કરેઃ ’ મુહવાતપૂરિય મુપનાનેત-માત કરોતિ-ગદ્યતીત્યર્થ: । તત્ સ્વલુ તસ્ય પદ્મનામસ્ય તેન ગદ્ગશ્ચન્દેન ‘ વચ

સ્ત ચિહ્નધ્વજ પતાકા ચાલા પનાતે-વહ તુમ્હેં પેસા નહીં બનાતા-પરન્તુ પેસા તુમ લોગોં કા મન મેં ધારા ચિગાર સક્તલી ભૂત નહીં હુઆ અતઃ દેવાનુમિયો । અવ દેગો-મેં હમકે સાથ યુદ્ધરત હોતા હું હસમેં મેં હી જીતૂં ગા પદ્મનામ રાજા નહીં । પેસા કહકર વે કૃષ્ણવાસુદેવ રથપર સવાર હો ગયે । ઓર સવાર હોકર વે વહા પહુંચે જહા પદ્મનામ રાજા થા । વહાં પહુંચ કર ઉન્હોં ને અપને પાચજન્ય શ્વેતશસ્ત્ર કો જો અપની સેનાકો હર્પ કાં જનક ણવ શત્રુ સેના કા સહારક થા ણવ ગોક્ષીર તથા હાર કે જૈસા ધવલ વર્ણવાલા થા ઉઠાયા । હસકી પ્રમા મલ્લિકા નિર્ગુળી કુદપુષ્પ ણવ ચન્દ્રમાકે જૈસી ઉડ્ડવલ થી । (પરામુસિન્તા મુહવાયપૂરિય કરેઃ) હસે ઉઠાકર ઉન્હોં ને મુહ સે વજાયા-(તણ તસ્સ પટમનામ્હસ્સ તેણ સસસદેણ ચલહમાણ હ્ય જાવ પહિસેહિણ) તત્ત હમ પદ્મનામ કી સેના

તેની સાથે હુ હવે મેદાને પડુ છુ આમા વિજય મને જ પ્રાપ્ત થશે, પદ્મ નામ રાજાને નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ-વાસુદેવ રથ ઉપર સવાર થા ગયા અને સવાર થઈને જ્યા પદ્મનામ રાજા હતો ત્યા પહોંચ્યા ત્યા પહોંચીને તેમણે પોતાના પાચજન્ય સફેદ શ અને-કે જે તેમની સેના માટે હરોતપાદક તેમજ શત્રુઓની સેના માટે સહાર રૂપ હતો તથા ગાયના દૂધ અને હારના જેવો સફેદ હતો-હાથમા લીધો તે શ અને કાતિ મલ્લિકા નિર્ગુળી કુદ પુષ્પ અને ચન્દ્ર જેવી હતી (પરામુસિન્તા મુહવાયપૂરિય કરેઃ) હઈને તેમણે મુખથી વગાડ્યો (તસ્સ પટમનામ્હસ્સ તેણ સસસદેણ જાવ પહિસેહિ

तिभाए हते ' बलत्रिभागो हतः-सैन्यस्य तृतीयांशो हतमथित यावत् दिशोदिश
प्रतिपेयित -प्रतिनिवृत्तः पलायित इत्यर्थः । ततस्तदनन्तर खलु स कृष्णो वासु-
देवो धनु परामृशति गृह्णाति, परामृश्य ' वेढो ' वेष्ट वर्णकः धनुर्विपयक वर्णन
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिवो विज्ञेयमित्यर्थः, ' धनु पूरेड ' धनुः पूरयति धनुषि गुणमारो-
पयति पूरयित्वा धनुः शब्द करोति तत खलु तस्य पद्मनाभस्य द्वितीयवार ' बल
तिभाए ' बलत्रिभाग तस्य सैन्यस्य तृतीयोभागस्तेन धनुः शब्देन ' ह्यमहिय
पपरनिगडिय विन्मद्वयपडागे ' ह्यमथितप्रपरनिपतितचिह्न-वज्रपताको यावद्

का त्रिभाग उस शस्त्र के शब्द से हत हो गया मथित हो गया यावत्
एक दिशा से दूसरी दिशा की तरफ भाग गया । तएण से कण्हे वासु-
देवे धनु परामुसइ, वेढो धनु पूरेड, पूरित्ता धनुसइ करेइ) इसके बाद
कृष्ण वासुदेवने धनुष को उठाया । इस धनुष को वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञ-
प्ति में किया गया है । सो वहा से जानना चाहिये उठाकर उन्होंने उस
पर ज्या का आरोपण किया फिर उसे चढाया-सो उससे शब्द हुआ
(तएण तस्स पडमनाभस्स दोच्चे बलडभाए तेण धनुसइण ह्यमहिय
जाव पडिसेहिए, तएण से पडमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्था
मे अण्णे, अवीरिए अपुरिक्कारपरक्कमे अव्वारणिज्जत्ति कट्ठु सिग्घ
तुरिय जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ) तब उस पद्मनाभ राजा
की सैन्य का तृतीयभाग उस धनुष के शब्द से हत हो गया, मथित
हो गया, उस की प्रवर चिह्न स्वरूप ध्वजापताकाएँ सब गिर गई यावत्

शब्दधी न हत थई गयो, मथित थई गयो यावत् ओइ दिशा तरइधी भीछ
शिा तरइ नाही गयो (तएण से कण्हे वासुदेवे धनु परामुसइ, वेढो धनु
पूरेइ, पूरित्ता धनुसइ करेइ) त्थारपधी कृष्ण-वासुदेवे धनुष उठाव्थु आ
धनुषधु वर्णन न जम्बूद्वीप प्रज्ञप्तिभा करवाभा आव्थु छे जिहासुओओ त्थाधी
नणी लेवु लेथओ उठावीने तेओओ तेनी उपर प्रत्यथा अठावी त्थारपधी
धनुषने अठाव्थु अने तेनाधी शब्द थयो—

(तएण तस्स पडमनाभस्स दोच्चे बलडभाए तेण धनुसइण ह्यमहिय जाव
पडिसेहिए, तएण से पडमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अण्णे,
अवीरिए अपुरिक्कारपरक्कमे अव्वारणिज्जत्ति कट्ठु सिग्घ तुरिय जेणेव अमर-
कंका तेणेव उवागच्छइ)

ते पद्मनाभ राजनी मेनाने नीले लाग ते धनुषना शब्दधी न हत थई
गयो, मथित थई गयो, तेनी प्रवर चिह्न-स्वरूप ध्वजा पताकाओ नधी पडी

युय हे देवानुमियाः । ' अह नो पउमणां राया ' ' अह नो पन्ननामो राजा ' =
अहमेव जेता भवामि, न तु पन्ननामो राजा, इति राजा पन्ननामेन राजा मां
युयामि, इत्युक्त्वा रथ ' दुग्द ' दूरोदति-आरोऽति-ग रुग्ण रामुदेवः पन्न
नामेन सह योद्धु रथमागच्छान इत्यर्थः । आगच्छ यन्त्र पन्ननामो राजा तत्रैव
पागच्छति, उपागत्य ' सेव ' श्वेत-गोभीगदाभ्यामल=गोदुग्मान्-दारुण धवल
शुक्ल ' तगमोद्विगिदुगारुदुग्दगन्निगात ' ' तगमोद्विग ' मल्लिका अथ
देशीयः शब्द. सिन्दुरारो=निर्गुण्टी, रुग्ण-रुग्णनाम्ना प्रमिदः श्वेतपुष्पविशेषः,
इन्दुश्वन्द्रस्तद्वत् सनिकाग-प्रभा यस्य स त, निययालम्प ' तिज्जगत्स्य रक्ती
यसेनाय ' हरिमज्जण ' हर्षजनन-हर्षोत्पादक, ' रिउमेण विणासरर ' रिपुमेन्य
विनाशकर=शत्रुसेन्यालहारक पाञ्चनन्यशः, पाञ्चनन्यनामक द्रव्य ' परामुसि परा
मृशति हस्ते मृशति, परामृश्य ' मृशायपूरिय करे ' मुख्यातपूरितमुपमानेन मात
करोति-त्रादयतीत्यर्थः । ततः खलु तस्य पन्ननामस्य तेन शत्रुशब्देन ' वर

स्त चित्तुध्वज पताका घाला घनाते-वह तुम्हें ऐसा नती बनाना-परन्तु
ऐसा तुम लोगों का मन में धारा त्रिगर सकली भूत नहीं हुआ अतः
देवानुमियो । अथ देखो-में उसके साथ युद्धरत होता हूँ इसमें मैं ही
जीतूंगा पद्मनाभ राजा नहीं । ऐसा कहकर वे कृष्णवासुदेव रथपर
सवार हो गये । और सवार होकर वे वहाँ पहुँचे जहाँ पद्मनाभ राजा
था । वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने अपने पाचजन्य श्वेतशस्त्र को जो अपनी
सेनाको हर्ष का जनक एवं शत्रु सेना का सहारक था एवं गोक्षीर तथा
हार के जैसा धवल वर्णवाला था उठाया । इसकी प्रभा मल्लिका निर्गुण्टी
कुदपुष्प एवं चन्द्रमाके जैसी उज्ज्वल थी । (परामुसित्ता मुख्यापूरिय करे)
उसे उठाकर उन्होंने ने मुँह से बजाया-(तएण तस्स पउमणाहस्स तेण
सखसहेण बलहभाए हय जाव पडिसेहिए) तब उस पद्मनाभ की सेना

तेनी साथे छु डवे गेहाने पडु छु आमा विजय भने न प्राप्त थरो, पन्न
नाभ राजाने नहि आभ कडीने कृष्ण-वासुदेव रथ उपर सवार थु गया
अने सवार यधने न्या पन्ननाभ राजा હતો त्या પહોચ્યા त्या પહોચીને
તેમણે પોતાના પાચજન્ય સફેદ શસ્ત્રને-કે જે તેમની સેના માટે હરોત્પાદક
તેમજ શત્રુઓની સેના માટે સહાર રૂપ હતો તથા ગાયના દૂધ અને હારના
જેવો સફેદ હતો-હાથમા લીધો તે શસ્ત્રની કાતિ મલ્લિકા નિર્ગુણ્ટી કદ પુષ્પ
અને ચન્દ્ર જેવી હતી (પરામુસિત્તા મુહવાયપૂરિય કરેહ) લઈને તેમણે
મુખથી વગાડ્યો (તएण तस्स पउमणाहस्स तेण सखसहेण बलहभाए हय
जाव पडिसेहिए) ते वधते ते पन्ननाभ राजानी सेनानो ।

वासुदेवो यत्रैवामरुद्धा तत्रोवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यव
रोहति प्रत्यवरोह्य, 'वेडव्वियसमुग्घाएण' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीरं निर्मातुं
मात्मप्रदेशानां उद्दिष्टं सारणेन खलु 'समोहणइ' समुद्घातं करोति समुद्घातं
एकं महत् 'णरसोहरूप' नरसिंहरूप 'विउव्वइ' विकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन
करोति विकुर्व्यं महता २ शब्देन 'पादददरएण' पाददर्दरक=भूमौ चरणाघातं
करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरकेण=भूमौ
चरणाघातेन कृतेन सता अमरकङ्काराजधानी 'सभग्गपागारगोपुराट्टालयचरिय-
तोरणपलहत्थियपवरभवणसिरिधरा' सम्भग्नप्राकारगोपुराट्टालरुचरिकातोरणपर्य-
स्तितपवरभजनश्रीगृहा=तत्र सम्भग्नानि-प्राकारश्च गोपुराणि च अट्टालकाश्च चरिका

जहावह अमरकका यी चहा गये (उवा०) चहा जाकर के (रह ठवेइ,
ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहत्ता वेडव्वियसमुग्घाएण समोह-
णइ) उन्होंने अपने रथको खड़ा किया-खड़ा करके फिर वे उससे नीचे
उतरे। नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया। वैक्रियशरीरको निर्माण
करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होना है-उसको
नम वैक्रिय समुद्घात है। (एग मह णरसिंहरूप विउव्वइ विउव्वित्ता
महया २ सहेण पादददरएण कएण समाणेण अमरकका रायहाणी सभग्ग
पागारगोपुराट्टालचरियतोरण पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्स
रस्स धरणियले सन्निवइया) इस समुद्घातके द्वारा उन्होंने एक विशाल
काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके
अपनी भयकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया। इस
तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकका राजधानी की

गया (उवा०) त्या ७४ने (रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहत्ता
वेडव्वियसमुग्घाएण समोहणइ) तेमछे पोताना रथने छेले राख्ये, छेले
राखीने तेओ तेमाथी नीचे उतया नीचे उतरीने तेमछे वैक्रिय समुद्घात क्ये
वैक्रिय शरीरने जनाववा भाटे जे आत्मप्रदेशोने जडार काढवाभा आवे छे ते
वैक्रिय समुद्घात कहेवाय छे

(एग मह णरसिंहरूप विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सहेण पादददरएण
कएण समाणेण अमरकका रायहाणी सभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरण
पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया)

आ समुद्घात वडे तेमछे ओक विशाल काय नरसिंह रूपनी विकुर्वणा
करी नरसिंह रूपनी विकुर्वणा करीने पोतानी लयकर गर्जनाथी भूमि उपर
थरछेले आघात क्ये आ रीते गर्जनापूर्वक करायेला थरछाघातथी अभर-

दिशो दिश प्रतिपेक्षितः, तत गच्छ म पद्मनाभो राजा ' त्रिभागवत्प्रसेसे ' त्रिभागवत्प्रसेषः तृतीयांशप्रतिष्ठापनान् मत् अस्यामा, अमरः, अर्थात्, अस्थामेत्पादि मान्याख्यातम् भृशप्रकारपराक्रम-पौरुषपराक्रमरहितः, अत्रारणीयः-पाणान् धारायितुमशक्तः, इति कृत्या=इति विचार्य श्रीध त्वरित यत्रैव मरकका तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अमरकका राजधानीमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य द्वाराणि ' पिहेइ ' पिधत्ते, रोधमञ्ज=दुर्ग निगम्य तिष्ठति, ततः गच्छ स कृष्णो

वह एकदिशा से दूसरी दिशा में भाग गया अथवा भागने में असमर्थ बन गया। इस के बाद तृतीयांशप्रतिष्ठा सेना चला होकर वह पद्मनाभराजा बल रहित हो गया, पर्याप्त सैन्य रहित हो गया एवं अन्तरिक शक्ति-उत्साह हीन हो गया। अतः वह पौन्प पराक्रम से रहित होने के कारण रणभूमि में ठहरने के योग्य नहीं रहा। अथवा प्राणों को धारण करने में भी असमर्थ बन गया। इसलिये वह वहाँ से शीघ्र चढ़ी उतावली से जहाँ अमरकका नगरी थी वहाँ आ गया। (उवागच्छित्ता अमरकका रायहाणि अणुपविसिद्ध, अणुपविसित्ता दाराइ पिहेइ पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तण्ण से कण्हे वासुदेवे, जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ) वहाँ आकर वह अमरकका राजधानी में गया। जाकर उसने दरवाजोंको बंद करवा दिया। बंद करवाकर फिर वह अपने दुर्ग (किल्ला)की रक्षा करता हुआ वहाँ ठहरा। इसके बाद कृष्णवासुदेव

गर्ध यावत् ते मेनानो भाग ओक दिशा तरुदथी भीच्छदिशा तरु नाशी गये। अथवा तो ते नाशी जवाभा पणु असमर्थ थछ गये। त्वारपछी नीला भाग जेटली सेना ज जेनी पास रह्य छे जेवो ते पद्मनाभ राजा साव निजज थछ गये, पर्याप्त सैन्य रहित थछ गये। अने आतरिक शक्ति-उत्साह रहित थछ गये। ते पौन्प पराक्रम वगरनो थछ ते रणभूमिमा टकी शक्ते तेम पणु रह्यो नहि अथवा तो ते प्राणोने धारणु करवाभा पणु असमर्थ थछ गये। जेथी ते सत्वर जेव अमरकका नगरी छती त्या आवी गये।

(उवागच्छित्ता अमरकका रायहाणि अणुपविसिद्ध, अणुपविसित्ता-दाराइ पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तण्ण से कण्हे वासुदेवे, जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ)

त्या आवीने ते अमरकका राजधानीमा गये, त्या जधने तेछे दरवा जेओने जध करावी छीधा जध उरावीने ते चोत्ताना दुर्गानी रक्षा करता त्या रक्षाथे। त्वारपछी कृष्ण-वासुदेव जेव अमरकका नाथे न " त्या

वासुदेवो यत्रैवामरुद्धा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यव
रोहति प्रत्यवरुह्य, 'वेडव्वियसमुग्घाएण' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीरं निर्मातुं
मात्मप्रदेशानां वहिर्निःसारणेन खलु 'समोहणइ' समुद्घातं करोति समुद्-न्ति
एकं महत् 'णरसीहरूप' नरसिंहरूप 'विउव्वइ' विकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन
करोति विकुर्व्यं महता २ शब्देन 'पाददरएण' पाददर्दरु=भूमौ चरणाघातं
करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरुकेण=भूमौ
चरणाघातेन कृतेन सता अमररुद्धाराज्यानी 'संभगपागारगोपुराट्टालयचरिय
तोरणपलहत्थियपवरभवणमिरिधरा' संभगनपाकारगोपुराट्टालकचरिकातोरणपर्य-
स्तितपवरभवनश्रीगृहा=तत्र संभगानि-पाकारश्च गोपुराणि च अट्टालकाश्च चरिका

जहावह अमरकका श्री वहा गये (उवा०) वहा जाकर के (रह ठवेइ,
ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहित्ता वेडव्वियसमुग्घाएण समोह-
णइ) उन्होंने अपने रथको खड़ा किया-खड़ा करके फिर वे उससे नीचे
उतरे । नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया । वैक्रियशरीरको निर्माण
करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होना है-उसको
नम वैक्रिय समुद्घात है । (एग मह णरसिहरूपं विउव्वइ विउव्वित्ता
महया २ सहेण पाददरएण कएण समाणेण अमरकका रायहाणी संभग
पागारगोपुराट्टालचरियतोरण पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्स
रस्स णरणियले सन्नियइया) इस समुद्घातके द्वारा उन्होंने एक विशाल
काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके
अपनी भयंकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया । इस
तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकका राज्यानी की

गया (उवा०) त्या अधने (रह ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहित्ता
वेडव्वियसमुग्घाएण समोहणइ) तेभए पोताना रथने छिले राधेओ, छिले
राभीने तेओ तेभाथी नीचे उतया नीचे उतरीने तेभए वैक्रिय समुद्घात कर्ये
वैक्रिय शरीरने जनाववा भाटे जे आत्मप्रदेशेने जहार काढवामा आवे छे ते
वैक्रिय समुद्घात कहेवाय छे

(एग मह णरसिहरूपं विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सहेण पाददरएण
कएण समाणेण अमरकका रायहाणी संभगपागारगोपुराट्टालयचरियतोरण
पलहत्थियपवरभवणसिरिधरा सरस्सरस्स णरणियले सन्नियइया)

आ समुद्धान वडे तेभए ओक विशाल काय नरसिंह रूपनी विकुर्वण
करी नरसिंह रूपनी विकुर्वण करीने पोतानी लयकर गर्जनाथी भूमि उपर
थरखोना आघात कर्ये आ रीते गर्जनापूर्वक कसयेला थरखाघातथी अमर-

ચ તોરણાનિ ચ યસ્યાં સા તથા, તત્ર ગોપુરાણિ-મતોત્પઃ અટ્ટાનકા-પ્રાકારો
પરિસ્વાન્ ત્રિશેષાઃ, ચરિકા-નગરમાસાગન્તરઽષ્ટાસ્તોમાર્ગ' । તથા-પર્યન્નિતાનિ-
સર્વેતઃ ક્ષિપ્તાનિ મયરમયનાનિ શ્રીગૃહાણિ-મગ્ડાગારાણિ કોગાગારાણિ ચ યમ્યાં સા
તથા, તત્તો દ્વિપદઃ કર્મધારય । કૃષ્ણસામુદેવન ભૂમી ચરણાઘાતશ્ચન્દ્રેન અમર
કકારાજધાન્યાઃ માસારગોપુરાદિક ત્રિગમિતમિત્યર્થઃ, તથા-‘સરસ્સરસ્સ’
અનુરુણશબ્દોઽયમ્ નિપત્તનક્રિપાચિગ્ગેષ્ય ધરણિતલે સનિપતિતા=અમરકકા
રાજધાની મરમ્પરસ્સેતિ શ્ચન્દ્ર કુમાંળા ભૂમી પતિતેત્યર્થઃ । તતઃ સલુ સ પદ્મનાભો
રાજા અમરકકા રાજધાની સમગ્નમાકારાદિસા યામત્-ધરણિતલે સનિપતિતા
દૃષ્ટ્વા ખીતઃ ઘ્રસ્ત, ઉદ્દિગ્ન, સજાતમય, દ્રૌપદ્યા દેવ્યા શરણમુપૈતિ પ્રાપ્નોતિ,
તતઃ લલ્લ સા દ્રૌપદી દેવી પદ્મનાભ રાજાનમેયમયાદીત્-કિં લલ્લ ત્વ દે દેશતુ
પ્રિય ! ન જાનાસિ કૃષ્ણસ્ય સામુદેવસ્યોત્તમપુરુષસ્ય ત્રિપિય કુર્વન્ મામિદ અ

ગલિયોં કો અટારિયોં કો, ચરિકાઓં કો, શ્રી ગૃહોં કો કોશાગારો કો
શ્રી કૃષ્ણ ને ધ્વસ કરદિયા । તથા વહ અમરકકા રાજધાની મી મરસર
શબ્દ કરતી હુઈં ઉસ ગર્જના પૂર્વક ક્રિયે ગયે ચરણાઘાત સે જમીન પર
ગિર પહી । (તણ સે પડમનામે રાયા, અમરકકા રાયહાણિ સમગ્ન
જાવ પાસિત્તા, મીણ દોવઈંણ દેવીણ સરણ ઉવેઈ) તથ પદ્મનાભ રાજા
અમરકકા રાજધાની કો પ્રાકાર ગોપુર આદિ કી ધ્વસ્ત અવસ્થાવાલી
દેલકર અત્યન્ત ખીત હુઆ ઘ્રસ્ત હુઆ, ઉદ્દિગ્ન હુઆ । ઔર સજાત
મય સપત્ન હોકર દ્રૌપદી દેવી કી શરણ મેં પહુંચા । (તણ સા દોવઈં
દેવી, પડમનાભ રાય એવ વયાસી) તથ ઉસ દ્રૌપદી દેવી ને પદ્મનાભ
રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-(કિણ્ણ તુમ દેવાણુપ્પિયા ! ન જાણાસિ કણ્ણ

કકા રાજધાનીની શેરીઓને, અગરીઓને ચરિકાઓને, શ્રીગૃહોને, કોશા
ગારોને શ્રીકૃષ્ણે નદ ઠરી નાખ્યા તેમજ તે અમરકકા રાજધાની પણ સ સર
શબ્દ કરતી ગર્જનાપૂર્વક કરવામા આવેલા ચરણાઘાતથી જમીનદોસ્ત થઈ ગઈ
(તણ સે પડમનામે રાયા, અમરકકા રાયહાણિ સમગ્ન જાવ પાસિત્તા,
મીણ દોવઈંણ દેવીણ સરણ ઉવેઈ)

પદ્મનાભ રાજા અમરકકા રાજધાનીના પ્રાકાર, ગોપુર વગેરેનો વિનાશ
લેઈને ખૂબ જ બયલીત થઈ ગયો, ઘ્રસ્ત થઈ ગયો તેમજ ઉદ્દિગ્ન થઈ ગયો
અને સમતલય સપત્ન થઈને દ્રૌપદી દેવીની શરણે પહોંચ્યો । (તણ સા
દોવઈં દેવી પડમનાભ રાય એવ વયાસી) ત્યારે તે દ્રૌપદી દેવીએ પદ્મનાભ
રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

हव्य-शीघ्रम् आनयमि-आनीतवानसि तत्-तस्मात्-‘ एवमपि गए ’ एवमपि गते-इत्थंममापहरणे कृतेऽपि, गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रिय ! स्नातः ‘ उल्लपड-साडए ’ आर्द्रपट्टसाटकः स्नानेनाऽऽर्द्राकृतोत्तरीयपरिधानवस्त्रपारी ‘ अचल-वत्यणियत्ये ’ अवचूलवस्त्रणियत्यः=अचूलम्-अगोमुख नीचैर्लम्पमान चूल-वस्त्राञ्चल-वस्त्रमाप्त यथा भवति तथा ‘ णियत्ये ’ परिहित वस्त्र येन स तथा-स्त्रीणा परिवानमिव चरणपर्यन्तलम्पितवस्त्रान्त यथास्यात्तथा परिहितवस्त्र इत्यर्थः । ‘ अतेउरपरियालसपरिवुडे ’ अन्त पुरपरियारमपरिवृतः=स्त्री परिवारेण सहितः, ‘ अग्गाइ ’ अग्र्याणि वराणि रत्नानि गृहीत्वा मा पुरतः ‘ काउ ’ कृत्वा कृष्ण

स्स वा सुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पि प करेमाणे मम इह हव्वमाणेसि) हे देवानुप्रिय ! क्या तुम उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव को नहीं जानते हो जो उनको अनिष्ट कर तुम मुझे यहां ले आये हो । (त एवमविगए गच्छहण तुम देवानुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचलवत्यणियत्ये अतेउरपरियालसपरिवुडे, अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय, मम पुरओ, काउ कण्ह वासुदेव करयलपायपडिए सरण उवेहि) खैर अब इस बात को जाने दो-हे देवानुप्रिय ! तुम स्नान करो, और गीले वस्त्र पहिने हुए ही श्री कृष्णवासुदेव की शरण में जाओ । जाते समय तुम स्त्रियों के परिवान के समान चरण पर्यन्त लटकते हुए वस्त्र पहिनकर जाना । अकेले मत जाना किन्तु अपने अंत पुर की समस्त स्त्रियों को साथ में ले जाना । रीते हाथ भी मत जाना किन्तु भेट निमित्त वेश कीमती रत्नों को लेकर और मुझे आगे करके चलना ।

(विष्णु तुम देवानुप्पिया ! न जानासि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पिय करेमाणे मम इह हव्वमाणेसि)

हे देवानुप्रिय ! शु तमे उत्तम पुरुष कृष्ण-वासुदेवने ओणभता नथी भने अर्द्धी लापीने तमे तेमनु अ अनिष्ट कर्हुं छे

(त एवमविगए गच्छहण तुम देवानुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचलवत्यणियत्ये अतेउरपरियालसपरिवुडे अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय, मम पुरतो, काउ कण्ह वासुदेव करयलपायपडिए सरण उवेहि)

अर, छोड़ो ओ बातने हे देवानुप्रिय ! तमे हवे स्नान करो अने भीना वस्त्रोधी अ श्रीकृष्ण वासुदेवनी शरणमा नओ जाती वभते तमे श्रीओना परिधान (अस्त्रिया) नी नेमअ पग सुधी लटकता वसो पडेरने तमे ओकला जाता नहि परतु रघुवासनी नधी ओओने साये लधने नओ तमे भाली हाये तेमनी पाये जाता नहि पणु कर्छि सेट स्वइय किमती वओने लधने

વાસુદેવ 'કરયલપાયપટિષ' કરતલપાદપતિઃ—સંગોજિતકરતન્દ્રયઃ, પાદયોઃ
પતિતઃ મન્ નારણ ઉપૈદિ—પ્રાયમ્પમામિતિયદર્ ઉપગમો મયેત્યર્થઃ । દે દેવાનુ
પ્રિય ! 'પણિયડયાન્ડલા' પ્રણિપતિતયમ્પન્ના-ચાળોપગ્નિપતિતાનાં વત્તમાઃ
સ્નેહાન્તે સ્વલુ ઉત્તમપુરિયા મયન્તિ પ્રણામમાગેણ મહાપુરુષાઃ પ્રમીદન્તીત્યર્થઃ ।
તતસ્તદનન્તર મ પચનામો રાજા દ્રૌપદા દયા એનમર્ગ=ઉક્તકથનરૂપમર્થ પ્રતિ-
શ્રુગોતિ-મ્મીક્રોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય સ્નાતો યામ્ શરણમુપૈતિ દ્રૌપદીવાનમનુમુલ્ય
પચનામો રાજા કૃષ્ણવાસુદેવમ્પ શરણમુપગમન્ ઇત્યર્થઃ । ઉપેત્ય કરતલપરિગૃહીત
દશનવ ગિર આવર્તે મમ્પ્રકેઽજલિ કુ રા પા=૧૨૫માગપ્રકારેણ, આદીન્=દૃષ્ટા

ઘટ્ટા પહુચ કર તુન દોનો તથ જોડ કર ઉનકે ચરણોં મેં ગિર જાના
(પણિયડયાન્ડલા ણ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસાં તણ્ણ સે પડમનામે
દોવડેણ દેવીય ણમમ્પ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા ઘટ્ટા જાવ સરણ ઉવેહ,
ઉવિત્તા, કરયલબ્બવયાસી દિટ્ઠાણ દેવાણુપ્પિયાણ ઇદ્ધી, જાવ પરવકમે
ત સ્વામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા ।) દે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષ જો હુઆ
કરતે હું વે પ્રણિરતિતવત્તલ હુઆ કરતે હું—પ્રણામમાગ્રસે મહાપુરુષ પ્રમન્ન
હો જાયા કરતે હું—અર્થાત્ નમન કરનેવાલેકો વે નહીં મારતે તથ પચનામ
રાજાને દ્રૌપદી દેવીકે હસ શિક્ષાપદ કથનરૂપ અર્ચકો સ્વીકાર કર લિયા ।
સ્વીકાર કર વાદમેં ઉસને સ્નાન ક્રિયા, યાવત્ વત્ત દ્રૌપદીકે કહેં અનુસાર
કૃષ્ણવાસુદેવની શરણમેં પહુચ ગયા । શરણ મેં પહુચ કર ઉસને અપને
દોનોં હાથો કો જોડકર અજલિ પનાઈં ઓર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરકે
ઉસે શિરપર રખા । ફિર હસ પ્રકાર ચોલા—આપ દેવાણુપ્રિયકી મેંને ક્કલિ

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો ત્યા પહોચીને તમે બને હાથ ભેડીને
તેમના પગે પડજો

(પણિયડયાન્ડલાણ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા, તણ્ણ સે પડમનામે દોવડેણ
દેવીય ણમમ્પ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા ઘટ્ટા જાવ સરણ ઉવેહ, ઉવિત્તા કરયલ્લ
એ વયાસી, દિટ્ઠા ણ દેવાણુપ્પિયાણ ઇદ્ધી જાવ પરવકમે ત સ્વામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા)

હે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષો તેમની સામે નિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે
એકદમ વત્તલ થઈ બેઠે છે કહ્યા નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ બેઠે
છે આ બધું સાલળીને પચનામ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપદ કથન રૂપ
અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના
કહ્યા મુજબજ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણુમાં ગયો શરણુમાં બેઠેને તેણે પોતાના
બંને હાથ ભેડીને અબલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ
ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો

સહુ દેવાનુપ્રિયાણામ્ ઋદ્ધિર્યાત્ત પરાક્રમઃ-તત્=તસ્માત્ ક્ષમયામિ શ્વહુ હે દેવા-
નુપ્રિયાઃ ! યાવત્ ક્ષમન્તુ સહુ યાવત્ નાહ ભૂયો ભૂયઃ એવ કરણતયા=પુનરેવ
ન પરિપ્રયામિ, ઇતિ કૃત્વા-રત્યુક્ત્વા-‘ પજલિબુઢે ’ પ્રાજ્જલિપુટ-સયોજિત-
કરતલદ્વયઃ પાદપતિતેઃ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય દ્રૌપદીં ‘ સાહત્થિ ’ સ્પહસ્તેન, ઉપ-
નયતિ । તતઃ રાહુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવ પદ્મનાભમેવમગાદીત્-હ ભોઃ ! પદ્મનાભ !
અપ્રાર્થિતમાર્થિત ! =હે મરણવાઝઝરુ ! ૪ કિં સહુ ત્વ ન જાનાસિ મમ મગિનીં
દ્રૌપદી દેવીમિહહવ્યમાનયન્, ‘ ત ’ તત્-તસ્માત્ ‘ એવમપિ ગણ ’ એવમપિગતે
અનેનપ્રસારેણ શરણ પ્રાપ્તે સતિ, નાસ્તિ તે તવ મદ્ભયમિદાનીમિતિ કૃત્વા પ્રતિ
વિસર્જયતિ । પ્રતિપિસૃજ્ય દ્રૌપદીં દેવીં યુક્તાતિ, યુક્તીત્યા રથ દૂરોઢતિ=આરોહયતિ

દેવલી, યાવત્ પરાક્રમ દેવ લિયા । હે દેવાનુપ્રિય ! મેં અપને અપરાધ
કી ક્ષમા માંગતા હું । (જાવ સમતુ) યાવત્ આપ મુજે ક્ષમા દે । (જ
જાવ ણા હ મુજો ૨ એવ કરણાણ) અત્ર મેં પુનઃ એમા નહીં કરુગા ।
(ત્તિ કદ્દહુ પજલિબુઢે પાયવઢિણ કણહસ્સ વાસુદેવસ્સ દોવઢ દેવિં સા
હત્થિ ઉવણેહ) હસ પ્રકાર કહકર વહ દોનોં હાથ જોઢ ઉન કૃષ્ણવા-
સુદેવ કે પૈરોં પર ગિર પઢા ઓર અપને હાથ સે હી ઉસને ફિર ઉનકે
લિયે દ્રૌપદી સૌ પદી । (તણ સે કણે વાસુદેવે પડમણાભ એવ વયાસી
-હ ભો ! પડમણાભા ! અપત્થિયપત્થિયા ૪ કિણ્ણ તુમ ણ જાણાસિ
મમ મગિણિ દોવઢ દેવિં હહ હવ્વ માણમાણે ત એવમવિગણ, ણત્થિ તે
મમાર્હિતો ડયાણિં મયમત્થિ ત્તિ કદ્દહુ પડમણાભ પઢિવિસજ્જેહ, પઢિ
વિસજ્જિત્તા દોવઢ દેવિં ગિણ્હહ, ગિણ્હિત્તા રહ દુરુહેહ, દુરુહિત્તા જેણેવ

મે ઋદ્ધિ ભેધ લીધી છે, યાવત્ તમાર પરાક્રમ પણ મે ભેધ લીધુ છે હે
દેવાનુપ્રિય ! હું માર અપરાધ બદલ ક્ષમા માગુ છું (જાવ સમતુ) યાવત્
તમે મને ક્ષમા કરો (જ જાવ ણા હ મુજો ૨ એવ કરણાણ) હવે ફરી હું
આધુ કદાપિ નહિ કરે (ત્તિ કદ્દહુ પજલિબુઢે પાયવઢિણ કણહસ્સ વાસુદેવસ્સ
દોવઢ દેવિ સાહત્થિ ઉવણેહ) આ પ્રમાણે કહીને તે બને હાથ ભેડીને
કૃષ્ણ-વાસુદેવના પગોમા આગોટી ગયો અને ત્યારપછી તેણે પોતાના હાથથીજ
દ્રૌપદી તેમને સોંપી દેધી

(તણ સે કહે વાસુદેવે પડમણાભ એવ વયાસી-હ ભો ! પડમણાભા !
અપત્થિયપત્થિયા ૪ કિણ્ણ તુમ ણ જાણાસિ મમ મગિણિં દોવઢ દેવિં હહ, હવ્વ
માણમાણે ત એવમપિ ગણ, ણત્થિ તે મમાર્હિતો ડયાણિં મયમત્થિ ત્તિકદ્દહુ પડમ-
ણાભ પટિવિસજ્જેહ પઢિવિસજ્જિત્તા દોવઢ દેવિં ગિણ્હહ, ગિણ્હિત્તા રહ દુરુહેહ,

વાસુદેવ 'કરચલપાયપટિષ' કરતરૂપાદપનિવ-મંગોનિતરતત્ત્વદ્વયઃ, પાદયોઃ
પતિતઃ મન્ શરણ ઉપૈદિ-ત્રાયસ્યમામિતિપદન્ ઉપગતો મથેત્યર્થઃ । હે દેવાનુ
પ્રિય । 'પણિવડ્યચ્છલો' પ્રણિવનિતરત્ત્વ-ચાળોપરિનિપતિતના રત્ત્વનાઃ
સ્નેહ્યન્તે સ્વલુ ઉત્તમપુરુષા મરતિ મળામમાગેણ મહાપુરુષાઃ પ્રસીદન્તીત્યર્થઃ ।
તતસ્તદનન્તર મ પ્રચનામો રાજા દ્રૌપદ્યા દેવ્યા એનમર્થે=ઉક્તકથનરૂપમર્થ પ્રતિ-
શ્રુગોતિ-સ્વીકરોતિ, પ્રતિશ્રુત્ય સ્નાતો યાન્ શરણમુપૈતિ દ્રૌપદીયનમનુમુલ્ય
પચનામો રાજા કૃષ્ણવાસુદેવસ્ય શરણમુપગત ઉત્યર્થઃ । ઉપૈત્ય કરતરૂપરિગૃહીત
દશનચ ગિર આરત મમ્મકેઽઞ્જિ કૃ તા પ્ર=ત્રયમાગપ્રકારેણ, આદીદ્=દૃષ્ટ્વા

ઘણા પહુંચ કર તુમ દોનો હાથ જોડ કર ઉનકે ચરણો મેં ગિર જાના
(પણિવડ્યચ્છલો જ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા તણ સે પડમનામે
દોવડેણ દેવીણ એયમદ્ધ પહિસુણેદ, પહિસુણિત્તા જ્ઞાણ જાવ સરણ ઉવેદ,
ઉવિત્તા, કરચલબચવયાસી દિઢાણ દેવાણુપ્પિયાણ ઇહી, જાવ પરચકમે
ત સ્વામેમિ જ દેવાણુપ્પિયા ।) હે દેવાણુપ્રિય । ઉત્તમ પુરુષ જો હુઆ
કરતે હં વે પ્રણિવનિતચલ્લ હુઆ કરતે હિ-મળામમાગસે મહાપુરુષ પ્રમલ્લ
હો જાયા કરતે હિ-અર્થાત્ નમન કરનેચાહેકો વે નહીં મારતે તથ પચનામ
રાજાને દ્રૌપદી દેવીકે હસ શિક્ષાપ્રદ કથનરૂપ અર્થકો સ્વીકાર કર લિયા ।
સ્વીકાર કર થાદમેં ઉસને સ્નાન ક્રિયા, યાવત્ વહ દ્રૌપદીકે રહેં અનુસાર
કૃષ્ણવાસુદેવ કી શરણમેં પહુંચ ગયા । શરણ મેં પહુંચ કર ઉસને અપને
દોનો હાથો કો જોડકર અજલિ પનાઈ ઓર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરકે
ઉસે શિરપર રગ્વા । ફિર હસ પ્રકાર ચોલા-આપ દેવાણુપ્રિયકી મેંને કદિ

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો ત્યા પહોચીને તમે બને હાથ ભેડીને
તેમના પગે પડજો

(પણિવડ્ય ચ્છલણ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા, તણ સે પડમનામે દોવડેણ
દેવીણ એયમદ્ધ પહિસુણેદ, પહિસુણિત્તા જ્ઞાણ જાવ સરણ ઉવેદ, ઉવિત્તા કરચલ
બચવયાસી, દિઢા જ દેવાણુપ્પિયાણ ઇહી જાવ પરચકમે ત સ્વામેમિ જ દેવાણુપ્પિયા ।)

હે દેવાણુપ્રિય । ઉત્તમ પુરુષો તેમની સાથે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે
એકદમ વતસલ થઈ બાંધ છે કેટલા નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ બાંધ
છે આ બધું સાંભળીને પચનામ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ
અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના
કથા સુજળ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણુમા ગયો શરણુમા બંધને તેણે પોતાના
બંને હાથ ભેડીને અબલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરી
ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો

खलु देवानुप्रियाणाम् ऋद्धिर्यावत् पराक्रमः—तत्=तस्मात् क्षमयामि खलु हे देवा
नुप्रियाः । यावत् क्षमन्तु खलु यावत् नाह भूयो भूय एव करणतया=पुनरेव
न करिष्यामि, इति कृत्वा—इत्युक्त्वा—‘पञ्जलिबुधे’ प्राञ्जलिपुट—सयोजित—
करतलद्वयः पादपतितः कृष्णस्य वासुदेवस्य द्रौपदीं ‘साहस्यि’ स्नहस्तेन, उप-
नयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेव पञ्चनाभमेवमनादीत्—ह भोः । पञ्चनाभ ।
अप्रार्थितमार्थित !—हे मरणवाञ्छुक ! ४ किं खलु त्वं न जानासि मम भगिनीं
द्रौपदीं देवीमिहदृश्यमानयन्, ‘त’ तत्—तस्मात् ‘एवमपि गए’ एवमपिगते
अनेनप्रसारेण शरणं प्राप्ते सति, नास्ति ते तव मद्भयमिदानीमिति कृत्वा प्रति
विसर्जयति । प्रतिपिच्छज्य द्रौपदीं देवीं गृह्णाति, गृहीत्वा रथं दूरोदति=आरोहयति

देवली, यावत् पराक्रम देव लिया । हे देवानुप्रिय । मैं अपने अपराध
की क्षमा मांगता हूँ । (जाव खमत्तु) यावत् आप मुझे क्षमा दें । (ण
जाव णा ह मुञ्जो २ एव करणाए) अरु मैं पुनः ऐसा नहीं करूंगा ।
(त्ति कट्टु पञ्जलिबुधे पायवडिण कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देविं सा
हस्यि उवणेइ) इस प्रकार कहकर वह दोनों हाथ जोड़ उन कृष्णवा-
सुदेव के पैरों पर गिर पड़ा और अपने हाथ से ही उसने फिर उनके
लिये द्रौपदी सौपदी । (तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी
—ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्ण तुम ण जानासि
मम भगिणि दोवइ देविं इह हव्व माणमाणे त एवमपि गए, णत्थि ते
ममार्हितो इयाणि मयमत्थि त्ति कट्टु पउमणाभ पडिविसज्जेइ, पडि
विसज्जित्ता दोवइ देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रह दुरुहेइ, दुरुहित्ता जेणेव

मैं ऋद्धि लेई लीधी छे, यावत् तमाइ पराक्रम पणु मे लेई लीधु छे हे
देवानुप्रिय । हु भारा अपराध भइल क्षमा मागु छु (जाव खमत्तु) यावत्
तमे भने क्षमा करे । (ण जाव णाह मुञ्जो २ एव करणाए) डेवे इरी हु
आपु उहपि नहि उर (त्ति कट्टु पञ्जलिबुधे पायवडिण कण्हस्स वासुदेवास
दोवइ इवि साहस्यि उवणेइ) आ प्रभाणु कहीने ते भने हाथ लेडीने
कृष्ण-वासुदेवना पणोभा आणोटी गयो अने त्यारपली तेणु पोताना हाथथीअ
द्रौपदी तेभने मोपी ईंधी

(तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी—ह भो ! पउमणाभा !
अपत्थियपत्थिया ४ किण्ण तुम ण जानासि मम भगिणिं दोवइ देविं इह, हव्व
माणमाणे त एवमपि गए, णत्थि ते ममार्हितो इयाणि मयमत्थि त्ति कट्टु पउम-
णाभ पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता दोवइ देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रह दुरुहेइ,

વાસુદેવ 'કરચલપાયપટિષ' કરતરૂપાદપતિઃ-મયોજિતઋતરૂઢયઃ, પાદયોઃ પતિતઃ મન્ શરણ ઉપૈદિ-ત્રાયસમામિતિયદન ઉપગતો મયેત્યર્થઃ' । દે દેવાનુ પ્રિય ! 'પણિયડયચ્છલા' પ્રણિવર્તિતવત્સલ-પ્રાણોપરિવિપતિતાના વત્સલાઃ સ્નેહાત્ સ્વત્ત્વ ઉત્તમપુરુષા મયતિ પ્રણામમાગ્રેણ મહાપુરુષા પ્રસીદન્તીત્યર્થઃ । તતસ્તદનન્તર મ પ્રગ્નનામો રાજા દ્રૌપદ્યા દેવ્યા પામય=ઉત્તમુચનન્પમર્થ મતિ-શ્રુગોતિ-મ્પ્રીક્ષોતિ, મતિશ્રુત્ય સ્નાતો યાત્ શરણમુપૈતિ દ્રૌપદીયનમનુમૃત્ય પદ્મનાભો રાજા કૃષ્ણવાસુદેવસ્ય શરણમુપગત ઇત્યર્થઃ । ઉપૈત્ય ઋતરૂપરિગૃહીત દશનવ શિર આરવે મમ્મકેઽઙ્ગિઠિ કૃ યા પૃ=૧/૧૫વાગપ્રકારેણ, આદીદ્=દૃષ્ટ્વા

વહા પહુંચ કર તુન દોનોં હાથ જોડ કર ઉનકે ચરણોં મેં ગિર જાના (પણિયડયચ્છલા ણ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસાં તણ્ણ સે પડમનામે દોવડેણ દેવીણ ઇયમઠ્ઠ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા ણહાણ જાવ સરણ ઉવેહ, ઉવિત્તા, કરચલબાગચયાસી દિટ્ઠાણ દેવાણુપ્પિયાણ ઇહી, જાવ પરવક્રમે ત સ્વામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા ।) દે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષ જો હુઆ કરતે હં વે પ્રણિવર્તિતવત્સલ હુઆ કરતે હં-પ્રણામમાત્રસે મહાપુરુષ પ્રમન્ન હો જાયા કરતે હૈં-અર્થાત્ નમન કરનેવાળેકો વે નહીં મારતે તવ પદ્મનાભ રાજાને દ્રૌપદી દેવીકે હસ શિક્ષાપ્રદ કથનરૂપ અર્ચકો સ્વીકાર કર લિયા । સ્વીકાર કર વાદમેં ઉસને સ્નાન ક્રિયા, યાવત્ વહ દ્રૌપદીકે કહેં અનુસાર કૃષ્ણવાસુદેવની શરણમેં પહુંચ ગયા । શરણ મેં પહુંચ કર ઉસને અપને દોનોં હાથો કો જોડકર અજલિ ઘનાઈ ઓર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરકે ઉસે શિરપર રખા । ફિર હસ પ્રકાર ચોલા-આપ દેવાણુપ્રિયકી મૈને કહિ

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો ત્યા પહોચીને તમે બને હાથ ભેડીને તેમના પગે પડજો

(પણિયડયચ્છલાણ દેવાણુપ્પિયા ઉત્તમપુરિસા, તણ્ણ સે પડમનામે દોવડેણ દેવીણ ઇયમઠ્ઠ પહિસુણેહ, પહિસુણિત્તા ણહાણ જાવ સરણ ઉવેહ, ઉવિત્તા કરચલબાગચયાસી, દિટ્ઠા ણ દેવાણુપ્પિયાણ ઇહી જાવ પરવક્રમે ત સ્વામેમિ ણ દેવાણુપ્પિયા ।)

હે દેવાણુપ્રિય ! ઉત્તમ પુરુષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા ભાણુસો પ્રત્યે એકદમ વત્સલ થઈ બંધ છે ફક્ત નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ બંધ છે આ બધું સાંભળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના કહ્યા મુજબજ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણુમાં ગયો શરણુમાં જઈને તેણે પોતાના બંને હાથ ભેડીને અબલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કરી । માથા ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો

मूलम्-तेणं कालेण तेणं समएणं धायइसडे दीवे पुरत्थि-
मिळे भारहे वासे चंपाणामं णयरी होत्था, पुण्णभदे चेइए, तत्थ
णं चंपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महिया
हिमवंत० वण्णओ, तेण कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए
अरहा चपाए पुण्णभदे समोसडे, कपिले वासुदेवे धम्म सुणेइ
तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्म सुणे-
माणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्धं सुणेइ, तएण तस्स कवि-
लस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था - किं
मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ?
जस्स ण अय संखसद्धे ममपिव मुहवायपूरिए वीय भवइ, तएण
मुणिसुव्वए अरहा कविल वासुदेवं एवं वयासी-से णूण ते
कविला वासुदेवा । मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्ध
आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए कि मन्ने जाव वीय भवइ, से
णूण कविला वासुदेवा । अयमट्ठे समट्ठे ? हता । अत्थि, नो
कविला । एव भूय वा३ जन्न एगे खेत्ते एगे जुगे समए दुवे
अरहता वा चक्रवट्ठी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु
उप्पज्जिजति उप्पज्जिजस्सति वा, एव खल्लु वासुदेवा । जवूदीवाओ
भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पंडुस्स रण्णो पुव्व-

वीच हो जहा जवूदीप नाम का द्वीप, जहा भरतक्षेत्र नाम का क्षेत्र था
उस ओर चल दिये ॥ सू० २९ ॥

स्थाने लक्ष्मि लवण्य समुद्रनी वन्धे यद्धिने न्या जणूदीप नामे द्वीप, अने
तेमा पण्य न्या लारतवर्ध नामे क्षेत्र छत्तु ते तरइ रवाना थया ॥ सूत्र २६ ॥

આરોગ યત્રી પત્ર પાંડવાસ્તર્જીરોપાગ છતિ, ઉપાગય પત્રાનાં પાંડવાનાં દ્રોપદી
દેવી 'માહન્ય' મ્વદ્મનેન, ઉપનયનિ=દદાતિ । તત' સત્ત્વ મ ક્રુણાઃ પત્રમિ'
પાંડવૈ માર્ધમાત્મણ પદ્મભીરૈર્લગમમુદ્મ્ય મયમ'યેન યત્રી જમ્બૂદ્વીપો
દ્વીપઃ, યત્રીચ મારત્ત પર્વ તત્રીચ માપાગ્યદ્ ગમનાય=ગત્તુ મરૂતઃ ॥ મૃ૦૨૦॥

પચ પદ્મવે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા પચન્ન પદ્મવાળ દોવદ દેવિ
માહન્ય ઉત્તરે) તથ ક્રુણવાસુદેવ ને પદ્મનાભ સે હમ પ્રકાર કહા
અરે ઓ પદ્મનાભ ! તુમ હમ તરજ સે અકાલ મેં હી મરણ કે અમિલાપી
કયોં યને યજ્ઞાતુલ્લે ગત પના નહી થા કિ દ્રોપદી મેરી યત્નિન હૈ । કયોં તુ
હમ કો યહાં લે આયા । ત્વર-જય તુ હમ રૂપ મેં મેરી જરણ મે આચુકા
હૈ-તો અપ તુલ્લે કિસીં ખી પ્રકાર કા મેરી તરફ સે ભય નહીં રહા-એસા
કહકર ક્રુણવાસુદેવ ને ઉસે ત્રિસર્જિત કર દિયા-અપને સ્થાન પર ઉસે
જાને કી આજ્ઞા દેદી-। ઘાટ મેં દ્રોપદી કો માથ મે લિયા ઓર લેકર વે
રથ પર આરૂઢ હુન । આરૂઢ હોકર ફિર વે, યહાં આયે-જહા પાચોં
પાંડવ યે વહા આકર ઉન્હોં ને દ્રોપદી કો અપને શયોં સે પાંચો પાંડવોં
કે સુપુર્દ કર દિયા । (તળળ કળ્લે પચેર્હિ પદ્મવેર્હિ સદ્ધિ અપ્પહદ્ધે છર્હિ
રહેર્હિ લવણસમુદ્ધ મઝ્જ મઝ્જેણ જેણેવ જવૂહીવે દીવે જેણેવ મારહે
વાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમનાણ) હસકે વાદ વે ક્રુણવાસુદેવ પાંચોં
૧ કે સાથ આત્મપટ્ટ હોકર ડહો રથોં કો લે લવણ સમુદ્ર સે ધીચોં

૫ પદ્મવે તેણેવ ઉવાગચ્છદ ઉવાગચ્છિત્તા પચન્ન પદ્મવાળ દોવદ
)

મદેવે પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યું કે અરે ઓ ! પદ્મનાભ !
મયમા જ મરણના અભિલાષી કેમ બની ગયા છો, તુ
કે દ્રોપદી મારી બહેન છે તુ એને અહીં શા માટે લઈ
ાવે આ સ્થિતિમા મારી પાસે આવ્યો છે તો હવે તારે
બાતનો ભય રાખવો બોધએ નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ
૧ ત્યારપછી દ્રોપદીને સાથે લઈને તેઓ રથ ઉપર
તેઓ જ્યા પાચે પડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા
૨ દ્રોપદીને પાચે પાડવોને સોપી દીધી

૩ સદ્ધિ અપ્પ હદ્ધે છર્હિ રહેર્હિ લવણસમુદ્ધ
જેણેવ મારહેવાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમનાણ)
૪ પાડવોની સાથે આત્મ પટ્ટને છએ

मूलम्-तेणं कालेण तेणं समएण धायइसंडे दीवे पुरत्थि-
मिद्धे भारहे वासे चंपाणामं णयरी होत्था, पुण्णभदे चेइए, तत्थ
णं चपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महिया
हिमवंत० वण्णओ, तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए
अरहा चपाए पुण्णभदे समोसडे, कपिले वासुदेवे धम्म सुणेइ
तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्म सुणे-
माणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसइं सुणेइ, तएण तस्स कवि-
लस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था - किं
मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ?
जस्स णं अय संखसदे ममंपिव मुहवायपूरिए वीयं भवइ, तएणं
मुणिसुव्वए अरहा कविल वासुदेवं एव वयासी-से णूण ते
कविला वासुदेवा । मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसइ
आकण्णिन्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मन्ने जाव वीयं भवइ, से
णूणं कविला वासुदेवा । अयमट्ठे समट्ठे ? हता । अत्थि, नो
कविला । एव भूय वाइ जन्न एगे खेत्ते एगे जुगे समए दुवे
अरहता वा चक्कवट्ठी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु
उप्पज्जित्ति उप्पज्जिस्सति वा, एवं खलु वासुदेवा । जवूदीवाओ
भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पडुस्स रण्णो पुव्व-

बीच हो जहा जवूदीप नाम का द्वीप, जहा भरतक्षेत्र नाम का क्षेत्र था
उस ओर चल दिये ॥ सू० २९ ॥

स्थाने लज्जे लवणु समुद्रनी वन्धे यधने न्या ज वूदीप नामे द्वीप, अने
तेमा पणु न्या सारतवर्ध नामे क्षेत्र छत्तु ते तरइ रवाना थया ॥ सूत्र २६ ॥

આરોગ યત્રૈવ પદ્મ પાંડવાસ્તત્રીયોપાગચ્છતિ, ઉપાગય પદ્માર્ના પાંડવાર્નાં દ્રૌપદી
 દેવીં 'સાહર્તિ' સહસ્તેન, ઉપનયતિ=દદાતિ । તતઃ ગતુ સ કૃષ્ણ પદ્મિ
 પાંડવૈ માર્ધમાત્મપદ્મ પદ્મભીરયૈર્લગ્નસમુદ્રમ્ય મન્યમન્યેન યત્રૈવ જમ્બુદ્રીપો
 દ્વીપઃ, યત્રૈવ મારત વર્ષ તત્રૈવ પ્રાધારયદ્ ગમનાય=ગતુ મટતઃ ॥ ૬૦૨૯ ॥

પંચ પદ્મવે તેજેવ ઉવાગચ્છત્, ઉવાગચ્છિત્તા પચન્ પદ્મવાળ દોવદ્ દેવિ
 સાહર્તિ ઉવણેઃ) તથ કૃષ્ણવાસુદેવ ને પદ્મનાભ સે દસ પ્રકાર કહ્યા
 અરે ઓ પદ્મનાભ ! તુમ દસ તરફ સે અકાલ મેં હી મરણ કે અભિલાષી
 કયો બને ઇચ્છાતુજ્ઞે યહ પતા નહીં થા કિ દ્રૌપદી મેરી યજ્ઞિન હૈ । કયોં તુ
 હસ કો યહાં છે આપા ! સૈર-જય તુ હમ રૂપ મેં મેરી ઈરણ મેં આચુકા
 હૈ-તો અવ તુજ્ઞે કિસીં બી પ્રકાર કા મેરી તરફ સે મય નહીં રહા-એસા
 ફરકર કૃષ્ણવાસુદેવ ને ઉસે વિસર્જિત કર દિયા-અપને સ્થાન પર ઉસે
 જાને કી આજ્ઞા દેદી-। યાદ મેં દ્રૌપદી કો સાય મેં લિયા ઓર લેકર બે
 રથ પર આરુઢ હુણ । આરુઢ હોકર ફિર બે, વહાં આયે-જહાં પાંચો
 પાંડવ થે વહાં આકર ઉન્હોં ને દ્રૌપદી કો અપને હાથોં સે પાંચો પાંડવોં
 કે સુપુર્ત કર દિયા । (તર્ણ કળે પચેર્હિ પદ્મવેર્હિ સર્દિ અપ્પછદ્દે છર્હિ
 રહેર્હિ લવણસમુદ્ર મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ જમ્બુદીવે દીવે જેણેવ મારહે
 વાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ) હસકે યાદ બે કૃષ્ણવાસુદેવ પાંચો
 પાંડવોં કે સાય આત્મપદ્મ હોકર છહોં રથોં કો લે લવણ સમુદ્ર સે બીચોં
 દુરુહિતા જેણેવ પચ પદ્મવે તેજેવ ઉવાગચ્છત્ ઉવાગચ્છિત્તા પચન્ પદ્મવાળ દોવદ્
 દેવિ સાહર્તિ ઉવણેઃ)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યું કે અરે ઓ ! પદ્મનાભ !
 તમે આ પ્રમાણે અસમયમા જ મરણના અભિલાષી કેમ બની ગયા છો, શું
 તમને ખબર નહોતી કે દ્રૌપદી મારી બહેન છે તું એને અહીં શા માટે લઈ
 આવ્યો ? ખેર, તું જ્યારે આ સ્થિતિમા મારી પાસે આવ્યો છે તો હવે તારે
 મારા તરફથી કેઈ પણ બાતનો ભય રાખવો જોઈએ નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ
 વાસુદેવે તેને વિદાય કર્યો ત્યારપછી દ્રૌપદીને સાથે લઈને તેઓ રથ ઉપર
 સવાર થયા સવાર થઈને તેઓ જ્યાં પાડવો હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં
 આવીને તેમણે પોતાના હાથથી દ્રૌપદીને પાંચે પાડવોને ઓપી દીધી

(તર્ણ સે કળે પચેર્હિ પદ્મવેર્હિ સર્દિ અપ્પછદ્દે છર્હિ રહેર્હિ લવણસમુદ્ર
 મજ્જ મજ્જેણ જેણેવ જમ્બુદીવે દીવે જેણેવ મારહેવાસે તેણેવ પહારેત્થ ગમણાણ)
 ત્યારબાદ તે કૃષ્ણ-વાસુદેવ પાંચે પાડવોની સાથે આત્મપદ્મ થઈને છએ

मायारि करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अमरककं रायहाणि सभगगतोरणं जाव पासइ पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी—किन्नं देवाणुपिया । एसा अमरकका सभग जाव सन्निवइया ?, तएण से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी—एव खलु सामी । जबूदी-वाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कणहेणं वासुदेवेणं तुव्वे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया, तएण से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ट सोच्चा पउमणाह एव वयासी हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया किन्न तुम न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कणहस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्ते अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएण अभिसिचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—‘ तेणं कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकी-पण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्थे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत् । तस्या बहिर्भागे पूर्णभद्र नाम चैत्यम्=उद्यानम्, आसीत् । तत्र=तस्या खलु चम्पानगर्या

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस कालमें और उस समयमें (घायइ सडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम नयरी होत्था, पुण्ण भद्दे चेइए) धातकी षड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चपा

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (घायइ सडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम नयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए) धातकी षड द्वीपभा पूर्वं दिग्भागवर्ती भरतक्षेत्रभा चपा नगरी छती, तेभा पूर्णभद्र नामे उद्यान छत्तु

संगइएणं देवेण अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कणहे
वासुदेवे पंचहि पंडवेहिं सद्धिं अप्पच्छे छहिं रहेहि अमरकं
रायहाणि दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएण तस्स कणहस्स
वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगामे सगामेमाणस्स
अय संखसद्दे तव मुहवाया० इव वीइ भवद्द, तएण से कविले
वासुदेवे मुणिसुव्वयं वदइए एवं वयासी-गच्छामि णं अह
भंते । कणहे वासुदेवे उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि, तएण
मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एव उयामी - नो खलु
देवाणुप्पिया । एव भूय वाइ जण्ण अरहतो वा अरहतं पासइ
चक्खवट्ठी वा चक्खवट्ठि पासइ वलदेवा वा वलदेव पासइ वासु
देवो वा वासुदेव पासइ, तहविय ण तुम कणहस्स वासुदेवस्स
लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ
पासिहिसि, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ नमसइ
वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखध दुरूहइ दुरूहित्ता सिग्घर जेणेव वेला
उले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कणहस्स वासुदेवस्स लवण
समुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासइ
पासित्ता एवं वयइ एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कणहे वासु
देवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्तिकहु पचजन्न सख
परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ, तएण से कणहे
वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ आयन्नित्ता
पचजन्न जाव पूरियं करेइ, तएण दोवि

मायारि करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता अमरकंकं रायहारिणं संभग्गतोरणं जाव पासइ पासित्ता पउमणाभं एव वयासी—किन्न देवाणुप्पिया । एसा अमरकंका संभग्ग जाव सन्निवइया ?, तएणं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एव वयासी—एव खलु सामी । जंबूद्वीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कणहेणं वासुदेवेण तुव्वे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया, तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ट सोच्चा पउमणाह एवं वयासी ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया किन्न तुम न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कणहस्म वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसय आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्ते अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—‘ तेण कालेण ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकी-पण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्थे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत् । तस्या बहिर्भागे पूर्णभद्र नाम चैत्यम्=उद्यानम्, आसीत् । तत्र=तस्यां खलु चम्पानगर्यां

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस कालमें और उस समयमें (वायइसडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्ण भद्दे चेइण) धातकी पड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चपा

‘ तेण कालेण तेण समएण ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काले अने ते समये (वायइ सडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइण) धातकी पडद्वीपभा पूर्व दिग्भागवर्ती भरतक्षेत्रभा अथा नगरी હતી, તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતું

संगइएणं देवेण अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कण्हे
वासुदेवे पंचहि पडवेहिं सद्धिं अप्पच्छटे छहिं रहेहि अमरकक
रायहाणि दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएण तस्स कण्हस्स
वासुदेवस्स पउमणाभेणं रणणा सद्धिं संगामे सगामेमाणस्स
अय सखसद्दे तव मुहवाया० इव वीइ भवद्द, तएणं से कविले
वासुदेवे मुणिसुव्वय वंदइए एवं वयासी-गच्छामि णं अहं
भते । कण्हे वासुदेवे उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि, तएण
मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एव वयासी - नो खलु
देवाणुप्पिया । एव भूय वा३ जण्ण अरहंतो वा अरहत पासइ
चक्खवट्ठी वा चक्खवट्ठि पासइ वलदेवा वा वलदेव पासइ वासु
देवो वा वासुदेव पासइ, तहविय ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स
लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ
पासिहिसि, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वंदइ नमसइ
वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरूहइ दुरूहित्ता सिग्घ२ जेणेव वेला
उले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवण
समुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासइ
पासित्ता एवं वयइ एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासु
देवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्तिकट्ठु पचजन्न सख
परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ, तएण से कण्हे
वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ आयन्नित्ता
पचजन्नं जाव पूरियं करेइ, तएण दोवि ५३२

समुत्पन्न ? यस्य वासुदेवस्य सख अयं शङ्खशब्दो ममेव मुखयातपूरित -मद्वादित-
 शङ्ख-वनिरिवेत्यर्थः, 'रीय भवइ' द्वितीयो भवति । तत खलु मुनिसुव्रतोऽहं
 कपिल वासुदेवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-'से' पूण इत्यादि-'से'
 नून ते तत्र हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्म 'णिसामेमाणस्स' निशामयतः=
 शृण्वतः, शङ्खशब्दम् 'आरुणित्ता' आरुण्य=श्रुत्या 'इमेयारुवे' अयमेतद्रूपः
 आयात्मिकः सख्यो विचारः समुदपद्यत-किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्याय
 शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति 'से' अथ नून हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थः
 समर्थ=किं सत्य ? कपिल वासुदेवः प्राह-हता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो !
 अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रतो भगवानाह-हे कपिल वासुदेव ! नो खलु एवम्=
 ईदृश, 'भूय वा' भूत वा=अतीत वा, भवद् वा=वर्तमान वा भविष्यद् वा अना-
 गत वा कालत्रयेऽप्येव न भवतीत्यर्थः, 'जन्न' यत् खलु एकस्मिन् क्षेत्रे, एक
 भवइ) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे । सो उस
 कपिल वासुदेवने मुनि, सुव्रतप्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण
 वासुदेवकी शखध्वनि सुनि । तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार
 आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ-क्या वातकीपड नामके
 द्वीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ?
 कि जिसके शखका यह शब्द मेरे द्वारा बजाये गये शखके शब्द जैसा
 हुआ है ? (तएण मुणि सुव्वण अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से पूणं
 ते कविला वासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसइ आरु-
 णित्ता इमेयारुवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ से पूण कविला
 वासुदेव ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा ३ जन्नं

तेभनी पासे ते कपिल वासुदेव धर्मोपदेश साधणी रह्या डता ते कपिल
 वासुदेवे मुनिसुव्रत प्रभुनी पासे धर्मोपदेश स लणता ७ कृष्णवासुदेवना श भनो
 ध्वनि स लल्यो त्यारे ते कपिल वासुदेवने आ लतनो आध्यात्मिक यावत्
 मनोगत स कथ उत्पन्न थयो के शुं घातकी पड नामना द्वीपमा विद्यमान
 भरतक्षेत्रमा कोण् भीन्ने वासुदेव उत्पन्न थयो छे ? केभडे तेना श भनो आ
 ध्वनि भाश वडे वगाडनामा आवेला श भना ध्वनि जेवो ७ छे

(तएण मुणि सुव्वण अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से पूण ते कवि
 लावासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसइ आरुणित्ता इमेयारुवे
 अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ, से पूण कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे
 समट्ठे ? हता, अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा ३ जन्न एगखेत्ते एगे जुगे

‘કવિલે નામ’ કપિલો નામ વાસુદેવો રાજાડડસીત્ ‘મહયા હિમવત૦’ વળ્ણઓ’ મહાહિમવાનિત્યાદિ ંર્ણકઃ=વર્ણન પૂર્વોક્તત્ત્વો ગો યમ્ ।

તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે મુનિસુવ્રતોડર્હૃત્ ચમ્પાયા નગર્યાં પૂર્ણભદ્રે નાસ્મિન ચૈત્યે સમસ્યતઃ । તસ્ય મમીપે કપિલો નામ વાસુદેવો ધર્મં શ્રુણોતિ । તતઃ સ્વઠ્ઠ સ કપિલો વાસુદેવઃ મુનિસુવ્રતસ્યાર્હિતોડન્વિકે ધર્મં શ્રુત્વન્ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય શબ્દશબ્દ શ્રુણોતિ તતઃ સ્વઠ્ઠ તસ્ય કપિલસ્ય વાસુદેવસ્ય અયોગેતદ્વૃપઃ=વક્ષ્યમાણસ્વરૂપ., ‘અજ્ઞતિય’ આધ્યાત્મિકઃ=આત્મગતઃ સત્ત્વો=વિચાર., યાવદ્ સમુદપત્યત-કિમ્-અન્યો ધાતકોપષ્ઠે દ્વોપે ભારતે ચર્વે દ્વિતીયો વાસુદેવ

નામકી નગરી યી) ઉસમેં પૂર્ણભદ્ર નામ કા ઉદ્યાન થા । (તત્થળ ચપાળ નયરીઐ કપિલે નામ વાસુદેવે રાયા હોત્થા, મહયા હિમવત વળ્ણઓ તેળ કાલેળ તેળ સમણ મુનિસુવ્વણ અરહા, ચપાળ પુણ્ણભદ્રે સમોસઢે) ઉસ ચપાનગરીમેં કપિલ નામ કે વાસુદેવ રાજ્ય કરતે થે । યે મહા હિમ વાન્ પતંત જૈસે મુળોંસે પૂર્ણ થે । પહિલે જૈસા વર્ણન રાજાઓંકા મિત્ત ૨ જગહ ક્રિયા ગયા હૈ વૈસા હી વર્ણન હિસકા શ્રી જાનના ચાહિયે । ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં મુનિ સુવ્રત તીર્થ કર ચપા નગરી મેં હિસ પૂર્ણ ભદ્ર ઉદ્યાન મેં આયે હુઐ થે (કવિલે વાસુદેવે ધમ્મ સુણેહ, તણ સે કવિલે વાસુદેવે મુનિસુવ્વયસ્સ અરહાઓ ધમ્મ સુણેમાળે કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ સલ્લસહ સુણેહ, તણ તસ્સ કવિલસ્સ વાસુદેવસ્સ હમેવારુવે અજ્ઞતિય સમુપ્પજ્જિત્યા-કિં મળ્ણે, ધાયહસઢે દીવે ભારહે વાસે દોચ્ચે વાસુદેવે સમુપ્પળ્ણે ? જસ્સ ણ અય સલ્લસહે મમપિવ મુહવાચપૂરિઐ વીય

(તત્થળ ચપાળ નયરીઐ કપિલે નામ વાસુદેવે રાયા હોત્થા, મહયા હિમવત વળ્ણઓ, તેળ કાલેળ તેળ સમણ મુનિસુવ્વણ અરહા, ચપાળ પુણ્ણભદ્રે સમોસઢે)

તે ચપા નગરીમા કપિલ નામે વાસુદેવ રાજ કરતા હતા તેઓ મહા હિમવાન વગેરે જેવા બળવાન હતા પહેલા બુદ્ધ બુદ્ધ રાજાઓનુ જે પ્રભાણે વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તે પ્રભાણે આ રાજાનુ પણ વર્ણન નાણી લેકુ નેમ્યો તે કાળે અને તે સમયે મુનિસુવ્રત તીર્થ કર ચપા નગરીમા તે પૂર્ણભદ્ર ઉદ્યાનમા પધાર્યા હતા

(કવિલે વાસુદેવે ધમ્મ સુણેહ, તણ સે કવિલે વાસુદેવે મુનિ સુવ્વયસ્સ અરહાઓ ધમ્મ સુણેમાળે, કળહસ્સ વાસુદેવસ્સ સલ્લસહ સુણેહ, તણ તસ્સ કવિલસ્સ વાસુદેવસ્સ હમેવારુવે અજ્ઞતિય સમુપ્પજ્જિત્યા-કિં મળ્ણે ધાયહસઢે દીવે ભારહેવાસે દોચ્ચે વાસુદેવે સમુપ્પળ્ણે ? જસ્સ ણ અય સલ્લસહે મમ પિવ મુહવાચ પૂરિઐ વીય ભવહ)

समुत्पन्न ? यस्य वासुदेवस्य खलु अयं शङ्खशब्दो ममेव मुखयातपूरित-मद्वादित-
शङ्ख-परिनिवेत्यर्थः, 'वीथ भवइ' द्वितीयो भवति । ततः खलु मुनिसुव्रततोऽहं
कपिल वासुदेवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अयादीत्-'से' पूण इत्यादि—'से'
नून ते तव हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्म 'णिसामेमाणस्स' निशामयतः=
शृण्वत', शङ्खशब्दम् 'आकणित्ता' आकर्ण्य=श्रुत्या 'इमेयारुवे' अयमेतद्रूपः
आ-यात्मिकः सखलो विचारः समुदपद्यत-किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्याय
शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति 'से' अयं नून हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थः
समर्थ=किं सत्य ? , कपिल वासुदेवः प्राह-इता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो !
अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रतं भगवानाह-हे कपिल वासुदेव ! नो खलु एवम्=
ईदृश, 'भूय वा' भूत वा=अतीत वा, भवद् वा=वर्तमान वा भविष्यद् वा अना-
गत वा कालत्रयेऽप्येव न भवतीत्यर्थः, 'जन्' यत् खलु एकस्मिन् क्षेत्रे, एक

भवइ) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे । सो उस
कपिल वासुदेवने मुनिसुव्रतप्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण
वासुदेवकी शख-ध्वनि सुनि । तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार
आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ-य्या धातकी पड नामके
क्षीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ?
कि जिसके शखका यह शब्द मेरे द्वारा बजाये गये शखके शब्द जैसा
हुआ है ? (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से पूण
ते कविला वासुदेवा ! मम अतिण धम्म णिसामेमाणस्स सखसइ आक-
णित्ता इमेयारुवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ से पूण कविला
वासुदेव ! अयमट्ठे समट्ठे ? इता अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा ३ जन्

तेमनी पासे ते कपिल वासुदेव धर्मोपदेश साधणी रह्या डता ते कपिल
वासुदेवे मुनिसुव्रत प्रभुनी पासे धर्मोपदेश साधणता ७ कृष्णवासुदेवना शयने
ध्वनि साधये। त्वारे ते कपिल वासुदेवने आ जातने आध्यात्मिक यावत्
मनोगत सङ्घ उत्पन्न थये के शु धातकी पड नामना क्षीपमा विद्यमान
भरतक्षेत्रमा डेअ धीजे वासुदेव उत्पन्न थये छे ? केमके तेना शयने आ
ध्वनि मारा पडे वगाडयामा आवेला शयना ध्वनि जेवो ७ छे

(तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी-से पूण ते कवि
लावासुदेवा ! मम अतिण धम्म णिसामेमाणस्स सखसइ आकणित्ता इमेयारुवे
अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ, से पूण कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे
समट्ठे ? इता, अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा ३ जन् एगखेत्ते एगे जुगे

સ્મિન્ યુગે, અસ્મિન્ સમયે દ્વાર્હન્તી યા ચક્રવર્તીનાં વા ચલદેવી યા વાસુદેવી વા
 'ઉપ્પજ્ઞિસુ' ઉદપન્નેતામ્, 'ઉપજ્ઞિતિ' ઉત્પન્નેતે 'ઉપજ્ઞિસ્સતિ' ઉત્પત્સ્યેતે
 વા, એવ સ્વલુ છે વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપાદ્ ભારતાદ્ ર્પાદ્ દક્ષિનાપુરનગરાત્ પાણ્ડો
 રાજ્ઞઃ 'સુપ્તા' સ્તુરા=પુત્રપૃથ્ઃ, પશ્ચાના પાણ્ડવાનાં માર્યાં દ્વીપદી દેવી તત્ત્વ પથ
 એગે લેત્તે એગે જુગે એગે સમયે દુવે અરહતા યા, ચક્રવર્તી વા, ચલદેવા વા,
 વાસુદેવા વા ઉપ્પજ્ઞિસુ, ઉપ્પજ્ઞિતિ, ઉપ્પજ્ઞિસ્સતિ વા,) તત્ત્વ મુનિસુવ્રત
 તીર્થંકર પ્રભુને ડન કપિલ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા છે કપિલ વાસુ
 દેવ ! મેરે પાસ ધર્મ કો સુનતે સમય તુમ્હ શાસ્ત્ર શાસ્ત્ર શ્રવણ કર ડસ
 પ્રકાર કા યદ્ આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ છે, કિ કયા
 કોઈ દૂમરા વાસુદેવ ઉત્પન્ન હો ગયા છે-જિસકે શાસ્ત્ર કા શાસ્ત્ર મુક્તે
 સુનાઈ દિયા છે । કહો કપિલ વાસુદેવ ! યહી યાત હૈ ન ? તત્ત્વ કપિલ
 વાસુદેવને કહા-હા પ્રભો ! યહી યાત છે-એસા હી વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ
 છે-તત્ત્વ મુનિસુવ્રત ભગવાનને કપિલ વાસુદેવસે કહા-હે કપિલ વાસુદેવ
 એસી યાત ન ભૂતકાલ મેં હુઈ છે ઓર ન ભવિષ્યકાલ મેં હોગી-ન વર્ત
 માન્ મે હોતી છે કિ જો ંક હી ક્ષેત્રમેં ંક હી યુગમેં ંક હી સમય મેં
 દો અર્હત પ્રભુ, દો ચક્રવર્તી, દો ચલદેવ, દો વાસુદેવ, ઉત્પન્ન હો રહે હો,
 ઉત્પન્ન હુણ હો ઓર આગે ઉત્પન્ન હો ! (એવ સ્વલુ વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપા
 ઓ ભારહાઓ વાસાઓ દક્ષિણાઊરણયરોઓ, પદુસ્સરણ્ણો સુપ્તા
 એગે સમયે દુવે અરહતા યા ચક્રવર્તી વા, વાસુદેવા વા ઉપ્પજ્ઞિસુ, ઉપ્પજ્ઞિતિ,
 ઉપ્પજ્ઞિસ્સતિ વા)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું
 કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાલળતા શબ્દ-શબ્દ સાલળીને તમને
 આ જાતનો આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શું કોઈ બીજો
 વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શબ્દો ધ્વનિ અને સાલળાઈ રહ્યો છે બોલો,
 કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમાં એ જ જાતનો
 વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે
 કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમાં થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમાં થશે
 નહિ અને વર્તમાનકાળમાં સંભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમાં,
 એક જ યુગમાં, એક જ સમયમાં બે અર્હત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બળદેવ, બે વાસુ
 દેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

(એવ સ્વલુ વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપાઓ ભારહાઓ વાસાઓ દક્ષિણાઊરણયા
 રાઓ, પદુસ્સરણ્ણો, સુપ્તા પચ્છ પડવાળા મારિયા દોર્વે દેવી તત્ત્વ

नामस्य राज्ञः पूर्वसगतिकेन देवेनामरकङ्कानगरीं ' साहरिया ' सहता=भानीता,
ततः खलु सः कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सधं आत्मपष्ठः पङ्कभीरथैरमर-
कङ्का राजधानीं द्रौपद्या देव्याः ' क्व ' देशी शब्दोय प्रत्यानयनार्थकः प्रत्या-
नयनं कर्तुं इव्यमागतः, ततः खलु तस्य कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मनाभेन राज्ञा
सार्धं ' सगाम ' संग्राम=युद्ध ' सगामेमाणस्स ' युध्यत, अयं शब्दशब्दस्तवमु
खवातपूरित इव द्वितीयो भवति । ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनिसुव्रत
वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-गच्छामि खलु अहं है

पचण्ह पडवाण भारिया दोवईदेवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगई-
ण्ण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया, तएण से कण्हे वासुदेवे
पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउट्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणि दोवईए
देवीए क्व हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण
रण्णा सद्धिं सगाम, सगामेमाणस्स अयं सखसदे तव मुहवाया० इव-
धीय भवइ) सुनो वात इम प्रकार है जवूद्रीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान
हस्तिनापुर नगर से पांडुराजा की पुत्रवधू पाच पांडवों की पत्नी द्रौपदी
देवी को तुम्हारे पद्मनाभ राजा का पूर्व भवीय मित्र कोई देव हरण
कर अमरकका नगरी में ले आया । तब भरत क्षेत्र के वासुदेव कृष्ण
पाच पांडवों के साथ आत्मपष्ठ होकर छह रथों से उस अमरकका
नगरी में द्रौपदी देवी को वापिस ले जाने के लिये बहुत जल्दी आये ।
तब उन कृष्ण वासुदेव के, पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करते समय
शंख का यह शब्द तुम्हारे शंख के शब्द जैसा हुआ है । (तएण से
कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदति, २ एव वयासी गच्छामि ण

रण्णो पुव्वसगईण्ण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया तएण से कण्हे वासुदेवे
पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पउट्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणि दोवईए देवीए
क्व हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम,
सगामे माणस्स अयं सखसदे तव मुहवाया० इव वीय भवइ)

स लणो, विगत जेवी छे के जणूद्रीपना भरतक्षेत्रमा विद्यमान हस्ति
नापुर नगरथी पांडुराजनी पुत्रवधू पाचे पांडवोनी पत्नी द्रौपदी देवीने तभारा
पद्मनाभ राजाना पूर्वभवने मित्र कोई देव हरीने अमरकका नगरीमा लई
आओये हतो । तयारपछी भरतक्षेत्रना वासुदेव कृष्ण पाचे पांडवोनी साथे आत्म
पष्ठ थजिने छ रह्यो उपर सवार थया अने सत्वरें द्रौपदी देवीने पाछा भेग
पवा भाटे त्या पडोखी गया पद्मनाभ राजानी साथे युद्ध करता कृष्णवासुदेवे
जे शब्धनि ह्यो छे ते तभारा शब्धना ध्वनि जेवो छे

(तएण से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वय वदति, २ एव वयासी, गच्छामि

સ્મિન્ યુગે, એકસ્મિન્ સમયે દ્વાર્ધન્તી યા ચક્રવર્તિની યા ચલદેવી યા વાસુદેવી યા
' ઉપ્પજિસુ ' ઉદપત્તેતામ્, ' ઉપ્પજિનતિ ' ઉત્પત્તેતે ' ઉપ્પજિસસતિ ' ઉત્પત્તસ્યેતે
વા, એવં ચલુ હે વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપાદ્ ભારતાદ્ ગર્ગાદ્ હસ્તિનાપુરનગરાત્ પાન્ડો
રાજ્ઞઃ ' સુન્દરા ' સ્તુરા=પુનઃપૂઃ, પન્થાના પાન્ડવાના માર્યા દ્રૌપદી દેવી તત્ત્વ પથ

એગે રહેતો એગે જુગે એગે સમયે દુવે અરહતા વા, ચક્રવર્તી વા, ચલદેવા વા,
વાસુદેવા વા ઉપ્પજિસુ, ઉપ્પજિનતિ, ઉપ્પજિસસતિ વા,) તથા મુનિસુવ્રત
તીર્થંકર પ્રભુને એવં કપિલ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કલા હે કપિલ વાસુ
દેવ ! મેરે પાસ ધર્મ કો સુનતે સમય તુમ્હ શામ્ શામ્ શ્રવણ કર હસ
પ્રકાર કા યદ્ આધ્યાત્મિક સકલ-વિચાર ઉત્પન્ન જુઆ હૈ, કિ કયા
કોઈ દૂસરા વાસુદેવ ઉત્પન્ન હો ગયા હૈ-જિસકે શામ્ કા શામ્ મુક્તે
સુનાઈ દિયા હૈ । કહો કપિલ વાસુદેવ ! યહી વાત હૈ ન ? તથા કપિલ
વાસુદેવને કહા-હા પ્રભો ! યહી વાત હૈ-એસા હી વિચાર ઉત્પન્ન જુઆ
હૈ-તથા મુનિસુવ્રત ભગવાનને કપિલ વાસુદેવસે કહા-હે કપિલ વાસુદેવ
એસી વાત ન ભૂતકાલ મેં હુઈ હૈ ઓર ન ભવિષ્યકાલ મેં હોગી-ન વર્ત
માન્ મેં હોતી હૈ કિ જો એક હી ક્ષેત્રમેં એક હી યુગમેં એક હી સમય મેં
દો અર્હત પ્રભુ, દો ચક્રવર્તી, દો ચલદેવ, દો વાસુદેવ, ઉત્પન્ન હો રહે હો,
ઉત્પન્ન જુએ હો ઓર આગે ઉત્પન્ન હો ! (એવં ચલુ વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપા
ઓ ભારહાઓ વામાઓ હતિથાનારણ્યઓ, પદુસ્મરણો સુન્દરા

એગે સમયે દુવે અરહતા વા ચક્રવર્તી વા, વાસુદેવા વા ઉપ્પજિસુ, ઉપ્પજિનતિ,
ઉપ્પજિસસતિ વા)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું
કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાલળતા શખ-ગળ્ફ સાલળીને તમને
આ જાતનો આધ્યાત્મિક સકલ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શું કોઈ બીજો
વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-એના શખનો ધ્વનિ મને સાલળાઈ રહ્યો છે બોલો,
કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમાં એ જ જાતનો
વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે
કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમાં થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમાં થશે
નહિ અને વર્તમાનકાળમાં સભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમાં,
એક જ યુગમાં, એક જ સમયમાં એ અર્હત પ્રભુ, એ ચક્રવર્તી, એ બળદેવ, એ વાસુ
દેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ ગયા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

(એવં ચલુ વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપાઓ ભારહાઓ વાસાઓ હતિથાનારણ્યા
રાઓ, પદુસ્મરણો, સુન્દરા પચ્છ પદ્માણ મારિયા દોઢઈ દેવી તત્ત્વ

નામસ્ય રાજ્ઞઃ પૂર્વસગતિકેન દેવેનામરકકાનગરી ' સાહરિયા ' સહતા=આનીતા,
તતઃ સ્વલુ સઃ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ પશ્ચમિઃ પાણ્ડવૈઃ સર્વં આત્મપથઃ પદ્મભીરયૈરમર-
કકા રાજધાનીં દ્રૌપદ્યા દેવ્યાઃ ' કૃવ ' દેશી શબ્દોયં પ્રત્યાનયનાર્થકઃ પ્રત્યા-
નયન કર્તુ હ્યવમાગતઃ, તતઃ સ્વલુ તસ્ય કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય પદ્મનાભેન રાજ્ઞા
સાર્થ ' સગામ ' સંગ્રામ=યુદ્ધ ' સગામેમાણસ્સ ' યુ યત, અય શબ્દશબ્દસ્તવમ્
સ્વવાતપૂરિત ઇવ દ્વિતીયો ભવતિ । તતઃ સ્વલુ સ કપિલો વાસુદેવો મુનિસુત્રત
વન્દતે, નમસ્યતિ વન્દિત્વા નમસ્યિત્વા એવમવાદીત્-ગચ્છામિ સ્વલુ અહ હે

પચન્હ પદ્મવાણ મારિયા દોવર્ડદેવી તવ પડમનાભસ્સ રણ્ણો પુવ્વસગર્હ-
ણ દેવેણ અમરકકા નયરિં સાહરિયા, તણ્ણ સે કણ્હે વાસુદેવે
પચહિં પડવેહિં સદ્ધિ અપ્પઝઠ્ઠે ઊહિં રહેહિં અમરકક રાયહાણિં દોવર્ડે
દેવીએ કૃવ હવ્વમાગણ, તણ્ણ તસ્સ કણ્ણસ્સ વાસુદેવસ્સ પડમનાભેણ
રણ્ણા સદ્ધિ સગામ, સગામેમાણસ્સ અય સઘસદ્દે તવ મુહવાયાં ઇવ-
ધીય ભવહ) છુનો વાત હસ પ્રકાર હૈ જવૂદ્રીપ કે ભરત ક્ષેત્ર મેં વર્તમાન
હસ્તિનાપુર નગર સે પાંડુરાજા કી પુત્રવધૂ પાચ પાડવો કી પત્ની દ્રૌપદી
દેવી કો તુમ્હારે પદ્મનાભ રાજા કાં પૂર્વ ભવીય મિત્ર કોઈ દેવ હરણ
કર અમરકકા નગરી મેં લે આયા । તવ ભરત ક્ષેત્ર કે વાસુદેવ કૃષ્ણ
પાચ પાંડવોં કે સાથ આત્મપથ હોકર છહ રથોં સે ઉસ અમરકકા
નગરી મેં દ્રૌપદી દેવી કો વાપિસ લે જાને કે લિયે વહુત જલ્દી આયે ।
તવ ઉન કૃષ્ણ વાસુદેવ કે, પદ્મનાભ રાજા કે સાથ યુદ્ધ કરતે સમય
શંખ કા યહ શબ્દ તુમ્હારે શંખ કે શબ્દ જૈસા હુઆ હૈ । (તણ્ણ સે
કવિલે વાસુદેવે મુણિસુવ્વય વદતિ, ૨ એવ વયાસી ગચ્છામિ ણં

રણ્ણો પુવ્વસગર્હણ દેવેણ અમરકકા નયરિં સાહરિયા તણ્ણ સે કણ્હે વાસુદેવે
પચહિં પડવેહિં સદ્ધિ અપ્પઝઠ્ઠે ઊહિં રહેહિં અમરકક રાયહાણિં દોવર્ડે દેવીએ
કૃવ હવ્વમાગણ, તણ્ણ તસ્સ કણ્ણસ્સ વાસુદેવસ્સ પડમનાભેણ રણ્ણા સદ્ધિ સગામ,
સગામે માણસ્સ અય સઘસદ્દે તવ મુહવાયાં ઇવ ધીય ભવહ)

સ લણો, વિગત જોવી છે કે જ્યુદ્રીપના ભરતક્ષેત્રમા વિદ્યમાન હસ્તિ
નાપુર નગરથી પાંડુરાજાની પુત્રવધૂ પાચે પાડવોની પત્ની દ્રૌપદી દેવીને તમારા
પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વભવનો મિત્ર કોઈ દેવ હરીને અમરકકા નગરીમાં લઈ
આવ્યો હતો ત્યારપછી ભરતક્ષેત્રના વાસુદેવ કૃષ્ણ પાચે પાડવોની સાથે આત્મ
પથ યદને છ રથો ઉપર સવાર થયા અને સત્વરે દ્રૌપદી દેવીને પાછા મેળ
વવા માટે ત્યા પહોંચી ગયા પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરતા કૃષ્ણવાસુદેવે
જે શબ્દધ્વનિ કયો છે તે તમારા શબ્દના ધ્વનિ જેવો છે

(તણ્ણ સે કવિલે વાસુદેવે મુણિ સુવ્વય વદતિ, ૨ એવ વયાસી, ગચ્છામિ

સ્મિન્ યુગે, એસ્મિન્ સમયે દ્વાપર્યન્તી યા ચક્રવર્તિની યા ચલદેવી યા વાસુદેવી યા
'ઉપ્પજિજ્ઞસુ' ઉદપન્નેતામ્, 'ઉપ્પજિનતિ' ઉત્પન્નેતે 'ઉપ્પજિજ્ઞસતિ' ઉત્પન્નસ્યેતે
વા, એવં સ્વલુ છે વાસુદેવ ! જમ્બૂદ્વીપાદ્ ભારતાદ્ વર્ષાદ્ હસ્તિનાપુરનગરાત્ પાણ્ડો
રાજ્ઞઃ 'સુઘ્ના' સ્તુતા=પુનઃપ્રશ્નઃ, પશ્ચાન્ના પાણ્ડયાનાં માર્યાં દ્રૌપદી દેવી તત્ત્વ

એમે લેતે એમે જુમે એમે સમગ્ર દુલ્લે અરહતા યા, ચક્રવર્તી વા, ચલદેવા વા,
વાસુદેવા વા ઉપ્પજિજ્ઞસુ, ઉપ્પજિનતિ, ઉપ્પજિજ્ઞસતિ વા,) તત્ત્વ મુનિસુવ્રત
તીર્થ કર પ્રભુને એન કપિલ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કરા દે કપિલ વાસુ
દેવ ! મેરે પાસ ધર્મ કો સુનતે સમય તુમ્હ શંખ શબ્દ શ્રવણ કર હસ
પ્રકાર કા યદ્ આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ હૈ, કિ કયા
કોઈ દુસરા વાસુદેવ ઉત્પન્ન હો ગયા હૈ-જિસકે શંખ કા શબ્દ મુખે
સુનાઈ દિયા હૈ । કરો કપિલ વાસુદેવ ! યહી વાત હૈ ન ? તત્ત્વ કપિલ
વાસુદેવને કરા-હા પ્રભો ! યહી વાત હૈ-એસા હી વિચાર ઉત્પન્ન હુઆ
હૈ-તત્ત્વ મુનિસુવ્રત ભગવાનને કપિલ વાસુદેવસે કરા-દે કપિલ વાસુદેવ
એસી વાત ન ભૂતકાલ મેં હુઈ હૈ ઓર ન ભવિષ્યકાલ મેં હોગી-ન વર્ત
માન્ મેં હોતી હૈ કિ જો એક હી ક્ષેત્રમેં એક હી યુગમેં એક હી સમય મેં
દો અર્હત પ્રભુ દો ચક્રવર્તી, દો ચલદેવ, દો વાસુદેવ, ઉત્પન્ન હો રહે હૈ,
ઉત્પન્ન હુએ હો ઓર આગે ઉત્પન્ન હૈ । (એવં સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂદ્વીપા
ઓ ભારતાઓ વાસાઓ હસ્તિનાપુરનગરાઓ, પદ્મસ્મરણો સુઘ્ના

એમે સમગ્ર દુલ્લે અરહતા યા ચક્રવર્તી વા, વાસુદેવા વા ઉપ્પજિજ્ઞસુ, ઉપ્પજિનતિ,
ઉપ્પજિજ્ઞસતિ વા)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થ કર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું
કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સામળતા શખ-શબ્દ સામળીને તમને
આ જાતનો આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શુ કોઈ બીજો
વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શખનો ધ્વનિ મને સામળાઈ રહ્યો છે બોલો,
કપિલ વાસુદેવે કહ્યું કે હા, પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમાં એ જ જાતનો
વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે
કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમાં થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમાં થશે
નહિ અને વર્તમાનકાળમાં સભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમાં,
એક જ યુગમાં, એક જ સમયમાં બે અર્હત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે ચલદેવ, બે વાસુ
દેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

(એવં સ્વલુ વાસુદેવા ! જમ્બૂદ્વીપાઓ મારહાઓ વાસાઓ હસ્તિનાપુરનગરા
ઓ, પદ્મસ્મરણો, સુઘ્ના પચન્હ પડનાળ મારિયા દોલ્લે દેવી તત્ત્વ

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजत श्वेतपीतानि-ध्वजा-
ग्राणि 'पासिर्हिसि' द्रक्ष्यसि । ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुप्रत वन्दते,
नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा हस्तिस्कन्ध दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्र २
यत्रैव 'वेलाउले' वेलाकूलं=समुद्रवेला तट वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य
कृष्णस्य वसुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीड्यमाणस्स' व्यतिव्रजत =
गच्छत, श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एव वदति एसण मम सदृशपुरुषः
उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीड्ययइ' व्यतिव्रजति=
गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्यं शङ्ख परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्या मुखमातपूरित
करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्खं वादयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बल-
देव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नहीं होता
है । (तद् वि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण
वीड्यमाणस्स सेया पीयाइ धयग्गाइ पासिर्हिसि) हा, इतना हो सकता
हैं कि जब वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके बीचसे होकर जा रहे हों तब
तुम उनकी श्वेत पीत ध्वजाओंके अग्र भाग को देख सकते हो । (तएण
से कविले वासुदेवे मुणिसुब्बय वदइ, नमसइ, वंदित्ता, नमसित्ता, हत्थि-
खव दुरुहइ, दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवा
गच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीड्यमाणस्स
सेयापीयाहिं धयग्गाइ पासइ, पासित्ता एव वयइ-एसण मम सरिसपुरिसे
उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीड्ययइत्ति कट्टु

तीर्थं करनी साथे भील तीर्थं करने। भेगाप कोइ पणु सल्लेजोभा थतो नथी
ओक अकवर्तीना भील अकवर्तीनी साथे, ओक जणदेवने भील जणदेवनी साथे
तेभज ओक वासुदेवने भील कोइ पणु वासुदेवनी साथे कदापि भेगाप थतो
नथी (तद् वि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीड्य
माणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिर्हिसि) हा, ओभ थछं शके छे के न्यारे
ते वृणुवासुदेव लवण समुद्रनी मध्ये थछने पसार थना होय त्यारे तमे तेभनी
सहेइ, पीणी ध्वजओना अग्रभागने ओछं शके छे (तएण से)

कविले वासुदेवे मुणिसुब्बय वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हत्थिखव दुरुहइ,
दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स
वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीड्यमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गाइ
पासइ, पासित्ता एव वयइ, एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे

भदन्त ! कृष्ण वासुदेवमुत्तमपुरुष पश्यामि तत् खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिलं वासुदेवम् परमवादीत्—नो खलु हे देवानुप्रिय ! एव भूत वा, भवति वा भविष्यति वा यत् खलु अर्हन् अर्हन्त पश्यति, चक्रवर्ती वा चक्रवर्तिन पश्यति बलदेशो वा बलदेव पश्यति वासुदेवो वा वासुदेव पश्यति, तथा ऽपि च खलु त्व

अह भते ! कण्ठ वासुदेव उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि) इस प्रकार सुनकर उस कपिल वासुदेव ने मुनि सुव्रत प्रभु को बदना की-नमस्कार किया बदना नमस्कार करके फिर उनसे इस प्रकार कहा—हे भदन्त ! मैं जाता हूँ और उत्तम पुरुष उन कृष्णवासुदेव से कि जो मेरे जैसे पुरुष हूँ—वासुदेव पद के धारक है—जाकर मिलता हूँ । (तपण मुनि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) तब मुनि सुव्रत प्रभु ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा—(नो खलु देवानुप्पिया ! एव भूय वा ६ जण्ण अरहतो, वा अरहन्त पासइ, चक्कवट्ठी वा चक्क वट्ठि पामइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ) हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात न हुई है, वर्तमानमें न होती है और न भविष्यत्काल में होनेवाली है कि जो एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर से मिलें, एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवर्ती से मिले, एक बलदेव दूसरे बलदेव से मिलें, एक वासुदेव दूसरे वासुदेव से मिलें । ऐसा सिद्धान्त का नियम है कि एक तीर्थंकर का दूसरे तीर्थंकर से कभी भी मिलाप नहीं होता है ।

णं अहमते ! कण्ठ वासुदेव उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि)

आ प्रभाणु आलणीने ते कपिलवासुदेवे मुनिसुव्रत प्रभुने वडन तेभन् नमन कर्था वडन अने नमन करीने तेभनी आगे आ प्रभाणु विनती करता कधु के डे लहत । हु लउ छु अने लधने मारा जेवा ते उत्तम पुरुष कृष्ण वासुदेव के जेआ वासुदेव पहले शोभावे छे—तेभने भणु छु (तपण मुनि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) तब मुनि सुव्रत प्रभुने ते कपिल वासुदेवने आ प्रभाणु कधु के—

(नो खलु देवानुप्पिया ! एव भूय वा ३ जण्ण अरहतो वा अरहन्त पासइ, चक्कवट्ठी वा चक्कवट्ठि पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ)

हे देवानुप्रिय ! जेवी बात केअ पणु दिवसे सलवी नथी, वर्तमानमा पणु सलवी शके तेभ नथी अने भविष्यकाणमा पणु सलवी शकेशे नहि के ओक तीर्थंकर जीन तीर्थंकरने भजे, ओक चक्रवर्ती जीन चक्रवर्तिने भजे, ओक लणदेव जीन लणदेवने भजे आ बातने सिद्धांतने छे के ओक

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजत श्वेतपीतानि-ध्वजा-
ग्राणि 'पासिहिसि' द्रक्ष्यसि । ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुप्रत वन्दते,
नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा हस्तिस्कन्ध दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्र २
यत्रैव 'वेलाउले' वेलाकूलं=समुद्रवेला तट वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य
कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीडवयमाणस्स' व्यतिव्रजत =
गच्छत, श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एव वदति एसण मम सदृशपुरुषः
उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीडवयइ' व्यतिव्रजति=
गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्य शङ्ख परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्या मुख्यातपूरित
करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्खं वादयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बल-
देव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नहीं होता
है । (तह बि य ण तुमं कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण
वीडवयमाणस्स सेया पीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) हा, इतना हो सकता
हैं कि जन वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके बीचसे होकर जा रहे हों तब
तु मउनकी श्वेत पीत ध्वजाओके अग्र भाग को देख सकते हा । (तएण
से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता, हरिथ-
खध दुरुहइ, दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवा
गच्छित्ता कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयमाणस्स
सेयापीयाहि धयग्गाइ पासइ, पासित्ता एव वयइ-एसण मम सरिसपुरिसे
उत्तमपुरिसे कणहे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयइत्ति कट्टु

तीर्थ करने साथे भील तीर्थ करने भेजा प कोठ पणु स भेजो भा थतो नथी
अेक अकवर्तीने भील अकवर्तीनी साथे, अेक भणदेवने भील भणदेवनी साथे
तेमअ अेक वासुदेवने भील कोठ पणु वासुदेवनी साथे कदापि भेजा प थतो
नथी (तह बि य ण तुम कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीड
वयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) हा, अेभ थछ राके छे के न्यारे
ते कृष्णवासुदेव लवण समुद्रनी वच्चे थछने पसार थना डोय त्यारे तभे तेभ नी
सहेइ, पीगी ध्वजअेना अथभागने भेछ शके छे (तएण से)

कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हरिथखध दुरुहइ,
दुरुहित्ता सिग्घ २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कणहस्स
वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीडवयमाणस्स सेयापीयाहि धयग्गाइ
पासइ, पासित्ता एव वयइ, एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कणहे वासुदेवे

भदन्त ! कृष्ण वासुदेवमुत्तमपुरुष पश्यामि तत् खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिलं
वासुदेवम् एवमादीत्—नो खलु हे देवानुप्रिय ! एव भूत वा, भवति वा
भविष्यति वा यत् खलु अर्हन् अर्हन्त पश्यति, चक्रवर्ती वा चक्रवर्तिन पश्यति
बलदेवो वा बलदेव पश्यति वासुदेवो वा वासुदेव पश्यति, तथाऽपि च खलु त्व

अह भते ! कण्ठं वासुदेव उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि)
इस प्रकार सुनकर उस कपिल वासुदेव ने मुनि सुव्रत प्रभु को बदना
की-नमस्कार किया बदना नमस्कार करके फिर उनसे इस प्रकार कहा
—हे भदत ! मैं जाता हूँ और उत्तम पुरुष उन कृष्णवासुदेव से कि जो
मेरे जैसे पुरुष हैं—वासुदेव पद के धारक हैं—जाकर मिलता हूँ । (तण्ण
मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) तब मुनि सुव्रत प्रभु
ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा—(नो खलु देवाणुप्पिया !
एव भूय वा ६ जण्ण अरहतो, वा अरहत पासइ, चक्रवट्ठी वा चक्र
वट्ठि पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ)
हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात न हुई है, वर्तमानमें न होती है और न भवि
ष्यत्काल में होनेवाली है कि जो एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर से मिलें,
एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवर्ती से मिले, एक बलदेव दूसरे बलदेव से मिलें,
एक वासुदेव दूसरे वासुदेव से मिलें । ऐसा सिद्धान्त का नियम है
कि एक तीर्थंकर का दूसरे तीर्थंकर से कभी भी मिलाप नहीं होता है ।

ण अहमते ! कण्ठं वासुदेव उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि)

आ प्रभाणु सलणीने ते कपिलवासुदेवे मुनिसुव्रत प्रभुने वडन तेभन्
नभन कथा वडन अने नभन करीने तेभनी आभे आ प्रभाणु विनती करता
कळु के छे भटत । हु भडि छु अने ज्जने भारा जेवा ते उत्तम पुइय कृष्ण
वासुदेव के जेओ वासुदेव पडने शोभावे छे—तेभने भणु छु (तण्ण मुणि
सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) त्थारे मुनिसुव्रत प्रभुओ ते कपिल
वासुदेवने आ प्रभाणु कळु के—

(नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा ३ जण्ण अरहतो वा अरहत पासइ,
चक्रवट्ठी वा चक्रवट्ठि पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा
वासुदेव पासइ)

हे देवानुप्रिय ! जेवी बात कौछ पणु दिवसे सलवी नथी, वर्तमानमा
पणु सलवी शके तेभ नथी अने भविष्यकाणमा पणु सलवी शकेशे नहि के
ओक तीर्थंकर भील तीर्थंकरने भजे, ओक चक्रवर्ती भील चक्रवर्तीने भजे,
ओक बलदेव भील बलदेवने भजे आ भतने सिद्धान्तनो नियम—छे के ओक

ततस्तदनन्तर स कपिलो वासुदेवो यत्रैगमरकद्वाराजधानी तत्रैवोपागच्छति,
उपागत्यामरकद्वारा राजधानी सभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवा
दीत्-किं-कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकका सभग्नतोरणा यावत्-
सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिल वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे
स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् उपाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन
'तुम्हे परिभूय' युष्मान् परिभूय=जनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न
शक्यते स्तुतिमिति मनमि निधायेत्यर्थः, अमरकका यावत् सन्निपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
अमरककं रायहाणि सभग्नतोरण जाव पामइ, पासित्ता पउमणाभ
एव वयासी) तत्र कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शख शब्द को
सुना सुनकर उन्हो ने भी पांचजन्य शख को अपने मुख की वायु से
पूरित किया-यजाया-इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न
मिलकर शख के शब्द से परस्पर में मिले । अब वे कपिल वासुदेव
जहा वह अमरकका नगरी थी वहां आये । वहां आकर उन्होंने अमर-
कका राजधानी को सभग्न तोरण आदि वाला देखा । देखकर तत्र पद्म-
नाभ राजा से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसा अमरकका
सभग्न जाव सन्निवइया ? तएण से पउमणाहे कविलं वासुदेव एव
वयासी-एव खलु सामी ? जम्बूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ
इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुम्हे परिभूय अमरकका जाव
सन्निवाडिया) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकका नगरी क्या कारण है-जो

अमरककारायहाणि सभग्नतोरण जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी)

न्यारे कृष्णवासुदेवे कपिल वासुदेवना शब्दने ध्वनि सालये। त्यारे
तेमछे पछु पोताना पायजन्त्य शब्दने सुधना पवनथी पूरित कर्यो अने
पगाड्यो आ रीते तेज्जो अने वासुदेव प्रत्यक्ष रीते नडि पछु शब्दना
ध्वनिथी परस्पर मळ्या तयारपछी ते कपिल वासुदेव न्या ते अमरकका नगरी
इती त्या आळ्या त्या आवीने तेमछे अमरकका राजधानीने धन्यो वगे
रेथी नष्ट थयेली जेध, जेधने तेमछे पद्मनाभ राजने आ प्रभाछे कछु के—

(किण्ण देवाणुप्पिया एसा अमरकका सभग्न जाव सन्निवइया ? तएण से
पउमणाहे कपिल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ! जम्बूदीवाओ दीवाओ
भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुम्हे परिभूय अमरकका
जाव सन्निवाडिया)

લસ્ય વાસુદેવસ્ય શઙ્ગશ્ચન્દમ્ ' આયન્નેઈ ' આશ્ચર્યયતિ=નૃણોતિ, આશ્ચર્ય પાશ્ચ
જન્ય યાવત્ મુલયાતપૂરિત કરોતિ=કૃષ્ણો વાસુદેવ સ્વકીય શઙ્ગ વાદયતિ, તત્
સ્વલુ દ્વાપિ વાસુદેવૌ ' સંલસદસામાયારિ ' શઙ્ગશ્ચન્દમામાચારિ=શઙ્ગશ્ચન્દેન
પરસ્પરમિલન કુરુતઃ ।

પચયન્ન સલ્વ પરામુસદ્, પરામુસિત્તા મુહવાયપૂરિય કરેઈ) इस प्रकार
प्रभु का आदेश सुनकर उन कपिलवासुदेव ने उन प्रभु मुनिसुव्रत
भगवत को वदना की, नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके फिर वे
अपने प्रधान हस्ती पर आरुढ़ हुए । और आरुढ़ होकर शीघ्र जहाँ
लवणसमुद्र का वेलातट था -वहाँ पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने लवण
समुद्र के बीच से होकर जाते हुए कृष्णवासुदेव की श्वेत पीत ध्वजाओं
के अग्रभाग को देखा देखकर तब मनमें विचार-किया ये ही मेरे जैसे
उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव लवणसमुद्र के बीच से होकर जा रहे हैं-
ऐसा विचार कर उन्होंने ने अपने पाचज य शाख को उठाया और उठा
कर उसे अपने मुख की वायु से पूरित किया (तएण से कण्हे वासुदेवे
कविलस्स वासुदेवस्स सखसद् आयन्नेइ, आयन्नित्ता, पचजन्ने, जाव
पूरिय करेइ, तएण दो वि वासुदेवा सखसदसामायारि करेइ, तएण

લવણસમુદ્ધ મજ્ઞ મજ્ઞેણ વીડવ્યવહત્તિ ઋદુ પચજન્ન સલ્વ પરામુસદ્ પરામુસિત્તા
મુહવાયપૂરિય કરેઈ)

આ રીતે પ્રભુની આજ્ઞા સાંભળીને તે કપિલ વાસુદેવે તે પ્રભુ મુનિસુવ્રત
ભગવતને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ પોતાના
પ્રધાન હાથી ઉપર સવાર થયા અને સવાર થઈને જતી જ્યાં લવણ સમુ
દ્રનો કિનારો હતો ત્યાં પહોંચ્યા ત્યાં પહોંચીને તેમણે 'લવણસમુદ્રની વચ્ચે
થઈને પસાર થતા કૃષ્ણવાસુદેવની સફેદ-પીળી ધ્વજાઓના અગ્રભાગને જોયો
અને જોઈને મનમાં વિચાર કર્યો કે મારા જેવા ઉત્તમ પુરુષ કૃષ્ણવાસુદેવ
એ જ છે કે જેઓ લવણ-સમુદ્રની વચ્ચે થઈને પસાર થઈ રહ્યા છે આમ
વિચાર કરીને તેમણે પાંચ જાન્ય શ અને ઉઠાવ્યો અને ઉઠાવીને પોતાના મુખના
પવનથી તેને પૂરિત કર્યો

(તएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद् आयन्नेइ, आय
न्नित्ता, पचजन्ने जाव पूरिय करेइ तएण दो वि वासुदेवा सखसद् सामायारि
करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेअ अमरकका तेणेव

ततस्तदनन्तरं स कपिलो वासुदेवो यत्रैवामरकङ्काराजधानीं तत्रैवोपागच्छति,
उपागत्यामरकङ्काराजधानीं सभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवा
दीत्-किं-कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकका सभग्नतोरणा यावत्-
सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिल वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे
स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् उर्षाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन
'तुम्हे परिभूय' युष्मान् परिभूय=अनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न
शक्यते कर्तुमिति मनसि निधायेत्यर्थः, अमरकङ्का यावत् सन्निपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता
अमरककं रायहाणि सभग्नतोरण जाव पामह, पासित्ता पडमणाभ
एव वयासी) तत्र कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शख शब्द को
सुना सुनकर उन्होंने ने भी पांचजन्य शख को अपने मुख की वायु से
पूरित किया-यजाया-इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न
मिलकर शख के शब्द से परस्पर में मिले । अब वे कपिल वासुदेव
जहां वह अमरकका नगरी थी वहां आये । वहां आकर उन्होंने अमर-
कका राजधानी को सभग्न तोरण आदि वाला देखा । देखकर तब पद्म-
नाभ राजा से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवानुप्पिया ! एसा अमरकका
सभग्न जाव सन्निवड्डया ? तएण से पडमणाहे कविल वासुदेव एव
वयासी-एव खलु सामी ? जम्बूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ
इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुम्हे परिभूए अमरकका जाव
सन्निवाड्डिया) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकका नगरी क्या कारण है-जो

अमरककारायहाणि सभग्नतोरण जाव पासह, पासित्ता पडमणाभ एव वयासी)

न्यारे कृष्णवासुदेवे कपिल वासुदेवना शब्दने ध्वनि साधने। त्याहे
तेमळे पण पोताना पायल्ल्य शब्दने शुभना पवनथी पूरित क्यो अने
वगाड्यो आ रीते तेजो अने वासुदेव प्रत्यक्ष रीते नहि पण शब्दना
ध्वनिथी परस्पर मळ्या त्यारपळी ते कपिल वासुदेव न्या ते अमरकका नगरी
हती त्या आल्या त्या आनीने तेमळे अमरकका राजधानीने धन्यो वजे
रेथी नष्ट थयेली जेष्ठ, जेष्ठने तेमळे पद्मनाभ राजाने आ प्रभाळे कहु के-

(किण्ण देवानुप्पिया ऐसा अमरकका सभग्न जाव सन्निवड्डया ? तएण से
पडमणाहे कपिल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ! जम्बूदीवाओ दीवाओ
भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुम्हे परिभूए अमरकका
जाव सन्निवाड्डिया)

તતઃ खलु स कपिलो वासुदेवः पद्मनाभस्यान्तिके एतमयं श्रुत्वा पद्मनाभम्
एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अयादीत्-ह भो ! पद्मनाभ ! अप्रार्थितं प्रार्थित ! =मरण
वाञ्छक !, किं खलु ख न जानासि मम सदृशपुरुषस्य वासुदेवस्य विप्रिय=विरुद्धं
कुर्वत्, इत्युक्त्वा आशुरुक्तः=शीघ्र क्रोधाऽऽक्रान्त, यावत् पद्मनाभं ' निव्विसयं '
निर्विषय=विषयोत् सराज्याद् निर्गत-निष्कामित कर्तुम् ' आणवेइ ' आज्ञापयति
पद्मनाभस्य पुत्रममरकङ्काराजधान्या महता महता राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति,

સમગ્ર તોરણ આદિ ચાલી હોકર ભૂમિસાત્ હો ગઈ છે । તય પદ્મનાભ
રાજા ને उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा-हे स्वामिन् ! इसका
कारण इस प्रकार है-जबूद्रीप नाम के प्रथम द्वीप से भरतक्षेत्र में यहाँ
घहुत ही शीघ्र आकर कृष्ण वासुदेव ने आपकी कुछ भी परवाह न
करके-कपिल वासुदेव हमारी कुछ भी हानि नहीं कर सकते हैं-ऐसा
अपने मन में समझ करके-अमरकका में आकर-उसे पहिले सभग्न
तोरण बोली किया-और बाद में विध्वस्तकर दिया । (तएण से कविले
वासुदेवे पउमणाहस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा पउमणाह एव वयासी)
तब पद्मनाभ राजा के मुख से इस समाचार को सुनकर के उस कपिल
वासुदेव ने उस पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-(ह भो ! पउम-
णाभा ! अपत्थियपत्थिया । किन्न तुम न जाणासि मम सरिसपुरिस
स्स कणहस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणे ? असुरुत्ते जाव पउमणाह
णिव्विसय आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्त अमरकका रायहाणीए महया

હે દેવાનુપ્રિય ! શા કારણથી આ અમરકકા નગરીની ધન્યતા વગેરે
પણ તૂટી ગઈ છે અને સ પૂર્ણ નગરી વિનષ્ટ થઈ ગઈ છે ! ત્યારે પદ્મનાભ
રાજાએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! વાત એવી છે
કે જબૂદ્રીપ નામના પ્રથમ દ્વીપના ભરતક્ષેત્રથી અહીં બહુ જ જલ્દી આવીને
કૃષ્ણવાસુદેવે તમારી જગ્યાએ હરકાર કર્યા વગર “ કપિલ વાસુદેવ અમારૂં કંઈજ
કરી શકશે નહિ ” આ જાતનો પોતાના મનમાં વિચાર કરીને પહેલા તો
અમરકકાના તોરણો નષ્ટ કર્યા અને ત્યારપછી આ નગરીને પણ જમીનદોસ્ત
કરી નાખી છે (તएण से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा
पउमणाह एव वयासी) ત્યારે પદ્મનાભ રાજાના મુખથી આ બધી વિગત સાંભ
ળીને તે કપિલવાસુદેવે તે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया । किन्न तुम न जाणासि मम सरिस
पुरिसस्स कणहस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणे ? असुरुत्ते जाव

यावत् प्रतिगत = पद्मनाभस्य पुत्र राज्येऽभिषिच्य कपिलवासुदेवो यस्यादिशः
मादुर्भुवस्ता दिश प्रतिगत इति भाव ॥ सू० ३० ॥

मूलम्—तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद् मज्झं मज्झेणं
वीडवयइ, त पच पडवे एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवानु-
प्पिया । गंगामहानइं उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठियं लवणा-
हिवइं पासामि, तए णं त पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं
वुत्ता समाणा जेणेव गंगामहानइं तेणेव उवागच्छति उवाग-
च्छित्ता एगट्ठियाए नावाए मग्गणगवेसणं करोति करित्ता एग-
ट्ठियाए नावाए गंगामहानइ उत्तरति उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं
वयंति-पहू णं देवाणुप्पिया । कण्हेवासुदेवे गंगामहाणइं वाहाहि
उत्तरित्ते उदाहु णो पभू उत्तरित्ते एत्ति कट्ठु एगट्ठियाओ नावाओ

महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ जाव पडिगए) अरेओ मरणवाञ्छक
पद्मनाभ ! मेरे जैसे पुरुष कृष्ण वासुदेव का विप्रिय-अनिष्ट-करते हुए
तुमने मेरा कुछभी ख्याल नहीं किया ? इस प्रकार कह कर वे उस पर
बहुत अधिक कुपित हो गये । यावत् उस पद्मनाभ राजा को उन्होंने ने
अपने देश से बाहिर भी निकाल दिया । तथा-उसका जो पुत्र सुनाभ
था । उस को बड़े भारी उत्सवके साथ राज्य में अभिषिक्त किया । इस
प्रकार पद्मनाभ के पुत्र को राज्य में अभिषिक्त करके वे कपिल वासु-
देव जिस दिशासे आये थे उस दिशाकी ओर वापिस चले गये ॥ सू० ३० ॥

सय आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्त अमरकका रायहाणीए महया महया रायाभिसे-
एण अभिसिंचइ, जाव पडिगए)

अरे, ओ मृत्युने धञ्छनार पद्मनाभ ! भारा जेवा पुरुष कृष्णवासुदेवन
पुत्र करता ते भारी पणु दरकार करी नहि ? आ प्रभाणु कहीने तेओ प्रण
क्षोधित यह गया यावत् ते पद्मनाभ राजने पोताना देशथी गहार पणु नसाडी
भूकथे । त्थारपछी तेना पुत्र सुनाभने लारे उत्सवणी साथे रान्याभिषेक कथे
आ रीते पद्मनाभना पुत्रने रान्यासने अभिषिक्त करीने कपिल वासुदेव जे
दिशा तरक्षी आन्या हुता ते दिशा तरक्ष पाछा जाता रहा ॥ सूत्र ३० ॥

णूमेति णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणार चिट्ठंति, तएणं
 से कणहे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ पासित्ता जेणेव
 गंगामहाणइं तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ
 समता मग्गणगवेसणं करेइ करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए
 वाहाए रहं सत्तुरगं ससारहिं गेणहइ एगाए वाहाए गंगं महाणइं
 वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयणं च विच्छिन्न उत्तरिउ पयत्ते यावि
 होत्था, तएण से कणहे वासुदेवे गंगामहाणइंए बहुमज्झदेस-
 भागं सपत्ते समाणे सते तते परितते वद्धसेए जाए यावि होत्था
 तएण कणहस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अब्झत्थिए जाव
 समुप्पज्जित्था अहो ण पंच पंडवा महाबलवगा जेहि गंगा-
 महाणइं वासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा वाहाहिं
 उत्तिण्णा, इत्थ भूएहि णं पचहि पंडवेहि पउमणाभे राया जाव
 णो पडिसेहिए, तएण गंगादेवी कणहस्स वासुदेवस्स इम एया-
 रूव अब्झत्थिय जाव जाणित्ता थाह वितरइ, तएण से कणहे
 वासुदेवे मुहुत्ततर समासासइ समासासित्ता गंगामहाणइं वावट्ठिं
 जाव उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव पच पंडवा तेणेव उवागच्छइ उवा-
 गच्छित्ता पच पंडवे एव वयासी-अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया ।
 महाबलवगा जेण तुब्भेहिं गंगामहाणइं वासट्ठिं जाव उत्तिण्णा,
 इत्थ भूएहि तुब्भेहि पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पच
 पंडवा कणहेण वासुदेवेणं एव वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेव एव
 वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया । अम्हे तुब्भेहि विसजिया समाणा

जेणेव महाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता एगद्वियाए
मग्गणगवेसण त चेव जाव णूमेमोतुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो
तएण से कणहे वासुदेवे तेसि पंचणहं पांडवाणं एयमट्ठ सोच्चा
णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवालियं एव वयासी—अहो णं जया
मए लवणसमुद्धं दुवे जोयणसयसहस्ता विच्छिण्ण वोइवइत्ता
पउमणाभ हयमहिय जाव पडिसेहत्ता अमरकका संभग्ग० दोवई
साहत्थि उवणीया तथा ण तुब्भेहि मम महप्पं ण विण्णायं
इयाणि जाणिस्सहत्तिकट्ठु लोहदंडं परामुसइ, पंचणहं पंडवाणं
रहे चूरेइ चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ ण रह
मइणे णाम कोड्डे णिव्विट्ठे, तएण से कणहे वासुदेवे जेणेव सए
खधावारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता सएणं खधावारेणं सद्धिं
अभिसमन्नागए यावि होत्था, तएण से कणहे वासुदेवे जेणेव चार-
वई णयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता अणुपविसइ ॥सू०३१॥

टीका—‘ तएण से इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कृष्णो वासुदेवो लवण
समुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिप्रजति=गच्छति व्यतिप्रज्य तान् पञ्च पाण्डवान् एव
भवादीन्—गच्छत खलु यूय हे देवानुप्पिया ।’ गङ्गामहानदीमुत्तरत्त=उत्तीर्णा भवत,

तएण से कणहे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कणहे वासुदेवे) उन कृष्णवासुदेवने
(लवणसमुद्ध) जय लवण समुद्र में (मज्झ मज्झेण वोइवयइ) बीच से
होकर वे चले जा रहे थे । (ते पच पडवे एव वयासी) तब पाच पांडवों
से ऐसा कहा—(गच्छहण तुब्भे देवानुप्पिया ! गंगामहानइ उत्तरइ जाव

तएण से कणहे वासुदेवे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपछी (से कणहे वासुदेवे) ते कृष्णवासुदेवे (लवणसमुद्र)
के म्यारे तेओ लवण समुद्रनी (मज्झ मज्झेण वोइवयइ) मध्ये थधने पसार
थता उता त्यारे (ते पच पडवे एव वयासी) पाये पाउवोने आ प्रभाणे
उधु (गच्छहण तुब्भे देवानुप्पिया ! गंगा महानदि उत्तरइ जाव ताव अइ सुद्विय

યાવત્ તાવદહ સુસ્થિત દેવ લવણાધિપતિં પશ્યામિ, સુસ્થિતેન દેવેન સહ મિલિત્વા તમાપૃચ્છ્યાગચ્છામિ, તતઃ સ્વલુ તે પશ્ચપાણ્ડવા ક્રુષ્ણેન વાસુદેવેન એવમુક્તાઃ સન્તો યતૈવ ગદ્ગામહાનદી તતૈત્રોપાગન્તિ, ઉપાગત્ય ' એગટ્ટિયાપ ' એકાર્થિ કાયાઃ=મહાનૌકાસમાનકાર્યકારિણા ' નાવાપ ' નાવઃ=નૌકાયા માર્ગણગવેષણ કુર્મન્તિ । કૃત્વા=માર્ગણગવેષણ કૃત્વા નૌકાયામારુણ તે પશ્ચ પાણ્ડવા એકાર્થિ-કયા નાવા ગદ્ગામહાનદી યુત્તરન્તિ, ઉત્તીર્ય અન્યોન્યમ્=પરસ્પરમેવ વદન્તિ-‘ પહૂ ’ પ્રમુ.=સમર્થ, સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! કૃષ્ણો વાસુદેવો ગદ્ગામહાનદી ‘ વાહાર્હિ ’ વાહુ-ભ્યા=મુજા-ભ્યામ્ ‘ ઉત્તરિત્તપ ’ ઉત્તરીતુમ્ ‘ ઉદાહુ ’ ઉતાહો-અથવા નો

તાવ અહ સુદિય લવણાહિવહ પાસામિ) હે દેવાનુપ્રિયા ! તુમલોગ જાઓ-ઔર ગગાનદી કો પાર કરો તથતક મેં લવણસમુદ્રાધિપતિ સુસ્થિત દેવ સે મિલકર ઔર ઉનકી આજ્ઞા લેકર આતા હૂં । (તપ્પણ તે પચ પડવા કળ્હેણ વસુદેવેણ ગ્થ વુત્તા સમાણા જેણેવ ગગા મહાનઈ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા એગટ્ટિયાપ નાવાપ મગ્ગણગવેસણ કરેતિ, કરિત્તા એગટ્ટિયાપ ગગામહાનઈ ઉત્તરતિ) હસ તરહ કૃષ્ણ વાસુ દેવ દ્વારા કહે ગયે વે પાચો પાંડવ જહાં ગગા મહાનદી થી-વહા આયે । વહા આકર કે ઉન્હોને એકાર્થિક-મહાનૌકાસે જૈસી કાર્ય સાધક-નૌકા માર્ગણા એવ ગવેષણા કી, માર્ગણા ગવેષણા કર કે વે પાચો પાંડવ નૌકા પર ચઢ ગગા મહાનદીસે પાર હો ગયે । (ઉત્તરિત્તા અણ્ણમણ્ણ એવ વયતિ પહૂણ દેવાણુપ્પિયા ! કળ્હે વાસુદેવે ગગા મહાનઈ વાહાર્હિ ઉત્તરિ-

લવણાહિવહ પાસામિ) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો હવે જાઓ અને ગગા નદીને ઓળંગો ત્યાંમુઘી હું લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવને મળીને અને તેમની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને આવું છું

(તપ્પણ તે પચ પડવા કળ્હેણ વાસુદેવેણ એવ વુત્તા સમાણા, જેણેવ ગગા મહાનઈ તેણેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા એગટ્ટિયાપ નાવાપ મગ્ગણગવેસણ કરેતિ, કરિત્તા એગટ્ટિયાપ નાવાપ ગગા મહાનઈ ઉત્તરતિ)

આ રીતે કૃષ્ણવાસુદેવ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા તે પાંચે પાંડવો જ્યાં ગગા મહા નદી હતી ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે એકાર્થિક મહાનૌકા જેવી કામમા આવી શકે તેવી નૌકાની માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરી માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને તે પાંચે પાંડવો નૌકા ઉપર સવાર થઈને ગગા મહા નદીને પાર ઉતરી ગયા

(ઉત્તરિત્તા અણ્ણમણ્ણ એવ વયતિ પહૂણ દેવાણુપ્પિયા ! કળ્હે વાસુદેવે ગગા-

प्रभुः=समर्थ उत्तरीतुम्, इति कृत्वा गङ्गामहानया बाहुभ्यामुत्तरणे कृष्णवासु-
वदेस्य सामर्थ्यमस्ति, नास्ति वा तद् विजानामीति विचार्य एकार्थिका नाव=
नौका 'णूमेति' गोपयन्ति । गोपयित्वा कृष्ण वासुदेव 'पडिवालेमाणा' प्रति-
पालयन्त=प्रतीक्षमाणाः तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थित देव
लवणाधिपति पश्यति=सुस्थितेन साक मिलति दृष्ट्वा तमापृच्छ्य यत्रैव गङ्गामहा-
नदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एकार्थिकाया नावः=नौकाया मार्गणगवेपणं
करोति, कृत्वा, एकार्थिकां नावमपश्यन् एकेन बाहुना रथ सतुरग=सहाश्व,

तए उदाहृणो पभू उत्तरित्तए चिकद्दु एगट्टियाओ णावाओ णूमेति,
णूमित्ता कण्हं वासुदेव पडिवाले माणा २ चिद्धति, तएण से कण्हे वासु-
देवे सुद्धिय लवणाहिबह, पासह, पासित्ता जेणेव गगा महानई तेणेव
उवागच्छइ) जय पार होकर वे तट पर पहुँच चुके-तब परस्पर में
उन्होंने ने ऐसा विचार किया-हे देवानुप्रियों ! देखो कृष्ण वासुदेव गंगा
महानदी को हाथों से तैरकर पार करने में समर्थ हो सकते हैं
या नहीं हो सकते हैं ? इस प्रकार विचार करके उन्होंने ने उस एकार्थि
नौका को कृष्ण वासुदेव के आने के लिये वापिस उस पार भेजा नहीं
वहीं पर छिपा दिया । और छिपाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा करते
वे वही ठहरे रहे । उधर-कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्राधिपति सुस्थित
देव से जाकर मिले और उसकी आज्ञा लेकर जहाँ गंगा नदी थी वहाँ
आये । (उवागच्छित्ता एगट्टियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेई,
करित्ता एगट्टिय अपासमाणे एगाए वाहाए रह सतुरगं ससारहिं गेण्हइ

महानई वाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहु णो पभू उत्तरित्तए चिकद्दु एगट्टियाओ णावाओ
णूमेति, णूमित्ता कण्हं वासुदेव पडिवालेमाणा २ चिद्धति, तए ण से कण्हे वासुदेवे
सुद्धिय लवणाहिबह, पासह, पासित्ता जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छइ)

पार उतरीने न्यारे तेओ किनारे पहुँची गया त्यारे तेभण्णे परस्पर
विचार कर्यो के के देवानुप्रियो ! कृष्णवासुदेव गंगा महानदीने हाथो पडे
तरीने पार करी शके के नहि ? आम विचार करीने तेभण्णे ते 'अकार्थि'
नौकाने कृष्णवासुदेवने लाववा भाटे पाछी मोडली नहि पशु त्याज छुपावी
दीधी अने छुपावीने तेओ त्याज कृष्णवासुदेवनी प्रतीक्षा करता रोकाई गया
कृष्णवासुदेव लवण समुद्राधिपति सुस्थितदेवने भल्या अने तेनी आज्ञा प्राप्त
करीने न्यां गगा नदी छती त्या आन्या

(उवागच्छित्ता एगट्टियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेई, करित्ता
एगट्टिय अपाममाणे एगाए वाहाए रह सतुरग ससारहिं गेण्हइ, एगाए वाहाए

સસારથિં શૃણ્ણાતિ એકેન યાદુના ગદ્ગા મહાનદીં 'વાપટ્ઠિ' દ્વાપટ્ઠિ યોજનાનિ અર્ધયોજન ચ 'વિત્થિન્ન' વિસ્તીર્ણામ્, ઉત્તરિતુ પ્રવૃત્તથાપ્યમયત્, તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવો ગદ્ગામહાનદ્યા યદુમધ્યદેશમાગ સપ્રાપ્તઃ સત્ 'સતે' શ્રાન્તઃ=શ્રમપ્રાપ્તઃ, 'તતે' તાન્તઃ=લિન્ન 'પરિતતે' પરિતાન્તઃ=પર્વથા લિન્નઃ 'વદ્-સેષ' સપ્રાપ્તસ્વેદઃ, જાતથાપ્યમયત્ ।

તતઃ સ્વલુ કૃષ્ણસ્ય વાસુદેવસ્થાયમેતદ્મુપ આપ્યાત્મિકો યાવત્ મનોગત સ્વરૂપઃ સમુદપદ્યત-અહો સ્વલુ પશ્ચ પાન્ડવા મહાવલગ્નત્, યૈર્ગદ્ગામહાનદી દ્વાપટ્ઠિ યોજનાનિ અર્ધયોજન ચ વિત્થિના-વિસ્તીર્ણા યાદુમધ્યપામુત્તીર્ણા, 'ઇત્યભૂર્ણિ' ઇત્યભૂતૈઃ-ઈદ્દશપરાક્રમશાલિભિઃ. સ્વલુ પશ્ચમિઃ પાન્ડવૈઃ પદ્મનાભો રાજા યાવત્ નો

એગાએ વાહાણ ગમ મહાણઈ વાસટ્ઠિ જોયણાઈ અદ્વજોયણ ચ વિચ્છિન્ન ઉત્તરિપયસે યાવિ હોત્થા) વહા આકર કે ઉન્હોં ને ઇકાર્થિક નૌકા કી સઘ તરફ સઘ પ્રકારસે માર્ગણા ગવેષણા કી 'માર્ગણાગવેષણ કરકે જય ઉનકે દેશ્વને મેં ઇકાર્થિક નૌકા નહીં આઈ, તય સારથિ ઓર ઘોડોં સે યુક્ત રથ કો ઉન્હોં ને ઇક હાથ સે પકડા ઓર ઇક હાથ સે ૬૨॥, માઠે વાસઠ, યોજન વિસ્તીર્ણ ઉસ ગગા મહાનદી કો તૈરકર પાર કરના પ્રારંભ કિયા । (તણ સે કણે વાસુદેવે ગગા મહાણઈએ બહુમજ્જદેસ ભાગ સપત્તે સમાણે સતે, તતે, પરિતતે, વદ્ધસેએ જાએ યાવિ હોત્થા, તણ કણહસ્સ વાસુદેવસ્સ હમે એયારૂવે અજ્ઞતિયેએ જાવ સમુપ્પજ્જિત્થા -અહોણ પચ પડવા મહાવલગા, જેહિં ગગામહાણઈ વાસટ્ઠિ જોયણાઈ અદ્વજોયણ ચ વિચ્છિન્ન વાહાઈ ઉત્તિણ્ણા ઇત્યભૂર્ણિ ણ પચઈ પડ

ગગ મહાણઈ વાસટ્ઠિ જોયણાઈ અદ્વજોયણ ચ વિચ્છિન્ન ઉત્તરિપયસે યાવિ હોત્થા)

ત્યા આવીને તેમણે 'એકાર્થિક' નૌકાની ચોખેર બધી રીતે માર્ગણા ગવેષણા કરી માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને બ્યારે 'એકાર્થિક' નૌકા તેમના ભવામા આવી નહિ ત્યારે સારથિ અને ઘોડાથી યુક્ત રથને તેમણે એક હાથમાં ઉપાડયો અને એક હાથ વડે ૬૨" ચોજન વિસ્તીર્ણુ તે ગગા મહા નદીને તરીને પાર કરવા લાગ્યા

(તણ સે કણે વાસુદેવે ગગા મહાણઈએ બહુમજ્જદેસ ભાગ સપત્તે સમાણે સતે, તતે, પરિતતે, વદ્ધસેએ જાએ યાવિ હોત્થા, તણ કણહસ્સ વાસુદે વસ્સ હમે એયારૂવે અજ્ઞતિયેએ જાવ સમુપ્પજ્જિત્થા-અહોણ પચ પડવા મહાવલગા જેહિં ગગા મહાણઈ વાસટ્ઠિ જોયણાઈ અદ્વજોયણ ચ વિચ્છિન્ન વાહાઈ

प्रतिपेधितः=नो पराजितः, इदमाश्चर्यम्, ततः खलु गङ्गादेवी कृष्णस्य वासुदेवस्य
इममेतद्रूपमाध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प ज्ञात्वा 'थाह' स्ताव-गाधवित-
रति,=ददाति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो मुहूर्तान्तरे 'समासासइ' समाश्व
सिति-विश्राम प्राप्नोति समाश्वस्य गङ्गामहानदीं द्वापण्डि यावद् उत्तरति, उत्तीर्य

वेहिं पद्मनाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएण गंगादेवी कण्हस्स
वासुदेवस्स इम एयारुव अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाह विनरइ) तैरते
२ जज वे कृष्णवासुदेव गंगा महानदी के ठीक मज्झ-मध्य भाग में
आये-तब वहा तक आते २ वे अम प्राप्त हो गये, खेदखिन्न बन गये,
और सर्वथा थक गये । यहा तक कि उनके शरीर भर में थकावट की
पजह से पसीना २ हो गया । तब उन कृष्णवासुदेव को इस प्रकार का
यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ । देखो-ये पाचो
पाडव बड़े बलिष्ठ है-जिन्होंने ने ६२॥, योजन विस्तीर्ण इस गंगा महा-
नदी को हाथों से तैरकर पार कर दिया परन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात
है-कि ऐसे पराक्रम से युक्त होते हुए भी इन पाडवों से वह पद्मनाभ
राजा प्रतिपेधित नहीं हो सका-जीता नहीं जा सका । इस प्रकार के उन
कृष्णवासुदेव के इस रूप इस आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प को
गंगादेवी ने जानकर उन्हें थाह दे दी (अधार दिया) । (तएण से कण्हे
वासुदेवे सुहुत्ततर समासासइ) थाह प्राप्त कर कृष्णवासुदेव ने वहा
भूएहिं ण पचहिं पडवेहिं पडमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएण गंगादेवी
कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारुव अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाह वितरइ)

तरता तरता त्यारे कृष्णवासुदेव गंगा महानदीना ओकइम मध्यमा
आन्था-त्यामुधी आवता आवता तो तेओ थाडी गया, जेदणित्त थर्ध गया,
अने ओकइम थाडी गया थाकने लीधे तेमनु स पूणु शरीर परसेवाथी तरओण
थर्ध गयु त्यारे ते कृष्णवासुदेवने आ जतने आध्यात्मिक यावत् मनोगत
सकल्प उद्भवो के ओओ आ पाये पाउवो केटला मधा मलिष्ठ छे के जेमणे
६२" योजन विस्तीर्ण आ गंगा महानदीने हाथो पडे तरीने पार करी छे
पणु ओनी साथे आ पणु ओक नवाध जेवी वात छे के ओवा पराक्रमी होवा
छताओ आ पाउवोथी ते पद्मनाभ राजा यावत् पराजित करी सकाओ नहि
कृष्णवासुदेवना गंगा महानदीओ आ जतना आध्यात्मिक यावत् मनोगत
सकल्प जण्णीने तेमना माटे थाह आपी (तएण से कण्हे वासुदेवे सुहुत्ततर
समासासइ) थाह जेणवीने कृष्णवासुदेवे थोडीवार त्या विश्राम कर्यो (समासा०)
विश्राम कर्यो पाह तेमणे

यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्च पाण्डवान एवमवादीत्—
अहो खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! महाबलवत् येन युष्माभिर्मित्रा महानदी द्वापट्टि
योजनानि अर्धयोजनं च विस्तीर्णा यावद् उत्तीर्णा, इत्थंभूतैर्युष्माभिः पञ्च-
नाभो यावत् नो मतिपेधितः पराजयः न प्रापितः, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः

थोड़ी देर तकविश्राम किया (समाप्त०) विश्राम करके फिर उन्होंने (गंगा
महाण्ड्र बावट्टि जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी-अहोण तुम्हे देवानुप्रिया ! महा
बलवगा जेण तुम्हेहिं गंगा महाण्ड्र वासट्टि जाव उत्तिण्णा, इत्थंभूएहिं तुम्हेहिं
पउम जाव णो पडिसेहिण, तएण ते पचपडवा कण्हे ण वासु
देवेण एव वुत्ता समाणा कण्हा वासुदेव एवं वयासी-एव खलु देवानु-
प्रिया ! अम्हे तुम्हेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाण्ड्र तेजेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्टियाण मग्गणगवेसणं त चेव जाव
णूमेमो तुम्हे पडिवाले माणा चिट्ठामो) साठे वासठ योजन विस्तीर्ण
उस गंगा महानदी को तैरकर पार कर दिया। पार करके फिर वे वहाँ
आये-जहाँ ये पाँचो पाडव थे। वहाँ आकर उन्होंने उन पाँचो पाडवों
से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुमलोग बहुत ही अधिक बलशाली
हो जो तुमलोगों ने ६२॥ योजन विस्तीर्ण इस गंगा महानदी को बाहुओं
से तैरकर पार कर दिया। परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि इतने बल
शाली होकर भी जो तुम से पद्मनाभ राजा पराजित नहीं हो सका।

(गंगा महाण्ड्र बावट्टि जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी-अहोण तुम्हे देवानुप्रिया !
महाबलवगा जेण तुम्हेहिं गंगा महाण्ड्र वासट्टि जाव उत्तिण्णा इत्थं भूएहिं तुम्हेहिं
पउम जाव णो पडिसेहिण, तएण ते पच पडवा कण्हे ण वासुदेवेण एव वुत्ता
समाणा कण्हा वासुदेव एव वयासी-एव खलु देवानुप्रिया ! अम्हे तुम्हेहिं विस
ज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाण्ड्र तेजेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्टियाण
मग्गण गवेसणं त चेव जाव णूमेमो तुम्हे पडिवाले माणा चिट्ठामो)

६२" योजन विस्तीर्ण ते गंगा महानदीने तरीने पार पडोयी गया
पार पडोयीने तेआ नया पाये पाउवो छता त्या आवा त्या आवीने तेमळे
पाये पाउवोने आ प्रभाळे कळु के छे देवानुप्रियो ! तमे अणु न अणवान छे
हेमके तमे दोडोळे ६२" योजन विस्तीर्ण आ गंगा महानदीने छोथो वडे
तरीने पार करी छे पणु कोनी साथे आ कोक नवाध नेत्रा वात ~ ~ त्मे
आटला अथा अणवान छोवा छता पणु पद्मनाभ राजाने २

कृष्णेन वासुदेवेनैरमुक्ताः सन्तः कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानु-
प्रियाः ! वयं युष्माभिर्विसर्जिताः सन्तो यत्रैव गङ्गा महानदी तत्रैवोपागच्छामः,
उपागत्य 'एगद्वियाए' एकार्थिकाया नावो मार्गणगवेपण कृत्वा 'तं चेव
जाव णूमेमो' तदेव=यदुक्तं पूर्वं तदेवात्र बोध्यमित्यर्थः-ता नावमधिरुह्य वयं
गङ्गामहानदीमुत्तीर्णाः, ततः खलु हे देवानुप्रियाः ! गङ्गा महानदीं बाहुभ्या-
मुत्तरितुं भवन्तः शक्नुवन्ति नरा, इति ज्ञातुं वयमेकार्थिका नौका यावद् 'णूमेमो'
गोपयामः, युष्मान् 'पडिपालेमाणा' प्रतिपालयन्तः-प्रतीक्षमाणा वयं तिष्ठामः ।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तेषां पञ्चानां पाण्डवानाम् एतमर्थं श्रुत्वा
आकर्ष्य निश्चयं हृद्यवधार्य आशुरुताः-शीघ्रं सजातरोप, यावत् त्रिजलिकां=रेखा

इस प्रकार जब कृष्णवासुदेवने उन पांचों पांडवों से कहा तब उन्होंने ने
कृष्णवासुदेव से ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! सुनिये-यात इस प्रकार है
जब हमलोगों को आपने वहां से विसर्जित कर दिया-तब हमलोग
जहां गंगा महानदी थी-वहां आये-वहां आकर हमलोगों ने एकार्थिक
नौका की मार्गणा गवेपणा की-नाव के मिलते ही हमलोग उसपर चढ़-
कर यहाँ गंगा नदी को पार कर आये हैं। हमलोगों ने यहाँ आकर
फिर हे देवानुप्रिय ! ऐसा विचार किया - कि - कृष्णवासुदेव गंगा
महानदी को हाथों से पार कर सकते हैं या नहीं-इसी बात को जानने
के लिये हमलोगों ने उस एकार्थिक नौका को यही छिपा कर रख दिया
है। और आपकी प्रतीक्षा में यहाँ ठहरे हुए हैं। (तएण से कण्हे वासु-
देवे तेसि पचण्हं पाडवाण एयमद्व सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिव-

आ रीते न्यारे कृष्णवासुदेवे ते पावे पाडवोने कहुं त्यारे तेभण्णे कृष्णवासु
देवने आ प्रभाण्णे कहुं के हे देवानुप्रिय ! सावणो, वात अेवी छे के अभने
अधाने तमे न्यारे विदाय कथो त्यारे अमे लोको न्या गंगा महानदी छती
त्या आन्या त्या आवीने अधाने अेकार्थिक नौकानी मार्गणा गवेपणा करी
नौका प्राप्त यता न अमे अधा तेमा भेसीने गंगा महानदीने पार करीने आ
तरङ्ग आवी गया आ तरङ्ग आवीने हे देवानुप्रिय ! अमे लोकोअे आ प्रभाण्णे
विचार कर्यो के-कृष्णवासुदेव गंगा महानदीने हाथो वडे तरीने पार करी शक्ये
के केम ? आ वात अणुवा भाटे न अमे लोकोअे ते अेकार्थिक नौकाने छुपावीने
तमारी प्रतीक्षा करता अमे अहाँ न भेसी रह्या छता

(तएण से कण्हे वासुदेवे तेसि पचण्ह पाडवाण एयमद्व सोचा णिसम्म
आसुरुत्ते जाव तिवलिय एव वयासी-अहोण जया मए खवणसमुद दुवे जोयण

યજોત્ પશ્ચ પાણ્ડવાસ્તર્જીવોપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય પશ્ચ પાણ્ડ્યાન્ એમવાદીત્—
અહો સ્વલુ યુય હે દેવાનુપ્રિયાઃ । મહાચલત્ત યેન યુધ્ધમાર્મિર્ગન્ના મહાનદી દ્વાપદિ
યોજનાનિ અર્ધયોજન ચ વિસ્તીર્ણા યાત્સુ ઉત્તીર્ણા, इत्थंभूतेर्गुणमाभिः पद्म-
नाभो यावत् नो प्रतिपेधितः पराजय न प्रापितः, તતઃ સ્વલુ તે પશ્ચ પાણ્ડવાઃ

થોડી દેર તકવિશ્રામ કિયા (સમાસાં) વિશ્રામ કરકે ફિર ડન્હોને (ગગા
મહાણહ વાવટ્ટિ જાવ ઉત્તરહ, ઉત્તરિત્તા જેણેવ પચપડવા તેણેવ ઉવાગચ્છહ,
ઉવાગચ્છિત્તા પચ પડવે એવ વયાસી-અહોણ તુભે દેવાણુપ્પિયા । મહા-
ચલચગા જેણ તુભેહિં ગગા મહાણઈ વાસટ્ટિ જાવ ઉત્તિણ્ણા, इत्थंभूतेर्गुणमाभिः
તુભેહિં પડમ જાવ ણો પહિસેહિણ, તણે તે પચપડવા કળે ણ વાસુ
દેવેણ એવ ઘુત્તાં સમાણા કળહ વાસુદેવ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુ
પ્પિયા । અમ્હે તુભેહિં વિસજ્જિયા સમાણા જેણેવ ગગા મહાણઈ તેણેવ
ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા એગટ્ટિયાણ મગ્ગણગવેસણ ત ચેવ જાવ
ળૂમેમો તુભે પહિવાલે માણા ચિટ્ઠામો) સાઢે વાસઠ યોજન વિસ્તીર્ણ
ઉસ ગગા મહાનદી કો તૈરકર પાર કર દિયા । પાર કરકે ફિર વે વહાં
આયે-જહાં વે પાંચો પાડવ થે । વહા આકર ડન્હોં ને ડન પાંચો પાડવો
સે હસ પ્રકાર કહા-હે દેવાનુપ્રિયોં । તુમલોગ વહુત્ત હી અધિક વલશાલી
હો જો તુમલોગોં ને ૬૨॥ યોજન વિસ્તીર્ણ હસ ગગા મહાનદી કો વાહુઓં
સે તૈરકર પાર કર દિયા । પરન્તુ વહ આશ્ચર્ય કી વાત હેં કિ હતને વલ
શાલી હોકર મી જો તુમ સે પદ્મનાભ રાજા પરાજિત નહી હો સકા ।

(ગગા મહાણહ વાવટ્ટિ જાવ ઉત્તરહ, ઉત્તરિત્તા જેણેવ પચ પડવા તેણેવ
ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા પચ પડવે એવ વયાસી-અહોણ તુભે દેવાણુપ્પિયા !
મહાચલચગા જેણ તુભેહિં ગગા મહાણઈ વાસટ્ટિ જાવ ઉત્તિણ્ણા इत्थं भूतेर्गुणमाभिः
પડમ જાવ ણો પહિસેહિણ, તણે તે પચ પડવા કળે ણ વાસુદેવેણ એવ ઘુત્તા
સમાણા કળહ વાસુદેવ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । અમ્હે તુભેહિં વિસ-
જ્જિયા સમાણા જેણેવ ગગા મહાણઈ તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા એગટ્ટિયાણ
મગ્ગણ ગવેસણ ત ચેવ જાવ ળૂમેમો તુભે પહિવાલે માણા ચિટ્ઠામો)

૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણુ તે ગગા મહાનદીને તરીને પાર પહોચી ગયા
પાર પહોચીને તેઓ જગા પાચે પાડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે
પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બહુ જ બળવાન છો
કેમકે તમે ઢોડોએ ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણુ આ ગગા મહાનદીને હાથે વડે
તરીને પાર કરી છે પણ એની સાથે આ એક નવાઈ જેવા વાત છે કે તમે
આટલા બધા બળવાન હોવા છતા પણ પદ્મનાભ રાજાને

प्रतिषेध-इतमथितप्रवररीरधातितनिपतितचिह्नत्रजपताक यावत् प्रतिषेध्य =
सग्रामात् प्रतिनिरत्य-पन्ननाम विजिन्येत्यर्थः, अमरकका राजधानीं सभग्नतोरणा
यावद् विनिपातिता-विध्वसिता, तथा-द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=मवद्धयः प्रदत्ताः,
'तयाण' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम 'माह्व' माहात्म्य=महत्त्वं
चलं, 'ण विष्णाय' न विज्ञातम् 'इयार्णि' इदानीम्-अस्मिन् समये 'जाणि-
स्सह' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोहटण्ड 'परामुसइ' परामृशति-गृह्णाति
पञ्चाना पाण्डवाना रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा 'णिन्विसए' आणवेइ 'निर्निप
यान् आज्ञापयति-निपयात् स्वदेशतो निर्गताः बहिर्याता इति निर्निपयास्तान्,
युय मम देशात् निर्निगच्छत, इत्याज्ञापयति स्म' इत्यर्थः । आज्ञाप्य तत्र खलु
'रहमदणे' गाम कोठे निविष्टे 'रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्ट'-रथमर्दनपुर नाम
नगर स्थापितम् ।

ततस्तदनन्तर स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वक=निज, 'स्वधावारे' स्कन्धा-
धारः-सेनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण-सोपकरण-
सैनिकेन सार्वम् अभिममन्वागतः=मिलितश्चाप्यभरत् । ततः खलु स कृष्णो वासु-
देवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुप्रविशति ॥मृ० ३१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं को जमीन में मिलादिया-उस की राजधानी
अमरकका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने
हाथ से लाकर तुमलोगों को दिया उस समय तुमलोगो ने मेरे बल को
नहीं जाना ? जो अब जानोगे-ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह
दंडे को उठाया-और उससे पांचो पांडवों के रथों को चूर २ कर दिया।
चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी। आज्ञा
देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा
दिया। इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहाँ अपना स्कधावार था वहाँ

जमीनदोस्त ढरी नाथी तेनी राजधानी अमरकका नगरीने नष्ट ढरी नाथी
अने तेनी पात्रेथी द्रौपदीने लावीने तमने सोपी दीधी ते वणते तमे लोडे।
भारा अणने जाणी शक्या नहि तो हवे भारा अणने तमे जुआ-आम कहीने
ते कृष्णवासुदेवे लोहदंडे लाथभा लीधी अने तेनाथी तेमणे पांचे पांडवोना
रथोना भूकेभूका छिपी दीधा रथोने नष्ट ढरीने तेमणे पांचे पांडवोने देशथी
अडार जना नडेवानी आज्ञा आपी आज्ञा आपीने ते कृष्णवासुदेवे ते स्थणे
अक रथमर्दन नामे नगर बसाव्यु त्थारपछी ते कृष्णवासुदेव ज्या पोताना
सैन्यनी छापणी छती त्या आव्या त्या आपीने तेज्या पोताना सैनिकोने

प्रयुक्ता भुक्कुटि ललाटे उन्नीय मदश्च, एवमप्रादीत-अहो-आश्चर्यं खलु ' जया ' यदा-यस्मिन् समये, मया लवणसमुद्र ' दुवे जोयणसयसहस्ता त्रितियणं ' द्वियो जनशतसहस्रिस्तीर्णं द्विलभयोजनपरिमितं त्रिस्तीर्णं ' वीइवहत्ता ' व्यतिव्रज्य-समुल्लङ्घ्य, पद्मनाभ राजान ' हयमहिय-जात्र पडिसेहिता ' इतमथित-यावत्

लिय पव चयासी-अहोण जया भण लवणसमुद्र दुवे जोयणसयसहस्ता विच्छिन्न वीइवहत्ता पउमणाभ हयमहिय जात्र पडिसेहिता अमरकका समगग० दोवई साहत्थि उवणीया तथा ण तुम्मेहिं मम माहप्प ण विण्णाय इयाणि जाणिस्सह, त्ति कट्टु लोहदड परामुसइ, पचण्ह पडवाणं रहे चूरेइ, चूरित्ता णिव्विसण आणवेइ आणवित्ता तत्थ ण रहमहणे णाम कोइडे णिवेहे, तण्ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सण खधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सण्ण खधावारेण सद्धि अभिसमन्नागए यावि होत्था, से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवईण णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ) उन पावो पाडवों के मुख से इस कथन रूप अर्थ को सुनकर और उसे अपने हृदय में अवधारित कर उन कृष्णवासुदेव को इकदम क्रोध आ गया । त्रिवलियुक्त उनकी दोनों भुक्कुटिया ललाटतट पर चढ़ गई । उसी समय उन्होंने ने उन पाडवों से कहा यह पढ़े आश्चर्य की बात है-जिस समय मैंने २ दो लाख योजन विस्तारवाले लवणसमुद्र को उल्लङ्घन कर पद्मनाभ राजा को समग्राम में जीता-उस की सेना को हत मथित किया-राजचिन्हस्वरूप उसकी

सयसहस्ता विच्छिन्न वीइवहत्ता पउमणाम हय महिय जात्र पडिसेहिता अमरकका समगग० दोवई साहत्थि उवणीया तथाण तुम्मेहिं मम माहप्प ण विण्णाय इयाणि जाणिस्सह, त्ति कट्टु लोहदड परामुसइ, पचण्ह पडवाण रहे चूरेइ, चूरित्ता णिव्विसण आणवेइ आणवित्ता तत्थण रहमहणे णाम कोइडे णिवेहे, तण्ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सण खधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सण्ण खधावारेण सद्धि अभिसमन्नागए यावि होत्था तण्ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ)

ते पावे पाडवोंना भुभयी आ कथनइय अर्थने सावणीने अने तेने पोताना हृदयमा अवधारित करीने ते कृष्णवासुदेव अकडम क्रोधाविष्ट थई गया त्रिवलियुक्त तेमना णने लभभरे वई थई गया तेमणे तेन समये पाडवोंने आ प्रभाणे कहुं के आ परेपर नवाध जेवी बात छे के ब्यारे से २ लाख योजन विस्तीर्ण लवण समुद्रने जोणगीने पद्मनाभ राजाने शुद्धमा छुट्यो, तेनी सेनाने भयी नाणी, राजचिह्न स्वरूप तेनी प्रशस्त भव्य पताकाओने

प्रतिपे य-इतमथितप्रररीरघातितनिपतितविहभ्वजपताक यावत् प्रतिपेध्य =
सग्रामात् प्रतिनिवर्त्य-पक्षनाम विजिन्येत्यर्थः, अमरकका राजधानीं सभग्नतोरणा
यावद् विनिपातिता-विध्वसिता, तथा-द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=भवद्भयः प्रदत्ता.,
'तयाण' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम 'माह्व' माहात्म्य=महत्त्वं
बल, 'ण विष्णाय' न विज्ञातम् 'इयार्णि' इदानीम्-अस्मिन् समये 'जाणि
स्सह' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोटङ् 'परामुसइ' परामुशति-गृह्णाति
पञ्चाना पाण्डवाना रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा 'णिन्विसए आणवेइ' निर्विप
यान् आज्ञापयति-प्रिपयात् स्वदेशतो निर्गताः चहिर्याता इति निर्पिपयास्तान्,
युय मम देशात् निर्विगच्छत, इत्याज्ञापयति स्म 'इत्यर्थ' । आज्ञाप्य तत्र खलु
'रहमदणे णाम कोठे णिविठे' रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्ट-रथमर्दनपुर नाम
नगर स्थापितम् ।

ततस्तदनन्तर स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वक =निज, 'खधावारे' स्कन्धा-
वारः-सैनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण-सोपकरण-
सैनिकेन सार्वम् अभिममन्वागतः=मिलितश्चाप्यभनत् । ततः खलु स कृष्णो वासु-
देवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुमविशति ॥मृ० ३१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं की जमीन में मिलादिया-उस की राजधानी
अमरकका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने
हाथ से लाकर तुमलोगों को दिया उस समय तुमलोगों ने मेरे बल को
नहीं जाना ? जो अब जानोगे-ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह
दंडे को उठाया-और उससे पांचो पांडवों के रथों को चूर २ कर दिया।
चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी । आज्ञा
देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा
दिया । इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहाँ अपना स्कन्धावार था वहाँ

जमीनदोस्त करी नाथी तेनी राजधानी अमरकका नगरीने नष्ट करी नाथी
अने तेनी पाण्डेयी द्रौपदीने लावने तमने सोथी दीधी ते वणते तमे लोका
भारा षण्णने जल्ली गडया नहि तो हवे भारा षण्णने तमे जुआ-आम कहीने
ते कृष्णवासुदेवे लोहदंडने हाथमा लीधी अने तेनाथी तेमणे पाये पाडोना
रथोना भूकेभूम उठावी दीधा रथोने नष्ट करीने तेमणे पाये पाडोने देशथी
अडार जता रहैवानी आज्ञा आपी आज्ञा आपीने ते कृष्णवासुदेवे ते स्थणे
ओक रथमर्दन नामे नगर बसाव्यु त्यारपछी ते कृष्णवासुदेव ज्या पोताना
सैन्यनी हावणी हती त्या आ-या त्या आपीने तेओ पोताना सैनिकोने

मूलम्—तएणं ते पंच पडवा जेणं हुरियणाउरे तेणेव उवा-
गच्छति उवागच्छिता जेणे पट्ट तेणेव उवागच्छति उवाग-
च्छिता करयल एवं वयासी—एव खलु ताओ । अम्हे कण्हेणं
णिव्विसया आणत्ता, तएणं पडुराया ते पंच पडवे एव वयासी—
कहण्ण पुत्ता । तुम्हे कण्हेण वासुदेवेण णिव्विसया आणत्ता,
तएण ते पंच पडवा पडुराय एव वयानी—एव खलु ताओ ।
अम्हे अमरककाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्द दोन्नि जोयणसय-
सहस्साइ वीइवउत्ता तएण से कण्ह अम्हे एव वयासी—गच्छह
णं तुम्हे देवाणुप्पिया । गंगामहाण्ड उत्तरह जाव चिट्ठह ताव
अहं एवं तद्देव जाव चिट्ठामो, तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं
लवणाहिवइं ददट्ठण त चेव सव्वं नवर कण्हस्स चिंता ण जुज्झइ
जाव अम्हे णिव्विसए आणवेइ, तएणं से पडुराया ते पंच पडवे एव
वयासी—दुद्धु णं पुत्ता । कय कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमा-
णेहिं, तएण से पडुराया कोत्ति देवि सदावेइ सदावि ता एव
वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया । बारवइ कण्हस्स वासुदे-
वस्स णिवेदेहि—एव खलु देवाणुप्पिया । तुम्हे पंच पडवा णिव्वि-
सया आणत्ता तुम च णं देवाणुप्पिया । दाहिणद्धमरहस्स सामी
त सदिसतु ण देवाणुप्पिया पंच पडवा कयर दिसिं वा विदिस

आये । वहाँ आकर वे अपने सैनिकों के साथ मिले । बाद में जहाँ
द्वारावती नगरी थी उस ओर चल दिये वहाँ पहुँच कर वे द्वारावती
नगरी में प्रविष्ट हुए ॥ सू० ३१ ॥

अथा, त्थारणाद तेजो के तश्च द्वारावती नगरीं हती ते तश्च स्वाना थया
त्था पडोन्निने तेजो द्वारावती नगरीमा प्रविष्ट थया ॥ २

वा गच्छंतु ? तएण सा कोती पंडुणा एवं बुत्ता समाणी हत्थि-
खंध दुरुहइ दुरुहित्ता जहा हेट्टा जाव सदिसत्तु णं पिउत्था ।
किमागमणपओयणं ? तएण सा कोती कण्ह वासुदेव एवं
वयासी-एव खलु पुत्ता । तुम पच पंडवा णिविसया आणत्ता
तुम च णं दाहिणिडुभग्ग जाव विदिस वा० गच्छतु ? तएण
से कण्हे वासुदेवे कोति देवि एव वयासी-अपूर्इवयणाण पिउ-
त्था । उत्तमपुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्रवट्ठी त गच्छतु ण
देवाणुप्पिया । पंच पडवा दाहिणिछ वेलाऊल तत्थ पडुमहुर
णिवेसंतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्तिकट्ठ कोति देवि सक्करेइ
सम्माणेइ जाव पडिविन्नज्जेइ, तएण सा कोती देवी जान पडुस्स
एयमट्ठ णिवेदेइ, तएणं पडू पच पडवे सदावेइ सदावित्ता एव
वयासी गच्छह ण तुब्भे पुत्ता । दाहिणिछ वेलाऊल तत्थ ण
तुब्भे पडुमहुरं णिवेसेह, तएण पच पडवा पडुस्स रण्णो जाव
तहात्ति पडिसुणेति सवलवाहणा हयगय० हरिथणाउराओ पडि
णिमखमति पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिछे वेयाली तेणेव उवा-
गच्छइ उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरि निवेसेति निवेसित्ता तत्थ
णं तेविपुल्लोगसमिति समण्णागया यावि होत्था ॥ सू० ३२ ॥

टीका—‘ तएण ते इत्यादि । तत्तरतदनन्तर खलु ते पञ्च पाण्डवा यज्ञैव
हस्तिनापुर नगर तत्रैवोपागच्छन्ति, उपगत्य यज्ञैव पाण्डू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति,

— तएण ते पच पडवा इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (ते पच पडवा) वे पांच पांडव (जेणेव
हत्थिणा उरे) जहां हस्तिनापुर नगर में (तेणेव उवागच्छति) वहां

तएण ते पच पडवा इत्यादि—

, टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (ते पच पडवा) ते पांच पांडव (जेणेव हत्थिणा
उरे) तथा हस्तिनापुर नगर उतु (तेणेव उवागच्छति) तथा ॥ ३२ ॥ (पचा

ઉપાગત્ય કરતલપરિઘટીતદશનસ્થ શિરઆવર્ત મસ્તકેડત્તલિ કૃત્વા, એવમશ્ય માણમકારેણ, અગાદિપુઃ-એવ સ્વલુ હે તાત ! યય ઋણેન નિર્વિપયાઃ=વિપયાર મમ દેશાદ્ વહિર્નિર્ગતાઃ આશ્વાઃ=કૃષ્ણોડસ્માન્ દેશાદ્ વહિર્ નિર્ગન્તુમાશ્વત્વાનિ ત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ પાણ્ડુ રાજા તાન્ પચ્ચ પાણ્ડયાઃ એવમગાદીત-'કહળ્ણ' કથ કેન કારણેન સ્વલુ હે પુત્ર ! યય ઋણેન નિર્વિપયા આશ્વાઃ ? તતઃ સ્વલુ તે પચ્ચ પાણ્ડયાઃ પાણ્ડુ રાજાનમ્ એવમગદ્-એવ સ્વલુ હે તાત ! યયમમરકક્રાતઃ પ્રતિ નિવૃત્તા લવણસમુદ્ર 'દોઝિનોયણસય સહસ્તાઃ' દ્વિયોજનશતસહસ્રાણિ ઢિલક્ષ યોજનપરિમિત 'વીશ્વવૃક્ષા' વ્યવિત્રજિતાઃ-અલલ્હિતાઃ । તતઃ સ્વલુ સ્વ કૃષ્ણો

આગળ (ઉવાગચ્છિત્તા) વહા આકર કે (જેણેવ પદ્) વે જહા પાંડુ રાજા થે (તેણેવ ઉવાગચ્છિતિ) વહાં ગયે (ઉવાગચ્છિત્તા) વહા જાકર (કરયલ૦ એવ વયાસી) અન્હોં ને અપને ૨ દોંનોં હાથોં કો જોડકર અનસે હસ પ્રકાર કહા-(એવ સ્વલુ તાઓ !) હે પિનાજી ! સુનો-(અમ્હે કળ્હે ણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) હમલોગોં કો કૃષ્ણ વાસુદેવ ને દેશ સે નિકલ જને કો કહા હૈ (તણ પડુરાયા પચ પડવે એવ વયાસી) તવ પાંડુ રાજા ને અન પાચોં પાડવો સે હસ પ્રકાર કહા-(કહળ્ણ પુત્તા તુમે કળ્હેણ વાસુદેવેણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) હે પુત્રો ! કિમ કારણ કો લેકર કૃષ્ણ વાસુદેવ ને તુમલોગોં કો દેશ સે યાહિર નિકલ જને કો કહા હૈ (તણ તે પચ પડવા પડુરાયા એવ વયાસી) તવ અન પાંચો પાડવોં ને પાંડુ રાજા સે હસ પ્રકાર કહા-(એવ સ્વલુ તાઓ ! અમ્હે અમરકકાઓ પડિ ણિયત્તા લવણસમુદ્ર દોઝિ જોયણસયસહસ્તાઃ વીશ્વવૃક્ષા) હે તાત !

ગચ્છિત્તા) ત્યા આવને (જેણેવ પદ્) તેઓ બયા પાંડુ રાજા હતા (તેણેવ ઉવાગચ્છિતિ) ત્યા ગયા (ઉવાગચ્છિત્તા) ત્યા જધને (કરયલ૦ એવ વયાસી) તેમણે પોતપોતાના બને હાથો બેડીને તેમને આ પ્રમાણે બિનતી કરી કે (એવ સ્વલુ તાઓ) હે પિતા ! સાભળો, (અમ્હે કળ્હેણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) કૃષ્ણવાસુદેવે અમને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે (તણ પડુ રાયા પચ પડવે એવ વયાસી) ત્યારે પાંડુ રાજાએ પાંચે પાડવોંને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(કહળ્ણ પુત્તા તુમે કળ્હેણ વાસુદેવેણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) હે પુત્રો ! કૃષ્ણવાસુદેવે શા કારણથી તમને દેશમાંથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે ? (તણ તે પચ પડવા પડુરાયા એવ વયાસી) ત્યારે તે પાંચે પાડવોંએ પાંડુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(એવ સ્વલુ તાઓ ! અમ્હે અમરકકાઓ પડિ ણિયત્તા લવણ-સમુદ્ર દોઝિ જોયણસયસહસ્તાઃ વીશ્વવૃક્ષા) હે 'સાભળો,

ऽस्मान् एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! गङ्गामहानदीमुत्तरत,
यावत् तिष्ठत । ताव अह एव तद्देव ' जाव चिद्वामो ' एवं यथा कृष्णवासुदेवस्य
वास्य पूर्वमुक्त तथैवात्र बोध्यम्-तावदह सुस्थित लवणाधिपतिं पश्यामीति ।
' जाव चिद्वामो ' यावत्तिष्ठामः-अत्र यावच्छब्देनैवं योजनीयम्-ततः खलु वय
कृष्णवासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो नौरुपा गङ्गामहानदीमुत्तीर्य, कृष्णो बाहुभ्यां गङ्गा
महानदीमुत्तरितु समयो न वेति विज्ञातु ता नौका सगोपितान्त, ततः कृष्ण
प्रतीक्षमाणास्तिष्ठाम इति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थित लवणाधिपतिं
दृष्ट्वा, ' त चेय सव्व ' तदेव सर्व-गङ्गामहानद्यास्तटे समागत्य, एकार्थिका नाव-

सुनो-जान इस प्रकार है-जय हमलोग अमरकका नगरी से पीछे आकर
२, दो लाख योजन विस्तार वाले लवणसमुद्र को पार कर चुके (तएण)
तब (से कण्हे अम्ह एव बयासी) उन कृष्ण वासुदेव ने हमलोगों से
इस प्रकार कहा-(गच्छह ण तुम्हे देवानुप्रिया ! गंगा महानदी उत्तरह
जाव चिद्वह-ताव-अह एव तद्देव जाव चिद्वामो) हे देवानुप्रियो ! तुम
लोग चलो और गंगा महानदी को पारकरो-तब तक मैं सुस्थित देव से
मिलकर और आज्ञा प्राप्तकर आता हूँ । कृष्ण वासुदेव द्वारा इस प्रकार
आज्ञप्त हुए हमलोगों ने नौका से गंगा महानदी को पार करके वही
पर उस नौका को छुपा दिया-इस अभिप्रायसे कि देखें कृष्ण वासुदेव
अपने हाथों से तैर कर इस गंगा महानदी को पार कर ने में सम-
र्थ हो सकते हैं या नहीं । नौका को छिपाकर हमलोग वही पर उनकी
प्रतीक्षा करते हुए ठहरे । (तएण से कण्हे वासुदेवे सुद्विय लवणाद्विचह

पात आ प्रभावे छे के न्यारे अमे अमरकका नगरीवी पाछा वगता २ लाख
योजन नेटला विस्तारवाला लवण समुद्रने पार करी चुक्या (तएण) त्यारे
(से कण्हे अम्ह एव बयासी) तो कृष्णवासुदेवे अभने आ प्रभावे कछु के-
(गच्छह ण तुम्हे देवानुप्रिया ! गंगा महानदी उत्तरह जाव चिद्वह-ताव अह एव
तद्देव जाव चिद्वामो) छे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने गंगा महानदीने पार
करे नेटलाभा छु सुस्थित देवने भणीने अने तेमनी पासेथी आज्ञा भेजवीने
आबु छु आ प्रभावे कृष्णवासुदेव वडे आज्ञापित थयेला अमे नौका वडे
गंगा महानदीने पार करीने त्या न ते नौकाने छुपावी दोधी नौकाने छुपा-
ववा पाछा अमारो अमे जातने आशय छे तो के कृष्णवासुदेव पोताना हाथोथी
तरीने गंगा महानदीने पार करी शके छे के नहि ? नौकाने छुपावीने अमे
त्या न तेमनी प्रतीक्षा करता शकार्थ गया (तएण से कण्हे वासुदेवे सुद्विय

ઉપાગત્ય કસતલપરિવૃદીતદશનસ શિરઆવર્ત મસનકેડાલિ ઋત્વા, પચ=ચક્ષુ
માણમકારેણ, અગાદિપુઃ-એવ સ્વલુ હે તાત ! ચય કૃષ્ણેન નિર્મિપયાઃ=નિપયાદ
મમ દેશાદ્ વદિર્નિર્ગતાઃ આગ્રતાઃ=કૃષ્ણોડસ્માદ્ દેશાદ્ વદિ નિર્ગન્તુમાગ્રતાવાનિ
ત્યર્થઃ । તતઃ સ્વલુ પાણ્ડુ રાજા તાન્ પચ પાણ્ડયાઃ અમમયાદીત-‘વદ્ધ્વ’ કથ
કેન કારણેન સ્વલુ હે પુત્ર ! યૂય કૃષ્ણેન નિર્મિપયા આગ્રતાઃ ? તતઃ સ્વલુ તે
પચ પાણ્ડયાઃ પાણ્ડુ રાજાનમ્ અમમયદ-એવ સ્વલુ હે તાત ! ચયમમરકદ્વાતઃ પ્રતિ
નિવૃત્તા લવણસમુદ્ર ‘દોન્નિનોયણસય સહસ્સાઃ’ દ્વિયોજનશતસહસ્રાણિ દ્વિલક્ષ
યોજનપરિમિત ‘વીશ્વવૃષ્ટા’ વ્યતિગ્રજિતાઃ-અલલ્લિતાઃ । તતઃ સ્વલુ સ કણ્ઠો

આગણ (ઉવાગચ્છિત્તા) વત્તા આકર કે (જેણેવ પદ્) વે જણ પાંડુ
રાજા થે (તેણેવ ઉવાગચ્છતિ) વણ ગયે (ઉવાગચ્છિત્તા) વણ જાકર
(કરચલ૦ એવ વયાસી) ઉન્નોં ને અપને ૨ દોંનોં હાથોં કો જોડકર ઉનસે
હસ પ્રકાર કહા-(એવ સ્વલુ તાઓ !) હે પિતાજી ! સુનો-(અન્હે કળ્હે
ણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) હમલોગોં કો કૃષ્ણ વાસુદેવ ને દેશ સે નિકલ
જને કો કહા હે (તણ પડુરાયા પચ પડવે એવ વયાસી) તવ પાંડુ રાજા
ને ઉન પાચોં પાંડવો સે હસ પ્રકાર કહા-(કૃષ્ણ પુત્તા તુમે કળ્હેણ
વાસુદેવેણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) હે પુત્રો ! કિસ કારણ કો ઢેકર કૃષ્ણ
વાસુદેવ ને તુમલોગોં કો દેશ સે યાહિર નિકલ જાને કો કહા હે (તણ
તે પચ પડવા પડુરાયા એવ વયાસી) તવ ઉન પાચો પાંડવોં ને પાંડુ
રાજાં સે હસ પ્રકાર કહા-(એવ સ્વલુ તાઓ ! અન્હે અમરકકાઓ પડિ
ણિયત્તા લવણસમુદ્દ દોન્નિ જોયણસયસહસ્સાઃ વીશ્વવૃષ્ટા) હે તાત !

ગચ્છિત્તા) ત્યા આવીને (જેણેવ પદ્) તેઓ ત્યા પાંડુ રાજા હતા (તેણેવ
ઉવાગચ્છતિ) ત્યા ગયા (ઉવાગચ્છિત્તા) ત્યા જઈને (કરચલ૦ એવ વયાસી)
તેમણે પોતપોતાના બને હાથો બેડીને તેમને આ પ્રમાણે બિનતી ડરી કે
(એવ સ્વલુ તાઓ) હે પિતા ! સાબળો, (અન્હે કળ્હેણ ણિવ્વિસયા આણત્તા)
કૃષ્ણવાસુદેવે અમને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી છે (તણ પડુ
રાયા પચ પડવે એવ વયાસી) ત્યારે પાંડુ રાજાએ પાથે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું
કે-(કૃષ્ણ પુત્તા તુમે કળ્હેણ વાસુદેવેણ ણિવ્વિસયા આણત્તા) હે પુત્રો !
કૃષ્ણવાસુદેવે શા કારણથી તમને દેશમાંથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી
છે ? (તણ તે પચ પડવા પડુરાયા એવ વયાસી) ત્યારે તે પાથે પાડવોએ
પાંડુ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-(એવ સ્વલુ તાઓ ! અન્હે અમરકકાઓ પડિ
ણિયત્તા લવણ-સમુદ્દ દોન્નિ જોયણસયસહસ્સાઃ વીશ્વવૃષ્ટા) હે પિતા ! સાબળો,

नगरं, कृष्णस्य वासुदेवस्य निवेदय, एव खलु हे देवानुप्रियाः ! शुभामि' पञ्च
पाण्डवा निर्मिषयाः देशनिष्ठासिता आत्माः, यूय च खलु हे देवानुप्रियाः !
दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिन । 'त' तन्=तस्मात् सद्विभक्तु=कथयन्तु हे देवानु
प्रिया । ते पञ्च पाण्डवाः कनरा दिश विदिश या गच्छन्तु ? मन्तागेर सर्वे
देशाः, तर्हि उमे कुं गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवत । ततः खलु एषा कुन्ती
पाण्डुना गतैरमुक्ता सती हस्तिस्फुन्ध दूरोदति-आरोढ्यति-दृष्ट्वा 'जहाहेडा'

देवानुप्रिया ! वारवड कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एव खलु देवानु-
प्रिया । तुम्हे पंच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम च ण देवानुप्रिया !
दाहिणद्धुभरहस्स मामी, त सदिसतु ण देवानुप्रिया । ते पंच पडवा
कयर दिस्सि वा विदिस्स वा गच्छतु ?) तत्र पाण्डु राजा ने उन पाचों
पांडवों से इस प्रकार कहा तुम लोगो ने यह सुन्दर काम नहीं किया
जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उन्हें नहीं रुचने
वाला काम किया इस प्रकार कहकर पाण्डु राजा ने उसी समय कुन्ती
देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम द्वारा-
वती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो
-कि आपने पांच पांडवों को देश से बाहर निकल जानेके लिये आज्ञा
दी है-सो हे देवानुप्रिय ! आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं-
अतः कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें । जब
आपके ही सर्व देश हैं-तो वे कहाँ जावें आप कहें । (तएण सा कोन्ती

वित्ता एव ययासी-गच्छहइ ण तुम देवानुप्रिया ! वारव कण्हस्स वासुदेवस्स
निवेदेहि एव खलु देवानुप्रिया । तुम्हे पंच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुम
च ण देवानुप्रिया ! दाहिणद्धुभरहस्स मामी, त सदिसतु ण देवानुप्रिया । ते
पंच पडवा कयर दिस्सि वा विदिस्स वा गच्छतु ?)

त्यारे पाण्डु राजाये ते पांचे पांडवोंने आ प्रभाण्णे कळु उ तेमो लोकें
दृष्टुवासुदेवन पुत्र करीने साइ उरुं नथी तेमने अणुगमतु नाम तेमो कळुं
छे आ प्रभाण्णे कळीने पाण्डु राजाये तेज वणते कुन्ती देवीने ओलावी
ओलावीने तेमने आ प्रभाण्णे कळु, उ छे देवानुप्रिये ! तेमो द्वारावती नगरीमा
दृष्टुवासुदेवनी पांचे जळो अने तेमने विनती करे उ तेमो पांचे पांडवोंने
देशथी जहार नीकणी ज्वानी आज्ञा आपी छे छे देवानुप्रिय । तेमो दक्षिणार्ध
भरतक्षेत्रना अधिपति छे तो जतावे उ तेमो कळ दिशा उ विदिशा तरइ
जय ज्यारे जधा देशो तभारा ज छे त्यारे जतावे उ आ लोकें कथा जय ?

મહદ્વા એકેન ગાહુના રમ મતુરગ મસારથિં શૃતીત્યા, એકેન ગાહુના ગજામહાનદી
 સુતીર્ય, સમાગત. । ‘ નરર ક્ષણસ્ત ચિંતા ન યુજ્જહ ’ નરર ક્ષણમ્ય ચિંતા ન
 યુજ્યતે નરર=વિશેષસ્તુ હે તાત ! નૌમાયા સગોપિતાયા સત્યા કૃણઃ કેનોપાયેન
 ગજામહાનદી તરિયતિ ઇતિ ચિંતાઽસ્માભિર્ન યુજ્યતે=ન ક્રિયતેસ્મ, એનાપરા
 ધેન ‘ જાવ અન્હે ણિવિસપ્ આણવેહ ’ યાવન્-રયાધૂર્ણોઽત્પાઽમાર નિર્વિપયાન્
 આજ્ઞાપયતિ । તતસ્તદનન્તર સ પાણ્ડુ રાજા તાન્ પદ્મપાણ્ડયાનેમમાદીત્-
 ‘ દુદ્ધુણ ’ દુદ્ધુ=મગોમન ચલુ હે પુત્રાઃ । કૃત યુમાભિઃ કૃણ્ણસ્ય વાસુદેવસ્ય
 વિપ્પિય ’ વિપ્પિયમ્-અનિષ્ટમ્ કર્ત્ત્વિઃ, તત ચલુ સ પાણ્ડુ રાજા કુર્ત્તીં દેવી
 શન્દયતિ, શન્દયિત્યા, એમવાદીત્-ગચ્છ ચલુ ત્વ હે દેવાનુપ્રિયે ! દ્વારવતીં

દદ્ધુણ તચેવ સવ્ય-નચર ક્ષણસ્મ ચિંતા ન યુજ્જતિ જાવ અન્હે ણિવિ
 સયે આણવેહ) ગાદ મેં કૃણ્ણ વાસુદેવ લચણમ્સુદ્રાધિપતિ સુસ્થિત દેવ
 સે મિલકર જ્યો હી ગગા મહાનદી કે તટ પર આયે-તો ડન્હેં વહ નૌકા
 નહીં મિલી-ઇસ કારણ વે ? એક હાથ સે તુરગ એ સારથિ યુક્ત રથ
 કો ઠે દૂસરે હાથ સે ગગા મહાનદી કો તૈર કર જહા હમલોગ થે-વહા
 આ ગયે । “ કૃણ્ણજી કિસ તરહ ગગા મહાનદી કો પાર કરેંગે ” યહ
 વિચાર હમયોગો ને નૌકા કો ઊપાતે સમય નહીં કિયા । ઇસી અપરાધ
 સે ડન્હેં ને હમારે રથોં કો ચક્રના ચૂર કર દેશ સે ગાહિર નિકલ જાને
 કે લિયે આજ્ઞા દી હૈ । (તણ્ણ સે પડુરાયા તે પચ પહવા એ વયાસી-
 દુદ્ધુણ પુત્તા ! કય ક્ષણસ્મ વાસુદેવસ્મ વિપ્પિયં કરેમાણેર્હિ-તણ્ણ સે
 પડુરાયા કોર્તિં દેવિ સદાવેહ સદાવિતા એવ વયાસી-ગચ્છહ ણ તુમ

લવણાહિરહ દદ્ધુણ ત ચેવ સવ્ય-નચર ક્ષણસ્મ ચિંતા ન યુજ્જતિ જાવ અન્હે
 ણિવિસયે આણવેહ) ત્યારપછી દૃષ્ટુવાસુદેવ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત
 દેવને મળીને બ્યારે ગગા મહાનદીના કિનારા ઉપર આવ્યા ત્યારે તેમને નૌકા
 જડી નહિ ત્યારે તેઓ એક હાથમા ઘોડા અને સારથિ સહિત રથને ઉચ
 કીને બીજા હાથથી ગગા મહાનદીને તરીને જ્યાં અમે હતા ત્યાં આવી ગયા
 “ કૃષ્ણવાસુદેવ કેવી રીતે ગગા મહાનદીને પાર કરશે ” નૌકાને છુપાવતા
 અમે આ વિષે વિચાર જ કર્યો નહોતો આ અપરાધથી તેમણે અમારા રથને
 નષ્ટ કરી નાખ્યા અને અમને દેશની બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા કરી છે

(તણ્ણ સે પડુરાયા તે પચ પહવે એ વયાસી-દુદ્ધુણ પુત્તા ! કય ક્ષણસ્મ
 વાસુદેવસ્મ વિપ્પિય કરેમાણેર્હિ-તણ્ણ સે પડુરાયા કોર્તિં દેવિ ॥ ૧૬૬, સદા

नगरां, कृष्णस्य वासुदेवस्य निवेदय, एव खलु हे देवानुप्रियाः । शुष्मामि पञ्च
पाण्डवा निर्विषयाः देशनिष्क्रान्तिताः आत्माः, यूय च खलु हे देवानुप्रियाः ।
दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिन । 'त' तत्=तस्मात् सद्विद्वन्तु=कथयन्तु हे देवानु-
प्रिया । ते पञ्च पाण्डवाः कतरा दिश विदिश या गच्छन्तु ? भवतामेव सर्वे
देशाः, तर्हि उमे कुत्र गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवन्त । ततः खलु सा कुन्ती
पाण्डुना गङ्गायमुक्ता सती हस्तिस्कन्ध दूरोदति-आरोहति-दृष्ट्वा 'जहाहेडा'

देवानुप्रिया । गारवह कण्टस्त वासुदेवस्त निवेदेहि एव खलु देवानु-
प्रिया । तुम्हे पच पडवा णिन्विसया आणत्ता, तुम च ण देवानुप्रिया ।
दाहिणद्धुभरहस्त सामी, त सदिसतु ण देवानुप्रिया । ते पच पडवा
कयर दिस्सि वा विदिस वा गच्छतु ?) तच्च पाण्डु राजा ने उन पाचों
पाउवों से इस प्रकार कहा तुम लोगो ने यह सुन्दर काम नहीं किया
जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उहें नहीं रुचने
वाला काम किया इस प्रकार कहकर पाण्डु राजा ने उसी समय कुन्ती
देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम द्वारा-
वती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो
-कि आपने पाच पाउवों को देश से बाहर निकल जानेके लिये आज्ञा
दी है-मो हेदेवानुप्रिय । आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं-
अतः कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें । जब
आपके ही सर्व देश हैं-तो वे कहाँ जावें आप कहें । (तण्ण सा कोली

विच्चा एव उपासी-गच्छहड ण तुम देवानुप्रिया । गारव कण्टस्त वासुदेवस्त
निवेदेहि एव खलु देवानुप्रिया । तुम्हे पच पडवा णिन्विसया आणत्ता, तुम
च ण देवानुप्रिया । दाहिणद्धुभरहस्त सामी, त सदिसतु ण देवानुप्रिया । ते
पच पडवा कयर दिस्सि वा विदिस वा गच्छतु ?)

त्यारे पाण्डु राजाએ તે પાંચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે તમે લોકોએ
દૃષ્ટવાસુદેવનું યુર કરીને સારું કંઈ નથી તેમને અણગમતું કામ તમે કંઈ
છે આ પ્રમાણે કહીને પાણ્ડુ રાજાએ તે જ વખતે કુન્તી દેવીને બોલાવી
બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું, કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વાપરવતી નગરીમાં
દૃષ્ટવાસુદેવની પાસે જાઓ અને તેમને નિવતી કરો કે તમે પાંચે પાડવોને
દેશથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી છે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે દક્ષિણાર્ધ
ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ છો તો બતાવો કે તેઓ કઈ દિગા કે વિદિશા તરફ
જાય ત્યારે બધા દેશો તમારા જ છે ત્યારે બતાવો કે આ લોકો કયા જાય ?

यथा अधः, यथापूर्वे द्वारवतीमागता तथाऽत्रापि चो यम् यावत् सदिशन्तु-अत्र यावदित्यनेनैव बोध्यम्-द्वारवतीं नगरीमागत्य कृष्णेन गच्छता स्नाता कृतमोजना सुवासनपरगताऽमयत् इति, ततस्तां कृष्ण पृच्छति सदिशन्तु=स्थयन्तु खलु हे

पटुणा एव वृत्ता समाणी, इत्थिग्वधदुरुहः, दुरुहिता जहा हेट्टा जाव सदिसतु ण पिउत्था । किमागमणपओयण ? तएण सा कौती कण्ह वासुदेव एव वयामी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिन्विसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणद्धु भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तएण से कण्ह वासुदेवे कौतीदेवि एव वयामी अपूर्हवयणा ण पिउत्था ! उत्तम पुरिसा वासुदेवा, पलदेवा, चक्रवट्टी त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल तत्थ पडुमहुर णिवेसतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्ठु कौतीदेवि सकारेह, सम्माणेह, जाव पडिविसज्जेह) पाडु के द्वारा इस प्रकार कही गई वह देवी राथी पर चढ़ी और चढ़ कर जिस प्रकार पहिले यह द्वारवती आई थी उसी तरह अब भी यह वरा पहुँची । यहा यावत् शब्द से इस प्रकार पाठका सन्ध लगा लेना चाहिये-जब कुन्ती द्वारवती नगरी में आई-तब कृष्ण वासुदेवने उनका खूब मनमाना सत्कार किया । बड़े ठाट घाट से उनका प्रवेशोत्सव मनाया-। कुन्तीने स्नान आदि दैनिक कार्यों से निवट कर आनन्द के साथ चतुर्विध आहार किया बाद में विश्राम के निमित्त सुवासन पर

(तएण सा कौती पटुणा एव वृत्ता समाणि, इत्थिखध दुरुहः, दुरुहिता जहा हेट्टा जाव सदिसतु ण पिउत्था । किमागमणपओयण ? तएण सा कौती कण्ह वासुदेव एव वयामी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिन्विसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणद्धु भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तएण से कण्ह वासुदेवे कौती देवि एव वयामी-अपूर्हवयणा ण पिउत्था उत्तमपुरिसा देवा, पलदेवा, चक्रवट्टी त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल तत्थ पडुमहुर णिवेसतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्ठु कौती देवि सकारेह, सम्माणेह, जाव पडिविसज्जेह)

आ प्रभाण्णे पाडु वडे आज्ञापित थयेली कुन्ती देवी हाथी उपर सवार थई अने सवार थईने पडेला जेभ ते द्वारवती नगरी गर्ह हती तेभअ अत्यारे पणु पडेयायी अही यावत् शब्दथी आ जतने पाठ समज्जे। जेधये ठे न्यारे कुन्ती द्वारवती नगरीमा आवी त्यारे कृष्णवासुदेवे तेभनो भूमज सत्कार क्यो जहु ज हाथी तेभनो प्रवेशोत्सव उज्जये। कुन्तीजे पणु स्नान वगेरे नित्यकर्मोधी परवारीने सुजेथी चतुर्विध आहार क्यो त्य

પિતૃવ્રસઃ ! કિમાગમનપ્રયોજનમ્ , તતઃ સ્વલુ સા કુન્તી કૃષ્ણં વાસુદેવમેવમવા-
દીત્—એવ સ્વલુ હે પુત્ર ! ત્વયા પશ્ચ પાણ્ડયા નિર્વિપયા આજ્ઞાતાઃ ત્વ ચ સ્વલુ
દક્ષિણાર્ધભરતસ્ય યાવત્ સ્વામી, તત્ કથય તે પશ્ચ પાણ્ડયાઃ કતરા દિશ વિદિશ
વા ગચ્છન્તુ ? । તતઃ સ્વલુ સ કૃષ્ણો વાસુદેવઃ કુન્તીં દેવીમેવમવાદીત્—‘ અપૂ-
વયણા ણ ’ અપૂતિવચનાઃ=સકૃદ્વચનાઃ સ્વલુ હે પિતૃવ્રસઃ ! ઉત્તમપુરુષાઃ વાસુ
દેવા વચ્ચેનાશ્ચક્રવર્તિનઃ, ‘ ત ’ તત્-તસ્માત્ ગચ્છન્તુ સ્વલુ હે દેવાનુપ્રિયે ! પશ્ચ
પાણ્ડયાઃ ‘ દાહિગિલ્લ ’ વેલાઝલ્લ ‘ દાક્ષિણાત્ય વેલાઝલ્લ-દક્ષિણસમુદ્રતટમ્ , તત્ર
‘ પડુમહુર ’ પાણ્ડુમથુરા નગરી ‘ ગિવેસતુ ’ નિવેગયન્તુ, મમોદ્દષ્ટસેવકા ભવન્તુ,

અહોને આરામ કિયા । હવને મેં કૃષ્ણ વાસુદેવ ને જય વે વિ પ્રામ કર
ચુકોં ઉન સે પૂઝા-કરિયે મુખાં જી ! કિસ પ્રયોજન કો લેકર ઘર્યાં
આપકા આગમન દુઆ હૈ તય કુન્તી ને કૃષ્ણ વાસુદેવ સે હસ પ્રકાર કહા
હે પુત્ર । આનેકા પ્રયોજન હસ પ્રકાર હૈ-તુમને જો પાચોં પાંડવોં કો
અપને દેશ સે વાહિર નિકલ જાને કી આજ્ઞા દી હૈ-સો હમ વિપય મેં
ઘર પૂછના હૈ કિ તુમ તો દક્ષિણાર્ધ ભરત કે અધિપતિ હો અત હમેં
સમજાહયે કૌનસી દિશા યા વિદિશા મેં જાવેં ? હસ પ્રકાર કુન્તીદેવીકે
મુલસે સુનકર કૃષ્ણ વાસુદેવ ને ઉસસે એસા કહા-હે મુખાં જી-ઉત્તમ
પુરુષ, વાસુદેવ, વલદેવ, એવ ચક્રવર્તી યે સય અપૂતિવચન વાલે હોતે
હૈં-જો કુછ વહતે હૈં વહ એક હી વાર કહતે હૈં-ઉસમેં પરિવર્તન નહીં
હોતા હૈં-હસલિયે હે દેવાનુપ્રિય ! પાચોં પાંડવ દક્ષિણસમુદ્ર પર જાવેં ઓર
વહા પાંડુ મથુરા નગરી કો વસાવેં-સ્થાપિત કરેં-ઓર મેરે અદૃષ્ટ સેવક

માટે તેમણે મુખાંજાન ઉપર આરામ કર્યો ત્યારે તેઓ સારી રીતે વિશ્રામ
કરી ચૂક્યા ત્યારે તેમને કૃષ્ણવાસુદેવે પૂછ્યું કે-ઓહો, ક્ષેપ્ત્રી, શા વારણથી
તમે અહીં પધાર્યા છો ? ત્યારે કુન્તીએ કૃષ્ણવસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે
પુત્ર ! હું એટલા માટે આવી છું કે તમે પાંચે પાંડવોને પોતાના દેશમાંથી
બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા કરી છે તો આ વિષે મારે આ વાતનું પ્રાપ્તી
કરણ કરવું છે કે તમે તો દક્ષિણાર્ધ ભરતના અધિપતિ છો, તો આવી પરિ-
સ્થિતિમાં તમે જ અમને બતાવો કે તેઓ કઈ દિશા કે વિદિશા તરફ જાય ?
આ પ્રમાણે કુન્તી દેવીના મુખથી બધી વાત સાંભળીને કૃષ્ણવાસુદેવે તેમને
આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ક્ષેપ્ત્રી ! વાસુદેવ, બળદેવ અને ચક્રવર્તી આ બધા
ઉત્તમ પુરુષો અપૂતિ વચનવાળા હોય છે-તેઓ જે કઈ પણ કહે છે તે એક જ
વાર કહે છે તેમાં કોઈ પણ ભતના ફેરફાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે
હે દેવાનુપ્રિયે ! પાંચે પાંડવો દક્ષિણ સમુદ્ર તરફ જાય અને ત્યાં પાંડુ મથુરા

यथा अधः, यथापूर्व द्वारवतीमागता तथाऽत्रापि वो यम् यावत् सदिशन्तु-अत्र यावदित्यनेनैव बोध्यम्-द्वारवतीं नगरीमागत्य कृष्णेन गच्छता स्नाता कृतभोजना सुवासनप्रगताऽभयत् इति, ततस्ता कृष्ण पृच्छति सदिशन्तु=अभयन्तु खलु हे पटुणा एव वृत्ता समाणी, इत्थिग्रथदुरुहः, दुरुहित्ता जहा हेहा जाव सदिसतु ण पिउत्था । किमागमणपभोयण ? तएण सा कौती कण्ठ वासुदेव एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिन्विसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणद्ध भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तएण से कण्ठे वासुदेवे कौतीदेवि एव वयामी अपूर्ह्वयणा ण पिउत्था ! उत्तम पुरिसा वासुदेवा, बलदेवा, चक्रवर्ती त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल तत्थ पडमहुर णिवेसतु मम अदिदुसेवगा भवतु त्ति कट्ठु कौतीदेवि सकारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ) पाडु के द्वारा इस प्रकार कही गई वह देवी हाथी पर चढ़ी और चढ़ कर जिस प्रकार पहिले यह द्वारवती आई थी उसी तरह अब भी यह चढ़ा पहुँची । यहा यावत् शब्द से इस प्रकार पाठका सन्ध लगा लेना चाहिये-जत्र कुनी द्वारावती नगरी में आई-तत्र कृष्ण वासुदेवने उनका खूब मनमाना सत्कार किया । बड़े ठाट बाट से उनका प्रवेशोत्सव मनाया-। कुतीने स्नान आदि दैनिक कार्यों से निवृत्त कर आनन्द के साथ चतुर्विध आहार किया बाद में विश्राम के निमित्त सुवासन पर

(तएण सा कौती पटुणा एव वृत्ता समाणि, इत्थिग्रथ दुरुहः, दुरुहित्ता जहा हेहा जाव सदिसतु ण पिउत्था । किमागमणपभोयण ? तएण सा कौती कण्ठ वासुदेव एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! तुमे पच पडवा णिन्विसया आणत्ता, तुम च ण दाहिणद्ध भरह जाव विदिस वा गच्छतु ? तएण से कण्ठे वासुदेवे कौती देवि एव वयासी-अपूर्ह्वयणा ण पिउत्था उत्तमपुरिसा देवा, बलदेवा, चक्रवर्ती त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पच पडवा दाहिणिल्ल वेलाउल तत्थ पडमहुर णिवेसतु मम अदिदुसेवगा भवतु त्ति कट्ठु कौती देवि सकारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ)

आ प्रभाणे पाडु वडे आरापित थयेली कुती देवी हाथी उपर सवार थई अने सवार थईने पडेहा जेम ते द्वारावती नगरी गर्ह हती तेभज्ज अत्थारे पणु पडेथी अही यावत् शण्डथी आ नतने पाठ समज्जेने थईये ठे न्यारे कुती द्वारावती नगरीमा आवी त्तारे कृष्णवासुदेवे तेभने भूमज्ज सत्कार कये अहुंज्ज हाथी तेभने प्रवेशोत्सव उज्जये कुतीये पणु स्नान वगेरे नित्यकर्मथी परवारीने सुजेथी चतुर्विध आहार कये विश्राम

इति कृत्वा कुन्ती देवीं सत्कारयति समानयति, सत्कार्यं, समान्य यावद् विमर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिना ममारय हस्तिनापुष्पागता यावत् पाण्डोराय एतमर्थं निवेदयति । ततः खलु पाण्डु गता पञ्च पाण्डवान् शन्ययति शन्ययित्वा एतमयादीत्-गच्छत खलु यूय हे पुत्रा ! ' दाहिणिल्ल वेलाऊल ' दाहिणात्यवेलाऊल-दक्षिणसमुद्रतट, ता खलु यूय पाण्डमथुरा नगरी निवेशयत ।

होकर रहें । इस प्रकार कहकर उन्होंने ने कुन्तीदेवी का सत्कार किया सम्मान किया । सत्कार सम्मान करके फिर उन्हें अपने यहाँ से विदा दिया । (तएण सा कौंती देवी जाय पटुस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएण पट्ठ पच पडवे सदावेइ, सदावित्ता एय वयासी-गच्छह ण तुम्हे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेलाऊल तएण तुम्हे पट्टमहुर निवेसेह तएण पच पडवा पटुस्स रण्णो जाय तहत्ति पडिसुणेंति, सवलचाहणा इय गजं हत्थिणाउराओ पडिणिकखमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पट्टमहुर नगरिं निवेसेंति, निवेसित्ता तत्थ ण ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था) यहाँ से हाथी के ऊपर बैठ कर कुन्तीदेवी हस्तिनापुरमें आगई, यावत् पांडुराजासे कृष्णवासुदेव के कथितआदेश को उन्होंने सुना दिया । इसके बाद पांडु राजा ने पाँचों पांडवों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे पुत्रों-तुम यहाँ से दक्षिण दिग्दर्शी समुद्र तट पर जाओ और वहाँ पांडु मथुरा

નગરીને વસાવે અને મારા અદ્દ્ય સેરકો થઈને ત્યાં નિવાસ કરે આ પ્રમાણે કહીને તેમણે કુન્તી દેવીને સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે કુન્તીદેવીને ત્યાંથી વિદાય કર્યા

(તएण સા કૌંતી દેવી જાય પટુસ્સ એયમટ્ઠ નિવેદેઠ, તएण પટ્ઠ પચ પડવે સદાવેઈ, સદાવિત્તા એ વયાસી-ગચ્છહ ણ તુમ્હે પુત્તા ! દાહિણિલ્લ વેલાઊલ તત્થણ તુમ્હે પટ્ટમહુર નિવેસેહ તएण પચ પડવા પટુસ્સ રણ્ણો જાય તહત્તિ પડિ સુણેંતિ, સવલચાહણા હય ગયં હત્થિણાઉરાઓ પડિણિક્કમતિ, પડિણિક્કમિત્તા જેણેવ દક્ખિણિલ્લે વેયાલી તેણેવ ઉવાગચ્છઈ, ઉવાગચ્છિત્તા પટ્ટમહુર નગરિં નિવેસેંતિ નિવેસિત્તા, તત્થણ તે વિઉલભોગસમિતિસમણ્ણાગયા યાવિ હોત્થા) ત્યાંથી હાથી ઉપર સવાર થઈને કુન્તીદેવી હસ્તિનાપુર આવી ગયા યાવત્ કૃષ્ણવાસુદેવની જે કંઈ આજ્ઞા હતી તે પાંડુ રાજાને કહી સંભળાવી ત્યારપછી પાંડુ રાજાએ પાંચે પાંડવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્રો ! તમે અહીંથી દક્ષિણ દિશા તરફના સમુદ્રના કિનારા ઉપર જાઓ અને ત્યાં પાંડુ-મથુરા નગરીને વસાવો પિતા પાંડુ ર -આ પ્રમાણે

तत खलु पञ्च पाण्डवाः पाण्डो राजो वचन यावत्-‘तद्वत्ति’ तथाऽस्तु’ इति कृत्वा प्रतिशृण्वन्ति = स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य सवलवाहनाः-सैन्ययानसहिताः, हयगजराशपदातिसपरिवृताः, हस्तिनापुरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रनिनिष्क्रम्य यत्रैव ‘दाहिणिल्लं वेलाऊल’ दाक्षिणात्य वेलाकूल तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पाण्डुमथुरा नगरीं निवेशयन्ति निवेश्य तत्र खलु ते विपुलभोगममिति ममत्या-गताश्चाप्यभवन् ॥ सू० ३२ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी अन्नया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था, तएण सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरुव दारगं पचाया सूमालणिव्वत्तवारसाहस्स इमं एयारुव गुणनिष्फन्न नामधिज्ज करेति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्ह पडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णमधेज्ज पडुसेणे, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्ज करेति पडुसेणत्ति, वावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ, थेरा समो-सढा परिसा निग्गया पडवा निग्गया धम्म सोच्चा एव ज णवर देवाणुप्पिया । दोवई देवि आपुच्छामो पडुसेण च

नगरी को वसाओ । पिता पांडु राजा की इस आज्ञा को उन पाचों पांडवों ने “तद्वत्ति” कहकर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर वे हय, गज, रथ, एवं पदातिरूप चतुरगिणी सेना से परिवृत्त होकर हस्तिनापुर नगर से निकले और निकलकर जहां दाक्षिणात्य वेलाकूल था वहां आये-वहां आकर उन्होंने पांडु मथुरा नगरी को वसाया । वसाकर वहां के विपुल भोगों को भोगते हुए रहने लगे ॥ सू० ३२ ॥

आज्ञाने ते पांच पांडवोंने “तद्वत्ति” कहीने स्वीकारी लीधी स्वीकार करीने तेओं घोडा, हाथी, रथ अने पायदणवाणी चतुरगिणी सेनानी साथे हस्तिनापुर नगरथी गडार नीकल्या-अने नीकणीने ल्या दक्षिण दिशाने समुद्रने किनारे छेते त्या पडोल्या, त्या पडोलीने तेमणे पांडु-मथुरा नगरी वसावी . वसावीने तेओं त्या पुंज्ज कामसेओ भोगवता रहेवा लाग्या ॥ सूत्र ३२ ॥

इति कृत्वा कुन्ती देवीं सत्कारयति संमानयति. सन्मार्गं, संमान्य यावद् विमर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिनागमरुतं हस्तिनापुरमागता यावत् पाण्डो राज्ञ एतमर्थं निवेदयति । ततः खलु पाण्डु गता पञ्च पाण्डवान् शन्ययति शन्ययित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे पुत्राः ! ' दाहिणिल्ल वेलाऊल ' दाहिणात्यवेलाऊल-दक्षिणसमुद्रतट, ता खलु यूय पाण्डुमधुरा नगरी निवेशयत ।

હોકર રહેં । હસ પ્રકાર કદકર ઉન્હોં ને કુન્તીદેવી કા સત્કાર ક્રિયા સન્માન ક્રિયા । સત્કાર સન્માન કરકે ફિર ઉન્હેં અપને યદા સે વિદ્યા દિયા । (તણ સા કોંતી દેવી જાવ પડુસસ ઇયમદ્દ નિવેદેદ, તણ પદ્ પચ પડવે સદાવેદ, સદાવિત્તા ઇવં વયાસી-ગચ્ઠહ ણં તુમ્હે પુત્તા ! દાહિ-ણિલ્લ વેલાઝલ તત્થણ તુમ્હે પડુમહુર નિવેસેદ તણ પચ પડવા પડુસસ રણ્ણો જાવ તદ્દત્તિ પલિસુણેતિ, સવલવાદ્ધણા હય મજ્ઞં હત્થિણાઝરાઓ પહિણિક્કમતિ, પહિણિક્કમિત્તા જેણેવ દક્ષિણિલ્લે વેયાલી તેણેવ ડવા ગચ્ઠહ, ડવાગચ્ઠિત્તા પડુમહુર નગરિં નિવેસેતિ, નિવેસિત્તા તત્થ ણં તે વિઝલભોગસમિતિસમણ્ણામયા યાવિ હોત્થા) વહા સે દાથી કે ઝપર બેઠ કર કુન્તીદેવી હસ્તિનાપુરમેં આગઈ, યાવત પાડુરાજાસે કૃષ્ણવાસુદેવ કે કથિતઆદેશ કો ઉન્હોં ને સુના દિયા । હસકે ઘાદ પાડુ રાજા ને પાંચોં પાડવોં કો બુલાયા-ઔર બુલાકર ડનસે હસ પ્રકાર કદા-હે પુત્રોં-તુમ યદા સે દક્ષિણ દિગ્વર્તી સમદ્દ તટ પર જાઓ ઔર વહા પાડુ મધુરો

નગરીને વસાવે અને મારા અદ્દ્ય સેવકો થઇને ત્યાં નિવાસ કરે આ પ્રમાણે કહીને તેમણે કુન્તી દેવીને સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે કુન્તીદેવીને ત્યાંથી વિદાય કર્યાં

(તણ સા કોંતી દેવી જાવ પડુસસ ઇયમદ્દ નિવેદેદ, તણ પદ્ પચ પડવે સદાવેદ, સદાવિત્તા ઇવં વયાસી-ગચ્ઠહ ણ તુમ્હે પુત્તા ! દાહિણિલ્લ વેલાઝલ તત્થણ તુમ્હે પડુમહુર નિવેસેદ તણ પચ પડવા પડુસસ રણ્ણો જાવ તદ્દત્તિ પહિ સુણેતિ, સવલવાદ્ધણા હય મય્ઞં હત્થિણાઝરાઓ પહિણિક્કમતિ, પહિણિક્કમિત્તા જેણેવ દક્ષિણિલ્લે વેયાલી તેણેવ ડવાગચ્ઠહ, ડવાગચ્ઠિત્તા પડુમહુર નગરિં નિવેસેતિ નિવેસિત્તા, તત્થણ તે વિઝલભોગસમિતિસમણ્ણામયા યાવિ હોત્થા)

ત્યાંથી હાથી ઉપર સવાર થઇને કુન્તીદેવી હસ્તિનાપુર આવી ગયા યાવત કૃષ્ણવાસુદેવની બે કંઈ આજ્ઞા હતી તે પાડુ રાજાને કહી સભાગવી ત્યારપછી પાડુ રાજાએ પાંચે પાડવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્રો ! તમે અહીંથી દક્ષિણ દિશા તરફના સમુદ્રના કિનારા ઉપર જાઓ અને ત્યાં પાડુ-મધુરા નગરીને વસાવો પિતા પાડુ ર આ પ્રમાણે

टीका—‘तएण सा’ इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदाचित् ‘आवणसत्ता’ आपन्नसत्ता=गर्भवती जाता चाप्यभवत् । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु संपूर्णेषु सार्धाष्टमदिवसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत्सुरूप सुन्दर दारक=गालक ‘पयाया’ प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूत दारक=सूमाल=सुकुमारपाणिपाद, ‘णिव्वत्तवारसाहस्स’ निर्द्वत्तद्वादशाहस्स=सप्ताहद्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूप गुणनिष्पन्न नामधेय कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेव दारकः पञ्चानां पाण्डवानां पुत्रो द्रौपद्या आत्मजः, ‘त’ तत्-तस्माद्

—तएण सा दोवई देवी इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदीदेवी (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (आवणसत्ता जाया यावि होत्या) गर्भावस्थासे सपन्न हुई । (तएण सा दोवई देवी) जवणह मासाण जाव सुरूव दारगं पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७॥ दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया । यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था । (सूमालणिव्वत्तवारसाहस्सइम एयारुव गुणनिष्पन्न नामधिज्ज करेति जम्हाण अम्हं एस दारए पचणह पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्ज पडुसेणे) इसके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे । जब चारहवां दिन लगा—तब माता पिताओं ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रक्खा यस्मात्—यह पुत्र हम पाचो पांडवों का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएण सा दोवई देवी इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थापत्ती (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (अन्नया कयाइ) केई ओक वपत्ते (आवणसत्ता जाया यावि होत्या) सगली थई (तएण सा दोवई देवी) जवणह मासाण जाव सुरूव दारग पयाया) न्यारे गलं नव मास ७॥ दिवसने थई गये। त्यारे ते द्रौपदी देवीओ पुत्रने जन्म आय्यो, ते आणक भूण व सुन्दर छुटु

(सूमालणिव्वत्तवारसाहस्स इम एयारुव गुणनिष्पन्न नामधिज्ज करेति, जम्हाण अम्ह एसदारए पचणह पडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्ह इमस्स दारगस्स णामधेज्जे पडुसेणे)

तेना हाथ पग वगेरे जथा अवयवो भूण व सुकोमल छता न्यारे भारमे दिवस आय्यो त्यारे माता-पिताओ ते पुत्रनु नाम तेना शुष्णे विधे विचार करता आ प्रभावे राख्यु के आ पुत्र अमांरा पाये पाडवानो छे,

कुमार रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया ! अतिए मुडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइ देविं सदावेति सदावित्ता एवं वयासी-एवं खल्लु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मं णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?, तएण सा दोवई देवी ते पंच पडवे एव वयासी-जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा पव्वयह मम के अण्णे आलवे वा जाव भविस्सइ ?, अहपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएण ते पंच पडवा पडुसेणस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ, तएण ते पंच पडवा दोवई य देवी अन्नया कयाइ पडुसेणं रायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेण रायाकोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेय जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सिवियाओ जाव पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोइस्स पुव्वाइ अहिज्जंति अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा १५१ ॥ २॥

टीका—‘तएणं सा’ इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदाचित् ‘आवणसत्ता’ आपन्नसत्ता=गर्भगती जाता चाप्यभवत् । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु सपूर्णेषु सार्धाष्टमदिनसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत् सुखं सुन्दर दारक=गालकं ‘पयाया’ प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूत दारक=सूमाल=सुकुमारपाणिपाद, ‘णिज्वत्तवारसाहस्स’ निर्द्वत्तद्वादशाहस्स=सप्ताह द्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूपं गुणनिष्पन्नं नामधेयं कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेव दारकः पञ्चाना पाण्डवाना पुत्रो द्रौपद्या आत्मजः, ‘त’ तत्-तस्माद्

—तएण सा दोवई देवी इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदीदेवी (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (आवणसत्ता जाया यावि होत्या) गर्भा-वस्थासे सपन्न हुई । (तएणं सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुखं दारग पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७॥ दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया । यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था । (सूमालणिज्वत्तवारसाहस्सइम एयाख्व गुणनिष्पन्नं नामधिज्ज करेति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्हं पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामवेज्ज पडुसेणे) हमके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे । जब चारहवां दिन लगा—तब माता पिताओं ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रखवा यस्मात्—यह पुत्र हम पांचो पांडवों का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएण सा दोवई देवी इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (अन्नया कयाइ) कौंध ओक वખते (आवणसत्ता जाया यावि होत्या) सगली थंध (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुखं दारग पयाया) न्यारे गली नव मास ७॥ दिवसने थंध गये त्थारे ते द्रौपदी देवीके पुत्रने जन्म आयो, ते णाणक भूण न सुखर हुतु

(सूमालणिज्वत्तवारसाहस्स इम एयाख्व गुणनिष्पन्नं नामधिज्ज करेति, जम्हाण अम्ह एसदारए पचण्ह पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्ह इमस्स दारगस्स णामधेज्जे पडुसेणे)

तेना हाथ पग वगेरे नधा अवयवो भूण न सुकामण हुता न्यारे नारने दिवस आयो त्थारे माता-पिताके ते पुत्रनु नाम तेना शुश्रो विधे विचार करता आ प्रभावे राखु के आ पुत्र अमारा पावे पाडवोना छे,

कुमार रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया ! अतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुह देवाणुप्पिया !, तएणं ते पंच पडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइं देविं सदावेति सदावित्ता एवं वयासी-एवं खल्ल देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुम देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?, तएण सा दोवई देवी ते पंच पडवे एवं वयासी-जइणं तुव्वे देवाणुप्पिया ! सत्सारभउव्विग्गा पव्वयह मम के अण्णे आलवे वा जाव भविस्सइ ?, अहपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धि पव्वइस्सामि, तएण ते पंच पडवा पडुसेणस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ, तएण ते पंच पडवा दोवई य देवी अन्नया कयाइ पडुसेणं रायाण आपुच्छंति, तएण से पंडुसेण रायाकोडुवियपुरिसे सदावेइ सदावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेय जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सिवियाओ जाव पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोदस्स पुव्वाइ अहिज्जति अहिज्जित्ता वट्ठूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा १६१ ।

अथ रुदाचित् दत्त-‘ येरा समोसङ्गा ’ स्वयिगः समस्यताः, परिपन्निगता, पाण्डया अपि स्वयिराणा रुन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डया प्रतिनुद्धा-
सन्त एवमदन्-यत् नर हे देवानुप्रिया. द्रौपदी देवीमापृच्छामः, पाण्डुमेन च
कुमार राज्ये स्थापयाम, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यायत्
प्रव्रजामः प्रव्रज्या गृह्णीमः, तदा स्वयिरा उचुः-‘ अहासुह देवानुप्पिया ! ’ हे
देवानुप्रिया ययासुख=सुख यया भवति तथा कुरुत, अल विलम्बेन इति भाव ।
तत खलु ते पञ्च पाण्डया यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवापागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदी
देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमदन्-एव खलु हे देवानुप्रिये ! वयं स्वयिरा-

व्यतीत करने लगा। एक समय की बात है कि पाण्डु मथुरा नगरी में
स्थविरो का आगमन हुआ। स्थविरों का आगमन सुनकर नगरी का
समस्त जन उनकी वटना एवं धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने-
घर से निकले पाचों पांडव भी निकले- परिपद को आयी हुई देव्यकर
स्थविरो ने उसे धर्म का उपदेश दिया। उपदेश श्रवण कर परिपद पीठे
चली गई। पांडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानरर प्रतिबोध को
प्राप्त हो गये-उसी समय उन्होंने उन स्थविरों से कहा-हे देवानुप्रियो !
हमलोग द्रौपदी देवी को पूजकर और पाण्डुमेन कुमार को राज्य में स्था-
पित कर आप देवानुप्रियो के समीपमुडित होकर यायत् प्रव्रज्या अगी
कार करना चाहते हैं। पांडवों की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर
उन स्थविरों ने पांडवों से इस प्रकार कहा-(अहासुह देवानुप्पिया !
तएण ते पच पडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
दोवइ देवि सदावेति, सदावित्ता एव वयासी एवं खलु देव गुप्पिया !

स्थविरो पधार्या स्वविदेना आगमननी जलु यता नगरीना जधा लोके तेमनी
वटना तेमज तेमनी पासेथी धर्मोपदेश सालणवा भाटे पोतपोताना घेरथी
निकल्या, पाये पाडवो पलु त्या पडोय्या परिपदने आवेथी जेधने स्थविरोजे
धर्मने उपदेश आव्थे। उपदेश सालणीने परिपद जती रही पाडवो ते
धर्मने उपदेश सालणीने प्रतिबोधत थध गया तेमजे तेज अभये स्थवि-
रोने पितती करता कछु के छे देवानुप्रियो ! अजे द्रौपदी देवीने पूज्ठी तेमज
पाण्डुमेन कुमरने राज्यासने अलिपिष्ठत जगीने तमारी पाने मुडित थधने
यायत् प्रव्रज्या अहण करवानी अलिवाया राणीजे छीजे पाडवोनी आ जगनी
छादिक धञ्ज जलणीने ते स्थविरोजे ते पाये पाडवोने आ प्रभाहे कछु उ-

(अहासुह देवानुप्पिया ! तएण ते पच पडवा जेणेव सए गिहे, तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइ देवि सदावेति, सदावित्ता एव वयासी, एव

પરંતુ અસ્માકમસ્ય દારુકમ્ય નામધેય ' પાણ્ડુમેન ' રૂતિ । તતઃ સ્વત્ત્વ તસ્ય દારુકમ્યામ્યાસિતરી નામધેય કુરંન્તિ- ' પાણ્ડુમેન ' રૂતિ । ' વાનત્તરિં કળાઓ ' દ્રામ પતિ કલાઃ શિસિતાઃ, યાવત્ ભોગમમર્યો જાતઃ, રાજકન્યા પરિણીય યુવરાજો યાવત્ માનુષ્યકાન ભોગાન શુજાનો વિહરતિ-ઓમ્તે ।

ઉત્પન્ન હુઆ હૈ-અતઃ હમારે હમ પુત્ર કા નામ પાણ્ડુમેન હોના ચાહિયે (તણ તસ્ય દારુકમ્ય અમ્યાપિયરો નામધેજ્જ કરંન્તિ પાણ્ડુમેનસિ) હસ હયાલ સે હર્યો ને હસ નવજાત પુત્ર કા નામ પાણ્ડુમેન રાખ દિયા । (યાવત્તરિં કળાઓ જાવ ભોગમમર્યે જાગ જુવરાયા જાવ વિહરહ થેરા સમોસઢા, પરિસા નિગયા, પઢવા નિગયા, ધમ્મ સોચ્છા એવ વયાસી જ જવર દેવાનુપિયા ! દોવડ દેવિ આપુચ્છામો પાણ્ડુમેન ચ કુમાર રજ્જે ઠાવેમો તઓ પચ્છા દેવાનુપિયા ! અતિણ મુઢે ભવિત્તા જાવ પન્વયામો) પાણ્ડુમેન કુમાર કો ૭૨ કલાઓ મેં નિપુણ બનાને કે લિયે માતા પિતાને હસે કલાચાર્ય કે પાસ મેજ દિયા । ધીરે ૨ વહ ૭૨, કલાઓ મેં નિષ્ણાત બન ગયા । યાવત્ ભોગ ભોગને કે લાયક અવર્યા સપ્ત ભી હો ગયા । રાજકન્યાઓ કે સાથ હમકા વૈવાહિક સન્ધ કર કે પિતાઓ ને હસે યુવરાજ પદ પ્રદાન ભી કર દિયા-યાવત્ યહ મનુષ્યભવ સબન્ધી કામ સુખો રો અનુભવ કરતા હુઆ અપને સમય કો આનન્દ કે સાથ

તેમજ દ્રૌપદી દેવીના ગલથી તેનો જન્મ થયો છે, એટલા માટે અમારા આ પુત્રનું નામ પાણ્ડુમેન હોણુ એછએ

(તણ તસ્ય દારુકમ્ય અમ્યાપિયરો નામધેજ્જ કરંન્તિ પાણ્ડુમેનસિ) આ વિચારથી તેમણે તે નવજાત પુત્રનું નામ પાણ્ડુમેન રાખ્યું

(વાનત્તરિં કળાઓ જાવ ભોગમમર્યે જાગ જુવરાયા જાવ વિહરહ, થેરા સમોસઢા, પરિસા નિગયા, પઢવા નિગયા ધમ્મ સોચ્છા એવ વયાસી જ જવર દેવાનુપિયા ! દોવડ દેવિ આપુચ્છામો પાણ્ડુમેન ચ કુમાર રજ્જે ઠાવેમો તઓપચ્છા દેવાનુપિયા ! અતિણ મુઢે ભવિત્તા જાવ પન્વયામો)

પાણ્ડુમેન કુમારને ૭૨ કળાઓના નિપુણ બનાવવા માટે માતાપિતાઓએ કલાચાર્યની પાસે મોકલ્યો. આમ ધીમે ધીમે તે ૭૨ કળાઓના નિષ્ણાત બની ગયો. યાવત્ તે સસારના ભોગો ભોગવવા યોગ્ય અવસ્થાવાળો પણ થઈ ગયો. રાજકન્યાઓની સાથે લગ્નો કરાવીને પિતાઓએ તેને યુવરાજ પદ પણ સોંપી દીધું. યાવત્ તે મનુષ્ય-ભવ સબન્ધી કામસુખોને અનુભવના પોતાના વખતને સુખેથી પસાર કરવા લાગ્યો એક વખતની વાત છે કે પાણ્ડુ-મહારાજ નગરીમાં

अथ रुदाधित् दत्त- ' येरा समोसद्धा ' स्वयिराः समवसृताः, परिपन्निर्गता, पाण्डवा अपि स्वयिराणां यन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डवा प्रतिमुद्राः सन्त एवमदन्-यत् नर हे देवानुप्रियाः द्रौपदी देवीमापृच्छामः, पाण्डुमेव च कुमार राज्ये स्थापयाम, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत् प्रव्रजामः प्रव्रज्या गृह्णीमः, तदा स्वयिरा ऊचुः- ' अहासुह देवानुप्पिया । ' हे देवानुप्रिया यथासुख=सुख यथा भवति तथाकुरु, अल विलम्बेन इति भाव । तत खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव स्वरु गृह तत्रैवापागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदी देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमदन्-एव खलु हे देवानुप्रिये । वयं स्वयिरा-

व्यतीत करने लगा । एक समय की बात है कि पांडु मथुरा नगरी में स्थविरो का आगमन हुआ । स्थविरो का आगमन सुनकर नगरी का समस्त जन उनकी वदना एवं धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने-अपने घर से निकले पाँचों पांडव भी निकले- परिपद को आयी हुई देखकर स्थविरो ने उसे धर्म का उपदेश दिया । उपदेश श्रवण कर परिपद पीछे चली गई । पांडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानरर प्रतियोध को प्राप्त हो गये-उसी समय उन्होंने उन स्थविरो से कहा-हे देवानुप्रियो ! हमलोग द्रौपदी देवी को पूजकर और पांडुसेन कुमार को राज्य में स्थापित कर आप देवानुप्रियो के समीपमुडित होकर यावत् प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहते हैं । पाँडवों की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर उन स्थविरो ने पांडवों से इस प्रकार कहा-(अहासुह देवानुप्पिया । तएण ते पच पडवा जेणेय सणगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवह देविं सदावेति, सदावित्ता एव वयासी एवं खलु देव पुप्पिया ।

स्थविरो पधार्या स्वयिराना आगमननी ज्ञातुं यत्ता नगरीना अधा लोका तेमनी वदना तेमज तेमनी पासेथी धर्मोपदेश साधणवा भाटे पोतपोताना घेरथी निकल्या, पांचे पांडवे पण त्या पडोव्या पण्डितने आवेची जेधने स्थविरोचे धर्मने उपदेश आये। उपदेश साधणीने परिपद जती रही पांडवे ते धर्मने उपदेश साधणीने प्रतिभाधित थध गया तेमणे तेज अभये स्थविरोने विनती करता कछु के डे देवानुप्रियो । अये द्रौपदी देवीने पूज्जी तेमज पांडुसेन कुमारने राज्यासने अभिषिक्त कीने तमारी पांचे मुडित थधने यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करवानी अलिवापा राणीचे धीचे पांडवोनी आ ज्ञाननी हार्दिक धन्या ज्ञाणीने ते स्थविरोचे ते पांचे पांडवेने आ प्रभावे कछु डे-

(अहासुह देवानुप्पिया । तएण ते पच पडवा जेणेय सण गिहे, तेणेय उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवह देविं सदावेति, सदावित्ता एव वयासी, एव

નામન્તિકે ધર્મ શ્રુતવન્તો યાત્ પ્રવ્રજામઃ, ત્વ હે દેવાનુપ્રિયે ! કિં કરોપિ કિં કરિષ્યમિ ? । તતઃ સ્વલુ સા દ્રૌપદી તાન્ પઞ્ચ પાન્ડુગન્ પુરમત્રાદીન્-યદિ સ્વલુ યૂય હે દેવાનુપ્રિયાઃ । સત્સારભયોદ્વિગ્ના-નન્મમરણાદિ ડ સાદ્ મીતાઃ સન્તો યાત્ પ્રવ્રજથ, મમ દોડન્ય આજમ્યો યા યાત્ મરિષ્યમિ ? , અહમપિ ચ સ્વલુ સત્સારભયોદ્વિગ્ના દેવાનુપ્રિયૈ સાધં પ્રવ્રજિષ્યામિ, તત સ્વલુ તે પઞ્ચ પાન્ડવાઃ પાન્ડુસેનસ્ય અભિષેઃ=રા-યાભિષેક ઋત્યા સ્વરાજ્યે સ્થાપિતવન્તઃ, યાત્ રાજા જાત', યાત્ રાજ્ય પ્રમાપ્યન્=રાજ્યન્ વિહરતિ=ગ્રાસ્તેસ્મ ।

અમ્હેર્હિ થેરાણ અતિણ ધમ્મે ણિમત્તે જાવ પન્વયામો-તુમ દેવાણુપ્પિણ ! કિં કરેસિ) હે દેવાનુપ્રિયો ! જિમ પ્રકાર તુમ્હેં સુખ મિલે વૈમા તુમ કો ! અન્હે કામ મે ચિલમ્પ મત કરો । ઇસકે વાદ-વે પાંચો પાઢવ જહા અપના ઘર થા વહા આપે-વળા આકર કે ડન્તો ને દ્રૌપદી દેવી કો બુલાયા-બુલાકર ડસસે ગેમા કરા-હે દેવાનુપ્રિયે ! સુનો જાન ઇસ પ્રકાર હૈ-હમલોગો ને સ્થવિરોંકે પાસ ધર્મતા શ્રવણ ક્રિયા હૈ । અન હમલોગોં કી ભાવના બુદ્ધિન હોકર ડનકે પાસ પ્રવ્રજિત હોને કી હૈ । અવ-તુમ્હારી ભાવના કર્યા હૈ-હે દેવાનુપ્રિયે રૂગે તુમ હમારે વાદ કયા કરોગી-(તણં સા દોઢઈ દેવો તે પચ પઢવે એવ વચાસી-જહ ણ તુન્મે દેવાણુપ્પિયા ! સસારમહાવિગ્ના પન્વયહ મમ કે અણ્ણે આલચે વા જાવ મવિસ્સહ ? અહ પિ ય ણ સસારમહાવિગ્ના દેવાણુપ્પિણહિં સદ્ધિ પન્વહસ્સામિ, તણ ણ તે પચ પઢવા પહુસેણસ્મ અભિસેઓ જાવ રાયા જાણ, જાવ રજ્જ પસાહે સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! અમ્હેર્હિ થેરાણ અતિણ ધમ્મે ણિમત્તે જાવ પન્વયામો તુમ દેવાણુપ્પિણ ! કિં કરેસિ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જેમ તમને સુખ મળે તેમ કરો સારા કામમા મોડુ કરો નહિ ત્યારપટ્ટી તેઓ પાચે પાડવો ન્યા પે તાનુ ઘર હનું ત્યા આન્યા ત્યા આવીને તેમણે દ્રૌપદી દેવીને બોલાવી બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાલળો, વાત એવી છે કે અમેએ સ્થવિરોની પાસેથી ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, એટલા માટે અમારી ઇચ્છા સુડિત થઇને તેમની પાસેથી પ્રવચ્ચા અહણ કરવાની છે હવે તમારી શી ઇચ્છા છે ? હે દેવાનુપ્રિયે ! અમને કહો અમે પ્રવચ્ચા અહણ કરી લઇશું ત્યારબાદ તમે શુ કરશો ?

(તણ સા દોઢઈ દેવી તે પચ પઢવે એવ વચાસી-જહ ણ તુન્મે દેવાણુપ્પિયા ! સસારમહાવિગ્ના પન્વયહ, મમ કે અણ્ણે આલચે વા જાવ મવિસ્સહ ? અહ પિ ય ણ સસારમહાવિગ્ના, દેવાણુપ્પિણહિં સદ્ધિ પન્વહસ્સામિ, તણ તે પચ પઢવા પહુસેણસ્મ અભિસેઓ જાવ રાયા જાણ, જાવ રજ્જ પસાહેમાણે વિહરહ)

ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा द्रौपदी च देवी अन्यदा कदाचित् पाण्डुसेन राजा-
न्यापृच्छन्ति, ततः खलु स पाण्डुसेनो राजा कौटुम्भिकपुरुषान् शब्दयति, शब्द-
यित्वा, एवमवादीत्-सिप्रमेय भो ! देवानुप्रियाः ! निष्क्रमणाभिपेक्ष=दीक्षोपयोग
वस्तूनि यावद् उपस्थापयत, पुरुषसहस्रवाहिनीः शिविका उपस्थापयत, ' यावत्
प्रत्यवरोहन्ति=अत्र यावच्छब्देनैव बोध्यम्, ततः पाण्डुसेनस्य राजोवचनमाकर्ण्य ते

माणे विहरइ) इस प्रकार पाण्डवों का कहना सुनकर द्रौपदी देवी ने
उन पांचों पाण्डवों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुमलोग यदि
ससार भय से उद्दिग्ध होकर प्रव्रजित होना चाहते हो, तो फिर मेरे
लिये आप के सिवाय और कौन दूसरा आलपन अथवा आधार होगा ।
अतः मैं भी आप देवानुप्रियों के साथ ससार भय से उद्दिग्ध होकर
दीक्षित होऊँगी । इस प्रकार द्रौपदी देवी का कथन सुनकर उन पांचों
पाण्डवों ने पाण्डुसेन कुमार का राज्याभिषेक करके उसे राज्यपद में स्था-
पित किया । इस तरह पाण्डुकुमार राजा हो गया । यावत् राज्य का वह
अच्छी तरह पालन करने लगा । (तएण ते पच पडवा दोवईय देवी
अन्नया कयाइ पडुसेणरायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेणे राया कौटु-
म्भिय पुरिसे सदावेह, सदायित्ता, एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणु-
प्रिया । निक्खमणाभिसेयं जाव उवह्वेह, पुरिससहस्समाहणीओ
सिवियाओ उवह्वेह, जाव पच्चोरुहति, पच्चोरुहत्ता जेणेव थेरा उवा-

आ प्रभाषे पाण्डवानु कथन साधणीने द्रौपदी देवीअे ते पावे पाण्डवाने
आ प्रभाषे कथु वे डे देवानुप्रियो ! तमे न्यारे ससारभयथी उद्दिग्ध थधने
प्रवन्त्या अडलु करवा छुट्ठो छे त्यारे तमारा पजर भारा भाटे आ ससारभा
भीणु कथु आलपन अथवा तो भीअे कथे आधार थथे ? अेटला भाटे डु
पणु तमारी साथे ससारभयथी उद्दिग्ध थधने दीक्षा अडलु करवा छुट्ठु छु
आ प्रभाषे द्रौपदी देवीअु कथन साधणीने ते पावे पाण्डवाने पाण्डुसेन कुमारने
राज्याभिषेक करीने तेने राज्याभने जेसाडी दीधे आ प्रभाषे पाण्डुसेन कुमार
राज थथ गथे यावत् ते राज्याभु सारी रीते रक्षणु करवा लाअे ।

(तएण ते पच पडवा दोवईय देवी अबया कयाइ पडुसेणरायाण आपुच्छति,
तएण से पडुसेणे राया कौटुम्भियपुरिसे सदावेह, सदायित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव
भो देवाणुप्रिया ! निक्खमणाभिसेयं जाव उवह्वेह, पुरिससहस्समाहणीओ
सिवियाओ उवह्वेह, जाव पच्चोरुहति, पच्चोरुहत्ता जेणेव थेरा तेणेव उवाग०
आलित्तेण जाव समणा जाया, चोदस्सपुग्वाइ अहिज्जति, अहिज्जित्ता पट्टणि

કૌટુમ્બિકપુરુષાસ્તથાસ્તુ' કૃત્યુત્ત્વા તથૈવ યાવદુપસ્થાપયન્તિ, તદા તે પદ્મ
પાન્ડવા પુરુષસહસ્રવાહિનીઃ શિષિકા આરુઢા, પાન્ડુમથુરાયા નગર્યાં મધ્યમધ્યેન
નિર્ગચ્છતિ, નિર્ગત્ય શિષિકામ્પઃ પ્રત્યગ્રોહતિ=પ્રત્યગ્રતરતિ । પ્રત્યગ્રહ, 'જેવેત્ર'
યૈવ સ્થિરાસ્તથૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય ઇમયાદિપુઃ—' આલિતે ણ જાવ સમણા

ગચ્છહ આલિત્તેણ જાવ સમણા જાયા, ઘોદસપુત્રાહ અરિજિતિ,
અરિજિત્તા, પદ્મિ યાસાહ છદ્ધમદસમદુવાલસેહિં માસદ્દમાસગ્વમ
નેહિં અપ્પાણ ભાવેમાણા વિહરતિ) હસકે ઘાદ પાંચો પાંડવોં ને ઓર
દ્રૌપદી દેવી ને કિસી ણક સમય પાંડુસેન રાજા સે દીક્ષિત હોને કે લિયે
પૂછા । તત્ર પાંડુસેન રાજા ને કૌટુમ્બિક પુરુષોં કો બુલાયા બુલાંકર
ઉનસે એસા કહા—ઓ દેવાનુપ્રિયો ! તુમલોગ શીઘ્ર હી દીક્ષા મેં ઉપયોગ
આનેવાલી વસ્તુઓં કો લાકર ઉપસ્થિત કરો—તથા પુરુષ સહસ્રવાહિની
શિષિકાઓં કો બી ઉપસ્થિત કરો—હસ પ્રકાર પાંડુસેન રાજા કે વચન
સુનકર ઉન કૌટુમ્બિક પુરુષોં ને “ તથાસ્તુ ” કહકર ઉનકી આજ્ઞા કો
સ્વીકાર કર લિયા—ઔર દીક્ષા મેં ઉપયોગી સમસ્ત સામગ્રી કો એક
પુરુષ સહસ્રવાહિની શિષિકાઓં કો લાકર ઉપસ્થિત કર દિયા । તથા વે
પાંચો પાંડવ ઉન પુરુષ સહસ્રવાહિની શિષિકાઓં પર આરુઢ હોકર પાંડુ
મથુરા નગરી કે ઘીચ સે હોકર નિકલે । વહા સે નિકલકર વે જહાં સ્થ-
વિર ઠહેરે હુએ થે—વહાં—આયે—વહા આકર સબકે સબ શિષિકાઓં સે

વાસાહ છદ્ધમદસમદુવાલસેહિં માસદ્દમાસગ્વમનેહિં અપ્પાણ ભાવેમાણા વિહરતિ)

ત્યારપછી પાંચે પાંડવોએ અને દ્રૌપદી દેવીએ કોઈ એક વખતે પાંડુસેન
રાજાને દીક્ષા અહંણુ કરવા માટે પૂછ્યું ત્યારે પાંડુસેન રાજાએ કૌટુંબિક પુરુ-
ષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે
લોકો દીક્ષા વખતે ઉપયોગમા આવનારી બધી વસ્તુઓ જલ્દી લઈ આવો
તેમજ પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી પણ લઈ આવો આ પ્રમાણે પાંડુસેન
રાજાના વચન સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ‘ તથાસ્તુ ’ કહીને તેમની
આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને દીક્ષા માટે ઉપયોગી એવી બધી વસ્તુઓ તેમજ
પુરુષ-સહસ્રવાહિની પાલખી લઈ આવ્યા ત્યારપછી તે પાંચે પાંડવો તે પુરુષ
સહસ્રવાહિની પાલખીઓ ઉપર સવાર થઈને પાંડુ-મથુરા નગરીની વચ્ચે થઈને
નીકળ્યા ત્યાંથી નીકળીને તેઓ ન્યાં સ્થવિર હતા ત્યાં પહોંચ્યા, ત્યાં પહોં-
ચીને તેઓ બધા પાલખીઓમાંથી નીચે ઉતર્યા, નીચે ઉતરીને સ્થવિરોની

जाया ' आदीप्तोऽयं लोक खलु इत्यादि । यावद् श्रमणा जाताः, चतुर्दशपूर्वाणि अधीयते स्म, अधीत्य बहूनि वर्षाणि पष्ठाष्टमदशम द्वादशैर्मासार्धमासक्षणैस्तपोभि- रात्मान भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव पव्वइया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्का- रस अंगाइ अहिज्जइ बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवाल- सेहि जाव विहरइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु सा द्रौपदी देवी शिवि- कातः प्रत्यवरोहति प्रत्यगतरति, प्रत्यवतीर्य यावत् प्रव्रजिता—दीक्षा गृहीतवती । ' सुव्वयाए ' सुत्रतायै=सुव्रतानामधेयायै ' अज्जाए ' आर्यायै ' सिस्सिणीयत्ताए'

नीचे उतरे । नीचे उतरकर स्थविरो के पास पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने ने स्थविरो से इस प्रकार कहा—हे भद्रत ! यह समस्त लोक आदीप्त—हो रहा है इत्यादिरूप से अपनी भावना प्रदर्शित कर यावत् वे श्रमण हो गये । चौदह पूर्वों का उन्होंने ने अध्ययन किया । अध्ययन करके अनेक वर्षों तक पष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, मास अर्धमास की तपस्याओं को वे करते हुए विचरने लगे ॥ सू० ३३ ॥

' तएण सा दोवई ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (दोवई देवी) द्रौपदीदेवी (सीयाओ पच्चो- रुहइ) अपनी शिविका से नीचे उतरी—(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि वासाइ

पासे पहुँचाया । त्या पहुँचानी तेमले स्थविरोने विनती करता आ प्रभावे कहुँ के छे लहन्त ! आ स पूरुँ जगत सणगी रहु छे वगेरे ३५थी पोतानी भावना प्रकट करीने यावत् तेजो श्रमण थरु गया चौद पूर्वोनु तेमले अध्य यन करुँ, अध्ययन करीने धल्ला वर्षो सुधी तेजो पष्ठ, अष्टम दशम, द्वादश, मास अर्धमासनी तपस्याओ करता रह्या ॥ सूत्र ३३ ॥

तएण सा दोवई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्पारपछी (दोवई देवी) द्रौपदी देवी (सीयाओ पच्चोरुहइ) पोतानी पादणीमा नीचे उतरी

(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअगाइ

कौटुम्बिकपुरुषास्तथास्तु' इत्युक्त्वा तथैव यावदुपस्थापयन्ति, तदा ते पञ्च पाण्डवा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका आम्ना, पाण्डुमथुराया नगर्या मध्यमयेन निर्गच्छति, निर्गत्य शिबिकाम्य' प्रत्यवरोहति=प्रत्यतरति । प्रत्यवरोह, 'जेणेव' यत्रैव स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य परमराशिगुः—' आलिप्ते णं जाव समणा

गच्छह् आलिप्तेण जाव समणा जाया, चोदसपुत्राह् अहिज्जति, अहिज्जित्ता, पट्टणि यामाह् छट्ठमदसमदुवालसेहि मासदमासखमणेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति) इसके बाद पाचो पाडवों ने और द्रौपदी देवी ने किसी एक समय पांडुसेन राजा से दीक्षित होने के लिये पूछा। तब पांडुसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा—ओ देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र ही दीक्षा में उपयोग आनेवाली वस्तुओं को लाकर उपस्थित करो—तथा पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को भी उपस्थित करो—इस प्रकार पांडुसेन राजा के बचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने “ तथास्तु ” कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया—और दीक्षा में उपयोगी समस्त सामग्री को एव पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को लाकर उपस्थित कर दिया। तब वे पाचो पाडव उन पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरुढ़ होकर पांडु मथुरा नगरी के बीच से होकर निकले। वहां से निकलकर वे जहां स्थविर ठहरे हुए थे—वहां—आये—वहां आकर सबके सब शिबिकाओं से

वासह् छट्ठमदसमदुवालसेहि मासदमासखमणेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति)

त्यारपछी पांचे पाडवोके अने द्रौपदी देवीके कोठे केक वभते पाडुसेन राजने दीक्षा अछु करवा भाटे पूछथु त्यारे पाडुसेन राजके कौटुम्बिक पुरुषोने बोलाव्या बोलावीने तेमने आ प्रभाछे कछु के के देवानुप्रियो । तमे बोको दीक्षा वभते उपयोगमा आवनारी जधी वस्तुओ न्हदी लथ आवे। तेमज पुरुष सहस्रवाहिनी पालणी पथु लथ आवे आ प्रभाछे पाडुसेन राजना वयन साभणीने ते कौटुम्बिक पुरुषोके ' तथास्तु ' कहने तेमनी आज्ञा स्वीकारी लीधी अने दीक्षा भाटे उपयोगी जेवी जधी वस्तुओ तेमज पुरुष-सहस्रवाहिनी पालणी लथ आव्या त्यारपछी ते पांचे पाडवो ते पुरुष सहस्रवाहिनी पालणीओ उपर सवार यधने पांडु-मथुरा नगरीनी वज्जे यधने नीकल्या त्याधी नीकणीने तेओ न्या स्थविर हता त्यां पछोव्या, त्या पछे अने तेओ जधा पालणीओभाधी नीचे उतर्या, नीचे उतरने स्थविरानी

अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव थेरा
 भगवंतो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता थेरं भगवंतं वंदंति
 णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामो णं तुब्भेहिं
 अब्भणुन्नाया संमाणा अरहं अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए,
 अहासुहं देवाणुप्पिया । तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच
 अणगारा थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा । थेरे
 भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अतियाओ
 पडिणिक्खमंति मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गा-
 माणुगाम दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव
 उवा० हत्थिकप्पस्स वहिया सहसववणे उज्जाणे जाव विह-
 रति, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासख-
 मणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति वीयाए एव
 जहा गोयमसामी णवरं जुहिट्ठिल्लं आपुच्छंति जाव अड-
 माणा बहुजणसहं णिसामेंति, एव खलु देवाणुप्पिया ।
 अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेल्लसिहरे मासिणं भत्तेणं
 अपाणएणं पंचहि छत्तीसेहि अणगारसएहि सद्धि कालगए
 जाव पहीणे, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा
 बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणि-
 क्खमति पडिणिक्खमित्ताजेणेव सहसववणे उज्जाणे जेणेव
 जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भत्तपाणं
 पच्चक्खंति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति पडि-

शिष्यातया ददाति पाण्डसेनो राजा द्रौपदी सुव्रताये शिष्यारूपेण दत्तवानिति
भाव । एकादशाहानि अधीते, गृह्णि र्पाणि पष्टाष्टमदशमद्वादशैस्तपोभिर्वा
दात्मान भावयन्ती विहरति ॥ सू० ३४ ॥

मूलम्—तएण थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पडुमदुराओ
णयरीओ सहसंचवणाओ उज्जाणाओ पडिणिस्खमंति पडि-
णिक्खमित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति, तेण कालेण
तेणं समएण अरिहा अरिट्टनेमी जेणेय सुरट्टाजणवए तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता सुरट्टाजणवयंसि संजमेणं तवसा
अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएणं बहुजणो अन्नमन्नस्स
एवमाइक्खइ०—एवं खलु देवाणुप्पिया । अरिहा अरिट्टनेमी
सुरट्टाजणवए जाव वि०, तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच
अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्न
सदावेति सदावित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ।
अरहा अरिट्टनेमी पुग्वाणु० जाव विहरइ, त सेयं खलु
अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्टनेमि वदणाए गमित्तए

छट्टमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ) नीचे उतरकर यावत् वह भी
प्रव्रजित हो गई । पाण्डसेन राजा ने उसे—द्रौपदी को सुव्रता नाम की
साध्वी के शिष्यारूप से प्रदान किया । द्रौपदी आर्या ने ग्यारह अर्गों
का अध्ययन किया । बाद में अनेक वर्षों तक छट्ट अष्टम, दशम, द्वादश
तपस्याओं से अपने आपको उसने भावित किया ॥ सू० ३४ ॥

अदिज्जइ, वहुणि बासाइ छट्टमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ)

नीचे उतरीने यावत् ते पणु प्रव्रजित थई गइ पाण्डसेन राजा
द्रौपदीने सुव्रता नामनी साध्वीने शिष्याना रुपभा अपिं करी द्रौपदी आर्या
अगियार अ गोलु अध्ययन कथुं त्यारपछी घण्टा वर्षो सुधी छट्ठ, अष्टम,
दशम, द्वादश तपस्याओथी पोताना आत्माने तेणु भावित गे ॥ सू ३४ ॥

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्यत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपा-
गच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति । ततः
खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एव भाषते, एव प्ररूपयति एव प्रज्ञाप-
यति-एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमि सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति ।
ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रभृत्वा पञ्चानगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्य
शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवमादन्, एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा

णाओ) उद्यान से (पडिणिक्खमति) विहार किया (पडिणिक्खमित्ता)
विहार करके (वहिया जणवयविहार विहरति) बाहिर के जनपदों
में विचरने लगे (तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिष्टनेमी जेणेव
सुरद्धा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरद्धा जणवयंसि
सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएण बहुजणो अन्नमन्नस्स
एवमाइक्खइ) उस काल में और उस समय में अर्हन् अरिष्टनेमि
प्रभु विहार करते हुए जहाँ सौराष्ट्र जनपद था-वहाँ आये वहाँ आकर
के वे उस सौराष्ट्र जनपद में समय और तप से अपने आत्मा को
भावित करते हुए विचरने लगे । जब वहाँ के अनेक लोगो को इसकी
खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे (एव खलु देवाणु-
प्पिया ! अरिहा । अरिष्टनेमी सुरद्धा जणवए जाव वि० तएण ते जुहि-
ट्टिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा अन्न-

णिकप्पम ति) विहार कथे (पडिणिक्खमित्ता) विहार करीने तेओ (वहिया
जणवयविहार विहरति) अडारना जनपदोभा विहार करवा लाग्या

(तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिष्टनेमी जेणेव सुरद्धा जणवए
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरद्धा जणवयंसि सजमेण तवसा अप्पाण भावे-
माणे एवमाइक्खइ)

ते काले अने ते समये अर्हन् अरिष्टनेमि प्रभु विहार करता करता न्या
सौराष्ट्र जनपद छेता त्या आव्या त्या आवीने तेओ ते सौराष्ट्र जनपदभा
सयम अने तपथी पोताना आत्माने भावित करता विचरछु करवा लाग्या
न्यारे त्याना धषु दोडोने आ वातनी नधु यध त्यारे तेओ परस्पर आ
प्रभाषे छडेवा लाग्ये छे—

(एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिष्टनेमी सुरद्धाजणवए जाव वि० तएण
ते जुहिट्टिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा अन्नमन्नं
सहावेति, सहावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिष्टनेमी

कमिता एसणमणेसणं आलोपंति आलोइत्ता भत्तपाणं
 पडिदसेंति पडिदंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ।
 जाव कालगए तं सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया ! इमं
 पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्टवेत्ता सेत्तुंजं पव्वयं सणियं सणियं
 दुरूहत्तए 'संलेहणा झूसणा झूसियाणं' कालं अणवकख-
 माणाणं विहरित्तएत्तिकु अणमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति
 पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्टवेत्ति परि-
 ट्टवित्ता जेणेव सेत्तुजे पव्वए तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता
 सेत्तुजं पव्वय दुरूहंति दुरूहित्ता जाव कालं अणवकखमाणा
 विहरति । तएण ते जुहिट्टिल्लपामोक्खा पच अणगारा
 सामाइयमाइयाइ चोइसपुव्वाइ० वट्ठूणिं वासाणि० दोमा-
 सियाए संलेहणाए अत्ताण झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइणग्ग-
 भावे जाव तमट्ठमाराहेति तमट्ठमाराहित्ता अणते जाव
 केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा ॥ सू० ३३ ॥

टीका—'तएण थेरा' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स्थविरा भगवन्तोऽ-
 न्यदाकदाचित् पाण्डुमथुरातो नगरीतो सहस्राश्रवणादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामन्ति-
 निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति ।

—तएण थेरा भगवता इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (थेरा भगवतो) उन स्थविर भगवतोने
 (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (पडुमथुराओ) पाण्डु मथुरा (णय-
 रीओ) नगरी से (सहस्रववणाओ) सहस्राश्रवन नाम के (उज्जा

तएण थेरा भगवता इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारणाइ (थेरा भगवतो) ते स्थविर भगवतोअे (अन्नया
 कयाइ) केअे ओक वणते (पडु मथुराओ) पाण्डु मथुरा (णयरीओ) नगरीथी
 (सहस्रववणाओ) सहस्राश्रवन नामना (उज्जाणाओ) उज्जा '—पडि

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्यत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपा-
गच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति । ततः
खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एव भाषते, एव प्ररूपयति एव प्रज्ञाप-
यति-एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमि सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति ।
ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रभृत्वा पञ्चानगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्य
शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवमयदन्, एव खलु हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा

णाओ) उद्यान से (पडिणिक्खमति) विहार किया (पडिणिक्खमित्ता)
विहार करके (बहिया जणवयविहार विहरति) याहिर के जनपदों
में विचरने लगे (तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिष्टनेमी जेणेव
सुरद्धा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरद्धा जणवयसि
सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएण बहुजणो अन्नमन्नस्स
एवमाइक्खइ) उस काल में और उस समय में अर्हन् अरिष्टनेमि
प्रभु विहार करते हुए जहाँ सौराष्ट्र जनपद था-वहा आये वहाँ आकर
के वे उस सौराष्ट्र जनपद में समय और तप से अपने आत्मा को
भावित करते हुए विचरने लगे। जब वहाँ के अनेक लोगो को इसकी
खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे (एव खलु देवाणु-
प्पिया ! अरिहा ! अरिष्टनेमी सुरद्धा जणवए जाव वि० तएण ते जुहि-
ट्टिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमद्ध सोच्चा अन्न-

णिकप्पमति) विहार कथे (पडिणिक्खमित्ता) विहार करीने तेओ (बहिया
जणवयविहार विहरति) अडारना जनपदोभा विहार करवा लाग्या

(तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिष्टनेमी जेणेव सुरद्धा जणवए
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरद्धा जणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावे-
माणे एवमाइक्खइ)

ते काले अने ते समये अर्हन् अरिष्टनेमि प्रभु विहार करता करता न्या
सौराष्ट्र जनपद हुतो त्या आया त्या आवीने तेओ ते सौराष्ट्र जनपदभा
संयम अने तपशी पोताना आत्माने भावित करता विचरखु करवा लाग्या
न्यारे त्यांना धणु लोकोने आ वातणी अणु यध त्यारे तेओ परस्पर आ
प्रभाणु कळेवा लाग्यो हे—

(एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिष्टनेमी सुरद्धाजणवए जाव वि० तएण
ते जुहिट्टिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमद्ध सोच्चा अन्नमन्नं
सदावेति, सदावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिष्टनेमी

નુપૂર્વ્યા=તોર્યકરાણાં મર્યાદયા યાવદ્ વિહરતિ, 'ત' તત્-તસ્માદ્ 'સેય' શ્રેયઃ સ્વછ
 અસ્માક યત્ સ્થવિરાન્ આપૃચ્ચાર્હન્તમરિષ્ટનેમિ ઋદનાયૈ ગન્તુમ્ । અન્યોન્યસ્ય
 =પરસ્પરસ્યૈતમર્થે સર્વે પશ્ચાન્નગારાઃ પ્રતિશૃણ્વન્તિ, સ્વીકૃયન્તિ પ્રતિશ્રુત્ય યૌત્ર સ્ય
 વિરા મગચન્તસ્ત્રૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય તાન્ સ્થવિરાન્ મગચતો વન્દન્તે નમ-
 સ્યન્તિ ચ ચન્દિત્યા નમસ્યિત્યા ઇયમગાદિપુ -ઈચ્છામઃ સ્વલુયુષ્મામિરભ્યનુજ્ઞાતાઃ
 સન્તોઽર્હન્તમરિષ્ટનેમિ યાવદ્ ગન્તુમ્ । સ્થવિરા ઋતુઃ યયામુસ્વ હે દેવાનુપ્રિયા ।

મન્ન સદ્ધાવેતિ, સદ્ધાવિત્તા એવં વયાસી-અથ સ્વલુ દેવાણુપિયા । અરિહા
 અરિદ્વનેમી પુઞ્વાણુ જાવ વિહરહ, ત સેય સ્વલુ અમ્હ ઘેરા આપુચ્છિત્તા
 અરહ અરિદ્વનેમિ વદનાળ ગમિત્તા) હે દેવાનુપ્રિયો ! સુનો-અર્હત અરિ
 ઇનેમિ પ્રમુ તીર્થકર પરમ્પરાનુસાર વિહાર કરતે હુણ યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જન
 પદ મેં આપે હુણ હેં । લોગોં કે મુખ સે હસ ઘાત કો ડન પાંચ યુધિષ્ઠિર
 આદિ અનગારો ને સુના-તપ આપસ મેં એક દૂસરે કો-બુલાયા-ઔર
 બુલાકર હસ પ્રકાર કહા-દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદ મેં તીર્થકર પર-
 મ્પરા કે અનુસાર મગવાન્ અરિદ્વનેમિ વિહાર કર રહે હેં-અતઃ હમલોગોં
 કો સ્થવિરો કી આજ્ઞા લેકર અર્હત અરિદ્વનેમિ કો વદના કરને કે લિયે
 વલના પહુત અચ્છા હૈ-ઉચિત હૈ-(અન્નમન્નસ્સ ઇયમદ્ધ પહિસુણેતિ,
 પહિસુણિત્તા જેણેવ ઘેરા મગવતો, તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા ઘેરે
 મગવતે વદતિ ણમસતિ, વદિત્તા ણમસિત્તા એવ વયાસી-ઈચ્છામો ણ

પુઞ્વાણુ૦ જાવ વિહરહ, ત સેય સ્વલુ અમ્હ ઘેરા આપુચ્છિત્તા અરહ અરિદ્વનેમિ વદ-
 નાળ ગમિત્તા)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભણો, અર્હત અરિદ્વનેમિ પ્રમુ તીર્થ કર પરપરા
 મુજબ વિહાર કરતા યાવત સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં પધારેલા છે લોકોના મુખથી
 આ વાતને તે પાચે યુધિષ્ઠિર વગેરે અનગારોએ સાભળી ત્યારે તેઓએ
 પરસ્પર એક બીજાઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે
 દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં તીર્થ કર પરપરા મુજબ ભગવાન અરિદ્વનેમિ
 વિહાર કરી રહ્યા છે એથી સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને અરિદ્વનેમિને વદન
 કરવા માટે અમારે જવુ જોઈએ

(અન્નમન્નસ્સ ઇયમદ્ધ પહિસુણેતિ, પહિસુણિત્તા જેણેવ ઘેરા મગવતો, તેણેવ
 ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા ઘેરે મગવતે વદતિ ણમસતિ, વદિત્તા ણમસિત્તા એવ
 વયાસી-ઈચ્છામો ણ તુમેર્હિ અન્નમણુષ્યાયા સમાણા અરહ અરિદ્વનેમિ જાવ ગમિત્તા)

ततः खलु ते युगिष्ठिरप्रमुखा पञ्चानगाराः स्थविरैर्भगवद्भिरभ्यनुज्ञाताः सन्त
स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिक्राव
प्रतिनिष्क्रामन्ति, माम-मासेन 'अणिक्खित्तेण' अनिक्षित्तेन=अन्तररहितेन तपः

तुम्हेहि अब्भणुन्नाया समणा अरह अरिद्धनेमि जाव गमित्ताए अहासुह
देवानुप्पिया ! तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा थेरेहि भग
वतेहि अब्भणुन्नाया समणा येरे भगवते वदड णममह वदित्ता णम-
सित्ता थेराण अतियाओ पडिणिक्खमति, मास मासेण अणिक्खित्ते
ण त । कम्मेण गामाणुगाम दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे
तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स वहिया सहस्रवणे उज्जाणे जाव
विहरति-तएण ते जुहिट्ठिल्लज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपार-
णप पढमाण पोरसीए सज्झाय करेति, वीयाए जहा गोयमसामी,
णवर जुहिट्ठिल आपुच्छति जाव अडमाणा बहुजणसह णिसामेति) इस
प्रकार का परस्पर का यह विचार उन्होंने ने स्वीकार कर लिया-स्वीकार
करके फिर वे जहा स्थविर भगवत थे-वहा गये-वहा जाकर उन्होंने
उन स्थविर भगवतो को वंदना की नमस्कार किया । वंदना नमस्कार
कर फिर उनसे इस प्रकार कहा हमलोग आप भगवतो से आज्ञा प्राप्त
कर अर्हंत नेमिनाथ प्रभु को वंदना करने के लिये सौराष्ट्र जनपद जाना
चाहते हैं । तब उन स्थविर भगवतो ने उनसे कहा हे देवानुप्रियो !
यथासुखम्-तुम्हें जैसे सुख हो-वैसा करो इस प्रकार उनस्थविर भग

अहासुह देवानुप्पिया ! तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा, थेरेहि भग
वतेहि अब्भणुन्नाया समणा येरे भगवते वदड णममह, वदित्ता णममित्ता थेराण
अतियाओ पडिणिक्खमति, मासमासेण अणिक्खित्तेण तवोरुम्मेण गामाणुगाम
दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स वहिया सह
स्रवणे उज्जाणे जाव विहरति तएण ते जुहिट्ठिल्लज्जा चत्तारि अणगारा मास
खमणपारणप पढमाण पोरसीए सज्झाय करेति, वीयाए एव जहा गोयमसामी,
णवर जुहिट्ठिल आपुच्छति जाव अडमाणा बहुजणसह णिसामेति)

आ गीते तेओओ ओठणीज्जना विद्यादाने स्वीकारी वीधा, स्वीकारीने
तेओओ न्या स्थविर भगवत उता त्या गया त्या न्धने तेमओ ते स्थविर
भगवतोने वदन ओने नमस्कार कर्या वदन ओने नमस्कार करीने तेमने आ
प्रमाओ विनती करी के ओमे आप भगवतनी आज्ञा भेजवने अर्हंत नेमि
नाथ प्रभुना वदन भाटे सौ । १०५ जनपदमा नवा धरणीओ छीओ त्थार ते
स्थविर भगवतोओ तेमने आ प्रमाओ आज्ञा करी के हे देवानुप्रियो ! ' यथा
सुखम् ' तमने के काममा आनंद प्राप्त थाय ने कहे आ प्रमाओ ते स्थविर

નુપૂર્વ્યા=તીર્થકરાણાં મર્યાદયા યાવદ્ વિહરતિ, 'ત' તત્-તસ્માદ્ 'સેય' શ્રેય' સ્વહ
 અસ્માકં યત્ સ્થવિરાન્ આપૃન્ઞચાર્દન્તમરિષ્ટનેર્મિ રન્દનાયૈ ગન્તુમ્ । અન્યોન્યસ્ય
 =પરસ્પરસ્યૈતમર્થે સર્વે પશ્ચાન્નગારાઃ પ્રતિશૃણ્વન્તિ, સ્વીકૃર્વન્તિ પ્રતિશ્રુત્ય યૌત્ર સ્ય
 વિરા મગવન્તસ્તૈવોપાગચ્છન્તિ, ઉપાગત્ય તાન્ સ્થવિરાન્ મગવતો વન્દન્તે નમ-
 સ્યન્તિ ચ રન્દિત્યા નમસ્યિત્યા ઇયમગ્રાદિષુ -રન્ઞમઃ સ્વલુપુષ્પામિરભ્યનુજ્ઞાતાઃ
 સન્તોઽર્દન્તમરિષ્ટનેર્મિ યાવદ્ ગન્તુમ્ । સ્થવિરા ઋચુ' યયામુલ્લ હે દેવાનુપ્રિયા ।

મન્ન સદ્ધાવૈતિ, સદ્ધાવિત્તા એવ વયાસી-એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા । અરિહા
 અરિઢ્ઢનેમી પુન્વાણુ જાવ વિહરહ, ત સેય સ્વલુ અમ્હ થેરા આપુચ્છિત્તા
 અરહ અરિઢ્ઢનેર્મિ વદનાણ ગમિત્તા) હે દેવાનુપ્રિયો ! સુનો-અર્હંત અરિ-
 ણ્ઢનેર્મિ પ્રશુ તીર્થકર પરસ્પરાનુસાર વિહાર કરતે હુણ યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જન-
 પદ મેં આયે હુણ હેં । લોગોં કે મુલ્લ સે હસ યાત કો ડન પાંચ યુધિષ્ઠિર
 આદિ અનગારો ને સુના-તપ આપસ મેં એક દસરે કો-બુલાયા-ઔર
 બુલાકર હસ પ્રકાર કહા-દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદ મેં તીર્થકર પર-
 સ્પરા કે અનુસાર મગવાન્ અરિણ્ઢનેર્મિ વિહાર કર રહે હેં-અતઃ હમલોગોં
 કો સ્થવિરો કી આજ્ઞા લેકર અર્હંત અરિણ્ઢનેર્મિ કો વદના કરને કે લિયે
 ચલનાં પહુત અચ્છા હૈ-ઉચિત્ત હૈ-(અન્નમન્નસ્સ ઇયમટ્ઢ પઢિસુર્ણેતિ,
 પઢિસુણિત્તા જેણેવ થેરા મગવતો, તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે
 મગવતે વદતિ ણમસતિ, વદિત્તા ણમસિત્તા એવ વયાસી-રન્ઞામો ણ

પુન્વાણુ જાવ વિહરહ, ત સેય સ્વલુ અમ્હ થેરા આપુચ્છિત્તા અરહ અરિઢ્ઢનેર્મિ વદ
 નાણ ગમિત્તા)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સામળો, અર્હંત અરિઢ્ઢનેર્મિ પ્રશુ તીર્થ કર પરપરા
 મુજબ વિહાર કરતા યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જનપદમા પધારેલા છે લોકોના મુખથી
 આ વાતને તે પાથે યુધિષ્ઠિર વગેરે અનગારોએ સામળી ત્યારે તેઓએ
 પરસ્પર એક બીજાઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે
 દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં તીર્થ કર પરપરા મુજબ ભગવાન અરિઢ્ઢનેર્મિ
 વિહાર કરી રહ્યા છે એથી સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને અરિઢ્ઢનેર્મિને વદન
 કરવા માટે અમારે જુલુ બેઠએ

(અન્નમન્નસ્સ ઇયમટ્ઢ પઢિસુર્ણેતિ, પઢિસુણિત્તા જેણેવ થેરા મગવતો, તેણેવ
 ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે મગવતે વદતિ ણમસતિ, વદિત્તા ણમસિત્તા એવ
 વયાસી-રન્ઞામો ણ તુન્મેર્મિ અન્નમુખ્યાયા સમાણા અરહ અરિઢ્ઢનેર્મિ જાવ ગમિત્તા)

हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचमभ्यमकुलानि 'अडमाणा' अटन्त बहुजनशब्द निशा मयन्ति-शृण्वन्ति=किं शृण्वन्तीत्याह- 'एव खलु हे देवानुप्रियाः ! अर्हन् अरिष्ट नेमिः 'उज्जितसेलसिहरे' उज्जयन्तशैलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासि केन भस्तेन भक्तप्रत्यारयानेन पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः 'पञ्चहिं उत्तीसेहिं अणगारसण्हिं' पञ्चभिः पद्विंशताऽनगारशतैः=शट्त्रिंशदधिकपञ्चशतसंख्यकैरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिवृत्त सर्वदुःखप्रहीणो जातः ।

'तएण' ति 'तत् खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा बहुजनस्यातिके एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रा-

कल्प नगर में उच्च, नीच एवं मध्यम कुलों में गोचरी के लिये आये। उस समय इन्होंने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने (एव देवानुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भस्तेण अपाणएण पचहिं उत्तीसेहिं अणगारसण्हिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोन्चा हत्थिरुप्पाओ पडिणिक्खमति) देवानुप्रियों ! अर्हन्त अरिष्टनेमि उज्जयन्तशैल शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास के चतुर्विध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगारों के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिवृत्त हो कर सर्व दुःखों से रहित हो गये हैं। इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मुख से इस समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पनगर से निकले (पडिनिक्खमत्ता जेणेव सहस्रवणे उज्जाणे जेणेव

अने मध्यम कुलोभा गोचरी भाटे आ०या ते सभये तेमण्णे धण्णा भाणुमेना सुभथी ये जतना सभायादेः सासण्या के—

(एव देवानुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भस्तेण अपाणएण पचहिं उत्तीसेहिं अणगारसण्हिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोन्चा हत्थिरुप्पाओ पडिणिक्खमति)

हे देवानुप्रियो ! अर्हन्त अरिष्टनेमि उज्जयन्त शैलशिखर ऊपर-गिरनार पर्वत ऊपर-अर्ह मासना गारे जतना आहारना परित्याग रूप लक्ष्य प्रत्याख्यानथी ५३६ अनगारोनी साथे कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिवृत्त यधने सर्व दुःखोशी युक्त यध गया छे आ प्रमाणे धण्णा भाणुमेना सुभथी आ जतना सभायादेः सासणीने ते युधिष्ठिर वगरना गारे अनगारो ते हस्तिकल्प नगरथी नीजण्या

कर्मणा ग्रामानुग्राम 'दृष्टममाणा' द्रवन्तः=गच्छन्तः, यावत् यत्रैव 'हस्तिकल्पे नयरे' हस्तिरूप नगर तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिरूपस्य गृहिः सहस्राश्रयणे उद्याने यावद् विहरन्ति। ततः गच्छन्ते तैः युधिष्ठिरमर्जुनाश्रित्यारोऽनगारा मासक्षपणपारणके प्रथमाया पौरुष्या स्वाध्यायं कुर्वन्ति, 'बीयाप' द्वितीयाया पौरुष्या ध्यानं ध्यायन्ति तृतीयाया पौरुष्यामत्तवर्गिणमचपलमभ्रान्तसदोरकमुखवस्त्रिका प्रतिलेखयन्ति, भाजनवस्त्राणि प्रतिलेखयन्ति, भाजनानि च-पात्राणि प्रमार्जयन्ति, भाजनान्यपगृह्णन्ति, गृहीत्या एव यथा गौतमस्वामी श्रमण महावीर मापृच्छति नगर-अयमत्र विशेषः अत्र उत्तारोऽनगाराः युधिष्ठिरमापृच्छन्ति यावत्

चतों से आज्ञा प्राप्त कर वे युधिष्ठिर प्रभुञ्च पांच अनगार उन स्थविर भगवत को वंदना नमस्कार करके उनके पास से चले आये और निरन्तर मास मास रामण करते हुए एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार करने लगे। इस तरह ग्रामानुग्राम विहार करते हुए वे पांचो अनगार जहा हस्तिकल्पनाम का नगर था वहा आये। वहा आकर वे हस्तिकल्प नगर के बाहिर सहस्राश्रयन उद्यान में जाकर ठहर गये। इसके बाद वे युधिष्ठिर के सिवाय चारो अनगार मासक्षपण के दिन प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करते, द्वितीय पौरुषी में ध्यान करते, और तृतीय पौरुषी में अत्वरित, अचपल एवं असभ्रान्त होकर सदोरकमुखवस्त्रिकाकी प्रतिलेखना करते, भाजन और वस्त्रोंकी प्रतिलेखना करते-फिर उन्हें उठाते-और लेकर जिस प्रकार गौतम स्वामी श्रमण महावीर स्वामी से पूछकर गोचरी के लिये निकलते उसी प्रकार ये भी युधिष्ठिर से पूछ कर हस्ति

लगव तोनी आज्ञा भेजवीने ते युधिष्ठिर प्रभुञ्च पांचे अनगारे। ते स्थविर लगव तोने वंदन तेभञ्च नमस्कार करीने तेभनी। पासेधी आवता रक्षा अने सतत मास अभयु करता ओक गाभथी जीजे गाभ विहार करवा लाग्या आरीते ग्रामानुग्राम विहार करता ते पांचे अनगारे। न्या हस्तिकल्प नामे नगर ईर्तु त्या आव्या त्या आवीने तेओ हस्तिकल्प नगरनी गडार सहस्राश्रयन उद्यानमा जधने मुकाम कर्छे। त्यारणाह ते युधिष्ठिर सिवायना यादे अनगारे। मासक्षपण पारणाना द्विसे प्रथम पौड्षीमा स्वाध्याय करता, द्वितीय पौड्षीमा ध्यान करता अने तृतीय पौड्षीमा गोचरी भाटे नीकणती वणते पणु अथपण असभ्रात थधने सदोरकमुखवस्त्रिकाकी प्रतिलेखना करता, लाजन अने वस्त्रोनी प्रतिलेखना करता, त्यारणाह तेभने उपासता अने उपाडीने जेम गौतम स्वामी श्रमणु लगवान महावीर स्वामीनी आज्ञा भेजवीने गोचरी भाटे नीकणता तेभञ्च तेओ पणु युधिष्ठिरनी आज्ञा भेजवीने हस्तिकल्प नगरमा द्वय, नीय,

हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचम यमकुलानि 'अडमाणा' जटन्त बहुजनगण्ड निशा-
मयन्ति-मृष्यन्ति=किं मृष्यन्तीत्याह- 'एव खलु हे देवानुप्रियाः ! अर्हत अरिष्ट-
नेमिः 'उज्जितसेलसिहरे' उज्जयन्तगेलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासि-
केन भक्तेन भक्तप्रत्याख्यानं पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेने-
त्यर्थः 'पञ्चहिं छत्तीसेहिं अणगारसर्हिं' पञ्चभिः पट्त्रिंशताऽनगारशतैः=शट्त्रिं-
शदधिकपञ्चशतसन्त्यकैरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिर्वृत-
सर्वदुःखप्रहीणो जातः ।

'तएण' ति 'तत् खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा बहुजनस्यान्तिके
एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रा-
कल्प नगरं मे उच्च, नीच एव मध्यम कुलों मे गोचरी के लिये आये।
उस समय इन्होंने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने
(एव देवानुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भक्तेण
अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसर्हिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे,
तएण ते जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजनस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा
इत्थिकप्पाओ पडिणिस्सममति) देवानुप्रियों ! अर्हत अरिष्टनेमि उज्जयन्तशैल
शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास के चतुर्विध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगा-
रों के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत हो कर सर्व
दुःखों से रहित हो गये हैं। इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मुख से इस
समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पन
गर से निकले (पडिनिस्सममत्ति जेणेव सहस्रवणे उज्जाणे जेणेव

अने मध्यम कुलोभा गोचरी भाटे आणा ते सभये तेभण्णे धण्णा भाणुमेना
मुभथी ये नतना सभायादे सारणीया हे—

(एव देवानुप्रिया ! अरहा अरिष्टनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भक्तेण
अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसर्हिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते
जुहिद्विल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजनस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा इत्थिकप्पाओ
पडिणिस्सममति)

हे देवानुप्रियो ! अर्ह त अरिष्टनेमि उज्जयन्त शैलशिखर ऊपर-गिरनार
पर्वत ऊपर-मेव मासना आरे नतना आहारना परित्याग रूप लक्ष्य प्रत्या-
ख्यानथी ५३६ अनगारोनी साथे कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत
धर्मे सर्व ईशोथी मुक्त थय गया छे आ प्रमाणे धण्णा भाणुमेना मुभथी
आ नतना सभायादे सारणीने ते युधिष्ठिर वगरना आरे अनगारो ते
हस्तिकल्प नगरथी नीकण्या

અગ્નિમુદ્યાન યત્રેય યુધિષ્ઠિરોડનગારસ્તત્રેયોપાગ-ઠન્તિ, ઉપાગસ્ય ભક્તપાન 'પન્ચ
 કલ્પતિ' પ્રત્યાર્પયન્તિ=પ્રત્યાર્પયાય 'ગમનાગમનસ્ત' ગમનાગમન પ્રતિક્રામન્તિ
 ર્દયાપથિકીં કુર્વન્તિ પ્રતિક્રમ્ય 'અમણમણેસણ' અપણામણેપણામ્ આલોચયન્તિ,
 આલોચ્ય ભક્તપાન-પ્રતિદર્શયન્તિ-યુધિષ્ઠિરસ્ય પુરોડસસ્થાપ્ય પ્રતિદર્શયન્તિ, પ્રતિ
 દર્શ્ય અમવાદિપુઃ-અવ ચલુ હે દેવાનુપ્રિય ! યાવત્ કાલગતઃ=અર્હન્ અરિષ્ટનેમિ
 મોક્ષમાત્સઃ, 'ત' તસ્માત્ શ્રેયઃ ચલુ અસ્માક હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! इम पूर्ववृष्टीत

જુહિદ્વિલ્લે અગ્નિગારે તેજેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા ભક્તપાણ પન્ચ
 કલ્પતિ, પન્ચકલ્પત્તા ગમનાગમનસ્ત પઢિક્રમતિ પઢિક્રમિત્તા અસણમ
 નેસણ આલોચન્તિ, આલોચ્તા ભક્તપાણ પઢિદર્સેન્તિ પઢિદર્સિત્તા અવ
 વયાસી-અવ ચલુ દેવાનુપ્રિયા ! જાત કાલગત્ ત સેય ચલુ અમ્હ દેવા
 નુપ્રિયા ! इम पुर्ववृष्टिय भक्तपाण परिद्वेत्ता सेतुंज पन्वय सणिय
 सणिय दुरुहित्ता) નિકલકર વે જર્હાં સહસ્રામ્રવન નામ કા ઉદ્યાન થા
 ઔર ઉસ મેં મી જહા યુધિષ્ઠિર અનગાર વિરોજમાન થે, વહા આવે !
 વહાં આકર ઉન્હોં ને ઉનકી સાક્ષી સે ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરદિયા ઔર
 ભક્ત પ્રત્યાખ્યાન કરકે ફિર ઉન્હોં ને ર્દયાપથ શુદ્ધિ કી ! શુદ્ધિ કરકે
 અપણા અનેપણા કી આલોચના કરકે ફિર ઉન્હોંને લાયે હુઅ ઉસ
 આહાર કો યુધિષ્ઠિર અનગાર કે સમક્ષ રત્વ કર દિખલાયા ! દિખલાકર
 ફિર વે હસ પ્રકાર કહને લગે ! હે દેવાનુપ્રિય ! अर्हन् अरिष्टनेमि मुक्ति
 को प्राप्त हो चुके है-हसलिये हे देवानुप्रिय ! हमको अब यही उचित

(પઢિનિરુખમિત્તા જેણે સહસ્રામ્રવે ઉજ્જાણે જેણે જુહિદ્વિલ્લે અગ્નિગારે
 તેજેવ ઉવાગચ્છતિ ઉવાગચ્છિત્તા ભક્તપાણ પન્ચકલ્પતિ પન્ચકલ્પત્તા ગમનાગમનસ્ત
 પઢિક્રમતિ, પઢિક્રમિત્તા અસણમનેસણ આલોચન્તિ, આલોચ્તા ભક્તપાણ પઢિદર્સેન્તિ
 પઢિદર્સિત્તા અવ વયાસી-અવ ચલુ દેવાનુપ્રિયા ! જાત કાલગત્ ત સેય ચલુ
 અમ્હ દેવાનુપ્રિયા ! इम पुर्ववृष्टिय भक्तपाण परिद्वेत्ता सेतुंज पन्वय सणिय
 सणिय दुरुहित्ता)

નીકળીને તેઓ જ્યાં સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતું અને તેમાં પણ
 જ્યાં યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યાં જ્યાં ત્યાં આવીને તેમણે તેમની સામે
 ભક્ત પાનનું પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધું પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઈર્દ્યાપથની શુદ્ધિ
 કરી શુદ્ધિ કરી અને અનેપણા કરી, આલોચના કરી આલોચના
 કરીને તેમણે તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને
 ખતાવ્યો । પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે હે !
 અર્હન્ત છે એટલા માટે

भक्तपान परिष्ठाप्य 'सेत्तुज' शत्रुजय-शत्रुजयनामक पर्वत शनैः शनैर्दूरोहितुम्
=आरोहितुम्, तथा-'सलेहणाञ्जसणाञ्जसियाण' सलेखना जोषणाजुष्टाना=सले-
खनाया कषायशरीरकृपीकरणे या जोषणा-प्रीतिः सेवा वा तथा जुष्टा-सेवि-
तास्तेषा=सलेखनातपःकारिणामित्यर्थः-कालम्-अनवकाङ्क्षमाणानाम् - अनि-
च्छताम् विहर्तुम्, इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रति-
श्रुत्य तद् पूर्वगृहीत भक्तपानम् एकान्ते=प्रासुके स्थाने परिष्ठापयन्ति, परिष्ठाप्य
यत्रैव शत्रुजयः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शत्रुजय पर्वत शनैः शनैर्दूरोहन्ति
आरोहन्ति, दूरुह्य यावत्-कालमनवकाङ्क्षमाणा विहरन्ति ।

है कि हम इस पूर्व गृहीत भक्त पान का परिष्ठापन कर शत्रुजय नामके
पर्वत पर धीरे धीरे चढ़े (सलेहणा ञ्जसणा ञ्जसियाण काल अणवकाल
माणाण विहरित्तए त्तिकद्दु अणमणस्स एयमद्द पडिमुणेति, पडिमु-
णित्ता तं पुव्वगहिय भत्तपाण एगते परिद्वेवेति, परिद्ववित्ता जेणेव
सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति) और वहाँ काय और कषाय को
कृश करनेवाली सलेखना मरणाशसा से रहित होकर प्रीति पूर्वक
धारण करे इस प्रकार विचार करकेउन्होंने ने परस्पर के इस विचार रूप
अर्थ को स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर उस पूर्व गृहीत भक्त
पान को उन्होंने एकान्त स्थान में परिष्ठापित कर दिया और परिष्ठापित
करके वे सब जहाँ शत्रुजय पर्वत या वहाँ चले गये (उवागच्छित्ता)
वहाँ जाकर के (सेत्तुज पव्वय दुरुहति, दुरुहित्ता जाव काल अणव-

हवे अभ० अ० वात योग्य लागे छे के अमे आ पूर्वगृहीत भक्तपाननु
परिष्ठापन करीने शत्रुजय नामना पर्वत उपर धीमे धीमे चढ़ीये

(सलेहणा ञ्जसणा ञ्जसियाण काल अणवकालमाणाण विहरित्तए त्तिकद्दु
अणमणस्स एयमद्द पडिमुणेति, पडिमुणित्ता तं पुव्वगहिय भत्तपाण एगते परि-
द्वेवेति, परिद्ववित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति)

अने त्या काय अने कषायने कृश करनारी सलेखनाने मरणाशसाथी
रहित यधने प्रेमपूर्वक धारण करीये आ प्रभाषे विचार करीने तेमळे अेक
भीमना आ विचार रूप अर्थने स्वीकारी लीधे स्वीकार करीने तेमळे ते
पूर्वगृहीत भक्तपानने अेकान्त स्थाने परिष्ठापित करी दीधु अने परिष्ठापित
करीने तेअो सवे' न्या शत्रुजय पर्वत हतो त्या आख्या गया (उवागच्छित्ता)
त्यां नधने—

(सेत्तुज पव्वय दुरुहति, दुरुहित्ता जाव काल अणवकालमाणा विहरन्ति,

अरणमुद्यान यत्रैव युधिष्ठिरोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य भक्तपानं पच-
कत्वति ' प्रत्याख्यायन्ति=प्रत्याख्याय ' गमनागमनस्त ' गमनागमन प्रतिक्रामन्ति
ईर्यापथिकीं कुर्वन्ति प्रतिक्रम्य ' एमणमणेमण ' एमणामनेमणाम् आलोचयन्ति,
आलोच्य भक्तपानं-प्रतिदर्शयन्ति-युधिष्ठिरस्य पुरोऽयस्थाप्य प्रतिदर्शयन्ति, प्रति-
दर्श्य एममादिपुः-एव खलु हे देवानुप्रिय । यावत् कालगतः=अहंन् अरिष्टनेमि
मोक्षमाप्तः, ' त ' तस्मात् श्रेयः खलु अस्माक हे देवानुप्रिया । इम पूर्वगृहीत

जुहिद्विल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छिता भक्तपान पच-
कत्वति, पचकस्मिन्ता गमणागमनस्त पडिक्रमति पडिक्रमिता एसणम-
नेसण आलोएति, आलोइत्ता भक्तपान पडिदसेति पडिदसित्ता एव
वयासी-एव खलु देवानुप्रिया ! जाव कालगए त सेय खलु अहं देवा-
नुप्रिया । इम पुव्वगहिय भक्तपानं परिद्वेत्ता सेत्तुज पव्वय सणिय
सणिय दुरुहत्तए) निरुलरुर वे जहा सहस्राअवन नाम का उद्यान था
और उस में भी जहा युधिष्ठिर अनगार विराजमान थे, वहा आये ।
वहां आकर उन्होंने उनको साक्षी से भक्त प्रत्याख्यान करदिया और
भक्त प्रत्याख्यान करके फिर उन्होंने ईर्यापथ शुद्धि की । शुद्धि करके
एमणा अनेमणा की आलोचना करके फिर उन्होंने लाये हुए उस
आहार को युधिष्ठिर अनगार के समक्ष रख कर दिखलाया । दिखलाकर
फिर वे इस प्रकार कहने लगे । हे देवानुप्रिय ! अहंन् अरिष्टनेमि मुक्ति
को प्राप्त हो चुके हैं-इसलिये हे देवानुप्रिय ! हमको अब यही उचित

(पडिनिम्वमिता जेणेव सहस्रवणे उज्जाणे जेणेव जुहिद्विल्ले अणगारे
तेणेव उवागच्छति उवागच्छिता भक्तपान पचकत्वति पचकस्मिन्ता गमणागमनस्त
पडिक्रमति, पडिक्रमिता एसणमनेसण आलोएति, आलोइत्ता भक्तपान पडिदसेति
पडिदसित्ता एव वयासी-एव खलु देवानुप्रिया । जाव कालगए त सेय खलु
अहं देवानुप्रिया ! इम पुव्वगहियभक्तपानं परिद्वेत्ता सेत्तुज पव्वय सणिय
सणिय दुरुहत्तए)

नीकणीने तेओ न्या सहस्राअवन नामे उद्यान હતુ અને તેમા પણ
ન્યા યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે તેમની સામે
ભક્ત પાનતુ પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઈર્યાપથની શુદ્ધિ
કરી શુદ્ધિ કરીને એપણા અને અનેપણા કરી, આલોચના કરી આલોચના
કરીને તેમણે લઈ આવેલા તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને
ખતાવ્યો ખતાવ્યા બાદ તેઓ આ પ્રમાણે ડહેવા લાગ્યા કે હે
અહં ત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુએ મુક્તિ મેળવી છે એટલા માટે !

भक्तपान परिष्ठाप्य 'सेत्तुज' शत्रुजय-शत्रुजयनामकं पर्वत शनैः शनैर्दूरोहितम्
=आरोहितम्, तथा-'सलेहणाश्रुसणाश्रुसियाण' सलेखना जोषणाजुष्टाना=सले-
खनाया कपायशरीरकृपीकरणे या जोषणा-प्रीतिः सेवा या तथा जुष्टा-सेवि-
तास्तेषा=सलेखनातपःकारिणामित्यर्थ-कालम्-अनवकाङ्क्षमाणानाम् - अनि-
च्छताम् विदुर्तुम्, इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रति-
श्रुत्य तद् पूर्वगृहीत भक्तपानम् एकान्ते=प्रासुके स्थाने परिष्ठापयन्ति, परिष्ठाप्य
यत्रैव शत्रुजयः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शत्रुजय पर्वत शनैः शनैर्दूरोहन्ति
आरोहन्ति, दूरुह यावत्-कालमनवकाङ्क्षमाणा विहरन्ति ।

है कि हम इस पूर्व गृहीत भक्त पान का परिष्ठापन कर शत्रुजय नामके
पर्वत पर धीरे धीरे चढ़े (सलेहणा श्रुसणा श्रुसियाण काल अणवकख-
माणाण विहरित्तए त्तिकट्टु अणमणस्स एयमट्ठ पडिमुणेति, पडिमु-
णित्ता तं पुब्बगहिय भत्तपाणं एगते परिट्ठ्वेति, परिट्ठवित्ता जेणेव
सेत्तुज पण्वए तेणेव उवागच्छति) और वहाँ काय और कपाय को
कृश करनेवाली सलेखना मरणाशसा से रहित होकर प्रीति पूर्वक
धारण करे इस प्रकार विचार करकेउन्होंने परस्पर के इस विचार रूप
अर्थ को स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर उस पूर्व गृहीत भक्त
पान को उन्होंने एकान्त स्थान में परिष्ठापित कर दिया और परिष्ठापित
करके वे सत्र जहाँ शत्रुजय पर्वत या वहाँ चले गये (उवागच्छित्ता)
वहाँ जाकर के (सेत्तुज पण्वय दुरुहति, दुरुहित्ता जाव काल अणव-

हवे अमणे ऐ व वात येअय लागे छे के अमे आ पूर्वगृहित लक्षतपाननु
परिष्ठापन करीने शत्रुजय नामना पर्वत उपर धीमे धीमे चढ़ीये

(सलेहणा श्रुसणा श्रुसियाण काल अणवकरमाणाण विहरित्तए त्तिकट्टु
अणमणस्स एयमट्ठ पडिमुणेति, पडिमुणित्ता त पुब्बगहिय भत्तपाण एगते परि-
ट्ठ्वेति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुज पण्वए तेणेव उवागच्छति)

अने त्या जाय अने कपायने कृश करनारी सलेखनाने मरणाशसा
रहित धधने प्रेमपूर्वक धारण करीये आ प्रभावे विचार करीने तेमळे ऐक
भीनना आ विचार रूप अर्थने स्वीकारी लीधा स्वीकार करीने तेमळे ते
पूर्वगृहीत लक्षतपानने अर्जात स्थाने परिष्ठापित करी दीधु अने परिष्ठापित
करीने तेअो अवे' न्या शत्रुजय पर्वत हतो त्या आख्या गया (उवागच्छित्ता)
त्यां वधने—

(सेत्तुज पण्वय दुरुहति, दुरुहित्ता जाव काल अणवकरमाणा विहरति,

ततः खलु ते युधिष्ठिरमहृताः पञ्चानगाराः 'सामाहयमाइयाइ' सामायि
कादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अरीत्य गृहीनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयि'या पञ्चाष्ट
मादितपः कृत्वा द्विमासिकया सलेहणयाऽऽत्मान 'झोसित्ता' जुष्टा सेवित्वा
यस्यार्थाय क्रियते नग्नभायो=निर्ग्रन्थभाय यावत् तमर्धमाराग्यति, आराध्य
अनन्तम् अनन्तार्थविषयक यावत् 'केवलवरणाणदसणे' केवलवरज्ञानदर्शन समु
त्पन्न यावत् सिद्धा=सिद्धिगतिं प्राप्ता इत्यर्थः ॥ सू० ३५ ॥

फलमाणा चिहरति, तण्ण ते जुहिठ्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा सामा
हयमाइयाइ चोदसपुब्बाइ गृहीणि वामाणि० दो मासियाण सलेहणाए
अत्ताण झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहति,
तमट्ठमारहित्ता अणते जाव केवलवरणादसणे समुत्पन्ने जाव सिद्धो)
वे शत्रुजय पर्वत पर चढे चढकर के उन्होंने मरणागता से रहित होकर
सलेहना धारण करली । इस तरह उन युधिष्ठिर प्रमुख पच अनगारों ने
सामायिक आदिचतुर्दश पूर्वों का अध्ययन करके अनेक वर्षों तक श्राम
ण्य पर्याय का पालन करके तथा पष्ठ, अष्टम, आदि तपस्याओं को
करके अन्त में दो मास की सलेहना से अपने आप की प्रीति पूर्वक
सेवित किया और जिस निमित्त नग्न भाव-निर्ग्रन्थ अवस्था धारण की
थी उस अर्थ को उन्होंने सिद्ध कर लिया । सिद्ध करके-आराधित कर
के अनन्त अर्थ को विषय करने वाले केवलवरज्ञानदर्शन को उत्पन्न कर
यावत् वे सिद्धि गति को प्राप्त हो गये ॥ सूत्र ३५ ॥

तण्ण ते जुहिठ्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा सामाहयमाइयाइ चोदसपुब्बाइ०
गृहीणि वामाणि० दोमासियाए सलेहणाए अत्ताणे झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ,
णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहति, तमट्ठमारहित्ता अणते जाव केवलवरणाण
दसणे समुत्पन्ने जाव सिद्धो)

तेज्जो शत्रुजय पर्वत उपर चढया अने चढीने तेमहे भरलुश साथी
रहित थधने सलेहना धारण करी लीधी आ प्रभाहे ते युधिष्ठिर प्रमुख
पांचे अनगारोहे सामायिक वगेरे चतुर्दश पूर्वोनु अध्ययन करीने धरुा वर्षो
सुधी श्रामण्य-पर्यायनु पालन करीने तेमज पष्ठ अष्टम वगेरे तपस्याओने
करीने छेवटे जे भासनी सलेहनाथी प्रेमपूर्वक पोतानी जतने सेवित करी
अने जे निमित्तने लधने नग्नभाव-निर्ग्रन्थ अवस्था धारण करी छती ते
अर्थने तेमहे सिद्ध करी लीधी सिद्ध करीने आराधित करीने अनन्त अर्थने
विषयरूप भगवानार देवज्ञान दर्शनने उत्पन्न करीने यावत् तेज्जोहे सिद्धगति
भेजथी लीधी ॥ सूत्र ३५ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई अज्जा सुव्वयाण अज्जियाण अंतिए
सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ अहिज्जित्ता वहूणि
वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइयपडिक्कता कालमासे
कालं किच्चा वंभलोए उव्वन्ना, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं
दस सागरोवमाइं ठिई पणत्ता तत्थ णं दुवयस्स देवस्स दस
सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, से णं भत्ते । दुवए देवे ताओ जाव
महाविदेहे वासे सिज्जइ जाव काहिइ । एवं खलु जंबू । सम
णेणं जान सपत्तेणं सोलमस्स णायज्जयणस्स अयमट्ठे पणत्ते
त्तिवेमि ॥ सू० ३४ ॥ सोलसमं नायज्जयणं समत्त ॥ १६ ॥

टीका—‘तएण मा’ इत्यादि । ततस्तदनन्तरं खलु मा द्रौपदी आर्या
साध्वी सुव्रतानामार्यिकानामन्तिके सामायिकारिकानि एकादशाङ्गानि अधीते,
अधीत्य वहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा मासिक्या सलेखनया आलोचित
प्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा ‘वंभलोए पचमे ब्रह्मलोके देवत्वेन’ उव्वन्ना ।

‘तएणं सा दोवई’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा दोवई अज्जा) उस द्रौपदी आर्यानि
(सुव्वयाण अज्जियाण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहि
ज्जइ) सुव्रता आर्या के पास सामायिक आदि ११ अंगों का अध्ययन
किया (अहिज्जित्ता वहूणि वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइय
पडिक्कता कालमासे कालं किच्चा वंभलोए उव्वन्ना) अध्ययन करके
अनेक वर्ष तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर एक मास की सलेखना

तएण सा दोवई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्वारपथी (सा दोवई अज्जा) ते द्रौपदी आर्याये (सुव्व
याण अज्जियाण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) सुव्रता
आर्यानी पासो आभायिक वगेरे ११ अंगोनु अध्ययन कथुं

(अहिज्जित्ता वहूणि वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइय पडिक्कता
कालमासे कालं किच्चा वंभलोए उव्वन्ना)

अध्ययन करीने धरुा वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायनु पालन कथुं त्वार

ઉત્પન્ના, તત્ર તસ્મિન્ દેવઓકે-પલુ અત્યેકેપા=કેવાવિદ્યાનામ્ દશસાગરોપ
માનિ સ્થિતિ પ્રજ્ઞતા, તત્ર સ્વલુ દ્રૌપદેયમ્યમ્ય દશસાગરોપમાનિ સ્થિતિ: પ્રજ્ઞતા તત્ર
સ્વલુ ગૌતમ: પૂન્નતિ-હે ભદ્રન્ત ! તત્ર સ્વલુ દ્રૌપદો દેવ આયુર્મગ્ન્યિતિ ક્ષેપેણ 'તાઓ'
તસ્માદ્ દેવભોક્તાન્ન્યુત્પા કુત્રગમિષ્યતિ કુત્રોત્પત્સ્યતે ? ભગવાન્ પ્રાહ-' જાવ '
ઇતિ યાતન્મહાવિદેહે ર્પે સેત્સ્યતિ, યાવત્ સર્વદુઃખાનામન્ત કરિષ્યતિ ।

સે આલોચિત પ્રતિકાન્ત પન વે કાલ અગસર કાલ કર કે પાચર્વે ત્ર્ય
લોક મેં દેવ કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હુઈ । (તત્થ ણ અત્યે ગઢયાણ દેવાણ
દસ સાગરોવમાહ ટિઈ પળ્લતા, તત્થ ણ દુવયસ્સ દવસ્મ દસ સાગરો
વમાહ ટિઈ પળ્લતા, સેણ ભતે ! દુવણ દેવે તાઓ જાવ મહાવિદેહે વાસે
સિજ્ઞહ, જાવ કાહિહ । એવ સ્વલુ જબૂ ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ સોલસમ
સ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લત્તે ત્તિવેમિ) ઉસ દેવલોક મેં કિતનેક
દેવોં કી દશ સાગર કી સિયિ પ્રજ્ઞસ હુઈ હૈ । સો વહા દ્રૌપદી દેવ કી
દશ સાગર કી સિયિ હુઈ । અવ ગૌતમ પૂત્તે હૈ હે ભદ્રત ! વહ દ્રૌપદી
દેવ આયુ એવ ભવસ્થિતિ કે ક્ષય હોને પર વહા સે ચવ કર કહાં જાવે
ગા-કહા ઉત્પન્ન હોગા ? ઉત્તર મેં ભગવાન કહતે હૈ-હે ગૌતમ ! વહ
દ્રૌપદી દેવ વહાં સે ચવ કર મહાવિદેહ ક્ષેત્ર મેં ઉત્પન્ન હોગા ઓર વહીં
સે સિદ્ધ વનેગા યાવત્ સમસ્ત દુઃખોં કા અત કરેગા ।

પછી એક માસની સલેખનાથી આલોચિત પ્રતિકાત બનીને તેઓ કાળ અવ
સરે કાળ કરીને પાચમા બ્રહ્મલોકમા દેવના પર્યાયથી જન્મ પામી

(તત્થ ણ અત્યેગઢયાણ દેવાગ દસ સાગરોવમાહ ટિઈ પળ્લતા, તત્થ ણ
દુવયસ્સ દેવસ્સ દસ સાગરોવમાહ ટિઈ પળ્લતા, સેણ ભતે ! દુવણ દેવે તાઓ
જાવ મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞહ, જાવ કાહિહ । એવ સ્વલુ જબૂ ! 'સમણેણ જાવ
સપત્તેણ સોલસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લત્તે ત્તિવેમિ)

તે દેવલોકમા કેટલાક દેવે ની દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞસ થઈ છે આ
પ્રમાણે દ્રૌપદી દેવીની ત્યા દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞસ થઈ

હવે ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદ્રન્ત ! તે દ્રૌપદી દેવીની આયુ
અને ભવસ્થિતિ પૂરી થયા બાદ ચવીને ત્યા જશે ? કયા ઉત્પન્ન થશે ?

તેના ઉત્તરમા ભગવાન કહેવા લાગ્યા કે હે ગૌતમ ! તે દ્રૌપદી દેવ
ત્યાથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાથી જ સિદ્ધ બનશે
યાવત્ તેઓ પોતાના સમસ્ત દુઃખોના અત કરશે

સુધર્માસ્વામી કથયતિ-‘ એવ સ્વલુ ’ ઇત્યાદિ । એવ સ્વલુ હે જન્મૂ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાત્ સિદ્ધિગતિનામત્રેય સ્થાન સપ્રાપ્તેન પોઢશસ્ય જ્ઞાતા અધ્યયનસ્યાર્ય=પૂર્વકથિતઃ અર્થઃ=દ્રૌપદીદૃષ્ટાન્તરૂપો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, પ્રરૂપિતઃ, ઇતિ વ્રતીમિ વ્યાખ્યાપૂર્વકાત્ ॥ ૩૪ ॥

ઇતિ શ્રી-વિશ્વપ્રિચ્છાત-જગદ્વલ્લભ-પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશભાષાકલિતલલિતક-
લાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક-ગાદિમાનમર્દક-શ્રીગાહનૃચ્છ
ત્રપતિકોલ્હાપુરરાજપ્રદત્ત-‘ જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય ’ પદભૂષિત-કોલ્હાપુરરાજ-
ગુરુ-ચાલત્રક્ષચારિ-જૈનાચાર્ય-જૈન યર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલ-
પ્રતિવિરચિતાયા જ્ઞાતાધર્મકથાદ્ગ્રન્થસ્યા, નગારધર્મામૃતવર્ષિ-
ણ્યારયાયા વ્યાખ્યાયા પોઢશમધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૬ ॥

સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ હે જન્મૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો સિદ્ધિ ગતિનામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈ હસ પોઢશ જ્ઞાનાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત દ્રૌપદી દૃષ્ટાન્ત રૂપ ભાવ અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ । એસા મૈં ઉન્હી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કે દ્વારા કહે શ્રુત ઉપદેશ કે અનુસાર કહતા હૈ ॥ સૂત્ર ૩૬ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત
“ જ્ઞાતાધર્મકથાદ્ગ્રન્થ ” કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા
સોલહવા અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૬ ॥

સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જન્મૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કે જો
સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂક્યા છે આ સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વે
વર્ણવેલો દ્રૌપદી દૃષ્ટાન્ત રૂપ ભાવ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તે શ્રમણ ભગવાન
મહાવીર વડે કહેવાયેલા શ્રુત ઉપદેશ મુજબ જ તમને હું કહી દ્યો છું ॥ સૂત્ર ૩૬ ॥
શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધર્મકથાદ્ગ્રન્થની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી
વ્યાખ્યાન મેળવેલું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૬ ॥

नाए जाव उवायमाणार चिट्ठति, तण्ण से णिज्जामए तओ
 मुहुत्ततरस्स लद्धमइए३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था,
 तएणं से णिज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-
 एव खल्ल अह देवाणुप्पिया । लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए
 जाए, अम्हे ण देवाणुप्पिया । कालियदीवे तेणं सबूढा एसण
 कालियदीवे आलोक्कइ, तएणं ते कुच्छिधारा य४ तस्स णिज्जा-
 मगस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठुट्ठा पयस्सिखणाणुकूलेण वा-
 एणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छत्ता पोय
 वहणं लवेति लवित्ता एगट्ठियार्हि कालियदीव उत्तरति, तत्थ
 ण ते वहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य बइरा
 गरे य वहवे तत्थ आसे पासति, कि ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा
 आइण्णवेढा, तएण ते आसा ते वाणियए पासति पासित्ता
 तेसि गंध अग्घायंति अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गमणा
 तओ अणेगाइ उव्वमति, तेण तत्थ पउरतणपाणिया निव्वभया
 निरुव्विग्गा सुह सुहेण विहरति ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खल्ल भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावी-
 रेण यावत् सिद्धिगतिनामत्रेय स्थान सम्प्राप्तेन पोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः—

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(भते ! हे भदन्त ! (जइण समणेण भगवता महावीरेण जाव
 संपत्तेण) यदि श्रमण भगवान् महावीरने किजो सिद्धिगति नामकस्थान
 को प्राप्तकर चुके हैं (सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते सत्तर-

जइण भते ! इत्यादि—

टीकार्थ—(भते !) हे भदन्त ! (जइण समणेण भगवता महावीरेण जाव
 संपत्तेण) ने श्रमण भगवान् महावीरे के—नेको सिद्धिगति नामका स्थानने
 भगवी पहुँचा छे

पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे जम्त्रः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिशीर्षं नाम नगरमासीत् । ‘ वण्णओ ’ वर्णकः=‘ ऋद्धे ’ इत्यादि-नगरवर्णनम् पूर्ववद् विज्ञेयम् । तत्र खलु कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् ‘ वण्णओ ’ वर्णकः—‘ महयाहिमवते ’ इत्यादि राजवर्णनं पूर्ववद् बोध्यम् । तत्र खलु हस्तिशीर्षं

मस्स ण भते ! णायज्जवणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सप-त्तेण के अट्ठे पणत्ते) सोलहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है—तो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए उन्हीं श्रम-ण भगवान् महावीर ने सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है (एव खलु जवू !) इस प्रकार जवू स्वामी के पूछने पर सुध-र्मा स्वामी अब उन्हें समझाते हैं—वे कहते हैं हे जवू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—

(तेण कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ, ण कणगकेऊणाम राया होत्था, वण्णओ, तत्थ, ण हत्थिसीसे णयरे बह्वे सज्जत्ता णावा वाणिगया परिवसति, अड्डा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था) उस काल और उस समय में हस्तिशीर्ष नाम का नगर था । “ ऋद्ध ” इत्यादि रूपसे पूर्व अध्ययनों में वर्णित पाठ की तरह इस नगर का वर्णन जानना चाहिये । उस नगर में कनक केतु नामका राजा रहता था । इसका भी वर्णन “ महया हिमवत ” इत्यादिरूप से पहिले के अध्ययनोंमें वर्णित राजाओंके वर्णन जैसा ही जानना चाहिये । उस

(सोलसमस्स णायज्जवणस्स अयमट्ठे पणत्ते सत्तरमस्स ण भते ! णायज्ज वणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते)

सोणभा ज्ञाताध्ययनने पूर्वोक्त इये अर्थ प्ररूपित कर्थो छे त्थारे सिद्ध गति स्थानने भेजवी चुकेला ते ज श्रमणु लगवान भडावीरे सत्तरभा ज्ञाता ध्ययनने शो अर्थ प्ररूपित कर्थो छे

(एव खलु जवू) आ सीते ज वूना प्रश्नने सालणीने तेभने सभन्तवत्ता सुधर्मा स्वामी कडेवा लाग्या के डे ज वू ! तभारा प्रश्नने जवाण आ प्रभाणु छे के —

(तेण कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ ण कण-गकेऊणाम राया होत्था, वण्णओ, तत्थ ण हत्थिसीसे णयरे बह्वे सज्जत्ता णावा वाणिगया परिवसति, अड्डा जाव बहुजणस्म अपरिभूया यावि होत्था)

ते जणे अने ते सभये हस्तिशीर्ष नामे नगर छुनु “ ऋद्ध ” वगेरे इपभा पडेलाता अध्ययनोभा वर्णन करवाभा आवेला पाठनी जेभ आ नगरनु वर्णन पणु जण्णी देवु जोधओ ते नगरभा कनककेतु नामे राजा रहतेला छते।

नाए जाव उवायमाणार चिट्ठति, तएण मे णिज्जामए तओ
 मुहुत्ततरस्स लद्धमइए३ अमूढदिसाभाए जाए यात्रि होत्था,
 तएण से णिज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-
 एव खलु अह देवाणुप्पिया । लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए
 जाए, अम्हे णं देवाणुप्पिया । कालियदीवे तेण सवूढा एसण
 कालियदीवे आलोक्कइ, तएण ते कुच्छिधारा य ४ तस्स णिज्जा-
 मगस्स अतिए एयमट्ट सोच्चा हट्टुट्टा पयस्खिणाणुकूलेण वा-
 एणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोय
 वहण लवेति लवित्ता एगट्ठियार्हि कालियदीव उत्तरति, तत्थ
 ण ते वहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरा
 गरे य वहवे तत्थ आसे पासति, कि ते १, हरिरेणुसोणिसुत्तगा
 आइणवेढा, तएणं ते आसा ते वाणियए पासति पासित्ता
 तेसि गंध अग्घायति अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गमणा
 तओ अणेगाइ उव्वममति, तेणं तत्थ पउरतणपाणिया निव्वमया
 निरुव्विग्गा सुह सुहेण विहरति ॥ सू० १ ॥

दीक्षा—जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावी-
 रेण यावत् सिद्धिगतिनामयेय रथान सम्प्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताभ्ययनस्यायमर्थः=

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(भते ! हे भदन्त ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव
 संपत्तेण) यदि श्रमण भगवान् महावीरने किजो सिद्धिगति नामकस्थान
 को प्राप्तकर चुके हैं (सोलसमस्स णायज्जयणस्स अयमट्टे पणत्ते सत्तर-

जइण भते ! इत्यादि—

टीकार्थ—(भते !) हे भदन्त ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव
 सपत्तेण) ने श्रमणु लगवान महावीरे के-केओ सिद्धिगति नामना स्थानने
 भेणवी थूक्या छे

माना 'सखोहिज्जमाणी २' सक्षोभ्यमाणा २ पुनः पुनः क्षोभ प्राप्यमाणा सती तत्रैव=एकस्थान एवेतस्ततः परिभ्राम्यति किन्तु ततः पर गन्तु न प्रभवतीति भावः । ततः खलु स निर्यामकः=नाविक 'णट्टमइए' नष्टमतिक -मतिज्ञानरहितः 'णट्टसुइए' नष्टश्रुतिक -विस्मृतनिर्यामकज्ञास्रः दिग्निर्णय कर्तुमशक्तत्वात् 'णट्टसण्णे' नष्टसब्धः=मार्गज्ञानरहितः 'मूढदिसाभाए' मूढदिग्भागः=पूर्वादि दिग्भिभागज्ञानरहितः जातश्चप्यासीत्, पुनश्च स न जानाति यत् कतर=क देश

२ तत्त्येव परिभ्रमइ, तएण से णिज्जामए णट्टमइए णट्ट सुइए णट्ट सण्णे मूढदिसभाए जाए यावि होत्था) एक दिनकी बात है कि जब ये सायात्रिक पोत वणिक् एक जगह मिलकर बैठे हुए थे तब अष्टम अभ्ययन में वर्णित अरहन्क सेठ की तरह इनका लवण समुद्रसे होकर परदेश में व्यापार निमित्त जाने का विचार हुआ । विचार स्थिर होते ही ये जब नौका द्वारा लवण समुद्र में सैकड़ों योजन तक निकल चुके तब इनके लिये जिन रक्षित और जिनपालितकी तरह आकस्मिक अनेक उत्पातशत (सैकड़ों) हुए । उस समय प्रलय कालकी तरह प्रचण्ड वायु उठी । उससे उनकी नौका चार २ डगमगा ने लगी इधर से उधर फिर ने लगी । चार २ चञ्चल होकर चार २ क्षुब्ध होकर एक ही स्थान पर नीची ऊँची होने लगी-उससे आगे वह नहीं बढ़ी । इससे निर्यामिक-नाविक-मतिज्ञान से रहित हो गया । दिशाओं का निर्णय करने का ज्ञान उसका जाता रहा । वह मार्ग ज्ञान रहित होकर दिग्मूढ बन गया । (ण जोणइ

२ सखोहिज्जमाणी १ तत्त्ये उपरिभमइ, तएण से णिज्जामए णट्टमइए णट्टसुइए णट्टसण्णे मूढ दिसाभाए जाए यावि होत्था)

एक द्विचरणी बात छे डे ब्यारे तेओ सवे सायात्रिक पोतवणिक् ओठ स्थाने ओकत्र थधने ओठा डता त्यारे आठमा अध्ययनमा वर्णित अरहन्क शेठनी जेम तेमनो पणु लवण समुद्रमा थधने परदेशमा वेपार भाटे जवानो विचार थयो विचार स्थिर थता ज तेओ ब्यारे नौका वडे लवण समुद्रमा सेकडे योजन सुधी पडोथी गया त्यारे अनपालित अने अनरक्षितनी जेमज तेमना भाटे पणु सेकडे ओचितता उपद्रवो उत्पन्न थया ते वण्णते प्रलय बाणना जेवे प्रथउ वायु कुकावा लाग्यो तेथी तेमनी नौका बारबार उग भगवा लागी, आभथी तेम इरवा लागी वारेघडीओ थयण थधने, बारबार क्षुब्ध थधने ओकज स्थान उपर नीचे उपर थवा लागी, तेनाथी आगण वधी नडि तेथी निर्यामिक-नाविक भतिमानथी रक्षित चर्ज गये दिसा ओने बाणुवाउ तेनु ज्ञान जतुं रह्यु मार्गज्ञानथी रक्षित थधने दिग्मूढ यनी

નગરે પ્રદ્યઃ ' સજ્જાણાયાગણિયમા ' સયાગ્રાનીકાગણિજકા' = સ = સજ્જા
 યાગ્રા = દેશાન્તરગમન સયાગ્રા, તત્પ્રધાના નીકાગણિજકાઃ = પોતગણિજ. - સયાગ્રા
 નીકા ગણિજકાઃ પરિચસતિ કીદગાઃ ? इत्याह-आद्या यायत् ' बहुजनस्म '
 बहुजनस्य सम्बन्धमामान्ये पण्डीजनमुदायेनेत्यर्थः ' आरिभूया ' अपरिभूताः =
 पराभवरहिता चाप्यासन् । तत खलु तेषा सयाग्रानीका गणिजकानाम् अन्यदा =
 अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये ' एगयाओ ' एकत्वं एकत्रमिलित्वा ' जहा अरहणओ '
 यथा अर्हन्नरु = अत्रेगाष्टमा ययनोक्तार्हन्नसन् यायत् लवणसमुद्रमनेकानि योजन
 शतानि ' ओगाढा ' अगगाढाः = उत्तीर्णाश्चप्यागन् । तत = तत्र खलु तेषा यायत्
 वहूनि ' उप्पाइयसयाइ ' औत्पातिकशतानि = आकस्मिकोत्पातशतानि यथा माक
 न्दिकदारकयोः - जिनरक्षितजिनपालितयोः सजातानि तथैवास्यापि यायत् ' कालि
 यवाए ' कालिकरातः मलयकालिकरुद्रचण्डरातश्च तत्र समुत्थितः । तत = तदन
 न्तर खलु सा नौका तेन कालिकरातेन ' आघोलिज्जमाणी २ ' आघूर्ण्यमाना
 २ पुनः पुनर्भ्राम्यन्ती ' सचालिज्जमाणी २ ' सचाल्यमाना २ पुनः पुनश्चाल्य

हस्तिशीर्षं नगरमें अनेक पोत चणिकू (નાચસે વ્યાપાર કરને વાલે) રહતે
 થે । યે એક સાથ મિલકર હી પરદેશ મે જાકર વ્યાપાર ક્રિયા કરતે થે ।
 इनकी उस नगर में अच्छी प्रतिष्ठा थी-कारण ये सब के सब लक्ष्मीदेवी
 के विशेष रूप से कृपापात्र थे । (તળણ તેસિં સજ્જા ણાવા વાણિયગાણં
 અન્નયા એગયાઓ જહા અરહણાઓ જાત્ર લવણસમુદ્ર અણેગાઢ જોયણ
 સયાઈ ઓગાઢા યાવિ હોત્યા, તળણ તેસિં જાવ વહૂણિ ઉપ્પાઈયસયાઈ
 જહા માગદિયદારગાણ જાવ કાલિયવાણ ય તત્થ સમુત્થિત, તળણ સા
 તેણ કલિયવાણ આઘોલિજ્જમાણી ૨ સચાલિજ્જમાણી ૨ સચોલિજ્જમાણી

આ રાત્રાતુ વર્ણુન પશુ “ મહ્યા હિમવત ” વગેરે રૂપમા પહેલાના અધ્ય
 યનોમા વર્ણિત રાત્રાઓના વર્ણુન જેવુ જ બાણી લેવુ બેઠ્યે તે હસ્તિશીર્ષ
 નગરમા ઘણુ પોતવણિકો (વહાણુ વડે વેપાર કરનારા) રહેતા હતા તેઓ
 સર્વે એકી સાથે મળીને પરદેશમા જતા અને ત્યાં વેપાર કરતા હતા તે
 નગરમા તેમની સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી કેમકે ખાસ કરીને તેઓ સર્વે
 લક્ષ્મીના કૃપાપાત્ર હતા

(તળણ તેસિં સજ્જા ણાવા વાણિયગાણ અન્નયા એગયાઓ જહા અરહણાઓ
 જાત્ર લવણસમુદ્ર અણેગાઢ જોયણસયાઈ ઓગાઢા યાવિ હોત્યા, તળણ તેસિં જાવ
 વહૂણિ ઉપ્પાઈયસયાઈ જહા માગદિયદારગાણ જાવ કાલિયવાણ ય તત્થ સમુ
 ત્થિત તળણ સા ણાવા તેણ કલિયવાણ આઘોલિજ્જમાણી ૨

प्रविशन्ति, अनुप्रविश्य यत्रैव मनस्केतु राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत्
तत्प्राभृतम् ' उपनेति ' उपनयन्ति भूपसमीपे स्थापयन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से कणगकेऊ राया तेसि सजत्ताणावावाणि-
यगाण त महत्थ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता त सजत्ताणावा-
वाणियगा एवं वयासी तुच्छेणं देवाणुप्पिया । गामागार जाव
अहिंडह लवणसमुद च अभिक्खणर पोयवहणेणं ओगाहह
तं अत्थि आइं केइ भे कहिन्नि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ? तएणं ते
सजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊ एव वयासी—एव खलु अम्हे
देवाणुप्पिया । इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो त चेव जाव
कालियदीव तेणं सवूढा, तत्थ ण वहवे हिरण्णागरा य जाव

कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उव्वेति) वहाँ
आकर के वे लोग उस हस्तिशीर्ष नगर के बाहर के प्रधान उद्यान में
ठहर गये वहाँ ठहर उन्हो ने वहाँ पर शकटी—गाडी शाकटो—गाडों की
ढील—ठहरा दिया । ढीलकर के राद में महार्थ—महाप्रयोजन साधक भूत
—यावत् प्राभृत भेट को उन्हों ने अपने २ हाथो में लिया—और लेकर के
वे हस्तिशीर्ष नगर में प्रविष्ट हुए नगर में प्रविष्ट होकर वे जहाँ कनक
केतु राजा थे वहाँ पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्हो ने उस महाप्रयोजन साधक
भूत प्राभृत को राजा के पास रख दिया ॥ सू० २ ॥

हत्थिसीस नगर अणुपविसति, अणुपविसित्ता, जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवा
गच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उव्वेति)

त्या आवीने तेज्जो गधा ते हस्तिशीर्ष नगरानी गडारना मुख्य उद्या
नमा रेकाध गया, त्या रेकाधने तेमज्जे त्या ७ शकटी—गाडी अने शाकटो—
गाडाज्जोने छोडी भूडया त्थारणाइ तेमज्जे महार्थ—महाप्रयोजन साधक भूत
यावत् खेटने पोतपोताना छायोमा वीधी अने वज्जिने तेज्जो हस्तिशीर्ष नग
रमा प्रविष्ट थया नगरमा प्रविष्ट थयने तेज्जो न्या कनकेतु राजा छतो त्या
पडोअया त्या पडोअीने तेमज्जे ते महाप्रयोजन साधक ३५ खेटने राजनी
साभे भूडी वीधी ॥ सूत्र २ ॥

वा दिश या विदिश या प्रति मे पोतयदनम् नौकायान 'अग्रिष्' अपहतम् महा
 यातेन नीतम्, इति । इति कृत्या=इतिपनमि निधाय अपहतमनः सकम्पो यावत्
 भ्यायति=भार्त्तभ्यान करोति । तत खलु ते उहयः कुक्षिधाराश्च=पार्श्वतो नौका
 चालकाः कर्णधाराश्च=नाविका । 'गन्धिस्तुगाय' गार्भेयकाश्च नीमभ्ये यथाव
 सर कर्मकराः, सयात्रानौका राणिजकाः=भाण्डवतयश्च यज्ञीय म निर्यामयः=नौका
 धिपतिस्तत्रोपोपागच्छन्ति, उवागत्य एवमादिपुः-किं खलु यूय हे देवानुप्रियाः ।
 अपहतमन'सरूपाः निरुत्माहमनस्था यावत् 'क्षियायह' भ्यायथ आर्त्तध्यान
 कुरुथ, आन्तरार्थे बहुवचनम् । तत खलु म निर्यामस्तान् उहन् कुक्षिधाराश्च ४

कयर देम वा दिम या विदिस वा पोयवहणे अवहिण्त्ति कद्वु) अतः
 जप उसे इस बात का भी ज्ञान नहीं रहा कि यह महावात मेरी नौका
 को किस दिशा अथवा विदिशा की ओर ले गया है-तब इस प्रकार
 मन में विचार कर के वह (ओहयमणसरूपे जाव क्षियायह) अपहत
 मन, सकल्पचाला बनकर यावत् आर्त्तध्यान करने लगा । (तएण ते
 वहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गन्धिमल्लगा य सजत्ता णावा वाणि
 यगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेग उवागच्छइ) इतने में अनेक कुक्षि
 धर-पार्श्व में बैठकर नौका चलाने वाले कर्णधार-नाविक, गार्भेयक-नौका
 के भीतर यथावसर काम करने वाले और सांयात्रिक पोत वणिक जहां
 वह निर्यात्रिक या-वहा आये । (उवागच्छित्ता एव वयासी-किन्न तुम
 देवाणुप्पिया ओहयमणसरूपो जाव क्षियायह-तएण से णिज्जामए

गये। (ण जाणइ कयर देस वा दिस वा विदिस वा पोयवहणे अवहिण्त्ति कद्वु)
 अथी न्यादे तेने आ वातनी पल्लु भगर रही नहि के आ महुवात अभासी
 नौकाने कछ दिशा अथवा तो विदिशा तरइ लई गये छे त्यादे मनभा आ
 नतने विचार करीने ते (ओहयमणसरूपे जाव क्षियायह) अपहतमन
 सकल्पवाणे थछने यावत् आर्त्तध्यान करवा लाग्ये।

(तएण ते वहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गन्धिमल्लगा य सजत्ता
 णावा वाणियगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेग उवागच्छइ)

अटलाभा धल्ला कुक्षिधर-पार्श्वभा जेसीने नौका खलावनारा, कर्णधार
 नाविक, गार्भेयक-नौकाभा यथा समर काम करनारा अने सायात्रिको-पोत
 वणिको न्या ते निर्यामक हते त्या गया।

(उवागच्छित्ता एव वयासी-किन्न तुम देवाणुप्पिया ओहयमणसरूपो
 जाव क्षियायह-तएण से णिज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य ४ एव वयासी-

य पावरणाण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिला-
वट्टाण य जाव हंसगव्भाण य अन्नेसि च फासिदिय पाउग्गाणं
दव्वाणं सगडीसागड भरेति भरित्ता सगडीसागडं जोएति
जोइत्ता जेणैव गंभीरए पोयट्टाणै तेणेव उवागच्छति उवाग-
च्छित्ता सगडीसागडं मोएति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेति सज्जित्ता
तेसि उक्किट्टाणं सदफरिसरसरूवगंधाणं कटुस्स य तणस्स य
पाणियस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नैसि
च बहूण पोयवहणपाउग्गाण पोयवहणं भरेति भरित्ता दक्खि
णाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता पोयवहणं लवेति लंवित्ता ताइ उक्किट्टाइ सदफरिसरस
रूवगधाडं एगट्टियाहि कालियदीवे उत्तारेति । जहि २ च णं
ते आसा आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा
तहि २ च णं ते कोडुंवियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्त
वीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइदियपाउग्गाणि य दव्वाणि
समुदीरेमाणा चिट्ठंति तेसि परिपरंतेण पासए ठवेति ठवित्ता
णिच्चला णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति
वा जाव तुयट्ठति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुवियपुरिसा बहूणि
किण्हाणि य ५ कट्टकम्माणि य जाव सघाइमाणि य अन्नाणि
य बहूणि चक्खिदियपाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेति तेसि परि-
पेरतेण पासए ठवेति ठवित्ता णिच्चला णिप्फदा तुसिणीया
चिट्ठति जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ २ ण तेसि बहूणं

चहवे तत्थ आसा किं ते ?, हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइ
 उव्वमंति, तएणं सामी अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छे-
 रए दिट्ठपुव्वे, तएण से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्तगाणं
 अंतिए एयमट्ठं सोच्चा ते सजत्तए एवं वयासी-गच्छहणं तुव्वमे
 देवाणुप्पिया मम कोडुंवियपुरिसेहि सद्धिं कालियदीवाओ ते
 आसे आणेह, तएण ते संजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊ रायं
 एवं वयासी-एवं सामि त्तिरुट्ठु आणाए पडिसुणेंति,
 तएणं कणगकेऊ राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेड सद्दावित्ता
 एवं वयासी-गच्छह णं तुव्वमे देवाणुप्पिया ! संजत्तिएहि सद्धिं
 कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेंति, तएणं
 ते कोडुविय० सगडीसागडं सज्जेति सज्जित्ता तत्थ ण बहूणं
 वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य
 छव्वभामरीण य वित्तवीणाण य अन्नेसि च बहूण सोतिदिय-
 पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति भरित्ता बहूणं किण्हाण
 य जाव सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य ४ गंधिमाण य ४ जाव
 सघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिदियपाउग्गाणं दव्वाणं
 सगडीसागड भरेति बहूणं कोट्टपुडाण य केयईपुडाण य जाव
 अन्नेसि च बहूणं घाणिदियपाउग्गाणं दव्वाण सगडीसागड
 भरेति बहुस्स खडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए
 य पुप्फुत्तर पउमुत्तराण य अन्नेसि च जिब्भिदियपाउग्गाणं
 दव्वाणं सगडीसागड भरेति । बहूण कोयवियाण य कवलाण

ટીકા—‘તણ સે’ इत्यादि । ततः खलु स कनककेतु राजा तेषां सयात्र
नौकावाणिजकानां तन्महार्थं यावत् प्राभूत् ‘पडिच्छद्’ प्रतीच्छति=स्वीकरोति
प्रतीप्य तान् सयात्रनौकावाणिजकान् एवमासीत्-यूय खलु हं देवानुप्रियाः !
‘गामागर जाव अहिंडह’ ग्रामागर यावत् - ग्रामागरनगरादिषु आहिण्डह=
गच्छत, लवणसमुद्रं च अभिक्षणं २ पोतवहनेन अवगाह्य ‘त’ तत्=तर्हि
अस्ति ‘आइ’ इति याक्यालङ्कारे किमपि ‘भे’ युष्माभिः ‘कहिंचि’ कुत्रचिद्
‘अच्छेरए’ आश्चर्यकर्म=आश्चर्यजनकस्तु ‘दिट्ठपुव्वे’ दृष्टपूर्वम् ? यदि दृष्टमस्ति
तर्हि कथयतेति भावः । ततः खलु ते सयात्रनौकावाणिजका कनककेतुमेवमव

—तण से कणगकेऊ राया इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(તણ) इसके बाद (से कणगकेऊ राया) उस कनककेतु राजा
ने (तेसिं सजस्ता णाया वाणियगाण त महत्थ जाव पडिच्छद्, पडि-
च्छिता-ते सजस्ता णाया वाणियगा एव वयासी-तुव्वे ण देवानुप्पिया !
गामागर जाव अहिंडह लवणसमुद्रं च अभिक्षणं २ पोतवहणेण
ओगाहह त अत्थि आइ केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?) उन
सायात्रिक पोतवणिक जनों की उस महार्थसाधक भेंट को स्वीकार कर
लिया और स्वीकार करके फिर उन सायात्रिक पोतवणिक जनों से इस
प्रकार कहा है देवानुप्रियों तुमलोग अनेक ग्राम आगर नगर आदि
स्थानों में जाते रहते हो और बार २ पोतवहन द्वारा लवणसमुद्र में
अवगाहन करते रहते हो तो करो कही पर तुम ने यदि कोई आश्चर्य
कारी वस्तु देखी हो तो कहो—(तण से सजस्ता णाया वाणियगा कण

તણ સે કણગકેઊ રાયા इत्यादि—

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યારપછી (સે કણગકેઊ રાયા) તે કનકકેતુ રાજાએ

(તેસિં સજસ્તા ણાયા વાણિયગાણ ત મહત્થ જાવ પડિચ્છદ્, પડિચ્છિતા-
તે સજસ્તા ણાયા વાણિયગા એવ વયાસી-તુવ્વેણ દેવાણુપ્પિયા ! ગામાગર જાવ
અહિંડહ લવણમુદ્રં ચ અભિક્ષણ २ પોતવહણેણ ઓગાહહ ત અત્થિ આઈ કેઈ
ભે કહિંચિ અચ્છેરए દિટ્ઠપુવ્વે ?)

તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોની તે મહાર્થ સાધક ભેટને સ્વીકારી લીધી
અને સ્વીકારીને તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુ
પ્રિયો ! તમે લોકો ઘણા ગામ, આગર, નગર વગેરે સ્થાનોમા આવળ કરતા
રહો છો અને વહાણ વડે લવણ સમુદ્રની વારવાર યાત્રા કરતા રહો છો તો
અમને કહો કે તમે કોઈ નવાઈ પ્રમાટે તેવી અદ્ભુત વસ્તુ જોઈ છે ?

कोट्टपुडाण य जाव अन्नेसि च बहूणं घ्राणिदियपाउग्माणं
दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेंति करित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव
चिट्ठति जत्थ २ णं ते आसा आसयति ४ तत्थ २ णं गुलस्स
जाव अन्नेसि च बहूणं जिर्विभदियपाउग्माय दव्वाणं पुंजे य
निकरे य करेंति करित्ता विचरणं खणंति खणित्ता गुलपाणगस्स
खंडपाणगस्स जाव अन्नेसि च बहूण पाणगाण विचरे भरेति
भरित्ता तेसिं परिपेरंतेण पासए ठवेति जाव चिट्ठंति, जहिं २
च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयविया य
जाव हसगब्भा य अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्माइं
अत्थुयपच्चत्थुयाइ ठवेति ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठति,
तएणं ते आसा जेणेव एते उक्किट्ठा सदफरिसरसरूवगंधा तेणेव
उवागच्छति उवागच्छित्ता तत्थण अत्थेगइया आसा अपुव्वा
णं इमे सदफरिसरसरूवगंधा इतिकट्ठु तेसु उक्किट्ठेसु सदफरिस-
सरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाण सद जाव गंधाणं
दूरदूरेणं अवक्कमति, तेणं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया
णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहसुहेणविहरति, एवामेव समणाउसो!
जो अम्ह णिग्गथो वा णिग्गथी वा जाव सदफरिसरसरूवगंधेसु
णो सज्जइ णो रज्जइ णो गिज्झइ, णो मुज्झइ णो अज्झोववज्जेइ
से णं इहलोए चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीइ-
वइस्सइ ॥ सू० ३ ॥

કનકકેતુ રાજા તેણે ' સજત્તિગાણ ' સાયાત્રિકાણામન્તિકે એતમર્થ શ્રુત્વા તાન્ સાયાત્રિકાન્ એમવદત્-ગચ્છત સ્વલુ યુય હે દેવાનુપ્રિયાઃ ! મમ કૌટુમ્બિક-પુરુષૈઃ સાર્દ્ધ કાલિકદ્વીપાત્તાનશ્વાનાનયત । તતઃ સ્વલુ તે સયાત્રાનૌઝાત્રાણિકા કનકકેતુ રાજાનમેયમયાદિપુઃ હે સ્વામિન્ ! એમસ્તુ ' ત્તિ કદ્દુ ' ઇતિ કૃત્વા= ઇત્યુક્ત્વા ' આણાણ ' આજ્ઞાયાઃ=આજ્ઞામિત્યર્થ,—' પટિસુળેતિ ' પ્રતિશ્રુયન્તિ=

કર વહાસે કહી યોજન દૂરતક જગલમેં ભાગ ગયે । અનઃ હે દેવાનુપ્રિય " કાલિકદ્વીપ મેં હમલોગોં ને ડન ઘોડોં રૂપી આશ્ચર્ય કો દેખા હૈ । (તણે સે કળગકેઝ રાયા તેસિં સજત્તિગાણ અંતિણે એમદ્દ સોચ્છા તે સજત્તિ એવં વયાસી-ગચ્છહ ણં તુભે દેવાણુપ્રિયા ! મમ કૌટુમ્બિક પુરિ-સેહિં સર્દિ કાલિયદીવાઓ તે આસે આળેહ તણે તે સજત્તા ણાવા વાણિગયા કળગકેઝ રાય એવ વયાસી એવ સામિત્તિ કદ્દુ આણાણ પટિસુળેતિ, તણે કળગકેઝ રાયા કૌટુમ્બિકપુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-ગચ્છહ ણ તુભે દેવાણુપ્રિયા ! સજત્તિએહિં સર્દિ કાલિય દીવાઓ મમ આસે આળેહ, તે વિ પટિસુળેતિ) હમકે વાદ કનક કેતુ રાજા ને ડન સાયાત્રિક પોતવણિકજનો કે મુગ્ધ સે હસ અર્થ કો સુન-કર ડન સાયાત્રિકોં સે હસ પ્રકાર કહા હે દેવાનુપ્રિયો ! તુમલોગ જાઓ ઔર મેરે કૌટુમ્બિક પુરુષો કે સાથ કાલિકદ્વીપ સે ડન અશ્વો કોલાઓ । હસ પ્રકાર સુનકર પોતવણિક જનો ને કનક કેતુ રાજા સે એસા કહા

વનમા નાસી ગયા હે દેવાનુપ્રિય ! અભેએ કાલિક દ્વીપમા તે અશ્વ રૂપી અદ્ભુત વસ્તુને જોઈ છે

(તણે સે કળગકેઝ રાયા તેસિં સજત્તિગાણ અંતિણે એમદ્દ સોચ્છા તે સજત્તિ એવ વયાસી-ગચ્છહ ણ તુભે દેવાણુપ્રિયા ! મમ કૌટુમ્બિકપુરિસેહિં સર્દિ કાલિયદીવાઓ તે આસે આળેહ, તણે તે સજત્તા ણાવા વાણિગયા કળગ કેઝ રાય એવ વયાસી એવ સામી ત્તિ કદ્દુ આણાણ પટિસુળેતિ, તણે કળગકેઝ રાયા કૌટુમ્બિકપુરિસે સદાવેહ, સદાવિત્તા એવ વયાસી-ગચ્છહ ણ તુભે દેવાણુ-પ્રિયા ! સજત્તિએહિં સર્દિ કાલિયદીવાઓ મમ આસે આળેહ, તે વિ પટિસુળેતિ)

ત્યારબાદ કનકકેતુ રાજાએ તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોના મુખથી આ વાતને સાંભળીને તે સાયાત્રિકોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દોઢો મારા કૌટુમ્બિક પુરુષોની સાથે કાલિક દ્વીપમા જાઓ અને ત્યાંથી તે અશ્વોને લાવો આ પ્રમાણે કનકકેતુની આજ્ઞા સાંભળીને તે પોતવણિકજનોએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! તમારી આજ્ઞા અમારા માટે પ્રમાણ સ્વરૂપ છે આમ કહીને તેમણે કનકકેતુ રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી ત્યાર

दन्-एव खलु वयं हे देवानुप्रियाः । इहैव हस्तिशीर्षं नगरे परित्सामः, 'तदेव'
तदेव पूर्वोक्तवर्णनं सर्वमत्र गान्धर्म् 'जात्र' यात्रां कालिकद्वीपान्ते=कालिक
द्वीपगम्ये सख 'सगृहा' सगृहाः-माताः, तत्र खलु महो हिरण्यागरा यत्र
वहवस्तत्राश्वाः सन्ति, किंते' किम्भूतास्ते ? इत्याह-'हरिरेणु जात्र' हरिरेणु शोभि
सुत्रताः यात्रा-तेऽस्मद्गन्धमात्राय भीताः सन्तः अनेकानि योजनानि दूरम् 'उन्म
मति' उद्भ्रमन्ति पलायन्ते स्म, तत्र खलु हे स्वामिन् ! अस्माभि 'कालिक-
द्वीपे तेऽश्वाः सन्ति " तदेव 'अच्छेरण' आश्चर्यं कृ दृष्टपूर्वमिति । ततः खलु स

गकेऊ एव वयामी एव खलु अम्हे देवानुप्रिया । इहेव हस्तिशीसे नगरे
वसामो त चेव जात्र कालियदीव तेण सगृहा तत्थ ण वहवे हिरण्यागरा
य जात्र वहवे तत्थ आसा किंते ? हरिणेणु जात्र अणेगाइ जोयणाइ उन्म
मति-तएण सामी अम्हे हि कालियदीवे ते आसा अच्छेरण दिट्ठपुण्वे)
इस प्रकार राजा की बात सुनकर उन सांयात्रिक पोतवणिगजनों ने
उन कनककेतु राजा से कहा हे देवानुप्रिय ! हमलोग इसी हस्तिशीर्ष
नगर में रहते हैं । हमलोग यहा से लवणसमुद्र में होकर व्यापार के
निमित्त बाहर परदेश गये हुए थे-। मार्ग में हमलोगों को अनेक प्रकार
के सैकड़ो उपद्रव हुए-उनसे जिस किसी तरह सुरक्षित हो हमलोग
कालिकद्वीप के समीप पहुँच गये । वहाँ हमने अनेक हिरण्य आदि की
खानों को एव अनेक अश्वों को कि जिनका कटिभाग हरिद्वर्णवाली धूलि
से रचित कटिसूत्रसे चिह्नित था देखा, वे हमलोगों की गध को सूख

(तएण ते सज्जा णागं वाणियगा कणगकेऊ एव वयामी-एव खलु
अम्हे देवानुप्रिया ! इहेव हस्तिशीसे नगरे वसामो त चेव जात्र, कालिय दीव
तेण सगृहा, तत्थ ण वहवे हिरण्यागरा य जात्र वहवे तत्थ आसा किं ते ? हरि-
रेणु जात्र अणेगाइ जोयणाइ उन्ममति-तएण सामी अम्हेहि कालियदीवे ते
आसा अच्छेरण दिट्ठपुण्वे)

आ प्रभाण्णे राजनी वात सावणीने ते सायात्रिक पोतवणिगजनों ने
कनककेतु राजने कलु के हे देवानुप्रिय ! अमे जधा आ हस्तिशीर्षं नगर
भा ज रहीजे छीजे अमे जधा व्यापार जेउवा भाटे अड्डीधी लवण समुद्रमा
थरने जहार परदेशमा गया छता रस्तामा घण्टी जतना सेकडा उपद्रवो
थया उभटे गमे तेम करीने सुरक्षित रुपमा अमे जधा कालिकद्वीपनी पास
गया त्या अमेजो घण्टी हिरण्य वजरे ॥ भाण्णेने अने घण्टा अश्वोने-के
जेमना कटिभागो लीला रजनी भाटीथी जनावेला कटिसूत्रथी चिह्नित छता-
जेया अमारी गधने सूधीने ते अश्वो त्याथी कटिवाक ये ॥ इर सुधी

‘वित्तवीणाणय’ वृत्तवीणाना=गोलाकार वीणाना च-अन्येषा च बहूनां नानाविधानां
 ‘सोडदियपाउग्गाण’ श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणा=कर्णेन्द्रियसुखजनकाना द्रव्याणां=
 तन्त्र्यादिरूपाणा शकटीशाकट भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थ, भूत्वा बहूना ‘किण्हा-
 णय जाव मुक्काणय’ कृष्णाना यावत्-नीलाना पीताना रक्ताना शुक्लानां च
 कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्ताना ‘वट्ठकम्माण य’ काष्ठकर्मणा=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादी-
 नाम्, ‘पोत्थकम्माणय’ पुस्तपु कर्मणा-पुस्तपु=पत्रताडपत्रकर्मणादिषु कर्माणि=
 लेखनकर्मणि, तेषाम्, ‘चित्तकम्माण य’ चित्रकर्मणा=पट्टादिषु चित्ररूपा-
 णाम्, ‘लेप्पकम्माणय’ लेप्यकर्मणा=मृत्तिकासेटिकादिना बल्ल्याद्याकाररचना
 विशेषरूपानाम्, तथा-‘गयिमाण य’ ग्रन्थिमाना=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमु-
 दायनिष्पादितानाम्-यावत्-‘वेट्टिमाण य’ वेष्टिमाना=लतादि वेष्टनतो निष्पा-
 दितानाम्, ‘पूरिमाण य’ पूरिमाणा=कनकादिषु पुत्तलिकावत् जिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भभाओं भेरियो-को, पड् भ्रामरियों को
 -गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखज-
 नक तंत्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा-भर करके फिर नीले, पीले, रक्त,
 शुक्ल और कृष्ण रंग से रंगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्त-
 कर्मों को-बल्ल, ताडपत्र एवं कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के
 छेवों को, निग्रन्थों को उपदेश पूर्ण-दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई
 कविता आदि को को-चित्रकर्मों को-पट्टिया आदि पर उकेरे गये विविध
 चित्रों को-लेप्यकर्मों को-मृत्तिका सेटिका आदि से बल्ली आदि रूप में
 बनाये गये चित्रों को, ग्रन्थियों को विशेष चतुराई के साथ गांठों से
 बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके २ रची गई
 चीजों को,-टोपियों को, हाथों की पैरों की अशुलियों में पहिरने योग्य

जेवी वीणाओ, ललाओ-लेरीओ (नगाराओ) पड्-भ्रामरीओ, गोण आकार
 वाणी वीणाओ तेमज् जीव पण धण्डा कण्ठेन्द्रियने सुण आपे तेवा तंत्री
 वगेरे साधनेने लया लरीने लीला, पीणा, राता, सङ्केद अने काणा रगोथी
 रगाओला लाकडाना भनेला रभकडाने, पुस्तकर्मोने-वल्ल ताडपत्र अने कागण
 वगेरे उपर लणाओला नतनतना लेजेने, निगधोने, दूडा, चोपाइ वगेरेमा
 लणाओली उपदेशक कविताओ वगेरेने, चित्र कर्मोने-इलड वगेरे उपर चित्रित
 करेला धण्डा चित्रोने लेप्य कर्मोने, माटी सेटिका वगेरेथी लता वगेरे रुपमा
 भनाववामा आवेला चित्रोने, अचित्रोने-विशेष आतुर्यथी गांठोथी भनाववामा
 आवेला रभकडाने, लताओ वगेरे वडे वेष्टित करीने भनाववामा आवेली वस्तु

સ્વીકૃન્તિ । તતઃ સ્વલુ કનકકેતુ રાજા કૌડુમ્બિકપુરુષાન ચન્દયન્તિ, ચન્દયિસ્યા
 પચમસાદીત્-ગન્ત્રન સ્વઠુ ગુપ હે દેવાનુમિયાઃ । માંયાત્રિકે' માદ્રે' કાલિન્દ્રીપાત્
 મત્તમ્ અધાનાનયત । તેઽપિ=કૌડુમ્બિકપુરુષા' 'પટ્ટિગુણે'નિ' પ્રતિ-ગુપ્તિ 'તથાસ્તુ'
 સ્તુત્વત્ત્વા રાજાશ્ચ સ્વીકૃન્તિ । તતઃ સ્વલુ તે કૌડુમ્બિકપુરુષાઃ શકટીશકટં
 'સઙ્ગે'તિ' સઙ્ગયન્તિ=કાલિન્દ્રીપે ગમનાર્થ મઙ્ગીકૃન્તિ, સઙ્ગયિત્વા તત્ર સ્વલુ
 શકટીશકટે ગૃહ્ણા ચ પલ્લવીનાં ચ, આમરીણાં ચ 'કચ્છમીણ ય' કચ્છમીના ચ-
 'કચ્છમી' ઇતિ કચ્છગાકારમીણામિશેષઃ, મમાના=મેમીના ચ, પદ્મભ્રામરીણાં ચ,

હે-સ્વામિન્ । હમેં આપની આજ્ઞા પ્રમાણ હૈ-એસા કદકરુ ઝન્ટોં ને કનક
 કેતુ રાજા કી આજ્ઞા કો સ્વીકાર કર લિયા । ઇસકે પાદ કનક કેતુ
 રાજા ને અપને કૌડુમ્બિક પુરુષો કો બુલાયા-ઔર બુલાકર ઝનસે એસા
 કરા-હે દેવાનુમિયોં ! તુમ માયાત્રિક પોતરગિનિઝ જનોં કે સાથ જાઓ
 -ઔર કાલિન્દ્રીપ સે મેરે લિયે ઘોડોં કો લે આઓ । રાજા કી ઇસ
 આજ્ઞા કો ઝન લોગોં ને મી સ્વીકાર કર લિયા । (તત્ત્વે તે કૌડુમ્બિકપુ
 રિસા સગડીસાગડ સઙ્ગે'તિ, સઙ્ગિત્તા તત્ત્વે વઢૂણ વીળાણ ય વલ્લ
 કીળ ય ભામરીળ ય કચ્છમીળ ય મમાણ ય છઠ્ઠામરીળ ય વિલ્લવીળાણ
 ય અન્નેસિ ચ વઢૂણ સોદિય પાડગાળ દવ્વાળ સગડી સાગડ મરેતિ,
 મરિત્તા વઢૂણ કિળ્લાળ ય જાવ સવાદમાળ ય અન્નેસિ ચ વઢૂણ
 ચન્દિયપાડગાળ દવ્વાળ સગડીસાગડ મરેતિ) ઇસકે પાદ ઝન
 કૌડુમ્બિક પુરુષોં ને ગાડી ઔર ગાડોં કો સઙ્ગિત કિયા-સઙ્ગિત કરકે
 ઝનમેં ઝન્ટોં ને અનેક વીળાઓ કો, વલ્લકિયોં કો, ભ્રામરિયોં કો, કચ્છપ

બાદ કનકકેતુ નામકો પોતાના કૌડુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને
 તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુમિયા ! તમે સાયાત્રિક પોતરગિનિઝનોની
 માથે બાંધો અને કાલિન્દ્રીપમાથે મારા માટે ઘોડાઓને લાવો રાત્રી
 આ આજ્ઞાને તે લોકોએ પણ સ્વીકારી લીધી

(તત્ત્વે તે કૌડુમ્બિકપુરિસા સગડીસાગડ સઙ્ગે'તિ, સઙ્ગિત્તા તત્ત્વે
 વઢૂણ વીળાણ ય વલ્લમીળ ય ભામરીળ ય કચ્છમીળ ય મમાણ ય છઠ્ઠામરીળ ય
 વિલ્લવીળાણ ય અન્નેસિ ચ વઢૂણ સોદિયપાડગાળ દવ્વાળ સગડીસાગડ
 મરેતિ, મરિત્તા વઢૂણ કિળ્લાળ ય જાવ સવાદમાળ ય અન્નેસિ ચ વઢૂણ ચન્દિય
 પાડગાળ દવ્વાળ સગડીસાગડ મરેતિ)

ત્યારપછી તે કૌડુમ્બિક પુરુષોએ ગાડી અને ગાડાઓને ભેટયા ભેટ
 રીને તેમા તેમણે ઘણી વીણાઓ, વલ્લકીઓ, ભ્રામરીઓ, કાચબાના આકાર

‘चित्तवीणाणय’ वृत्तवीणाना=गोलाकार वीणाना च-अन्येषा च बहूनां नानाविधानां
 ‘सोऽदियपाउग्गाण’ श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणा=कर्णेन्द्रियसुखजनकाना द्रव्याणां=
 तन्व्यादिरूपाणा शकटीशाकट भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थ, भृत्वा बहूना ‘क्विहा-
 णय जाव मुक्काणय’ कृष्णाना यावत्-नीलाना पीताना रक्ताना शुक्लानां च
 कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्ताना ‘वट्टकम्माण य’ काष्ठकर्मणा=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादी-
 नाम्, ‘पोत्थकम्माणय’ पुस्तपु कर्मणा-पुस्तपु=खट्वाडपत्रकर्मणादिषु कर्माणि=
 लेखनकर्मणि, तेषाम्, ‘चित्तकम्माण य’ चित्रकर्मणा=पट्टकादिषु चित्ररूपा-
 णाम्, ‘लेप्पकम्माणय’ लेप्पकर्मणा=मृत्तिकासेटिकादिना बल्ल्याद्याकाररचना
 विशेषरूपाणाम्, तथा-‘गथिमाण य’ ग्रन्थिमाना=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसम्पु-
 दायनिष्पादितानाम्-यावत्-‘वेट्ठिमाण य’ वेष्टिमाना=लतादि वेष्टनतो निष्पा-
 दितानाम्, ‘पूरिमाण य’ पूरिमाण=स्नकादिषु पुत्तलिकावत् त्रिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भभाओं भेरियो-को, पड़ भ्रामरियों को
 -गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखज-
 नक तंत्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा-भर करके फिर नीले, पीले, रक्त,
 शुक्ल और कृष्ण रंग से रंगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्त-
 कर्मों को-बल्ल, ताडपत्र एवं कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के
 लेखों को, निबन्धों को उपदेश पूर्ण-दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई
 कविता आदि को को-चित्रकर्मों को-पट्टिका आदि पर उकेरे गये विविध
 चित्रों को-लेप्पकर्मों को-मृत्तिका सेटिका आदि से बल्ली आदि रूप में
 बनाये गये चित्रों को, ग्रन्थियों को विशेष चतुराई के साथ गाठों से
 बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके र रचीं गई
 चीजों को,-टोपियों को, हाथों की पैरों की अगुलियों में पहिरने योग्य

जेवी वीणाओ, भभाओ-भेरीओ (नगाराओ) पड़-भ्रामरीओ, गोण आकार
 वाणी वीणाओ तेमज् नील पछु धण्डा कर्णेन्द्रियने सुण्ण आये तेवा तंत्री
 वगेरे साधेनाने लया लरीने लीला, पीणा, राता, सङ्केह अने काणा रगोथी
 रगाओला लाकडाना भनेला रमडडाने, पुस्तकर्मोने-पख ताडपत्र अने कागण
 वगेरे उपर लणाओला नतनतना लेओने, निबधेने, इडा, चौपाछ वगेरेभा
 लणाओली उपदेशक कविताओ वगेरेने, चित्र कर्मोने-इलक वगेरे उपर चित्रित
 करेला धण्डा चित्रोने लेप्प कर्मोने, भाटी सेटिका वगेरेथी लता वगेरे रुपभा
 भनाववाभा आवेला चित्रोने, ग्रन्थिओने-विशेऽ आतुर्यथी गाठोथी भनाववाभा
 आवेला रमडडाने, लताओ वगेरे वडे वेष्टित करीने भनाववाभा आवेली पस्तु

निष्पादितानाम्, 'सघाटमाण य' सहातिमानां=लोहकाष्टादिमी गथादिवत् वस्तु-
समूहैर्निष्पादितानाम्, तथा-अन्येषां च गृह्णा 'चर्णिगद्विषपाउग्गाण' चक्षुरि-
न्द्रियप्रायोग्याणां=नयनान्-दृजनकानां द्रव्याणां शस्त्रीशास्त्र भवन्ति । तथा
गृह्णा 'कोट्टपुडाण य' कोट्टपुटानां = सुगन्धिद्रव्यपिरोपाणां च केतसीपुटानां
च यावत्-एलापुटानां च, कुटुम्पुटानां च, उगीरपुटानां='रम' इतिभाषा
प्रसिद्धसुगन्धिद्रव्याणां च, लज्जपुटानां चेत्यादि । अन्येषां च गृह्णा घ्राणेन्द्रिय-
प्रायोग्याणां द्रव्याणां शस्त्रीशास्त्र भवन्ति । तथा गृहोः खण्डस्य च गुडस्य च
शर्करायाश्च 'मिसरी' इति भाषा प्रसिद्धाया, 'मच्छडियाण य' मत्स्यण्डिकायां=
'काल्पीमिसरी' इति भाषा प्रसिद्धाया, पुष्पोत्तर-पद्मोत्तराणां=गुलकन्द' इति
प्रसिद्धानां च, अन्येषां च जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शस्त्रीशास्त्र भवन्ति ।
तथा गृह्णा 'कोयवियाण य' कोयविकानां = रूतपूरितपावरणविशेषाणां
'रजाई' इति प्रसिद्धानाम्, कम्पलानां=रत्नकम्पलानाम्, पावरणानां=गाटिकानां
'चहर' इति प्रसिद्धानाम्, 'नवतयाण य' नवतयानाम्=ऊर्णमयपर्याणानां

आभूषण आदि कों को-पुत्तलिका की तरह जो सुवर्ण आदि के पतरों
पर कृत छिद्रादिकों के पूरने से चित्र बनाये जाते हैं वे पूरिम हैं इन
पूरिमों को और सघातिमों को-लोहकाष्ट आदि की तरह अनेक वस्तुओं
के समुदाय से निष्पादित चित्रों को तथा और भी नेत्र इन्द्रिय को
सुहावने लगने वाले द्रव्यों को भरा । (गृह्ण कोट्टपुडाण य, केयई पुडा-
ण य जाव अन्नेसि च गृह्ण चर्णिगद्विषपाउग्गाण दव्वाणं सगडीसागड
भरेति, बहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छडियाए य पुष्फुत्तर
पउमुत्तराणय अन्नेसि च जिर्विभद्विष पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड
भरेति गृह्ण कोयवियाण य केयवणय पावरणाण य नवतयाण य

आने-टोपीआने, छाया, पगो आने आगणीआमा पड़ेरवाना आभूषण वगे
रेने पूतणीनी जेम जे सुवर्ण वगेरेना पतरा उपर छाया पाडीने तेभने
पूरीने अनाववामा आवेला चित्रा ओटखे डे पूरिमेने आने सघातिमेने
खोण्ड, काष्ठ वगेरेथी अनाववामा आवेला रथ वगेरेनी जेम धणी वस्तुआने
अकत्रित करीने तेभना पडे अनाववामा आवेला चित्राने तेभज थीण पण
धणु नेत्र धन्द्रियने गमे तेवा द्रव्येने लया

(गृह्ण कोट्टपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसि च गृह्ण चर्णिगद्विष
पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति, बहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य
मच्छडियाए य पुष्फुत्तपउमुत्तराण य अन्नेसि च जिर्विभद्विषपाउग्गाण दव्वाण
सगडीसागड भरेति गृह्ण कोयवियाण य केयवणय पावरणाण

‘जीन’ इति प्रसिद्धानाम्, मलयानां च=मलयदेशोत्पन्नवस्त्रविशेषाणाम्, ‘मसूराण य’ मसूरकाणां=वस्त्रादिनिर्मित वृत्ताकारासनविशेषाणाम्, ‘सिलावट्टाण य’ शिलापट्टानां=पट्टाकारचिकणशिलानां यावत् हसगर्भाणां=हसः=चतुरिन्द्रियकृमि-विशेषः, गर्भः=तन्निर्वर्तित कोसिगारोरुतरूपः, तन्मयपस्त्राण्यपि हंसगर्भाणीत्यु-

मलयाण य मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हसगव्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाण दब्बाण सगडीसागड भरेति) इसी तरह अनेक कोष्ठपुटो को-सुगंधित द्रव्य विशेषों को केतकीपुटो को-सुगंधित पुष्पों यावत् एलापुटो को-इलायचियों को, उखीरपुटों को, खश के समुदाय को-कुकुमपुटों को तथा और भी अनेक, घ्राणेन्द्रिय को तृप्ति कारक द्रव्यों को उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों में भरा। बहुत सी खाड़, बहुत से गुड बहुत सी शर्करा-मिन्नरी-बहुत सी मत्स्यण्डी-कालपी मिसरी बहुत से गुलकद, बहुतसे पद्मपाक को तथा और भी जिह्वाह-न्द्रिय को तृप्ति करने वाले द्रव्यों को उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों में भरा। इसी तरह स्पर्शन इन्द्रिय को आनन्द देने वाले कोयविको को-रूई कपास-से भरे हुए प्रावरण विशेषों को-रजाइयो को-कम्बलों को-रत्न कम्बलों को-प्रावरणों को-चदरो को-नवलको को-ऊन के बने हुए पल्लेचों को-जीनों को-मलयदेश के बने हुए वस्त्रों को, मसूरकों को-वस्त्रों से बनाये हुए गोलाकार आसनों को-शिलापट्टो को-पट्टाकार चिकनी

य मलयाग य मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हसगव्भाण य अन्नेसिं च फासि-
दियपाउग्गाण दब्बाण सगडीसागड भरेति)

आ प्रभाणु धपा डोष्ट पुटोने-सुगंधित द्रव्य-विशेषोने, केतकी पुटोने
डेवडाना पुष्पोने यावत् ऐलापुटोने, ऐलव्यीओने, उखीर पुटोने-अशना
समु-थिने, कुकुम पुटोने तेमज्जीन पञ्च धया घ्राणेन्द्रिय (नाड) ने तृप्ति
पमाडनारा द्रव्योने तेओओ गाडी अने गाडाओमा लया - णडु ७ पुडण
प्रमाणुमा भाड, गोण, साकर मिश्री, मत्स्य डी कालपी मिश्री, (उच्यी नतनी साकर)
गुलकद, पद्मपाडो तेमज्जीन पञ्च धया लुहार्ध इन्द्रिय (अम) ने तृप्ति आप
नार द्रव्योने ते लोडोओ गाडी अने गाडाओमा लया आ प्रभाणु स्पर्शेन्द्रियने
सुभ आपनारी डायविकोने इथी लरेला प्रावरण विशेषोने-रत्नओने, काम
ओने, रत्न कामओने, प्रावरणोने, आदरोने, नवलकोने, छिनयी जनाववामा
आवेला यवेयाओने-ओनेने-मलय देशना वओने, मसूरकोने-वओ वडे
जनाववामा आवेला गोण आकार आसनोने, शिलापट्टोने-पट्टना आडरनी

निष्पादितानाम्, 'संघाटमाण य' सङ्घातिमानां=लोम्फाट्यादिमी श्वादिश्व वस्तु-
समूहैर्निष्पादितानाम्, तथा-अ येषा च वह्ना 'चर्निवदियपाउग्माण' चक्षुरि
न्द्रियप्रायोग्याणां=नयनानन्दजनकानां द्रव्याणां शस्त्रीशास्त्र भवन्ति । तथा
वह्ना 'कोट्टपुडाण य' कोट्टपुटानां = सुगन्धिद्रव्यविशेषाणां च केतरीपुटानां
च यावत्-एलापुटानां च, कुङ्कुमपुटानां च, लङ्गीरपुटानां='खम' इतिभाषा
प्रसिद्धसुगन्धिद्रव्याणां च, लङ्गीरपुटानां चेत्यादि । अन्येषां च वह्ना घ्राणेन्द्रिय
प्रायोग्याणां द्रव्याणां शस्त्रीशास्त्र भवन्ति । तथा उद्योः खण्डस्य च गुडस्य च
शर्करायाश्च 'मिसरी' इति भाषा प्रसिद्धाया 'मच्छडियाण य' मत्स्यष्टिकायाः=
'काल्पीमिसरी' इति भाषा प्रसिद्धाया, पुष्पोत्तर-पद्मोत्तराणां=गुल्फन्द 'इति
प्रसिद्धानां च, अन्येषां च जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शस्त्रीशास्त्र भवन्ति ।
तथा वह्ना 'कोयत्रियाण य' कोयत्रिकानां = रूतपूरितपावरणविशेषाणां
'रजाई' इति प्रसिद्धानाम्, कम्बलानां=रत्नकम्बलानाम्, पावरणानां=शाटिकानां
'चदर' इति प्रसिद्धानाम्, 'नवतयाण य' नवतयानाम्=ऊर्णामयपर्याणानां

आभूषण आदि कौ को-पुत्तलिका की तरह जो सुवर्ण आदि के पतरों
पर कृत छिद्रादिकों के पूरने से चित्र बनाये जाते हैं वे पूरिम हैं इन
पूरिमों को और सघातिमों को-लोहकाष्ठ आदि की तरह अनेक वस्तुओं
के समुदाय से निष्पादित चित्रों को तथा और भी नेत्र इन्द्रिय को
सुहावने लगने वाले द्रव्यों को भरा । (वह्ण कोट्टपुडाण य, केयई पुडा
ण य जाव अन्नेसि च वह्ण चर्निवदियपाउग्माण दव्वाणं सगडीसागड
भरेति, बहुस्स खडस्स य गुल्स्स सक्कराए य मच्छडियाए य पुष्फुत्तर
पउमुत्तराणय अन्नेसि च जिह्विभदिय पाउग्माण दव्वाण सगडीसागड
भरेति वह्ण कोयत्रियाण य केयणय पावरणाण य नवतयाण य

ओले-टीपीओले, हाथो, पगो अने आगणीओमा पडेरवाना आभूषण वगे
रेने पूतणीनी जेम जे सुवर्ण वगेरेना पतरा उपर काण्ठा पाडीने तेमने
पूरीने बनाववामा आवेला चित्रो ओटवे के पूरिओने अने सघ तिओने
लोणउ, काष्ठ वगेरेथी बनाववामा आवेला रथ वगेरेनी जेम धल्ली वस्तुओने
ओकनित करीने तेमना वडे बनाववामा आवेला चित्रोने तेमज भीला पणु
धणु नेत्र इन्द्रियने गये तेवा द्रव्योने कायो

(वह्ण कोट्टपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसि च वह्ण चर्निवदिय
पाउग्माण दव्वाण सगडीसागड भरेति, बहुस्स खडस्स य गुल्स्स सक्कराए य
मच्छडियाए य पुष्फुत्तपउमुत्तराण य अन्नेसि च जिह्विभदियपाउग्माण दव्वाण
सगडीसागड भरेति वह्ण कोयत्रियाण य केयणय पावरणाण य नवतयाण

गोधूमादीनामद्वृक्षस्य 'आटा' इति प्रमिदस्य, 'गोरसस्म य' गोरसस्य=घृता-
दिकस्य च यावत् अन्येषां च बहूना पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहन
भरन्ति, भूतया 'दक्षिणाणुकूलेण' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव
कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन 'लभेति' लभ्यन्ति=
तीक्ष्णपित्तशङ्कुषु गच्छन्ति, पद्धत्वा तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान्
शब्दस्पर्शरसरूपगंधान् 'एगद्वियार्हि' एगार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः 'कालिय-
दीवे' कालिकद्वीपे 'उत्तारेति' उत्तारयन्ति=नाकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयति।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यों को उस नौका में भरदिया।
(भरित्ता दक्षिणाणुकूलेण चाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता पोयवहण लभेति, लवित्ता ताड उक्किट्ठाइ सदफरिसरस
रूप गधाई एगद्वियार्हि कालियदीवे उत्तारेति। जहिं २ च ण ते आसा
आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडु
त्रियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अन्नाणि य वहूणि
सोइदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति) भर करके फिर ये लोग जन
पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु बहा तब बहा से चलकर जहा
कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने
लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा
आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि
वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

धडना डोटने, गोरस धी वगेरेने यावत् णीला पणु धण्डा पडाणु यात्राभा
काम लागे तेवा द्रव्योने ते नौकाभा लया

(भरित्ता दक्षिणाणुकूले ण चाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पोयवहण लभेति, लवित्ता ताड उक्किट्ठाइ सदफरिमरमरूपगधाई
एगद्वियार्हि कालियदीवे उत्तारेति। जहिं २ च ण ते आसा आसायति वा
सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडुत्रियपुरिसा ताओ
वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अन्नाणि य वहूणि सोइदिय पाउग्गाणि य
द्ववाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति)

भरीने तेज्जा मधा न्यारे पाछजथी वहेतो अनुकण पवन वडेवा लाग्ये।
त्यारे त्याथी रवाना थधने न्या कालिक द्वीप छेतो त्या आव्या त्या आवीने
ते डोडोअे लगर नाण्यु लगर नाणीने पडाणुमाथी शण्डना साधन ३५
वीणा वगेरेने, कामण स्पर्शना साधनभूत ३५थी लरेला रजध वगेरे वस्त्रोने,
रसना (७७) धन्द्रियने गभता आउ वगेरे पडाथोने, नेत्र धन्द्रियने आनद

ચ્યન્તે, તેણાં કૌશેયચ્છાણાં ' રેશમીચ્છ ' इति भाषा प्रसिद्धानां च, तथा-
अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियमायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भवन्ति, भूत्वा शकटीशाकटं
योजयन्ति, योजयित्वा यज्ञैव गम्भीरम्=गम्भीरनामकं पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति,
उपागत्य शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा ' पोयवहणं ' पोतवहनं=नौकां
सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् ' उक्किट्वाण ' उक्किट्वाणां=श्रेष्ठानां शत्रुस्पर्शरसरूप
गन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च ' सामियस्स य ' समीतस्य=

शिलाओं को, हस गभों को-रेशमी चम्रों को, तथा और भी स्पर्शन
इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगो ने गाड़ी और
गाड़ों में भरा। (भरित्ता सगढीसागढ जोएति, जोइत्ता जेणेव गभी-
रए पोयवहणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगढीसागढ मोएति,
मोइत्ता पोयवहणे सज्जेति, सज्जित्ता तेसि उक्किट्वाण सदफरिसरस-
रूपगधाण कट्टस्स य तणस्स य पाणियस्स य तदुलाणय समियस्स
य गोरसस्स य जाव अन्नेसि च वहूण पोयवहणपाउग्गा ण पोयवहण
भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों को जोत दिया।
जोतकर के फिर वे वहाँ आये-जहाँ गभीर नाम का पोतस्थान था-बद-
रगाह था। वहाँ आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाड़ों को ढील-रोक
दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तैयार करके
बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एवं गंधोंको काष्ठको तृण
को पानीय द्रव्य को तदूलों को, गेहूँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

લીલી શિલાઓને, હસ ગભોને-રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ ખીજી પણ ઘણી સ્પર્શે
ન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમાં ભરી

(भरित्ता सगढीसागढ जोएति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयवहणे तेणेव
उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगढीसागढ मोएति मोइत्ता पोयवहणे सज्जेति,
सज्जित्ता तेसि उक्किट्वाण सदफरिसरसरूपगधाण कट्टस्स य तणस्स य पाणि
यस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसि च वहूण पोयवहण
पाउग्माण पोयवहण भरेंति)

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને ભેતર્યા ભેતરીને તેઓ
ત્યાથી ન્યા ગભીર નામે પોતસ્થાન (ખદર) હતું ત્યા આબ્યા ત્યા આવીને
તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂક્યા અને ત્યારપછી નૌકાઓને
સુસજ્જિત કરી સુસજ્જિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,
રૂપ અને ગંધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તદુલો (ત્રાણ) ને,

गोधूमादीनामदृक्स्य 'आटा' इति प्रमिदस्य, 'गोरसस्तय' गोरसस्तय=घृता-
दिकस्य च यावत् अन्येषां च बहूनां पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहन
भरन्ति, भृत्वा 'दक्षिणाणुकूलेण' दक्षिणानुकूलेन=मानुकूलेन वातेन यत्रैव
कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन 'लभेति' लभ्यन्ति=
तीरस्थापितशङ्कुषु व्रजन्ति, उद्धृत्वा तान्=नीकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान्
शब्दस्पर्शरूपरसगन्धान् 'एगद्विगार्हि' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः 'कालिय-
दीवे' कालिकद्वीपे 'उत्तारेति' उत्तारयन्ति=नाकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयति।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यों को उस नौका में भरदिया।
(भरित्वा दक्षिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छड्ड
उवागच्छित्ता पोयवहन लभेति, लब्धित्ता ताड उक्किट्ठाड सदफरिसरस
रूप गधाड एगद्विगार्हि कालियदीवे उत्तारेति। जहिं २ च ण ते आसा
आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोट्टु
वियपुरित्ता ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि
सोड्ढिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति) भर करके फिर ये लोग जन
पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु वहा तत्र वहा से चलकर जहा
कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने
लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भून वीणा
आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि
वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

धडना डोटने, गोरस घी वगेरेने यावत् भील पणु धड्ठा वडाणु यात्रामा
क्षम लागे तेवा द्रव्येने ते नौकाभा लया

(भरित्वा दक्षिणाणुकूले ण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छड्ड,
उवागच्छित्ता पोयवहन लभेति, लब्धित्ता ताड उक्किट्ठाड सदफरिसरमरूपगधाड
एगद्विगार्हि कालियदीवे उत्तारेति। जहिं २ च ण ते आसा आसायति वा
सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोट्टुवियपुरित्ता ताओ
वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोड्ढिय पाउग्गाणि य
दब्बाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति)

भरीने तेज्यो गधा न्यारे पाछगथी वडेतो अनुकूल पवन वडेवा लाग्यो
त्यारे त्याथी रवाना अधने न्या कालिक द्वीप छेतो त्या आव्या त्या आवीने
ते डोकेज्ये लग्न नाण्यु लग्न नाणीने वडाणुमाथी शण्डना साधन रूप
वीणा वगेरेने, क्षमण स्पर्शना साधनभूत रूथी लरेला रजार्थ वगेरे वस्त्रोने,
रसना (लस) इन्द्रियने गमता आड वगेरे पदार्थोने, नेत्र इन्द्रियने आनद

ચ્યન્તે, તેણાં કૌશેયસ્રાણાં ' રેશ્મીચર ' इति માયા પ્રમિદ્ધાનાં ચ, તથા-
અન્યેષા ચ સ્પર્શેન્દ્રિયમાયોગ્યાણાં દ્રવ્યાણાં શક્ટીશાઠ મરન્તિ, મૃત્વા શસ્ત્રીશ્ચાઠ
યોજયન્તિ, યોજયિત્વા યત્રૈર ગમ્મીરક=ગમ્મીરનામક પોતસ્થાન તત્રૈવોપાગન્ઠન્તિ,
ઉપાગત્ય શક્ટીશાઠ મોચયન્તિ, મોચયિત્વા ' પોયગઢ ' પોતવઢન=નૌકાં
સઙ્ગયન્તિ, સઙ્ગયિત્વા તેષામ્ ' ઉચ્છિદ્ધાણ ' ઉત્કઠાના=ત્રેષ્ઠાના શબ્દસ્પર્શરૂપ
ગન્ધાના કાષ્ઠસ્ય ચ પાનીયસ્ય ચ તન્દુલાનાં ચ ' સામિયસ્સ ય ' સમીતસ્ય=

શિલાઓં કો, દસ ગર્ભોં કો-રેશ્મી વસ્ત્રોં કો, તથા ઔર મી સ્પર્શન
इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगो ने गाड़ी और
गाडों में भरा। (भरित्ता सगडीसागड जोएति, जोइत्ता जेणेव गभी-
रण पोयद्वाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोएति,
मोइत्ता पोयवहणे सज्जेति, सज्जित्ता तेसि उक्किद्वाण सदफरिसरम
रूवगधाण कट्टस्स य तणस्स य पाणियस्स य तदुलाणय समियस्स
य गोरसस्स य जाव अन्नेसि च वहूण पोयवहणपाउग्गा ण पोयवहण
भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाड़ी और गाडों को जोत दिया।
जोतकर के फिर वे वहाँ आये-जहाँ गभीर नाम का पोतस्थान था-बद-
रगाह था। वहाँ आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाडों को ढील-रोक
दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तैयार करके
बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एवं गंधोंको काष्ठको तृण
को पानीय द्रव्य को तद्गुलों को, गेहूँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

હીસી શિલાઓને, હસ ગર્ભોને-રેશ્મી વસ્ત્રોને તેમજ ખીણ પહો ધણી સ્પર્શે
ન્દ્રિયને મુખ પમાડે તેવી ધણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમાં ભરી

(भरित्ता सगडीसागड जोएति, जोइत्ता जेणेव गभीरण पोयद्वाणे तेणेव
उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोएति मोइत्ता पोयवहण सज्जेति,
सज्जित्ता तेसि उक्किद्वाण सदफरिसरसरूपगधाण कट्टस्स य तणस्स य पाणि
यस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरमस्स य जाव अन्नेसि च वहूण पोयवहण
पाउग्गाण पोयवहण भरेंति)

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને ભેતર્યા ભેતરીને તેઓ
ત્યાથી ન્યા ગભીર નામે પોતસ્થાન (બદર) હતું ત્યા આબ્યા ત્યા આવીને
તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂક્યા અને ત્યારપછી નૌકાઓને
મુસબ્બિત કરી મુસબ્બિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,
રૂપ અને ગંધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તડુલો (ત્રેષ્ઠા) ને,

गोधूमादीनामद्वयस्य 'आटा' इति प्रसिद्धस्य, 'गोरसस्मय' गोरसस्मय=घृता-
दिकस्य च यावत् अन्येषां च गृह्णा पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहन
भरन्ति, भूत्वा 'दक्षिणाणुकूलेण' दक्षिणाणुकूलेन=साणुकूलेन वातेन यत्रैव
कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन 'लभेति' लभयन्ति=
तीरस्थापितगङ्गु पुनरन्ति, उद्ध्वा तान्=नौकासितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान्
शब्दस्पर्शरूपगन्धान् 'एगद्वियार्हि' एगार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः 'कालिय-
दीवे' कालिकद्वीपे 'उत्तारेति' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयति ।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यों को उम नौका में भरदिया।
(भरित्ता दक्षिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता पोयवहन लभेति, लभित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सदफरिसरस
रूप गधाइ एगद्वियार्हि कालियदीवे उत्तारेति । जहिं २ च ण ते आसा
आसायति वा सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडु
यियपुरित्ता ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य वहूणि
सोइदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति) भर करके फिर ये लोग जन
पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु चहा तब वहा से चलकर जहा
कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने
लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भून वीणा
आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रुई से भरे हुए रजाई आदि
वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

घडना डोटने, गोरस घी वगेरेने यावत् भीष्म पण्डु धृष्टा वडाणु यात्राभा
काभ लागे तेवा द्रव्येने ते नौकाभा लया

(भरित्ता दक्षिणाणुकूले ण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पोयवहन लभेति, लभित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सदफरिसरमरूपगधाइ
एगद्वियार्हि कालियदीवे उत्तारेति । जहिं २ च ण ते आसा आसायति वा
सयति वा चिट्ठति वा तुयट्ठति वा तहिं २ च ण ते कोडुयियपुरित्ता ताओ
वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य वहूणि सोइदिय पाउग्गाणि य
दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठति)

लरीने तेज्जा मधा न्यारे पाछणधी वहेतो अनुकूल पवन वहेवा लाग्जे
त्यारे त्याधी रवाना यधने न्या कालिक द्वीप छेतो त्या आव्या त्या आवीने
ते डोकोज्जे लगर नाण्यु लगर नाणीने वडाणुभायी शण्डना साधन उप
वीणा वगेरेने, काभण स्पर्शना साधनभूत रुथी लरेला रजार्थ वगेरे वस्त्रोने,
रसना (लस) इन्द्रियने गमता आड वगेरे पदार्थोने, नेत्र इन्द्रियने आनड

ચ્યન્તે, તેણાં કૌશેયરચ્છાણાં ' રેશમીવચ્છ ' इति भाषा पसिद्धानां च, तथा-
अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियमायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं
योजयन्ति, योजयित्वा यजौ गम्भीरम्=गम्भीरनामकं पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति,
उपागत्य शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा ' पोयवहण ' पोतवहन=नौकां
सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् ' उक्किट्वाण ' उत्कट्टाणां=त्रेष्ठानां शब्दम्पर्शरूप
गन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च ' सामियस्स य ' समीतस्य=

शिलाओं को, हस गभों को-रेशमी वस्त्रों को, तथा और भी स्पर्शान्
इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगो ने गाड़ी और
गाडों में भरा । (भरित्वा सगढीसागढं जोएति, जोइत्ता जेजेव गभी-
रए पोयवहाणे तेजेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगढीसागढं मोएति,
मोइत्ता पोयवहणे सज्जेति, सज्जित्ता तेसि उक्किट्वाण सहफरिसरम
रूपगधाण कट्टस्स य तणस्स य पाणियस्स य तदुलाणय समियस्स
य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च वहूण पोयवहणपाउग्गा ण पोयवहण
भरेति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाड़ी और गाडों को जोत दिया ।
जोतकर के फिर वे वहाँ आये-जहाँ गभीर नाम का पोतस्थान था-बद-
रगाह था । वहाँ आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाडों को ढीठ-रोक
दिया । और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया । और तैयार करके
बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एव गंधोंको काष्ठको तृण
को पानीय द्रव्य को तदूलों को, गेहूँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

લીથી શિલાઓને, હસ ગભોને-રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ ખીછ પથ્થુ ધણી સ્પર્શે
ન્દ્રિયને મુખ પમાડે તેવી ધણી વસ્તુઓને તે ઢોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભરી

(भरित्वा सगढीसागढं जोएति, जोइत्ता जेजेव गभीरए पोयवहाणे तेजेव
उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगढीसागढं मोएति मोइत्ता पोयवहण सज्जेति,
सज्जित्ता तेसि उक्किट्वाण सहफरिसरसरूपगधाण कट्टस्स य तणस्स य पाणि
यस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च वहूण पोयवहण
पाउग्गाण पोयवहण भरेति)

ભરીને તે ઢોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને જોતર્યા જોતરીને તેઓ
ત્યાથી બધા ગભીર નામે પોતસ્થાન (બદર) હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને
તે ઢોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂક્યા અને ત્યારપછી નૌકાઓને
સુસજ્જિત કરી સુસજ્જિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ,
રૂપ અને ગંધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તદુલો (~ આ) ને,

कर्माणि यावत् सप्तातिमानि च अन्यानि च गृह्णन्ति चक्षुरिन्द्रियमायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयन्ति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वाणा परिपर्यन्तेन=सर्वत्र समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति? ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषा गृह्णा फोष्ठपुटाना च यावद् अन्येषा च गृह्णा घ्राणेन्द्रियमायोग्याणा

जाव सघाडमाणि य अन्नाणि य गृह्णन्ति चक्षुर्द्विपाउग्गाणि य दन्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तैसि परिपेरतेण पासण ठवेंति, ठवित्ता णिचत्ता णिप्फदा तुसिणीया चिद्धति) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में-बीणा आदिको को स्थापित करते रहे। स्थापित करके फिर वे वही पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये बिना ही चुपचाप बैठ गये।

इस तरह-जिस २ घनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, छेदते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुर्द्विपाउग्गा को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुर्द्विपाउग्गा को सुटा बनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हें उन अश्वों की चारो दिशाओं में रख दिया। रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। (जत्थ २ ते आसा आसयन्ति ४ तत्थ

विय पुरिसा गृह्णन्ति ऋहाणि य ५ कट्टकम्माणिय जाव सघाडमाणि य अन्नाणि य गृह्णन्ति चक्षुर्द्विपाउग्गाणि य दन्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तैसि परिपेरतेण पासण ठवेंति ठवित्ता णिचत्ता, णिप्फदा तुसिणीया चिद्धति)

तेमनी योमेर, आरे आर दिशाओमा वीणाओ वगेरे भूमी भूमीने तेओ १। ७ निश्चल-डवन चलननी क्रियाथी रहित थधने अ गेने हलान्ना वगर चुपचाप त्यां भेमी गया आ प्रभाणे के के वनमा अश्वो (घोडाओ) भेसता हता, सूता हता, रहता हता, आराम करता हता ते ते वनमा ते कौटुम्बिक पुरुषोओ साथे लावेली घण्टी काणी, नीली, पीली राती, सदेह रगनी काष्ठकर्म वगेरे सघातिम सुधीनी गंधी वस्तुओने के ओओ अश्व (आण) धन्द्रियने सुभ आपनारी हती तेम ७ पीछ पणु अश्व धन्द्रियने सुभ आप नारी ओटली सारी वस्तुओ हती तेमने भेगी करी अने अश्वोनी योमेर तेमने गोठवी दीधी गोठवीने तेओ त्या ७ निश्चल, निस्पन्द थधने चुपचाप त्या ७ भेसी गया

(जत्थ २ ते आसा आमयन्ति ४ तत्थ २ ण तैसि गृह्ण फोष्ठपुटाण य जाव अन्नेसि च गृह्ण घागिदियपाउग्गाण दन्वाण पुजेय णियरे य करेति,

‘ જર્ઠિ ૨ ચ ણ ’ યત્ર યત્ર ચ ગ્ને સ્વલુ તે ‘ આમા ’ અથાઃ=આત્મા અથાઃ
 ‘ આસયતિ યા ’ આસતે=ઉપવિશન્તિ ‘ સયંતિ યા ’ ધોરતેસ્વપન્તિ વા ‘ ચિદ્વતિ વા ’
 તિષ્ઠન્તિ યા, ‘ તુયદતિ યા ’ ત્વગર્ચયન્તિ=શરીર પ્રસાર્ય સ્વપન્તિ વા ‘ તર્ઠિ ૨
 તત્ર તત્ર ચ સ્વલુ તે કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ ‘ તામો ’ તાઃ=દક્ષિણીર્ષનગરાદાનીતા
 યીગાશ્ર યાત્-વૃત્તચીનાશ્ર, તથા અન્યાનિ ચ ગ્હનિ શ્રોત્રેન્દ્રિયપ્રાયોગ્યાણિ ચ
 દ્રવ્યાણિ ‘ સમુદીરેમાણા ’ મમુદીરયન્ત=મધુરધ્વનિના પ્રાદયતઃ તિષ્ઠન્તિ, ટેષા
 મશ્વાના ‘ પરિપેરતેણ ’ પરિપર્યન્તેન=સર્વતઃ સમ તાત્ ચતુર્દિશુ इत्यर्थ ‘ પાસપ ’
 પાર્થે સમીપે ચીનાદીનિ સ્થાપયન્તિ, સ્થાપયિત્વા તે પુરુષાઃ ‘ નિચ્ચલા ’
 નિશ્ચલાઃ=ચલનક્રિયારહિતાઃ ‘ ગિપ્ફદા ’ નિઃ સ્પન્દા =દસ્તાગ્રયવનમચારરહિતાઃ
 ‘ તુસિણીયા ’ યત્રન વ્યાપારરહિતાઃ ‘ ચિદ્વતિ ’ તિષ્ઠન્તિ ।

તથા-યત્ર યત્ર તેઽશ્વાઃ આસતે વા યાત્ ત્વગર્ચયન્તિ=લુઠન્તિ તત્ર તત્ર સ્વલુ
 તે કૌટુમ્બિકપુરુષાઃ ગ્હનિ કૃષ્ણાનિ ચ ઽ=કૃષ્ણનીલ્પીતરક્તશૃંગાણિ કાષ્ઠ-

નેત્ર ઇન્દ્રિય કો આનન્દ દેનેવાછે નીલે પીલે આદિ રંગપાલે ચિત્રો કો એવ
 ઘાણઈન્દ્રિયો કો સુખકારક કાષ્ઠપુટ્ર આદિ સુગંધિત દ્રવ્યો કો છોડી ૨
 નૌકાઓ દ્વારા પોત મેં સે ઉતાર કર કાલિક દ્વિપ મેં રાખ દિયા । બાદ
 મેં જહા ૨ વે જાતિ અશ્વ ઘેઠતે થે મોતે થે, ઠહરતે થે, હેટતે થે, વહા ૨
 વે કૌટુમ્બિક પુરુષા ઉન રસ્તિશીર્ષ નગર સે લાયે હુણ વીણા સે લેકર
 વૃત્તવીણા પર્યન્ત કે સાધનો કો તથા ઓર મી શ્રોત્ર ઇન્દ્રિય કો સુહા
 વની લગનેવાલી સાધન સામગ્રી કો મધુર ધ્વનિ સે વજાતે હુણ ઠહર
 ગયે । ઓર (તેસિં પરિપેરતેણ પાસપ ઠવેતિ, ઠવિત્તા ગિચ્ચલા, ગિપ્ફદા,
 તુસિણીયા ચિદ્વતિ, જત્ય ૨ તે આસા આસયતિ વા જાવ તુયદતિ વા
 તત્ય ૧ ણ તે કૌટુમ્બિક પુરિસા ગ્હનિ કિણ્હાણિ ચ ૫ કટ્ટકમ્માણિ ચ

પનાડનાર નીલા, પીળા વગેરે રંગના ચિત્રાને અને પ્રાણુ (નાક) ઇન્દ્રિયને
 સુખ આપે તેવા કાષ્ઠપુટ્ર વગેરે સુગંધિત દ્રવ્યોને વહાણુમાથી નાની નાની
 હોડીઓમા મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી ત્યારપછી જ્યાં તે જાતિ
 અશ્વો યેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં તે
 કૌટુમ્બિક પુરુષો તે હસ્તિશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલાં વીણાથી માંડીને વૃત્ત
 વીણા સુધીના સાધનોને તેમજ બીજાં પણ શ્રોત્ર (કાન) ઇન્દ્રિયને ગમે
 તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતા ત્યાં રોકાઈ ગયા અને—

(તેસિં પરિપેરતેણ પાસપ ઠવેતિ, ઠવિત્તા ગિચ્ચલા, ગિપ્ફદા, તુસિણીયા
 ચિદ્વતિ, જત્ય ૨ તે આસા આસયતિ વા જાવ તુયદતિ વા તત્ય ૧ - કોટ્ટ-

कर्माणि यावत् सप्तातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियमायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयन्ति=एकरी कुर्वन्ति, तेषामश्चाना परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति २ ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषां गृह्णातां कोष्ठगृह्णातां च यावद् अन्येषां च बहूनां घ्राणेन्द्रियमायोग्याणां

जाव संधादमाणि य अन्नाणि य गृह्णी चर्त्विस्त्रिदय पाउग्गाणि य दव्याणि ठवेति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति, ठवित्ता णिचत्ता णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में-बीणा आदिको को स्थापित करते रहे । स्थापित करके फिर वे वहीं पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये बिना ही चुपचाप बैठ गये ।

इस तरह-जिस २ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, छेड़ते थे, घरा २ उन कौटुम्भिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुहावनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थीं उन को एकत्रित किया और उन्हें उन अश्वों की चारो दिशाओं में रख दिया । रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । (जत्य २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि क्खिणाणि य ५ कट्टकम्माणिय जाव सगदमाणि य अन्नाणि य गृह्णी चर्त्विस्त्रिदय पाउग्गाणि य दव्याणि ठवेति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति ठवित्ता णिचत्ता, णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति)

तेमनी चोभेर, आरे आर दिशाओमा वीणाओ वगेरे भूमी भूमीने तेओ त्या ७ निश्चल-इत्यन चलननी क्रियाथी रहित थधने अ गाने हलान्ना वगर सुपथाप त्या भेसी गया आ प्रभावे ने ने वनमां अश्वो (घोडाओ) भेसता हता, सूता हता, रहता हता, आराम करता हता ते ते वनमा ते कौटुम्भिक पुरुषोओ साथे लावेली घाणी, नीली, पीली राती, सदेह रंगनी काष्ठकर्म वगेरे सघातिम सुधीनी भधी वस्तुओने के नेओ यथु (आप) धन्द्रियने सुभ आपनारी हती तेम ७ पीछ पछु यथु धन्द्रियने सुभ आप नारी जेटली सारी वस्तुओ हती तेमने बेगी करी अने अश्वोनी चोभेर तेमने गोडपी छधी गोडपीने तेओ त्या ७ निश्चल, निस्पन्द थधने सुपथाप त्या ७ भेसी गया

(जत्य २ ते आसा आमयति ४ तत्थ २ ण तेसिं गृह्ण फोटुपुडाण य जाव अन्नेसिं च गृह्ण घागिंदियपाउग्गाण दव्याण पुजेय णियरे य करेति,

‘जहि २ च ण’ यत्र यत्र च गने खलु ते ‘आमा’ अघाः=जात्या अघाः
 ‘आसयति वा’ आसते=उपविशन्ति ‘सयंति वा’ शेरतेस्वपन्ति वा ‘चिद्वति वा’
 तिष्ठन्ति वा, ‘तुयद्वति वा’ त्वग्गर्त्तयन्ति=शरीर प्रसार्य स्वपन्ति वा ‘तहि २
 तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्भिकपुरुषाः ‘तामो’ ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता
 वीणाश्च यावत्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च गृह्णी श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्यानि च
 द्रव्याणि ‘समुदोरेमाणा’ समुदीरयन्तः=मधुरध्वनिना गायन्तः तिष्ठन्ति, तेषां
 मन्थानां ‘परिपेरतेण’ परिपर्यन्तेन=सर्पतः समन्तात् चतुर्दिशु इत्यर्थः ‘पासए’
 पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः ‘निच्चला’
 निथलाः=चलनक्रियारहिताः ‘णिप्फदा’ निःस्पन्दा=हस्ताद्ययवमचाररहिताः
 ‘तुसिणीया’ यत्र च व्यापाररहिताः ‘चिद्वति’ तिष्ठन्ति ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वाः आसते वा यावत् रम्यगर्त्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु
 ते कौटुम्भिकपुरुषाः गृह्णी कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुभ्रवर्णानि काण्ड-

नेत्र इन्द्रिय को आनद देनेवाछे नीले पीछे आदि रंगवाछे चित्रो को एव
 घ्राणइन्द्रियों को सुखकारक काण्डपुट आदि सुगन्धित द्रव्यों को छोटी २
 नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया । बाद
 में जहा २ वे जाति अश्व बैठते थे सोते थे, ठहरते थे, छेदते थे, बहा २
 वे कौटुम्भिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर
 वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनो को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुरा
 वनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर
 गये । और (तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फदा,
 तुसिणीया चिद्वति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयद्वति वा
 तत्थ २ ण ते कौटुम्भिक पुरिसा बह्णि किण्हानि च ५ कट्टकम्माणि च

पमाडनार नीला, पीला वगैरे २ रंगवा चित्रोने अने घ्राण (नाक) इन्द्रियने
 सुगंध आये तेवा काण्डपुट वगैरे सुगन्धित द्रव्योंने वहावुभाथी नानी नानी
 छोड़ीआमा भूझीने कालिक द्वीप उपर भूझी द्वीपी त्थारपछी न्या ते जाति
 अश्वो जेसता छता, सूता छता, रडेता छता, आराम करता छता त्या ते
 कौटुम्भिक पुरुषो ते हस्तिशीर्ष नगरथी लई आवेली वीणाथी भाझीने वृत्त
 वीणा सुधीना साधनोने तेमअ भीअ पयु श्रोत्र (कान) इन्द्रियने जमे
 तेवी साधन सामग्रीने मधुर ध्वनिथी बगाडता त्या रोकछी गया अने—

(तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फदा, तुसिणीया
 चिद्वति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयद्वति वा तत्थ २ कौड-

कर्माणि यावत् सप्तातिमानि च अन्यानि च गृह्णन्ति चक्षुरिन्द्रियमायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयन्ति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामध्याना परिपर्यन्तेन=सर्वत्र. समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णींवास्तिष्ठन्ति २ ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषां गृह्णा कोष्ठगुह्यानां च यावद् अन्येषां च गृह्णा घ्राणेन्द्रियमायोग्याणां

जाव सप्तादमाणि य अन्नाणि य गृह्णन्ति चर्त्तस्वदिय पाउग्गाणि य दन्वाणि ठवैति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवैति, ठवित्ता णिचत्ता णिप्फदा तुसिणीया चिद्धति) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में-बीणा आदिको को स्थापित करते रहे । स्थापित करके फिर वे वहीं पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये बिना ही चुपचाप बैठ गये ।

इस तरह-जिस २ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, छेदते थे, चहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सप्तातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुहावनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थीं उन को एकत्रित किया और उन्हें उन अश्वों की चारो दिशाओं में रख दिया । रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । (जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा वहुणि ऋण्हाणि य ५ रुद्धकम्माणिय जाव सप्तादमाणि य अन्नाणि य गृह्णन्ति चर्त्तस्वदिय पाउग्गाणि य दन्वाणि ठवैति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवैति ठवित्ता णिचत्ता, णिप्फदा तुसिणीया चिद्धति)

तेमनी योगेर, आरे आरे दिशाओमा वीष्वाओ वगेरे भूमी भूमीने तेओ त्या ७ निश्चल-छलन चलननी क्रियाथी रहित थधने अगोने छलाव्या वगर चुपचाप त्या भेसी गया आ प्रभाणे जे जे वनमा अश्वो (घोडाओ) भेसता छता, सूता छता, रहता छता, आराम करता छता ते ते वनमा ते कौटुम्बिक पुरुषोओ साथे लावेली घणी कणी, नीली, पीली राती, सदेह रगनी काष्ठकर्म वगेरे सप्तातिम सुधीनी जमी वस्तुओने के जेओ यक्षु (आप) इन्द्रियने सुभ आपनारी छती तेमज जील पल्ल यथु इन्द्रियने सुभ आपनारी जेठली सारी वस्तुओ छती तेमने बेगी करी अने अश्वोनी योगेर तेमने गोठवी दीधी गोठवीने तेओ त्या ७ निश्चल, निस्पन्द थधने चुपचाप त्या ७ भेसी गया

(जत्थ २ ते आसा आमयति ४ तत्थ २ ण तेसिं गृह्णन्ति कोष्ठगुह्याणां य जाव अन्नेसिं च वहुण घागिदियपाउग्गाणां दन्वाणां पुजेय णियरे य वरति,

‘जहि २ च णं’ यत्र यत्र च गने खलु ते ‘आमा’ अघाः=वात्सा अघाः
 ‘आसयंति या’ आसते=उपशिशन्ति ‘सयंति या’ शेरतेऽप्यपनि वा ‘चिद्वति वा’
 तिष्ठति या, ‘तुयद्वति या’ त्वग्रत्तपन्ति=शरीर प्रसार्य व्यपन्ति वा ‘तहि २
 तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्भिकपुरुषाः ‘ताभो’ ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता
 गीगाश्च यावत्-वृत्तगीणाश्च, तथा अन्यानि च गृह्णीन्ति श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्यानि च
 द्रव्याणि ‘समुदरेमाणा’ मधुरध्वनिना यादयन्तः तिष्ठन्ति, तेषां
 मन्थानां ‘परिपेरतेण’ परिपर्यन्तेन=सर्पतः समन्तात् चतुर्दिशु इत्यर्थः ‘पासए’
 पार्श्वे समीपे गीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः ‘निन्वन्वा’
 निन्वन्वाः=चलनक्रियारहिताः ‘णिप्फंदा’ निःस्पन्दा=हस्ताद्ययन्मचाररहिताः
 ‘तुसिणीया’ यत्र व्यापाररहिताः ‘चिद्वति’ तिष्ठन्ति ।

तथा-यत्र यत्र तेऽन्धाः आसते वा यावत् त्वग्रत्तपन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु
 ते कौटुम्भिकपुरुषाः गृह्णीन्ति कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लवर्णानि काष्ठ

नेत्र इन्द्रिय को आनंद देनेवाले नीले पीले आदि रंगवाले चित्रों को एव
 घ्राणहृद्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगन्धित द्रव्यों को छोटी २
 नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया। बाद
 में जहा २ वे जाति अश्व बैठते थे मोते थे, ठहरते थे, छेदते थे, बहा २
 वे कौटुम्भिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर
 वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनों को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहा
 घनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर
 गये। और (तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति, ठवित्ता णिन्वन्वा, णिप्फंदा,
 तुसिणीया चिद्वति, जत्य २ ते आसा आसयति वा जाव तुयद्वति वा
 तत्य २ ण ते कौटुम्भिक पुरिसा गृह्णीन्ति कृष्णाणि य ५ कटुकम्माणि य

पमाडना २ नीला, पीला वगैरे रंगना चित्राने अने घ्राण्यु (नाक) इन्द्रियने
 सुगन्ध आये तेवा काष्ठपुट वगैरे सुगन्धित द्रव्योंने वहाण्युभाधी नानी नानी
 छोटीजोभा भूझीने कालिक द्वीप उपर भूझी दीधी त्थारपछी न्या ते नति
 अश्वो जेसता छता, सूता छता, रडेटा छता, आराम करता छता त्या ते
 कौटुम्भिक पुरुषो ते हस्तिशीर्ष नगरथी लछ आवेली वीणाथी भाडीने वृत्त
 वीणा सुधीना साधनाने तेमन्थ वीज पण्यु श्रोत्र (कान) इन्द्रियने गजे
 तेवी साधन सामग्रीने मधुर ध्वनिथी बजाडता त्या दैकार्थ गया अने—

(तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेति, ठवित्ता णिन्वन्वा, णिप्फंदा, तुसिणीया
 चिद्वति, जत्य २ ते आसा आसयति वा जाव तुयद्वति वा तत्य २ = कौटु-

ए ' विवराणि=गर्तानि खनन्ति, खनित्या गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावद् अन्येषा च बहूना पानकाना विवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषा परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ४ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् कोयविकान्=रुतपूरितप्रावरणविशेषान् यावत् हसगर्भान्=हंशेयवस्त्रविशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणि वस्त्रादीनि ' अत्युय पञ्चत्युयाट् ' आस्तुतप्रत्यवस्तुतानि=श्लक्ष्णप्रावरणप्रावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषा परिपर्यन्तेन यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ५ ।

ततः खलु तेऽश्वा यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

द्रव्योंके पुज एव निकर लगाकर खड़े कर दिये । एक ही वस्तुओंकी जो राशि होती है उसका नाम पुज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है । बाद में वही पर उन्होंने ने अनेक गर्त खड़े किये । गर्त करके उनमें गुडपानक खण्डपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये । बाद में वहा पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । इसी तरह जिन २ वनो में वे घोड़े बैठते थे, सोते थे, टहरते थे, एव लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषो ने अनेक रुई के भरे हुए प्रावरणों को यावत् हसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शनइन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रो को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया । बाद में वे उनके चारों ओर यावत् चुपचाप बैठ गये (तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगंधा तेणेव उवा-

भिक पुरुषोअे गोणना यावत् भीज्ज धण्णा रसनेन्द्रिय (७७) ने सुअ पमाडे तेवा द्रव्येना पुअे अने निकरेा लगावीने अड्डी दीधा अेअ अ वस्तुना ढग-
वाने पुअ तेमअ जुही जुही वस्तुओना ढगवाओने निकर उडे छे त्याअपी ते बोडेअे त्या अ धण्णा आडाओ तैयार र्था ते आडाओमा तेओअे गोण पानड, आडपानड, यावत् भीज्ज पणु धण्णी जतना पानकेा करी दीधा त्थार आड तेओ त्या अ तेमनी थारे तरड निश्चल-निस्पड थअने सुपथाप भेसी गया आ प्रमाअे जे जे वनोमा ते घोडाओ भेमता हता, सूता हता, रडेता हता अने आराम करता हता त्या त्या ते कौटुभिक पुरुषोअे धण्णा इना प्राव ओने यावत् हसगर्भेनि, रेशमी वस्त्रोने तेमअ भीज्ज पणु धण्णा स्पर्शेन्द्रियने सुअ आये तेवा वस्त्रोने वीमा प्रावअेथी आअाहित करी दीधा त्थारपडी तेओ गंधा सुपथाप तेनी थारे तरड भेसी गया

(तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगवा तेणेव उवाग-

દ્રવ્યાણાં પુઝાશ્ચ પરસ્પરમ્બદ્ધસ્વાન નિશરાંશ્ચ નાનાશ્ચિયમ્પુરાશ્ચિચ્ચવાન કુર્વન્તિ,
 ક્ષત્યા તેપામશ્ચાનાં પરિપર્યન્તેન=તર્ગાન્ધિયુ યાત્ તૂળીકામ્નિષ્ઠન્તિ ૩ ।

યત્ર યત્ર ચ ચતુ તેડશ્ચા આમતે ૪ તત્ર તત્ર ચતુ ગુટસ્ય યાત્ અન્યેષાં ચ
 યદ્દના જિહ્વેદિદ્રવ્યાયોગ્યાણા દ્રવ્યાણા પુઝાંશ્ચ નિશરાંશ્ચ કુર્વન્તિ. કૃત્વા 'વિય

૨ ન તેમિ વદ્ધણ કોટ્ટપુટાણં ચ જાત્ર અન્નેસિં ચ વદ્ધણ ઘાણિદિય પાડ
 ગ્ગાણ દ્રવ્યાણ પુજેય નિયરે ચ કરંતિ કરિત્તા તેમિ પરિપેરતેણ જાત્ર
 ચિદ્ધતિ, જત્ય જત્ય ન તે આસા આસયતિ ૪ તત્થ ૨ ન ગુલસ્સ જાત્ર
 અન્નેસિં ચ વદ્ધણ જિહ્વિદિય પાડગ્ગાણ દ્રવ્યાણ પુજે ચ નિયરે ચ કરંતિ,
 કરિત્તા ત્રિયરણ સ્વણતિ, સ્વણિત્તા ગુલપાણગસ્સ ચ્ચડપાણગસ્સ જાત્ર
 અન્નેસિં ચ વદ્ધણ પાણગાણ ત્રિયરે ભરંતિ-ભરિત્તા તેમિ પરિપેરતેણ
 પાસપ ઠવંતિ જાત્ર ચિદ્ધતિ જર્હિ ૨ ચ ન તે આસા આસં તર્હિ ૨ ન તે
 વદ્ધવે કોયચિયા ચ જાત્ર ગચ્ચમાય અણ્ણાણિ ચ વદ્ધણિ ફાસિંદિયપાડ
 ગ્ગાઈ અત્થુપ પચ્ચત્થુગાઈ ઠવંતિ, ઠવિત્તા તેમિ પરિપેરતેણ જાત્ર
 ચિદ્ધતિ) જહા જહા વે ઘોઢે વેઠતે વે, સોતે વે, ઠહરતે વે, હેટતે વે, વહા
 ૨ ડન કૌટુમ્બિક પુરુપો ને ડન અનેક કોટ્ટ પુટોં કે યાવત્ અન્ય ઔર
 ઘાણેન્દ્રિય પ્રાયોગ્ય દ્રવ્યો, કે પુજોં ઘો નિરુરો કો ંકાઞ્ચિત કર દિયા
 ઔર કરકે ફિર વે ડન અશ્વોં કી ચારોં દિશાશ્વોં મેં યાત્ ચુપચાપ વેઠ
 ગયે । જહા ૨ વે ઘોઢે વેઠતે વે, સોતે વે, ઠહરતે વે, હેટતે વે, વહા ૨ ડન
 કૌટુમ્બિક પુરુપો ને ગુઢ કે યાત્ દૂસરે ઔર રસનેન્દ્રિય આલ્લાદક

કરિત્તા તેમિ પરિપેરતેણ જાત્ર ચિદ્ધતિ, જત્ય જત્ય નતે આસા આસયતિ ૪
 તત્થ ૨ ન ગુલસ્સ જાત્ર અન્નેસિં ચ વદ્ધણ જિહ્વિદિય પાડગ્ગાણ દ્રવ્યાણ પુજે ચ
 નિયરે ચ કરંતિ, કરિત્તા ત્રિયરણ સ્વણતિ, સ્વણિત્તા ગુલપાણગસ્સ ચ્ચડપાણગસ્સ
 જાત્ર અન્નેસિં ચ વદ્ધણ પાણગાણ ત્રિયરે ભરંતિ-ભરિત્તા તેમિ પરિપેરતેણ પાસપ
 ઠવંતિ જાત્ર ચિદ્ધતિ જર્હિ ૨ ચ ન તે આસા આસં તર્હિ ૨ ચ ન તે વદ્ધવે કોય
 ચિયા ચ જાત્ર ગચ્ચમાય અણ્ણાણિ ચ વદ્ધણિ ફાસિંદિય પડગ્ગાઈ અત્થુપચ્ચત્થુ
 ગાઈ ઠવંતિ, ઠવિત્તા તેમિ પરિપેરતેણ જાત્ર ચિદ્ધતિ)

જ્યા જ્યા તે ઘોડાઓ બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ
 કરતા હતા ત્યા ત્યા તે કૌટુ બિંક પુરુષોએ તે ઘણા કોષ પુટકોને યાવત્ ખીણ
 પણ ઘણી ઘણેન્દ્રિય (નાક) ને સુખ પમાડે તેવી વસ્તુઓને પુષ્કળ પ્રમા
 ણમાં ત્યા ગોઠવી દીધી, એકઠી કરી દીધી અને એકઠી કરીને તેઓ તે ઘોડા
 ઓને ચારે તરફ યાવત્ ચુપચાપ થઈને બેઠી ગયા તે ઘોડાઓ જ્યા જ્યા
 બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યા ત્યા તે કૌટુ

ए १ विवराणि=गर्तानि सनन्ति, खनित्या गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावद् अन्येषा च बहूना पानकानां विवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषा परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तृष्णीकास्तिष्ठन्ति ४ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽद्या आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् क्रोयविकान्=रुतपरितभावरणविशेषान् यावत् हसगर्भान्=शौशेयवस्त्रनिशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियमायोग्याणि वस्त्रादीनि 'अत्युय पचत्थुयाड' आस्तुतप्रत्यवस्तुतानि=श्लक्ष्णप्रावरणप्रावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषा परिपर्यन्तेन यावत् तृष्णीकास्तिष्ठन्ति ५ ।

ततः खलु तेऽद्या यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

द्रव्योंके पुज एव निकर लगाकर खड़े कर दिये । एक ही वस्तुओकी जो राशि होती है उसका नाम पुज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है । पाद में वही पर उन्हीं ने अनेक गर्त खड़े किये । गर्त करके उनमें गुडपानक खण्डपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये । पाद में वही पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये । इसी तरह जिन २ वनों में वे घोड़े बैठते थे, सोते थे, टहरते थे, एव लेटते थे, वही २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने अनेक रई के भरे हुए प्रावरणों को यावत् हसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शेन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रों को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया । पाद में वे उनके चारो ओर यावत् चुपचाप बैठ गये (तपण ते आसा जेणेव एण उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगधा तेणेव उवा-

जिक पुरुषोअे गोणना यावत् जीण धव्वा रसनेन्द्रिय (अण) ने सुअ प्रमाडे तेवा द्रव्योना पुजे अने निडरे लगावीने अडकी दीधा अेड अ वस्तुना दगलाने पुअ तेमअ जुही जुही वस्तुओना दगलाओने निकर उडे छे त्यारपधी ते दोकोअे त्या अ धव्वा आडाओ तैयार ठ्या ते आडाओमा तेओअे गोण पानक, आडपानक, यावत् जीण पण धव्वा जतना पानको भरि दीधा त्यार आद तेओ त्या अ तेमनी आरे तरक् निश्चल-निस्पद थधने सुपयाप जेसी गया आ प्रमाव्हे जे जे वनोमा ते घोडाओ जेसता डता, सूता डता, रडेता डता अने आराम डरता डता त्या त्या ते कोटु जिक पुरुषोअे धव्वा इना प्रावरणोने यावत् हसगर्भोने, रेशमी वस्त्रोने तेमअ जीण पण धव्वा स्पर्शेन्द्रियने सुअ आपे तेवा वस्त्रोने वीसा प्रावरणोथी आच्छादित करि दीधा त्यारपधी तेओ अधा सुपयाप तेनी आरे तरक् जेमी गया

(तपण ते आसा जेणेव एण उक्किट्ठा सदफरिसरसरुवगधा तेणेव उवाग-

उपागत्य तत्र खल-‘अत्येगऽया’ अन्येके=केचिद् अथा-‘अपूर्वाः=अदृष्टपूर्वाः
खल इमे शब्दस्पर्शरसस्पर्शगन्धाः सन्ति’ इति श्रुत्या=इति विहित्य तेषु उत्कृष्टेषु=
आकर्षकेषु शब्दस्पर्शरसस्पर्शगन्धेषु ‘अगुच्छिया’ अमूर्च्छिता=मूर्छारहिता,
मातृहेयोपादेयविशेषाः अगुच्छा=अमूर्च्छिताः, अप्रयिताः=लोभतन्तुभिरचट्टाः,
अनध्युपपन्ना=तदेनाप्रतारहिताः किञ्चिन्मात्रमपि तेष्वसक्तिमकृपाणाः सन्तः
तेषामुत्कृष्टानां ‘सद्य जात्र गंधाण’ शब्दस्पर्शरसस्पर्शगन्धानां दूरदूरेण=अतिदूरत
एव ‘अयस्कमति’ अपक्रामन्ति=पलायन्ते स्म । ते च सन्तु तत्र प्रचुरगोचराः=
प्रचुरचरणभूमयः प्रचुरनृणपानीया, निर्मयाः, निरुद्धिनाः ‘सुह सुहण’ सुख
सुखेन=सुखपूर्णं विहरन्ति ।

गच्छति, उपागच्छिता तत्थ ण अत्थे गड्ढया आसा अपुग्वा ण इमे सद-
फरिसरसरुवगघाड ति कड्डु तेषु उक्किट्टेषु सदफरिसरसरुवगघेसु
अमुच्छिया ४ तेषि उक्किट्टाण सद जात्र गंधाण दूरं दूरेण अयस्कमति)
षादमे वे अश्व जहा ये पूर्वोक्त उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप गंध और
स्पर्शघाते पदार्थ ये वहा पर आये वहा आकर के इनमें कितनेक अश्व
“ ये शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध अदृष्टपूर्व हैं ” ऐसा विचार कर उन
आकर्षक शब्द रूप, रस, स्पर्श एवं गंधों में-उन पदार्थों में-मूर्च्छित
नहीं बने । हेय उपादेय के विवेक से युक्त बने हुए वे कितनेक अश्व उन
में आसक्ति से रहित ही रहे लोभतन्तु से चन्धे नहीं । तथा किञ्चि
न्मात्र भी उनमें आसक्ति नहीं करते हुए वे उन शब्द, स्पर्श रूप, और
गंधों को बहुत ही दूर से छोड़कर चल दिये । (तेण तत्थ पउरगोचरा

गच्छति, उपागच्छिता तत्थ ण अत्येगऽया आसा अपुग्वा ण इमे सदफरिसरसरुव
ति कड्डु तेषु उक्किट्टेषु सदफरिसरसरुवगघेसु अमुच्छिया ४ तेषि उक्किट्टाण सद
जात्र गंधाण दूरं दूरेण अयस्कमति)

त्यारपणी ते घोडाओ आ गंधा पूवे भूकेला उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस
रूप अने गंधवाणा पदार्थो हुता त्या आग्या त्या आवीने तेओभाथी डेट
लाक घोडाओ ‘ आ शब्द स्पर्श, रस, रूप अने गंध अदृष्टपूर्व छे ” आम
विचार करीने ते आकर्षक शब्द, रूप, रस, स्पर्श अने गंधवाणा ते पदा
र्थोभा भूछित (मोक्षध-बोद्धुप) यहा नहि छेय अने उपादेयना विवेकथी
सावध बनेला डेटलाक घोडाओ ते पदार्थोभा निरासकत न रह्या तेओ बोध
इपी दारीथी गंधाया नहि थोडी पण आसक्ति जाताया वगर तेओ ते
शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गंधवाणा पदार्थोभा पूग करथी न छोडीने जाता
रह्या (तेण तत्थ पउरगोचरा पउरत्तणराणिया निज्झया निरुद्धिग्गा सुह

अथोपनय प्रदर्शयति,—‘एवामेव’ एवमेव=अवदाधमूर्तिताकीर्णाश्वत् ‘सम
णाउसो’ हे आयुष्मन्त श्रमणा ! योऽस्माकं निर्ग्रन्थी वा यावत्-आचार्योपा-
ध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् अवदस्पर्शरसरूपगन्धेषु ‘नो सज्जइ’ नो सज्जते=
आसक्तिमान् न भवति ‘नो रज्जइ’ नो रज्ज्यते अनुरक्तो न भवति, नो गृयति,
न वाञ्छति, नो मुषति=न मूर्छति, नो अयुषपद्यते=न तल्लीनो भवति, स खलु
इह लोक एव गृह्णा श्रमणादीना चतुर्विधसङ्घस्य अर्चनीयः=समाननीय. यावत्
चातुरन्तससारकान्तर ‘वीडइस्सइ’ व्यतित्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति-पारं
गमिष्यतीत्यर्थ ॥ सू० ३ ॥

पउरत्तणपाणिग्या णिग्गया णिरुव्विग्गा सुह सुहेण विहरति) और
जगल में ही जो प्रचुरचरने की जमीन थी-जिममें अधिक से अधिक
मात्रा में तृण और पानी भरा हुआ रहता था उसमें ही निर्भय, निरु-
द्विग्न होकर सुखपूर्वक रहे। अब इस दृष्टान्त का उपनय प्रदर्शित करने
के लिये सूत्रकार कहते हैं-। (एवामेव समणाउसो। जो अम्ह णिग्गयो
वा णिग्गयी वा जाव सह फरिसरसरुवगघेसु णो सज्जइ णो
णो रज्जइ, जो गिज्जइ, णो मुज्जइ, णो अज्झोववज्जेइ, से ण इह
लोए चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीडइस्सइ) हे आयु-
ष्मन्त श्रमणो ! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन एव निर्ग्रन्थी
साध्वी जन आचार्य उपाधय के पास प्रव्रजित होकर शब्द स्पर्श, रस,
रूप, और गन्ध इन पाँचों इन्द्रियों के विषयों में आसक्ति युक्त नहीं
होता है, अनुरक्त नहीं बनता है, उन्हें चाहता नहीं है, उनमें मूर्छित
नहीं होता है, उनमें तल्लीन नहीं होता है, वह इस लोक में ही अनेक

सुहेण विहरति) अने वनभा ४ प्रचुर चरवानी ४भीन होती, तथा वधादेमा
वधादे धास अने पाणी होता तथा ४ निर्ग्रन्थ, निर्विद्विग्न यद्यने सुभयी रहेवा
लाग्या हवे आ दृष्टान्तने। उपनय स्पष्ट करवा भाटे सूत्रकार छे छे छे —

(एवामेव समणाउसो जो अम्ह णिग्गयो वा णिग्गयी वा जाव सहफरिस-
रसरुवगघेसु णो सज्जइ णो रज्जइ, जो गिज्जइ, णो मुज्जइ, णो अज्झोववज्जेइ,
से ण इहलोए चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीडइस्सइ)

हे आयुष्मन्त श्रमणो ! आ प्रभावे ४ अने हमारा निर्ग्रन्थ साधुज्यो
हे निर्ग्रन्थ साध्वीज्यो आचार्य के उपाध्यायनी पासे प्रव्रजित यद्यने शब्द,
स्पर्श, रस, रूप अने गन्ध आ पासे इन्द्रियोना विषयोमा आसक्त यता
नथी अनुरक्त यता नथी, तेमने छच्छता नथी, तेज्योमा मूर्छित यता ॥

शब्दस्पर्शरसस्वगन्धार ' आसेवमाणा ' आसेवमानाः तत्पुण्यानुभव कुर्याणाः तैर्ब्रह्मि रूढैश्च यन्धनविशेषैः, पाशैश्च रज्ज्वादिरूपैः गलणसु=गलेषु=कण्ठेषु पाठेषु च ' वज्जति ' वयन्ते-ते कौटुम्बिकपुरुषास्तान्ध्यानं यन्ति स्मैत्यर्थः । तत्

घोड़ों में से कितनेक घोड़े ऐसे भी थे जो जरा थे उत्कृष्ट शब्द स्पर्श रस, रूप एव गंध ये पांचों इन्द्रियों के आकर्षक विषय थे जरा आकर उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श आदि विषयों में मूर्छित यात्रु तल्लीन बनगये। और उन्हें सेवन करने में प्रवृत्त भी हो गये। (तएण ते आसा ते उक्खिंहे सइ ५ आसेवमाणा तेसि बहूहि कूडेहि य पासेहि य गलणसु य पाणसु य वज्जति, तएण ते कौटुम्बियपुरिसा ते आसे गिण्हति गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं य पोयवहणे सचारेंति, सचारित्ता तणस्स कट्टस्स जाव भरेंति, तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लभेंति-लवित्ता ते आसे उत्तारेंति) इसके बाद वे घोड़े उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श रस, रूप, एव गंध इन पांचों इन्द्रियों के विषयों को सेवन करते हुए रज्ज्वादिरूपयन्धन विशेषों द्वारा कठों और पैरोंमें बांध लिये गये। अर्थात् उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इन घोड़ों को उस समय रस्सियों द्वारा बांध लिया। बांध करके फिर उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उन्हें पकड़ लिया पकड़

लिया ते उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप एव गंध आ पांचे इन्द्रियोना आकर्षक विषयो हुता त्या आवीने ते उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श वगैरे विषयोभा मूर्छित (आसकत) यावत् तत्त्वहीन थई गया एव तेभना सेवनभा प्रवृत्त भवु थई गया

(तएण ते आसा ते उक्खिंहे सइ ५ आसेवमाणा तेसि बहूहि कूडेहि य पासेहि य गलणसु य पाणसु य वज्जति, तएण ते कौटुम्बियपुरिसा ते आसे गिण्हति गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं य पोयवहणे सचारेंति, सचारित्ता तणस्स कट्टस्स जाव भरेंति, तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लभेंति-लवित्ता ते आसे उत्तारेंति)

त्यारपणी ते घोडाओ उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप एव गंध आ पांचे इन्द्रियोना विषयोन सेवन करता होरडाओ वगैरे रूप यन्धन विशेषथी डाके एव पगोभा बंधाई गया ओटले के ते कौटुम्बिक पुरुषोओ ते घोडा ओने होरडाओथी बांधी बांधी आधीने ते कौटुम्बिक पुरु

खलु ते कोटुम्बिरुपुरुषास्तान्भान् गृह्णन्ति, गृहीत्वा 'एगद्वियाहिं एकार्थिनाभि' =
 लघुनौकाभि पोतवहने=वृहन्नौकाया 'सचारैति' सञ्चारयन्ति=आगोहयन्ति
 सञ्चार्य तृणस्य काष्ठस्य च यावत् पोतवहन भरति तृणकाष्ठादिभिरितिभानः ।
 ततः खलु ते सयात्रनौकावाणिजकाः दक्षिणानुकूलेन=स्वानुकूलेन यातेन यत्रैव
 गम्भीरपोतपत्तन=पोतव्यनस्थान तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहन 'लपेति'
 लम्बयन्ति=शकुपु वद्ध्वा स्थापयन्ति, लम्बयित्वा तान्=अवान् 'उत्तारैति'
 उत्तारयन्ति, उत्तार्य यत्रैव हस्तिशीर्षं नगरं यत्रैव कनककेतुं राजा तत्रैवोपाग-
 च्छन्ति, उपागत्य 'करयल जाव' करतलपरिगृहीत शिरआनसं दशनख मस्तके-

कर फिर उन्हें छोटी २ नौकाओं द्वारा लाकर बड़ी नौका में चढ़ाया-
 चढ़ा करके फिर उसमें तृण और काष्ठ आदि को भरा। इसके बाद वे
 सांयात्रिक पोतवणिक दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर जहा गम्भीर
 नामका पोतवहण (चन्द्रगाह) था वहा आये। वहां आकर के उन्होंने ने
 अपने पोत को लगर डालकर ठहरा दिया। ठहरा कर उन अन्वों को
 उस पोत से फिर उन्होंने ने नीचे उतार लिया। (उत्तारित्ता जेणेव
 हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राजा तेणेव उवागच्छति उवाग-
 च्छित्ता करयल जाव वद्धावेति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेति, तएण
 से कणगकेऊ तेसिं सजत्ता णावावाणिजगाण उस्सुक्क विपरइ, विय
 रित्ता सक्कारेइ समाणेइ सक्कारित्ता समाणित्ता पडिविसज्जेइ) उतार
 कर फिर वे वहां उन्हें ले गये जहा हस्तिशीर्षं नगर और उसमें भी

पकड़ी लीधा पकड़ीने तेभण्णे नानी नानी छोड़ीओ वडे भोग वडाणुभा यडाव्या
 यडाव्या भाइ तेओओ तेभा धाम ओने णअ लयां त्यारपणी ते सायात्रिक
 पोतवणिके दक्षिणने अनुकूल पवन वडेवा लाग्ये त्यारे त्याथी रवाना धधने
 न्या गभीर नामे पोतवहण (चन्द्र) डेतु त्या आव्या त्या आवीने तेभण्णे
 पोताना वडाणुने लगर नाणीने डोक्यु त्य रणाइ तेभण्णे छोडाओने वडाणु
 भाथी नीचे उतार्या

(उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राजा तेणेव उवा-
 गच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेति, तएण
 से कणगकेऊ तेसिं सजत्ता णावा वाणिजगाण उस्सुक्क विपरइ, विपरित्ता
 सक्कारेइ, समाणेइ, सक्कारित्ता, समाणित्ता पडिविसज्जेइ)

नीचे उतारीने तेओ ते छोडाओने हस्तिशीर्षं नगरभा न्या कनककेतु
 राजा डेतो त्या लय गया त्या जधने पडेवा तेभण्णे णने छोड नेडीने राज

ऽञ्जलिं कृत्वा 'चढावेति' पर्वयति जयविजयशब्देनाभिनन्दन्ति, वर्द्धयित्वा तान् अध्वान् राज्ञः समीपे 'उत्तरेति' उपनयन्ति । ततः खलु स कनककेतु राजा तेषां सयाग्रनौकायाणिजराणाम् 'उत्सृष्ट' उत्सृष्टम्='पश्य' केनापि परो न ग्राह्य 'इत्येवम्पमाज्ञापत्रं वितरति=ददाति, विनीय सत्कारोति-मधुर वचनोदिभिः, सुमानयति-वत्सादिभिः, सत्कार्यं सम्मानय प्रतिविसर्जयति ।

ततः खलु स कनककेतु राजा 'आसमद्वय' अभ्यर्चकान्=अभ्यर्चकान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमयादीत्-यूय खलु हे देवानुप्पियाः ! ममाध्वान् 'विण एह' विनयत=शिक्षयत-गत्यादिरुद्राकुशकान् कुरुतेत्यर्थः । ततः खलु तेऽभ्यर्चकाः 'तदति' तथेति 'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा पतिवृषन्नि=नृपाज्ञा स्वीकृन्ति,

जहा कनककेतु राजा थे । वहा जाकर उन्होंने पहिले दोनों हाथ जोड़ कर राजा कनककेतु को नमस्कार किया-जय विजय शब्दों द्वारा उन्हें यथाई दी-वयाई देकर पाद में उन घोड़ों को उनके समक्ष उपस्थित कर दिया इसके पाद कनककेतु राजा ने उन सांयाग्रिक पोतवणिक्जनों के लिये निःशुल्क (कररहित) अरुस्था वितरित की इन्हों से कोई भी राज्यकर्मचारी टेक्स न लेवे इस प्रकार का आज्ञापत्र उन्हें लिखकर दे दिया । आज्ञापत्र लिखकर देने के बाद राजाने उनका मधुर वचनों द्वारा नत्कार किया । वत्सादि प्रदान पूर्वक उनका सम्मान किया । फिर सत्कार म मान करके उन्हें विसर्जित कर दिया । (तएण से कणककेऊ कोडुयिपुुरिसे सदावेइ, सदावित्ता सक्कारेति० पडिविसज्जेइ, तएण से कणगकेऊराया आसमद्वय सदावेइ सदावित्ता एव वयासी तुम्भेण देवानुप्पिया ! मम आसे विणएह) इस के बाद कनककेतु राजाने कौड

कनककेतुने नमस्कार कर्ना अने जय-विजय शब्दों वडे तेभने वधाभणी आपी वधाभणी आपीने तेभण्णे ते अध्वान् घोडाओने तेभनी साथे उपस्थित कर्था त्थारपणी कनककेतु राजाओ ते सायाग्रिक पोतवणिक्केने भाटे कर भाड़ी करी आपी तेभनी पासैथी कोइ पणु राज्या कर्मचारी कर (टेक्स) ले नहि तेउ आज्ञापत्र तेभने लणी आण्यु आज्ञापत्र आपीने राजाओ तेभने मधुर वचनो वडे सत्कार कर्थो अने वत्सा वजेरे आपीने तेभनु सम्मान कर्थु त्थारपणी तेभने विहाय कर्था

(तएण से कणगकेऊ कोडुयिपुुरिसे सदावेइ, सदावित्ता सक्कारेति० पडिविसज्जेइ, तएण से कणगकेऊ राया आसमद्वय सदावेइ सदावित्ता एव वयासी तुम्भेण देवानुप्पिया ! मम आसे विणएह)

प्रतिश्रुत्य तान् अध्वान् बहुभिर्मुखमन्थैश्च कर्णवैश्च नासाभ्यैश्च बालमन्थैश्च
केशमन्थैरित्यर्थः खुरमन्थैश्च 'खलिणमधेहि य' खलीनमन्थैः 'लगाम' इति
प्रसिद्धमन्थैः, 'अहिलाणेहि य' अभिलानैः='जीन' इति प्रसिद्धैः, पडिया-
णेहि 'पर्याणकैः='तग' इति प्रसिद्धैश्चर्ममयैरश्वोपकरणविशेषैः, 'अरुणाहि य'
अङ्गनाभिः='तप्तलोहशलाकादिभिरङ्गनकरणैश्च 'चित्तप्पहारेहि य' वेत्रप्रहारैश्च

भ्यिक पुरुषो को बुलाया, बुलाकर उनका आदर सत्कार किया। फिर
उन्हें विसर्जित कर दिया। इसके पश्चात् कनककेतु राजा ने अश्वशिक्ष
कों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुम
इन हमारे इन घोड़ों को शिक्षित बनाओ-गन्यादिकला में निपुण करो।
(तएण ते आसमद्गता नहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणिच्चा ते आसे वह्हिं सुह
मुह वधेहि य रुण्णवधेहि णासा वधेहि य बालवधेहि य खुरवधेहि य
खलिणवधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहि य अरुणाहि य चित्तप्पहारेहि
य कसप्पहारेहि य छिप्पहारेहि य विणयति) राजा कनककेतु की इस
आज्ञा को उन अश्वमर्दकों ने "तहत्ति" कहकर स्वीकार कर लिया।
स्वीकार करके फिर उन्होंने ने अनेक विध मुख बधनों से, कर्णबधनों से
नासाबधनों से लगामरूप बधनों से अभिलानों से-पल्लेचाओ से-पर्या
णकों से तगों के कसने से-अरुनों से-तप्त हुई लोहकी शलाकाओं
द्वारा डाम लगाने से वेत्र के प्रहारों से, लताओंके प्रहारोंसे, चाबुकों के

त्यारपणी कनककेतु राजाએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા, બોલાવીને
તેમનો સત્કાર કર્યો અને પછી તેમને વિદાય કર્યા ત્યારબાદ કનકકેતુ રાજાએ
અશ્વશિક્ષકોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવા
નુપ્રિયો! તમે અમારા આ ઘોડાઓને શિક્ષિત બનાવો, દોડવા વગેરેની કળા-
ઓમાં નિપુણ બનાવો

(તણ તે આસમદ્ગતા તહત્તિ પડિસુણેંતિ, પડિસુણિચ્ચા તે આસે વહ્હિં મુહ
વધેહિ ય રુણ્ણ વધેહિ ણાસા વધેહિ ય બાલવધેહિ ય સુર વધેહિ ય સ્વલ્લિણ
વધેહિ ય અહિલાણેહિ ય પડિયાણેહિ ય અરુણાહિ ય ચિત્તપ્પહારેહિ ય કસપ્પહારે-
હિ ય કરુપ્પહારેહિ ય છિપ્પહારેહિ ય વિણયતિ)

રાજા કનકકેતુની આજ્ઞાને તે અશ્વમર્દકોએ "તહત્તિ" કહીને સ્વીકારી
લીધી સ્વીકાર કરીને તેમણે ઘણી ભતના મુખ બધનોથી, કર્ણ બધનોથી,
નાસા બધનોથી, વાળ બધનોથી, ખુર બધનોથી, લગામ રૂપ બધનોથી,
અભિલાનોથી, પહેચાઓથી, પર્યાણકોથી, તગોને કસવાથી, અરુનોથી, તપા
વવામાં આવેલી લોખંડની શળીઓ વડે ડામવાથી, લતા

‘લયપ્પહારેદિ ચ’ લનાપહારેથ, ‘કળપ્પહારેદિ ચ’ કળાપહારેથ ‘વજા’-
 ચાણુક’ ઇતિ માપાયામ્, ‘ત્રિપ્પહારેદિ ચ’ ત્રિપાપહારે = ત્રિમયચિત્રકળા
 પહારેથ ‘ત્રિણયંતિ’ ત્રિનયંતિ = ત્રિણયંતિ, ત્રિનીય = ત્રિણયિન્યા વનકકેતો રાજા
 ઉપનયન્તિ । તત’ રાત્તુ સઃ કનકકેતુ રાજા તાન અશ્વમર્દકાન્ મત્કરોનિ મમ્મા
 નયતિ, સન્કૃત્ય સમ્માન્ય પ્રતિવિસર્જયતિ । તતઃ રાત્તુ તેઽઘાઃ વહુર્મિર્મુગ્યન્યૈશ્ચ
 યાવત્-ત્રિપાપહારેથ વહુનિ સારીરમાનસાણિ દુઃખાણિ પ્રાપ્નુન્તિ ।

‘પ્રામેય’ પ્રમેય = શબ્દાદિત્રિપયમૂર્તિવાર્તાનાંશ્વયત્ ‘સમણાડસો’ હે
 આયુષ્મન્તઃ શ્રમણા । યોઽસ્માકુ નિર્ગ્રન્થો યા નિર્ગ્રન્થી યા આચાર્યેવાયાયાનામ-
 ન્તિકે પ્રવ્રજિતઃ સન્ ઇષ્ટેષુ શન્દરપર્શરસરૂપાગ યેષુ ‘મજ્જઈ’ સજ્જતે = આસક્તો

પ્રહારો સે, ત્રિપા-ચર્મ ફી વની છુઈ ચિકની વજાઓં કે પ્રહારોં સે ઉન
 ઘોડોં કો શિક્ષિત વના દિયા । (ત્રિગયિત્તા કળગકેઝમ્મ રણો ઉવળેતિ
 તણ સે કળગકેઝરાયા તે આસમદ્દપ્પ મજ્જારેઝ સત્કારિત્તા પઢિવિસ
 જ્ઞેઈ, તણ તે આસા વહુઈ મુદ્ધવધેઈ જાય ત્રિપ્પહારેદિ ચ વહુણિ
 સારીરમાનસાણી દુઃખરાઈ પાવેતિ) શિક્ષિત વનાર ફિર વે ઉન
 ઘોડો કો કનકકેતુ રાજા કે પામ લે ગયે । વાગ્મે રાજા કનકકેતુ ને
 ઉન અશ્વમર્દકો કા સત્કાર સન્માન ક્રિયા । મત્કાર સન્માન કરકે ફિર
 ઉન્ને વિસર્જિત કર દિયા । વે ઘોડે લેરુર અનેક વિધ ઉન મુગ્ધ વધનોં
 સે યાવત્ ચર્મમય ચિત્રકળકુશાઓ કે પ્રહારોં સે નાના પ્રકાર કે શા
 રીરિક ણવ માનસિક દુઃખો કો પાને લગે । (પ્રામેય સમણાડસો !
 જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી વા પવ્વડણ સમાણે ઇદ્દેસુ મદ્દફરિસરસ

ઓના પ્રહારોથી આણુકના પ્રહારોની, ત્રિપા આમડાના બનેલા લીસા આણુ
 કોના પ્રહારોથી તે ઘોડાઓને કેળવના

(ત્રિગયિત્તા કળગકેઝ રાયા તે આસમદ્દપ્પ મજ્જારેઝ, સત્કારિત્તા પઢિવિસ
 જ્ઞેઈ તણ તે આસા વહુઈ મુદ્ધવધેઈ જાય ત્રિપ્પહારેદિ ચ વહુણિ સારીર-
 માનસાણી દુઃખરાઈ પાવેતિ)

કેળવોને-શિક્ષિત બનાવીને તે ઘોડાઓને તેઓ કનકકેતુ રાજા પાસે
 લઈ ગયા ત્યારપછી કનકકેતુએ તે અશ્વમર્દકોનો સત્કાર તેમજ સન્માન ડ્યું
 સત્કાર અને સન્માન કરીને તેમને વિસર્જિત ડ્યો તે ઘોડાઓ ઘણા મુગ્ધ
 બધનોથી યાવત્ આમડાના લીસા આણુકોના પ્રહારોથી અનેક ભતના શારી
 રિક અને માનસિક દુઃખો ભોગવા લાગ્યા

(એવામેવ સમણાડસો ! જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગયી યા પવ્વડણ સમાણે
 ઇદ્દેસુ મદ્દફરિસરસરૂવગધેસુ ય સજ્જઈ, રજ્જઈ, મિજ્જઈ, મુજ્જઈ,

भवति, 'रञ्जइ' रज्यते=अनुगृह्यते भवति, 'गिज्जइ' गृह्यति=तद्वाङ्मयासक्तो भवति, 'मुज्जइ' मुञ्चति=मूर्च्छितो भवति, 'अज्जोववज्जइ' अ-युपपद्यते=सर्वथा तल्लीनो भवति, स खलु इह लोक एव वह्ना श्रमणा च यावत्-श्रमणीनां श्रावकाणां श्राविकाणां च 'हीलणिज्जे' हीलनीय यावत् चातुरन्तससारकान्ता-
रम् 'अणुपरियट्ठिस्सइ' अनुपर्यट्टयति=भ्रमिष्यतीति भावः ॥सू०४॥

मूलम्-कलरिभियमहुर ततीतलतालवंसकउहाभिरामेसु ।

सहेसु रज्जाणा रमति सोइंदियवसट्ठा ॥ १ ॥

सोइंदियदुहन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।

दीविगरुयमसहसो वहवध तित्तिरो पत्तो ॥ २ ॥

टीका-अयेन्द्रियासरणदोगान् गाथाभिः प्रदर्शयति-'कलरिभिय०' इत्यादि कलरिभितममुस्तन्त्री तल तालवसककुदाभिरामेषु ।

रુવગધેસુ ય સજ્જઇ, રજ્જઇ, ગિજ્જઇ, મુજ્જઇ, અજ્જોવવજ્જઇ, સેણ
इहलाहे चैव ग्रहण समाणाण य जाव साविषाण य हीलणिज्जे जाव
अणुपरियट्ठिस्सइ) इसी प्रकार हे आयुष्मन् श्रमणो ! जो हमारा
निर्ग्रन्थ साधुजन अथवा साध्वीजन आचार्य उपाध्याय के पास
प्रव्रजित होता हुआ इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांचों
इन्द्रियों के विषयों में आसक्त होता है, अनुरक्त होता है,
उनकी चाह से बंधता है, उनमें मूर्च्छित बनता है, सर्व प्रकार से
उनमें तल्लीन होता है वह इस लोक में ही अनेक श्रमणजनों द्वारा
श्रमणी, श्रावक और श्राविकाओं द्वारा हीलनीय-निन्दा का पात्र-होता
है यावत् वह चतुर्गतिरूप इस ससार कान्तार में भटकता है ॥ सू०४ ॥

સેણ इहलोए चैव ग्रहण समाणाण य जाव साविषाण य हीलणिज्जे जाव अणु
परियट्ठिस्सइ)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મત શ્રમણે ! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુજનો કે
સાધ્વીજનો આચાર્ય અથવા ઉપધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થાને ઈષ્ટ, શબ્દ,
સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઈન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત હોય
છે, અનુરક્ત હોય છે, તેમની ઈચ્છા કરીને તેઓમાં બાંધાઈ જાય છે, તેઓમાં
મૂર્છિત બની જાય છે, બધી રીતે તેઓમાં તલ્લીન બની જાય છે તે આ
લોકમાં જ ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ઘણી શ્રમણી, શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ
વડે હીલનીય-નિન્દનીય-હોય છે યાવત્ તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ સસાર-કાતારમાં
પડ્યુંકતો રહે છે ॥ સૂત્ર ૪ ॥

શબ્દેષુ રજ્યમાના, રમન્તે શ્રોત્રેન્દ્રિયસાચાર્તા ॥ ૧ ॥

શ્રોત્રેન્દ્રિયદુર્દાન્તત્ત્વસ્ય અથ એતાયાન મત્તિ દોષઃ ।

દ્વીપિકાસ્તમસહમાનો, -વધયન્થ તિત્તિર પ્રાપ્તઃ ॥ ૨ ॥

શ્રોત્રેન્દ્રિયસાચાર્તાઃ=કર્ણેન્દ્રિયસાચાર્તિન. યન્નાઃ શ્રવણમુમ્મદાઃ રિમિતાઃ સ્વા
તલતાલવશા -વીણા-કરતાલ વેણસ્તે સમુદ્ગામિત્વાત્-પ્રદુદ્-પ્રયાનાઃ, અમિ
રામાઃ-મનોહરાસ્તેષુ-શબ્દેષુ રજ્યમાનાઃ=અનુક્રાન્તાઃ સન્તઃ રમન્તે=મોદન્તે ॥ ૧ ॥
'સોદિયે' ત્યાદિ । 'સોદિયદુદ્ગત્ત્વસ્મ' શ્રોત્રેન્દ્રિયદુર્દાન્તત્ત્વસ્ય શ્રોત્રેન્દ્રિય
દુર્દાન્ત યસ્ય સ શ્રોત્રેન્દ્રિયદુર્દાન્ત =શ્રોત્રેન્દ્રિયસ્ય જેતુમશ્રવણતયા તદ્વશચર્તીત્યર્થઃ,
તસ્ય ભાવસ્તત્ત્વ, તસ્ય, શ્રોત્રેન્દ્રિયાધીનતાયાઃ, 'એતિઓ' એતાયાન્=વક્ત્ર્યમાણ
પ્રકારકઃ દોષો મત્તિ । ત સદૃશાન્તં પ્રદર્શયતિ-'દીપ્તિરુપમસહતો' દ્વીપિકા
તમસહમાન'-દ્વીપિકા=વ્યાધ પઞ્જરસ્થિતિત્તિર', તસ્યાઃ સ્ત શબ્દમ્ અસહમાન =

'કલરિમિય' ઇત્યાદિ ।

અથ સૂત્રકાર, ઇન્દ્રિયોં કે અસરણ સે જો દોષ ઉત્પન્ન હોતે હૈં
ઉન્હેં ઇન ગાથાઓં દ્વારા પ્રદર્શિત કરતે હૈં-કર્ણેન્દ્રિય કે વશચર્તી બને હુણ
પ્રાણી ફલ-શ્રવણ સુખદ, રિમિત-સ્વરોં કે ઘોલના વિશેષ સે યુક્ત એસે
મધુરપ્રિય, તત્રી-વીણા, તલતાલ-કરતાલ, વશ-વાસુરી ઇન સે ઉત્પન્ન
હોને કી વજહ સે રુદ્ધ-અત્યન્ન, અભિરામ-મનોહર એસે શબ્દોં મેં
અનુરક્ત હોતે હુણ યથાપિ મુદિતમન હોતે હૈં પરન્તુ શ્રોત્રેન્દ્રિય ડાનકી
દુર્દમન હોનેકે કારણ-શ્રોત્રેન્દ્રિય ડાનકી જિતનેમે અશક્ય હોનેકે કારણ
તદ્વશચર્તી બને હુણ વે પ્રાણી જિસ તરહ વ્યાધ કે પઞ્જર મેં રહી હુઈ
તિત્તિરી કે શબ્દ કો સુનકર તીતરપક્ષી-કામરાગ કે વશ સે આકૃષ્ટ

'કલરિમિય' ઇત્યાદિ—

સૂત્રકાર હવે ઇન્દ્રિયોના અસરણથી જે દોષો ઉત્પન્ન થાય છે તેમને
આ ગાથાઓ વડે પ્રદર્શિત કરે છે કર્ણેન્દ્રિયના વશમાં થયેલા પ્રાણીઓ કવ-
શ્રવણ સુખદ, રિમિત સ્વરોને વિશેષ રૂપમાં મેળવવાથી ઉત્પન્ન થયેલા ધ્વનિ,
મધુર-પ્રિય, તત્રી-વીણા, તલતાલ-કરતાલ, વશ-વાસણી એમનાથી ઉત્પન્ન
હોવા બદલ રુદ્ધ-અત્યન્ન, અભિરામ-મનોહર એવા શબ્દોમાં અનુરક્ત થતા
જે કે તેઓ મુદિતમન-પ્રસન્ન થાય છે પરન્તુ તેમની શ્રોત્રેન્દ્રિય (કાન) હૃદ
મનીય હોવા બદલ એટલે કે મશ્રોત્રેન્દ્રિય ઉપર કાબુ મેળવવાનું કામ તેમના
માટે અશક્ય હોવા બદલ તેને વશ થયેલા પ્રાણીઓ જેમ વ્યાધા-શિકારીના
પીંજરામાં સપડાઈ ગયેલી તિત્તિરીના શબ્દને સાંભળીને તીતર પક્ષી

તિત્તિર વધ=મરણ વન્ધ=પંજરાદિ પન્થન પ્રાપ્ત:-પ્રાપ્નોતીત્યર્થઃ ‘અય’
વાક્યાલઙ્કારે ॥ ૨ ॥

મૂલમ્—થળજહ્ણવચનકરચરણનયનગર્વિતવિલાસિયગર્હસુ ।

રૂપેસુ રઙ્ગમાણા રમંતિ ચર્ચિત્વદિયવસદ્વા ॥ ૩ ॥

ચર્ચિત્વદિયદુદ્ધતત્તણસ્સ અહ એત્તિઓ ભવઈ દોસો ।

જં જલણંમિ જલતે પડઈ પયંગો અવુદ્ધીઓ ॥ ૪ ॥

ટીકા—સ્તનજઘનપદનરૂચરણનયનગર્વિતવિલાસિતગતિષુ ।

રૂપેષુ રઙ્ગમાણા, -રમન્તે ચક્ષુરિન્દ્રિયવશાર્તાઃ ॥ ૩ ॥

ચક્ષુરિન્દ્રિયદુર્દાન્તત્તસ્ય અથ એતાવાન્ ભવતિ દોષઃ ।

યદ્જ્વલને જ્વલતિ, પતતિ પતદ્ભઃ અનુદ્વિકઃ ॥ ૪ ॥

‘થળે’ ત્યાદિ । ચક્ષુરિન્દ્રિયવશાર્તાઃ સ્ત્રીણા સ્તનજઘનાદિ રૂપેષુ રઙ્ગમાણાઃ
=અનુરક્તા રમન્તે ॥ ૩ ॥

જ્વલને=અગ્નૌ । ઝેષ સુગમમ્ ॥ ૪ ॥

હોકર વધ ઓર વધન કો પાતા હૈં ઉસી તરહ નાના પ્રકાર કૈં વધ વધનો
કો પાયા કરતે હૈં ॥ ગા. ૧-૨ ॥

‘થળજહ્ણ, ચર્ચિત્વદિય’ ઇત્યાદિ ।

યદ્યપિ ચક્ષુરિન્દ્રિય કૈં વિષય કી પ્રાપ્તિ કરને મેં વ્યાકુલ હુણ પ્રાણી
ઉસ વિષય કી પ્રાપ્તિ હોને પર આનન્દમગ્ન બન જાયા કરતે હૈં—વે સ્ત્રીયોં
કૈં સ્તન, જઘન, વદન, કર, ચરણ, નયન, ગર્વિત વિલાસયુક્ત ગમના
દિરૂપ ચક્ષુરિન્દ્રિય કૈં વિષય કો વાર વાર દેખકર આસક્ત હોતે હૈં—
પરન્તુ યહ ઇન્દ્રિય જગ દુર્દાન્ત બન જાયા કરતી હૈં—તચ એસે પ્રાણી જિસ

આવેશમા આવને મૃત્યુ તેમજ બધનને પ્રાપ્ત કરે છે, તેમજ અનેક જાતના
વધબધનો મેળવે છે “ગા ૧-૨”

થળ જહ્ણ ચર્ચિત્વદિય ઇત્યાદિ—

જે કે ચક્ષુરિન્દ્રિયોના વિષયોને મેળવવા માટે અત્યંત ઉત્સુક બનેલા
પ્રાણીઓ તે વિષયોની પ્રાપ્તિ થઈ જતા બાદ આનંદમગ્ન થઈ જાય છે—તેઓ
સ્ત્રીઓના સ્તન, જઘન, મુખ, હાથ, ચરણ, નયન ગર્વિત વિલાસ-યુક્ત ગમન
વગેરે રૂપ ચક્ષુરિન્દ્રિયોના વિષયોને વાર વાર જોઈને આમગ્ન થઈ જાય છે, પરંતુ આ
ઇન્દ્રિય જ્યારે દુર્દાન્ત બની જાય છે ત્યારે એવા પ્રાણીઓ અજ્ઞાની પતંગની

મૂલમ-અગુરુરપવરધૂપન ઝડપ મહાણુલેપનવિહીસુ ।

ગંધેસુ રજમાણા રમતિ ઘાણિદિયવસટ્ટા ॥ ૫ ॥

ઘાણિદિયદુદ્ધતત્તણસ્સ અહં પત્તિઓ હઝ્ઝ દોસો ।

જ ઓસહિગધેઠં વિલાઓ નિઢાવડ ડરગો ॥ ૬ ॥

ટીકા-અગુરુરપવરધૂપન ઋતુજમાલ્યાનુલેપનવિધિયુ ।

ગંધેસુ રજમાણા, -રમન્તે પ્રાણેન્દ્રિયવશાર્તાઃ ॥ ૫ ॥

પ્રાણેન્દ્રિયદુર્દાન્તત્તણસ્સ અપ એતાસા રમતિ દોષઃ ।

યદ્ ઓપધિગન્ધેન વિલાદ્ધ નિર્ધામતિ ડરગ' ॥ ૬ ॥

પ્રાણેન્દ્રિયવશાર્તા અગુરુરઃ=કૃષ્ણાગુરુઃ, પવરધૂપન=દશાઙ્ગાદિરૂપ ધૂપઃ, 'ઝડપમહ' ઋતુજમાલ્યાનિ=તત્તદ્ઋતુનાન્યુ પાણિ, અનુલેપનાનિ=ચન્દનકુકુમાદિરૂપાણિ, તેષા વિધયઃ=પ્રકારા યેષુ ગન્ધેષુ તત્ત રજમાણા=અનુરક્તા. સન્તો રમન્તે ॥ ૫ ॥

' ઓસહિગ્રેણ ' ઓપધિગન્ધેન=કેતકયાદિમનસ્પતિસુગન્ધાનુરાગવશેન

પ્રકાર અજ્ઞાની પતંગ અપને પ્રાણોં કો અગ્નિ મેં ઢાલ દેતા હૈં ડસી પ્રકાર ડસી વિધય મેં અપને પ્રાણોં કો નાશ કરતે હૈં ॥ ગા૦ ॥ ૩-૪ ॥

અગુરુવર, ઘાણિય ઇત્યાદિ ।

પ્રાણેન્દ્રિય કે વશવર્તી બને હુએ પ્રાણી અગુરુર-કૃષ્ણાગુરુ, પવર, ધૂપન, -દશાઙ્ગાદિરૂપ ધૂપ, ઋતુજમા-યે-તત્તદ્ઋતુ કે પુષ્પ, અનુલેપન-ચન્દન કુકુમ આદિ કે વિવિધ લેપ રૂપ ગંધ મેં અનુરક્ત હોતે હુએ હર્ષિત મન હોતે હૈં, પરન્તુ વે ઇસ ઇન્દ્રિય કી દુર્દમનતા કા કુઝ બી વિચાર નહીં કરતે હૈં । જય યહ ઇન્દ્રિય દુર્દમન બન જાતી હૈ-તબ એસે પ્રાણી

જેમ પોતાના પ્રાણોને અગ્નિમા હોગી કે છે, તેમજ તે પશુ તે વિધયમા જ પોતાના પ્રાણોને નષ્ટ કરી નાખે છે " ગા ૩-૪ "

અગુરુવર, ઘાણિય ઇત્યાદિ ।

પ્રાણેન્દ્રિયના વશમા પડેલા પ્રાણીઓ અગુરુર-કૃષ્ણાગુરુ, પવર, ધૂપન દશાઙ્ગાદિ રૂપ ધૂપ ઋતુજ માલ્ય-તત્તદ્ઋતુના પુષ્પો, અનુલેપન ચન્દન-કુકુમ વગેરેના જોતજોતના લેપના ગંધમા અનુરક્ત થઇને હર્ષિત થઇ જાય છે, પરંતુ હુકીકનમા તો તેઓ તે ઇન્દ્રિયની દુર્દમતા વિષેનો કોઇ પણ જોતનો વિચાર કરતા જ નથી જ્યારે તે ઇન્દ્રિય દુર્દમ બની જાય છે

ઉરગ = સર્પ: તિલાત્ 'નિધાવૈ' નિર્ધાવતિ = નિસ્સરતિ, તત્તો વચ્ચે ન્યન ચ પ્રાપ્નો-
તીતિ ભાવ: । શેષ સ્પષ્ટમ્ ॥ ૬ ॥

મૂલ્મ-તિત્તરુદુય કસાયંવમહુલ્લજ્જપેજ્જલેજ્જેસુ ।

આસાપસુ ચ ગિહ્ધા રમતિ જિવિંભદિયવસટ્ઠા ॥ ૭ ॥

જિવિંભદિય દુદ્ધતત્તણસ્સ અહ એત્તિઓ હવઈ દોસો ।

જ ગલલગ્ગુલિલ્લત્તો ફુરઈ થરવિરહ્હિઓ મચ્છો ॥ ૮ ॥

ઝાયા—તિત્તરુદુરુકપાયામ્લમધુગ્વહુલ્લજ્જપેયલેજ્જેપુ ।

આસ્વાદેપુ ચ શૃદ્ધા, રમતે જિહ્વેન્દ્રિયવશર્ત્તા ॥ ૭ ॥

જિહ્વેન્દ્રિયદુર્દાન્તત્તસ્ય, અથ એતારાન્ ભવતિ દોષ' ।

યદ્ ગલલગ્ગોલિલ્લત્ત, સ્ફુરતિ સ્થલ સ્થિતો મત્ત્ય: ॥ ૮ ॥

ટીકા-જિહ્વેન્દ્રિયવશર્ત્તા -તિત્ત=મરીવાદિક, રુદુરુ=મારવેલાદિક, કપાય.=
આમલકાદિકમ્, અમ્લ=કામ્બાદિક, મધુર=મોદકાદિક, ગ્વહુ=અનેકવિધ 'સ્વજ્જ'
સ્વાદ-કદલીકાદિક, 'પેજ્જ' પેય=દુગ્ધાદિક, 'લેજ્જ' લેજ્જ=દમિશર્કાગદિ-

કેતકી આદિ કી ગધ સે આકૃષ્ટ બનરુર જિમ પ્રકાર ચિલ સે નિવલા
સર્પ વધન ધન આદિ કપ્ટા કો પાતા હૈ વૈસે કપ્ટ પાતે હૈ ॥ ગા૦ ૫-૬ ॥

'તિત્તરુદુય જિવિંભય' કટ્યાદિ ।

જો પ્રાણી જિહ્વાદન્દ્રિય કે વશવર્તી બના રહતા હૈ વહ મરીચ આદિ
કે જૈસે તિત્ત સ્વાદ મે કરેલા કે જૈસે રુદુરુ સ્વાદ મે, આમલ આદિ કે
જૈસે કપાંચરસ મેં કામ્બાદિકે જૈસે અમ્લ-સ્વદ રસ મેં, મોદકાદિ કે
જૈસે મધુર સ્વાદ મેં તથા વિવિધ પ્રકાર કે કદલી ફલાદિક ત્વાન્ય પદાર્થો
મેં, દુગ્ધાદિ પેયપદાર્થો મે, અથ દધિ ઓર શાકર આદિ સે નિપજ્જ હુપ

વેતકી વગેરેની ગધથી આકૃષ્ટ થઈને જેમ હરમાથી નીડળેવો સાપ વધન ધન
વગેરે કપ્ટોને પ્રાપ્ત કરે છે તેમજ કદ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ ગા ૫-૬ ॥

તિત્તરુદુય જિવિંભદિય કટ્યાદિ ।

જે પ્રાણી જિહ્વા દન્દ્રિય (જીભ) ને વશ થયેવો હોય છે, તે મનુ
વગેરેના જેવા તીખા સ્વાદમા, કારેલા જેવા કડવા સ્વાદમા, આમલી વગેરેના
જેવા ટપાય રસમા કરેલાદિના જેવા અમ્લ-ખાટા રસમા, લાડવા વગેરેના
જેવા મધુર સ્વાદના તેમજ જાતજાતના કેળા વગેરેના ખાદ્ય પદાર્થોમાં, દૂધ
વગેરે જેવા પેય પદાર્થોમાં, અને દહીં તેમજ ખાડ વગેરેથી તૈયાર થયેલા

નિષ્પન્ન શ્રીલ્પ્તાદિશ્ચ, एतेषा ऽन्तः, तेषु आस्ताऽपु=आस्वायन्ते इति
आस्तादाः रसास्तेषु गृह्णाः=आसक्ताः सन्तः । रमन्ते ॥ ७ ॥

‘જિર્ણિમદિયે’ ત્પાદિ । પૂર્વ ગલે=મત્સ્યવેધને મ્હાન, મત્સ્યવેધનેન મુલે
વિદ્ધ इत्यर्थः, एताद् उत्तिष्ठ=जलादुद्गृह्यः इति धर्मधारयः, एवभूतो मत्स्य
स्थल्यिरिल्लितः=स्थले निपातित' सन स्फुरति व्याडुगो भूम्वा भूमी लुठति ।
शेष स्पष्टम् ॥ ८ ॥

મૂર્ખ-ઉડમયમાણા સુહેસુ ય પવિભવહિયમણનિવ્વુહકરેસુ ।

फासेसु रज्जमाणा रमन्ति फासिंदियवसट्ठा ॥ ९ ॥

फासिंदिय दुदन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।

ज खणइ मत्थय कुंजरस्स लोहकुसो तिक्खो ॥ १० ॥

છાયા-ઋતુમજ્યમાનમુલેષુ ચ, સરિમઃહદયમનાંનિર્ઘૃતિસ્ત્રેષુ ।

स्पर्शेषु रज्यमाना, रमन्ते स्पर्शेन्द्रियवसार्ता. ॥ ९ ॥

स्पर्शेन्द्रिय दुर्दान्तत्वस्य, अह एतामान् भवति दोषः ।

यत् खनति मस्तक कुंजरस्य लोहाद्रुशस्तीक्ष्णः ॥ १० ॥

ટીકા-‘ઉડમયે’ ત્પાદિ । સ્પર્શેન્દ્રિયવસાર્તા - ‘ઉડમયમાનમુહેસુ ય’ ઋતુમજ્ય
માનમુલેષુ ઋતુપુ=હેમન્તાદિપુ મજ્યમાનાનિ=સેવ્યમાનાનિ મુલ્લાનિ, યેષુ તે,

શ્રી લ્પ્તાદિ લેલ્પ પદાર્થોં મેં આસક્તમતિ હોકર ઘડા હર્ષ મનાયા
કરતે હેં । પરન્તુ જય્ હનકી ઘટ્ હન્દ્રિય દુર્દાન્ત ઘન જાતી હે તય્ એસે
પ્રાણી જૈસે મત્સ્યવેધન સે-મછલી પકડને કે કાટે-ઘડી-સે મુલ્ મેં
વિદ્ધ હુઆ મત્સ્ય જલ મેં સે લીચકા ઘાહર ભૂમિપર ઢાલ દિયા જાતા
હે ઓર ઘટ્ ભૂમિપર તટ્ ૨ કર મર જાતા હે ઉસ હન્દ્રિય કે વિષય
મેં ફેલકર તટ્ ૨ કર મર જાયા કરતે હેં ॥ ગા૦ ૭-૮ ॥

શ્રીખડ વગેરે લેલ્પ (આટીને ખાઈ શકાય તેવા) પદાર્થોમા આસક્ત
થઈને ખૂબ જ હર્ષિત થતા રહે છે પરંતુ બ્યારે તેમની આ ઇન્દ્રિય હર્ષિત
બની નાય છે, ત્યારે એવા પ્રાણી જેમ મત્સ્યવેધનથી-માછલી પકડવાના
કાટાથી ખુબમા વિદ્ધ થયેલુ માછલુ પાણીમાથી બહાર જોચીને બહાર જમીન
ઉપર નાખવામા આવે છે અને તે જમીન ઉપર તડપી તડપીને મૃત્યુવશ
થાય છે, તેમજ તે ઇન્દ્રિયના વિષયમા ફેલાઈને તડપી તડપીને મૃત્યુવશ
થાય છે ॥ ગા ૭-૮ ॥

તેષુ તયોક્તેષુ તથા સપ્તિશાલિના હૃદયસ્ય મનસથ નિર્વૃત્તિકરેષુ
સુખકરેષુ । એવં ભૂતેષુ સ્પર્શેષુ રજ્યમાનાઃ=અનુરક્તાઃ રમન્તે ॥ ૯ ॥

‘ફાર્સિદિયે’ ત્યાદિ । કુઝારસ્ય=કરિણીસ્પર્શલુઘ્વસ્ય હસ્તિનો મસ્તક તીક્ષ્ણો-
લોદાકુશઃ સ્વનતિ=વિદારયતિ । શેષ સુગમમ્ ॥ ૧૦ ॥ ૫ ॥ સૂ૦ ॥

મૂલ્મ-કલરિભિય મહુરતંતીતલતાલવસકઠહાભિરામેસુ ।

સદેસુ જં ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૧ ॥

થળજહળવયળકરચરણનયળગઢિવયવિલાસિયર્ગૈસુ ।

રૂવેસુ ન રત્તા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૨ ॥

અગુરુવરપવરધૂવળ ઉડયમહ્લાણુલેવળવિહીસુ ।

ગધેસુ જે ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૩ ॥

તિત્તકહુયકસાયવમહુરવહુલ્લજ્જપેજ્જલેજ્જેસુ ।

આસાણસુ ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૪ ॥

(ઉડમયમાણ, ફાર્સિદિયદુહત ઇત્યાદિ,

ટીકાર્થ-જો પ્રાણી સ્પર્શન ઇન્દ્રિયકે વશવર્તી હોતે હૈં વે અપની સ્પર્શ-
નેન્દ્રિયની લોલુપતાસે હેમન્ત આદિ પ્રત્યેક ક્રતુ સંબન્ધી સુખ ભોગતે હૈં ।
તથા સપત્તિશાલિયોં કે હૃદય મેં ઓર મન સુખકર સ્પર્શોં મેં અનુરક્ત
ઘને રહતે હૈં । ઇસ તરહ કાતે ૨ જવ ઇનકી યહ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય દુર્દાન્ત
ઘન જાતી હૈ તવ વે પ્રાણી જિસ પ્રકાર તીક્ષ્ણ લોહ કો અકુશ કરિણી
(હસ્તિની) કે સ્પર્શ કરને મેં લુઘ્વક ઘને હુણ મત્ત ગજરાજ કે મસ્તક
કો વિદાર દેતા હૈં ઇસી તરહ ઇસ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કે દ્વારા વિનષ્ટ કર
દિયે જાતે હૈં ॥ ગા૦ ૯-૧૦ ॥

ઉ ચ મયમાણ, ફાર્સિદિયદુહત ઇત્યાદિ ।

જે પ્રાણીઓ સ્પર્શેન્દ્રિયને વશ થાય છે, તેઓ પોતાની સ્પર્શેન્દ્રિયની
લોલુપતાથી હેમત વગેરે દરેકે દરેક ક્રતુઓના સુખો ભોગવે છે તેમજ
સપત્તિવાળાઓના હૃદય અને મનસુખદ સ્પર્શોમા આસક્ત બનીને રહે છે
આમ જગ્તા કરતા જ્યારે તેમની આ સ્પર્શેન્દ્રિય દુર્દાત બની જાય છે ત્યારે
તે પ્રાણીઓ (હાથિજી) ને સ્પર્શવામા લુઘ્વ બનેલા મત્ત ગજગજના
મસ્તકને વિદીર્ણ કરી નાખે છે તેમજ આ સ્પર્શેન્દ્રિય વડે વિનષ્ટ કરી
નાખવામા આવે છે ॥ ગા ૯-૧૦ ॥

उडभयमाणसुहेसु य सविभवहियचमणनिव्वुडकरेसु ।

फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरण ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनामक्तानां वशात्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—‘कलरिभिय’ इत्यादि ।

कलरिभिनमधुरतन्त्रीतन्त्रावशकृदाभिरामेषु ।

शब्देषु ये न गृद्धा, -वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ ११ ॥

स्तनजघनपदनपरचरणनयनगर्भितविन्यासिनगतिषु ।

रूपेषु ये न रक्ता, -वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ १२ ॥

अगुरुपरप्रवरपूषन, -कृतुजमात्पानुलेपनविधिषु ।

गन्धेषु ये न गृद्धा, -वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ १३ ॥

तिक्तफट्ठकुरुपायाम्ल, मधुरगुह्याद्यपेय लक्ष्येषु ।

आस्वादेषु न गृद्धा, -वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ १४ ॥

कृतुभज्यमानसुखेषु च, सविभवं हृदयमनोनिर्गुतिकरेषु ।

स्पर्शेषु ये न गृद्धा, -वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ १५ ॥

आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, यणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्तकडुय, उडभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पाँच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशात्तमरण नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

कलरिभिय, यणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्त कडुय उ उ भयमाण, इत्यादि ।

आ गाथाओ वडे सूत्रकार आ पात स्पष्ट करवा भागे छे के जे शब्द वगेरे पाये धन्द्रियोना विषयोभा आसक्त यता नथी, तेभनु वशात्तमरण थतु नथी, आ गाथाओनी व्याख्या सरण छे

जे प्राणी कर्णधन्द्रियना विषयभूत रूपभा, नासिका धन्द्रियना, विषयभूत गंधभा, जिह्वा धन्द्रियना विषयभूत रसभा तेभज स्पर्शन धन्द्रियना विषयभूत स्पर्शभा अत्यंत आसक्त-गृद्ध यता नथी, तेओ वशात्तमरणने प्राप्त करता नथी ॥ गा ११-१५ ॥

मूलम्—सद्देशु य भद्रपावणसु सोयविसयं उवागणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥

रूवेसुय भद्रपावणसु चक्खुविसय उवगणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १७ ॥

गंधेसु य भद्रपावणसु घाणविसयं उवागणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥

रसेसु य भद्रपावणसु जिह्मविसय उवगणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १९ ॥

फासेसु य भद्रपावणसु कायविसय उवगणसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं
सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ।

॥ सत्तरसम नायज्झयणं समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जनं पञ्चभिर्गाथाभिः प्रतिबोध
यति—'सद्देशु य' इत्यादि ।

शब्देषु च भद्रकपापकेषु श्रोत्रत्रिपयगुपगतेषु ।

तुष्टेन वा रुष्टेन वा, समणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सद्देशुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सत्त
रसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

अत्र सूत्रकार इति पाच गाथाओं द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि
विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये—इस

सद्देशुय, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सत्तरसमस्स
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

सूत्रकार के आ पाच गाथाओं वर के वात स्पष्ट करवा छिछे छ
के अनुकूल-प्रतिकूल शब्दादि विषयाभा श्रमणजनो ने कदापि राग-द्वेष नहि

उडभयमाणसुहेसु य सविभयहियमणनिव्वुइकरेसु ।

फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरण ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेयनामक्ताना वशार्त्तमरण न भयतीति पञ्चभिर्गाथाभिः ग्राह—‘कलरिभिय’ इत्यादि ।

कलरिभिनमधुरतन्त्रीतन्नात्थशकृदाभिरामेषु ।

शब्देषु ये न गृह्णा, -वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥

स्तनजघनयदनररचरणनयनगर्भितत्रिज्जसिनगतिषु ।

रूपेषु ये न रक्ता, -वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥

अगुरुवरप्रवरपूपन, -ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।

गन्धेषु ये न गृह्णा, -वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥

तिक्तकटुकुरुपायाम्ल, मधुररुहाघपेय लेखेषु ।

आस्वादेषु न गृह्णा, -वशार्त्तमरण न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥

ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभय हृदयमनोनिर्दृतिरुरेषु ।

स्पर्शेषु ये न गृह्णा-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥

आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, धणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्तकटुक, उडभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आमक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्त्तमरण नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृह्य-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

कलरिभिय, धणजहण, अगुरुवरपवर, तिक्त कटुक उडभयमाण, इत्यादि ।

आ गाथाओं वडे सूत्रकार आ वात स्पष्ट करवा भागे छे के के शब्द वगेरे पाये धन्द्रियोना विषयोभा आसक्त यता नथी, तेमनु वशार्त्तमरण भर्तु नथी, आ गाथाओंनी व्याख्या सरण छे

के प्राणी कर्णधन्द्रियना विषयभूत रूपभा, नासिका धन्द्रियना, विषयभूत गंधभा, जिह्वा धन्द्रियना विषयभूत रसभा तेमन् स्पर्शन धन्द्रियना विषयभूत स्पर्शभा अत्यंत आसक्त-गृह्य यता नथी, तेओ वशार्त्तमरणने प्राप्त करता नथी ॥ गा ११-१५ ॥

उडभयमाणसुहेसु य सविभवाहियमणनिव्वुडकरेसु ।

फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरण ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिप्रियेय्यनामकाना णात्तमरणं न भवतीति पञ्चमिणां
याभिः प्राह—‘कलरिभिय’ इत्यादि ।

कलरिभिनमधुरतन्त्रीतन्तावशकृद्वाभिरामेषु ।

शब्देषु ये न गृह्णा, -वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ ११ ॥

स्तनजघनरदनरचरणनयनगर्भितत्रिजित्तिगतिषु ।

रूपेषु ये न रक्ता, -वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ १२ ॥

अगुरुवरप्रसरधूपन, -कतुनमाल्यानुलेपनविधिषु ।

गन्धेषु ये न गृह्णा, -वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ १३ ॥

तिक्तकटुककषायाम्ल, मधुरमृदाद्यपेय लेखेषु ।

आस्वादेषु न गृह्णा, -वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ १४ ॥

कतुभज्यमानसुरेषु च, सविभवा हृदयमनोनिर्गतिकरेषु ।

स्पर्शेषु ये न गृह्णा-वशात्तमरणं न ते त्रियन्ते ॥ १५ ॥

आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, धनजहण, अगुरुवरपदर, निस्तकडुय, उडभयमाण,
इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि
पाँच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशात्तमरण
नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विष-
यभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विष-
यभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-
गृह्ण-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

कलरिभिय, धनजहण, अगुरुवरपदर, तित्त कडुय उ ड भयमाण, इत्यादि ।

आ गाथाओ वडे सूत्रकार आ वात स्पष्ट करना चाहे छे के के शब्द
वगेरे पाये छिन्द्रियोना विषयोभा आसक्त यता नथी, तेभनु वशात्तमरण भर्तुं
नथी, आ गाथाओनी व्याख्या सरण छे

के प्राणी जे छिन्द्रियोना विषयभूत रूपभा, नासिका छिन्द्रियोना, विषयभूत
गंधभा, जिह्वा छिन्द्रियोना विषयभूत रसभा तेभज स्पर्शन छिन्द्रियोना विषय
भूत स्पर्शभा अत्यंत आसक्त-गृह्ण यता नथी, तेओ वशात्तमरणे प्राप्त
करता नथी ॥ गा ११-१५ ॥

मूलम्—सदेसु य भद्रपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥

रूवेसुय भद्रपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १७ ॥

गधेसु य भद्रपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥

रसेसु य भद्रपावएसु जिम्भविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १९ ॥

फासेसु य भद्रपावएसु कायविसय उवगएसु ।

तुष्टेण व रुष्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिवेमि ।

॥ सत्तरसमं नायज्झयण समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गामिभिः प्रतिबोधयति—'सदेसु य' इत्यादि ।

शब्देषु च भद्ररूपापकेषु श्रोत्रविषयगुणगतेषु ।

तुष्टेन वा रुष्टेन वा, समणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सदेसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्तिवेमि ॥

अत्र सूत्रकार इन पाच गायत्रीओ द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि विषयो में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये—इस

सदेसुय, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जंबू । समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते त्ति वेमि ॥

सूत्रकार इन पाच गायत्रीओ वडे ओ वात उपष्ट करवा छिछे छे के अनुद्वेग—प्रतिकूल शब्दादि विषयोभा श्रमणजनोने कदापि राग—द्वेष नहि

ઉડ્ભવમાણસુહેસુ ચ સવિભવહિયયમણનિવ્વુડકરેસુ ।

ફાતેસુ જે ન ગિદ્ધા વસટ્ઠમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૫ ॥

ટીકા—શબ્દાદિત્રિયયેષનામક્તાનાં વશાર્તમરણ ન ભવતીતિ પદ્ધતિર્ગા
યામિઃ પ્રાહ—‘કલરિમિય’ इत्यादि ।

ફલરિભિમધુરતન્ત્રીતન્તાગ્વશકઠુદાભિરામેષુ ।

શબ્દેષુ યે ન ટદ્ધા,—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૧ ॥

સ્તનજઘનચ્ચરણનયનગરિતવિગતિનગતિષુ ।

રૂપેષુ યે ન રક્તા,—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૨ ॥

અગુરુવરપ્રવરધૂપન,—ઋતુજમાલ્યાનુલેપનત્રિધિષુ ।

ગન્ધેષુ યે ન શુદ્ધા,—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૩ ॥

તિક્તઋદુરુકપાયામ્લ, મધુરવહુરસાઘપેય લેશ્વેષુ ।

આસ્વાદેષુ ન શુદ્ધા,—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૪ ॥

ઋતુભજ્યમાનસુત્રેષુ ચ, સવિભવ હૃદયમનોનિર્વૃત્તિકરેષુ ।

સ્પર્શેષુ યે ન શુદ્ધા—વશાર્તમરણ ન તે મ્રિયન્તે ॥ ૧૫ ॥

આસામ્ વ્યાખ્યા સુગમા ॥ ૧૫ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

(કલરિમિય, ધનજહ્ન, અગુરુવરપદ્મ, તિલકહુય, ઉડ્ભવમાણ, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-शुद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિમિય, ધનજહ્ન, અગુરુવરપદ્મ, તિલકહુય ઉડ્ભવમાણ, इत्यादि ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા નથી, તેમણે વશાર્તમરણ અર્થ નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી જહ્નઈન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમાં, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગંધમાં, જિહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમાં તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત સ્પર્શમાં અત્યંત આસક્ત-શુદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्—सदेसु य भद्रपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥
रूवेसुय भद्रपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १७ ॥
गधेसु य भद्रपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥
रसेसु य भद्रपावएसु जिब्भविसय उवगएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १९ ॥
फासेसु य भद्रपावएसु कायविसय उवगएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥
एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं
सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ।
॥ सत्तरसम नायज्झयणं समत्त ॥ १७ ॥
टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जनं पञ्चभिर्गायामिः प्रतिबोध
यति—‘सदेसु य’ इत्यादि ।
शब्देषु च भद्ररूपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।
तुट्टेण वा रुट्टेण वा, समणेण सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सदेसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं सत्त
रसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

अत्र सूत्रकार इन पाच गायाओ द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि
विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये—इस

सदेसुय, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जवू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण सत्तरसमस्स
नायज्झयणस्स अयमट्ठे पणत्ते तिवेमि ॥

सूत्रकार इसे आ पाच गायाओ वडे जे वात स्पष्ट करवा छिये छे
के अनुकूल-प्रतिकूल शब्दादि विषयोमा श्रमणजनोने कदापि राग-द्वेष नहि

ઉડભયમાણસુહેસુ થ સન્નિભવહિયમણનિવ્વુદ્ધકરેસુ ।

ફાસેસુ જે ન ગિદ્ધા વસટ્ટમરણં ન તે મરણ ॥ ૧૧ ॥

ટીકા—શબ્દાદિવિષયેષનામક્તાના વશાર્ત્તમરણ ન મરતીતિ પશ્ચમિર્ગા
યમિઃ પ્રાહ—‘કલરિમિય’ इत्यादि ।

કલરિમિયમધુરતન્ત્રીતઠ્ઠતાવશકરુદામિરામેષુ ।

શબ્દેષુ યે ન ગૃદ્ધા,—વશાર્ત્તમરણ ન તે ત્રિયન્તે ॥ ૧૧ ॥

સ્તનજઘનરત્નરરચરણનયનગર્જિતમિન્નાસિતગતિષુ ।

રૂપેષુ યે ન રક્તા,—વશાર્ત્તમરણ ન તે ત્રિયન્તે ॥ ૧૨ ॥

અગુરુવરપ્રવરધૂપન,—ઋતુજમાત્યાનુલેપનત્રિધિષુ ।

ગન્ધેષુ યે ન ગૃદ્ધા,—વશાર્ત્તમરણ ન તે ત્રિયન્તે ॥ ૧૩ ॥

તિક્તકટુકરુવાયામ્લ, મધુરમદુસાધપેય લેદ્ધેષુ ।

આસ્વાદેષુ ન ગૃદ્ધા,—વશાર્ત્તમરણ ન તે ત્રિયન્તે ॥ ૧૪ ॥

ઋતુભજ્યમાનસુતેષુ ચ, સન્નિભવ હૃદયમનોનિર્ટતિકરેષુ ।

સ્પર્શેષુ યે ન ગૃદ્ધા,—વશાર્ત્તમરણ ન તે ત્રિયન્તે ॥ ૧૫ ॥

આસામ્ વ્યાખ્યા સુગમા ॥ ૧૫ ॥ સૂ૦ ૬ ॥

(કલરિમિય, યજ્ઞજહ્ન, અગુરુવરપવર, તિક્તકટુય, ઉડભયમાણ,
इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि
पांच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशात्तमरण
नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विष-
यभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विष-
यभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-
गृद्ध नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિમિય, યજ્ઞજહ્ન, અગુરુવરપવર, તિક્તકટુય ચ ઉડભયમાણ, इत्यादि ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ
વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા નથી, તેમણે વશાર્ત્તમરણ થતું
નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત શબ્દમાં, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત
ગંધમાં, જિહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમાં તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષય
ભૂત સ્પર્શમાં અત્યંત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્ત્તમરણને પ્રાપ્ત
કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

‘ સદેસુ ય ’ इत्यादि, गाथा पञ्चक सुगमम् ॥

સુધર્માસ્વામી માહ-‘ एय खलु हे खम्बूः । श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्समाप्तेन मत्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः,=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः । इति प्रवीमि-व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

उति श्री विश्वप्रख्यात - जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचरूपश्चदशभाषाकलित-
ललितकलापालापक - प्रविशुद्धग्रन्थनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक
श्रीशाहू उन्नपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पदभूषित-
कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री
घासीलालव्रतिविरचिताया श्री ज्ञाताधर्मकथाद्गमूनस्यानगारधर्मा-
मृतवर्णिणारयाया व्याख्याया सप्तदशमध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

૮ આઠ પ્રકાર કા સ્પર્શ યાહે વહ અનુકૂલ હો યાહે પ્રતિકૂલ હો-
જવ ૨ સ્પર્શન ઇન્દ્રિય કા વિષય હો ઉસમે સાધુ કો કિસી મી તરહ સે
કમી મી તુષ્ટ એવ રુષ્ટ નહીં હોનો યાહિયે ॥ ૨૦ ॥

इस प्रकार हे जंबू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिगति
नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस सत्रहवें ज्ञानाध्ययन का यह
पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है । ऐसा मैं उन्हीं के कहे अनुसार
कह रहा हूँ ।

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ ક્રૂત “ જ્ઞાતા
ધર્મકથાદ્ગમૂત્ર ” કી અનગાર ધર્મામૃતવર્ણિણી વ્યાખ્યા કા સત્રહવા
અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

૮ જાતનો સ્પર્શ—જવે તે અનુકૂળ કે પ્રતિકૂળ ગમે તેવો કેમ ન હોય
જ્યારે જ્યારે તે સ્પર્શન ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય તેમા સાધુને ડોષ પણ રીતે
કદાપિ તુષ્ટ અને રુષ્ટ થવુ જોઈએ નહિ ॥ ગા ૨૦ ॥

આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ
નામક સ્થાનને મેળવ્યું છે-આ સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા
અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આવું હું તેમના કદા સુશ્રવણ તમને કહી રહ્યો છું

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘામીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધર્મની અનગારધર્મામૃતવર્ણિણી
વ્યાખ્યાનુ સત્તરમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

રૂપેષુ ચ ભદ્રરૂપાપકેષુ, ચતુર્વિધયમુપગતેષુ ।

તુષ્ટેન યા રુષ્ટેન યા, શ્રમણેન સદા ન મતિત્વમ્ ॥ ૧૭ ॥

૧-ભદ્રરૂપાપકેષુ=અનુકૂલ-પ્રતિકૂલેષુ ।

ગ ધેષુ ચ ભદ્રરૂપાપકેષુ, ધ્રાણવિધયમુપગતેષુ ।

તુષ્ટેન યા રુષ્ટેન યા, શ્રમણેન સદા ન મતિત્વમ્ ॥ ૧૮ ॥

રસેષુ ચ ભદ્રરૂપાપકેષુ, જિહ્વાવિધયમુપગતેષુ ।

તુષ્ટેન યા રુષ્ટેન યા, શ્રમણેન સદા ન મતિત્વમ્ ॥ ૧૯ ॥

સ્પર્શેષુ ચ ભદ્રરૂપાપકેષુ, કાયવિધયમુપગતેષુ ।

તુષ્ટેન યા રુષ્ટેન યા, શ્રમણેન સદા ન મતિત્વમ્ ॥ ૨૦ ॥

વિષય કો સમઘાતે હૈં યર્હા ભદ્રક શબ્દ કા અર્થ અનુકૂલ ઔર પાપક શબ્દ કા અર્થ પ્રતિકૂલ હૈ । જય શબ્દ રૂપ વિષય શ્રોત્રેન્દ્રિય કા હો તો હસ સમય યાહે વહ મનોજ્ઞ હો યા અમનોજ્ઞ હો કૈસા હી કયોં ન હો હસમેં શ્રમણ-સાધુ-કો કમી મી તુષ્ટ અથવા રુષ્ટ નહીં હોના યાહિયે ॥ ગા૦ ॥ ૧૬ ॥

ચક્ષુહન્દ્રિય કા વિષયભૂતરૂપ જય હસ હન્દ્રિય દ્વારા ગ્રહણ કરને મેં આવે-તય યહ યાહે મનોજ્ઞ હો યા અમનોજ્ઞ હો હસમેં શ્રમણ જન કો કમી મી હર્પ વિપાદ-તુષ્ટ રુષ્ટ-નહીં હોના યાહિયે ॥ ગા૦ ૧૭ ॥

મનોજ્ઞ એવ અમનોજ્ઞ ગધ જય ધ્રાણહન્દ્રિય કા વિષય હો તય સાધુ કો હસ વિષય મેં કમી મી તુષ્ટ રુષ્ટ નહીં હોના યાહિયે ॥ ગા૦ ૧૮ ॥

મનોજ્ઞ અથવા અમનોજ્ઞ રસ જિહ્વાહન્દ્રિય કા વિષય હો-તય હસમેં શ્રમણ જન કો કમી મી તુષ્ટ ઔર રુષ્ટ નહીં હોના યાહિયે ॥ ગા૦ ૧૯ ॥

કરવો જોઈએ અહીં ભદ્રક શબ્દનો અર્થ અનુકૂળ અને પાપક શબ્દનો અર્થ પ્રતિકૂળ છે જ્યારે શબ્દરૂપ વિષય શ્રોત્ર ઈન્દ્રિયનો હોય તો ભલે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, ગમે તેવો કેમ ન હોય, તેમા શ્રમણ-સાધુ-ને કદાપિ તુષ્ટ કે રુષ્ટ થવું જોઈએ નહિ ॥ ગા ૧૬ ॥

અધુ ઈન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપ જ્યારે તે ઈન્દ્રિય વડે ગ્રહણ કરવામા આવે ત્યારે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, શ્રમણને કદાપિ તેમા હર્પ વિપાદ-તુષ્ટ-રુષ્ટ નહિ થવું જોઈએ ॥ ગા ૧૭ ॥

મનોજ્ઞ અને અમનોજ્ઞ ગધ જ્યારે ધ્રાણ ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે સાધુને તે વિષયમા કદાપિ તુષ્ટ કે રુષ્ટ નહિ થવું જોઈએ ॥ ૧૮ ॥

મનોજ્ઞ અથવા તેા અમનોજ્ઞ રસ જ્યારે જિહ્વા ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે તેમા શ્રમણ-જનને કદાપિ તુષ્ટ અને રુષ્ટ થવું જોઈએ નહિ ॥ ૧૯ ॥

‘सदेष्टु य’ इत्यादि, गाथा पञ्चरु सुगमम् ॥

सुधर्मास्वामी पाठ—‘एव सलु हे खम्बूः । अमणेन भगवता महावीरेण यावत्संप्राप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताभ्ययनस्य अपमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः=प्रमपितः । इति त्रीमि-व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

इति श्री विश्वविख्यात - जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचरूपश्चन्द्रगोपासक-ललितकलापालापरु - प्रसिद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापरु-वादिमानमर्दरु श्रीशाह उपपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त ‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-वालग्रहचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालप्रतिविरचिताया श्री ज्ञाताधर्मकथाद्रुमसूत्रस्यानगारधर्माभृतवर्षिणीपाख्याया व्याख्याया सप्तदशमध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

८ आठ प्रकार का स्पर्श चाहे वह अनुकूल हो चाहे प्रतिकूल हो-जब २ स्पर्शन इन्द्रिय का विषय हो उसमें साधु को किसी भी तरह से कभी भी तुष्ट एवं रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ २० ॥

इस प्रकार हे जवू ! अमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस सत्रहवें ज्ञाताभ्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है । ऐसा मैं उन्हीं के कहे अनुसार कह रहा हूँ ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत् “ज्ञाता धर्मकथाद्रुमसूत्र” की अनगार धर्माभृतवर्षिणी व्याख्या का सत्रहवा अध्यायन समाप्त ॥ १७ ॥

८ जतनेो स्पर्श—जये ते अनुकूल के प्रतिकूल गमे तेवे केम न होय ज्यारे ज्यारे ते स्पर्शन इन्द्रियने विषय होय तेमा साधुने केई पणु रीते कदापि तुष्ट अने इष्ट थवु जेईजे नहि ॥ गा २० ॥

आ प्रभावे डे जणू ! अमण भगवान महावीरे डे जेमले सिद्धगति नामक स्थानने जेणंयु छे—आ सत्तरमा ज्ञाताभ्ययनने आ पूर्वोक्त रूपमा अर्थ प्ररूपित ज्येई डे आवु डु तेमना कदा मुज्जण ज तमने कही गह्यो छु

श्री जैनाचार्य घासीलाल महाराज कृत् ज्ञातासूत्रनी अनगारधर्माभृतवर्षिणी व्याख्यानु सत्तरमु अध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादશમારમ્પતે, અસ્ય ચ પૂર્વેઙ મહાયમમિગમ્યન્વ -પૂર્વસ્મિન્ અધ્યયને ઇન્દ્રિયપ્રવર્તિનામ્ વશીકૃતેન્દ્રિયાણાં ચ અનર્થાર્થો મોક્તી, ઇદં તુ લોભાવિષ્ટાનાં લોભરહિતાનાં ચ તાવેત્યેતે, ઇત્યેઙ પૂર્વેઙ સદ સંપદ્મિદમધ્યયનમ્, તસ્યેદમાદિમ સૂત્રમ્-‘ જઈણ મતે’ ઇત્યાદિ—

મૂલમ્—જઈ ણં મંતે ! સમણેઙ જાવ સપત્તેણં સત્તરસમસ્સ ણાય-
જ્ઞયણસ્સ અયમટ્ટે પણ્ણત્તે, અટ્ટારમસ્સ ણ મંતે ! ણાયજ્ઞય-
ણસ્સ સમણેઙ જાવ સંપત્તેઙ કે અટ્ટે પણ્ણત્તે ? एवं खलु जंबू !
તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહં ણામં ણયરે હોત્થા ।
વણ્ણઓં । તત્થ ણં ધણ્ણે ણામ સત્થવાહે । મદ્દામારિયા તસ્સ
ણ ધણ્ણસ્સ સત્થવાહસ્સ પુત્તા મદ્દાએ અત્તયા પંચસત્થવાહ-

અઠારહર્વા અધ્યયન પ્રારંભ

સુસમાદારિકા કા વર્ણન

સત્રહર્વા અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા હૈં । અથ ૧૮ વા અધ્યયન પ્રારંભ હોતા હૈ । હસ અધ્યયન કા પૂર્વ અધ્યયન કે સાથ હસ પ્રકાર સે સબધ હૈ—કિ પૂર્વ અધ્યયન મેં ઇન્દ્રિયવશવર્તી તથા વશકૃત ઇન્દ્રિયવાળે જીવોં કો અર્થ કી પ્રાપ્તિ હોના કહા ગયા હૈ । અથ હસ અધ્યયન મેં સૂત્રકાર યહ કહેંગે કિ જો લોભ કષાયસે યુક્ત તથા લોભ કષાય સે રહિત જીવ હોતે હૈં વે અનર્થ ઓર અર્થ પ્રાપ્તિ સે યોગ્ય હોતે હૈં । હસ અધ્યયન કા સર્વ પ્રથમ સૂત્ર યહ હૈ—‘ જઈણ મતે ’ ઇત્યાદિ ।

અઠારમા અધ્યયનનો પ્રારંભ

સુસમાદારિકાનું વર્ણન

સત્તરમું અધ્યયન પુરૂ થયુ છે હવે અઠારમા અધ્યયનની શરૂઆત થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલા અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સબધ છે કે પહેલા અધ્યયનમા ઇન્દ્રિય વશવર્તી તેમજ વશીકૃત ઇન્દ્રિયોવાળા જીવોને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વિષે કહેવામા આવ્યુ છે સૂત્રકાર હવે આ અધ્યયનમા આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરશે કે જે જીવો લોભકષાયથી તેમજ લોભકષાયથી રહિત હોય છે તેઓ અનર્થ અને અર્થ પ્રાપ્તિને લાયક ઠરે છે આ અધ્યયનનુ પહેલુ સૂત્ર આ છે—જઈણ મતે સમણેઙ મહાવીરેઙ ઇત્યાદિ—

दारगा होत्था, तं जहा—धण्णे धणपाले, धणदेवे, धणगोत्रे, धणर-
 विखए । तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्सधूया भद्दाए अत्तया
 पंचण्हं पुत्ताण अणुमग्गजातीया सुंसुमाणामं दारिया होत्था,
 सूमालपाणिपाया, तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चिलाए नाम
 दासचेडे होत्था, अहीणपचिदियसरीरे मसोवचिए बालकीलाव-
 णकुसले यावि होत्था । तएणं से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए
 बालगाहे जाए यावि होत्था । सुंसुम दारिय कडीए गिण्हइ,
 गिण्हत्ता, बहूहिं दारएहि य दारियाहि य बालेहि बालियाहि य
 डिभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धि
 अभिरममाणे २ विहरइ । तएणं से चिलाए दासचेडे तेसि बहूणं
 दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एव वट्टइ
 आगेलियाओ, तेदुसए, पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाणं
 आभरणमल्लालकारं अवहरइ अप्पेगइए आउस्सइ, एव अवहसइ
 निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ । तएणं ते
 बहवे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कदमाणा य साण २
 अम्मापिऊण णिवेदेति । तएणं तेसि बहूणं दारगाणय ६
 जाव अम्मापियरो जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति,
 उवागच्छत्ता धन्ने सत्थवाहे बहूहिं खिज्जणाहि य स्टणाहि
 य उवलभणाहि य खिज्जमाणाहिय रुटमाणाहि य उवलभमाणा
 य धणस्स एयमट्ट णिवेदेति ॥ सू० १ ॥

॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण महायमभिमन्य - पूर्वमिन् अभ्य-
यने इन्द्रियवशवर्तिनाम् वशीकृतेन्द्रियाणां च अनर्थार्थी प्रोक्तौ, इह तु लोमावि-
ष्टाना लोभरहिताना च तावोच्येते, इत्येव पूर्वेण सह संपद्विदमध्ययनम्,
तस्येदमादिम सूत्रम्—‘ जइण भते’ इत्यादि—

मूलम्—जइ णं भते । समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णाय-
जइयणस्स अयमट्ठे पणत्ते, अट्ठारमस्स ण भंते । णायजइय-
णस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जंबू ।
तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहं णाम णयरे होत्था ।
वण्णओ० । तत्थ णं धण्णे णाम सत्थवाहे । भद्दाभारिया तस्स
ण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पच्चमत्थवाह-

अठारहवा अध्ययन प्रारभ

सुसमादारिका का वर्णन

सत्रहवा अध्ययन समाप्त हो चुका हैं । अब १८ वा अध्ययन
प्रारभ होता है । इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से
संबंध है—कि पूर्व अध्ययन में इन्द्रियवशवर्ती तथा वशकृत इन्द्रियवाछे
जीवों को अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है । अब इस अध्ययन में
सूत्रकार यह कहेंगे कि जो लोभ कषायसे युक्त तथा लोभ कषाय से
रहित जीव होते हैं वे अनर्थ और अर्थ प्राप्ति से योग्य होते हैं । इस
अध्ययन का सर्व प्रथम सूत्र यह है—‘ जइण भते ’ इत्यादि ।

अठारमा अध्ययनो प्रारभ

सुसमादारिकानु वर्णन

सत्तरमं अध्ययन पुइ थयु छे ऊवे अठारमा अध्ययननी शइआत थाय
छे आ अध्ययनने पडेवा अध्ययननी साथे आ जतने संबध छे के पडेवा
अध्ययनमा इन्द्रिय वशवर्ती तेमज वशीकृत इन्द्रियोवाणा एयेने अथनी
प्राप्ति थाय छे, ते विषे कडेवाभा आओ छे सूत्रकार ऊवे आ अध्ययनमा
आ वातनु स्पष्टीकरषु करये के वे एवे दोलकपायथी तेमज दोलकपायथी
इदित होय छे तेओ अनर्थ अने अर्थ प्राप्तिने लायक करे छे आ अध-
यननु पडेवु सूत्र आ छे—जइण भते समणेण महावीरेण इत्यादि—

धनः १ धनपाल २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति । तस्या खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाधा आत्मजा धनादीना पञ्चाना पुत्राणाम् 'अणुमगजाया' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्ग जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुसुमा नाम दारिणा आसीत् । कीदृशी सा ?—'सूमालपाणिपाया' सुकुमार पाणिपादा=कोमलरवरणा । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेट=दासपुत्र आसीत् । योहि 'अदिण-

धण्णे २- धणपाले-२ धणदेवे ३, धणगोवे-४ धणरक्षिण-५) उस काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था । इसका वर्णन पहले जैसा ही जानना चाहिये । उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता था । इसकी पत्नी का नाम भद्रा था । इस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए धन्य सार्थवाह के ये पाँच पुत्र थे-धन-१ धनपाल-२ धनदेव-३ धन-गोप-४ और धनरक्षित-५ ।

(तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताण अणुमगजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स चिलाएणाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था) इस धन्य सार्थवाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुसुमा नामकी पुत्री थी- जो धनादिक पाँच पुत्रों के पीछे उत्पन्न हुई थी । इसके कर, चरण बड़े कोमल थे । इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट-दास पुत्र-था-जिस

अत्तया पच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा-ण्णे १, धणपाले २, धणदेवे ३, धणगोवे-४, धणरक्षिण-५)

ते धाणे अने ते सभये राजगृह नामे नगर હતુ તેનુ વર્ણન પહેલાની જેમ સમજી લેવું જોઈએ તે નગરમાં ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો તેની પત્નીનું નામ ભદ્રા હતું તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલા પાંચ પુત્રો હતા, તેમના નામ આ પ્રમાણે છે-ધન-૧, ધનપાલ-૨, ધનદેવ-૩, ધનગોપ-૪, અને ધનરક્ષિત-૫

(તસ્સ ણ ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ ધૂયા ભદ્દાએ અત્તયા પચણ્હ પુત્તાણ અણુ મગજાતીયા સુસુમા ણામ દારિયા, હોત્થા, સૂમાલપાણિપાયા, તસ્સ ણ ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ ચિલાએ ણામ દાસચેડે હોત્થા, જહ ણ પચેદિય સરીરે મસોવચિય, બાલકીલાવણકુસલે યાવિ હોત્થા)

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા-ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુસુમા નામે એક પુત્રી હતી તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ ઉત્પન્ન થઈ હતી તેના હાથ-પગ ખડું જ કઠમણ હતા તે ધન્યસાર્થવાહને એક દાસીપુત્ર હતો તેનું

टीका—' जडण भन्ते ! ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपुत्र-यदि खलु भदन्त !
 श्रमणेन याग्नमोक्ष सम्प्राप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः नितेन्द्रियाञ्जिते
 न्द्रियाणामर्थनिर्व्याप्तिरूपो भावः प्रज्ञप्तः=परिपितः, अष्टादशस्य तु ज्ञाताध्ययनस्य
 श्रमणेन याग्नमोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामी प्राह—एव खलु हे
 जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगरमासीत्, ' वण्णओ '
 वर्णकः=नगरवर्णनं पूर्वम् विज्ञेयम् । तत्र खलु धन्वो नाम मार्थागः परिरसति ।
 तस्य भद्रा नाम भार्याऽसीत् । तस्य खलु यन्मस्य सार्थागहस्य पुत्राः, भद्राया
 आत्मजाः पञ्च सार्थागहदारका आसन् । तेषां नामान्ग्राह—' त जहा ' तद्यथा—

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मास्वामीसे पूछते हैं कि—(जडण भन्ते !
 समणेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे पणत्ते
 अट्ठारसमस्स ण भन्ते णायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अद्वे पणत्ते
 से ?) हे भदन्त ! श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि सिद्धिगति नाम
 क स्थान को प्राप्त कर चुके हैं मन्त्रावे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप
 से अर्थ प्रज्ञप्त किया है—तो उन्होंने सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए
 श्रमण भगवान् महावीर ने १८ वें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित
 किया है ? (एव खलु जम्बू !) इस प्रकार जम्बू स्वामी के पूछने पर सुध
 र्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जम्बू ! सुनों—तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस
 प्रकार है—(तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे णाम णयरे होत्था ।
 वण्णओ० तत्थण धण्णे णामं सत्थग्राहे—भद्राभारिया—तस्सण धण्णस्स
 सत्थवाहस्स पुत्ता भद्राण अत्तया पच्च सत्थवाहदारका होत्था, त जहा—

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामीने पूछे छे डे—

(जडण भन्ते ! समणेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमद्वे
 पणत्ते अट्ठारसमस्स ण भन्ते णायज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अद्वे पणत्ते ?)

हे भदन्त ! श्रमण भगवान् महावीर ने डे-डेओ सिद्धिगति नामक स्थानने
 भेजवी चुकेछा छे—मत्तरमा ज्ञाताध्ययननेओ आ पूर्वोक्त रूपे अर्थ निरूपित कथेओ
 छे तो ते ज सिद्धिगति नामका स्थानने भेजवी चुकेछा श्रमण भगवान् महा
 वीर १८ मा ज्ञाताध्ययननेओ शो अर्थ प्ररूपित कथेओ छे ?

(एव खलु जम्बू !) आ प्रभाण्णे जम्बू स्वामीओ प्रश्न पूछथे त्थाराह
 श्री सुधर्मा स्वामी तेमने कडे छे डे डे जम्बू ! साजणो, तमारा प्रश्ननेओ
 जवाप आ प्रभाण्णे छे—

(तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे णाम णयरे होत्था । वण्णओ० तत्थण
 धण्णे णाम सत्थग्राह—भद्रा भारिया—तस्स ण धण्णस्स सत्थवाह—पुत्ता भद्राण

धनः १ धनपाल २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति । तस्या खलु
धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाहा आत्मजा धनादीना पश्चाना
पुत्राणाम् 'अणुमगजाइया' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्ग
जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुसुमा नाम दारिका आसीत् । कीदृशी
सा ?—'सुमालपाणिपाया' सुकुमार पाणिपादा=कोमलस्वरचरणा । तस्य खलु
धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेटः=दासपुत्र आसीत् । योहि 'अहिण-

धणो २- धणपाले-२ धणदेवे ३, धणगोवे-४ धणरक्खिण-५) उस
काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था । इसका वर्णन पहले
जैसा ही जानना चाहिये । उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता
था । इसकी पत्नी का नाम भद्रा था । उस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए
धन्य सार्थवाह के ये पाँच पुत्र थे-धन-१ धनपाल-२ धनदेव-३ धन
गोप-४ और धनरक्षित-५ ।

(तस्स ण धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताण
अणुमगजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सुमालपाणिपाया, तस्स
ण धणस्स सत्थवाहस्स चिलाएणाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेदिय
सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था) इस धन्य सार्थ
वाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुसुमा नामकी पुत्री थी-
जो धनादिक पाच पुत्रों के पीछे उत्पन्न हुई थी । इसके कर, चरण बड़े
कोमल थे । इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट-दास पुत्र-था-जिस

अत्तया पच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा-धणो १, धणपाले २, धणदेवे ३,
धणगोवे-४, धणरक्खिण-५)

ते धणो अने ते सभये राजगृह नामे नगर હતુ તેનું વર્ણન પહેલાની જેમ
સમજી લેવું જોઈએ તે નગરમાં ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો તેની પત્નીનું
નામ ભદ્રા હતુ તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલા પાચ પુત્રો હતા, તેમના
નામ આ પ્રમાણે છે-ધન-૧, ધનપાલ-૨, ધનદેવ-૩, ધનગોપ-૪, અને ધનરક્ષિત-૫

(તસ્સ ણ ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ ધૂયા ભદ્દાએ અત્તયા પચણ્હ પુત્તાણ અણુ-
મગ્ગજાતીયા સુસુમા ણામ દારિયા, હોત્થા, સુમાલપાણિપાયા, તસ્સ ણ ધણસ્સ
સત્થવાહસ્સ ચિલાએ ણામ દાસચેડે હોત્થા, અહ ણ પચેદિય સરીરે મસોવચિણ,
બાલકીલાવણકુસલે યાવિ હોત્થા)

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા-ભાર્યાનાં ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુસુમા નામે
એક પુત્રી હતી તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ ઉત્પન્ન થઈ હતી તેના
હાથ-પગ ખડું જ કેમળ હતા તે ધન્યસાર્થવાહને એક દાસીપુત્ર હતો તેનું

पचिदियसरीरे ' अहीनपथेन्द्रियशरीरः=पतिपूर्णतरेन्द्रियशरीरः, ' मासोपचित ' मासोपचितः=मासैरुपचितः, पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालक्रीडावृत्तकुसले ' बालक्रीडनकुशलथापि आसीत् । ततः खलु स दासचेष्टः सुसुमाया दारिकायाः ' बालगाहे ' बालग्राहः यो हि बालक्रीडयितुं निपुक्तो भूत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जाताथाप्यभवत् । स हि चिलातः सुसुमां दारिका कट्यां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारिकैश्च दारिकामिथ वाय्वैश्च बालिकामिथ, डिम्भकैश्च डिम्भिकामिथ कुमारैश्च कुमारिकामिथ सार्द्धम्=दारकडिम्भकबालककुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतभेदो विज्ञेयः, अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दामचेष्टः तेषां बहूनां ' दाराण जात्र ' दारकाणां यात्र=दारकाणां दारिकाणां डिम्भकानां डिम्भिकानां कुमाराणां कुमारिकाणां

का नाम चिलात था । जो प्रमाणोपेत पाचो इन्द्रियो से परिपूर्ण शरीर वाला था । मासोपचित था पुष्ट देहवाला था । यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था । (तएण से चिलाए दासचेहे सुसुमाए दारियाए बालगाहे जाए यावि होत्था सुसुमादारिये कडीए गिण्हइ, गिण्हिस्सा बहूहिं, दारएहिं य दारियाहिं य विहरइ-तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव बइए आडोलियाओ तेदुरुए पोतुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरणमल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइयाए आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए ताळेइ) इसलिये वह दासचेष्ट सुसुमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया । अतः वह चिलान दास चेष्टक सुसुमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिम्भक डिम्भिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

नाम चिलात इतु ते सप्रभाषु पाथे छन्दियोथी परिपूर्ण शरीरवाणे इतो ते भासल तेभञ्ज पुष्ट शरीरवाणे इतो ते आणकाने रमाडवामा सविशेषव्यतुर इतो

(तएण से चिलाए दासचेहे सुसुमाए दारियाए बालगाहे जाए यावि होत्था सुसुमा दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हिस्सा बहूहिं, दारएहिं य दारियाहिं य विहरइ तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव बइए आडोलि याओ तेदुरुए पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरण मल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए ताळेइ)

तथी ते दासचेर सुसुमा दारिकाने रमाडवा भाटे नियुक्त करवामा आये। आ प्रभाषे ते चिलात दास चेष्टक सुसुमा दारिकाने आणवामा जेसा दिने धव्वा दारक दारिकाओंनी साथे आणक तेभञ्ज आणवामाणी

च मध्ये 'अप्येगइयाण' अप्येकेपाम् 'सुल्लए' सुल्लकान्=कपर्दकविशेषान् 'कोडी'
इति भाषा प्रसिद्धान् अपहरति=चोरयति। एव 'वट्टए' वर्तकान्=जत्वादिमयगोलकान्
'आडोलियाओ' आडोलिका इति नाम्ना प्रसिद्धान् वाल क्रीडनवस्तुविशेषान् 'तेदूसए'
देशीशब्दोऽयम्-गेन्दुकान् 'पोत्तुल्लए' वस्त्रमयपुच्छिकाः, 'साडोल्लए' उत्त
रीयवस्त्राणि चोरयति। तथा अप्येकेपाम् आभरणमाल्यालङ्कारान् अपहरति। अन-
न्तरम् 'अप्येगइए' अप्येककान् 'आडस्सइ' आक्रुशयति=निष्ठुरवचनेन 'एव'
अवहमइ' अपहसति=अपशब्दमुच्चार्य हास्यं करोति, 'निच्छोडेइ' निच्छोटयति=
'यदि त्व किमपि वदिष्यसि तदा त्वा वहिर्निष्काशयिष्यामीत्यादि शब्दैस्तान्
भीषयति, तथा 'णिम्मच्छेइ' निर्भर्त्सयति=तेषा निर्भर्त्सना करोति, एव
'तर्ज्जेइ' तर्जयति 'मया कृत किमपिकार्यं यदि स्व मातापितृभ्यो यूय वदिष्यथ

के साथ बार २ खेलने में लगा रहता। खेलते वह चिलात दास
चेटक उन अनेक दारक दारिका, डिम्भका, डिम्भिका, कुमार कुमा-
रिकाभ्रां में से कितनेक बच्चे के खेलने के साधन भूत कपर्दक
विशेषों को कौडियो को चुरा लेता कितनेक के जतुके बने हुए चपेटो
को, कितनेक के अडोलिक नाम से प्रसिद्ध खिलोने को, कितनेक बच्चों
की गेंदों को कितनेक बच्चे की बत्त के बनी हुई गुडियो को, तथा
कितनेक बच्चे के उत्तरीयवस्त्रों-को फरियो को चुरालेता था। कितनेक
बच्चों के आभरणों को मालाओं को और अलकारों को भी चुरालिया
करता था कितनेक बच्चे को गाली देता कितनेक बच्चे की वह नि-
ष्ठुर वचनों को उच्चारण कर हँसी मजाक करने लग जाता था। यदि
तू कुछ कहेगाता मैं तुझे यहाँ से बाहर निकाल दूंगा इत्यादि शब्दों
से कितनेक बच्चों को वह डरा दिया करता था। कितनेक बच्चों को

अने डिम्भिका साथे अने कुमार कुमारिकाओंनी साथे बारबार रमवामा न
थोटी रहते। हते। ते चिलात दासचेर रमता रमता घण्टा दारक-दारिक,
डिम्भ-डिम्भिक, कुमार-कुमारिकाओंमाथी डेटलाड भाण्डोना रमवाना साधन
कपर्दक विशेषाने-कोडीओने थोरी लेतो, डेटलाडना लाभना अनेला चपेटा-
ओने, डेटलाडना अडोलिक नामथी प्रसिद्ध ओवा रमकाओने, डेटलाड भाण
डोनी दडीओने, डेटलाड भाण्डोनी वस्त्रथी अनेली हाँगलीओने तेमन डेटलाड
भाण्डोना उत्तरीय वस्त्रोने थोरी जेतो हते। ते डेटलाड भाण्डोना आलखोने,
भाणाओने अने घरेणुओने पण थोरी जेतो हते। ते डेटलाड भाण्डोने
गाणो हते। अने डेटलाड भाण्डोनी निष्ठुर वचनेन ओलीने कडा-अशकरी करवा
लागतो हते। "जे तु कर्ष पण ओवथे तो छु तने अर्हीथी अडार कादी

पचिदियसरीरे ' अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरः=प्रतिपूर्णसर्गेन्द्रियशरीरः, ' मासोपचिप ' मांसोपचितः=मांसैरुपचितः, पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालक्रीडावणकुसले ' बालक्रीडनकुशलथापि आसीत् । तत खलु स दासचेष्टः सुसुमाया दारिकायाः ' बालग्राहे ' बालग्राहः यो हि बालक्रीडयितु निपुक्तो भृत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जाताश्राप्यभवत् । स हि चित्रातः सुसुमा दारिका कट्यां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारिकैश्च दारिकामिथ गाल्यैश्च गालिकामिथ, डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च सार्द्धम्=दारकडिम्भकबालकुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतभेदो विज्ञेयः, अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दामचेष्टः तेषां बहूना ' दाराण जाव ' दारकाणां यावत्=दारकाणां दारिकाणां डिम्भकानां डिम्भिकानां कुमारानां कुमारिकाणां

का नाम चिलात था । जो प्रमाणोपेत पाचों इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाला था । मांसोपचित था पुष्ट देहवाला था । यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था । (तएण से चिलाए दासचेष्टे सुसुमाए दारियाए बालग्राहे जाए यावि होत्था सुसुमादारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हिस्ता बहूहिं, दारएहिं य दारियाहिं य विहरइ-तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वइए आडोलियाओ तेदुरुए पोतुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरणमल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइयाण आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए ताछेइ) इसलिये वह दासचेष्ट सुसुमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया । अतः वह चिलान दास चेष्टक सुसुमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिम्भक डिम्भिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

नाम चिलात डंतु ते सप्रभाणु पाथे धन्द्रियोथी परिपूरुषु शरीरवाणे। डंतो ते भासल तेमञ्च पुष्ट शरीरवाणे। डंतो ते भाणकाने रमाडवाभा सविशेषयत्तुर डंतो।

(तएण से विलाए दासचेष्टे सुसुमाए दारियाए बालग्राहे जाए यावि होत्था सुसुमा दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हिस्ता बहूहिं, दारएहिं य दारियाहिं य विहरइ तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वइए आडोलियाओ तेदुरुए पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरण मल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए ताछेइ)

तेथी ते दासचेर सुसुमा दारिकाने रमाडवा भाटे नियुक्त करवाभा आण्ये। आ प्रभाणु ते चिलात दास चेष्टक सुसुमा दारिकाने भाणभा भेसा दीने धल्ला दारक दारिकाओनी साथे भाणक तेमञ्च भाणाओनी डिम्भक

कादीना अम्मापितर यजेव धन्य सार्थवाहस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य धन्य सार्थवाह बहुभिः 'खिज्जणाहि य' खेदनाभिश्च=खेदजनकवाग्भिः 'रुटणाहि य' रोदनाभिः माश्रुदितवाग्भिः, 'उल्लमणाहि' उपालम्भनाभिः=किमेतच्छचितम्? भवान्शाम्? इत्यादि वाग्भिश्च 'खेज्जमाणा' खेदयन्तः स्वखेदं प्रकाशयन्तः 'रुटमाणा य' रुदन्त उपालम्भमाणा य' उपालम्भयन्तश्च धन्याय सार्थवाहाय एतमर्थं=चिलातकृताऽपराधरूपमर्थं निवेदयन्ति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-तएणं से धणणे सत्थवाहे चिलाय दासचेड एय-
मट्टु भुज्जो भुज्जो णिवारेइं, णो चेव णं चिलाए दासचेडे
उवरमइ। तएण से चिलाए दासचेडे तेसिं वड्ढणं दारगाण
य ६ अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ। तएणं ते
वहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं जाव
णिवेदेति। तएणं ते आसुरुत्ता जेणेव धणणे सत्थवाहे तेणेव

की शिक्षायात् करने लगे। अपने २ बालकों के मुख से इस प्रकार की
दामचेटरु यी हरकत सुनकर उन दारक आदि की के माता पिता जहा
धन्य सार्थवाह होता या वहा आते और आकर के धन्य सार्थवाह को
अनेक खेदजनक वचनों द्वारा रोते २ उपालम्भ=उलहना दिया करते-
क्या आप जैसे व्यक्तियों को यह उचित-है-इस तरह से उससे कहा
करते। इस तरह वे खेदजनक तथा अश्रु भरकर कही गई वाणियों द्वारा
अपना खेदप्रकाशित करते हुए रोते हुए एव उलहना देते हुए धन्यसार्थ
वाह के लिये चिलातकृत अपराध रूप अर्थ की निवेदना करते ॥सू० १॥

मुपेथी आ प्रभावे दान चेटकनी भराण वतल्लुक विधेनी विगत सालणीने ते
दारक वगेरेना मातापिता न्या धन्यसार्थवाह डोता त्या आवता अने आवीने
धन्यसार्थवाहने धलु कडोर वयनोथी रडता रडता ठपको आपता रडता डता
'शु तमारी नेवी ज्झितने आ वात शोले डे?' आ प्रभावे ते क्ख
करता डता आ प्रभावे तेजो जेदजनक तेमज अश्रुलीनी डालतमा डडेती
वाणीओ वडे पोतानु दु भ प्रकट करता, रडता तेमज ठपको आपता धन्य
सार्थवाहने चिलाते ने कर्छ, भराण वतल्लुक करी डोय ते भद्व इरियाडो करता
रडता डता ॥ सूत्र १ ॥

तेदायुष्माक प्राणान् आहरिष्यामीत्येवमप्यस्यैरहुलिनिर्दग्धैः तेषु मीतिवृत्त्या दयति । तथा अप्येकान् बालकान् 'तालेइ' ताडयति चपेटादिभिः । ततः सख्यं ते मह्यं दारक्यं यावत्-कुमारिकाश्च सर्वे गाला 'रोयमाणा य' रुदन्तश्च 'कदमाणा य' क्रन्दन्तश्च=उच्चैः स्वरेण चीत्कारं कुर्वन्त 'माण २' स्वेषाम् २ 'अम्मापिऊण' अम्मापितृभ्यश्चमर्थं निवेदयन्ति । ततः सख्यं तेषां बहूनां=दार-

घह निर्भर्त्सित कर देता "मेरा क्रिया हुआ कुछ भी काम यदि तुम लोग अपने माना पिता से कहोगे-तो याद रखना मैं तुम्हारे प्राणों को ले लूंगा-तुम्हें जान से मार डालूंगा" इस तरह किननेक बालकों को वह अगुलि दिवा २ कर मथभीत कर दिया करता। किननेक बालकों को वह थप्पड़ आदि भी मार देता। (तएण ते बह्वे दारगा-य जाव रोयमाणा य कदमाणा य ४ साय २ अम्मापिऊण णिवेदेति, तएण तेसि बहूण दारगाण य ६ जाय अम्मापितरो जेणेव धण्णे सत्थ-वाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वण्ण सत्थवाह बह्वि खिज्ज-णाहि य रुट्ठाहि य उवलभणाहि य खिज्जमाणाय रुट्ठमाणाय उवल-भेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठ णिवेदेति) इस तरह वे अनेक दारक यावत् कुमारिकाँ सब ही रो रो कर के आक्रुद्ध करके-उच्चस्वर से चीत्-कार करके-अपने २ माता पिताओं से उस दामचेटक की इस बर्ताव

भूषीश वगेरे वञ्जोधी डेट्वाड भाण्डोने ते जीवडावी हेतो डेतो डेट्लाक भाण्डोनी ते अत्सना पणु वरतो डेतो-भागी डोई पणु वात तमे तभार भातापिताने डडेशो तो याद राखजे हु तभने लुवता नडि छोडु तभने हु क्तनधी भारी नाभीथ " आ प्रभाणु डेट्लाक भाण्डोनी सामे ते आगणीओ थी धी थी धीने जीवडावी हेतो डेतो डेट्लाक भाण्डोने ते तभाओ वगेरे पणु लगावी हेतो डेतो

(तएण ते बह्वे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कदमाणा य ४ साय २ अम्मापिऊण णिवेदेति, तएण तेसि बहूण दारगाण य ६ जाव अम्मापितरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वण्ण सत्थवाह बह्वि खिज्ज-णाहि य रुट्ठाहि य उवलभणाहि य खिज्जमाणा य रुट्ठमाणा य उवलभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठ णिवेदेति)

आ प्रभाणु ते धणु दारक यावत् कुमारिकाओ रडता रडता, आकड न डरता डरता, भागी साहे श्रीकार करीने पोतपोताना भातापिताने ते दास डेटकनी अशान वतल्लुके विचे डेरियोडा करवा लाग्या पोताना

कादीना म ये अप्येकेषा 'खुल्लए' खुल्लकान्=रुपर्दकविशेषान् अपहरति
'जाव तालेइ' यावत्ताडयति=पूर्वोक्तक्रमेण एव रुपर्दकाद्यपहरण यावत्तर्जनं
ताडनं च करोति । ततः खलु बहवो दारकाश्च दारकादयो रुदन्तश्च यावत् स्वेपा
२ अम्मापितृभ्यो निवेदयन्ति । ततः खलु ते आसुरुत्ताः=स्व पुत्रवचन श्रुत्वा झटिति
क्रोधाविष्टमानसा यत्रैव धन्य सार्थवाहः तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य बहूभिः
'खेज्जणाहि जाव एयमट्ट' खेदनाभिर्यावत् एतमर्थम्=खेदसमूचनाभिर्यावत्
उपालम्भनयुक्ताभिर्वाग्भिः चिलातदासचेटक कृताऽपराधलक्षणम् अर्थम् निवेदयन्ति ।
ततः खलु धन्यः सार्थवाहो बहूना 'दारगाण' दारकाणा ६=दारकादीनाम्
अम्मापितृणामन्तिरे एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरुत्तः चिलात दासचेटम् 'उच्चा-
वचाभिः=अनेकविधाभिः 'आउमणाहि' आक्रोशनाभिः=क्रोपजनकैर्वचनैः
'आउसइ' आक्रुश्यति=आक्षिपति 'उद्धसइ' उद्धर्षयति=नामगोत्रादिनाऽधः
पातयति-निन्दतीत्यर्थः । नेत्रमुखादि वक्रीकमणेन 'णिम्मच्छेइ' निर्भर्त्सयति=

अप्येगइयाण खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएण ते बहवे दारगा य
जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण जाव णिवेदेति) इस तरह सम-
झाने पर भी वह चिलात दासचेट उन अनेक दारको आदि में से
कितनेक दारक आदिको के कपर्दक (कौड़ी) विशेषों को चुराता रहा
यावत् उन्हें ताड़ित करता रहा-मारता पीटता रहा । और वे बालक
आदि भी रोते हुए अपने २ माता पिताओं से उस के अपराध को जा
२ कर कह देते रहे । (तएण ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्यवाहे तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, बहूहि खेज्जणाहि जाव एयमट्ट णिवेदेति,
तएण से धण्णे सत्यवाहे बहूण दारगाण अम्मापिऊण अतिए एयमट्ट
सोच्चा आसुरुत्ते चिलायदासचेड उच्चावचाहि आउमणाहि आउसइ
उद्धसइ णिम्मच्छेइ,) इस प्रकार अपने २ बालकों के मुख से बार २

खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएण ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव
अम्मापिऊण जाव णिवेदेति)

आ प्रभाषे समञ्जसवा छताये ते चिलात दासचेटक धण्णा दारके। वगे
रेभा डेटलाक दारके। वगेरेनी डोडीओने योरतो न रद्धो यावत् ते न णकेने
ताडित करतो रद्धो, तेमन मारतो पीटतो रद्धो अने ते णाणके। वगेरे पणु
रडता रडता पोतपोताना मातापिताने आनी इरियादो करता न रद्धा।

(तएण ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्यवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
बहूहि खेज्जणाहि जाव एयमट्ट णिवेदेति, तएण से धण्णे सत्यवाहे बहूण दार
गाण अम्मापिऊण अतिए एयमट्ट सोच्चा आसुरुत्ते चिलाय दासचेड उच्चावचाहि
आउमणाहि आउसइ उद्धसइ, णिम्मच्छेइ)

उवागच्छइ, उवागच्छिता बहूहिं रेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं
 णिवेदेति । तएणं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं ६
 अम्मापिउण अंति एयमट्ठ सोच्चा आसुरुत्ते चिलाय दासचेडं
 उच्चावयाहि आउसणाहिं आउसइ, उऊसइ, णिब्भच्छेइ
 निच्छोडेइ, तजेइ उच्चावयाहि तालणाहिं तालेइ, साओ
 गिहाओ णिच्छुभइ । तएणं से चिलाए दासचेडे साओ
 गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव
 पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य
 वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहं सुहेणंपरिवड्ढइ ॥सू० २॥

टीका—‘ तएणं से ’ इत्यादि । ततः खलु धन्य सार्थवाहः । चिलात दास
 चेडम् ‘ एयमट्ठ ’ एतमर्थम्=एतस्मादर्थान् दारकादीनां कपर्दकापहरणादिरूपोद
 र्धात् भूयोभूयो निवारयति । नो चैव खलु दासचेट एतस्माद्दुष्कृत्यादुपरमते ।
 ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेषां बहूना ‘ दारगाण य ’ दारकाणां च=दार

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण से धण्णे सत्थवाहे) इसके बाद उस धन्यसार्थवाहने
 (चिलाय दासचेड) चिलात दास पुत्र को (एयमट्ठ भुज्जो २ णिवारेइ)
 घालको के कपर्दक आदि चुराने रूप अर्थ से बार २ मना किया, परन्तु
 (णो चेव ण चिलाए दासचेडे उवरमइ) वह चिलात दारक उस काम
 से विरक्त नहीं हुआ । (तएण से दासचेडे तेसिं बहूण दारगाण य ६

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण से धण्णे सत्थवाहे) त्थवाहे ते धन्य सार्थवाहे (चिलाय दास
 चेड) चिलात दासपुत्रने (एयमट्ठ भुज्जो २ णिवारेइ) आणकेनी केडीओ
 वगेरेने थोरी जवा भट्ट वारवार मनाई करी परन्तु (णो चेव ण चिलाए
 दासचेडे उवरमई) ते चिलात दारक पोतानी भर नवर्त्तलुक् छोडीने सुधर्यो नहि

(तएण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूण दारगाण य -

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय खलएसु' घृतखलकेषु=घृतक्रीडनस्थानेषु च 'वेसाघरेसु' वेद्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुख सुखेन परिवड्डु' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवा-
रिए सच्छदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी मस-
पसंगी जुयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि

य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहसुहेण परि-
वड्डु) और यहाँ तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड़ भी देता रहा
और कभी २ तू मेरे घर में से निकल जा नहीं तो मैं तुझे मारूँगा इस
तरह के वचनों से उस को निरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस
की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक चाक्यों का उस चिलात दासचेटक
पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश
होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताड़नाओं से ताड़ित कर
अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने
इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया—तब यह राजगृह नगरमें श्रृगा-
टक आदि मार्गोंमें अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों
में सभास्थानों में, पानीय शालाओं में—प्याऊ घरों में, जुआ खेलने के
स्थानों में वेद्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहों में घूम फिर
कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥सू० २॥

अने छेवटे आ वात त्या सुधी पडोअी के केाई केाई वणते ते तेने
णहार पणु काढी भूकतो हुतो अने केाई केाई वणते तेने आ जलता वथ-
नोथी कपडेा पणु आपतो रडेतो हुतो के तुं भारा घरभाथी नीकणी न नडि
तर तने हु भारी नाणीश परतु न्यारे आ जलनी शिक्षाओनी के अथ
प्रदर्शननी ते दास चेटक छपर कणी असर थ नडि त्यारे छेवटे धन्यसाथ
वाडे हताश थधने तेने लाकडी, मुक्कओ वगेरेथी ताडित करीने पोताना घेरथी
णहार काढी भूकथे आ प्रभाण्णे न्यारे धन्य सार्थवाडे तेने पोताना घेरथी
णहार काढी भूकथे त्यारे ते राजगृह नगरना श्रृगाटक वगेरे रस्ताओमा
रभउलनी जेम भटकवा लाग्ये अने देवकुणोमा, मवास्थानोमा, परणोमा,
लुगारना अहाओमा, वेद्याओना घरोमा अने शराणणानाओमा भटकीने
जेम तेम करीने पोताना पालन-पोषण करवा लाग्ये ॥ सूत्र २ ॥

तिरस्करोति, 'निच्छोडेइ' निच्छोटयति=त्यजति, 'तज्जेइ' तज्जयति= 'निस्तर मग गृहान् नोवेत्तां ताडयिष्यामि' इत्यादि वानेन भर्तयति 'उवा चयाहिं तालणाहिं' उच्चावचाभिर्यष्टिगृह्याद्यनेन विधाभिस्ताडनाभिः 'तालेइ' ताडयति 'साओ गिहाओ' स्वस्माद् गृहात् 'णिच्छुमइ' निक्षिपति-नि. सारयति । ततः खले 'स चिण्णतो दामचेटः तेन सार्यमादेन स्वस्माद् गृहात् 'णिच्छुदे' निक्षिप्त=नि. सारितः गन् राजगृहे नगरे सिंघाडग जाव गहेसु श्रृङ्गाटक यायन्महापरपथेषु चतुष्पथादिषु सर्वत्र स्थलेषु, देवकुलेषु च समासु च

चिलात दासचेटक फी पूर्वोक्त अपराधों को जय २ वे सुना करते तब वे गुस्से-में भर २ कर जहाँ धन्यसार्थवाह होता वहाँ चले जाते रहे । और वहाँ जाकर घड़े खेद के साथ, रोते हुए अपने २ दु.स्वों को प्रकट करते रहे इस तरह बार २ उन दारक आदि के माता पिताओं के मुख से इस दासचेटक के दुष्कृत्य को सुनकर वह धन्य सार्थवाह क्रोध में आकर उस दासचेटक चिलात को अनेक विधकोप जनक ऊँचे नीचे शब्दों से धिक्कार ने लगते थे उसका नाम गोत्र आदि की निंदा करने लग जाते थे । नेत्र, मुख, आदि को देहा करके उसका निरस्कार भी करते थे । (णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावचाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ निच्छुमइ, तण्ण से चिलाण दासचेडे साओ गिहाओ निच्छुदे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव समासु

आ प्रभाणु पोतपोताना गाणजेने भुण्णथी वारवार चिलात दासचेटकनी इरियाहो न्यारे न्यारे तेओ सासणता त्यारे त्यारे तेओ गुस्से धरने न्या धन्यसार्थवाह होता त्या जाता होता अने तेना न्यने तेओ गहुण दुधनी साथे रडता रडना पोतपोताना हु जे ने प्रकट करता रडता होता आ प्रभाणु वारवार ते दारक वगेरेना मातापिताना भुण्णथी ते दासचेटकनी अराण वत्तलु विघेनी विगत सासणाने ते धन्यसार्थवाह क्रोधमा लराधने ते दास चेटक चिलातने घेणु क्रोध उत्पन्न करे-तेवा अराण वयनोधी धिक्कारवा लागतो होता तेमज तेना नाम गोत्र वगेरेनी निंदा करवा लागतो होता, आओ भुण्ण वगेरे भगोडीने तेना तिरस्कार पुण्ण करता रडता होता

(णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावचाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ निच्छुमइ, तण्ण से चिलाण दासचेडे साओ गिहाओ निच्छुदे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव समासु य पवासु य जूय खलपसु य वेसा धरेसु य पाणधरेसु य सुह सुहेण पखिद्धइ)

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय रालएसु' द्यूतखलकेषु=द्यूतक्रीडनस्थानेषु च 'वेसाघरेसु' वेश्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुख सुखेन परिवृद्ध' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवा-
रिए सच्छदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसगी चोज्जप्पसंगी मस-
पसगी जुयप्पसंगी वेसापसगी परदारप्पसंगी जाए यावि

य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहसुहेण परि-
वृद्ध) और यहाँ तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड़ भी देता रहा
और कभी २ तू मेरे घर में से निकल जा नहीं तो मैं तुझे मारुंगा इस
तरह के वचनों से उस को निरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस
की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक वाक्यों का उस चिलात दासचेटक
पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश
होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताड़नाओं से ताड़ित कर
अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने
इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया—तब यह राजगृह नगरमें श्रृगा-
टक आदि मार्गोंमें अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों
में सभास्थानों में, पानीय शालाओं में—प्याऊ घरों में, जुआ खेलने के
स्थानों में वेश्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहों में घूम फिर
कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥सू० २॥

अने छेवटे आ वात त्या सुधी पडोथी के केई केई वणते ते तेने
अडार पणु डाढी भूकते। छेते अने केई केई वणते तेने आ नतना वच-
नोथी कपके। पणु आपते। रडेते। छेते के तुं भारा घरमाथी नीकणी न नडि
तर तने हु भारी नाभीश परतु न्यारे आ नतनी शिक्षाओनी के अय
प्रदर्शननी ते दास चेटक उपर कशी असर थर नडि त्यारे छेवटे धन्यसाथ
वाडे हताश थपने तेने लाकडी, मुक्क्या वगेरेथी ताडित करीने पोताना घरथी
अडार डाढी भूकये आ प्रमाछे न्यारे धन्य सार्थवाडे तेने पोताना घरथी
अडार डाढी भूकये त्यारे ते राजगृह नगरना श्रृगाटक वगेरे रस्ताओमा
रण्डेलनी जेम भटकवा लाग्यो अने देवकुणोमा, मलास्थानोमा, परणोमा,
लुगारना अहाओमा, वेश्याओना घरोमा अने शराबखानाओमा भटकीने
जेम तेम करीने पोताना पालन-पोषण करवा लाग्यो ॥ सूत्र २ ॥

होत्था । तएणं रायगिहस्स नयरस्स अट्टरसामंते दाहिण-
 पुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नाम चोरपट्ठी होत्था, विसम-
 गिरिकडगकोडवसंनिविट्ठा, वसी कलंरूपागारपरिक्खित्ता
 छिण्णसेलविसमप्पवायफलिहोवगूढा एगदुवारा अणेग-
 खंडी विदियजणणिग्गमपवेसा अट्ठिभतरपाणिया सुदुल्ल
 भजलपेरंता सुवहुस्स वि कुवियवलस्स आयगस्स दुप्पहंसा
 यावि होत्था । तत्थ सीहगुहाए चोरपट्ठीए विजए णामं
 चोरसेणावई परिवसइ अहम्मिंए जाव अधम्मकेऊ समुट्ठिए
 बहुणगरणिग्गयजसे सूरे दट्ठप्पहारी साहसिए सद्धवेही । से
 णं तत्थ सीहगुहाए चोरपट्ठीए पंचणह चोरसयाणं आहेव-
 च्च जाव विहरइ । तएणं से विजए तक्करे चोरसेणावई
 बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य सधि-
 च्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण
 य वालघायगाण य विसभघायगाण य जूयकाराण य
 खडरक्खाण य अत्तेसि च बहूणं छिन्नभिन्नवहिराययाण
 कुडगे यावि होत्था । तएणं से विजए तक्करे चोर-
 सेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमे जणवय बहूहि
 गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य वदिग्गहणेहि
 य खत्तखणणेहि य पथकुट्टणेहि य उर्वलिमाणे २ विद्धंसे
 माणे २ णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरइ । तएणं से
 चिलाए दासचेडे रायगिहे बहूहि अत्थाभि सकीहि चोज्जामि

સંકીર્ણિય દારાભિસકીહિ ય ધણિણહિ ય જૂઝકરેહિ ય પર-
અવમાણેર રાયગિહાઓ નગરાઓ ણિગગચ્છઙ્, ણિગચ્છિત્તા,
જેણેવ સીહગુહા ચોરપછી તેણેવ ઉવાગચ્છઙ્ ઉવાગચ્છિત્તા
વિજય ચોરસેણાવઙ્ ઉવસંપાજ્ઞિત્તાણં વિહરઙ્ ॥ સૂ.૦૩ ॥

ટીકા—‘તણ સે’ ઇત્યાદિ । તત્ ‘અલ્પ’ સ ચિલાતો દાસચેટ : ‘અણોહ-
ટ્ટિય’ અનપઘટિત; યો હિ દુષ્કૃતૌ પ્રવર્તમાન કમપિ હસ્તૌ ધૃત્વા નિવારયતિ,
સોડપઘટક; નિર્ણયમાણસ્તુ અપઘટિત; અય હિ નિવારયિતુરભાવાત્ અનપઘટિત;=
નિરુદ્ધશ ‘અણિવારિય’ અનિવારિત; હિતોપદેશકસ્યાભાવાત્ અનિવારિત;

‘તણ સે ચિલાણ દાસચેટે’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(તણ) હસકે વાદ (સે ચિલાણ દાસચેટે) વહ ચિલાત દાસચે
ટક (અણોહટ્ટિય અણિવારિય સન્નદમઈ સહરપ્પચારી મજ્જપ્પસંગી ચોજ્જ-
પ્પસંગી મસપ્પસંગી, જૂયપ્પસંગી, વેસાપસંગી, પરદારપ્પસંગી જાણ યાવિ
હોત્યા) અનપઘટિત—નિરુદ્ધશ બન ગયા—જો દુષ્કર્મ મેં પ્રવર્તમાન કિસી
કો મી હાથ પકડકર ઉસસે નિવારિત કર દેતા હૈ ઉસકા નામ અપઘટક
ઔર જો દૂર કિયા જાતા હૈ વહ અપઘટિત કહલાતો હૈ । નિવારણ કર
નેવાલે કા અભાવ હોને સે યહ ચિલાત દાસચેટક અનપઘટિત હસા
કારણ સે બન ગયા । હિતોપદેશક કોઈ ઉસકા રહા નહી અત્ત યહ
કુત્સિત કામ કરને સે પીછે નહી હટતા—હસલિયે યહ અનિવારિત હોકર
જો મન મેં આતા ઉસે કર ડાઝતા—અત્ત’ હવ્વઙ્ બન ગયા । સ્વચ્છન્દ

તણ સે ચિલાણ દાસચેટે ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થ—(તણ) ત્યારપછી (સે ચિલાણ દાસચેટે) તે ચિલાત દાસ ચેટક
(અણોહટ્ટિય અણિવારિય સન્નદમઈ, સહરપ્પચારી મજ્જપ્પસંગી, ચોજ્જપ્પસંગી મસ
પ્પસંગી, જૂયપ્પસંગી, વેસાપસંગી, પરદારપ્પસંગી, જાણ યાવિ હોત્યા)

અનપઘટિત—સ્વચ્છન્દ બની ગયો, દુષ્કર્મમા પડેલા ગમે તેને જે હાથ
પકડીને તેમાથી તેને દૂર કરે છે તેનું નામ અપઘટક અને જે દૂર
કરવામા આવે છે તે અપઘટિત કહેવાય છે ચિલાત દાસચેટકને જોગ કામોથી
દૂર લઈ જનાર—તેને નિવારણ કરનાર કોઈ હતું નહિ એથી તે અનપઘટિત
થઈ ગયો હતો તેને કોઈ હિતોપદેશક હોતો નહિ તેથી તે કુત્સિત કામ કર
વામા પણ પીડેહક કરતો ન હતો, અસાધ્ય કામોથી તેને રોકનાર નહિ હોવાને
કારણે તે મનમા શાવે તેમ કરતો હતો એથી તે હવ્વઙ્ બની ગયો હતો તે

‘સન્નદમર્દ’ સન્નદમતિઃ=સ્વામિપાપર્ગો-ઉદ્ગડ્ગત્યર્થઃ, અતઃપત્ર ‘સદ્ગુણ-
ચારી’ સ્વૈરપચારી=સન્નદ્વિહારી ‘મગ્નપ્પસંગી’ મધ્યમસંગી મધ્યપાપી,
‘ચોજ્જપ્પસંગી’ ચૌર્ધમસંગી=ચૌર્ધકર્મણિ પરાયણ, ‘મમપ્પસંગી’ માંસપ્રસંગી=
માંસમક્ષણશીલઃ, ‘જૂયપ્પસંગી’ છૂતપ્રસંગી છૂતક્રીડાપ્રસક્તઃ, ‘વેસાપસંગી’
વેશ્યાલમ્પટઃ, એવ ‘પરદારપ્પસંગી’ પરદારપ્રસંગી=પરદારરતો જાતશ્રાપિ આસીત્ ।
તતઃ સ્વલ્લ રાજગૃહસ્ય નગરસ્ય અદૂરસામન્તે દક્ષિણપૌરમ્યે દિગ્ભાગે અગ્નિકોણે
સિંહગુહાનામ ચોરપલ્લી આસીત્, યા દિ પલ્લી ‘વિસમગિરિક્કડગકોડવસન્નિ-
વિદ્ધા’ વિપમગિરિક્કટક્રકોડમ્પસન્નિવિષ્ટા=વિપમો નિમ્નોન્નતો યો ગિરિક્કટક્રઃ=
પર્વત મધ્યમાગઃ, તમ્ય યઃ કોડમ્પઃ પ્રાન્તમાગ, તત્ર સન્નિવિષ્ટા=સ્થિતા આસીત્ ।
પુનઃ ‘વસીકલકપાગારપરિચ્છિન્ના’ વસીકલકપાકારપરિચ્છિન્ના=વસીકલક
વંશજાલમયી વૃત્તિઃ, સૈવ પ્રાકાર, તેન પરિચ્છિન્ના=પરિવેષ્ટિતા=વશનિર્મિતજાલ
મયપ્રાકારઃ સમન્તાત્-પરિવેષ્ટિતા, ‘છિન્નાસેલવિસમપ્પગાયકાલિહોવગૂદા’=
છિન્નશૈલવિપમપ્રપાતપરિચ્છોપગૂદા=છિન્નોગ્રયના તરાપેસયા વિમક્તો ય. શૈલ=
પર્વતઃ, તત્સમ્બન્ધિનો યે વિપમાઃ પ્રપાતા ગતાઃ, ત એવ પરિચ્છા. તયા ઉપગૂદા=
આશ્લિષ્ઠા પરિવેષ્ટિતા વિમક્તશૈલાગ્રયનિર્ગતવિપમપ્રપાતરૂપપરિચ્છાપરિવેષ્ટિતેત્યર્થઃ
‘એગદુવારા’ એગદારા=એક દ્વાર=પ્રવેશનિર્ગમરૂપ યસ્યા સા=એકપ્રવેશનિર્ગમા,
‘અણેગલ્લડી’ અણેગલ્લડા=અણેગાનિ લ્લડાનિ=વિભાગા રક્ષાદેતોર્યસ્યાં સા
અણેગલ્લડા, યત્ર=સ્વરક્ષાર્થે અણેગાનિ સ્થાનાનિ સન્તિ, ‘વિદિયજણણિગમપવેસા’

વિહારી હો ગયા-મધ્યમસંગી હો ગયા-મદિરા પીને લગ ગયા । માંસ
ખાને લગ ગયા, ચોરી કરને લગા, જૂઝા खेलने लगा, વેશ્યાસેવન કરને
લગા, ઔર પરદાર સેવન કરને મેં भी लपट हो गया । (તર્ણ રાય-
ગિહસ્મ નગરસ્મ અદૂરસામન્તે દાહિણપુરસ્થિમે વિસીમાપ સીહગુહા
નામ ચોરપલ્લી હત્યા-વિસમગિરિક્કડગકોડવસન્નિવિદ્ધા વસીકલક
પાગારપરિચ્છિન્ના છિન્નાસેલવિસમપ્પગાયકાલિહોવગૂદા રગ્ગદુવારા,
અણેગલ્લડી, વિદિયજણણિગમપવેસા અર્ધિમતરપાણિયા સુદુલ્લભજલ

સ્વેન્નદ વિહારી થઈ ગયો હતો, દાડ પિનારો થઈ ગયો હતો તે માંસ
ખાવાલાગ્યો, ચોરી કરવા લાગ્યો, જુગાર રમવા લાગ્યો, વેશ્યા-સેવન કરવા
લાગ્યો અને પરચી સેવનમા પણ લપટ થઈ ગયો હતો

(તર્ણ રાયગિહસ્મ નગરસ્મ અદૂરસામન્તે દાહિણપુરસ્થિમે વિસીમાપ સીહગુહા નામ
ચોરપલ્લી હતો । ગિરિક્કડગકોડવસન્નિવિદ્ધા વસીકલકપાગારપરિચ્છિન્ના, છિન્ના
સેલ

એગદુવારા, અણેગલ્લડી, વિદિયજણણિગમપવેસા

विदितजननिर्गमप्रवेशा=विदितजनानामेव=विश्वासवतामेव निर्गमप्रवेशौ यस्या सा=
विश्वस्तजननिर्गमप्रवेशवती 'अभिभूतपाणिना' अभ्यन्तरपानीया=मध्यस्थित-

पेरता, सुनहस्स विकूचियवलस्स आगयस्स दुप्पहसा, यावि होत्था तत्थ
सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णाम चोरसेणावई परिवसई, अहम्मिय
जाव अहम्मकेऊसमुट्ठिण बह्णगरणिगयजसे, सूरु दढप्पहारी
साहसिण सहवेही-सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोर
सयाण आह्वच्च जाव विहरइ) उसी राजगृह नगर के न अधिक दूर
पर और न अधिक पास में दक्षिण पौरुष्य दिग्विभाग में-अग्निक्कोण
में-सिंहगुहा नाम की एक चोर पल्ली थी-यह चोरपल्ली विषम गिरि-
कटक के प्रान्त भाग में-निम्नोन्नतपर्वत के मध्यभाग के अन्त भाग में
स्थित थी । इसके चारों ओर वासों की बाढ़ थी-यह बाढ़ ही इसका
प्राकार (किला) था-उससे यह घिरी हुई थी । अवयवान्तरों की अपेक्षा
से विभक्त जो पर्वत तत्सन्धी जो विषम प्रपात खड़ा उन विषम
खड्डेरूप परिखा से यह परिवेष्टित थी । निकलने का और आने का इस
में एक ही द्वार था । इसमें रक्षा के निमित्त चोरोने अनेक स्थान बना
रखे थे । परिचित-विश्वासवाले-व्यक्ति ही इसमें आ जा सकते थे ।

अभिभूतपाणिना, सुदुम्भनलपेरता, सुनहस्स वि कूचियवलस्स आगयस्स दुप्पहसा,
यानि होत्था तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णाम चोरसेणावई परिवसई, अह
म्मिय जाव अहम्मकेऊ समुट्ठिण बह्णगरणिगयजसे, सूरु दढप्पहारी, साहसिण
सहवेही सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण अह्वच्च जाव विहरइ)

ते राजगृह नगरधी धल्ले दूर पल्लु नहि अने धल्लु नल्लु पल्लु नहि
ओवी, दक्षिण पौरुष्य दिग्विभागमा अग्निक्कोणमा-सिंहगुहा नामे ओक
चोरपल्ली હતી તે ચોરપલી ઊંચી નીચી ગિરિમાળાઓના ખાત લાગમા
નિમ્નોન્નત પર્વતના મધ્યભાગના અંતભાગમા આવેલી હતી તેની ચોમેર
વાનોની વાડ હતી તે વાડ જ તેના કોટ (કિલ્લો) હતો તેનાથી તે ઘેરા
ઓલી હતી અવયવાતરોની અપેક્ષાએ વિભક્ત જે પર્વત અને તત્સન્ધી જે
વિષમ પ્રપાત-ખાડા-તે વિષમ ખાડાકૂપી પરિખાથી તે પરિવેષ્ટિત હતી
આવવા અને જવા માટે તેમા એક જ દરવાજો હતો ચોરોએ પોતાની રક્ષા
માટે ઘણા સ્થાનો બનાવેલા હતા પરિચિત વિશ્વાસુ માણસો જ તેમા આવજા
કરી શકતા હતા ખાણી માટે તેની વચ્ચે એક જળાશય હતું, તેની બહાર

જલાશયા 'સુદૃઢમજલપેરંતા' સુદૃઢમજનપર્યન્તા=સુદૃઢમ જલં પર્યન્તે=માન્ત-
માગે=વહિર્માગે યસ્યા સા=નલરહિતપરિમાગા 'ગુવદુમ્સ વિ' સુવદોરપિ
કૂવિયપલસ્સ 'કૂપિકુપલસ્ય=ચોરગવેપકસૈન્યસ્ય 'આગયસ્સ' આગતસ્ય 'દુપ્પ
દેસા' દુલ્લભમા દુર્ધર્પણીયા ચાપિ આસીત્ । તત્ર સ્વલ્લ મિદ્ધગુહાયા ચોરપલ્લયા
વિજયો નામ ચોરસનાપતિ=ચોરનાયકઃ પરિવમતિ યો દિ 'અદમ્મિય જાવ'
અધાર્મિકો યાવત્=અર્થેણ ચરતિ અધાર્મિકઃ અધર્માચરણશીલઃ-અત્ર યાવત્પદેન-
સ્તથારમ્ય 'ઘાયાણ વહાણ અચ્છાયણાણ' ઇત્યન્તઃ પાઠો ગ્રાણઃ, તથાદિ-'અધ-
મ્મિદ્ધે' અધર્મિષ્ઠ='સર્વથા ધર્મરહિતઃ, 'અધમ્મપલ્લોઈ' અધર્માખ્યાયી-અધર્મક
યક, 'અધમ્માણુમે' અધર્માણુમ=અધર્માણુગામી 'અધમ્મપલ્લોઈ' અધર્મપલ્લોકી=
અધર્મદર્શી 'અધમ્મપલ્લજ્જને' અધર્મપરજ્ઞન=અધર્માનુરક્ત, 'અધમ્મસીલસમ્મ
દાપારે' અધર્મશીલવમુદાચાર=અધર્મ એવ શીલ સ્વભાવ સમુદાચારસ્થં યસ્ય સ,

પાની કે લિપે હસમેં વીચ મેં એક જલાશય થા-હસકે બારિરી ભાગ મેં
જલ નહી થા । અનેક ખી ચોર ગવેપક સેનાજન યહા આજાવે તો ખી
વે હસ પલ્લી વા નાશ નહીં કર સકતે થે । હસ સિંદ્ધગુહા નામકી ચોર
પલ્લી મેં વિજય નામ કા એક ચોર સેનાપતિ રહતા થા । યહ અધાર્મિક
ક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહ જૈસા ઉદિત હુઆ થા । યહાં યાવત્ શબ્દ સે
“ઘાયાણ વહાણ અચ્છાયણાણ” યહાં તક કા પાઠ ગ્રહણ ક્રિયા ગયા
હે-હસ કા ખુલાશા ભાવ હસ પ્રકાર હે-અધાર્મિક શબ્દ કા અર્થ હોતા
હે અધર્માચરણશીલ-યહ વિજય નામકા ચોર અધર્માચરણશીલ થા । અધ
ર્મિષ્ઠ થા-સર્વથા ધર્મસે રહિત થા, અધર્માખ્યાયી થા-અધર્મકા કથન કર
નેવાલા થા, અધર્માણુમ થા-અધર્મ કા અણુગામી થા, અધર્મપલ્લોકી થા-
અધર્મ કા હી દેલ્ખને વાલા થા-અધર્મપરજ્ઞન થા અધર્મ મેં અનુરક્ત થા

પાણી હંતુ નહિ ઘણા ચોરાની શોધ કરતા મૈનિકો ત્યા આવે છતાંયે તે
પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા તે સિંદ્ધગુહા નામની ચોરપલ્લીમાં વિજય
નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની
જેમ ઉલ્લેખ પામેો હતો અહીં યાવત્ શબ્દથી “ઘાયાણ વહાણ અચ્છાયણાણ”
અહીં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે
છે-અધાર્મિક શબ્દનો અધર્મા-ચરણશીલ હોય છે તે વિજય નામે ચોર
અધર્માચરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માખ્યાયી
હતો, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માણુગામી હતો, અધર્મનો અણુગામી
એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર
હતો, અધર્મપરજ્ઞન હતો, અધર્મમાં આસક્ત હતો, અધર્મશીલ

अधर्मशीलोऽधर्माचरणश्चेत्यर्थः, 'अधर्मेण चेव वित्तिं कप्पे माणे विहरइ' अधर्मेणैव वृत्तिं कल्पयन् विहरति=अधर्मेणैव सावधानुष्ठानेनैव, वृत्तिं कल्पयन्=जीविका-मुपार्जयन् 'विहरइ' विहरति=आस्ते । पुनः 'हणंठिदंभिदवियत्तए' जह्मिच्छिन्धि भिन्धि विरुत्तकः='हण' जह्मि=मारय यष्ट्यादिना 'ठिद' छिन्धि=छेदय-खड्गादिना, 'भिद' भिन्धि=भेदय भल्लादिना, इतिशब्दैः स्नानुयायिन प्रेरयन् प्राणिनो विकृन्तति यः सः, जहि छिन्धिभिन्धि विरुत्तकः, इति, 'लोहियपाणी' लोहितपाणिः=लोहितौ पाणी यस्य सः, रक्तरञ्जितकरयुगलः 'चडे' चण्ड उत्कटरोपः 'रुदे' रौद्रः=भयानकः 'हुल्ले' सुद्र=सुद्रकर्मचारी 'उक्कचणवचणमायानियडिकवडकूडसाइसपयोगहुले' उत्कञ्चनवञ्चनमायानिकृतिरुपटकूटमाइसपयोग-

अधर्मशील समुदाचारवाला या-अर्थात् इसका स्वभाव और आचरण दोनों अधर्ममय थे-अधर्म ही इस का स्वभाव था और अधर्म ही इस का आचरण था । अतः अपनी जीविका का निर्वाह सावध अनुष्ठानों (अधर्म) द्वारा ही किया करता था । यष्ट्यादि द्वारा इसे मारो, खड्गादि द्वारा इसे छेदो भल्लादि द्वारा इसे भेदो इस प्रकार के शब्दों से यह अपने अनुयायियों को सदा प्रेरित करता हुआ स्वयं जीवों का छेदन भेदन न किया करता था । इसके दोनों हाथ रक्त से रञ्जित रहते थे । इस का क्रोध घट्टन प्रचंड था देखने में यह घडा भयानक दिग्बता था । सुद्र कर्मकारी था । "उक्कचणवचणमायानियडिकवडकूडसाइसपयोग हुले" उत्कञ्चन, वचन, माया, निकृति, कपट, कूट, साह, इनका व्यव-

होता-ओटले के तेना स्वभाव अने आचरण अने अधर्मभय होता अधर्म अने तेना स्वभाव होता अने अधर्म अने तेनु आचरण हुतु ओधी ते पोतानु एवन सावध अनुष्ठानो वडे ओटले के अधर्मनु आचरण करीने पुइ उरतो हुतो लाउडी वगेरैथी अने भारो, तरवार वगेरैथी अने कापी नाओ, बालाओ वगेरैथी अने लेही नाओ आ नतना शम्भोथी ते पोताना अनुययीओने हभेशा हुकम करतो रहेतो हुतो ते पोते पणु एवोनु छेदन-भेदन करतो रहेतो हुतो तेना अने हाथो बोहीथी भरअओला रहेता हुता तेना क्रोध अत्यंत प्रचंड हुतो देखावभा ते भूषण अ भयानक लागतो हुतो, ते सुद्र कर्म करनार हुतो

(उक्कचणवचणमायानियडिकवडकूडसाइसपयोगहुले) उत्कञ्चन, वचन, माया, निकृति, कपट, कूट, साह आ अधानो वडेवार तेना एवनभा

જલાશયા 'સુદુર્લભજલપેરતા' સુદુર્લભજલપર્યન્તા=સુદુર્લભ જલ પર્યન્તે=પાન્ત-
 માગે=વહિમાગે યસ્યા સા=જલરહિતવહિમાગા 'ગુવદુર્મ્મ ત્રિ' ગુવહોરપિ
 કૂપિયવલસ્સ 'કૂપિકવલસ્ય=ચોરગવેપકૃતૈયસ્ય 'આગવસ્સ' આગતસ્ય 'દુષ્-
 હંસા' દુષ્પચ્ચમા દુર્ધર્ષણીયા ચાપિ આસીત્ । તત્ર સ્વલ્લ મિદ્દગુદાયા ચોરપલ્લ્યા
 વિજયો નામ ચોરસનાપતિ=ચોરનાયકઃ પરિવસતિ યો દિ 'અદમ્મિણ જાવ'
 અધાર્મિકો યાવત્=અધર્મેણ ચરતિ અધાર્મિકઃ અધર્માચરણશીલઃ-અત્ર યાવત્પદેન-
 હતઆરમ્બ 'ઘાયાણ વહાણ અચ્છાયણાણ' ક્વપ્યન્તઃ પાઠો ગ્રાહ્યઃ, તથાદિ-'અષ-
 મ્મિદ્દે' અધર્મિણ=સર્વથા ધર્મરહિતઃ, 'અધમ્મવત્થાઈ' અધર્માલ્યાયી-અધર્મક
 ચક્ર, 'અધમ્માણુમે' અધર્માનુગ=અધર્માનુગામી 'અધમ્મપલોકી' અધર્મપ્રલોકી=
 અધર્મદર્શી 'અધમ્મવલ્લજ્જને' અધર્મવરજ્જન=અધર્માનુરક્તઃ, 'અધમ્મસીલસમ્મુ-
 દાપારે' અધર્મસીલવમુદાચાર=અધર્મ એ શીલ સમાવ સમુદાચાર્યસ્ય સ',

પાની કે લિપે હસમેં વીચ મેં એક જલાશય થા-હસકે બારિરી ભાગ મેં
 જલ નહીં થા । અનેક મી ચોર ગવેપક સેનાજન યહાં આજાવે તો મી
 વે હસ પલ્લી કા નાશ નહીં કર સક્તે ચે । હસ સિદ્ધગુદા નામકી ચોર
 પલ્લી મેં વિજય નામ કા એક ચોર સેનાપતિ રહતા થા । યહ અધાર્મિક
 ક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહ જૈસા ઉદિત હુઆ થા । યહ યાવત્ શબ્દ સે
 "ઘાયાણ વહાણ અચ્છાયણાણ" યહાં તક કા પાઠ ગ્રહણ કિયા ગયા
 હૈ-હસ કા ખુલાશા ભાવ હસ પ્રકાર હૈ-અધાર્મિક શબ્દ કા અર્થ હોતા
 હૈ અધર્માચરણશીલ-યહ વિજય નામકા ચોર અધર્માચરણશીલ થા । અષ-
 મિદ્ધ થા-સર્વથા ધર્મસે રહિત થા, અધર્માલ્યાયી થા-અધર્મકા કથન કર
 નેવાલા થા, અધર્માનુગ થા-અધર્મ કા અનુગામી થા, અધર્મપ્રલોકી થા-
 અધર્મ કા હી દેખને વાલા થા-અધર્મવરજ્જન થા અધર્મ મેં અનુરક્ત થા

પાણી હતું નહિ ધણા ચોરાની શોધ કરતા સૈનિકો ત્યા આવે છતાંયે તે
 પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા તે સિદ્ધગુદા નામની ચોરપલ્લીમાં વિજય
 નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની
 જેમ ઉચ્ચ પામેો હતો અહીં યાવત્ શબ્દથી "ઘાયાણ વહાણ અચ્છાયણાણ"
 અહીં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે
 છે-અધાર્મિક શબ્દનો અધર્માચરણશીલ હોય છે તે વિજય નામે ચોર
 અધર્માચરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માલ્યાયી
 હતો, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માનુસારી હતો, અધર્મનો અનુગામી
 એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર
 હતો, અધર્મવરજન હતો, અધર્મમાં આસક્ત હતો, અધર્મશીલ સમુદાચારી

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विषदादिमकलजीयानां सर्वथा नाशाय च,
'अधर्मकेतुः समुद्रिणः' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः=
केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः । बहुनगर-
णिगयजसे 'बहुनगरनिर्गतयशः', बहुनगरेषु निर्गत जनमुखानिःसृत यशः
ख्यातिर्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, गूरुः 'दृढपहारी' दृढपहारी=दृढमहरण
शीलः 'साहसिणः' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सदवेधी' शब्दवेधी=शब्दश्रव-
णेन लक्ष्यवेधी च आसीत् । 'से' सः = विजयधोर खलु तत्र सिंहगुहायां
चोरपत्न्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेयञ्च जाव' आधिपत्य यावत्=
स्वामित्वं कर्तुं विहरति । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूनां
चोराणां च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणां=परस्त्रीगामिनां च 'गण्ठिभेय-
गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'सन्धिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदमाना=भित्तिसंधिं छित्त्वा
ये धनमपहरन्ति ते सन्धिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाणय' क्षात्र-
खनकानां=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणिघातके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके
सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था । अनेक
नगरों में यह क्रुखात हो चुका था । बड़ा शूरवीर था । इसका प्रहार
बहुत गहरा होता था । विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था
शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बड़ा निपुण था । वह
विजय चोर सिंहगुफा नाम की उस चोरपत्नी में पाचसौ चोरों का
आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था । (तएव से विजय
तस्करे चोरसेनावर्द्ध बहूनां चोराणां य पारदारियाण य गण्ठिभेयगाण य
सन्धिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

धष्टा द्विषद, यतुष्यद, भृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (साप) वगैरे प्राणीयानां
घात भाटे, वध भाटे तेभञ्ज तेभना सर्वनाश भाटे ते अधर्म केतुग्रहणी
नेभञ्ज उदय पाभ्यो हतो धष्टा नगरोभा ते कुख्यात यध युक्तयो हतो ते
भारे शूरवीर हतो, तेना प्रहार भूषण लारे यतो हतो वगर विचार्या काम
करवाभा न तेना स्वभाव हतो शब्द श्रवण करीने ते पोताना लक्ष्यने वेधी
नाभवाभा भूषण निपुण हतो ते विजय चोर सिंह गुफा नामनी ते चोर
पक्षीभा पाचसौ चोरानो स्वागी-यावत् स्वामित्व योगवतो रहितो हतो

(तएव से विजयतस्करे चोरसेनावर्द्ध बहूनां चोराणां य पारदारियाण य
गण्ठिभेयगाण य सन्धिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य ऊण

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विषदादिमकलजीवाना सर्वथा नाशाय च,
'अधम्मकेऊ समुट्ठिए' अधर्मकेतुः समुत्थितः—अधर्म पापप्रधानो यः केतुः=
केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूप ममकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः । बहुनगर-
णिगयजसे 'बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः
ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'ददप्पहारी' ददप्रहारी=ददप्रहरण
शीलः 'साहसिए' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सदवेही' शब्दवेधी=शब्दश्रव-
णेन लक्ष्यवेधी च आसीत् । 'से' सः = विजयश्चौर खलु तत्र सिंहगुहायां
चोरपत्न्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेवच्च जाव' आधिपत्य यावत्=
स्वामित्वं कुर्वन् विहरति । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूना
चोराणां च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणां=परस्त्रीगामिना च 'गठिभेय
गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'सधिच्छेयगाणय' सन्निच्छेदकानां=मित्तिसर्पिं छित्त्वा
ये धनमपहरन्ति ते सधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाण य' क्षात्र-
खनकानां=सधिरहितमिति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणिघोके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके
सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था । अनेक
नगरों में यह कुख्यात होचुका था । बड़ा शूरवीर था । इसका प्रहार
बहुत गहरा होता था । विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था
शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बड़ा निपुण था । वह
विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपत्नी में पाचसौ चोरों का
आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था । (तएण से विजय
तस्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य
सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

धष्ठा द्विषद, अतुप्पद, भृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (साप) वगैरे प्राणीओना
घात भाटे, वध भाटे तेमज्ज तेमना सर्वनाश भाटे ते अधर्म केतुग्रहणी
जेमज्ज उदय पाभ्यो हुतो धष्ठा नगरोभा ते कुख्यात धर्धं युक्तो हुतो ते
लारे शूरवीर हुतो, तेनो प्रहार भूण ज लारे थतो हुतो वगर विचार्या काम
करवाभा ज तेनो स्वभाव हुतो शब्द श्रवण उरीने ते पोताना लक्ष्यने वीधी
नाभवामा भूण ज निपुण हुतो ते विजय चोर सिंह शुक्ष नामनी ते चोर
पदवीभा पाचसो चोरानो स्वाभी-यावत् स्वामित्व योगवतो रहतेतो हुतो

(तएण से विजयतस्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य
गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य ऋण

મહુલ; તત્ર-ઉત્તરઅનમ્ મુગ્યમનરઅનમટ્તસ્ય સમીપાગતરિનક્ષણમયાત્ તન્મથે
 વચ્ચનાકરણમ્ ઘચન=મતારણમ્, ગાયા=પરચનપુટિ; નિઠ્ઠિતિ.=માયાપચ્છાદ
 નાર્થ માયાન્તરકરણમ્, કપટમ્=વેપાદિરિપર્યયમરણમ્, કૂટમ્=નુગતોલનકા
 દીનામન્યયાકરણમ્, 'સાહ' દેશી શ્વશ્ચમ્, વિશ્વાસામાન, ધર્મા સમયોગો
 વ્યવહાર; સ એવ મહુતઃ મચુરો યસ્ય સ', 'નિસ્તીલે' નિ'શીલઃ=શીલરહિત',
 'નિર્વણ' નિર્વૃત્તઃ=અણુપ્રતરહિત, 'નિર્ગુણે' નિર્ગુણ=ગુણવતરહિત; 'નિષ
 ચ્ચલ્લાણપોસદ્દોચ્ચાસે' નિપ્રત્યારુચ્યાન પૌષધોપવાસ. = પ્રત્યારુચ્યાનપૌષધોપ
 વોસરહિત; 'મહૂણ દુપયચડપ્પયમિયપસુપન્નિલ્લસરીસિવાણ ધાયાપ વહાપ ઉચ્ચાય
 ણાપ' મહૂના દ્વિપદચતુષ્પદમ્મગમ્મગમ્મસિસરીસિવાણ ધાનાય, વજાય=સામાન્ય

હાર इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के चचन करने में प्रवृत्त हुआ
 चचक जन जय पास में आये हुए जनको भय से नहीं ठगता है इस
 का नाम उत्कचन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वंचन है।
 दूसरों का चचन करने की घुद्धि का नाम माया है। अपनी मायाचारी
 को छिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस
 का नाम निहृति है। वेप आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है।
 तराजू एव तोलने आदि के चाटों को कमती बढ़ती रखना इसका नाम
 कूट है। "साह" यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का
 अभाव होता है। यह निःशील था-शीलरहित था-निर्वृत था-व्रत
 रहित था, निर्गुण था-गुण रहित था, "प्रत्यारुच्यान और पौषधोपवास
 से वर्जित था "महूण दुपयचडप्पयमियपसुपन्निस्सरीसिवाण धायाप
 वहाप उच्छायणाप अधम्मकेज समुट्ठिए" अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

પુષ્કળ પ્રમાણમાં હોના લોખા માણસોના વચનમાં પ્રવૃત્ત થયેલા વચક ન્થાને
 પાસે આવેલા માણસને ખીકથી કંગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે પ્રતારણ
 નામ વચન છે ખીજા માણસને કંગવાની યુદ્ધિનું નામ માયા છે પોતાની
 માયાચારીને છુપાવવા માટે જે ખીજા માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામાં આવે છે
 તેનું નામ નિહૃતિ છે-વેશ વગેરે બદલવું તે કપટ કહેવાય છે ત્રાજવા તેમજ
 ભેખવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનું નામ કૂટ "સાહ"
 આ દેશીય શબ્દ છે તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે તે નિશીલ
 હતો,-શીલ રહિત હતો, નિર્વૃત્ત વ્રત રહિત હતો નિર્ગુણ હતો-ગુણ રહિત
 હતો પ્રત્યારુચ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો "મહૂણ દુપયચડપ્પય
 મિયપસુપન્નિલ્લસરીસિવાણ ધાયાપ વહાપ - ઉચ્ચાયણાપ

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्पादनाय=द्विपदादिमकलजीवाना सर्वथा नाशाय च,
'अधम्मकेजु समुत्तिण्' अधर्मकेतुः समुत्थितः—अधर्म पापप्रधानो यः केतुः=
केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः । बहुणगर-
णिगयजसे 'बहुनगरनिर्गतयशः', बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः
ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'दढप्पहारी' दढप्रहारी=दढप्रहरण
शीलः 'साहसिण्' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सहवेधी' शब्दवेधी=शब्दश्रव-
णेन लक्ष्यवेधी च आसीत् । 'से' सः = विजयश्चोर खलु तत्र सिंहगुहायां
चोरपत्न्या पञ्चानाम् चोरसत्तानाम् 'आहेयच्च जाव' आधिपत्य यावत्=
स्वामित्वं कुर्वन् विहरति । ततः खलु स विजयस्तस्कर, चोरसेनापति बहूना
चोराणां च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणां=परस्त्रीगामिना च 'गठिभेय
गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'सधिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदकानां=मित्तिसर्पिं छित्त्वा
ये धनमपहरन्ति ते सधिच्छेदका उच्यन्ते, तेनाम्, 'खत्तखणगाणय' क्षात्र-
खनकानां=सधिरहितमिति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके
सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था । अनेक
नगरों में यह कुख्यात होचुका था । बड़ा शूरवीर था । इसका प्रहार
बहुत गहरा होता था । विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था
शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बड़ा निपुण था । वह
विजय चौर सिंहशुका नाम की उस चोरपत्नी में पाचसौ चोरों का
आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था । (तएण से विजय
तस्करे चोरसेणावर्द्धे बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य
सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

धण्ण द्विपद, यत्तुप्पद, भृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (माय) वगेरे प्राणीओना
घात भाटे, वध भाटे तेमज्ज तेमना सर्वनाश भाटे ते अधम्म केतुग्रहणी
जेमज्ज उदय पाभ्यो हुतो धण्ण नगराभा ते कुख्यात थच्च युक्थो हुतो ते
लारे शूरवीर हुतो, तेना प्रहार भूण ज लारे थतो हुतो वगर विचार्या काम
करवाभा ज तेना स्वभाव हुतो शब्द श्रवण करीने ते पोताना लक्ष्यने वीधी
नाभवाभा भूण ज निपुण हुतो ते विजय चोर सिंह शुका नामनी ते चोर
पञ्चसीमा पाचसेओरेओना स्वागी—यावत् स्वामित्व योगवतो रहतेओ हुतो

(तएण से विजयतस्करे चोरसेणावर्द्धे बहूण चोराण य पारदारियाण य
गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य कण

વહુલ; તત્ત્વ-ઉત્પન્નનમ્ મુખ્યમનયશ્ચનમટ્તસ્ય સમીપાગતવિવક્ષણમયાન્ તત્ત્વેષે
 વચ્ચનાકરણમ્ વચ્ચન=પ્રતારણમ્, માયા=પરચ્ચનપુટ્ટિ; નિકૃતિ.=માયાપચ્છાદ
 નાર્થ માયાન્તરકરણમ્, કપટમ્=રૂપાદિવિપર્યયકરણમ્, કૂટમ્=તુલનાતોલનકા
 દીનામન્યધાકરણમ્, 'સાદ' દેશી શબ્દોચ્ચમ્, વિશ્વાસામાય, 'પા' સમયોગો
 વ્યવહાર; સ પૃથુઃ પ્રચુરો यस્ય સ', 'નિસ્સોભે' નિઃશીલ=શીલરહિત;
 'નિવ્યપ' નિર્વૃત્તિ=અણુવતરણિત, 'નિર્ગુણે' નિર્ગુણ=ગુણવતરણિત; 'નિવ
 ચ્ચક્ષણપોસહોત્તરસે' નિષ્પ્રત્યાખ્યાન પૌષધોપવાસ = પ્રત્યાખ્યાનપૌષધોપ
 વાસરણિત; 'વહુણ દુપયચડપ્પયમિયપસુપન્નિલસરીસિવાળ ધાયાપ વહાપ ઉચ્છાય
 ણાપ' વહુના દ્વિપદચતુષ્પદમૃગપશુપત્તિમરીસિવાળ ધાતાય, વહાય=સામાન્ય

હાર इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के घबन करने में प्रवृत्त हुआ
 वचक जन जब पास में आये हुए जनको भय से नहीं ठगता है इस
 का नाम उत्कृचन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वचन है।
 दूसरों का घबन करने की घुट्टि का नाम माया है। अपनी मायाचारी
 को ठिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस
 का नाम निकृति है। वेप आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है।
 तराजू एवं तोलने आदि के चाटों को कमती बढ़ती रखना इसका नाम
 कूट है। "साद" यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का
 अभाव होता है। यह निःशील था-शीलरहित या-निर्वृत था-व्रत
 रहित था, निर्गुण था-गुण रहित था, "प्रत्याख्यान और पौषधोपवास
 से वर्जित था "वहूण दुपयचडप्पयमियपसुपन्निस्सरीसिवाण धायाप
 वहाप उच्छायणाप अधम्मकेज समुट्ठिए" अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

પુષ્કળ પ્રમાણમાં હતો. ભોળા માણસોના વચનમાં પ્રવૃત્ત થયેલા વચક જ્યારે
 પાસે આવેલા માણસને બીકથી કગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે. પ્રતારણ
 નામ વચન છે. બીજા માણસને કગવાની યુક્તિનું નામ માયા છે. ચોતાની
 માયાચારીને છુપાવવા માટે જે બીજા માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામાં આવે છે
 તેનું નામ નિકૃતિ છે. વેશ વગેરે બદલવું તે કપટ કહેવાય છે. ત્રાજવા તેમજ
 ભોખવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનું નામ કૂટ છે. "સાદ"
 આ દેશીય શબ્દ છે. તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે. તે નિશીલ
 હતો, -શીલ રહિત હતો, નિર્વૃત્ત વ્રત રહિત હતો. નિર્ગુણ હતો-ગુણ રહિત
 હતો. પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો. "વહુણ દુપયચડપ્પય
 મિયપસુપન્નિલસરીસિવાળ ધાયાપ વહાપ - ઉચ્છાયણાપ

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिमकलजीगाना सर्वथा नाशाय च,
'अधर्मकेतुः समुत्थिष्य' अधर्मकेतुः समुत्थितः—अधर्म पापप्रधानो यः केतुः=
केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूपमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः । बहुनगर-
णिगयजसे 'बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखाभिःसृत यशः
ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूराः 'दण्डहारी' दण्डहारी=दण्डहरण
शीलः 'साहसिण' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सद्वेधी' शब्दवेधी=शब्दश्रव-
णेन लक्ष्यवेधी च आसीत् । 'से' सः = विजयश्वोर खलु तत्र सिंहगुहार्या
चोरपल्ल्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेयच्च जाव' आधिपत्य यावत्=
स्वामित्वं कुर्वन् विहरति । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूना
चोराणां च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणां=परस्त्रीगामिना च 'गठिभेय
गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'सधिच्छेयगाणय' सन्निच्छेदमाना=भित्तिसिध्दिं छित्त्वा
ये धनमपहरन्ति ते संधिच्छेदका उच्यन्ते, तेनाम्, 'खत्तखणगाणय' क्षात्र-
खनकानां=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये, बधके लिये, तथा उनके
सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था । अनेक
नगरों में यह कुख्यात हो चुका था । बड़ा शूरवीर था । इसका प्रहार
बहुत गहरा होता था । विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था
शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बड़ा निपुण था । वह
विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली में पाचसौ चोरों का
आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था । (तएण से विजय
तस्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गठिभेयगाण य
सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

घणा द्विपद, अतुष्यद, भृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (साप) वगैरे प्राणीजाना
घात भाटे, बध भाटे तेमज तेमना सर्वनाश भाटे ते अधर्म केतुग्रहनी
जेमज उदय पाभ्यो हतो घणा नगरेभा ते कुख्यात थऽयुक्तयो हतो ते
भादे शूरवीर हतो, तेना प्रहार भूज न लारे थतो हतो वगर विद्यायां काम
करवाभा न तेना स्वभाव हतो शब्द श्रवण करीने ते चोताना लक्ष्यने वीधी
नाभवाभा भूज न निपुण हतो ते विजय चौर सिद्ध शुद्ध नामनी ते चौर
पक्षीभा पायसे चोरेना स्वाभी-यावत् स्वामित्व योगवतो रहते हतो

(तएण से विजयतस्करे चोरसेणावई बहूण चोराण च पारदारियाण य
गठिभेयगाण य सधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य ऊण

રાજત્રોહિણી 'અણધારણ' યજ્ઞધારણામ્ ચાત્રાતકાનાં 'વીસમવાયગાળ
ય' વિધિમ્પ્રાસક્તાનાં=વિશ્વામયતિના પુત્રામકાનાં 'મહાવાય' ય 'સ્વર
ક્ષાણાં=રાજપિરોધેન મૃમિત્તપ્રધારિણામ્ ગમ્ અન્યેષાં ચ ગૃહાં 'છિન્નમિત્ર
રાહયાળ' છિન્નમિત્રપરિણામ્-છિન્ન=ચિન્નદસ્તાદિયા, મિત્રા:=મિત્રનક
ર્ણનાતિકાદિકાઃ, પરિણામ્=રાજાપરાધેન દેશનિકાશિતાઃ, એતેના દ્વન્દ્વઃ, તેષાં
ચ 'કુટુમ્બે' કુટુમ્બઃ=કુટુમ્બ ડા કુટુમ્બ - યજ્ઞવલ્ક્ય રસાર્થમાશ્રયણીયત્વસામ્યાત્

ચાલધાયગાળ ય વીસમવાયગાળ ય જૂયકારાળ ય સ્વરક્ષાળ ય અ
ન્નેસિં મહૂળ છિન્નમિત્ર પરિણામ્ કુટુમ્બે યાચિત્તેત્યા) વહ વિજય
તસ્કર ચોર સેનાપતિ અનેક ચોરોં કા અનેક પરસ્ત્રી લપટોં કા ગ્રન્થિ
ભેદ કો કા, સધિચ્છેદકો કા-મકાન કો મીન ફોડકર ધનકા અપહ
રણ કરનેવાલો કા, ક્ષાત્રવનકો કા સધિ રહિત મીન કો ફોડકર
ચોરી કરનેવાલોં કા, રાજા કા અપકાર કરને ચાલોં કા-રાજત્રોહિયોં
કા, ઋણ કરને ચાલોં કા ચાલ ત્યા કરને ચાલોં કા વિશ્વાસઘાત કરને
ચાલોં કા જુઆ खेलनेવાલોં કા, રાજા કી આજ્ઞા લિયે વિના હી કુછ
જમીન કો અપને અધિકાર મેં કરનેવાલો કા, તયા ઓર મી અનેક
છિન્ન, મિત્ર પરિણામ વ્યક્તિયોં કા યહ કુટકુ જૈસો યા। જિન કે હાથ
આદિ કાટદિયે ગયે હૈ એસે પ્રાણી, છિન્ન શબ્દ સે જિનકી નાક આદિ
કાટ દી ગઈ હૈ એસે પ્રાણી મિત્ર શબ્દ સે એવં રાજાપરાધ કે કારણ જો
દેશ સે બાહિર નિકાલ દિયે ગયે હૈ એસે મનુષ્ય યહાં યહિ આહત શબ્દ

ધારણ ય ચાલધાયગાળ ય વીસમવાયગાળ ય જૂયકારાળ ય સ્વરક્ષાળ ય
અન્નેસિં મહૂળ છિન્નમિત્રપરિણામ્ કુટુમ્બે યાચિત્તે ()

તે વિજય તસ્કર ચોર સેનાપતિ ધણુ ચોરા, ધણુ પરસ્ત્રી લપટો,
અધિલેહકો, સધિચ્છેદકો-પાકો પાડીને ધનુ અપહરણ કરનારાઓ, ક્ષાત્ર
ખનકો-સધિલાગ વગરની લીતમા પાકો પાડીને ચોરી કરનારાઓ, રાજાના
અપકારકો-રાજત્રોહીઓ, ઋણ કરનારાઓ (દેવાદારો) આળહત્યા કરનારાઓ,
આળહત્યા કરનારાઓ, વિશ્વાસઘાત કરનારાઓ, બુગાર રમનારાઓ, રાજાની
આજ્ઞા લીધા વગર જ ચોરી જમીનને ચોતાના અધિકારમા લેનારાઓ તેમજ
ખીજા પણુ ધણુ છિન્ન, મિત્ર બહિરાહત લોકોના માટે તે કુટકુ જેવો હોને।
જેમના હાથ પગ વગેરે કાપી નાખવામા આવ્યા છે એવા પ્રાણીઓ, છિન્ન
શબ્દ વડે જેમના નાક વગેરે કાપવામા આવ્યા છે એવા પ્રાણીઓ, મિત્ર શબ્દ
વડે અને રાજાપરાધ બદલ જે દેશમાથી બહાર કાઢી મૂકવામા આવ્યા છે
એવા માણસો અહીં-“ બહિ આહત ” શબ્દ વડે સંજોગિ । આવ્યા

चापि अभूत् । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापतिः राजगृहस्य ' दाहिण
पुरत्थिम ' दक्षिणपौरस्त्य अग्निकोणस्थित जनपद बहुभिः ' गामधाएहि ' ग्राम
घातै = गामविनाशैश्च, नगरघातैश्च, ' गोग्गहणेहिय ' गो ग्रहणै = गवां लुण्ठनैः,
वदिग्गहणेहिय ' वन्दिग्रहणै = लुण्ठने ये जना गृहीतास्ते वन्दिनउच्यन्ते, तेषा
ग्रहणैः = स्वकाराया स्थापनैः, ' खत्तखणणेहिय ' क्षात्रखननैश्च एवं विधैषुकृत्यै

से प्रतिबोधित किये गये हैं । रक्षणार्थ आश्रयणीय होने की समानता
से इसे कुटक-वशवन-जैसा कहा गया है । (तएण से विजए तक्करे
चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवय बहूहिं गामधाएहिं य
नगरधाएहिं य गोग्गहणेहिं य वदिग्गहणेहिं य खत्तखणणेहिं य, पथकु
हणेहिं य उवीले माणे २ विद्धसणे माणे २ णित्थाण, णिद्धण करेमाणे
विहरइ, तएण से चित्ताए दासचेडे रायगिहे बहूहिं अत्थामिसकीहिं य
चोज्जाभिसकीहिं य दाराभिसकीहिं य धणिएहिं य जूयकरेहिं य पर-
वभवमाणे २ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव
सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवाच्छित्ता विजय चोरसेणावइ
उवसपज्जित्ताण विहरइ) चोरों का सेनापति वह विजय तस्कर राज-
गृह नगर के अग्निकोण में स्थित जनपदों को, अनेक ग्रामों के विनाश
से नगरों के घात से, गावों के लूटने से, लूटते समय पकड़े गये मनुष्य
को अपने कारागार में बंद करने से, क्षात्रखनन से-मकानों में खातदेने

छे रक्षय्य भाटे आश्रयणीय होवाना साभ्यथी तेने कुटक-वासनावन'नी जेम
भताववाभा आये छे

(तएण से विजए तक्करे चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवय
बहूहिं गामधाएहिं य नगरधाएहिं य गोग्गहणेहिं य वदिग्गहणेहिं य खत्तखणणेहिं य
पथकुहणेहिं य उवीले माणे २ विद्धसणे माणे २ णित्थाण, णिद्धण करेमाणे विहरइ,
तएण से चित्ताए दास चेडे रायगिहे बहूहिं अत्थामिसकीहिं य चोज्जाभिसकी
हिं य धणियेहिं य जूयकरेहिं य परवभवमाणे २ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ,
णिग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजय
चोरसेणावइ उवसपज्जित्ताण विहरइ)

चोरसेना सेनापति ते विजय तस्कर राजगृह नगरना अग्निकोणना
जनपदोने, धणु आभोना विनाश करीने नगरसेना घात करीने गाथोने लूटीने
लूटी वभते पकडी पाडेना भाषुसेने पोताना कारागारभा पूरी धुने, क्षत्र
भनन करीने, भनानोभा भातर पाडीने अने भुसाइसेने भारीने निरतर

પવકુટનેદિય ' પાન્થકુટને: = પથિકજનમાળેષ ' ઉપીલેમાણે ૨ ' ઉત્પીડયન્
 = સન્તતમુત્પીડન કર્તુન્, ' ચિદ્ધસેમાણે ૨ ' નિષ્પમયન્ ૨-સર્વદા વિધ્વસ
 કર્તુન્, ' ગિસ્થાળ ' નિ: સ્થાન = ગૃહરહિત, ' ગિદ્ધષણ ' નિર્ધનમ્ = ધનરહિત કર્તુન્
 વેહરતિ । તત્ ' સ્વલ્લ સ ચિગતો દાસચેટ: રાજગૃહે વહુભિ: ' અયામિસ કીદિય'
 અર્પામિશક્તિભિ: = અય ચિલાતો મદીયમધં ગૃહોતયાન્, ગૃહીત્વયતિ વા ઇત્યભિશક્ત
 શીલે ' ચોઝ્જામિસ કીદિય ' ચોર્પામિશક્તિભિ: = અય મમ ગૃહે ચોર્પે કૃતવાન્
 કરિષ્યતિ વેત્યભિશક્ત શીલેશ્ચ ' દારામિસ કીદિ ' દારામિશક્તિભિ: = ' અય મમ
 દારાન્ દૃપિતવાન્ દૃષયિષ્યતિ વેત્યભિશક્ત શીલે તથા ધનિકૈશ્ચ દ્યૂતકરૈશ્ચ પરા
 ભૂયમાણ: ૨ = પુન: પુન પરાભવ પ્રાપ્તમાણો રાજગૃહાત્ નગરાદ્ વહિ નિર્ગન્ઝતિ,
 નિર્ગત્ય, યત્રૈવ સિંહગુહા ચોરપલ્લી તત્રૈવ ઉપાગન્ઝતિ, ઉપાગત્ય વિજય ચોરસેના
 પતિમ્ ઉપસપથ = પ્રાપ્ય વિહરતિ ॥ સુ. ૩ ॥

સે, એવ પથિકજનો કે મા/ને સે, નિગ્નતર પીડિત કરતા વિધ્વસ કરતા
 કરતા ઓર ગૃહ વિહિન કરતા રહતા થા । હસ કે પશ્ચાત્ વહ દાસચેટક
 ચિલાત રાજગૃહ નગર મેં અનેક અર્પામિશક-હસ ચિલાત ને હમલોગોં
 કે દ્રવ્ય કો હરણ ક્રિયા હૈ તથા હસી તરહ સે યહ આગે બી કરેગા-
 પ્રકાર કી શકા કરને વાલે, ચોર્પામિશકી હસને હમલોગોં કે ઘર મેં
 છુસકર પહિલે ચોરી કી હૈ-ત ગા હસી તરહ યહ આગે બી કરેગા-હસ
 પ્રકાર કી આશકા કરને વાલે, દારામિશકી-હસને પહિલે હમારી સ્ત્રિયોં
 કે સાથ બલાત્કાર ક્રિયા હૈ-હસી તરહ સે યહ આગે બી કરેગા હસ
 તરહ કી અપની સ્ત્રિયો કે સાથ બલાત્કાર કરને કી આશકાવાલે પુરુષોં
 કે દ્વારા તથા ધનિક વ્યક્તિયો કે દ્વારા, જુઆ સ્વેલને વાલે જ્વારિયો
 કે દ્વારા પુન: પુન: પરાભૂત હોતા હુઆ રાજગૃહ નગર સે બાહર નિકલા

પીડિત કરને, વિધ્વસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી
 તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમા ઘણા અર્પામિશક-આ ચિલાતે અમારા
 દ્રવ્યનુ હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ હરણ કરશે, આ
 ભતની શકા કરનારાઓ વડે, ચોર્પામિશકી-એણે અમારા ઘરોમા પેસીને
 પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમા પણ તે ચોરી કરશે જ-આ ભતની
 ચોરીની આશકા કરનારાઓ વડે, દારામિશકી-એણે પહેલા અમારી સ્ત્રીઓ
 ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ તે ચોક્કસ આવું કર
 શે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશકાવાળા પુરુષો વડે
 તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વાર વાર

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणा-
वइस्स अग्गे असिलट्ठगाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं
से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टि वा काउं
वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुवहुपि हु कुवियवल
हयविमहिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणह
समग्गे सहिगुह चोरपल्लि हव्वमागच्छइ । तएण से विजए
चोरसेणावई चिलायं तक्कर वहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमते
य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से
विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मणा सजुत्ते यावि
होत्था । तएणं ताइं पंचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स
महयार इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेति, करित्ता वहुइ
लोइयाइं मयकिच्चाइ करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया
यावि होत्था । तएण ताइ पच चोरसयाइं अन्नमन्नं सदावेति,
सदावित्ता एव वयासी—एव खलु अम्ह देवाणुप्पिया । विजए
चोरसेणावई कालधम्मणा संजुत्ते, अय च ण चिलाए तक्करे
विजएण चोरसेणावइणा वहुईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खा
विए, त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया । चिलाय तक्कर सीह-
गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्तए त्तिकहु
अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीए
सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्ति । तएणं से चिलाए

और निकल कर जहा वह सिंहगुहा नाम की चोरपत्नी थी वहां आया
घरा आकर वह चोर सेनापति के बाद रहने लगा ॥ सूत्र-३ ॥

शङ्खगुह नगरधी भडार नीकण्यो अने नीकणीने न्या ते सिंहगुहा नामे चोरपत्नी
हती त्या आये, त्या आपीने चोर सेनापतिनी साथे रहेवा लाग्यो ॥सू०३॥

‘પવકુટ્ટણેદિય’ પાન્યકુટ્ટનૈઃ=પથિકજનમાગૈશ્ર ‘ઉવીલેમાણે ૨’ ઉત્પીડયન્
 ૨=સન્તતમુત્પીડન કર્તુમ, ‘વિદ્ધસેમાણે ૨’ વિશ્વમયન્ ૨=સર્વદા વિશ્વસ
 કર્તુમ, ‘ણિત્યાણં’ નિઃ સ્થાન=ગૃહરહિત, ‘જિદ્ધણં’ નિર્ધનમ્=ધનરહિત કર્તુમ
 વિહરતિ । તતઃ સ્વલ્પ સ ચિચાતો દાસચેટઃ રાજગૃહે યદુભિઃ ‘અન્યાભિમ કીદિય’
 અર્ધાભિશક્તિભિઃ=અપ ચિલાતો મત્રીયમર્ધં યત્રીતયાન્, ગ્રહીત્વયિતિ વા ઇત્યભિશક્તન
 શીલૈ ‘ચોજ્જાભિસ કીદિય’ ચૌર્ધાભિશક્તિભિઃ=અપ મમ ગૃહે ચૌર્ધં કૃતવાન્
 કરિષ્યતિ વેત્યભિશક્તન શીલૈશ્ર ‘દારામિમ કીદિ’ દારાભિશક્તિભિઃ=‘અપ મમ
 દારાન્ દૂપિતવાન્ દૂપયિષ્યતિ વેત્યભિશક્તનશીલૈ તથા ધનિર્ઞશ્ચ ઘૂતકરૈશ્ચ પરા
 ભૂયમાણઃ ૨=પુનઃ પુનઃ પરાભવ પ્રાપ્તમાણો રાજગૃહાત્ નગરાદ્ વહિર્નિર્ગચ્છતિ,
 નિર્ગત્ય, યત્રૈય સિંહગૃહા ચોરપલ્લી તત્રાય યથાગચ્છતિ, યથાગત્ય વિજય ચોરસેના
 પતિમ્ ઉપસપદ્ય=પ્રાપ્ય વિહરતિ ॥ છૂં ૩ ॥

સે, એવ પથિકજનોં કે મારને સે, નિગન્તર પીડિત કરતા વિશ્વસ કરતા
 કરતા ઓર ગૃહ વિહિન કરતા રહતા થા । હસ કે પશ્ચાત્ વહ દાસચેટક
 ચિલાત રાજગૃહ નગર મેં અનેક અર્ધાભિશક-હસ ચિલાત ને હમલોગોં
 કે દ્રવ્ય કો હરણ કિયા હૈ તથા હસી તરહ સે યહ આગે બી કરેગા-
 પ્રકાર કી શકા કરને વાલે, ચૌર્ધાભિશકી હસને હમલોગોં કે ઘર મેં
 ઘુસકર પહિલે ચોરી કી હૈ-તયા હસી તરહ યહ આગે બી કરેગા-હસ
 પ્રકાર કી આશકા કરને વાલે, દારાભિશકી-હસને પહિલે હમારી સ્ત્રિયોં
 કે સાથ વલાત્કાર કિયા હૈ-હસી તરહ સે યહ આગે બી કરેગા હસ
 તરહ કી અપની સ્ત્રિયો કે સાથ વલાત્કાર કરને કી આશકાવાલે પુરુષોં
 કે દ્વારા તથા ધનિક વ્યક્તિયો કે દ્વારા, જુઆ સ્વેલને વાલે જ્વારિયો
 કે દ્વારા પુનઃ પુનઃ પરાભૂત હોતા હુઆ રાજગૃહ નગર સે બાહર નિકલા

પીડિત કરનો, વિશ્વસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી
 તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમા ઘણા અર્ધાભિશક-આ ચિલાતે અમારા
 દ્રવ્યનું હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ હરણ કરશે, આ
 બાતની શકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્ધાભિશકી-એણે અમારા ઘરોમા પેસીને
 પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમા પણ તે ચોરી કરશે જ-આ બાતની
 ચોરીની આશકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશકી-એણે પહેલા અમારી સ્ત્રીઓ
 ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ તે સ્ત્રીઓ આણું કર
 શે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશકાવાળા પુરુષો વડે
 તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારંવાર

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणा-
वइस्स अग्गे असिलट्टगाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं
से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पथकोट्टि वा काउं
वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुवहुपिहु कुवियवल
हयविमहिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धे कयऊज्जे अणह
समग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमागच्छइ । तएण से विजए
चोरसेणावई चिलायं तक्कर वहुईओ चोरविजाओ य चोरमते
य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से
विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि
होत्था । तएण ताई पंचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स
महयार इड्डीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेति, करित्ता वहुइ
लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया
यावि होत्था । तएण ताइ पंच चोरसयाइं अन्नमन्नं सदावेति,
सदावित्ता एव वयासी—एव खल्लु अम्हं देवाणुप्पिया । विजए
चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे
विजएणं चोरसेणावइणावहुईओ चोरविजाओ य जाव सिक्खा
विए, त सेयं खल्लु अम्ह देवाणुप्पिया । चिलाय तक्करं सीह-
गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्तए त्तिकट्ठु
अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीए
सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचति । तएण से चिलाए

और निकल कर जहा वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहाँ आया
वहाँ आकर वह चार सेनपति के मद रहने लगा ॥ सूत्र-३ ॥

शङ्खुड नगरधी गडार नीकल्ये। अने नीकणीने न्या ते सिंहगुहा नामे चोरपल्ली
डती त्या आये, त्या आणीने चार सेनापतिनी साथे रहेवा लाग्ये ॥ सू० ३ ॥

‘पथकुटणेदिय’ पान्यकुटनेः=पथिकजनमाणैश्च ‘उत्पीडयन्
 २=सन्ततमुत्पीडनं कुर्वन्, ‘विद्धसेमाणे २’ विध्वंसयन् २=सर्वदा विध्वंस
 कुर्वन्, ‘पित्थाण’ निः स्थान=गृहरहित, ‘जिद्वपणं’ निर्धनम्=धनरहित कुर्वन्
 विहरति । ततः खलु स चिन्तातो दासचेट. राजगृहे घट्टुमिः ‘अथाभिभकीदिय’
 अर्थाभिभक्षिभिः=अथ चिलातो मदीयमर्थं गृहीतवान्, गृहीत्यति वा इत्यभिभक्षन्
 शीलै ‘चोज्जाभिसकीदिय’ चौर्याभिभक्षिभिः=अथ मम गृहे चौर्यं कृतवान्
 करिष्यति चेत्यभिभक्षन् शीलैश्च ‘दाराभिसकीदि’ दाराभिभक्षिभिः=‘अथ मम
 दारान् दूषितवान् दूषयिष्यति चेत्यभिभक्षन् शीलै तथा धनिकैश्च घूतकरैश्च परा
 भूयमाणः २= पुनः पुनः पराभव प्राप्पमाणो राजगृहात् नगराद् बहिर् निर्गच्छति,
 निर्गत्य, यत्रैव सिंहगुहा चोरपल्ली तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य विनय चोरसेना
 पतिम् उपसपद्य=प्राप्य विहरति ॥ सू० ३ ॥

से, एव पथिकजनों के मार्ग से, निरन्तर पीड़ित करता विध्वंस करता
 करता और गृह विहीन करता रहता था । इस के पश्चात् वह दासचेटक
 चिलात राजगृह नगर में अनेक अर्थाभिभक्षक-इस चिलात ने हमलों
 के द्रव्य को हरण किया है तथा इसी तरह से यह आगे भी करेगा-
 प्रकार की आशका करने वाले, चौर्याभिभक्षकी इसने हमलों के घर में
 घुसकर पहिले चोरी की है-तथा उसी तरह यह आगे भी करेगा-इस
 प्रकार की आशका करने वाले, दाराभिभक्षकी-इसने पहिले हमारी स्त्रियों
 के साथ बलात्कार किया है-इसी तरह से यह आगे भी करेगा इस
 तरह की अपनी स्त्रियों के साथ बलात्कार करने की आशकावाले पुनर्षों
 के द्वारा तथा धनिक व्यक्तियों के द्वारा, जुआ खेलने वाले ज्वारियों
 के द्वारा पुनः पुनः पराभूत होता हुआ राजगृह नगर से बाहर निकला

पीडित करने, विध्वंस करने और गृहविहीन बनावी भूकतो डतो त्यागपछी
 ते दासचेटक चिलाते राजगृह नगरमा घण्टा अर्थाभिभक्षक-आ चिलाते अमारा
 द्रव्यतु हरण कर्तुं छे तेमज आ प्रमाणे लविब्धमा पणु हरणु करशे, आ
 नातनी शका करनाराओ वडे, चौर्याभिभक्षकी-ओखे अमारा धरोमा पेसीने
 पडेला चोरी करी डती तेमज लविब्धमा पणु ते चोरी करशे ज-आ नातनी
 चोरीनी आशका करनाराओ वडे, दाराभिभक्षकी-ओखे पडेला अमारी स्त्रीओ
 उपर बलात्कार कर्छे छे, आ प्रमाणे लविब्धमा पणु ते बालकस आपु कर
 शे ज, आ रीते पोतानी स्त्रीओ उपर बलात्कारनी आशकावाणा पुत्रो वडे
 तेमज धनवानो वडे, जुगार रमनारा जुगारीओ वडे, बार बार

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणा-
वइस्स अग्गे असिलट्ठगाहे जाए यावि होत्था, जाहं वि य ण
से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टि वा काउं
वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुवहुपिहु कुवियवल
हयविमहिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धे कयऊजे अणह
समग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमागच्छइ । तएण से विजए
चोरसेणावई चिलायं तक्कर वहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमते
य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से
विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मणा सजुत्ते यावि
होत्था । तएण ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स
महयार इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेति, करित्ता वहुइं
लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया
यावि होत्था । तएणं ताइ पंच चोरसयाइ अन्नमन्न सद्दावेति,
सद्दावित्ता एव वयासी—एव खल्ल अम्हं देवाणुप्पिया । विजए
चोरसेणावई कालधम्मणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे
विजएणं चोरसेणावइणा वहुईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खा
विण, तं सेयं खल्ल अम्ह देवाणुप्पिया । चिलायं तक्कर सीह-
गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचित्तए त्तिकट्ठ
अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीए
सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचति । तएण से चिलाए

और निकल कर जहा वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहाँ आया
वहाँ आकर वह चार सेनपति के बाद रहने लगा ॥ सूत्र-३ ॥

राजगृह नगरधी भहार नीकण्यो अने नीकणीने ल्या ते सिंहगुहा नामे चोरपल्ली
हती त्या आण्यो, त्या आणीने चोर सेनापतिनी साथे रडेवा लाग्यो ॥सू०३॥

चोरसेणावई जाण अहमिमए जाव विहरइ । तएणं से चिलाए
 घोरसेणावई चोराणय जाव कुटंगे यावि होत्या । से ण तस्य
 सीहगुहाए चोरपल्लीए पचणहं चोरसयाण य एवं जहा विजओ
 तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरदियमिल्ल जणवयं
 जाव नित्थाणं निज्जण करेमाणे विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—'तएण' इत्यादि । ततः खलु स चिलातो दासचेटो विजयस्य
 चोरसेनापतेरप्यः=प्रधान 'असिन्दुग्गाहे' अगियट्टिग्राहः=असि=करवाल,
 यट्टि=उद्यदण्डः, तौ गृह्णातीति, असियट्टिग्राहः=असियट्टिग्राहमचालनचतुरो
 जातश्चापि अभूत् । 'ताहे वि यण' यदाऽपि च खलु स विजयश्वोर सेनापतिः

तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक
 चिलात (विजयसस चोरसेणावइसस) चोर सेनापति उस विजय तस्कर
 का (अगो यावि हो०) सय से प्रधान असि, यट्टि, ग्रह-तलवार
 और लाठी के चलाने में चतुर-यन गया । (जाहे वि य ण से विजए
 चोरसेणावईगामघाय वा जाव पयकोट्टि वा काउ वच्चइ, ताहे वि य णं
 से चिलाए दासचेडे सुवहु पि हु कवियवल हयविमहिय जाव पडिसेहेइ,
 पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लि हव्वमाग
 चउइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामो का घात करने के लिये,

(तएण स चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपल्ली (से चिलाए दासचेडे) ते दास चेटक चिलात
 (विजयसस चोरसेणावइसस) चोर सेनापति ते विजय तस्करने। (अगो
 यावि हो०) सौथी प्रधान आसि, यट्टि (लाठी) आळ, तस्वार अने लाठी
 अलापनाभा अतुर भनी गये।

(जाहे वि य ण से विजए चोरसेणावई गामघाय वा जाव पयकोट्टि वा
 काउ वच्चइ, ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुवहु पि हु कवियवल हयविम
 हिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लि
 हव्वमागच्छइ)

अथार ते चोर सेनापति विजय ग्रामोना घात भाटे यावत् पडिडेने
 लुटवा भाटे नीकणतो डतो अथार ते दास चेटक चिलात चोर

ग्रामयात वा यावत् 'पथकोट्टि' पान्यकुट्टिम्=पथिकजनलुण्ठन वा 'काउ' कर्तुं 'वच्चइ' प्रजति=गच्छति 'ताहेचि य' तदाऽपि च खलु स चिन्तातो दासचेटः सुगुहो अपि 'हु' इति गव्यालङ्कारे कृत्रियम् 'कूपिकाल=चोरगवेषकमैत्र्य 'हयविमहिय जाव' हतप्रमथित यावत्-सर्पथा विध्वस्त कृत्वा 'पडिसेहेइ' प्रतिपेधयति=निगारयति । पुनरपि 'लद्धाट्टे' लब्धार्थ=लब्धः प्राप्तः, अर्थ=स्वामिलपित येन स=प्राप्तस्वामिलपितः, अत एव 'कयकज्जे' कृतकार्यः=कृत कार्य येन स, कृतनिजकृत्यः 'अणहममग्गे' अनयसमग्रः=अनयम्=असतम्-अन्तराले केनाप्यनपहत समग्र=समस्त चौपायपहतवस्तुजात यस्य सः=अलुण्ठित सर्वस्यः सिंहगुहा चोरपल्लि 'हव्व' शीघ्रमागच्छति । ततः खलु स विजयश्चोर-सेनापति, चिलात तस्कर बहीः चोरविद्याश्च चोरमन्त्राश्च चोरमायाश्चोरनिकृतीश्च मायायाः प्रच्छादनार्थं या माया सा 'निकृतिः' उच्यते ता 'सिक्खानेइ'

यावत् पथिक जनो को लूटने के लिये चलता था-तब वह दास चेटक चिलात भी चोर गवेषक सैन्य को हत, विमथित यावत् सर्वथा विध्वस्त करके पीछे भगा देता था-और स्वामिलपित अर्थ को प्राप्तकर अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर लिया करता था । इस तरह वह चोरी में मिले हुए द्रव्य को सुरक्षित रखता हुआ-बीच में किसी के भी द्वारा द्रव्य की छीना छपटी से रहित होता हुआ उस सिंहगुहा नाम के चोरपल्ली में बहुत जल्दी लौट आता था । (तएण से विजण चोर सेनावई चिलाय तक्कर बहूईओ चोरविज्जाओ य चोरमते य चोर मायाओ चोर निगडीओ य सिक्खानेइ) उस चोर सेनापति विजय तस्कर ने चिलात चोर के अनेक चोर विद्याओ को, अनेक चोरमन्त्रो को अनेक विध चोर सम्बन्धी मायाचारी को और माया को छिपाने के

आवेला सैन्यने हत, विमथित यावत् सपूर्व रीति विध्वस्त करीने लगाडी भूकते हुते अने पोताना छन्डिअ अर्थने प्राप्त करीने पोताना जरिमा सह जता भेजवते हुते आ प्रमाणे ते चोरीमा भेजवेला द्रव्यने सुरक्षित राखते। पन्थे कोर पणु भीअ वडे द्रव्यणी लुट-पाट न थाय-तेम पोतानी मतने सुरक्षित राखते ते शीघ्र सिद्धशुद्ध नामे चोरपल्लीमा पाछे आवते रहते हुते।

(तएण से विजण चोरसेनावई चिलाय तक्कर बहूईओ चोरविज्जाओ य चोरमते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खानेइ)

ते चोर सेनापति विजय तस्करे चिलात चोरने धण्डी चोर विद्याओने, धण्डी चोरमन्त्रोने, धण्डी चोर सम्बन्धी मायाचारीओने अने मायाने छुपाववा भाटे भीअ मायाचारीओ शीजवाडी

चोरसेणावई जाण अहम्मिण जाण विहरइ । तएणं से चिलाए
 चोरसेणावई चोराणय जाव कुटंगे यावि होत्या । से णं तस्य
 सोहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ
 तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवयं
 जाव निरथाणं निज्झणं करेमाणे विहरइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—'तएण' इत्यादि । ततः खलु स विजयो दामचेटो विजयस्य
 चोरसेनापतेरभ्यः=प्रधान 'असिउट्टगगाहे' अमियट्टिग्राहः=असि=करवाल;
 यट्टि=उत्तदण्डः, तौ गृह्णातीति, अमियट्टिग्राहः=असियट्ट्यादिप्रचालनचतुरो
 जातश्चापि अभूत् । 'ताहे वि यण' यदाऽपि च खलु स विजयश्चोर सेनापतिः

तएण से चिलाए दामचेडे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक
 चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति उस विजय तस्कर
 का (अगो यावि हो०) सय से प्रधान असि, यट्टि, ग्रह-तलवार
 और लाठी के चलाने में चतुर-चन गया । (जाहे वि य णं से विजए
 चोरसेणावईगामघाय वा जाव पयकोट्टि वा काउ वच्चइ, ताहे वि य ण
 से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हु कवियवल ह्यविमहिय जाव पडिसेहेइ,
 पुणरवि लद्धे कयऊजे अणहसमगो सीहगुह चोरपल्लि हव्वमाग
 ऋइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामो का घात करने के लिये,

(तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपल्ली (से चिलाए दासचेडे) ते दास चेटक चिलात
 (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति ते विजय तस्करेनो (अगो
 यावि हो०) सौथी प्रधान आसि, यट्टि (लाकड़ी) आळ, तलवार अने लाठी
 अलाववाभा अतुर णनी गये।

(जाहे वि य ण से विजए चोरसेणावई गामघाय वा जाव पयकोट्टि वा
 काउ वच्चइ, ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हु कवियवल ह्यविम
 हिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धे कयऊजे अणहसमगो सीहगुह चोरपल्लि
 हव्वमागच्छइ)

अथार ते चोर सेनापति विजय आभेना घात भाटे थावत पडिकेने
 छुट्या भाटे नीकणतो छतो थार ते दास चेटक चिलात थारो

खलु अस्माक हे देवानुप्रियाः । विजयश्वोरसेनापति कालधर्मेण संयुक्तः मृत इत्यर्थः । अयं च खलु चिलातः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना ' बहईओ चोर-विज्जाओ जाव ' बहव्यः चोरविद्या यावत्-चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सरुलचोरशिक्षासु ' मिमिन्वए ' शिक्षितः=पारद्वमितः, ' त ' तरमात् कारणात् ' सेय ' श्रेयः खलु अस्माक हे देवानुप्रियाः ! चिन्ता तस्कर मिहगुहायाश्चोर-पल्लयाश्चोरसेनापतितयाऽभिपिञ्चितुम्, अर्थात् अयं चिलात तस्करोऽस्माभिः चोर सेनापतिपदे नियोज्य, ' तिकट्टु ' इति कृत्या=इति मनसि विधाय ' अन्नमन्नस्स ' अन्योऽन्यस्य ' एयमट्ट ' एतमर्थम्=चिलातस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया-(एव खलु अम्ह देवानुप्पिया ! विजण चोरसेणावई कालधम्म-णा सजुत्ते, अयं च ण चिलाण तस्करे विजणण चोरसेणावइणा बहईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविण, त सेय खलु अम्ह देवानुप्पिया ! चिलाय तस्कर सीहगुहाए चोरपट्ठीण चोरसेणावइत्ताण अभिमिचित्तण सि कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ट पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताण अभिमिचित्ति) देवानुप्रियो ! देखो-हमारे नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं । उन्होंने इस चिलात चोर को अनेक चोर विद्याओं आदि सब कुछ सिखलाही दिया है । अतः हमलोगों को अब गरी उचित है कि हमन्मोग चिलात चोर को सिंह गुहा नामकी इस चोर पट्ठी का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करले अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात चोर को नियुक्त करलें इस प्रकार विचार करके उन्होंने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

(एव खलु अम्ह देवानुप्पिया ! विजण चोरसेणावई कालधम्म-णा सजुत्ते, अयं च ण चिलाण तस्करे विजणण चोरसेणावइणा बहईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविण, त सेय खलु अम्ह देवानुप्पिया ! चिलाय तस्कर सीहगुहाए चोरपट्ठीण चोरसेणावइत्ताण अभिमिचित्तण त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ट पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताण अभिमिचित्ति)

हे देवानुप्रियो ! बुद्धो, आभारा नायक चोर सेनापति विजय तो हुवे भरल पाभ्या उ तेमहे आ चिलात चोरने धर्णी चोर विद्याओ वगेरे भधु शीभन्नु न उ ओट्ठा माटे हुवे अभने ओ न योग्य लागे छे हे अभने दोडो चिलात चोरने आ सिंहगुहा नामनी चोपपट्ठीने। चोर सेनापति बनावी लथओ चोले के चोर सेनापतिना भवाने आ चिलात चोरनी नीम लु कट्टो लथओ आ प्रभाहे विचार करीने तेमहे ओके गीलना विचार इय

शिक्षयति । ततः खलु म विजयो चोरसेनापतिः अन्यदा कदाचिन् 'कालधम्मणा'
 कालधर्मेण=मृ-युना सयुक्तश्चापि अभवत् मृतइत्यर्थः । ततः खलु तानि पञ्चचोर
 शतानि=पञ्चशतवर्षकाभिरा, विजयस्य चोरसेनापतेः मरुता २ इद्विसकार
 समुदण्ण 'ऋद्धिमत्कारसमुदयेन 'णीहरण' निर्हण=श्मशानभूमिनयन 'करोति'
 कुर्वति, कुन्वा गृह्णि लौकिकानि मृतगृह्णत्यानि कुर्याति, कुन्वा यावत् विगत
 शोभा जाताश्चापि अभवन् । ततः खलु तानि पञ्चचोरशतानि अन्योऽन्यं शब्द
 यति शब्दयित्वा एवमवादिषु'-सर्वे मित्रिणा परस्परमेव विचारितवन्तइत्यर्थ एव

लिये दूसरी और माया चारी को सिंगला दिया । (तण्ण से विजण
 चोरसेणावई अत्रया कयाइ काण्डधम्मणा सजुत्ते यावि होत्था, तण्ण
 ताइ पचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स मरुया २ इद्वी सकार
 समुदण्ण णीहरण करेति करित्ता बहइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेति,
 करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तण्ण ताइ पच चोर
 सयाइ अन्नमन्न सदावेति, सदावित्ता एव वयासी) इस से बाद वह
 चोर सेनापति विजय किसी एक दिन कालधर्मगत हो गया । तब उन
 पांच सौ चोरो ने चोर सेनापति विजय तस्कर को बड़े ठाट बाट के
 साथ अर्थी-श्मशान यात्रा निकाली बादमें उन्होंने ने भृत्यसबन्धी जितने
 भी लौकिक कृत्य होते हैं वे सब किये । लौकिक कृत्य करके सबके सब
 धीरे २ शोक रहित जग बन चूके-तब उन पांच सौ चोरो ने परस्पर में
 एक दूसरे को बुलायो-और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-विचार

(तण्ण से विजण चोरसेणावई अत्रया कयाइ काण्डधम्मणा सजुत्ते
 यावि होत्था, तण्ण ताइ पच चोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स मरुया
 २ इद्वी सकारसमुदण्ण णीहरण करेति करित्ता बहइ लोइयाइ मयकिच्चाइ
 करेति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तण्ण ताइ पच चोर
 सयाइ अन्नमन्न सदावेति, सदावित्ता एव वयासी)

त्यारपणी ते चोर सेनापति विजय केअ ओठ निसे भृत्य पाभ्यो त्यारे
 ते पायसेो चोरोओ चोर सेनापति विजय तस्करनी लारे ठाठथी श्मशानयात्रा
 काठी त्यारपणी तेमणे तेना भृत्य स मधी लौकिक कृत्यो क्यो लौकिक कृत्यो
 पूरा क्यो बाद धीमे धीमे न्यारे भधा शोक रहित तथा त्यारे ते पायसेो
 चोरोओ परस्पर ओकणीनने ओवाव्या अने ओठ स्थाने ओकत्र धधने तेमणे
 आ प्रभाणे विचार क्यो हे—

खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! विजयश्वोरसेनापति काव्यमैर्ण संयुक्तः=मृत इत्यर्थः । अयं च खलु विगतः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना ' बहूँओ चोर-विज्जाओ जाव ' गृह्यः चोरविद्या यास्तु-चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सरुलचोरशिक्षामु ' मित्रिखण ' शिक्षितः=पारङ्गमितः, ' त ' तरमात् कारणात् ' सेय ' श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रिया ! चिन्ता तस्कर सिंहगुहायाश्चोर-पल्लयाश्चोरसेनापतितयाऽभिपिञ्चितुम्, अर्थात् अयं चिलात् तस्करोऽस्माभिः चोर सेनापतिपदे नियोज्य, ' चिक्कट्टु ' इति कृत्वा=इति मनसि विधाय ' अन्नमन्नस्स ' अन्योऽन्यस्य ' एयमट्ट ' एतमर्थम्=चिलात्तस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया-(एव खलु अम्ह देवानुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालवम्मु णा सजुत्ते, अयं च ण चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा बहूँओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविण, त सेय खलु अम्ह देवानुप्पिया ! चिलाय तस्कर सीहगुहाए चोरपट्टीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ट पडिसुणेति, पडिसुणिस्ता चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति) देवानुप्रियो ! देखो-हमारे नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं । वन्होंने इस चिलात् चोर को अनेक चोर विज्जाए आदि सब कुछ सिखलाही दिया है । अतः हमलोगों को अब यही उचित है कि हमन्नेग चिलात् चोर को सिंह गुहा नामकी इस चोर पट्टी का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करले अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात् चोर को नियुक्त करले इस प्रकार विचार करके उन्होंने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

(एव खलु अम्ह देवानुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालवम्मुणा सजुत्ते, अयं च ण चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा बहूँओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविण, त सेय खलु अम्ह देवानुप्पिया ! चिलाय तक्कर सीह गुहाए चोरपट्टीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए चिक्कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ट पडिसुणेति, पडिसुणिस्ता, चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति)

हे देवानुप्रियो ! जुओ, अभास नायक चोर सेनापति विजय तो हुवे भरलु पाभ्या छे तेभणे आ यिलाय चोरने धरुी चोर विद्याओ वगेरे भधु शीभन्धु ७ छे ओवा भाटे हुवे अभने ओ ७ योय लागे ७ के अभे लोके यिलाय चोरने आ सिंहगुहा नामनी चोरपट्टीना चोर सेनापति भनावी लधओ ७ छे के चोर सेनापतिना भ्याने आ यिलाय चोरनी नीभ छु ७ करी लधओ आ प्रभाछे विचार करीने तेभणे ओ ७ नीलना विचार ३५

‘पट्टिमुपेति’ प्रतिभृग्यन्ति=सीरुर्धन्ति, प्रतिभृग्य, चिन्नात तस्कर चोरसेना पतिवया अर्थात् चोरसेनापतिपदे भगिनिश्चानि । ततः खलु म चिन्नातः चोरसेना पतिर्जातः, कीदृशः ? इत्याह—‘अहम्मिण जाय’ अधार्मिको यावत्-विजयचोर सेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्भवति विहरति । ततः खलु स चिन्नातः चोर सेनापति ‘चोराण य जाय’ चोराणां च यावत्=चोरपारदारिकादीनां च ‘कुडगे’ कुडगः आश्रयस्थान चाऽपि आसीत् । स खलु तत्र सिंहगुहायां चोर पत्न्या पञ्चानां चोरशतानां च एव यथा विजयस्तथैव स यावत्=विजयवत् पञ्च- शतानां चोराणामुपरि आधिपत्यं कर्तुं, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्थ

स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके उस चिलात चोर को अन्त में उस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली का उन्होंने ने चोर सेनापति के रूप में अभिषेक कर दिया । (तएण से चिलाण चोरसेणावई जाण अहम्मिण जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, से ण तत्थ सीहगुहाण चोरपल्लीण पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ तद्देव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ) इस तरह यह चिलात चोर सेनापति बन गया । चोरसेनापति बनकर वह विजय चोर सेनापति की तरह अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जैसा हो गया । अतः वह चिलात चोर सेनापति चोरों का यावत् पारदारिक आदिकों का कुडग की तरह बासों के बन के समान-आश्रयस्थान बन गया और उस सिंहगुहा नामकी पल्ली में पाचसौ चोरों का आधिपत्य करता हुआ विजय तस्कर

अर्थने स्वीकारी दीघा अने स्वीकारीने छेवटे ते चिलात चोरने। ते सिंहगुहा नामनी चोरपल्लीने। तेभण्णे चोर सेनापतिना इपभा अभिषेक करी दीघा।

(तएण से चिलाण चोरसेणावई जाण अहम्मिण जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, सेण तत्थ सीहगुहाण चोरपल्लीण पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ तद्देव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिण पुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ)

आ प्रभाण्णे ते चिलात चोर चोर सेनापति थध गथे। चोर सेनापति णनीने ते विजय चोर सेनापतिनी नेम अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु नेवे। थध गथे। तेथी ते चिलात चोर सेनापति चोरने। यावत् पारदारिक-पणेने। कुडगनी नेम-वासोना बननी नेम-आश्रयस्थान णनी गथे।

जनपद 'निस्थान निदण' निस्थान निर्धन गृहरहित धनरहित च कुर्वन् विहरति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए चोरसेणावई अन्नया कयाइ विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेत्ता पचचोरसए आमतेइ । तओ पच्छा एहाए कयवलिकम्मेभोयणभंडवंसि तेहि पचहि चोरसएहि सद्धि विउल असणं पाणं खाइमं साइम सुर च जाव पसण च आसाएमाणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पच चोरसए विउलेण धूवपुप्फगंधमल्लालकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया । रायगिहे णयरे धण्णे णाम सत्थवाहे अड्डे०, तस्स णं धूया, भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणंअणुमग्गजाइया सुसुमा णाम दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा, त गच्छामो णं देवाणुप्पिया । धणस्स सत्थवाहस्स गिह विलुंयामो, तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले मम सुसुमा दारिया । तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेति । तएणं से चिलाए चोरसेणावई तेहि पचहि चोरसएहि सद्धि अल्लचम्म दुरूहइ, दुरूहित्ता पुब्बावरण्हकालसमयसि पंचहि चोरसएहि सद्धि सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिणहि फलएहि णिकट्टाहि असिलट्ठीहि असगएहि तोणेहि

की तरह राजगृह नगर के बाहिर के अग्निकोणस्थ जनपदों को गृह रहित और धन रहित करने लग गया ।' सूत्र ४ ॥

नाभनी चोरपट्टीमा पायसे। चोराने। अधिपति यधने विजय तस्करनी जेभ राजगृह नगरनी जहारना अग्निकोण तरस्करना जनपदोने गृहरहित अने धन रहित ओटले के अरणाह करवा जाय्या ॥ सूत्र ४ ॥

‘પદ્ધિગુંતિ’ પ્રતિશ્રુયન્તિ=સ્વીકૃયન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય, ચિન્તાત તસ્કર ચોરસેના પતિતયા અર્થાત્ ચોરસેનાપતિપદ્યે પ્રતિગિશ્રતિ । તતઃ ચ્વલુ મ ચિન્તાત’ ચોરસેના પતિર્જાતઃ, કીદશઃ ? इत्याह-‘अहम्मि ए जाव’ अपार्मिको यावत्-विजयचोर सेनापतिवदधार्मिको यावद्धर्मकेतुर्भूया विहरति । ततः च्चलु त चिन्तातः चोर-सेनापति ‘चोराण य जाव’ चोराणा च यावत्=गोरपारदारिकादीनां च ‘कुडगे’ कुडगः आश्रयस्थान चाऽपि ग्रामीन् । त च्चलु तत्र सिंहगुहायां चोर पल्लया पञ्चाना चोरशताना च एव यथा विजयस्तथैव मर्या यावत्=विजयवत् पञ्च शताना चोराणामुपरि आधिपत्यं कुर्वन्, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्तम्=अग्निकोणस्य

સ્વીકાર કર લિયા । ઓર સ્વીકાર કરકે ઉસ ચિલાત ચોર કો અન્ત મેં ઉસ સિંહગુહા નામકી ચોર પટ્ટી કા ઉન્હોં ને ચોર સેનાપતિ કે રૂપ મેં અભિષેક કર દિયા । (તણ સે ચિલાત ચોરસેનાવર્દે જાવ અહમ્મિએ જાવ વિહરદ તણ સે ચોર સેં ચોરાણ ય જાવ કુહગે યાવિ હોથા, સે ણ તત્થ સીંહગુહાં ચોરપટ્ટીં પચ્છં ચોરસયાણ ય એવ જહા વિજઓ તદેવ સબ્બ જાવ રાયગિહસ્સ દાહિણપુરત્થિમિત્તલ જળવથ જાવ ગિત્થાણ નિદ્ધણ કરેમાણે વિહરદ) હસ તરહ વહ ચિલાત ચોર સેનાપતિ યન ગયા । ચોરસેનાપતિ યનરુર વહ વિજય ચોર સેનાપતિ કી તરહ અધાર્મિક યાવત્ અધર્મકેતુ જૈસા હો ગયા । અતઃ વહ ચિલાત ચોર સેનાપતિ ચોરોં કા યાવત્ પારદારિક આદિકોં કા કુહગ કી તરહ ઘાસોં કે વન કે સમાન-આશ્રયસ્થાન યન ગયા ઓર ઉસ સિંહગુહા નામકી પટ્ટી મેં પાચસો ચોરોં કા આધિપત્ય કરતા હુઆ વિજય તસ્કર

અર્થને સ્વીકારી લીધો અને સ્વીકારીને છેવટે તે ચિલાત ચોરને તે સિંહગુહા નામની ચોરપટ્ટીને તેમણે ચોર સેનાપતિના રૂપમાં અભિષેક કરી દીધો

(તણ સે ચિલાત ચોરસેનાવર્દે જાવ અહમ્મિએ જાવ વિહરદ તણ સે ચોર સેં ચોરાણ ય જાવ કુહગે યાવિ હોથા, સે ણ તત્થ સીંહગુહાં ચોરપટ્ટીં પચ્છં ચોરસયાણ ય એવ જહા વિજઓ તદેવ સબ્બ જાવ રાયગિહસ્સ દાહિણ પુરત્થિમિત્તલ જળવથ જાવ ગિત્થાણ નિદ્ધણ કરેમાણે વિહરદ)

આ પ્રમાણે તે ચિલાત ચોર ચોર સેનાપતિ થઇ ગયો । ચોર સેનાપતિ બનીને તે વિજય ચોર સેનાપતિની જેમ અધાર્મિક યાવત્ અધર્મકેતુ જેવો થઇ ગયો । તેથી તે ચિલાત ચોર સેનાપતિ ચોરોના યાવત્ પારદારિક વગેરેના કુડગની જેમ-વાસોના વનની જેમ-આશ્રયસ્થાન બની ગયો

भुत्तुत्तरागए ' जिमित्तुत्तुत्तरागत = जिमित्तु = कृतभोजनः भुत्तुत्तरकालमागत
यावत् परमशुचिभूतः सुवासनरगतः सन् तानि पञ्च चोरशतानि विपुलेन = अत्य
र्थेन ' ध्रुवपुष्पगन्धमल्लालकारेण ' = धूप पुष्पगन्धमल्लालकारेण = धूपः = सुगन्धित
द्रव्येण उत्पन्नो धूमः, पुष्प = कुसुमम्, गन्धः = चन्दनादि माल्यम् = माला, अलङ्का-
राणि = आभरणानि, एतेषां च समाहारद्वन्द्वः, तेन सत्करोति, सम्मानयति,
सत्कृत्य सम्मान्य एवम्-अवदत्-एव खलु हे देवानुग्रिया ! राजगृहे नगरे धन्यो

ल्लालकारेण सत्कारेण, सम्माणेन, सत्कारित्वा सम्मानित्वा एव दयासी) विपुल मात्रो मे, अशन पान, आदिम एव स्वादिमरूप चारो प्रकार का आहार बनवा कर उन पांचसौ चोरो को आमन्त्रित किया। जब वे सब आचुके-तब उस चिलात चोर ने स्नान से निवृत्त कर और घाघसादि को अन्नादिका भाग देनेरूपरतिकर्म आदि कर भोजन मंडपमें बैठकर उन पांच सौ चोरो के साथ उस विपुलमात्रा में निष्पन्न हुए अशन, पान, आदिम, एव स्वादिमरूप चारो प्रकार के आहार को तथा सुरा, यावत् प्रसन्न मदिरा को खूब मनमाने रूप में पिया खाया जब वे सब के सब अच्छी तरह भोजन कर उत्तर काल में परमशुचिभूत होकर आनन्द के साथ एक स्थान पर आकर बैठचुके तब उस चिलात चोर सेनापति ने उनका धूप से-सुगन्धित द्रव्य से निष्पन्न हुए धूप से, पुष्पो से, चंदन आदि से, मालाओ से, और आभरणों से सत्कार किया सम्मान किया। सत्कार सम्मान करके फिर उनसे उसने इस प्रकार

पुष्पगन्धमल्लाल आशन, पान, आदिम अने स्वादिम आदि लतने आहार गनावडावीने ते पाचसौ चोराने आमन्त्रित कर्था न्याये तेजो पधा आवी गया त्याहे ते चिलात चोर स्नान कर्था अने त्यारपछी तेजो कागडा वगेरे पक्षीजोने अन्न वगेरेने लाग अर्पाने अतिकर्म वगेरे कर्था त्यारआड तेजो लोअन मंडपमा भेसीने ते पाचसौ चोरानी साथे ते पुष्पगन्धमल्लाल गनावडावेला, अशन, पान, आदिम अने स्वादिम रूप आदि प्रकारना आडा रने तेमज सुरा यावत् प्रसन्न मदिराने पूण धराध धराधने आधा-पीधा न्याये तेजो पधा सारी रीते जमीने परमशुचीभूत थधने आनन्दपूर्वक एक स्थान उपर आवीने ओकठा थथा-भेसी गया, त्याहे ते चिलात चोर सेना पतिजे तेमनो धूपथी, पुष्पोथी, चंदन वगेरेथी, भाणाजोथी अने आभर जोथी सत्कार कर्था अने सम्मान कर्था सत्कार तेमज सम्मान करीने तेजो तेमने आ प्रमाणे न्हं के-

सजीवेहि धणूहि समुन्निरात्तेहि सरेहि समुत्तालियाहि दीहाहि
 ओसारियाहि उरुघंटयाहि छिप्पतुरेहि वजमाणेहि महया महया
 उक्किठसीहणायचोरकलकलरव समुदरवभूय करेमाणे सीहण-
 हाओ चोरपल्लीओ पडिणिस्समइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव राय-
 गिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स
 अदूरसामते एग महं गहण अणुपणिसइ, अणुपणिसित्ता, दिवस
 खवेमाणे चिट्ठइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु म चिगतश्चोरसेनापतिः अन्यदा
 कदाचित् त्रिपुलम् अशनपानखादिमन्वादिमम् ‘उपसखवेत्ता’ उपस्कार्य=निष्पाद्य
 पञ्च चोरशतानि आमन्त्रयति । ततः पश्चात् स्नात् ‘कयवलिकम्मे’ कृतबलि
 कर्मा=कृत बलिकर्म येन सः, काकादीना कृतेदत्त भोजनोपहारो भोजनमण्डपे तैः
 पचमि चोरशतैः सार्धं ‘विउल’ त्रिपुलम्=अत्यर्थम्, अशन पान खाद्यस्वाद्य सुरा
 च यावत् प्रसन्ना च ‘आसाएमाणे’ आस्वादयन् विहरति । पुनश्च ‘जिमिय

‘तएण से चिलाए चोरसेणावई’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (चोर सेणावई चिलाए) चोर सेना
 पति चिलात चोर ने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (विउल असण
 पाणखाइमसाइम उवक्खडावेत्ता पचचोरसए आमतेइ—तओ पच्छा
 ण्हाए कयवलिकम्मे, भोजनमण्डवसि तेहिं पचहिं चोरसएहिं सद्धिं विउल
 असण पाण खाइम साइम सुर च जाव पसण्ण च आसाए माणे ४
 विहरइ, जिमियभुत्तुत्तरागण ते पच चोरसए विउलेण धूवपुप्फगधम

तएण से चिलाए चोरसेणावई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (चोरसेणावई चिलाए) ये २ सेनापति
 चिलात थोरे (अन्नया कयाइ) कौई थोके वधते (विउल असणपाणखाइमसाइम
 उवक्खडावेत्ता पच चोरसए आमतेइ—तओ पच्छा ण्हाए कयवलिकम्मे, भोजन
 मण्डवसि तेहिं पचहिं चोरसएहिं सद्धिं विउल असण पाण खाइम साइम सुर
 च जाव पसण्ण च आसाए माणे ४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागण ते पच चोरसए विउ-
 लेण धूवपुप्फगधमल्लालकरेण सकारेइ, सम्माणेइ, सकारित्ता सम्मानित्ता वयासी)

यावत् शिलप्रवालः, मम सुसुमा दारिका-लुण्ठितेषु वस्तुषु मध्ये धनकनकमणि-
मौक्तिकशिलाप्रवालादि वस्तुजातानि युष्माक भवन्तु, मम तु एका सुसुमा दारिका
भविष्यति । ततः खलु तानि पञ्च चोरशतानि चिलातस्य चोरसेनापतेः एतमर्थं
प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकृवन्ति । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः तै पञ्चभिः
चोरशतैः साद्धं ' अल्लचम्म ' आर्द्रचर्म दूरोदति, लुण्ठकाहि लुण्ठनप्रस्थानात्
पूर्वं माद्रल्यार्थमाद्र्चर्मप्यारोहन्तीति तेषा व्यवहारः, दूरस्थ, ' पुष्पावरणकालसम-
यसि ' पूर्वापराहकालसमये '=दिनस्य चतुर्थप्रहरे पञ्चमिश्चोरशतैः साद्धं
' सण्णद्ध जाव गहियाउहपरणे ' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरणः=मन्त्रद्वन्द्व
वर्मितरुवचः=सनद्ध'=सज्जीकृतः, वद्धः=रुशाबन्धनेन सगद्धः, वर्मितः=जङ्गे परि-
द्वितः कवचो येन स तथोक्तः, ' गृहीतायुधप्रहरण ' गृहीतानि आयुधप्रहरणानि

लूट-जो वस्तु हम तुम लूटेंगे उनमें से तुम्हारी तो धन, कनक, मणि,
मौक्तिक शिलाप्रवाल आदि चीजें होगी-और मेरी केवल एच वह सुम
मादारिका होगी-। इस तरह उन पांचसौ चोरों ने अपने सेनापति
चिलात चोर की इस बात को मान लिया । इसके बाद यह चोर सेना-
पति चिलात, उन पांचसौ चोरों के साथ गीले चमड़े पर बैठ गया ।
लुटेरे लूटने के लिये जय प्रस्थान करते हैं तब वे पहिले गीले चमड़े पर
शुभ शकुन मानने के निमित्त बैठते हैं ऐसा उनमें व्यवहार है बैठकर
फिर वह दिन के चतुर्थप्रहर में पांचसौ चोरों के साथ (सीहगुहाओ
चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) उस मिहगुहा नाम की चोरपल्ली से
निकला । (सण्णद्ध जाव गहियाउहपरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं

येठला भाटे आलो तैयार थाओ, डे देवानुप्रियो ! आपणे जधा त्या जधओ
अने धन्य सार्धवाडना धरने लुट्री लधओ, जे वस्तुओ आपणे जधा लुट्रीशु
तेमाथी धन, कण्ठ, भण्डि, मौक्तिक, शिलाप्रवाल वगैरे वस्तुओ तभारी थगे
अने इकत ते सुसमा दारिका भारी थगे आ प्रभाणे ते पाथसे। योरोओ
पोताना सेनापति चिलात योरनी आ बात स्वीकारी लीधी तयारपणी ते योर
सेनापति चिलात, ते पाथसे। योरोनी साथे साथे लीना आभडा उपर जेमी
गयो। लुटाराओ लुटवा भाटे ज्यारे घेरथी नीकणे छे तयारे तेओ पडेला शुभ
शकुन भाटे लीना आभडा उपर जेसे छे, आ जतने तेओमा रिवाज छे
लीना आभडा उपर जेसीने ते दिवमना योथा पडोरमा पाथसे। योरोनी
साथे (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) ते सिंछुडा नामनी
चोरपल्लीमाथी नीकओये।

यावत् शिलाप्रवालः, मम सुसुमा दारिका-लुण्ठितेषु वस्तुषु मध्ये धनकनकमणि-
मौक्तिकशिलाप्रवालादि वस्तुजातानि गुप्ताक भवन्तु, मम तु एका सुसुमा दारिका
भविष्यति । ततः खलु तानि पञ्च चोरशतानि चिलातस्य चोरसेनापतेः एतमर्थं
प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः तैः पञ्चभिः
चोरशतैः सादं 'अलुचम्प' आद्रवम् दूरोहति, लुण्ठकाहि लुण्ठनप्रस्थानात्
पूर्वं माङ्गल्यार्थमाद्र्वचर्मण्यारोहन्तीति तेषां व्यवहारः, दूस्व, 'पुन्वावरणकालसम-
यसि' पूर्वापराङ्कालसमये '=दिनस्य चतुर्थप्रहरे पञ्चमिश्चोरशतैः सादं
'सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरणः=सन्नद्धवद्ध
वर्मितकवचः=सन्नद्ध=सज्जीकृतः, वद्धः=कशावन्धनेन सन्नद्धः, वर्मितः=अङ्गे परि-
हितः कवचो येन स तथोक्तः, 'गृहीतायुधप्रहरणः' गृहीतानि आयुधप्रहरणानि

लूट-जो वस्तु हम तुम लूटेंगे उनमें से तुम्हारी तो धन, कनक, मणि,
मौक्तिक शिलाप्रवाल आदि चीजें होगी-और मेरी केवल एव वह सुस-
मादारिका होगी-। इस तरह उन पांचसौ चोरों ने अपने सेनापति
चिलात चोर की इस घात को मान लिया । इसके बाद यह चोर सेना-
पति चिलात, उन पांचसौ चोरों के साथ गीले चमड़े पर बैठ गया ।
लुटेरे लूटने के लिये जब प्रस्थान करते हैं तब वे पहिले गीले चमड़े पर
शुभ शकुन मानने के निमित्त बैठते हैं ऐसा उनमें व्यवहार है बैठकर
फिर वह दिन के चतुर्थप्रहर में पांचसौ चोरों के साथ (सीहगुहाओ
चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) उस सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से
निकला । (सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिण्हि कलएहिं

એટલા માટે ચાલો તૈયાર થાઓ, હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણે બધા ત્યા બધાએ
અને ધન્ય સાર્થવાહના ધનને લુટી લઈએ, જે વસ્તુઓ આપણે બધા લુટીશું
તેમાથી ધન, કણક, મણિ, મૌક્તિક, શિલાપ્રવાલ વગેરે વસ્તુઓ તમારી થશે
અને ફક્ત તે સુસમા દારિકા મારી થશે આ પ્રમાણે તે પાચસો ચોરાઓ
પોતાના સેનાપતિ ચિલાત ચોરની આ વાત સ્વીકારી લીધી ત્યારપછી તે ચોર
સેનાપતિ ચિલાત, તે પાચસો ચોરાની સાથે સાથે બીના ચામડા ઉપર બેઠી
ગયો લુટારાઓ લુટવા માટે બ્યારે ઘેરથી નીકળે છે ત્યારે તેઓ પહેલા શુભ
શકુન માટે બીના ચામડા ઉપર બેસે છે, આ બતનો તેઓમા રિવાજ છે
બીના ચામડા ઉપર બેઠીને તે દિવસના ચોથા પહોરમા પાચસો ચોરાની
સાથે (સીહગુહાઓ ચોરપલીઓ પડિનિક્કમઇ) તે સિંહગુહા નામની
ચોરપલીમાથી નીકળે

વજ્રમાણેઈ ' ક્ષિપ્તૃયૈઃ પાઘમાનૈ=દ્રુત ગાયમાનૈઃ તૃયૈઃ ઉપલક્ષિતઃ સન્ ' મહયા-
મહયા ઉક્ષિપ્તસીંહણાયે ચોરકલ્લરવ ' મહામદ્વોત્કૃષ્ટસિંહનાદચોરકલ્લરવ-
અત્યન્તોત્કૃષ્ટસિંહનાદચોરકલ્લરવશ્વં સમુદ્રસ્વભૂત=સમુદ્રેલાટુદ્ધિસમયે ધ્વનિ
મિવકુર્ન, યદ્વા મન્તા મહતા ઉત્કૃષ્ટસિંહનાદેન-' લુપ્તવૃત્તીયાન્ત પદમ્ '
સ્વકૃતોત્કૃષ્ટસિંહનાદેનેત્યર્થઃ, શેષ પૂર્વવત્ । સિંહગુહાતશ્વોરપલ્લીતઃ પ્રતિનિષ્ક્રા-
મ્યતિ, પ્રતિનિષ્ક્રમ્ય યત્રૈવ રાજગૃહ નગર તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય રાજગૃહસ્ય
નગરસ્ય અદૂરસામન્તે એક મહદ્ ' ગહણ ' ગહનમ્=વનમ્ અનુપવિગતિ, અનુપવિશ્ય,
દિવસમ્=શેષદિવસભાગ ક્ષપયન્=વ્યતિયન્ તિષ્ઠતિ ॥ સૂ૦૫ ॥

શન્દાયમાન-વહે ૨ ઘટોં સે જલ્દી ૨ વજતે હુએ વાજોંસે વહ ઉપલક્ષિત
-યુક્ત યા । તયા ઉસકે નિરુલને પર જો ચોરોં કા કલકલ રવ હુઆ-વહ
સિંહ કી ગર્જના કે જૈસા મહાન ઉચ્ચસ્વર થા-। તથા જિસ સમય સમુદ્ર
પઢતા હૈં ઉસ સમય જૈસા ઉસકા શબ્દ હોતા હૈં-વૈસા હી વહ કલ ૨
રવ ગંભીર યા । (પઢિનિક્ષમિત્તા જેણેવ રાયગિહે નયરે તેણેવ ઉવાગ
ચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા રાયગિહસ્સ નયરસ્સ અદૂર સામન્તે એગં મહ ગહણ
અણુપવિસદ, અણુપવિસિત્તા દિવસ સ્વેમાણે ચિટ્ઢહ) ચોરપલ્લી સે
નિકલકર વહ જહા રાજગૃહ નગર યા વહાં આયા-વહાં આકર કે વહ
રાજગૃહ નગર કે અદૂરસામન્ત-ન અતિ દૂર ન અતિ સમીપ રહે હુએ એક
મહાન જગલ મે ઝિપ રહે વહા ઝિપકર ઉસને અપના વહ દિવસ વહી
પર ઠહર કર સમાસ કર દિયા ॥ સૂ૦૫ ॥

જલ્દી જલ્દી વાગતા વાજાઓથી તે યુક્ત હતો તેમજ જ્યાં તે નીકળ્યો
ત્યાં જોડાને જે ઘોઘાટ થયો તે સિંહની ગર્જના જેવો મહા ધ્વનિ હતો
તેમજ જ્યાં સમુદ્રમાં ભરતી આવે છે અને ત્યાં જેવો તેનો ધ્વનિ હોય
છે, તે માણસોનો ધ્વનિ પણ તેવો જ ગળી જાય છે (પઢિનિક્ષમિત્તા જેણે
રાયગિહે નયરે તેણેવ ઉવાગચ્છદ, ઉવાગચ્છિત્તા રાયગિહસ્સ નયરસ્સ અદૂરસામન્તે
એગ મહ ગહણ અણુપવિસદ, અણુપવિસિત્તા દિવસ સ્વેમાણે ચિટ્ઢહ) ચોરપલ્લીમાંથી
નીકળીને જ્યાં રાજગૃહ નગર હતું ત્યાં તે આવ્યો ત્યાં આવીને તે રાજગૃહ
નગરથી થોડો દૂર પણ નહિ અને થોડા નજીક પણ નહિ એવા એક મોટા વનમાં
હુપાઈને રહ્યા ત્યાં હુપાઈને તેણે પોતાનો તે દિવસ ત્યાં જ પસાર કરી દીધો ॥ સૂ૦૫ ॥

मूलम्—तएण से चिलाए चोरसेणावई अछरत्तकालसमयसि
निसत पडिनिसतसि पचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहिएहि
फलएहि जाव मृदआहि उरुघंटियाहि जेणेव रायगिहस्स
नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
उदगवत्थिं परामुसइ, आयते चोक्खे सुइभूए ताळुग्घाडणिविज्जं
आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उद-
एण अच्छोडेइ, कवाड विहाडेइ विहाडित्ता रायगिह अणुप-
विसइ, अणुपविसित्ता, महयारसदेणं उग्घोसेमाणे२ एवं वयासी
—एव खलु अह देवाणुप्पिया । चिलाए णाम चोरसेणावई
पचहि चोरसएहि सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमाणए
धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे, त जोणं णवियाएमाउ
याएदुद्ध पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धणस्स सत्थ
वाहस्स गिह तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणस्स गिह विहा
डेइ। तएणसे धणणे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहि चोरसएहि
सद्धि गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पचहि
पुत्तेहि सद्धि एगंत अवक्कमइ । तएणं से चिलाए चोरसेणावई
धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ घाइत्ता, सुवहु धणकणग
जाव सावएज्ज सुसुम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता, रायगिहाओ
पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव
पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः ‘अद्वरत्तकालसमयसि’ अर्धरात्रिकालसमये=मध्यरात्रे, कीदृशे ‘निसतपडिनिसते’ निशान्त-प्रतिनिशान्ते=निशान्त=जन वनिरहित प्रतिनिशान्त=प्रत्येकगृह यस्मिन् तस्मिन्, जने प्रसुप्ते सतीत्यर्थः, पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धम् ‘माइयगोमुहिएहि’ माइयगोमु-खितैः, उदररक्षार्थं भल्लूकरोमावृतैर्गोमुखाकारैः ‘फलएहि’ फलकैः=पट्टकैः उदरव-द्धकाष्ठफलकैस्त्वित्यर्थः, यावत् ‘मूडआहि उरुवटियाहि’ मूकिताभिरुर्वर्णकामिः=निःशब्दी कृताभि विशालघट्टाभिर्युक्तः यत्रैव राजगृहस्य नगरस्य पौरस्य द्वार तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, ‘उदगवत्थि’ उदगवत्स्ति=वर्धमयजलपात्रम्, ‘ममक’ इति प्रसिद्धम् ‘परामुसइ’ परामृशति=गृह्णाति, अनन्तरम् ‘आयते’ आवातन्त=कृतमुखादि प्रक्षालनः ‘चोक्खे’ चोक्षः=स्वच्छः अतएव ‘तालुग्याडणि विज्ज’

‘तएण से चिलाण चोरसेणावई’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (चोरसेणावई से चिलाए) चोरसेनापति वह चिलात चोर (निसतपडिनिसते अद्वरत्तकालसमयसि) जब जन ध्वनिरहित प्रत्येक घर हो गया ऐसे मध्यरात्रिके समयमें (पचहिं चोर सएहिं सद्धि) उन पांचसौ चोरों के साथ (माइय गोमुहिएहिं फलएहिं जाव मूडआहि उरुवटियाहिं जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ) अपने उदर की रक्षा के निमित्त बद्धभल्लूक के रोमों से आवृत हुए गोमुखाकार काष्ठफलकों से यावत् निःशब्दीभूत विशाल घटिकाओं से युक्त होकर जहां राजगृह नगर का पूर्वदिशा का द्वार था वहां आया । (उवागच्छित्ता उदगवत्थि परामुसइ, आयते, चोक्खे, सुडभूए, तालुग्याडणि विज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता रायगिहस्स

‘तएण से चिलाण चोरसेणावई’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) तथारभा (चोरसेणावई से चिलाए) चोर सेनापति ते चिलात चोर (निसतपडिनिसते अद्वरत्तकालसमयसि) अथार दरेके दरेके धरभा माणुसेने अवाण ओउदम गध थइ गये, ओवा ते मध्यरात्रिना समये (पचहिं चोरमएहि सद्धि) ते पाथगे ओसेनी साथे

(माइय गोमुहिएहि फलएहि जाव मूडआहि उरुवटियाहि जेणेव राय गिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ)

पोताना चेटीनी रक्षा भाटे रीछना सेमोथी आवृत्त थयेला गोमुआजर काष्ठ इलकेथी यावत् यात थइ गयेली मोटी घटिकाओथी युक्त थईने अथा राजगृह नगरनु पूर्व दिशानु द्वार छतु त्या आव्या (उवागच्छित्ता उदगवत्थि परामुसइ आयते चोक्खे सुडभूए, तालुग्याडणि विज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता

मूल-तण्णं से चिलाण चोरसेणावई अडरत्तकालसमयांसि
 निसत्त पडिनिस्तत्तं पचहि चोरसएहि सडि माइयगोमुहिणहि
 फलएहि जाव मूदआहि उरुणटियाहि जेणेव रायगिहस्स
 नयरस्स पुरत्थिमित्ते दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
 उदगवत्थि परामुसइ, आयंते चोक्खे सुइमूए तालुग्घाडणिविज्जं
 आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उद-
 ण अच्छोडेइ, कवाड विहाडेइ विहाडित्ता रायगिह अणुप-
 विसइ, अणुपविसित्ता, महयार सदेणं उग्घोसेमाणेए एव वयासी
 -एव खलु अहं देवाणुप्पिया । चिलाए णामं चोरसेणावई
 पचहि चोरसएहि सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमाणए
 धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे, त जोण णवियाएमाउ
 याएदुद्धं पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धणस्स सत्थ
 वाहस्स गिह तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणस्स गिह विहा-
 डेइ । तण्णं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहि चोरसएहि
 सद्धि गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थेए पचहि
 पुत्तेहि सद्धि एगंत अवक्कमइ । तण्णं से चिलाए चोरसेणावई
 धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ घाइत्ता, सुवहु धणकणग
 जाव सावएज्ज सुसुम च दारिय गेणहइ, गेणित्ता, रायगिहाओ
 पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव
 पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

शीघ्रम् आगतः धन्यस्य सार्धवाहस्य गृह 'पाउकामे' गानयितुकामः=लुण्ठयितुकामः
 हे देवानुप्रियाः ! यूयं शृणुत, पञ्चशतचौरैः सदाह चिलातश्चोरमेनापतिरत्रान्यस्य
 सार्धवाहस्य गृह लुण्ठयितुमागतोऽस्मीति भावः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात्
 'जो ण' यः खलु 'णवियाए माउआए' नव्याया मातृकाया 'दुद्ध पाउकामे'
 दुग्ध पातुकाम=यः खलु मदीयद्वस्तान्मृत्यु प्राप्य पुनर्भाविभवभाविन्या नूतनाया
 मातृदुग्धाभिलाषीभवेत् 'सेण' स खलु 'णिग्गच्छ' निर्गच्छतु मम समुत्त
 मागच्छतु 'त्ति कट्ठ' इतिकृत्वा=इत्यमुक्त्वा यत्रैव अन्यस्य सार्धवाहस्य गृह तत्रैव
 पाचसौ चोरों के साथ यहा सिंहगुहा नाम की चोरपट्टली से आया हुआ
 हूँ। मेरी इच्छा अन्यसार्धवाह के घर को लूटने की है—(त) इसलिये
 —(जो ण णवियाए, माउआए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छ, त्तिकट्ठ
 जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उगगच्छइ, उवागच्छित्ता
 गिह विहाडेइ। तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावड्ढणा पचहिं चोर-
 सएहिं सद्धि गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं
 पुत्तेहिं सद्धि एगत अवक्कमइ,। तएण से चिलाए चोरसेणावई वण्णस्स
 सत्थवाहस्स गिह घाणइ, घाइत्ता सुवहुधणक्कणग जाव सावएज्ज सुसमं
 च दारिय गेणइ, गेणित्ता रायगिहाओ पडिणिकखमइ, पडिणिकखमित्ता
 जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए) जो नवीन माता का दूध
 पीना चाहता हो—मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त कर पुनः भाविभव में
 होनेवाली जननी का दुग्ध पान करने का जो अभिलाषी बन रहा हो

चिलात नामे चोर छु डभष्ठा ७ डु पांचसो चोदोनी साथे अहीं सिंहुड्डा
 नामनी चोरपट्टलीथी आये छु धन्य सार्धवाहना घरने लूटवानी भारी
 धन्ना छे (त) भाटे

(जोण णवियाए, माउआए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छ, त्ति कट्ठ
 जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उगगच्छइ, उवागच्छित्ता वण्णस्स गिह
 विहाडेइ, तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावड्ढणा पचहिं चोरसएहिं सद्धि गिह
 घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धि एगत अवक्कमइ।
 तएण से चिलाए चोरसेणावई वण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाणइ, घाइत्ता सुवहु
 धणक्कणग जाव सावएज्ज सुसमं च दारिय गेणइ, गेणित्ता रायगिहाओ पडि
 णिकखमइ, पडिक्खमित्ता जेणेव सीह गुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ये नवी मातातु दूध पीवा धन्ने छे अट्ठे के भारा हाथवी मृत्यु
 पाभीने इरी जीला अवभा बनारी मातातु दूध पीवा ये धन्नेतो होय ते

तालोद्घाटिनी विधाम् 'आराहेड' आराहयति=स्मरति 'आराह्ति' आवाह=
 स्मृत्या राजगृहस्य द्वारकपाटानि उदकेन 'आन्त्रोदेड' आन्त्रोटयति=अग्निपि
 श्रुति, 'आच्छोडित्ता' आच्छोटय=अग्निपिच्य, कपाट 'विहादेड' विघाटयति=
 उद्धाटयति, विघाटय सकृच्चोरैः सहितः राजगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य महता
 महता=अतिमहता शब्देन 'उग्योसेमाणे २' उग्योषयन २=गुह्यगुह्योपणा कुर्वन्
 एवमवदत्, घोपणप्रकारमाह-एव खलु अह हे नेयानुप्रिया ! चिलातो नाम
 चोरसेनापतिः पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धम् सिहगुहातथोरपल्लीत उह 'हव्य' हव्य=

दुवारे कवाडे उदण्ण अच्छोदेड कवाड विहादेड, विहाटित्ता रायगिह
 अणुपचिसह अणुपचिसित्ता महया २ महेण उग्योसेमाणे २ एव वयासी
 -एव खलु अह देवानुप्रिया चिलाण नाम चोरसेणावेई पचहि चोरस
 एहि सद्धि सिंहगुहाओ चोरपरलीओ इह हव्यमागण घण्णस्स सत्थवा
 हस्स गिह घाउकामे) वहां आकर के उसने चर्ममय जलपात्र को-मसक
 को-अपने हाथ में लिया-और उसके जल से आचमन किया-आचमन
 करके जब वह शुद्ध परमशुचीभूत हो चुका-तब उसने तालोद्घाटिनी
 विधा का आवाहन किया-स्मरण किया-और स्मरण करके राजगृह के
 द्वार कपाटों को उदक के छीटों से सिञ्चित किया। सिञ्चित करके फिर
 उसने उन कवाडों को खोला और खोल करके फिर वह नमस्त चोरों
 के साथ राजगृह नगर के भीतर प्रविष्ट हो गया। प्रविष्ट होकर के
 उसने वहां घड़े आवाजसे बारबार घोपणा करते हुए इस प्रकार कहा-हे
 देवानुप्रियों ! सुनो-मैं चोरसेनापति चिलात नाम का चोर हूँ-अभी २

रायगिहस्स दुवारकवाडे उदण्ण अच्छोदेड कवाड विहादेड, विहाटित्ता रायगिह
 अणुपचिसह, अणुपचिसित्ता महया २ सहेण उग्योसेमाणे २ एव वयासी-एव खलु
 अह देवानुप्रिया चिलाण नाम चोरसेणावेई पचहि चोरसएहि सद्धि सिंहगुहाओ
 चोरपल्लीओ इह हव्यमागण घण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे)

त्या आचीने तेण्हे आभडानी थेली-मशक-ने पोताना हाथमा लीधी
 अने तेना पाणीधी आचमन कयु आचमन करीने ज्यारे ते शुद्ध परम
 शुचीभूत थर्ध थूकथे त्यारे तेण्हे तालोद्घाटिनी विधानु आवाहन कयु-स्मरण
 कयु, अने स्मरण करीने राजगृहना दरवाजना कमाडोने पाणीधी सिञ्चित
 करीने तेण्हे ते कमाडोने उघाडया उघाडीने ते गधा योशानी साथे राजगृह
 नगरनी अदर प्रविष्ट थर्ध गयो प्रविष्ट थर्धने तेण्हे त्या मोटा साढे बारबार
 घोषणा करता आ प्रमाणे कहु के डे देवानुप्रियो ! सालणो चोर सेनापति

शीघ्रम् आगतः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह 'घाउकामे' पानयितुकामः=लुण्ठयितुकामः
 हे देवानुमियाः । यूय शृणुत, पञ्चशतचौरैः सहाह चिलातश्चोरसेनापतिरत्रधन्यस्य
 सार्थवाहस्य गृह लुण्ठयितुमागतोऽस्मीति भावः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात्
 'जो ण' यः खलु 'णवियाए माउआए' नव्याया मातृकाया 'दुद्ध पाउकामे'
 दुग्ध पातुकाम =यः खलु मदीयदस्तान्मृत्यु प्राप्य पुनर्भाविभवभाविन्या नूतनाया
 मातृदुग्धाभिलाषीभवेत् 'सेण' स खलु 'णिग्गच्छउ' निर्गच्छतु मम समुख
 मागच्छतु 'त्ति कद्दु' इतिकृत्वा=इत्यमुक्त्वा यत्रैव धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह तत्रैव

पाचसौ चोरों के साथ यहां सिंहगुहा नाम की चोरपटली से आया हुआ
 हूँ। मेरी इच्छा धन्यसार्थवाह के घर को लूटने की है-(त) इसलिये
 -(जो ण णवियाए, माउआए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्तिकद्दु
 जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
 गिह विहाडेइ। तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावडणा पचहिं चोर-
 सएहिं सद्धिं गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं
 पुत्तेहिं सद्धिं एगतं अवक्कमइ,। तएण से चिलाए चोरसेणावई धणस्स
 सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुवहुधणकणग जाव सावएज्ज सुसम
 च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता
 जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए) जो नवीन माता का दूध
 पीना चाहता हो-मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त कर पुनः भाविभव में
 होनेवाली जननी का दुग्ध पान करने का जो अभिलाषी बन रहा हो

चिलात नामे चोर छु डमछा ७ छु पांयसो चोरोनी साथे अर्धी सिंङ्गुडा
 नामनी चोरपटलीधी आये छु धन्य सार्थवाहना घरने लूटवानी भारी
 धम्मा छे (त) भाटे

(जोण णवियाए, माउआए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्ति कद्दु
 जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणस्स गिह
 विहाडेइ, तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावडणा पचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिह
 घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगतं अवक्कमइ ।
 तएण से चिलाए चोरसेणावई धणस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ, घाइत्ता सुवहु
 धणकणग जाव सावएज्ज सुसम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडि
 णिक्खमइ, पडिक्खमित्ता जेणेव सीह गुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ये नवी मातानु दूध पीवा धम्मे छे अट्ठे के भारा हाथवी मृत्यु
 पाभीने इरी णील लवमा बनारी मातानु दूध पीवा ये धम्मतो डाय ते

उपागच्छति, उपाग प धन्यस्य गृह ' विदादेः ' विधाट्यति=उद्घाटयति । ततः खलु स धन्यः सार्धसाहः विधानेन चोरसेनापतिना पञ्चभिः चोरश्रतैः सार्धं गृहं ' घाड्जमाण ' घाट्यमान=उण्ठयमान पश्यति इष्टा, गीतः=भय प्राप्तः, व्रस्तः=प्राप्तगतः, व्रसितः=विशेषतया प्राप्तः ' उद्भिगो ' उद्भिग्नः=भयमम्माक सर्वस्व मपहरति अहमस्य किमपि कर्तुं न शक्नोमीति हेतोः परमयिन्तामापन्नः, पञ्चभिः पुत्रैः सार्धम् ' एगत ' एकान्तम्=भयरहित स्थानम् ' अयमह ' अपक्राम्यति=अपगच्छति । ततः खलु न चिन्तात. चोरसेनापतिः धन्यस्य सार्धसाहस्य गृह घातयति=लुण्ठयति घातयित्वा लुण्ठयित्वा गुराह ' गणभणम जाव सावएज्जं ' धनरुनरु यावत् स्वापतेयम्=धनरुनरु मणिमौक्तिकरुदिक द्रव्य मुमुमा च दारिका गृह्णाति, गृहीत्वा राजगृहात् पतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सिंहगृहा तत्रैव माधारयद् गमनाय=गन्तुमुद्यतोऽभूत् ॥ सू०६ ॥

-वही मेरे सम्मुख आवे-इस प्रकार कहकर वह जहा धन्यसार्धसाह का घर था वहा गया-वहा जाकर उसने धन्यसार्धसाह के घर को खोला जब धन्यसार्धसाह ने पाचसौ चोर के साथ चोरों सेनापति चिलात के द्वारा अपने घर को लुटता हुआ देखा-तो देखकर वह भय को प्राप्त हो गया-और व्रस्त एव व्रसित-विशेष त्रास को प्राप्त होकर अन्त में वह उद्भिग्न बन गया यह हमारा सर्वस्व हरण कर रहा है और मैं इसका कुछ भी नहीं कर सकता हूँ-इस ध्यान से वह चिन्ताकुल हो गया-और चिन्ताकुल होकर अपने पाचो पुत्रों के साथ वहा से निर्भय स्थान में चला गया । चोर सेनापति चिलात ने धन्य सार्धसाह को खूब मनमाना लूटा और लूट करके उसमेंसे बहुत सा धन रुनक, मणि, मौक्तिक आदि द्रव्यों को एव सुसमादारिका को ले लिया-। लेकर वह राजगृह नगर से

भारी सामे आवे आ प्रमाणे कहींने ते न्या धन्य सार्धसाहनु घर डंतु त्या गये। त्या नधने तेले धन्य सार्धसाहना घरने उघाड्यु न्यादे धन्य सार्धसाहने पाचसो चोरानी साथे चोर सेनापति चिलात पडे पोताना घरने लुटातु जेथु त्यादे जेधने ते भयणीत थध गये। अने व्रस्त तेभज व्रसित (विशेष त्रास) प्राप्त करीने छेवटे उद्भिग्न थध गये। आ अमाइ सर्वस्व हरण करी रह्यो छे अने हु जेनु कंठज जगाडी शकतो नथी आ जतने विचार करीने ते चिन्ताकुल थध गये। अने चिन्ताकुल थधने ते पोताना पाचे पुत्रानी साथे त्याथी निर्भय स्थानमा जेतो रह्यो चोर सेनापति चिलाते धन्य सार्धसाहना घरने पूज धर्या मुण्ण लूट्यु अने लूटीने तेभाथी धर्य धन, रुनक, मणि, मोती वगेरे द्रव्यो तेभज सुसमा दारिकाने लध लीधी गृह

मूलम्—तएण से धन्ने सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवहुं धणकणगं सुसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता, महत्थ महग्घं महरिह पाहुड गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, त महत्थं महग्घं महरिह पाहुड जाव उवणेति, उवणित्ता, एवं वयासी—एवखल्ल देवाणुप्पिया । चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पचहि चोरसएहि सद्धि ममगिह घाएत्ता धणकणगं सुंसुमं च दारिय गहाय जाव पडिगए । त इच्छामो ण देवाणुप्पिया । सुसुमा दारियाए कूव गमित्तए, तुब्भ णं देवाणुप्पिया । से विउले धणकणगे, ममंसुंसुमा दारिया । तएणं ते णगरगुत्तिया धणस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पीडसुणित्ता संनद्ध जाव गहियाउहपहरणा महयार उक्किट्ठं जाव समुद्धरवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओणिग्गच्छति, णिग्गच्छित्ता, जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, चिलाएणं चोरसेणाव-इणा सद्धि संपलग्गा यावि होत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइ हयमहिय जाव पडिसेहेति । तएण ते पच चोरसया णयरगोत्तिएहि हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा त विउल धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ

घापिम निकला—और निकल करके जहा सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी—उस ओर चलने के लिये उद्यत हो गया ॥ सू० ६ ॥

समंता विप्पलाइत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया ते विउलं धण
 कणं गेणहति, गेणित्ता जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छंति ।
 तएण से चिलाए त चोरसेणं तेहि णयरगुत्तिएहि हयमहिय
 जाव भीए तत्थे सुसुम दारियं गहाय एगं महं अग्गामियं दीह-
 मद्ध अडवि अणुप्पविट्ठे । तएणं धण्णे सत्थवाहे सुंसुमं दारिय
 चिलाएणं अडवीमुह अवहीरमाणि पासित्ताणं पचहि पुत्तेहि
 सद्धि अप्पउट्ठे सन्नद्धवद्धं चिलायस्स पदमग्गवीहि अणुगच्छ-
 माणे अभिगज्जते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे' अभितज्जेमाणे
 अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ । तएण से चिलाए तं धणं
 सत्थवाहं पंचहि पुत्तेहि सद्धि अप्पउट्ठं सन्नद्धवद्धं समणुगच्छ
 माण पासइ, पासित्ता अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कार-
 परक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसुम दारिय णिव्वाहित्तए, ताहे
 सते तते परितते नीलुप्पलं असि परामुसइ, परामुसित्ता
 सुसुमाए दारियाए उत्तमगं छिदइ, छिदित्ता, त गहाय त
 अग्गामियं अडवि अणुप्पविट्ठे । तएण से चिलाए तीसे अगा-
 मियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठ दिसाभाए,
 सीहगुह चोरपल्लि असपत्ते अतरा चेव कालगए ।

एवामेव समणाउसो । जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओ-
 रालियसरीरस्स वतासवस्स जाव विद्धसणधम्मस्स वण्णहेउ
 जाव आहार आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं
 हिलणिज्जे ३ जाव अणुपरियट्ठिस्सइ, जहा व से चिलाए
 तक्करे ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स धन्यः सार्थमाहो यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुबहु धनकणकं सुसुमा च दारिकाम् अपहृता ज्ञात्वा ‘महत्थं महग्घं महरिहं’ महार्थं महार्घं महार्हम्=महानर्थः प्रयोजनं यस्मिन् तत्=महार्थं=महाप्रयोजनम्, बहुमूल्यं पुनः महता योग्यम् ‘पाहुडं’ प्राभृतं=उपायनं गृहीत्वा यत्रैव ‘नगरगुत्तिया’ नगरगोप्तृकाः=नगररक्षकाः कोट्टपालादयः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् महार्थं यावत्=महार्घं महार्हं प्राभृतम् ‘उण्णेडं’ उपनयति=समर्पयति, उपनीय=समर्थ एवमदत्=एव खलु हे देवानु-

‘तएण से धन्ने सत्थवाहे’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से धन्ने सत्थवाहे) वह धन्य सार्थमाह (जेणेव सएणिहे तेणेव उवागच्छइ) जहां अपना घर था वहां आया (उवागच्छित्ता सुबहु धणकणग सुसम च दारिय अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरिय पाहुडं गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ) वहां आकरके उसने अपने घरमें से बहुत सा धन कणक एवं सुसुमा दारिका को हरण किया हुआ जब जाना तब वह महार्थ बहुमूल्य एवं महापुरुषों के योग्य भेंट लेकर जहां नगर रक्षक-कोट्टपाल-आदि थे वहां गया—(उवागच्छित्ता त महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेति, उवणित्ता एव वयासी) वहां जाकर उसने उस महाप्रयोजन साधक भूत बहुमूल्य तथा महापुरुषों के योग्य भेंट को उनके समक्ष रख दिया—और रखकर उनसे उसने इस प्रकार कहा—(एव

‘तएण से धन्ने सत्थवाहे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्था२५७ (से धन्ने सत्थवाहे) ते धन्य सार्थमाह (जेणेव सएणिहे तेणेव उवागच्छइ) तथा पोतानु धरं डंतु तथा आ०थे।

(उवागच्छित्ता सुबहु धणकणग सुसम च दारिय अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरिय पाहुडं गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ)

तथा आ०थे तेते पोताना धरमाथी पु०कण प्रमाथुमा धन, कण्ड अने सुसमा दारिकानु डरखु करवाभा आवेलु जालीने ते महार्थ, जहु डिमती अने महापुरुषोने योग्य लेट दधने जना नगर-रक्षक-कोट्टपाल-वगेरे डता तथा गथे। (उवागच्छित्ता त महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं जाव उवणेति, उवणित्ता एव वयासी) तथा जधने तेते ते महाप्रयोजन साधकभूत जहु डिमती तेमज महा पुरुषोने ये य लेने तेमनी आने भूरी दीधी अने भूरीने तेमने तेले आ प्रमाते विनती करानु कहु डे—

મિયા : ! ચિલાતશોગ્સેનાપતિ : સિંહગુટાયાશોરપળ્યા : ઇંદ્ર જ્યમાગમ્મ પચ્ચમિશોર
 ગતે : સાર્દ્ધં મમ ગૃહ ' ઘાપ્તા ' ધાનપિત્તા = ડુઝ્ઝિયા ગુમહુ ધનકનક સુસમા
 ચ દારિકા ગૃહીત્યા ' જાવ પડિગણ ' યાવન્ પ્રતિગત : = પચ્ચમિશોરશ્ચતે : સાર્ધં
 સિંહગુટા ચોરપળ્યા પ્રતિનિવૃત્ત ઇત્યર્થ , ' ત ' તન્ = તસ્માન્ કારણાત્ ઇન્દ્રામ :
 સ્વલુ હે દેવાનુમિયા . ! ' સુસમા દારિયાણ સુસમા દારિયાયા ' કૂવ ' પ્રત્યાન
 યને ' ગમિત્તણ ' ગન્તુમ્ . ! ' તુન્નેણ દેવાણુપ્પિયા ' ! ' યુપ્પાક મલુ હે દેવાનુ
 મિયા ! તત્ = અપહત ત્રિપુલ ધનકનકમ્ = હે દેવાનુમિયા : ' ચોરાપહત ધનકના
 દિક સર્વ યુપ્પાક મયન્ , મમ સુસમા દારિકા મયતુ . તત : સ્વલુ તે નગરગોપ્ત્રકા

સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાણ ચોરસેનાવર્ડ સીંહગુટાઓ ચોરપલ્લીઓ
 ઇંદ્ર જ્યમાગમ્મ પચ્ચિં ચોરસર્પિં સર્દિં મમ ગિહ ઘાપ્તા, સુવહુ ધન
 કળગ સુસમ ચ દારિય ગહાય જાવ પડિગણ-ત ઇચ્છામો ન દેવાણુ
 પ્પિયા ! સુસમા દારિયાણ કૂવગમિત્તણ-તુન્ન ન દેવાણુપ્પિયા ! સે વિડલે
 ધનકળગે મમ સુસમા દારિયા) હે દેવાનુમિયો સુનો ચોર સેનાપતિ
 ચિલાત ચોર ને સિંહગુટા નામ કી ચોરપલ્લી સે યહાં શીઘ્ર આકર
 પાંચસૌ ચોરોં કે સાથ મેરે ઘર પર ઢાકા ઢાલા હૈ . ઉસમેં ઉસને બહુત
 સા ધન, કનક ણવ સુસમા દારિકા કો લૂટા હૈ ઓર-લૂટકર વહ વહાં
 વાપિસ અપને સ્થાન પર ચલા ગયા હૈ . અતઃ હે દેવાનુમિયો ! મૈં ચાહતા
 હૈં કિ આપ લોગ ઉસ સુસમા દારિકા કો છેને કે લિયે જાવેં, મિલને પર
 વહ હ્રન ધનકનક આદિ મવ આપકા રહે-ઓર સુસમા દારિકા મેરી

(એવ સ્વલુ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાણ ચોરસેનાવર્ડ સીંહગુટાઓ ચોરપલ્લીઓ
 ઇંદ્ર જ્યમાગમ્મ પચ્ચિં ચોરસર્પિં સર્દિં મમ ગિહ ઘાપ્તા, સુવહુ ધનકળગ સુસમ
 ચ દારિય ગહાય જાવ પડિગણ ત ઇચ્છામો ન દેવાણુપ્પિયા ! સુસમા દારિયાણ
 કૂવ ગમિત્તણ-તુન્ન ન દેવાણુપ્પિયા ! સે વિડલે ધનકળગે મમ સુસમા દારિયા)

હે દેવાનુમિયો ! સાલજો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુટા નામની
 ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાચસો ચોરોની સાથે મારા ઘરમા ધાડ
 પાડી છે તેમા તેણે ઘણું ધન, કનક અને સુસમા દારિકાની લૂટ કરી છે
 લૂટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુમિયો !
 મારી ઇચ્છા છે કે તમે સુસમા દારિકાને પાછી લેવા માટે જાઓ અને તેને
 મેળવી લીધા બાદ તે અપહૃત કરાયેલું ધન કનક વગેરે બધું તમે રાખજો અને
 સુસમા દારિકાને મને મોપી દેજો

પુરુષા ધન્યસ્ય એતમર્થ પ્રતિશૃણ્વન્તિ=સ્વીકૃયન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય 'સન્નદ્ જાવ ગહિયાઝહપહરણા' સન્નદ્ યાવત્ ગૃહીતાયુધપ્રહરણા:=સન્નદ્ગદ્ગમિતકવચા યાવદ્ ગૃહીતાયુધપ્રહરણા ઇત્યસ્ય વ્યાખ્યા પૂર્વગદ્ ગોવ્યા, 'મહ્યા ૨ ઉક્તિદ્ જાવ સમુદ્રવભૂયપિવ' મહા મહોત્કૃષ્ટ યાવત્ સમુદ્રવભૂતમિવ, વેલાટ્ટદ્વિસમયે સમુદ્રધ્વનિમિવ મહાધ્વનિ 'કરેમાણા' કુર્વન્તો રાજગૃહાત્ નિર્ગચ્છન્તિ, નિર્ગત્ય રહે। (તણ તે નગરગુત્તિયા ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ એમદ્ઢ પડિસુણેતિ, પડિસુણિત્તા સન્નદ્ જાવ ગહિયાઝહપહરણા મહ્યા ૨ ઉક્તિદ્ઢ જાવ સમુદ્રવભૂયં પિવકરેમાણા રાયગિહાઓ નિગગચ્છતિ નિગગચ્છિત્તા જેણેવ ચિલાએ ચોરે-તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા ચિલાએણ ચોરસેણાવ-દ્દણા સદ્ધિં સપલગ્ગા યાવિ હોત્થા તણ તે નગરગુત્તિયા ચિલાય ચોરસે ણાવહ્ હ્યમહિય જાવ પડિસેહેતિ, તણં તે પવ ચોરસયા નયરગોત્તિ એહિં હ્યમહિય જાવ પડિસેહિયા સમાણા ત વિડલ ધણકળગ વિચ્છ-દ્દેમાણા ય વિપ્પકિરેમાણા ય સન્નઓ સમતા વિપ્પલાહ્થા) ધન્ય સાર્યગાહ કી હસ ઘાત કો સુનકર ડન નગર રક્ષકોં ને સ્વીકાર કર લિયા। ઓર સ્વીકાર કરકે ડસી સમય ડન્હો ને અપને ૨ શરીરપર કવચ કો સજિત કરકે કશાનધન સે વાધ લિયા યાવત્ આયુધ ઓર પ્રહરણો કો છે લિયા-। વેલાટ્ટદ્વિકે સમય મેં જિસ પ્રકાર સમુદ્ર કી ધ્વનિ હોતી હૈ-ડસી પ્રકાર કી મહાધ્વનિ કરતે દુપ્પ ફિર વે રાજગૃહ નગર

(તણ તે નગરગુત્તિયા ધણસ્સ સત્થવાહસ્સ એમદ્ઢ પડિસુણેતિ, પડિ સુણિત્તા સન્નદ્ જાવ ગહિયાઝહપરણા મહ્યા ૨ ઉક્તિદ્ઢ જાવ સમુદ્રવભૂય પિવકરેમાણા રાયગિહાઓ નિગગચ્છતિ, નિગગચ્છિત્તા જેણેવ ચિલાએ ચોર-તેણેવ ઉવાગચ્છતિ, ઉવાગચ્છિત્તા ચિલાએણ ચોરસેણાવદ્દણા સદ્ધિં સપલગ્ગા યાવિ હોત્થા-તણ તે નગરગુત્તિયા ચિલાય ચોરસેણાવદ્ હ્યમહિય જાવ પડિસેહેતિ, તણ તે પવ ચોરસયા નયરગોત્તિએહિં હ્યમહિય જાવ પડિસેહિયા સમાણા ત વિડલ ધણકળગ વિચ્છદ્દેમાણા ય વિપ્પકિરેમાણા ય સન્નઓ સમતા વિપ્પલાહ્થા)

ધન્ય માથવાહની તે વાતને માલણીને નગર રક્ષકોએ તેને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેમણે તરત જ પોતપોતાના શરીરો ઉપર ડવચો પહે રીને ડશા બધોથી બાધ્યા યાવત્ આયુધ અને પ્રહરણોને સાથે લઇ લીધા ભરતીના સમયે જેવો સમુદ્રનો ધ્વનિ હોય છે તેવો જ મહાધ્વનિ ડરતા તેઓ રાજગૃહ નગરમાંથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને બ્યા ચોર એનાપતિ તે

મિયા: ! ચિલાતશોરસેનાપતિ: મિંદુગુપ્તાશોરપત્યા: ૩૨ હવમાગમ્ય પચ્ચમિશોર
 શતે: માર્દ્દમ્ મમ શુદ્ધ ' ઘાપ્ત્તા ' ધાનયિત્તા=હુઝગિન્ના સુબહુ ધનકનક સુસમા
 ચ દારિકા શુદ્ધિત્વા ' જાવ પડિગણ ' યાન્ પ્રતિમા: =પચ્ચમિશોરશતે: સાથે
 સિંહગુહા ચોરપલ્લી પ્રતિનિરૂત્ત ૩૨ત્યર્થ, ' ત ' તન્=તસ્માત્ કારણાત્ ૩૨ગમ્ય:
 સ્વલ્લ હે દેવાનુમિયા: ! ' સુસમા દારિયાણ સુસમા દારિયાયા ' શુદ્ધ ' પ્રત્યાન
 યને ' ગમિત્તણ ' ગન્તુમ્ । ' તુન્મેણ દેવાણુપ્પિયા । ' યુપ્પાક સ્વલ્લ હે દેવાનુ
 મિયા ! તત્=અપદ્ધત ત્રિપુલ ધનકનકમ્=હે દેવાનુમિયા: ! ચોરાઅપદ્ધત ધનકના
 દિક સર્વે યુપ્પાક ભવન્, મમ સુસમા દારિયા ભવતુ । તત્. સ્વલ્લ તે નગરગોપ્ત્રકા

સ્વલ્લ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાણ ચોરસેનાપર્ડ સીંહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ
 ૩૨ હવમાગમ્મ પચ્ચિં ચોરસર્ણિં સદ્ધિં મમ ગિહ ઘાપ્ત્તા, સુબહુ ધન
 કણગ સુસમા ચ દારિય ગહાય જાવ પડિગણ-ત ૩૨ચ્છામો ણ દેવાણુ
 પ્પિયા ! સુસમા દારિયાણ કૂવગમિત્તણ-તુન્મ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સે વિઝલે
 ધણકણગે મમ સુસમા દારિયા) હે દેવાનુમિયો સુનો ચોર સેનાપતિ
 ચિલાત ચોર ને સિંહગુહા નામ કી ચોરપલ્લી સે યહાં ઝીઘ આકર
 પાચસૌ ચોરોં કે સાથ મેરે ઘર પર ટાકા ઢાલા હૈ । ઉસમેં ઉસને બહુત
 સા ધન, કનક એવ સુસમા દારિકા કો લૂટા હૈ ઓર-લૂટકર વહ વહા
 વાપિસ અપને સ્થાન પર ચલા ગયા હૈ । અતઃ હે દેવાનુમિયોં ! મૈં ચાહતા
 હૈં કિ આપ લોગ ઉસ સુસમા દારિકા કો છેને કે લિયે જાવેં, મિલને પર
 વહ હન ધનકનક આદિ સવ આપકા રહે-ઓર સુસમા દારિકા મેરી

(એવ સ્વલ્લ દેવાણુપ્પિયા ! ચિલાણ ચોરસેનાર્ડ સીંહગુહાઓ ચોરપલ્લીઓ
 ૩૨ હવમાગમ્મ પચ્ચિં ચોરસર્ણિં સદ્ધિં મમ ગિહ ઘાપ્ત્તા, સુબહુ ધનકણગ સુસમા
 ચ દારિય ગહાય જાવ પડિગણ ત ૩૨ચ્છામો ણ દેવાણુપ્પિયા ! સુસમા દારિયાણ
 કૂવ ગમિત્તણ-તુન્મ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સે વિઝલે ધણકણગે મમ સુસમા દારિયા)

હે દેવાનુમિયો ! સાભળો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુહા નામની
 ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાચસૌ ચોરોની સાથે મારા ઘરમા ધાડ
 પાડી છે તેમા તેણે ઘણું ધન, કનક અને સુસમા દારિકાની લૂટ કરી છે
 લૂટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુમિયો !
 મારી ઈચ્છા છે કે તમે સુસમા દારિકાને પાછી લેવા માટે જાઓ અને તેને
 મેળવી લીધા બાદ તે અપદ્ધત કરાયેલું ધન કનક વગેરે બધું તમે રાખજો અને
 સુસમા દારિકાને મને સોંપી દેજો

नगरगोष्ठकाः=नगररक्षकाः=त विपुल धनकनक०=अननकादिक गृह्णन्ति,
गृहीत्वा, यत्रैव राजगृह नगर तत्रैव उपागच्छन्ति । ततः खलु स चिन्तातः ता
चोरसेना 'हयमहिय जाव' इतमथित यावत्=इतमथितप्रवरवीरघातितनिपतित
चिह्नवज्रपताकाम् यावद् दृष्ट्वा भीतस्त्रस्तः सुसुमा दारिका गृहीत्वा एका मन्तीम्
'अग्रामिय' अग्रामिकाम्=ग्रामरहिताम् 'दीहमद्र' दीर्घां=दीर्घमार्गाम्
'अडवि' अडवीम्-अनुप्रविष्टः । ततः खलु अन्य सत्यवाह. सुसुमा दारिका
चिलातेन 'अडवीमुह' अडवीमुखम्=अण्यमम्मुखम् 'अवहीरमाणि' अपहिय
माणाम्-नीयमाना 'पासित्ता' दृष्ट्वा पञ्चमि पुनै सार्द्धम् 'अप्पछट्टे' आत्म-
पाठ. 'सन्नद्धवद्ध०' सन्नद्धवद्धवर्मितकनकः चिन्तातस्य 'पदमग्गवीहि' पद

गेण्हति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छति । तण्ण से चि-
लाए त चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुसम
दारिय गहाय एग मह अग्रामिय दीहमद्र अडविं अणुप्पविट्ठे) उन नगर
रक्षको ने उस विपुल धन कनक आदिको ले लिया और लेकर राजगृह
नगर में वापिस आ गये । इस के बाद वह चिलात चोर अपनी उस
सेना को नगर रक्षकों द्वारा हत मथित प्रवल वीरवाली एव घातित
तथा निपतित चिह्न वज्र पताका वाली देखकर त्रस्त हो गया और
सुसुमादारिका को लेकर एक बड़ी भारी ग्रामरहित अडवी में छुस गया
(तण्ण धण्णे सत्यवाहे सुसम दारियं चिलाएण अडवीमुह अवहिरमा-
णि पासित्ता ण पचहि पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्टे सन्नद्धवद्ध चिलायस्स पद-
मग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जते हाक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे

(तण्ण ते णयर गुत्तिया त विपुल धनकनक गेण्हति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे
तेणेव उवागच्छति । तण्ण से चिलाए त चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय
जाव भीए तत्थे सुसम दारिय गहाय एग मह अग्रामिय दीहमद्र अडविं अणुप्पविट्ठे)

ते नगर रक्षकों ने ते पुञ्ज प्रमाणुमा पडेला धन, कनक वगैरेने लध
लीयु अने लधने राजगृह नगरमा पाछा आवी गया त्थारपछी ते चिलात
चोरे चोतानी ते चोरे सेनाने नगर रक्षकों पडे छत, मथित तेमन् घातित
अने निपतित चिह्नवज्र पताकाओंवाणी लधने त्रस्त भर्त गये अने सुसमा
दारिकाने लधने जेक लारे मोटी आभरहित अडवीमा पेशी गये।

(तण्ण धण्णे सत्यवाहे सुसम दारिय चिलाएण अडवीमुह अवहीरमाणि
पासित्ता ण पचहि पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्टे सन्नद्धवद्धचिलायस्स पदमग्गवीहिं
अणुगच्छमाणे अभिगज्जते हाक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभिहासे-

यत्रैव चिलातशोर', तर्जय उपागन्गति, उपागन्ग चिलातेन चोरसेनापतिना
 साथे 'सपङ्गा' सपङ्गाः=युद्धं कर्तुं मृत्ताश्चापि भ्रमन् । ततः खलु नगर
 गोष्ठकाः चिलात चोरसेनापति 'हयमथिय० जान' हतमथित यावत्=हतम
 थित प्रवररीरघातितनिपतितचिह्नपताका=हता=मारिता', मथिताः=निपतित
 मथिताः, प्रवररीरा=श्रेष्ठरीरा यस्यामी हतमथितप्रवररीर., घातितः=घातः
 शस्त्रादिप्रदारेण क्षतिः, म सजागोऽस्य घातितः क्षा इत्यर्थः, निपतितः=भूमौ
 पतितः चिह्नपताका यस्याऽसा, निपतितचिह्नपताकाः, एतेषां कर्म
 धारयः, तम्, यावत् प्रतिपेधयन्ति=निराग्यन्ति । ततः खलु ते 'पचचोरसया'
 पञ्चशतचोरा 'णगरगोत्तिष्टि' नगरगोष्ठकैः=नगररक्षकैः पुरुषैः 'हयमथिय
 जान पडिसेहिया' हतमथितयावत्प्रतिपेधिताः=प्रतिपेधिताः सन्तः तत् विपुल
 धनकनक=धनरत्नरुपणिमौक्तिकादिक 'विन्डूहेमागा' विन्डूहेयन्त=प्रक्षिपन्तः
 'विप्पकिरेमाणा य' विप्पकिरन्तश्च=उत्तस्ततो विस्फिरण कुर्वन्तः 'सन्वओ समता'
 सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिशु 'विप्पलाड्या' विष्ठापन्त=परायिताः ततः खलु ते

से बाहर निकले-और निकलकर जहाँ चोर सेनापति वह चिलात चोर
 था वहाँ गये-वहाँ पहुँचते ही उनका चोर सेनापति उस चिलात चोर
 के साथ युद्ध होना प्रारम्भ हो गया-उस युद्ध में उन्होंने ने उस चिलात
 के सैन्य को पहिले खून मारा-पीटा-याद में उन्हें बिलकुल नष्ट भ्रष्ट कर
 दिया । कितनेक चोरो को उन्होंने ने क्षत किया । उसकी चिह्न ध्वजपता
 काओं को जमीन पर डाल दिया । इस प्रकार उसे हरतरह परास्त कर
 दिया । जब वे पाचसौ चोर नगररक्षक पुरुषों द्वारा हर प्रकारसे हतमथित
 यावत् प्रतिपेधित हो चुके तब वे उस विपुल धनकनक मणिमौक्तिक
 आदिको छोड़कर तथा इधर उधर डालकर सर्व प्रकारसे चारों दिशाओंमें
 इधर उधर भाग गये । (तएव ते णगरगुत्तिया त विपुल धनकणग

चिलात चोर हतो त्या गया त्या जतानी साथे ज चोर सेनापति चिलातनी
 साथे तेमनु युद्ध शर थर गथु युद्धमा तेमणु पडिला तो चिलातनी सेना
 साथे प्रभ भार-पीट करी अने तयारपणी तेने नष्ट-भ्रष्ट करी नाणी कटलाक
 जोशने तो तेमणु क्षत (धवायेला) कथा तेमनी चिह्नभूत ध्वज पताकाओंने
 जमीनदोस्त करी नाणी आ प्रभाणु तेने गधी गीते डरावी दीधे । ज्यादे ते
 पांचसो जोशे नगर रक्षक पुरुषो वडे सर्व रीते हत, मथित यावत् प्रतिपेधित
 थर गया त्यादे तेओ ते पुष्कण धन, कनक, मणु, मोती वगैरेने त्या ज
 भूमीने आभतेम नाणीने त्यादे दिशाओमा आभतेम पलायन ।

पुरुषकारः=पौरुषम्, पराक्रमः=मामर्थ्यं, तद्रहितः सन् 'जाहे' यदा नो शक्नोति
सुसुमा दारिकां 'णिग्वाहित्त्वा' निर्वाहयितुं=बोद्धुम्, 'ताहे' तदा 'सते'
श्रान्तः=परिश्रम गतः, 'तते' तान्तः=ग्लानिं प्राप्तः, 'परितते' परितान्तः=
सर्वतोभावेन खिन्नतामुपगतः, 'नीलुप्पल०' नीलोत्पलः=नीलोत्पलगवलगुलि
कादि विशेषणविशिष्टमतितीक्ष्णम् 'असि' करवालं 'परामुसइ' परामृशति=
कोशान्निःसारयति, परामृश्य, सुसुमाया दारिकायाः 'उत्तमग' उत्तमाङ्ग=शिरः

अवीरिण अपुरिसकारपरक्रमे जाहे णो सचाण्ड सुसम दारिय णिग्वा
हित्त्वा, ताहे सते तते पणितते निलुप्पल० असि परामुसइ, परामुसित्ता
सुसमाए दारियाए उत्तमग छिदइ, छिदित्ता, त गहाय त अग्गामिय
अटवि अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे आग्गामियाए अडवीए
तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीह गुहं चोरपल्लि अस
पत्ते अतराचेव कालगए) जय चिलात चोर ने उस वन्यसार्थवाह को
पाचो पुत्रों के साथ आत्मपष्ठ होकर एव कवच आदि से सुसज्जित
होकर अपने पीछे २ आता हुआ देखा-तब वह देख कर आत्मबल
रहित हो गया। इस तरह सैन्य रहित, उत्साह रहित तथा पौरुष और
पराक्रम रहित बना हुआ वह जब सुसुमा दारिका को अपने पास रखने
के लिये शक्तिशाली नहीं हो सका तब उसने श्रान्त, तान्त-ग्लानि
युक्त और परितात सर्वतोभावेन खिन्नता को प्राप्त होकर नीलोत्पल,
गवलगुलिका, आदि विशेषणों वाली अपनी तलवार को उठाया-म्यान

परक्रमे जाहे णो सचाण्ड सुसम दारिय णिग्वाहित्त्वा, ताहे सते तते परितते
नीलुप्पल० असि परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमग छिदइ,
छिदित्ता, त गहाय त अग्गामिय अडवि अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे
आग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुह
चोरपल्लि असपत्ते अतरा चेव कालगए)

न्यारे चिलात चोरे ते धन्य सार्थवाहने पाचे पुत्रोनी साथे आत्मपष्ठ
थधने तेमज्ज कवच वज्जेथी सुसज्जित थधने पोतानी पाळण पाळण आवतो
जेथो त्यारे ते जेधने आत्मजग वगरनेो थर् गथो आ प्रभाणु सेना रहित
उत्साह रहित तेमज्ज पौरुष अने पराक्रम रहित थर् गथेवो ते न्यारे सुसमा
दारिकाने पोतानी पासे राखवामा पणु असमर्थ थर् गथो त्यारे तेणु श्रात,
तात, ग्लानि युक्त अने पणितत तेमज्ज मधी रीते खिन्नता प्राप्त करीने
नीलोत्पल, गवल गुलिका वगेरे विशेषणवाणी पोतानी तरवारने उपाडी अने
म्यानमाथी म्हार काढी अने म्हार काढीने सुसमा दारिकानु माथु कापी

मार्गविधि=पदमार्गप्रचारम्=गणचिह्नम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठो धावन्
 'अणुगच्छमाणे' अनुगर्जन्=मेघरगर्जना दृष्ट 'ह्यारेमाणे' 'हो' 'हुष्ट'
 तिष्ठ-तिष्ठ' इत्यादि, वाक्यैः प्रचारयन्=आचारयन् 'पृष्टारेमाणे' प्रस्कारयन्
 'तिष्ठ २, नोचेरस्य दनिप्यामीत्यादिवाक्यैः' तमाह्वयन् 'अमितज्जेमाणे' अमि
 तर्जन्='रे निर्लज्ज' इत्यादि वाक्यैस्तर्जनां कृत्वा, 'अमितासेमाणे' अमि
 त्रासयन्=भस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् 'पिट्टाओ' पृष्ठतः=चिलातचोरस्य
 पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=गच्छाद्भावति । तत्र गच्छति स चिलातः त घण्य सार्थवाह
 पञ्चभिः पुत्रैः सादृश्यं 'अप्पउट्ट' आत्माण्ड 'सन्नद्धवद्धवमितरुवच यावत्
 समनुगच्छत=गच्छाद्भावन्त पश्यति, दृष्ट्वा 'अत्थामे ४' अस्थामा=आत्मबल
 रहितः, अण्डः=सैन्यरहितः, अरीयं = उत्साहग्रहितः, अपरूपकारपराक्रम सन्

अमितासेमाणे पिट्टाओ अणुगच्छह) घण्यसार्थवाह ने जब सुसमा
 दारिका को चिलात चोर द्वारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई
 जब जाना-तब वह अपने पाचों पुत्रों के साथ आत्मपष्ट होकर कवच
 बाध उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ
 के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ हुष्ट ! ठहर ठहर इस प्रकार से
 कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा-नहीं तो मैं तुझे
 मार डालूंगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे बुलाता हुआ रे निर्लज्ज !
 इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तथा अस्त्र शस्त्र आदि के
 दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला ।

(तण्ण से चिलाए त घण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं
 अप्पउट्ट अन्नद्धवद्ध० समणुगच्छमाण पासह, पासित्ता अत्थामे अबले

माणे पिट्टाओ अणुगच्छह)

न्याये घण्य सार्थवाहे सुभभा दारिकाने चिलात चोर वडे अटवीभा
 हरण करीने लई जवायेली जाली, त्यारे ते चोताना पाये पुत्रोनी साथे आत्म
 पष्ठ थधने कवच बाधनि ते चिलात चोरनी पाछण तेना पद चिह्नोतु अणु
 सरण करतो मेघना जेवी ध्वनि उरने "अरे ओ हुष्ट ! जेबोरे, जेबोरे,"
 आ प्रभावे कहेतो "जेबोरे, जेबोरे, नडितर मरी गयेयो जसुणे" आ
 प्रभावे डाकल करतो, तेने गोलावतो 'अरे निर्लज्ज !' आभ तर्जित करतो
 तेभज शस्त्र अस्त्र वगेरेने गतावीने तेने त्रसित करतो याद्वे

(तण्ण से चिलाए त घण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पउट्ट सन्नद्ध
 वद्ध० समणुगच्छमाण पासह, पासित्ता अत्थामे अबले

પુરુષકાર:=પૌરુષમ્, પરાક્રમ:=મામલ્ય, તદ્વહિતઃ સન્ 'જાહે' યદા નો શક્નોતિ સુસુમા દારિકાં 'ણિન્વાહિત્તણ' નિર્વાહયિતુ=બોદુમ્, 'તાહે' તદા 'સતે' શ્રાન્તઃ=પરિશ્રમ ગતઃ, 'તતે' તાન્તઃ=ગ્લાનિ પ્રાપ્તઃ, 'પરિતતે' પરિતાન્તઃ=સર્વતોભાવેન સ્વિન્નતામુપગતઃ, 'નીલુપ્પલ૦' નીલોત્પલઃ=નીલોત્પલગવલગુલિકાદિ વિશેષણવિશિષ્ટમતિતીક્ષ્ણમ્ 'અસિં' કરવાલ 'પરામુસઙ્' પરામૃશતિ=કોશાન્નિઃસારયતિ. પરામૃશ્ય, સુસુમાયા દારિકાયાઃ 'ઉત્તમગ' ઉત્તમાન્ન=શિરઃ

અવીરિણ અપુરિસ્કારપરક્રમે જાહે ણો સચાણ્ઙ સુસમ દારિય ણિન્વાહિત્તણ, તાહે સતે તતે પગિતતે નિલુપ્પલ૦ અસિં પરામુસઙ્, પરામુસિત્તા સુસમાણ દારિયાણ ઉત્તમગ ઊદ્ઙ, ઊદિત્તા, ત ગઘાય ત અગ્ગામિય અહવિં અણુપવિઢે, તણ સે, ચિલાણ તીસે આગ્ગામિયાણ અહવીણ તણ્ઘાણ અભિભૂણ સમાણે પમ્હુદ્ધિસામાણ સીહુ ગુહં ચોરપલ્લિં અસ પત્તે અતરાચેવ કાલગણ) જન ચિલાત ચોર ને ડસ વન્યસાર્થવાહ કો પાચો પુત્રોં કે સાથ આત્મપથ્ઠ હોકર એવ કવચ આદિ સે સુસજ્જિત હોકર અપને પીઢે ૨ આતા હુઆ દેખા-તવ વહ દેવ કર આત્મચલ રહિત હો ગયા । ઇત્ત તરહ સૈન્ય રહિત, ઉત્સાહ રહિત તથા પૌરુષ ઔર પરાક્રમ રહિત ઘના હુઆ વહ જય સુસમા દારિકા કો અપને પાસ રચ્વને કે લિયે શક્તિશાલી નહી હો સકા તય ડમને શ્રાન્ત, તાન્ત-ગ્લાનિ યુક્ત ઔર પરિતાત સર્વતોભાવેન સ્વિન્નતા કો પ્રાપ્ત હોકર નીલોત્પલ, ગવલગુલિકા, આદિ વિશેષણો વાલી અપની તલવાર કો ડઠાયા-મ્યાન

પરવક્રમે જાહે ણો સચાણ્ઙ સુસમ દારિય ણિન્વાહિત્તણ, તાહે સતે તતે પરિતતે નીલુપ્પલ૦ અસિં પરામુસઙ્, પરામુસિત્તા સુસમાણ દારિયાણ ઉત્તમગ ઊદ્ઙ, ઊદિત્તા, ત ગઘાય ત અગ્ગામિય અહવિં અણુપવિઢે, તણ સે, ચિલાણ તીસે આગ્ગામિયાણ અહવીણ તણ્ઘાણ અભિભૂણ સમાણે પમ્હુદ્ધિસામાણ સીહુગુહ ચોરપલ્લિ અમપત્તે અતરા ચેવ કાલગણ)

ન્યારે ચિલાત ચોરે તે ધન્ય સાથવાહને પાચે પુત્રોની સાથે આત્મપથ યધને તેમજ કવચ વગેરેથી સુમન્નિજત યધને પોતાની પાછળ પાછળ આવતો ભેયો ત્યારે તે ભેધને આત્મભગ વગરને યડ ગયો આ પ્રમાણે સેના રહિત ઉત્સાહ રહિત તેમજ પૌરુષ અને પરાક્રમ રહિત યધ ગયેલો તે ન્યારે સુસમા દારિકાને પોતાની પાસે રાખવામા પણ અસમર્થ યધ ગયો ત્યારે તેણે શ્રાત, તાત, ગ્લાનિ યુક્ત અને પરિતાત તેમજ બધી રીતે ખિન્નતા પ્રાપ્ત કરીને નીલોત્પલ, ગવલ ગુલિકા વગેરે વિશેષણોવાળી પોતાની તરવારને ડપાડી અને મ્યાનમાથી બહાર કાઢી અને બહાર કાઢીને સુસમા દારિકાનુ માથુ કાપી

मार्गविधि=पदमार्गप्रचारम्=रणचिह्नम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठतो यावत्
 'अणुगज्जेमाणे' अनुगर्जन्=मेघपदगर्जनां कर्तुम् 'द्वारमाणे' 'द्वो' दुष्ट !
 तिष्ठ-तिष्ठ ' इत्यादि, वाक्यैः द्वारयन्=आश्रयन् 'पुगारेमाणे' पूष्कारयन्
 'तिष्ठ २, नोचेत्यादिनिष्पामीत्यादिवाक्यैः तमाह्वय 'अमितज्जेमाणे' अमि
 तर्जन्='रे निर्लज्ज' इत्यादि वाक्यैस्तर्जनां कर्तुम्, 'अमितासेमाणे' अमि
 त्रासयन्=अस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् 'पिट्ठाओ' पृष्ठतः=चिलातबोरस्य
 पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=यथाद्वावति । तत्र गच्छन् चिलातः त धन्य सार्थवाह
 पञ्चभि पुत्रै सादृश्यम् 'अप्पउट्ठ' आत्मपट्ट 'मन्नद्वयद्वर्मितकवच यावत्
 समनुगच्छन्त=यथाद्वावन्त पश्यति, इष्ट्वा 'अत्थामे ४' अस्थामा=आत्मबल
 रहितः, अरुः=सैन्यरहितः, अरीर्यः=उत्साहरहितः, पुरुषशरपराक्रम सन्

अमितासेमाणे पिट्ठाओ अणुगच्छइ) धन्यसार्थवाह ने जब सुसमा
 दारिका को चिलात चोर द्वारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई
 जब जाना-तब वह अपने पांचों पुत्रों के साथ आत्मपट्ट होकर कवच
 बाध उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ
 के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ दुष्ट ! ठहर ठहर इस प्रकार से
 कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा-नहीं तो मैं तुझे
 मार डालूंगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे बुलाता हुआ रे निर्लज्ज !
 इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तबो अस्त्र शस्त्र आदि के
 दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला ।

(तण्ण से चिलाए त धण्ण सत्यवाह पचहि पुत्तेहिं सद्धिं
 अप्पउट्ठ अन्नद्वयद्व० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबळे

माणे पिट्ठाओ अणुगच्छइ)

ज्यारे धन्य सार्थवाहे सुमभा दारिकाने चिलात चोर वडे अटवीमा
 डरवु करीने लई जवायेली नाली, त्थारे ते पोताना पाये पुत्रोनी साथे आत्म
 पट्ट थधने कवच बाधने ते चिलात चोरनी पाछण तेना प० चिह्नोनु अनु
 सरवु करतो मेघना जेवी ध्वनि करेनो "अरे ओ दुष्ट ! जिलोरे, जिलोरे,"
 आ प्रभावे डहेतो "जिलोरे, जिलोरे, नडितर मरी गयेयो नालुने" आ
 प्रभावे डंकल करतो, तेने बोलावतो 'अरे निर्लज्ज !' आभ तर्जित करतो
 तेभज शस्त्र अस्त्र वगेरेने बतावीने तेने त्रसित करतो थाल्यो

(तण्ण से चिलाए त धण्ण सत्यवाह पचहि पुत्तेहिं सद्धिं अप्पउट्ठ सन्नद्व
 वद० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबळे

ચલહેતુ=શરીરચલવર્જનાર્થમ્, 'ગીરિયહેડ' વીર્યહેતુમ્=આન્તરિક્ષશક્તિસમ્પાદનાર્થમ્, આહારમ્ આહારયતિ, સ ગ્લુ ડઢ લોકે એવ વહુના શ્રમણાના શ્રમણીના શ્રાવકાણા શ્રાવિકાણા ચ 'હીલણિજ્જે જાવ' હીલનીયો યાવત્, યાવત્પદેન, નિન્દનીય, વિસનીય ગર્હણીયો ભવેત્, પરલોકેડપિ દુઃખ પ્રાપ્નોતિ, યાવત્-ચાતુરન્તસસારકાન્તારમ્ 'અણુપરિયટ્ઠિમ્સડ્' અનુપર્યટ્ઠિપ્યતિ=અમિષ્યતિ, યથા સ ચિલાતસ્તસ્કરઃ-ચિલાતતસ્કરવદિતિ ભાવ ॥૫૦૭॥

મૂલમ્-તણ સેધણે સત્થવાહે પચહિં પુત્તેહિ સદ્ધિ અપ્પ-છટ્ટે ચિલાય પરિધાહેમાણેર તણહાણ લુહાણ ય સત્તે તત્તે પરિતંતે

જાણ ૪ હીલણિજ્જે ૩ જાવ અણુપરિયટ્ઠિસડ્ જહાવ સે ચિલાણ તકરે) અન પ્રમુદ્ધુ હસ ચિલાત કે દૃષ્ટાન્ત સે નિર્ગન્થ આદિકો કો સવોધિત કર પ્રતિવોધિત કરતે હે-હે આયુષ્મત શ્રમણો' હસી તરહ જો હમારા નિર્ગન્થ શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય ઉપાધ્યાય કે પાસ પ્રવ્રજિત્તે હોકર વાતાસ્રવવાળે યાવત્ વિવસન ધર્મવાળે હસ ઔદારિક શરીર મેં કાન્તિ વિશેષ પ્રાપ્તિ કે લિયે સૌન્દર્ય આદિરૂપ વિશેષ કે લિયે, ચલવ ધન કે લિયે તથા આન્તરિક્ષ શક્તિ વૃદ્ધિકે લિયે આહાર કો લેના હૈ-કરતા હૈ - વહ હસ લોક મેં અનેક શ્રમણ શ્રમણી, શ્રાવક તથા શ્રાવિકા જનોં દ્વારા હીલનીય યાવત્ નિદનીય, વિસનીય ગર્હણીય તો હોતા હી હૈ-પરન્તુ પર ભવમેં ખી વહ દુઃખો કોહી પાતા હૈ। યાવત્ એસા જીવ હસ ચતુર્ગતિરૂપ સસાર કાન્તાર મેં ચિલાત ચોર કી તરહ પ્રરિભ્રમણ હી કરતા રહના હૈ ॥ સૂત્ર ૭ ॥

ચેવ વહુણ સમણાણ ૪ હીલણિજ્જે ૨ જાવ અણુપરિયટ્ઠિમ્સડ્, જહાવ સે ચિલાણ તકરે)

હવે પ્રમુદ્ધુ તે ચિલાતના દૃષ્ટાન્તને સામે રાખીને નિર્ગન્થ વગેરેને મળો-ધિત કરીને આજ્ઞા કરે છે કે હે આયુષ્મત શ્રમણો! આ પ્રમાણે જે અમારા નિર્ગન્થ શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને વાતાસ્રવવાળા યાવત્ વિવસન ધર્મવાળા આ ઔદારિક શરીરમાં કાન્તિ વિશેષની પ્રાપ્તિ માટે, સૌન્દર્ય વગેરે રૂપ વિશેષના માટે, બળવર્ધન માટે તેમજ આંતરિક શક્તિને વધાવવા માટે આહાર ગ્રહણ કરે છે તે આ લોકમાં ઘણા શ્રમણ, શ્રમણી, શ્રાવક તેમજ શ્રાવિકાઓ વડે હીલનીય યાવત્ નિદનીય, વિસનીય અને ગર્હણીય તો હોય જ છે પણ સાથે સાથે તે પરલવમાં પણ દુઃખ જ મેળવે છે યાવત્ એવો જીવ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર કાન્તારમાં ચિલાત ચોરની જેમ ભટકતો જ રહે છે ॥ સૂત્ર ૭ ॥

लिनत्ति, त्रिरा, 'त' तत्=उत्तमाद् एहीया ताम् अप्रामिराम्=जनानामरि-
ताम् अटरीमनुपरिष्ट' = पयस करान । तनः गलु निगत तस्यामप्रामिकाया
मन्त्र्या 'तण्डाए' तृणाया=पिपासया अभिभूता सा 'विन्दुद्विगामाए' विस्-
तदिग्भागाः=पूर्वादिदिशाभिरेकविल. सत् सिंहगुहा चोरपट्टीम् 'अगपते' अस-
म्यासः 'अराचेय' अन्तरा एय=म प एय 'कालगाए' कागत=अमौ चोरो
मृत्यु प्राप्तवान् । अस्य अचरितं ग्रन्थातरादवसेयम्, शास्त्रेण-उपयोगि चरितं
तान्मात्र भगवतोपदिष्टम् ।

अथ चिलातष्टान्तेन मगवान निर्ग्रन्थादीन् सरोप्य प्रतिशोधयति — 'एवा
मेय' एयमेय=अनेन प्रकारेण 'समणाउसो' आयुन्तः व्रमणाः । 'जाव पव्व
इए समाणे' यावत् प्रव्रजितः सन्=योऽस्माक निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्यो
पाध्यायानां समीपे प्रव्रजितः सन् 'इमस्स' अस्य 'ओरालियसरीरस्स'
औदारिकसरीरस्य चान्तासवस्स यावद् विवसनपर्मस्य 'वणहेउ' वर्णहेतु =
कान्तिविशेषमाप्त्यर्थम्, यावत्- 'हृहेउ' हृहेतु=सौन्दर्यार्थम्, 'वज्जेउ'

से बाहर किया और उठाकर सुममा दारिका के मस्तक को काट डाला।
उस कटे हुए मस्तक को लेकर फिर निर्जन अटवी में प्रवेश कर गया।
उस अटवी में पिपासा से व्याकुल होकर वह पूर्वादि दिशाओं के
विवेक से रहित हो गया—इस तरह वह पुनः वहाँ से पीछे वापिस
अपनी सिंहगुहा नामकी चोर पट्टी में नहीं आ सका—और बीच ही में
फाल कवलित बन गया। इनका अवशिष्ट चरित्र अध्यान्तर से जान
लेना चाहिये। यहाँ तो भगवान् ने जितना चरित्र इसका उपयोगी
जाना वतनाही उपदिष्ट किया है।—(एवामेव समणाउसो ! जाव पव्व
इए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वतासवस्स जाव विद्वसण
धम्मस्स वणहेउ जाव आहार आहारेइसे ण इहलोए जेव बहण सम

नाय्यु ते कपाज्जेवा माथाने लधने ते निज्जन—सय कर अटवीमा चेसी गये।
अटवीमा ते तरयथी व्याकुल थधने पूर्वं वगेरे दिशाओना विवेकथी रहित
थध गये अने आ प्रमाणे ते इनी त्याथी ते पातानी सिंहगुहा नामकी चोर
पट्टीमा डोछ पछु छिपने पाछा आवी शय्यो नहि अने वज्जे न मृत्यु पाग्यो
तेनु पाडीनु चरित्र जीव अथमाथी नाछी तेनु जेधज्जे, अही तो लगवाने
जेठलु चरित्र तेनु उपयुक्त नाय्यु तेठलु उछु छे

(एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स
वतासवस्स जान विद्वसणधम्मस्स वणहेउ जाव आहार

तुम्हे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणिय
च आहारेइ, आहारित्ता, तेण आहारेणं अविद्धत्था समाणा
तओ पच्छा इम अग्गामिय अडवि णित्थरिहिह, रायगिह च
संपावेहिह, मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य
धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह । तएण से जेट्ठपुत्ते
धण्णेणं सत्थवाहेण एवं पुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाहं वयासी—
तुब्भे ण ताओ ! अम्हे पिया गुरुजण य देवभूया ठावगा पइ-
ट्ठावगा सरक्खगा सगोवगा तं कहणं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवि-
याओ ववरोवेमो, तुब्भे णं मस च सोणिय च आहारेमो ? त
तुब्भे ण तातो ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणिय च
आहारेह, अग्गामिय अडवि णित्थरह, त चेव सव्व भणइ जाव
अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह । तएण धण्ण सत्थ-
वाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी—मा णं ताओ ! अम्हे जेट्ठ भायर
गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे ण ताओ ! मम जीवि-
याओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह । एव पचमेपुत्ते तएण
से धण्णे सत्थवाहे पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता, त पच
पुत्ते एव वयासी—मा ण अम्हे पुत्ता ! एगमविजीवियाओ वव-
रोवेमो, एसण सुसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जाव विप्प-
जडे, त सेयं खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए मस च
सोणिय च आहारेत्तए । तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्ध,
त्थासमाणा रायगिह सपाउणिस्सामो । तएण त पंच पुत्ता

नो संचाएइ चिलाय चोरसेणावडं साहरिय गिणिहत्तण । से ण
तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा दारिया
चिलाएण जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवाग-
च्छित्ता, सुसुमं दारिय चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ,
पासित्ता परसुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्तिधरणियलसि निव-
डइ । तएण से धण्णे सत्थवाहे पंचहि पुत्तेहि सडिं अप्पछट्टे
आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलवमाणे महयार सदेणं कुहूर
सुपरुत्ते सुचिर काल वाहमोक्ख करेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे
पंचहि पुत्तेहिं सडिं अप्पछट्टे चिलायंतीसे अग्गामियाए अडवीए
सव्वओ समंता परिधाडेमाणे तण्हाए लुहाए य परिभूए समाणे
तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गण-
गवेसण करेइ, करित्ता सते तते परितते, णिव्विन्ने, तीसे अग्गा-
मियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणे नो चेव णं
उदग आसादेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्टे उदग
अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा जीवियाओ ववरोविया तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेठ पुत्त धणदत्त सदावेइ, सदावित्ता
एव वयासी-एव खलु पुत्ता । अम्हे सुसुमाए दारियाए अट्ठाए
चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए लुहाए
य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स
मग्गणगवेसण करेमाणा णो चेव ण उदगं आसादेमो, तएणं
उदग, अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपाणि तएण

तुम्हे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मसं च सोणियं
च आहारेइ, आहारित्ता, तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा
तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडवि णित्थरिहिह, रायगिह च
संपावेहिह, मित्तणाड० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य
धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह । तएण से जेट्ठपुत्ते
धण्णेणं सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाहं वयासी—
तुव्भे ण ताओ । अम्हे पिया गुरुजण य देवभूया ठावगा पइ-
ट्ठावगा सरक्खगा सगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ । तुव्भे जीवि-
याओ ववरोवेमो, तुव्भे ण मसं च सोणियं च आहारेमो ? त
तुव्भे णं तातो । मम जीवियाओ ववरोवेह, मसं च सोणियं च
आहारेह, अग्गामिय अडवि णित्थरह, त चेव सव्व भणइ जाव
अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह । तएण धण्ण सत्थ-
वाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी—मा णं ताओ । अम्हे जेट्ठ भायर
गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुव्भे णं ताओ । मम जीवि-
याओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह । एव पचमेपुत्ते तएण
से धण्णे सत्थवाहे पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता, त पच
पुत्ते एव वयासी—मा ण अम्हे पुत्ता । एगमाविजीवियाओ वव-
रोवेमो, एसण सुसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जाव विप्प-
जडे, त सेय खलु पुत्ता । अम्हे सुसुमाए दारियाए मस च
सोणियं च आहारेत्तए । तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्ध,
त्थासमाणा रायगिह सपाउणिस्सामो । तएण त पंच पुत्ता

धण्णेणं सत्थवाहेणं एव वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति ।
 तएणं धण्णे सत्थवाहे पंचहिंपुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता,
 सरगं च करेइ, करित्ता, सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गि-
 पाडेइ, पाडित्ता, अग्गिं संधुस्खेइ, सवुम्भित्ता दारुयाइ परि-
 क्खेवेइ, परिवखेवित्ता, अग्गिपज्जालेइ, पज्जालित्ता, सुंमुमाए
 दारियाए मंस च सोणियं च आहारेंति । ते णं आहारेण अवि-
 छत्था समाणा रायगिहं नयर संपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणा-
 गया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जाया
 यावि होत्था । तएण से धण्णे सत्थवाहे सुंमुमाए दारियाए
 वहुइ लोइयाइ जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ सू०८ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स धन्य’ सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रै
 सह आत्मपटुः चिलात ‘परिधाडेमाणे २’ परिधावन् २=चिलात ग्रहीतुकामस्त
 स्पृष्टतोऽनुधावन् ‘तण्हाए छुहाए य’ तृणया क्षुधया च ‘सते’ शान्त,=मनसा
 विन्नः, ‘तते’ तान्त=शरीरेण कृत’, ‘परितते’ परितान्तः=मनसा शरीरेण च

—तएण से धण्णे सत्थवाहे । इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से
 धण्णे सत्थवाहे) पांचो पुत्रों के साथ उठा बना हुआ वह धन्यसार्थवाह
 (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलातचोर को पकड़ ने की इच्छा से उस
 के पीछे २ बार बार दौड़ता हुआ, (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते
 नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थिं गिण्हत्तए) पिपासा और

‘तएण से धण्णे सत्थवाहे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्पारपछी (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे
 सत्थवाहे) पांचे पुत्रोनी साथे छट्ठे ते धन्य सार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २)
 चिलात चोरनी पाछण पाछण तेने पडडी पाडवा भाटे बार बार होइता होइता
 (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थिं
 गिण्हत्तए) तस्स अने भूषथी आत थई गथे, भिन्न गनी गथे। थई

खिन्नः, 'नो सचाण्ड' नो शक्नोति चिलात चोरसेनापति 'साहसि' स्वह स्तेन ग्रहीतुम् । तदा स खलु 'तओ' तत = चिलातग्रहणव्यापारात्, 'पडि-नियत्तइ' प्रति निवर्तते, प्रतिनिवृत्त्य, यत्रैव सा सुसुमा दारिका चिलातेन जीविताद् 'वरोनिया' व्यपरोपिता = पृथक्कृता = मारिता सती पतिता आसीत् तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुसुमा दारिका चिलातेन जीविताद् व्यपरोपिता पश्यति, दृष्ट्वा 'परमुनियत्तेव' परशुनिकृत् इव = परशुच्छिन्नो यथा चम्पकवरपादपस्तद्वत्

ध्रुवा से आन्त हो गया-खिन्न बन गया, तान्त हो गया-शरीर से सुरक्षा गया-परितान्त हो गया-इकदम उत्साह रहित बन गया-सो वह उसे अपने हाथ से पकड़ने के लिये शक्तिशाली नहीं हो सका-(सेण तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा दारिया चिलाएण जीवियाओ वरोविया-तेणेव उवागच्छइ) अतः-वह वहा से लौट आया-और लौटकर वहा गया जहा वह अपनी पुत्री सुसुमा चिलातचोर के द्वारा-जीवन से रहित की गई पड़ी थी। (उवागच्छित्ता सुसुमा दारिय चिलाएण जीवियाओ वरोविय पासइ, पासित्ता परमुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि निवडइ-तएण से धण्णे सत्थवाहे पवहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पउट्ठे आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलवमाणे मइया २ सदेण कुहू २ सुपरुन्ने सुचिर कालवाहमोक्ख करेइ) वहा जाकर उसने सुसुमा दारिका को चिलातचोर के द्वारा जीवन से रहित की गई देखा। देखते ही वह पुत्रों सहित परशु से काटे गये उत्तम

गयो-शरीर तेनु बिभडाई अयु परितात थई गयो-साव निइत्साडी णनी गयो अेवी डालतभा ते पोताना हाथथी तेने पडडी पाउवाभा मभर्थ थइ शउथो नडि (से ण तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा दारिया चिलाएण जीवियाओ वरोविया तेणेव उवागच्छइ) तेथी ते त्याथी पाछा इरी गयो अने पाछे इरीने ते न्या बिळात थोर वडे डुछायेली पोतानी पुत्री सुसुमा दारिका पडी डुती त्या गयो

(उवागच्छित्ता सुसुमा दारिय चिलाएण जीवियाओ वरोविय पासइ पासित्ता परमुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि निवडइ-तएण से धण्णे सत्थवाहे पवहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पउट्ठे आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलवमाणे मइया २ सदेण कुहू २ सुपरुन्ने सुचिर काल वाहमोक्ख करेइ)

त्या अने तेछे सुसुमा दारिकाने बिळात थोर वडे डुछायेली जेध जेतानी साथे न ते पुत्रानी साथे परशु वडे कपायेला उत्तम थ पड वृक्षनी

धण्णेणं सत्थवाहेण एत्तं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेति ।
 तएणं धण्णे सत्थवाहे पचहिंपुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता,
 सरणं च करेइ, करित्ता, सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गि-
 पाडेइ, पाडित्ता, अग्गि संधुस्सेइ, संधुमिस्सत्ता दारुयाइ परि-
 क्खेवेइ, परिवस्सेवित्ता, अग्गिपज्जालेइ, पज्जालित्ता, सुंसुमाए
 दारियाए मंस च सोणियं च आहारेंति । ते णं आहारेण अवि-
 छत्था समाणा रायगिह नयरं सपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणा-
 गया तस्स य विउलस्स धणक्कणगरयण जाव आभागी जाया
 यावि होत्था । तएण से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए
 वहुइ लोइयाइ जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ सू०८ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः
 सह आत्मपटुः चिलात ‘परिधाडेमाणे २’ परिधातुन् २=चिलात ग्रहीतुकामस्त
 स्पृष्टतोऽनुधावन् ‘तण्हाए छुहाए य’ तण्णया भुधया च ‘सते’ श्रान्तः,=मनसा
 खिन्नः, ‘तते’ तान्तः=शरीरेण क्लान्तः, ‘परितते’ परितान्तः=मनसा शरीरेण च

—तएण से धण्णे सत्थवाहे । इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से
 धण्णे सत्थवाहे) पांचो पुत्रों के साथ जुटा बना हुआ वह धन्यसार्थवाह
 (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलातचोर को पकड़ने की इच्छा से उस
 के पीछे २ बार बार दौड़ता हुआ, (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते
 नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थिं गिण्हत्तए) पिपासा और

‘तएण से धण्णे सत्थवाहे’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपणी (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे
 सत्थवाहे) पांचे पुत्रोनी साथे छट्ठे ते धन्य सार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २)
 चिलात चोरनी पाछण पाछण तेने पकडी पाडवा भाटे बारबार होइता होइता
 (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थिं
 गिण्हत्तए) तस्स अने भूयथी श्रात थई अथो, भिन्न अनी ॥ २५४

માણે ' પરિધાવન્ તૃષ્ણયા ક્ષુધયા ચ ' પરિભૂષ ' પરિશૂતઃ સન્ તસ્યામગ્રામિ
 કાયામટવ્યા સર્વતઃ સમન્તાત્=વતુર્દિશુ ' ઉદગસ્સ ' ઉદકસ્ય=જલસ્ય ' મગ્ગ-
 ગવેસણ ' માર્ગગવેપણમ્=અન્વેષણ કરોતિ, કૃત્વા શ્રાન્તઃ, તાન્ત , પરિતાન્ત
 ' ણિવિન્ને ' નિર્વિણ્ણ=ઔદાસીન્ય પ્રાપ્તઃ । તસ્યામગ્રામિકાયામટવ્યામુદકસ્ય
 માર્ગગવેપણ કુરેન્ નો ચૈવ खलु उदकम् ' આસાદેઝ ' આસાદયતિ=પ્રાપ્નોતિ ।
 તતઃ खलु स धन्यः सार्धं वाह आत्मपष्ठ उदकमनासादयन् पानीयमप्राप्नुवन्
 यत्रैव सुसुमा जीविताद् व्यपरोपिता मारिता सती पतिताऽऽसीत् तत्रैव उपाग
 च्छति, उपागत्य ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवदत्-एव खलु
 में चारो दिशाओ में जल की मार्गणा और गवेपणा करने लगा (करिन्ता
 सते तते परितते णिविन्ने तीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मगग
 गवेसण करेमाणे णो चेव ण उदग आसाएइ) मार्गणा गवेपणा करके
 वह श्रान्त, मन से खिन्न, तान्तशरीर से खिन्न और परितान्त-बन
 गया शरीर एव मन इन दोनों से खिन्न हो गया इस तरह उस अग्रा-
 मवाली अटवी में उदकपानी की मार्गणा और गवेपणा करते हुए भी
 उसे जल नहीं मिला (तएण से धण्णे सत्थवाहे अप्पच्छे उदग अणा-
 साणमाणे जेणेव सुसुमा दारिया जीवियाओ ववरोविचा-तेणेव उवाग-
 च्छइ) तथ आत्मपष्ठ बना हुआ वह धन्यसार्धवाह उदक प्राप्त नहीं
 करता हुआ जहाँ सुसुमादारिका का शव पड़ा हुआ-या वहा आया
 -(उवागच्छित्ता जेट्ठ पुत्त धणदत्त सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

અને ક્ષુધા (તરસ અને ભૂખ) થી પીડાઈને તે ગામ વગરની અટવીમા
 ચોમેર પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા કરવા લાગ્યો.

(કરિન્તા સતે તતે પરિતતે ણિવિન્ને તીસે અગામિયાએ અડવીએ ઉદગસ્મ
 મગગગવેસણ કરેમાણે ણો ચૈવ ણ ઉદગ આસાએઈ)

માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને તે શ્રાન્ત, મનથી ખિન્ન, તાત શરીરથી
 ખિન્ન અને પરિતાત બની ગયો. શરીર તેમજ મન આ બનેથી તે ખિન્ન થઈ
 ગયો. આ પ્રમાણે તે ગામ વગરની અટવીમા ઉદક-પાણી-ની માર્ગણા ગવે
 પણા કરતા તેને પાણી મળ્યું નહિ.

(તણે સે ધણે સત્થવાહે અપ્પછે ઉદગ અણાસાણેમાણે જેણે સુસુમા
 દારિયા જીવિયાઓ વવરોવિયા તેણે ઉવાગચ્છઈ)

ત્યારે આત્મપષ્ઠ બનેલો તે ધન્ય સાર્ધવાહ પાણી ન મેળવતા ન્યા
 સુસુમા દારિકાનું મડદું પડ્યું હતું ત્યા આગ્યો (ઉવાગચ્છિત્તા જેટ્ટ પુત્ત ધન
 દત્ત સરાવેઈ સદ્દાવિત્તા એવ વયાસી) ત્યા આવીને તેણે પોતાના મોટા પુત્ર
 ધનદત્તને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

सपुत्रो धन्यः सार्थवादः ' धनसि ' धन ' इति शब्दपूर्वक धरणीतले निस्तति । ततः खलु स धन्यः सार्थवादः आत्मपष्ट ' आत्मस्य ' आश्वस्त=उच्छ्वास इत्यत्र सचेष्टः सन् ' रुक्माणे ' रुक्मन् = अयत्कण्ड कृत् ' कंमाणे ' कन्दन् उच्चस्तरेण, पुनः ' विलयमाणे ' विन्यन्=विलाप इत्यत्र ' महया महया सदेण ' महतामहता शब्देन=अत्युच्चैः शब्देन ' कुह २ सुपरुक्ने ' कुह २ सुपरुक्न-कुह कुह इति शब्दगुच्छार्थात्यर्थ रुदितः सा सुगिरिपाल=गुहाउपर्यन्त ' वाहमोक्त ' वाष्पमोक्षम्=अश्रुमोचन करोति । ततः खलु स धन्यः सार्थवादः पञ्चभिः पुत्रैः सह आत्मपष्टः चिलात तस्यामग्रामिशायाम् अटव्या सर्वत समन्तात् ' परिधाटे

चपक वृक्ष के समान " धन " इस शब्द पूर्वक भूमिपर गिर पड़ा । बाद में पांच अपने पुत्रों के साथ आत्मपष्ट बना हुआ वह धन्यसार्थवाह आश्वस्त, उच्छ्वास छोड़ता हुआ सचेष्ट-हो गया सो अव्यक्त शब्द करता हुआ खूब जोर २ से रोने लगा, विलाप करने लगा । एव बहुत ऊँचे २ शब्दों से कुह कुह करता हुआ-हाय सासे लेता हुआ-बहुत देरतक रोता रहा-अश्रुमोचन पूर्वक आक्रंदन करता रहा-(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पउट्ठे चिलाय तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता परिधाटेमाणे तण्हाण छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गणगवेसण करेइ) इसके बाद पांचों पुत्रों के साथ आत्मपष्ट बना हुआ वह धन्यसार्थवाह उस अग्रामवाली अटवी में चिलातचोर के पीछे पीछे बार २ दौड़ता हुआ तृषा और क्षुधा से पीड़ित होकर उस अग्रामवाली अटवी

जेम " धन " शब्दनी साथे जमीन छपर पड़ी गयो । तयारपछी पाये पुत्रो तेमज छठो ते धन्यसार्थवाह आश्वस्त-उच्छ्वास छोडतो-निसासा नाभतो सचेष्ट थरि गयो अने अव्यक्त शब्द करतो धूसके धूसके भूब जेरथी रडवा लाग्यो, विलाप करवा लाग्यो अने णहु भोटा साहे ' कुह कुह ' करतो ढाय ढाय करीने श्वासो लेने। धरणीवार सुधी रडने रह्यो तेमज आसू पाडतो आकड़ करतो रह्यो

(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पउट्ठे चिलाय तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता परिधाटेमाणे तण्हाण छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गणगवेसण करेइ)

तयारभाह पाये पुत्रोनी साथे छठो ते धन्यसार्थवाह ते गाम वगरनी निज्ज अटवीमा चिलात चोरनी पाछण पाछण बारबार ... ने तृषा

मदर्वी ' णित्थरिहिह ' निस्तरिण्यथ=पारङ्गमिष्यथ, राजगृह च ' सपावेहिह ' समाप्स्यथ ' मित्तणाई० य ' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् ' अभिसमागच्छिहिह ' अभिसमागमिष्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभिः सह सगता भविष्यथ, तथा च ' अत्थस्म ' अर्थस्य=धनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च ' आभागी ' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ । ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव मुक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्यं सार्थवाहमेव भवदत्-हे तात ! यूय खलु अस्माकं पिता ' गुरुजणदेवयभूया ' गुरुजन-देवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः ' ठावका ' स्थापकाः नीतिधर्मादौ ' पइट्ठावका ' प्रतिष्ठापका = राजादिसमक्ष स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा ' संरक्खणा '

रिहिय रायगिह च सपावेहिह) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम मुझे मारडालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से बचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे-एव राजगृह नगर पहुँच जाओगे । (मित्तणाई० य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते) वहा पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सबन्धी परिजनो के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे-इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने (धण्णेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी) धन्यसार्थवाह के द्वारा इस प्रकार रुहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा (तुम्हे ण ताओ ! अम्ह पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा

अडविं णित्थरिहिह रायगिह च सपावेहिह)

अथी हे देवानुप्रिय ! तमे मने भारी नाचो अने भारा मांस अने रक्तने आवो, पीवो आधा पीधा पछी तमे शरीरना विनाशथी गगरी जशो अने तृप्ति भेजनीने आ गामवगरनी अटवीने पार करी जशो अने छेपटे राजगृह नगरमा पहुँचथी जशो ।

(मित्तणाई य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते)

त्या पहुँचनीने तमे पो । ना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सबन्धी परिजनोनी साथे भजशो तेमज धन, धर्म अने पुण्योनी उपभोग करशो त्यारपछी मोटा पुत्र धनदत्ते

(धण्णेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी

धन्य सार्थवाह वडे आ प्रभाण्णे कडेवाया आह पोताना पिता धन्य सार्थवाहने आ प्रभाण्णे कछु के—

हे पुत्राः ! यय तुमुमाया दारिकायाः ' मट्टाण ' अर्थात्=निमित्तं विज्ञानं तत्करं
 मति ' सव्यओ समता ' सर्वाः गमन्तान्=मट्टाणां चतुर्दिक्षु ' परिधाडेमाणा '
 परिधायन्तः ' तण्हाण ' तण्णया=पिपामया, ' गुहाण ' श्रुभया च अभिभूतो
 सन्तः अस्यामग्रामिकायामट्ट्यामुदगम्य मार्गणगवेण कुर्यान्तो नो चैव खलु
 उदगमासादयाम', तत खलु उदगम् अनोमादयन्तः=असममानाः नो शक्नुमो
 राजगृहं समाप्तुम्, ' तण्ण ' तत्त्वत्=नस्मात् कारणात् खलु गृय मा हे देवानु
 प्रियाः ! जीविताय व्यपरोपयत, मास च सोणित च ' आहारैह ' आहारयत,
 आहार्य=भुक्त्वा, ' तेण आहारेण ' तेन आहारेण ' अविद्वत्था ' अविद्वत्ताः=
 शरीरनाशममाप्ता' सन्तः तस्मा सन्तः ' तओपच्छा ' तत पश्चात् इमामग्रामिका

वहा आकर के उसने अपने जेष्ठ पुत्र धनदत्त को बुलाया-और बुलाकर
 उससे इस प्रकार कहा-(एव खलु पुत्ता ! अम्हे सुसमाण दारियाए
 अट्टाए चिलाय तक्कर सव्यओ समता परिधाडेमाणा तण्हाण छुहाए य
 अभिभूया समाणा इमी से अग्रामियाए अट्टीए उदगस्स मगण
 गवेसण करेमाणा णो चैव ण उदग आसाएमो-तण्ण उदग अणासा
 एमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्ताण) हे पुत्र सुनो अपने लोग
 सुसमा दारिका के निमित्त चिलातचोर के पीछे २ सब तरफ सब प्रकार
 से दौड़ते २ प्यास और भूख से दुःखी हो गये हैं हमने इस अग्राम
 वाली अट्टी में पानी की मार्गणा और गवेयणा भी की-परन्तु वह मिला
 नहीं अतः पानी की प्राप्ति के अभाव में अब राजगृह नगर में पहुँचने
 के लिये हम असमर्थ धन चुके हैं । (तएण तुम्हे मम देवाणुप्पिया !
 जीवियाओ ववरोवेह मस च सोणिय च आहारैह, आहारित्ता तेण
 आहारेण अविद्वत्था समाणा तओ पच्छा इम अग्रामिय अट्टिं गित्थ

(एव खलु पुत्ता ! अम्हे सुसमाण दारियाए अट्टाए चिलाय तक्कर सव्यओ
 समता परिधाडेमाणा तण्हाण छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्रामियाए
 अट्टीए उदगस्स मगणगवेसण करेमाणा णो चैव ण उदग आसाएमो-तएण
 उदग अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्ताण)

हे पुत्र ! साधन, अमे सुसमा दारिकाने भेजववा भाटे चिलात चोरनी
 पाछण पाछण आभतेम आरे तरई लटकता लटकना तरस अने लूभथी डूभी
 थई गया छीअे अमेअे आ गाभ वगरनी अट्टीमा पाछीनी भागँछु अने
 गवेयणु पर करी छे, पण अमे डल्ल भेजनी शक्या नथी ओथी डवे पाछीनी
 अभावमा अमे राजगृह नगरमा पडोथी शक्यु तेम लागतुं नथी

(तएण तुम्हे मम देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च
 आहारैह, आहारित्ता तेण आहारेण अविद्वत्था समाणा तओ अग्रामियं

मटत्री ' गित्थरिहिह ' निस्तरिण्यथ=पारङ्गमिण्यथ, राजगृह च ' सपाविहिह ' समाप्स्यथ ' मित्तणाई० य ' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान ' अभिसमागच्छिहिह ' अभिसमागमिण्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभिः सह सगता भविष्यथ, तथा च ' अत्थस्म ' अर्थस्य=जनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च ' आभागी ' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ । ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव युक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्य सार्थवाहमेव भवदत्-हे तात ! यूय खलु अस्माक पिता ' गुरुजनदेवभूया ' गुरुजन-देवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः ' ठावका ' स्थापकाः नीतिधर्मादौ ' पइट्ठा-वका ' प्रतिष्ठापका = राजादिसमस्त स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा ' सरक्खगा '

रिहिय रायगिह च सपावेहिह) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम मुझे मारडालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से उचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे-एव राजगृह नगर पहुँच जाओगे । (मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेठे पुत्ते) वहा पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सयन्धी परिजनो के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे-इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने (धण्णेण सत्यवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्यवाह एव वयासी) धन्यसार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा (तुम्हे ण ताओ ! अहं पिता गुरुजनयदेवभूया ठावगा

अडविं गित्थरिहिह रायगिह च सपावेहिह)

अथी हे देवानुप्रिय । तमे भने भारी नाणे भने भारा भास भने रक्तने आवे, पीवे आधा-पीधा पछी तमे शरीरना विनाशथी जोगरी जथे भने तृप्ति भेजवीने आ गामवगरनी अटवीने पार करी जथे भने छेवटे राजगृह नगरमा पछेथी जथे ।

(मित्तणाइ य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेठे पुत्ते)

त्या पछेथीने तमे पो ना मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सयन्धी परिजनोनी साथे भजथे तेमज धन, धर्म भने पुण्योनी उपभोग करथे त्यारपछी मोटा पुत्र धनदत्ते

(धण्णेण सत्यवाहेण एवे वुत्ते समाणे धण्ण सत्यवाह एव वयासी

धन्य सार्थवाह वडे आ प्रभाण्णे कडेवाया आह पोताना पिता धन्य सार्थवाहने आ प्रभाण्णे कछु के—

હે પુત્રા: ! વય મુંતુમાયા દારિયાયા: 'મટ્ટાણ' અર્થાત્=નિમિત્ત ત્રિકાત તન્મર
પ્રતિ 'સન્નમો સમતા' મર્તા: મમન્તાન્=મટ્ટયા ચતુર્દિષુ 'પરિધાદેમાણા'
પરિધારન્ત: 'તળ્લાણ' તળ્લાયા=પિપાગયા, 'મુટ્ટાણ' ત્રયા ચ અભિભૂતા
સન્ત: અસ્યામગ્રામિયામામટ્ટ્યામુદગમ્ય માર્ગણગવેષણ કુર્ન્તાં નો ચેવ સલુ
ઉદગમાસાદયામ', તત સલુ ઉદગમ્ અનોસાદયન્ત'=મમ્મમાના: નો અવનુમો
રાજગૃહ સમાપ્તુમ્, 'તળ્ણ' તન્મલ્લ=નરમાન્ ધારણાત્ સલુ ગ્રૂય મા હે દેવાતુ
પ્રિયા: ! જીરિતાદ્ વ્યપરોપયત, મામ ચ સોણિત ચ 'આહારેહ' આહારયત,
આહાર્ય=ધુરત્યા 'તેણ આહારેણ' તેન આહારેણ 'અવિદ્વત્યા' અવિધ્વસ્તા:=
શરીરનાશમમાસા' સન્ત: ત્ત્મા સન્ત: 'તમોપન્છા' તત પશ્રાત્ શમામગ્રામિકા

વહા આકર કે ઉસને અપને જેષ્ટ પુત્ર ધનદક્ષા કો બુલાયા-ઔર બુલાકર
ઉસસે હસ પ્રકાર કલા-(એવ સલુ પુત્તા ! અમ્હે સુસમાણ દારિયાણ
અઢાણ ચિલાય તત્કર સન્નમો સમતા પરિધાદેમાણા તળ્લાણ છુહાણ ય
અભિભૂયા સમાણા હમી સે અગ્ગામિયાણ અઢવીણ ઉદગસ્સ મગ્ગણ
ગવેસણ કરેમાણા જો ચેવ જ ઉદગ આસાણમો-તળ્ણ ઉદગ અણાસા
ણમાણા જો સચાણમો રાયગિહ સપાવિત્ણ) હે પુત્ર સુનો અપને લોગ
સુસમા દારિકા કે નિમિત્ત ચિલાતચોર કે પીઠે ૨ સઘ તરફ સઘ પ્રકાર
સે દોઢતે ૨ પ્યાસ ઔર ભૂગ્વ સે ડુગ્ગી હો ગયે હૈં હમને હસ અગ્રામ
વાલી અઢવી મેં પાની કી માર્ગણા ઔર ગવેષણા મી કી-પરન્તુ વહ મિલા
નહીં અતઃ પાની કી પ્રાપ્તિ કે અભાવ મેં અય રાજગૃહ નગર મેં પહુંચને
કે લિયે હમ અસમર્થ ઘન ચુકે હૈં. (તળ્ણ તુમ્હે મમ દેવાણુપ્પિયા!
જીવિયાઓ વવરોવેહ મસ ચ સોણિય ચ આહારેહ, આહારિત્તા તેણ
આહારેણ અવિદ્વત્યા સમાણા તઓ પન્છા હમ અગ્ગામિય અઢવિ ગિત્થ

(એવ સલુ પુત્તા ! અમ્હે સુસમાણ દારિયાણ અઢાણ ચિલાય તત્કર સન્નમો
સમતા પરિધાદેમાણા તળ્લાણ છુહાણ ય અભિભૂયા સમાણા હમીસે અગ્ગામિયાણ
અઢવીણ ઉદગસ્સ મગ્ગણગવેસણ કરેમાણા જો ચેવ જ ઉદગ આસાણ મો-તળ્ણ
ઉદગ અણાસાણમાણા જો સચાણમો રાયગિહ સપાવિત્ણ)

હે પુત્ર ! સાલજ, અમે સુસમા દારિકાને મેળવવા માટે ચિલાત ચોરની
પાછળ પાછળ આમતેમ ચારે તરફ ભટકતા ભટકતા તરસ અને ભૂખથી ડૂબી
થઈ ગયા છીએ. અમેએ આ ગામ વગરની અઢવીમા પાણીની માર્ગણા અને
ગવેષણા પર કરી છે, પણ અમે હજી મેળવી શક્યા નથી એથી હવે પાણીના
અભાવમા અમે રાજગૃહ નગરમા પહોંચી શકીશુ તેમ લાગતું નથી

(તળ્ણ તુમ્હે મમ દેવાણુપ્પિયા ! જીવિયાઓ વવરોવેહ, મસ ચ સોણિય ચ
આહારેહ, આહારિત્તા તેણ આહારેણ અવિદ્વત્યા સમાણા તઓ પન્છા અગ્ગામિય

रह ' निस्तरत=पारगच्छत, ' तचेव सव्व भणइ ' तदेवसर्वं भणति=यथा धन्य सार्थनाहो ज्येष्ठ पुत्रमवदत्, तथैवायमपि तदेव सर्वं न्ययति, यावत् अर्थस्य र्म-स्य पुण्यस्य च आभागिनो भविष्यथ । ततः खलु धन्य सार्थवाह ' दोच्चे ' द्वितीय' पुत्रधनपालनामा एवमवदत्-मा खलु हे तात ! अस्माक ज्येष्ठ भ्रातर 'गुरु देवय ' गुरुदेवत=देव-गुरुसदृशम्, जीविताद् व्यपरोपयाम.=मारयाम', यूय खलु हे तात ! ' मम ' मा=अनयालनामान जीविताद् व्यपरोपयत यावत् अर्था-दिफलभाजो भविष्यथ । ' एव =अनेन प्रकारेण ' जाय पचमेपुत्ते ' यावत्

पहुच कर कहा अपने मित्रादि परिजनों के साथ मिल सके । तथा धन धर्म एव पुण्य के भोक्ता बन सके । " त चेव सव्व भणइ " इसका तात्पर्य यही है कि जिस प्रकार धन्यसार्थवाह ने अपने ज्येष्ठ पुत्र, धन-दत्त से कहा-उसी प्रकार धनदत्त ने भी अपने पिता से वैसाही कहा- (तएण धण्ण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी-माणं ताओ ! अह्मे जेट्ठे भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो-तुब्भेण ताओ ! मम जीवि याओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामिय अडविं णित्थ-रह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भवि स्सह) इसके बाद धन्यसार्थवाह से उसके द्वितीय पुत्र ने इस प्रकार कहा-हे तात ! आप हमारे गुरु देवनातुल्य ज्येष्ठ भाई को जीवन से रहित मत कीजिये किन्तु आप तो हे तात ! मुझे ही जीवितसे रहितकर दीजिये-और मेरे ही रक्त एव मांस को आप खाईये पीईये-ताकि इस अग्रामिक अटवी से पार हो सके इत्यादि पहिले जैसा ही इसने

पोताना मित्रा वगेरे परिजनानी साथे भणी गइल । तेभज धन धर्म अने पुण्यना बोधता जनी शके । " त चेव सव्व भणइ " आने अर्थ आम थाय छे डे जेभ धन्य साथवाछे पोताना भोटा पुत्र धनदत्तने कछु तेभज धनदत्ते पछु पोताना पिताने कछु

(तएण धण्ण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एवं वयासी-माणं ताओ ! अह्मे जेट्ठे भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भेण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामि य अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह)

त्यारपछी धन्य सार्थवाहने तेना पीज्ज पुत्रे आ प्रमाणे कछु डे डे तात ! तमे अमारा गुरुदेवता जेवा भोग लाधने जीवन रहित न करे पछु छे तात ! तमे भने ज मारी नाणे अने मारा ज बोली अने मांसने तमे भाओ पीओ जेथी तमे आ गाम वगरनी अटनीने पार करी शके, आम

સરક્ષકાઃ યદ્વન્ઞાપયત્તેઃ ' સગોષગા ' સગોષસા દુષ્કરિતપટ્ટસેઃ, 'તં' તત્=તત્માદ્
 કારણાત્ ' કઠ્ઠણં ' કથં ચલુ=કેન પ્રકારેણ ચલુ હં તાત ! વયં યુમાન્ જીવિ
 તાદ્ વ્યપરોપયામઃ=મારયામઃ, યુમાકં ચલુ માંમ ચ શોણિત ચ કથમ્ આહાર-
 યામ ? ' ત ' તત્=તત્માદ્ યુપ ચલુ હે તાત ! માં ધનદત્તનામાન જીવિતાદ્ વ્ય
 પરોપયત=મારયત મમ માંસ ચ શોણિત ચ આહારયત. અગ્રામિશાપટ્ટી ' નિત્ય

પદ્ધત્યાગા સંરક્ષયગા સગોષગા તં કઠ્ઠણ અમ્હે તાઓ ! તુભ્મે જીવિયાઓ
 ઘવરોવેમો તુભ્મ ણ મમ ચ સોણિય ચ આહારેમો અગ્ગમિય અઢર્વિ
 નિત્યરહ ત ચેવ સવ્વ મ્મણઃ જાવ અત્યમ્મ જાવ પુણ્ણસ્સ આમાગી મ્મવિ
 સ્સહ) હે માત ! આપ હમારે પિતા હૈ હમલિયે આપ મેરે લિયે દેવ, ગુરુ
 જન કે સ્થાન મૂન હૈં. નીતિ ધર્મ આદિ મેં મુક્કે સ્થાપિત કરતે રહતે હૈં.
 રાજ આદિ સમક્ષ આપ અપને પદ પર મુક્કે થૈતાતે હૈં હસલિયે આપ મેરે
 લિયે સ્થાપક ણવ પ્રતિષ્ઠાપક હૈં યથેચ્છા પ્રવૃત્તિ સે આપ હમારી સદા
 રક્ષા કરતે રહતે હૈં હસલિયે આપ મેરે સરક્ષક હૈં, દુશ્ચરિત-પ્રવૃત્તિ સે
 આપ હમે રોકતે રહતે હૈં હસલિયે આપ મેરે સગોષક હૈં, તો કૈસે મેં હે
 તાત ! આપ કો જીવન સે રહિત કર સકના હૈં. ઓર કૈસે આપ કે
 શોણિત ઓર માંસ કો ખા સકતા હૈં. હસલિયે હે તાત ! આપ હી મુક્કે
 જીવન સે રહિત કર દીજીયે ઓર મેરે ચૂન ઓર માંસ કો આપ લાઈયે
 તાકિ આપ હસ અગ્રામિક અટ્ટવી કો પાર કર સકે ઓર રાજગૃહ નગર

(તુભ્મેણ તાઓ ! અમ્હ પિયા ગુરુજનયદેવધૂયા ઠાવગા પદ્ધત્યાગા સરક્ષયગા
 સગોષગા ત કઠ્ઠણ અમ્હે તાઓ ! તુભ્મે જીવિયાઓ ઘવરોવેમો તુભ્મ ણ મમ ચ
 સોણિય ચ આહારેમો અગ્ગમિય અઢર્વિ નિત્યરહ ત ચેવ સવ્વ મ્મણઃ જાવ અત્યમ્મ
 જાવ પુણ્ણસ્સ આમાગી મ્મવિસ્સહ)

હે તાત ! તમે અમારા પિતા છો, એથી તમે અમારા દેવ અને ગુરુના
 સ્થાને છો. તમે મને નીતિ ધર્મ બગેરેમા પ્રવૃત્ત પણ કરતા રહો છો. રાજ
 બગેરેની સામે તમે પોતાના સ્થાને મને બેસાડો છો. એથી તમે મારા સ્થાપક
 અને પ્રતિષ્ઠાપક છો. યથેચ્છા પ્રવૃત્તિથી તમે મારી રક્ષા કરતા રહો છો. એથી
 તમે મારા સરક્ષક છો, દુશ્ચરિત પ્રવૃત્તિથી તમે મને રોકતા રહો છો, એથી
 તમે મારા સગોષક છો. તો આવી પરિસ્થિતિમા હે તાત ! હું તમને કેવી
 રીતે જીવન રહિત બનાવી શકું અને કેવી રીતે તમારા શોણિત અને માંસનું
 લક્ષણ કરી શકું ? એથી હે તાત ! તમે મુજ ધનદત્તને જ જીવન રહિત
 બનાવી દો અને મારા ચૂન અને માંસનું તમે લક્ષણ કરો. એથી તમે આ
 ગામ વગરની અટ્ટવીને પાર કરી શકો અને રાજગૃહ નગરમા - - ત્યાં

રહ ' નિસ્તરત=પારગન્ઢત, ' તચેવ સન્ઢ મળઈ ' તદેવસર્વ મળતિ=યથા ધન્ય સાર્થવાહો જ્યેષ્ઠ પુત્રમવદત્, તયૈગાયમપિ તદેવ સર્વ ઋચયતિ, યાવત્ અર્થસ્ય વર્મ-સ્ય પુણ્યસ્ય ચ આભાગિનો મવિષ્યથ । તતઃ સ્વલુ ધન્ય સાર્થવાહ ' દોઢ્ઢે ' ઢિ તીય ' પુત્રધનપાલનામા એવમવદત્-મા સ્વલુ હે તાત ! અસ્માઠ જ્યેષ્ઠ ભ્રાતર ' ગુરુ દેવય ' ગુરુદેવત=દેવ-ગુરુસદૃશમ્, જીવિતાદ્ વ્યપરોપયામ.=મારયામ', યૂય સ્વલુ હે તાત । ' મમ ' મા=યનપાલનામાન જીવિતાદ્ વ્યપરોપયત યાવત્ અર્થા-દિફલભાજો મવિષ્યથ । ' એવ =અનેન પ્રકારેણ ' જાવ પચમેપુત્તે ' યાવત્

પટુચ કર વહા અપને મિત્રાદિ પરિજનોં કે સાથ મિલ સકે । તથા ધન ધર્મ એવ પુણ્ય કે ભોક્તા ઘન સકે । " ત ચેવ સન્ઢ મળઈ " હસકા તાત્પર્ય યહી હૈ કિ જિસ પ્રકાર ધન્યસાર્થવાહ ને અપને જ્યેષ્ઠ પુત્ર, ધન-દત્ત સે કહા-ઁસી પ્રકાર ધનદત્ત ને મી અપને પિતા સે વૈસાહી કહા-(તણ ધણ સત્થવાહ દોઢ્ઢે પુત્તે એવ વયાસી-માણ તાઓ ! અમ્હે જેઢે ભાયર ગુરુદેવય જીવિયાઓ વવરોવેમો-તુભેણ તાઓ ! મમ જીવિ-યાઓ વવરોવેહ, મસ ચ સોણિય ચ આહારેહ, અગ્ગામિય અઢવિ ણિત્થ-રહ ત ચેવ સન્ઢ મળઈ જાવ અત્થસ્સ જાવ પુણસસ આભાગી મવિ-સ્સહ) હસકે યાદ ધન્યમાર્થવાહ સે ઁસકે ઢિતીય પુત્ર ને હસ પ્રકાર કહા-હે તાત ! આપ હમારે ગુરુ દેવનાતુલ્ય જ્યેષ્ઠ માર્હ કો જીવન સે રહિત મત કીજિયે કિન્તુ આપ તો હે તાત ! મુઢ્ઢે હી જીવિતસે રહિતકર દીજિયે-ઁરોર મેરે હી રક્ત એવ માસ કો આપ ત્વાઈયે પીઈયે-તાકિ હસ અગ્રામિક અટવી સે પાર હો મકે હલ્યાદિ પહિલે જૈસા હી હસને

પોતાના મિત્રા વગેરે પરિજનોની સાથે મળી શકે । તેમજ ધન ધર્મ અને પુણ્યના ભોક્તા બની શકે । " ત ચેવ સન્ઢ મળઈ " આને અર્થ આમ થાય છે કે જેમ ધન્ય સાથવાહે પોતાના મોઢા પુત્ર ધનદત્તને કહ્યું તેમજ ધનદત્તે પણ પોતાના પિતાને કહ્યું

(તણ ધણ સત્થવાર્હ દોઢ્ઢે પુત્તે એવ વયાસી-માણ તાઓ ! અમ્હે જેઢે ભાયર ગુરુદેવય જીવિયાઓ વવરોવેમો, તુભેણ તાઓ ! મમ જીવિયાઓ વવરોવેહ, મસ ચ સોણિય ચ આહારેહ, અગ્ગામિ ય અઢવિ ણિત્થરહ ત ચેવ સન્ઢ મળઈ જાવ અત્થસ્સ જાવ પુણસસ આભાગી મવિસ્મહ)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહને તેના બીજા પુત્રે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે તાત ! તમે અમારા ગુરુદેવતા જેવા મોગા ભાઈને જીવન રહિત ન કરો પણ હે તાત ! તમે અને જ મારી નાખો અને મારા જ લોહી અને માસને તમે ખાઓ પીઓ જેથી તમે આ ગામ વર્ગરની અટવીને પાર કરી શકો, આમ

પન્થમઃ પુત્રઃ=તૃતીયો ધનદેવગતુર્થો ધનગોપ', પન્થમો ધનનિતશ્ચાડપ્યશ્વત્ । તતઃ
 इत्य तेषां रचनश्रयणानन्तरं, खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चपुत्राणां 'द्वियश्चिञ्चय'
 द्वयेष्टम्=द्वयेष्टित गात्वा तान् पुत्रान् एवमासीत्-मा खलु वय हे पुत्राः ।
 एकमपि अस्माक मध्येएकमपि जीरिताद् व्यपरोपयाम एतत् खलु मुमुमाया
 दारिकायाः शरीर 'णिष्पाण' निष्पाण=माणरहितम्, 'णिच्चेष्ट' निश्चेष्ट=
 चेष्टारहितम् 'जीरविष्पजडे' जीरविप्रत्यक्तम्=जीरहीनम्, सर्वया मृतमस्ती
 त्यर्थः, तच्चेष्ट=उचित खलु हे पुत्राः 'अम्ह' अस्माकम् मुमुमाया दारिकाया
 मास च शोणित च आहर्तुम्, ततः=तदनन्तर च खलु त्व तेन आहारेण 'अ

सय कदा (एव पचमे पुत्ते) इसी तरह उससे तृतीय धनदेवने चतुर्थ
 धनगोपने एव पाचवे धनरक्षित ने भी कहा-(तण्ण से धण्णे सत्थवाहे
 पचण्ह पुत्ताण द्वियश्चिञ्चय जाणिता त पचपुत्ते एव वयासी) इस के
 बाद उस धन्यसार्थवाह ने पाचों पुत्रों के अभिप्राय को जानकर उन
 अपने पाचों ही पुत्रों से इस प्रकार कहा-(माण अम्हे पुत्ता । एगमवि
 जीवियाओ ववरोवेमो एसण सुसमाण दारियाए सरीरए णिष्पाण णि-
 च्चेष्टे जीवविष्पजडे-त सेय खलु पुत्ता । अम्ह सुसमाण दारियाए मस
 च सोणिय च अहारेत्तए) हे मेरे पुत्रों ! मैं एक को भी जीवन से
 रहित नहीं करना चाहता हूँ किन्तु यह सुसमादारिका का शरीर जो
 कि निष्पाण, निश्चेष्ट, और जीवन से रहित बन गया है-इसलिये हमें
 उचित है कि हे पुत्रों ! हम इस सुसमादारिका का मास एव शोणित

તેણે પહેલાની જેમ જ બધુ કહ્યું (એવ પચમે પુત્તે) આ પ્રમાણે જ તેને
 ત્રીજા ધનદેવે, ચોથા ધનગોપે અને પાચમા ધનરક્ષિતે પણ કહ્યું
 (તણ્ણ સે ધણ્ણે સત્થવાહે પચણ્હ પુત્તાણ દ્વિયશ્ચિજ્જય જાણિતા ત પચ પુત્તે એવ વયાસી)
 ત્યારપછી તે ધન્ય સાર્થવાહે પાચે પુત્રોની હૃદયની અભિલાષા બાળીને
 પોતાના તે પાચે પુત્રોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(માણં અમ્હે પુત્તા ! એગમવિ જીવિયાઓ વવરોવેમો એસણ સુસમાએ દારિ
 યાએ સરીએ ણિષ્પાણે ણિચ્ચેષ્ટે જીરવિષ્પજડે-ત સેય લલુ પુત્તા ! અમ્હ સુમ
 માએ દારિયાએ મસ ચ સોણિય ચ આહારેત્તએ)

હે મારા પુત્રો ! તમારામાથી એકને પણ હું મારવા માગતો નથી
 પરંતુ આ સુસમા દારિકાનું શરીર કે જે નિષ્પાણ, નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ
 બની ગયું છે-એવા માટે અમારા માટે હે પુત્રો ! એ જ યોગ્ય છે કે આપણે
 આ સુસમા દારિકાના માસ અને શોષિતને ખાઈએ

विद्वत्था समाणा 'अवि-यस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्त राजगृह 'सपाउणि
स्सामो' सप्राप्स्याम । ततः खलु ते पञ्चपुत्रा धन्येन सार्थवाहेन एवमुक्ताः
सन्तः 'एयमद्व' एतमर्थम् पूर्वोक्तरूपम् 'पडिसुणेति' प्रतिश्रुण्वन्ति=स्वीकु
र्वन्ति । तत खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सार्द्धम् 'अरणि' अरणि
यस्मिन् मध्यमानेऽग्निरुत्पद्यते तत्काष्ठम् 'करेड' करोति=सगृह्णाति, कृत्वा 'सरग'
सरगम्=निर्मन्थनकाष्ठ करोति=आनयति कृत्वा, सरकेण अरणि मन्नाति=घर्षयति
गथित्वा, 'अग्निं पाडेइ' पातयति=मन्यनवशादग्निमुत्पादयति 'पाडित्ता' पात

खावे । (तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्वत्था समाणा रायगिह सपाउ-
णिस्सामो-तएण ते पच पुत्ता धण्णेण सत्थवाहेण एवमुक्ता समाणा
एयमद्व पडिसुणेति) इस से हमलोग उस आहार से शरीर नाश को
अप्राप्त होकर राजगृह नगर में पहुँच जावेंगे । इस प्रकार धन्यसार्थवाह
के द्वारा कहे गये उन पाँचों पुत्रों ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को स्वी
कार कर लिया । (तएण धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अरणि-
करेइ, करित्ता सरगच करेइ, करित्ता सरगण अरणि महेइ, महित्ता अ
ग्निं पाडेइ, पाडित्ता अग्निं सधुक्खेइ, सधुक्खित्ता दारुयाइ परिक्खवेइ
परिक्खवित्ता अग्निं पज्जालेइ पज्जालित्ता सुसमाए मस च सोणिय
च आहारेति) इस के बाद धन्यसार्थवाह ने पाँचों पुत्रों के साथ मिल-
कर अरणिकाष्ठ को एकत्रित किया । एकत्रित कर के फिर वह सरक
काष्ठ को निर्मन्थनकाष्ठ को ले आया-उसे लेकर के उसने उससे अरणि
का घर्षण किया । इस तरह घर्षण से अग्नि उत्पन्न हो गई । अग्नि के

(तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्वत्था समाणा रायगिह सपाउणिस्सामो
तएण ते पच पुत्ता धण्णेण सत्थवाहेण एव मुक्तासमाणा एयमद्व पणिसुणेति)

ऐथी आपण्णे भधा आ आहारथी शरीर नाशथी अगरी न्धने राज-
गृह नगरमा पडोत्थी न्धथ आ प्रभाण्णे धन्य सार्थवाह वडे ऽडेवायेता पाथे
पुत्रोअे धन्य सार्थवाहनी ते वातने स्वीजरी लाधी

(तएण धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अरणि करेइ, करित्ता, सरग च
करेइ, करित्ता सरगण अरणि महेइ, महित्ता अग्निं पाडेइ, पाडित्ता अग्निं सधु
क्खेइ, सधुक्खित्ता दारुयाइ परिक्खवेइ, परिक्खवित्ता अग्निं पज्जालेइ, पज्जा
लित्ता सुसमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेति)

त्यारपथी धन्य सार्थवाडे पाथे पुत्रोनी साथे भणीने अरणि काधने
अेक्कुं कथुं अेक्कुं करीने तेओ सरक काधने-निर्मन्थन काधने लध आन्धा
तेने लधने तेण्णे तेथी अरणि का धनु घर्षण कथुं आ प्रभाण्णे घर्षणथी अग्नि

પન્થમઃ પુત્રઃ=તૃતીયો ધનદેરાતુર્યો ધનગોપઃ, પન્થમો ધનરક્ષિતશ્ચાડપ્યવદ્ । તતઃ
 इत्यं तेषां यत्रनश्रयणानन्तर, खलु स धन्यः सार्यवाहः पञ्चपुत्राणां ' हियश्चिउय'
 इदयेष्टम्=इदयेस्सित शાતા તાન્ પુત્રાઃ એમચીત્-મા ચલુ વય હે પુત્રા' !
 एरुमपि अस्माक मध्येएकमपि जीरिताद् व्यपरोपयाम एतत् खलु सुमुमाया
 દારિકાયાઃ શરીર ' ગિપ્પાણ ' નિપ્પ્રાણ=પ્રાણરહિતમ્, ' ગિચ્ચેદ્ ' નિચ્ચેદ્=
 चेष्टारहितम् ' जीरयिष्यजडे ' जीरयिप्रत्यक्तम्=जीरहीनम्, सर्वथा मृतमस्ती
 ત્પર્થ?, તચ્ચેય =ઉચિત ચલુ હે પુત્રાઃ ' અમ્હ ' અસ્માકમ્ સુમુમાયા દારિકાયા
 માસ ચ શોણિત ચ આદર્શમ્, તતઃ=તદનન્તર ચ ચલુ વય તેન આહારેણ ' અ

સય કહા (એવ પચમે પુત્તે) ઇસી તરહ ઉસસે તૃતીય ધનદેવને ચતુર્થ
 ધનગોપને એવ પાંચવે ધનરક્ષિત ને બી કહા-(તણ્ણ સે ધણ્ણે સત્થવાહે
 પચણ્ણ પુત્તાણ હિયશ્ચિઉય જાણિત્તા ત પચપુત્તે એવ વયાસી) ઇસ કે
 ઘાદ ઉસ ધન્યસાર્યવાહ ને પાચોં પુત્રોં કે અભિપ્રાય કો જાનકર ડન
 અપને પાચોં હી પુત્રોં સે ઇસ પ્રકાર કહા-(માણ અમ્હે પુત્તા ! એગમચિ
 જીવિયાઓ વવરોવેમો એસણ સુસમાણ દારિયાએ સરીરેણ ગિપ્પાણ ગિ
 ચ્ચેદ્દે જીવિવિપ્પજડે-ત સેય ચલુ પુત્તા ! અમ્હ સુસમાણ દારિયાએ મસ
 ચ સોણિય ચ અહારેસાએ) હે મેરે પુત્રોં ! મેં એક કો બી જીવન સે
 રહિત નહીં કરના ચાહતા હૈં કિન્તુ યદ સુસમાદારિકા કા શરીર જો
 કિ નિપ્પ્રાણ, નિચ્ચેદ્, ઔર જીવન સે રહિત થન ગયા હૈ-ઇસલિયે હમે
 ઉચિત હૈ કિ હે પુત્રોં ! હમ ઇસ સુસમાદારિકા કા માસ એવ શોણિત

તેણે પહેલાની જેમજ ગયુ કહ્યું (એવ પચમે પુત્તે) આ પ્રમાણે જ તેને
 ત્રીજા ધનદેવે, ચોથા ધનગોપે અને પાચમા ધનરક્ષિતે પણ કહ્યું
 (તણ્ણ સે ધણ્ણે સત્થવાહે પચણ્ણ પુત્તાણ હિયશ્ચિઉય જાણિત્તા ત પચ પુત્તે એવ વયાસી)
 ત્યારપછી તે ધન્ય સાર્યવાહે પાચે પુત્રોની હૃદયની અલિલાયા બાણીને
 પોતાના તે પાચે પુત્રોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(માણ અમ્હે પુત્તા ! એગમચિ જીવિયાઓ વવરોવેમો એસણ સુસમાણ દારિ
 યાએ સરીરેણ ગિપ્પાણે ગિચ્ચેદ્દે જીવિવિપ્પજડે-ત સેય ચલુ પુત્તા ! અમ્હ સુસ-
 માએ દારિયાએ મસ ચ સોણિય ચ આહારેસાએ)

હે મારા પુત્રો ! તમારામાથી એકને પણ હું મારવા માગતો નથી
 પરંતુ આ સુસમા દારિકાનુ શરીર કે જે નિપ્પ્રાણ, નિચ્ચેદ્ અને નિર્જીવ
 બની ગયુ છે-એવા માટે અમારા માટે હે પુત્રો ! એ જ ચોગ્ય છે કે આપણે
 આ સુસમા દારિકાના માસ અને શોણિતને ખાઈએ

મૃતકૃત્યાનિ કૃત્વા કાલાન્તરે ' વિગયસોગે ' વિગતશોક = સુસુમામરણજનિતશોક-
રહિતો જાતશ્રાસ્યભૂત્ ॥ સૂ૦ ૮ ॥

મૂલમ્—તેણ કાલેણં તેણં સમણં સમણે ભગવ મહાવીરે
ગુણસિલે ચેદ્દે સમોસદે । સે ણં ધણે સત્થવાહે સપુત્તે ધમ્મં
સોચ્ચા પઠ્ઠેદ્દે, એકારસંગવી । માસિયાણ સંલેહણાણ સોહમ્મે
ઉવવણ્ણો, મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિદ્દે । જહા વિ ય ણં જમ્બૂ ।
ધણેણ સત્થવાહેણં ણો વણ્ણહેડ વા નો રૂવહેડ વા નો વલહેડ
વા નો વિસયહેડ વા સુસુમાણ મસસોણિણ આહારિણ, નન્નત્થ
ણાણ રાયગિહં સપાવણટ્ટયાણ । એવામેવ સમણાડસો । જો
અમ્હં નિગંથો વા નિગંથી વા ઇમસ્સ ઓરાલિયસરીસ્સ વતા-
સવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુક્કાસવસ્સ સોણિયાસવસ્સ જાવ અવસ્સં
વિપ્પજહિયવ્વસ્સ વા નો વણ્ણહેડ વા નો રૂવહેડ વા નો વલ-
હેડ વા નો વિસયહેડ વા આહારે આહારેદ્દે, નન્નત્થ ણાણ
સિદ્ધિગમણસપાવણટ્ટયાણ, સે ણં ઇહભવે ચેવ વહૂણં સમણાણં
વહૂણં સમણીણં વહૂણં સાવયાણં વહૂણં સાવિયાણ અચ્ચણિજ્ઞે
જાવ વીઢ્ઠિવડ્ડસ્સદ્દે ।

એવ ખલ્લુ જમ્બૂ । સમણેણં ભગવયા મહાવીરેણં જાવ સંપત્તેણં
અટ્ટારસમસ્સ ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમટ્ટે પણ્ણત્તે ત્તિવેમિ ॥ સૂ૦ ૯ ॥

॥ અટ્ટારસમ અજ્ઞયણ સમત્તં ॥

ટીકા—‘ તણ કાલેણ ’ इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो
भगवान् महावीरो गुणशिलके चेत्ये ‘ समोसदे ’ सममृत- = तीर्थंकरपरम्परया

सुसुमा दारिका के मरणोत्तर काल में जो भी लौकिक कृत्य किये जाते
—वे सब भी उन्होंने किये और धीरे २ विगत शोक भी हो गए । सू० ८ ।

લૌકિક કૃત્યો કરવા બેઠ્યો તે સર્વે તેમણે પતાવ્યા અને ધીમે ધીમે તેઓ
શોકરહિત પશુ બની ગયા ॥ સૂત્ર ૮ ॥

વિત્ત્યા=ઉત્પાદ્ય અગ્નિ 'સપુત્રોદ' ગમુસયતિ=ઉદ્ગીષયતિ, સપુત્ર=ઉદ્ગીષ્ય 'દાસ-
યાઈ' દારુણાણિ=સ્થનાનિ તથા 'પરિશિષ્યત' પરિશિષ્યતિ, પરિશિષ્ય, અગ્નિ
મજ્જાલયતિ, મજ્જાલય, સુમુમાયા દારિકાયા મર્જિત માંસ ચ શ્રોજિત ચ 'આહા
રેઈ' આહારયતિ । અન તર તેન આહારેણ 'અવિદ્વત્યા' અવિદ્વસ્તા=શરીરના
શમમાસાઃ સન્તો રાજગૃહ નગર સપ્રમાઃ 'મિત્તજાઈ૦ અભિસમળાગયા' મિત્ર-
જાતિ=મિત્રજાતિમ્વજનસમ્યન્નિપરિજને મદ 'અભિસમળાગયા' અભિસમન્નામતા=
સમિલિતાઃ સન્તઃ તસ્ય ચ ત્રિપુલસ્ય 'ધનકનકગરયણ જાત્ર' યનકનક રત્ન યાક્ત
=ધનકનકરત્નાદિકસ્ય 'આમાગી જાયા યાત્રિ હોત્યા' આમાગિનો જાતાયા
પ્રમખન્ । તત. સ્વલ્લ સ ધન્ય' સાર્થગઠ સુમુમાયા દારિકાયા વહ્નિ લોકિકાનિ

ઉત્પન્ન હોને પર ઉસને ફિર ઉસે ધોંકા-ઉદ્ગીષિત ક્રિયા-જબ વહ્ ઉદ્ગી-
ષિત હો ચુકી-તથા ઉસને ઉસમેં લકડિયોં કો લગાયા-। ફસ તરહ કો
ક્રિયા સે જબ અગ્નિ અન્છી તરહ પ્રજ્વલિત હો ચુકી-તથા ઉસમેં સુસમા
દારિકા કે મામ કો ઓર લૂન કો ભૂજા-ભૂજકર ઉસે સબને ત્યાણ
પીયા (તેણ આહારેણ અવિદ્વત્યા સમાણા રાયગિહ નયર સપત્તા મિત્ત
જાઈ૦ અભિસમળાગયા તસ્સ ય વિઝલસ્સ ધનકનકગરયણ જાવ
આમાગી-જાયા યાત્રિ હોત્યા તણ સે ધણે સત્થવાહે સુસમાણ દારિયા
પ વહ્હ લોહ્યાઈ જાવ વિગયસોપ યાત્રિહોત્યા) ફસ પ્રકાર ઉસ આહાર
કો સહાયતા સે અવિદ્વસ્ત શરીર હોકર વે વહા સે ચલ કર રાજગૃહ
નગર મેં આ ગયે । વર્હા અકાર વે અપને મિત્રજાતિ આદિ પરિજનોં સે
સ્વૂય હિલે મિલે । ઇવ ધનકનક આદિ દ્રવ્ય કે ભોક્તા મી બન ગયે ।

ઉત્પન્ન થઈ ગયો અગ્નિ ઉત્પન્ન થયા બાદ તેણે તેને ઉદ્ગીષિત ગયો જ્યારે તે
ઉદ્ગીષિત થઈ ગયો ત્યારે તેણે તેમા લાકડીઓ મૂકી આ રીતે જ્યારે સારી
રીતે અગ્નિ પ્રજ્વલિત થઈ ગયો ત્યારે તેમા સુસમા દારિકાના માંસને અને
લોહીને શેક્યા, શેક્યા બાદ તેને બધાએ ખાધા-પીધા

(તેણ આહારેણ અવિદ્વત્યા સમાણા રાયગિહ નયર સપત્તા, મિત્તજાઈ૦
અભિસમળા ગયા, તસ્સ ય વિઝલસ્સ ધનકનકગરયણ જાવ આમાગીજાયા યાત્રિ
હોત્યા તણ સે ધણે સત્થવાહે સુસમાણ દારિયા વહ્હ લોહ્યાઈ જાવ વિગય
સોપ યાત્રિ હોત્યા)

આ પ્રમાણે તે આહારની સહાયતાથી અવિનષ્ટ શરીરવાળા થઈને તેઓ
ત્યાથી રવાના થઈને રાજગૃહ નગરમા આવી ગયા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના
મિત્ર જાતિ વગેરે પરિજનોની સાથે ખૂબ આનંદ-પૂર્વક મળ્યા, અને ધન,
કનક વગેરે દ્રવ્યોને લોગવવા લાગ્યા સુસમા દારિકાના ૫ ૧ ૭૮૬

मृतकृत्यानि कृत्वा कालान्तरे ' विगयसोगे ' विगतशोक = सुसुमामरणजनितशोक-
रहितो जातश्चास्यभूत् ॥ सू० ८ ॥

मूलम्—तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे
गुणासिलए चेइए समोसढे । से णं धणणे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं
सोच्चा पव्वइए, एक्कारसंगवी । मासियाए संलेहणाए सोहम्मे
उववण्णो, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । जहा वि य णं जम्बू ।
धण्णेण सत्थवाहेणं णो वण्णहेउ वा नो रूवहेउं वा नो वलहेउ
वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए मससोणिए आहारिए, नन्नत्थ
एगाए रायणिहं सपावणट्टयाए । एवामेव समणाउसो । जो
अम्हं निगंथो वा निगंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंता-
सवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणिथासवस्स जाव अवस्सं
विप्पजहियव्वस्स वा नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो वल-
हेउ वा नो विसयहेउ वा आहारि आहारेइ, नन्नत्थ एगाए
सिद्धिगमणसपावणट्टयाए, से णं इहभवे चेव वट्ठणं समणाणं
वट्ठणं समणीणं वट्ठणं सावयाणं वट्ठणं सावियाण अच्चणिजे
जाव वीडवइस्सइ ।

एव खलु जम्बू । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं
अट्टारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि ॥ सू० ९ ॥

॥ अट्टारसम अज्झयण समत्तं ॥

टीका—' तण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो
भगवान् महावीरो गुणशिलके चैत्ये ' समोसढे ' सममृत = तीर्थंकरपरम्परया

सुसुमा दारिका के मरणोत्तर काल में जो भी लौकिक कृत्य कियेजाते
—वे सब भी उन्होंने किये और धीरे २ विगत शोक भी हो गए । सू० ८ ।

लौकिक कृत्यो करवा लेधज्जे ते सवे तेमहे पताव्या अने धीमे धीमे तेअ
शोकरहित पण्ण गनी गया ॥ सू० ८ ॥

समागतः । अनन्तर स धन्यः सार्धं गृह सपुत्रो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः, प्रव्रज्यान्तरम् 'एकारसगरी' एकादशाहमिन्=एकादशाहमिन्नां जानः 'मासिया' मासिया सलेखनया कालं कृत्वा 'सोहम्मे' सौधर्मं कल्पे 'उपपन्नः' । पुनः ततश्च्युतः महाविदेहं यत्र 'सिज्जिहि' सेत्स्यति-मुक्तिं प्राप्स्यति । सम्प्रति धन्यसार्धं वाददृष्टान्तेन जम्बूद्वीपेन समीपे श्रीसुधर्मास्वामीप्राद 'जहा वि' इत्यादिना-

‘तेण कालेण तेण समण्ण इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समण्ण) उस काल और उस समय में (समणे भगवं महावीरे) भ्रमण भगवान् महावीर (गुणसिल्ल चेइण समोसडे, से ण धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वड्ढए-एकारसगरी-मासियाण सलेखणाण सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्जिहिहि) गुणशिलक उद्यान में आये । उनसे धर्म का उपदेश सुनकर वह धन्यसार्धं अपने पाचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो गया । प्रव्रजित होकर धीरे-२ वह एकादशाहों का ज्ञाता भी हो गया । अन्न समय में उसने एक मास की सलेखना धारणकर काल अवसर काल किया-तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया-वहा से चब कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा । इस धन्यसार्धंवाह के दृष्टान्त से जम्बूद्वीप के स्वामीको संबोधितकर के श्री

‘तेण कालेण तेण समण्ण’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समण्ण) ते क्षणे अने ते समये (समणे भगवं महावीरे) भ्रमण भगवान् महावीर

(गुणसिल्ल चेइण समोसडे । सेण धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वड्ढए-एकारसगरी-मासियाण सलेखणाण सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्जिहिहि)

गुणशिलक उद्यानमा आन्या तेभनी पासेथी धर्मोपदेश साधणीने ते धन्य सार्धंवाह चेताना पाथे पुत्रेणी साथे तेभनी पासे प्रव्रजित थधं गथे । प्रव्रजित थधने ते धीमे धीमे ओकादश (अजियार) अजोने ज्ञाता पण थधं गथे । छेवटे भृत्य समये ओक भाभनी सलेखना धारण करीने क्षण अब सरे तेबे क्षण कथे । ते तेना प्रभावथी सौधर्म उत्पन्ना उत्पन्न थधं गथे । त्याथी यवीने हवे ते महाविदेह क्षेत्रमा मुक्ति प्राप्त करथे आ धन्य सार्धं वाहना दृष्टान्तने साथे राणीने श्री सुधर्मास्वामीओ जम्बूद्वीपस्वामीने संबोधित

જહાવિ ય ણ' યથાડપિ ચ સ્વલુ=યેન પ્રકારેણ સ્વલુ હે જમ્યુઃ ! ધન્યેન સાર્થવાહેન નો વર્ણહેતોઃ = નો રૂપહેતો. વલહેતોઃ=નો વિષયહેતો. સુસુમાયા દારિકાયા માસ-શોણિતમાદારિતમ્, એગાં રાયગિહસંપાવણદ્વયાં' એકસ્ય રાજગૃહ સપ્રાપ્નાર્થતાયા અન્યત્ર ન, કિન્તુ-અહ રાજગૃહ સપ્રાપ્નુગમ્' ઇતિ હેતોરેવ તેન પુત્રૈઃ સહ તદ્ આદારિતમિતિ ભાવ ।

ભગવાનાહ—' એવામેવ ' એવામેવ=અનેન પ્રકારેણ ' સમણાડસો ' હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ યોડસ્માક નિર્ગ્રન્થો વા નિર્ગ્રન્થી વા અસ્ય વાન્તાસ્રવસ્ય પિત્તા-

સુધર્મા સ્વામી ને ડનસે કહા—(જહાં વિ ય ણ જન્નુ ! ધણેણ સત્થવાહેણ ણો વણ્ણહેડ વા નો રૂવહેડ વા નો વલહેડ વા નો વિસયહેડ વા સુસુમાં મંસસોણિં આહારિં નન્નત્થં એગાં રાયગિહં સંપાવણદ્વયાં-એવામેવ સમણાડસો ! જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગંથીવા ઇમસ્સ ઓરાલિયસરીર સ્સ વત્તાસવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુવ્વકાસવસ્સ સોણિયાસવસ્સ જાવ અવ-સ્સ વિપ્પજહિયન્વસ્સ નો વણ્ણહેડ વા નો રૂવહેડ વા નો વલહેડ વા નો વિસયહેડ આહર અહારેડ, નન્નત્થં એગાં સિદ્ધિગમણસપાવણદ્વયાં) હે જન્નુ ! જિસ તરહ ધન્યસાર્થવાહ ને અપને શરીર મેં કાન્તિ વિશેષ ઘડાને કે લિયે, વલ ઘડાને કે લિયે, અવવા વિષય સેવન કી શક્તિ ઘડાને કે લિયે સુસુમા દારિકા કા માસ એવ શોણિત નહીં લાયા । કિન્તુ મેં પુત્રોં કે સહિત રાજગૃહ નગર મેં પહુંચ જાઉં ઇસી એક અભિ પ્રાય સે સુસુમા દારિકા કા અપને પુત્રોં સહિત માસ શોણિત સેવન કિયા-ઇસી તરહ હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જો હમરા નિર્ગ્રન્થ શ્રમણ જન અવવા શ્રમણી જન હૈ-વહ્ હસ વાન્તાસ્રવવાલે, પિત્તાસ્રવવાલે, શુક્રાસ્ર-

કરીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(જહાં વિ ય ણ જન્નુ ! ધણેણ સત્થવાહેણ ણો વણ્ણહેડ વા નો રૂવહેડ વા નો વલહેડ વા નો વિસયહેડ વા સુસુમાં મંસસોણિં આહારિં નન્નત્થં એગાં રાય-ગિહં, સંપાવણદ્વયાં એવામેવ સમણાડસો ! જો અમ્હ નિગ્ગયો વા નિગ્ગંથી વા ઇમસ્સ ઓરાલિયસરીર સ્સ વત્તાસવસ્સ પિત્તાસવસ્સ સુવ્વકાસવસ્સ સોણિયાસવસ્સ જાવ અવસ્સે વિપ્પજહિયન્વસ્સ નો વણ્ણહેડ વા નો રૂવહેડ વા નો વલહેડ વા નો વિસયહેડ વા આહર આહારેડ, નન્નત્થં એગાં સિદ્ધિગમણસપાવણદ્વયાં)

હે જન્નુ ! જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના શરીરમાં કાન્તિ વિશેષની વૃદ્ધિ કરવા માટે બજાની વૃદ્ધિ માટે અથવા વિષય સેવનની શક્તિના વર્ધન માટે સુસુમા દારિકાના માસ અને શોણિત નહિ ખાધા, પણ પુત્રો સહિત હુ રાજ ગૃહ નગરમાં પહોંચી બહુ આ એક જ મતલબથી પોતાના પુત્રોની સાથે સુસુમા દારિકાના માસ-શોણિત સેવન કર્યા આ પ્રમાણે હે આયુષ્મન્ત શ્રમણો ! જે અમારા નિર્ગ્રન્થ શ્રમણજન અથવા શ્રમણીજનો છે તેઓ આ વાતા

समागतः । अनन्तर स धन्यः सार्धं ग्राहं सपुत्रो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः, प्रव्रजान-
न्तरम् 'एकारसगरी' एकादशाक्षरिन्-एकादशाक्षरिन्नामिन्नां जातः 'मासियाए'
मासियाए सलेखनया कालं कृत्वा 'सोहम्मे' सौधर्मे कल्पे 'उपपन्नः' । पुनः तत
श्च्युतः महाविदेहे नरे 'सिज्झिहि' सेत्सपति-मुक्तिं प्राप्स्यति । सम्प्रति धन्यसार्धं
वाहदृष्टान्तेन जम्बूस्वामिनः सम्गोष्य श्रीसुधर्मास्वामीप्राह 'जहा त्रि इत्यादिना-

'तेण कालेण तेण समणं इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समणं) उस काल और उस समय
में (समणे भगव महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (गुणसिलण
चेइए समोसदे, से णं धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोच्चा पक्वइए-एकार
रसगवी-मासियाए सलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सि
ज्झिहिहि) गुणशिलक उग्यान में आये । उनसे धर्म का उपदेश सुनकर
वह धन्यसार्धवाह अपने पाचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो
गया । प्रव्रजित होकर धीरे २ वह एकादशाक्षरों का ज्ञाता भी हो गया ।
अन्न समय में उसने एक मास की सलेखना धारणकर काल अवसर
काल किया-तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया-
वहा से चक्कर कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा ।
इस धन्यसार्धवाह के दृष्टान्त से जम्बू स्वामीको संबोधितकर के श्री

तेण कालेण तेण समणं' इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समणं) ते काले अने ते समये (समणे
भगव महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर

(गुणसिलण चेइए समोसदे । सेण धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोच्चा
पक्वइए-एकारसगवी-मासियाए सलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे
सिज्झिहिहि)

शुणशिलक उग्यानमा आग्या । तेमनी पासेथी धर्मोपदेश सालणीने ते
धन्य सार्धवाह पेटाना पाये पुत्रोनी साथे तेमनी पासे प्रव्रजित थइ गये।
प्रव्रजित थइने ते धीमे धीमे ओकादश (अजियार) अगोने ज्ञाता पण
थइ गये। छेवटे भूत्थु समये ओक माननी सलेखना धारण करीने काल अव
सरे तेणे गण कथे ते तेना प्रभावथी सौधर्म कल्पमा उत्पन्न थइ गये।
त्याथी यवीने हवे ते महाविदेह क्षेत्रमा मुक्ति प्राप्त करथे आ धन्य सार्ध
वाहना दृष्टान्तने साथे राणीने श्री सुधर्मास्वामीओ ॥ ७० स्वामीने संबोधित

સુધર્માસ્યામીપ્રાહ— એવ ' અનેન પૂર્વોક્તપ્રમારેણ સ્વલુ હે જન્મુ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ 'જાવ સપત્તેણ 'યાવત્ સપ્રાપ્તેન=મોક્ષગતેન અપ્તાદશસ્ય જ્ઞાતા-ધ્યયનસ્ય ' અયમદ્દે ' અયમર્થ =પૂર્વોક્તરૂપોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ=પરૂપિતઃ, ' ત્તિ વેમિ ' ઇતિ વ્રવીમિ=અસ્ય વ્યાખ્યા પૂર્વત્ ॥ સૂ૦ ૧ ॥

ઇતિ શ્રી-પિશ્વરિયાત-જગદ્ગુહ્ય-પ્રસિદ્ધવાચકપદ્મદશભાષાકલિતલલિત-
લાપાલાપક-પ્રવિશુદ્ધગદ્યપદ્યનૈકગ્રન્થનિર્માપક-ત્રાદિમાનમર્દક-શ્રીશાહુન્દ-
વપતિકોલ્હાપુરરાજપદ્મ-જૈનશાસ્ત્રાચાર્ય ' પદ્મભૂપિત-કોલ્હાપુરરાજ-
ગુરુ-વાલત્રલ્લવારિ-જૈનાચાર્ય-જૈન ઝર્મદિવાકરપૂજ્યશ્રી-ધાસીલાલ-
ત્રતિરિચિતાયા-જ્ઞાતાધર્મકથાદ્રુત્રસ્યાનગારધર્મામૃતવર્ષિ
વ્યાખ્યાયા વ્યાચયાયામપ્તાદશમ યયન સમાપ્ત ॥ ૧૮ ॥

જન્મુ ! સમણેન ભગવતા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ અદ્વારસમસ્સ ણાય-
જ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણતેત્તિવેમિ) હસ પ્રકાર સે હે જન્મુ ! શ્રમણ ભગ-
વાન્ મહાવીરને જો સિદ્ધિ ગતિ નમરુ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં હસ
અઠારહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈં ।
એસા જો મૈને કહા હૈં વહ ઉન્હીં કે શ્રી મુલ્લ નિર્ગતત્રાણી કો સુનકર
હી કહા હૈં-અપની ઔર સે હસમેં કુઝ મી મિલાકર નહીં કહા હૈં ॥ સૂ૦ ૧ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ધાસીલાલજી મહારાજ કૃત
“ જ્ઞાતાધર્મકથાદ્રુત્રસૂત્ર ” કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાકા
અઠારહવાં અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૮ ॥

એવ સ્વલુ જન્મુ ! સમણેન ભગવતા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ અદ્વારસમસ્સ
ણાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણતેત્તિવેમિ)

આ પ્રમાણે હે જન્મુ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધગતિ
નામક સ્થાનને મેળવી ચુક્યા છે-આ અઠારમા જ્ઞાતાધ્યયનને આ પૂર્વોક્ત
રૂપથી અર્થ પ્રરૂપિત થયો છે આવુ જે મેં કહ્યું છે, તે તેમના જ શ્રીમુખથી
નીકળેલી વાણીને સાભળીને જ કહ્યું છે એવાના તરફથી ઉમેરીને મેં
કહ્યું નથી ॥ સૂત્ર ૯ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ધાસીલાલજી મહારાજ કૃત

“ જ્ઞાતાધર્મકથાદ્રુત્રસૂત્ર ” ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાન

અઠારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૮ ॥

सर्वस्य शुक्रास्त्रास्य 'जा' आस्य विषयवियन्तस्य 'या' अत्र विषय विषय
 ज्यस्य औदारिकशरीरस्य नो वर्णहेतोर्वा, नो रूपहेतोर्वा नो बलहेतोर्वा, नो
 विषयहेतोर्वा, आहारमाहरति=आहार करोति, 'एगाए मिद्धिगमणसपावणदुयाए'
 एकस्याः सिद्धिगमनसपावणार्थतायाः 'नन्तव्य' अन्यत्र न, मोक्षप्राप्तिरूप प्रयो
 जन विहाय वर्णादिप्रयोजनेन आहार नाहरतीति भावः । स=निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी
 वा खलु, 'इहभवे चेव' इहभवे एव=अस्मिन् जन्मन्येव बहूना श्रमणानां बहूनां
 श्रमणीनां बहूनां श्रावकाणां बहूनां श्राविकाणाम् 'अच्चणिज्जे' अर्चनीय=
 आदरणीय 'जाव' बीडवइस्सइ यावद् व्यतिवृत्तिव्यति=चातुरन्तससारकान्तार
 मूलह्वयिष्यति-ससारपार गमिष्यतीत्यर्थः ।

वाले, यावत् अद्यपि परिस्थिति होने की योग्यतावाले इस औदारिक
 शरीर में कान्ति विशेष बढ़ाने के लिये बल बढ़ाने के लिये, अथवा
 विषय की प्रवृत्ति बालू रग्वने के लिये आहार नहीं लेता है विन्तु-एक-
 केवल सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त करने के लिये ही आहार लेता
 है । मोक्ष प्राप्तिरूप प्रयोजन को छोड़कर और किसी कान्ति आदि बढ़ाने
 के अभिप्रायरूप प्रयोजन से निर्ग्रन्थ श्रमण श्रमणी जन अहार नहीं
 लिया करते हैं-(सेण) ऐसे निर्ग्रन्थ श्रमण श्रमणी जन (इहभवे चेव
 बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण सावयाण बहूण साविषाण अब्ब
 णिज्जे जाव बीडवइस्सइ) इस भव में ही अनेक श्रमण, श्रमणी, जनों
 द्वारा तथा श्रावक श्राविकाओं द्वारा अर्चनीय-आदरणीय यावत् इस
 चतुर्गतिरूप ससार कान्तार को पारकरने वाले होते हैं । (एव खलु

अववाणा, पिताअववाणा, शुक्राअववाणा यावत् आहस नष्ट थनारा आ
 औदारिक शरीरमा कान्ति विशेषणी वृद्धि भाटे, अजणी वृद्धि भाटे अथवा तो
 विषयणी प्रवृत्ति बालू राणवा भाटे आहार लेतो नथी पणु इत्थ ओक
 सिद्धगति नामक स्थानने भोजनवा भाटे न आहार अडणु करे छे मोक्षप्राप्ति
 रूप प्रयोजन पगर 'णील' केछ कानि वगेरेणी वृद्धिणी अलिताया राभीने
 निर्ग्रन्थ-श्रमणीजन आहार अडणु करता नथी (सेण) ओवा निर्ग्रन्थ
 श्रमण श्रमणीजनों—

(इहभवे चेव बहूण समणाण समणीण बहूण सावयाण बहूण साविषाण
 अच्चणिज्जे जाव बीडवइस्सइ)

आ अवमा न धव्वा श्रमण श्रमणीजनों वडे तेमन श्रवक-श्राविकाओं
 वडे अर्चनीय, आदरणीय यावत् आ चतुर्गति रूप ससार कान्तारने पार
 करी जनारा छेय छे

मूलम्—जड्णं भते । समणेणं भगवया महावीरेणं जाव
संपत्तेणं अट्टारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्टे पण्णत्ते, एगूण
वीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्टे पण्णत्ते ? एवं खलु जंवू ।
तेणं कालेणं तेण समएण इहेव जवूदीवे दीवे पुव्वविदेहेवासे
सीयाए महाणईए उत्तरिछे कूले नीलवंतस्स दाहिणेण उत्तरि-
हस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्व-
यस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णाम विजए पन्नत्ते ।
तत्थ ण पुडरिणिणी णाम रायहाणी पन्नत्ता णवजोयणवित्थि
ण्णा दुवालसजोयणायामा जावपच्चक्ख देवलोगभूया पासाईया
दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । तीसेण पुडरिणिणीए णयरीए
उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे । तत्थ णं
पुंडरिणिणीए रायहाणीए महापउमे णाम राया होत्था, तस्स
ण पउमावई णाम देवी होत्था । तस्स णं महापउमस्स रत्तो
पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, त जहा—
पुडरीए य कडरीए य, सुकुमालपाणिपाया० । पुडरीए जुव-
राया । तेणं कालेणं तेणं समएण थेरागमणं, महापउमे राया
णिग्गए धम्म सोच्चा, पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए पोडरीए
राया जाए, कडरीए जुवराया, महापउमे अणगारे चोदसपुव्वाइं
अहिज्जइ, तएण थेरा वहिया जणवयविहार विहरति, तएण
से महापउमे वहुणि वासाइं जाव सिद्धे ॥ सू० १ ॥

અથ ઇકોનવિંશતિતમમધ્યયનમ્—

ગતમપ્તાદશમધ્યયનમ્, સામ્યતમેકોનવિંશતિતમ વ્યાખ્યાયતે, અસ્ય ચ પૂર્વેણ સહ અપમણિસમ્યગ્નઃ-પૂર્વસ્થિત્ત્વમ્-અયને અમૃતાસ્રાસ્ય તદિતરસ્ય ચ અનર્થાર્થો ઉક્તો, इदं चिर सवृतास्रोऽपि यः पश्चादपथा स्यात्तस्य अल्पकालं सवृतास्रस्य च अनर्थार्थो मोच्येत, इत्येव सम्यग्धेनायातस्यास्येदमादिमૂत्रम्-‘જાણ મતે’ इत्यादि ।

॥ पुण्डरीक-कण्डरीक नाम का उन्नीसवा अध्ययन प्रारम्भ ॥

અઠારહવાં અધ્યયન સમાપ્ત હો ચુકા-અથ ૧૯ વાં અધ્યયન પ્રારંભ હોતા હૈ-इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार का संबन्ध है पूर्व अध्ययन में असमृतास्रव अथवा समृतास्रव वाले प्राणी को अर्थ एवं अनर्थ की प्राप्ति होना समर्थित किया गया है-अर्थात् असवर वालेको अनर्थ की प्राप्ति होती है और सवरवाले को इष्ट अर्थ की प्राप्ति होती है । अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि जिस प्राणी ने चिरकाल से आस्रवको समृत कर दिया है-‘परन्तु यदि वह पीठे से असमृतास्रव वाला बन जाता है तो उसके अनर्थ की प्राप्ति तथा अल्प काल भी जिसने आस्रव को समृतकर दिया है उसके अर्थ की प्राप्ति होती है । इस संबंध को लेकर प्रारंभ किये गये इस अध्ययन का यह सर्व प्रथम सूत्र है ।

पुण्डरीक-कण्डरीक नामे जोगल्लिसमु अध्ययन प्रारम्भ

અઠારમુ અધ્યયન પુર્વ થઈ ગયું છે હવે જોગલ્લીસમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે આ અધ્યયનને જોના પૂર્વના અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પૂર્વ અધ્યયનમાં અસંવૃતાસ્રવ અથવા સવૃતાસ્રવવાળા પ્રાણીને અર્થ અને અનર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વાતનું સમર્થન કરવામાં આવ્યું છે એટલે કે અસવરવાળાઓને અનર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે અને સવરવાળાઓને ઇષ્ટ-અર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે હવે આ અધ્યયનમાં સૂત્રકાર આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરી રહ્યા છે કે જે પ્રાણીએ ચિરજાળથી એટલે કે બહુ લાંબા વખતથી આસ્રવને સમૃત કરી દીધો છે, પરંતુ જો તે પાછળથી એટલે કે ભવિષ્યમાં અસંવૃતાસ્રવવાળો બની જાય છે તો તેને અનર્થની પ્રાપ્તિ તેમજ થોડા વખત સુધી પણ જેણે આસ્રવને સમૃત કરી દીધો છે તેને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે આ વાતને લઈને આરભાએલા આ અધ્યયનનું આ પહેલું સૂત્ર છે —

પાશ્ચાત્યે=પશ્ચિમેભાગે 'એગસેલગસ્સ' એગ્ગીલકસ્ય=મધ્યજમ્બૂદ્વીપમેરુપર્વતસમીપ
સ્થસ્ય એક શૈલકનામવસ્ય 'વક્ષસ્વારપન્ચયસ્મ' વક્ષસ્કારપર્વતસ્ય 'પુરત્થિમેળ'
પૌરસ્ત્યે=પૂર્વસ્યા દિશિ 'પત્થળ' અત્ર સ્થલુ પુષ્કલાવતી નામ વિજયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ।
તત્ર સ્થલુ પુન્ડરીગિણી નામ રાજધાની પ્રજ્ઞપ્તા, સા 'નવજોયણવિત્થિણા'
નવયોજનવિસ્તીર્ણા = નવયોજનવિસ્તારવતી 'દુર્વાલસજોયણાયમા' દ્વાદશ
યોજનાયામા=દ્વાદશયોજનાનિ આયામો દૈર્ઘ્યં યસ્યાઃ સા=દ્વાદશયોજનદીર્ઘેત્યર્થ,
પુન 'જાવ પન્ચક્ષ્વ દેવલોચભૂયા યાત્ પત્યક્ષદેવલોરુભૂતા=સાક્ષાત્ સ્વર્ગસદશા
પુનઃ માસાદીયા, દર્શનીયા, અભિરૂપા, પ્રતિરૂપા । તસ્યા સ્થલુ પુન્ડરીગિણ્યાઃ

પુરત્થિમેળ પત્થળ પુક્કલાવતી નામ વિજય પળ્લે) હસ પ્રકાર જમ્બૂદ્વીપ
કે પૂછને પર સુધર્મા સ્વામી બનસે કહતે હૈં-સુનો-તુમ્હારે પ્રશ્ન કા
ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈં બસ કાલ-ઔર બસ સમય મૈં હસ જમ્બૂદ્વીપ નામ કે
દ્વીપ મૈં પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમૈં, શીતા મહાનદી કે ઉત્તરદિગ્વર્તી તીર પર સ્થિત
નીલ પર્વત કે દક્ષિણ દિગ્ભાગ મૈં, તથા ઉત્તર દિગ્વર્તી શીતામુખવનપડ
કે પશ્ચિમ ભાગ મૈં, તથા એક શૈલક નામ વાલે વક્ષસ્કાર પર્વત કી પૂર્વ
દિશા મૈં પુષ્કલાવતી હસ નામ કા વિજય હૈં । શીતામુખવનપડ
કા તાત્પર્ય યહ હૈં-કિ જહાં સે શીતાનદી નીકળી હૈં બસ ઉદ્ગમસ્થાન
પર એક વનપડ હૈં । મધ્ય જમ્બૂદ્વીપ ઔર મેરુપર્વત કે સમીપ મૈં રહ્યા
હુઆ એક શૈલક નામ કા વક્ષસ્કાર પર્વત હૈં ।-(તળણ પુન્ડરિગિણીનામ
રાયદાણી પન્નત્તા, નવજોયણવિત્થિણા દુર્વાલસજોયણાયમા, જાવ પન્ચ
ક્ષ્વ દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્ઞા અભિરૂપા પઢિરૂપા) બસ

સીયામુદ્ગવનસડસ્સ પન્ચત્થિમેળ એગસેલગસ્સ વક્ષસ્વારપન્ચયસ્સ પુરત્થિમેળ
પત્થળ પુક્કલાવતી નામ વિજય પળ્લે)

આ પ્રમાણે જ બૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાબળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા
લાગ્યા કે હે જ બૂ ! સાબળો, તમારા સવાલનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે
તે કાળે અને તે સમયે આ જ બૂદ્વીપ નામક દ્વીપમા પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમા,
શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના
દક્ષિણ દિગ્ભાગમા તેમજ ઉત્તર દિશામા આવેલા શીતા મુખવનપડના પશ્ચિમ
ભાગમા, તેમજ એક શૈલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામા પુષ્ક
લાવતી નામે એક વિજય છે શીતા મુખવન-પડનો અર્થ આમ સમજવો
જોઇએ કે જ્યાથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનપડ છે
મધ્ય જ બૂદ્વીપ અને મેરુપર્વતની પાસે આવેલા એક શૈલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે

(તત્થળ પુન્ડરિગિણીનામ રાયદાણી પન્નત્તા, નવ જોયણવિત્થિણા દુર્વાલમજો
યણાયમા, જાવ પન્ચક્ષ્વ દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્ઞા અભિરૂપા પઢિરૂપા)

ટીકા—‘ જહ્ણ ભતે ’ इत्यादि । यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यास्तसमाप्तेन अष्टादशस्य शाताऽध्ययनस्य अयमर्थः प्रव्रत्तः, पुनः खलु हे भदन्त ! एकोनविंशतितमस्य शाताऽध्ययनस्य कोऽर्थः प्रव्रत्तः ? इति जम्बूस्वामी प्रश्नान्तरं सुवर्मास्वामी कथयति—एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहेव ‘ जम्बूदीवे दीवे ’ जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे ‘ पुर्वविदेहवासे ’ पूर्वविदेहे वषे शीताया महानद्याः ‘ उत्तरीये=उत्तरदिक् स्थिते कूले=तीरे ‘ नीलवतस्त दाहिणेन ’ नीलवतो दक्षिणे=नीलवतः परतस्य दक्षिणेभागे ‘ उत्तरिल्लस्त ’ उत्तरीयस्य=उत्तरदिक् स्थितस्य ‘ सीयामुहवणसण्डस्त ’ सीयामुखवनपण्डस्य=शीताया नद्या यन्मुखमुहमस्थान, तत्र यद् वनपण्डम् तस्य, ‘ पच्चत्थिमेन ’

‘ જહ્ણ ભતે ! સમણેજ ભગવયા મહાવીરેજ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ —જમ્બૂ સ્વામી શ્રી સુવર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ (જહ્ણ ભતે સમણેજ ભગવયા મહાવીરેજ જાવ સપત્તેજ અઢારસમસ્ત ણાયજ્ઞયણસ્ત અયમઢ્ઠે પળ્ણતે એગૂણવીસઠ્ઠમસ્ત ણાયજ્ઞયણસ્ત કે અઢે પળ્ણતે ?) હે ભદન્ત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને કિ જો સિદ્ધિ ગતિ નામક મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈં અઠારહવે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈં—તો ઉન્હોં શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને ૧૯ વે જ્ઞાતાધ્યયન કા કયા ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈં ? (એવ ખલુ જમ્બૂ ! તેજ કાલેજ તેજ સમણેજ ઇહેવ ‘ જમ્બૂદીવે દીવે પુર્વવિદેહવાસે સીયામ મહાનદીએ ઉત્તરિલ્લે કૂલે નીલવતસ્ત દાહિણેજ ઉત્તરિલ્લસ્ત સીયામુહવણસણ્ડસ્ત પચ્ચત્થિમેજ એગસેલગસ્ત ચક્રવારપન્થવસસ્ત

‘ જહ્ણ ભતે ! સમણેજ ભગવયા મહાવીરેજ —

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી શ્રી સુવર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે

(જહ્ણ ભતે ! સમણેજ ભગવયા મહાવીરેજ જાવ સપત્તેજ અઢારસમસ્ત ણાયજ્ઞયણસ્ત અયમઢ્ઠે પળ્ણતે એગૂણવીસઠ્ઠમસ્ત ણાયજ્ઞયણસ્ત કે અઢે પળ્ણતે ?)

હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જોમણે સિદ્ધિગતિ નામક મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધું છે—અઢારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

(એવ ખલુ જમ્બૂ ! તેજ કાલેજ તેજ સમણેજ ઇહેવ જમ્બૂ દીવે દીવે પુર્વ વિદેહવાસે સીયામ મહાનદીએ ઉત્તરિલ્લે કૂલે નીલવતસ્ત ઉત્તરિલ્લસ્ત

પાશ્ચાત્યે=પશ્ચિમેભાગે ' એગસેલગસ્ટ ' એન્ડ્રીલકસ્ય=મધ્યજમ્બૂદ્વીપમેરુપર્વતસમીપ
સ્યસ્ય એક શૈલકનામકસ્ય ' વક્ષારપચ્ચયસ્મ ' વક્ષસ્કારપર્વતસ્ય ' પુરત્થિમેળ '
પૌરસ્ત્યે=પૂર્વસ્યા દિશિ ' પત્થળ ' અત્ર સ્થલુ પુપ્પલાવતી નામ વિજયઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ।
તત્ર સ્થલુ પુષ્કરીવિણી નામ રાજધાની પ્રજ્ઞપ્તા, સા ' જવજોયણવિત્થિણ્ણા '
નવયોજનવિરત્તીર્ણા = નવયોજનવિસ્તારવતી ' દુવાલસજોયણાયમા ' દ્વાદશ
યોજનાયામા=દ્વાદશયોજનાનિ આયામો દૈર્ઘ્યં યસ્યાઃ સા=દ્વાદશયોજનદીર્ઘત્યર્થ ,
પુન ' જાવ પચ્ચક્ષ દેવલોચભૂયા યાપત્ત્વ પ્રત્યક્ષદેવલોકભૂતા=સાક્ષાત્ સ્વર્ગસદશા-
પુનઃ પ્રાસાદીયા, દર્શનીયા, અભિરૂપા, પ્રતિરૂપા । તસ્યા સ્થલુ પુષ્કરીક્રિયાઃ

પુરત્થિમેળ પત્થળ પુક્કલાવત્તમ વિજય પળ્લસ) ઇમ પ્રકાર જમ્બુસ્વામી
કે પૂઝને પર સુધર્મા સ્વામી હનસે કહતે હૈં-સુનો-તુમ્હારે પ્રશ્ન કા
ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈં હસ કાલ ઓર હસ સમય મેં હસ જમ્બુદ્વીપ નામ કે
દ્વીપ મેં પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમેં, શીતા મહાનદી કે ઉત્તરદિગ્વર્તી તીર પર સ્થિત
નીલ પર્વત કે દક્ષિણ દિગ્ભાગ મેં, તથા ઉત્તર દિગ્વર્તી શીતામુખવનપડ
કે પશ્ચિમ ભાગ મેં, તથા એક શૈલક નામ વાલે વક્ષસ્કાર પર્વત કી પૂર્વ
દિશા મેં પુષ્કલાવતી હસ નામ કા વિજય હૈં । શીતામુખવનપડ
કા તાત્પર્ય યહ હૈં-કિ જહાં સે શીતાનદી નીકલી હૈં હસ ઉદ્ગમસ્થાન
પર એક વનપડ હૈં । મધ્ય જમ્બુદ્વીપ ઓર મેરુપર્વત કે સમીપ મેં રહ્યા
હુઆ એક શૈલક નામ કા વક્ષસ્કાર પર્વત હૈં ।-(તળ પુષ્કરિગિણીનામ
રાયદાણી પન્નત્તા, જવજોયણવિત્થિણ્ણા દુવાલસજોયણાયમા, જાવ પચ્ચ
ક્ષ દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્ઞા અભિરૂપા પટિરૂપા) હસ

સીયામુદ્ગવનસદસસ પન્નવિત્થિમેળ એગસેલગસસ વક્ષારપચ્ચયસસ પુરત્થિમેળ
પત્થળ પુક્કલાવત્તમ નામ વિજય પળ્લસ)

આ પ્રમાણે જ જૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા
લાગ્યા કે હે જ જૂ ! સાભળો, તમારા સવાલનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે
તે કાળે અને તે સમયે આ જ જૂદ્વીપ નામક દ્વીપમા પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમા,
શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના
દક્ષિણ દિગ્ભાગમા તેમજ ઉત્તર દિશામા આવેલા સીતા મુખવનપડના પશ્ચિમ
ભાગમા, તેમજ એક શૈલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામા પુષ્ક
લાવતી નામે એક વિજય છે સીતા મુખવન-પડનો અર્થ આમ સમજવો
જોઈએ કે જ્યાંથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનપડ છે
મધ્ય જ જૂદ્વીપ અને મેરુપર્વતની પાસે આવેલા એક શૈલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે

(તત્તળ પુષ્કરિગિણીનામ રાયદાણી પન્નત્તા, જવ જોયણવિત્થિણ્ણા દુવાલમજો
પણાયમા, જાવ પચ્ચક્ષ દેવલોચભૂયા પાસાઈયા, દરસણિજ્ઞા અભિરૂપા પટિરૂપા)

નગર્યાઃ ઉત્તરપૌરસ્ત્યે દિગ્ભાગે નલિનીરને નામ ઉદ્યાનમ્ । તત્ત્વ ચલુ પુઢરીકિણી
રાજધાન્યાં મહાપદ્મો નામ રાજાઽઽસીન્ । તસ્ય ચલુ પદ્માવતી નામ દેવી માસીન્ ।
તસ્ય ચલુ મહાપદ્મસ્ય રાજા પુત્રો પદ્માસ્ત્યા દેવ્યા આત્મજૌ કૌ કુમારૌ માસ્તામ્ ।
'ત જહા' તથા તયોર્નામરૂપે, તદાહ—'પુઢરીય ચ કઢરીય ચ સુકુમાલ-
પાણિપાયા' પુઢરીકથ કણ્ડરીકથ સુકુમારપાણિપાદૌ કોમલકરચરણૌ । તયો
ર્મધ્યે પુઢરીરો યુરારાજાઽઽસીન્ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે 'ચેરાગમણ'

પુષ્કલાવતી ધિજય મેં પુઢરી કિની નામ રાજધાની થી । યહ નવ યોજન
વિસ્તારવાલી તથા ૧૨ યોજન કી લંબી હૈ યહ સાક્ષાત મ્બર્ગ જેસી પ્રતીત
હોતી હૈ । પ્રાસાદીયચિત્ત એવ અન્તઃકરણ કો યહ પ્રમદ્ધ કરને વાલી હૈ,
દર્શનીય-નેત્રો કો તૃપ્તિ કરને વાલી હૈ, અભિરૂપ-અસાધારણ રચના સે
યુક્ત હૈં એવ પ્રતિરૂપ હૈ—હસકે જેસી ઓર દુસરી કોઈ નગરી નહીં હૈ
એસી । (તીસેળ પુઢરિગિણીળ ણયરીળ ઉત્તરપુરતિથમે દિસિમાળ
ળલિણિવળે ણામ ઉઝ્જોળે-તત્થ ણ પુઢરિગિણીળ રાયહાણીળ મહાપડમે
ણામ રાયા હોત્થા-તસ્સળ પડમાવર્દેણામ દેવી હોત્થા, તસ્સ ણ મહાપડ
મસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાવર્દેય દેવીય અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા) ઉસ
પુઢરીકિણી નગરી કે ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગ મેં નલિનીવન નામ કાં એક
ઉદ્યાન થા । ઉસ પુઢરીકિણી રાજધાની મેં મહાપદ્મનામ કા એક રાજા
રહતા થા । ઉસકી દેવી કા નામ પદ્માવતી થા । ઉસ મહાપદ્મ રાજા કે
યહા પદ્માવતી કી કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુએ દો કુમાર થે (તં જહા પુઢરીય
ચ, કઢરીય ચ-સુકુમાલપાણિ પાયાં । પુઢરીય જુવરાયા તેળ કાલેળ

તે પુષ્કલાવતી વિજયમા પુઢરીકિણી નામે રાજધાની હતી તે નવ યોજન
જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ ધાર યોજન જેટલી લાંબી છે તે પ્રતક્ષ સ્વર્ગ
જેવી જ લાગે છે તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્તઃકરણને તે પ્રમદ્ધ કરનારી છે,
દર્શનીય-આખોળે તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ (અપૂર્વ)
રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ-એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવા છે

(તીસેળ પુઢરિગિણીળ ણયરીય ઉત્તરપુરતિથમે દિસિમાળ ણલિણિવળે ણામ
ઉઝ્જોળે-તત્થળ પુઢરિગિણીય રાયહાણીય મહાપડમે ણામ રાયા હોત્થા-તસ્સળ
પડમાવર્દેણામ દેવી હોત્થા, તસ્સળ મહાપડમસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાવર્દેય દેવીય
અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા)

તે પુઢરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમા નલિનીવન નામે
એક ઉદ્યાન હતો તે પુઢરીકિણી રાજધાનીમા મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો
હતો તેની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્મવતી
દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા એ રાજકુમાર હતા

स्थविरागमन=तस्या राजान्या नलिनीने उद्याने स्थविराणामागमनमभूत् । महा-
पद्मो राजा धर्मं श्रोतुं निर्गतः, धर्मं श्रुत्वा सजातवैराग्यः पुण्डरीक राज्ये स्थाप-
यित्वा प्रवर्जितः । अनन्तर पुण्डरीको राजा जातः, कण्डरीको युवराजः । महा-
पद्मऽनगार चतुर्दशपूर्वाणि अर्पिते । ततः खलु स्थविरा बहिर्जपदविहारं विहरन्ति ।
ततः खलु स महापद्मो ऋणि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा यावद् सिद्धः॥सु० १॥

तेण समण्ण थेरागमण, महापउमे राया णिग्गए, धम्म सोच्चा पोंडरीय
रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पोंडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया । महाप
उमे अणगारे चोद्दसपुग्वाइ अहिज्जइ, तएण थेरा ऋट्ठिया जणवयविहार
विहरति, तएण से महापउमे ऋणि वासाइ जाव सिद्धे) उनके नाम
इस प्रकार है-१ पुडरीक और दूसरा कडरीक-ये दोनों पुत्र सुकुमार
करचणवाले थे । पुडरीक को पिता ने युवराज पदप्रदान किया था । उस
काल में और उस समय में वहां स्थविरों का आगमन हुआ । महाप-
द्मराजा धर्म का व्याख्यान सुनने के लिये अपने महल से निकलकर
नलिनीवन उद्यान में आये । वहां धर्म का उपदेश सुनकर उन्हें वैराग्यभाव
उत्पन्न हो गया-सो वे पुडरीक को राज्य में स्थापितकर दीक्षित हो गये ।
पुडरीक राजा बन गया-और कडरीक युवराज हो गया । महापद्मराजर्षि
ने चौदह पूर्वों का अर्घ्यन कर लिया । इसके बाद वहां से स्थविरो ने

(त जहा-पुडरीए य, कडरीए य-सुकुमालपाणिपाया० । पुडरीए जु
राया तेण कालेण तेण समण्ण थेरागमण, महापउमे राया णिग्गए, धम्म सोच्चा
पोंडरीय रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पोंडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया । महा
पउमे अणगारे चोद्दसपुग्वाइ अहिज्जइ, तएण थेरा बहिया, जणवयविहार विह-
रति, तएण से महापउमे ऋणि वामाइ जाव सिद्धे)

तेमना न भो आ प्रभाषे छे-१ पुडरीक, अने २ कडरीक आ जने
पुत्रो सुकुमारण्ण डाय-पगवाणा हुता राज्ञे पुडरीकने युवराजपद प्रदान कर्तुं
छत्तु ते काले अने ते समये त्या स्थविरानु आगमनं यथु महापद्म राज्ञ
धर्मं व्याख्यानं साधयत्वा माटे पोताना भेटवथी नीकणीने नलिनीवन उद्या
नमा आये । त्या धर्मोपदेशं साधयन्ति तेने वैराग्यभाव उत्पन्नं थय गये
छेवटे पुडरीकने राज्यासने स्थापित करीने तेजो दीक्षित थय गया पुडरीक
राज थय गये अने कडरीक युवराज थय गये । महापद्म राजर्षिके चौ
पूर्वोनु अध्ययन करी वीधु त्वापछी स्थविरो त्याथो गडार जनपदोमा विहार

નગર્યાઃ ઉત્તરપૌરસ્ત્યે દિગ્ભાગે નલિનીવન નામ ઉદ્યાનમ્ । તત્ત્વ ચ્છલુ પુન્ડરીકિણ્યાં
રાજધાન્યાં મહાપદ્મો નામ રાજાઽઽસીન્ । તસ્ય ચ્છલુ પદ્માવતી નામ દેવી આસીન્ ।
તસ્ય ચ્છલુ મહાપદ્મસ્ય રાજ્ઞઃ પુત્રો પદ્માવત્યા દેવ્યા આત્મજૌ દ્વૌ કુમારૌ આસ્તામ્ ।
'ત જહા' તથા તયોર્નામરૂપે, તદાહ—'પુઢરીય ચ કઢરીય ચ સુકુમાલ
પાણિપાયા' પુન્ડરીકચ ચ્છડરીકચ સુકુમારપાણિપાદૌ કોમલકરચર્ણૌ । તયો
ર્મધ્યે પુન્ડરીકો યુવરાનાઽઽસીન્ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે 'થેરાગમણ'

પુષ્કલાવતી વિજય મેં પુઢરી કિની નામ રાજધાની થી । યહ નવ યોજન
વિસ્તારવાલી તથા ૧૨ યોજન કી લઘી હૈ યહ સાક્ષાત્ત સ્વર્ગ જેસી પ્રતીત
હોતો હૈ । પ્રાસાદીયચિત્ત એવ અન્તઃકરણ કો યહ પ્રસન્ન કરને વાલી હૈ,
દર્શનીય-નેત્રોં કો તૃપ્તિ કરને વાલી હૈ, અભિરૂપ-અસાધારણ રચના સે
યુક્ત હૈ એવ પ્રતિરૂપ હૈ-હસકે જેસી ઓર દૂસરી કોઈ નગરી નહીં હૈ
એસી । (તીસેણ પુઢરિગિણીય ણયરીય ઉત્તરપુરત્થિમે દિસિભાણ
ળલિણિવણે ણામ ઉજ્જોણે-તત્થ ણ પુઢરિગિણીય રાયહાણીય મહાપડમે
ણામં રાયા હોત્થા-તસ્સણ પડમાવર્ઘ્ણામ દેવી હોત્થા, તસ્સ ણ મહાપડ
મસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાવર્ઘ્ણ દેવીય અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા) ઉસ
પુઢરીકિણી નગરી કે ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગ મેં નલિનીવન નામ કો એક
ઉદ્યાન થા । ઉસ પુઢરીકિણી રાજધાની મેં મહાપદ્મનામ કો એક રાજા
રહતા થા । ઉસકી દેવી કો નામ પદ્માવતી થા । ઉસ મહાપદ્મ રાજા કે
ચહા પદ્માવતી કી કુક્ષિ સે ઉત્પન્ન હુણ દો કુમાર થે (ત જહા પુઢરીય
ચ, કઢરીય ચ-સુકુમાલપાણિ પાયાં । પુઢરીય જુવરાયા તેણ કાલેણ

તે પુષ્કલાવતી વિજયમા પુઢરીકિણી નામે રાજધાની હતી તે નવ યોજન
જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ બાર યોજન જેટલી લાંબી છે તે પ્રતક્ષ સ્વર્ગ
જેવી જ લાગે છે તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્તઃકરણને તે પ્રતક્ષ કરનારી છે,
દર્શનીય-આખેને તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ (અપૂર્વ)
રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ-એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવી છે

(તીસેણ પુઢરિગિણીય ણયરીય ઉત્તરપુરત્થિમે દિસિભાણ ણલિણિવણે ણામ
ઉજ્જાણે-તત્થણ પુઢરિગિણીય રાયહાણીય મહાપડમે ણામ રાયા હોત્થા-તસ્સણ
પડમાવર્ઘ્ણામ દેવી હોત્થા, તસ્સણ મહાપડમસ્સ રણ્ણો પુત્તા પડમાવર્ઘ્ણ દેવીય
અત્તયા દુવે કુમારા હોત્થા)

તે પુઢરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગમા નલિનીવન નામે
એક ઉદ્યાન હતો તે પુઢરીકિણી રાજધાનીમા મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો
હતો તેની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતું તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્મવતી
દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા બે રાજકુમાર હતા

સ્થવિરાગમન=નસ્યા રાજ ગાન્ધ્યા નલિનીવને ડ્યાને સ્થવિરાણામાગમનમ્ભૂત । મહા-
પદ્મો રાજા ધર્મ શ્રોતુ નિર્ગતઃ, ધર્મ શ્રુત્યા સજાતવૈરાગ્યઃ પુઢરીક રાજ્યે સ્થાપ-
યિત્વા પ્રવ્રનિતઃ । અનન્તર પુઢરીકો રાજા જાતઃ, કઢરીકો યુવરાજઃ । મહા-
પદ્મઽનગાર ચતુર્દશપૂર્વાણિ અગીતે । તતઃ સ્વલુ સ્થવિરા વહિર્જપદવિહાર વિહરન્તિ ।
તતઃ સ્વલુ સ મહાપદ્મો યદ્દાનિ વર્ષાણિ શ્રામણ્યપર્યાય પાલયિત્વા યાવદ્ સિદ્ધઃ॥શ્લૃ૦ ૧॥

તેણં સમણ થેરાગમણ, મહાપડમે રાયા ણિગ્ગણ, ધમ્મ સોઽવા પોંડરીય
રજ્જે ઠવેત્તા પવ્વહણ । પોંડરીય રાયા જાણ, કઢરીય જુવરાયા । મહાપ
ડમે અણગારે ચોદ્દસપુવ્વાહ અહિજ્જહ, તણ થેરા વહિયા જણવયવિહાર
વિહરતિ, તણં સે મહાપડમે વહ્ણિ વાસાહ જાવ સિદ્ધે) ઉનકે નામ
હસ પ્રકાર હૈ-૧ પુઢરીક ઔર દૂસરા કઢરીક-યે દોનો પુત્ર સુકુમાર
કરચણવાલે થે । પુઢરીક કો પિતા ને યુવરાજ પદપ્રદાન કિયા થા । ઉસ
કાલ મેં ઔર ઉમ સમય મે વહા સ્થવિરોં કા આગમન હુઆ । મહાપ-
દ્મરાજા ધર્મ કા વ્યાખ્યાન સુનને કે લિયે અપને મહલ સે નિકલકર
નલિનીવન ઉધ્યાન મેં આયે । વહા ધર્મ કા ઉપદેશ સુનકર ઉન્હે વૈરાગ્ય ભાવ
ઉત્પન્ન હો ગયા-સો વે પુઢરીક કો રાજ્ય મે સ્થાપિતકર દીક્ષિત હો ગયે ।
પુઢરીક રાજા ઘન ગયા-ઔર કઢરીક યુવરાજ હો ગયા । મહાપદ્મરાજપિ
ને ચૌદહ પૂર્વો કા અધ્યયન કર લિયા । હસકે વાદ વહાં સે સ્થવિરો ને

(ત જહા-પુઢરીય ય, કઢરીય ય-સુકુમાલપાણિપાપા૦ । પુઢરીય જુવ-
રાયા તેણ કાલેણ તેણ સમણ થેરાગમણ, મહાપડમે રાયા ણિગ્ગણ, ધમ્મ સોઽવા
પોંડરીય રજ્જે ઠવેત્તા પવ્વહણ । પોંડરીય રાયા જાણ, કઢરીય જુવરાયા । મહા
પડમે અણગારે ચોદ્દસપુવ્વાહ અહિજ્જહ, તણ થેરા વહિયા, જણવયવિહાર વિહ-
રતિ, તણ સે મહાપડમે વહ્ણિ વાસાહ જાવ સિદ્ધે)

તેમના નામો આ પ્રમાણે છે-૧ પુઢરીક, અને ૨ કઢરીક આ બંને
પુત્રો સુકોમળ હાથ-પગવાળા હતા રાજાએ પુઢરીકને યુવરાજપદ પ્રદાન કર્યું
હતું તે કાળે અને તે સમયે ત્યા અચરિતોનુ આગમન થયુ મહાપદ્મ રાજા
ધર્મનુ આખ્યાન સાંભળવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળીને નલિનીવન ઉધા-
નમા આવ્યો ત્યા ધર્મોપદેશ સાંભળીને તેને વૈરાગ્યભાવ ઉત્પન્ન થઇ ગયો
છેવટે પુઢરીકને રાજ્યાસને સ્થાપિત કરીને તેઓ દીક્ષિત થઇ ગયા પુઢરીક
રાજા થઇ ગયો અને કઢરીક યુવરાજ થઇ ગયો મહાપદ્મ રાજપિએ ચૌ-
પૂર્વોનુ અધ્યયન કરી લીધુ ત્યારપછી સ્થવિરો ત્યાથી બહાર જનપદોમા વિહાર

मूढ-तर्पण थेरा अक्षया कयाई पुणरवि पुंडरिगिणीए
 रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसटा, पोंडरीए राया
 णिग्गए । कंडरीए महाजणसइ सोच्चा जहा महावलो जाव
 पज्जुवासइ । थेरा धम्म परिक्खेति पुंडरीए समणोवासए जाए
 जाव पडिगए । तएण से कंडरीए उट्टाए उट्टेइ, उट्टाए उट्टिता
 जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवर पुण्डरीय रायं आपुच्छामि,
 जाव पव्वयामि । अहासुह देवाणुप्पिया । तएण से कंडरीए
 जाव थेरे वदइ णमसइ वंदित्ता णमसित्ता थेराण अंतियाओ
 पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खामित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरु
 हइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ
 करयल जाव पुंडरीयं एव वयासी-एवं तल्ल देवाणुप्पिया । मए
 थेराण अतिए जाव धम्मे निसस्से से धम्मे जाव अभिरुइए
 तर्पणं देवाणुप्पिया । जाव पव्वइत्तए । तएण से पुंडरीए कंड-
 रीए एवं वयासी-माणं तुम देवाणुप्पिया । इयाणि मुडे जाव
 पव्वयाहि, अह णं तुमं महयार रायाभिस्सेएणं अभिसिंचामि ।
 तएण से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमह णो आढाइ णो
 परिजाणइ तुसिणीए सच्चिट्ठइ । तएण पुण्डरीए राया कंडरीय
 दोच्चपि तच्चपि एव वयासी-जाव तुसिणीए सच्चिट्ठइ । तएणं
 पुण्डरीए कंडरीय कुमार जाहे नो सचाएइ, बहूहिं आघवणाहि
 बाहिर जनपदों में विहार कर दिया । महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक
 आम्रपथ पर्याय का पालनकर यावत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १ ॥

भाटे नीकणी पड्या मडापन्न अनगारे धरुा वषी सुधी आम्रपथ पर्यायतु
 पावन करीने यावत् सिद्धपदने प्राप्त करी वीधु ॥ सूत्र १

य पणवणाहि य४ ताहे अकामए चेव एयमट्ट अणुमन्नित्था
जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिचइ जाव थेराण सीसभिन्खं
दलयइ । पव्वइए अणगारे जाए एगारसगविऊ । तएण थेरा
भगवंतो अन्नया कयाइं पुडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ
उज्जाणाओ पडिणिक्खमति पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवय-
विहारं विहरति ॥ सू० २ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततः खलु ते स्वविरा अन्यदा कदाचित्
पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समग्रता-समगताः । तेषा समा-
गमन श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितु निर्गतः । अनन्तरम्—कडरीको ‘महा-
जणसइ’ महाजनशब्द=स्थविरान् वन्दितु कामाना गच्छता बहूना जनाना
कोलाहल श्रुत्वा ‘जहा महाजलो जाव पणज्जुवासइ’ यथामहाबलो यावत्पर्यु-
पास्ते । महाबल इव स्वविराणा समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्यित्वा सेवते ।
स्थविरा धर्मं ‘परिकुहेति’ परिक्रिययन्ति=उपदिशन्तीत्यर्थः । तेरुपदिष्ट धर्मं श्रुत्वा
पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः ‘जाव पडिगए’ यावत्प्रतिगतः=स्थविरान् वन्दित्वा

‘तएण ते येरा अन्नया कयाइ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (ते थेरा) वे स्वविर (अन्नया
कयाइ किसी एक समय (पुणरवि) फिर से (पुडरिगीणीए रायहाणीए
णलिनिवणे उज्जाणे समोसदा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुडरीकिणी राज-
धानी में आये । वहा वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे । पुडरीक राजा
उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहा जाने के लिये
अपने महल से निकले । (कडरीए महाजणसइ सोचा जहा महाबलो
जाव पण्जुवासइ, थेरा धम्म परिकुहेति, पुडरीए समणोवासए जाए जाव

‘तएण ते येरा अन्नया कयाइ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यापडी (ते थेरा) ते स्थविर (अन्नया कयाइ)
कोई एक वधते (पुणरवि) द्वी (पुडरिगीणीए रायहाणीए णलिनिवणे उज्जाणे
समोसदा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुडरीकिणी राजधानीभा आल्या त्या तेओ
नलिनीवन उद्यानभा रोडाया पुडरीक राज तेमनु आगमन सालणीने धर्मानु
व्याख्यान सालणवानी उच्छाथी त्या जवा माटे पोताना मडेलथी नीकल्या
(कडरीए महाजणसइ सोचा जहा महाबलो जाव पण्जुवासइ, थेरा धम्म परि

मूलम्—तएण थेरा अज्झया कयाइ पुणरवि पुडरिगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए । कंडरीए महाजणसइ सोच्चा जहा महावलो जाव पज्जुवासइ । थेरा धम्म परिकहेति पुडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए । तएण से कंडरीए उट्टाए उट्टेइ, उट्टाए उट्टित्ता जाव से जहेयं तुव्वे वदह ज णवर पुण्डरीय राय आपुच्छामि, जाव पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया । तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ णमसइ वंदित्ता णमसित्ता थेराण अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरु हइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ करयल जाव पुंडरीय एवं वयासी—एवं खल्ल देवाणुप्पिया । मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए तएणं देवाणुप्पिया । जाव पव्वइत्तए । तएण से पुडरीए कंडरीए एव वयासी—माणं तुम देवाणुप्पिया । इयाणि मुंडे जाव पव्वयाहि, अह णं तुमं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि । तएण से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो षयमट्ठ णो आढाइ णो-परिजाणइ तुसिणीए सचिट्ठइ । तएण पुण्डरीए राया कंडरीय दोच्चपि तच्चपि एव वयासी—जाव तुसिणीए सचिट्ठइ । तएणं पुण्डरीए कंडरीय कुमार जाहे नो सचाएइ, बहूहि आघवणाहि बाहिर जनपदों में विहार कर दियो । महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालनकर योवत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १ ॥

भाटे नीकणी पड्या महापद्म अनगारे षष्ठा वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायत्त पालन करीने यावत् सिद्धपदने प्राप्त करी दीधु ॥ सूत्र १ ॥

य पणवणाहि य४ ताहे अकामए चेव एयमट्ट अणुमन्नित्था
जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिचइ जाव थेराणं सीसभिक्ख
दलयइ । पव्वइए अणगारे जाए एगारसंगविऊ । तएण थेरा
भगवतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ
उज्जाणाओ पडिणिक्खमति पडिणिक्खमिन्ता वहिया जणवय-
विहारं विहरंति ॥ सू० २ ॥

टीका—‘तएण ते’ इत्यादि । ततः खलु ते स्थविरा अन्यदा कदाचित्
पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समग्रता-समगताः । तेषा समा-
गमन श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितु निर्गतः । अनन्तरम्—पुण्डरीको ‘महा-
जणसद्’ महाजनसद=स्थविरान् वन्दितु कामाना गच्छता बहूना जनाना
कोलाहल श्रुत्वा ‘जहा महाजलो जाव पज्जुवासइ’ यथामहाजलो यावत्पर्यु-
पास्ते । महाबल इव स्थविराणा समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्यित्वा सेवते ।
स्थविरा धर्म ‘परिकरंति’ परिकथयन्ति=उपदिशन्तीत्यर्थः । तैरुपदिष्ट धर्मं श्रुत्वा
पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः ‘जाव पडिगए’ यावत्प्रतिगतः=स्थविरान् वन्दित्वा

‘तएण ते थेरा अन्नया कयाइ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (ते थेरा) वे स्थविर (अन्नया
कयाइ किसी एक समय (पुणरवि) फिर से (पुंडरिगीणीए रायहाणीए
णलिनिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुंडरीकिणी राज-
धानी में आये । वहा वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे । पुंडरीक राजा
उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहा जाने के लिये
अपने महल से निकले । (कडरीए महाजणसद् सोचा जहा महाजलो
जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परिकहेति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव

‘तएण ते थेरा अन्नया कयाइ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्पारपठी (ते थेरा) ते स्थविर (अन्नया कयाइ)
कैध ओक वपते (पुणरवि) द्वी (पुंडरिगीणीए रायहाणीए णलिनिवणे उज्जाणे
समोसढा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुंडरीकिणी राजधानीमा आव्या त्या तेओ
नलिनीवन उद्यानमा देगया पुंडरीक राजा तेमनु आगमन सावणीने धर्मनु
व्याख्यान सावणवानी धियाथी त्या जवा भाटे पानाना भडेवथी नीकव्या
(कडरीए महाजणसद् सोचा जहा महाजलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परि

नमस्वित्वा प्रतिनिवृत्तः । ततः खलु कडरीक ' उट्टाण ' उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति, उत्थया उत्थाय ' जाय ' यात् स्थितिान् प्रन्दित्वा नमस्वित्वा एव मन्वदत्- ' से जहेय तुम्हे वदह ' तद्यवेद पुय वदय=हे देवानुमिताः । पूय यया यद् वदथ, तत्तथैव, ' ज णवर ' यणवर=यो विशेष सत्त्वम्-यदह पूर्वे पुण्डरीक राजानम् आपृच्छामि । तत खलु ' जाय पव्वयामि ' पावन् प्रव्रजामि ।

पडिगण) इसके बाद कडरीक पुनराज स्थिरों को वदना करने के लिये जानेवाले अनेक मनुष्यों का कोलाहल सुनकर महाबल राजा की तरह स्थविरो के पास गया-वहा जाकर उसने उनकी वदना की-नमस्कार किया । वदना नमस्कार कर फिर उसने उनकी पर्युपासना की । स्थविरो ने धर्म का उपदेश दिया । उस उपदेश को सुनकर पुडरीक श्रमणोपासक बन गया । बाद में वह स्थविरो को वदना और नमस्कार कर अपने स्थान पर वापिस वहा से लौट आया । (तण्ण से कडरीण उट्टाए उट्टेह, उट्टाए उट्टित्ता जाव से जहेय तुम्हे वदह, ज णवर पुडरीय राय आपु क्कामि, तण्ण जाव पव्वयामि-अहासुह देवाणुप्पिया । तण्ण से कडरीए जाव थेरे वदह, नमसह, वदित्ता नमसित्ता थेराण अतियाओ पडि-निक्खमह) इसके बाद कडरीक उत्थानशक्ति से उठा-उत्थानशक्ति-उठने की शक्ति से उठकर उसने स्थविरो को वदना की-नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा-हे

कहेत्ति, पुडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगण) त्थारपणी कडरीक पुनराज स्थविरोनी वदना करवा भाटे उपडेवा अनेक भावुसेने। बोधाट सावणीने भडाअय राजनी जेम स्थविरोनी पासे गये। त्या जधने तेछे तेभने वदन अने नमस्कार कया वदना अने नमस्कार करीने तेछे तेभनी पर्युपासना करी स्थविरोअे धर्मोपदेश आये। ते उपदेशने सावणीने पुडरीक श्रमणोपासक णनी गये। त्थारपणी ते स्थविरोने वदन तेभज नमन करीते पोताना निवास-स्थाने पाछे आवतो रह्यो

(तण्ण से कडरीए उट्टाए उट्टेह, उट्टाए उट्टित्ता जाव से जहे य तुम्हे वदह ज णवर पुडरीय राय आपुच्छामि, तण्ण जाव पव्वयामि-अहासुह देवाणु प्विया । तण्ण से कडरीए जाव थेरे वदह, नमसह, वदित्ता, नमसित्ता थेराण अतियाओ पडिनिक्खमह)

त्थारपणी कडरीक उत्थान शक्ति वडे छिलो थयो, उत्थान शक्ति-उभा थवानी शक्ति वडे छिलो थधने तेछे स्थविरोने वदन तेभज नमस्कार कया वदना अने नमस्कार करीने तेछे तेभने आ प्रभाछे विनती

इति तद् वचन श्रुत्वा ते स्थविरा ' प्रोचुः ' अहामुह देवाणुप्पिया ' यथासुख हे देवानुप्पिया ! हे देवानुप्पिय ! यथा तव सुखरुर भवेत् तथा कुरु । ततः खलु स कण्डरीको यावत् स्थविरान् पन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिकत्=ममीपात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य, तमेव ' चाउग्घट ' चतुर्घट=चतस्रो घण्टा यस्मिन् स तम्=घण्टा चतुष्टयोपेतम् अवस्थ दूरोहति, यान्त प्रत्यवरोहति=स्थादवतरति । अवतरणानन्तर यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, ' करयल जाव ' करतल यावत्=करतलपरिगृहीत शिर आवत्तं दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा पुण्डरीकमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्पिय ! मया स्थविराणामन्तिके यावद् धर्मो निशान्त =श्रुत', स धर्मः=स्थविरप्रोक्तो धर्मः यावत् अभिरुचित' । तत् खलु हे देवानुप्पिय ! ' जाव पव्वड्छए ' यान्त प्रजितुम्=हे देवानुप्पियाः ! भवद्भिरभ्यनुज्ञातो स्थविराणामन्तिके प्रजितुमिच्छामीतिभावः ।

देवानुप्पियो ! आप जैसा कहते हैं-वह वैसा ही है-मेरी भावना उसे सुनकर सयम लेने की हो गई है-अतः सयम धारण करने के पहिले मैं पुडरीक राजा से इस विषय में पूछ आता हूँ उसके बाद सयम धारण करना चाहता हूँ । इस प्रकार उसके वचन सुनकर उन स्थविरों ने उससे कहा-हे देवानुप्पिय ! तुम्हे जैसे सुख हो-तुम वैसा करो-इसके बाद कण्डरीक ने स्थविरों को वदना की-नमस्कार किया और वदना नमस्कारकर वह उनके पास से चला आया (पडिनिक्खमित्ता) आकर के (तमेवचाउग्घट आसरह दुरुहड, जाव पव्वोरुहड, जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छड, करयल जाव पुडरीय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसते से धम्मे जाव अभिरुडए

हे देवानुप्पियो ! तमे जेम कडे छे ते भरेणर तेम छे आ भधु सालणीने सयम अडधु करवान्नी भारी धुच्छा थर्ध गध ठे अेटवा भाटे सयम धारधु करता पडेवा हु पुडरीक राजने आ विषे पूछी आबु छु त्थारपछी हु सयम धारधु करवा आहु छु आ प्रभाणे तेना पयनेा सालणीने ते स्थविरेअे तेने कहु के हे देवानुप्पिय ! तमने जेमा सुण भणे तेम करे त्थारपछी उडरीके स्थविरेने वदन तेमअ नमस्कार करीने ते तेमनी पासेथी आवतो रहो (पडिनिक्खमित्ता) आवीने,

(तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहड, जाव पव्वोरुहड, जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छड, करयल पुडरीय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसते से धम्मे जाव अभिरुडए-तण्ण देवाणुप्पिया !

ततः पुण्डरीकः पुण्डरीरमेवमसीत्-मा गच्छ त्वं हे देवानुप्रिय ! भ्रातः इदानीं
 मुण्डो यावत् प्रयत्नं अहं सन्तु त्वा महता २ 'रायाभिसेरण' राजाभिषेकेण
 'अभिसिंचामि' = अभिषेचयामि । ततः गच्छ तं पुण्डरीको युरागजः पुण्डरीकस्य
 राज्ञ एतमर्थं नो जादियते = तस्य राज्याभिषेकरूपमर्थं नो मनुते,
 'नो परिजाणइ' नो मतिमानानि = न स्वीकरोति 'तुमिणीय सविद्ध' 'तूष्णीकः

-तण्ण देवाणुप्पिया ! पण्डित्तण ! तण्ण से पुण्डरीण कडरीण एव वयासी
 -माण तुम देवाणुप्पिया ! इयाणि मुढे जाव पण्ययाहि-अहं तुम
 महया २ रायाभिसेरणं अभिसिंचामि) वह वह आया-जहा चतुर्थदो
 पेत भपना अश्वरथ रया जहा या । वह आकर वह उसपर चढ़ गया
 -चढ़कर वह जहा पुण्डरीक राजा थे वहां आया-जहां आते ही वह रथ
 से नीचे उतरा । नीचे उतरकर पुण्डरीक राजा के पास गया-
 वहा जाकर उसने पुण्डरीक राजा को दोनों हाथ (जोड़कर नम
 स्कार किया-बाद में इस प्रकार कहने लगा-हे देवानुप्रिय मैंने स्थ
 विरो के पास धर्म का उपदेश सुना है-वह मुझे बहुत रुचा है इसलिये
 हे देवानुप्रिय ! मैं आपसे आज्ञापित होकर उन स्थविरो के पास समय
 लेना चाहता हूँ-इस प्रकार कटरीक की बात सुनकर पुण्डरीकने उससे
 इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस समय मुडित होकर स्थविरो
 के पास समय धारण मतकरों मैं बड़े जोर शोर के उत्सव के साथ
 तुम्हारा राज्याभिषेक करना चाहता हूँ । (तण्ण से कडरीए पुण्डरीयस्स

जान पण्यइत्तए ! तण्ण से पुण्डरीए कडरीए एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया !
 इयाणिमुढे जाव पण्ययाहि अहं तुम महया २ रायाभिसेरण अभिसिंचामि)

ते त्या आये ज्ञा यतुर्धटवाणे पोताने अश्वरथ छेतो त्या आवीने
 ते तेभा जेसी गये, अने जेसीने ते ज्ञा पुण्डरीक राजा छेतो त्या गये त्या
 पडोयता ज ते स्थ उपस्थी नीचे उतर्यो, नीचे उतरने पुण्डरीक राजांनी पासे
 गये त्या जधने तेले जने हाथ जेडीने पुण्डरीक राजांने नमस्कार क्यो अने
 त्यारपछी तेले तेभने विनती करता आ प्रभाळे कछु के छे देवानुप्रिय ! मे
 स्थविरोनी पासेथी धर्मोपदेश सांलज्यो छे ते भने प्रमज्ज गभी गये छे
 जेथी छे देवानुप्रिय ! हु तमारी आज्ञा मेजवीने स्थविरोनी पासेथी समय
 ग्रहण करवा धम्म छु आ प्रभाळे पुण्डरीकनी बात सांलजीने पुण्डरीक तेने आ
 प्रभाळे कछु के छे देवानुप्रिय ! तमे हंमल्या मुडित यधने स्थविरोनी पासेथी समय
 धारण करो नहि हु मोटा उत्सव जावे तमारे राज्याभिषेक करवा ३

સતિષ્ઠતે=તમથં ન સ્વીકૃતવાન્ કેવલ મૌનમવલમ્બ્ય મ્થિતઃ । તતઃ સ્વલુ પુણ્ડ-
રીકો રાજા કણ્ડરીક ખ્રાતર દ્વિતીયમપિ તૃતીયમપિ ગારમ્ ' એવ 'પૂર્વોક્તરૂપેણ
અવાદીત્-' જાત્વ તુસિળીષ સચિદ્વઢ ' યાત્વ-તુણ્ણીકઃ સતિષ્ઠતે । તતઃ સ્વલુ
પુણ્ડરીકઃ કણ્ડરીક યદા ' નો સચાણ્ડ ' નો જ્ઞતોતિ = ન સમર્થો ભવતિ
વહુમિ ' આઘવળાહિ ય ' આરુપનામિથ-આરુપનામિ -પ્રમજ્યાવિગેવિમિ
રાહ્યાનૈઃ ' પળવળાહિ ય ' પ્રનાપનામિથ ' અહ તવ જ્યેષ્ઠભ્રાતાઽસ્મિ, તવ હિતં
યેન ભવતિ, તદેવ કથયામિ, ઇત્યાદિ રૂપૈઃ પ્રજાપનવાચ્યૈઃ એવ ' વિળવળાહિ ય '
વિજ્ઞાપનામિઃ યિનિતમૃદુવચનાવલિરૂપર્વાક્રમવચનૈઃ, તથા ' સળવળાહિ ય '
સજ્ઞાપનામિઃ ' પ્રમજ્યાયા મહાન્ કપ્ટો ભવતિ ' ઇત્યાદિ સ્વામીપ્સિતસજ્ઞાપકૈર્વાક્યૈશ્ચ

રળ્ણો ણ્યમઢ્ઢ ણો આઢાઈ, ણો પજાણઈ, તુસિળીષ સચિદ્વઢ, તણ પુઢ-
રીક રાયા કઢરીયં દોચ્ચપિ તચ્ચપિ એવ વયાસી જાત્વ તુમિળીષ સચિ-
દ્વઢ, તણ પુઢરીક કઢરીય કુમાર જાહે નો સચાણ્ડ, ગ્ઢ્ઢિં આઘવળાહિ
ય પળવળાહિ ય ૪ તાહે અકામણ ચેવ ણ્યમઢ્ઢ અણુમન્નિત્યા જાત્વ
ણિચ્છમળામિસેણ અમિસિચ્છ જાત્વ ચેરાળ સીસમિચ્છ દલયઈ)
કઢરીક કુમારને પુઢરીક રાજા કી ઇસ યાત કો આદર કી દૃષ્ટિ સે
નહીં દેખા-નહીં માના-ઔર ન ડસે સ્વીકાર હી ક્રિયા-કેવલ ડુપચાપ
હી રહા । પુઢરીક રાજા ને જય કઢરીક કુમાર કો ડુપચાપ દેખા-તજ
ડસને ઢુધારા ઔર તિધારા મી ડસસે ંસા હી કહા-પરન્તુ ડમને ઇસ
યાત પર ઘિલકુલ હી ધ્યાન નહીં દિયા કેવલ ડુપચાપ હી રહા-। અતઃ
જય પુઢરીક રાજા કઢરીક કુમાર કો ડસકે ધ્યેય સે વિચલિત કરને

(તણ સે કઢરીક પુઢરીયસસ રળ્ણો ણ્યમઢ્ઢ ણો આઢાઈ, ણો પરિજાણઈ,
તુસિળીષ સચિદ્વઢ, તણ પુઢરીક રાયા કઢરીયં દોચ્ચપિ તચ્ચપિ એવ વયાસી
જાત્વ તુસિળીષ સચિદ્વઢ, તણ પુઢરીક કઢરીય કુમાર જાહે નો સચાણ્ડ, ગ્ઢ્ઢિં
આઘવળાહિ ય પળવળાહિ ય ૪ તાહે અકામણ ચેવ ણ્યમઢ્ઢ અણુમન્નિત્યા જાત્વ
ણિચ્છમળામિસેણ અમિસિચ્છ જાત્વ ચેરાળ સીસમિચ્છ દલયઈ)

કડગીક કુમારે પુઢરીક રાજાની આ વાતતુ સન્માન કર્યું નહિ-માની
નહિ અને તેનો ંીકાર પણ કર્યો નહિ, ક્ષત્ત તે મૂગો થઈને બેઠી જ રહ્યો
પુઢરીક રાજાએ ન્યાદે કડરીક કુમારને મૂગો મૂગો બેઠી રહેલો બેઠો ત્યારે
તેમણે બીજી વાર અને ત્રીજી વાર પણ તેને આ પ્રમાણે જ કહ્યું પરંતુ તેણે
આ વાતની સહજ પણ દરકાર કરી નહી, ક્ષત્ત મૂગો થઈને બેઠી જ રહ્યો
છેવટે ન્યાદે પુઢરીક રાજા કડરીક કુમારને તેના ધ્યેયથી મક્કમ વિચારથી

‘आयचित्तर’ आर्यापयितु ष=मर्षधापयिरोपयितु न शनोतीति पूर्वण सम्बन्धः,
 ‘ताहे’ तदा ‘अरामण चेय’ अरामण ण्य=अनिरुद्ध एव ‘एयमद्’ एतम-
 र्थम्-पण्डरीकागिलपित प्रव्रज्यास्पम्, ‘जणुमन्निताया’ अत्रमन्यत=स्वीकृत
 चान्, ‘जाय णिरुचमणामिसेण्ण’ यायन् नि रुमणामिपेकेण ‘स्वीकरणानन्तर
 निष्क्रमणोपयोगि वस्तुज्ञानगुपनीय सविधि दीक्षाभिपेकेण अभिसिञ्चति, ‘जाय
 थेराण सीमभित्तय दलयड’ यायत्-स्थविरेभ्य शिष्यभिक्षाम्=अभियेकानन्तर स
 पुण्डरीको राजा पण्डरीक शिषिकाया समुपदेश्य महता समारोहेण सह नलिनी
 यने उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्य स्थविरेभ्यः स्यत्तुभ्रातर शिष्यभिक्षा
 ददाति । अनन्तर स पण्डरीकः प्रव्रजित सन् अनगारो जातः । तथा ‘एका
 रसगविज्ज’ एकादशाह्वित्=एकादशाह्वानरात् जातः । ततः खलु स्थविरा भग

के लिये आर्यापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा
 सज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो गये-तब उन्होंने बिना इच्छा के ही
 कडरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के
 बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ
 चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षाभिपेक से अभिसिञ्चन किया ।
 अभिपेक के बाद पुण्डरीक राजा कडरीक को शिषिका में बैठाकर बड़े
 समारोह के साथ नलिनीवन में आये । वहाँ आकर उन्होंने स्थविरों के
 लिये अपने लघुभाई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया । इसके
 बाद कडरीक (पण्डित अणगारेजाए) प्रव्रजित होकर अनगारावस्था
 सरत्र हो गये । (एगारसगविज्ज,=तएण थेरा भगवतो अन्नया कयाइ
 पुण्डरिणिणीओ नयरीओ णालिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति,

विवक्षित करत भाटे आर्यापनाओ, प्रज्ञापनाओ, विज्ञापनाओ, सज्ञाप
 नाओ वडे पण्ण समर्थ यध शक्या नहि त्थारे तेमहे ध्विछा न होवा छताओ
 उडरीक कुमारने दिक्षाग्रहण करवानी स्वीकृति आपी दीधी स्वीकृति आपी
 आइ तेमहे निष्क्रमणने लगती गधी वस्तुओ भगवी न्थारे वस्तुओ आपी
 गध त्तारे तेमहे तेनु विधिसर दीक्षाभिपेक वडे अभिसिञ्चन कयुं अभिपेक
 कया आइ पुण्डरीक राज उडरीकने पालणीमा जेसाडीने लारे सभारेडनी साथे
 नलिनी वनमा आओ त्था आवीने तेमहे स्थविराने पोताना नाना लाधने
 शिष्यना रूपमा आपी दीधे त्थारपणी उडरीक (पण्डित अणगारे जाए)
 प्रव्रजित यधने अनगारावस्था स पत्त यध गये।

(एगारसगविज्ज-तएण थेरा भगवतो अन्नया कयाइ पु नय

वतो ज्यदा रुदाचित् पुण्डरीकिण्या नगर्या नलिनीयनात् उद्यानात् प्रतिनिष्क्राम्यन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य वहिर्जनपदविहार विहरन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहि अतेहि य पंतेहि य जहा सेलागस्स जाव दाहवक्कतिए यावि विहरइ । तएणं थेरा अन्नया कयाइ जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, णलिणिवणे समोसढा, पोंडरीए णिग्गए धम्मं सुणेइ । तएणं पोंडरीए राया धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वंदइ णमसइ वदित्ता णमंसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वावाहं सरोय पासइ, पासित्ता, जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, थेरे भगवते वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमसित्ता एव वयासी—अहण्णं भते । कडरीयस्स अणगारस्स अहा पवत्तेहि ओसहभेसज्जेहि जाव तेइच्छं आउट्टामि, त तुव्वे ण भते । मम जाणसालासु समोसरह । तएण थेरा भगवतो पुंडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, जाव उवसपज्जित्ताणं

पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरति) धीरे २ वे ग्यारह अगोंके पाठी भी ननगचे हसके बाद उन स्थविर भगवनों ने किसी एक दिन पुंडरीकिणी नगरी के उम नलिनीवन नामके उद्यान से विहार किया सो विहार कर वे बाहिर के जनपदों में विचरने लगे ॥ सू० २ ॥

रीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमिति, पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरति)

धीमे धीमे तेमणे अगियाओ अ जोनु अधयन करी लीयु त्थारणाए ते स्थविर लागवतोओ केओ ओके द्विसे पुंडरीकिणी नगरीना ते नलिनीवन नामना उद्यानथी विहार कुओ, विहार करीने तेओ णहारना जनपदोभा विहरणु करवा लाग्या ॥ सूत्र २ ॥

‘आयचित्तर’ आगयापयितु ष=मर्षयामनिरोधयितु न शक्नोतीति पूर्वेण मन्त्रम्,
 ‘ताहे’ तदा ‘अरुमण चेय’ अरुमण एव=अनिच्छ एव ‘पयमद्’ एतम-
 र्थम्-कण्ठरीकामिलपित मन्त्रज्यारूपम्, ‘अणुमन्निस्था’ अत्रमन्त्रत=स्वीकृत
 वान्, ‘जाय निरुवमणामिमेण’ यायन् निष्क्रमणामिपेकेण ‘स्वीकरणानन्तर
 निष्क्रमणोपयोगि’ वस्तुजातगुणनीय सविधि दीक्षामिपेकेण अभिसिञ्चति, ‘जाय
 थेराण सीमभित्तल दलयड’ यायन्-स्थविरेभ्यः शिष्यमिक्षाम्=अभिपेक्षानन्तर स
 पुण्डरीको राजा कण्ठरीक शिषिकाया समुपदेश्य महता समारोहेण सह नलिनी
 रणे उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्यः स्थविरेभ्यः स्वच्छुभ्रातर शिष्यमिक्षा
 ददाति। अनन्तर स कण्ठरीकः प्रव्रजित सन अनगारो जातः। तथा ‘एग
 रसगविऊ’ एकादशाह्वित्=एकादशाह्वानयान् जातः। ततः सल्ल स्थविता भय

के लिये आगयापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा
 सज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो गये-तब उन्होंने बिना इच्छा के ही
 कण्ठरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के
 बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ
 चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षाभिषेक से अभिसिञ्चन किया।
 अभिषेक के बाद पुण्डरीक राजा कण्ठरीक को शिषिका में बैठाकर बड़े
 समारोह के साथ नलिनीवन में आये। वहाँ आकर उन्होंने स्थविरों के
 लिये अपने लघुभाई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया। इसके
 बाद कण्ठरीक (पञ्चइए अणगारेजाए) प्रव्रजित होकर अनगारावस्था
 सप्त हो गये। (एगारसगविऊ, तएण थेरा भगवतो अन्नया कयाइ
 पुडरिणिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति,

विवक्षित करवा भाटे आगयापनाओ, प्रज्ञापनाओ, विज्ञापनाओ, सज्ञाप
 नाओ वडे पणु समर्थ थध शक्या नहि त्थारे तेमणु छिछा न पुडोवा छताओ
 कण्ठरीक कुमारने दिक्षाग्रहण करवानी स्वीकृति आपी दीधी स्वीकृति आग्या
 भाद तेमणु निष्क्रमणने लगती अधी वस्तुओ भगवाी न्थारे वस्तुओ आवी
 गध त्थारे तेमणु तेनु विधिसर दीक्षाभिषेक वडे अभिसिञ्चन कयुं अभिषेक
 कया भाद पुण्डरीक राजा कण्ठरीकने पालणीमा जेसाहीने लारे समारोहनी साथे
 नलिनी वनमा आग्या त्था आवीने तेमणु स्थविरेने पोताना नाना लाधने
 शिष्यना रूपमा आपी दीधो त्थारपणी कण्ठरीक (पञ्चइए अणगारे जाए)
 प्रव्रजित थधने अनगारावस्था सप्त थध जये।

(एगारसगविऊ-तएण थेरा भगवतो अन्नया कयाइ पु० नय-

टीका—‘तएण तस्स’ इत्यादि । तत् खलु तस्य कण्डरीकस्य अनगारस्य तैः ‘अतेहि य’ अन्तैश्च=वल्लवणकादिभिः, ‘पतेहि य’ प्रान्तैश्च=पर्युषिते, नीरसैः स्यादपचितैर्वा अशनादिभिः यथा शैलकस्य राजर्षितया स्यादपितथा-विवमाहार कुर्वतो यावत्प्रकृतिसुकुमारस्य सुगोपचितस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, कीदृशीत्याह—उज्ज्वला यावद् दुरधिसया = सोढुमशक्या पुन सुखलेशरहिता कण्डरीकः ‘दाहवक्कतिण’ दाहव्युत्क्रान्तिक = दाहस्य शरीरसन्तापस्वरूपरोगस्य व्युत्क्रान्ति = उत्पत्तिर्यस्यासौ दाहव्युत्क्रान्तिक = रुचरणादिज्वलनवान् चापि विहरति । तत् खलु स्थगिरा अन्यदा कदाचित् यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, नलिनीवने समवसृताः । पुण्डरीकस्तद्दर्शनार्थं स्वभवना-

‘तएण तस्स कडरीयस्स’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स कडरीयस्स अनगारस्स तेहि अतेहि पतेहि य जहासेलगस्स जाव दाहवक्कतिण यावि विहरइ) उस कडरीक अनगारके वल्लवणक आदिरूप अन्ताहार करनेसे तथा पर्युषित अथवा नीरस आहाररूप प्रान्ताहार करनेसे शैलक राजर्षिकी तरह प्रकृतिसे सुकुमार सुगोपचित होने के कारण शरीरमें वेदना उत्पन्न हो गई । जो उज्ज्वला एव सोढुमशक्या थी । इस तरह शरीर सन्तापरूप रोग की उत्पत्ति से वे कडरीक अनगार कर चरण आदि में जलन होने के कारण सुख के लेश से भी वर्जित हो गये । (तएण येण अन्नया कयाइ जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता नलिनिवणे समोसदा पोंडरीए

तएण तस्स कडरीयस्स इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्थारपछो,

(तस्स कडरीयस्स अनगारस्स तेहि अतेहि पतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कतिण यावि विहरइ)

ते कडरीक अनगारना शरीरमा णट्ठयण्णु वगेरे इय अताहार करवाथी तेमज पर्युषित अथवा नीरस आहार इय प्रान्ताहार करवाथी येण राजर्षिनी जेम प्रकृतिथी सुकुमार अने सुगोपयित होवा णट्ठ वेदना उत्पत्त थई गछ ते वेदना अत्यंत उग्र अने असह्य हत्ती आ प्रभावे गरीय सताप इय शरीर उ पत्तिथी ते कडरीक अनगार हाथ पगमा अगतशने लीधे थोडी सुभशाति पण्णु भेगवी थक्या नहि

(तएण येण अन्नया कयाइ जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छत्ता नलिनिवणे ममोसदा पोंडरीए निगण घम्म मुणेइ, तएण पोंडरीए राया

विहरन्ति । तएणं पुंडरीण गया जहा मडुण सेलागस्स जाव
 वलियसरीरे जाए । तएणं थेरा भगवतो पोंडरीय राय पुच्छंते,
 पुच्छित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति । तएण से कंडरीए
 ताओ रोयायंकाओ पिप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णांसि अस-
 णपाणखाइमसाइमसि मुच्छिण गिद्धे गढिए अज्जोववण्णे णो
 संचाएइ पोंडरीय रायं आपुच्छित्ता वहिया अब्भुज्जएण जण
 वयविहारं विहरित्तए । तत्थेव ओसण्णे जाए । तएण से पोंड-
 रीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे णहाए अतेउरपरियालसंप
 रिबुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवा
 गच्छित्ता, कंडरीयं अणगार तिवखुत्तो आयाहिणं पयाहिण
 करेइ करित्ता वदइ णमसइ वदित्ता णमंसित्ता, एवं वयासी-
 धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया । तव माणुस्सए जम्मजीवियफले
 जे णं तुम रज्ज च जाव अतेउर चावि छड्डयित्ता जाव विगो
 वइत्ता जाव पव्वइए । अहण्णं अहण्णे अकयपुल्लं रज्जे जाव
 अन्तेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिण जाव अज्झो
 ववस्से नो सचाएमि जाव पव्वइत्तए । त धन्नेसि णं तुमं देवा
 णुप्पिया । जाव जीवियफले । तएणं से कंडरीए अणगारे पुड-
 रीयस्स एयमट्ठ णो आढाइ जाव सच्चिट्ठइ । तएणं कटरीए पोंड-
 रीएणं दोच्चपि तच्चंपि एव वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे
 लउजाए गारवेणय पोंडरीय राय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहि
 सद्धिं वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू०३ ॥

અનંગારસ્ય 'અહાપવત્તેહિ' યથા પ્રવૃત્તૈઃ=પ્રાસુમૈરિત્યર્થઃ 'ઓસહમેસજ્જેહિ' ઔપ-
ધૈવજ્યૈઃ 'જાવતેદ્દચ્છ' યાવત્ ચિકિત્સામ્ 'આઝ્ઢામિ' આવર્તયામિ=કારયામિ,
'ત' તત્=તસ્માત્ કારણાત્ યૂયં સ્વલ્પ હે ભદ્રત ! મમ યાનશાલાસુ સમવસરત=
આગચ્છત । તત્ સ્વલ્પ સ્થવિરા ભગવન્ત પુઢરીકસ્ય એતમર્થં પ્રતિશ્રુયન્તિ=એત-
દ્ધવન સ્વીકુર્યન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય યાવત્-ઉપસપથ=યાનશાલા સમાશ્રિત્ય
વિહરતિ । તતઃ સ્વલ્પ પુઢરીકો રાજા 'જહા મહુણ સેલગસ્સ જાવ
વલિયસરીરે જાણ' યથા મણ્ઢકઃ શૌલકસ્ય યાન્દ્ પલિયસરીરો જાતઃ =

કઢરીયસ્સ અનંગારસ્સ અહાપવત્તેહિ ઓસહમેસજ્જેહિ જાવ તેદ્દચ્છ
આઝ્ઢામિ-ત તુઘ્મે ણં ભત્તે' મમ જાણશાલાસુ સમોસરહ-તણ થેરા
ભગવતો પુઢરીયસ્સ પહિસુણેતિ, પહિસુણિત્તા જાવ ઉપસપજ્જિત્તાણ
વિહરતિ) દેવકર જહા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન થે-વહા પર વે આયે
વહા આકર ઉન્હોં ને સ્થવિર ભગવતોં કો વદના એવ નમસ્કાર કિયા-
વદના નમસ્કાર કરકે ફિર ઉન્હોં ને ઉનસે હસ પ્રકાર કહા હે ભદ્રત !
મૈ કઢરીક અનંગાર કો યથા પ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔપધ, ભૈવજ્યોં દ્વારા
યાવત્ ચિકિત્સા કરવાઝંગા-અતઃ હે ભદ્રત ! આપલોગ મેરી યાનશાલા
મેં યહા સે વિહાર કર પધારે-વહી ઠહરે-। હસ પ્રકાર પુઢરીક રાજા કી
પ્રાર્થના કો ઉન સ્થવિર ભગવતો ને સ્વીકાર કર લિયા-ઔર વહા સે
વિહાર કર વે પુઢરીક રાજા કી યાનશાલા મેં આકર ઠહર ગયે । (તણ
પુઢરીય રાયા જહામહુણ સેલગસ્સ જાવ વલિયસરીરે જાણ તણ થેરા

ગારસ્સ અહાપવત્તેહિ ઓસહમેસજ્જેહિ જાવ તેદ્દચ્છ આઝ્ઢામિ ત તુઘ્મેણ ભત્તે
મમ જાણશાલાસુ સમોસરહ-તણ થેરા ભગવતો પુઢરીયસ્મ પહિસુણેતિ, પહિ
સુણિત્તા જાવ ઉપસપજ્જિત્તાણ વિહરતિ)

જોધને તેઓ જ્યા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આવી ત્યા
આવીને તેમણે ધરિ ભગવતોને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને
નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે ભદ્રત ! હું
કહરીક અનંગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔપધ-ભૈવજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત્
ચિકિત્સા (ડાહ્યા) કરવા માગુ છું એટલા માટે હે ભદ્રત ! તમે સૌ
પહીધો વિહાર કરીને મારી યાનશાળામાં આવો અને ત્યાજ ડોકાઓ આ
પ્રમાણે પુઢરીક રાજાની વિનતીને તે સ્થવિર ભગવતોએ સ્વીકાર કરી લીધો
અને ત્યાથી વિહર કરીને તેઓ પુઢરીક રાજાની યાનશાળામાં આવીને ડોકાધ ગયા

(તણ પુઢરીય રાયા જહા મહુણ સેલગસ્સ જાવ વલિયસરીરે જાણ તણ થેરા

નિર્ગત તત્ર ગત્વા ધર્મ ધ્રુજોતિ । તત્ર ચ્ચ પુઠરીકો રાજા ધર્મ ધ્રુજા યત્રેવ
 કણ્ઠરીકોઽનગારસ્તગ્ગા ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય, ધણ્ઠરીક યન્તે નમસ્યતિ,
 ચન્દિસ્થા નમસ્યતા ધણ્ઠરીકસ્ય અનગારસ્ય શરીર 'સાવાગહ' સવ્વાવાપ્ત=
 પીડાસહિત 'સરોય' સરોગ=રોગમગ્નિત 'પામહ' વચ્ચનિ, ચ્ચા યત્રેવ સ્થવિરા
 ભગવ તત્તગ્ગેવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય સ્થવિરા ભગવતો યન્તે નમસ્યતિ, ચન્દિસ્થા
 નમસ્યતા ણમગાદીત્-અહણ ભતે !' અહ મત્તુ કે મદન્ત ! કણ્ઠરીકસ્ય

નિર્ગમ્ય ધર્મ સુખેહ, તત્તણ પોઠરીક રાયા ધર્મ સોચા જેણેવ કઢરીક
 અણગારે તેણેવ ઉવાગચ્છહ ઉવાગચ્છિત્તા કઢરીય અણગાર વદહ નમ
 સહ, વદિત્તા નમસિત્તા કઢરીયસ્સ અણગારસ્સ સરીરગ સવ્વાવાહ
 સરોય પાસહ) કિસી ણક સમય વે સ્થવિર પુઠરીકિણી નગરી મેં વિહાર
 કરતે હુણ આયે । ગ્હા આકર વે નલિનીવન નામ કે ઉગ્ધાન મેં ઠઠાર
 ગયે । આગમન સુનકર પુઠરીક રાજા ડન કો વદના ણવ ડનસે ધર્મશ્ર
 વણ કરને કી ભાવના સે અપને રાજમહલ સે નિકલકર ડસ નલિનીવન
 ઉગ્ધાન મેં આયે-સ્થવિરોં ને ડન્હે ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ધર્મ કા ઉપ
 દેશ શ્રવણ કર ફિર વે જહા કઢરીક અનગાર થે ડનકે પાસ આયે ।
 વહા આકર ડન્હોં ને ડનકો વદના કી નમસ્કાર કિયા-। વદના નમસ્કાર
 કરકે ડન્હોં ને કઢરીક અનગારકે શરીર કો પીડાસહિત ઇવ રોગસહિત
 દેહા-(પાસિત્તા જેણેવ થેરા ભગવતો તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા
 થેરે ભગવતે વદહ ણમસહ, વદિત્તા ણમસિત્તા ઇવ વયાસી-અહણ ભતે !

ધર્મ સોચા જેણેવ કઢરીક અણગારે તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા કઢરીય
 અણગાર વદહ નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા કઢરીયસ્સ અણગારસ્સ સરીરગ સવ્વા
 વાહ સરોય પાસહ)

કેાઇ એક વખતે તે સ્થવિર પુઠરીકિણી નગરીમ વિહાર કરતા કરતા આવ્યા
 ત્યા આવીને તેઓ નલિનીવન નામના ઉગ્ધાનમા રોકાયા તેમનુ આગમન
 સાભળીને પુઠરીક રાજા તેમને વદન કરવા માટે તથા તેમની પાસેથી ધર્મ
 પદેશ માલગવા માટે પોતાના રાજમહેલથી નીકળીને તે નલિનીવન ઉગ્ધાનમા
 આવ્યા સ્થવિરોએ તેમને ધર્મપદેશ આપ્યો, ધર્મપદેશ સાભળીને તેઓ
 ન્યા ડડરીક અનગાર હતા તેમની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વદન
 અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે ડડરીક અનગારના
 શરીરને પીડા સહિત અને રોગયુક્ત જોયુ

(પાસિત્તા જેણેવ થેરા ભગવતો તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા થેરે ભગ
 વતે વદહ, ણમસહ, વદિત્તા ણમસિત્તા ઇવ વયાસી-અહણ ભતે ' ૧૫ અણ

અનગારસ્ય 'અહાપવત્તેહિ' યથા પ્રવૃત્તે=પ્રાસુમૈરિત્યર્થઃ 'ઓસહમેસજ્જેહિ' ઔપ-
પૈપજ્યૈઃ 'જાવતેહ્ચ' યાવત્ ચિકિત્સામ્ 'આઝ્ઢામિ' આવર્તયામિ=કારયામિ,
'ત' તત્=તસ્માન્ કારણાત્ યૂયં ચ્ચ હે મદત્ ! મમ યાનશાલાસુ સમવસરત્=
આગચ્છત । તત્ 'ચ્ચ' સ્થવિર ભગવન્ત પુણ્ડરીકસ્ય એતમર્થ પ્રતિશ્રવ્યન્તિ=એત
ઢ્ઢવન સ્વીકુર્વન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય યાવત્-ઉપસપદ્ય=યાનશાલા સમાશ્રિત્ય
વિહરતિ । તતઃ ચ્ચ પુણ્ડરીકો રાજા 'જહા મહુણ સેલગસ્સ જાવ
વલિયસરીરે જાણ' યથા મણ્ઢકઃ શૌલકસ્ય યામદ્ ચલિકશરીરો જાતઃ =

કડરીયસ્સ અનગારસ્સ અહાપવત્તેહિ ઓસહમેસજ્જેહિ જાવ તેહ્ચ્છ
આઝ્ઢામિ-ત તુઞ્ઞે ણ ભતે ! મમ જાણસાલાસુ સમોસરહ-તણ્ણ થેરા
ભગવતો પુણ્ડરીયસ્મ પહિસુણેતિ, પહિસુણિત્તા જાવ ઉપસપજ્જિત્તાણ
વિહરતિ) દેશ્વકર જહા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન યે-વહા પર વે આયે
વહા આકર ઉઢ્ઠો ને સ્થવિર ભગવતોં કો વદના એવ નમસ્કાર કિયા-
વદના નમસ્કાર કરકે ફિર ઉઢ્ઠો ને ઉનસે હસ પ્રકાર કહા હે મદત્ !
મૈં કડરીક અનગાર કી યથા પ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔપધ, ભૈપજ્યોં ઢારા
યાવત્ ચિકિત્સા કરવાઝંગા-અતઃ હે મદત્ ! આપલોગ મેરી યાનશાલા
મેં યહા સે વિહાર કર પધારેં-વહીં ઠહરેં-! હસ પ્રકાર પુણ્ડરીક રાજા કી
પ્રાર્થના કો ઉન સ્થવિર ભગવતો ને સ્વીકાર કર લિયા-ઔર વહા સે
વિહાર કર વે પુણ્ડરીક રાજા કી યાનશાલા મેં આકર ઠહર ગયે । (તણ્ણ
પુણ્ડરીણ રાયા જહામહુણ સેલગસ્સ જાવ વલિયસરીરે જાણ તણ્ણ થેરા

ગારસ્સ જહાપવત્તેહિ ઓસહમેસજ્જેહિ જાવ તેહ્ચ્છ આઝ્ઢામિ ત તુઞ્ઞે ણ ભતે
મમ જાણસાલાસુ સમોસરહ-તણ્ણ થેરા ભગવતો પુણ્ડરીયસ્મ પહિસુણેતિ, પહિ
સુણિત્તા જાવ ઉવ્વત રજ્જિત્તાણ વિહરતિ)

જોધને તેઓ જ્યા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આગળ ત્યા
આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવતોને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને
નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે હે ભદ્રન્ત ! હું
કડરીક અનગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔપધ-ભૈપજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત
ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરવા માગુ છું એટલા માટે હે ભદ્રન્ત ! તમે સૌ
અહીંથી વિહાર કરીને માગી યાનશાળામાં આવો અને ત્યાજ મેકાઓ આ
પ્રમાણે પુણ્ડરીક રાજાની વિનંતીને તે સ્થવિર ભગવતોએ સ્વીકાર કરી લીધા
અને ત્યાથી વિહર કરીને તેઓ પુણ્ડરીક રાજાની યાનશાળામાં આવીને મેકાધ ગયા

(તણ્ણ પુણ્ડરીણ રાયા જહા મહુણ સેલગસ્સ જાવ વલિયસરીરે જાણ તણ્ણ થેરા

निर्गत तत्र गत्वा धर्म भ्रजोति । तत्र गत्वा पुण्डरीको राजा धर्म भ्रुम्वा यत्रैव
कण्डरीकोऽनगारस्तत्रोऽ उपागच्छति, उपागत्य, वृण्डीक रन्दते नमस्यति,
वन्दित्वा नमस्यित्वा वृण्डीकस्य अनगारस्य शरीर 'स-सायह' मन्त्रावाप्त-
पीडासहित 'सरोय' सरोय=रोगमन्त्रि 'पायः' पश्यति, दृष्ट्वा यत्रैव स्थित्वा
भगवत्तत्त्वज्ञोऽ उपागच्छति, उपागत्य स्थित्वा भगवतो रन्दते नमस्यति, वन्दित्वा
नमस्यित्वा पश्यन्तीति- 'अहण भते !' अह गत्वा हे भद्रन्त ! कण्डरीकस्य

निर्गत धम्म सुणेइ, तण्ण पौंडरीण राया धम्म सोच्चा जेणेव कडरीण
अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वदइ नम
सइ, वदित्ता नमसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरग सव्वावाह
सरोय पासइ) किसी एक समय वे स्थविर पुंडरीकिणी नगरी में बिहार
करते हुए आये। यहा आकर वे नलिनीवन नाम के उद्यान में ठहर
गये। आगमन सुनकर पुंडरीक राजा उन को वदना एवं उनसे धर्मश्र-
वण करने की भावना से अपने राजमहल से निकलकर उस नलिनीवन
उद्यान में आये-स्थविरों ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। धर्म का उप-
देश श्रवण कर फिर वे जहा कडरीक अनगार थे उनके पास आये।
वहा आकर उन्होंने उनको वदना की नमस्कार किया-। वदना नमस्कार
करके उन्होंने कडरीक अनगारके शरीर को पीडासहित एवं रोगसहित
देखा- (पासित्ता जेणेव येरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
थेरे भगवत्ते वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एवं वयासी-अहण भते !

धम्म सोच्चा जेणेव कडरीण अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय
अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरग सव्वा
वाह सरोय पासइ)

कैध अेक वयत्ते ते स्थविर पुंडरीकिणी नगरीम विहार करता करता आव्या
त्या आवीने तेओ नलिनीवन नामना उद्यानमा शोकाया तेमनु आभमन
सावणीने पुंडरीक राजा तेमने वदन ठरवा माटे तः। तेमनी पासिथी धर्मो
पदेश सावणवा माटे पोताना राजमहलथी नीकणीने ते नलिनीवन उद्यानमा
आव्या स्थविशेअे तेमने धर्मोपदेश आव्या, धर्मोपदेश सावणीने तेओ
न्या उंडरीक अनगार छत्ता तेमनी पासि गथा त्या अर्थने तेमणे तेमने वदन
अने नमस्कार कया वदन अने नमस्कार करीने तेमणे उंडरीक अनगारना
शरीरने पीडा सहित अने शोकायुक्त जेथु

(पासित्ता जेणेव येरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भग-
वत्ते वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एवं वयासी-अहण भते !) अण

અનગારસ્ય 'અહાપવત્તેહિં' યથા પ્રવૃત્તૈ=પ્રાસુકૈરિત્યર્થઃ 'ઓસહમેસજ્જેહિં' ઔપ-
ધમૈપજ્યૈઃ 'જાવતેઽચ્છ' યાવત્ ચિકિત્સામ્ 'આઝ્ઢામિ' આવર્તયામિ=ફારયામિ,
'ત' તત્=તસ્માત્ કારણાત્ યૂયં સ્વલ્લ હે ભદ્રન્ત ! મમ યાનશાલાસુ સમવસરત=
આગચ્છત । તતઃ સ્વલ્લ સ્થવિરા ભગવન્ત પુણ્ડરીકસ્ય એતમર્થં પ્રતિનૃપન્તિ= એત
દ્વચન સ્વીકુર્યન્તિ, પ્રતિશ્રુત્ય=સ્વીકૃત્ય યાવત્-ઉપસપદ્ય=યાનશાલા સમાશ્રિત્ય
વિહરતિ । તતઃ સ્વલ્લ પુણ્ડરીકો રાજા 'જહા મઢુણ સેલગસ્સ જાવ
વલિયસરીરે જાણ' યથા મણ્ડકઃ શૌલકસ્ય યાનદ્ ઝલિક્ષરીરો જાતઃ =

કઢરીયસ્સ અનગારસ્સ અહાપવત્તેહિં ઓસહમેસજ્જેહિં જાવ તેઽચ્છ
આઝ્ઢામિ-ત તુઘ્મે ણ ભત્તે' મમ જાણશાલાસુ સમોસરહ-તણ થેરા
ભગવતો પુણ્ડરીયસ્સ પઢિસુણેતિ, પઢિસુણિત્તા જાવ ઉપસપજિત્તાણ
વિહરતિ) દેશ્વકર જહા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન યે-વહા પર વે આવે
વહા આકર ડન્હોં ને સ્થવિર ભગવતોં કો વદના એવ નમસ્કાર કિયા-
વદના નમસ્કાર કરકે ફિર ડન્હોં ને ડનસે ડસ પ્રકાર કહા હે ભદ્ર !
મેં કઢરીક અનગાર કો યથા પ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔપધ, ભૈષજ્યોં દ્વારા
યાવત્ ચિકિત્સા કરવાઝગા-અતઃ હે ભદ્ર ! આપલોગ મેરી યાનશાલા
મેં યહા સે વિહાર કર પધારેં-વહી ઠહરેં-! ડસ પ્રકાર પુણ્ડરીક રાજા કી
પ્રાર્થના કો ડન સ્થવિર ભગવતો ને સ્વીકાર કર લિયા-ઔર વહા સે
વિહાર કર વે પુણ્ડરીક રાજા કી યાનશાલા મેં આકર ઠહર ગયે । (તણ
પુણ્ડરીય રાયા જહામઢુણ સેલગસ્સ જાવ વલિયસરીરે જાણ તણ થેરા

ગારસ્સ અહાપવત્તેહિં ઓસહમેસજ્જેહિં જાવ તેઽચ્છ આઝ્ઢામિ ત તુઘ્મેણ ભત્તે
મમ જાણશાલાસુ સમોસરહ-તણ થેરા ભગવતો પુણ્ડરીયસ્મ પઢિસુણેતિ, પઢિ
સુણિત્તા જાવ ઉપસપજિત્તાણ વિહરતિ)

જોધને તેઓ બધા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આગળ ત્યા
આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવતોને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને
નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે ભદ્રન્ત ! હું
કઢરીક અનગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔપધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત્
ચિકિત્સા (ડવાજ) કરવા માશુ છું એટલા માટે હે ભદ્રન્ત ! તમે સૌ
મહીધા વિહાર કરીને મારી યાનશાળામાં આવો અને ત્યાજ રોકાઓ આ
પ્રમાણે પુણ્ડરીક રાજાની વિનતીને તે સ્થવિર ભગવતોએ સ્વીકાર કરી લીધા
અને ત્યાથી વિહાર કરીને તેઓ પુણ્ડરીક રાજાની યાનશાળામાં આવીને રોકાઈ ગયા

(તણ પુણ્ડરીય રાયા જહા મઢુણ સેલગસ્સ જાવ વલિયસરીરે જાણ તણ થેરા

યથા મળ્હકો રાજા શૌલકમ્ય રાજ્યે માપુરસીપમૈવયૈશ્ચિકિત્સામમકારણ, તથેય પુઢરીકોડપિ કળ્હરીકસ્યાનગારસ્ય યથા યોગ્યમૈવયૈશ્ચિકિત્સા કારણતિસ્મ યાત્ કનિપમૈર્દિને કળ્હરીકો ચ્ચિત્તશરીર = નિરામયો જાતઃ । તતઃ સ્વલુ સ્થવિરા ભગવન્તઃ પુઢરીક રાજા આપુન્હતિ, આપુન્હય ચ્ચિર્જનપદ્ધિ હાર વિહરન્તિ । તત સ્વલુ સ કળ્હરીકઃ તસ્માન્ 'રોગાયકાઓ' રોગાત્ક્રાવ વિપ્પમુક્તઃ સન્ તસ્મિન્ 'મનુગમિ' મનોજ્ઞે = ભગીયે અશનવાનવાગસ્વાયે ચતુર્વિધે આહારે 'મુચ્છિણ' મુચ્છિતઃ = મુચ્છા પ્રાપ્તઃ = આમક કાર્યઃ, 'ગિદ્ધે' ગૃદ્ધા = આકાહ્તાવાન્, 'ગદિણ' ગ્રન્થિતઃ = રસાસ્થાદે નિચ્છદમાનસઃ, 'અજ્ઞોચ્ચણે'

ભગવતો પૌંડરીય રાય પુન્હતિ, પુચ્છિત્તા ચ્ચિયા જળવયવિહાર વિહરતિ, તણ્ણ સે કળ્હરીય તાઓ રોગાયકાઓ વિપ્પમુક્કે સમાણે તસિ મણુળ્ણસિ અસળવાળગ્માહમસાહમસિ મુચ્છિણ ગિદ્ધ ગદિણ અજ્ઞોચ્ચણે ણો સચાણ પૌંડરીય રાય આપુચ્છિત્તા ચ્ચિયા અબ્બુજ્જણ જળવય વિહાર વિહરિત્તણ) હસકે યાદ મહૂક ને જિસ પ્રકાર શૌલકરાજર્ણિ કી પ્રાપ્તુક ઔપધ, ઐવજ્યો દ્વારા ચિકિત્સા કરવાઈ થીં જસી પ્રકાર પુઢરીક રાજા ને ઐ કળ્હરીક અનગાર કી યથાગોમ્ય ઔપધ ઐવજ્યો દ્વારા ચિકિત્સા કરવાઈ-હસ સે વે ચલિતશરીર નિરોગ હો ગયે । હસકે અનન્તર હન સ્થવિર ભગવતો ને વહા સે વિહાર કરને કે લિયે પુઢરીક રાજા સે પૂઢા- યાદ મે વે વહા સે વાહિર જનપદોં મેં વિહાર કર ગયે । કળ્હરીક અનગાર કિ જો રોગાતકસે નિર્મુક્ત હો જુકે થે મનોજ્ઞ અશન, પાન, સ્વાદ્ય, ણવ સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર મેં હતને અધિક આસક્ત હો ગયે

ભગવતો પૌંડરીય રાય પુન્હતિ, પુચ્છિત્તા ચ્ચિયા જળવયવિહાર વિહરતિ, તણ્ણ સે કળ્હરીય તાઓ રોગાયકાઓ વિપ્પમુક્કે સમાણે તસિ મણુળ્ણસિ-અસળવાળ સ્વાહમસાહમસિ મુચ્છિણ ગિદ્ધ ગદિણ અજ્ઞોચ્ચણે ણો સચાણ પૌંડરીય રાય આપુચ્છિત્તા ચ્ચિયા અબ્બુજ્જણ જળવયવિહાર વિહરિત્તણ)

ત્યારપછી મહૂકે જેમ શૌલક રાજર્ણિની પ્રાપ્તુક, ઔપધ અને લેપબ્ધો વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી હતી તેમજ પુઢરીક રાજાએ પણ કળ્હરીક અનગારની ઉચિત ઔપધ-લેપબ્ધો (દવાઓ) વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી તેથી તેઓ નિરોગ-સખળ બની ગયા ત્યારપછી તે સ્થવિર ભગવતોએ ત્યાંથી વિહાર કરવા માટે પુઢરીક રાજાને પૂછ્યું ત્યારબાદ તેઓ બહારના જનપદોમાં વિહાર કરી ગયા રોગાતગોથી નિર્મુક્ત થઈ ગયેલા કળ્હરીક અનગાર તે મનોજ્ઞ, અશન, પાન, આદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારમાં એટલા બધા આસક્ત થઈ ગયા-ગૃદ્ધ બની ગયા, ગ્રન્થિત-રસના આસ્થાદનમાં નિષ્પદ્માન

अभ्युपपन्नः=सर्वथा आसक्तः सन् नो शक्नोति पुण्डरीके राजानमापृच्छ 'वहिया'
 वहि 'अभ्युज्जएण' अभ्युद्यतेन=उग्रविहारेण खलु विहर्तुम्, किंतु 'तत्थेव'
 तत्रैव=यानशालायामेव 'ओसण्णे' अपसन्नः,=शिथिलसाधुसमाचारीवान् जातः।
 तत खलु स पुण्डरीको राजा 'इमीसे कहाए' अस्या, कथायाः=कण्डरीकोऽनंगारो-
 ऽवसन्नो जातः 'इति वृत्तान्तस्य लब्धार्थः सन् स्नातः 'अतेउरपरियालसपरि-
 वुडे' अन्तःपुरपरिवारसपरितृतः, यत्रैव कण्डरीकोऽनंगारस्तत्रैव उवागच्छति,
 उवागत्य, कण्डरीक त्रिः कृत्य आदक्षिण प्रदक्षिण करोति, कृत्वा, वन्दते नमस्यति,
 वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-धन्योऽसि खलु त्व हे देवानुप्रिय ! यतस्तम्
 'कयट्ठे' कृतार्थः=विहितजीवनकृत्य 'कयपुन्ने' कृतपुण्यः=विहितप्रयोजितप्रेमः।
 पुनः सुलद्धे 'सुलब्धे' सुलुब्धतया प्राप्त खलु हे देवानुप्रिय ! 'तव' त्वया 'माणु-
 स्सए' मानुष्यक=मनुष्यसम्बन्धि, 'जम्मजीवियफले' जन्मजीवितफलम्-जन्म-

-गृद्ध वन गये ग्रथित-रसास्वाद मे निरद्धमानसवाले हो गये, और
 अभ्युपपन्न वन गये-अर्थात् सर्वथा आसक्त वन गये कि वहां से बाहिर
 उग्र विहार करने के लिये उनका मन ही नहीं हुआ-अतः उन्हो ने
 पुण्डरीक नरेश से विहार करने की कोई बात ही नहीं पूछी किन्तु
 (तत्थेव-ओसन्ने जाए) वही पर वे रहते २ शिथिल साधुसमाचारीवाले
 वन गये। (तएण से पौंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंते
 उरपरियालसपरिवुडे राया जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ,
 उवागच्छित्ता कडरीय अणगार त्तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ,
 करित्ता वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-धन्नेसिण तुम
 देवानुप्पिया। कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धेण देवानुप्पिया। तव
 माणुस्सजन्मजीवियफले जेण तुम रज्ज च जाव अतेउर चावि छड्डइत्ता

सवाणा धध गया अने अभ्युपपन्न वनी गया ओटले डे तेओ ओकडम आसक्त
 धध गया डे त्यामी ण्डार उग्र विहार करवा भाटे पणु तेओ तैथ २ धया
 नहि ओथी तेमण्णे पुंडरीक राजने विहार करवानी भावतमा धध ४ पूछथु
 नहि पणु (तत्थेव ओसन्ने जाए) त्या ७ ग्हेता रडेता तेओ शिथिल साधु
 समाचारी धध गया ओटले डे साधुओना आचारमा तेओ शिथिन धध गया

(तएण से पौंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अतेउरपरियाल-
 सपरिवुडे राया जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय
 अणगार त्तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिण करेइ, करित्ता वदइ णमसइ, वदित्ता
 णमसित्ता एव वयासी-धन्नेसि ण तुम देवानुप्पिया ! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे

यथा मण्डको राजा शौलकस्य राजर्षे प्राचुरीय रभेगज्यैश्चिकित्सामकारयत्,
तथैव पुण्डरीकोऽपि कण्डरीकस्यानगरस्य यथा योग्यैर्गोत्रभैषज्यैश्चिकित्सां
कारयतिस्म यावत् कनिष्यैर्दिने कण्डरीको यन्त्रिगिर = निरामयो जातः । ततः
खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीक राजा आपृच्छन्ति, आपृच्छ्य बहिर्जनपदवि
हारं विहरन्ति । ततः खलु स कण्डरीकः तन्मात्रं 'रोगायकाओ' रोगातङ्का
विप्रमुक्तः सन् तस्मिन् 'मनुगमि' मनोज्ञे = मणीये ज्ञानवान्वाद्यत्वाद्ये चतु
र्विधे आहारे 'मुच्छिष्ट' मूर्च्छितः = मूर्च्छा प्राप्तः = आसक्त इत्यर्थः, 'गिद्धे' गृद्धः =
आकाङ्क्षावान्, 'गदिए' ग्रन्थितः = रसास्वादो निरुद्धमानसः, 'अज्ज्ञोववण्णे'

भगवतो पौंडरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति,
तण्ण से कण्डरीक ताओ रोगायकाओ विप्रमुक्के समाने तसि मणुण्णसि
असणवाणग्माहमसाहमसि मुच्छिष्ट गिद्ध गदिए अज्ज्ञोववण्णे णो सचाएइ
पौंडरीय राय आपुच्छित्ता वहिया अज्ज्ञवण्ण जणवय
विहारं विहरित्ता) इसके बाद मण्डक ने जिस प्रकार शौलकराजर्षि की
प्राप्तक औषध, भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार पुण्डरीक
राजा ने भी कण्डरीक अनगर की यथायोग्य औषध भैषज्यों द्वारा
चिकित्सा करवाई—इस से वे चलितशरीर निरोग हो गये । इसके अन
न्तर उन स्थविर भगवतो ने वहाँ से विहार करने के लिये पुण्डरीक राजा
से पूछा—। बाद में वे वहाँ से बाहर जनपदों में विहार कर गये । कण
डरीक अनगर कि जो रोगातङ्कसे निर्मुक्त हो चुके थे मनोज्ञ अज्ञान, पान,
खाद्य, एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में इतने अधिक आसक्त हो गये

भगवतो पौंडरीय राय पुच्छति, पुच्छित्ता वहिया जणवयविहारं विहरति, तण्ण
से कण्डरीक ताओ रोगायकाओ विप्रमुक्के समाने तसि मणुण्णसि—असणवाण
खाहमसाहमसि मुच्छिष्ट गिद्धे गदिए अज्ज्ञोववण्णे णो सचाएइ पौंडरीय राय
आपुच्छित्ता वहिया अज्ज्ञवण्ण जणवयविहारं विहरित्ता)

त्यारपछी मण्डके जेभ शौलक राजर्षिनी प्रासुक्, औषध अने लैषज्यो
वडे चिकित्सा करावडावी छती तेभज पुण्डरीक राजाके पणु कण्डरीक अनगरनी
उचित औषध—लैषज्यो (दवाज्यो) वडे चिकित्सा करावडावी तेथी तेज्यो
निशेग—सणण णनी गरा त्यारपछी ते स्थविर भगवतोके त्याथी विहार
करवा भाटे पुण्डरीक राजाके पूछ्यु त्यारणाह तेज्यो कण्डरीक अनगरनी विहार
करी गया रोगातङ्कसे निर्मुक्त थछ गयेला कण्डरीक अनगर ते मनोज्ञ,
अज्ञान, पान, आद्य अने स्वाद्यरूप चार जतना खाहारमा छेला अथा
आसक्त थछ गया—गृद्ध णनी गया, अचित—रसना आस्वादनमा निरुद्ध मान

कारणात् खलु व्रयीमि यन् धन्योऽमि त्व हे देवानुप्रिय ! ' जाव मुलन्ध जन्म जीवितफलम् , ततः खलु स कण्डरीकोऽनगर ' पुण्डरीकस्य एतमर्थं=विहारमभि प्रायकमर्थं , नो आत्रियते यावत् तूष्णीकः सतिष्ठते मौनमवलम्ब्य तिष्ठति । ततः खलु कण्डरीकः पुण्डरीकेण द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्वित्रिमारम् , एव=पूर्वोक्त-प्रकारेण , उक्तः सन् ' अकामए ' अकामक=कामनारहितः ' अवस्सवसे ' अप-

देवानुप्रिया ! जाव जीवियफले तण्ण से कडरीए अणगारे पुडरीयस्स एयमद्व णो आढाइ जाव सच्चिद्वइ, तण्ण कडरीए पौडरीएण दोच्चपि तच्चपि एवं वुत्ते समाने अकामए अवस्मवसे लज्जाए गारवेण य पौडरीय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं वहिया जणवयविहार विहरइ) मैं अधन्य हूँ अकृतपुण्य हूँ । जो राज्य मे यावत् अन्तःपुर में तथा मनुष्य सयधी कामभोगों में मग्नित यावत् अध्युपपन्न बना हुआ हूँ । इसीलिये प्रव्रज्या ग्रहण करने में अस्मर्थ हो रहा हूँ । इसी कारण से मैं यह कह रहा हूँ कि तुम धन्य हो, हे देवानुप्रिय ! तुमने ही जन्म और जीवन का फल जो प्रव्रज्या का ग्रहण करना है-वह अच्छी तरह पा लिया है । पुडरीक राजा की विहार करने के अभिप्रायवाली इस बात को सुनकर कडरीक अनगर ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया-उसे आदर की दृष्टि से नहीं देखा-किन्तु वे उसे सुनकर भी चुपचाप बैठ रहे । कडरीक अनगर की इस स्थिति को देखकर पुडरीक ने दूसरी चार और तीसरी

तुम देवानुप्रिया ! जाव जीवियफले तण्ण से कडरीए अणगारे पुडरीयस्स एयमद्व णो आढाइ, जाव सच्चिद्वइ, तण्ण कडरीए पौडरीएण दोच्चपि तच्चपि एववुत्ते समाने अकामए अवस्मवसे लज्जाए गारवेण य पौडरीय राय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं वहिया जणवयविहार विहरइ)

हु तो अधन्य अने अकृतपुण्य हु केमडे हु तो शन्नमा यावत् रणुवासमा तेमन् मनुष्यलवना कामलोकोमा भूर्छित यावत् अध्युपपन्न णनी रहो हु, ओएला माटेज प्रवज्जना अडणु करवामा असमर्थ थण रहो हु ओथीज हु आ कही रहो हु -ते तमे अण्णेर धन्य ओ हे देवानुप्रिय ! तमेज जन्म अने एवमनु इण के जे प्रवज्जना अडणु करना इय छे-ते सारी रीते मेणवी लीधु छे तेओ त्याथी विहार करी नथ ते आशयथी कडेवा ते पुडरीकना वयना सालाणीने कडगीक अनगारे तेनी कशीन् हरकार करी नहि ते वातने तेमणे सम्माननी दृष्टिओ स्वीकारी नहि आ णधु सालाणीने पणु तेओ त्याज मूगा यधने जेभीज रहो कडरीक अनगारनी आ स्थिति जेधने

માનવયોગાં ઉત્પત્તિઃ, જયિમ્=નીચનમ્=માણધારણમ્, તયા' કશ્મ્=જન્મમીચિ
તફલમ્=પ્રવ્રજ્યાગ્રહણમેવ મનુષ્યજન્મસારઃ, તદૈવ સ્પષ્ટયતિ-યઃ મનુ ત્વં રાજ્ય ચ
યાવદન્તઃ પુર ચ છદ્દહત્તા ' ઈર્દયિત્તા=અસ્ત્યા ' િગોયત્તા ' િગોપ્ય=તિર-
સ્કૃત્ય યાવત્ પ્રવ્રજિતઃ અહ મતુ અપન્યઃ અરુતપુણ્યો રાજ્યે યાવત્ અન્તઃ
પુરે ચ માનુષ્યકેષુ ચ કામમોગેષુ મૃચ્છિતો યાવત્ અધ્યુપપન્તો નો શ્રક્ષોમિ
યાવત્ પ્રવ્રજિતુમ્ = રાજ્યેન્ત = પુરે માનુષ્યકેષુ ચ કામમોગેષુ નિમગ્ન
માનસોઽહ ન શ્રક્ષોમિ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહીતુમ્ ઇતિ ભાવઃ । ' ત ' તત્ = તસ્માત્

વિગોયદ્દત્તા જાવ પન્વહત્તણ) જય પુટરીક રાજા કો " કટરીક અનગાર
અવસન્ન હો ગયે હૈ " યત્ સમાચાર જ્ઞાન દુઝા-તો વે સ્નાન કર અપને
અન્ત પુર પરિવાર કો સાવ છેકર જતા કટરીક અનગાર થે વહાં આયે
વહા આકર ઉન્હોં ને કટરીક અનગાર કો તોન ચાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ
કારકે વદના ફી નમસ્કાર કિયા । વદના નમસ્કાર કારકે ફિર ઉનસે વે
હસ પ્રકાર કહને લગે-હે દેવાનુપ્રિય ! તુમ ધન્ય હો, તુમ કૃતાર્થ હો, તુમ
કૃતલક્ષણ હો । હે દેવાનુપ્રિય ! તુમને મનુષ્યભવ સવધી જન્મ ઓર
જીવન કા ફલ અઠ્ઠી તરહ પાલિયા હૈ । જો તુમ રાજ્ય યાવત્ અન્તઃપુર
કા પરિત્યાગ ણવ તિરસ્કાર કર પ્રવ્રજિત હો ગયે હો । (અહ્ણણ અહ્ણણે
અકયપુન્ને રજ્જે જાવ અતેઝરે ય માણસપસુ ય કામમોગેસુ મુચ્છિણ
જાવ અજ્ઞોબવન્ને નો સચાણમિ જાવ પન્વહત્તણ । ત ધન્નેસિ ણ તુમ
મુલદ્દેણ દેવાણુપિયા ' તવ માણુસ્મણ્ જન્મ જીવિયફલે જેણ તુમ રજ્જ વ જાવ
અતેઝર ચાવિ છદ્દહત્તા િગોયદ્દત્તા જાવ પન્વહત્તણ)

જ્યારે પુટરીક રાજાને કટરીક અનગારના અવમર્ન થઈ જવાના સમા
ચારો મળ્યા ત્યારે તેઓ સ્નાન કરીને પોતાના રણવાસના પરિવારને સાથે
લઈને જ્યાં કટરીક અનગાર હતા ત્યાં આગ્યા ત્યાં આવીને તેમણે કટરીક
અનગારને ત્રણ વખત આ-શિષ્ય પ્રદક્ષિણ કરીને વદન તેમજ નમસ્કાર
કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે
હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ધન્ય છો, કૃતાર્થ છો, કૃત-લક્ષણ છો હે દેવાનુપ્રિય !
મનુષ્ય બવના જન્મ અને જીવનના ફળને સારી પેઠે મેળવી લીધું છે કેમકે
તમે ખરેખર રાજ્ય યાવત્ રણવાસને ત્યજીને તેને તિરસ્કૃત કરીને પ્રવ્રજિત
થઈ ગયા છો

(અહ્ણણ અહ્ણણે અકયપુન્ને રજ્જે જાવ અતેઝરે ય માણસપસુ ય કામ
મોગેસુ મુચ્છિણ જાવ અજ્ઞોબવન્ને નો સચાણમિ જાવ પન્વહત્તણ ' ત ધન્નેસિ ણ

कारणात् खलु व्रगीमि न धन्योऽमि त्व हे देवानुप्रिय ! ' जाव सुलब्धं जन्म-
जीवितफलम् , ततः खलु स कण्डरीकोऽनगारः पुण्डरीकस्य एतमर्थं = विहाराभि-
प्रायकमर्थं , नो आद्रियते यावत् तृष्णीकः सतिष्ठते मौनमवलम्ब्य तिष्ठति । ततः
खलु कण्डरीकः पुण्डरीकेण द्वितीयमपि तृतीयमपि = द्वित्रिवारम् , एव = पूर्वोक्त-
प्रकारेण , उक्तः सन् ' अकामए ' अकामक = कामनारहितः ' अवस्सवसे ' अप-

देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तण्ण से कडरीए अणगारे पुडरीयस्स
एयमद्व णो आढाइ जाव सच्चिद्दइ, तण्ण कडरीए पौडरीएण दोच्चपि
तच्चपि एवं बुत्ते समणे अकामए अवस्मवसे लज्जाए गारवेण य पौड-
रीय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं वहिया जणवयविहार विहरइ)
मैं अवश्य हूँ अकूनपुण्य हूँ । जो राज्य में यावत् अन्तःपुर में तथा मनुष्य
सन्धी कामभोगों में मग्नित यावत् अधुपपन्न बना हुआ हूँ । इसीलिये
प्रव्रज्या ग्रहण करने में अममर्थ हो रहा हूँ । इसी कारण से मैं यह कह
रहा हूँ कि तुम धन्य हो, हे देवानुप्रिय ! तुमने ही जन्म और जीवन
का फल जो प्रव्रज्या का ग्रहण करना है-वह अच्छी तरह पा लिया है ।
पुडरीक राजा की विहार करने के अभिप्रायवाली इस बात को सुनकर
कडरीक अनगार ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया-उसे आदर की दृष्टि
से नहीं देखा-किन्तु वे उसे सुनकर भी चुपचाप बैठ रहे । कडरीक
अनगार की इस स्थिति को देखकर पुडरीक ने दूसरी बार और तीसरी

तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तण्ण से कडरीए अणगारे पुडरीयस्स
एयमद्व णो आढाइ, जाव सच्चिद्दइ, तण्ण कडरीए पौडरीएण दोच्चपि तच्चपि
एवबुत्ते समणे अकामए अवस्मवसे लज्जाए गारवेण य पौडरीय राय आपुच्छइ,
आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं वहिया जणवयविहार विहरइ)

६ तो अधन्य अने अकृतपुण्य ६ केमडे ६ तो शन्नमा यावत्
रक्षुवासमा तेम ७ मनुष्यलवना जमसोओमा भूर्छित यावत् अ धुपपन्न णनी
रह्यो ६, ओला माटे ७ प्रव्रज्या अडलु उरवामा असमर्थ यध रह्यो ६
ओथी ७ ६ आ ढही रह्यो ६-डे तमे भउअर धन्य ओ हे देवानुप्रिय !
तमे ७ जन्म अने लवन्तु इण के ७ अनन्त्या अडलु करना ३५ छे-ते सारी
रीते भेजवी वीधु ७ तेओ त्याथी विहार करी जाय ते आशयथी कडेवा ते
पुडरीकना वयनेो सालानीने कडरीक अनगारे तेनी कशी ७ दरकार करी नहि
ते वातने तेमणे सन्माननी दृष्टिओ स्वीकारी नहि आ णधु सालानीने पणु
तेओ त्या ७ भूआ यधने जेभी ७ रह्या कडरीक अनगारनी आ स्थिति नेधने

સ્વપ્રસન્ન=અપગતસ્માન-અપ. સત્ ' લજ્જાપ ' લજ્જયા, ' ગાર્વેણ ' ગૌરવેણ=
સાધુત્વગૌરવેણ ચ પુંડરીક ગમાનમાપ્નન્તિ, આપ્નન્ત સ્થિતિરેઃ માદેઃ ચર્હિર્જન
મદવિહાર વિહરતિ ॥ સુ. ૩ ॥

મૂલ્ય- તથા તે કંડરીય થેરેહિં સહિં કિંચિકાલ ઉગ્મે
ઉગ્મેણં વિહરહ્ । તથો પચ્છા સમણત્તણપરિતંતે સમણત્તણ
ણિવ્વિષ્ણે સમણત્તણણિવ્વમ્મચ્છિણ સમણગુણમુક્કજોગી,
થેરાણં અતિયાઓ સણિયર પચ્ચોસદ્ધહ, પચ્ચોસક્કિત્તા, જેણેવ
પુંડરિગિણી ણયરીજેણેવ પુડરીયસ્સ ભવ્વણે તેણેવ ઉવાગચ્છહ,
ઉવાગચ્છિત્તા, અસોગવણિયાણ અસોગવરપાયવસ્સ અહે
પુઠાવિસિલાપદ્ધયાસિ ણિસીયહ્ ણિસીહ્ ત્તા, ઓહયમણસંકપ્પે
જાવ ઝિયાયમાણે સંચિટ્ઠહ । તથા તસ્સ પોંડરીયસ્સ અમ્મ-
ધાઈ જેણેવ અસોગવણિયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા
કંડરીય અણગાર અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુઠાવિસિલાવદ્ધ-
યાસિ ઓહયમણસકપ્પ જાવ ઝિયાયમાણં પાસહ, પાસિત્તા
જેણેવ પોંડરીય રાયા તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા
પોંડરીય રાય ણ્ણ-વયાસી-ણ્ણ ચલ્લુ દેવાણુપ્પિયા । તવ
પિટ્ઠમાહણ કંડરીય અણગારે અસોગવણિયાણ અસોગવર

વાર જયે ઉનસે પૂર્વોક્ત પ્રકારસે કહા-તવ ઉન્હો ને નહીં હચ્છા હોને પર
ભી સ્વવશતાકા અભાવ હોનેકે કારણ લજ્જાવશ હોકર સાધુત્વકે ગૌરવકે
ચ્યાલ સે-પુંડરીક રાજા સે વિહાર કરનેકી વાત પૂછી-પૂછકર ફિર વે
વહા સે સ્થવિરોકે સાથ વાહિરકે જનપદોં મે વિહાર કર ગયે ॥ સુ. ૩ ॥

પુડરીકે બીજી અને ત્રીજી વાર પણ બન્યારે પડેલા અજ્ઞાન જ વાત કહી ત્યારે
તેમણે પોતાની ઈચ્છા નહિ હોવા છતાંએ લાચાર થઈને, લક્ષિત થઈને,
સાધુત્વના ગૌરવને લક્ષ્યમાં રાખીને પુડરીક રાજાને વિહાર કરવાની વાત પૂછી
પૂછીને તેઓ ત્યારથી સ્થવિરોની સાથે બહારના જનપદમાં વિહાર કરી ગયા ૩૩

पायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झिया-
यइ । तएणं पोंडरीए अम्मधार्इए एयमट्ट सोच्चा णिसम्म
तहेव संभते समाणे उट्टाए उट्टइ, उट्टित्ता, अंतेउरपगियाल-
सपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कडरीयं तिव्वुत्तो
आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता, एव वयासी-धण्णेसि णं
तुम देवाणुप्पिया । जाव पव्वइए । अहण्णं अधण्णेइ जाव
नो पव्वइत्तए । त धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया । जाव
जीवियफले । तएणं कडरीए पुडरीएणं एवं वुत्ते समाणे
तुसिणीए संचिट्टइ, दोच्चपि तच्चपि जाव संचिट्टइ । तएणं
पोडरीए कडरीय एव वयासी अट्टो भते । भोगेहि ? हंता
अट्टो तएण से पोण्डरीए राया कोडुवियपुरिसे सदावेइ,
सदावित्ता, एव वयासी-खिप्पामेव भो देवानुप्पिया । कंड-
रीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्टवेह जाव रायाभिसे-
एणं अभिसिचइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । तत् खलु स कण्डरीक स्थितिरैः साथं
किंचित् कालम् ‘उग्ग उग्गेण’ उग्रोग्रेण-अत्युग्रेण विहारेण विहरति । तत्
पश्चात् ‘समणत्तणपरितते’ श्रमणत्तपरितान्तः=श्रमणधर्मपरिपालने खिन्नः पुनः

‘तएण से कडरीए थेरेहि सद्धि’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कडरीए) वे कडरीक (थेरेहि
सद्धि) स्वविरो के साथ (किंचिकाल) कुछ काल पर्यन्त (उग्ग उग्गेण)
अत्युग्रविहार करने में (विहरइ) लग गये (तओपच्छा समणत्तण

‘तएण से कडरीए थेरेहि सद्धि’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्यापथी (से कडरीए) ते कडरीक (थेरेहि सद्धि)
स्थितिशाली साथे (किंचिकाल) थोडा वधत सुधी तो (उग्गउग्गेण) अतीव
उग्र विहार करने में (विहरइ) प्रवृत्त तथा (तओ पच्छा समणत्तण परितते)

‘સમણત્તણનિલ્લિખ્ખે’ શ્રમણત્તરનિર્મિત્તિ = સાધુભાવે ઔદાસીન્ય પ્રાપ્ત: ‘સમણ
ત્તણનિલ્લિખ્ખે’ શ્રમણત્તરનિર્મિત્તિ = શ્રમણત્તર નિર્મિત્તિત્ત યેન મ = સાધુભાવ
નાદરપરાયણ: , અતઃ ‘સમણગુણમુક્તજોગી’ શ્રમણગુણમુક્તયોગી = શ્રમણગુણે
મુક્ત: = રહિતો યોગ. યોગ: = મનોગાઝામ્ય , સોડસ્યાસ્તીતિત્યક્તશ્રમણગુણસ્યર્થ:
સ્થવિરાણામન્તિકાત્ શનૈ: શનૈ પ્રત્યવજ્વસ્કને = વશાદાગ્ ઓતિ, પ્રત્યવજ્વસ્કય,
યત્રૈવ પુણ્ડરીકિણી નગરી યત્રૈવ પુણ્ડરીકસ્ય મયન તત્રૈવ ઉપાગચ્છતિ, ઉપાગત્ય
અશોકરનિકાયા. = અશોકરાટિકાયા અશોકરપાદપમ્ય યત્ર. પૃત્તોચ્છિલાપટ્ટકે
નિપીદતિ = ઉપવિશતિ, નિપદ, ‘ઓદ્યમણસકપ્પે’ અદ્યતમન: સન્નલ્પ: = અવહતો
મન સન્નલ્પ = મનોવ્યાપારો યસ્ય સ: = અપગતમાનસિકવ્યાપાર, ‘જાવ સ્થિયાય

પરિતત્તે) ઘાદ મેં વે શ્રમણધર્મ કે પરિપાટન કરને મેં મિન્ન ચિત્ત બન
ગયે (સમણત્તણનિલ્લિખ્ખે સમણત્તણનિલ્લિખ્ખે સમણગુણમુક્તજોગી
થેરાણ અતિયાઓ મણિય ૨ પચ્ચોસકફહ, પચ્ચોસકિક્કતા જેણેવ પુહ
રિગિણી નયરી જેણેવ પુહરીયસ્સ મયણે તેણેવ ઉવાગચ્છત્ત) સાધુભાવ
કે નિર્વાહ કરને મેં ઉદાસીનતા કો પ્રાપ્ત હો ગયે-સાધુભાવ કે પ્રતિ ઉનમેં
અનાદર ભાવ આ ગયા અતઃ એ વે શ્રમણ ગુણોં સે મુક્ત યોગવાળે બન
ગયે-શ્રમણ કે ગુણોં કા ઉન્ટેં ને પરિત્યાગ કર દિયા. ઇસ તરહ વે ધીરે
૨ સ્થવિરોં કે પામ સે સિસકકર ઇક દિન જહાં પુહરીકિણી નગરી થી
ઔર ઉસમેં ખી જહાં પુહરીક રાજા કો મયન થા વહા પર આ ગયે-
(ઉવાગચ્છિત્તા અસોગવણિયાણ અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુહવિસિલા
પદ્યસિ નિસીયહ, નિસીહત્તા ઓદ્યમણસકપ્પે જાવ સ્થિયાયમાણે

ત્યારપછી તેઓ શ્રમણ ધર્મના પાલનમા ખિન્નચિત્ત-ઉદાસ બની ગયા

(સમણત્તણનિલ્લિખ્ખે સમણત્તણનિલ્લિખ્ખે સમણગુણમુક્તજોગી થેરાણ
અતિયાઓ મણિય ૨ પચ્ચોસકફહ, પચ્ચોસકિક્કતા જેણેવ પુહરાગિણી નયરી જેણેવ
પુહરીયસ્સ મયણે તેણેવ ઉવાગચ્છત્ત)

તેઓ સાધુભાવને નશાવવામા ઉદાસ બની ગયા સાધુભાવ પ્રત્યે તેમ
નામા અનાદર ભાવ ઉત્પન્ન થઈ ગયો, એથી તેઓ શ્રમણ-ગુણોથી મુક્ત
યોગવાળા બની ગયા એટલે કે શ્રમણના ગુણોને તેમણે ત્યજી દીધા આ પ્રમાણે
તેઓ ધીમે ધીમે સ્થવિરોની પાસેથી ચુપચાપ નીકળીને એક દિવસ જ્યાં પુહરીકિણી
નગરી હતી અને તેમા પણ જ્યાં પુહરીક રાજાનું ભવન હતું, ત્યાં આવી ગયા

(ઉવાગચ્છિત્તા અસોગવણિયાણ અસોગવરપાયવસ્સ અહે પુહવિસિલાપદ
યસિ, નિસીયહ, નિસીહત્તા ઓદ્યમણસકપ્પે જાવ સ્થિયાયમાણે ચ્ચિદ્દ, તપ્પે

माणे ' यावद्ध्यायन्=आर्चयानं कुर्वन् सतिष्ठते । तत खलु तस्य पुण्डरीकस्य राज्ञोऽम्बधात्री यत्रैव अशोकवनिता तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कण्डरीकमन गारम् अशोकवरपादपस्य अधः पृथिवीशिलापट्टकेऽपहतमनःसरूप यावद् ध्यायन्त पश्यति, दृष्ट्वा, यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीक राजानमेवमवादीत्-एव खलु देवानुप्रिय । तत्र ' पिउभाउए ' प्रियभ्राता कण्डरीकोऽनंगारोऽशोकवनिताया अशोकवरपादपस्य अधः पृथिवीशिलापट्टके अपहतमनः सरूपो यावद्-यायति । तत खलु पुण्डरीकः अम्बधात्र्या एतमर्थं=कण्डरीकस्य

सचिद्वद्, तएण तस्स पोंडरीयस्स अम्भधाई जेणेव असोगवणिग्या तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार असोगवरपायस्स अहे पुढ-विसिलावट्टयसि ओह्यमणसकप्प जाय झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीय राय एव वयासी) वहा आकर वे अगोक वाटिका मे अशोक वृक्ष के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर बैठ गये । बैठकर अपहत मानसिक व्यापारवाले होकर वे वहा आर्त्तध्यान करने लगे । इनने मे पुण्डरीक राजा को अम्ब-धात्री-धायमाता उस अशोक वाटिका मे आई-वहा आकर उसने कडरीक अनंगार को अशोक पादप के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर चिन्तामग्न देखा-देखकर वह जहा पुण्डरीक राजा थे वहा आई-वहा आकर उसने पुण्डरीक राजा से इस प्रकार कहा-(एव खलु देवानुप्रिया ! तव पिउभाउए कडरीए अणगारे असोगवणिग्याए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओह्यमणसकप्पे जाव झियायइ) हे देवानुप्रिय !

तस्स पोंडरीयस्स अम्भधाई जेणेव असोगवणिग्या तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि ओह्यमणसकप्प जाय झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीय राय एव वयासी)

त्या आवीने तेओ अशोक वाटिकाभा अशोक वृक्षनी नीचे पृथिविशिला पट्टक उपर भेसी गया त्या भेसीने तेओ अपहत मानसिक व्यापारवाणा (उदास) थडने आर्त्तध्यान करवा लाग्या अटलाभा पुउरीक राजानी अम्बधात्री धायमाता-अशोक वाटिकाभा आवी त्या आवीने तेणे कडरीक अनंगारने अशोक वृक्षनी नीचे पृथिविशिला उपर आतध्यान करता नेया नेधने ते नेया पुउरीक राजा हुता त्या आवीने तेणे पुउरीक राजाने आ प्रभाणे कहु के (एव खलु देवानुप्रिया ! तव पिउभाउए कडरीए अणगारे असोगवणिग्याए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओह्यमणसकप्पे जाव झियायइ)

अशोकानिकामपगतानोऽरुक्षः श्रित्तम्यार्तं यान्मपमर्थं श्रुत्वा निःशब्द-
 वधार्य 'तद्देव' तर्था=यथास्थितगतये 'समते समाणे' मन्त्रान्तः सन्-
 'कृप पुनरसौ समागत' इति श्रुतिः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=मरुति उत्तिष्ठती-
 त्यर्थः, उत्थाय अतः पुनरिगारसपरितु यतीर अशोकानिका यतीर कण्ठरीको-
 ऽनगारस्ततीर उपागन्त्रति, उपागत्य 'निवृत्तो' त्रि कृत्वा=वारम्बम् आद-
 क्षिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा एवमादीत्- 'धन्नेसि ण तुमं देवानुप्पिया । जाव
 पव्वइए' धन्योऽसि खलु त्व हे देवानुप्पिय ! यावत् प्रजित । अह खलु
 'अधण्णे' ३ अधन्यः ३ यावत् नो नक्तोमि प्रजितुम् । 'त' तस्मात्कारणात्
 'धन्नेसि' धन्योऽमि खलु त्व हे देवानुप्पिय ! 'जाव जीवियफले' यावत्
 जीवितफलम्=तस्या जन्मजीवितफल सुखम् इति भावः । ततः खलु कण्ठरीकेण
 एव=यथासापरवचनैरुक्तः सन् तूष्णीकः सतिष्ठते, 'दोच्चपि तन्न ति' द्वितीय-
 मपि तृतीयमपि नार पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् 'जाव सच्चिद्वद्' यावत् सतिष्ठते=
 मौनमवलम्ब्य स्थित इतिभाव । ततः खलु कण्ठरीकः कण्ठरीकमेवमादीत्-अदो

सुनिये-तुम्हारे प्रिय भाई कण्ठरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक
 वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहतमनःसकल्प होकर यावत् बिना
 मग्न बैठे हुए हैं (तएण पोंडरीए अम्मधाईए एयमइ सोच्चा णिसम्म
 तद्देव समते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अतेउरपरियालसपरिवुडे
 जेणेव असोगवणिया जाव कडरीय त्तिस्सुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ,
 करित्ता एव वयासी धण्णेसि ण तुम देवानुप्पिया ! जाव पव्वइए
 अहण्ण अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्ताए त धन्नेसि ण तुम देवानुप्पिया !
 जाव जीवियफले-तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए
 सच्चिद्वद्, दोच्चपि तच्चपि जाव सच्चिद्वद्, तएण पोंडरीए कडरीय एव
 वयासी अदो भते ! भोगेहिं ! हता अदो ! तएण से पोंडरीए राया कोडु

हे देवानुप्पिय । सासणे, तभारा प्रिय भाई कण्ठरीक अनगार अशोक
 वाटिकाभा अशोक वृक्षनी नीचे पृथिवीशिला पट्टक उपर अपहतमन सकल्प
 धधने यावत् बिनाभग्न धधने भेसा रह्या छे

(तएण पोंडरीए अम्मधाईए एयमइ सोच्चा णिसम्म तद्देव समते समाणे
 उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अतेउरपरियालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कड-
 रीय त्तिस्सुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता एव वयासी धण्णेसि ण तुम
 देवानुप्पिया ! जाव पव्वइए अहण्ण अधण्णे २ जाव नो पव्वइत्ताए त धन्नेसि
 तुम देवानुप्पिया ! जाव जीवियफले तएण कडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे
 तुसिणीए सच्चिद्वद्, दोच्चपि तच्चपि जाव सच्चिद्वद्, तएण पोंडरीए कडरीय एव
 वयासी, अदो/ ता अदो ! तएण से १०२ - या कोडु बिय

ચિયપુરિસે મદ્દાવેહ, સદ્દાવિત્તા ણ્વ વયાસી-સ્વિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા !
 કઢરીયસ્સ મહત્થ જાવ રાયામિસેઅ ઉવટ્ટવેહ, જાવ રાયામિસેણ
 અભિસિંચહ) ઇસ પ્રકાર અમ્બાધાય કે મુખ સે ઇસ ઘાંત કો સુનકર
 ઓર ઉસે ચિત્ત મે જમાકર જૈસે વૈઠે હુણ થે ઉસી તરહ સમ્રાન્ત હોતે
 હુણ-યે ક્યોં આયે હૈ-ઇસ પ્રકાર શક્તિ ચિત્ત હોતે હુણ-ઉત્થાનશક્તિ
 સે ઉઠે મહુન જલ્દી સુનતે હી પ્રમાણ-ઉઠે ઓર ઉઠકર અન્તઃપુર કે પરિ-
 વાર કો સાથ લેકર જહા અશોક વનિકા યી-વહા પર આયે-વહાં
 આકર કઢરીક અનગાર કે પામ પહ્ચે-વહાં પહ્ચ કર ઉન્હો ને ઉન્હેં
 ત્રીન વાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કિયા વાદ મેં વે કહને લગે-હે દેવાનુપ્રિય !
 તુમ્હેં ધન્યવાદ હૈ-જો તુમ રાજ્ય ણ્વ અન્નઃપુર કા પરિત્યાગ કર પ્રવ્રજિત
 હો ગયે હો ઇત્યાદિ જિમ પ્રકાર પરિલે ઉનસે કહા યા ઇમી પ્રકાર અથ
 મી કહા મેં અધન્ય હું-૧-જો યાવત્ દીક્ષિત હોને કે લિયે શક્તિશાલી
 નહીં હો રહા હું । ઇસ લિયે હે દેવાનુપ્રિય ! આપકે લિયે વન્યવાદ હૈ-આપને
 જન્મ ઓર જીવન કા ફલ અચ્છી તરહ પ્રાપ્ત કર લિયા હૈ । ઇસ તરહ
 પ્રજ્ઞાસા પરક વચનોં સે પુઢરીક રાજા દ્વારા કહે ગયે વે કઢરીક અન-
 ગાર કુછ મી નહીં બોલે-કિન્તુ ચુપચાપ હી વૈઠે રહે-। જવ પુઢરીક રાજા
 ને ઉનકી ઇસ પ્રકાર કી સ્થિતિ દેખી-તવ દુવારા તિવારા મી ઉન્હો ને

પુરિસે મદ્દાવેહ, સદ્દાવિત્તા ણ્વ વયાસી સ્વિપ્પામેવ મો દેવાણુપ્પિયા ! કઢરીયસ્સ
 મહત્થ જાવ રાયામિસેઅ ઉવટ્ટવેહ, જાવ રાયામિસેણ અભિસિંચહ)

આ પ્રમાણે અમ્બાધાયના મુખથી આ વાત સાલળીને અને તેને મનમાં
 ધારણ કરીને જેવી સ્થિતિમાં તેઓ બેઠા હતા તેવી જ સ્થિતિમાં સ્તબ્ધ થઈને
 " તેઓ કેમ આવ્યા છે " આ પ્રમાણે શકાયુક્ત થતા-ઉત્થાન શક્તિ વડે
 તેઓ બીભા થયા અને બીભા થઈને ૪૮લી રણવાસના પરિવારને સાથે લઈને
 જ્યાં અશોક વાટિકા હતી ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને કઢરીકે અનગારની પાસે
 પહોંચ્યા ત્યાં પહોંચીને તેમણે તેમને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ કર્યા બાદ
 કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ખરેખર ધન્યવાદ ઘટે છે કે જો તમે
 રાજ્ય અને રણવાસનો ત્યાગ કરીને પ્રવ્રજીત થઈ ગયા છો, વગેરે જેમ પહેલા
 કહ્યું હતું તેમજ તે વખતે પણ કહ્યું હતું તો અધન્ય હું-૩-જે યાવત્ દીક્ષા
 અર્હેણ કરવાનું પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ધન્ય
 છે તમેએ ખરેખર પોતાના જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી
 લીધું છે આ પ્રમાણે પ્રશસાજનક વચનોથી પુઢરીક રાજા વડે સંબોધિત
 કરાયેલા તે કઢરીક અનગાર કંઈપણ બોલ્યા નહિ, તેઓ મૂંગા થઈને બેઠીજ

अशोकानिकामपयताशोऽक्षयः स्थितस्यार्थं यानरूपमर्थं भुक्त्वा निश्चयः-
 वधार्य 'तद्देव' तद्भव=यथास्थिततथैव 'समते समाणे' मन्त्रान्तः सन्-
 'य ए पुनरसौ समागत' इति गदितः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=मृष्टिति उत्तिष्ठती-
 त्यर्थः, उदयाय अतः पुनरिगारसपरिष्ठित यतीर अशोकानिका यतीव कण्डरीको-
 ऽनगारस्तथैव उपागन्त्रति, उपागत्य 'निस्तुतो' त्रि हृत्वा=वारमप्य आद-
 क्षिणप्रदक्षिण करोति, हृत्वा एवमगदीन्- 'धण्येसि न तुम देवानुप्पिया ! जाव
 पव्वइए' धन्योऽसि खलु न्य हे देवानुप्पिय ! यावत् प्रजित । अह खलु
 'अधण्ये ३ अधन्य' ३ यावत् नो जक्रोमि प्रजितुम् । 'त' तम्मात्कारणा
 'धन्नेसि' धन्योऽमि खलु त्व हे देवानुप्पिय ! 'जाव जीवियफले' यावत्
 जीवितफल्मू=त्यया जन्मजीवितफल मुत्तयम् इति भावः । ततः खलु कण्डरीकेण
 एव=वशासापरवचनैरुक्तः सन् तूष्णीकं सतिष्ठते, 'दोच्चपि तच्च वि' द्वितीय-
 मपि तृतीयमपि तार पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् 'जाव सच्चिद्दह' यावत् सतिष्ठते=
 मौनमवलम्ब्य स्थित इति भावः । ततः खलु पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमगदीन्-अद्वो

सुनिये-तुम्हारे प्रिय भाई कण्डरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक
 वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहतमनःसकट्य होकर यावत् बिन्ता
 मग्न बैठे हुए हैं (तएण पोंडरीए अम्मधार्यए एयमद्व सोच्चा णिसम्म
 तद्देव समते समाणे उट्टाए उट्टेइ, उट्टित्ता अतेउरपरियालसपरिवुडे
 जेणेव असोगवणिया जाव कडरीय त्तिस्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ,
 करित्ता एव वयासी धण्येसि न तुम देवानुप्पिया ! जाव पव्वइए
 अहण्ण अधण्ये ३ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसि न तुम देवानुप्पिया !
 जाव जीवियफले-तएण कडरीए पुडरीएण एव बुत्ते समाणे तुसिणीए
 सच्चिद्दह, दोच्चपि तच्चपि जाव सच्चिद्दह, तएण पोंडरीए कडरीय एव
 वयासी अद्वो भते ! भोगेहि ! हता अद्वो ! तएण से पोंडरीए राया कोडु

हे देवानुप्पिय ! साधुगो, तमारा प्रिय भाई कण्डरीक अनगार अशोक
 वाटिकाभा अशोक वृक्षनी नीचे पृथिवीशिला पट्टक उपर अपहतमन सकट्य
 यधने यावत् बिन्तामग्न यधने भेसी रह्या छे

(तएण पोंडरीए अम्मधार्यए एयमद्व सोच्चा णिसम्म तद्देव समते समाणे
 उट्टाए उट्टेइ, उट्टित्ता अतेउरपरियालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कड-
 रीय त्तिस्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता एव वयासी धण्येसि न तुम
 देवानुप्पिया ! जाव पव्वइए अहण्ण अधण्ये २ जाव नो पव्वइत्तए त धन्नेसि
 तुम देवानुप्पिया ! जाव जीवियफले तएण कडरीए पुडरीएण एव बुत्ते समाणे
 तुसिणीए सच्चिद्दह, दोच्चपि, तच्च वि जाव सच्चिद्दह, तएण पोंडरीए कडरीय एव
 वयासी, अद्वो भते ! भोगेहि ! हता अद्वो ! तएण से पोंडरीए राया कोडु बिय

बियपुरिसे महावेह, सहावित्ता एव वयासी-ग्विप्पामेव भो देवानुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्टवेह, जाव रायाभिसेएण अभिसिंचइ) इस प्रकार अम्याधाय के मुख से इस बात को सुनकर और उसे चित्त में जमाकर जैसे बैठे हुए थे उसी तरह सभ्रान्त होते हुए-ये क्यों आये हैं-इस प्रकार शक्ति चित्त होते हुए-उत्थानशक्ति से उठे बहुत जल्दी सुनते ही प्रमाण-उठे और उठकर अन्तःपुर के परिवार को साथ लेकर जहां अशोक वनिका थी-वहां पर आये-वहां आकर कडरीक अनगार के पास पहुँचे-वहां पहुँच कर उन्होंने उनहीं तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया बाद में वे कहने लगे-हे देवानुप्रिय ! तुम्हें धन्यवाद है-जो तुम राज्य एवं अन्तःपुर का परित्याग कर प्रव्रजित हो गये हो इत्यादि जिस प्रकार पहिले उनसे कहा था हमी प्रकार अब भी कहा मैं अधन्य हूँ-३-जो यावत् दीक्षित होने के लिये शक्तिशाली नहीं हो रहा हूँ । इसलिये हे देवानुप्रिय ! आपके लिये धन्यवाद है-आपने जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है । इस तरह प्रशंसा परक वचनों से पुण्डरीक राजा द्वारा कहे गये वे कडरीक अनगार कुछ भी नहीं बोले-किन्तु चुपचाप ही बैठे रहे-। जब पुण्डरीक राजा ने उनकी इस प्रकार की स्थिति देखी-तब दुवारा तिवारा भी उन्होंने ने

पुरिसे महावेह, सहावित्ता एव वयासी ग्विप्पामेव भो देवानुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्टवेह, जाव रायाभिसेएण अभिसिंचइ)

आ प्रभाण्णे अभाधायना भुण्थी आ वात सालणीने अने तेने मनभा धारणु करीने जेवी स्थितिमा तेज्जो जेका डता तेवी अ स्थितिमा स्तब्ध थधने " तेज्जो केम आव्या छे " आ प्रभाण्णे शक्ययुक्ता यता-उत्थान शक्ति वडे तेज्जो जेका थया अने जेका थधने १८वीं रणवासना परिवारने साये लधने जया अशोक पाटिका डती त्या अव्या त्या आवीने कडरीक अनगारनी पासे पडोय्या त्या पडोय्यीने तेमण्णे तेमने त्रणुवार आदक्षिणु प्रदक्षिणु कर्या भाइ कडेवा लाग्या के छे देवानुप्रिय ! तमने भरेभर धन्यवाद धरे छे के जे तमे राज्य अने रणवासना त्याग करीने प्रमत्त थर्ग गया छे, वगेरे जेम पडेल्ल कछु डंतु तेमज ते वणते पण कछु हु तो अधन्य छु-३-जे यावत् दीक्षा अडणु करवानु पणु सामर्थ्य धरावतो नथी जेथी छे देवानुप्रिय ! तमने धन्य छे तमेज्जो भरेभर चोताना जन्म अने जवननु क्षण सारी रीने प्राप्त करी स्वीधु छे आ प्रभाण्णे प्रशसाजनक वचनोथी पुण्डरीक राजा वडे सजोधित कथेवा ते कडरीक अनगार कछपणु जोट्या नहि, तेज्जो भूणा थधने जेमीज

મંત્રે ' મોગેદિં ' અર્થે દે મદન્ત ! મોગે ? = કિં મોગેઃ પ્રયોજનમસ્તિ ? इति,
 પુઢરીક' માદ- ' દતા ! અદ્વો ' = દન્ત ! અર્થઃ = મોગપ્રપ્રમોક્તુમાનમોડ્મીતિ
 માઃ । તતઃ સ્વલુ = પુઢરીકામિષાયાનાનન્તરમિત્યર્થ', સ પુઢરીકો રાજા
 પૌદુમ્નિકપુરુષાન્ ગદ્યતિ = માદ્યતિ, ગદ્યતિત્વા, ણ્યમવદત્ - સિમમેવ મો
 દેવાનુમિયાઃ ! પુઢરીકસ્ય મહાર્થમ્ = મત્યર્થમ્ ' જાત રાયામિસેય ' યાત્ રાજા
 મિષેકમ્ ' ડાદ્વેદ' ઉપસ્થાપયત = પરિસ્થપયત, ' જાત રાયામિસેય અમિસિ
 ચદ' યાત્ રાજ્યામિષેકેણ અમિપિશ્ચતિ સ પુઢરીકો રાજા પુઢરીક રાજપદે
 સ્થાપયતિ ॥ સૂ. ૪ ॥

મૃમ-તણાં પુઢરીક સયમેવ પંચમુદ્વિયં લોચ કરેદ્,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्होंने ने कुछ नहीं ध्यान दिया
 केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे-तब पुनः पुडरीकने उन कडरीक
 अनगार से इस प्रकार कहा-हे भदन्त ! क्या आप को भोगों से तात्पर्य
 है ? तब कडरीक ने कहा हा-मेरा मन भोगों को उपभोग करने के
 लिये हो रहा है । इस तरह कडरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुड
 रीक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा
 कहा-मो देवानुमियो तुम लोग कडरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य
 सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुडरीक राजा की इस आज्ञा के अनु
 सार, उनलोगों ने वैसा ही किया-जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित
 हो चुकी-तब पुडरीकने कडरीक का राज्याभिषेक कर दिया-कडरीक
 को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

રહ્યા પુડરીક રાજાએ તેમની આવી સ્થિતિ જોઇને બીજી અને ત્રીજી વખત
 પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું પણ તેમણે તેની કંઈ દરકાર કરી નહિ તેઓ ફક્ત
 મૂંગા થઇને બેસી જ રહ્યા ત્યારે ફરી પુડરીકે તે કડરીક અનગારને આ
 પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભગવન્ ! તમને શું હજી 'લોગ ઉપભોગોની ઈચ્છા છે ?
 ત્યારે કડરીકે કહ્યું કે હા, ખરેખર મારું મન લોગ ઉપભોગમા પ્રવૃત્ત થવા
 માંગે છે આ પ્રમાણે કડરીકની ઈચ્છા જાણીને પુડરીક રાજાએ કૌટુમ્બિક
 પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુમિયો !
 તમે લોકો કડરીક માટે-રાજ્યાભિષેક યોગ્ય સામગ્રી ભેગી કરો પુડરીક
 રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા સાંભળીને તે લોકોએ તેમજ કયું જ્યારે રાજ્યા
 ભિષેકની બધી વસ્તુઓ એકત્રિત થઇ ગઈ ત્યારે પુડરીકે કડરીકનો રાજ્યાભિષેક કરી
 દીધો એટલે કે કડરીકને રાજ્યાસને બેમાડી દીધો ॥ સૂત્ર ૪ ॥

करित्ता, सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता
कडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ, गेण्हित्ता, इम
एयारूवं अभिग्गह अभिगिण्हइ-कप्पइ मे थेरे वंदित्ता
णमंसित्ता थेराणं अतिए चाउज्जाम धम्म उवसपज्जित्ताणं
तओ पच्छा आहार आहरित्तए त्तिक्कट्टु, इम च एयारूवं
अभिग्गह अभिगिण्हित्ता णं पोडरिगिणीए पडिणिक्खमइ,
पडिणिक्खमित्ता, पुब्बाणुपुत्विचरमाणे गामाणुगाम दूइज्ज-
माणे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥सू०५॥

टीका—‘तएण पुडगीए’ इत्यादि । ततः खलु पुण्डरीकः स्वयमेव पञ्च
मुष्टिक लोच करोति, तथा स्वयमेव ‘चाउज्जाम’ चातुर्याम=चतुर्महाव्रतलक्षण
धर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य, ‘कडरीयस्स सतिय’ कण्डरीकस्य सत्कर्म=कण्डरीक
सम्बन्धि इत्यर्थः, ‘आयारभडय’ आचारभाण्डक आचाराय=माधोः पञ्चविधा
चारपरिपालनाय यद्भाण्डक=स्त्रपात्रमदोकमुखवस्त्रिकारजोहरणादिरूपम् तद्

‘तएण पुडगीए सयमेव पचमुट्टिय’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पुडगीए) पुडरीक ने (सयमेव)
अपने आप (पचमुट्टिय लोच करेइ) अपना पचमुष्टिक लोच किया-
(करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता कडरीयस्स
सतिय आयारभडय गेण्हइ) और लोच करके स्वय ही उन्होंने-चातु
र्याम-चतुर्महाव्रत रूप धर्म को धारण कर लिया । एवं कडरीक के
अनगार अवस्था मन्धी आचार भाण्डक को-वस्त्र, पात्र सदोरक मुख
वस्त्रिका, रजोहरण आदिरूप साधु चिह्नों को-ले लिया । (गेण्हित्ता
इम एयारूवं अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता

‘तएण पुडगीए सयमेव पचमुट्टिय’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्त्वारपछी (पुडगीए) पुडरीके (सयमेव) पोतानी
जते ज (पचमुट्टिय लोच करेइ) पोतानु पचमुष्टिक लुथन कट्टु

(करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कडरीयस्स
सतिय आयारभडय गेण्हइ)

अने लुथन कराने जते ज तेमछे चातुर्याम-चतुर्महाव्रत रूपधर्मे धारण
करी लीधा अने कडरीकनी अनगार अवस्था मन्धी आचार लाउके-वस्त्र,
पात्र, सदोरक मुखवस्त्रिका, रजोहरण वगेरे साधु चिह्नों ले लीधा

મંત્રે ' ભોગેદિ ' અર્થે હે મદન્ન ! ભોગે : ? = ફિ ભોગે : પ્રયોજનમસ્તિ ? इति,
 પण્ડરીક' માટે- ' હતા । મદ્નો ' = મન્ત । અર્થ : = ભોગમુપમોક્તુમાનમોડ્મ્યીતિ
 માત્ર । તત : સ્વલુ = કણ્ડરીકાભિપ્રાયજાનનન્તરમિત્યર્થઃ, સ પુણ્ડરીકો રાજા
 કૌટુમ્બિકપુરુષાત્ ગન્દયતિ = માદયતિ, ગન્દયિત્વા, પચમવદત્ - મિપમેવ મો
 દેવાનુમિયા । કણ્ડરીકસ્ય મહાર્થમ્ = મત્યર્થમ્ ' જાત રાજામિસેય ' યાત્ રાજા
 મિપેકમ્ ' ડગદ્વેડ ' ઉપસ્થાપયત = પરિસ્થપયત, ' જાત રાજામિસેય અમિસિ
 ચડ ' યાત્ રાજ્યામિપેકેણ અમિપિચ્ચતિ સ પુણ્ડરીકો રાજા કણ્ડરીકં રાજપદે
 સ્થાપયતિ ॥ સૂ. ૪ ॥

મૂળ-તણાં પુડરીક સયમેવ પચમુટ્ટિય લોય કરેદ,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्होंने ने कुछ नहीं ध्यान दिया
 केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे-तब पुनः पुंडरीकने उन कंडरीक
 अनंगार से इस प्रकार कहा-हे मदन ! क्या आप को भोगों से तात्पर्य
 है ? तब कंडरीक ने कहा हा-मेरा मन भोगों को उपभोग करने के
 लिये हो रहा है । इस तरह कंडरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुण्ड
 रीक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा
 कहा-ओ देवानुमियो तुम लोग कंडरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य
 सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुंडरीक राजा की इस आज्ञा के अनु
 सार, उनलोगों ने विसा ही किया-जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित
 हो चुकी-तब पुंडरीकने कंडरीक का राज्याभिषेक कर दिया-कंडरीक
 को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

રહ્યા પુડરીક રાજાએ તેમની આવી સ્થિતિ જોઇને બીજી અને ત્રીજી વખત
 પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું પણ તેમણે તેની કંઈ દરકાર કરી નહિ તેઓ ફક્ત
 મૂંગા થઇને બેસી જ રહ્યા ત્યારે ફરી પુડરીકે તે કડરીક અનંગારને આ
 પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભગવન્ ! તમને થુ હજી ભોગ ઉપભોગોની ઇચ્છા છે ?
 ત્યારે કડરીકે કહ્યું કે હા, ખરેખર માર મન ભોગ ઉપભોગમા પ્રાપ્ત થવા
 ઇચ્છે છે આ પ્રમાણે કડરીકની ઇચ્છા જાણીને પુડરીક રાજાએ કૌટુમ્બિક
 પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુમિયો !
 તમે લોકો કડરીક માટે-રાજ્યાભિષેક યોગ્ય સામગ્રી ભેગી કરો પુડરીક
 રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા સાંભળીને તે લોકોએ તેમજ કથું જનારે રાજ્યા
 ભિષેકની બધી વસ્તુઓ એકત્રિત થઇ ગઈ ત્યારે પુડરીકે કડરીકને રાજ્યાભિષેક કરી
 દીધો એટલે કે કડરીકને રાજ્યામને બેઠાડી દીધો ॥ સૂત્ર ૪ ॥

करित्ता, सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ, गेण्हित्ता, इम एयारुव अभिग्गहं अभिगिण्हइ-कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अतिए चाउज्जाम धम्म उवसपज्जित्ताणं तओ पच्छा आहार आहरित्तए त्तिकट्टु, इम च एयारुव अभिग्गह अभिगिण्हित्ता णं पोडरिगिणीए पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता, पुब्बाणुपुत्विचरमाणे गामाणुगाम दूइज्ज-माणे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥सू०५॥

टीका—‘तएण पुडगीए’ इत्यादि । ततः खलु पुण्डरीकः स्वयमेव पञ्च मुष्टिक लोच करोति, तथा स्वयमेव ‘चाउज्जाम’ चातुर्याम=चतुर्महाव्रतलक्षण धर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य, ‘कंडरीयस्स सतिय’ कण्डरीकस्य सत्कर्म=कण्डरीक सम्बन्धि इत्यर्थः, ‘आयारभडय’ आचारभाण्डक आचाराय=माधोः पञ्चविधा चारपरिपालनाय यद्भाण्डकं=स्त्रपात्रसदोक्तमुखवस्त्रिकारजोहरणादिरूपम् तद्

‘तएण पुडगीए सयमेव पचमुट्टिय’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पुडगीए) पुडरीक ने (सयमेव) अपने आप (पचमुट्टिय लोच करेइ) अपना पचमुष्टिक लोच किया—(करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ) और लोच करके स्वय ही उन्होंने—चातुर्याम=चतुर्महाव्रत रूप धर्म को धारण कर लिया । एवं कंडरीक के अनगार अवस्था सम्बन्धी आचार भाण्डक को—वस्त्र, पात्र, सदोरक मुख वस्त्रिका, रजोहरण आदिरूप माधु चिह्नों को—ले लिया । (गेण्हित्ता) इम एयारुव अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता

‘तएण पुडगीए सयमेव पचमुट्टिय’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) तत्पर्यायी (पुडगीए) पुडरीके (सयमेव) पोटानी जते न (पचमुट्टिय लोच करेइ) पोटानु पचमुष्टिक लुत्थन कट्टु

(करित्ता सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स सतिय आयारभडय गेण्हइ)

अने लुत्थन कराने जते न तेमहे चातुर्याम=चतुर्महाव्रत ३पधमने धारण करी लीधा अने कंडरीकनी अनगार अवस्था सम्बन्धी आचार भाण्डके—वस्त्र, पात्र, सदोरक मुखवस्त्रिका, रजोहरण वगैरे साधु चिह्नोंने लक्ष लीधा

ગૃહાતિ, ગૃહીતૃયા, ઇમમેતદ્વપ=વક્ષ્યમાણમભિગ્રહ=પ્રતિજ્ઞાવિશેષમ્ અભિગૃહાતિ=પરોતિ અભિગ્રહરૂપમાદ-કલ્પતે મે સ્થયિગત પન્દિત્યા નમસ્યિત્વા સ્થવિરાણા મન્ત્રિકે ચાતુર્યામ ધર્મમ્ ' ઉપસવજ્ઞિજ્ઞાણ ' ઉપસવપ=સ્વીકૃત્ય, તતઃ પચ્છાત્-આહારમાહર્તુમ્' इति कृत्या निश्चित्य, इमं च एतद्वपम् अभिग्रहम्, अभिगृह्य खलु पुण्डरीकिण्या प्रतिनिष्क्राम्यति निम्परति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पुष्पाणुपुर्व्व ' पूर्व्वાનુ પૂર્વ્વા ચરન્, ગામાનુગામ દ્રવ્યન્ યત્ર સ્થયિગ મગવન્તસ્તર્ગેવ પ્રાધારયન્=ગમ નાય ગન્તુ પ્રમ્થિત' ॥ ૬૦૫ ॥

થેરાણ અતિણ ચાઉજ્જામ ધમ્મ ઉપસવજ્ઞિજ્ઞાણ, તઓ પચ્છા આહાર આહરિત્તાણ) પાદ મેં ડન્નેને ટસ પ્રકાર અભિગ્રહ ધારણ કિયા કિ જપતકમં સ્થવિર ભગવનો કો પદના નમસ્કાર કર અનેકે પાસસે ચાતુર્યામ ધર્મકો ધારણ નહીં કર લૂગા, તપતક મેં આહાર પાની ગ્રહણ નહીં કરૂંગા અનેકે પાસ ચાતુર્યામ ધર્મ ધારણ કરકે હી આહાર ગ્રહણ કરૂંગા (ત્તિ કદ્દુ ઇમચ પ્યાહુવ અભિગ્રહ અભિગિણિહિત્તા ણ પોઢરિગિણીપ પહિનિક્કમમ્, પહિનિક્કમિત્તા પુષ્વાણુપુર્વ્વ ચરમાણે ગામાણુગામ દ્વ ઝ્જમાણે જેણેવ થેરા ભગવતો તેણેવ પહારેત્થ ગમમાણ) इस प्रकार का यह अभिग्रहण कर वे उस पुण्डरीकिणी नगरी से निकले-और निकल कर तीर्थंकर परम्परानुसार विहार करते हुए एवं एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विचरण करते हुए वे उस ओर प्रस्थित हुए कि जहां स्थविर भगवत विराजमान थे ॥ सूत्र ५ ॥

(તેણિહિત્તા ઇમ પ્યાહુવ અભિગ્રહ અભિગિણિહિ, કલ્પદ, મે થેરે વદિતા ણમસિત્તા થેરાણ અતિણ ચાઉજ્જામ ધમ્મ ઉપસવજ્ઞિજ્ઞાણ તઓપચ્છા આહાર આહરિત્તાણ)

ત્યારમાહ તેમણે આ જાનને. અભિગ્રહ ધારણ કર્યો કે જ્યાં સુધી હું સ્થવિર ભગવતોને વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ નહિ કર ત્યાં સુધી હું આહાર પાણી ગ્રહણ કરીશ નહિ તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ કરીને જ હું આહાર ગ્રહણ કરીશ

(ત્તિ કદ્દુ ઇમ ચ પ્યાહુવ અભિગ્રહ અભિગિણિહિત્તા ણ પોઢરિગિણીપ પહિનિક્કમમ્, પહિનિક્કમિત્તા પુષ્વાણુપુર્વ્વ ચરમાણે ગામાણુગામ દ્વ ઝ્જમાણે જેણેવ થેરા ભગવતો તેણેવ પહારેત્થ ગમમાણ)

આ પ્રમાણે તે અભિગ્રહને મનમાં ધારણ કરીને તેઓ તે પુંડરીકિણી નગરીની બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને તીર્થંકર પરપરા સુજળ વિહાર કરતા કરતા અને આ પ્રમાણે એક ગામથી બીજે ગામ વિચરણ કરતા કરતા તેઓએ જ્યાં સ્થવિર ભગવતો વિરાજમાન હતા તે તરફ પ્રસ્થાન કર્યું ॥૨૦૫॥

मूलम्--तएणं तस्स कण्ठीयस्स रण्णो त पणीय पाण-
भोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिण य अइ
भोयणप्पसगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ । तएणं
तस्स कण्ठीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणंसि
पुव्वरत्तावरत्तकल्लसमयसि सरीरसि वेयणा पाउव्वभूया
उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगय-
सरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ । तएणं से कण्ठीए राया
रज्जे य रट्ठे य अतेउरे य जाव अज्जोववन्ने अट्टदुहट्ठवसट्ठे
अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किञ्चा अहे
सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकाल ट्ठिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए
उव्वण्णे । एवामेव समणाउसो । जाव पव्वइए समाणे
पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्ठि-
स्सइ, जहा व से कण्ठीए राया ॥ सू० ६ ॥

टीका—‘तएणं तस्स’ इत्यादि । तत् खलु तस्य कण्ठीयस्य राज्ञस्स
‘पणीय’ प्रणीतम् = सरस गरिष्ठ च पानभोजनम् ‘आहारियस्स समाणस्स’
आहारितस्य सत्त=आहार कुर्वतः सत्त ‘अज्जागरियेण य’ अतिजागरितेन च=

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स कण्ठीयस्स रण्णो) उस कण्-
ठीय राजा के (त पणीय पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स अतिजा-
गरिणय अइभोयणप्पसगेणय से आहारे णो सम्मं परिणमइ) इस
प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजन के खाने से तथा विपत्तियों की अधिक
आसक्ति के कारण अतिजागरण करने से एवं प्रमाणाधिक भोजन के

‘तएणं तस्स कण्ठीयस्स रण्णो’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) त्थारपथी (तस्स कण्ठीयस्स रण्णो) ते कण्ठीय राजाने

(त पणीय पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिण य अइभो-
यणप्पसगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ)

ते प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजनना आहारथी तेभ-ए विपत्तियमा
पधारे पडती आसक्तिना वीधे, पधारे नगरखु डरवाधी, अने प्रमाणु डरता

त्रिपयाम्भरतेरतिजागरणया ' अमोयणप्पमग ' अतिमोजनमसङ्गेन=प्रमाणाधिक
 मोजनेन त आहारो नो सम्पक् परिणमति=यथायदाहारस्य परिपाको न भवति ।
 ततः सल्ल तस्य कण्ठरीयस्य रागः ' तसि ' आहारसि ' तम्मिन् आहारे ' अप
 रिणममाणंसि ' अपरिणमति=परिपाकमगन्त्रति तसि ' पुनरत्तावरत्तकालसम
 यसि ' पूर्वतापररात्रका उपपमे=रात्रोर्मध्यभागे ' मरीरसि ' सरीर वेदना प्रादु
 र्भूता, कोदशीवेदना ? उज्ज्वला=सुखलेशरहिता, विपुला=विशाला-सर्वशरीरव्याप्ता
 ' पगादा ' पगादा ' जाय दुरहियासा ' यावद् दुरधिसल्ल=सोढुमशक्या, पुनः
 स कण्ठरीको राजा ' पित्तज्जरपरिगयसरीरे ' पित्तज्जर परिगतशरीर=पित्तज्वरेण
 परिगत=व्याप्त शरीर यस्य स=पित्तज्जरपरिव्याप्तशरीर. ' दाहवक्तीए ' दाह
 व्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरज्वालासमाक्रान्त चापि विहरति=आस्ते । ततः सल्ल स
 कण्ठरीको राजा राज्ये च राष्ट्रे च अन्नपुरे च ' जाय अज्जोवक्कने ' यावत्

प्रसंग से कृत्त आहार का परिपाक ठीक २ नहीं होता रहा-(तएण
 तस्स कण्ठरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणसि पुनरत्तावर
 त्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पावप्पुया उज्ज्वला विडला पगादा जाव
 दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ)
 इसलिये एक दिन की यात है कि उन कडगीक राजा के जब वह कृत्त
 सरस गरिष्ठ आहार अच्छी तरह नहीं पचा तब उनके शरीर में रात्रि
 के मध्यभागमें वेदना प्रादुर्भूत हुई। जिस वजह से वह वेदना सुख
 के लेश से वर्जित थी उनके समस्त शरीर भर में व्याप्त हो रही थी
 बहुत अधिक थी-यावत् वह उन्हें दुरधिसल्ल हो रही थी। पित्तज्वर
 से व्याप्त है शरीर जिन का ऐसे वे कडगीक राजा दाहज्वर की ज्वाला

पणु वधादे भोजन प्रसजोभा करेला आहरेनु पायन अराणर थतु नडोतु

(तएण तस्स कण्ठरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणसि पुन
 रत्तावरत्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पावप्पुया उज्ज्वला विडला पगादा जाव
 दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ)

अथी अेक दिवसनी पात छे डे ते कडगीक राजने व्यादे भोजन प्रभा
 दीधिला ते सरस अने गरिष्ठ आहारनु सारी रीते पाय । थयु नडि त्यादे
 रात्रिना मध्य भागभा तेमना शरीरभा वेदना थवा भाडी, तेथी तेओ अप्प
 हु भी थया आ वेदनाभा मात्र डुण्ण थतु डतु, ते वेदना तेमना सपणु
 शरीरभा व्याप्त थती प्रमाणभा ते जहु वधादे डती यावत् ते
 तेमना भाटे डुरा (सल्ल) थपडी डती पित्तज्वरथी व्याप्त थयेला
 शरीरवाणा ते

॥ व्याणाओथी सजगी डठ्या

अध्युपपन्नः—मूर्च्छितो गृध्रः ग्रथितः अधुपपन्नः राज्यादिषु सर्वथासक्त इत्यर्थः,
'अट्टदुहृद्वसट्टे' आर्तदुःखार्तवशातः=तत्र=आर्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्तः=
देहदुःखयुक्तः, वशातः=राज्यराष्ट्रान्तः पुराद्यासमतेन्द्रियरसेन विषयशुभविद्योग-
सम्भाजनया पीडित=आर्तध्यानोपगत इत्यर्थः । 'अकामए' अकामकः=अनि-
च्छक—भरणवाञ्छारहितः, 'अवस्सवसे' अपस्ववश=अपगतस्वातन्त्र्यः परा-
धीनः सन् कालमासे कालं कृत्वा 'अहे सत्तमाए' अधः सप्तम्या पृथिव्याम्
तमस्तमः प्रभाख्ये सप्तमे नरके 'उक्कोसकालट्टिइयसि' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

से भी युक्त हो गये । (तएण से कडरीए राया रज्जे य रट्टे य अतेउरे
य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहृद्वसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासेकाल
किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयसि नरयसी नेरइयत्ताए
उववण्णे) इस तरह दुःखित बने हुए वे कडरीक राजा राज्य राष्ट्र, एवं
अन्तपुर में अव्युपपन्न हो गये इस प्रकार राज्यादिकों में सर्वथा आस-
क्तिभाव से बंधे हुए वे राजा मन से दुःखित होकर, देह के दुःख से
एकक्षण अर्तध्यान में पड़ गये । अन्त में वे, ये नहीं चाहते थे कि मेरी
मृत्यु हो जावे—तौ भी सासारिक स्थिति से बन्धे हुए होने के कारण
या वेदनाओं से पीडित होने के कारण वे स्ववश नहीं थे परतत्र थे,
इसलिये काल अवसरकाल करके मर कर नीचे तमस्तम प्रभा नाम के
सातवे नरक में कि जो उत्कृष्ट काल स्थिति प्रमाण है—अर्थात् ३३ सा

(तएण से कडरीए राया रज्जे य रट्टे य अतेउरे य जाव अज्झोववन्ने
अट्टदुहृद्वसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए
पुढवीए, उक्कोसकालट्टिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववण्णे)

आ प्रभाए दुःखित थयेला ते कडरीक राजा राज्य, राष्ट्र अने राज्य
मासमा अध्युपपन्न थर्ध गया ओटवे के वधाई पड़ता आसक्त थर्ध गया
आ प्रभाए गन्त वगेरेमा स पूर्णपणे आसक्त लावथी आधयेला ते राजा
मनथी दुःखित थधने, शारीरिक कष्टथी ओक क्षण माटे पण मुक्ति नहि थवाने
कारण विषय सुप्पोना वियोगनी सलापना अ ल तेमज्ज राज्य, राष्ट्र, राज्यमास
वगेरेमा आसक्त छिन्दियोना वशमा होवाने कारण आर्तध्यानमा भ्रम थर्ध
गया छोट तेज्जा मृत्युने छिन्नता नहोता छताओ सासारिक पातावरणमा
आधयेला होवाने कारण अथवा वेदनाओथी पीडित होवाने कारण तेज्जा
स्ववश हुता नहि, परवश—परतत्र हुता, ओथी काण अवमरे काण करीने,—
मृत्यु पागीने—नीचे तमस्तमप्रभा नामना सातमा नरकमा के ओ उत्कृष्ट काल

विषयामसतेरतिजागरणया ' आभोजनप्राप्तय ' अतिभोजनप्रसङ्गेन=प्रमाणाधिक
 भोजनेन त आहारो नो गम्यः परिणमति=यथापरादाहस्य परिपाको न भवति ।
 ततः खलु तस्य कण्ठरीस्य राज्ञः ' तसि ' आहारसि ' तस्मिन् आहारे ' अप
 रिणममाणसि ' अपरिणमति=परिपाकमगच्छति तसि ' पुच्छस्तावत्तकालसम
 यसि ' पूर्वरात्रापररात्रकालममे=रात्रोर्मध्यमामे ' मरीरसि ' शरीरे वेदना प्रादु
 र्भूता, कीदृशीवेदना ? उज्ज्वला=सुखलेशरहिता, विपुत्रा=विस्त्राता-मर्शशरीरव्याप्ता
 ' पगादा ' पगादा ' जात्र दुरहियासा ' यात्रद् दुरधिसस्य=सोढुमशक्या, पुनः
 स कण्ठरीको राजा ' पित्तज्वरपरिणमसरीरे ' पित्तज्वर परिणतशरीर =पित्तज्वरेण
 परिणत=व्याप्त शरीर यस्य स.=पित्तज्वरपरिव्याप्तशरीरः ' दाहवक्तीए ' दाह
 व्युत्क्रान्तिक' =दाहज्वरज्वालासमाक्रान्त चापि विहरति=आस्ते । ततः खलु स
 कण्ठरीको राजा राज्ये च राष्ट्रे च अन्तःपुरे च ' जात्र अज्जोपवन्ने ' यावत्

प्रसंग से कृत आहार का परिपाक ठीक नही होता रहा-(तएण
 तस्स कण्ठरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणसि पुच्छस्तावत्
 त्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पाञ्चभुया उज्ज्वला विउला पगादा जात्र
 दुरहियासा पित्तज्वरपरिणमसरीरे दाहवक्तीए यावि विहरइ)
 इसलिये एक दिन की यात है कि उन कण्ठरीक राजा के जब वह कृत
 सरस गरिष्ठ आहार अच्छी तरह नहीं पचा तब उनके शरीर में रात्रि
 के मध्यभागमें वेदना प्रादुर्भूत हुई। जिस वजह से वह वेदना सुख
 के लेश से वर्जित थी उनके समस्त शरीर भर में व्याप्त हो रही थी
 बहुत अधिक थी-यावत् वह उन्हें दुरधिसस्य हो रही थी। पित्तज्वर
 से व्याप्त है शरीर जिन का ऐसे वे कण्ठरीक राजा दाहज्वर की ज्वाला

पणु वधारे भोजन प्रसंगोभा करेला आह रतु पायन जराभर थतु नडोतु

(तएण तस्स कण्ठरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणसि पुच्छ
 स्तावत्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पाञ्चभुया उज्ज्वला विउला पगादा जात्र
 दुरहियासा पित्तज्वरपरिणमसरीरे दाहवक्तीए यावि विहरइ)

अथी अथ द्विसनी पात छे के ते कण्ठरीक राजाने व्यापारे भोजन रूपमा
 दीधिला ते सरस अने गरिष्ठ आहारतु सारी रीते पायन थतु नडि त्यारे
 रात्रिना मध्य भागमा तेभना शरीरमा वेदना थवा भाडी, तेथी तेअा भूषण
 दु भी थवा आ वेदनामा मात्र दुःख थ थतु डतु, ते वेदना तेभना स पूछु
 शरीरमा व्याप्त थछ रही डती प्रमाणमा ते गहु वधारे डती यावत् ते
 तेभना भाटे दुरधिसस्य (असस्य) थ पडी डती पित्तज्वरथी व्याप्त थयेला
 शरीरवाणा ते कण्ठरीक राजा दाहज्वरनी व्यापाराअथी सजगी डया

अध्युपपन्नः—मूर्च्छितो गृध्रः प्रयित अध्युपपन्नः राज्यादिषु सर्वथासक्त इत्यर्थः,
'अट्टदुहृद्वसट्टे' आर्तदुःखार्तवशोर्तः=तत्र=आर्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्तः=
देहदुःखयुक्तः, यशार्तः=राज्यराष्ट्रान्तः पुराद्यासक्तेन्द्रियशेन विषयवृत्तवियोग-
सम्भावनया पीडित=आर्तध्यानोपगत इत्यर्थः । 'अकामए' अकामकः=अनि-
च्छक-मरणवाञ्छारहितः, 'अवस्सवसे' अपस्त्रवश=अपगतस्वातन्त्र्यः परा-
धीनः सन् कालमासे काल कृत्वा 'अहे सत्तमाए' अयः सप्तम्या पृथिव्याम्
तमस्तमः प्रभाख्ये सप्तमे नरके 'उक्कोसकालट्टिइयसि' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

से भी युक्त हो गये । (तण्ण से कडरीए राया रज्जे य रट्टे य अतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहृद्वसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किञ्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्टिइयसि नरयसी नेरइयत्ताए उववण्णे) इस तरह दुःखित बने हुए वे कडरीक राजा राज्य राष्ट्र, एवं अन्तपुर में अध्युपपन्न हो गये इस प्रकार राज्यादिको में सर्वथा आसक्तिभाव से बंधे हुए वे राजा मन से दुःखित होकर, देह के दुःख से एकक्षण अर्तध्यान में पड़ गये । अन्त में वे, ये नहीं चाहते थे कि मेरी मृत्यु हो जावे—तौ भी नासारिक स्थिति से बन्धे हुए होने के कारण या वेदनाओं से पीडित होने के कारण वे स्ववश नहीं थे परतन्त्र थे, इसलिये काल अवसरकाल करके मर कर नीचे तमस्तम प्रभा नाम के सातवे नरक में कि जो उत्कृष्ट काल स्थिति प्रमाण है—अर्थात् ३३ सा

(तण्ण से कडरीए राया रज्जे य रट्टे य अतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहृद्वसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किञ्चा अहे सत्तमाए पुढवीए, अक्कोसकालट्टिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववण्णे)

आ प्रभाखे दु भित थयेला ते कडरीक राज्ञ राज्ञ्य, राष्ट्र अने रण्य मासमा अध्युपपन्न थई गया अट्टे के वधादे पडता आसक्त थई गया, आ प्रभाखे राज्ञ वगेरेमा स पूर्णपणे आसक्त लावथी ग धायेला ते राज्ञ मनथी दु भित थईने, शारीरिक कष्टथी ओक क्षण भाटे पण मुक्ति नहि थवाने कारखे विषय सुणोना वियोगनी स लावना अण्व तेमञ्च राज्ञ्य, राष्ट्र, रण्यवास वगेरेमा आसक्त धन्त्रियोना वथमा होवाने कारखे आर्तध्यानमा भुञ्ज थई गया छेवटे तेओ मृत्युने धम्बिता नहोता छताओ सामारिक वातावरणमा ग धायेला होवाने कारखे अथवा वेदनाओथी पीडित होवाने कारखे तेओ अवश हुना नहि, परवश—परतन्त्र हुता, ओथी काण अवसरे काण करीने,— मृत्यु पागीने—नीचे तमस्तमप्रभा नामना सातमा नरकमा के वे उत्कृष्ट काल-

નૈરયિકતયા ઉપવ્રજઃ । ણ્વદ્ દૃષ્ટાન્તન મગવાન મહાવીર' માધુનુપદિક્રિતિ-એવમેવ
 =અને નૈવમકારેણ હે આયુષ્મતઃ ! શ્રમણાઃ યઃ પત્રિદસ્માક શ્રમણો વા શ્રમણી વા
 આચાર્યોપાધ્યાયાગમતિકે યાત્રમ્વ્રજિતઃ સન પુત્રપિ માનુષ્યમાન કામભોગાન્
 ' આસાળ્ક ' આસ્વાદયતિ । સ ' જાવ અણુપરિચદ્વિસ્મહ ' યાવદનુપર્યટિપ્યતિ-
 યાવત્-યાતુરન્તસામકાન્તાર પરિભ્રમિષ્યતિ । ' જહેવ સે કહરીણ રાયા ' યથૈવ
 સ કળ્હરીજો રાજા ॥ મૂંદ ॥

મૂંદ-તણં સે પોંહરીણ અળગારે જેણેય થેરા મગવંતો
 તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગાછિત્તા થેરે મગવતે વદહ નમસહ,
 વદિત્તા નમંસિત્તા થેરાણ અંતિણ દોશ્વપિ ચાઉજામ ધમ્મં
 પહિવજ્જહ, છદ્વક્ષમણપારણગંસિ પઢમાણ પોરિસીણ સજ્ઞાય
 કરેહ, કરિત્તા જાવ અડમાણે સીયલ્લુમ્મલ્લ પાણભોયણં પહિ-
 ગાહેહ, પહિગાહિત્તા, અહાપજ્જત્તમિતિ કદ્દુ પહિણિયત્તહ.

ગર કી જહા ઉલ્કૃષ્ટ સ્થિતિ હૈ-નારકી કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હો
 હસી ઘાત કો દૃષ્ટાન્ત સે શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ સાધુઓ કો
 જ્ઞાતે હૈ-(એવામેવ સમણાહસો ! જાવ પવ્વહૈ સમાણે પુનરવિ
 સ્સણ કામભોગે આમાણ જાવ અણુપરિચદ્વિસ્મહ, જહા વ સે કહરી
 રાયા) હસી તરહ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જો કોઈ હમારા શ્રમણ અથ
 શ્રમણીજન આચાર્ય ઉપાયાય કે પાસ મે દીક્ષિત હોકર કે પુન મનુષ્ય
 ભવ સવન્ધી કામભોગો કો ભોગના હૈ વહ કહરીક રાજા કી તરહ
 યાવત્ હસ ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર કાન્તાર મેં પરિભ્રમણ કયેગા ॥ સૂત્ર ૬ ॥

સ્થિતિ પ્રમાણુ છે-એટલે કે ૩૩ સાગરની ન્યા ઉલ્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે-નારકીની
 પર્વાયથી જન્મ પામ્યા એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દૃષ્ટાત રૂપમા
 સાધુઓને સમજાવે છે કે—

એવામેવ સમણાહસો ! જાવ પવ્વહૈ સમાણે પુનરવિ માણુસ્સણ કામભોગે
 આસાણ જાવ અણુપરિચદ્વિસ્મહ, જહા વ સે કહરીણ રાયા)

આ પ્રમાણુ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે કોઈ અમારા શ્રમણ અથવા
 શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઈને ફરી જે તે મનુષ્ય
 ભવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કહરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ
 રૂપ સસાર કાતારમા પરિભ્રમણ કરશે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता, भत्त-
पाणं पडिदसेइ पडिदसित्ता, थेरेहि भगवतेहि अब्भणुत्ताए
समाणे अमुच्छिष्टे अगिद्धे अगद्धिष्टे अणज्झुववण्णे विल
मित्र पण्णगभूएणं अप्पाणेण तं फासुएसणिज्ज असेणपा-
णखाइमस्ताइम सरीरकोट्ठुंगंसि पक्खिवइ । तएणं तस्स
पुडरीयस्स अणगारस्स त कालाइकतं अरस विसर सीय-
ल्लुक्ख पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाल-
समयंसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स सेआहारे णो सम्मं
परिणमइ । तएणं तस्स पुडरीस्स अणगारस्स सगीरगंसि
वेयणा पाउव्वभूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरप-
रिगयसरीरे दाहवक्कंतिष्टे विहरइ । तएणं से पुडरीए अण-
गारे अत्थामे अवलं अवीरिष्टे अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल
जाव एव वयासी-णमोऽत्थुणं अरिहताणं जाव सपत्ताणं
णमोत्थुणं थेराण अगवताण मम धम्मायरियाणं धम्मोव-
एसयाण पुव्वि पि य ण मए थेराण अतिष्टे सव्वे पाणाइ-
वाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव
आलोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उव-
वन्ने । तओ अणतर उव्वट्ठित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ
जाव सव्वदुक्खाणमत काहिइ । एवामेव समणाउसो । जाव
पव्वइए समाणे माणुस्सएहि कामभोगेहि णो सज्जइ णो रज्जइ,
जाव विप्पडिघायमावज्जइ, से ण इह भवे चेव वहुण सावगाणं०

નૈરપિકૃતયા ઉપવનઃ। ઇતદ્ દૃષ્ટાન્તેન ભગવાન મહાવીર માધુનુષદિક્ષતિ-એવમેવ
 =અને નૈવમકારેણ હે આયુષ્મત્ ! શ્રમણાઃ યઃ પશ્ચિદસ્માક શ્રમણો વા શ્રમણી વા
 આચાર્યોપાધ્યાયનામતિકે યાત્રમવ્રજિતઃ સન પુનરપિ માનુષ્યકાન્ કામભોગાન્
 'આસાણ્' આસ્વાદયતિ । સ 'જાવ અણુપરિયટ્તિસ્મઃ' યાત્રદનુષર્ષટિષ્યતિ-
 યાવત્-ચાતુરન્તસસાકાન્તાર પરિભ્રમિષ્યતિ । 'ઝહેર સે કઢરીણ રાયા' યથૈવ
 સ કઢરીસો રાજા ॥ મૂં ૬ ॥

મૂલમ્-તણ્ણં સે પોંડરીણ અણગારે જેણેવ થેરા ભગવંતો
 તેણેવ ઉવાગચ્છઙ્ગ, ઉવાગાચ્છિત્તાથેરે ભગવતે વદઙ્ગ નમસઙ્ગ,
 વદિત્તા નમંસિત્તા થેરાણં અંતિણ દોઘપિ ચાડજામ ધમ્મં
 પઢિવજ્ઞઙ્ગ, છટ્ઠક્ખમણપારણગંસિ પઢમાણ પારિસીણ સજ્ઞાય
 કરેઙ્ગ, કરિત્તા જાવ અડમાણે સીયલ્લક્ખ પાણભોયણં પઢિ
 ગાહેઙ્ગ, પઢિગાહિત્તા, અહાપજ્જત્તમિતિ કટ્ઠુ પઢિણિયત્તઙ્ગ,

ગર કી જહા ઉત્કૃષ્ઠ સ્થિતિ હૈ-નારકી કી પર્યાય સે ઉત્પન્ન હો ગયે ।
 હસી યાત કો દૃષ્ટાન્ત સે શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ સાધુઓં કો સમ
 ક્ષાતે હૈ-(એવામેવ સમણાહસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે પુનરવિ માણુ
 સ્સણ કામભોગે આમાણ જાવ અણુપરિયટ્તિસ્મઙ્ગ, જહા વ સે કઢરીણ
 રાયા) હસી તરહ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જો કોઈં હમારા શ્રમણ અથવા
 શ્રમણીજન આચાર્ય ઉપાયાય કે પામ મે દીક્ષિત હોકર કે પુનઃ મનુષ્ય
 બવ સવન્ધી કામભોગો કો ભોગના હૈ વહ કઢરીક રાજા કી તરહ
 યાવત્ ઇસ ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર કાન્તાર મેં પરિભ્રમણ કયેગા ॥સૂત્ર ૬॥

સ્થિતિ પ્રમાણુ છે-એટલે કે ૩૩ સાગરની જ્યા ઉત્કૃષ્ઠ સ્થિતિ છે-નારકીની
 પર્યાયથી જન્મ પામ્યા એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દ્વારા ૩૫મા
 સાધુઓને સમજાવે છે કે—

એવામેવ સમણાહસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાણે પુનરવિ માણુસ્સણ કામભોગે
 આસાણ જાવ અણુપરિયટ્તિસ્મઙ્ગ, જહા વ સે કઢરીણ રાયા)

આ પ્રમાણુ હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જે કોઈં અમારા શ્રમણ અથવા
 શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઈને ફરી ને તે મનુષ્ય
 બવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કઢરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ
 ૩૫ સસાર કાતારમા પરિભ્રમણ કરશે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

पौरुष्या=प्रथमे प्रहरे स्वाध्याय करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-
मध्यमकुलेषु भिक्षाय परिभ्राम्यन् 'सीयलुक्ख' शीतरूक्ष-शीत=पर्युषित, रुक्ष
घृतादिरहित पान भोजन प्रनिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमिति कट्टु' यथापर्या-
प्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमिति मनसि कृत्य 'पडिणियत्तइ' प्रति-

पटिवज्जइ, छट्टुक्खमणपारणगसि पढमाण पोरिसीण सज्जाय करेइ
करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता
अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिणियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवा
गच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं
अवभणुन्नाए समाणे अमुच्छिअ अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे विल
मिव पण्णगभूएण अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइम
साइम सरीरकोट्टगसि पक्खिवइ) वहाँ आकर के उन्हो ने स्थविर भग-
वतों को वदना नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हो
ने उनसे दुवाराचातुर्याम-चतुर्मासव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब
पष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में
स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों
में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित,
रूक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे ले लेते-और यह अन्न-
सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहाँ से

पारिस्सीए सज्जाय करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ
पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिणियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं,
अवभणुन्नाए समाणे अमुच्छिअ अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे विलमिव पण्णगभूएण
अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइमसाइम सरीरकोट्टगसि पक्खिवइ)

त्या आधीने तेमण्णे स्थविर भगवताने वदना अने नमस्कार कर्था
वदना अने नमस्कार करीने तेमण्णे तेमनी पासिथी णीअव र आतुर्याम-अतु
महाव्रत इय धर्मेने धारण कर्था जगारे पष्ठ क्षपणुनी पारणाने पथत
आण्थे त्यारे तेज्जे प्रथम पौरुषीमा स्वाध्याय करता अने स्वाध्याय करीने
तेज्जे उच्च, नीच अने मध्यम कुलोमा भिक्षा भाटे परिभ्रमण करता ते
समये तेमने शीत-पर्युषित, रुक्ष-धी वगरने, पान आहार भज्जेते ते तेने
तेज्जे स्वीकरी देता अने 'आटवेा आहार उदर-पोषण भाटे पूरते छे'
आवे। भनमा विचार करीने त्याथी पाछा इरी जता पाछा आधीने भिक्षामा

अच्छणिजे घदणिजे पूयणिजे सशकारणिजे सम्माणणिजे
 कलाण मगलदेवय चेडय पज्जुवासणिजेत्तिकहु परलोप
 वि य णं णो आगच्छइ वहुणि दडणाणि य मुंडणाणि य
 तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरत ससारकतारं
 जाव चांडवइस्सइ जहावसे पोंडरीए अणगारे । एवं खलु
 जंबू । समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरंणं तिथगरंणं
 जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण मपत्तेण एगुणवीसइमस्स
 नायज्झयणस्स अयमेट्ठे पन्नत्ते । एव खलु जंबू । समणेणं
 भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपत्तेणं
 छट्ठस्स अंगरस पढमस्स सुयक्खधस्स अयमेट्ठे पण्णेत्ते
 त्तिवेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तएण से’ इत्यादि । तत् खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव
 स्थविराभगवन्तस्त्वत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति,
 वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके ‘दोच्चपि’ द्वितीयमपिचारम् चातुर्यमि-
 चतुर्मास्यरूपधर्मं प्रतिपद्यते । तथा पष्ठक्षपणपारणाया संपाप्ताया प्रथमाया

‘तएण से पोंडरीए अणगारे’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (से पोंडरीए अणगारे) वे पुण्डरीक
 अनगार (जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ) जहा स्थविर भग-
 वन् विराजमान थे वहा आ गये । (उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ,
 नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराणं अतिए दोच्चपि चाउज नाम धम्म

(तएण से पोंडरीए अणगारे) इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएण) त्यागनाइ (से पोंडरीए अणगारे) ते पुण्डरीक अन-
 गार (जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ) जहा स्थविर भगवन्त जिरा-
 नमान होता त्या गया

(उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराण
 अतिए दोच्चपि चाउज नाम, धम्म वदिवज्जइ,

पौरुष्या-प्रथमे प्रहरे स्वाध्याय करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-
मध्यमकुलेषु भिक्षार्थं परिभ्राम्यन् 'सीयलुक्ख' शीतरूक्ष-शीत-पर्युषित, रुक्ष
घृतादिरहित पान भोजन प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमिति' कट्टु ' यथापर्या-
प्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमिति मनसि कृत्य ' पडिणियत्तइ ' प्रति-

पडिच्चज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगमि पढमाण पोरिसीण सज्जाय करेइ
करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोगण पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता
अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिणियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं
अवमणुत्ताण समाणे अमुच्छिअ अगिद्धे अगट्ठिअ अणञ्जुवणणे विल-
मिव पणगभूएण अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइम
साइम सरीरकोट्टगसि पक्खिवइ) वहाँ आकर के उन्हो ने स्थविर भग-
वतों को वदना नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हो
ने उनसे द्व्वाराचातुर्याम-चतुर्महाव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब
षष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में
स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों
में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित,
रुक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे ले लेते-और यह अन्न-
सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहाँ से

पारिसीए सज्जाय करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोगण पडिगाहेइ
पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिणियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव
उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं,
अवमणुत्ताण समाणे अमुच्छिअ अगिद्धे अगट्ठिअ अणञ्जुवणणे विलमिव पणगभूएण
अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइमसाइम सरीरकोट्टगसि पक्खिवइ)

त्या आरीने तेमहे स्थविर भगवतोने वदना अने नमस्कार कर्था
वदना अने नमस्कार ईरीने तेमहे तेमनी पासेथी जीअवर आतुर्याम-अतु
मँहानत इय धर्मने धारण कर्था न्यारे पष्ठ क्षपणनी पारणानो वअत
आव्यो त्यारे तेओ प्रथम पौरुषीमा स्वाध्याय करता अने स्वाध्याय कर्गीने
तेओ उच्च, नीच अने मध्यम कुलोमा भिक्षा भाटे परिभ्रमण करता ते
समये तेमने शीत-पर्युषित, रुक्ष-धी वगरनो, पान आहार भणनो तो तेने
तेओ स्वीकरी लेना अने ' आटवो आहार उदर-पोषण भाटे पूरतो छे '
आवो मनमा विचार कर्गीने त्याथी पाछा ईरी जता पाछा आवीने भिक्षामा

अच्छणिऽजेवदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिजे
 कल्लाण मगलदेवय चेइय पज्जुवासणिज्जेत्तिकहु परलोए
 वि य णं णां आगच्छइ वहुणि दडणाणि य मुंढणाणि य
 तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरत्त ससारकत्तारं
 जाव वोइवइस्सड जहावसे पोंडरीए अणगारे । एव खलु
 जंबू । समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं
 जाय सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण मपत्तेण एगुणवीसइमस्स
 नायज्झयणस्स अयमट्टे पन्नत्ते । एव खलु जंबू । समणेणं
 भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं सपत्तेणं
 छट्टस्स अंगरस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयमट्टे पण्णेत्ते
 त्तिवेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—‘तण्ण से’ इत्यादि । तत् ‘खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव
 स्थविराभगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति,
 वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके ‘दोच्चपि’ द्वितीयमपिचारम् चातुर्याम=
 चतुर्महाव्रतरूपधर्मं प्रतिपद्यते । तथा पण्डितपणपारणाया सभाप्ताया प्रथमाया

‘तण्ण से पोंडरीए अणगारे’ इत्यादि ।

टीकार्थः—(तण्ण) इसके बाद (से पोंडरीए अणगारे) वे पुंडरीक
 अनगार (जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ) जहा स्थविर भग
 वन् विराजमान थे वहा आ गये । (उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ,
 नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराणं अतिए दोच्चपि चाउज नाम धम्म

(तण्णं से पोंडरीए अणगारे) इत्यादि ।

टीकार्थः—(तण्ण) त्थारणा (से पोंडरीए अणगारे) ते पुंडरीक अन
 गार (जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ) जहा स्थविर भगवन्त त्रिश
 न्मानं उता त्या गया

(उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराण
 अतिए दोच्चपि चाउज नाम, धम्म पडिबज्जइ, छट्टकस्समज्जवारणगोसि पढमाए

समयमुल्लङ्घय प्राप्तम्, अस्य विरस शीतरूक्ष पान भोजनम् 'आहारियस्स' 'आहारितस्य सत पूर्वरात्रापररात्रकालसमये 'धम्मजागरियं जागरमाणस्स' धर्म जागारिका जाग्रत = धर्मचिन्तनार्थं जागरणा कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति = नो परिपाक गच्छति । ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता 'उज्जला जाव दुरहियासा' उज्ज्वला यावत् दुरग्निसत्त्वा, एषा व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगारः पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिरुः = दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति । ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगार 'अस्थामे' अस्थामा = शक्तिरहितः, अवले = शारीरिकरुद्धितः, 'अवीरिए' अवीर्यः = उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः = पुरुषार्थपराक्रमरहितः, 'करयल जाव' करतल यावत् = करतलपरिगृहीतं दशनख मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत् - नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत्संप्राप्तेभ्यः = मोक्ष गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरेभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा

भोग्य आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ) उस तरह उन पुण्डरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, विरस, शीत, रूक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएण तस्स पुण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतसरीरे दाहव्युत्क्रान्तिं विहरइ, तएण से पुण्डरीए अणगारे अस्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण णमोत्थुण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाण धम्मोवएसयाण पुत्तिं पि य ण मए

लुस्स पाणभोग्य आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ)

आ प्रभावे ते पुण्डरीक अनगारोऽनो क्षणातिक्रमं कुरुते ते अरस, विरस, शीत, रूक्ष पान आहारं रात्रिना मध्य भागमा धर्मचिन्तन भाटे कुरुते अनगारोऽने लीये सारी राते पाथनं थतु न हंतुं

(तएण तस्स पुण्डरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतसरीरे दाहव्युत्क्रान्तिं विहरइ, तएण से पुण्डरीए अणगारे अस्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाण

निर्वर्तते=प्रत्यागमनं त्रिति, प्रनिनिगम्य यज्ञेयं ग्ययिगभगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति,
 उपागत्य, भक्तपान प्रतिदर्शयति, प्रतिदर्श्य, स्थविरेर्मगयद्विरभ्यनुद्वातः सन्
 अमूर्च्छित अगृह्य अग्रभित' अनध्युपपन्नः=भामक्तिपगिर्जित इति भावः, ' विल
 मित्र पन्नगभूषण अप्पाणेण ' विलमित्र पन्नगभूनेन आत्मना इव=यथा पन्नग
 भूतेन=पन्नगमयमागतेन आत्मना=नीयेन विल प्रविश्यते, तथा त ' कामुएस
 णिज्जं ' प्राप्तुकैपणीय=दायत्वारिण्योपरजितम् अशन पानं खाद्यं स्वाद्यं 'सरीर
 कोट्टगसि' शरीरकोष्ठके=उदरे प्रक्षिपति, यथा भुजङ्गो विगम्य पार्श्वभागद्वयमसम्पृ
 शन् म यभागत एवात्मानं विले प्रवेशयति तथा स मुगम्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहित
 माहार कण्ठनालाभिमुख प्रवेश्य आहारयतीति भावः । तत खलु तस्य पुण्डरी
 कस्य अनगरस्य ' कालाङ्कत ' कालातिक्रान्त=कालमतिक्रम्य प्राप्तम्-बुध्वा

वापिस आ जाते-वापिस आकर फिर प्राप्त भिक्षान्न को दिखाने के लिये
 वे जहा स्थविर भगवत विराजमान होते वहाँ आते-वहाँ आकर प्राप्त
 भिक्षान्न को उन स्थविर भगवतो को दिग्नलाते-दिखालकर जब वे उस
 आहार को खाने की आज्ञा देते-तब वे अमूर्च्छित भाव से अगृह्यचि
 त्तवृत्ति से, एव आसक्ति रहित परिणति से उस प्राशुक उपणीय-४२
 दोषों से रहित अशन, पान, खाद्य, एव स्वाद्यरूप-आहार को जिस
 तरह सर्प-विल में प्रविष्ट होता है उसी तरह से शरीर कोष्ठक में-
 उदर में डाल देते थे । कारण इसका इस प्रकार है-जैसे भुजग बिल के
 पार्श्वद्वय नहीं छूता हुआ सीधे मध्यभाग से अपने को विल में प्रविष्ट
 कराता है उसी तरह वे मुनिराज मुख के पार्श्वद्वय के स्पर्श से रहित
 आहार को सीधे कण्ठनाल में धर कर आहार करते थे (तएण तस्स
 पुण्डरीयस्स अणगरस्स त कालाङ्कत अरसविरस सियलुक्ख पाण

प्राप्त आहारने भताववा भाटे न्या ते स्थविर भगवत विराजमान होता त्या
 आवता त्या आवीने भेणवेवा आहारने ते स्थविर भगवतोने भतावता अने
 भतावीने न्यारे तेओ ते आहारने ग्रहण करवानी आज्ञा करता त्यारे तेओ
 अमूर्च्छित-भावथी, अगृह्य-चित्तवृत्तिथी अने आसक्ति रहित परिणतिथी ते
 प्राशुक उपणीय-४२ दोषोथी रहित अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्यरूप आहा
 रने जेम साय दरमा प्रवेशे छे तेमज्ज शरीर कोष्ठकमा-पेटमा नाथी होता
 होता जेम साय दरमा अने पार्श्वने स्पर्श न करता सीधे वच्चे धधने
 पोतानी मतने दरमा प्रविष्ट करावी छे छे तेमज्ज ते मुनिराज पण्णु भुभना अने
 पार्श्वना स्पर्शथी रहित आहारने सीधे कठनालमा भूझीने उदरस्थ करता होता

(तएण तस्स पुण्डरीयस्स अणगरस्स त कालाङ्कत अरस विरस विय

समयमुल्लङ्घ्य प्राप्तम्, अस्स त्रिस शीतरुक्ष पान भोजनम् 'आहारियस्स' आहारितस्य सत् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये 'धम्मजागरियं जागरमाणस्स' धर्म जागारिका जाग्रत = धर्मचिन्तनार्थं जागरणां कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति = नो परिपाक गच्छति । ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता 'उज्जला जाव दुरहियासा' उज्ज्वला यावत् दुरविसत्था, एषा व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगारः पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकः = दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति । ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारः 'अस्थामे' अस्थामा = शक्तिरहितः, अवल = शारीरिकउलरहितः, 'अवीरिए' अवीर्यः = उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः = पुरुषार्थपराक्रमरहितः 'करयल जाव' करतल यावत् = रुतलपरिगृहीतं दशनख मस्तके अञ्जलि कृत्वा एवमवादीत् - नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत्संप्राप्तेभ्यः = मोक्ष गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरेभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा-

भोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ) इत्थं तरह उन पुडरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, त्रिस, शीत, रुक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएण तस्स पुडरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतशरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएण से पुडरीए अणगारे अत्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण णमोत्थुण येराण भगवताण मम धम्मायरियाण धम्मोवएसयाण पुब्बि पि य ण मए

लुक्क पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ)

आ प्रभाषे ते पुडरीक अनगारोऽनो कालातिक्रमथी उदेवो ते अरस, त्रिस, शीत, रुक्ष पान आहारतु रात्रिना मध्य भागभा धर्मचिन्तन भाटे उदेवो नगारणुने क्षीये सारी राते पायन थु न इतुं

(तएण तस्स पुडरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्वरपरिगतशरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएण से पुडरीए अणगारे अत्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी-णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण येराण भगवताण मम धम्मायरियाण

મન્તિકે મર્ત્ય પ્રાણાતિપાતઃ પ્રત્યાગ્યાતઃ યાવત્ મિથ્યાદર્શનશૂન્યં સ્વતઃ પ્રત્યાગ્યા-
તમ્=અપ્પાદશપાપમ્થાનાનિ પ્રત્યાગ્યાતાનિ ઇતિ માર, ઇરાનીમપિ તેષામેવ
ધેરાણ અતિમ સઘ્વે પાણાદ્વાપ પચ્ચક્કયાણ જાવ મિચ્છાદ્ધમણસસ્સલે ણં
પચ્ચક્કયાણ જાવ આલોદ્ધયપહિક્કતે કાલમાસે કાલ કિચ્ચા સઘ્વદ્ધ-
સિદ્ધે ઉવવન્ને) હમ કારણ પુઠરીક અનગોર કે શરીર મેં વેદના પ્રકટ
હો ગઈ । જિમકે કારણ ઉન્ને ક્ષણમર મી જાતા નહી મિલતી । ધીરે ૨
યહ સમસ્ત શરીર મેં મી વ્યાપ્ત હો ગઈ । યાવત્ યહ ઉનકે લિયે સહન
હો સકે પેસી નહીં રહી-વે ઉસે ઘડી કટિનતા સે મહતે । દાહજ્વર ને
મી હનકે શરીર પર અપના પ્રભાવ જમા લિયા । હમ તરહ યે દાહજ્વર
કો જ્વાલા સે મી આકુલ વ્યાકુલ રહને લગે । ધીરે ૨ હનકા શરીર
શક્તિ રહિત હો ગયા । શારીરિક ઘલ મી હનકા જાતા રહા । ઉત્સાહ
રહિત ણ્વ પુરુષાર્થ પરાક્રમ સે વિહીન જલ યે હો ગયે તમ કરતલ પરિ-
ગૃહીત દશનખોંવાલી અજલિ કો હન્હોં ને અપને મસ્તક પર રલ્લકાર હસ
પ્રકાર કા પાઠ ઘોલના પ્રારમ્ભ કિયા યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હત ભગવતોં કે
લિયે મેરા નમસ્કાર હો, મેરે ધર્માચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવતોં કે
લિયે મેરા નમસ્કાર હો । મેંને પહિલે મી સ્થવિર ભગવતોં કે નિકટ સમ
સ્ત પ્રાણાતિપાત પ્રત્યોલ્લ્યાન કર દિયા હૈ-યાવત્ મિથ્યાદર્શન શાસ્ત્ર

ધમ્મોવસયાણ પુલ્લિં પિ ય ણ મણ્ઠે ધેરાણ અતિમ સઘ્વે પાણાદ્વાપ પચ્ચક્કયાણ
જાવ મિચ્છાદ્ધમણસસ્સલેણ પચ્ચક્કયાણ જાવ આલોદ્ધયપહિક્કતે કાલમાસે કાલ
કિચ્ચા સઘ્વદ્ધ સિદ્ધે ઉવવન્ને)

એથી તે પુઠરીક અનગારના શરીરમા વેદના પ્રકટ થઈ ગઈ તેથી તેમને
એક ક્ષણ માટે પણ જાતા મળતી નહોતી ધીમે ધીમે આ વેદના સપૂર્ણ
શરીરમા પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસદ્ય થઈ ગઈ, ભારે મુશ્કેલીથી
તેઓ તેને ખમતા હતા દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ
જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજ્વરની બાળાઓથી પણ આકુળ-વ્યાકુળ
રહેલા લાગ્યા ધીમે ધીમે તેમનું શરીર અશક્ત થઈ ગયું શારીરિક બળ પણ
તેમનું નષ્ટ થઈ ગયું હતું આ પ્રમાણે બ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને
પુરુષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઈ ગયા ત્યારે ઋતલ-પરિગૃહીત દશ નખોવાળી
અબલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેના પાઠ બોલવા લાગ્યા
કે યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હત ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્માચાર્ય,
ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે મે પહેલા પણ ભગવતોની
પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી દીધું છે યાવત્ મિથ્યાદર્શન

અન્તિકે પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિત્યાદર્શનશલ્ય પ્રત્યાખ્યામિ, એવ ' જાવ આલો-
ચ્ય પઢિકતે ' યાવદાલોચિતપ્રતિક્રાન્ત' કાલમાસે કાલ કૃત્વા સર્વાર્થસિદ્ધે
ઉપપન્નઃ । તતોઽનન્તરમ્=તતપશ્ચાત્ સર્વાર્થસિદ્ધાત્ ' ઉવ્વટ્ઠિતા ' ઉવ્વટ્ઠત્ય=સર્વાર્થ-
સિદ્ધેર્નિર્ગત્ય મહાવિદેહે વર્ષે સેત્સપિતિ યાવત્ સર્વદુઃસ્થાનામન્ત કરિષ્યતિ । પુણ્ડરી-
કાનગારચરિત દૃષ્ટાન્તેનોપદર્શ્ય શ્રમણાનુપદિશતિ મગવાન્ મહાગીરઃ- ' એવામેવ '
અનેનૈવપ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ ' જાવ પવ્વહણ ' યાવત્પવ્રજિતઃ=યોઽસ્માક
શ્રમણો વા શ્રમણી વા આચાર્યોપાધ્યાયાનામન્તિકે પ્રવ્રજિતઃ સન્ માનુષ્યકેષુ
કામભોગેષુ નો સજ્જતે નો અસક્તિમાશ્રયતે ' નો રજ્જતે ' નો રજ્યતે=નો અનુ-
રાગવાન્ ભવતિ, ' જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ ' યાવત્ નો વિપ્રતિઘાતમાપ-
દ્યતે=સયમનાશ ન પ્રાપ્નોતિ, સ સ્વલુ હહ મહે એવ વહુના શ્રમણાના વહુના શ્રમ-
ણીના વહુના શ્રાવકાણા વહુના શ્રાવિકાણામ્ અર્ચનીયો વન્દનીયઃ પૂજનીયઃ
સત્કારણીયઃ સમ્માનનીયો ભવતિ, તથા ચ-સ સર્વેષા ' કલ્લાણ ' કલ્યાણ=
કલ્યાણરૂપમ્ ' મગલ ' મઙ્ગલમ્=મઙ્ગલરૂપમ્, ' દેવય ' દૈવત=ધર્મદેવરૂપઃ,
' ચેહય ' ચૈત્યમ્=જ્ઞાનરૂપ પર્યુપાસનીયથ ભવતિ ' ત્તિકહુ ' इति कृत्वा इति

કા અષ્ટાદશ પાપસ્થાનો કા, મૈને પ્રત્યાખ્યાન કર દિયા હૈ । ઓર અવ
ભી ંન્હી કે સાક્ષી સે પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિત્યાદર્શન શલ્ય કા પ્રત્યા-
ખ્યાન કરતા હૈ । હસ તરહ આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત હોકર વે કાલઅવસર
કાલકર સર્વાર્થ સિદ્ધ નામકે અનુત્તર વિમાન મેં ઉત્પન્ન હો ગયે ।
(તઓ અળતર ઉવ્વટ્ઠિતા મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિહિ, જાવ સવ્વદુકલા
ળમત કાહિહિ, એવામેવ સમણાડસો ! જાવ પવ્વહણ સમાળે માણુસ્સ
ઈહિં કામભોગેહિં ણો સજ્જહ, ણો રજ્જહ, જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ
સેળ હહ મહે ચેવ વહુળ સાવિયાળ અચ્ચણિજ્જે, વદણિજ્જે, પૂયણિજ્જે,
સન્કારણિજ્જે સમ્માણણિજ્જે, કલ્લાણ મગલ દેવય ચેહય પજ્જુવાસ-

પાપસ્થાનોનુ એ પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમા
પ્રાણુતિપાત યાવત્ મિત્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરે છુ આ પ્રમાણે
આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત થઇને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના
અનુત્તર વિમાનમા ઉત્પન્ન થઇ ગયા અને ત્યા તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(તઓ અળતર ઉવ્વટ્ઠિતા મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિહિહિ, જાવ સવ્વદુકલાળ-
મત કાહિહિ, એવામેવ સમણાડસો ! જાવ પવ્વહણ સમાળે માણુસ્સઈહિં કામ
ભોગેહિં ણો સજ્જહ, ણો રજ્જહ, જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ સે ણ હહ મહે
ચેવ વહુળ સાવિયાળ અચ્ચણિજ્જે, વદણિજ્જે, પૂયણિજ્જે, સન્કારણિજ્જે, સમ્માણણિ-
જ્જે, કલ્લાણ મગલ દેવય ચેહય પજ્જુવાસણિજ્જે તિ કદ્દહુ પરલોણ વિ ય ણં ણો

મન્તિકે મર્ત્યઃ પ્રાણાતિપાતઃ પ્રત્યોચ્ચાતઃ યાત્ મિથ્યાદર્શનશ્રવ્ય સ્વતુ પ્રત્યાચ્ચા-
તમ્=અપ્તાદશપાપસ્યાનાનિ પ્રત્યાચ્ચાતાનિ ઈતિ માત્ર, ડડાનીમપિ તેષામેવ
ધેરાણ અતિત્વ સર્વે પાણાદ્યાણ પચ્ચક્ષ્યાણ જાત્ર મિચ્છાદમણસલ્લેખં
પચ્ચક્ષ્યાણ જાત્ર આલોહ્યપદિક્કતે કાલમાસે કાલ કિચ્ચા સર્વદ્વ
સિદ્ધે ઉવવન્ને) હમ કારણ પુઢરીક અનગાર કે શરીર મેં વેદના પ્રકટ
હો ગઈ. જિસકે કારણ ઉન્ને ક્ષણભર મી શાતા નહી મિલતી. ધીરે ૨
યદ સમસ્ત શરીર મેં મી વ્યાપ્ત હો ગઈ. યાવત્ યદ ઉનકે લિયે સહન
હો સકે તેસી નહીં રહી-વે ઉસે યદી કઠિનતા સે મહતે. દાહજ્વર ને
મી ઉનકે શરીર પર અપના પ્રમાત્ર જમા લિયા. હસ તરફ યે દાહજ્વર
કી જ્વાલા સે મી આકુલ વ્યાકુલ રહને લગે. ધીરે ૨ ઉનકા શરીર
શક્તિ રહિત હો ગયા. શારીરિક ષલ મી ઉનકા જાતા રહા. ઉત્સાહ
રહિત એવ પુરુષાર્થ પરાક્રમ સે ચિહીન જત્ર યે હો ગયે તથ કરતલ પરિ
ગૃહીત દશનશ્ચોવાલી અજલિ કો ઉન્ને ને અપને મસ્તક પર રલ્લકર હસ
પ્રકાર કા પાઠ બોલના પ્રારમ્ભ ક્રિયા યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હંત ભગવતોં કે
લિયે મેરા નમસ્કાર હો, મેરે ધર્માચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવતોં કે
લિયે મેરા નમસ્કાર હો. મૈને પહિલે મી સ્થવિર ભગવતોં કે નિકટ સમ
સ્ત પ્રાણાતિપાત પ્રત્યોચ્ચાન કર દિયા હૈ-યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્ય

ધર્મોચ્ચાસયાણ પુલ્લિંક પિ ય ણ મણ ધેરાણ અતિત્વ સર્વે પાણાદ્યાણ પચ્ચક્ષ્યાણ
જાત્ર મિચ્છાદમણસલ્લેખં પચ્ચક્ષ્યાણ જાત્ર આલોહ્યપદિક્કતે કાલમાસે કાલ
કિચ્ચા સર્વદ્વ સિદ્ધે ઉવવન્ને)

એથી તે પુઢરીક અનગારના શરીરમા વેદના પ્રકટ થઈ ગઈ તેથી તેમને
એક ક્ષણ માટે પણ શાતા મળતી નહોતી ધીમે ધીમે આ વેદના સંપૂર્ણ
શરીરમા પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસહ્ય થઈ ગઈ, ભારે મુશ્કેલીથી
તેઓ તેને ખમતા હતા દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ
જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી પણ આકુળ-વ્યાકુળ
રહેવા લાગ્યા ધીમે ધીમે તેમનું શરીર અશક્ત થઈ ગયું શારીરિક બળ પણ
તેમનું નષ્ટ થઈ ગયું હતું આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને
પુરુષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઈ ગયા ત્યારે કરતલ-પરિગૃહીત દશ નોઓવાળી
અજલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેના પાઠ બોલવા લાગ્યા
કે યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હંત ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્માચાર્ય,
ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે મે પહેલા પણ ભગવતોની
પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી લીધું છે યાવત્ મિથ્યાદર્શન

અન્તિકે પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શનશલ્ય પ્રત્યાખ્યામિ, એવ ' જાન આલો-
ઇય પઢિકતે ' યાવદાલોચિતપ્રતિક્રાન્તઃ કાલમાસે કાલ કૃત્વા સર્વાર્થસિદ્ધે
ઉપપન્નઃ । તતોઽનન્તરમ્=તત્પશ્ચાત્ સર્વાર્થસિદ્ધાત્ ' ઉચ્ચક્ષિત્તા ' ઉદ્વૃત્ય=સર્વાર્થ-
સિદ્ધેર્નિર્ગત્ય મહાવિદેહે વર્ષે સેત્સ્યતિ યાવત્ સર્વદુઃસ્વાનામન્ત કરિષ્યતિ । પુણ્ડરી-
કાનગારચરિત દૃષ્ટાન્તેનોપદર્શ્ય શ્રમણાનુપદિશતિ ભગવાન્ મહાગીરઃ- ' એવામેવ '
અનેનૈવપ્રકારેણ હે આયુષ્મન્તઃ શ્રમણાઃ ' જાવ પવ્વહ્ણ ' યાવત્પત્રજિતઃ=યોઽસ્માક
શ્રમણો વા શ્રમણી વા આચાર્યોપાધ્યાયાનામન્તિકે પ્રવ્રજિત ' સન્ માનુષ્યકેપુ
કામભોગેષુ નો સજ્જતે નો અસક્તિમાશ્રયતે ' નો રજ્જતે ' નો રજ્યતે=નો અન્ન
રાગવાન્ ભવતિ, ' જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ ' યાવત્ નો વિપતિઘાતમાપ-
દ્યતે=સયમનાશ ન પ્રાપ્નોતિ, સ સ્વલુ હહ ભવે એવ વહૂના શ્રમણાના વહૂના શ્રમ-
ણીના વહૂના શ્રાવકાણા વહૂના શ્રાવિકાણામ્ અર્ચનીયો વન્દનીયઃ પૂજનીયઃ
સત્કારણીયઃ સમ્માનનીયો ભવતિ, તથા ચ-સ સર્વેષા ' કલ્લાણ ' કલ્યાણ=
કલ્યાણરૂપમ્ ' મગલ ' મઙ્ગલમ્=મઙ્ગલરૂપમ્, ' દેવય ' દૈવત=ધર્મદેવરૂપઃ,
' ચેહય ' ચૈત્યમ્=જ્ઞાનરૂપ પર્યુપાસનીયશ્ચ ભવતિ ' ત્તિક્કહુ ' इति कृत्वा इति

કા અષ્ટાદશ પાપસ્થાનો કા, મૈને પ્રત્યાખ્યાન કર દિયા હૈ । ઓર અવ
મ્મી ઊન્હીં કે સાક્ષી સે પ્રાણાતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્ય કા પ્રત્યા
ખ્યાન કરતા હૈ । હસ તરહ આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત હોકર વે કાલઅવસર
કાલકર સર્વાર્થ સિદ્ધ નામકે અનુત્તર વિમાન મેં ઉત્પન્ન હો ગયે ।
(તઓ અળતર ઉચ્ચક્ષિત્તા મહાવિદેહે વાસે સિઝ્ઝિહિહ, જાવ સવ્વદુક્ખા
ળમત કાહિહ, એવામેવ સમણાસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાળે માણુસ્સ
એહિં કામભોગેહિં ણો સજ્જહ, ણો રજ્જહ, જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ
સેળ હહ ભવે ચેવ વહૂણ સાવિયાળ અચ્ચણિજ્જે, વદણિજ્જે, પૂયણિજ્જે,
સક્કારણિજ્જે સમ્માણણિજ્જે, કલ્લાળ મગલ દેવય ચેહય પજ્જુવાસ-

પાપસ્થાનોનુ મે પ્રત્યાખ્યાન કરી છીધુ છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમા
પ્રાણતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરે છુ આ પ્રમાણે
આલોચિત પ્રતિક્રાન્ત થઇને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના
અનુત્તર વિમાનમા ઉત્પન્ન થઇ ગયા અને ત્યા તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(તઓ અળતર ઉચ્ચક્ષિત્તા મહાવિદેહે વાસે સિઝ્ઝિહિહ, જાવ સવ્વદુક્ખાળ-
મત કાહિહ, એવામેવ સમણાસો ! જાવ પવ્વહ્ણ સમાળે માણુસ્સએહિં કામ
ભોગેહિં ણો સજ્જહ, ણો રજ્જહ, જાવ નો વિપ્પહિઘાયમાવજ્જહ સે ણ હહ ભવે
ચેવ વહૂણ સાવિયાળ અચ્ચણિજ્જે, વદણિજ્જે, પૂયણિજ્જે, સક્કારણિજ્જે, સમ્માણિ
જ્જે, કલ્લાળ મગલ દેવય ચેહય પજ્જુવાસણિજ્જે ત્તિ કદ્દહુ પરલોપ વિ ય ણં ણો

હેતો: પગ્લોકેડપિ ચ મ્હુ તા નો આગન્ઝતિ= ન પ્રાપ્નોતિ મ્હુનિ=મહુવિધાનિ
 દણ્ડનાનિ ચ મુણ્ડનાનિ ચ તર્જનાનિ ચ તાડનાનિ ચ યાવત્ ચતુરન્ત સંસાર
 કાન્તર 'ચીડ્ઝમ્મડ' વ્યતિ મ્નિવ્યતિ=ઉટ્ઝવિવ્યતિ, યથા સ પુણ્ડરીકોડનગાર

ણિજ્જે ત્તિ કદ્દુ પરલોળ ધિ ય ણ ણો આગચ્છદ્, મ્હુણિ દડનાણિ ય
 મુહનાણિ ય તજ્જનાણિ ય તાહનાણિ ય જાવ ચાઉરતસસારકતાર
 જાવ ધીહ્વહ્સહ) હમકે યાદ વે ઉસ સર્વાર્થ મિદ્ધ વિમાન સે ચવ કા
 મહાવિદેહક્ષેત્ર મેં જન્મ ધારણ કર વહીં સે સિદ્ધપદ કે મોક્ષા બનેંગે-
 યાવત્ સમસ્ત દુઃખોં કા અન્ત કરેંગે । હમ તરહ પુહરીક અનગાર કે
 ચરિત્ર કો દષ્ટાન્ત રૂપ સે કહ્કર મગવાન્ મહાવીર પ્રભુ શ્રમણજનોં કો
 ઉપદેશ કરતે હેં કિ હસી પ્રકાર સે હે આયુષ્મત શ્રમણો ! જો હમારા
 શ્રમણ યા શ્રમણીજન આચાર્ય ઉપાધ્યાય કે પાસ પ્રવ્રજિત હોકર મનુ
 પ્યમવ સયધી કામમોગોં મેં આસક્ત નહીં યતતા હૈ, રજિજત-અનુરાગ
 ભાવ સપન્ન-નહીં હોના હૈ, યાવત્ અપને સયમ કો નષ્ટ નહીં કરતા હૈ,
 વહ હસ ભવ મેં હી અનેક શ્રમણ શ્રમણી, શ્રાવક ણવ શ્રાવિકાઓં
 દ્વારોં અર્ચનીય વદનીય પૂજનીય સત્કરણીય એવ સન્માનનીય હોતા હૈ ।
 તથોં જગત કે લિયે કલ્યાણરૂપ, મગલરૂપ, ધર્મ દેવરૂપ, ઔર જ્ઞાનરૂપ
 ઘન જાતા હૈ । લોગ ઉસકી ઉપાસના કરતે હેં । વહ પરલોક મેં શ્રી
 ઔનેક પ્રકાર કે દડનરૂપ, દુ લો કો, મુહનોં કો તર્જનોં કો, તાહનાઓં

આગચ્છદ્, મ્હુણિ દડનાણિ ય મુહનાણિય તજ્જનાણિ ય તાહનાણિ ય જાવ
 ચાઉરતસસારકતાર જાવ ધીહ્વહ્સહ)

ત્યારપછી તેઓ તે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા
 જન્મ ધારણ કરીને ત્યાથીજ સિદ્ધપદ મેગરશે યાવત્ સમસ્ત દુ ખોના અત
 કરશે આ રીતે પુહરીક અનગારના ચરિત્રને દષ્ટાત રૂપે કહીને મહાવીર પ્રભુ
 શ્રમણજનોને ઉપદેશ કરતા કહે છે કે આ પ્રમાણેજ હે આયુષ્મત શ્રમણો !
 જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજનો આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઇને
 મનુષ્ય ભવના કામભોગોમા આસક્ત થતા નથી રજિજત-અનુરક્ત થતા નથી,
 યાવત્ પોતાના સયમને નષ્ટ કરતા નથી તે આ ભવમાજ ધણા શ્રમણ-
 શ્રમણી અને શ્રાવકોમા વડે અર્ચનીય, વદનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય
 અને સન્માનનીય જગતના માટે કલ્યાણરૂપ, મગલરૂપ, ધર્મ
 દેવરૂપ અને જો તેની ઉપાસના કરે છે, તે પરલોકમા
 પશુ ધણી નોને, તર્જનો

સુધર્માસ્વામી કથયતિ-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तेन एकोनविंशतित मस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । ज्ञातश्रुतस्कन्ध समापयन् सुधर्मा पुनः कथयति-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनाम-धेय स्थान संप्राप्तेन पष्ठस्य अङ्गस्य=पष्ठाङ्गसम्बन्धिन प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः=भगवता कथितः । ' त्ति वेमि' इति व्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०७ ॥

કો નહીં પાતા હૈ ઓર ચતુર્ગતિવાલે હસ સમાર કાન્તાર કો પુઢરીક અનગાર કી તરહ પાર કરનેવાલા હો જાતા હૈ । (એવ લલુ જબૂ ! સમ-જેણ ભગવયા મહાવીરે જાવ આઙગરેણ તિત્યગરેણ જાવ સિદ્ધ ગર્હ નામ-વેજ્જ ઠાળં સપત્તેણ ઇગૂણવીસઠમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લણ્ણે, એવ લલુ જબૂ ! સમજેણ ભગવયા મહાવીરે જાવ સિદ્ધિગઈનામધેજ્જ ઠાળં સપત્તે ણં છદ્દસ્સ અગસ્સ પઢમસ્સ સુયક્કલધસ્સ અયમદ્દે પળ્લણ્ણે ત્તિવેમિ) અવ શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈં કિ હે જબૂ ! આદિકર તીર્થ-કર યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને ૧૧ વે જ્ઞાતાધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ । હસ તરહ હે જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને કિ જો સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો અચ્છી તરહ પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈં, ડઠે અગ કે પ્રથમ શ્રુત-સ્કન્ધ કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે ભાવ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ । એમા મૈને પ્રશ્ન કે કહે અનુસાર હી યહ હે જબૂ ! તુમસે નિવેદિત કિયા હૈ ।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સમાર કાન્તારને પુંડરીક અનગારની જેમ પાર કરનાર થઈ બાક છે

(એવ લલુ જબૂ ! સમજેણ ભગવયા મહાવીરેણ આઙગરેણ તિત્યગરેણ જાવ સિદ્ધિગર્હ નામધેજ્જ ઠાળ સપત્તેણ ઇગૂણવીસ ઇમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લણ્ણે, એવ લલુ જબૂ ! સમજેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સિદ્ધિગઈનામધેજ્જ ઠાળં સપત્તેણ છદ્દસ્સ અગસ્સ પઢમસ્સ સુયક્કલધસ્સ અયમદ્દે પળ્લણ્ણે ત્તિવેમિ)

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જબૂ ! આદિકર તીર્થ કર યાવત સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે હે જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધું છે-છઠ્ઠા અંગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કન્ધનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા ભાવ પ્રતિ પાદિત કર્યો છે હે જબૂ ! આવું મે પ્રશ્નના કહ્યા મુજબ જ તમને કહ્યું છે

हेतोः पग्लोकेऽपि च खलु सा नो आगच्छति= न प्राप्नोति बहुनि=बहुविधानि
दण्डनानि च मृण्डनानि च तर्जनानि च ताडनानि च यावत् चतुरन्तं संसार
फान्तर 'रीडइडमड' व्यति व्रमिष्यति=उडट्प्रमिष्यति, यथा मृण्डरिक्तोऽनगर

णिज्जे त्ति कट्टु परलोकं धि य ण णो आगच्छइ, बहूणि दण्डाणि य मुडणाणि य तज्जणाणि य ताढगाणि य जाव आउरतससारकणं जाव धीहवहस्सइ) इसके बाद वे उस सर्वार्थ मित्र विमान से सब कर महाविदेहक्षेत्र में जन्म धारण कर वहीं से मित्रपद के भोक्ता बनेंगे- यावत् समस्त दुःखों का अन्त करेंगे। इस तरह पुंडरीक अंगार के चरित्र को दृष्टान्त रूप से कहकर भगवान् महावीर प्रभु श्रमणजनों को उपदेश करते हैं कि इसी प्रकार से हे आयुष्मत श्रमणो ! जो हमारा श्रमण या श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर मनुष्यभव सयधी कामभोगों में आसक्त नहीं बनता है, रज्जित-अनुराग भाव सपन्न-नहीं होता है, यावत् अपने समय को नष्ट नहीं करता है, वह इस भव में ही अनेक श्रमण श्रमणी, आवक एवं आविकाओं द्वारा अर्चनीय वदनीय पूजनीय सहकरणीय एवं सन्माननीय होता है। तथा जगत के लिये कल्याणरूप, मंगलरूप, धर्म देवरूप, और ज्ञानरूप बन जाता है। लोग उसकी उपासना करते हैं। वह परलोक में भी अनेक प्रकार के दंडनरूप, दुःखों को, मुडनों को तर्जनों को, ताड़नाओं

आगच्छइ, बहूणि दडणाणि य मुहणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउर तस सारकतार जाव वीइवइस्सइ)

ત્યારપછી તેઓ તે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાથી ચરીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જન્મ ધારણ કરીને ત્યાંથી જ સિદ્ધપદ મેળવશે યાવત્ સમસ્ત દુ ખોનો અંત કરશે આ રીતે પુરૂરીક અનગારના ચરિત્રને દ્ષ્ટાત રૂપે કહીને મહાવીર પ્રભુ શ્રમણજનોને ઉપદેશ કરતા કહે છે કે આ પ્રમાણે જ હે આયુધ્મત શ્રમણો ! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજનો આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને મનુષ્ય ભવના કામભોગોમાં આસક્ત થતા નથી રન્જિત-અનુરક્ત થતા નથી, યાવત્ પોતાના સયમને નષ્ટ કરતા નથી તે આ ભવમાં જ ઘણા શ્રમણ-શ્રમણી અને શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ વડે અર્થનીય, વહનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય અને સન્માનનીય હોય છે તેમજ જગતના માટે કલ્યાણરૂપ, મંગળરૂપ, ધર્મ દેવરૂપ અને જ્ઞાનરૂપ બની જાય છે લોકો તેની ઉપાસના કરે છે, તે પરલોકમાં પણ ઘણી જાતના દંડન રૂપ, દુ ખોને, મુડોને, તર્જન

સુધર્માસ્વામી કથયતિ-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तेन एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । ज्ञातश्रुतस्कन्ध संप्रापयन् सुधर्मा पुनः कथयति-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तेन पष्ठस्य अङ्गस्य=पष्ठाङ्गसम्बन्धिन प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः=भगवता कथितः । ' चि वेमि' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

કો નહીં પાતા હૈ ઓર ચતુર્ગતિવાલે હસ સમાર કાન્તાર કો પુઢરીક અનગાર કી તરહ પાર કરનેવાલા હો જાતા હૈ । (એવં જલુ જબૂ ! સમણેન ભગવયા મહાવીરે ન આહગરેન તિથગરેન જાવ સિદ્ધ ગઈ નામધેજ્ઞ ઠાળ સંપત્તેણ ઇગૂળવીસહમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે, એવં જલુ જબૂ ! સમણેન ભગવયા મહાવીરે ન જાવ સિદ્ધિગઈનામધેજ્ઞ ઠાળ સપત્તેણં છદ્દસ અગસ્સ પઢમસ્સ સુયસ્સવસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ) અથ શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહતે હૈ કિ હે જબૂ ! આદિકર તીર્થ-કર યાવત્ સિદ્ધિ ગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને ૧૯ વે જ્ઞાતા-ધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ । હસ તરહ હે જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને કિ જો સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો અઠ્ઠી તરહ પ્રાપ્ત કર ચુકે હૈ, ડઠે અગ કે પ્રથમ શ્રુત-સ્કન્ધ કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે ભાવ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ । તેસા મૈને પ્રશ્ન કે કહે અનુસાર હી યહ હે જબૂ ! તુમસે નિવેદિત કિયા હૈ ।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સ સાર કાતારને પુઢરીક અનગારની જેમ પાર ઢરનાર થઈ જાય છે

(એવં જલુ જબૂ ! સમણેન ભગવયા મહાવીરેણ આહગરેણ તિથગરેણ જાવ સિદ્ધિગઈ નામધેજ્ઞ ઠાળ સપત્તેણ ઇગૂળવીસ હમસ્સ નાયજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે, એવં જલુ જબૂ ! સમણેન ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સિદ્ધિગઈનામધેજ્ઞ ઠાળ સપત્તેણં છદ્દસ અગસ્સ પઢમસ્સ સુયસ્સવસ્સ અયમદ્દે પણ્ણત્તે તિવેમિ)

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જબૂ ! આદિકર તીર્થ કર યાવત સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે હે જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધું છે-છઠ્ઠા અંગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કન્ધનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા ભાવ પ્રતિ પાદિત કર્યો છે હે જબૂ ! આપ મે પ્રશ્નના કહ્યા મુજબ જ તમને ડહું છે "

‘તસ્સે’ ત્યાદિ, તસ્ય ક્તુ પ્રથમસ્ય શ્રુતસ્કથસ્ય ફોનવિગ્નિર પયનામિ
 ‘અમરગાણિ’ અમરગાણિ=પમાનોન્નારણાનિ=મ તથાલે ઉદ્દેશરગ્નિતિ ફોન
 વિગ્નિર દિવસેષુ સમાપ્યમે ॥ મુ. ૭ ॥

મગલ મગતાન યોગઃ મગત ગૌતમ પ્રભુ ॥

સુધર્મા મગલ, જર્ણનધર્મશ્ચ મગલ ॥ ૧ ॥

इति श्री-विश्वामित्र-जगद्गुरु-प्रसिद्धाचार्य-दशभाषाकलितकलितक
 लापालापक-प्रविशुद्धगद्यधनेरुग्रन्थनिर्माणक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ
 त्रपतिशेखरापुराजमदत्त-‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-शेखरापुराज
 गुरु-गालप्रक्षचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-गसीलार-
 प्रतिरिचिताया ‘ज्ञाताधर्मकथा’ मूत्रस्यानगारधर्ममृतव-
 दिण्यायाया व्याख्याया प्रथमश्रुतस्कथ समाप्त ॥

इस कथन में मैंने अपनी तरफ से कोई भी कल्पना मिश्रित नहीं
 की है किन्तु प्रभु के मुख से जैसा मैंने इसे सुना है वैसा ही यह तुम
 से मैंने कहा है। “तस्से” त्यादि इस प्रथम श्रुतस्कथ के अन्तराल में
 उद्देश रहित १९ अध्ययन हैं। ये अध्ययन १९ दिनोंमें समाप्त होते हैं।

टीकाथः—सासारिक समस्त जीवों के लिये यदि मगलकारी पदार्थ
 हैं-तो ये हैं मगतान् महावीर प्रभु गौतमगणधर, सुधर्मास्वामी, जब
 स्वामी और जैनधर्म।

इस तरह ज्ञाताधर्मकथा सूत्रके प्रथम श्रुतस्कथ संपूर्ण।

આ કથનમાં મેં મારા તરફથી કોઈપણ કલ્પના ભાવની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી,
 પણ પ્રભુના મુખથી જેણે મેં સાંભળ્યું છે તેવું જ મેં કહ્યું છે “તસ્સે” ત્યાદિ
 આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કથના અંતરાલમાં ઉદ્દેશ રહિત આગળીસ અધ્યયનો છે
 આ અધ્યયનો આગળીસ દિવસોમાં સમાપ્ત હોય છે

टीकाथ —जैसा सासारिक जीवोना भाटे जे मगलकारी पदार्थो छे ते
 ते जेन छे-मगवान महावीर प्रभु, गौतम गणधर, सुधर्मा स्वामी, जब
 स्वामी अने जैन धर्म

“આ પ્રમાણે જ્ઞાતાધર્મ કથાગનો જ્ઞાતા-નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કથ સમાપ્ત થયો.”

॥ अथ ज्ञातासूत्रे द्वितीयश्रुतस्कन्धविवरणम् ॥

मङ्गलाचरणम्—

(यसन्ततिलकावृत्तम्)

आद्ये श्रुते भगवता रुचिरैरनेकै,—

ज्ञातैरदायि सकलार्त्तिहरः सुबोध* ।

स्मरन्ने द्वितीयइह धर्ममथा च माक्षाद् ,

विज्ञापिता तमनिश वरद स्मरामि ॥ १ ॥

(मालिनीछन्द*)

गणधरगुणार, मात्समसारपारम् ,

भविजनहितकार, दत्तसम्पत्त्वसारम् , ।

हृतसकलविशार भव्यचित्तैकहार ,

गिरिमुखपदमार, नमि चारित्रसारम्, ॥ २ ॥

—:द्वितीयश्रुतस्कन्धप्रारम्भः—

आद्येश्रुते इत्यादि—प्रथम श्रुतस्कन्धमे भगवान् सूत्रकार ने अनेक सुन्दर दृष्टान्तों द्वारा सकल आर्त्ति (दुःख) हारक सुबोध प्रदान किया है अथ वे इस द्वितीय श्रुतस्कन्ध में साक्षात् धर्मकथाएँ प्रकट करेंगे—अतः ऐसे भगवान् को मैं कि जो भव्यजीवों को कल्याण करनेवाले होते हैं उनको निरन्तर नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

गणधरइत्यादि—जो गणधरो के गुणों को धारण करनेवाले हैं ससार को पार करनेवाले हैं, जो भव्यजनों को हितकारक है, सम्पत्त्वरूपी गुणके बोधक हैं—सकल विकारों से रहित है, इसलिये जो भव्यजीवों

द्वितीय श्रुतस्कन्ध प्रारम्भ

आद्ये श्रुतेत्यादि—प्रथम श्रुतस्कन्धमा भगवान् सूत्रकारे धर्या सुन्दर दृष्टान्तो वडे समस्त आर्त्ति (दुःख) हारक सुबोध प्रदान कयों छे हुवे तेओ आ भीन श्रुतस्कन्धमा साक्षात् धर्मकथाओ प्रकट करये ओटला भाटे ओवा भगवानने—क तेओ भव्य जीवोनु कल्याण कनारा छे—हु निरन्तर नमस्कार कर छु १

गणधर इत्यादि—तेओ गणधरोना गुणोने धारण करनारा छे, म सा रने पार करनारा छे तेओ भव्यजनोना हितकारक छे, सम्पत्त्व रूपी गुणना बोधक छे, आ भवा विकारोमी रहित छे, ओटला भाटे व तेओ भव्य जीवोना

‘ તસ્સે ’ ત્યાદિ, તસ્ય ચ્ચ પ્રથમસ્ય શ્રુતસ્કથમ્પ્ય એકોનવિંશતિરપ્યનાનિ
 ‘ એગમરગાણિ ’ પરસ્પરકાનિ=પ્રમાનોન્ગારણાનિ=અ તરાએ ઉદ્ભવરિતાનિ એકોન
 વિંશતિ દિસેષુ સમાપ્યસે ॥ મુ. ૭ ૧

મગલં મગરાન્ ગૌરઃ મગલં ગૌતમં પ્રભુઃ ।

સુધર્મા મગલ, જનૂર્જનધર્મશ્ચ મગલમ્ ॥ ૧ ॥

इति श्री-विश्वनिष्पात-जगद्गुरुम-प्रसिद्धराचरूपश्चन्द्रमाषाकलितकलितक
 लापालापक-प्रविशुद्गद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहृच्छ
 त्रपतिकोलापुरराजमदत्त-‘ जैनशास्त्राचार्य ’ पद्मभूषित-कोलापुरराज
 गुरु-शालग्रामचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिगाकर पृज्यश्री-गसीलाच-
 त्रतिरिचिताया ‘ शातार्धमकथाङ्ग ’ सूत्रस्यानगारधर्ममृतव-
 दिण्यान्याया व्याख्याया प्रथमश्रुतस्कथ समाप्तः ॥

इस कथन में मैंने अपनी तरफ से कोई भी कल्पना मिश्रित नहीं
 की है किन्तु प्रभु के सुग से जैसा मैंने इसे सुना है वैसा ही यह तुम
 से मैंने कहा है । “ तस्से ” त्थादि इस प्रथम श्रुतस्कथ के अन्तराल में
 वद्देश रहित १९ अध्ययन है । ये अध्ययन १९ दिनोंमें समाप्त होते हैं ।

टीका — सासारिक समस्त जीवों के लिये यदि मगलकारी पदार्थ
 है-तो ये हैं मगरान् महावीर प्रभु गौतमगणधर, सुधर्मास्वामी, जन्
 स्वामी और जैनधर्म ।

इस तरह ज्ञातार्धमकथाङ्ग सूत्रके प्रथम श्रुतस्कथ संपूर्ण ।

આ કથનમાં મેં મારા તરફથી કોઈપણ જાતની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી,
 પણ પ્રભુના સુખથી જેવું મેં સાંભળ્યું છે તેવું જ મેં કહ્યું છે “ તસ્સે ” ત્યાદિ
 આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કથના અંતરાલમાં ઉદ્દેશ રહિત જોગણીસ અધ્યયનો છે
 આ અધ્યયનો જોગણીસ દિવસોમાં સમાપ્ત હોય છે

ટીકા — જાણે સાસારિક જીવોના માટે જે મગલકારી પદાર્થો છે તે
 તે જોઈ છે-ભગવાન મહાવીર પ્રભુ, ગૌતમ ગણધર, સુધર્મા સ્વામી, જન્
 સ્વામી અને જૈન ધર્મ

“ આ પ્રમાણે જ્ઞાતાર્ધમ ” કથાગનો જ્ઞાતા-નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કથ સમાપ્ત થયો ”

नगारशतैः सार्द्धं सपरिवृताः ' पुष्पाणुपुर्वि ' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया
' चरमाणा ' चरन्त =विहरन्तः ग्रामानुग्राम एकग्रामादव्यवधानेनान्य ग्रामम् ' दूइ
ज्जमाणा ' द्रवन्तः=स्पृशन्त ' सुह सुहेण ' सुख सुखेन=सुखपूर्वक यथावसर-
मित्यर्थः विहरन्तो यत्रैव राजगृह नगर यत्रैव गुणशिलक चैत्य यात्रत्-सयमेन
तपसा आत्मान भावयन्तो विहरन्ति । अत्र आदरार्थं गृह्यचनम् । परिपन्निर्गता ।
धर्मः कथितः । परिपद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुगर्मणोऽनगारस्यान्तेवासी आर्य जम्बूनामान

ज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए
चेइए जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति) उस काल
और उस समय में श्रमण भगवान महावीर के अतेवासी आर्य सुधर्मा
नाम के स्थविर भगवान कि जो विशुद्ध मातृवशवाले थे विशुद्ध पितृ-
वशवाले थे, यावत् बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य एव लाघव
सपन्न थे, चौदहपूर्व के पाठी थे-मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान एव
मन पर्यव ज्ञान इन चारों ज्ञानों के धारक थे-पाचसौ अनगारों के साथ
तीर्थंकर परंपरा के अनुसार विहार करते २ एक ग्राम से दूसरे ग्राम में
बिना किसी व्यवधानके विचरण करते हुए सुख पूर्वक समय पर-जहां
राजगृह नगर और उस में भी जहां वह गुणशिलक चैत्य था आये ।
वहां वे समय एव तप से आत्मा को भावित करते हुए उनरे (परिसा
निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसि
पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अते-

ज्जमाणा सुह सुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए
जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति)

ते काणे = ते ते नमथे श्रमण भगवान महावीरना अतेवासी आर्य
सुधर्मा नामना स्थविर भगवान के जेओ विशुद्ध मातृवशवाणा हुता-विशुद्ध
पितृवशवाणा हुता, यावत् बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य अने
लाघव-सपन्न हुता चौदह पूर्वना पाठी हुता, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान
अने मन पर्यवज्ञान ओ आरे ज्ञानेना धारक हुता पाचसौ अनगारोनी साथे
तीर्थंकर परंपरा सुज्ज विहार करता करता ओक गांमथी जीने गांम कोष्ठपणु
जातना व्यवधान वगर सुजेथी यथा समय न्या राजगृह नगर अने तेमा
पणु न्या ते गुणशिलक चैत्य हुतु त्या आव्या त्या तेओ समय अने तप
द्वारा पोताना आत्माने भावित उरता रोकाया

(परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव
दिसि पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अतेवासी

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः—नगरवर्णन सर्वत्र प्रियम् । तस्य गन्तु राजगृहस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र खलु गुणसिलक नाम चैत्यमासीत्, 'उण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णन प्रकारः सर्वोऽत्र वाच्यः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये भ्रमणस्य भगवतो महावीर स्यान्तेवासिन आर्यगृधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्तः 'जाःसंपन्ना' जातिसम्पन्नाः=सुप्रशुद्धमावृत्ताः, कुलसपन्नाः=प्रशुद्धचित्तवृत्ताः, 'जात्' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-आचर-सम्पन्ना, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्वभिः 'चउणाणोवगया' चतुर्ज्ञानोपगता =मतिश्रुताग्रिमिन. पर्यवज्ञानयुक्ताः पञ्चभिर

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समण्ण) उस काल और उस समय में (रायगिहे नामं नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था। (वण्णओ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चपा नगरी के समान जानना चाहिये। (तस्स ण रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलण णाम चेइए होत्था, वण्णओ) उस राज गृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर (ईशानकोण में) एक गुणसिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था। यहा पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये—(तेण कालेण तेण समण्ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम येरा भगवतो जाइ सपन्ना कुल सपन्ना जाव चउइसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहि अणगारसण्हि सद्धि सपरिवुडा पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगाम इह

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समण्ण) ते काले अने ते समये (रायगिहे नाम नयरे होत्था) राजगृह नामे नगर छत्तु (वण्णओ) आ नगरत्तु वर्णन औपपातिक सूत्रमा वर्णववाभा आवेत्ता यथा नगरीना वर्णननी जेम ज नाली देवु जेधओ

(तस्स ण रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलण णाम चेइए होत्था, उण्णओ)

ते राजगृह नगरनी भहार उत्तर पौरस्त्य दिग्-भागनी तरह ओठे के ईशान कोणमा ओक गुणसिलक नामे चैत्य-उद्यान-छत्तो अही चैत्य विषेत्तु अधु वर्णन औपपातिक सूत्रनी जेम नालुवु जेधओ

(तेण कालेण तेण समण्ण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम येरा भगवतो जाइसपन्ना कुलसपन्ना जाव चउइस पुव्वी चउणाणो वगया पंचहि अणगारसण्हि सद्धि सपरिवुटा पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगाम इह

નગારશતૈઃ સાર્દ્ધં સપરિવ્રતાઃ ' પુબ્ગણુપુર્વિં ' પૂર્વાનુપૂર્વ્યા=તીર્થદ્વરપરમ્પરયા
' ચરમાણા ' ચરન્ત =વિહરન્તઃ ગ્રામાનુગ્રામ એકગ્રામાદવ્યવધાનેનાન્ય ગ્રામમ્ ' દૂઃ-
જ્જમાણા ' દ્રવન્તઃ=સ્પૃશન્ત ' સુહ સુદેણ ' સુખ સુલેન=સુખપૂર્વક યથાવસર-
મિત્યર્થઃ વિહરન્તો યત્રૈવ રાજગૃહ નગર યત્રૈવ ગુણશિલક ચૈત્ય યાત્-સયમેન
તપસા આત્માન ભાવયન્તો વિહરન્તિ । અત્ર આદરાર્થં વહુચનમ્ । પરિપન્નિર્ગતા ।
ધર્મઃ કથિતઃ । પરિપદ્ યસ્યા એવ દિશઃ પ્રાદુર્ભૂતા તામેવ દિશ પ્રતિગતા ।
તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે આર્યસુધર્મણોઽનગારસ્થાન્તેવાસી આર્ય જમ્બૂનામાન

જ્જમાણા સુહસુદેણ વિહરમાણા જેણેવ રાયગિહે નયરે જેણેવ ગુણસિલપ
ચેહણ જાવ સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણા વિહરતિ) ઉસ કાલ
ઔર ઉમ સમય મેં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કે અતેવાસી આર્ય સુધર્મા
નામ કે સ્થવિર ભગવત કિ જો વિશુદ્ધ માતૃવશવાલે થે વિશુદ્ધ પિતૃ-
વશવાલે થે, યાવત્ બલ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર એવ લાઘવ
સપન્ન થે, ચૌદહપૂર્વ કે પાઠી થે-મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન એવ
મન પર્યવ જ્ઞાન હન ચારોં જ્ઞાનોં કે ધારક થે-પાચસૌ અનગારોં કે સાથ
તીર્થકર પરપરા કે અનુસાર વિહાર કરતે ૨ એક ગ્રામ સે દૂમરે ગ્રામ મે
વિના કિસી વ્યવધાનકે વિચરણ કરતે હુણ સુખ પૂર્વક સમય પર-જહાં
રાજગૃહ નગર ઔર ઉસ મેં ખી જહાં વહુ ગુણશિલક ચૈત્ય થા આયે ।
વહા વે સયમ એવ તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુણ ઉતરે (પરિસા
નિગ્ગયા ધમ્મો કહિઓ પરિસા જામેવ દિસ પાઠવ્ભૂયા તામેવ દિસિં
પઢિગયા, તેણ કાલેણ તેણ સમણ અજ્જસુહમ્મસ્સ અનગારસ્સ અતે-

જ્જમાણા સુહ સુદેણ વિહરમાણા જેણેવ રાયગિહે નયરે જેણેવ ગુણસિલપ ચેહણ
જાવ સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણા વિહરતિ)

તે કાળે = તે તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના અતેવાસી આર્ય
સુધર્મા નામના સ્થવિર ભગવત કે જેઓ વિશુદ્ધ માતૃવશવાળા હતા-વિશુદ્ધ
પિતૃવશવાળા હતા, યાવત્ બળ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને
લાઘવ-સપન્ન હતા ચૌદ પૂર્વના પાઠી હતા, મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન
અને મન પર્યવજ્ઞાન એ ચારે જ્ઞાનોના ધારક હતા પાચસૌ અનગારોની સાથે
તીર્થકર પરપરા સુજળ વિહાર કરતા કરતા એક ગામથી બીજે ગામ કોઇપણ
જાતના વ્યવધાન વગર સુખેથી યથા સમય જ્યાં રાજગૃહ નગર અને તેમા
પણ જ્યાં તે ગુણશિલક ચૈત્ય હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં તેઓ સયમ અને તપ
દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રોકાયા

(પરિસા નિગ્ગયા ધમ્મો કહિઓ પરિસા જામેવ દિસ પાઠવ્ભૂયા તામેવ
દિસિં પઢિગયા, તેણ કાલેણ તેણ સમણ અજ્જસુહમ્મસ્સ અનગારસ્સ અતેવાસી

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समय राजगृह नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः—नगरवर्णन सर्वाग्र विधेयम् । तस्य सन्तु राजगृहस्य नगरस्य वहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र खलु गुणसिलक नाम चैत्यमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णन प्रकारः सर्वोऽत्र थायः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीर स्यान्तेवासिन आर्यगृधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्त 'जाइसपन्ना' जातिस सपन्नाः=सुविशुद्धमात्रणा, कुलसपन्नाः=विशुद्धचित्तताः, 'जाव' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-लाघव-सम्पन्नाः, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्णिगः 'चउणाणोवगया' चतुर्हानोपगना =मतिश्रुतायधिमनः पर्यवधानयुक्ताः पञ्चभिर

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समण) उस काल और उस समय में (रायगिहे नाम नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था । (वण्णओ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चपा नगरी के समान जानना चाहिये । (तस्स ण रायगिहस्स णयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थण गुणसिलण णाम चेइए होत्था, वण्णओ) उस राज-गृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर (ईशानकोण में) एक गुणसिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था । यहा पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये—(तेण कालेण तेण समण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवतो जाइ सपन्ना कुल सपन्ना जाव चउइसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुटा पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगाम इइ

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समण) ते काले अने ते समये (रायगिहे नाम नयरे होत्था) राजगृह नामे नगर छत्तु (वण्णओ) आ नगरतु वर्णन औपपातिक सूत्रमा वर्णववाभा आवेला चपा नगरीना वर्णननी जेम जल्लो देवु जेधजे

(तस्स ण रायगिहस्स णयरस्स वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थण गुणसिलण णाम चेइए होत्था, वण्णओ)

ते राजगृह नगरनी भट्टार उत्तर पौरस्त्य दिग्-भागनी तरई ओइ के ईशान कोणमा ओक गुणसिलक नामे चैत्य-उद्यान-छत्तो अही चैत्य विधेयु भधु वर्णन औपपातिक सूत्रनी जेम जल्लु जेधजे

(तेण कालेण तेण समण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवतो जाइसपन्ना कुलसपन्ना जाव चउइस पुव्वी चउणाणो वगया पंचहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुटा पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगाम इइ

श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकृत्याना द्वावर्गाः प्रज्ञप्ताः, तत्रथा तानेव दर्शयति-
 'चमरस्म चमरस्य=चमरेन्द्रस्य दाक्षिणात्यासुरकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषीणा प्रथमो-
 वर्गः १ । 'वलिस्स' वलिनाम्नः 'वरोयणिदस्स' वैरोचनेन्द्रस्य=वि=विविध
 प्रकारैः रोचन्ते=दीप्यन्ते दाक्षिणात्यासुरकुमारेभ्यो विशिष्टदीप्तिमत्त्वात् इति विरो-
 चना, त एव वैरोचनाः=औदीन्यासुरकुमारास्तेषामिन्द्रः वैरोचनेन्द्रस्तस्य 'वडरो-
 यणरन्नो' वैरोचनराजस्य=वैरोचनाधिपतेः अग्रमहिषीणा द्वितीयो वर्गः २ । असु-
 रेन्द्रवर्जिताना 'दाहिणिल्लाण' दाक्षिणात्याना=दक्षिणदिक्सम्बन्धिना भवन-
 वासिनामिद्राणामग्रमहिषीणा तृतीयो वर्गः ३ । 'उत्तरिल्लाण' उत्तरीयाणामसु-
 रेन्द्रवर्जिताना भवनवासिनामिद्राणामग्रमहिषीणा चतुर्थो वर्गः ४ । दाक्षिणात्याना
 वानव्यन्तराणामिन्द्राणामग्रमहिषीणा पञ्चमो वर्गः ५ । उत्तरीयाणां वानव्यन्तरा-
 णामिन्द्राणामग्रमहिषीणा षष्ठो वर्गः ६ । चन्द्रस्याग्रमहिषीणा सप्तमो वर्गः ७ ।

स्वामी ने उनसे कहा-हे जन्म । सुनो-यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए
 श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकृत्याओं के दश वर्ग प्रज्ञप्त किये हैं-(त
 जहा) वे इस प्रकार हैं-(चमरस्स अग्रमहिषीणं पढमेवग्गे ? वलिस्स
 वडरोयणिदस्स वडरोयणरन्नो अग्रमहिषीण वीओ वग्गो २ असुरिंद-
 वज्जियाण दाहिणिल्लाण भवणवासीण इदाण अग्रमहिषीणं तडओ
 वग्गो ३ उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवणवासीण इदाण अग्रम-
 हिषीण चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाण वाणभनराण-इदाण अग्रमहि-
 सीण पचमो वग्गो, उत्तरिल्लाण वाणभनराण इदाण अग्रमहिषीण उट्ठो
 वग्गो ६, चदस्स अग्रमहिषीण सत्तमो वग्गो, सरस्स अग्रमहिषीण
 अट्ठमो वग्गो सक्कस्स अग्रमहिषीण णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्रम
 हिषीण दसमो वग्गो) चमरेन्द्र की-दाक्षिणात्य असुरकुमारेन्द्र की-

तेभने ण्हु के डे वणू । आलणो यावत् मुक्तिस्थानने प्राप्त करी खुदेला
 श्रमण भगवान् महावीरे धर्मकृत्याओं के दश वर्गों प्रज्ञप्त किये थे (तजहा)
 तेओ आ प्रभावे डे-

(चमरस्स अग्रमहिषीण पढमेवग्गे वलिस्स वडरोयणिदस्स वडरोयणरन्नो
 अग्रमहिषीण वीओ वग्गो २ असुरिंदवज्जियाण दाहिणिल्लाण भवणवासीण
 इदाण अग्रमहिषीण तडओ वग्गो ३, उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवण-
 वासीण इदाण अग्रमहिषीण चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाण वाणभनराण-
 इदाण अग्रमहिषीण पचमो वग्गो, उत्तरिल्लाण वाणभनराण इदाण अग्रमहि-
 सीण उट्ठो वग्गो ६, चदस्स अग्रमहिषीण सत्तमो वग्गो, सरस्स अग्रमहिषीण अट्ठमो
 वग्गो, सक्कस्स अग्रमहिषीण णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्रमहिषीण दसमो वग्गो)

ગાર. યાત્-‘પઞ્જુરામમાણે’ પર્યુપાસીતઃ=સેવમાન. પત્રમદત્-યદિ સહ
‘ભતે’ ભદન્ત=હે ભગવત્ ! શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્-મોક્ષ સમ્પાદન
પઘ્નસ્યાન્નસ્ય પ્રથમ્ય શ્રુતસ્કન્ધસ્ય ‘નાયાણ’ જાતાનામ્=ઉદાહરણાનામ્ અયમર્થ
પ્રક્ષપ્તઃ દ્વિતીયસ્ય સહ હે ભદન્ત ! શ્રુતસ્કન્ધસ્ય ધર્મકથાના શ્રમણેન યાવત્તપ્ત્વા
પ્તેન=મોક્ષ ગતેન ભગવતા કૌડ્ય’ પ્રાપ્ત’ ? । સુધર્માસ્વામીવાદ-જા સહ હે જન્મ !

વાસી અજ્ઞ જન્મનામ અળગારે જાવ પઞ્જુરામમાણે એવ વયાસી-જહ્ણ
ભતે સમણેણ જાવ સપત્તેણ ડઢ્ઠસ્સ અગસ્સ પઢ્ઢમસ્સ સુયત્તલ્લધસ્સ
નાયાણ અયમદ્દે પન્નત્તે દોચ્ચક્કમ્મ ણ ભતે ! સુયત્તલ્લધસ્સ ધમ્મકહાણં
સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? એવ સહ જન્મ ! સમણેણ જાવ
સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા) રાજગૃહ નગર સે પરિવદ
વદન કરને કે લિયે આઈ । સુધર્માસ્વામી ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ઉપદેશ
સુનકર પરિવદ અપને ૨ સ્થાન પર પીઢે વસા સે ચલી गई । उस काल में
और उस समय में आर्य सुधर्मास्वामी के अतेवासी आर्य जन्म नामके
अनगार ने यावत् उनकी पर्युपासना करते हुए उनसे इस प्रकार पूछा
हे भदत् । यावत् मुक्तिको प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीरने उठेअणके
ज्ञातासूत्र प्रथम श्रुतस्कंध के उदाहरणोका यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित
किया है-तो हे भदत् । द्वितीय श्रुतस्कंधकी धर्मकथाओं का उन्होंने
श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या
अर्थ निरूपित किया है ? इस प्रकार जन्म के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मा

અજ્ઞજન્મનામ અળગારે જાવ પઞ્જુરામમાણે એવ વયાસી-જહ્ણ ભતે સમણેણ
જાવ સપત્તેણ ડઢ્ઠસ્સ અગસ્સ પઢ્ઢમસ્સ સુયત્તલ્લધસ્સ નાયાણ અયમદ્દે પન્નત્તે
દોચ્ચક્કમ્મ ણ ભતે ! સુયત્તલ્લધસ્સ ધમ્મકહાણં સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે
પણ્ણત્તે ? એવ સહ જન્મ ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા)

રાજગૃહ નગરથી પરિવદ વદન કરવા માટે ત્યા આવી સુધર્માસ્વામીએ
ધર્મને ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને પરિવદ પોતાના સ્થાને પાછી જતી
રહી તે કાળે અને તે સમયે આર્ય સુધર્માસ્વામીના અતેવાસી (શિષ્ય)
આર્ય જન્મ નામના અનગારે યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરતા તેમને આ
પ્રમાણે પૂછ્યું કે હે ભદન્ત ! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહા
વીરે છઠ્ઠા અગ્ના પ્રથમ શ્રુતસ્કન્ધના ઉદાહરણોને આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ
નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે
મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધું છે-દ્વિતીય શ્રુતસ્કન્ધની ધર્મકથાઓનો શો અર્થ
નિરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જન્મના પ્રશ્નને સાંભળીને

राईरयणी विज्जू मेहा, जडणं भते। समणेणं जाव सपत्तेण
 पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता पढमस्स णं भते।
 अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते?, एव खलु
 जवू। तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे णयरे गुणासिलए
 चेइए सेणिए राया चेह्णणा देवी सामी समोसरिए परिसा
 णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं
 काली नाम देवी चमरचचाए रायहाणीए कालवडिसगभवणे
 कालसि सीहासणासि चउहि सामाणियसाहस्सीहि चउहि मह-
 त्तरियाहि सपरिवाराहि तिहि परिसाहि सत्तहि अणिएहि सत्तहि
 अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णेहि
 बहुएहि य कालवडिसयभवनवासीहि असुरकुमारेहि देवीहि
 य सद्धिं सपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवल-
 कप्प जवुदीव दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी२ पासइ,
 तत्थ समण भगव महावीर जवुदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे
 नगरे गुणासिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संज-
 मेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्ठुट्ठचित्तमा-
 णंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भु-
 ट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ
 ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहा मत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ अणुग-
 च्छित्ता वाम जाणु अचइ अचित्ता दाहिणं जाणु धरणियलसि
 निहट्ठु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं

સૂરસ્ત=મૃત્યુસ્યાગ્રમહિપીનામષ્ટમો વર્ગઃ ૮ । ગદ્ગસ્યાગ્રમહિપીનાં નવમો વર્ગઃ ૯ ।
ઈશાનસ્યાગ્રમહિપીના દશમો વર્ગઃ ૧૦ ॥ છ૦ ૧ ॥

પૂલ્મ-જહ્ પં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણ ધમ્મકહાણં
દસવગ્ગા પળણત્તા પઢમસ્સ ણ મંતે । વગ્ગસ્સ સમણેણં જાવ
સપત્તેણ કે અટ્ટે પઞ્ચત્તં ?, एवं સ્વલ્લુ જહ્વ ! સમણેણં જાવ સપ
ત્તેણ પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળણત્તા ત જહા-કાલી

અગ્રમહિપિયોં કા-પદ્દેવિયોં કા-પ્રથમ વર્ગ, યલિ નામક વૈરોચનેન્દ્ર કી
અગ્રમહિપિયોંકા ઈતીય વર્ગ, અસુરેન્દ્રકો ઝોડકર દક્ષિણ દિશા સબધી
ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિપિયોં કા તૃતીય વર્ગ, ઉત્તર દિશા
સબધી ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી કિ જિન મેં અસુરેન્દ્ર છોડ દિયે ગયે
હેં અગ્રમહિયોં કા ૪ ચતુર્થ વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સબધી વાનવ્યન્તરોં કે
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિપિયોંકા પચમ વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી વ્હાનવ્યન્તરોંકે
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિપિયોંકા ષઠા વર્ગ, ચન્દ્ર કી અગ્રમહિપિયોં કા ૭ વા
વર્ગ, સૂર્યકો અગ્રમહિપિયોંકા આઠવા વર્ગ, શક્ર કી અગ્રમહિપિયોં કા
નવમાં વર્ગ, ઔર ઈશાનકી અગ્રમહિપિયોં કા દશમાં વર્ગ । વૈરોચન ઉત્તર
દિશાકે અસુરકુમાર હેં । યે દક્ષિણ દિશાસબધી અસુરકુમારોંકી અપેક્ષા
વિશિષ્ટ દીપ્તિસપન હોતે હેં ઇસલિયે ઇન્દ્રેં વરોચન કહા ગયા હૈ ॥ સૂ. ૦ ૧ ॥

ચમરેન્દ્રની-દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની-અગ્રમહિપીઓના-પદ્દેવીઓના
પહેલો વર્ગ, યલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિપીઓના બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને
બાદ કરતા દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિપીઓના ત્રીજો
વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાથી અસુરેન્દ્રને
બાદ કરી દીધા છે અગ્રમહિપીઓના ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સબધી વાન
વ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિપીઓના પાંચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી વાન
વ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિપીઓના સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિપીઓના
આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહિપીઓના નવમો વર્ગ અને ઈશાનની અગ્રમહિ
પીઓના દશમો વર્ગ વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે એ દક્ષિણ દિશા
સબધી અસુરકુમારો કરતા વિશિષ્ટ દીપ્તિ-સપન હોત છે એથી જ એ
વૈરોચન કહેવામા આવ્યા છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

राईरयणी विज्जू मेहा, जइणं भते। समणेणं जाव सपत्तेण
 पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता पढमस्स णं भते।
 अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते?, एव खलु
 जवू। तेणं कालेण तेण समएणं रायगिहे णयरे गुणासिलए
 चेइए सेणिए राया चेह्णणा देवी सामी समोसरिए परिसा
 णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेणं समएणं
 काली नामं देवी चमरचचाए रायहाणीए कालवडिसगभवणे
 कालसि सीहासणसि चउहि सामाणियसाहस्सीहि चउहि मह-
 त्तरियाहि सपरिवाराहि तिहि परिसाहि सत्तहि अणिएहि सत्तहि
 अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि अण्णेहि
 बहुएहि य कालवडिसयभवणवासीहि असुरकुमारेहि देवीहि
 य सद्धि सपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवल-
 कप्प जवुदीव दीव विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी२ पासइ,
 तत्थ समण भगव महावीर जंजुदीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे
 नगरे गुणासिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गह उग्गिणिहत्ता संज-
 मेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्ठुत्तुच्चित्तमा-
 णंदिया पीडमणा जाय हियया सीहासणाओ अब्भुट्टेइ अब्भु-
 ट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ
 ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहा मत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ अणुग-
 च्छित्ता वाम जाणु अचइ अचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि
 निट्ठु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं

સુરસ્ત=પૂર્વસ્યા પ્રમહિષીનામણ્મોર્ગઃ ૮ । ગમ્ભ્યા પ્રમહિષીનાં નવમો વર્ગઃ ૯ ।
ઈશાનસ્યા પ્રમહિષીના દશમો વર્ગઃ ૧૦ ॥ છ૦ ૧ ॥

પૂલ્મ-જહ ણં મંતે ! સમણેણં જાવ સંપત્તેણ ધમ્મકહાણં
દસવગ્ગા પળણત્તા પઢમસ્સ ણ મત્તે ! વગ્ગસ્સ સમણેણં જાવ
સપત્તેણ કે અટ્ટે પચ્ચત્તે ? , एवं खलु जवू । समणेणं जाव संप
त्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अट्ठयणा पणत्ता त जहा-काली

અગ્રમહિષિયોં કા-પટ્ટદેવિયોં કા-પ્રથમ વર્ગ, પલિ નામક વૈરોચનેન્દ્રની
અગ્રમહિષિયોં કા દ્વિતીય વર્ગ, અસુરેન્દ્રનો ઢોડકર દક્ષિણ દિશા સબધી
ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કા તૃતીય વર્ગ, ઉત્તર દિશા
સબધી ભવનવાસિયોં કે ઇન્દ્રોં કી ક્ષિતિ જિન મેં અસુરેન્દ્ર ઝોડ દિયે ગયે
હેં અગ્રમહિષિયોં કા ૪ ચતુર્થ વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સબધી વાનવ્યતરોં કે
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કા પચમ વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી વાનવ્યતરોં કે
ઇન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કા ઊઠ્ઠા વર્ગ, ચન્દ્ર કી અગ્રમહિષિયોં કા ૭ વા
વર્ગ, સૂર્યનો અગ્રમહિષિયોં કા આઠવા વર્ગ, શક્ર કી અગ્રમહિષિયોં કા
નવમા વર્ગ, ઔર ઈશાનકી અગ્રમહિષિયોં કા દશમા વર્ગ । વૈરોચન ઉત્તર
દિશાકે અસુરકુમાર હેં । એ દક્ષિણ દિશા સબધી અસુરકુમારોં કી અપેક્ષા
વિચિષ્ટ દીપ્તિસપન્ન હોતે હેં ઇસલિયે ઇન્દ્રેં વૈરોચન કહા ગયા હે ॥ સૂ૦ ૧ ॥

અમરેન્દ્રની-દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની-અગ્રમહિષીઓનો-પટ્ટદેવીઓનો
પહેલો વર્ગ, પલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓનો બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને
બાદ કરતા દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો ત્રીજો
વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાંથી અસુરેન્દ્રને
બાદ કરી દીધા છે અગ્રમહિષીઓનો ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સબધી વાન
વ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો પાચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સબધી વાન
વ્યતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિષીઓનો
આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહિષીઓનો નવમો વર્ગ અને ઇશાનની અગ્રમહિ
ષીઓનો દશમો વર્ગ । વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે એ દક્ષિણ દિશા
સબધી અસુરકુમારે કરતા વિચિષ્ટ દીપ્તિ-સપન્ન હોય છે એથી જ એ
વૈરોચન કહેવામાં આવ્યા છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेष्टना देरी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भते) हे भदन्त ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पणत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भते) हे भदन्त ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जम्बू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता, त जहा—काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता पढमस्स ण भते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जम्बू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

जम्बू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामीने पूछे छे के (भते) हे भदन्त ! (जइण) जे (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पणत्ता) श्रमण भगवान् महावीर के जेभल्ले मुक्तिस्थान भगवी दीधु छे धर्मकथाओना दश वर्गो प्ररूपित कर्ना छे तो (ण भते) हे भदन्त ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) तेज श्रमण भगवान् महावीर के जेओ मोक्षमा विराजमान थल्ल बुद्धा छे—पछेथा वर्गोना शे अर्थ प्रज्ञप्त कर्था छे ?

(एव खलु जम्बू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता, त जहा—काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता । पढमस्स ण भते, अज्झयणम् समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते । एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देरी)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयत्तुडियथंभियाओ भुयाओ
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु एव वयासी-णमोऽत्थुणं
 अरहत्ताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा
 वीरस्स जाव सपाविडकामस्स वंदामि ण भगवंतं तत्थगयं
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिउट्ठु वंदइ
 नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहा निस-
 ण्णा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पजित्था
 -सेयं खल्ल मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता जाव पज्जुवा-
 सित्तएत्तिक्कहु एव सपेहंइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ
 सद्दावित्ता एवं वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया ! समणे भगव
 महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्व
 सुरवराभिगमणजोगं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण
 सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय
 साहेइ तहेव नट्ठविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु ‘भते’
 भदन्त !—हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्सपाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गा प्रज्ञाताः

—जइणं भते । इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवर्गा
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे
 पणत्ते ? एव खल्ल जवु ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी ओ

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवर्गा पणत्ता पढमस्स
 ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खल्ल जवु ! सम
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞસઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાઢ-એવ સ્વલુ હે નમ્નુઃ ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રતપ્તાનિ, તદ્યથા-કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, મેઘા ૫ । જમ્બૂસ્વામી પૃચ્છતિ-યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યાવત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રતપ્તાનિ, તત્ર પ્રથમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન યાત્ સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞસઃ ? । સુધર્મા સ્વામી કથયતિ—

એવ સ્વલુ હે જમ્બુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાત્રગૃહ નગર ગુણશિલક ચૈત્પમ્, શ્રેણિકો રાજા, ચેલ્હના દેવી આસીન્ । સામી=ત્વામી શ્રીમહાવીરસ્વામી

સુધર્માસ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ (ભતે) હૈં ભદન્ત ! (જહ્ણ) યદિ (સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ સુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથા કે દશ વર્ગ પ્રરૂપિત કિયે હૈં તો (ણ ભતે) હૈં ભદન્ત ! (સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે) ડન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મોક્ષ મેં વિરાજમાન હો ચુકે હૈં પ્રથમ વર્ગ કા કયા અર્થ પ્રજ્ઞસ કિયા હૈં ? (એવ સ્વલુ જમ્બુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા પદમસ્સ ણ ભતે અઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ? એવ સ્વલુ જમ્બુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલે ચેડે સેણિયે રાયા ચેલ્હનાદેવી) હસ પ્રકાર જમ્બુ સ્વામી કે પ્રશ્ન કો સુનકર સુધર્માસ્વામી ને

જમ્બુ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂઠે છે કે (ભતે) હૈં ભદન્ત ! (જહ્ણ) જો (સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા) શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે કે જેમણે સુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ણ ભતે) હૈં ભદન્ત ! (સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અદ્દે પન્નત્તે) તે જ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞસ કર્યો છે ?

(એવ સ્વલુ જમ્બુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પણ્ણત્તા । પદમસ્સ ણ ભતે, અઙ્ગયણ સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પણ્ણત્તે ! એવ સ્વલુ જમ્બુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલે ચેડે સેણિયે રાયા ચેલ્હના દેવી)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु एवं वयासी-णमोऽथुणं
 अरहंताणं जाव सपत्ताणं नमोऽथुणं समणस्स भगवओ महा
 वीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंत तत्थगयं
 इह गया पात्तउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिउहु वंदइ
 नमसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणपरंसि पुरत्थाभिमुहा नित-
 पणा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारूवं जाव समुप्पजित्था
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवा-
 सित्तएत्तिकहु एव सपेहंइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सहावेइ
 सहावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव
 महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जाव दिव्वं
 सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण
 सहस्सविट्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइणं भते' इत्यादि । जम्भुस्वामीपृच्छति—यदि खलु 'भते'
 भवन्ति हे भगवन् ! भ्रमणेन यावत्समाप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञाः

—जइण भते । इत्यादि ।

टीकार्थः—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवगा
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे
 पणत्ते ? एव खलु जवू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जवूचामी ओ

जइण भते । इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवगा पणत्ता पढमस्स
 णं भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जवू ! सम
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

પ્રથમસ્ય खलु हे भदन्त । प्रस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे जम्बू । श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अयनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू । तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिस्तो राजा, चेष्टना देवी आसीत् । स्वामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भते) हे भदन्त ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण वग्गस्स दसवग्गा पणत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भते) हे भदन्त ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जम्बू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता, त जहा—काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पणत्ता पढमस्स ण भते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जम्बू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જખૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (ભતે) હે ભદન્ત ! (જઈણ) જો (સમણેણ જાવ સપત્તેણ વગ્ગસ્સ દસવગ્ગા પણત્તા) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ણ ભતે) હે ભદન્ત ! (સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અટ્ઠે પન્નત્તે) તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે—પહેલા વર્ગના શો અર્થ પ્રસન્ન કર્યો છે ?

(એવંચ ખલુ જખૂ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અજ્ઞયણા પણત્તા, ત જહા—કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જઈણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અજ્ઞયણા પણત્તા । પઢમસ્સ ણ ભતે, અજ્ઞયણ મ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અટ્ઠે પણત્તે । એવંચ ખલુ જખૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલણ ચેઈણ સેણિણ રાયા ચેલ્લણા દેવી)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथभियाओ मुयाओ
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं
 अरहत्ताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा-
 वीरस्स जाव सपाविडकामस्स वंदामि णं भगवत तत्थगयं
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिरुहु वंदइ
 नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरसि पुग्गथाभिमुहा निस-
 ण्णा, तएणं तीसे कालीणदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पजित्था
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता जाव पज्जुवा-
 सित्तएत्तिकहु एव सपेहंइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सहावेइ
 सहावित्ता एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव
 महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं
 सुरवराभिगमणजोगं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण
 सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु ‘भते’
 भदन्त ! हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्समाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गाः प्रशस्ताः॥

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अडे
 पणत्ते ? एव खलु जवू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पणत्ता पढमस्स
 णं भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अडे पणत्ते ? एव खलु जवू ! सम
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

પ્રથમસ્ય खलु हे भदन्त । वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एव खलु हे नम्न । श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू । तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेठना देवी आसीत् । सामी=त्वामी श्रीमद्वासीस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भते) हे भदन्त ! (जइण) यदि (समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भते) हे भदन्त ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जवू समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स ण भते अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेडए सेणिए राया चेत्तलणादेवी) इस प्रकार जवू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જખૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (ભતે) હે ભદન્ત ! (જઈણ) જો (સમગેગં જાવ સંપત્તેણ ધમ્મકહાણ દસવગ્ગા પણ્ણત્તા) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ણ ભતે) હે ભદન્ત ! (સમણેણ જાવ સંપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અટ્ઠે પન્નત્તે) તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમાં વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(એવે સંખલુ જવૂ સમણેણ જાવ સંપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અજ્ઞયણા પણ્ણત્તા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જઈણ ભતે ! સમણેણ જાવ સંપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અજ્ઞયણા પણ્ણત્તા । પદમસ્સ ણ ભતે, અજ્ઞયણ મ સમણેણ જાવ સંપત્તેણ કે અટ્ઠે પણ્ણત્તે ! એવે સંખલુ જવૂ ! તેણે કાલેણ તેણે સમણ રાયગિહે ણયરે સિલપ્પે ચેડપ્પે સેણિપ્પે રાયા ચેત્તલણા દેવી)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु एव वयासी-णमोऽत्थुणं
 अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा
 वीरस्स जाव सपाविडकामस्स वंदामि णं भगवत तत्थगयं
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिऽहु वंदइ
 नमसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणप्ररसि पुरत्थाभिमुहा निस-
 ण्णा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पजित्था
 -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वदित्ता जाव पज्जुवा
 सित्तएत्तिकहु एव सपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सहावेइ
 सहावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । समणे भगव
 महावीरे एव जहा सूरियाओ तहेव आणत्तिथं देइ जाव दिव्वं
 सुरवराभिगमणजोगं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण
 सहस्सविट्थिणं जाणविमाणं सेस तहेव, तहेव णामगोय
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइण भते' इत्यादि । जम्भस्वामीपृच्छति—यदि खलु 'भते'
 भवन्त !—हे भगवन् ! भ्रमणेन यावत्सपाप्तेन धर्मकथानां दशवर्गोः प्रवृत्ताः

—जइण भते । इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे
 पणत्ते ? एव खलु जवू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जवूवामी ओ

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाणं दसवग्गा पणत्ता पढमस्स
 णं भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु जवू ! सम
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે ભદન્ત ! વર્ગસ્ય શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞસઃ ? સુધર્માસ્વામીપ્રાઢ-એ સ્વલુ હે નમ્મ ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રાપ્તાનિ, તદ્દયા-કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, વિદ્યુત્ ૪, મેયા ૫ । જમ્મૂસ્વામી પૃઠ્ઠતિ-યદિ સ્વલુ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યાત્રત્સમ્પ્રાપ્તેન પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞસાનિ, તત્ર પ્રથમસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અયય-નસ્ય શ્રમણેન યાત્રત્ સમ્પ્રાપ્તેન કોડર્યઃ પ્રજ્ઞસઃ ? । સુધર્મા સ્વામી કમ્યતિ—

એ સ્વલુ હે જમ્મૂ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહ નગર ગુણશિલક ચૈત્યમ્, શ્રેણિહો રાજા, ચેટના દેવી આસીન્ । સામી=ત્વામી શ્રીમહાવીરસ્વામી

સુધર્માસ્વામી સે પૃછતે હે કિ (ભતે) હે ભદત ! (જહ્ણ) યદિ (સમ-
ણેન જાવ સપત્તેણ વમ્મકઠ્ઠાણ દસવગ્ગા પળ્લણ્ણા) શ્રમણ ભગવાન્
મહાવીર ને જો કિ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હો ચુકે હૈં ધર્મકથા કે દશ વર્ગ
પ્રરૂપિત કિયે હે તો (ન ભતે) હે ભદત ! (સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ
વગ્ગસ્સ કે અટ્ટે પન્નત્તે) ડન્હી શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ-જો મોક્ષ
મેં વિરાજમાન હો ચુકે હૈં પ્રથમ વર્ગ કા કથા અર્થ પ્રજ્ઞ કિયા હૈં ?
(એ સ્વલુ જન્નુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ્ચ અઙ્ગયણા
પળ્લણ્ણા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ
જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ્ચ અઙ્ગયણાપળ્લણ્ણા પદમસ્સ ન ભતે
અઙ્ગયણસ્સ સમણેણ જાવ સપત્તેણ કે અટ્ટે પળ્લણ્ણે ? એ સ્વલુ જન્નુ ! તેણ
કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે નયરે ગુણસિલે ચેટ્ટે સેણિયે રાયા ચેલ્લ-
ણાદેવી) હસ પ્રકાર જન્નુ સ્વામી કે પ્રશ્ન કો સુનકર સુધર્માસ્વામી ને

જન્નુ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂઠે ઠે કે (ભતે) હે ભદન્ત !
(જહ્ણ) ને (સમણેણ જાવ સપત્તેણ વમ્મકઠ્ઠાણ દસવગ્ગા પળ્લણ્ણા) શ્રમણ
ભગવાન મહાવીર કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ
વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ન ભતે) હે ભદન્ત ! (સમણેણ જાવ સપત્તેણ
પદમસ્સ વગ્ગસ્સ કે અટ્ટે પન્નત્તે) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર કે જેઓ
મોક્ષમા વિરાજમાન થઈ ચૂક્યા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રાપ્ત કર્યો છે ?

(એ સ્વલુ જન્નુ સમણેણ જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ્ચ અઙ્ગયણા
પળ્લણ્ણા, ત જહા-કાલી રાઈ રયણી વિજ્જૂ મેહા જહ્ણ ભતે ! સમણેણ જાવ સપત્તેણ
પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પચ્ચ અઙ્ગયણા પળ્લણ્ણા । પદમસ્સ ન મને, અઙ્ગયણ-મ સમણેણ
જાવ સપત્તેણ કે અટ્ટે પળ્લણ્ણે ! એ સ્વલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે
નયરે—મિલે ચેટ્ટે સેણિયે રાયા ચેલ્લણા દેવી)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कहु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं
 अरहत्ताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुण समणस्स भगवओ महा-
 वीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवत तत्थगयं
 इह गया पासउ म भगवं तत्थ गए इह गयत्तिऽहु वंदइ
 नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहा नित्त-
 ण्णा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था
 -सेयं खल्ल मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवा-
 सित्तएत्तिकहु एव संपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सहावेइ
 सहावित्ता एव वयासी-एव खल्ल देवाणुप्पिया । समणे भगव
 महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं
 सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण
 सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि । जम्भुस्वामीपूठति-यदि खलु ‘भते’
 भदन्त ! हे भगवन् । भ्रमणेन यावत्संपाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गा, प्रज्ञाः॥

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते । समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवगा
 पणत्ता पढमस्स ण भते । वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे
 पणत्ते ? एव खल्ल जवू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्भुस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते । समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवगा पणत्ता पढमस्स
 ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खल्ल जवू । सम
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे नम्भू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेरा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, त्रेणिहो राजा, चेलना देवी आसीत् । सामी=त्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भते) हे भदन्त ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भते) हे भदन्त ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जम्बू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स ण भते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जम्बू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

जम्बू स्वामी श्री सुधर्मास्वामीने पूछे छे के (भते) हे भदन्त ! (जइण) जे (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर के जेभल्ले मुक्तिस्थान भगवी वीधु छे धर्मकथाओना दश वर्गो प्ररूपित कर्यो छे तो (ण भते) हे भदन्त ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते) तेज श्रमण भगवान् महावीर के जेओ मोक्षमा विराजमान थल्ल अकथा छे—पछेना वर्गोना सो अर्थ प्रज्ञप्त कर्यो छे ?

(एव खलु जम्बू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स ण भते, अज्झयण म समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए गया चेल्लणा देवी)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथभियाओ भुयाओ
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एव वयासी-णमोऽत्थुणं
 अरहत्ताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा-
 वीरस्स जाव सपाविडकामस्स वदामि णं भगवंत तत्थगयं
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिऽट्टु वंदइ
 नमसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुग्ग्थाभिमुहा निस-
 षणा, तएणं तीसे कालीएदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था
 -सेयं खल्ल मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवा-
 सित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सहावेइ
 सहावित्ता एवं वयासी-एव खल्ल देवाणुगिया । समणे भगव
 महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिर्यं देइ जाव दिव्व
 सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च
 प्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण
 सहस्सविस्तिथण जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइण भते' इत्यादि । जम्बूस्वामीपूत्रति-यदि खल्ल 'भते'
 भदन्त ! हे भगवन् ! धमणेन यावत्संपाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गाः प्रवृत्ताः ।

—जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा
 यणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे
 पणत्ते ? एव खल्ल जवू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जम्बूवामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा यणत्ता पढमस्स
 ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खल्ल जवू ! सम
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे नम्न ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्राप्तानि, तद्यथा—काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मा स्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिल्पक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेष्टना देवी आसीत् । सामी=त्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पृच्छते हैं कि (भते) हे भदन्त ! (जह्ण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भते) हे भदन्त ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जम्बू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—काली राई रयणी विज्जू मेहा जह्ण भते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स ण भते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जम्बू ! तेण काळेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेडए सेणिण राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जम्बू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

जम्बू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामीने पूछे छे के (भते) हे भदन्त ! (जह्ण) जे (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर के जेभण्ण मुक्तिस्थान भगवी वीधु छे धर्मकथाओना दश वर्गों प्ररूपित किये छे तो (ण भते) हे भदन्त ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पण्णत्ते) तेज्ज श्रमण भगवान् महावीर के जेओ मोक्षमा विराजमान थछ चुक्या छे—पडेवा वर्गोना शे। अर्थ प्रज्ञप्त किये छे ?

(एव खलु जम्बू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा—काली राई रयणी विज्जू मेहा जह्ण भते ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स ण भते, अज्झयणम्म समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जम्बू ! तेण काळेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेडए सेणिण राया चेल्लणा देवी)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ
 साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं
 अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महा-
 वीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवत तत्थगयं
 इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गयत्तिम्हू वंदइ
 नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता सीहासणपरसि पुरत्थाभिमुहा निस-
 ण्णा, तएणं तीसे कालीणदेवीए इमेयारूवे जाव समुप्पजित्था
 -सेयं खल्ल मे समणं भगवं महावीर वदित्ता जाव पज्जुवा
 सित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ सपेहित्ता आभिओगिए देवे सहावेइ
 सहावित्ता एवं वयासी-एव खल्ल देवाणुगिया ! समणे भगव
 महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिर्यं देइ जाव दिव्वं
 सुरवराभिगमणजोगं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्च
 प्पिणह, नेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण
 सहस्सविट्थिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय
 साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—‘जइण भते’ इत्यादि । जम्भूस्वामीपृ० उति-यदि खल्ल ‘भते’
 भदन्त ! = हे भगवन् ! भ्रमणेन यावत्समाप्तेन धर्मकथाना दशवर्गा, प्रज्ञता’।

—जइण भते । इत्यादि ।

टीका—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवग्गा
 पणत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे
 पणत्ते ? एव खल्ल जवु ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जवुवामी ओ

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पणत्ता पढमस्स
 णं भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पणत्ते ? एव खल्ल जवु ! सम
 णेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

‘ સમોસરિણ ’ સમચત્તઃ સમાગતમાન । ‘ પરિમા ’-પરિપત્ત્=રાજગૃહનગર
 માસ્તવ્યો જનસમૂહ ‘ ણિગયા ’ નિર્ગતા=મગરદ્રવ્યનાથ સ્વસ્થાનાનિસ્થતા,
 મગરતા ધર્મરૂપા કથિતા યાવદ્ પરિપદ્ મગરત ‘ પઞ્જુવાસઃ ’ પર્યુપાસ્તે=
 સેવતે, તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે કાલી નામ દેવી ચમરવચ્ચાયા રાજધાન્યાં
 ઉન્ને ઉત્તર દેને કે અભિપ્રાય સે કરા કિ (૧૪ ચલુ જરૂ) હે જરૂ !
 તુમ્હારે પ્રદન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ સુનો યાવત સપ્રાપ્ત શ્રમણ મગ
 ચાન્ મહાવીર ને પ્રથમ વર્ગ કે પાચ અધ્યયન પ્રજ્ઞસ કિયે હૈ વે યે હૈ-
 કાલી ૧, રાત્રિ ૨, રજની ૩, ત્રિષ્ટુ ૪, ઓર મેરા ૫। અથ પુનઃ જરૂ
 સ્વામી પ્રગ્ન કરતે હૈ કિ હૈ મદત ! યાવન્ મુક્તિધ્યાન કો પ્રાપ્ત હુવ
 શ્રમણ મગચાન્ મહાવીર ને પ્રથમ વર્ગ કે પાચ અધ્યયન નિરૂપિત કિયે
 હૈ તો મેં આપસે પૂછના હૈ કિ મદત યાવન્ મોક્ષ તો સપ્રાપ્ત ઉન્ની શ્રમણ
 મગચાન્ મહાવીરને પ્રથમ અધ્યયનકા વ્યાખ્યાન નિરૂપિત કિયા હૈ ? હસકા
 ઉત્તર ઉન્ને સુધર્માસ્વામી હસ પ્રકાર ઢેતે હૈ-હે જરૂ ! ઉસ કાલ ઓર
 ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નામકી નગરી થી-ઉમ મેં ગુણશિલક નામ કા
 ઉવાન થા-નગરી કે રાજા કા નામ શ્રેણિક યા । ઉસકી રાની કા નામ
 ચેલ્લના થા । (સામી સમોસરિણ પરિસા ણિગયા જાવ પરિસા પઞ્જુ
 વાસહ-તેણ કાલેણં તેણં સમણ્ણ કાલી નામ દેવી, ચમરવચ્ચાય રાયદાણીય

આ પ્રમાણે જ જૂ સ્વામી । પ્રશ્નને સાલણીને તેમને ઉત્તર આપવાના
 ઉદ્દેશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે (૧૪ ચલુ જરૂ) હે જૂ ! તમારા
 પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે સાલણો, યાવત્ સપ્રાપ્ત શ્રમણુ ભગવાન મહા
 વીર પહેલા વર્ગના પાચ અધ્યયનો પ્રજ્ઞા કર્યા છે તેઓ આ પ્રમાણે છે-
 ૧ કાલી, ૨ રાત્રિ, ૩ રજની, ૪ વિષ્ટુ, અને ૫ મેરા

હવે ફરી જ જૂ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદ્રન્ત ! યાવત્ મુક્તિસ્થાનને
 પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા શ્રમણુ ભગવાન મહાવીર પહેલા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો
 નિરૂપિત કર્યા છે તો હું તમને ફરી પૂછવા માગુ છું કે હે ભદ્રન્ત ! યાવત્
 મોક્ષને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા તે જ શ્રમણુ ભગવાન મહાવીર પહેલા અધ્યયનનો
 શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેને ઉત્તર આપતા કહેવા
 લાગ્યા કે જૂ ! તે કાળે અને તે વખતે રાજગૃહ નામે એક નગરી હતી
 તેમાં શુણ્ણશિલક નામે ઉગ્રાન હતું નગરીના રાજાનું નામ શ્રેણિક હતું તેની
 રાણીનું નામ ચેલ્લના હતું

(સામી સમોસરિણ પરિસા ણિગયા જાવ પરિસા પઞ્જુવાસહ-તેણ કાલેણં
 તેણ સમણ્ણ કાલી નામ દેવી, ચમર વચ્ચાય રાયદાણીય

‘कालवर्डिसगभवणे’ कालावतसकभवने काले=कालाख्ये सिंहासने चतसृभिः सामानिकसाहस्रीभिः, चतसृभिर्महत्तरिकाभिः, सपरिवाराभिस्तिसृभिः=गङ्गाभ्यन्तरमध्यरूपाभिः ‘परिसाहिं’ परिपद्धिः पारिवारिकदेवीरूपाभिः, सप्तभिः ‘अणिर्णि’ अनीकैः=हयगजरथपदातिवृषभगन्धर्वनाट्यरूपैः, अत्राप विवेकः-

कालवर्डिसगभवणे कालसि, मीहासणसि चउर्हि सामाणियसाहस्सीहिं चउर्हि महूरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिर्णि सत्तहिं अणियाहिंईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं यट्ठहिं कालवर्डिसगभवणवासिहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ) वहा पर श्री महावीर शामी का आगमन हुआ। लोगों को जब इनके आगमन की खबर लगी-तब समस्त राजगृह निवासी जन इन का वदना करने के अभिप्राय से गुणशिलक उद्यान में आये। भगवान् ने धर्मकथा कही-यावत् परिपदने भगवान् की पर्युपासना की। उम काल में और उस समय ये काली नाम की देवी चमरचपा नाम की राजधानी में रहती थी। उसके भजन का नाम कालावतसक था। जिस सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम काल था। यह उस भवन में चार हजार सामानिकों की परिपदा के साथ, चार हजार महत्तरिकाओं के साथ, अपने २ परिवारवाली तीन हजार पारिवारिक देवियों के साथ, मान अनीकोंके-हय, गज, रथ, पदाति, वृषभ, गन्धर्व एवं नाट्यरूपसैन्य के-

कालसि, मीहासणसि चउर्हि सामाणियसाहस्सीहिं चउर्हि महूरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिर्णि सत्तहिं अणियाहिंईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं यट्ठहिं कालवर्डिसगभवणवासिहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ)

त्या श्री महावीर स्वामीनु आगमन थयु जगारे लोकाने तेभना आगमननी जणु धर्म्म त्यारे राजगृहना गथा लोकाने तेभने वदना कराना अलि भायथी शुणुशिलक उद्यानमा आग्या लगवाने धर्मकथा कही सलगानी यावत् परिपदे लगवाननी पर्युपासना करी ते काने अने ते समये कणी नामनी देवी चमरचपा नामनी राजधानीमा रहेती छती तेना लवननुं नाम कालावतसक छतु जे सिंहासन उपर ते जेसती छती तेनु नाम काल छतु ते लवनमा ते चार हजार सामानिकानी परिपदानी साथे, चार हजार महत्तरिकाओं साथे, चार हजार पारिवारिक देवीओंनी साथे आगमन अनीकों-होडा, हाथी, रथ, पायदण, वृषभ, गन्धर्व अने नाट्य

आद्यपद्यकानि सङ्ग्रामाय, गन्धर्वनाट्ये पुनरुपयोगावेति, सप्तभिरनीकाधिप-
 तिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षणदेवमाह्वयिभिः, अन्यैर्बहुभिश्च काष्ठावनसकमवनवाक्त्रि-
 भिरसुरकुमारैर्देवैर्देवीभिश्च सादृष्टं सपरिहृता 'महयाहय नात्र विहर' महताऽहय
 यायद् विहरति- 'महयाऽऽहयनदृगीययाहयतनीतन्त्रालतुडियवगमृङ्गपट्टपराहय-
 वेण' महताऽऽहतनाट्यगीतयादित तन्त्रीतन्त्राल त्रुडित घनमृदङ्गपट्टपरादितवेण,
 तत्र- 'महता' रवेणेनिसम्पन्न, आहतानि=भङ्गाहतानि यानि नाट्यगीतानि,
 तथा=वादितानि=तन्त्री=गीता, तन्त्रा=हस्ततन्त्रा, तान्त्राः=काश्यतान्त्राः, त्रुडि-
 तानि=शेषाणि तृषादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनघनिमाहृष्याद् घनमृदङ्गः=
 स चासौ पट्ट प्रयादितश्चेति घनमृदङ्गपट्टप्रयादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषां यो
 रस्तेन=उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् सुन्दादीन् सुञ्जानां विहरति । 'इम
 च ण' अस्मिन्नरसरे सल्लु केवलरूप=सपूर्णम् जम्बूद्वीप नाम द्वीप=म-पञ्चद्वीप
 विपुलेन 'ओहिणा' अग्निना=अग्निधानेन 'अभोग्यमाणी २' अभोग्यमाना २
 पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोग ददती सती पश्यति । किं पश्यति ? इत्याह- 'तत्थ' तत्र=
 अग्निधानोपयोगे भ्रमण भगवन्त महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजपट्टे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ,
 तथा और भी बहुत से कालावतसक भवन में निवास करनेवाले असु-
 रकुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत्त होकर रहा करती थी ।
 अव्यारहत (सतत) नाट्यगीतों के एवं वादिन तन्त्री, हस्त, ताल, काश्यतान्त्र,
 त्रुडित आदि तृषादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अन्तरी तरह
 प्रजाये गये मृदगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को
 भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी ।
 (इम च ण केवलरूप जम्बूद्वीप द्वीप विपुलेन ओहिणा अभोग्यमाणी २
 पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जम्बू द्वीपे द्वीपे भारते चासे रायमिहे

इय मै-यनी साथे अनीकाधिपतिओनी साथे, सोण छम्बर आत्मरक्षक देवोनी
 साथे तेमज्ज गीता पञ्च धन्वा कालावतसक भवनोभा निवास करनारा अत्रु
 कुमारदेवो अन्ये देवीओनी साथे परिवृत्त यधने रहती छती ते अमोहत
 (सतत) नाट्य गीतो वादित तन्त्री, हस्ततान्त्र, काश्यतान्त्र, त्रुडित वगैरे तृषा वगैरे
 वाद्यो, मेघना ध्वनिनी जेम सारी चेठे वगाउवामा आवेला, सुदोना सुद
 शब्दोथी उपलक्षित दिव्य भोगोना उपभोग करती पोताना समयने सुभेधी
 पसार करती रहती छती

(इम च ण केवलरूप जम्बूद्वीप द्वीप विपुलेन ओहिणा अभोग्यमाणी २
 पासइ, तत्थ समणभगर महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते चासे रायमिहे)

નગરે ગુણશિલકે ચૈત્યે યથાપતિરૂપ-યથાકલ્પ ' ઉગ્રહ ' અગ્રહ=સતેરાજામ્
' ઉગ્ગિઠિત્તા ' અવગૃહ્ય સયમેન તપસા આત્માન ભાવયન્ત પશ્યતિ, દૃષ્ટા હૃષ્ટ
તુષ્ટચિત્તાનન્દિતા ' પીડમણા ' પ્રીતિમનાઃ=પ્રસન્નમનસ્કાઃ ' જાગૃહિયયા ' યાત્ર-
ર્હર્ષશનિર્સર્પદહૃદયા=ર્હર્ષવશાદુલ્લસિતહૃદયા સિંહાસનાદ્ અમ્બુત્તિષ્ઠતિ, અમ્બુત્યાય

ગયરે ગુણસિલ્પે ચેદ્દે અદાપદિરૂપં ઉગ્રહ ઉગ્ગિઠિત્તા સજમેણ
તપસા અપ્પાણ ભાવેમાણ પાસહ, પાસિત્તા હૃદ્વ-તુદ્વ ચિત્તમાણદિયા
પીડમણા જાગૃહિયયા સીહાસનાઓ અમ્બુદ્દેદ, અમ્બુદ્વિત્તા પાયપીઢાઓ
પચ્ચોરુદ્દ, પચ્ચોરુદ્વિત્તા પાડયાઓ ઓમુયદ, ઓમુદ્વિત્તા તિત્થગરામિ-
મુહી સત્તદ્વપયાદ અણુગચ્છદ, અણુગચ્છિત્તા વામ જાણુ અચેદ, અચિત્તા
દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ નિદ્દદ્વ ત્તિક્કલુત્તો મુદ્દાણ ધરણિયલસિ નિવે-
સેદ, નિવેસિત્તા (કદ્દુ એવ વયાસી) હસ અવસર મેં ઉસને
કેવલ કલ્પ-સમ્પૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામકે દ્વીપકો-મન્થજંબૂદ્વીપ કો-વિપુલ
અવધિજ્ઞાન કે દ્વારા વાર ૨ ઉપયોગ દેરુર દેલા-। ઉસ સમય ઉસને
શ્રમણ મહાવીર કો જંબૂદ્વીપાન્તર્ગત ભરત ક્ષેત્ર મેં રાજગૃહ
નગર મે ગુણશિલક ચૈત્ય મેં યથાકલ્પ વસતિ કી આજ્ઞા લેકર સંયમ
એવ તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુદ્દે સ્થિત દેલા। દેવકર વહ વહુત
અધિક હૃષ્ટ એવ તુષ્ટ હુદ્દે। ઉસકા મન પ્રીતિ સે ભર આયા। ર્હર્ષ
કે વશ સે હૃદય ઉલ્લસિત હો ઉઠા। વહ ઉસી સમય અપને સિંહાસન

ગુણસિલ્પે ચેદ્દે અદાપદિરૂપં ઉગ્રહ ઉગ્ગિઠિત્તા સજમેણ તપસા અપ્પાણ ભાવે
માણ પાસહ, પાસિત્તા હૃદ્વ-તુદ્વ ચિત્તમાણદિયા પીડમણા જાગૃહિયયા સીહા
સનાઓ અમ્બુદ્દેદ, અમ્બુદ્વિત્તા પાયપીઢાઓ પચ્ચોરુદ્દ, પચ્ચોરુદ્વિત્તા પાડયાઓ
ઓમુયદ, ઓમુદ્વિત્તા તિત્થગરામિમુહી સત્તદ્વપયાદ અણુગચ્છદ, અણુગચ્છિત્તા, વામ-
જાણુ અચેદ, અચિત્તા દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ નિદ્દદ્વ ત્તિક્કલુત્તોમુદ્દાણ ધરણિય-
લમિ નિવેસેદ નિવેસિત્તા (કદ્દુ એવ વયાસી)

તે સમયે તેણે કેવલકલ્પ-સમ્પૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને મન્થ જંબૂ
દ્વીપને વિપુલ અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગથી વારવાર જોયો તે સમયે તેણે શ્રમણ
મહાવીરને જંબૂદ્વીપમા આવેલા ભરતચેત્રના રાજગૃહ નગરના શુભ
શિલ્પ નૈત્યમા યથાકલ્પ વસતીની આજ્ઞા લઈને સયમ અને તપ દ્વારા પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા રહેતા જોયા જોઈને તે ખૂબ જ હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ
ગઈ તેનું મન પ્રેમથી તરબોળ થઈ ગયું હર્ષાતિરેકથી હૃદય ઉલ્લાસિત થઈ
ગયું તે તે જ વખતે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઉઠી અને ઉઠીને તે પાદપીઠ

आद्यपञ्चानि सङ्ग्रहमाय, गन्धर्वनाट्ये पुनरुपयोगायेति, सप्तमिरनीकाधिप-
तिभिः, पौलशभिः आत्मरक्षणदेवतादेवताभिः, अन्यैर्देवभिश्च कालावनसकमवनशक्ति-
भिरगुरुकुमारदेवैर्देवीभिश्च तादृशं सपरिवृता 'महयाह्वय जान विहति' महताऽह्व-
याद् विहरति- 'महयाऽऽह्वयनदृगीयसाध्यतवीतन्तातनुद्विषयगमुङ्गपदुष्पताऽस्म-
चेण' महताऽऽह्वयनाट्यसीतत्रादिव तन्त्रीतलताल वृद्धिन घनमृदङ्गपटुपत्रादितान्त्रिक,
तत्र- 'महता' रणेति सम्मन्त्र, आह्वयानि=भङ्गाह्वयानि यानि नाट्यगीतानि,
तथा-चादितानि-तन्त्री=तन्त्री, तन्त्रा=हस्ततान्त्रा, तान्त्राः=काश्यतान्त्राः, वृद्धि-
तानि=शेषाणि तृपादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=प्रध्वनिमाह्वयाद् घनमृदङ्गः=
स चासौ पटु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपटुपत्रादितः, ततस्त्रिपदो वृद्धः, तेषां यो
रस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् सुन्दरीन् सुखान् विहरति । 'इम-
च ण' अस्मिन्नसरे खलु कैवल्यरूप=सपूर्णम् जम्बूद्वीप नाम द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप
विपुलेन 'ओहिणा' अधिना=अधिष्ठानेन 'अभोण्माणी २' अभोग्यमाना २
पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोगं ददती मती पश्यति । किं पश्यति ? उत्तराह- 'तत्थ' तत्र=
अधिष्ठानोपयोगे भ्रमण भगवन्त महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजपट्टे

साथ अनीकाधिपतिधों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ,
तथा और भी बहुत से कालावतसक भवन में निवास करनेवाले असुर-
कुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत्त होकर रहा करती थी ।
अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एवं वादित तन्त्री, हस्त, ताल, काश्य तान्त्र,
वृद्धित आदि तृपादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह
प्रजाये गये मृदङ्गों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को
भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी ।
(इम च ण कैवल्यरूप जम्बूद्वीप दीव विपुलेण ओहिणा अभोण्माणी २
पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जम्बू द्वीपे दीपे भारहे चासे राघमिहै

इय सैन्यनी साथे अनीकाधिपतिज्योनी साथे, सोण हजार आत्मरक्षक देवानी
साथे तेमज जीन पञ्च मल्ला कालावतसक लवनोभा निवास करनारा असुर
कुमारदेवो अने देवीज्योनी साथे परिवृत्त यधने रहैती छती ते अन्नाहव
(सतत) नाट्य गीतों, वादित तन्त्री, हस्तताल, काश्यतान्त्र, वृद्धि वगेरे तृपा वगेरे
वाद्यों, मेघना ध्वनिनी जेम सारी घेठे पञ्चाङ्गनामा आवेला सुद गोता सुने
शुद्धोत्थी उपलक्षित दिव्य भोगोना उपभोग करती पोताना समयने सुजेथी
पसार करती रहैती छती

(इम च ण कैवल्यरूप जम्बूद्वीप दीव विपुलेण ओहिणा अभोण्माणी २
पासइ, तत्थ समणभगव महावीर जम्बूद्वीपे दीपे भारहे चासे राघमिहै

નગરે ગુણશિલકે ચૈત્યે યથાપતિરૂપ-યથાત્મ્યમ્ ' ડગ્ગહ ' અગ્રઢ=વસતેરાજામ્
' ડગ્ગિણિત્તા ' અગ્રઢ સયમેન તપસા આત્માન ભાવયન્ત પશ્યતિ, દૃષ્ટ્વા હૃષ્ટ
તુષ્ટચિત્તાનન્દિતા ' પીડમણા ' પ્રીતિમનાઃ=પ્રસન્નમનસ્કાઃ ' જાગદિયયા ' યાત્ર-
ર્હર્ષવશિર્સર્પદહદયા=ર્હર્ષવશાદુલ્લસિતહદયા સિંહાસનાદ્ અમ્બુત્તિષ્ઠતિ, અમ્બુત્થાય

ગયરે ગુણસિલ્લ એહા અહાપડિરૂવ ડગ્ગહ ડગ્ગિણિત્તા સજમેણ
તવસા અપ્પાણ ભાવેમાણ પાસહ, પાસિત્તા દ્વ-તુદ્વ ચિત્તમાણદિયા
પીડમણા જાવ હિયયા સીહાસણાઓ અમ્બુદ્દેઠ, અમ્બુદ્ધિત્તા પાયપીઢાઓ
પન્ચોરુદ્દહ, પન્ચોરુદ્ધિત્તા પાડયાઓ ઓમુયડ, ઓમુદ્ધિત્તા તિત્થગરાભિ-
મુહી સત્તદ્વપયાડ અણુગચ્છડ, અણુગચ્છિત્તા વામ જાણુ અચેદ, અચિત્તા
દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ નિદ્દહુ ત્તિક્કલુત્તોમુદ્ધાણ ધરણિયલસિ નિવે
સેદ, નિવેસિત્તા (કદ્દહુ એવ વયાસી) હસ અવસર મેં ડસને
કેવલ કલ્પ-સમ્પૂર્ણ-જવૂદ્ધીપ નામકે દ્વીપકો-મધ્યજવૂદ્ધીપ કો-વિપુલ
અવધિજ્ઞાન કે દ્વારા વાર ૨ ઉપયોગ દેકર દેખા-। ડસ સમય ડસને
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો જવૂદ્ધીપાન્તર્ગત ભરત ક્ષેત્ર મેં રાજગૃહ
નગર મે ગુણશિલક ચૈત્ય મેં યથાકલ્પ વસતિ કી આજ્ઞા લેકર સયમ
એવ તપ સે આત્મા કો ભાવિત કરતે હુપ સ્થિત દેખા। દેવકર વહ વહુત
અધિક હુષ્ટ એવ તુષ્ટ હુઈ। ડસકા મન પ્રીતિ સે ભર આયા। ર્હર્ષ
કે વશ સે હૃદય ઉલ્લસિત હો ડઠા। વહ ડસી સમય અપને સિંહાસન

ગુણસિલ્લ એહા અહાપડિરૂવ ડગ્ગહ ડગ્ગિણિત્તા સજમેણ તવસા અપ્પાણ ભાવે
માણ પાસહ, પાસિત્તા દ્વ-તુદ્વ ચિત્તમાણદિયા પીડમણા જાવ હિયયા સીહા
સણાઓ અમ્બુદ્દેઠ, અમ્બુદ્ધિત્તા પાયપીઢાઓ પન્ચોરુદ્દહ, પન્ચોરુદ્ધિત્તા પાડયાઓ
ઓમુયડ, ઓમુદ્ધિત્તા તિત્થગરાભિમુહી સત્તદ્વપયાડ અણુગચ્છડ, અણુગચ્છિત્તા, વામ
જાણુ અચેદ, અચિત્તા દાહિણ જાણુ ધરણિયલસિ નિદ્દહુ ત્તિક્કલુત્તોમુદ્ધાણ ધરણિય
લસિ નિવેસેદ નિવેસિત્તા (કદ્દહુ એવ વયાસી)

તે સમયે તેણે કેવલકલ્પ-સંપૂર્ણ-જવૂદ્ધીપ નામના દ્વીપને મધ્ય જવૂ
દ્વીપને વિપુલ અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગથી વારવાર જોયો તે સમયે તેણે શ્રમણ
ભગવાન મહાવીરને જવૂદ્ધીપમાં આવેલા ભરતક્ષેત્રના રાજગૃહ નગરના ગુણ
શિલક ચૈત્યમાં યથાકલ્પ વસતીની આજ્ઞા લઈને સયમ અને તપ દ્વારા પોતાના
આત્માને ભાવિત કરતા રહેતા જોયા જોઈને તે ખૂબ જ હુષ્ટ અને તુષ્ટ વડ
ગઈ તેનું મન પ્રેમથી તરબોળ થઈ ગયું હર્ષાતિરેકથી હૃદય ઉલ્લાસિત થઈ
ગયું તે તે જ વખતે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઊઠી અને ઊડીને તે પાદપીઠ

आद्यपश्चादनि राक्षसाया, गन्धर्वाणां पुनरुपमोगायेति, सप्तमिरनीकाधिप-
 तिभिः, पोटशभिः आत्मरक्षकदेवताहवीभिः, अन्यैरेकमिश्र कालावतमकमवनवाकि-
 भिरसुरकुमारैर्देवीभिश्च सादं सपरिहृता 'महयाहय जाव रिहति' महताऽहय
 यावद् रिहरति-'महयाऽहयनदृगीययाहयतनीतत्तालतुडिपयगमुगपद्वपताहय
 चेण' महताऽहयतनाट्यगीतयादित तन्नीतताल घुडित घनमृदङ्गपदुपवादितवेम,
 तत्र-'महता' रणेणेतिसम्बन्ध, आहतानि=प्रवाहानि यानि नाट्यगीतानि,
 तथा-वादितानि-तन्त्री=गीता, ताला=हस्तताल, तालाः=कास्यतालः, घुडि-
 तानि=शेषाणि तूर्यादियाद्यनि, तथा घन इव मृदङ्गः=यन्त्रनिमादयाद् घनमृदङ्गः=
 स चासौ पदु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपदुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो डण्डः, तेषा यो
 रस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शृङ्गादीन् शृङ्गाना विहरति । 'इम
 च ण' अस्मिन्नसरे खलु केवलरूप=सपूर्णम् जम्बूद्वीप नाम द्वीप=मध्यजम्बूद्वीप
 त्रिपुलेन 'ओहिणा' अधिना=अवधिज्ञानेन 'अभोगमाणी २' अभोगयमाना २
 पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोग ददती सती पश्यति । किं पश्यति ? इत्याह-'तत्' तत्र=
 अवधिज्ञानोपयोगे श्रमण भगवन्त महावीर जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजपुदे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ,
 तथा और भी बहुत से कालावतसक भवन में निवास करनेवाले असुर
 कुमार देवों के एव देवियों के साथ परिवृत्त होकर रहा करती थी ।
 अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एव वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कास्य ताल,
 घुडित आदि तूर्यादियाद्यों के एव मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह
 प्रजाये गये मृदंगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को
 भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी ।
 (इम च ण केवलरूप जम्बूद्वीप दीव त्रिपुलेण ओहिणा आभोगमाणी २
 पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जम्बू द्वीपे दीपे भारते वासे रायगिहे

इय नैन्यनी साथे अनीकाधिपतिओनी साथे, सोण डंजर आत्मरक्षक देवोनी
 साथे तेमज्जीण पञ्च धनु कालावतसक भवनोमा निवास करनारा असुर
 कुमारदेवो अने देवीओनी साथे परिवृत्त थधने रहेती डती ते अआहत
 (सतत) नाट्य गीतो, वादित त त्री, हस्तताल, कास्यताल, घुडित पगेरे तूर्य पगेरे
 पाधो, मेघना ध्वनिनी जेम सारी पेठे पगाडतामा आवेला, मृद गीता सुन्दर
 शब्दोथी उपलक्षित दिव्य भोगोना उपभोग करती पोताना समयने सुभेथी
 पसार करती रहेती डती

(इम च ण केवलरूप जम्बूद्वीप दीव त्रिपुलेण ओहिणा आभोगमाणी २
 पासइ, तत्थ समण भगव महावीर जम्बूद्वीपे दीपे भारते वासे रायगिहे

खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तुकामाय,
वन्दे खलु भगवन्त 'तत्थ गय' तत्रगत=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलको
धाने समप्रसृतम् 'इह गया' इहगता=चमरवञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु
मा भगवान् तत्रगत इहगतम्, 'त्ति कट्ठ' इति कृत्वा=इत्थुवत्वा वन्दते नमस्यति,
वन्दिन्वा नमस्यित्वा सिंहामनवर 'पुरत्थाभिमुही' पौरस्त्याभिमुखी पूर्वदिशाभि-
मुखी 'निमण्णा' निमण्णा=उपविष्टा । ततः खलु तस्या काल्या देव्या अयमेत-

जाव संपाचिउकामस्म वदामि ण भगवत तत्थ गय इह गया पासउ म
भगव तत्थ गए इह गय त्तिरुट्ठु वदइ नममइ, वदित्ता नमसित्ता
सीहामणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा तएण तीसे कालीए देवीए
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त
हुए अहंत भगवतो के लिये मेरा नमस्कार हो। सिद्धिगति नामक
स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान् महावीर को मैं
नमस्कार करती हूँ। जम्बूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में
इस समय विराजमान उन भगवान् को मैं इस चमर चपा नाम की
राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ। वहाँ पर रहे हुए वे प्रभु
मुझे यहाँ पर रही हुई देखे। इस प्रकार कहकर उसने उनको वदना की
-नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहा-
सन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुँह करके बैठ गई। इसके बाद उस
काली देवी के यह इस प्रकार का यावत् मनः सकल्प उत्पन्न हुआ-
(सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गय त्ति कट्ठ वदइ नममइ, वदित्ता, नमसित्ता सीहामणवरसि
पुरत्थाभिमुही निसण्णा-तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था)

यावत् सिद्धिगति नामक स्थानने प्राप्त थयेवा अहंत भगवतोने भास
नमस्कार छे सिद्धिगति नामक स्थानने भेणववानी कामनावाणा श्रमणु भगवान्
महावीरने हु नमस्कार कर छु जम्बू द्वीपता राजगृह नगरना गुणशिलक
उद्यानमा अत्यादे विराजमान ते भगवानने हु आ चमरचपा नामनी राज
धानीमा रहेती नमस्कार करी रही छु त्या विराजमान ते प्रभु अर्द्धा रहेती
भने जुअे आ प्रभाए कहीने तेछे तेभने वदन कया अने नमस्कार कया
वदन अने नमस्कार करीने ते पाताना उत्तम सिंहासन उपर आवीने पूर्व
दिशा तरफ मुअ करीने जेमी गर्ध त्थारपणी ते कणी देवीने आ नतने।
यावत् मन सकल्प उत्पन्न थये के—

पादपीठान् 'पगोहृद्' प्रपगोहृदि=भयतरति, प्रपगोहृद्=अवनोर्य 'पाउयातो'
 पादुके 'ओगुपद्' अगुपुति=गतिरिति, मुस्ता तीर्थकराभिपुष्पी सतीमप्ता
 एपदानि 'अणुग-उद्' अनुग-उति=गम्यग-उति, अनुगम्य वाम जानु
 'अवेद्' अति=उर्ध्वीरिति, अतिर्या=उर्ध्वीरुत्प दक्षिण जानु धरणीतले
 'निदद्' निदत्य=स्थापयित्वा 'मिसगुचो' मिः कृत्य=निवारम् 'मुदान'
 मूर्धान=मस्तक धाणितले निवेशयति=उगयति, निवेश्य ईति प-चुण्णम् 'ए'
 स्तत्यनमति=स्तोत्र शिरोनामयति, मस्त्यनम्य 'कटपतुडियथमिवाओ' कटपतुडित
 स्तम्भिते कटके=करभूषणे तुजिते=गडभूषणे तै' म्भिमने=अष्टमे 'भुयाओ'
 भुजे 'गाहरद्' सहरति=एकत्रोरुति, सह्य 'करयन् जाव कटु' करतन्परि
 गृहीत शिर आरर्च मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्- 'नमोऽथुण' इत्यादि-
 नमोऽस्तु खलु अर्द्धम्पः यावद् सिद्धिगतिनामयेव स्थान सम्पाप्तेभ्यः, नमोऽस्तु

से उठी-और उठकर वह पादपीठ से होकर नीचे आई-नीचे आकर
 उसने दोनों पादुकाओं को पैरों में से उतार दिया। उतार कर फिर वह
 तीर्थकराधिष्ठित दिशा की ओर मात आठ पद आगे गई। वहा आकर
 उसने अपने वाम जानु को ऊंचा किया-ऊंचा कर के फिर दक्षिण जानु
 को नीचे धरणीतल में रखा-रखकर फिर तीन बार अपने मस्तक को
 नीचे भूमिपर लगाया-लगाकर फिर वह कुछ झुकी-शिर को नीचे-
 नवाया। याद में कटक और घुटित से भूषित भुजाओं को एकत्रित
 किया-एकत्रित करके फिर उसने उन दोनों हाथोंकी अजलि बनाई-और
 उरो मस्तक पर आदक्षिण प्रदक्षिण कर इस प्रकार कहा (नमोऽथुण
 अरहताण जाव सपत्ताण नमोऽथुण समणस्स भगवओ महावीरस्स

उपर यधने नीचे आवा नीचे आवाने तेहे भने पादुकाओने पगोभाधी
 उतारी छीधी उतारीने ते तीर्थ कर के दिशा तरह विरजमान होता ते दिशा
 तरह सात-आठ उगला आगण गछ त्या यधने तेहे चोताना उणा दीयवुने
 जायो छयो जायो करीने पछी तेहे जमणा दीयवुने नीचे पृथ्वी उपर टेकवो
 टेकवाने तेहे नख पणत चोताना स तउने नीचे पृथ्वी उपर टेकवो, टेकवीने
 ते थोडी नमी-मस्तकने नीचे नमोवु त्यारपछी तेहे कटक अने घुटितथी
 विभूषित भुजाओने जोगी करी, जोगी करीने तेहे तेओ अनेनी अजलि
 बनायी अने तेने मस्तक उपर आदक्षिण प्रदक्षिण-पूव उ देरवीने आ प्रभाहे छहु

(नमोऽथुण अरहताण जाव सपत्ताण नमोऽथुण समणस्स भगवओ महा-
 वीरस्स जाव सपाविकामस्स पदामि ण भगवत तत्थगय इ गय म भगव

खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामवेय स्थान संप्राप्तुकामाय,
वन्दे खलु भगवन्त 'तत्तयगय' तत्रगत=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलको
धाने समप्रसृतम् 'इहगया' इहगता=चमरवञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु
मा भगवान् तत्रगत इहगतम्, 'त्ति रुद्दु' इति कृत्वो=इत्थुवत्वा वन्दते नमस्यति,
वन्दिन्वा नमस्यित्वा सिंहामनवरे 'पुरत्याभिमुही' पौरस्त्याभिमुखी पूर्वदिशाभि
मुखी 'निमण्णा' निपण्णा=उपविष्टा । ततः खलु तस्या काल्या देव्या अयमेत-

जाव सपाचिउकामस्म वदामि ण भगवन्त तत्थ गय इह गया पासड म
भगव तत्थ गए इह गय त्तिरुद्दु वदइ नममइ, वदिता नमसित्ता
सीहामणवरसि पुरत्याभिमुही निसण्णा तएण तीसे कालीए देवीए
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त
हुए अर्हत भगवतो के लिये मेरा नमस्कार हो। सिद्धिगति नामक
स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान् महावीर को मैं
नमस्कार करती हूँ। जम्बूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में
इस समय विराजमान उन भगवान् को मैं इस चमर चपा नाम की
राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ। वहा पर रहे हुए वे प्रभु
मुझे यहा पर रही हुई देखे। इस प्रकार कहकर उसने उनको वदना की
-नमस्कार क्रिया-वदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहा-
सन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुंह करके बैठ गई। इसके बाद उस
काली देवी के यह इस प्रकार का यावत् मनः सकल्प उत्पन्न हुआ-
(सेय खलु मे समण भगव महावीर वदिता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गय त्ति रुद्दु वदइ नममइ, वदिता, नमसित्ता सीहामणवरसि
पुरत्याभिमुही निसण्णा-तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था)

यावत् सिद्धिगति नामक स्थानने प्राप्त थयेता अर्हत भगवतोने भारा
नमस्कार छे सिद्धिगति नामक स्थानने भेणववानी कामनावाणा श्रमण भगवान्
महावीरने हु नमस्कार करे छु जम्बू द्वीपना राजगृह नगरना गुणशिलक
उद्यानमा अत्यारे विराजमान ते भगवानने हु आ अमरयथा नामनी राज
धानीमा रहेती नमस्कार करी रही छु त्या विराजमान ते प्रभु अर्ही रहेती
भने जुजे आ प्रभाए छुहीने तेजे तेभने वदन कर्या अने नमस्कार कर्या
वदन अने नमस्कार करीने ते पोताना उत्तम सिंहासन उपर आवीने पूर्व
दिशा तरइ मुण करीने जेमी गए त्थारपत्री ते काणी देवीने आ जतने।
यावत् मन सकल्प उत्पन्न थये के-

पादपीठान् 'पञ्चोदह' प्र यगोदनि=अस्तरति, प्रययत्त=अस्तरति 'पाउयातो'
 पादुके 'ओष्ठय' अमृशति=अस्तरति, मुस्ता वीर्यकरामिषुगी सतीमन्ना
 एषदानि 'अणुगच्छ' अनुगच्छति=सम्पुष्टं गच्छति, अनुगम्य वाम जानु
 'अवेष्ट' अशति=उत्सीरगेति, अश्रित्या=उत्सीरुत्प दक्षिण जानु धरणीतले
 'निदधु' निदत्त्य=मगपित्या 'विद्युनो' त्रिः कृत्यः=त्रिपारम् 'मुद्राण'
 मूर्धन=मस्तक धरणीतले निवेशयति=लगयति, निवेश्य ईमि पञ्चुणम' ईप
 स्तत्पयनमति=स्तोक शिरोनामयति, मत्पयनम्य 'कटपट्टिद्यथमियाओ' कटपट्टित्व
 स्वम्भिते कटके=करभूषणे तुत्रिते=गद्गभूषणे तैः स्तम्भिते=अष्टौ 'भुयाओ'
 भुजे 'साहरइ' सहरति=एकत्रोक्तोति, सह-य 'करयल जाय कटु' करतलपरि
 गृहीत गिर आर्च मस्तकेऽञ्जलिं कृ या एवमगदीत्-'नमोत्पुण' इत्यादि-
 नमोऽस्तु खलु अर्द्धम्प' यावद् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्पाप्तेभ्यः, नमोऽस्तु

से उठी-और उठकर वह पादपीठ से होकर नीचे आई-नीचे आकर
 उसने दोनों पादुकाओं को पैरों में से उतार दिया। उतार कर फिर वह
 तीर्थकराधिष्ठित दिशा की ओर मात आठ पद आगे गई। वहा आकर
 उसने अपने वाम जानु को ऊँचा किया-ऊँचा कर के फिर दक्षिण जानु
 को नीचे धरणीतल में रखा-रखकर फिर तीन बार अरने मस्तक को
 नीचे भूमिपर लगाया-लगाकर फिर वह कुछ झुकी-शिर को नीचे-
 नवाया। राद में रुद्ध और घुटित से भूषित भुजाओं को एकत्रित
 किया-एकत्रित करके फिर उसने उन दोनों हाथोंकी अजलि बनाई-और
 उसे मस्तक पर आदक्षिण प्रदक्षिण कर इस प्रकार कहा (नमोत्पुण
 अरहताणं जाव सपत्ताण नमोत्पुण समणस्स भगवओ महावीरस्स

उपर थधने नीचे आवा नीचे आवाने तेहे जने पाहुकाओने पगोमाथी
 उतारी छीधी उतारीने ते तीर्थ कर ले दिशा तरक्ष विराजमान छता ते दिशा
 तरक्ष सात-आठ उगला आगण गछ त्या मधने तेहे चोचाना डाया दीथबुने
 जाओ धर्यो जाओ करीने पछी तेहे जमण्ण दीयलने नीचे पृथ्वी उपर टेक्यो
 टेकवाने तेहे त्रय पथत चोचाना म तउने नीचे पृथ्वी उपर टेक्यो, टेकवाने
 ते थोडी नभी-मस्तकने नीचे नमोत्पुण त्थारपछी तेहे रुद्ध अने घुटितथी
 विलुपित बुनओने बेगी करी, बेगी करीने तेहे तेओ जनेनी अजलि
 बनावी अने तेने मस्तक उपर आदक्षिण प्रदक्षिण-पूव ४ दैरवीने आ प्रमाणे उछु

(नमोत्पुण अरहताण जाव सपत्ताण नमोत्पुण समणस्स भगवओ महा
 वीरस्स जाव सपाविउकामस्स वदामि ण भगवत् तत्थगय ह गय १०० म भगव

प्रत्यर्पयन्ति=तदाज्ञानुसारेण कार्यं कृत्वा निवेदयन्ति । 'णत्र' नत्र=विशेष
स्त्वयम्-यत्-सूर्याभस्य यानविमानं योजनगतसहस्रविस्तीर्णमस्ति, अस्यास्तु-
योजनसहस्रविस्तीर्णं यानविमानमस्ति, शेषं तथैव विवेच्यम् । तथैव-सूर्याभदेवदेव
काली देवी स्वस्य नामगोत्रं साधयति=व्ययति । तथैव=सूर्याभदेवदेव च नाट्य-
विधिम् उपदर्शयति, उपदर्श्य यावत् प्रतिगता=यन आगता तत्रैव प्रतिनिवृत्ता ॥ सू० २ ॥

मूलम्-भतेति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ
णमसइ वदित्ता णमसित्ता एव वयासी कालिए णं भंते ।
देवीए सा दिव्वा देविड्डी कहि गया० कूडागारसालादिट्टतो,

कि जय वह विमान ननर तैयार हो जावे-तब उसकी पीछे हमें खबर
कर देना । सो उन आभियोगिक देवो ने वैसा ही किया-और पीछे
इसकी खबर उसे कर दी । इसमें (जोयणसहस्रविस्तीर्ण जाणविमाण
सेस तहेव) विशेषता इनती रही कि सूर्याभदेव का यान विमान एक
लाख योजन का विस्तारवाला था । तब कि हमका यह यान विमान १
हजार योजन का विस्तारवाला था । याकी सब रचना इसकी उसी
सूर्याभ विमान की तरह जानना चाहिये । (तहेव णामगोय साहेइ,
तहेव नाटयविहिं उवटसेइ जाव पडिगया) सूर्याभ देव की तरह काली
देवी ने अपने नाम गोत्र का रूथन किया और सूर्याभ देव की तरह ही
नाट्यविधि को दिखलाया दिखालाकर फिर वह जहा से आई थी वहीं
पर पीछे गई सूत्र २ ॥

विमान तैयार थई जय तयारे तेनी भने जणु कन्नामा आरे तयारपछी ते
आभियोगिक देवोये तेमज कथुं अने विमान तैयार थई जवानी भणर
देवीनी पासो भोक्खानी दीधी आ विमानमा (जोयणसहस्रविस्तीर्ण जाण
विमाण सेस तहेव) विशेषता आटली १ इती के जयारे सूर्याभदेवनु यान-
विमान ओइ लाख योजन जेटवु विस्तारवाणु इतु तयारे तेनु आ यान-विमान
ओइ हजार योजन जेटवु विस्तारवाणु इतु भाडी रथना समुद्धी तेनी भधी
विगत सूर्याभ-विमाननी जेम १ जणुनी जेष्ठो (तहेव णामगोय साहेइ,
तहेव नाटयविहिं उवटसेइ जाव पडिगया) सूर्याभदेवनी जेम काफी देवीये
पोताना नाम-गोत्रनु रूथन कथुं अने सूर्याभदेवनी जेम १ नाट्यविधि भतावी
अने भताराने ते जवानी आवी इती तयार पाछी जती रही ॥ सूत्र २ ॥

मूयः यावत् मनः-सङ्कल्प समुदाया-श्रेयः गन्तु मम श्रमणं भगवन् महावीरं
 चन्दिस्त्वा यावत् ' रज्जुगामित्थं ' पथुपामित्तम्=संश्रितम्, इति कृत्वा=इति मनसि
 निधाय एवम्=उक्तरीत्या ' मपेदेह ' सम्प्रेषते=प्रसारयति सम्प्रेष्य=विचार्य
 ' आभिभोगिण्देवे ' आभिभोगिकान् देवान् भू-यदेयां शब्दयति=आह्वयति,
 शब्दयित्वा=आह्वय एवमवदत्-एव सत्तु हे देवानुपियाः । श्रमणो भगवान् महा
 वीरः एव यथा सूर्यामस्तप्यैव आज्ञापित्वा ददाति यावत् दिव्य सुगरामिगमन
 योग्य ' जाणरिमाण ' यानरिमाण=यानाय गमनायैरिमाणं कुरुत, कृत्वा यावत्-
 समाज्ञा ' पञ्चप्पिणह ' मत्पर्यय=महा निवेद्यत । तेऽपि देवाः तथैव कृत्वा यावत्

कहते हैं कि सपेहेह सपेहिता आभिओगिण देवे महावेह, महाविता एव
 घयासी एव एल्लु देवाणुप्पिया। समणे भगव महावीरे एव जहा सूरि
 याभो तहेव आणत्तिय देह जात्र दिव्य सुरवराभिगमणजोगं जाण
 विमाण करेह, करित्ता जात्र पच्चणप्पिणह) मुझे भय यही उचित-अप
 स्कर है-कि मैं श्रमण भगवान् महावीर को बदना करके थावतू उनकी
 पर्युपासना कहूँ इस प्रकार उसने पूर्णोक्तरूप से विचार किया। विचार
 करके उसने उसी समय आभियोगिक देवों को बुलाया-और बुलाकर
 वससे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों! श्रमण भगवान् महावीर राज
 गृह नगर के गुणशिलक उद्यान में पधारे हुए हैं-मैं उनको बदना करने
 के लिये जाना चाहती हूँ-अतः तुमलोग मेरे लिये दिव्य सुरवराभिग
 मन योग्य एकयान-विमान तैयार करो इस प्रकार की उसने उन्हें
 सूर्याभ देव की तरह आज्ञा दी। और स्थान में उनसे यह भी कह दिया

(सेय खलु मे समणे भगव महावीर वदित्ता जाव पञ्जुवासित्ते चिकहु एव सपेहेइ, सपेहिच्चा आभिभोगिण देवे सदावेइ, सदारित्ता एव उयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एव जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जाव दिच्च सुरवराभिगमणजोग्ग जाणविमाण करेइ, करित्ता जाव पच्चप्पिणइ)

મારા માટે હવે એ જ વાત યોગ્ય છે કે હું શ્રમણ લગવાન મહા વીરને વદના કરીને યાવત્ તેમની પર્યાપાસના કરૂં, આ પ્રમાણે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે તરત જ આભિયોગિક દેવોને જાલાબ્યા અને જાલા વીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! શ્રમણ લગવાન મહાવીર રાજગૃહ નગરના શુભશિલક ઉદ્યાનમાં પધારેલા છે તેમને વદન કરવા માટે હું ત્યાં જવા ઈચ્છુ છું એથી તમે બધા મારા માટે દિવ્ય સુરવરાભિગમન યોગ્ય એક યાન-વિમાન તૈયાર કરો આ પ્રમાણે તે લોકોને તેણે સૂચીસદેવની જેમ આજ્ઞા કરી, અને સાથે સાથે તેઓને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે બધારે

तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अम्भणुन्नाया
समाणी हट्ठ जाव हियया पहाया कयवलिकम्मा कायकोउय
मगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया
अप्पमहाग्घाभरणाळंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ
गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उव-
ट्ठाणसाला जेणेव धम्मिण जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता धम्मिय जाणपवरं दूरुढा, तएण सा काली दारिया
धम्मिय जाणपवरं एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं
पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइ-
महालयाए परिसाए धम्म कहेइ, तएणं सा काली दारिया
पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्म अतिए धम्म सोच्चा णिस-
म्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो
वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एववयासी-सइहामि ण भते !
णिग्गंध पावयण जाव से जहेय तुब्भं वयह, जं णवरं देवाणु-
प्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएण अह देवाणुप्पियाण
अतिए जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिए !, तएण सा
काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एववुत्ता समाणी
हट्ठ जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता
तसेव धम्मियं जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरि-
सादाणीयस्स अतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनि-
क्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

अहो णं भंते । काली देवी महिद्रियाः कालिए ण भंते ! देवीए
 सा दिव्वा देविद्वीः किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभि
 समण्णागया ? एवं जहा सूरियाभस्स जाव एव खलु गोयमा ।
 तेण कालेणं तेणं समएण इहेव जन्तुदीवे दोवे भारहे वासे आम
 लकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जिय
 सत्तू राया तत्थ ण आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहा
 वइ होत्था अइए जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स
 कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरुवा, तस्स
 ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली
 णाम दारिया होत्था, बुद्धा बुद्धकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडि
 यपुयत्थणी णिविन्नवरा वरपरिवज्जिया यावि होत्था, तेणं कालेणं
 तेण समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमा-
 णसामी णवरं णवहत्युस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहि अट्ठत्ती-
 साए अज्जियासाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे जाव अंबसालवणे
 समोसडे परिसा णिग्गया जाव पड्जुवासइ, तएणं सा काली
 दारिया इमीसे कहाए लद्धद्धा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणैव
 अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं
 वयासी एव खलु अम्मयाओ । पासे अरहा पुरिसादाणीए
 आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मयाओ । तुब्भेहि
 अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पाय-
 वदिया गमित्तए ? अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिबध्द करेहि,

तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अब्भणुन्नाया
समाणी हट्ठ जाव हियया प्हाया कयवलिकम्मा कायकोउय
मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया
अप्पमहाग्घाभरणालकियसरीराचेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ
गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उव-
ट्ठाणसाला जेणेव धम्मिण जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता धम्मिय जाणपवर दूरुढा, तएण सा काली दारिया
धम्मिय जाणपवर एव जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं
पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइ-
महालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएण सा काली दारिया
पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्म अतिए धम्म सोच्चा णिस-
म्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिकखुत्तो
वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एववयासी—सइहामि ण भते ।
णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भ वयह, ज णवरं देवाणु-
प्पिया । अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अह देवाणुप्पियाण
अतिए जाव पठवयामि, अहासुह देवाणुप्पिए !, तएण सा
काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एव बुत्ता समाणी
हट्ठ जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता
तसेव धम्मिय जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरि-
सादाणीयस्स अतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनि-
क्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

अहो णं भते । काली देवी महिद्वियाऽ कालिण ण भते । देवीए
 सा दिव्वा देविद्वीऽ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभि
 समण्णाग्या ? एव जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा ।
 तेण कालेणं तेणं समण्ण इहेव जव्वदीवे दोरे भारहे वासे आम
 लकप्पा णाम नयरी होत्था वण्णओ अंवसालवणे चेइए जिय
 सत्तु राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नाम गाहा
 वइ होत्था अइ जाव अपरिमूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स
 कालसिरी णाम भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स
 ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली
 णामं दारिया होत्था, बुद्धा बुद्धकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडि-
 यपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जियायावि होत्था, तेणं कालेणं
 तेण समण्णं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमा-
 णसामी णवर णवहत्थुस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहि अट्टत्ती-
 साए अज्जियासाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे जाव अंवसालवणे
 समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली
 दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ट जाव हियया जेणेव
 अम्मपियरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं
 वयासी एव खलु अम्मयाओ । पासे अरहा पुरिसादाणीए
 आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मयाओ । तुब्भेहि
 अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पाय-
 वदिया गमित्तए ? अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडिवध करेहि,

तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अब्भणुन्नाया
समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कायकोउय
मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया
अप्पमहाग्घाभरणा लकियसरीरा चेडिया चक्खवाल परिक्किण्णा साओ
गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उव-
ट्ठाणसाला जेणेव धम्मिय जाणपवरे तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता धम्मिय जाणपवरं दूरुढा, तएण सा काली दारिया
धम्मिय जाणपवर एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं
पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइ-
महालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएणं सा काली दारिया
पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्म अतिए धम्म सोच्चा णिस-
म्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिकखुत्तो
वदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एववयासी—सद्वहामि णं भते ।
णिगंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भ वयह, ज णवरं देवाणु-
प्पिया । अम्मापियरो आपुच्छामि, तएण अह देवाणुप्पियाणं
अतिए जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिए !, तएण सा
काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एववुत्ता समाणी
हट्ठ जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता
तमेव धम्मिय जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरि-
सादाणीयस्स अंतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनि-
क्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

उवागच्छइ उवागच्छिता आमलकप्पं नयरि मज्झमज्झेणं जेणेव
 वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता ष
 म्मियं जाणपवर ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ
 पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरा तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छिता करयल० एव वयासी-एव खलु अम्मयाओ ।
 मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्म णिसते सेऽत्रि य मे धम्मे
 इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अह अम्मयाओ । ससार
 भउविग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुव्वेहि अब्भ
 णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुडा भवित्ता अगा
 राओ अणगारिय पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया । मा पडि-
 वध करेह, तएण से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्ख
 डावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसंबधिपरियण
 आमतेइ आमत्तित्ता तओ पच्छा पहाए जाव विपुलेणं पुप्फव
 त्थगंधमल्लालंकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणि
 यगसयणसंबधिपरियणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहि
 कलसेहि पहावेइ पहावित्ता सव्वालकारविभूतिय करेइ करित्ता
 पुरिससहस्सवाहिणिय सीय दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियग
 सयणसंबधिपरियणेणं सद्धि सपरिवुडे सन्निवड्डीए जाव रवेणं
 आमलकप्प नयरि मज्झ मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छिता
 जेणेव अवसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता
 छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीय ठावित्ता

कालियं दारिय सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मा-
 पियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छित्ता वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-
 एव खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता
 जाव किमग पुण पासणयाए ? एसणं देवाणुप्पिया ! ससार
 भउव्विगा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अतिए मुडा भवित्ता जाव
 पव्वइत्तए, त एय णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिवख, दल-
 यामो पडिच्छत्तु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिवख, अहासुह
 देवाणुप्पिया ! मा पडिवधं करेह तएणं काली कुमारी पास
 अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं
 अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमहालकार ओमुयइ
 ओमुडत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-
 सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो
 वंदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-आलित्ते ण
 भते ! लोए एव जाव सयमेव पव्वाविया, तएण पासे
 अरहा पुरिसादाणीए कालि सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए
 सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि
 दारिय सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं
 सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवभयारिणी,
 तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइय-
 माइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ वहूहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

कालियं दारिय सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मा-
 पियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छित्ता वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-
 एव खलु देवाणुप्पिया । काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता
 जाव किमग पुण पासणयाए ? एसणं देवाणुप्पिया । संसार
 भउविगा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडा भवित्ता जाव
 पव्वइत्तए, त एय णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिव्व, दल-
 यामो पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया । सिस्सिणिभिव्व, अहासुह
 देवाणुप्पिया । मा पडिवधं करेह तएणं काली कुमारी पास
 अरह वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं
 अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ
 ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-
 सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिव्वुत्तो
 वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी-आलित्ते ण
 भते । लोए एवं जाव सयमेव पव्वाविथा, तएण पासे
 अरहा पुरिसादाणीए कालि सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए
 सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि
 दारिय सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं
 सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव युत्तवभयारिणी,
 तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइय-
 माइयाइ एक्कारस अगाइं अहिज्जइ वहूहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

उवागच्छइ उवागच्छिता आमलकप्प नयरि मज्झमज्झेणं जेणेव
 वाहिरिया उवट्टाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता ध
 म्मिथं जाणप्पवर ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ
 पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरा तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छिता करयल० एव वयासी-एवं सल्लु अम्मयाओ ।
 मए पासस्स अरहओ अतिए धम्म णिसंते सेऽवि य मे धम्मे
 इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अह अम्मयाओ । संसार
 भउविग्गा भीया जम्मणमरणणं इच्छामि णं तुवभेहि अब्भ-
 णुत्राया समानी पासस्स अरहओ अंतिए मुडा भवित्ता अगा
 राओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया । मा पडि
 वध करेह, तएण से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्ख
 डावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसंबधिपरियणं
 आमंतेइ आमत्तित्ता तओ पच्छा पहाए जाव विपुलेणं पुष्कव
 त्थगंधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणि
 यगसयणसंबधिपरियणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहि
 कलसेहि पहावेइ पहावित्ता सव्वालकारविभूसियं करेइ करित्ता
 पुरिससहस्सवाहिणिय सीय दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियग-
 सयणसंबधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सन्विड्डीए जाव रत्तेणं
 आमलकप्प नयरि मज्झ मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छिता
 जेणेव अवसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छिता
 छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीय ७ ठावित्ता

कालिय दारिय सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मा-
 पियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ
 उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी-
 एव खल्ल देवाणुप्पिया । काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता
 जाव किमग पुण पासण्याए ? एसणं देवाणुप्पिया । ससार
 भउठिवा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अतिए मुडा भवित्ता जाव
 पव्वइत्तए, त एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिवख, दल-
 यामो पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया । सिस्सिणिभिवख, अहासुहं
 देवाणुप्पिया । मा पडिवधं करेह तएणं काली कुमारी पास
 अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिस दिसिभागं
 अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ
 ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-
 सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिवखुत्तो
 वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी-आलित्ते ण
 भते । लोए एवं जाव सयमेव पव्वाविया, तएण पासे
 अरहा पुरिसादाणीए कालि सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए
 सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि
 दारिय सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं
 सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तवभयारिणी,
 तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अतिए सामाइय-
 माइयाइ एक्कारस अगाड अहिज्जइ वहूहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

ટીકા—કાલીદેવીગમનાનન્તર ગૌતમઃ પૂચ્છતિ—‘ મંતેતિ ’ ઇત્યાદિ । ‘ મંતેતિ ’ હે ચદન્ત । ઇતિ મન્મથો ય ભગવાન્ ગૌતમઃ શ્રમણ ભગવન્ત મહાવીર વન્દતે નમસ્યતિ ચન્દિત્યા નમસ્વિત્યા એમચાટીન્—કાલ્યા ચલુ હે મન્તન્ત ! દેવ્યા સાન્વા સામ્પત દર્શિતા મા દિન્વા ‘ દેવિહી ’ દેવદિન્નિ = વિમાનપરિવારાદિરૂપા, ‘ દેવગુર્જી ’ દેવગુતિ = શરીરામણાદીનાં દીપ્તિરૂપા ‘ દેવગુભાવે ’ દેવગુભાવઃ = શક્તિપ્રભાવાદિરૂપ, કુચગતા ? કુચ પ્રતિષ્ઠા ? ભગવાનાહ-શરીરગતા, શરીરમનુ

‘ મંતેતિ ભગવ ગોયમે ’ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થઃ—કાલીદેવી કે વળે જાને કે યાદ (ભગવ ગોયમે) મનુવાન ગૌતમ ને (મંતેતિ) હે મન્દન । હસ પ્રકાર સમોધન કર (સમણ ભગવ મહાવીર વદહ જમસહ) શ્રમણ ભગવાન્ કો વદના કી-નમસ્કાર ક્રિયા (વદિતા જમમિતા એવ વચાસી) વદના નમસ્કાર કરકે ફિર વન્હો ને જનસે હમ પ્રકાર પૂઝા—(કાલિણ મંતે । દેવીએ સા દિન્વા દેવિહી ૩ કહિં ગયાં ૦ કૂઢાગારચાલાદિદુતો, અહોણ મંતે । કાલીદેવી મહાદિયા ૩, કાલિણ મંતે । દેવીએ સા દિન્વા દેવિહી ૩ કિણ્ણા લદ્ધા, કિણ્ણા પત્તા, કિણ્ણા અમિસમણ્ણા ગયા ? એવ જહા સૂરિયામસસ જાત) હે મન્દન । કાલીદેવી ને જો હસ સમય દિવ્ય વિમાન-પરિવાર આદિરૂપ ઋદ્ધિ દિશ્વલાઈ, શરીર, આભરણ આદિ કી દીપ્તિરૂપ જો દેવગુતિ એવ શક્તિ પ્રભાવ આદિરૂપ જો દેવાનુભાવ દિગ્વલાયા-ચહ સવ કહા ચલા

‘ મંતેતિ ભગવ ગોયમે ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થઃ—જાણી દેવીના જતા રહ્યા યાદ (ભગવ ગોયમે) ભગવાન ગૌતમે (મંતેતિ) હે ભદન્ત । આ પ્રમાણે સમોધન કરીને (સમણ ભગવ મહાવીર વદહ જમસહ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન અને નમસ્કાર કર્યા (વદિતા જમમિતા એવ વચાસી) વદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેઓશ્રીને પૂછ્યું કે (કાલિણ મંતે ! દેવીએ સા દિન્વા દેવિહી ૩ કહિં ગયાં ૦ કૂઢાગાર ચાલાદિદુતો, અહોણ મંતે । કાલી દેવી મહાદિયા ૩, કાલિણ મંતે । દેવીએ સા દિન્વા દેવિહી ૩ કિણ્ણા લદ્ધા, કિણ્ણા પત્તા, કિણ્ણા અમિસમણ્ણા ગયા ? એવ જહા સૂરિયામસસ જાત)

હે ભદન્ત ! જાણી દેવીએ આત્યારે જે દિવ્યવિમાન, પરિવાર વગેરેની ઋદ્ધિ બતાવી, શરીર, આભરણ વગેરેની દીપ્તિની જે દેવગુતિ તેમજ શક્તિ, પ્રભાવ વગેરેનો જે દેવાનુભાવ બતાવ્યો તે બધો કયા અદ્વિતીય થઈ ગયો ? કયા પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો ?

પ્રવિષ્ટા, 'કૂટાગારસાલાદિદ્વતો' અત્ર કૂટાગારસાલા દૃષ્ટાન્તો વોદ્યવ્યઃ । 'અહો' આશ્ચર્યે સ્વલુ હે મદન્ત ! કાલીદેવી મહર્દિકા મહાદ્યુતિકા મહાનુભાવા વર્તેતે કાલ્યા સ્વલુ હે મદન્ત ! દેવ્યા સા દિવ્યા દેવર્દિઃ ૩ 'કિણ્ણા' કથ=કેન પ્રકારેણ 'લદ્ધા' લબ્ધા=અર્જિતા, 'મિણ્ણા' કથ=કેન પ્રકારેણ 'પત્તા' પ્રાપ્તા=સ્વાધીનીકૃતા 'કિણ્ણા' કથ=કેન પ્રકારેણ 'અભિમમન્નાગયા' અભિ સમન્વાગતા=ઉપભોગવિષયતયા સમાગતા ? એવ 'જહામૂરિયામસ્સ જાવ' યથા-સૂર્યામસ્ય યાવત્=યથા સૂર્યામદેવત્રિપયે ગૌતમસ્વામિના પ્રશ્ન કૃતસ્તથૈવાત્રાપિ વિજ્ઞેયઃ । અથ ભગવાન્ કાલીદેવીપૂર્વભવવૃત્તાન્ત વર્ણયતિ- 'એવ સ્વલુ' ઇત્યાદિ । એવ સ્વલુ હે ગૌતમ ! તસ્મિન્ માછે તસ્મિન્ સમયે રહેવ=અસ્મિન્નેવ જમ્બૂદ્વીપે દ્વીપે ભારતે વર્ષે આમલકલ્પા નામ નગરી આસીત્ । 'વળ્ણઓ' વર્ણકઃ=નગરી વર્ણનગ્રન્થઔપપાતિમુત્રાદવસેય' । તત્ર આમ્રશાલગ્ન ચૈત્યં, જિતશત્રૂ રાજા

ગયા-? કહા પ્રવિષ્ટ હો ગયા ? હસ પ્રકાર ગૌતમ કા પ્રશ્ન સુનકર ભગવાન્ ને ઉનસે કહા-શરીર મેં ચલા ગયા-શરીર મેં પ્રવિષ્ટ હો ગયા । હસ વિષય મેં કૂટાકારશાલા કા દૃષ્ટાન્ત જાનના ચાહિયે । હે મદન્ત ! કાલી-દેવી મહર્દિક, મહાદ્યુતિક એવ મહાનુભાવવાલી હૈ । હસ કાલીદેવી ને વહ દેવર્દિ ૩ કિસ પ્રકાર પ્રાપ્ત કી અર્જિત કી કિસ પ્રકાર ઉસે અપને આધીન કિયા ? ઔર કિસ પ્રકાર સે ઉસને ઉસે અપને ભોગ કી વિષ-યમૃત ઘનાઈ ? હસ તરહ ગૌતમસ્વામી ને સૂર્યામદેવ કે વિષય મેં જિસ તરહ સે પ્રશ્ન કિયા ઉસી તરહ સે યહાં પર ભી જાનના ચાહિયે-। અથ ભગવાન્ કાલીદેવી કે પૂર્વભવ કે વૃત્તાન્ત કા વર્ણન કરતે હૈન- (એવ સ્વલુ ગોયમા ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ-રહેવ જમ્બુદીવે દીવે ભારહે વાસે આમલકલ્પા નામ નગરી હોત્યા-વળ્ણઓ-અવસાલવળે ચેદ્દા જિયસત્તુ

આ પ્રમાણે ગૌતમને પ્રશ્ન સાંભળીને ભગવાને તેમને કહ્યું કે શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો-શરીરમાં જતો રહ્યો આ વિષે કૂટાકાર શાળાનું દૃષ્ટાન્ત બાલ્યુબુ બોધ્યો હે ભદ્રન્ત ! કાળી દેવી મહર્દિક મહાદ્યુતિક અને મહાનુભાવવાળી છે આ કાળી દેવીએ તે દેવર્દિ ૩ કેવી રીતે પ્રાપ્ત કરી છે, અર્જિત કરી છે, કેવી રીતે સ્વાધીન બનાવી છે, અને તેણે તેને કેવી રીતે પોતાના ઉપલોગની વિષયભૂતા બનાવી છે ? આ પ્રમાણે ગૌતમ સ્વામીએ સૂર્યામદેવના વિષે જેમ પ્રશ્ન કર્યો હતો તેમજ અહીં પણ બાલ્યુબો બોધ્યો ભગવાન હવે કાળી દેવીના પૂર્વભવના વૃત્તાન્તનું વર્ણન કરે છે-

(એવ સ્વલુ ગોયમા ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રહેવ જમ્બુદીવે દીવે ભારહે વાસે અમલકલ્પા નામ નગરી હોત્યા-વળ્ણઓ-અવસાલવળે ચેદ્દા જિયમત્તુ રાયા

टीका—कालीदेवीगमनानन्तर गौतमः पृच्छति—‘ भवेति ’ इत्यादि ।
 ‘ भवेति ’ हे भदन्त । इति गम्यो य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर
 वन्दते नमस्पति यन्दिता नमस्विता एवमयादीन्—काल्या यत्तु हे भदन्त । देव्या
 सा=या साम्प्रत दर्शिता सा दिव्या ‘ देविडू ’ देविर्द्धि = विमानपरिवारादिरूपा,
 ‘ देवज्जुई ’ देवघुतिः=शरीराभरणादीना दीप्तिरूपा ‘ देवगुभावे ’ देवानुभाव=
 शक्तिप्रभावादिरूप, कुत्रगता ? कुत्र प्रविष्टा ? भगवानाह—शरीरगता, शरीरमनु

‘ भते त्ति भगव गोयमे ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—कालीदेवी के चले जाने के बाद (भगव गोयमे) भग
 वान् गौतम ने (भते त्ति) हे भदन्त । इस प्रकार सन्बोधित कर (समर्ण
 भगव महावीर घदइ णमसइ) श्रमण भगवान् को वंदना की—नमस्कार
 किया (वदिता णमसिता एव ययासी) वंदना नमस्कार करके फिर
 उन्हो ने उनसे इस प्रकार पूछा—(कालिण भते ! देवीए सा दिव्या
 देविडू ३ कहि गया० कूडागारसालादिद्वतो, अहोण भते ! कालीदेवी
 महड्डिया ३, कालिण भते ! देवीए सा दिव्या देविडू ३ किण्णा लद्धा,
 किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया ? एव जहा सूरियाभस्स जाव)
 हे भदन्त । कालीदेवी ने जो इस समय दिव्य विमान—परिवार आदिरूप
 ऋद्धि दिखलाई, शरीर, आभरण आदि की दीप्तिरूप जो देवगुति एव
 शक्ति प्रभाव आदिरूप जो देवानुभाव दिखलाया—वह सब कहा चला

‘ भतेत्ति भगव गोयमे ’ इत्यादि—

टीकाथ—ठाणी देवीना जता रह्या भाह (भगव गोयमे) भगवान् गौतमे
 (भतेत्ति) हे भदन्त । आ प्रभावे सन्बोधन करीने (समर्ण भगव महावीर
 घदइ णमसइ) श्रमण भगवान् महावीरने वदन् अने नमस्कार कर्था (वदिता
 णमसिता एव ययासी) वदना अने नमस्कार करीने तेभए तेआश्रीने पूछु ३

(कालिण भते ! देवीए सा दिव्या देविडू ३ कहि गया० कूडागार-
 सालादिद्वतो, अहोण भते ! काली देवी महड्डिया ३, कालिण भते ! देवीए सा
 दिव्या देविडू ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिरामण्णा गया ? एव
 जहा सूरियाभस्स जाव)

हे भदन्त । ठाणी देवीके अत्यारे के दिव्यविमान, परिवार वगेरैनी
 ऋद्धि पतावी, शरीर, आभरण वगेरैनी दीप्तिनी के देवघुति तेभए शक्ति,
 प्रभाव वगेरैनी के देवानुभाव पताव्यो ते पछो क्या अदृश्य थर्छ गयो ?
 क्या प्रविष्ट थर्छ गयो ?

पतितपूतस्तनी-ज्वनतनितम्बस्तनी, ' णिविन्नवरा ' निर्विण्णवरा=वरपरणे
विरक्ता, अतएव ' वरपरिवर्जिता ' वरपरिवर्जिता=पतिरहिता चाप्यासीत् ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोऽर्द्धेन पुरुषादानीय=पुरुषश्रेष्ठ, आदिकरः
यथा बद्धमानस्योमी तथैव पार्श्वप्रभुरपि ' णवर ' नवरम्-अय विशेषः-श्रीवर्द्ध-
मानस्यामी समस्तोन्मत्तः, पार्श्वप्रभुः ' णवहृत्युस्सेहे ' नवहस्तोत्सेधः=नवहस्त-
परिमितशरीरावगाहन, स षोडशभिः श्रमणसाहस्रीभिः, अष्टत्रिंशता आर्थिका-

ज्जिया यावि होत्था) इस काल गाथापति की कालश्री नाम भार्या थी।
इसके हाथ पैर आदि समस्त अंग उपांग विशेष सुकुमार थे। देखने में
यह बड़ी सुन्दर थी काल गाथापति के इस काल श्री की कुक्षि से
उत्पन्न हुई एक काली नाम की दारिका भी थी। जो बहुत बयस्का हो
चुकी थी-इसका विवाह भी नहीं हुआ था। इसलिये कुमारी अवस्था
में ही यह बृद्धा जैसी बहू उमरवाली हो गई थी। शरीर भी बहुत अव-
स्था सपन्न होने के कारण इसका जीर्ण हो चुका था। अतः
अपरिणीतावस्था में ही यह जीर्ण कुमारी बन गई थी। इसके नितम्ब
और स्तन दोनों ही बिलकुल ढीले हो गये थे नीचे झुक आये थे।
वरके वरण करने रूप कार्य से यह विरक्त बन चुकी थी अतः यह वर-
परिवर्जित थी-पति से सर्वथा रहित थी। (तेण कालेण तेण समएणं
पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा बद्धमाणसामी णवर णवह-
ृत्युस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहि अट्ठत्तीसाए अज्जिया साहस्सीहि

णिविन्नवरा, वरपरिवर्जिया यावि होत्था)

ते काल गाथापतिनी कालश्री नामे लायां હતી તેના હાથ-પગ વગેરે
અને બધા અંગો તેમજ ઉપાંગો સર્વિશેષ સુકોમળ હતા દેખાવમાં તે બહુ જ
સુંદર હતી કાલ ગાથાપતિની આ કાલશ્રીના ગર્ભથી જન્મ પામેલી એક કાલી
નામે દારિકા (પુત્રી) પણ હતી તે મોટી ઉમરની થઈ ચૂકી હતી તેનું
લગ્ન પણ થયું નહોતું એથી કુમારિકાની અવસ્થામાં જ તે ડોળી જેવી બહુ
ઉમરે પહોંચેલી થઈ ગઈ હતી બહુ ઉમરે પહોંચેલી હોવા બદલ તેનું શરીર
પણ છુર્ણ થઈ ચૂક્યું હતું એથી કુમારિકાની અવસ્થામાં જ તે છુર્ણ કુમારિકા
બની ગઈ હતી તેના નિતમ્બ અને સ્તનો બંને આવ ઢીલા થઈ ગયા હતા,
નીચે લટકવા લાગ્યા હતા વરને વરણ કરવા રૂપ કાર્યથી તે વિરક્ત બની
ગઈ હતી એથી તે વર પરિવર્જિત હતી તે એકદમ પતિ વગરની હતી

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ પાસે અરહા પુરિસાદાણીએ આગરે જહા વદ્ધ
માણસામી ણવર ણવહટ્યુસ્સેહે સોલસહિ સમણસાહસ્સીહિ અટ્ઠત્તીસાએ અજ્જિયા

पासीत् । तत्र खलु आमलक-रायां कायो नाम गाथापतिगर्मात् कीदृशः ? इत्याह-
 'अद्वे' आदयः=धनधान्यादि समृद्धि-मष्टः, 'जात्र' यात्र 'अपरिभूष'
 अपरिभूतः=बहुजनैरपि परामर्शितुमशक्य । तस्य खलु कालस्य गाथापतेः काष्ठ
 श्रीर्नाम भार्याऽऽसीत्, कीदृशीत्याह-सुकुमारपाणिपादा गात्रम् सुरूपा । तस्य
 खलु कालस्य गाथापतेर्दृष्टिता कालश्रियं भार्याया आत्मजा काञ्ची नाम
 दारिका=पुत्री आसीत् । सा कीदृशी ? त्याह-'बुद्धा' बुद्धा=बहुयस्करत्वात्,
 बुद्धकुमारी=अपरिणीतत्वात्, 'जुण्णा' जीर्णा=जीर्णशरीरत्वात्, 'जुण्णकुमारी'
 जीर्णकुमारी=अपरिणीतावस्थायामेव समातजीर्णशरीरत्वात्, 'पडियपूयत्यणी'

राया तत्थ णं आमलकप्पाण नयरीण काळे नाम गाहावई होत्था, अद्वे
 जाव अपरिभूष) वे कहते हैं-गौतम सुनो-तुम्हारे प्रदेशों का उत्तर इस
 प्रकार है-उस काल और उस समय में इसी जवूद्वीप नामके द्वीप में
 भारतवर्षमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी । नगरीका वर्णन करनेवाला
 पाठ यहां पर औपपातिक सूत्र से योजित कर लेना चाहिये । उस नगरी
 में उद्यान था जिसका नाम आम्रशालावन था । इस नगरी के राजा का
 नाम जितशत्रु था । इस आमलकल्पा नगरी में काल नाम का गाथापति
 रहता था । यह धन धान्यादिसे विशेष समृद्ध था और लोगोंमें भी इस
 की अच्छी प्रतिष्ठा थी । (तस्स ण कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णाम
 भारिया होत्था, सुकुमाल जात्र सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स
 धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णाम दारिया होत्था बुद्धा
 बुद्धकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडियपूयत्यणी णिविन्नवरा वरपरिव)

तस्यण आमलकप्पाए नयरीए काळे, नाम गाहावई होत्था अद्वे जाव अपरिभूष)

तेज्जा कळे छे के छे गौतम । साल्लो, तमार प्रश्नोना उत्तर आ
 प्रभावे छे-के ते काजे अने ते भभये आ जवूद्वीप नामना द्वीपमा भारत
 वर्षमा आमलकल्पा नामनी नगरी હતી નગરીના વર્ણન વિધેના પાઠ અહીં
 औपपातिक सूत्र वडे लक्ष्मी देवेने लेखने ते नगरीमा एक उद्यान હતું
 તેનું નામ આમ્રશાલ વન હતું, તે નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું
 તે આમલકલ્પા નગરીમા કાલા નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો તે ધનધાન્ય
 વગેરેથી સર્વિશે સમૃદ્ધ હતો અને સમાજમા તે ॥ સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી

(તસ્સ ણ કાલસ્સ ગાહાવઇસ્સ કાલસિરીણામ 'ભારિયા' હોત્યા, સુકુમાલ
 જાત્ર સુરુ વા, તસ્સ ણ કાલસ્સ ગાહાવઇસ્સ ધૂયા કાલસિરીણ ભારિયાણ અત્તયા
 કાલી ણામ દારિયા હોત્યા બુદ્ધા બુદ્ધકુમારી, જુણ્ણા જુણ્ણકુમારી, પઢિ

ईतः पुरुषादानीयस्य पादवन्दिता=पादवन्दनाशया गन्तुम् । अम्मापितरौ कथं यतः—हे देवानुग्रहे ! पुत्रि यथा सुख तथा कुरु किन्तु अस्मिन् शुभकार्ये प्रतिबन्ध=पमाद मा कुरु । ततः खलु सा कालिका दारिका अम्मापितृभ्यामभ्यनुज्ञाता सती हृष्टयापद्दहया स्नाता कृतमलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता शुद्ध-

अवभणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादानीयस्स पायवदिया गमित्तए ?) लोगो को ज्योही पार्श्व प्रभु के आम्रशालवन में आने की खबर लगी—त्योहों सब जनता प्रभु को वदना के लिये अपने २ स्थान से निकलकर उस आम्रशालवन में आने लगी। वहा आकर प्रभु का धार्मिक उपदेश सुन वह प्रभु की पर्युपासना करने लगी। इसके अनन्तर जब यह समाचार काली दारिका को मिला तो वह बहुत अधिक हर्षित एवं सतुष्ट चित्त हुई। बाद में वह जहा अपने माता पिता ये वहा पहुँची वहा जाकर उसने माता पिता को दोनों हाथ जोडकर चरण वदना की—और इस प्रकार कहा—हे माततात ! पुरुषश्रेष्ठ, आदिकर, ऐसे पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु आम्रशालवन में पधारे हुए हैं—इसलिये मैं आपसे आज्ञापित होकर उन पुण्यश्रेष्ठ अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ को वदना करने के लिये जाना चाहती हूँ। (अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिअव करेहि, तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अवभणुन्नाया समाणी इद्वुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयमलिकम्मा कयकोउयमगलपायच्चित्ता

पुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादानीयस्स पायवदिया गमित्तए ?)

पार्श्व प्रभुना आम्रशालवनमा पधारवानी जलु यता न पधा दोडे। प्रभुने वदन करवा भाटे पोतपोताना स्थानेथी नीकणीने ते आम्रशाल वनमा आववा लाग्ना त्या आवीने प्रभुने धार्मिक उपदेश सामग्रीने तेओ प्रभुनी पर्युपासना करवा लाग्ना त्यारण्णाह काली दारिकाने आ समाचारो भण्णा त्याहे ते भूअ न छर्षित तेभज सतुष्ट चित्तवाणी थर्ध गर्ध त्यारपणी ते न्ना तेना माता—पिता छता त्या पडोथी त्या जठने तेणे माता—पिताने जने छाय जेडीने यरषु वदना करी अने त्यारपणी आ प्रभाणे चित्ती करी डे डे माता पिता ! पुरुष श्रेष्ठ, आदिकर ओवा पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु आम्रशाल वनमा पधार्या छे ओटला भाटे हु तमारी आज्ञा भेगवीने ते पुरुष श्रेष्ठ अड त प्रभु पार्श्वनाथने वदन करवा भाटे न्वा छ्छु छु

(अहा सुह, देवाणुप्पिया ! मा पडिअव करेहि, तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अवभणुन्नाया समाणी इद्वुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयमलिकम्मा कय

સાહસીમિ સાર્દ સપરિવૃતઃ યાવત્ આમ્રશાલયને સમાવ્રતઃ । પરિવન્નિર્ગતા
 યાવત્ પર્યુવાસ્તે । તતઃ સ્વલુ સા કાલી દારિકા અસ્યાઃ ભગવત્પાર્શ્વમ્બુસમાગમન
 રૂપાયાઃ કથાયાઃ=ચાર્નાયાઃ 'લલ્લદ્વા' સ્વચાર્યા ભગવાનસમવ્રતઃ, ક્ત્યેવ
 સ્પાર્થમાસા 'હઠ જાર દિયયા' હૃદયાવદ્દહદયા-હૃદયુષ્ટચિત્તાનન્દિતા પ્રોતમનસ્કા
 હર્ષયશ્નિસર્પદ્હદયા સતી યજ્ઞેર અમ્માપિયરો તથૈવોપાગન્ઠતિ, ઉપાગત્ય 'કરચલ
 જાર' કરતલપરિવૃત્તીત શિર આરત્ત દગ્નતલ મસ્તકેડ્ઝાત્રિ કૃત્વા ણવમત્રાદીત્-
 એવ સ્વલુ હૈ અમ્મ સાર્તી । પાર્શ્વોર્ઝ્દન્ પુરુષાદાનીયઃ આદિકરો યાવત્-આમ્રશાલ
 ધને ચૈત્યે યથા-મતિરુપમગ્રહમગ્નુષાયમેન તપમાડ્ઝમાન માવયન્ વિહરતિ=
 આસ્તે, તદ્ગન્ઠામિ ત્વલુ હૈ અમ્મ સાર્તી । યુગ્માભિરભ્યનુજ્ઞાતા સતી પાર્શ્વસ્યા

સર્દિ સપરિવૃદે જાવ અચલસાલવણે સમોસદે) ઉસ કાલ મેં ઓર ઉસ
 સમય મેં પુરુષાદાનીય પુરુષશ્રેષ્ઠ-આદિકર પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુ જો શ્રી
 વર્દ્ધમાન સ્વામી જૈસે થે-સોલહ હજાર શ્રમણોં કે તથા ૩૮, હજાર
 આર્યિકાઓં કે સાથ તીર્થકર પરપરાનુસાર વિહાર કરતે હુણ ઉસ
 આમ્રશાલવન મેં આયે । ભગવાન મહાવીર ઓર પાર્શ્વનાથ પ્રભુ કી શરી
 રાવગાહના મેં વિશેષતા કેવલ હતની હી થી કિ ઉનકા શરીર સાત હાથ
 જંબા થા ઓર પાર્શ્વ પ્રભુ કા શરીર ૯ હાથ જંબા થા । (પરિસા ણિગયા,
 જાવ પજ્જુવાસહ, તણ્ણં સા દારિયા હમીસે કહાણ લલ્લદ્વા સમાળી હઠ
 જાવ દિયયા જેણેર અમ્માપિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છહ, ઉવાગચ્છિત્તા
 કરચલ જાવ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ અમ્મયાઓ પાસે અરહા પુરિસા
 દાળીણ આહગરે જાવ વિહરહ, ત ઇચ્છામિ ણ અમ્મયાઓ ! તુમેર્હિ

સાહસીર્હિ સર્દિ સપરિવૃદે જાવ અચસાલવણે સમોસદે)

તે કાળે અને તે સમયે પુરુષાદાનીય-પુરુષ શ્રેષ્ઠ-આદિકર પાર્શ્વનાથ-
 અર્હત પ્રભુ-જેઓ શ્રી વર્દ્ધમાન સ્વામી જેવા હતા-સોળ હજાર શ્રમણો
 તેમજ ૩૮ હજાર આર્યિકાઓની સાથે તીર્થકર પરપરા નુસરે વિહાર કરતા
 તે આમ્રશાલ વનમા આવ્યા ભગવાન મહાવીર અને પાર્શ્વનાથ પ્રભુની શરી
 રાવગાહનામા વિશેષતા ફક્ત આટલી જ છે કે તેમનું શરીર સાત હાથ જેટલું
 ઊંચું હતું અને પાર્શ્વ પ્રભુનું શરીર નવ હાથ ઊંચું હતું

(પરિસા ણિગયા, જાવ પજ્જુવાસહ, તણ સા કાલી દારિયા હમીસે
 કહાણ લલ્લદ્વા સમાળી હઠ જાવ દિયયા જેણેર અમ્માપિયરો તેણેવ ઉવાગચ્છહ,
 ઉવાગચ્છિત્તા કરચલ જાવ એવ વયાસી-એવ સ્વલુ અમ્મયાઓ ! પાસે અરહા
 પુરિસાદાળીણ આહગરે જાવ વિહરહ, ત ઇચ્છામિ ણ અમ્મયાઓ !

‘जहा दोवई जाय’ यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीम् छायादीन् तीर्थङ्करातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरोदवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वक भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्त ‘पञ्जुपासड’ पर्युपास्ते । तत खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषा-
दानीयः काल्यै दारिकायै तस्या च महातिमहालयाया पर्पदि धर्मं कथयति ततः
खलु सा काली दारिका पार्श्वस्थार्हत पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चय्य
हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त पुरुषादानीय त्रिकृतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

वह उस पर आरूढ हो गई। आरूढ होकर वह वहाँ से चली। ज्योही
उसने द्रौपदी की तरह तीर्थकरातिशयरूप छायादि विभूति को देखा तो
वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी। और पञ्च अभिगमन
पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको बटना की, उन्हें नमस्कार
किया-बटना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की। (तएण
पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए
परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने उस काली
दारिकाको उस विशाल परिपदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई। (तएण सा
काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा
णिसम्म इट्ठ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिकपुत्तो वदइ
नमसइ) पुरुषादानीय उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर
और हृदय में अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

त्याधी खाना थई द्रौपदीनी जेम तेहे न्यारे तीर्थ उरातिशय ३५ छत्र पगेरे
विभूतिने जेठ डे जेतानी साथे ज ते धार्मिक यान-प्रवरभाथी नीचे उतरी
पडी अने पञ्च अभिगमनपूर्वक भगवाननी पासे जधने तेभने बटना करी, तेभने
नमस्कार कर्या बटना अने नमस्कार करीने तेहे तेभनी पयुपासना करी तयारपडी

(तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहा
लयाए परिसाए धम्मो कहिओ)

पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथे ते काली दारिकाने ते विशाल परि
पदानी साथे धर्मकथा सलगायी

(तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म
सोच्चा णिसम्म इट्ठ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिकपुत्तो वदइ नमसइ)

पुरुषादानीय ते अर्हत पार्श्वनाथ प्रभुनी पासेथी धर्मने सालगिनी
अने तेने हृदयमा अवधारित करीने ते काली दारिका बहु ज वधादे हर्षित

प्रदेशयानि माह्वयानि यज्ञाणि मरपरिहिता अल्पमहायांभरणात् इत्यस्तीरा चेदिक
चक्रवालपरिणीर्णां स्वकारं गृहाद् मतिनिष्कामति, मतिनिष्काम्य यज्ञैव वा
उपस्थानशाला यज्ञैव धार्मिको यानपरस्त्रैयोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं यान
प्रवर दृष्ट्वाभारदा । ततः खलु सा काली दारिका धार्मिकं यानप्रवरम्, एवं

सुदृप्पवेसाह मगलाह यथाह पवरपरिहिया अप्पमहग्गाभरणालकिय
सरीरा चेदिया चक्रवालपरिणिणा साओ गिहाओ पडिनिक्खमह,
पडिनिक्खमिच्छा जेणेव याहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिण जाण
प्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता धम्मिय जाणप्पवर दुरुद्धा,
तएण सा काली दारिया धम्मिय जाण पवर जहा दोवई जाव पज्जुवासइ)
तय माता पिता ने उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये । तुझे जिस प्रकार
सुरा मिले उस प्रकार तू कर-इस शुभकार्य में प्रतिबन्ध-प्रमाद मत
कर । इस प्रकार माता पितासे अभ्यनुज्ञात हुई उस दारिका ने इष्ट तुष्ट
चित्त होकर स्नान किया चायसादि के लिये अन्नका भागरूप-बलिकर्म
किया कौतुक, मगल एवं प्रायश्चित्त करके शुद्ध प्रवेश योग्य, मगलकारी
घन्नों को अच्छी तरह पहिरा, और अल्पभार बहुमूल्य आभरणों से
अलंकृत शरीर होकर वह चेदिका चक्रवाल से युक्त हो अपने घर से
निकली । निकलकर वह वहाँ गई-जहाँ बाह्य उपस्थान शाला थी-उसमें
जाकर वह जहाँ धार्मिक यानप्रवर रक्खा था-वहाँ पहुँची-वहाँ जाकर

कोउपमगलपापच्छित्ता सुदृप्पवेसाह मगल्लाह यथाह पवरपरिहिया अप्पमहग्गा
भरणालकियसरीरा चेदियाचक्रवालपरिणिणा साओ गिहाओ पडिनिक्खमह,
पडिनिक्खमिच्छा जेणेव याहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिण जाणप्पवरे
तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता, धम्मिय जाणप्पवर दुरुद्धा तएण सा काली
दारिया धम्मिय जाणप्पवर एव जहा दोवई जाव पज्जुवासइ)

त्याह मातापिताओ तेने आ प्रभाओ कहु के हे देवानुप्रिये । तने जेम
धुअ भणे तेम तू कर आ शुभ कार्यमा प्रतिबन्ध-प्रमाद नर नहि आ
प्रभाओ मातापिता पडे आज्ञापित थयेली ते दारिकाओ हृष्ट-सुष्ट चित्त थधने
स्नान कथुं कागडा वगेरेने अन्नलाग आपीने बलिकर्म कथुं कौतुक, मगल
अने प्रायश्चित्त कराने शुद्ध प्रवेश योग्य, मगलकारी पओने सारी राते पडेर्या
अने वजनमा डेक्का पणु किमतमा जहु लारे ओवा आलसओधी शरीरने
अलंकृत करीने दासीओना समूहथी परिवेष्टित थधने पोताना चरथी नीकणी
नीकणीने ते त्या पडोथी तथा बाह्य उपस्थान शाला डली तेमा जधने ते
त्या धार्मिक यानप्रवर ओणुं डतु तेमा आइके थर्थ जर्थ आइके

‘जहा दोवई जान’ यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीन्तु छात्रादीन् तीर्थङ्करातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरोदवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वक भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्त ‘पञ्जुपासड’ पर्युपास्ते । तत खलु पाश्वोऽर्हन् पुरुषा- दानीयः काल्यै दारिकायै तस्या च महातिमहालयाया पर्पदि धर्मं कथयति ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वस्थार्हत पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निश्चय्य दृष्ट्वा यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त पुरुषादानीय त्रिकृतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

बह उस पर आरूढ हो गई। आरूढ होकर वह वहाँ से चली। ज्योती उसने द्रौपदी की तरह तीर्थकरातिशयरूप छात्रादि विभूति को देखा तो वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी। और पञ्च अभिगमन पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको वदना की, उन्हें नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की। (तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महद्दमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने उस काली दारिकाको उस विशाल परिपदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई। (तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म दृढ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिरखुत्तो वदह नमसइ) पुरुषादानीय उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर और हृदय में अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

त्याधी खाना थर्ध द्रौपदीनी जेम तेछे ब्यादे तीर्थ उरातिशय रूप छत्र वगेरे विभूतिने जेध के जेतानी साथे ज ते धार्मिक यान-प्रवरभाथी नीचे उतरी पडी अने पच्च अभिगमनपूर्वक भगवाननी पासे जधने तेभने वदना उरी, तेभने नमस्कार कर्था वदना अने नमस्कार करीने तेछे तेभनी पर्युपासना करी त्थारपधी

(तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महद्दमहा लयाए परिसाए धम्मो कहिओ)

पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथे ते काली दारिकाने ते विशाल परि पदानी साथे धर्मकथा सलगापी

(तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म दृढ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिरखुत्तो वदह नमसइ)

पुरुषादानीय ते अर्हत पार्श्वनाथ प्रभुनी पासेथी धर्मने सालणीने अने तेने हृदयमा अवधारित करीने ते काली दारिका बहु ज वधादे हर्षित

નમસિત્તા એવમસાદીન્-શ્રદધામિ ગતુ હે મદન્ત ! નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનં યાવત્ તદ્
તથૈતદ્ ગુપ્ત વદથ નર-નિગેરોડયમ્-યન્-અમ્ અમ્માપિતરો આપુન્ઝામિ, તત્ =
માતાપિતરો પદ્મા સત્ત્વ અહ દેવાનુમિયાણામન્તિકે યાવત્ પ્રવજામિ । મગવાનાહ-
યથાસુખ હે દેવાનુમિયે । તતઃ ગતુ મા કાલી દારિયા પાર્શ્વેન અર્દતા પુરુષા

દિવ્ય દુર્હ । ઉત્તને ઉન પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્દત પ્રભુ કો ત્રીન વાર
વદના નમસ્કાર કિયા । યાદ મેં (વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી સદ્
દામિ ણ મતે ! ણિગ્ગથ પાવયણ જાવ સે જહેય તુમ્હે વયહ, જ ણવર
દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુન્ઝામિ, તણ્ણ અહ દેવાણુપ્પિયાણ અતિય
જાવ પવ્વયામિ, અહાસુહ દેવાણુપ્પિય ! તણ્ણ સા કાલી દારિયા પાસેજ
અરહયા પુરિસાદાણીણં એવ વુત્તા સમાણી હદ્ધ જાવ હિયયા પાસ
અરહ વદહ, નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા તમેવ ધમ્મિય જાણવર વુહ
હહ, દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિસાદાણીયસ્સ અતિયાઓ અવસા
લવણાઓ વેદયાઓ પહિનિસ્સવમ્મહ, પહિનિસ્સવમિત્તા જેણેર આમલરુપ્પા
નયરી, તેણેવ ઉવાગચ્છહ) વંદના નમસ્કાર કરકે ઉત્તને ઉન પ્રભુ સે
એસા કહા-હે મદન ! મેં આપકે દ્વારા પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન કો
વિશેષ શ્રદ્ધા કો દષ્ટિ સે દેખવી હું આપને જેસા યહ પ્રતિપાદિત કિયા
હૈ વહ વસ્તુતઃ વૈસા હી હૈ । યહ મુદ્ધે વદ્ધત રુચા હૈ । અતઃ મેં માતા
પિતા સે વૃત્તી હું । ઉત્તને પૂઝકર ફિર આપ દેવાનુમિય કે પાસ આકર

હૃદય થઇ તેણે તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્દત પ્રભુને ત્રણ વાર વદના
અને નમસ્કાર કર્યા ત્યારમાઠ

(વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી સદ્દામિણ મતે ! ણિગ્ગથ પાવયણ જાવ
સે જહેય તુમ્હે વયહ, જ ણવર દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુન્ઝામિ, તણ્ણ
અહ દેવાણુપ્પિયાણ અતિય જાવ પવ્વયામિ, અહા સુહ દેવાણુપ્પિય ! તણ્ણ સા
કાલી દારિયા પાસે જ અરહયા પુરિસાદાણીણ એવ વુત્તા સમાણી હદ્ધ જાવ હિયયા
પાસ અરહ વદહ, નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા તમેવ ધમ્મિય જાણવર વુહહ
દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિસાદાણીયસ્સ અતિયાઓ અવસાલવણાઓ વેદયાઓ
પહિનિસ્સવમ્મહ, પહિનિસ્સવમિત્તા જેણેર આમલરુપ્પા નયરી તેણેર ઉવાગચ્છહ)

વદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે મદન્ત !
તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દષ્ટિએ જોઉં
છું તમે જેણે આ પ્રતિપાદિત કર્યું છે ખરેખર તે તેણે જ છે અને આ
શ્રુણ જ ગમી ગયું છે એથી હું માતાપિતાને પૂછી લઉં છું તેમને પૂછીને

दानीयेन एवमुक्ता सती हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा तदेव धार्मिक यानप्रवर दूरोहति, दूरस्थ पार्श्वस्थार्हत पुरुषादानीय स्यान्तिहाद् आम्रशालानात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रमति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव आमल-
कल्पा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आमलकल्पाया नगर्या मध्य-मध्येन यत्रैव वाह्या उपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिक यानप्रवर स्थोप-
यति, स्थापयित्वा धार्मिकानां यानप्रवरात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य यत्रैव अम्मा पितरो तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य ' करतल० ' करतलपरिगृहीत मस्तकेऽञ्जलिं

दीक्षित होना चाहती हूँ। काली दारिका के इस अभिप्राय को सुनकर प्रभुने उससे कहा देवानुप्रिये! यथासुखम्। इस प्रकार वह काली दारिका पुरुषादानीय उन अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ से अनुमोदित होकर चित्त में बहुत अधिक प्रसन्न हुई। उसने अर्हन्त पार्श्वनाथ प्रभु को वंदना नमस्कार किया-और वंदना नमस्कार करके वहां से आकर वह उसी अपने धार्मिक यान पर चढ़ गई चढ़कर वह फिर पुरुषादानीय, अर्हन्त प्रभु पार्श्वनाथ के पास से और उस आम्रशालवन नामके उद्यान से बाहर चली आई। बाहर आकर वह जहां आमलकल्पा नगरी थी-वहां पर आ गई। (उवागच्छित्ता आमलकल्पां णयरिं मज्झं मज्झेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवर ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणपवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छंइ, उवागच्छित्ता कर-

आप देवानुप्रियनी पाने आवीने दीक्षित थवा आहुं छु काली दारिकाना आ अलिप्रायने सालणीने प्रभुअ तेने कहुं के डे देवानुप्रिये। ' यथासुखम् ' आ प्रभाणु ते काली दारिका पुरुषादानीय ते अर्हन्त प्रभु पार्श्वनाथ वडे अनुमो-
दित थधने चित्तमा भूज्ज प्रसन्न थध तेणु अर्हन्त पार्श्वनाथ प्रभुने वंदना नमस्कार दिया अने वंदना नमस्कार करीने त्याथी आवीने ते तेज पोताना धार्मिक यातमा जेभी गध अने जेभीने ते पुरुषादानीय अर्हन्त प्रभु पार्श्व-
नाथनी पासैथी अने ते आम्रशाल वन नामना उद्यानथी भडार आवी गध भडार आवीने ते त्या आमलकल्पा नगरी हुती त्या आवी गध

(उवागच्छित्ता आमलकल्पां णयरिं मज्झं मज्जेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण-
साला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवर ठवेइ, ठवित्ता धम्मि-
याओ जाणपवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवाग-
च्छइ, उवागच्छित्ता करतल० एव वयासी-एवं खलु अम्मायाओ ! मए पासस्स

નમસ્વિત્યા એમવાદીત્-શ્રદ્ધામિ ચલુ હે મદન્ત । નિર્ગ્ન્ય પ્રવચનં યાવત્ તદ્
તથેતદ્ યુય રદ્ય નર-ચિજેરોડ્યમ્-યન્-શ્રદ્ધમ્ અમ્માપિતરૌ આપુન્ઝામિ, તત્-
માતાપિતરૌ પૃષ્ઠા સ્વરૂ અહ દેવાનુમિયાણામન્તિકે યાવત્ પ્રવ્રજામિ । મગવાનાહ-
યથાસુલ હે દેવાનુમિયે । । તતઃ સન્તુ મા કાલી દારિયા પાર્શ્વેન અર્હતા પુરુષા

હૃદય હૃદ્ । ડસને ડન પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુ કો તીન વાર
વદના નમસ્કાર કિયા । યાદ મેં (વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી સહ
હામિ ણ મતે ! ણિગ્ગથં પાવયણ જાવ સે જહેય તુમ્હે વયહ, જ ણવર
દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુન્ઝામિ, તણ્ણ અહ દેવાણુપ્પિયાણ અતિણ
જાવ પવ્વયામિ, અહાસુહ દેવાણુપ્પિય ! તણ્ણ સા કાલી દારિયા પાસેજ
અરહયા પુરિસાદાણોણં એવ વુત્તા સમાણી હઠ્ઠ જાવ હિયયા પાસ
અરહ વદહ, નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા તમેવ ધમ્મિય જાણવવર દુરુ
હઠ, દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિસાદાણીયસ્સ અતિયાઓ અંબસા-
લવણાઓ ચેહયાઓ પહિનિસ્સવમહ, પહિનિસ્સવમિત્તા જેણેવ આમલકપ્પા
નયરી, તેણેવ ડવાગઢ્ઠહ) વંદના નમસ્કાર કરકે ડસને ડન પ્રભુ સે
એસા કહા-હે મદન્ત ! મેં આપકે દ્વારા પ્રતિપાદિત નિર્ગ્ન્ય પ્રવચન કો
ચિજેષ શ્રદ્ધા કો દૃષ્ટિ સે દેવતી હું આપને જૈસા યહ પ્રતિપાદિત કિયા
હૈ વહ વસ્તુતઃ વૈસા હી હૈ । યહ મુદ્ધે વહુત રુચા હૈ । અતઃ મેં માતા
પિતા સે પૂઝતી હું । ડનસે પૂઝકર ફિર આપ દેવાનુમિય કે પાસ આકર

હૃદય વધ તેણે તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુને ત્રણ વાર વદના
અને નમસ્કાર કર્યા ત્યારમાહ

(વદિત્તા નમસિત્તા એવ વયાસી સહહામિણ મતે ! ણિગ્ગથ પાવયણ જાવ
સે જહેય તુમ્હે વયહ, જ ણવર દેવાણુપ્પિયા ! અમ્માપિયરો આપુન્ઝામિ, તણ્ણ
અહ દેવાણુપ્પિયાણ અતિણ જાવ પવ્વયામિ, અહા સુહ દેવાણુપ્પિય ! તણ્ણ સા
કાલી દારિયા પાસે જ અરહયા પુરિસાદાણીયણ એવ વુત્તા સમાણી હઠ્ઠ જાવ હિયયા
પાસ અરહ વદહ, નમસહ, વદિત્તા નમસિત્તા તમેવ ધમ્મિય જાણવવર દુરુહઠ
દુરુહિત્તા પાસસ્સ અરહઓ પુરિસાદાણીયસ્સ અતિયાઓ અંબસાલવણાઓ ચેહયાઓ
પહિનિસ્સવમહ, પહિનિસ્સવમિત્તા જેણેવ આમલકપ્પા નયરી તેણેવ ડવાગઢ્ઠહ)

વદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે મદન્ત !
તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગ્ન્ય પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોઉં
છું તમે જેવું આ પ્રતિપાદિત કર્યું છે ખરેખર તે તેવું જ છે અને આ
ખૂબ જ ગમી ગયું છે એથી હું માતાપિતાને પૂજી લઉં છું તેમને પૂજીને

भ्यनुज्ञाता सती पार्श्वन्याहृतोऽतिके मुण्डाभूत्वा आगाराद् अनगारिता मव्रजितुम् = स्वीकर्तुम् । मातापितरौ कथयतः—यथाभूतं हे देवानुमिये !—यथा रोचते तथा-
कुरु किन्तु अस्मिन् कार्ये प्रतिवन्धः—प्रमाद मा कुरु । ततः=स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चया-
नं तरं खलु स कालो गायपतिर्विपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम्
उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजस्वजनमभ्यन्त्रिपरिजनम् आमन्त्रयति,
आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यान् विपुलेन पुष्पपुस्तगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कृत्य
सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिनिजस्वजनमभ्यन्त्रिपरिजनस्य पुरतः=भग्रे कालिका
दारिका भेतपीतैः=रजतमुष्णमयै कलशैः स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभू-
षिता करोति, कृत्वा पुनश्च महस्यगङ्गानिका शिरिका दूरोद्दयति=आरोहयति, दूरोद्द-
मित्रज्ञातिनिजस्वजनमभ्यन्त्रिपरिजनेन सार्द्धं सपरिवृतः सर्वैर्द्वर्था यान्—वाद्य-

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ—अतः मैं
चाहती हूँ कि मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हंत पार्वनाथ प्रभु के
समीप मुडित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लू ।
इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे
कहा—(अहामुह देवानुमिये । मा पडिवध करेह, तएण से काले गाहा
वई विपुल असण ४ उवखडावेइ, उवखडाविस्सा मित्तणाइ णियग
सयणसवधिपरिणण आमतेइ आमत्तिता तओ पच्छा ण्हाए जाव
विउल्लेण पुष्पवत्थगधमल्लालकारेण सस्कारेत्ता मम्मणेत्ता तस्सेव
मित्तणाइणियगसयणसवधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेया
पीएहि कलसेहि ण्हावेइ ण्हाविस्सा सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता
पुरिससहस्सगहिणीय सीय दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

अवबुद्धी हु आ ससारना लयथी उद्विग्न थधने जन्म-मरणथी लयलीत थधं
गर्भं हु अथी भारी धन्डा छे के हु तभारी आसा भेगवीने ते अहं त
पार्श्वनाथ प्रभुनी पासो मुडित थउने अगारावस्था त्यउने अनगारावस्था
स्वीकारी लउ आ प्रभावे पोतानी काली दारिकानी बात सालगीने
मातापिताअे तेने कछु —

(अहामुह देवानुमिये । मा पडिवध करेह, तएण से काले गाहावई
विपुल असण ४ उवखडावेइ, उवखडाविस्सा मित्तणाइणियगसयणसवधिपरि-
णण आमतेइ आमत्तिता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेण पुष्पवत्थगधमल्लालकारेण
सस्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसवधिपरिजणस्स पुरओ कालिय
दारिय सेयापीएहि कलसेहि ण्हावेइ ण्हाविस्सा सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता

કૃત્વા પરમવાદીત્-પર ચલુ દે અમ્મનાઓ ! મયા પાર્શ્વમ્યાર્હવોડનિકે ધર્મઃ
 ' નિસંતે ' નિશાન્તઃ=શ્રુત', સોડપિ ન ધર્મ ' મે ' મમ ' ઈચ્છિત્ ' ઇષ્ટઃ=
 ઇચ્છાધિપતીભૂત, ' પદિચ્છિત્ ' પ્રતીત્. =પુન પુનરમિલિત ' અમિદ્ધા '
 અમિરુચિતઃ=આસ્વાદ્યવસ્તુત્સર્વવામિયઃ, તત્ત્વ. =ઉમ્માત્ કારણાત્ ચત્ત્વ અહ દે
 અમ્મતાઓ ! સસારમયોદ્વિગ્ના મીયા જન્મમરણેભ્યોડન ઇચ્છામિ ચલુ યુષ્મામ્યામ

ચલ૦ એવં ઘયાસી-અર ચલુ અમ્મયાઓ ! મમ પાસસ્મ અરહઓ અતિષ
 ધમ્મે નિસતે સે તિ ય મે ધમ્મે ઇચ્છિત્ પદિચ્છિત્ અમિદ્ધા-તણ
 અહ અમ્મયાઓ ! સસારમયોદ્વિગ્ના મીયા જન્મમરણાણ-ઇચ્છામિ
 ણં તુભેરિં અબ્બણુન્નાયા સમાણી પાસસ્મ અરહઓ અતિષ મુંઢા મવિસા
 અગારાઓ અગગારિય પન્વહસણ) વહાં આકર કે વહ આમલકલ્પ
 નગરી કે ધીચોં ધીચ સે હોરુર જર્જા વહ પાત્તા ઉપરુગન શાલા ધી-વહાં
 આઈ-વહા આકર વહ ઉમ ધાર્મિક યાનપ્રવર સે નીચે ઉતરી-નીચે
 ઉતર કર ફિર ઘાદ મેં વહ જહા અપને માતા પિતા ઘે-વહા ગઈ-વહા
 જાકર ઉસને અપને દોનોં હાથોં કી અજલિ ઘનાકર ઓર ઉસે મસ્તક
 પર રલ્લકર ઉનસે હસ પ્રકાર વહા-હે માત તાત ! સુનો મૈને અહંત પ્રમુ
 પાર્શ્વનાથ કે મુખ સે ધર્મ સુના હૈ-વહ ધર્મ મુક્ષે ચદ્રુત અચ્છા લગા હૈ,
 વાર વાર ઉસ ધર્મ કો સુનને કી અમિલાપા હો રહી હૈ । જિસ પ્રકાર
 આસ્વાદ્ય વસ્તુ પ્રિય લગતી હૈ ઉસી પ્રકાર વહ ધર્મ મેરે લિયે સબ
 પ્રકાર સે પ્રિય લગા હૈ । ઉસકે સુનને સે મૈ હે માત તાત ! હમ સસાર

અરહઓ અતિષ ધમ્મે નિસતે સે તિ ય મે ધમ્મે ઇચ્છિત્ પદિચ્છિત્ અમિદ્ધા-તણ
 અહ અમ્મયાઓ ! સસારમયોદ્વિગ્ના મીયા જન્મમરણાણી-ઇચ્છામિ ણં તુભેરિં
 અબ્બણુન્નાયા સમાણી પાસસ્મ અરહઓ અતિષ મુંઢા મવિસા અગારાઓ અગગા-
 રિય પન્વહસણ)

ત્યા આવીને તે આમલકલ્પા નગરીની વચ્ચે થઇને જ્યાં તે બાહ્ય ઉપ-
 સ્થાન શાળા હતી ત્યા આવી ત્યા આવીને તે તે ધાર્મિક યાન પ્રવરનાથી
 નીચે ઉતરી, નીચે ઉતરીને તે જ્યાં તેના માતાપિતા હતાં ત્યા ગઈ ત્યા જઇને
 પોતાના બંને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને તેમને આ
 પ્રમાણે કહ્યું કે હે માતાપિતા ! સામણો, અહંત પ્રમુ પાર્શ્વનાથના મુખથી
 મે ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, તે મને બહુ જ ગમી ગયું છે તે ધર્મને વાર વાર
 સામણવાની ધ્વજા થઈ રહી છે જેમ આસ્વાદ્ય વસ્તુ પ્રિય લાગે છે તેમજ
 તે ધર્મ મારા માટે પદ્ધતિ પ્રિય થઈ પડ્યો છે હે માતાપિતા ! તેના

भ्यनुज्ञाता सती पार्श्वम्याहृतोऽतिके मुण्डाभूत्या आगाराद् अनगारिता मव्रजितुम् =
स्वीकर्तुम् । मातापितरौ कथयन्त-यथाशुख हे देवानुभिषे ! = यथा रोचते तथा-
कुरु किन्तु अस्मिन् कार्ये प्रतिग्रन् = प्रमाद मा कुरु । ततः = स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चया
नन्तर खलु स कालो गायपतिर्बिपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम्
उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजसस्वजनमम्वन्निपरिजनम् आमन्त्रयति,
आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यावत् विपुलेन पुष्पवत्सगन्धमालालङ्कारेण सत्कृत्य
सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिनिजसस्वजनसम्वन्निपरिजनस्य पुरतः = भग्रे कालिका
दारिका श्वेतपीतैः = रजतमूर्णमयै कलशैः स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभू-
षिता करोति, कृत्वा पुष्पमहस्रगृहिणिका शिपिका दूरोदयति = आरोहयति, दूरोद-
मित्रज्ञातिनिजसस्वजनमम्वन्निपरिजनेन सार्द्धं सपरिवृतः सर्वैर्दद्या यावत् = वाद्य

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ-अतः मैं
चाहती हूँ कि मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हत पार्वनाथ प्रभु के
समीप मुडित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लू ।
इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे
कहा-(अहासुह देवाणुष्पिया । मा पडिग्रह करेह, तएण से काले गाहा
वई विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियग
सयणसवधिपरियण आमतेइ आमत्तिता तओ पच्छा ण्हाए जाव
विउलेण पुष्पवत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव
मित्तणाइणियगसयणसवधिरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेया
पीएहि कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता
पुरिससहस्सवाहिणीय सीय दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

अवबुधी हू आ ससारना लयथी उद्विग्न यधने जन्म-मरणयुथी लयभीत यध
गध हू अथी भारी ध्विडा छे के हू तभारी आज्ञा भेगवीने ते अर्हत
पार्श्वनाथ प्रभुनी पासो मुडित यधने अगारावस्था त्यछने अनगारावस्था
स्वीकारी लउ आ प्रभाछे पोतानी डावी दारिकानी बात साबगीने
मातापिताओ तेने कहु —

(अहासुह देवाणुष्पिया । मा पडिग्रह करेह, तएण से काले गाहावई
विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइणियगसयणसवधिपरि-
यण आमतेइ आमत्तिता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेण पुष्पवत्थगधमल्लालकारेण
सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसवधिपरिजणस्स पुरओ कालिय
दारिय सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता

मानानेकरिषादिप्रकरणेण मह आमलकनगाया नगरां मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यथैराग्रगलरने धैत्य तत्रैवोपागच्छति, उपागम्य उत्रादिकान तीर्थकराणि

सयधिपरियणेण सद्धिं सपरिवुद्धे सन्निवृत्तिं जाय र्वेण आमलकण नगरिं मज्झ मज्जेणं णिगच्छइ) हे देवानुप्रिये ! तुझे जिस तरह अच्छा लगे वैसा तू कर-इस कार्य में प्रमाद न कर। इस तरह उस काल गाथापति ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने में दृढ़ निश्चयवाली जानकर त्रिपुल मात्रा में अग्नादि रूप चतुर्विध आहार निष्यन्न कर घाया-घाद में मित्र, जाति, निजक, स्वजन, सयन्धी परिजनो को आमन्त्रित किया आमन्त्रित करके घाद में उसने स्नात होकर त्रिपुल पुष्प, वस्त्र, गन्ध मातृ, गन्ध अलंकारों से सत्कार सन्मान करके उन मित्र, जाति, निजक, स्वजन, सयन्धी, परिजनो के साथ काली द्वारिका का श्वेत पीत कलशों द्वारा अभिषेक किया-घाद में उसे समस्त अलंकारों से विभूषित किया-फिर पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर उसे बढवाया। बढवाकर फिर उन मित्र, जाति निजक, स्वजन सयन्धी परिजनो से घिरा हुआ होकर वह अपनी समस्त शक्ति के अनुसार, वाद्यमान अनेक विध वाजो की ध्वनि के साथ २ आमलकनगा नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर निकला। (णिगच्छित्ता जेगेव अवतालवणे चेहए

पुरिसहस्सवाहिणीय सीय दुरोहेह, दुरोहिता मित्तणाह, णियगसयणसयधि परियणेण सद्धिं सपरिवुद्धे सन्निवृत्तिं जाय र्वेण आमलकण नगरिं मज्झ मज्जेणं णिगच्छइ)

हे देवानुप्रिये ! तने जेभ साइ लागे तेभ कर आ कामभा प्रमाद करीश नहि आ प्रमाछे ते कालगाथापतिअे पोतानी पुत्रीने दीक्षा ग्रहण करवाने मज्झ विचार जालीने पुण्ण प्रमाछुभा अशन वगेदे चार जतना आडादे तैचार करावडाणा त्थारमाह मित्र, जाति, निजक, स्वजन, सयन्धी परिजनोने आमन्त्रित कथा आमन्त्रित करीने तेछे स्नान करीने पुण्ण पुष्प, वस्त्र, गन्ध, मातृ अने अलंकारे वडे सत्कार तेभज सन्मान करीने ते मित्र, जाति, निजक, स्वजन, सयन्धी, परिजनोनी साथे काली द्वारिकाने सहेह, अने पीणा कण्ठे। वडे अलिषेक कथे त्थारमाह तेने समस्त अलंकारे वडे विलूषित करी अने त्थारपाथी पुरुष सहस्रवाहिनी पावथी उपर तेने बढावी बढावीने तेछे मित्र जाति, निजक, स्वजन सयन्धी, परिजनोनी साथे परि वेष्टित थधने पोतानी समस्त शक्तिनी साथे, धव्वा वाज ओना ध्वनिनी साथे साथे आमलकनगा नगरीनी परापर पथे थधने नीकथे।

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिपिका स्थापयति, स्थापयित्वा कालिका दारिका शिपिकातः प्रत्यवरोहयति । ततः खलु ता कालिका दारिकाम् अम्मापितरो पुरतः कृत्वा यत्रैव पार्श्वोर्द्ध्वं पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्देते नमस्यतः, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिष्टाम्—एव खलु हे देवानुप्रियाः । काली दारिका आवयोर्द्ध्विता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रयणायापि दुर्लभा किमद्ग ! पुनः

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उत्ताइए तित्थगराइसए पासइ) निरुलकर वह वहा गया कि जहा वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था । वहां जाकर उसने तीर्थरु प्रकृति के उदय से होनेवाले छत्रादिक अति शयों को देखा । (पासित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारिय सीयाओ पच्चोरुहइ, तएण त कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) देखकर उसने उस पुरुष सहस्रबाहिनी शिपिका को खटी कर दिया । खड़ी करके उसमें से काली दारिका को नीचे उतारा बाद में वे माना पिता उस कालिक दारिका को आगे करके जहा पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहा गये । वहा जाकर उन्होंने उनको वदना की—नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके बाद में उन्होंने इस प्रकार प्रभु से कहा—(एव खलु देवानुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमगपुणपासगयाए ! एस

(णिगच्छित्ता जेणेव असालरणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उत्ताइए तित्थगराइसए पासइ)

नीकणीने ते त्या गये हे जया ते आम्रशाल वन नामे उद्यान हेतु त्या जधने तेणे तीर्थरु प्रकृतिना उदयधी अस्तित्वमा आपता छत्र वगेरे अतिशयेने लेया

(पामित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारिय सीयाओ पच्चोरुहइ, तएण त कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी)

लेधने तेणे ते पुरुष सहस्रबाहिनी पावणीने शङ्की शङ्कीने तेभाथी शङ्की दारिकाने नीचे उतारी त्यापत्री ते मातापिता ते शङ्कीक दारिकाने आगण करीने जया पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान होता त्या गया त्या जधने तेभणे तेभने वदना करी, नमस्कार कया वदना तेभज नमस्कार करीने तेभणे प्रभुने विनती करता आ प्रभाणे कथु ठे—

(एव खलु देवानुप्पिया ! कालीदारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमग-

मानानेकप्रिधयादिप्रवेण सह आमलकलयाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैवाग्रशालवन चैत्य तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य उत्राद्रिकान् तीर्थकराति

सद्यधिपरियणेण सद्धिं सपरिवुढे सन्निद्धीण जाय रवेण आमलकण्य नयरिं मज्झ मज्झेण णिगच्छइ) हे देवानुप्रिये ! तुझे जिस तरह अच्छा लगे वैसा तू कर-इस कार्य में प्रमाद न कर। इस तरह उस काल गाथापति ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने में दृढ निश्चयवाली जानकर विपुल मात्रा में अन्ननादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न कर घाया-घाद में मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सघन्धी परिजनों को आमन्त्रित किया आमन्त्रित करके घाद में उसने स्नात होकर विपुल पुष्प, वस्त्र, गन्ध माल्य, एवं अलंकारों से सत्कार सम्मान करके उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सघन्धी, परिजनों के साथ काली दारिका का श्वेत पीत कलशों द्वारा अभिषेक किया-घाद में उसे समस्त अलंकारों से विभूषित किया-फिर पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर उसे चढ़वाया। चढ़वाकर फिर उन मित्र, ज्ञाति निजक, स्वजन सघन्धी परिजनों से घिरा हुआ होकर वह अपनी समस्त ऋद्धि के अनुसार, बाद्यमान अनेक विध बाजों की ध्वनि के साथ २ आमलकलया नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर निकला। (णिगच्छत्ता जेजेव अवमालवणे चेइए

पुरिससहस्सवाहिणीय सीय दुरोहेइ, दुरोहिता मित्तणाइ, णियगसयणसद्यधि परियणेण सद्धिं सपरिवुढे सन्निद्धीण जाय रवेण आमलकण्य नयरिं मज्झ मज्झेण णिगच्छइ)

हे देवानुप्रिये ! तने जेभ साइ लागे तेभ कर आ कामभा प्रभाइ करीश नहि आ प्रभाछे ते कालगाथापतिअे पोतानी पुत्रीने दीक्षा अलंछ करवाने भल्लभ विचार लखीने पुच्छण प्रभाषुभा अथन वगेरे थार नतना आहादे तैथार करावडाया त्थारमाइ मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सघन्धी परिजनोने आमन्त्रित क्यो आमन्त्रित करीने तेछे स्नान करीने पुच्छण पुष्प, वस्त्र, गन्ध, माल्य अने अलंकारे वडे सत्कार तेमज्ज सम्मान करीने ते मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, सघन्धी, परिजनोनी साथे काली दारिकोने सहेइ, अने पीणा कणशे वडे अभिषेक क्यो त्थारमाइ तेने समस्त अलंकारे वडे विभूषित करी अने त्थारपछी पुरुष सहस्रवाहिनी पावणी उपर तेने अढावी अढावीने तेछे मित्र ज्ञाति, निजक, स्वजन सघन्धी, परिजनोनी साथे परि वेष्टित थधने पोतानी समस्त ऋद्धिनी साथे, धन्य वान्मज्जोना ध्वनिनी साथे साथे आमलकलया नगरीनी थराणर वच्चे थधने नीकल्ये।

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिविका स्थापयति, स्थापयित्वा कालिका दारिकां शिवि-
कातः प्रत्यग्रोहयति । ततः खलु ता कालिका दारिकाम् अम्मापितरो पुरतः
कृत्वा यत्रैव पार्श्वोर्द्ध्वं पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्देते नमस्यतः,
वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमयादिष्टाम्—एव खलु हे देवानुप्रियाः । काली दारिका
आवर्षोर्द्ध्विता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रवणायापि दुर्लभा किमद्ग ! पुनः

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उत्ताइए तित्तगाराइसए पासइ) निरु-
लकर वह वहा गया कि जहा वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था ।
वहां जाकर उसने तीर्थंकर प्रकृति के उदय से होनेवाले छात्रादिक अति-
शयो को देखा । (पासित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ
पच्चोरुइइ, तएण त कालीय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव
पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ,
वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी) देखकर उसने उस पुरुष सहस्रबाहिनी
शिविका को खटी कर दिया । खड़ी करके उसमें से काली दारिका को
नीचे उतारा बाद में वे माना पिता उस कालिक दारिका को आगे करके
जहां पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहां गये । वहां
जाकर उन्होंने उनको वदना की—नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके
बाद में उन्होंने इस प्रकार प्रभु से कहा—(एव खलु देवानुप्पिया !
काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमगपुणपासणयाण ! एस

(णिगच्छित्ता जेणेव असालगणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता
उत्ताइए तित्तगाराइसए पासइ)

नीक्षणीने ते त्या गये के जया ते आम्रशाल वन नामे उद्यान હતુ
ત્યા જઇને તેણે તીર્થંકર પ્રકૃતિના ઉદયથી અસ્તિત્વમા આવતા છાત્ર વગેરે
અતિશયોને જોયા

(पासित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुइइ, तएण
त कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी)

જોઇને તેણે તે પુરુષ સહસ્રબાહિની પાલખીને શેડી શેડીને તેમાથી
કાલી દારિકાને નીચે ઉતારી ત્યારપછી તે માતાપિતા તે કાલીક દારિકાને
આગળ કરીને જ્યા પુરુષદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથ વિરાજમાન હતા ત્યા
ગયા ત્યા જઇને તેમણે તેમને વદના કરી, નમસ્કાર કર્યા વદના તેમજ નમસ્કાર
કરીને તેમણે પ્રભુને વિનંતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(एव खलु देवानुप्पिया ! कालीदारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमग

‘પાસળયાણ’ દર્શનાય ? એવા સ્વરૂપે દેવાનુપ્રિયા : સમારભયોદ્વિગ્ના ઇચ્છતિ દેવાનુપ્રિયાણામન્તિકે મુખડાભૂત્યા યાત્મવ્રજિતુ, તદ્ એવા સ્વરૂપે દેવાનુપ્રિયાણા શિષ્યાભિક્ષા દશઃ, ‘પઢિચ્છતુ’ પ્રતીચ્છન્તુ=સ્વીકૃન્તુ સ્વરૂપે દેવાનુપ્રિયા : શિષ્યાભિક્ષામ્ । મગનાનાહ-યયામુત્ત્વ હે દેવાનુપ્રિયો ! મા પ્રતિવચ્ચ ઉત્તમ્ । તતઃ સ્વરૂપે કાલી કુમારી પાર્શ્વમર્દન્ત રુદતે નમસ્યતિ, ચન્દિત્યા નમસ્યત્યા ઉત્તરપૌત્રસ્ય

જ દેવાણુપ્પિયા ! સસારમહાનિવગ્ગા, ઇચ્છહ, દેવાણુપ્પિયાણ ! અતિણ મુટા મવિત્તા જાવ પવ્વહ્સણ, ત ણ્ય જ દેવાણુપ્પિયાણ મિસ્સિણિમિક્સલ દલયામો પઢિચ્છતુ જ દેવાણુપ્પિયા ! સિસ્સિણિમિવચ્ચ) હે દેવાનુપ્રિય ! યહ હમારી કાલી દારિકા નામકી પુત્રી છે । યહ હમેં વહ્ત અધિક ઇષ્ઠા, કાન્તા યાવત્ ઉદમ્મર પુષ્પ કે સમાન સુનને કે લિપે મી દુર્લભા છે-તો ફિર હે અગ ! હસકે દર્શન કી તો યાન હી કયા કહના છે । હે દેવાનુપ્રિય ! યહ સમારભય સે ઉદ્વિગ્ન હો રહી છે અતઃ આપ દેવાનુપ્રિય કે પાસ મુહિત હોકર યાવત્ સયમ લેના ચાહની છે । હસ લિપે હમ દોનોં આપકે લિપે શિષ્યા કી મિક્ષા દે રહે છે-આપ દેવાનુપ્રિય ! હમારી હસ શિષ્યારૂપ મિક્ષા કો સ્વીકાર કરે (અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા પઢિવચ્ચ કરેહ) હસ પ્રકાર જન દોનોં કા કથન સુનકર પ્રભુ ને જનસે કહા છે દેવાનુપ્રિયો ! આપ કો જૈમા સુખ હો-વૈસા આપ કરો-હસમેં વિલમ્બ કરને સે લાભ નહીં છે । (તણ) હસકે વાદ (કાલી કુમારી પાસ

પુજ પાસળયાણ ? એમજ દેવાણુપ્પિયા ! સમારમહાનિવગ્ગા, ઇચ્છહ, દેવાણુપ્પિયાણ ! અતિણ મુટા મવિત્તા જાવ પવ્વહ્સણ, ત ણ્ય જ દેવાણુપ્પિયાણ મિસ્સિણિમિક્સલ દલયામો પઢિચ્છતુ જ દેવાણુપ્પિયા ! મિસ્સિણિમિક્સલ)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ અમારી કાલી દારિકા નામે પુત્રી છે અમારા માટે આ મહુ જ વધારે ઇષ્ઠા, કાતા યાવત્ ઉદમ્મર પુષ્પની જેમ નામ શ્રવણમા પણુ દુર્લભા છે તો પછી જોના દર્શનની તો વાત જ શી કરવી ? હે દેવાનુપ્રિય ! આ સમાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈ રહી છે એથી આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી મુહિત થઈને યાવત્ સયમ ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે એથી અમે જને આપના માટે આશિષ્યાની ભીક્ષા અર્પણ કરીએ છીએ આપ દેવાનુપ્રિય અમારી આ શિષ્યારૂપી ભીક્ષાનો સ્વીકાર કરો (અહાસુહ દેવાણુપ્પિયા ! મા પઢિવચ્ચ કરેહ) આ પ્રમાણે તેઓ જનેનુ કથન સાંભળીને પ્રભુએ તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમને જેમ સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો આમા વિલંબ કરવાથી લાભ નથી (તણ) ત્યારપછી

दिग्भागम् अग्रक्रमति, अग्रक्रम्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव आभरणमाल्यालङ्कारम्
अग्रमुञ्चति=अतारयति, अग्रमुच्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव लोच=क्रेगलुञ्चन करोति,
कृत्वा यत्रैव पार्थोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पार्श्वमर्हन्त त्रिः
कृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यत्वा एवमवादीत-आदीतः खलु हे भद
न्त ! लोक' एवम्=अनेन प्रकारेण यावत्-एषाऽपि स्वयमेव पार्श्वप्रभुणा प्रव्राजिता ।

अरह वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं
अवग्रक्रमइ, अवग्रक्रमित्ता समयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ,
ओमुइत्ता, समयमेव लोच करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादा-
णीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पास अरह तिमखुत्तो वदइ,
नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) काली कुमारी ने पार्श्वनाथ
अरिह त प्रभु को वदना एव नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके
फिर वह उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग ईशान कोण की ओर गई। वहा जाकर
उसने अपने आप आभरण माल्य एव अलंकारों को उतार दिया।
उतार कर अपने हाथों से उसने बालों का लुचन किया-लुचन करके
फिर वह जहां पुरुषादानीय पार्श्वनाथ प्रभु बिराजमान थे वहां आई-
वहां आकर उसने पार्श्वनाथ अर्हत को तीनवार वदन एव नमस्कार
किया और वदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगी
-(आलिच्छेण भते ! लोए एव जहा देवाणदा जाव समयमेव पच्चाविया-

(काली कुमारी पास अरह वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, उत्तरपुरत्थिम
दिसिभाग अवग्रक्रमइ, अवग्रक्रमित्ता, समयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता
समयमेव लोच करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ,
उवागच्छित्ता पास अरह तिमखुत्तो वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी)

काली कुमारीने पार्श्वनाथ अरिह त प्रभुने वदना अने नमस्कार कर्था
वदना अने नमस्कार कराने ते उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग ईशान कोण की तरफ
गई, तथा वदने तेहे पोतानी भेजे व आभरण, माल्य अने अलंकारोने
उतार्यो उताराने पोताना हाथो वडे व तेहे बाजोनु लुचन कथुं लुचन कराने
ते न्या पुरुषादानीय पार्श्वनाथ प्रभु बिराजमान छता त्या आवी त्या आवीने
तेहे पार्श्वनाथ अर्हतने त्रय वार वदन अने नमस्कार कर्था वदना अने
नमस्कार कराने ते तेमने आ प्रभाणे विनती करवा लागी के-

(आलिच्छेण भते ! लोए एव जहा देवाणदा जाव समयमेव पच्चाविया-तएण

ततः खलु पार्श्वोर्द्धन् पुरुषादानीयः काली सयमेव पुष्पचूलायै आर्यायै शिष्यात्वेन ददाति । ततः खलु सा पुष्पचूला आर्या काली दारिका स्वयमेव प्रव्रजयति यावत्-सा काली तदज्ञाम् उपसम्पद्य खलु विहरति । ततः सा काली-आर्या जाता, क्रीदशी ? त्याह-ईयाममिता यावत्-गुप्तव्रतनारिणी । तत खलु सा काली अर्या पुष्पचूलाया आर्याया अन्तिके सामायिमादीनि एकादशाङ्गानि अघीते,

तण्ण पासे अरहा पुरिसादानीए कालि सयमेव पुष्पचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तण्ण सा पुष्पचूला अज्जा कालि दारिय सयमेव पन्नावेइ-जाव उवसपजित्ताण विहरइ) हे भदत ! यह लोक आदीस हो रहा है-इस प्रकार से पार्श्वनाथ प्रभु के द्वारा स्वय ही दीक्षित की गई । इसके बाद उन पुरुषादानीय पार्श्व प्रभु ने काली को दीक्षित करके पुष्पचूला आर्या को शिष्याणीरूप से प्रदान कर दिया । पुष्पचूला आर्या ने उसे काली को इस प्रकार दीक्षित करवा कर अपनी शिष्याणीरूप में उसे स्वीकार कर लिया-यावत् वह काली उस आर्या की आज्ञानुसार अपनी प्रवृत्ति करने लग गई । (तण्ण सा काली अज्जा जाव) इस तरह वह काली अब आर्या हो गई । (ईरिया समिया जाव गुत्तवभयारिणी तण्ण सा काली अज्जा पुष्पचूलाए अज्जाए अतिए

पासे अरहा पुरिसादानीए कालि सयमेव पुष्पचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तण्ण सा पुष्पचूला अज्जा कालि दारिय सयमेव पन्नावेइ-जाव उवसप-जित्ताण विहरइ)

हे भदन्त ! आ बौद्ध आदीस यर्ध रक्षो छे आ प्रभाछे आ पण्ण पार्श्वनाथ प्रभु वडे जते ज दीक्षित करवाभा आवी त्यारपछी ते पुरुषादानीय पार्श्व प्रभुछे कालीने दीक्षित करीने पुष्पचूला आर्याने शिष्याना इपमा आपी दीक्षी पुष्पचूला आर्याछे ते कालीने आ प्रभाछे दीक्षित करवावेने पोतानी शिष्याना इपमा तेना स्वीक र करी लाधे यावत् ते काली ते आर्यानी आज्ञा मुज्जम पोतानी प्रवृत्ति करवा लागी (तण्ण सा काली अज्जा जाव) आ रीते ते काली छवे आर्या यर्ध जध

(ईरिया समिया जाव गुत्तवभयारिणी, तण्ण सा काली अज्जा पुष्पचूलाए अज्जाए अतिए समाइयमाइयाद एकरासअगाइ अहिज्जइ, वहुहि पण विहरइ)

बहुभिः चतुर्थं यावत्-पष्ठाष्टमदशमद्वादशभिस्तपःकर्मभिरात्मानं भावयन्ती
विहरति ॥ सू० ३ ॥

मूलम्-तएणं सा काली अज्जा अन्नया कयाइं सरीरवाउ-
सिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ पाए धोवइ
सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणत्तराइं धोवइ कक्खं तराणि धोवइ
गुज्झंत्तराइं धोवइ जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसी-
हियं वा चेइए त पुव्वामेव अवभुक्खेत्ता तओ पच्छा आसयइ
वा सयइ वा, णिसीहइ वा, तएणं सा पुप्फचूला अज्ज कालि
अज्जं एव वयासी-नो खल्लुकप्पइ देवाणुप्पिया । समणीणं णिग्गं
थीणं सरीरवाउसियाण होत्तए तुमं च णं देवाणुप्पिया । सरी-
रवाउसिया जाया अभिक्खणं२ हत्थे धोवसि जाव आसयाहि
वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा त तुमं देवाणुप्पिए । एयस्स
ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि, तएणं सा काली

सामाह्यमाह्याह एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, घट्ठहिं चउत्थ जाव विह-
रइ) उसका रहन शयन आदि सब व्यवहार नियमित एवं सीमित हो
गया । चलती तो वह ईर्या समिति से मार्ग का संशोधन कर चलती ।
यावत् वह गुप्त ब्रह्मचरिणी बन गई । ९ नौ कोटी से ब्रह्मचर्यव्रत की
संरक्षिका हो गई । इसके बाद उस काली आर्या ने पुष्पचूला आर्या के
पास सामायिक आदि ग्यारह अंगों का अध्ययन किया-और अनेक
चतुर्थ, पष्ठ, अष्टम दशम, द्वादश, तपस्याओं की आराधना से अपने
आपको भावित किया ॥ सूत्र ३ ॥

तेनु रहेडुं, सधु वगेरे णधु काम नियमित अने सीमित थध गयु
-आलती त्यारे ते धर्या-समितिथी मार्गनु संशोधन करीने आलती यावत् ते
शुभ ब्रह्मचारिणी भनी गध ८ कोटिथी ब्रह्मचर्य व्रतनी ते संरक्षिका थध
गध त्यारपछी ते काली आर्याओ पुष्पचूला आर्या । पात्ते सामायिक वगेरे
अगियार अंगोनु अध्ययन करुं अने धर्या अतुर्थ, पष्ठ, अष्टम, दशम,
द्वादश तपस्याओनी आराधनाथी चेतानी जतने भावित करी ॥ सूत्र ३ ॥

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ट नो आढाइ जाव तुसिणीया
संचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जंअभि-
क्खणं२ हीलेंति णिंदंति खिसंति गरिहंति अवमण्णांति अभि-
क्खणं२ एयमट्ट निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए सम-
णीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-
माणिए इमेयारूवे अज्झात्थिए जाव समुप्पज्जितथा जया-
णं अह अगारवासमज्झे वसितथा तया णं अह सयवसा जप्पि-
भिइं च णं अह मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया
तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, त सेयं खल्ल मम कल्लं
पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्का उवस्सय उवसप-
ज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवसपेहेइ सपेहित्ता कल्ल जाव जलते
पाडिएकं उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्ठिया
सच्छदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा,
णीसेहेइ वा, तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी
ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछदा अहा-
छंदविहारी संसत्ता ससत्ताविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं
पाउणइ पाउणिच्चा अद्धमसियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ चूसित्ता
तीसंभत्ताइ अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय
अपडिक्कता कालमासे काल किच्चा चमरचपाए रायहाणीय कालव-
डिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अगुल-
स्स असखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीं वण्णा,

तएणं सा कालीदेवी आहुणोत्रवण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए
जहा सूरियाभो जाव भासामण पज्जत्तीए० । तएणं सा काली-
देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीण जाव अणोसि च वहुणं काल-
वडेंसगभवणवासीण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य आहेवच्च
जाव विहरइ, एवं खलु गोयमा । कालीए देवीए सा दिव्वा
देविड्डीइ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए णं भते । देवीए
केवइय काल ठिई पन्नत्ता ?, गोयमा । अड्डाइज्जाइ पलिओवमाई
ठिई पन्नत्ता, काली णं भते । देवी ताओ देवलोगाओ अणंतर
उव्वट्ठित्ता कहि गच्छिहिइ कहि उव्वज्जिहिइ ?, गोयमा । महा-
विदेहे वासे सिज्झिहिइ, एव खलु जवू । समणेणं जाव संपत्तेणं
पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि ।
धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्त ॥ सू० ४ ॥

टीका—‘ तएण सा ’ इत्यादि—ततः खलु सा काली आर्या अन्यदा कदा-
चित् ‘ सरीरवाउसिया ’ शरीरा वाक्कुशिका=शरीरसस्करणशीला जाता चाप्या-
सीत् । अथ सा किं करोती ? त्याह—अभीक्षण२ वारवार हस्तौ धावति, पादौ धावति,

‘ तएण सा काली अज्जा अन्नया कयाइ, ’ इत्यादि ।

टीकार्थ —(तएण) इसके बाद (सा काली अज्जा) वह काली
आर्या (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (सरीरवाउसिया) शरीर को
संस्कारित करने के स्वभाववाली बन गई इसलिये वह (अभीक्षण २

‘ तएण सा काली अज्जा अन्नया कयाइ ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्या२पक्षी (सा काली अज्जा) ते काली आर्या
(अन्नया कयाइ) डोछ ओक वणते (सरीरवाउसिया) शरीरने संस्कारित
करवाना स्वभाववाणी भनी गछ, ओट्ठा भाटे ते—

(अभीक्षण२ हथे धोवइ, पाए धोवइ सीस धोवइ, मुह धोवइ, थणतराइ धोवइ,

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्टं नो आढाइ जाव तुसिणीया
संचिट्ठइ, तएण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जंअभि-
क्खणं२ हीलेंति णिंदंति खिसंति गरिहंति अवमण्णांति अभि-
क्खणं२ एयमट्ट निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए सम-
णीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-
माणिए इमेयारूवे अज्झातिए जाव समुप्पज्जितथा जया-
णं अहं अगारवासमज्झे वसितथा तथा णं अहं सयवसा जप्पि-
भिइं च णं अह मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया
तप्पभिइं च णं अह परवसा जाया, त सेय खलु मम कल्ल
पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिका उवस्सय उवसंप-
ज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं सपेहेइ सपेहित्ता कल्ल जाव जलते
पाडिएक्क उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्टिया
सच्छदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा,
णीसेहेइ वा, तएण सा काली अज्जा पासत्था पासरधविहारी
ओसण्णा ओसणविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछदा अहा-
छंदविहारी संसत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं
पाउणइ पाउणिता अद्धमसियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ झूसित्ता
तीसं भत्ताइ अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय
अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचपाए रायहाणीए कालव-
डिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अगुल-
स्स असखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदे ति उववण्णा,

નિર્ગન્ધીના શરીરવાકુશિકા જાતાડસિ, યતમ્ભવમ્-અમીક્ષણ ૨ હસ્તો ધાવસિ
યાવત્ ' આસયાહિ વા ' આસ્તે=ઉપવિગમિ, ' સયાહિ વા ' શેષે=જનનં કરોપિ
' ગીમીદિયાહિ વા ' નિપેયસિ=સ્વાધ્યાય કરોપિ, ' ત ' તત્=તસ્માત્ કાર-
ણાત્ ત્વ હે દેવાનુપ્રિયે ! એવત્ સ્થાનમ્-' આલોહિ ' આલોચય યાવત્ પ્રાય-
શ્ચિત્ત પ્રતિપદ્યસ્વ । મૂલે-સમ્વન્યમામાન્યે પૃષ્ઠી । તતઃ સ્વલુ સા કાલી આર્યા

દેવાણુપ્પિયા ! સમળી ણ ણિગ્ગયીળ સરીરવાડસિયાળં હોત્તણ-તુમ ચ
ળ દેવાણુપ્પિયા ! સરીરવાડસિયા જાયા-અભિક્કલ્લણં ૨ હસ્થે ધોવસિ,
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા ણિસીદિયાહિ વા ત તુમં દેવાણુપ્પિયાણ !
ણ્યસ્સ ઠાણસ્સ આલોહિ જાવ પાયચ્છિત્તં પઢિવજ્જાહિ) હે દેવાનુપ્રિયે !
નિર્ગન્ધ શ્રમણિયોં કો શરીરવકુશ હોના કલ્પિત નહીં હૈં । પરન્તુ તુમ
તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ ઘન રહી હો । વાર ૨ હાથોં કો ધોતી હો
યાવત્ જહાં તુમ્હેં ઉઠના ઘેઠના હોતા હૈં, શયન કરના હોતા હૈં, સ્વાધ્યાય
કરના હોતા હૈં ઉસ સ્થાન કો પહિલે સે હી સિંચિત કર લેતી હો તજ
જાકર વર્હાં ઉઠતી ઘેઠતી હો, શયન કરતી હો, સ્વાધ્યાય કરતી
હો । ફસલિયે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ ફસ સ્થાન કી આલોચના કરો યાવત્
પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો । (તણ સા કાલી અજ્જા પુપ્ફચૂલાણ અજ્જાણ
ણ્યમટ્ટ નો આઢાહ, જાવ તુસિળીયા સચિટ્ટહ, તણ તાઓ પુપ્ફચૂલાઓ

(નો સ્વલુ કપ્પહ, દેવાણુપ્પિયા ! સમળીળ ણિગ્ગયીળ સરીરવાડસિયાળં
હોત્તણ-તુમ ચ ણ દેવાણુપ્પિયા ! સરીર વાડસિયા જાયા અભિક્કલ્લણ ૨ હસ્થે ધોવસિ,
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા, ણિસીદિયાહિ વા ત તુમ દેવાણુપ્પિયા ! ણ્યસ્સ
ઠાણસ્સ આલોહિ જાવ પાયચ્છિત્ત પઢિવજ્જાહિ)

હે દેવાનુપ્રિયે ! નિર્ગન્ધ શ્રમણીઓને શરીરવકુશ થયું કલ્પિત નથી,
પરંતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ થઈ રહી છો વારવાર હાથોને
ધૂંઓ છો યાવત્ બધા તમારે ઉઠવા બેસવાનું હોય છે, સવાનું હોય છે,
સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલા તમે પાણીથી સિંચિત કરી લો છો,
અને ત્યારપછી તમે ત્યાં ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો
એથી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો

(તણ સા કાલી અજ્જા પુપ્ફચૂલાણ અજ્જાણ ણ્યમટ્ટ નો આઢાહ જાવ
તુસિળીયા સચિટ્ટહ, તણ તાઓ પુપ્ફચૂલાઓ અજ્જાઓ કાલિં અજ્જ અભિ-

शीर्षं धावति, मुखं धावति स्तनान्तराणि धावति, कक्षान्तराणि धावति, गुह्या-
न्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु 'ठाणं वा' स्थानम्=उपवेशनस्थलम्
'सेज्जं वा' शय्या=शयनभूमिम्, 'णिसीहियं वा' नैपधिरू=स्वाध्यायभूमिम्
'चेण्ण' चेतयते=करोति 'त' तत्=स्यानादिक 'पु' नामेव 'पूर्वमेव=उपवेश-
नादि क्रियाया पूर्वं 'आसयइ वा' आस्ते=उपविशति, 'सयइ वा' शेते=
शयनं करोति, 'णिसीहइ वा' निपेधयति=स्वाध्याय करोति वा । ततः खलु सा
पुष्पचूलाऽऽर्या कालीमार्यामेवमगदीत्-नो खलु कल्पते हे देवाणुमिये । श्रमणीनां

हृत्पथे धोवइ पाण धोवइ, सीम धोवइ मुह ओउइ धणतराह धोवइ,
कम्पतराणि धोवइ, गुज्जतराह धोवइ, जत्थर वि य ण ठाणं वा सेज्ज
वा णिसीहिय वा चेण्ण-त पुव्वामेव अब्भुस्सित्ता तओपच्छा आसयइ,
वा सयइ वा णिसीहइ वा) पार २ हागों को धोने लग गई, पैरों को धोने
लग गई, शिर को धोने लग गई, मुँह को धोने लग गई, स्तनान्तरों
को-स्तनों के मध्यभाग को-धोने लग गई, कक्षान्तरों को-कालो के
मध्यभाग को-धोने लग गई, गुह्यभागों को-गुहागों को धोने लग गई ।
जहा २ वह बैठने का स्थान, शयन, स्थान, स्वाध्याय करने का स्थान
नियत करती उसे पहिले से ही वह पानी से सिंचित कर देती-बाद में
वह वहा बैठती शयन करती, स्वाध्याय करती, (तण्ण सा पुष्पचूला
अज्जा कालिं अज्ज एव वयासी) उस काली आर्या की इस स्थिति को
देखकर पुष्पचूला आर्या ने उसे इस प्रकार कहा-(नो खलु कल्पइ,

कम्पतराणी धोवइ, गुज्जतराह धोवइ, जत्थर वि य ण ठाणं वा सेज्ज वा णिसी-
हिय वा चेण्ण त पुव्वामेव अब्भुस्सित्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइ वा)

बार बार छाँधोने धोवा लागी, भगोने धोवा लागी, माथाने धोवा लागी,
भुणने धोवा लागी, स्तनान्तरने-स्तनना वन्धेना स्थानने धोवा लागी, कक्षा-
तरेने-अगलोना मध्य लागने धोवा लागी, गुह्य लागोने-गुह्यागोने धोवा
लागी न्या न्या तेने जेसवानु स्थान, शयनस्थान, स्वाध्याय करवानु स्थान
नछी करती तो तेने पडेवेथी न ते पालुथी सिंचित करी देती, त्यारपछी ते
त्या जेसती, शयन करती, स्वाध्याय करती (तण्ण सा पुष्पचूला अज्जा कालिं
अज्ज एव वयासी) ते काली आर्यानी आची स्थिति जेधने पुष्पचूला आर्याने
तेने आ प्रमाणे कछु के-

નિર્ગન્ધીના શરીરવાકુશિકા જાતાઽસિ, યતસ્ત્વમ્-અમીક્ષ્યં ૨ હસ્તો ધાવસિ
યાવત્ ' આસયાહિ વા ' આસ્તે=ઉપવિશસિ, ' સયાહિ વા ' શેપે=શયન કરોપિ
' ણીસીહિયાહિ વા ' નિષેધયસિ=સ્વાધ્યાય કરોપિ, ' ત ' તત્=તસ્માત્ કાર-
ણાત્ ત્વ હે દેવાનુપ્રિયે ! એતત્ સ્થાનમ્-' આલોપહિ ' આલોચય યાવત્ પ્રાય-
શ્ચિત્ત પ્રતિપદ્યસ્વ । મૂલે-સમ્બન્ધમામાન્યે પૃષ્ઠી । તતઃ સ્વલુ સા કાલી આર્યા

દેવાણુપ્પિયા ! સમળી જ ણિગ્ગયીણ સરીરવાડસિયાણ હોત્તણ-તુમ ચ
જ દેવાણુપ્પિયા ! સરીરવાડસિયા જાયા-અમિક્કણં ૨ હત્થે ધોવસિ,
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા ણિસીહિયાહિ વા ત તુમ દેવાણુપ્પિયાણ !
એયસ્સ ઠાણસ્સ આલોપહિ જાવ પાયચ્છિત્તં પઢિવજ્જાહિ) હે દેવાનુપ્રિયે !
નિર્ગન્ધ શ્રમણિયોં કો શરીરવકુશ હોના કલ્પિત નહીં હૈં । પરન્તુ તુમ
તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ ઘન રહી હો । વાર ૨ હાથો કો ધોતી હો
યાવત્ જહાં તુમ્હેં ઉઠના બેઠના હોતા હૈ, શયન કરના હોતા હૈ, સ્વાધ્યાય
કરના હોતા હૈ ઉસ સ્થાન કો પહિલે સે હી સિંચિત કર લેતી હો ત્વ
જાકર વર્હાં ઉઠતી બેઠતી હો, શયન કરતી હો, સ્વાધ્યાય કરતી
હો । હસલિયે હે દેવાનુપ્રિયે ! તુમ હસ સ્થાન કી આલોચના કરો યાવત્
પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો । (તણ સા કાલી અજ્ઞા પુષ્પચૂલાણ અજ્ઞાણ
એયમદ્દ નો આઢાહ, જાવ તુસિનીયા સંચિદ્દહ, તણ તાઓ પુષ્પચૂલાઓ

(નો સ્વલુ કપ્પહ, દેવાણુપ્પિયા ! સમળીણ ણિગ્ગયીણ સરીરવાડસિયાણ
હોત્તણ-તુમ ચ જ દેવાણુપ્પિયા ! સરીર વાડસિયા જાયા અમિક્કણ ૨ હથે ધોવસિ,
જાવ આસયાહિ વા સયાહિ વા, ણિસીહિયાહિ વા ત તુમ દેવાણુપ્પિયા ! એયસ્સ
ઠાણસ્સ આલોપ હિ જાવ પાયચ્છિત્ત પઢિવજ્જાહિ)

હે દેવાનુપ્રિયે ! નિર્ગન્ધ શ્રમણીઓને શરીરવકુશ થવું કલ્પિત નથી,
પરંતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ થઈ રહી છો વારંવાર હાથોને
ધૂંઓ છો યાવત્ બધા તમારે ઉઠવા બેસવાનું હોય છે, સૂવાનું હોય છે,
સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલા તમે પાણીથી સિંચિત કરી લો છો,
અને ત્યારપછી તમે ત્યાં ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો
બીધી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો

(તણ સા કાલી અજ્ઞા પુષ્પચૂલાણ અજ્ઞાણ એયમદ્દ નો આઢાહ જાવ
તસિનીયા સંચિદ્દહ, તણ તાઓ પુષ્પચૂલાઓ અજ્ઞાઓ કાલિં અજ્ઞ અમિ

पुष्पचूलाया आर्याया एतमर्थं 'नो भाडाइ' नो आद्रियते=न मन्यते यावत्
'तुसिगीया' तुष्णीका=समौना सतिष्ठते। ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्याः
कालीमार्याय् 'अभिक्षण' २ अमीक्षण २=रार चार 'हीलेंति' टिन्ति=जन्मकर्मो-
द्घाटनपूर्वकं निर्मत्स्यन्ति गिदति' निन्दन्ति=कुत्सितशब्दपूर्वकं दोषोद्घाटनेन अना-
द्रियन्ते, 'खिसति' खिसन्ति=हस्तमुखादिभिरपमानपूर्वकमपमान्यन्ते, अपमानं कुर्वन्ती
त्यर्थः 'गरिहति' गर्हन्ते=गुरोदिममक्ष दोषाधिकरणपूर्वकं तिरस्कुर्वन्ति, 'अवमण-
ति' अपमान्यन्ते=रुक्षवचनादिभिरपमानं कुर्वन्ति, तथा-अमीक्षणममीक्षणम् धारवा-
एतमर्थं=शरीरसस्करणरूपं निवारयन्ति। ततः खलु तस्याः काल्या आर्यायाः भ्रम

अज्जाभो कालिं अज्ज अभिक्षण २ हीलेंति, णिदति, खिसति, गरि-
हति अवमणन्ति, अभिक्षण २ एयमद्द निवारेंति, तण्णं तासे कालीए
अज्जाए समणीहिं णिग्गधीहिं अभिक्षण २ हील्लिज्जमाणीए जाव
वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्जत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) उस काली
आर्याने पुष्पचूला आर्याके इस कथन रूप अर्थको नहीं माना। केवल वह
यावत् चुपचाप ही रही। उत्तरमें जब उसने उनसे कुछ नहीं कहा-तब उस
पुष्पचूला आर्या 'हीलति' काली आर्याकी बार २ जन्मकर्म उद्घाटन पूर्वक
भर्त्सना (तिरस्कार) करना प्रारम्भ कर दिया। 'निदति' कुत्सित शब्दोच्चारण
पूर्वक दोषोद्घाटन करते हुए वे उसकी बार २ निंदा करने लगीं।
'खिसति' हस्त, मुख, आदि के विकार प्रदर्शन पूर्वक वे उसका
अपमान करने लग गईं। 'गरिहति' गुरु आदिजनों के समक्ष दोषों
को प्रकट करके वे उसका तिरस्कार करने लगीं। तथा "अवमणन्ति"
रुक्षवचन आदि बोल २ कर उसका अपमान भी करने लग गईं।

कल्लणं २ हीलेंति णिदति, खिसति, गरिहति अवमणन्ति, अभिक्षण २ एय
मद्द निवारेंति, तण्णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गधीहिं अभिक्षण २
हील्लिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्जत्थिए जाव समुप्पज्जित्था)

ते काली आर्याओं पुष्पचूला आर्याना आ कथन इस अर्थको स्वीकार
क्यों नहीं इकल ते भूगी यधने न ऐसी रही नवाणमा न्नारे तेले तेमने
कध न कल्लु नहिं त्यारे पुष्पचूला आर्याओं काली आर्यानी बार बार नम,
कर्म, उद्घाटनपूर्वक भर्त्सना करवा माडी कुत्सित शब्दोच्चारण्यो दोषोद्घाटन
करती ते तेनी बार बार निंदा करवा लागी छाय, सुअ वगेरेने विकृत करीने
ते तेमनु अपमान करवा लागी शुइ वगेरेनी साथे दोषोने प्रकट करीने ते
तेमने तिरस्कार करवा लागी तेमन इक्ष वधने वगेरे कालीने तेनु अप-
मान पणु करवा लागी अने साथे साथे ते आर्या तेने बार बार शरीर-संस्कार
करवानी भनार्थ पणु करती रही आ प्रभाणु निज्जंथ अमखाओ वडे बार बार

भीमिः मिर्ग्रन्थीभिः भभीक्ष्णमभीक्ष्ण दृश्यमानायाः यावत्-चार्यमाणाया अय-
मेतद्गुण 'अज्ज्ञत्विष्' 'आध्यात्मिकः' आत्मगतविचारः यावत्-मनोगतः सकल्पः
समुद्भवत यदा खलु अहम् अगारवासमभ्ये 'वसित्था' उपिद्रा=न्यवस तदा खलु
अह 'सयवसा' स्वयंश=स्वतन्त्रा आसम्, वत्प्रभृति च खलु अह गुण्डाभूत्वा
भगात् अनगारितां प्रव्रजिताऽभन तत्प्रभृति च खलु अह परवशा जाताऽस्मि
'त' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुश्रमातायां रजन्या यावत् सूर्ये ज्व-
लति=सूर्योदये सति 'पाडिक' प्रत्येकम्=एकमात्र भिन्नमित्यर्थः, उपाभयमुपमं-
पय खलु विहर्तुम्, 'तिक्दद्' इति कृत्वा=इति मनसि निगय एव सम्प्रेक्षते,

साथ २ में वे आर्या वसे घार २ शरीर सस्कार करने से मना भी
करती रही। इस प्रकार उस काली आर्या के निर्ग्रन्थ श्रमणियों द्वारा
घार २ भर्त्सित आदि होने पर तथा शरीर सस्कार करने से निषिद्ध होने
पर, वसे यह इस प्रकार का आ यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न
हुआ। (जया णं अह अगारवासमज्जे वसित्था तथा ण अह सयवसा,
जप्पिभिइ च ण अह मुडा भविता अगाराओ, अणगारिय पव्वइया
तप्पभिइ च ण अह परवसा जाया, त सेयं खलु मम कल्ल पाउप्पभायाए
रयणीए जाव जलते पाडिककावस्सय उवसपज्जिता ण विहरित्ते
त्तिकदद् एव सपेहेइ सपेहिता कल्ल जाव जलते पाडिएकक उवस्सय
गिण्हइ) जब मैं अपने घर के बीच में रहती थी-वस समय मैं स्वतन्त्र
थी। परन्तु जिस दिन से मुडित होकर अगार अवस्था से इस अनगार
अवस्था में आई हूँ उस दिन से मैं परवश-पराधीन बन चुकी हूँ। अतः
मुझे वही श्रेयस्कर है कि मैं दूसरे दिन प्रातः काल होते ही जब सूर्यो

भर्त्सित वगेरे भवाथी तेभन शरीर सस्कारनी भनाध ढोवा अहल ते कादी
आर्याने आ नतने आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उद्भूतये। हे—

(जयाणं अह अगारवासमज्जे वसित्था तथा ण अह सयवसा जप्पभिइ
च ण अह मुडा भविता अगाराओ अणगारिय पव्वइया तप्पभिइ च ण अह
परवसा जाया न सेयं खलु मम कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिका
वस्सय उवसपज्जिता ण विहरित्ते त्तिक्दद् एव सपेहेइ, सपेहिता कल्ल जाव
जलते पाडिएक उवस्सय गिण्हइ)

न्यारे हु घरभा रहेती हती त्यारे हु स्वतन्त्र हती परन्तु न्यारवी मे
मुडित यधने अगार अवस्थाने त्यल्लने अनगार अवस्था स्वीकारी छे त्यारवी
हु परवश-पराधीन यध गध छे ज्येथी भारा भाटे हवे जे न श्रेयस्कर
णीने द्विसे सवार यता न न्यारे सूर्य उदय पामरी त्यारे

સમ્પેક્ષ કલ્પે યાત્ સૂર્યે જન્નતિ 'પાડિણં' પ્રત્યેકપ્-ઉપાશ્રય મુદ્ધાતિ । તત્ત્વ
 ચલુ સા 'અણિવારિયા' અણિવારિતા-નિગરકામાયાત્, 'અણોહદ્વિયા' અન-
 વધદિકા યદ્દન્ઝા પ્રવૃત્તિપ્રતિરોધકામાયાત્, અત્તપ્પ 'સચ્છદમર્હ' સચ્છન્દ
 મતિઃ અમીક્ષ્ણમમીક્ષ્ણ હસ્તૌ ધાયતિ યાત્-આસ્તે વા ગેતે યા નિવેધયતિ વા ।
 તત્ત્વ ચલુ સા કાલી આર્યા 'પાસત્થા' પાર્થસ્થા-ગાઢકારણંવિના નિત્યપિણ્ડ
 મોક્ષત્રી, અત્તપ્પ પાર્થસ્થવિહારિણિ, 'ઓસણ્ણા' અગમના સમાચારીપાલનેઽવસી

દય હો જાવેગા-દૂસરે ઉપાશ્રય મેં ચલી જાઉં । હસ પ્રકાર કા હસને
 અપને મન મેં વિચાર ક્રિયા । વિચાર કરકે ફિર વહ દૂસરે દિન પ્રાતઃ
 કાલ હોતે હી સૂર્યોદય હોને પર દૂસરે ઉપાશ્રય મેં ચલી ગઈ । (તત્ત્વ
 સા અણિવારિયા અણોહદ્વિયા સચ્છદમર્હ અમિક્ષણ ૨ હત્થે ધોવેહ,
 જાવ આસયહ વા સયહ વા ણીસેહેહ વા-તપ્પ સા કાલી અજ્ઞા પાસત્થા
 પાસત્થવિહારી ઓસણ્ણા ઓસણ્ણવિહારી, કુસીલા કુસીલવિહારી,
 અહાહ્હા અહાહ્હવિહારી, સસત્તા સસત્તવિહારી મહ્ણિ વાસાણિ સા
 માણ્ણપરિયાગં પાડ્ણહ) વર્હા વર્હ વિના રોક ટોક, યદ્દન્ઝા પ્રવૃત્તિ કરને
 લગ ગઈ । હચ્છાનુસાર ચાર ૨ હાથ પૈર આદિ ધોને લગ ગઈ । ઉઠને
 બેઠને એવ સોને કે સ્થાન કો તથા સ્વાધ્યાય ભૂમિ કો પહિલે સે હી પાની
 સે સિચ્ચિત કર વહા ઉઠને બેઠને એવ સ્વાધ્યાય કરને લગી । હસ તરહ
 કી સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિ સે વહ કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢકારણ કે વિના
 નિત્ય પિણ્ડ મોક્ષત્રી-વન ગઈ, પાર્થસ્થ વિહારિણી હો ગઈ । સમાચારી

ખીન્ન ઉપાશ્રયમા જતી રહુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર
 કરીને તે ખીન્ને દિવસે સવાર થતા જ સૂર્યોદય થયા બાદ ખીન્ન ઉપાશ્રયમા જતી રહી

(તત્ત્વ સા અણિવારિયા અણોહદ્વિયા સચ્છદમર્હ અમિક્ષણ ૨ હત્થે
 ધોવેહ, જાવ આસયહ વા સયહ વા ણીસેહેહ વા તપ્પ સા કાલી અજ્ઞા પાસત્થા
 પાસત્થવિહારી ઓસણ્ણા ઓસણ્ણવિહારી કુસીલા કુસીલવિહારી અહા હા અહાહ્હ
 વિહારી સસત્તા સસત્તવિહારી મહ્ણિ વાસાણિ માણ્ણપરિયાગ પાડ્ણહ)

ત્યા તે રોક-ટોક વિના સ્વચ્છન્દ થઈને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી ઇચ્છા
 મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઉઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને
 તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિચ્ચિત કરીને ત્યા ઉઠવા
 બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી આ જાતની સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિથી તે
 કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિંડ મોકત્રી થય

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुसीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-
कपायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशी-विहारिणी, 'अहाच्छदा' यथाच्छन्दा=
स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससक्ता'
ससक्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलमामाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य
पर्याय पालयति, पालयित्वा अद्धमाप्सिया संलेखनयाऽऽत्मान 'झूसेइ' जोप-
यति=सेवते, झूसित्ता=जोपयित्वा त्रिशद् भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेएइ'
छिनत्ति, छित्ता तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽ प्रतिक्रान्ता कालमासे
काल कृत्वा चमरचञ्चाया राजधान्या कालावनसके भवने उपपातसभाया
देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसख्येयभाग-
मात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई ।
कुशीला बन गई-संज्वलन कपाय के उदय होने से उत्तरगुणों की
विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानु-
सार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह
यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई । गृहस्थ आदि जनों के अधिक परि-
चयजन्य प्रेमबन्धन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने
इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और
(पाउणिक्ता) पालन कर (अद्धमाप्सियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ,
झूसित्ता तीस भक्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणा
लोइय अपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए
कालवड्डिएस जबणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूमतारिए अगुल-

विहारिणी थई गइ सभ थारी पालन करवाभा शिथिलतावाणी गताववा लागी-
अवसन्न विहारिणी थई गइ कुशीला थई गइ, संज्वलन कपायने उदय
होवाथी उत्तर गुणोनी विराधना करवा लागी, कुशील विहारिणी थई गइ
अने पोतानी धम्म सुज्ज भागोनी कल्पना करीने तेभा प्रवृत्त थवा लागी
अथी ते यथाच्छन्द विहारिणी पणु भनी गइ गृहस्थ वगेरे लोकोना वधारे
परता परिचयजन्य प्रेमबन्धनथी पोताना आचार पालनभा शिथिल थई गइ
तेछे आ प्रभाछे धखा वषो सुधी श्रामण्य-पर्यायनु पालन कथुं अने
(पाउणिक्ता) पालन करीने

(अद्धमाप्सियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भक्ताइ अणसणाए
अणालोइयअपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

सम्पेक्ष्य कल्पे यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाटिपकं' मत्पेक्षम्-उपाश्रयं गृह्णाति । तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकामायात्, 'अणोहट्टिया' अनवधट्टिका यद्वन्त्रा प्रवृत्तिप्रतिरोधकामायात्, अतएव 'सच्छन्दमई' स्वच्छन्दमतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धारयति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा । ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था-गाढकारणविना नित्यपिण्डभोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अयमग्रा समाचारीपालनेऽवसी

द्य हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ । इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया । विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई । (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छन्दमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाळदा अहाळदविहारी, ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सा माण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह विना रोक टोक, यद्वन्त्रा प्रवृत्ति करने लग गई । इच्छानुसार चार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई । उठने बैठने एवं सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिञ्चित कर वहाँ उठने बैठने एवं स्वाध्याय करने लगी । इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई । समाचारी

भील उपाश्रयमा जाती रहूँ आ प्रमाणे तेणु मनमा विचार कर्यो विचार करीने ते भीने दिवसे सवार यथा ७ सूर्योदय यथा णाढ भील उपाश्रयमा जाती रहूँ

(तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छन्दमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा दा अहाळद विहारी ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ)

तथा ते शोक-टोक विना स्वच्छन्द यद्यने प्रवृत्ति करवा लागी छंछा भुञ्ज वारवार डाय-पग धोवा लागी, उठवा-बैसवा अने सूवाना स्थानने तेमज स्वाध्याय भूमिने पडेवेथी ७ पाष्ठी वडे सिञ्चित करीने तथा उठवा बैसवा तेमज स्वाध्याय करवा लागी आ जतनी स्वच्छन्द प्रवृत्तिथी ते काली आर्या पासत्था-गाढ कारण पणर नित्य पिंड बोडन' 'त्य

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुशीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-
कपायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, 'अहाच्छदा' यथाच्छन्दा=
स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता'
ससत्ता गृहस्थादिप्रेमयन्त्रिनेन शिथिलमामाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य
पर्याय पालयति, पालयित्वा अर्द्धमाप्सिया सलेखनयाऽऽत्मानं 'झूसेइ' जोष-
यति=सेवते, झूसित्ता=जोषयिता त्रिशद भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेणइ'
छिनत्ति, छित्ता तरय रथानस्य अनालोचिताऽ प्रतिक्रान्ता कालमासे
काल कृत्वा चमरचञ्चाया राजधान्या कालावतसके भवने उपपातसमाया
देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽमंख्येयभाग-
मात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई ।
कुशीला बन गई-संज्वलन कपाय के उदय होने से उत्तरगुणों की
विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानु-
सार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-हमलिये वह
यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई । गृहस्थ आदि जनों के अधिक परि-
चयजन्य प्रेमबधन से अपने आचार पालन में शिथिल पनी हुई उसने
इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और
(पाउणित्ता) पालन कर (अर्द्धमाप्सियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ,
झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेणइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणा
लोइय अपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए
कालवडिहस भवणे उववायम माण देवसयणिज्जसि देवदूमतस्सि अगुल-

विहारिणी यथं गच्छ सम आरी पालन करवाभा शिथिलतावाणी जातावभा लागी-
अवसन्न विहारिणी यथं गच्छ कुशीला यः गच्छ, संज्वलन कपायने उदय
होवाथी उत्तर गुणोनी विराधना करवा लागी, कुशील विहारिणी यथं गच्छ
अने पोतानी छच्छा भुज्ज भागोनी कल्पना करीने तेभा प्रवृत्त यथा लागी
अथी ते यथाच्छन्द विहारिणी पणु गनी गच्छ गृहस्थ वगेरे लोकोना वधाइ
पस्ता परिचयजन्य प्रेमबधनी पोताना आचार पालनभा शिथिल यथं गच्छ
तेछे आ प्रभाछे धणु वथी सुधी आभइय-पर्यायनु पालन कयुं अने
(पवणित्ता) पालन करीने

(अर्द्धमाप्सियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए
छेणइ छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

સમ્પ્રેક્ષ્ય કલ્પે યાત્ સૂર્યે જગતિ 'પાટિણ્' પ્રત્યેકમ્-ઉપાશ્રય યદ્વાતિ । તથા
 ચલુ સા 'અણિવારિયા' અણિવારિતા-નિવારકાભાવાત્, 'અણોહદ્વિયા' અન-
 વધદ્વિકા યદ્વજ્ઞા પ્રવૃત્તિમતિરોધકાભાવાત્, અતएव 'સચ્છંદમર્દ' સચ્છંદ-
 મતિઃ અમીક્ષ્ણમમીક્ષ્ણ દસ્તૌ ધાયતિ યાત્-આસ્તે વા શેતે વા નિષેધયતિ વા ।
 તતઃ ચલુ સા કાત્રી આર્યા 'પાસત્યા' પાર્શ્વસ્થા-ગાઢકારણંવિના નિત્યપિન્ડ
 ભોક્ત્રી, અતएव પાર્શ્વસ્થવિહારિણિ, 'ઓસળ્લા' અગમત્તા સમાચારીપાલનેઽવસી

દય હો જાવેગા-દૂસરે ઉપાશ્રય મેં ચલી જાકું । હસ પ્રકાર કા ઉસને
 અપને મન મેં વિચાર ક્રિયા । વિચાર કરકે ફિર વહ દૂસરે દિન પ્રાતઃ
 કાલ હોતે હી સૂર્યોદય હોને પર દૂસરે ઉપાશ્રય મેં ચલી ગઈ । (તત્થળં
 સા અણિવારિયા અણોહદ્વિયા સચ્છંદમર્દ અમિક્ષણ ૨ હૃથે ધોવેહ,
 જાવ આસયહ વા સયહ વા ણીસેહેહ વા-તएण સા કાલી અજ્ઞા પાસત્યા
 પાસત્યવિહારી ઓસળ્લા ઓસળ્ણવિહારી, કુસીલા કુસીલવિહારી,
 અહાઠદા અહાઠદવિહારી, સસત્તા સસત્તવિહારી ઘટ્ટણિ વાસાણિ સા
 માળ્ણપરિયાગં પાઠગહ) વર્હા વહ વિના રોક ટોક, યદ્વજ્ઞા પ્રવૃત્તિ કરને
 લગ ગઈ । હજ્ઞાનુસાર ચાર ૨ હાથ પૈર આદિ ધોને લગ ગઈ । ઊઠને
 બેઠને એવ સોને કે સ્થાન કો તથા સ્વાધ્યાય ભૂમિ કો પહિલે સે હી પાની
 સે સિશ્ચિત કર વહા ઊઠને બેઠને એવ સ્વાધ્યાય કરને લગી । હસ તરહ
 કી સચ્છંદ પ્રવૃત્તિ સે વહ કાલી આર્યા પાસત્યા-ગાઢકારણ કે વિના
 નિત્ય પિન્ડ ભોક્ત્રી-બન ગઈ, પાર્શ્વસ્થ વિહારિણી હો ગઈ । સમાચારી

ખીન્ન ઉપાશ્રયમા જતી રહુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કયો વિચાર
 કરીને તે ખીન્ને દિવસે સવાર થતા જ સૂર્યોદય થયા બાદ ખીન્ન ઉપાશ્રયમા જતી રહી

(તત્થળં સા અણિવારિયા અણોહદ્વિયા સચ્છંદમર્દ અમિક્ષણ ૨ હૃથે
 ધોવેહ, જાવ આસયહ વા સયહ વા ણીસેહેહ વા તएण સા કાલી અજ્ઞા પાસત્યા
 પાસત્યવિહારી ઓસળ્લા ઓસળ્ણવિહારી કુસીલા કુસીલવિહારી અહા વા અહાઠદ
 વિહારી સસત્તા સસત્તવિહારી ઘટ્ટણિ વાસાણિ સામાળ્ણપરિયાગ પાળ્ણહ)

ત્યા તે રાક-ટોક વિના સ્વચ્છંદ થઈને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી ઇચ્છા
 મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઊઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને
 તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિશ્ચિત કરીને ત્યા ઊઠવા
 બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી આ જાતની સ્વચ્છંદ પ્રવૃત્તિથી તે
 કાલી આર્યા પાસત્યા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિન્ડ ભોક્ત્રી

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुशीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-
कपायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, 'अहाच्छदा' यथाच्छन्दा=
स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता'
ससत्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलमामाचारीप्रवृत्ता सती गृहनि वर्पाणि श्रामण्य
पर्याय पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिया संश्लेषणाऽऽत्मान 'झूसेइ' जोष
यति=सेवते, झूसित्ता=जोषयिता त्रिशद भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेणइ'
छिनत्ति, छित्ता तरय रथानस्य अनालोचिताऽ प्रतिक्रान्ता कालमासे
काल कृत्वा चमरचञ्चाया राजधान्या कालावतसके भवने उपपातसमाया
देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवृत्ताच्छादिते अङ्गुलस्याऽमख्येयभाग-
मायापवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना । ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई ।
कुशीला बन गई-संज्वलन कपाय के उदय होने से उत्तरगुणों की
विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानु-
सार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह
यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई । गृहस्थ आदि जनों के अधिक परि-
चयजन्य प्रेमबन्धन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने
इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और
(पाउणिक्ता) पालन कर (अर्द्धमासियाए सछेहणाए अत्ताण झूसेइ,
झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेणइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणा
लोइय अपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचच्चाए रायहाणीए
कालवडिणस भवणे उववायम माण देवसयणिज्जसि देवदूमतएण अगुल-

विहारिणी वर्ष गद्य सप्त चारी पालन करवाभा शिथिलतावाणी गताववा लागी-
अवसन्न विहारिणी वर्ष गद्य कुशीला थल गद्य, संज्वलन कपायने उदय
छोवाथी उत्तर गुणोनी विराधना करवा लागी, कुशील विहारिणी थल गद्य
अने पोतानी छच्छा मुज्जम मार्गनी कल्पना करीने तेमा प्रवृत्त थवा लागी
अथी ते यथाच्छन्द विहारिणी पणु गनी गद्य गृहस्थ वगेरे लोकोना वधादे
पस्ता परिचयजन्य प्रेमबन्धनी पोताना आचार पालनमा शिथिल थल गद्य
तेणे आ प्रमाणे घण्टा वर्षो सुधी श्रामण्य-पर्यायनु पालन करु' अने
(पाउणिक्ता) पालन करीने

(अर्द्धमासियाए सछेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए
छेणइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अनालोइयअपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

પપન્ના=તટકાલસમુત્પન્નાસતી પશ્ચવિધપર્યાપ્ત્યા યથામૂર્ચામઃ=મૂર્ચામદેવત્વ,
'જાત્ર માસામણપજ્જતીઞ' માપામન પર્યાપ્ત્યા-યાત્ર-આહારપર્યાપ્ત્યા ૧,
શરીરપર્યાપ્ત્યા ૨, ઇન્દ્રિયપર્યાપ્ત્યા ૩, આનમાણપર્યાપ્ત્યા ૪, માપામન પર્યાપ્ત્યા
૫, પર્યાપ્તિમાત્ર ગચ્છતિ । પર્યાપ્તિગ્ન્યશ્ચાલે દેવાનામાહારશરીરાદિપર્યાપ્તિસમાપ્તિ
કાલાન્તરાપેક્ષયા માપામન પર્યાપ્ત્યોઃ સ્તોત્રકાલાન્તરતયા તથોરેકત્વેન વિવક્ષ
ણાત્ પર્યાપ્તીનાં પશ્ચવિધત્વમ્ । તતઃ સ્વલ્પ સા કાલી દેવી ચત્સણા સામાનિક-
સાહસ્રીનાં યાત્ર-અન્યેષા ચ મહુના કાલાવતસક્રમચનવાસિનામસુરકુમારણા

સસ અસલ્પેજ્ઞહ, ભાગમેત્તાણ ઓગાહણાણ કાલીદેવીત્તણ ઉવવણ્ણા)
અર્ધમાસ કી સલ્પેખના સે ઉસને અપની આત્મા કો યુક્ત ક્રિયા । હસ
પ્રકાર ઉસને અનશનો દ્વારા ૩૦ ભક્તો કા જ્ઞેદન કરને પર ભી હસ સ્થાનકી
આલોચના નહી કી ઓર ન વહ ઉન અતિચારો સે પીઢે હી રટી-અતઃ
અનાલોચિત અપ્રતિક્રાન્ત યનરુર વહ જય હસ કાલ અવસર-કાલ કર
અમરચપા નામ કી રાજધાની મેં, કાલાવતસક્ર ભવનમેં, ઉપાતાતસભામેં
દેવદૂષ્યવસ્ત્રસે આચ્છાદિતદેવશયનીય'શય' ઉપર અગુલકે અસલ્પ્યાત્વે
માત્ર કી અવગાહના સે કાલી દેવી કે,રૂપ મેં ઉત્પન્ન હો ગઈ (તણ સા
કાલીદેવી અહુણોવવણ્ણા સમાણી પચવિહાણ પજ્જત્તીણ જહા સૂરિયામો
જાવ માસામણપજ્જત્તીણ ૦ । તણ સા કાલીદેવી ચઉણ્હં સમાણિ ય
સાહસ્રી ઞ અણ્ણેસિં ચ મહુણ કાલવહેસક્રમવણવાસીણ અસુરકુમારણ

અચાણ રાયહાણીણ કાલવહિં સણ ભવણે ઉત્તવાયસભાણ દેવસયણિજ્ઞસી દેવદૂસ
તરિણ અગુલકસ અસલ્પેજ્ઞહ, ભાગમેત્તાણ ઓગાહણાણ કાલીદેવીત્તણ ઉવવણ્ણા)
તેણે અર્ધમાસની સલ્પેખનાથી પોતાના આત્માને યુક્ત કર્યા આ પ્રમાણે
તેણે અનશનો વડે ૩૦ ભક્તોનું જ્ઞેદન કરીને પણ તે સ્થાનની આયોચના કરી
નહિ અને તે અતિચારોના આચરણથી પણ અટકી નહિ એથી અનાલોચિત
અપ્રતિક્રાત થઈને તે જ્યારે કાળ અવસરે કાળ કરીને અમરચ આ નામની
રાજધાનીમા કાલાવતસક્ર ભવનમા, ઉપાતાતસભામા દેવદૂષ્ય વસ્ત્રથી આચ્છાદિત
દેવશનીય ઉપર આગળીઓના અમ જ્યાતમા માત્રની અવગાહનાથી કાલી દેવીના
રૂપમા ઉત્પન્ન થઈ ગઈ

(તણ સા કાલી દેવી અહુણોવવણ્ણા સમાણી પચવિહાણ પજ્જત્તીણ
જહા સૂરિયામો જાવ માસામણપજ્જત્તીણ ૦ । તણ સા કાલી દેવી ચઉણ્હં સામા
ણિવસહસ્રીણ જાવ અણ્ણેસિં ચ મહુણ કાલવહેસક્રમવણવાસી ઞ અસુરકુમા
રાણ દેવાણ ય દેવીણય આદેવચ જાવ વિહરહ)

દેવાના ચ દેવીના ચ ' આહેવચ ' આધિપત્ય=સ્વામિત્વ કુર્વન્તીપાલયન્તી યાવદ્ વિહરતિ ।

અર્થ=ઉક્તપ્રકારેણ સ્વલુ હે ગૌતમ ! કાલ્યા દેવ્યા સા દિવ્યા દેવદ્વિઃ ૩, લગ્ના, પ્રાણા, અભિસમન્વાગતા ।

ગૌતમઃ પૃચ્છતિ-કાલ્યા સ્વલુ હે મદન્ત ! દેવ્યાસ્તત્ર ' કેવલ્ય ' ક્રિયન્ત

દેવાણ ય દેવીણ ય આહેવચ્ચ જાચ વિહરત્) હસ પ્રકાર વહ કાલી દેવી અમી અમી ઉત્પન્ન હોકર પાચ પ્રકાર કી પર્યાસિયોં સે પર્યાસ યની હૈ । પર્યાસિયા ૬ હોતી હૈ પરન્તુ યહા પર જો વે પાચ કી સલ્યા મેં નિર્દિષ્ટ હુઈ હૈ-ઉસકા કારણ યહ હૈ કિ પર્યાસિ કે ઘઘકાલ મેં દેવોં કે આહાર, શરીર આદિ પર્યાસિયોં કે સમાસિકાલ કી અપેક્ષા ભાપા ઓર મનઃ પર્યાસ કા સાથ સાથ ઘઘ હોતા હૈ, હસલિયે હન દોનો કો એક રૂપ સે યહા વિવક્ષિત ક્રિયા ગયા હૈ । વે પર્યાસિયાં હસ પ્રકાર હૈ- (૧) આહારપર્યાસિ (૨) શરીર પર્યાસિ (૩) ઇન્દ્રિયપર્યાસિ (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસપર્યાસિ (૫) ભાપા એવં મનઃ પર્યાસિ । વહ કાલી દેવી ચાર હજાર સામાનિક દેવોકા યાવત્ ઓર દુસરે અનેક કાલાવતસક ભવનવાસી અસુરકુમાર દેવો કા દેવિયો કા આધિપત્ય કર રહી હૈ । (એવ સ્વલુ ગોચમા । કાલીએ દેવીએ સા દિવ્યા દેવદ્વી ૩ લક્ષ્મણા અભિસમણ્ણા ગયા,

આ પ્રમાણે તે કાલી દેવી હમણા જ ઉત્પન્ન થઇને પાચ પ્રકારની પર્યાસિઓથી પર્યાસ બની છે પર્યાસિઓ છ હોય છે પણ અહીં જે પાચની સખ્યામા જ બતાવવામા આવી છે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે પર્યાસિના બધકાલમા દેવોના આહાર, શરીર વગેરે પર્યાસિઓના સમાસિકાળની અપેક્ષા ભાપા અને મન પર્યાસિનુ એકી સાથે બધ હોય છે એથી આ બનેને અહીં એક રૂપમા જ બતાવવામા આવી છે તે પર્યાસિઓ આ પ્રમાણે છે- (૧) આહાર પર્યાસિ, (૨) શરીર પર્યાસિ, (૩) ઇન્દ્રિય પર્યાસિ, (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસ પર્યાસિ, (૫) ભાપા અને મન પર્યાસિ તે કાલી દેવી ચાર હજાર સામાનિક દેવો ઉપર યાવત્ બીજા પણ ઘણા કાલાવતસક ભવનવાસી અસુર કુમાર દેવો, દેવીઓ ઉપર શાસન કરી રહી છે

(એવ સ્વલુ ગોચમા । કાલીએ દેવીએ સા દિવ્યા દેવિદ્વી ૩ લક્ષ્મણા અભિસમણ્ણાગયા, કાલીએ જ મતે ! દેવીએ કેવલ્ય કાલ ઠિઠિ પળ્ણત્તા ? ગોચમા હજ્જાઈ પલિઓવમાઈ ઠિઠિ પળ્ણત્તા)

पपन्ता=तत्कालसमुत्पन्तासती पञ्चविधयापर्याप्त्या यथामूर्ध्यामः=मूर्ध्यामदेववत्,
 'जाव भासामणपज्जत्तीण' भापामन पर्याप्त्या-यावत्-आहारपर्याप्त्या १,
 शरीरपर्याप्त्या २, इन्द्रियपर्याप्त्या ३, आनमाणपर्याप्त्या ४, भापामन पर्याप्त्या
 ५, पर्याप्तिभाव गच्छति । पर्याप्तिग्रन्थकाले देवानामाहारशरीरादिपर्याप्तिसमाप्ति
 कालान्तरापेक्षया भापामन पर्याप्त्योः स्तोकरूपाग्रन्तरतया तयोरेकत्वेन विवक्ष
 णात् पर्याप्तीना पञ्चविधत्वम् । ततः खलु सा काली देवी चतसृणा सामानिक-
 साहस्रीणां यावत्-अन्येषा च गृह्णां कालावतसरूपमनवासिनामसुरकुमारणा

हस असखेज्जइ, भागमेत्ताण ओगाहणाण कालीदेवीसए उववण्णा)
 अर्द्धमास की सलेखना से उसने अपनी आत्मा को युक्त किया । इस
 प्रकार उसने अनशनों द्वारा ३० भक्तों का छेदन करने पर भी उस स्थानकी
 आलोचना नहीं की और न वह उन अतिचारों से पीछे ही हटी-अतः
 अनालोचित अप्रतिक्रान्त चनकर वह जय उस काल अवसर-काल कर
 चमरचपा नाम की राजधानी में, कालावतसक भवनमें, उपातातसभामें
 देवदृश्यवस्त्रसे आच्छादित देवशयनीय 'शय्या' ऊपर अगुलके असत्प्यातवे
 मात्र की अवगाहना से काली देवी के रूप में उत्पन्न हो गई (तएण सा
 कालीदेवी अहुणोववण्णा समानी पचविहाण पज्जत्तीए जहा सूरियाभो
 जाव भासामणपज्जत्तीए ०) तएण सा कालीदेवी चउण्ह समानि य
 साहस्सी ण अण्णेसि च गृह्णां कालवड्डेसकभवणवासीण असुरकुमाराण

चचाए रायहाणीए कालवड्डि सए भवणे सनवायसभाए देवसयणिज्जघी देवदूस
 तरिए अगुलस असखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीसए उववण्णा)

तेछे अर्द्धमासनी सलेखनाथी पोताना आत्माने युक्त कर्यो आ प्रभाछे
 तेछे अनशनों वडे ३० भक्तोनु छेदन करीने पछु ते स्थाननी आयेथना करी
 नडि अने ते अतिचारेना आचरेणुथी पछु अटकी नडि अथी अनालोचित
 अप्रतिक्रान्त थधने ते ब्यारे काण अवसरे काण करीने अभरय आ नाभनी
 राजधानीमा कालावत सक भवनमा, उपातात सभामा देवदृश्य वस्त्रथी आच्छादित
 देवशनीय उपर आगणीओना अस भ्यातमा मात्रनी अवगाहनागी काली देवीना
 रूपमा उत्पन्न थध गध

(तएण सा काली देवी अहुणोववण्णा समानी पचविहाए पज्जत्तीए
 जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए० । तएण सा काली देवी चउण्ह सामा
 जिवसाहस्सीण जाव अण्णेसि च गृह्णां कालवड्डेसकभवणवासी ण असुरकुमा
 राण देवाण य देवीणय आहेवच जाव बिहरइ)

श्रीसुधर्मास्वामी प्राह-एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्-मोक्ष सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्य अयमर्थ = पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः । त्तिनेमि ' इति व्रतीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०४ ॥

॥ धर्मकृत्याना प्रथमवर्गस्य प्रथमाध्ययनं समाप्तम् ॥

विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगी और वही से सिद्ध होगी। अब सुधर्मा स्वामी श्री जम्बू ! स्वामी से कहते हैं कि हे जम्बू ! मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने उन्हीं के मुख से सुनकर यह तुमसे कहा है ॥ सूत्र ४ ॥

—:प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्त —

महाविदेह क्षेत्रमा उत्पन्न थये अने त्यावी ज जिद्ध थगे हवे सुधर्मा स्वामी श्री जम्बू ! स्वामीने कहे छे के छे जम्बू ! मुक्तिप्राप्त श्रमण भगवान् महावीर प्रथम वर्गना प्रथम अध्ययनना आ पूर्वोक्त इये अर्थ प्रज्ञप्त कथी छे आवु हु तेमना श्री भुष्यथी सासणीने तमने कही गयो छु ॥ सूत्र ४ ॥

“ प्रथम वर्गनु प्रथम अध्ययन समाप्त ”

કાલ સ્થિતિ પ્રજ્ઞતા ? મગવાનપાદ-હે ગૌતમ ! ' અદ્વાજ્જાહ ' અર્દનૃતીયે=સાદે
દે પલ્યોપમે સ્થિતિ : પ્રજ્ઞતા ।

ગૌતમ : પૃચ્છતિ-કાલી હે મદન્ત ! દેવી તસ્માદેવજોઠાદ્ અનન્તરમ્=આયુ
ર્ભવસ્થિતિસ્થાનન્તર ' ઉચ્ચટ્ટિતા ' ઉદ્ગૃત્ય=નિસ્સૃત્ય કુત્ર ગમિષ્યતિ કુત્ર-
ઉત્પત્સ્યતે ? ।

મગવાનાદ-હે ગૌતમ ! સા કાલી દેવી દેવલોકાન્ન્યુત્તરા મહાવિદેહે ચે
ઉત્પથ સેત્સ્યતિ, ।

કાલી૯ ણ મતે ! દેવી૯ કેવહ્ય કાલ ઠિઈ પગગ્ગા ? ગોયમા અદ્વાહ
જજાહ પલિઓચમાઈ ઠિઈપગગ્ગા) હસ તરહ સે હે ગૌતમ ! કાલી દેવી
ને વહ દિવ્ય દેવદિં ૩, અર્જિત કી હે સ્વાધીન કી હે ઓર ઉસે અપને
ઉપભોગ કે યોગ્ય ચનાયા હે ! અવ ગૌતમ પુન પ્રમુ સે પૂઝતે હે-કિ હે
મદત ! કાલીદેવી કી કિતની સ્થિતિ હે ? ઉત્તર મેં પ્રમુ ને ઉનસે કહા-હે
ગૌતમ ! કાલીદેવી કી સ્થિતિ અદાઈ પલ્ય કી (પ્રજ્ઞસ હુઈ) હે (કાલી
૯ મતે ! દેવી તાઓ દેવલોગાઓ અણતર ઉચ્ચટ્ટિતા કહિં ગચ્છહિહ, કહિં
ઉચ્ચવજ્જિહિહ, ? ગોયમા ! મહાવિદેહેવાસે સિજ્જિહિહ એવ સ્વલુ જબૂ !
સમણેણં જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પગ્ગસે
ત્તિવેમિ, ધમ્મકહાણ પદમજ્ઞયણ સમત્ત) હે મદત ! કાલીદેવી ઉસ
દેવલોક સે આયુ એવં ભવસ્થિતિ કે ક્ષય કે અનન્તર નિકલકર કહા
જાવેગી, કહા ઉત્પ ન હોગી ? હસ ગૌતમ કે પ્રશ્ન કા ઉત્તર પ્રમુ ને ઉ
હસ પ્રકાર દિયા-ગૌતમ ! વહ કાલી દેવી દેવલોક સે વહ કર મ

આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીએ તે દિવ્ય દેવદિં ૩ પ્રાપ્ત કરી
છે સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને ચોતાને માટે ઉપલોગ થોગ બનાવી
હવે ગૌતમ ફરી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભદ્રન્ત ! કાલી દેવીની સ્થિતિ કે
જવાબમા પ્રભુએ તેમને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીની સ્થિતિ અદી પલ્ય
(પ્રજ્ઞસ થઈ) છે

(કાલી૯ મતે ! દેવી તાઓ દેવલોગાઓ અણતર ઉચ્ચટ્ટિતા કહિ ગચ્છિ
હિહ, કહિ ઉચ્ચવજ્જિહિહ ? ગોયમા ! મહાવિદેહે વાસે સિજ્જિહિહ, એવ સ્વલુ
જબૂ ! સમણેણં જાવ સપત્તેણ પદમસ્સ વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ અયમદ્દે પગ્ગસે
ત્તિ વેમિ, ધમ્મકહાણ પદમજ્ઞયણ સમત્ત)

હે ભદ્રન્ત ! કાલી દેવી તે દેવલોકથી આયુ અને ભવસ્થિતિને પૂરી
કરીને કયા જશે ? કયા ઉત્પન્ન થશે ? આ પ્રમાણે ગૌતમના પ્રશ્નને સાંભળીને
પ્રભુએ ઉત્તરમા તેને કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે કાલી દેવી - - - સ્વાધીન

ધમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામમધેયં સ્થાન સમ્પાત્તેન ધર્મકથાના પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પ્રથમાધ્યયનસ્યાયમર્થઃ=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞસઃ, દ્વિતીયસ્ય સ્વલુ ભદન્ત ! અઞ્ચયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન કોડ્ઠ્યઃ= કો ભાવઃ પ્રજ્ઞસઃ ?

સુધર્માસ્વામીઘાઠ-એવ સ્વલુ હે જમ્બૂઃ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજ-ગૃહ નગરમ્ । ગુણશિલ્ક પૈત્યમ્ । સ્વામી ભગવાન મહાવીરઃ સમવસ્રતઃ । પરિપ

પદમસ્ત વગસ્ત પદમઞ્જયણસ્ત અયમદ્વે પળ્લવે વિઙ્ગયસ્ત ણ ભત્તે ! અઞ્જયણસ્ત સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્વે પળ્લવે ? એવં સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણ સિલ્લ પેઢ્ઢ સામી સમોસદે) યદિ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો જુકે હૈ વર્મ્મકથાકે પ્રથમ વર્ગ કે પ્રથમ અધ્ય-યન કા યહ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ-તો હે ભદન્ત ! દ્વિતીય અધ્યયન કા ડન્હી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કર જુકે હૈ કયા ભાવ અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ ? હસ પ્રકાર જમ્બૂ સ્વામી કે પૂઝને પર સુધર્મા સ્વામી ડનસે કહતે હૈ કિ હે જમ્બૂ ! સુનો -તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ-ડસ કાલ ઓર ડસ સમય મેં રાજગૃહ નામ કા નગર થા । ડસમેં ગુણશિલ્ક નામ કા ઉદ્યાન થા । ડસમેં મહાવીર સ્વામી સમવસરે ।-(પરિસા નિગયા-જાવ પજ્ઞુવાસહ,

વગસ્ત પદમઞ્જયણસ્ત અયમદ્વે પળ્લવે વિઙ્ગયસ્ત ણ ભત્તે ! અઞ્જયણસ્ત સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્વે પળ્લવે ? એવં સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લ પેઢ્ઢ સામી સમોસદે)

જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધુ છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જ બૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાલળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જમ્બૂ ! સાલળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ગુણશિલ્ક નામે ઉદ્યાન હતું તેમાં મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

(પરિસા નિગયા-જાવ પજ્ઞુવાસહ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાઈ દેવી

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अय-
मट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भग-
वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एव खलु
जंवू । तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए
चेइए सामी समोसठे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण
कालेण तेण समएणं राई देवीचमरचच्चाए रायहाणीए एव
जहा काली तहेव आगया णट्ठविहि उवदसेत्ता पडिगया
भंतेत्ति भगवं गोयमा ! पुढवभवपुच्छा, एवं खलु गोयमा ।
तेण कालेण तेणं समएण आमलकप्पा णयरी अबसालवणे
चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई
दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव
निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत
काहिति । एवं खलु जंवू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स वीयज्झयण समत्त ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइण भंते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपूच्छति—यदि खलु हे भदंत ।

—:द्वितीय अध्ययन प्रारम्भः—

—:जइणं भंते ! समणेण इत्यादि ।

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण

गीष्णु अध्ययन प्रारम्भ —

जइण भंते ! समणेण इत्यादि—

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मास्वामीने पूछे छे के (भंते) हे भदंत !

(जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण

पढमस्स

શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાન સમ્પ્રાપ્તેન ધર્મકથાના પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પ્રથમાધ્યયનસ્યાયમર્થઃ=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞસઃ, દ્વિતીયસ્ય સ્વલ્પ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ= કો ભાવઃ પ્રજ્ઞસઃ ?

સુધર્માસ્વામીપ્રાદ-એવ સ્વલ્પ હે જમ્બૂઃ ! તરિમન્ કાલે તરિમન્ સમયે રાજ-ગૃહ નગરમ્ । ગુણશિલ્લક ચૈત્યમ્ । સ્વામી ભગવાન મહાવીરઃ સમવસ્રસઃ । પરિપ

પદમસ્સ વગસ્સ પદમજ્જયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લણ્ણે વિહયસ્સ ણ ભત્તે ! અજ્જયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણં કે અદ્દે પળ્લણ્ણે ? એવં સ્વલ્પ જબ્બુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણ સિલ્લે ચેહ્ણે સામી સમોસદ્દે) યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો જુકે હે ધર્મકથાકે પ્રથમ વર્ગ કે પ્રથમ અધ્ય-યન કા યદ્દ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ-તો હે ભદન્ત ! દ્વિતીય અધ્યયન કા ઝન્હીં શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કર જુકે હૈં કયા ભાવ અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ ? હસ પ્રકાર જબ્બુ સ્વામી કે પૂછને પર સુધર્મા સ્વામી ઉનસે કહતે હૈં કિ હે જબ્બુ ! સુનો -તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ-ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નામ કા નગર થા । ઉસમેં ગુણશિલ્લક નામ કા ઉદ્યાન યા । ઉસમેં મહાવીર સ્વામી સમવસરે ।-(પરિસા નિગ્ગયા-જાવ પજ્જુવાસદ્દ,

વગસ્સ પદમજ્જયણસ્સ અયમદ્દે પળ્લણ્ણે વિહયસ્સ ણ ભત્તે ! અજ્જયણસ્સ સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણં કે ૦ અદ્દે પળ્લણ્ણે ? એવં સ્વલ્પ જબ્બુ ? તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લે ચેહ્ણે સામી સમોસદ્દે)

જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હું ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધું છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જ બૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાલણીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જ બૂ ! સાલણો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમા ગુણશિલ્લક નામે ઉદ્યાન હતું તેમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

નિગ્ગયા-જાવ પજ્જુવાસદ્દ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાઈ દેવી

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अय-
मट्ठे पणत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भग-
वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पणत्ते ? एव खलु
जंबू । तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए
चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण
कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव
जहा काली तहेव आगया णट्ठविहिं उवदसेत्ता पडिगया
भंतेत्ति भगवं गोयमा ! पुब्बभवपुच्छा, एव खलु गोयमा ।
तेण कालेण तेणं समएण आमलकप्पा णयरी अबसालवणे
चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई
दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव
निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत
काहिति । एवं खलु जंबू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स वीयज्झयण समत्त ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदंत ।

—द्वितीय अध्ययन प्रारम्भः—

—जइणं भते ! समणेण इत्यादि ।

टीकार्थः—जंबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण

णीजु' अध्ययन प्रारम्भ —

जइण भंते ! समणेण इत्यादि—

टीकार्थः—जंबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछे छे के (भंते) हे भदंत ।

(जइण समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण

पढमस्स

શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ સિદ્ધિગતિનામમધેય સ્થાન સમ્પાત્તેન ધર્મકથાના પ્રથમસ્ય વર્ગસ્ય પ્રથમાધ્યયનસ્યાયમર્થઃ=પૂર્વોક્તો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ, દ્વિતીયસ્ય ચ્છલુ ભદન્ત ! અધ્યયનસ્ય શ્રમણેન ભગવતા મહાવીરેણ યાવત્ મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન કોઽર્થઃ= કો ભાવઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ?

સુધર્માસ્વામીપ્રાહ-એવ ચ્છલુ હે જમ્બુઃ ! તરિમન્ કાલે તરિમન્ સમયે રાજ-ગૃહ નગરમ્ । ગુણશિલક ચૈત્યમ્ । સ્વામી ભગવાન મહાવીરઃ સમવસ્યતઃ । પરિપ

પદમસ્ત વગસ્ત પદમજ્જયણસ્ત અયમદ્દે પળ્લન્તે વિદ્યસ્ત ણ ભત્તે ! અજ્ઞયણસ્ત સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લન્તે ? એવ ચ્છલુ જમ્બુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણ સિલ્લ ચેદ્દે સામી સમોસદ્દે) યદિ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હો જુકે હૈં ધર્મકથાકે પ્રથમ વર્ગ કૈ પ્રથમ અધ્ય-યન કા યદ્દ પૂર્વોક્ત રૂપ સે અર્થ પ્રરૂપિત ક્રિયા હૈં-તો હે ભદન્ત ! દ્વિતીય અધ્યયન કા ઉન્દી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને જો કિ મુક્તિ કો પ્રાપ્ત કર જુકે હૈં કયા ભાવ અર્થ પ્રતિપાદિત ક્રિયા હૈં ? હસ પ્રકાર જમ્બુ સ્વામી કૈ પૂઠને પર સુધર્મા સ્વામી ઉનસે કહતે હૈં કિ હે જમ્બુ ! સુનો -તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈં-ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નામ કા નગર થા । ઉસમેં ગુણશિલક નામ કા ઉદ્યાન યા । ઉસમેં મહાવીર સ્વામી સમવસરે ।-(પરિસા નિગ્ગયા-જાવ પજ્જુવાસદ્દ,

વગસ્ત પદમજ્જયણસ્ત અયમદ્દે પળ્લન્તે વિદ્યસ્ત ણ ભત્તે ! અજ્ઞયણસ્ત સમણેણ ભગવયા મહાવીરેણ જાવ સપત્તેણ કે અદ્દે પળ્લન્તે ? એવ ચ્છલુ જમ્બુ ? તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે ગુણસિલ્લ ચેદ્દે સામી સમોસદ્દે)

જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તેા હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધું છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ-અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જ જૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાલળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જ જૂ ! સાલળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું તેમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

(પરિસા નિગ્ગયા-જાવ પજ્જુવાસદ્દ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાઈ દેવી

अथ द्वितीयमध्ययन प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अय-
मट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भते ! अज्झयणस्स समणेणं भग-
वया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु
जवू । तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए
चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण
कालेण तेण समएण राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव
जहा काली तहेव आगया णट्टविहि उवदसेत्ता पडिगया
भंतेत्ति भगवं गोयमा ! पुड्वभवपुच्छा, एव खलु गोयमा !
तेण कालेण तेण समएण आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे
चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई
दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव
निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत
काहिति । एव खलु जवू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स वीयज्झयण समत्तं ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदत् ।

—द्वितीय अध्ययन प्रारभः—

—जइणं भते ! समणेण इत्यादि ।

टीकार्थ —जवू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे
'भदत् ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण

शील्य अध्ययन प्रारंभ —

जइण भते ! समणेण इत्यादि—

टीकार्थ—जवू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी ने पूछे छे के (भते) हे भदत् ।

(जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण

पढमस्स

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वम् = पार्श्वप्रभो ममवमरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव
काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरवाङ्मुक्ता. तदेव सर्वं यावत्-सर्वदुःखाना-
मन्तं हरिष्यति ।

दारिया पामस्स मयोमरणं राई दारिया जहेव काली- तहैव निक्खंता,
तहेवमरीर पाउमिया त चेव सव्व जाव अत काहिड एव खलु जन्तु ।
चिडयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान्
महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस
प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी
नगरी थी । उसमें आम्रजाल्पन नामका उद्यान था । नगरीके राजा का
नाम जितशत्रु था । वहां रत्नि नामका एक गाथापति रहता था । उस
की भार्या का नाम रात्रिश्री था । इन दोनों के रात्रि नाम की एक
पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को
प्राप्त हो गई थी ।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वर उद्यान में आने पर
भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई । अतः वह
माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े टाठ घाट के साथ
शिविका में बैठकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये । वहा वह
दीक्षित हो गई । वीरे २ वह शरीर वाङ्मुक्ता बन गई । जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खता, तहेव शरीरपाउमिया त चेव सव्व जाव अत
काहिड एव खलु जन्तु ! चिडयज्झयणस्स निक्खेवओ)

तेना गया आह श्रमण भगवान् महावीरने गौतमे रात्रि देवीना पूर्व
लवणी विगत पृथ्वी प्रभुओ तेमने आ प्रभाओ कहुं के के गौतम ! ते काणे
अने ते अमये आमलकल्पा नामे नगरी હતી તેમા આમ્રજાલ્પન નામે
ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું ત્યા રાત્રિ નામે એક
ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનું નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ જાનેને રાત્રિ
નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુને ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને
પ્રાપ્ત થઈ તેમજ ત્યા ઉદ્યાનમા પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ
સંપાદીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઈ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ
પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાઓ
તેને પાલખીમા બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યા તે દીક્ષિત થઈ ગઈ
ધીમે ધીમે તે પણ શરીર વાકુશિકા બની ગઈ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા
થઈને શરીર વાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

निर्गता यास्तु भगवन्त पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' राई ' रात्रिः-
रात्रिनाम्नी देरी चमरचञ्चायां राजधान्याम्, एव यथा काली तथैव-आगता,
नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता । ' भते त्ति ' हे भदन्त ! इति सम्बोध्य भगवान्
गौतमः ' पुण्वभवपुच्छा ' पूर्वभवपुच्छा रात्रिं देव्या पूर्वभवपुच्छति । भगवान्
प्राह-एव खलु हे गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये आमलकण्या नगरी,
आम्रशालवन चैत्यम्, जितशयू राजा, रात्रिर्गाथापतिः, रात्रिर्भीमायां, तयोः

तेण काळेण तेण समएणं राई देरी चमरचञ्चाए रायहाणीए एव जहा
काली-तहेव आ गया नट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया) प्रभु का आगमन
सुनकर नगर निवासिनी समस्त जनता उन प्रभु के दर्शन करने और
उनसे धर्मोपदेश सुनने के लिये उस गुणशिलक उद्यान में आई।
प्रभु ने सब को धर्म का उपदेश दिया। सयने प्रभु की पर्युपासना
की। उस काल में और उस समय में रात्रिनाम की देवी चमर-
चचाराजधानी में रहती थी-जैसे वहां काली देवी रहती थी। सो
वह भी प्रभु का आगमन सुनकर चरा आई। वहां आकर उसने नाट्य
विधि दिखलाई-और दिखलाकर फिर वह वहा से वापिस अपने स्थान
पर चली गई। (भते त्ति भगव गोयमा ! पुण्वभवपुच्छा-एव खलु
गोयमा ! तेण काळेण तेण समएण आमलकण्या णयरी अबसाल
वणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई

चमरचचाए रायहाणीए एव जहा काली-तहेव आगया नट्टविहिं उवदसेत्ता
पडिगया)

प्रभुतु आगमन साक्षणीने नगरना भधा नागरिकजनो ते प्रभुना दर्शन
करवा भाटे तेभञ्ज तेभनी भासेथी धर्मपिडेया सालगवा भाटे ते शुशुशिलक
उद्यानभा आग्या प्रभुओ भधाने धर्मनो उपदेश आयेओ भधाओ प्रभुनी
पर्युपासना करी ते काणे अने ते समये रात्रि नाओ देवी चमरचचा रात्रि-
धानीभा काळी देवीनी जेम रहेती छती ते प्रभुतु आगमन साक्षणीने त्या
आवी त्या आवीने तेणु नाट्यविधि गतावी अने गतावीने ते त्याथी
पाछी जाती रही

(भते त्ति भगव गोयमा ! पुण्वभवपुच्छा-एव खलु गोयमा ! तेणं कालेण
तेण समएण आमलकण्या णयरी अबसालवणे चेइए-जियसत्तू राया-राई
गाहावई, रायसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्त दारिया

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभोः समनमरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरवाकुशिका, तदेव सर्वं यावत्-सर्वदुःखानामन्त करिष्यति ।

दारिया पासस्स सघोमरण राई दारिया जहेव काली- तहैव निक्खता, तहेवसरीर घाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जवू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकलपा नामकी नगरी थी । उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था । नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था । वहां रात्रि नामका एक गाथापति रहता था । उसकी भार्या का नाम रात्रिश्री था । इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी ।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहां उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई । अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े टाठ वाट के साथ शिषिका में बैठकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये । वहां वह दीक्षित हो गई । धीरे २ वह शरीर वाकुशिका बन गई । जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खता, तहेव सरीरघाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जवू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

तेना गया णाह श्रमण भगवान् महावीरने गौतमे रात्रि देवीना पूर्व-
सरणी विगत पूछी प्रभुओ तेमने आ प्रभाणु कळुं के डे गौतम । ते काणे
अने ते समये आमलकलपा नामे नगरी હતી તેમા આમ્રશાલવન નામે
ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું ત્યા રાત્રિ નામે એક
ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનું નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ બંનેને રાત્રિ
નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુને ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને
પ્રાપ્ત થઈ તેમજ ત્યા ઉદ્યાનમા પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ
સાંભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઈ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ
પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાઓ
તેને પાલખીમા બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યા તે દીક્ષિત થઈ ગઈ
ધીમે ધીમે તે પણ શરીર વાકુશિકા બની ગઈ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા
થઈને શરીર વાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

निर्गता यावत् भगवन्तं पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' राई ' रात्रिः-
रात्रिनाम्नी देवी चमरचच्चाया राजधान्याम्, एवं यथा कानी तथैव-आगता,
नाट्यविधिप्रदर्श्य प्रतिगता । ' भते त्ति ' हे भदन्त ! इति सम्बोध्य ममवान्
गौतमः ' पुन्वभवपुच्छा ' पूर्वमवपृच्छा रात्रि देव्या पूर्वमव पृच्छति । ममवान्
माह-एव खलु हे गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये आमलकण्या नगरी,
आम्रशालवन चैत्यम्, जितशत्रू राजा, रात्रिर्गायापतिः, रात्रिश्रीर्भार्या, तयोः

तेण कालेण तेण समएण राई देवी चमरचच्चाए रायहाणीए एव जहा
काली-तहेव आ गया नटविहिं उवदसेत्ता पडिगया) प्रभु का आगमन
सुनकर नगर निवासिनी समस्त जनता उन प्रभु के दर्शन करने और
उनसे धर्मोपदेश सुनने के लिये उस गुणशिलक उद्यान में आई।
प्रभु ने सब को धर्म का उपदेश दिया। सबने प्रभु की पर्युपासना
की। उस काल में और उस समय में रात्रिनाम की देवी चमर-
चच्चारजधानी में रहती थी-जैसे वहां काली देवी रहती थी। सो
वह भी प्रभु का आगमन सुनकर वहां आई। वहां आकर उसने नाट्य
विधि दिखलाई-और दिखलाकर फिर वह वहां से वापिस अपने स्थान
पर चली गई। (भते त्ति भगव गोयमा ! पुन्वभवपुच्छा-एव खलु
गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण आमलकण्या णयरी अबसाल
वणे चेइए-जियसचू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई

चमरचच्चाए रायहाणीए एव जहा काली-तहेव आगया नटविहिं उवदसेत्ता
पडिगया)

प्रभुनु आगमन सालणीने नगरना गधा नागरिकण्णे ते प्रभुना दर्शन
करवा भाटे तेभण तेभनी पासैथी धर्मोपदेश सालणवा भाटे ते शुशिलक
द्वानभा आव्या प्रभुणे गधाने धर्मेणे उपदेश आव्ये गधाणे प्रभुनी
पर्युपासना करी ते काले अने ते समये रात्रि नामे देवी चमरचच्चा राज-
धानीमा कावी देवीनी नेम रहेती छती ते प्रभुनु आगमन सालणीने त्या
आवी त्या आवीने तेणे नाट्यविधि गतावी अने गतावीने ते त्याथी
पाछी नती रही

(भते त्ति भगव गोयमा ! पुन्वभवपुच्छा-एव खलु गोयमा ! तेण कालेण
तेण समएण आमलकण्या णयरी अबसालवणे चेइए-जियसचू राया-राई
गाहावई, रायसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्स दारिया

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वमोः समन्तरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरवाकुशिका, तदेव सर्वं यावत्-मर्वदु खानामन्तं करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली- तहैव निक्खंता, तहेवसरीर वाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जवू । विइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पुत्रा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी । उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था । नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था । वहां रात्रि नामका एक गाथापति रहता था । उसकी भार्या का नाम रात्रिश्री था । इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतियोध को प्राप्त हो गई थी ।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहां उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतियोध को प्राप्त हो गई । अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े टाठ वाट के साथ शिविका में बैठकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये । वहां वह दीक्षित हो गई । धीरे २ वह शरीर वाकुशिका बन गई । जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खंता, तहेव सरीरवाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जवू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

तेना गया आइ श्रमणु लगवान भडावीरने गौतमे रात्रि देवीना पूर्व-लवनी विगत पूछी प्रभुओ तेमने आ प्रभाओ ढुं डे डे गौतम । ते काणे अने ते सभये आभलकल्पा नामे नगरी હતી તેમાં આમ્રશાલવન નામે ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું ત્યાં રાત્રિ નામે એક ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનું નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ બંનેને રાત્રિ નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુનો ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને પ્રાપ્ત થઈ તેમજ ત્યાં ઉદ્યાનમાં પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઈ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાએ તેને પાલખીમાં બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યાં તે દીક્ષિત થઈ ગઈ ધીમે ધીમે તે પણ ચરીર વાકુશિકા બની ગઈ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા થઈને શરીર વાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

‘ एवं खलु जम्बू ! ’ इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य निष्केपकः=उपसंहारः=समाप्तिवाक्यप्रत्ययोऽत्र घोष्य ॥ सू० ५ ॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययन समाप्तम् ॥-१-२ ॥

કાલી દારિકા આર્યા હોઠર શરીર વાકુશિકા વનગઈ થી । હસકે શબ જૈસી સ્થિતિ કાલી આર્યા કી છુઈ-વહો સબ સ્થિતિ હસ રાત્રિ દારિકા કી ખી છુઈ-હસ પ્રકાર સબ સચન્ય યહાં પર હસકે ત્રિવિધ મેં લગાહેના ચાહિયે ઓર યહ સચન્ય “મહાવિદેહ મેં ઉત્પન્ન હોકર યહ સમસ્ત બુઃલો કો અન્ત કરેગી” યહ તક જાનના ચાહિયે । હસ પ્રકાર હે જન્મ । યહ પ્રથમવર્ગ કે દ્વિતીય અધ્યયન કા ઉપસહાર હે ॥ સૂ० ૫ ॥

પ્રથમવર્ગ કા દ્વિતીય અધ્યયન સમાપ્ત ॥

યહ તેવીજ સ્થિતિ તે રાત્રિદારિકાની પણ યહ અહીં આ પ્રમાણે કાલિદાસિકાનો બધો સબધ આના વિષે સમજ લેવો બેધએ અને તે સબધ “મહાવિદેહમાં ઉત્પન્ન થઈને તે બધા હુન્ગોનો અન્ત કરશે” અહીં સુધી સમજવો બેધએ. આ પ્રમાણે હે જન્મ ! પ્રથમ વર્ગના બીજા અધ્યયનનો આ ઉપસહાર છે સૂ ૫

“પ્રથમ વર્ગનું બીજું અધ્યયન સમાપ્ત”

અથ તૃતીયમધ્યયનમ્

મૂલમ્—જહ્ ણં ભંતે । તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ, एवं खलु जंबू । रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, णवरं आमलकप्पा नयरी रयणी गाहावई रयणी-सिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अंत काहिइ ३ । एवं विज्जू वि आमलकप्पा नयरी विज्जुगाहावई विज्जु-सिरीभारिया विज्जुदारिया सेस तहेव । ४ एव मेहा वि आम-लकप्पाए नयरीए मेहेगाहावई मेहसिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ५ । एवं खलु जंबू । समणेणं जाव सपत्तेणं धम्म-कहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पणत्ते ॥ सू० ६ ॥

टीका—' जહ્ણ મતે ' इत्यादि । यदि खलु भदन्त ! इत्यादि तृतीयाध्ययनस्य उत्क्षेपकः=जम्बूपञ्चादिरूपः मारम्भवाक्यप्रत्ययोऽत्राच्यः । सुधर्मास्वामी कथ

॥ તૃતીય અધ્યયન પ્રારંભ ॥

(જહ્ણ મતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ) इत्यादि ॥

टीकार्थः—(जह्ण मते ! तद्वयज्ज्ञयणस्स उक्खेवओ) अथ जंबू स्वामी पुनः पूउते हैं कि हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय अध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है—तो तृतीय अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस तरह से इस तृतीय अध्ययन का जंबू स्वामी का यह प्रश्न आदिरूप वाक्य प्रयन्ध उत्क्षेपक है—प्रारंभक है—इस प्रश्न का उत्तर श्री सुधर्मा स्वामी

ત્રીજી અધ્યયન પ્રારંભ —

‘ જહ્ણ મતે ! તદ્વયજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ ’ इत्यादि—

टीकार्थ—(जह्ण मते ! तद्वयज्ज्ञयणस्स उक्खेवओ) હવે જંબૂ સ્વામી ફરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! ને શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો ત્રીજા અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે આ ત્રીજા અધ્યયનનો જંબૂ સ્વામીનો આ પ્રશ્ન વગેરે ૬૫ વાક્ય પ્રયન ઇત્ક્ષેપક છે—પ્રારંભ છે આ પ્રશ્નનો ઉત્તર શ્રી સુધર્માસ્વામી આ પ્રમાણે આપે છે કે—

‘ एवं खलु जम्बू ! ’ इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य निक्षेपकः—उपसंहारः—
समाप्तिशब्दप्रयुक्तोऽत्र धोय ॥ सू० ५ ॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययन समाप्तम् ॥—१—२ ॥

काली दारिका आर्या होकर शरीर चाकुशिका बन गई थी। इसके बाद
जैसी स्थिति काली आर्या की हुई—वही सब स्थिति इस रात्रि दारिका
की भी हुई—इस प्रकार सब सवन्ध यहां पर इसके विषय में लगायेना
चाहिये और वह सवन्ध “महाविदेह में उत्पन्न होकर यह समस्त दुःखों
को अन्त करेगी” यहां तक जानना चाहिये। इस प्रकार है जन्म। यह
प्रथमवर्ग के द्वितीय अध्ययन का उपसंहार है ॥ सू० ५ ॥

प्रथमवर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

यद्यं तेवीज स्थिति ते रात्रिदारिकानी पञ्च यद्यं अर्द्धा आ प्रभाञ्च अत्रिदारिकानो
जधा स जध आना विधे समञ्च देवे नोदधञ्च अने ते स जध “महाविदेहमा
उत्पन्न यधने ते जधा हुञ्चोने अत करे” अर्द्धा सुधी समञ्च देवे नोदधञ्च
आ प्रभाञ्च डे जन्म ! प्रथम वर्गना जीज अध्ययनने आ उपसंहार छे सू ५

“प्रथम वर्गनु जीज अध्ययन समाप्त”

અથ તૃતીયમધ્યયનમ્

મૂલ્મ્—જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ, એવ યલ્લુ
જંબૂ ! રાયગિહે ણયરે ગુણસિલણ્ણે ચેદ્ધણ્ણે એવં જહેવ રાઈ તહેવ
રયણી વિ, ણવરં આમલકપ્પા નયરી રયણી ગાહાવર્ઠે રયણી-
સિરી ભારિયા રયણી દારિયા સેસ તહેવ જાવ અંત કાહિદ્ધિ
૩ । એવ વિજ્જુ વિ આમલકપ્પા નયરી વિજ્જુગાહાવર્ઠે વિજ્જુ-
સિરીભારિયા વિજ્જુદારિયા સેસ તહેવ । ૪ એવ મેહા વિ આમ-
લકપ્પાણ્ણે નયરીણ્ણે મેહે ગાહાવર્ઠે મેહસિરી ભારિયા મેહા દારિયા
સેસં તહેવ ૫ । એવ યલ્લુ જવૂ ! સમણેણં જાવ સપત્તેણં ધમ્મ-
કહાણં પઢમસ્સ વગ્ગસ્સ અયમદ્ધે પણત્તે ॥ સૂ. ૬ ॥

ટીકા—‘ જહ્ ણં ભંતે ’ ઇત્યાદિ । યદિ યલ્લુ ભદન્ત ! ઇત્યાદિ તૃતીયા યયનસ્ય
ઉત્તેષકા=જમ્બૂમશ્વાદિરૂપઃ મારમ્ભવાન્યપ્રવચ્ચોડયમાચ્ચઃ । સુધર્માસ્વામી- કથ

॥ તૃતીય અધ્યયન પ્રારભ ॥

(જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ) ઇત્યાદિ ॥

ટીકાર્થઃ—(જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ) અથ જંબૂ
સ્વામી પુનઃ પૂછતે હૈં કિં હે ભદન્ત ! યદિ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને
ઘૃતીય અધ્યયન કા યહ પૂર્વોક્તરૂપ સે અર્થ નિરૂપિત કિયા હૈ—તો
તૃતીય અધ્યયન કા ઉન્નેને કયા અર્થ પ્રતિપાદિત કિયા હૈ ? હસ તરહ
સે હસ તૃતીય અધ્યયન કા જવૂ સ્વામી કા યહ પ્રશ્ન આદિરૂપ વાક્ય
પ્રવચ્ચ ઉત્તેષક હૈ—પ્રારમ્ભક હૈ—હસ પ્રશ્ન કા ઉત્તર શ્રી સુધર્મા સ્વામી

ત્રીજી અધ્યયન પ્રારભ —

‘ જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ ’ ઇત્યાદિ—

ટીકાર્થઃ—(જહ્ ણં ભંતે ! તદ્વ્યજ્ઞયણસ્સ ઉક્ખેવઓ) હવે જ બૂ સ્વામી
ફરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! ને શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે ત્રીજી અધ્યયનનો
આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો ત્રીજી અધ્યયનનો તેમણે શો
અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે આ ત્રીજી અધ્યયનનો જ બૂ સ્વામીનો
આ પ્રશ્ન વગેરે રૂપ વાક્ય પ્રબધ ઉત્તેષક છે—પ્રારભ છે આ પ્રશ્નનો ઉત્તર
શ્રી સુધર્માસ્વામી આ પ્રમાણે આપે છે કે —

यति-एव खलु हे जम्बू ! राजगृहं नगरं, गुणशिलक चैतयम् । एव यथैव रात्रि
स्त्वथैवरजनी अपि, नगरम् आमलकल्या नगरी, रजनीगाथापति, रजनीश्रीमार्ग्या,
रजनी दारिका । शेष तथैव । यावत्-सर्वदुःखानामन्त करिष्यति ॥

॥ इति प्रथममार्गस्य तृतीयाध्ययनम् ॥ १-३ ॥

इस प्रकार से देते हैं-(एव खलु जम्बू ! रात्रिगृहे नगरं गुणशिलक
चेद्वै एव जहेव राई तहेव रयणी चि, नगर आमलकल्या नगरी, रयणी
गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अत
काहिइ ३) जम्बू ! सुनो-उस काल में और उस समय में राजगृह नाम
का नगर था । उसमें गुणशिलक नामका उद्यान था । जिस प्रकार रात्रि
प्रभु का आगमन सुनकर, गुणशिलक उद्यान में गई थी उसी तरह
रजनी भी वहाँ गई उसने प्रभु के मुख से धर्म का उपदेश सुना । सुन
कर ससार शरीर और भोगों से वह विरक्त हो गई । दीक्षा लेने का
अपना भाव उसने प्रभु से निवेदित किया । प्रभुने यथासुख देवानुप्रि
ये कहकर उसके भाव की सराहना करते हुए 'शुभस्य शीघ्र' करने की
अपनी अनुमति प्रकट की-तब यह घर आई और मातासे अपना
दीक्षा लेने का विचार प्रकट किया-इत्यादि सब सन्ध काली दारिका
के कथानक अनुसार रजनी के साथ लगा लेना चाहिये । जब रजनी
देवी प्रभु की वदना करनेके लिये गुणशिलक उद्यान में आई और वहाँ

(एव खलु जम्बू ! रात्रिगृहे नगरं गुणशिलक चेद्वै एव जहेव राई तहेव
रयणी चि नगर आमलकल्या नगरी, रयणी-गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी
दारिया सेस तहेव जाव अत काहिइ ३) ।

हे जम्बू ! सावणो, ते काणे अने ते समये राजगृह नामे नगर छठु
तेमा गुणशिलक नामे उद्यान छठु जेभ रात्रि प्रभुनु आगमन सावणीने
गुणशिलक उद्यानमा गछ छती तेमज रजनी पछु त्या गछ तेछे प्रभुना
मुभयौ धर्मने उपदेश सावण्ये । सावणीने ते ससार, शरीर अने लोकोत्थी
विरक्त थ्य गछ तेछे पोताने दीक्षा अछे करवाने लाव प्रभुनी सामे
प्रकट कर्यो प्रभुजे 'यथासुखम्' देवानुप्रिये । उहीने तेमा लावनी सराहना
करी अने शुभ कार्यमा विवज करे नहि अची पोतानी अनुमती द्यावी
त्यारे ते पोताने घर आवी अने मातापितानी सामे दीक्षा अछे करवाने
विचार प्रकट कर्यो-वगेरे यधी विगत काली दारिकानी जेभज रजनीनी सामे
पछु समज देवी जेधजे न्यारे रजनीदेवी प्रभुने वदना करवा भाटे शुभ
शिलक उद्यानमा आवी अने त्या तेछे नाटयविधिनु प्रर्थन त्यारभाइ

‘एव विज्जूवि’ इत्यादि । एव विज्जुदपि । आमलकल्पा नगरी, विज्जु
गाथापति, विज्जु श्रीभार्या, विज्जुदारिका । शेष तथैव ।

इति प्रथमवर्गस्य चतुर्था ययनम् ॥ १-४ ॥

उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बाढ़ में वह जय वहा से प्रभु की
पर्युपासना कर बापिस अपने स्थान पर चली गई-तब प्रभु से गौतम
गणधर ने उसके पूर्वभव पूछे तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-उस
काल और उस समय में आमलक कल्पा नामकी नगरी थी-उसमें
रजनी नामका गाथापति रहता था । रजनी थी उसकी भार्या का नाम
था । इन दोनों के एक पुत्री जिसका नाम रजनी था । उसके विषय का
अवशिष्ट कथानक “समस्त दुःखों का यह अन्त करेगी” यहाँ तक का
काली दारिका के जैसा ही जानना चाहिये ॥ सू० ६ ॥

॥ प्रथम वर्ग का तीसरा अध्ययन समाप्त ॥

एव विज्जूवि आमलकल्पा नगरी विज्जू गाथावई ॥

विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेस तहेव ॥ ४ ॥

एव मेहावि आमलकल्पाए नगरीए मेहे गाथावई ॥

मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेस तहेव ॥ ५ ॥

(एव खलु जव् । समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण पढमस्स वग्ग

प्रभुनी पर्युपासना करीने पाछी पोताना स्थाने जाती रही त्याहे गौतम गण
धरे प्रभुने तेना पूर्वभवो पूछना त्याहे प्रभुने तेने आ प्रभावे कहु के ते
काणे अने ते समये आमलकल्पा नामे नगरी હતી, તેમા રજની નામે
ગાથાપતિ રહેતો હતો, રજની શ્રી તેની પત્નીનું નામ હતું તેઓ બંનેને એક
પુત્રી હતી-જેનું નામ રજની હતું એના વિષેની બાકીની બધી વિગત
“સમસ્ત દુખોના તે અન્ત કરશે” અહીં સુધીની ગાલી દારિકાની જેમજ
સમજી લેવી જોઈએ ॥ સૂત્ર ૬ ॥

“ પ્રથમ વર્ગનું ત્રીજું અધ્યયન સમાપ્ત ॥

(એવ વિજ્જૂવિ આમલકળ્પા નગરી વિજ્જુ ગાથાવઈ ।

વિજ્જુસિરીભાર્યા વિજ્જુદારિયા, સેસ તહેવ ॥ ૪ ॥

એવ મેહા વિ આમલકળ્પાએ નગરીએ મેહે ગાથાવઈ ।

મેહાસિરી ભારિયા મેહા દારિયા સેસ તહેવ ॥ ૫ ॥

(એવ खलु जव् । समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण पढमस्स वग्गस्स अय-

महे पणत्ते ६)

‘એવ મેદારિ’ इत्यादि । एव मेघाऽपि । आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथापतिः, मेघश्रीभार्या, मेघा दारिका । शेष तथैव ।

શ્રીસુધર્માસ્વામીમાદ-एव खलु हे जम्बू ! भ्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य उर्गस्यायमर्थः प्रशस्तः ॥ ५०६ ॥

॥ इति प्रथमउर्गस्य पञ्चमाध्ययनम् ॥ १-५ ॥

અથ દ્વિતીયો યર્ગઃ પ્રારંભ્યતે-‘જડ્ડળ મંતે’ इत्यादि ।

मूलम्-जड़णं भंते । समणेण जाव संपत्तेणं दोब्बस्स वग्म-
स्स उक्खेवओ, एव खलु जंघू । समणेणं जाव संपत्तेणं दोब्बस्स

સ્સ અયમઠ્ઠે પળ્લણ્ણે ૬) इसी तरह का कथानक विद्युत्के विषय में भी जानना चाहिये । आमलकल्पा नगरी विद्युत् गाथापति विद्युत् श्री भार्या इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका । इस तरह नाम आदि में ही परिवर्तन हुआ है । अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नहीं है । मेघ के विषय में भी यही बात जाननी चाहिये । आमलकल्प नगरी, मेघ गाथापति, मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वस्तुव्य-विषय में नहीं । इस प्रकार यहां तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं । विद्युद्दारिका का अध्ययन ४ चौथा, एव मेघा दारिका का अध्ययन ५ पंचम है । इस तरह हे जबू । भ्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधिपति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है ?

આ પ્રમાણેનુ જ કથાનક વિદ્યુતતા વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા આ બંનેને ત્યાં વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે રૂઢત નામ વગેરેમાં પરિવર્તન થયું છે અભિધેય વિષયમાં કોઈ પણ બાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમાં પણ નામોમાં જ પરિવર્તન થયું છે-અભિધેય વસ્તુવ્ય વિષયમાં નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પૂરા થઈ ગયા છે વિદ્યુદારિકાનું અધ્યયન થાયું, અને મેઘ દારિકાનું અધ્યયન પાંચમું છે આ પ્રમાણે છે જ બૂ ! ભ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુક્તિ સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂક્યા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ॥ ૬ ॥

वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—सुभा निसुंभा रंभा
निरभा मयणा, जइ ण भते । समणेणं जाव सपत्तेणं धम्मक-
हाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, दोच्चस्स णं
भंते । वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते ? एव खलु
जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहेणयरे गुणसिलए चेइए
सामी समोसठे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेण
तेणं समएणं सुभादेवी वलिचंचाए रायहाणीए सुभवडेसए
भवणे सुभसि सीहासणसि कालीगमएणं जाव णट्ठविहि उव-
दसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्टए
चेइए जियसत्तू राया सुभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुभा
दारिया सेसं जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओवमाई ठिई
एवं खलु जवू । निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसावि चत्तारि
अज्झयणा सावत्थीए नवरं मात्ता पिया सरिसिनामया, एवं
खलु जवू । निक्खेवओ विईयवग्गस्स२ ॥ सू० ७ ॥

॥ वीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन
द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामीप्राह—एव खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्

—:द्वितीयवर्गप्रारम्भः—

‘ जइण भते । समणेण ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—जवू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (भते ।
जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

णीजे वर्गं प्रारम्भ—

‘ जइण भते । समणेण ’ इत्यादि—

टीका—जवू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछे छे के—

(भते । जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

‘ એવ મેઘાપિ ’ इत्यादि । एव मेघाऽपि । आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथा-
पतिः, मेघश्रीभार्या, मेघा दारिका । एव तथैव ।

श्रीसुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बूः । श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन
धर्मकथानां प्रथमस्य उर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः ॥ सु० ६ ॥

॥ इति प्रथमउर्गस्य पञ्चमाध्ययनम् ॥ १-५ ॥

अथ द्वितीयो उर्गः प्रारभ्यते-‘ जङ्ग मते ’ इत्यादि ।

मूलम्-जङ्ग मते । समणेणं जाव सपत्तेण दोब्बस्स वग्म-
स्स उक्खेवओ, एव खल्लु जંजू । समणेणं जाव सपत्तेण दोब्बस्स

स्स अयमઢે પળ્લત્તે ૬) इसी तरह का कथानक विद्युत् के विषय में भी
जानना चाहिये। आमलकल्पा नगरी विद्युत् गाथापति विद्युत् श्री भार्या
इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका । इस तरह नाम आदि में ही परिवर्तन
हुआ है । अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नहीं है । मेघ के विषय
में भी यही बात जाननी चाहिये । आमलकल्प नगरी, मेघ गाथापति,
मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में
परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वक्तव्य-विषय में नहीं । इस प्रकार यहां
तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं । विद्युद्दारिका का
अध्ययन ४ चौथा, एव मेघा दारिका का अध्ययन ५ पंचम है । इस
तरह हे जंबू । श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधि-
पति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है ?

આ પ્રમાણેજ જ કથાનક વિદ્યુતતા વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ
આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા આ બંનેને ત્યાં
વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ક્રૂત નામ વગેરેમાં પરિવર્તન થયું છે અભિધેય
વિષયમાં કોઈ પણ બાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી
લેવી જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા
આ પ્રમાણે આ કથાનકમાં પણ નામોમાં જ પરિવર્તન થયું છે-અભિધેય
વક્તવ્ય વિષયમાં નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાચ અધ્યયનો
પૂરા થઈ ગયા છે વિદ્યુદારિકાનું અધ્યયન ચોથું, અને મેઘ દારિકાનું અધ્યયન
પાંચમું છે આ પ્રમાણે છે જ બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેઓ મુક્તિ
સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂક્યા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ
પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૬ ॥

वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, तं जहा—सुभा निसुंभा रंभा
 निरंभा मयणा, जइ ण भंते । समणेण जाव सपत्तेण धम्मक-
 हाण दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पणत्ता, दोच्चस्स णं
 भंते । वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पणत्ते ? एवं खलु
 जवू । तेण कालेण तेण समएण रायगिहेणयरे गुणसिलए चेइए
 सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण कालेण
 तेण समएण सुंभादेवी वल्लिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेसए
 भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्ठविहि उव-
 दसेत्ता जाव पडिगया, पुठ्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्टए
 चेइए जियसत्तू राया सुभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुंभा
 दारिया सेसं जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओवमाइं ठिई
 एवं खलु जवू । निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसावि चत्तारि
 अज्झयणा सावत्थीए नवर माया पिया सरिसनामया, एवं
 खलु जवू । निक्खेवओ विईयवग्गस्सर ॥ सू० ७ ॥

॥ वीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त । भ्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन
 द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामीमाह—एव खलु हे जम्बू ! भ्रमणेन यावत्

—:द्वितीयवर्गप्रारम्भः—

‘ जइण भंते ! समणेण ’ इत्यादि ।

टीकार्थः—जवू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पृच्छते हैं कि (भंते !
 जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

भीजे वर्ग आरम्भ—

‘ जइण भंते ! समणेण ’ इत्यादि—

टीकार्थः—जवू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछे छे है—

(भंते ! जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

‘ એવ મેઢાપિ ’ ઇત્યાદિ । ણ્ય મેઘાડપિ । આમલકલ્પાયા નગર્યા મેઘો ગાથા પતિઃ, મેઘશ્રીભાર્યા, મેઘા દારિકા । શ્લેષ તથૈવ ।

શ્રીસુધર્માસ્વામીપ્રાહ-એવ ચલુ હે જન્મુઃ ! શ્રમણેન યાત્રુ મોક્ષ સમ્પ્રાપ્તેન ધર્મકથાનાં પ્રથમસ્ય વર્ગસ્વાયમર્થ પ્રગ્લ્ભઃ ॥ મુ. ૬ ॥

॥ ઇતિ પ્રથમવર્ગસ્ય પચ્ચમાધ્યયનમ્ ॥ ૧-૬ ॥

અથ દ્વિતીયો વર્ગઃ પ્રારભ્યતે-‘ જડ્ઙ મતે ’ ઇત્યાદિ ।

મૂલ-જડ્ઙં મંતે । સમણેણ જાત્ર સંપત્તેણ દોઢસ્સ વગ્ગ-સ્સ ઉક્ખેવઓ, એવં ચલુ જન્મુ ! સમણેણં જાત્ર સંપત્તેણં દોઢસ્સ

સ્સ અયમદ્દે પળ્લણ્ણત્તે ૬) ઇસી તરહ કા કથાનક વિશુત્તકે વિષય મેં ભી જાનના ચાહિયે । આમલકલ્પા નગરી વિશુત્ત ગાથાપતિ વિશુત્ત શ્રી ભાર્યા ઇન દોનોં કે યહાં વિશુત્ત દારિકા । ઇસ તરહ નામ આદિ મેં હી પરિવર્તન હુઆ હૈ । અભિધેય વિષય મેં કુઝ અન્તર નહીં હૈ । મેઘ કે વિષય મેં ભી યહી ઘાત જાનની ચાહિયે । આમલકલ્પ- નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘા દારિકા-ઇસ પ્રકાર ઇસ કથાનક મેં ઇન નામોં મેં પરિવર્તન હુઆ હૈ-અભિધેય વસ્તવ્ય-વિષય મેં નહીં । ઇસ પ્રકાર યહા તક પ્રથમ વર્ગ કે ૬, અધ્યયન સમાપ્ત હો જાતે હૈ । વિશુદારિકા કા અધ્યયન ૪ ચૌથા, એવ મેઘા દારિકા કા અધ્યયન ૫ પચમ હૈ । ઇસ તરહ હે જન્મુ ! શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને કિ જો મુક્તિ સ્થાન કે અધિ પતિ ઘન પુકે હૈ ધર્મકથા કે પ્રથમવર્ગ કા યહ અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ ?

આ પ્રમાણેજુ જ કથાનક વિશુત્તા વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, વિશુત ગાથાપતિ અને વિશુત શ્રી ભાર્યા. આ બંનેને ત્યા વિશુત દારિકા આ પ્રમાણે ક્ષત નામ વગેરેમા પરિવર્તન થયું છે અભિધેય વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમા પણ નામોમા જ પરિવર્તન થયું છે-અભિધેય વસ્તવ્ય વિષયમા નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પૂરા થઈ ગય છે વિશુદારિકાનું અધ્યયન ચોથું, અને મેઘ દારિકાનું અધ્યયન પાંચમું છે આ પ્રમાણે હે જન્મુ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર-કે જેઓ મુક્તિ સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂક્યા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ॥ ૬ ॥

खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी=वर्द्धमानस्वामी सनत्कुमार । परिपन्निर्गता यावत्पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुम्भा देवी वलिचञ्चाया राजधान्या शुम्भावतमके भवने शुम्भे सिंहासने ' कालीगमण ' कालीगमेन=काली देवी सदृशपाठेन यावत्-नाट्यविधिगुपदर्श्य यावत्-प्रतिगता । ' पुण्यभवपुच्छा ' पूर्वभवपुच्छा=गौतम-स्वामी शुम्भा देव्या पूर्णपत्र पृच्छति । भगवान् कथयति-श्रावस्ती नगरी । कोष्ठक चैत्यम् । जितशत्रू राजा । शुम्भो गाथापतिः । शुम्भश्रीभार्या । शुम्भा दारिका । शेष यथा काल्या=काली दारिकाया वर्णन तथात्रापि विज्ञेयम् , नगर=विशेस्त्व-

के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-तो हे भदत ! द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उनसे इस प्रकार कहते हैं कि-हे जम्बू !-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था-उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था-। उसमें वर्द्धमान स्वामी आये । प्रभु का आगमन सुनकर वहाँ की समस्त जनता उन्हें वदन के लिये अपने २ स्थान से चल कर उस गुणशिलक उद्यान में आई । प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया परिपद् उपदेश सुनकर प्रभु की यावत् पर्युपासना की । (तेण कालेण तेण समण) उसी काल और उसी समय में (सुभादेवी वलिचञ्चाए रायदाणीए सुभवडेसए भवणे सुभसि सीहा-सणसि कालीगमण जात्र नट्टविहिं उवदसेत्ता जाव पडिगया पुण्यभव पुच्छा, सावत्थी णयरी, कोट्टए चेइए जियमत्तू राया, सुभे गाहावई सुभ

स्थानने प्राप्त करेला श्रवणु भगवान् भडावीरे णीम वर्गना पाय अध्ययने। प्ररूपित कर्था छे, तो छे लहन्त ! णीम वर्गना प्रथम अध्ययनने। तेभणु शे अर्थ प्रतिपादित कर्था छे ?

आ प्रश्नना उत्तरमा श्री सुधर्मा स्वामी तेभने आ प्रभाणु कहे छे के छे जम्बू ! ते काले अने ते समये राजगृह नामे नगर छत्तु तेमा गुणशिलक नामे उद्यान छत्तु तेमा वर्द्धमान स्वामी पधार्या प्रभुनु आगमन सालणीने त्याना पधा नागरिके तेभने वदना करवा माटे चोतचोताने स्थानेथी नीकणीने ते गुणशिलक उद्यानमा आन्ना प्रभुणे पधाने धर्मने उपदेश आय्ये। परिपदे धर्मोपदेश सालणीने प्रभुनी यावत् पर्युपासना करी (तेण कालेण तेण समण) ते काले अने ते समये

(सुभा देवी वलिचञ्चाए रायदाणीए सुभवडेसए भवणे सुभसि सीहासणसि काली गमण जात्र नट्ट विहिं उवदसेत्ता जात्र पडिगया, पुण्यभवपुच्छा सावत्थी णयरी, कोट्टए चेइए जियमत्तू राया, सुभे गाहावई, सुभसिरी भारिया, सुभा-

મોક્ષ સમ્પાપ્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચાધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તથા-શુભા ૧, નિશુભા ૨, રમ્મા ૩, નિરમ્મા ૪, મદના ૫, । યદિ ચ્છલુ હે મદન્ત । શ્રમણેન યોક્તસમ્પાપ્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચ્ચ-અ-ધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, દ્વિતીયસ્ય ચ્છલુ હે મદન્ત । વર્ગસ્ય પ્રથમા યપનસ્ય કોડર્યઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? । સુવર્માસ્વામી પ્રાહ-એવ

જન્નુ ! સમણેણ જાત સપત્તેણ દોઢસસ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લક્કા) હે મદન્ત ! મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને દ્વિતીય વર્ગ કા ઉત્તેપક પ્રારભ કિસ રૂપ સે પ્રરૂપિત ક્રિયા હૈ-તવ સુધર્મા સ્વામી ને ઉનસે કહા-હે જન્નુ ! સુનો યાત્ મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ ઉન શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને હસ દ્વિતીય વર્ગ કે પાંચ અધ્યયન પ્રરૂપિત ક્રિયે હૈં-(ત જહા) વે હસ પ્રકાર હૈં-(સુમા, નિસુમા, રમા, નિરમા મયણા, જહણ મતે । સમણેણ જાત સપત્તેણ ધમ્મકઠાણં દોઢસસ વગ્ગ સ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લક્કા, દોઢસસણ મતે વગ્ગસ્સ પદમઙ્ગયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લક્કે ? એવ ચ્છલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે, ગુણસીલણ વેદ્દ-સામી સમોસદ્દે પરિમા ણિગ્ગયા જાવ પઞ્જુવા સહ) (૧) શુભા, (૨) નિશુભા (૩) રમ્મા, (૪) નિરમા (૫) મદના । અથ જન્નુ સ્વામી પુનઃ સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ હે મદન્ત ! યદિ યાવત્ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને દ્વિતીયવર્ગ

જન્નુ ! સમણેણ જાત સપત્તેણ દોઢસસ વગ્ગસ્સ પચઅઙ્ગયણા પળ્લક્કા)

હે મદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગને ઉત્તેપક-પ્રારભ-તથા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ, તેમને કહ્યું કે હે જન્નુ ! સાબળો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે (ત જહા) તે આ પ્રમાણે છે—

(સુમા, નિસુમા, રમા, નિરમા, મયણા, જહણ મતે ! સમણેણ જાત સપત્તેણ ધમ્મકઠાણં દોઢસસ વગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા પળ્લક્કા, દોઢસસ ણ મતે વગ્ગસ્સ પદમઙ્ગયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લક્કે । એવ ચ્છલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે, ગુણસીલણ વેદ્દ-સામી સમોસદ્દે પરિમા ણિગ્ગયા જાવ પઞ્જુવાસહ)

(૧) શુભા, (૨) નિશુભા, (૩) રમા, (૪) નિરમા, (૫) મદના હવે જન્નુ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે મદન્ત ! જો યાવત્ મુક્તિ

खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी=वर्द्धमानस्वामी सनत्कुमार । परिपन्निगता यावत्पर्युपासते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुम्भा देवी उल्लिख्यया राजधान्या शुम्भावतसके भवने शुम्भे सिंहासने ' कालीगमण ' कालीगमेन=काली देवी सदृशपाठेन यावत्-नाट्यविधिमुपदर्श्य यावत्-प्रनिगता । ' पुण्ड्रभवपुच्छा ' पूर्वभवपुच्छा=गौतम-स्वामी शुम्भा देव्याः पूजय पृच्छति । भगवान् कथयति-श्रावस्ती नगरी । कोष्ठक चैत्यम् । जितशत्रू राजा । शुम्भो गाथापतिः । शुम्भश्रीभार्या । शुम्भा दारिका । शेष यथा काल्या =काली दारिकाया वर्णन तथात्रापि विज्ञेयम् , नगर=विशेस्त्व-

के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-तो हे भदन्त ! द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उनसे इस प्रकार कहते हैं कि-हे जम्बू !-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था-उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था-। उसमें वर्द्धमान स्वामी आये । प्रभु का आगमन सुनकर वहाँ की समस्त जनता उन्हें वदन के लिये अपने २ स्थान से चल कर उस गुणशिलक उद्यान में आई । प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया परिपद उपदेश सुनकर प्रभु की यावत् पर्युपासना की । (तेण कालेण तेण समण) उसी काल और उसी समय में (शुभादेवी उल्लिख्यया रायदाणीया शुभवर्द्धेसए भवणे सुभसि सीहा सणसि कालीगमण जाय नट्टविहिं उवदसेत्ता जाव पडिगया पुण्ड्रभव पुच्छा, सावत्थी जयरी, कोट्टए चेइए जियमत्तू राया, सुभे गाहावई सुभ

स्थानने प्राप्त कइला श्रवणु भगवान् भडावीरे णीज वर्गना पाय अध्ययने। प्ररूपित कर्था छे तो हे भदन्त ! णीज वर्गना प्रथम अध्ययनने। तेभए शे अर्थ प्रतिपादित कर्था छे ?

आ प्रश्नना उत्तरमा श्री सुधर्मा स्वामी तेभने आ प्रभाए कडे छे कडे जम्बू ! ते काले अने ते समये राजगृह नामे नगर छत्तु तेमा गुणशिलक नामे उद्यान छत्तु तेमा वर्द्धमान स्वामी पधार्या प्रभुनु आगमन माळणीने त्याना अथा नागरिके तेभने वदना करवा भाटे पोतपोताने स्थानेथी नीकणीने ते गुणशिलक उद्यानमा आन्था प्रभुअे अधाने धर्मने उपदेश आये। परिपदे धर्मोपदेश साळणीने प्रभुनी यावत् पर्युपासना करी (तेण कालेण तेण समण) ते काले अने ते समये

(शुभा देवी उल्लिख्यया रायदाणीया शुभवर्द्धेसए भवणे सुभसि सीहासणसि काली गमण जाय नट्ट विहिं उवदसेत्ता जाव पडिगया, पुण्ड्रभवपुच्छा सावत्थी जयरी, कोट्टए चेइए जियमत्तू राया, सुभे गाहावई, सुभसिरी भारिया, सुभा-

મોક્ષ સંપ્રાપ્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચાધ્યયનાનિ પ્રશ્નતાનિ, તથા-શુભા ૧, નિશુભા ૨, રમ્મા ૩, નિરમ્મા ૪, મદના ૫, । યદિ સત્ત્વ હે ભદન્ત ! શ્રમણેન યોગસંપ્રાપ્તેન દ્વિતીયસ્ય વર્ગસ્ય પચ-અધ્યયનાનિ પ્રશ્નતાનિ, દ્વિતીયસ્ય સ્વલ્પ હે ભદન્ત । વર્ગસ્ય મથગા-ધ્યયનસ્ય કોડર્યઃ પ્રશ્નતઃ ? । સુધર્માસ્વામી પ્રાહ-એવ

જત્તુ । સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ દોઢસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અજ્ઞયણા પળ્લક્કા) હે ભદન્ત ! મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુવ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને દ્વિતીય વર્ગ કા ઉત્તેષક પ્રારભ કિસ રૂપ સે પ્રરૂપિત ક્રિયા હૈ-તથ સુધર્મા સ્વામી ને ઉનસે કહા-હે જત્તુ । સુનો યાત્ત મુક્તિસ્થાન કો પ્રાપ્ત હુવ ઉન શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને હસ દ્વિતીય વર્ગ કે પાંચ અધ્યયન પ્રરૂપિત ક્રિયે હૈ-(તં જહા) વે હસ પ્રકાર હૈ-(સુમા, નિસુમા, રમા, નિરમા મયણા, જહણ ભંતે । સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દોઢસ્સ વગ્ગ-સ્સ પચ અજ્ઞયણા પળ્લક્કા, દોઢસ્સણ ભંતે વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લક્કે ? એવ સ્વલ્પ જત્તુ । તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે, ગુણસીલણ વેહણ-સામી સમોસઢે પરિસા ણિગ્ગયા જાત્ર પજ્જુવા સહ) (૧) શુભા, (૨) નિશુભા (૩) રમ્મા, (૪) નિરમા (૫) મદના, । અવ જત્તુ સ્વામી પુનઃ સુધર્મા સ્વામી સે પૂછતે હૈં કિ હે ભદન્ત ! યદિ યાવત્ મુક્તિ સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુવ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરને દ્વિતીયવર્ગ

જત્તુ ! સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ દોઢસ્સ વગ્ગસ્સ પચઅજ્ઞયણા પળ્લક્કા)

હે ભદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગના ઉત્તેષક-પ્રારભ-ક્રિયા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યું કે હે જત્તુ ! સાભણો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે (તજહા) તે આ પ્રમાણે છે—

(સુમા, નિસુમા, રમા, નિરમા, મયણા, જહણ ભંતે ! સમણેણ જાત્ર સપત્તેણ ધમ્મકહાણ દોઢસ્સ વગ્ગસ્સ પચ અજ્ઞયણા પળ્લક્કા, દોઢસ્સ ણ ભંતે વગ્ગસ્સ પદમજ્ઞયણસ્સ કે અદ્દે પળ્લક્કે । એવ સ્વલ્પ જત્તુ । તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે ણયરે, ગુણસીલણ વેહણ-સામી સમોસઢે પરિસા ણિગ્ગયા જાત્ર પજ્જુવાસહ)

(૧) શુભા, (૨) નિશુભા, (૩) રમા, (૪) નિરમા, (૫) મદના હવે જત્તુ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો યાવત્ મુક્તિ

‘ એવ સેસાત્રિ ’ ઇત્યાદિ-એવ શેષાણ્યપિ=નિશુમ્મા ૧-રમ્મા ૨-નિરમ્મા ૩-મદના ૪ નામકાનિ ચત્વારિ અધ્યયનાનિ શ્રાવસ્ત્યા નગર્યાં વિજ્ઞેયાનિ, નવ રમ્-એતાવાન્ વિશેષઃ-માતર પિતરઃ સદશનામાનઃ દારિકાસદશનામાનઃ, તથાહિ- નિશુમ્માયા માતા નિશુમ્મશ્રી, પિતા નિશુમ્મઃ । રમ્માયા માતા રમ્મશ્રીઃ, પિતા રમ્મઃ । નિરમ્માયા માતા નિરમ્મશ્રીઃ, પિતા નિરમ્મઃ । મદનાયા માતા મદનશ્રીઃ પિતા મદનઃ । એતે સર્વે ગાથાપતયઃ આસન્ ।

एव खलु हे जम्बू । निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मस्थाना द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

કાલીદેવી કા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે । ડસમેં ઓર હસમે કેવલ અન્તર ડતના હી હૈ કિ કાલીદેવી કી સ્થિતિ ૨॥ પલ્થ કી યી ઓર હસ શુભાદેવી કી ૩॥, પલ્થ કી યી । ડસ પ્રકાર હે જમ્બૂ ! હસ દ્વિતીય વર્ગ કે પ્રથમ અ યયન કા યહ નિક્ષેપક હૈ । હસી તરહ નિશુમ્મા, રમ્મા નિરમ્મા ઓર મદના નામ કે ચાર અધ્યયન મી જાનના ચાહિયે । હન મેં વિશેષતા કેવલ ડતની હી હૈ કિ યહાં જો માતા પિતા હૈ વે દારિકા સદશ નામવાલે હૈ-જૈસે નિશુમ્મા કે પિતા કા નામ નિશુમ્મ, માતા કા નામ નિશુમ્મ શ્રી, રમ્માકે પિતા કા નામ રમ્મ, માતાકા નામ રમ્મશ્રી, નિરમ્મા કે પિતા નામ નિરમ્મા માતા કા નામ નિરમ્મશ્રી, મદના કે પિતા કા નામ મદન, ઓર માતાકા નામ મદનશ્રી । યે સઘ હી ગાથા-પતિ હૈ । હસ તરહ યહ દ્વિતીયવર્ગ કા નિક્ષેપક-ડપસહાર-હ ।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

લો ૪ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પલ્થની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પલ્થની હતી આ પ્રમાણે છે જમ્બૂ ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનને આ નિષેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુભા, રભા, નિરભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ બાણી લેવા બેઠાં એમનામા વિશેષતા ડક્તા એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે જેમકે નિશુભાના પિતાનું નામ નિશુભ, માતાનું નામ નિશુભશ્રી, રભા ના પિતાનું નામ રભ, માતાનું નામ રભશ્રી નિરભાના પિતાનું નામ નિરભ, માતાનું નામ નિરભશ્રી, મદનાના પિતાનું નામ મદન અને માતાનું નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિક્ષેપક ડપસહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

યમ્-અસ્યાઃ શુભાદેવ્યાઃ 'અદ્ધુદ્ધાઈ' અર્થં વાતુર્ગાનિ-સાર્દંત્રયાગિ પલ્યોપમાનિ
સ્થિતિરસ્તિ । મુધર્માસ્વામીમાદ-દે જમ્યુ' ! નિક્ષેપકઃ=ઉપહારોઽપ્યયનસ્ય વાચ્યઃ ॥

॥ ઇતિ દ્વિતીયવર્ગસ્ય પ્રથમા યયનમ્ ॥

સિરી ખારિયા સું માદારિયા, સેસ જાળા કાલીળ નવર અદ્ધુદ્ધાઈ પલિઓવ
માઈ ઠિઈ, એવ સલ્લુ જંબૂ ! નિક્ષેવઓ અજ્ઞયણસ્મ એવ સેસા વિ ચ્ચારા
રિઅજ્ઞયણા સાવત્થીળ નવર માયા પિયા સરિસ નામયા એવ સલ્લુ જંબૂ ।
નિક્ષેવઓ નિર્દયવગ્ગસ્સ વીઓ વગ્ગો સમત્તો) શુભાદેવી જો ચલિચ્ચા
નામકી રાજધાની મેં શુભાવતસક નામકે મંદન મેં રહતી થી-ઔર
શુભનામ કે સિંહાસન પર બેઠતી થી-વહ કાલી દેવી કે પ્રકરણ મેં
વર્ણિત પાઠ કે અનુસાર પ્રભુ કે સમીપ ડાકના કરને કે લિયે
આઈ । વહાં ડાકને નાટ્યવિધિકા પ્રદર્શન ક્રિયા થાદમેં ફિર ચ્ચ વહાં સે
પીછે અપને સ્થાન પર ચલી ગઈ । ડાકને ચલે જાને કે યાદ ગૌતમસ્વામી
ને પ્રભુ સે ડાક શુભાદેવી કે પૂર્વમંચ કી પૃચ્છા કી-તવ મગવાન ને
ડાક સે હસ પ્રકાર કહા-શ્રાવસ્તી નામકી નગરી થી । ડાકમેં કોઈક
નામકા ઉદ્યાન થા, । નગરી કે રાજા કા નામ જિતશત્રુ થા ડાકમેં ગાયા
પતિ રહતા થા । જિસકા નામ શુભ થા । હસકી શુભ શ્રી નામ કી
માયી થી । દારિકા કા નામ શુભા થા । હસકે યાદ કા હસકા વર્ણન

દારિયા, સેસ જાળા કાલીળ નવર અદ્ધુદ્ધાઈ, પલિઓવમાઈ ઠિઈ । એવ સલ્લુ જંબૂ ।
નિક્ષેવઓ અજ્ઞયણસ્મ એવ સેસા વિ ચ્ચારિ અજ્ઞયણસ્સ સાવત્થીળ નવર માયા-
પિયા સરિસનામયા, એવ સલ્લુ જંબૂ । નિક્ષેવઓ-નિર્દયવગ્ગસ્સ એવ અજ્ઞ
યણા સમત્તા વીઓ વગ્ગો સમત્તો)

શુભા દેવી-કે જે બલિય થા નામે રાજધાનીમા શુભાવતસક નામના
ભવનમા રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી
દેવીના પ્રકરણમા વર્ણવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વહના કરવા માટે
આવી ત્યા તેણે નાટ્યવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યું ત્યાગ્ણાં તે ત્યાથી પાછી પોતાના
સ્થાને જતી રહી તેમના જતા ગયા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુભા
દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—
શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમા કોઈક નામે ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજા
નામ જિતશત્રુ હતું તેમા શુભ નામે ગાયાપતિ રહેતો હતો શુભશ્રી નામે
તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનુ નામ શુભા હતું ત્યારપછીનુ તેનુ શેષ વર્ણન
કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ તેમા અને આમા તકાવત એટ

‘ એવ સેસાચિ ’ ઇત્યાદિ-એવ શેષાણ્યપિ=નિશુમ્મા ૧-રમ્મા ૨-નિરમ્મા ૩-મદના ૪ નામકાનિ ચત્વારિ અધ્યયનાનિ શ્રાવસ્ત્યા નગર્યા વિજ્ઞેયાનિ, નવ-રમ્-એતાવાન્ વિશેષઃ-માતર પિતરઃ સદૃશનામાનઃ દારિકાસદૃશનામાનઃ, તથાહિ-નિશુમ્માયા માતા નિશુમ્મશ્રી, પિતા નિશુમ્મઃ । રમ્માયા માતા રમ્મશ્રીઃ, પિતા રમ્મઃ । નિરમ્માયા માતા નિરમ્મશ્રીઃ, પિતા નિરમ્મઃ । મદનાયા માતા મદનશ્રીઃ પિતા મદનઃ । એતે સર્વે ગાથાપતયઃ આમન્ ।

એવ સ્મલ્લ હે જમ્બૂ ! નિક્ષેપકો દ્વિતીયવર્ગસ્ય ॥ ૭ ॥

॥ ઇતિ ધર્મગ્યાના દ્વિતીયો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૨ ॥

કાલીદેવી કા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે । ઉસમેં ઓર હસમે કેવલ અન્તર ઇતના હી હૈ કિ કાલીદેવી કી સ્થિતિ ૨॥ પત્ય કી યી ઓર હસ શુભાદેવી કી ૩॥, પત્ય કી યી । હસ પ્રકાર હે જમ્બૂ ! હસ દ્વિતીય વર્ગ કે પ્રથમ અધ્યયન કા યહ નિક્ષેપક હૈ । હસી તરહ નિશુભા, રમ્મા નિરમ્મા ઓર મદના નામ કે ચાર અધ્યયન ભી જાનના ચાહિયે । ઇન મેં વિશેષતા કેવલ ઇતની હી હૈ કિ યહાં જો માતા પિતા હૈ વે દારિકા સદૃશ નામવાલે હૈ-જૈસે નિશુભા કે પિતા કા નામ નિશુમ્, માતા કા નામ નિશુમ્મશ્રી, રમ્માકે પિતા કા નામ રમ્મ, માતાકા નામ રમ્મશ્રી, નિરમ્મા કે પિતા નામ નિરમ્મા માતા કા નામ નિરમ્મશ્રી, મદના કે પિતા કા નામ મદન, ઓર માતાકા નામ મદનશ્રી । યે સર્વ હી ગાથા-પતિ હૈ । હસ તરહ યહ દ્વિતીયવર્ગ કા નિક્ષેપક-ઉપસહાર-હે ।

॥ દ્વિતીયવર્ગ સમાપ્ત ॥

લો ૪ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પત્યની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પત્યની હતી આ પ્રમાણે છે ૪ જમ્બૂ ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનને આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે ૪ નિશુભા, રમ્મા, નિરમ્મા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ બાણી લેવા જોઈએ એમનામા વિશેષતા ઇક્ષ્ત એટલી ૪ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા ૪ નામવાળા છે જેમકે નિશુભાના પિતાનું નામ નિશુભ, માતાનું નામ નિશુભશ્રી, રમ્મા ના પિતાનું નામ રમ્મા, માતાનું નામ રમ્માશ્રી નિરમ્માના પિતાનું નામ નિરમ્મા, માતાનું નામ નિરમ્માશ્રી, મદનાના પિતાનું નામ મદન અને માતાનું નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ ૭ આ પ્રમાણે બીજા વર્ગને નિક્ષેપક ઉપસહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

યમ્-અસ્યાઃ શુભાદેવ્યાઃ 'અદ્ધુદ્વાઈ' અર્ધ ચતુર્થાનિ=સાદ્રવયાગિ પત્ન્યોપમાનિ સ્થિતિરસ્તિ । સુધર્માસ્વામીમાદ-હે જન્મ્ઃ ! નિક્ષેપકઃ=ઉપહારોઽધ્યયનસ્ય વાચ્યઃ ॥

॥ ઇતિ દ્વિતીયવર્ગસ્ય પ્રથમા યયનમ્ ॥

સિરી મારિયા સુમાદારિયા, સેસ જહા કાલી૯ નવર અમુદ્વાઈ પલિઓવ માઈ ઠિઈ, ૯વ ચલુ જંબૂ ! નિક્ષેવઓ અઙ્ગયણસ્સ ૯વં સેસા વિ ચ્ચારિ અઙ્ગયણા સાવત્થી૯ નવર માયા પિયા સરિસ નામયા ૯વ ચલુ જંબૂ ! નિક્ષેવઓ ચિઈયવગ્ગસ્સ બીઓ વગ્ગો સમત્તો) શુભાદેવી જો ચલિચ્ચા નામકી રાજધાની મેં શુભાવતસક નામકે ભવન મેં રહતી થી-ઔર શુભનામ કે સિંહાસન પર બેઠતી થી-વહ કાલી દેવી કે પ્રકરણ મેં વર્ણિત પાઠ કે અનુસાર પ્રભુ કે સમીપ ડનકો વદના કરને કે લિયે આઈ । વહાં ડસને નાટ્યવિધિકા પ્રદર્શન ક્રિયા ચાદમેં ફિર ચ્ચ વહા સે પીછે અપને સ્થાન પર ચલી ગઈ । ડસકે ચ્છે જાને કે યાદ ગૌતમસ્વામી ને પ્રભુ સે ડસ શુભાદેવી કે પૂર્વભવ કી પૃચ્છા કી-તચ મગવાન્ ને ડન સે ઇસ પ્રકાર કહા-આવસ્તી નામકી નગરી થી । ડસમેં કોઠક નામકા ઉદ્યાન થા, । નગરી કે રાજા કા નામ જિતશત્રુ થા ડસમેં ગાથા પતિ રહતા થા । જિસકા નામ શુભ થા । ઇસકી શુભ શ્રી નામ કી આર્યા થી । દારિકા કા નામ શુભા થા । ઇસકે યાદ કા ઇસકા વર્ણન

દારિયા, સેસ જહા કાલી૯ નવર અદ્ધુદ્વાઈ, પલિઓવમાઈ ઠિઈ । ૯વ ચલુ જંબૂ ! નિક્ષેવઓ અઙ્ગયણસ્સ ૯વ સેસા વિ ચ્ચારિ અઙ્ગયણસ્સ સાવત્થી૯ નવર માયા-પિયા સરિસનામયા, ૯વ ચલુ જંબૂ ! નિક્ષેવઓ-ચિઈયવગ્ગસ્સ પચ અઙ્ગયણા સમત્તા બીઓ વગ્ગો સમત્તો)

શુભા દેવી-કે જે બલિચ્ચા નામે રાજધાનીમા શુભાવતસક નામના ભવનમા રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી દેવીના પ્રકરણમા વર્ણવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વદના કરવા માટે આવી ત્યા તેણે નાટ્યવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યું ત્યારબાદ તે ત્યાથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી તેમના જતા રહ્યા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુભા દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે— આવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમા કોઠક નામે ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનું નામ જિતશત્રુ હતું તેમા શુભ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો શુભશ્રી નામે તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનું નામ શુભા હતું ત્યારપછીનું તેનું શેષ વર્ણન કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ તેમા અને આમા તકાવત એટ

‘एव सेसावि’ इत्यादि-एव शेषाण्यपि=निशुम्भा १-रम्भा २-निरम्भा ३-मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्या विज्ञेयानि, नव-
रम्-एतानान् विशेषः-मातर पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामानः, तथाहि-
निशुम्भाया माता निशुम्भश्री, पिता निशुम्भः । रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता
रम्भः । निरम्भाया माता निरम्भश्री, पिता निरम्भः । मदनाया माता मदनश्रीः
पिता मदनः । एते सर्वे गाथापतयः आसन् ।

एव खलु हे जम्बू । निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मस्थाना द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

कालीदेवी का है वैसा ही जानना चाहिये । उसमें और इसमें केवल
अन्तर इतना ही है कि कालीदेवी की स्थिति २॥ पद्य की थी और
इस शुभादेवी की ३॥, पद्य की थी । इस प्रकार हे जम्बू ! इस द्वितीय
वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह निक्षेपक है । इसी तरह निशु भा, रंभा
निरम्भा और मदना नाम के चार अध्ययन भी जानना चाहिये । इन
में विशेषता केवल इतनी ही है कि यहाँ जो माता पिता हे वे दारिका
सदृश नामवाले हैं-जैसे निशु भा के पिता का नाम निशु भ, माता का
नाम निशु भ श्री, रंभाके पिता का नाम रम्भ, माताका नाम रम्भश्री,
निरंभा के पिता नाम निरंभ माता का नाम निरंभश्री, मदना के
पिता का नाम मदन, और माताका नाम मदनश्री । ये सब ही गाथा-
पति हैं । इस तरह यह द्वितीयवर्ग का निक्षेपक-उपसंहार-है ।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

લો જ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પદ્યની હતી અને આ શુભા દેવીની
સ્થિતિ ૩॥ પદ્યની હતી આ પ્રમાણે છે જળૂ । આ બીજા વર્ગના પ્રથમ
અધ્યયનનો આ નિષેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુભા, રભા, નિરભા અને
મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ બાણી લેવા જોઈએ એમનામા વિશેષતા
ફક્ત એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા
છે જેમકે નિશુભાના પિતાનું નામ નિશુભ, માતાનું નામ નિશુભશ્રી, રભા
ના પિતાનું નામ રભ, માતાનું નામ રભશ્રી નિરભાના પિતાનું નામ નિરભ,
માતાનું નામ નિરભશ્રી, મદનાના પિતાનું નામ મદન અને માતાનું નામ
મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિષેપક
લખ્ય રીતે છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

યમ્-અસ્યાઃ શુભાદેવ્યાઃ 'અદ્ધુદ્વાઈ' અર્ધ ચતુર્ગોનિ-સાદ્ગ્રયાગિ પલ્યોપમાનિ
સ્થિતિરસ્તિ । સુધર્માસ્વામીપાદ-દે જમ્નુઃ । નિલ્લેપકઃ=ઉપહારોઽપ્યયનસ્ય રાગ્યઃ ॥

॥ ઇતિ દ્વિતીયવર્ગસ્ય પ્રથમા યયનમ્ ॥

સિરી મારિયા સુંભાદારિયા, સેસ જહા કાલીં નવર અમુદ્વાઈ પલિઓવ
માઈ ઠિઈ, એવ સલ્લ જન્નૂ ! નિલ્લેવઓ અજ્ઞયણસ્મ એવ સેસા વિ ચ્ચસા
રિઅજ્ઞયણા સાવત્થીં નવર માયા પિયા સરિસ નામયા એવ સલ્લ જન્નૂ ।
નિલ્લેવઓ વિર્હયવગ્ગસ્સ વીઓ વગ્ગો સમત્તો) શુભાદેવી જો પલિચ્ચા
નામકી રાજધાની મેં શુભાવતસક નામકે ભવન મેં રહતી થી-ઔર
શુભનામ કે સિંહાસન પર બેઠતી થી-વહ કાલી દેવી કે પ્રકરણ મેં
વર્ણિત પાઠ કે અનુસાર પ્રભુ કે સમીપે ઉનકો વદના કરને કે લિયે
આઈ । વહાં ઉસને નાટ્યવિધિકા પ્રદર્શન કિયા થાદમેં ફિર બદ્ધ વહા સે
પીછે અપને સ્થાન પર ચલી ગઈ । ઉસકે બલે જાને કે થાદ ગૌતમસ્વામી
ને પ્રભુ સે ઉસ શુભાદેવી કે પૂર્વભવ કી પૃચ્છા કી-તબ ભગવાન ને
ઉન સે હસ પ્રકાર કહા-આવસ્તી નામકી નગરી થી । ઉસમેં કોઇક
નામકા ઉદ્યાન થા, નગરી કે રાજા કા નામ જિતશત્રુ થા ઉસમેં ગાથા
પતિ રહતા થા । જિસકા નામ શુભ થા । હસકી શુભ શ્રી નામ કી
માયાં થી । દારિકા કા નામ શુભા થા । હસકે થાદ કા હસકા વર્ણન

દારિયા, સેસ જહા કાલીં નવર અદ્ધુદ્વાઈ, પલિઓવમાઈ ઠિઈ । એવ સલ્લ જન્નૂ !
નિલ્લેવઓ અજ્ઞયણસ્મ એવ સેસા વિ ચ્ચારિ અજ્ઞયણસ્સ સાવત્થીં નવર માયા
પિયા સરિસનામયા, એવ સલ્લ જન્નૂ ! નિલ્લેવઓ-વિર્હયવગ્ગસ્સ એવ અજ્ઞ
યણા સમત્તા વીઓ વગ્ગો સમત્તો)

શુભા દેવી-કે જે બલિચ્ચા નામે રાજધાનીમા શુભાવતસક નામના
ભવનમા રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી
દેવીના પ્રકરણમા વર્ણવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વદના કરવા માટે
આવી ત્યાં તેણે નાટ્યવિધિનું પ્રદર્શન કર્યું ત્યારબાદ તે ત્યાંથી પાછી પોતાના
સ્થાને જતી રહી તેમના જતા રહ્યા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુભા
દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—
આવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમા કોઇક નામે ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનું
નામ જિતશત્રુ હતું તેમા શુભ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો શુભશ્રી નામે
તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનું નામ શુભા હતું ત્યારપછીનું તેનું શેષ વર્ણન
કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ તેમા અને આમા ત વત્ત એટ

अद्वपलिओवम ठिई सेस तहेव, एव खलु णिखेवओ पढमज्झयणस्स)
 उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। वहाँ गुण-
 शिलक नाम का उद्यान था। उसमें तीर्थंकर परपरानुसार विहार करते
 हुए श्रमण भगवान् महावीर आकर ठहरे हुए थे। नगर की परिपदा
 प्रभु को वदना के लिये अपने २ घर से निकलकर उस उद्यान में आईं
 प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। सुनकर लोगो ने यावत् प्रभु की
 पर्युपासना की। उसी समय वहाँ पर धरणेन्द्र की अग्रमहिषी अलादेवी
 जो धरणा राजधानी में अलावतसक इस नाम के भवन में रहती थी-
 और जिसके बैठने के सिंहासन का नाम अला या प्रभु को वदना आदि
 करने के निमित्त आई। वहाँ आकर उस ने नाटयविधि दिखलाई।
 दिखलाकर वह फिर वहाँ से पीछे अपने स्थान पर गई। उसके आते ही
 गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान् महावीर से उसका पूर्वभव पूछा तब
 भगवान् ने उनसे इस प्रकार कहा वाणारसी नामकी नगरी थी-उसमें
 काम महावन नाम का उद्यान था। उसमें अलनाम का गाथापति रहता
 था। उसकी भार्या “अल श्री” इस नामकी थी। इस की एक पुत्री थी
 जिसका नाम अला या। इसका-अला का शेष कथानक, कालीदेवी का

वाओ, साइरेग अद्वपलिओवम ठिई सेस तहेव, एव खलु णिखेवओ पढमज्झयणस्स)

ते काणे अने ते समये राजगृह नामे नगर હતુ તેમા ગુણશિલક
 નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા તીર્થંકર પરપરા સુજળ વિહાર કરતા પધારીને
 શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે સુકામ કર્યો હતો નગરની પરિવહ પ્રભુને વદન
 કરવા માટે પોતપોતાને ઘેરથી નીકળીને તે ઉદ્યાનમા આવી પ્રભુએ સૌને
 ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાંભળીને લોકોએ યાવત્ પ્રભુની પર્યુપાસના
 કરી, તે વખતે ત્યાં ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષી (પરણી) અલાદેવી કે જે
 ધરણા રાજધાનીમા અલાવતસક આ નામના ભવનમા રહેતી હતી, અને જેને
 બેસવાના સિંહાસનનુ નામ અલા હતું-પ્રભુને વદના કરવા માટે આવી ત્યાં
 આવીને તેણે નાટયવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યું, પ્રદર્શન કરીને તે ત્યાંથી પાછી
 પોતાના સ્થાને જતી રહી તેના ગયા પછી તરત જ ગૌતમ સ્વામીએ શ્રમણ
 ભગવાન મહાવીરને તેનો પૂર્વભવ પૂછ્યો ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે
 કહ્યું કે વાણારસી નામે નગરી હતી, તેમા કામમહાવન નામે ઉદ્યાન હતુ,
 તેમા અલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની ભાર્યાનુ નામ અલશ્રી હતુ
 તેની પુત્રી હતી તેનુ નામ અલા હતુ અલા વિષેનુ શેષ કથાનક પહેલા

મદન્ત ! શ્રમણેન યાત્ મોક્ષ સમ્પાપ્તેન ધર્મકથાના તૃતીયસ્ય ચર્ગમ્ય ચતુષ્પચ્ચા
શદ્ અ યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તેષુ પ્રથમસ્ય સ્વલુ હે મદન્ત ! અ યયનમ્ય શ્રમણેન
યાત્ મોક્ષ સમ્પાપ્તેન કોઽર્થઃ પ્રજ્ઞપ્તઃ ? ગુધર્મસ્વામી કથયતિ—

एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम्, गुण
शिलक चैत्यम्, स्वामी समयन्ता, पतिपन्निर्गता यात-भगवन्त पशुयास्ते ।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये अलादेवी=गरणेन्द्रस्याग्रमहिषी धरणाया राजान्याम्
आलापतसके भरणे अले सिंहासणे, एव 'कालीगमण' कालीगमेन=काली
सदृशपाठेन यात नाटयत्रिधमुपदर्श्य प्रतिगता । 'पुण्यभवपुच्छा' पूर्वभवपुच्छा-
गोतमस्वामी अलादेव्याः पूर्वभव पृच्छति, भगवान् कथयति-वाणारसी नगरी ।
काममहावन चैत्यम् । 'अले' अलनामा गायापतिः । अठश्रीभार्या । अला
दारिका । शेष 'जहाकालीए' यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णन तथैव अला
देव्या वर्णन विज्ञेयम्, नवरम्-गरणस्याग्रमहिषीतयाऽस्या उपपातः, सातिरेक=

યાવત્ મુક્તિ કો પ્રાપ્ત હુએ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને ધર્મકથા કે
તૃતીયવર્ગ કે ૬૪ અધ્યયન પ્રજ્ઞ ક્રિયે હિં તો ઉનમે સે હે મદન્ત !
ઉન્હીં યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને પ્રથમ અધ્યયન
કા કયા અર્થ પ્રરૂપિત કિયા હૈ ? હસ પ્રશ્ન કે સમાધાન નિમિત્ત સુધર્મા
સ્વામી ઉનસે કહતે હે કિ-(એવ સ્વલુ જમ્બૂ !) હે જમ્બૂ ! તુમ્હારે પ્રશ્ન કા
ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ (તેણ કાલેણ તેણ સમણ અલાદેવી ધરણાએ રાય
હાળીએ અલાવડસએ ભવણે અલસિ સીંહાસણસિ એવ કાલીગમણ
જાવ જાદ્ધવિહિં ઉવડસેત્તા પડિગયા, પુણ્યભવપુચ્છા, વાણારસી જયરી,
કામમહાવણે ચેહાએ અલ ગાહાવહૈ, અલાસિરી ભારિયા, અલાદારિયાસેસ
જહા કાલીએ જવર ધરણસ્મ અગમહિસિત્તાએ ઉવવાઓ, સાહરેગ

છે કે હે મદન્ત ! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મક
થાના ત્રીજા વર્ગના ૫૪ ચોપનઅધ્યયનો પ્રજ્ઞ કયાં છે, તો તેઓઆથી હે મદન્ત !
તે જ યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા અધ્યયનનો શો
અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ પ્રશ્નના સમાધાનમા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને
કહે છે કે (એવ સ્વલુ જમ્બૂ !) હે જમ્બૂ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ અલાદેવી ધરણાએ રાયહાળીએ અલાવડસએ
ભવણે અલસિ સીંહાસણસિ એવ કાલી ગમણ જાવ જાદ્ધવિહિં ઉવડસેત્તા પડિગયા,
પુણ્યભવપુચ્છા, વાણારસી જયરી, કામમહાવણે ચેહાએ, અલ ગાહાવહૈ, અલાસિરી
ભારિયા, અલાદારિયા સેસ જહા કાલીએ જવર ધરણસ્મ

एव यावत् घोषस्यापि=घोषेन्द्रस्यापि, एतान्येव षड् अध्ययनानि सन्ति । एवमे
तानि दाक्षिणात्यानामिन्द्राणा चतुष्पञ्चाशद् अध्ययनानि भवन्ति । सर्वा अपि पूर्वो
क्तादेव्य पूर्वभवे वाणारस्या जाताः काममहावने चैत्ये भगवतः पार्श्वस्यार्हतः
समीपे प्रजिताः, तृतीयवर्गस्य निक्षेपकः=समाप्तिवाक्यप्रत्ययो विज्ञेयः ॥ सू०८ ।

॥ इति धर्मकथानां तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थो वर्गं प्रारभ्यते-‘चउत्थस्म’ इत्यादि ।

મૂલમ્-ચઉત્થસ્મ ઉત્તરેવઓ, એવં ચલુ જવૂ । સમણેણં જાવ
સંપત્તેણં ધમ્મકહાણં ચઉત્થવગ્ગસ્મ ચઉપ્પણં અજ્ઞયણા
પણના, ત જહા-પઢમે અજ્ઞયણે જાવ ચઉપ્પણદ્વમે અજ્ઞયણે
પઢમસ્મ અજ્ઞયણસ્મ ઉત્તરેવઓ એવં ચલુ જવૂ । તેણં કાલેણં
તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણં જાવ પરિસા પજ્જુવાસદ્, તેણં
કાલેણ તેણ સમણં રૂયા દેવી રૂયાણદા રાયહાણી રૂયગવ-
વહિસણ ભવણે રૂયગંસિ સીહાસણસિ જહા કાલીણ તહા નવરં
પુઠ્ઠભવે ચંપાણ પુણ્ણભવે ચેદ્દણ રૂયગે ગાહાવર્દે રૂયગસિરી
મારિયા રૂયા દારિયા સેસ તહેવ, ણવર ભૂયાણદઅગ્ગમહિસિ-

વર્ણન 'भी धरणेन्द्र के वर्णन जैसा ही है । घोषेन्द्रके भी ये ही ६ अध्य-
यन इसी तरह के हैं । इस तरह दक्षिण दिशा सन्धी इन्द्रों के ५४
अध्ययन हो जाते हैं । ये सब देविर्गा पूर्वभवमें वाणारसी में उत्पन्न हुई
और काममहावन उद्यानमें भगवान् पार्श्वनाथ अर्हत प्रभुके समीप दीक्षित
हुई । इस तरहसे वर्मकथाका यह “तृतीय वर्ग समाप्त हुआ है ।”

વર્ણન જેવું જ છે ઘોષેન્દ્રના પણ આ બીજાના ૬ અધ્યયનો છે આ
પ્રમાણે દક્ષિણ દિશા સન્ધી ઇન્દ્રોના ૫૪ અધ્યયનો થઈ જાય છે આ બધી
દેવીઓ પૂર્વભવમાં વાણારસીમાં ઉત્પન્ન થઈ હતી અને કામમહાવન ઉદ્યાનમાં
ભગવાન પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુની પાસે દીક્ષિત થઈ આ પ્રમાણે ધર્મકથાનો
આ ત્રીજો વર્ગ પૂરો થયો છે

साधिरुग् अर्द्धपल्योपम स्थिति । शेष तथैव । एष सत्तु निक्षेपकः प्रथमाध्ययनस्य ।
एव क्रमात् शक्रा २, सतेरा ३, सौदामनी ४, इन्द्रा ५, घनविद्युत् ६ । सर्वा
एता धरणस्य=धरणेन्द्रस्य अग्रमहिष्य एव । एतानि पञ्च अध्ययनानि वेणुदेव-
स्यापि । ' अविसेसिया ' अविशेषितानि=निर्मिशेषानि सदृशानि भणितव्यानि ।

जैसा कथानक पीठे वर्णित किया जा चुका है वैसा ही जानना चाहिये ।
उसके वर्णन में और इसके वर्णन में केवल अन्तर इतना ही है कि यह
धरणेन्द्र की अग्रमहिषी के रूप में उत्पन्न हुई और इसकी स्थिति १॥
पल्य से कुछ अधिक है । चाकी का इसका घृत्तान्त कालीदेवी के जैसा
ही है । इस तरह यह द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का निक्षेपक-उप-
सहार-है ।-(एव कमा सक्का, सतेरा, सोयामणी, इदा, घणविज्जुया
वि, सव्वओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ, एव, एते ६ अज्झयणा
वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियन्वा, एव जाव घोसस्स वि एए चेव
६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणित्थाण इदाण-चउप्पण्ण अज्झयणा
भवति, सव्वओ वि चाणारसीए काममहावणे चेहण तइयवग्गस्स
णिक्खेवओ ८ ॥

(तइओ वग्गो समत्तो) इसी क्रम से शक्रा २, सतेरा ३, सौदा-
मनी ४, इन्द्रा ५, घनविद्युत् ६, ये सब देविया धरणेन्द्र की ही अग्र
महिषिया थीं । इस तरह के ६ अध्ययन वेणुदेव के भी हैं । और इनका

वर्णन काली देवीना कथानकनी जेमज्ज समत्तु लेवु जेधओ तेना अने
आना वर्णनमा तक्षपत्त इत्त ओट्ठो ज छे के आ धरणेन्द्रनी अग्रमहिषीना
इपमा उत्पन्न थछ अने आनी स्थिति १॥ पत्थ करता कछक वधारे छे
आनु णाकीनु वर्णन काली देवी जेवु ज छे आ प्रभावे आ भीजा वर्गना
पडेला अध्ययनना निक्षेपक उपसहार छे

(एव कमा सक्का सतेरा, सोयामणी, इदा, घणविज्जुया वि, सव्वओ
एयाओ धरणस्स, अग्गमहिसीओ एव एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसे-
सिया भाणियन्वा, एव जाव घोसस्स वि एए चेव ६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणि
त्थाण इदाण-चउप्पण्ण अज्झयणा भवति, सव्वओ वि चाणारसीए काम महा
वणे चेहण तइयवग्गस्स णिक्खेवओ ॥ ८ ॥ तइओ वग्गो समत्तो)

आ अनुक्रम प्रभावे ज शक्रा २, सतेरा ३, सौदामनी ४, इन्द्रा ५,
घनविद्युत् ६, आ जप्पी देवीओ धरणेन्द्रनी ज अग्रमहिषीओ हुनी आ
प्रभावे ज ६ अध्ययनो वेणु देवीना पञ्च छे अने ओमनु वर्णन धरणेन्द्रना

वसरण=भगवतः श्री महावीरस्वामिनः समागमन सजात, यावत् परिपद् भगवन्त
पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् ममये रूपादेवी=भूतानन्देन्द्रस्याग्रमहिषी रूप
कावतसके मरने रूपके सिंहासने यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तथा=तद्वत्
समएण रायगिहे समोसरण जाव परिमा पज्जुयामइ, तेण कालेण तेण
समएण रूपा देवी, रूपाणदा रायहाणी रूयगवडिसए भवणे रूयगसि
सीहासणंसि जहा कालीए तथा नवर पुण्णभवे चपाए पुण्णभदे चेइए
रूपगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूपा दारिया, सेस तहेव, णवर
भूयाणद अगमहिसित्ताए उववाओ देमूणं पलिओवम ठिई निक्खेवओ,
एव सुरुयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई वि रूपकता वि रूयप्पभावि,
एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स
णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स चउत्थो वग्गो समत्तो)

प्रथम अध्ययन का हे जवू ! उत्क्षेपक इस प्रकार है-उसकाल में
और उस समय में राजगृह नगर में महावीर स्वामी का आगमन हुआ।
परिपद प्रभु को बदना करने के लिये अपने २ स्थान से निकलकर जहा
प्रभु विराजमान थे वहां आई। प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया। यावत्
समये प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में भूतानन्द
इन्द्र की अग्रदेवी जिसका नाम रूपादेवी था वह प्रभु को बदना के लिये

(पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण
रायगिहे समोसरण जाव परिमा पज्जुयामइ, तेण कालेण तेण समएण रूपादेवी,
रूपाणदा, रायहाणी रूयगवडिसए भवणे रूयगसि सीहासणंसि जहा कालीए
तथा नवर पुण्णभवे चपाए पुण्णभदे चेइए रूपगे गाहावई रूयगसिरी भारिया,
रूपा दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अगमहिसित्ताए उववाओ देमूण पलि
ओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरुयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई, वि रूपकता
वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स
णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ ९ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो)

हे जवू ! पढेला अध्ययनने उत्क्षेपक था प्रभावे छे-ते काले अने
ते समये राजगृह नगरमा महावीर स्वामीनु आगमन थयु प्रभुने बदना
करवा माटे परिपद पोतपोताने अथानेथा नीकणीने न्या प्रभु विराजमान हुता
था आवी, प्रभुने धर्मने उपदेश आय्थे यावत् सौअे प्रभुनी पर्युपासना
करी, ते काले अने ते समये भूतानन्द इन्द्रनी अग्रदेवी (पट्टराणी) नेनु
नाम रूपा देवी हुतु-प्रभुने बदना करवा माटे आवी तेना रडेवाना लवनवु

ત્તાણ ઉવવાઓ દેસૂણં પાલિઓવમ ઠિર્ઠં ણિક્કલેવઓ એવ સુરુ-
યાવિ રૂયસાવિ રૂયગાવર્ઠિવિ રૂયકતાપિ રૂયપ્પભાવિ, ય્યાઓ
ષેવ ઉત્તરિહ્ધાણં ઇંદાણં ભાણિયવ્વાઓ જાણ મહાધોસસ્સ,
ણિક્કલેવઓ ચઉત્થવગ્ગસ્સ ॥ સૂ. ૧ ॥

॥ ચઉત્થો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૪ ॥

ટીકા—‘ચઉત્થસ્સ-ચતુર્થવર્ગસ્ય’ ‘ઉચ્ચલેવઓ’ ઉત્ક્રેષ્ઠક = પ્રારમ્ભવાક્ય
પાઠોડગવાચ્ય । સુધર્મસ્વામી પ્રાહ-એવ ચલુ જન્નુઃ ! શ્રમણેન યાવત્તસ્મા
પ્તેન ધર્મકથાના ચતુર્થવર્ગસ્ય ચતુષ્પચ્ચાશત્ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ તદ્વથા પ્રથમ
માધ્યયન યાવત્-ચતુષ્પચ્ચાશત્તમમધ્યયનમ્ । તેપુ પ્રથમસ્યાધ્યયનસ્ય ઉત્ક્રેષ્ઠક ।
સુધર્મસ્વામીપ્રાહ-એવ ચલુ હે જન્નુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહે સમ

—:ચતુર્થ વર્ગ પ્રારમ્ભ:—

‘ચઉત્થસ્સ ઉચ્ચલેવઓ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(ચઉત્થસ્સ ઉચ્ચલેવઓ) ચતુર્થ વર્ગ કા પ્રારમ્ભ કિસ
તરહ સે હુઆ હૈ—હસ પ્રકાર—જન્નુસ્વામી કે જન્નુને પર શ્રી સુધર્મસ્વામી
ઉંનસે કહતે હૈ કિ (એવ ચલુ જન્નુ) હે જન્નુ ! સુનો—(સમણેણ જાવ
સપત્તેણ ધમ્મકુટ્ટાણ ચઉત્થવગ્ગસ્સ ચઉપ્પણ્ણ અજ્ઞયણા પણ્ણત્તા ત
જહા પદમે અજ્ઞયણે જાવ ચઉપ્પણ્ણામ્હે અજ્ઞયણે) યાવત્ મુક્તિસ્થાન
કો પ્રાપ્ત હુણ શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને ધર્મકથા કે ચતુર્થ વર્ગ કે ૫૪
અધ્યયન પ્રજ્ઞપ્ત કિયે હૈ—વે પ્રથમ અધ્યયન સે લેકર ૫૪ વે અધ્યયન તક
હૈ—(પદમસ્સ અજ્ઞયણસ્સ ઉચ્ચલેવઓ એવ ચલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ

ચોથો વર્ગ પ્રારમ્ભ

‘ચઉત્થસ્સ ઉચ્ચલેવઓ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ—(ચઉત્થસ્સ ઉચ્ચલેવઓ) ચોથા વર્ગની શરૂઆત કેવી રીતે
થઈ છે ? આ જાતનો જન્નુ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ શ્રી સુધર્મ સ્વામી
તેમને કહે છે કે (એવ ચલુ જન્નુ) હે જન્નુ ! સાશળો,

(સમણેણ જાવ સપત્તેણ ધમ્મકુટ્ટાણ ચઉત્થવગ્ગસ્સ ચઉપ્પણ્ણ અજ્ઞયણા
પણ્ણત્તા ત જન્ના પદમે અજ્ઞયણે જાવ ચઉપ્પણ્ણામ્હે અજ્ઞયણે)

યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પામેલા શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીરે ધર્મ કથાના ચોથા
વર્ગના ૫૪ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે તેઓ પહેલા અધ્યયનથી માંડીને ૫૪
મા અધ્યયન સુધી છે

वसरण=भगवतः श्री महावीरस्यामिनः समागमन सजात, यावत् परिपद् भगवन्त
पर्युगास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये रूपादेवी=भूतानन्देन्द्रस्याग्रमहिषी रूप
कावतसके भवने रूपके सिंहासने यथा काल्याः=कालीदेव्या उर्णन तथा=तद्वत्

समर्णं रायगिहे समोसरण जाव परिसा पञ्जुयामद, तेण कालेण तेण
समर्ण रूपा देवी, रूपाणदा रायहाणी रूयगवर्डिसण भवणे रूयगमि
सीहासणसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभदे चेइए
रूपगे गाहावई रूयगमिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर
भूयाणद अगमहिसित्ताए उववाओ देमूणं पलिओवम ठिई निखेवओ,
एव सुरुयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई वि रूयकता वि रूयप्पभावि,
एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स
णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स चउत्थो वग्गो समत्तो)

प्रथम अध्ययन का हे जवू । उत्क्षेपक इस प्रकार हैं-उसकाल में
और उस समय में राजगृह नगर में महावीर स्वामी का आगमन हुआ ।
परिपद् प्रभु को वदना करने के लिये अपने २ स्थान से निकलकर जहा
प्रभु विराजमान थे वहाँ आई । प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया । यावत्
सबने प्रभु की पर्युपासना की । उस काल और उस समय में भूतानन्द
इन्द्र की अग्रदेवी जिसका नाम रूपादेवी या वह प्रभु को वदना के लिये

(पढमस्स अज्झयगस्स उक्खेवओ-एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समर्ण
रायगिहे समोसरण जाव परिसा पञ्जुयासइ, तेण कालेण तेण समर्ण रूपादेवी,
रूपाणदा, रायहाणी रूयगवर्डिसण भवणे रूयगमि सीहासणसि जहा कालीए
तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभदे चेइए रूपगे गाहावई रूयगमिरी भारिया,
रूया दारिया, सेम तहेव, णवर भूयाणद अगमहिसित्ताए उववाओ देमूण पलि
ओवम ठिई निखेवओ, एव सुरुयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई, वि रूयकता
वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स
णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ ९ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो)

हे जवू ! पढेला अध्ययनने उत्क्षेपक आ प्रभावे छे-ते काले अने
ते समये राजगृह नगरमा महावीर स्वामीनु आगमन थयु प्रभुने वदना
करवा भाटे परिपद् चोत्तपोत्ताने स्थानेथा नीकणीने जना प्रभु विराजमान हुता
त्या आवी, प्रभुने धर्मने उपदेश आये यावत् सौजे प्रभुनी पर्युपासना
करी ते काले अने ते समये भूतानन्द इन्द्रनी अग्रदेवी (पट्टावुली) नेतु
रूपा देवी हुतु-प्रभुने वदना करवा भाटे आवी तेना रहैवाना भवनवु

રૂપાદેવ્યા અપિ વિજ્ઞેયમ્, નચર=વિશેષોડગ્રાયમ્-પૂર્વમે ચમ્યાયા નગર્યા પૂર્ણ
મદ્ર ચૈત્યમ્, સ્પકો ગાથાપતિઃ, સ્પશ્રીર્માર્યા, રૂપાદારિકા, એવ તથૈવ નચર
શ્રૂતાનન્દાગ્રમદિપીતયા તસ્મા ઉપપાતઃ જન્મ । દેશેન પલ્યોપમ સ્થિતિઃ । નિક્ષે
પકઃ=સમાપ્તિરામ્યરૂપઃ પ્રચન્ધોડગ્ર વિજ્ઞેય' । એવ સુરૂપાડપિ ૨, સ્પાગાડપિ ૩,
રૂપકાવત્યપિ ૪, રૂપકાન્તાપિ ૫, સ્પમમાપિ ૬ । एतांश्च उत्तरीयाणामिन्द्राणां

आई । इसके रहने के भवन का नाम रूपकावतसक था । और जिस
सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम रूपक था । पीछे जिस प्रकार
का वर्णन कालीदेवी का किया गया है—उसी प्रकार का इनका भी वर्णन
जानना चाहिये । उसके पूर्वभव का वर्णन इस प्रकार है—यह पूर्वभव में
चपा नामकी नगरी में कि जिसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था और
रूपक गाथापति जिस में रहता था उस गाथापति की यह रूपश्री भार्या
से “रूपा दारिका” इस नाम से पुत्री उत्पन्न हुई थी । बाद में प्रभु का
उपदेश सुनकर यह प्रतिषेध को प्राप्त हो गई और कालीदेवी की तरह
यह आर्या बन गई इसके आगे जिस तरह का काली देवी का वृत्तान्त
बना इसी तरह से इसका भी जानना चाहिये । जब यह काल अवसर
काल कर गई तब यह श्रूतानन्द इन्द्र की अग्रमहिषीरूप से उत्पन्न हुई ।
वहाँ इसकी कुछ कम १, पल्य की स्थिति है । इस प्रकार रूपा देवी के
कथानक का यह निक्षेपक है । इसी तरह से (२) सुरूपा (३) रूपाशा
(४) रूपकावती (५) रूपकान्ता और ६ रूपप्रभा का भी वर्णन जानना

નામ રૂપકાવતસક હતુ અને જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનું નામ
રૂપક હતુ જેમ પહેલા કાલી દેવીનું વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેમજ આનું
વર્ણન પણ સમજી લેવું જોઈએ તેના પૂર્વભવનું વર્ણન આ પ્રમાણે છે—
આ પૂર્વભવમા ચપા નામની નગરીમા—જે જેમા પૂર્ણભદ્રા નામે ઉદ્યાન હતુ
અને રૂપકે ગાથાપતિ જેમા રહેતો હતો તે ગાથાપતિની આ રૂપશ્રી ભાર્યોથી
'રૂપાદારિકા' આ નામથી પુત્રી રૂપે ઉત્પન્ન થઈ હતી ત્યારપછી પ્રભુનો
ઉપદેશ સાંભળીને એ બોધને પ્રાપ્ત થઈ અને કાલી દેવીની જેમ આર્યા થઈ
ગઈ એના પછીની વિગત કાલી દેવીની હતી તેવી જ એની પણ સમજી લેવી
જોઈએ જ્યારે તેણે કાળ અવસરે કાળ કયો ત્યારે આ શ્રૂતાનન્દ ઇન્દ્રની
અગ્રમહિષી (પટરાણી) ના રૂપમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાં તેની થોડી ઝાણી
એક પલ્યની સ્થિતિ છે આ પ્રમાણે રૂપાદેવીના કથાનકનો આ નિષેપક છે
આ પ્રમાણે જ (૨) સુરૂપા, (૩) રૂપાશા, (૪) રૂપકાવતી, (૫) રૂપકાન્તા અને

મણિતવ્યા' = અગ્રમહિષ્યો વક્તવ્યા યાવત્ મહાઘોષસ્ય । મહાઘોષેન્દ્રસ્ય । નિક્ષેપ-
કથતુર્થવર્ગસ્ય ॥ સૂ. ૦૯ ॥

॥ इति धर्मकृतानां चतुर्णो वर्गं समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः प्रारभ्यते—पञ्चमवर्गस्य ' इत्यादि ।

મૂલમ્—પંચમવર્ગસ્ત ઉક્તેવઓ, એવ યલુ જવ્ । જાવ
વક્તીસં અઙ્ગયણા પળ્લન્તા, તજહા—કમલાઃ કમલપ્પમાર
ચેવ, ઉપ્પલાઃ ૩ ય સુદસણા ૪ । રુવર્વૈ ૫ વહુરુવા ૬, સુરુવા ૭
સુભગાવિય ૮ ॥ ૧ ॥ પુળ્લા ૯ વહુપુત્તિયા ૧૦ ચેવ, ઉત્તમા ૧૧
તારયાવિય ૧૨ । પડમા ૧૩ વસુમતી ૧૪ ચેવ, કળગા ૧૫ કળ-
ગપ્પમા ૧૬ ॥ ૨ ॥ વડેસા ૧૭ કેડમર્વ ૧૮ ચેવ, વડ્ડરસેના ૧૯
રડ્ડપ્પિયા ૨૦ । રોહિણી ૨૧ નવમિયા ૨૨ ચેવ, હિરી ૨૩ પુપ્ફ-
વર્વૈ ૨૪ ॥ ૩ ॥ મુયગાર ૨૫ મુયગર્વર્વ ૨૬ ચેવ, મહાકચ્છાં-
પરાડિયા ૨૮ । સુઘોસાર ૨૯ વિમલા ૩૦ ચેવ, સુસ્તરા ૩૧ યસર-
સર્વર્વ ૩૨ ॥ ૪ ॥ ઉક્તેવઓ પદમઙ્ગયણસ્ત, એવ યલુ જવ્ ।
તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહેસમોસરણ જાવ પરિસા
પઙ્ગુવાસડ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ કમલાદેવી કમલાણ
રાયહાણીણ કમલવર્ડેસણ ભવણે કમલસિ સીહાસણસિ સેસં
જહા કાલીણ તહેવ ણવરં પુઠ્ઠભવે નાગપુરે નયરે સહસવ

ચાહિયે । યે દેવિયા મૂતાનદ્દ ઇન્દ્ર કી તરહ ઉત્તરીય ઇન્દ્રો કી ખી અગ્ર-
મહિષિયા હૈ । ઓર યે હી મહાઘોષેન્દ્ર કી ખી હૈ । ઇસ પ્રકાર યહ ચતુર્થ
વર્ગ કા નિક્ષેપક (સ્વરૂપ) હૈ ।

॥ ચતુર્થવર્ગ સમાપ્ત ॥

(૧) રૂપપ્રભાવુ વર્ણન પણ સમજી લેવું જોઈએ આ બધી દેવીઓ ભૂતાનદ
ઈન્દ્રની જેમ ઉત્તરીય ઇન્દ્રોની પણ અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) છે અને
મહાઘોષેન્દ્રની પણ તેઓજ પટરાણીઓ છે આ પ્રમાણે આ ચોથા વર્ગના
નિક્ષેપક છે

ચોથો વર્ગ સમાપ્ત

ઉત્તેષકઃ પ્રથમાધ્યયનમ્ય । જમ્બૂસ્વામિના પૃષ્ઠે સુધર્માસ્વામીપ્રાહ-एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे 'समोसरण' समयमरण=मग

૩૧, સરસ્વતી ૩૨, । (ઉત્તેવઓ પદમજ્જયણસ્સ એવ ચલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ પરિસા પજ્જુવામહ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ કમલા દેવી, કમલાણ રાયહાણીણ કમલચંદેસણ ભવણે કમલસિ સીહાસણમિ સેસ જહા કાલીણ તહેવ ણવર પુવ્વભવે નાગપુરે નયરે સહસવવણે ઉજ્જાણે કમલસ્સ ગાહાવટ્ટસ્મ કમલસિરીણ ભરિયાણ કમલા દારિયા પાસસ્સં અતિણ નિક્કવતા કાલસ્સ પિસાયકુ-મારિંદસ્સ અગ્ગમહિસી અદ્દપલિઓવમ ઠિઈ, એવ સેસા વિ અજ્ઞયણા દાહિણિલ્લાણ વાણમતરિંદાણ માણિયવ્વાઓ, સચ્ચઓ ણાગપુરે સહસ-વવણે ઉજ્જાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસનામયા, ઠિઈ અદ્દપલિઓવમ)
 इसके बाद जब्बुस्वामी ने श्री सुधर्मास्वामी से पूछा कि इनमें से कमला नामका जो प्रथम अध्ययन है उसका उत्तेषक किस तरह से है-इस प्रकार जब्बुस्वामी के पूछने पर उनसे सुधर्मास्वामी ने कहा-कि हे जब्बु ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-उस काल में और उस समय में राजगृह नामका नगर था। उसमें भगवान् महावीर का आग-मन हुआ। यावत् वहा की परिपद प्रभु को वदना करने के लिये आई।

(ઉત્તેવઓ પદમજ્જયણસ્સ, એવ ચલુ જન્નુ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ પરિસાપજ્જુવાસહ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ કમલા દેવી કમલાણ રાયહાણીણ કમલચંદેસણ ભવણે કમલસિ સીહાસણમિ સેસ જહા કાલીણ તહેવ ણવર પુવ્વભવે નાગપુરે નયરે સહસવવણે ઉજ્જાણે કમલસ્સ ગાહા વટ્ટસ્સ કમલમિરીણ ભરિયાણ કમલા દારિયા પાસસ્સં અતિણ નિક્કવતા કાલસ્સ પિસાય કુમારિંદસ્સ અગ્ગમહિસી અદ્દપલિઓવમઠિઈ, એવ સેસા વિ અજ્ઞયણા દાહિણિલ્લાણ વાણમતરિંદાણ માણિયવ્વાઓ, સચ્ચાઓ ણાગપુરે સહસવવણે ઉજ્જાણે માયાપિયા ધૂયા સરિસનામયા, ઠિઈ અદ્દપલિઓવમ)

ત્યારપછી જ જૂ સ્વામીએ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછ્યું કે આ બધામાં કમલા નામે જે પહેલું અધ્યયન છે તેનો ઉત્તેષક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જ જૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન ઠર્યા બાદ તેમને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે હે જ જૂ ! સાબળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું યાવત નગરની પરિધ તેમને વદના કરવા માટે આવી પ્રભુએ સૌને

चन् महागौरस्वामी समागमन सजात, यावत् परिपद् भगवन्त पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये कमला देवी कमलाया राजधान्या, कमलावतमके भवने कमले सिंहासने, शेष यथा-काल्या-कालीदेव्या वर्णन तथैवाऽस्या अपि, नगर-विशेषोऽयम्-पूर्वभवे नागपुर नगर, सहस्राश्रवनमुद्यानम्, कमलस्य गाथापतेः कमलश्रियो भार्यायाः कमला दारिका पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्य अन्तिके 'निखलता' निष्क्रान्ता-प्रव्रजिता, कालस्य पिशाचकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषी। अर्द्धपल्योपम स्थितिः। एष शेषाण्यपि कमलप्रभादिनामकान्यपि एकत्रिशद् अध्य-

प्रभु ने सत्रको धर्म का उपदेश दिया। परिपदे ने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में कमला नाम की देवी, कमला राजधानी में कमलावतसक भवन में रहती थी। उस के सिंहासन का नाम कमला था। इसके आगे का समस्त वर्णन कालीदेवी के वर्णन जैसा ही जानना चाहिये। परन्तु हममें जो विशेषता है वह इस प्रकार है-जब गौतमस्वामी ने उसके-अर्थात् देवी के चले जाने के बाद उसके पूर्वभव का वृत्तान्त पूछा-तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-पूर्वभव के इसके नगर का नाम नागपुर था-उसमें सहस्राश्रवन नाम का उद्यान था। उस नगर में कमल नामका गाथापति रहता था।-उसकी भार्या का नाम कमला थी था। इनके एक पुत्री थी जिस का नाम कमला था। वह काललब्धि के आनेपर पुरुषदानीय-पुरुष श्रेष्ठ-पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु के समीप प्रव्रजित हो गई। बाद में मरने पर वह काल नाम के पिशाच कुमारेन्द्र की अग्रमहिषी बनी। वहा इसकी स्थिति अर्द्धपल्य की है।

धर्मने उपदेश आये। परिपदे प्रभुनी पर्युपासना करी ते काले अने ते समये कमला नामनी देवी, कमला राजधानीमा कमलावतसके भवनमा रहेती હતી तेना सिंहासननु नाम कमला હતું એના પછીનું અધુ વર્ણન કालી દેવીના વર્ણનની જેમ જ સમજી લેવું જોઈએ પરંતુ આમા જે કે ૬ વિશેષતા છે તે એ પ્રમાણે છે-કે જ્યારે ગૌતમ સ્વામીએ દેવીના ગરા પછી તેના પૂર્વ ભવ વિષેની વિગત પૂછી ત્યારે પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-કે આના પૂર્વ ભવના નગરનું નામ નાગપુર હતું તેમા સહસ્રાશ્રવન નામે ઉદ્યાન હતું તે નગરમા કમલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનું નામ કમલાશ્રી હતું એમને એક દિકરી હતી તેનું નામ કમલા હતું, તે યોગ્ય કાળલબ્ધિના અવસરે પુરુષદાનીય-પુરુષ શ્રેષ્ઠ-પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ ગઇ ત્યારપછી મૃત્યુ થયા બાદ તે કાલ નાગના પિશાચ કુમારેન્દ્રની અગ્ર

યન્નાનિ દાક્ષિણાત્યાનાં વાનવ્યન્તરેન્દ્રાણામગ્રમહિષીણા મણિતશ્યાનિ । સર્વાશ્રેતાઃ
પૂર્વભવે નાગપુરે નગરે સજાતાઃ, સહસ્રાબ્રવને ઉદ્યાને ભગવત્પાર્શ્વમનોઃ સમીપે પ્રવ્ર-
જિતાઃ । માતાપિતા દુહિતા સદૃશનામકઃ । આસા સ્થિતિરર્ધપત્ન્યોપમમ્ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

॥ इति धर्मकथानां पञ्चमो वर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥

મૂલમ્—છટ્ટોવિ વગ્ગો પંચમવગ્ગસરિસો, ણવરં મહાકાલા-
દીણં ઉત્તરિહ્ણાણં ઇદાણં અગ્ગમહિસીઓ પુઠ્ઠભવે સાગેય-
નયરે ઉત્તરકુરુ ઉજ્જાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસણામયા
સેસં તં ચેવ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

॥ छट्टो वग्नो समप्तो ॥ ६ ॥

બાકી જો ૩૧, કમલપ્રભા નામકે અધ્યયન હૈં વે દક્ષિણ દિશા સબન્ધી
વાનવ્યતરેન્દ્રોં કી અગ્રમહિપિયોં કે હૈં એસા જાનના ચાહિયે । યે સબ
હી પૂર્વભવ મેં નાગપુર નગર મેં ઉત્પન્ન હુઈ-ઑર સહસ્રાબ્રવન નામકે
ઉદ્યાન મેં ભગવાન્ પાર્શ્વનાથ કે સમીપ પ્રવ્રજિત હુઈ । इन अध्ययनों में
माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली है । जैसे कमलप्रभा
नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कम-
लप्रभ एव पुत्री का नाम कमलप्रभा है-इसी तरह से और अध्ययनों में
भी जानना चाहिये । इन सब देवियों की स्थिति अर्धपत्न्य की है ॥ सू१० ॥

—:पंचमवर्ग समाप्तः—

મહિષી (પટરાણી) બની ત્યા તેની સ્થિતિ અર્ધપત્ન્યની છે શેષ જે ૩૧
કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સબધી વાનવ્યતરેન્દ્રોની
અગ્રમહીષીઓ (પટરાણીઓ) ના સમજવા જોઈએ આ બધી પૂર્વભવના
નાગપુર નગરમાં ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રાબ્રવન નામના ઉદ્યાનમાં ભગવાન
પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ આ બધા અધ્યયનોમાં માતાપિતા તેમજ
પુત્રી આ સર્વે એક સરખા નામવાળા છે જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્યય-
નમાં માતાનું નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનું નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનું નામ
કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઈએ આ
બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધપત્ન્યની છે ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત

ટીકા—‘ છટ્ટોત્રિ ’ इत्यादि पष्ठोऽपि वर्गः पञ्चमवर्गसदृशः । नवरम्—एतावान् विशेष—अत्र महाकालादीनाम् उत्तरीयाणामिन्द्राणामग्रमहिष्यः । एताः सर्वाः पूर्वभवे साकेतनगरे उत्तरकुरुक्षान्ने पार्श्वप्रभुसमीपे प्रव्रजिताः मातरः पितरौ दुहितरः सदृशनामकाः । शेष तदेव सर्वं वाच्यम् ॥ सू० ११ ॥

इति धर्मकथाना पष्ठो वर्गः समाप्तः ॥ ६ ॥

—:પષ્ટવર્ગ પ્રારંભ:—

‘ છટ્ટો વિ વગ્ગો પચમવગ્ગસરિસો ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ —(છટ્ટો વિ વગ્ગો પચમવગ્ગસરિસો, જાવર મહાકાલાદીજાણ ઉત્તરિલ્લાણ ઇદાણ અગમહિસીઓ પુઞ્વભવે સાગેયનયરે ઉત્તરકુરુઝ જ્ઞાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસણામયા સેસ ત ચેવ ૧૧) છઠા વર્ગ મ્હી પચમવર્ગ કે જૈસે હી હૈ । પરન્તુ હસમેં જો ડસકી અપેક્ષા વિશેષતા હૈ —વહ હસ પ્રકાર હૈ—હસ અધ્યયન મેં ઉત્તર દિશા કે ઇન્દ્ર મહાકાલ આદિકોં કી અગ્રમહિપિયોં કા વર્ણન હૈ । યે સબ અગ્રમહિપિયા પૂર્વભવ મેં સાકેત નગર (અયોધ્યા) મેં ઉત્તર કુરુ નામકે ઉદ્યાન મે પાર્શ્વપ્રભુ કે સમીપ પ્રવ્રજિત હુઈ હૈ । માતા પિતા એવ પુત્રિયા યે સબ એક જૈસા નામવાલે હૈ । ધાકી કા હનકે વિષય કા સમસ્ત કથન કાલીદેવી કે વર્ણન જૈસા જાનના ચાહિયે ।

—:પષ્ટવર્ગ સમાપ્ત:—

છટ્ટો વર્ગ પ્રારંભ —

‘ છટ્ટો વિ વગ્ગો પચમ વગ્ગસરિસો ’ इत्यादि—

(છટ્ટો વિવગ્ગો પચમવગ્ગસરિસો, જાવર મહાકાલાદીજાણ ઉત્તરિલ્લાણ ઇદાણ અગમહિસીઓ પુઞ્વભવે સાગેય નયરે ઉત્તરકુરુ ડજ્ઞાણે માયાપિયા ધૂયા સરિસણામયા સેસ ત ચેવ ૧૧)

છટ્ટો વર્ગ પછુ પાચમા વર્ગના જેવો જ છે પરંતુ આમા જે તેના કરતા વિશેષતા છે, તે એ પ્રમાણે છે કે આ અધ્યયનમા ઉત્તર દિશાના ઇન્દ્ર મહાકાલ વગેરેની અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) તુ વર્ણન છે આ બધી અગ્રમહિષીઓ પૂર્વભવમા સાકેત નગરમા ઉત્તરકુરુ નામના ઉદ્યાનમા પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે માતાપિતા અને પુત્રીઓ બધા એક સરખા નામવાળા છે એમના વિષેનુ બાકીનુ બધુ કથન કાલી દેવીના વર્ણન જેવુ બાણુવું ભોઇએ

છટ્ટો વર્ગ સમાપ્ત,

યનાનિ દાક્ષિણાત્યાનાં વાનવ્યન્તરેન્દ્રાણામગ્રમહિષીણાં મણિતત્ત્વાનિ । સર્વાશ્રિતા
પૂર્વભવે નાગપુરે નગરે સંજાતાઃ, સહસ્રામ્રવને ઉદ્યાને મગવત્પાર્શ્વમોઃ સમીપે પ્રવ્ર-
જિતાઃ । માતાપિતા દુહિતા સદૃશનામકઃ । આસા સ્થિતિર્દર્શ્યપત્યમમ્ ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

॥ ઇતિ ધર્મકથાનાં પञ્ચમો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૫ ॥

મૂલમ્-છટ્ટોચિ વગ્ગો પચમવગ્ગસરિસો, ણવરં મહાકાલા-
દીપં ઉત્તરિહ્ણાણં ઇદાણં અગ્ગમહિસીઓ પુવ્વભવે સાગેય-
નયરે ઉત્તરકુરુ ઉજ્જાણે માયા પિયા ધૂયા સરિસણામયા
સેસં તં ચેવ ॥ સૂ૦ ૧૧ ॥

॥ છટ્ટો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૬ ॥

ધાકી જો ૩૧, કમલપ્રભા નામકે અધ્યયન હૈં વે દક્ષિણ દિશા સબન્ધી
વાનવ્યતરેન્દ્રોં કી અગ્રમહિષિયોં કૈં હૈં એસા જાનના ચાહિયે । યે સબ
હી પૂર્વભવ મેં નાગપુર નગર મેં ઉત્પન્ન હુઈ-ઔર સહસ્રામ્રવન નામકે
ઉદ્યાન મેં મગવાન્ પાર્શ્વનાથ કૈ સમીપ પ્રવ્રજિત હુઈ । इन अध्ययनों में
माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली हैं । जैसे कमलप्रभा
नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कम-
लप्रभ एव पुत्री का नाम कमलप्रभा है-इसी तरह से और अध्ययनों में
भी जानना चाहिये । इन सब देवियों की स्थिति अर्धपत्य की है ॥ सू० १० ॥

-:પચમવર્ગ સમાપ્ત:-

મહિષી (પટરાણી) બની ત્યા તેની સ્થિતિ અર્ધપત્યની છે શેષ જે ૩૧
કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સબન્ધી વાનવ્યતરેન્દ્રોની
અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) ના સમજવા બોધએ આ બધી પૂર્વભવમાં
નાગપુર નગરમાં ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનમાં ભગવાન
પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ આ બધા અધ્યયનોમાં માતાપિતા તેમજ
પુત્રી આ સર્વે એક સરખા નામવાળા છે જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્ય-
નમાં માતાનું નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનું નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનું નામ
કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ બાણી લેવું બોધએ આ
બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધપત્યની છે ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

પાંચમો વર્ગ સમાપ્ત

यथासूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिर्मालि ३, प्रभङ्गकरा ४ । प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू । तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्=भगवद्धर्ममानस्वामिसमागमनम् यावत् परिपत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेष

भगवान् महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं -(त जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे समोसरण जाव परिमा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समण्ण सूरप्पभा देवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पमसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा) वे चार अध्ययन इस प्रकार हैं सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्गकरा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्क्षेपक हे जम्बू ! इस प्रकार है-उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर में भगवान् वर्धमानस्वामी का आगमन हुआ था-प्रभु का आगमन सुनकर बरा की परिपद उनको वदना करने के लिये उनके समीप गई-प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया । उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की । उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान में रहती थी-और सूरप्रभ सिंहासन पर बैठती थी प्रभु को वदना करने के लिये आई । इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

(त जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे समोसरण जाव परिमा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समण्ण सूरप्पभादेवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पमसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा)

ते चार अध्ययनो आ प्रभाखे छे-सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्गकरा ४, छे जम्बू ! आ पधामा पढेवा अध्ययननो उत्क्षेपक आ प्रभाखे छे के ते काणे अने ते समये राजगृह नामना नगरमा लगवान वर्धमान स्वामीनु आगमन थयुं प्रभुनु आगमन सालणीने त्यानी परिपद तेमने वदना करवा भाटे तेमनी पासे गछ प्रभुअे सौने धर्मनो उपदेश आये। उपदेश सालणीने सौअे प्रभुनी पर्युपासना करी ते काणे अने ते समये सूरप्रभा नामनी ओक देवी-जे सूर विमानमा रहेती छती अने सूरप्रभ सिंहासन उपर जेसती छती-प्रभुनी वदना करवा भाटे आवी अेना पछीनु'

અથ સપ્તમો વર્ગઃ પ્રારભ્યતે—‘ સત્તમસ્તે ’ ત્યાદિ ।

મૂલમ્—સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉમ્મેવઓ, એવં સ્વલુ જંવૂ ।
જાવ ચત્તારિ અજ્ઞયણા પળ્લણ્ણા, ત જહા—સૂરપ્પમા આયવા
અન્નિવમાલી પમ્મકરા, પઢમજ્ઞયણસ્સ ઉમ્મેવઓ, એવ સ્વલુ
જવૂ । તેણં કાલેણં તેણ સમણં રાચગિહે સમોત્તરણં જાવ
પરિસા પજ્જુવાસઙ્ગ, તેણં કાલેણં તેણ સમણં સૂરપ્પમા દેવી
સૂરસિ વિમાણંસિ સૂરપ્પમસિ સીહાસણંસિ સેસ જહા કાલીય
તહાણવર પુવ્વમ્મવે અરક્કુરીય નયરીય સૂરપ્પમસ્સ ગાહાવ
હસ્સ સૂરસિરીય મારિયાય સુરપ્પમા દારિયા સૂરસ્સ અગ્ગ-
મહિસી ઠિઙ્ઠિ અહ્હપલિઓવમ પચહિ વાસસણ્ણિ અન્નમહિય
સેસં જહા કાલીય, એવ સેસાઓવિ સન્નાઓ અરક્કુરીય
નયરીય ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥ ॥ સત્તમો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૭ ॥

ટીકા—‘ સત્તમસ્તે ’ તિ-સપ્તમસ્ય વર્ગસ્ય ઉત્કેષકઃ । સુધર્મસ્વામીરુથ
યતિ-એવ સ્વલુ હે જન્મુઃ । યાન્તુ ચત્તારિ અજ્ઞયણાનિ પ્રજ્ઞપ્તાનિ, તદગા-તાનિ

—:સત્તમવર્ગ પ્રારભઃ—

‘ સત્તમસ્સવગ્ગસ્સ ઉમ્મેવઓ ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થઃ—(સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉમ્મેવઓ એવ સ્વલુ જવૂ ! જાવ
ચત્તારિ અજ્ઞયણા પળ્લણ્ણા) હે મદત ! સાતવે વર્ગ કા ઉત્કેષક કિસ
પ્રકાર હૈ ? હસ જન્મસ્વામી કે પ્રદન કરને પર ગૌતમસ્વામી ડનસે કહતે
હૈ—કિ હે જવૂ ! સુનો, તુમ્હારે પ્રદન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ—શ્રમણ

સાતમો વર્ગ પ્રારભ—

‘ સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉમ્મેવઓ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થઃ—(સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉમ્મેવઓ એવ સ્વલુ જવૂ ! જાવ ચત્તારિ અજ્ઞ
યણા પળ્લણ્ણા) હે ભદ્રન્ત ! સાતમા વર્ગનો ઉત્કેષક કેવી રીતે છે ?

જ જૂ સ્વામીના આ પ્રશ્નને સાભળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે કે
હે જ જૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણુ ભગવાન
મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રકૃતિ કર્યા છે

यथासूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमालिः ३, प्रभङ्करा ४ । प्रथमा ययनस्योत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामीप्राह-एव खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्=भगवद्धर्ममानस्वामिसमागमनम् यावत् परिपत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेष

भगवान् महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं—(त जहा-सूरप्रभा, आयवा, अर्चिमाली, प्रभङ्करा, पद्मज्जयणस्स, उखेवओ एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे समोसरण जाव परिमा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समण्ण सूरप्रभा देवी, सूरसि विमाणसि सूरप्रभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा) वे चार अध्ययन इस प्रकार हैं सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्करा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्प्रेषक है जम्बू ! इस प्रकार है—उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर में भगवान् वर्धमानस्वामी का आगमन हुआ था—प्रभु का आगमन सुनकर वहा की परिपद उनको वदना करने के लिये उनके समीप गई—प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया । उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की । उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान में रहती थी—और सूरप्रभ सिंहासन पर बैठती थी प्रभु को वदना करने के लिये आई । इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

(तं जहा-सूरप्रभा, आयवा, अर्चिमाली, प्रभङ्करा, पद्मज्जयणस्स, उखेवओ एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समण्ण रायगिहे समोसरण जाव परिमा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समण्ण सूरप्रभादेवी, सूरसि विमाणसि सूरप्रभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा)

ते चार अध्ययनो आ प्रभाण्णे छे—सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्करा ४, छे जम्बू ! आ प्रभाभा पडेला अध्ययनो उत्प्रेषक आ प्रभाण्णे छे छे ते काले अने ते समये राजगृह नामना नगरमा लगवान् वर्धमान स्वामीनु आगमन थयु प्रभुनु आगमन सालणीने त्यानी परिपद तेभने वदना करवा भाटे तेभनी पासे गछ प्रभुणे सौने धर्मो उपदेश आये। उपदेश सालणीने सौणे प्रभुनी पर्युपासना करी ते काले अने ते समये सूरप्रभा नामनी ओक देवी-जे सूर विमानमा रहेती छती अने सूरप्रभ सिंहासन उपर बैसेती छती—प्रभुनी वदना करवा भाटे आवी अना पछीनु'

અથ સપ્તમો યગઃ પ્રારભ્યતે—‘ સત્તમસ્સે ’ ત્યાદિ ।

મૂલમ્—સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ, એવ સલુ જબૂ ।
જાવ ચત્તારિ અઙ્ગયણા પળ્લણ્ણા, ત જહા—સૂરપ્પમા આયવા
અચ્ચિમાલી પમકરા, પઢમઙ્ગયણસ્સ ઉચ્ચેવઓ, એવ સલુ
જબૂ । તેણં કાલેણં તેણં સમણં રાયગિહે સમોત્તરણં જાવ
પરિસા પઙ્ગુવાસઙ્ગ, તેણં કાલેણ તેણ સમણં સૂરપ્પમા દેવી
સૂરસિ વિમાણંસિ સૂરપ્પમંસિ સીહાસણંસિ સેસ જહા કાલીણ
તહાણવર પુવ્વભવે અરક્કુરીણ નયરીણ સૂરપ્પમસ્સ ગાહાવ
હસ્સ સૂરસિરીણ મારિયાણ સુરપ્પમા દારિયા સૂરસ્સ અગ્ગ-
મહિસી ઠિઠ્ઠિ અહ્હપલિઓવમ પચ્ચિ વાસસણ્ણિ અવ્વમહિય
સેસં જહા કાલીણ, એવ સેસાઓવિ સવ્વાઓ અરક્કુરીણ
નયરીણ ॥ સૂ૦ ૧૨ ॥ ॥ સત્તમો વગ્ગો સમત્તો ॥ ૭ ॥

ટીકા—‘ સત્તમસ્સે ’ તિ—સપ્તમસ્ય ‘ વર્ગસ્ય ઉત્ત્કેષકઃ । સુધર્મસ્વામીરૂપ
યતિ—એવ સલુ હે જમ્બુઃ ! યાતુ ચત્તારિ અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞતાનિ, તથા—તાનિ

—:સત્તમવર્ગ પ્રારભ:-

‘ સત્તમસ્સવગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ ? ’ इत्यादि ।

ટીકાર્થ:—(સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ એવ સલુ જબૂ । જાવ
ચત્તારિ અઙ્ગયણા પળ્લણ્ણા) હે મદત ! સાતવે વર્ગ કા ઉત્ત્કેષક કિસ
પ્રકાર હૈ ? હસ જબૂસ્વામી કે પ્રશ્ન કરને પર ગૌતમસ્વામી ઉનસે કહતે
હૈ—કિ હે જબૂ ! સુનો, તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હૈ—શ્રમણ

સાતમે વર્ગ પ્રારભ—

‘ સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ ’ इत्यादि—

ટીકાર્થ:—(સત્તમસ્સ વગ્ગસ્સ ઉચ્ચેવઓ એવ સલુ જબૂ । જાવ ચત્તારિ અઙ્ગ
યણા પળ્લણ્ણા) હે ભદ્રન્ત ! સાતમા વર્ગનો ઉત્ત્કેષક કેવી રીતે છે ?

જ ખૂ સ્વામીના આ પ્રશ્નને સાભળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે, કે
હે જ ખૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન
મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞપિત કર્યા

अथाष्टमो वर्गः प्रारभ्यते—' अट्टमस्से ' त्यादि ।

मूलम्—अट्टमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जम्बू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पणत्ता, त जहा—चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चि-
माली पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं
खलु जवू ! तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे समोसरणं
जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंद-
प्पभा देवी चदप्पभंसि विमाणसि चदप्पभंसि सीहासणंसि
सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीर-
वडेंसए उज्जाणे चदप्पभे गाहावई चंदसिरी भारिया चंद-
प्पभा दारिया चंदस्स अग्गमहिंसी ठिई अद्धपलिओवमं
पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए,
एवं सेसाओवि महुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरि-
सणामा ॥ सू० १३ ॥ अट्टमो वग्गो समत्तो ॥ ८ ॥

टीका—' अट्टमस्से ति—अष्टमस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामी प्राह—एव खलु
हे जम्बू ! यावत् चत्वारि अययनानि प्रपुत्तानि, तद्यथा=तानि यथा—चन्द्रप्रभा १,
ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्मालिः ३, प्रभङ्गुरा ४ । प्रथमस्याऽययनस्योत्क्षेपक । एव

—अष्टमवर्गं प्रारभः—

' अट्टमस्स उक्खेवओ ' इत्यादि ।

टीकार्थ—'(अट्टमस्स उक्खेवओ—एव खलु जवू ! जाव चत्तारि
अज्झयणा पणत्ता त—जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा,

आठमो वर्ग आरंभ

' अट्टमस्स उक्खेवओ , इत्यादि—

वै (अट्टमस्स उक्खेवओ—एव खलु जवू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पणत्ता—तं
जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खे-

યથા કાલ્યા=કાલી દેવ્યા વર્ણન તથા વિનંયમ્, નરમ્=મય વિશેષઃ=પૂર્વભવે
અરક્ષુર્યા નગર્યા સૂરમમસ્ય ગાથાપતેઃ, સૂરશ્રિયો માર્યાયાઃ સૂરપ્રમા દારિકા,
સૂરસ્ય અગ્રમહિપી સ્થિતિરર્ધપલ્યોપમ પદ્મમિર્નિર્ણયતૈરભ્યધિકમ્ । શોષ યથા કાલ્યા ।
એવ શોષા અપિ=આતપાદિકાઃ દેવ્યો ગાન્યા । સર્વા પૂર્વભવે અરક્ષુર્યા
નગર્યામાસન્ ॥ સુ૦૧૨ ॥

॥ ઇતિ ધર્મકથાના સપ્તમો ગ્રંઃ સમાપ્તઃ ॥ ૭ ॥

કા વૃત્તાન્ત લિખા જા શુકા હૈ-વૈસા હી હૈ । ઉસમેં કુછ અન્તર નહીં હૈ
(જવર) પરન્તુ જિન ગાતોં મેં અન્તર હૈ-વર હસ પ્રકાર હૈ-(પુન્વભવે)
યહ પૂર્વભવ મેં (અરક્ષુરીય નયરીય સૂરપ્પમસ્ય ગાઠાવહસ્ય સૂરસિરીય
મારિયાય સૂરપ્પમા દારિયા સૂરસ્ય અગ્ગમહિસી ટિઈ અદ્વપલિઓવમ
પર્વહિં વાસસર્પહિં અન્મહિય સેસ જહા કાલીય એવ સેસાઓ વિ સન્વાઓ
અરક્ષુરીય જયરીય ૧૨) અરક્ષુર નામકી નગરી મેં નિવાસ કરનેવાલે
સૂરપ્રમા ગાથાપતિ કી સૂર શ્રી માર્યા કી કુક્ષિ સે અવતરી થી । હસકા
નામ સૂરપ્રમા થા । યહ સૂર કી અગ્રમહિપી હુઈ । હસકી વર પાંચસૌ
વર્ષ સે અધિક અર્ધપલ્ય કી સ્થિતિ હૈ । ઓર હસકા હસ અવસ્થા કા
સમસ્ત વર્ણન કાલી સમાન હી હૈ । હસી તરહ કા આતપાઆદિક ૩
દેવિયોં કા મી જીવન વૃત્તાન્ત હૈ । યે ૩ તીનોં હી દેવિયાં અપને ૨પૂર્વ
ભવ મેં અરક્ષુર નગરી મેં જન્મી થી ॥ સુ૦૧૨ ॥

- સસમવર્ગ સમાપ્તઃ-

આતુ વર્ણન કાલી દેવીના વર્ણન જેવું જ સમગ્ર લેખુ ભેધએ, તેમા કોઇ
પણુ જાતનો તક્ષવત નથી (જવર) પરન્તુ જે વાતમા તક્ષવન છે, તે આ
પ્રમાણુ છે (પુન્વભવે) આ પૂર્વભવમા

(અરક્ષુરીય નયરીય સૂરપ્પમસ્ય ગાઠાવહસ્ય સૂરસિરીય મારિયાય સૂરપ્પમા
દારિયા સૂરસ્ય અગ્ગમહિસી ટિઈ અદ્વપલિઓવમ પર્વહિં વાસસર્પહિં અન્મહિય
સેસ જહા કાલીય, એવ સેસાઓ વિ સન્વાઓ અરક્ષુરીય જયરીય ૧૨)

અરક્ષુરી નામની નગરીમા રહેનારી સૂરપ્રમા ગાથાપતિની સૂરશ્રીમાર્યાના
ગર્ભથી જન્મ પામી હતી, તેનુ નામ સૂરપ્રમા હતુ તે સૂરની અગ્રમહિપી
(પટરાણી) થઈ તેની ત્યા પાંચસો વર્ષ કરતા વધારે અર્ધપલ્યની સ્થિતિ
હી તેનુ આ અવસ્થા વિષેનુ બધુ વર્ણન કાલીના જેવું જ છે એ પ્રમાણુ જ
આતપા વગેરે ૩ દેવીઓનુ પણ જીવનવૃત્તાત છે આ ત્રણે દેવીઓ પોત
પોતાના પૂર્વભવમા અરક્ષુર નગરમા જન્મ પામી હતી ॥સુ૦૧૨॥

આતપા વર્ગ સમાપ્ત

વિજ્ઞેયમ્, નગર=વિશેષસ્થળમ્-પૂર્વભવે મથુરાયા નગર્યા મળ્ડીરાવતસકમુચાનમ્, ચન્દ્રપ્રભો ગાથાપતિઃ, ચન્દ્રશ્રોભાર્યા, ચન્દ્રપ્રભા દારિકા, ચન્દ્રસ્વાગ્રમહિપી, સ્થિતિર્દ્વપલ્યોપમ પન્નાશર્દિર્વર્ષપદસૈભ્યગ્રિકમ્ । શેષ યથા કાલ્યાઃ । એવ

ચદ્રપ્રભ વિમાન મે રહતી થી ઓર ચદ્રપ્રભ સિંહાસન પર વેઠતી થી-
શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો વદના કરને એવ ડનસે ધર્મ કા ઉપદેશ
સુનને કે લિયે ડનકે નિકટ આઈ-। ડસકે ઘાદ કા ડસકા વૃત્તાન્ત
કાલીદેવી કે વૃત્તાન્ત જૈસા હી હૈ । ડસમેં કોઈ અન્તર નહી હૈ । જહાં
અન્તર હૈ-ડસકા ચુલાગા ડસ પ્રકાર હૈ-પૂર્વભવ મે યહ મથુરા નગરી
મેં જન્મી થી । વહા મહીરાવતસક ઉચાન થા । ડસ નગરી મેં ચદ્રપ્રભ
નામ કા ગાથાપતિ રહતા થા । ડસકી ભાર્યા થી જિસકા નામ ચદ્રશ્રી
થા । ડનકે યહ યહ ચદ્રપ્રભા નામકી પુત્રી થી । યહ ચન્દ્ર કી અગ્રમ-
હિપી પત્ની । (ટિંઈ અદ્વપલિઓત્તમ, પળ્ળાસાઁ વાસસહસ્સેહિં અગ્નહિય
સેસ જહા કાલીઁ એવ સેસાઓવિ ચદસ્સ અગ્ગમહિસી) પચાસ હજાર
વર્ષ સે અધિક ડસકી સ્થિતિ આધેપલ્ય કી હૈ । ડસકે ઘાદ કા ડસકા
જીવન વૃત્તાન્ત કાલી દારિકા કે જીવન વૃત્તાન્ત જૈસા હી જાનના
ચાહિયે । ડસી તરહ ડ્યોત્સ્નામા આદિશેષ ૩ દેવિયો કે સગ્ગ્ધ કો
લેકર જો અધ્યયન કહે ગયે હૈ-વે જાનના ચાહિયે યે સઘ ડ્યોત્સ્નામા

વિમાનમા રહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણ ભગવાન
મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા
માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનું તેનું વૃત્તાન્ત કાલી દેવીના વૃત્તાન્ત
બેસુ જ છે તેમા કોઈ પણ જાતનો તકાવત નથી જ્યા તકાવત છે-તેનું
અપીઠરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી,
ત્યા ભડીરાવત મક ઉધાન હતું તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો
હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનું નામ હતું તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી
આ ચન્દ્રની અગ્રમહિપી (પટરાણી) થઈ

(ટિંઈ અદ્વપલિઓત્તમ, પળ્ળાસાઁ વાસસહસ્સેહિં અગ્નહિય સેસ જહા
કાલીઁ એવ સેસાઓવિ ચદસ્સ અગ્ગમહિસી)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પડ્યની છે એના
પછીનું આનું જીવન વિષેનું વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન બેસુ જ સમજ
લેવું બોધ્યું આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નામા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના મળધને
જોઈએ અધ્યયનને કહેવામા આવ્યા છે તેમને પણ સમજ લેવા બોધ્યું

ખલુ હે જન્નુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહે શ્રીમહાવીરસ્વામિનઃ સમવસરણ, યાવત્-પરિવત્ પર્યુપાસતે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે ચન્દ્રપ્રભા દેવી ચન્દ્રપ્રભે પ્રિમાને ચન્દ્રપ્રભે મિહાસને શેષ યથા કાલ્યાઃ=કાલીદેવ્યા ઝર્ણનં તદ્વદ્

પદ્મસ્સ અજ્ઞયણસ્સ ઉપ્પોચ્છો-એવ ચલુ જન્ન ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ-જાવ પરિસા પજ્જુવામહ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ ચદપ્પમાદેવી ચદપ્પમસિ વિમાણસિ સીઠામણમિ સેમ જહા કાલીણ, ણવર પુવ્વમ્ભવે મહુરાણ ણયરીણ મહીરવહેમણ ઉજ્જાણે ચદપ્પમે માહાવર્ધે ચદસિરી મારિયા ચદપ્પમા દારિયા) હે મદત ! આઠવે વર્ગ કા ઉલ્લેપક કેસા હે ? હસ પ્રકાર જન્નુવામી કે પૂછને પર સુધર્મા-સ્વામી ને ડનસે કહા-હે જન્ન ! સુનો તુમ્હાને પ્રહન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર હે-શ્રમણ મહાવાન્ મહાવીર ને હસ વર્ગ કે ચાર અધ્યયન પ્રજ્ઞસ કિયે હે -વે હસ પ્રકાર સે હૈં-ચન્દ્રપ્રભા ૧, જ્યોત્સ્નામા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભકરા ૪, । હનમે હે જન્ન ! પ્રથમ ચન્દ્રપ્રભા અધ્યયન કા ઉલ્લેપક હસ પ્રકાર સે હે-ઉસ કાલ મે ઓર ઉસ સમય મેં રાજગૃહ નામકે નગર મેં શ્રી મહાવીર સ્વામી કા આગમન હુઆ થા- । ડનસે ધર્મ કા ઉપદેશ પ્રાપ્ત કરને કે લિયે વહા કી સમસ્ત ધાર્મિક જનતા ડનકે પાસ આઈ થી પ્રભુ ને સત્ર કે લિયે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનાયા-સુનાકર સવો ને ડનકી યાવત્ પર્યુપાસના કી । ઉસ કાલ ઓર ઉસ સમય મેં ચન્દ્રપ્રભા દેવી જો કિ

વઓ-એવ ચલુ જન્ન ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ-જાવ પરિસા પજ્જુવામહ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ ચદપ્પમાદેવી ચદપ્પમસિ વિમાણસિ ચદપ્પમસિ સીઠામણસિ સેસ જહા કાલીણ, ણવર પુવ્વમ્ભવે મહુરાણ ણયરીણ મહીરવહેમણ ઉજ્જાણે ચદપ્પમે માહાવર્ધે ચદસિરી મારિયા ચદપ્પમા દારિયા)

હે ભદન્ત ! આઠમા વર્ગનો ઉલ્લેપક કેવો છે ?

આ પ્રમાણે જન્નુ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને જણાવે છે કે જન્નુ ! સાબળો તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞસ કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે-ચન્દ્રપ્રભા ૧, જ્યોત્સ્નામા ૨, આર્ચિમાલી ૩, પ્રભકરા ૪ હે જન્નુ ! આ ચારેમા પહેલા ચન્દ્રપ્રભા નામે અધ્યયનનો ઉલ્લેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમા શ્રી મહાવીર સ્વામીનું આગમન થયું તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાંભળવા માટે ત્યાની બધી ધાર્મિક જનતા ત્યા આવી પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ સંભળાવ્યો । સાબળીને બધાએ તેમની યાવત્ પયુ પાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ચન્દ્રપ્રભા દેવી-કે

विज्ञेयम्, नरर=विशेषस्तवम्-पूर्वभवे मयुराया नगर्या भण्डीरावतसकमुद्यानम्, चन्द्रप्रभो गाथापतिः, चन्द्रश्रीभार्या, चन्द्रप्रभा दारिका, चन्द्रस्याग्रमहिषी, स्थितिर्द्विपत्योपम पञ्चाशद्विर्षमहसैरभ्यप्रिकम्। शेष यथा काल्याः। एव

चद्रप्रभ विमान मे रहती थी और चद्रप्रभ सिंहासन पर बैठती थी-श्रमण भगवान् महावीर को वदना करने एवं उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये उनके निकट आई-। इसके बाद का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के वृत्तान्त जैसा ही है। उसमें कोई अन्तर नहीं है। जहां अन्तर है-उसका खुलाजा इस प्रकार है-पूर्वभव में यह मयुरा नगरी में जन्मी थी। वहां भंडीरावतसक उद्यान था। उस नगरी में चद्रप्रभ नाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या थी जिसका नाम चद्रश्री था। उनके यहां यह चद्रप्रभा नामकी पुत्री थी। यह चन्द्र की अग्रमहिषी पनी। (ठिई अद्वपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चद्रस्स अगमहिंसी) पचास हजार वर्ष से अधिक इसकी स्थिति आधेपत्य की है। इसके बाद का इसका जीवन वृत्तान्त काली दारिका के जीवन वृत्तान्त जैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह ज्योत्स्नाभा आदिशेष ३ देवियों के संबन्ध को लेकर जो अध्ययन कहे गये हैं-वे जानना चाहिये ये सब ज्योत्स्नाभा

विमानमा रहती હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીતુ તેનું વૃત્તાત કાલી દેવીના વૃત્તાત જેવું જ છે તેમા કોઈ પણ ભાતનો તકાવત નથી જ્યા તકાવત છે-તેનું અપહીરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મયુરા નગરીમા જન્મી હતી, ત્યા ભંડીરાવતમક ઉદ્યાન હતું તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનું નામ હતું તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ

(ઠિઈ અદ્વપલિઓવમ, પણ્ણાસાએ વાસમહસ્સેહિં અબ્બહિય સેસ જહા કાલીએ એ સેસાઓવિ ચદ્રસ્સ અગમહિંસી)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની ગ્થિતિ અડધા પટ્યની છે એના પછીતુ આનું જીવન વિષેનું વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવું જ સમજી લેવું બોધ્યું આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નામા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સંબંધને લઈને જે અધ્યયનો કહેવામા આવ્યા છે તેમને પણ સમજી લેવા બોધ્યું

ચલુ હે જામ્બુ ! તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ મમયે રાજગૃહે શ્રીમહાવીરસ્વામિનઃ સમવ
સરણ, યાવત્-પરિપત્ પર્યુપાસતે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ મમયે ચન્દ્રપ્રભા દેવી
ચન્દ્રપ્રભે વિમાને ચન્દ્રપ્રભે સિંહાસને શેષ યથા કાલ્યાઃ=કાલીદેવ્યા યર્ણન તદ્વદ્

પદ્મસ્સ અજ્ઞાપણસ્સ ઉપ્પેવો-એવ ચલુ જન્મ ! તેણ કાલેણ તેણ
સમણ રાયગિદે સમોસરણ-જાવ પરિસા પજ્જુવામહ, તેણ કાલેણ તેણ
સમણ ચદપ્પભાદેવી ચદપ્પભસિ વિમાણસિ સીંહાસણસિ સેસ જહા
કાલીણ, ણવર પુન્નમવે મહુરાણ ણવરીણ મહીરવડેસણ ઉજ્જાણે ચદ-
પ્પમે ગાહાવડે ચદસિરી મારિયા ચદપ્પમા દારિયા) હે મદત ! આઠવે
વર્ગ કા ઉત્તેપક કેસા હે ? હસ પ્રકાર જન્મસ્વામી કે પૂઠને પર સુધર્મા-
સ્વામી ને ડનસે કહા-હે જન્મ ! સુનો તુમ્હાને પ્રઠન કા ઉત્તર હસ પ્રકાર
હે-શ્રમણ મગવાન્ મહાવીર ને હસ વર્ગ કે ચાર અધ્યયન પ્રજ્ઞસ કિયે હે
-વે હસ પ્રકાર સે હે-ચન્દ્રપ્રભા ૧, જ્યોત્સ્નામા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રમ-
કરા ૪, । ડનમે હે જન્મ ! પ્રથમ ચન્દ્રપ્રભા અધ્યયન કા ઉત્તેપક હસ પ્રકાર
સે હે-હસ કાલ મે ઓર હસ સમય મે રાજગૃહ નામકે નગર મે શ્રી
મહાવીર સ્વામી કા આગમન હુઆ થા- । ડનસે ધર્મ કા ઉપદેશ પ્રાપ્ત
કરને કે લિયે વહા કી સમસ્ત ધાર્મિક જનતા ડનકે પાસ આઈ થી પ્રમુ
ને સચ કે લિયે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનાયા-સુનાકર સનો ને ડનકી યાવત્
પર્યુપાસના કી । હસ કાલ ઓર હસ સમય મે ચન્દ્રપ્રભા દેવી જો કિ

વમ્મો-એવ ચલુ જન્મ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિદે સમોસરણ-જાવ
પરિસા પજ્જુવાસહ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ ચદપ્પભાદેવી ચદપ્પભસિ વિમાણસિ
ચદપ્પભસિ સીંહાસણસિ સેસ જહા કાલીણ, ણવર પુન્નમવે મહુરાણ ણવરીણ
મહીરવડેસણ ઉજ્જાણે ચદપ્પમે ગાહાવડે-ચદસિરી મારિયા ચદપ્પમા દારિયા)

હે ભદન્ત ! આઠમા વર્ગનો ઉત્તેપક કેવો છે ?

આ પ્રમાણે જન્મ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને
બહુ કે હે જન્મ ! સાબળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ
ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞસ કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે
છે-ચન્દ્રપ્રભા ૧ જ્યોત્સ્નામા ૨, આર્ચિમાલી ૩, પ્રલકરા ૪ હે જન્મ !
આ ચારેમા પહેલા ચન્દ્રપ્રભા નામે અધ્યયનનો ઉત્તેપક આ પ્રમાણે છે કે તે
કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં શ્રી મહાવીર સ્વામીનું આગમન
થયું તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાંભળવા માટે ત્યાંની બધી ધાર્મિક જનતા ત્યાં
આવી પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ સંભળાવ્યો । માંભળીને બધાએ તેમની યાવત્
પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ચન્દ્રપ્રભા દેવી-હે જે પ્રભા

વિનેયમ્, નર-વિશેષસ્ત્રાયમ્-પૂર્વમ્ મથુરાયા નગર્યા મળ્ડીરાવતસકમુગ્રાનમ્, ચન્દ્રપ્રભો ગાયાપતિઃ, ચન્દ્રબોર્માર્ષા, ચન્દ્રપ્રભા દારિકા, ચન્દ્રસ્વાગ્રમહિષી, સ્થિતિરદ્વપલ્યોપમ પચાસદ્વિર્ષપચ્ચૈભ્યત્રિકમ્ । શેષ યથા કાલ્યાઃ । એવ

ચદ્રપ્રભ વિમાન મેં રહતી યી ઓર ચદ્રપ્રભ સિંહાસન પર પૈઠતી યી-
અમળ ભગવાન્ મહાવીર કો વદના કરને એવ ડનસે વર્મ કા ઉપદેશ
સુનને કે લિયે ડનકે નિકટ આઈ-। ડમ્કે વાદ કા ડસકા વૃત્તાન્ત
કાલીદેવી કે વૃત્તાન્ત જૈસા હી હૈ । ડસમેં કોઈ અન્તર નહી હૈ । જહા
અન્તર હૈ-ડસકા રુલાગા ડસ પ્રકાર ટૈ-પ્રવંભવ મે વહ મથુરા નગરી
મેં જન્મી યી । વહાં મહીરાવતસક ઉવાન થા । ડસ નગરી મેં ચદ્રપ્રભ
નામ કા ગાયાપતિ રહતા થા । ડસકી માર્યા થી જિસકા નામ ચદ્રશ્રી
થા । ડનકે વહા વહ ચદ્રપ્રભા નામકી પુત્રી યી । વહ ચન્દ્ર કી અગ્રમ-
હિષી વની । (ટિઠે અદ્વપલિઓવમ, પળ્ળાસાણ વાસસદ્સેહિં અગ્રમહિય
સેસ જહા કાલીએ એવ સેસાઓવિ ચદસ્સ અગ્રમહિસી) પચાસ હજાર
વર્ષ સે અધિક ડસકી સ્થિતિ આધેપલ્ય કી હૈ । ડસકે વાદ કા ડસકા
જીવન વૃત્તાન્ત કાલી દારિકા કે જીવન વૃત્તાન્ત જૈસા હી જાનના
ચાહિયે । ડસી તરહ જ્યોત્સ્નામા આદિજોપ ૨ દેવિયો કે સન્ધ કો
લેકર જો અધ્યયન કહે ગયે હૈ-વે જાનના ચાહિયે યે સવ જ્યોત્સ્નામા

વિમાનમા ગહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-અમળ ભગવાન
મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળવા
માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનું તેનું વૃત્તાન્ત ઝાલી દેવીના વૃત્તાન્ત
જેવું જ છે તેમા કોઈ પણ બાતનો તક્ષવત નથી જ્યાં તક્ષવત છે-તેનું
અપ્રીકરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂવભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી,
ત્યાં ભડીરાવતમક ઉવાન હતું તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાયાપતિ રહેતો
હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનું નામ હતું તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી
આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ

(ટિઠે અદ્વપલિઓવમ, પળ્ળાસાણ વાસમહ્સેહિં અગ્રમહિય સેસ જહા
કાલીએ એવ સેસાઓવિ ચદસ્સ અગ્રમહિસી)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પટયની છે એના
પછીનું આનું જીવન વિષેનું વર્ણન ઝાલી દારિકાના જીવન જેવું જ સમજ
લેવું બોધ્યું આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નામા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સંબંધને

શેષાઃ=જ્યોત્સ્નામાદિ દેવ્યોઽપિ ત્રિણેયા । સર્ગાઃ પૂર્વમથ મથુરાયાં નગરીં
જાતાઃ, પાર્શ્વમધુસમીપે ચ પ્રજિતા । માતાપિતરોઽપિ દુહિતૃસદૃશનામાનઃ ॥મૂ૦૧૩॥

इति धर्मकथानामाष्टमो वर्गः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ नवमो र्गः प्रारभ्यते—' णवमम् ' इत्यादि ।

મૂલમ્—ણવમસ્સ ઉક્ખેવઓ, એવં યલ્લુ જંબૂ ! જાવ અટ્ટ-
અઙ્ગયણા પળ્લન્તા, ત જહા—પડમા સિવા સર્દે અંજુ રોહિણી
ણવામિયા, અચલા અચ્છરા, પઠમઙ્ગયણસ્સ ઉક્ખેવઓ, એવં
ચલ્લુ જંબૂ ! તેણં કાલેણ તેણં સમણેણ રાયગિહે સમોસરણં
જાવ પરિસા પઙ્ગુવાસઙ્, તેણં કાલેણં તેણં સમણં પડમાવર્દે
દેવી સોહમ્મે કપ્પે પડમવડેસણ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ
પડમંસિ સીહાસણંસિ જહા કાલોણ એવ અટ્ટવિ અઙ્ગયણા
કાલીગમણ નાયઠ્ઠા, ણવર સાવર્થીણ દો જણીઓ હત્થિણા-
ડરે દોજણીઓ કપિલ્લપુરે દોજણીઓ સાગેયનયરે દોજણીઓ
પડમે પિયરો વિજયા માયરાઓ સઘ્ઠાઓઽવિ પાસસ્સ અંતિણ
પઘ્ઠઙ્ગયાઓ સક્કસ્સ અગ્ગમહિસીઓ ઠિર્દે સત્ત પલિઓવમાઙ્
મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિહિતિ જાવ અત કાહિતિ ॥ સૂ૦૧૪ ॥

॥ णवमो वर्गो समन्तो ॥ ९ ॥

આદિ દેવિયા પૂર્વમથ મેં (મથુરાણ ણયરીણ) મથુરા નગરી મેં ઉત્પન્ન
હુર્દે ઔર પાર્શ્વનાથ પ્રમુ કે સમીપ દીક્ષિત હુર્દે । (માયા પિયરો વિ૦ ધૂયા
સરિસણામા) ઇન પુત્રિયોં કા નામ વૈસા હી નામ ઇનકે માતા પિતા કા હૈ ।

—' अष्टमवर्ग समाप्तः—

આ ણધી જ્યોત્સ્નામા વગેરે દેવીઓ પૂર્વલવમા (મથુરાણ ણયરીણ) મથુરા
નગરીમા ઉત્પન્ન થઈ અને પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસેથી દીક્ષિત થઈ (માયાપિયરો
વિઠ ધૂયા સરિસણામા) આ પુત્રીઓના નામે જેવા જ તેમના માતાપિતાઓના
નામે પણ છે

આઠમો વર્ગ સમાપ્ત

ટીકા—‘ળવમસ્સે’ તિ-નવમમ્ય વર્ગસ્યોત્ક્ષેપકઃ । એવ સ્વલુ હે જમ્બૂઃ । યાવત્-અષ્ટ-અધ્યયનાનિ પ્રજ્ઞાતાનિ, તથા-પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી ૩ અઞ્જૂઃ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અચલા ૭, અપ્સરા ૮ । એવ પ્રથમાધ્યયનસ્યોત્ક્ષે-

—:નવમવર્ગ પ્રારંભ -

ળવમસ્સ ઉત્ત્ત્વેવઓ ઇત્યાદિ ।

ટીકાર્થ—(ળવમસ્સ ઉત્ત્ત્વેવઓ-એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! જાવ અટ્ટ અઞ્જય-યણા પળ્લતા-ત જહા-પડમા, સિવા, સર્ઈ, અજૂ, રોહણી, ળવમિયા, અચલા, અચ્છરા, -પઢમઞ્જયણસ્સ ઉત્ત્ત્વેવઓ-એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણં સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ પરિસા પઞ્જુવાસઠ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ પડમાવર્ઈ, દેવી સોહમ્મે કપ્પે પડમવહેસણ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ પડમસિ-સીહાસણસિ જહા કાલીણ એવ અટ્ટવિ અઞ્જય-યણા કાલીગમણ નાયવ્વા) હે ભદત ! નૌવે વર્ગ કા ઉત્ક્ષેપક કિસ પ્રકાર સે હૈ ? ઇસ પ્રકાર જમ્બૂ સ્વામી કે પ્રશ્ન કરને પર સુધર્મા સ્વામી ડનસે કહતે હૈ કિ હે જમ્બૂ ! સુનો-તુમ્હારે પ્રશ્ન કા ઉત્તર ઇસ તરહ સે હૈ-શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર ને ઇસ વર્ગ કે યાવન્ આઠ અધ્યયન પ્રરૂ-પિત કિયે-વે ઇસ પ્રકાર સે હૈ-પદ્મા ૧, શિવા, ૨, શચી ૩, અજૂ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અચલા ૭, ઓર અપ્સરા । ઇનમેં હે જમ્બૂ ! પ્રથમ

નવમો વર્ગ પ્રારંભ

(ળવમસ્સ ઉત્ત્ત્વેવઓ-એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! જાવ અટ્ટ અઞ્જયણા પળ્લતા-ત જહા પડમા, સિવા, સર્ઈ, અજૂ, રોહિણી, ળવમિયા, અચલા, અચ્છરા, પઢમઞ્જયણસ્સ ઉત્ત્ત્વેવઓ-એવ સ્વલુ જમ્બૂ ! તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ પરિસા પઞ્જુવાસઠ, તેણ કાલેણ તેણ સમણ પડમાવર્ઈ દેવી સોહમ્મે રૂપે પડમ વહેસણ વિમાણે સમાણ સુહમ્માણ પડમસિ-સીહાસણસિ જહા કાલીણ એવ અટ્ટ વિ અઞ્જયણા કાલી ગમણ નાયવ્વા)

હે ભદ-૧ ! નવમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જમ્બૂ સ્વામીના પ્રશ્ન ડર્થા બાદ સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જમ્બૂ ! સાલળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે—શ્રમણુ લગવાન મહાવીરે આ વર્ગના યાવત્ આઠ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે—પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી ૩, અજૂ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અચલા ૭ અને અપ્સરા ૮

પરુઃ । એ સ્વલ્પ હે જન્મુઃ । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે રાજગૃહે સમયસરણમ્= ભગવતો મહાવીરસ્ય સમાગમનમભૂત્, યાન્ પરિપન્ પર્યુપાસ્તે । તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે પદ્માવતી દેવી, સૌધર્મે કલ્પે પદ્માવતસકે વિમાને સમાયા સુધર્માયા પદ્મે સિંહાસને, યથા કાલ્યાઃ । એમ્ અટ્ટાપિ અધ્યયનાનિ કાલીગમકેન=કાલી-દેવીસદૃશપાઠેન જ્ઞાતવ્યાનિ, નવર=વિગેષસ્ત્રયમ્-પૂર્વભગે શ્રાવસ્ત્વા નગર્યાં 'દોજ-

અધ્યયન કા ઉલ્લેખ ન હસ પ્રકાર સે હૈ-ઉસ કાલ મેં ઓર ઉમ સમય મેં રાજગૃહ નગર મેં ભગવાન્ મહાવીર કા અગમન હુજા ધા । લોગોં કો જય હનકે શુભાગમન કી ગવર પડી તો વે સત્ર કે સત્ર ઉનકો વદના કરને કે લિયે ઓર ઉનસે ધર્મોપદેશ કા કામ લેને કે લિયે ઉનકે સમીપ પહુંચે । પ્રભુ ને આપે દુષ્ટ પરિપદ કો યુનચારિત્રરૂપ ધર્મ કા ઉપદેશ દિયા । ઉપદેશ સુનને કે વાદ ઉસને પ્રભુ કી યાવત્ પર્યુપામના કી । ઉસ કાલ મે ઓર ઉસ સમય મેં પદ્માવતી દેવી જો કિ સૌધર્મકલ્પ મેં પદ્માવતસક વિમાન મે, સુધર્મા સમામેં રહતી ચી ઓર જિસકે સિંહાસન કા નામ પદ્મ યા શ્રમણ ભગવાન્ મહાવીર કો વદના કરને ઓર ઉનસે ધર્મ કા ઉપદેશ સુનને કે લિયે વહા આઈ । ઉસકે વાદ કા સમ્બન્ધ કાલીદેવી કા જૈસા વર્ણન પહિલે કિયા ગયા હૈ વૈસા હી જાનના ચાહિયે । હસી તરહ સે અવશિષ્ટ સાત અધ્યયન મી જાનના ચાહિયે । હન આઠોં હી અધ્યયનોં કો પાઠ જૈસા કાલીદેવી કા પાઠ હૈ વૈસા હી હૈ । કોઈ અન્તર નહીં હેં (૧૧૨) પરન્તુ જહા અન્તર હૈ વહ-

હે જ બૂ ! આમા પહેલા અધ્યયનનો ઉલ્લેખ આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું લોકોને તેમના શુભાગમનની જ્યારે જાણ થઈ ત્યારે તેઓ સર્વે તેમને વદન કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાલળવા માટે તેમની પાસે ગયા. પ્રભુએ આવેલા સર્વ લોકોને શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સલાળાવ્યો. ઉપદેશ સાલળીને લોકોએ પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે પદ્માવતી દેવી-કે જે સૌધર્મ કલ્પમા, પદ્માવત સક વિમાનમા સુધર્મા સભામા રહેતી હતી અને જેના સિંહાસનનું નામ પદ્મ હતું-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન કરવા અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાલળવા ત્યાં આવી જેના પછીનું વર્ણન પહેલા કરવામા આવેલા કાલી દેવીના વર્ણનની જેમ સમજી લેવું જોઈએ આ પ્રમાણે જ બાકીના સાત અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઈએ એ આઠે આઠ અધ્યયનોનો પાઠ કાવી દેવીના જેવો જ

ળીઓ ' દ્વે જન્યૌ=પદ્યા-શિવાભિવે દ્વે દારિકે સજાતે । એવ હસ્તિનાપુરે દ્વે જન્યૌ
શ્રુતિ:-અઙ્ઙઃ ચેતિ, કામ્પિલ્યપુરે દ્વે જન્યૌ રોહિણીનવમિકાનામ્ન્યૌ, સાકેતનગરે
દ્વે જન્યૌ અચલા-અપ્સરા ઇતિ સજાતે । સર્વેપામ્ ' પડમે ' પદ્મઃ પદ્મેતિ નામાનઃ
પિતરઃ, વિજયા=વિજયાનામ્નો માતર આસન્ । સર્વા અપિ પાર્શ્વસ્ય=પાર્શ્વપ્રમોર-
ન્તિકે પ્રવ્રજિતાઃ, શક્રસ્યાગ્રમહિવ્યો જાતા । તાસા સ્થિતિઃ સપ્તપલ્યોપમાનિ ।
એતાઃ સર્વા મહાવિદેહે ર્ષે સેત્સ્યન્તિ યાવત્સર્વદુઃસ્વાનામન્ત ઋરિપ્યન્તિ ॥સૂ૦ ૧૪॥

॥ ઇતિ ઝર્મકથાના નવમો વર્ગઃ સમાપ્તઃ ॥ ૯ ॥

હસ પ્રકાર સે હૈ-(સાવત્રીય દોજળીઓ) પદ્યા ઓર શિવા યે દો
કન્યાઈ પૂર્વ ભવમે શ્રાવસ્તી નગરી મેં ઉત્પન્ન હુઈ (હતિયળાઝરે દોજળી
ઓ, કમ્પિલ્લપુરે દો જળીઓ સામેયનયરે દો જળીઓ પડમે પિયરો
વિજયાભાયરાઓ સવ્વાઓવિ પાસસ્સ અતિય પવ્વહયાઓ સક્કસ્સ અગ્ગ-
મહિસીઓ ટિઈ સત્તપલિઓવમાઈ મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિઙ્ગિહિતિ જાવ
અત્ત કાહિતિ '૧૪') શ્રુતિ ઓર અઙ્ઙ યે દો હસ્તિનાપુરમેં, રોહિણી,
નવમિકા યે દો કામ્પિલ્યપુરમેં, અચલા એવ અપ્સરા યે દો સાકેત નગર
મેં, ઉત્પન્ન હુઈ । ઇન સન કન્યાઓકે પિતા કા નામ પદ્મ ઓર માતા કા
નામ વિજયા થા । યે સવ કન્યાઈ પાર્શ્વનાથ પ્રભુ કે પાસ પ્રવ્રજિત હુઈ
હૈ । શક્ર કી અગ્રમહિપિયા બની હૈ । ઇન કી સ્થિતિ સાતપલ્ય થી । યે

છે તેમ સમજી લેવું જોઈએ તેમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી (ગર)
પરંતુ બધા તફાવત છે-તે આ પ્રમાણે છે (સાવત્રીય દોજળીઓ) પદ્યાવતી
અને ગિવા આ બને બધાઓ પૂર્વભવમા શ્રાવસ્તી નગરીમા ઉત્પન્ન થઈ

(હતિયળાઝરે દો જળીઓ, કપિલ્લપુરે દો જળીઓ સામેય નયરે દો જળીઓ
પડમે પિયરો વિજયા ભાયરાઓ સવ્વાઓવિ પામસ્સ અતિય પવ્વહયાઓ સક્કસ્સ
અગ્ગમહિસીઓ ટિઈ, સત્ત પલિઓવમાઈ મહાવિદેહે વાસે સિઙ્ગિઙ્ગિહિતિ જાવ અત્ત
કાહિતિ " ૧૪ " ।)

શ્રુતિ અને અઙ્ઙ આ બને હસ્તિનાપુરમા, રોહિણી અને નવમિકા આ
બને કાપિલ્યપુરમા, અચલા અને અપ્સરા આ બને સાકેત નગરમા ઉત્પન્ન
થઈ આ બધી બધાઓના પિતાનું નામ પદ્મ અને માતાનું નામ વિજયા હતું
આ બધી બધાઓ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે અને શક્રની
અગ્રમહિપિયા (પટરાણીઓ) બની છે એમની સ્થિતિ સાત પલ્ય જેટલી

अथ दशमो वर्ग प्रारभ्यते-दसमस्म ' इत्यादि ।

मृत्-दसमस्स उक्खेवओ, एव खलु जवू । जाव अट्ट
अज्झयणा पणत्ता, त जहा-कण्हा य कण्हराई रामा तहराम-
रक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमिक्का वसुधरा चेव ईसाणे ॥१॥
पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जवू । तेणं कालेणं तेणं
समएणं कण्हादेवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए
सुहम्माए कण्हसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए एवं अट्टवि
अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवर पुव्वभवे वाणारसीए
नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ सावत्थीए
नयरीए दो जणीओ कोसवीए नयरीए दो जणीओ, रामे
पिया धम्मा माया सव्वओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्व-
इयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्ग-
महिंसीओ ठिई णव पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झि-
हिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाणं अत काहिति । एवं
खलु जवू । णिक्खेवओ दसमवग्गस्स ॥ सू० १५ ॥

॥ दसमो वर्गो समाप्तो ॥ १० ॥

टीका—' दसमस्से ' ति दशमस्य उत्क्षेपकः । एव खलु हे जम्बू । यावत्
अष्ट-अभ्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-तानि गायया प्रदर्शयन्ते ' कण्हे ' इत्यादि ।

सब महाविदेह क्षेत्र से सिद्ध अवस्था प्राप्त करेगी-यावत् सर्व दुःखों
का अन्त करेगी ॥ सू० १४ ॥

॥ नवमवर्ग समाप्त ॥

छे आ णधी महाविदेह क्षेत्रमाथी सिद्ध अवस्था प्राप्त करेगे यावत् सर्व
दुःखो अन्त करेगे ॥ सू० १४ ॥

नवमो वर्ग समाप्त

“ कृष्णा १ च कृष्णराजिः २, रामा ३ तथा रामरक्षिका ४ वसूथ ५
वसुगुप्ता ६, वसुमित्री ७, वसुन्धरा ८ चैव ईशाने ॥ १ ॥ ”

तत्तन्नामभिरध्ययनानि प्रसिद्धानि । तत्र प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः । एव खलु
हे जम्बू । तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे भगवत श्रीमहावीर-

॥ दशमवर्ग प्रारभ ॥

‘दसमस्स उग्गखेवओ’ इत्यादि० “१५”

टीका—(दसमस्त उक्खेवओ—एवं खलु जन्तु ! जाव अट्ठअज्झयणा पणत्ता—त जहा कण्हाय कण्हारो, रामा, तह रामरक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमिन्ता वसुधरा चेव ईसाणे “१”—पढमज्झयणस्त उक्खेवओ—एव खलु जन्तु !) हे भदन्त श्रमण भगवान् महावीर ने दशवें वर्गका उत्क्षेपक किस प्रकार से कहा है ? इस तरह का जन्तु ! स्वामी के प्रश्न का समाधान करने के निमित्त सुवर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जन्तु ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है—श्रमण भगवान् महावीरने इस दशवें वर्ग के आठ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं—वे ये हैं—कृष्णा १, कृष्णराजि २, रामा ३, रामरक्षिका ४, वसू ५, वसुगुत्ता ६, वसुमित्रा ७, और वसुधरा । इन २ नामों द्वारा इन २ नाम वाले अध्ययन प्रसिद्ध हुए हैं । इनमें प्रथम अध्ययन का हे जन्तु ! उत्क्षेपक

દશમો વર્ગ પ્રારભ—

‘ दसमसस सकखेवओ ’ इत्यादि—

(दसमस्म उक्खेवओ-एव खलु जन्तु ! जाय अह अज्झयणा पणत्ता-त जहा-कण्हा य कण्हारि, रामा तह रामरक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमिक्ता वसुधरा चेव ईसाणे ॥ १ ॥ पढमज्झयणस्त उक्खेवओ-एव खलु जन्तु ।)

હે ભદ્રન્ત ! શ્રમણુ લગવાન મહાવીરે દશમા વર્ગનો ઉત્કેષક
 જેવી રીતે કહ્યો છે ?

આ પ્રમાણેના જળૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાલણીને તેના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જળૂ! સાલણો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે શ્રમણુ લગવાન મહાવીરે આ દશમા વર્ગના આઠ અધ્યયનો પ્રજ્ઞ કયાં છે, તે આ પ્રમાણે છે-૧, કૃષ્ણારાગિર, રામા ૩, રામરક્ષિકા ૪, વસૂ ૫, વસુગુપ્તા ૬, વસુમિત્રા ૭ અને વસુવરા ૮

આ ઉક્ત જુદા જુદા નામો વડે એ જ નામના જુદા જુ । અધ્યયનો
પ્રસિદ્ધ થયા છે હે જાજુ । આ બધામાથી પહેલા અધ્યયનો ઉદ્દેશક

સ્થામિનઃ સમયમરણં યાત્ પરિપત્ પર્યુપાન્તે, તસ્મિન્ કાલે તસ્મિન્ સમયે કૃષ્ણા
દેવીર્દેશાને કલ્પે કૃષ્ણાવતસકે વિમાને સભાયાં સુરમાયા, કૃષ્ણ સિંહામને, શેષ

હસ તરહ્ સે હં- (તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ જાવ
પરિસા પજ્જુવાસહ) ડસ કાલ એવડમ સમયમેં રાજગૃહ નગરમેં મગવાન
મહાવીર કા શુભાગમન હુઆ થા । પરિપત્ ડન કો વદના આદિ કરને
કે લિયે ડનકે સમીપ પહુંચી । પ્રભુને સયકે લિયે ધર્મ કા ઉપદેશ
સુનાયા । લોગોને ઉપદેશ સુનકર પ્રભુ કી પર્યુપાસના કી (તેણ કાલેણ
તેણ સમણ કણ્હા દેવી ર્દેસાણે કપ્પે કણ્હેવડેસણ વિમાણે સભા
સુહમ્માણ કણ્હસિ સીરાસણસિ સેસ જહા કાલિણ એવ અવિટ્ઠાઅજ્ઞ
યણા કાલીગમણ ણેયવ્વા, ણવર પુવ્વમવે વાણારસીણ નયરીણ દો
જળીઓ રાયગિહે નયરે દો જળીઓ, સાવત્થીણ નયરીણ દો જળીઓ, કો
સરીણ નયરીણ દો જળીઓ રામે પિયા ધમ્મા માયા સવ્વઓડવિ પામસ્સ
અરહઓ અતિણ પવ્વડયાઓ પુપ્પાચૂલાણ અજ્ઞાણ સિસ્સિણીયત્તાણ ર્દેસા-
ણસ્સ અગ્ગમહિસીઓ ઠિર્ર, ણવપાલિઓવમાહ, મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિ
રિંતિ, બુજ્ઞિરિંતિ, મુચ્ચિરિંતિ, સવ્વદુસ્સાણ, અતકારિંતિ, એવ સ્સલુ
જનૂ ! ણિક્કલેવઓ દસમવગ્ગસ્સ) ડસી કાલ ઓર ડસી સમય વહા
કૃષ્ણાદેવી જો ર્દેશાન કલ્પ મેં કૃષ્ણાવતસક વિમાન મેં રહતી યી-ઓર

આ પ્રમાણે છે (તેણ કાલેણ તેણ સમણ રાયગિહે સમોસરણ, જાવ પરિસા
પજ્જુવાસહ) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા ભગવાન મહાવીરનું
શુભાગમન થયું તેમને વદન કરવા માટે પરિવ્રત તેમની પાસે પહોંચી અને
પ્રભુએ ધર્મોપદેશ સંભળાવ્યો ધર્મોપદેશ સાંભળીને પરિવ્રતે પ્રભુની પર્યુપાસના કરી

(તેણ કાલેણ તેણ સમણ કણ્હા દેવી ર્દેસાણે કપ્પે કણ્હેવડેસણ વિમાણે
સભા સુહમ્માણ કણ્હસિ સીરાસણસિ સેસ જહા કાલીણ એવ અવિટ્ઠા અજ્ઞયણા
કાલીગમણ ણેયવ્વા, ણવર પુવ્વમવે વાણારસીણ નયરીણ દો જળીઓ રાયગિહે
નયરે દો જળીઓ, સાવત્થીણ નયરીણ દો જળીઓ, કોસરીણ નયરીણ દો જળીઓ
રામે પિયા ધમ્મા માયા સવ્વઓડવિ પામસ્સ અરહઓ અતિણ પવ્વડયાઓ પુપ્પ
ચૂલાણ અજ્ઞાણ સિસ્સિણીયત્તાણ ર્દેસાણસ્સ અગ્ગમહિસીઓ ઠિર્ર, ણવપાલિ ઓવ-
માહ, મહાવિદેહે વાસે સિજ્ઞિરિંતિ બુજ્ઞિરિંતિ, મુચ્ચિરિંતિ, સવ્વદુસ્સાણ, અત
કારિંતિ એવ સ્સલુ જનૂ ! ણિક્કલેવઓ દસમવગ્ગસ્સ)

તે કાળે અને તે સમયે ત્યા કૃષ્ણા દેવી-કે જે ઇશાન-કંપમા કૃષ્ણા
વત સક વિમાનમા રહેતી હતી અને જેની સંભાનું નામ ' ' તેમજ
સિંહાસનનું નામ કૃષ્ણા હતું-આવી એના પછીને

યથા કાર્યાઃ । એવમઘા કૃષ્ણરાજિપ્રભૃતીનિ અધ્યયનાનિ કાલીગમકેન=કાલી-
દેવીસદૃશપાઠેન જ્ઞાતવ્યાનિ નવર=વિશેષ યત્-પૂર્વભવે વાણારસ્યા નગર્યા દ્વે=
કૃષ્ણ-કૃષ્ણરાજિનામ્ન્યૌ જન્યૌ=દારિકે સજાતે । એવ રાજગૃહે નગરે દ્વે=વસુ-
વસુગુપ્તા નામ્ન્યૌ જન્યૌ, કૌશામ્બ્યા નગર્યા દ્વે=વસુમિત્રા-વસુન્ધરા નામ્ન્યૌ
જન્યૌ=દારિકે સમુત્પન્ને । સર્વાસા રામઃ=રામામિધઃ પિતા, ધર્મા=ધર્માઽમિધા
માતા । સર્વા અપિ પાર્શ્વસ્યાર્હતોઽન્તિકે પ્રવ્રજિતાઃ, પુષ્પચૂલાયા આર્યાયાઃ શિષ્યા-
સ્તેન પાર્શ્વપશુના સ્વય પ્રદત્તા । ઈશાનસ્ય=ઈશાનેન્દ્રસ્ય અગ્રમહિષ્યો જાતાઃ । તત્ર
તાસા સ્થિતિર્નવ પત્યોપમાનિ વર્તતે । તત્તચ્ચુત્વા મહાવિદેહે વર્ષે સમુત્પદ્ય સેસ્સ્યન્તિ,

જિસકી સભા કા નામ સુધર્મ તથા સિંહાસન કા નામ કૃષ્ણ થા આઈ ।
હસ કે આગે કા પાઠ કાલીદેવી કે વર્ણન મેં જૈસા પાઠ કહા ગયા હૈ
વૈસા હી હૈ । હસી તરહ સે કૃષ્ણરાજિ પ્રભૃતિ-અધ્યયન મી-કાલીદેવી
વર્ણન મેં પઠિત પાઠ કે સદૃશ હી જાનના ચાહિયે । કાલીદેવી કે પાઠ
મેં ઓર હન આઠ અધ્યયનોક્ત પાઠોં મેં જો અન્તર હૈ વહ હસ પ્રકાર
સે હૈ-પૂર્વભવ મેં વાણારસી નગરીમેં કૃષ્ણા ઓર કૃષ્ણરાજિ યે દો જની
-ઉત્પન્ન હુઈ, રાજગૃહનગર મેં રામા ઓર રામરક્ષિકા આવસ્તી નગરી મેં
વસુ, વસુગુપ્તા ઓર કૌશામ્બી નગરી મેં વસુમિત્રા એવં, વસુન્ધરા ઉત્પન્ન
હુઈ । હન સવ કે પિતા કા નામ રામ ઓર માતાઓં કા નામ ધર્મા થા ।
યે સવકી સવ પાર્શ્વનાથ પ્રભુ કે પાસ પ્રવ્રજિત હુઈ । પ્રભુને હન સવ
કો દીક્ષિત કરકે પુષ્પચૂલા આર્યાં કી શિષ્યારૂપ સે દિયા । યે સવ
હસ ઈશાનેન્દ્રકી અગ્રમહિષી હુઈ । વહાં હનકી સ્થિતિ નૌ પત્યોપમા કી
હૈ । વહાં સે ચવકર યે મહાવિદેહ ક્ષેત્ર મેંઉત્પન્ન હોંગી ઓર વહીં સે

વર્ષુનમા જે પ્રમાણે પાઠ કહેવાયો છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવો
જોઈએ આ પ્રમાણે જ કૃષ્ણરાજિ વગેરે અધ્યયનો પણ કાલી દેવીના
પાઠમા અને આ ઉક્ત આઠ અધ્યયનોના પાઠોમા જે કઈ તફાવત છે તે
આ પ્રમાણે છે-પૂર્વભવમા વાણારસી નગરીમા કૃષ્ણા અને કૃષ્ણારાજિ
આ બંને ઉત્પન્ન થઈ, રાજગૃહ નગરમા રામા અને રામરક્ષિકા આવસ્તી
નગરીમા વસુ, વસુગુપ્તા અને કૌશામ્બી નગરીમા વસુમિત્રા અને વસુન્ધરા
ઉત્પન્ન થઈ એમના પિતાનું નામ રામ અને માતાનું નામ ધર્મા હતું એ
બધીએ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજ્યા અહંચુ કરી હતી પ્રભુએ સર્વેને
દીક્ષિત કરીને પુષ્પચૂલા આર્યાને શિષ્યાઓના રૂપમા સોંપી હતી એ બધી
ઈશાનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓ થઈ ત્યાં તેમની સ્થિતિ નવ પદ્ધતોપમાની છે
ત્યાથી ચલીને એ બધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ - -

भोत्स्यन्ति, मोक्षयन्ति सर्वं दुःखानामन्त करिष्यन्ति । एव मन्त्र हे जम्बू ! निक्षेपको दशमवर्गस्य ॥ सू० १५ ॥

॥ इति धर्मकथानां दशमो वर्गः समाप्त ॥ १० ॥

मूलम्—एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं आदि-
गरेणं सयंसबुद्धेणं पुरिसोत्तमेण जाव सपत्तेण धम्मकहाणं
अयमद्वे पणत्ते ॥

॥ धम्मकहासुयक्खधो समत्तो दसहि वग्गेहि ॥

॥ णायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥

टीका—सुधर्मास्वामी कथयति—‘एव खलु’ इत्यादि । एव खलु हे जम्बू !
श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण स्वयं सम्बुद्धेन पुरुषोत्तमेन

सिद्ध पद की भोक्ता घनेंगी केवलज्ञानरूप आलोक से समस्त चराचर
पदार्थों की ज्ञाता घनेगी । द्रव्य एव भावरूप समस्त कर्मों से छूटजावेगी
इस तरह ये वही से समस्त दुःखों का अन्त करने वाली होंगी । इस
प्रकार हे जंबू ! यह दशवेवर्ग का निक्षेपक है ।

॥ दसमवर्ग समाप्त ॥

‘एव खलु जंबू !’ इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं आदि-
गरेण, तित्थगरेण सयंसबुद्धेणं पुरिसोत्तमेण जाव सपत्तेण धम्मकहाणं
अयमद्वे पणत्ते) अथ जंबूस्वामी से श्री सुधर्मास्वामी कहते हैं कि हे

पद भोजवशे ओ अधी हेवज्ज्ञान इय आलोकधी समस्त चर अने अन्यर
पदार्थानु ज्ञान भोजवशे द्रव्य अने लावइय अधा कर्मेधी सुकत धर्म वशे
आप्रभाषे ओ अधी त्याथी व अधा दु जोने अत करनारी यशे आ प्रभाषे
हे जंबू ! ओ दशमो वर्गो निक्षेपक छे

दशमो वर्गो समाप्त

॥ एव खलु जंबू ! इत्यादि—

(एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण आदिगरेण तित्थगरेणं सय-
सबुद्धेण पुरिसोत्तमेण जाव सपत्तेण धम्म कहाण अयमद्वे पणत्ते)

યાવત્ સિદ્ધિગતિનામધેય સ્થાન સંપ્રાપ્તેન ધર્મકથાનામયમર્થ પ્રજ્ઞપ્તઃ ॥

॥ ધર્મકથાનામકો દ્વિતીયઃ શ્રુતસ્કન્ધઃ સમાપ્ત ॥

इति श्री-विश्वचिख्यात-जगद्बल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-

लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-

॥ अर्पतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-‘जैनशास्त्राचार्य’ पदभूषित-कोल्हापुरराज-

गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-

॥ ६ ॥ प्रतिविरचिताया-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रेनस्यानगारधर्माમૃતવર્ષિ-

ण्याख्या व्याख्या समाप्ता ॥

જન્મ ! આદિકર, 'તીર્થંકર, સ્વયં સંબુદ્ધ પુરુષોત્તમ, યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાન કો પ્રાપ્ત હુએ એસે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર ને ધર્મકથા નામક દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ કા પૂર્વોક્તરૂપ સે અર્થ પ્રજ્ઞાપ્ત કિયા હૈ । (ધમ્મ-કહાંસુચક્કલ ધો સમત્તો દસહિં વગેહિ) ધર્મકથા નામકા યહ દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધ દશવર્ગો મેં સમાપ્ત હુઆ હૈ । ઇસ તરહ (જાયાધમ્મકહાઓ સમત્તાઓ) યહ જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગ સૂત્ર સમાપ્ત હુઆ ।

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાંસીલાલજી મહારાજ કૃત "જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર" કી અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા સમાપ્ત ॥

હવે જ બુ સ્વામીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જ બુ ! આદિકર તીર્થંકર, સ્વયં સંબુદ્ધ, 'પુરુષોત્તમ' યાવત્ સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચૂકેલા એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથા નામના બીજા શ્રુતસ્કંધને પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રજ્ઞાપિત કર્યો છે (ધમ્મકહા સુચક્કલ ધો સમત્તો દસહિ વગેહિ) ધર્મકથા નામનો આ બીજો શ્રુતસ્કંધ દશ વર્ગોમા પૂરો થયો છે આ પ્રમાણે (જાયાધમ્મકહાઓ સમત્તાઓ) આ જ્ઞાતા ધર્મકથાઙ્ગ સૂત્ર પૂરું થયું છે શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર, પૂજ્ય શ્રી ઘાંસીલાલજી મહારાજ કૃત

"જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર" ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા સમાપ્ત

—:શાસ્ત્રમશસ્તિ:—

કાઠિયાવાડદેશેઽસ્તિ, રાજકોટપુરે શુભે

કોઠારીહરગોવિન્દ કાકાનામ મસિદ્ધિમાન્ ।

તસ્યાસ્તિમાર્યાપરમા સુશીલા, ધર્માનુસ્તાપૂરકાર્થદક્તા ।

શાન્તિપ્રિયા દીનદયાર્દ્રિમાત્રા, નામ્ના પ્રસિદ્ધા કિલ્લકલિમ્બીન્ના ॥ ૧ ॥

દિનેશચન્દ્રસ્તનયોઽસ્તિ યસ્ય, કુલસ્ય દીપઃ સરલસ્વમાત્રઃ ।

કન્યા સુશીલા સરલા જિતુષ-સદા-પ્રમોદાય વક્ત્રાસ્તિનિઃ ॥ ૩ ॥

વ્યાખ્યાનભવને તસ્ય, જ્ઞાતાધર્મકથાદ્રકે ।

ઘાસીલાઘેન્ મુનિના કૃતા ટીકા સતાં મુદે ॥ ૪ ॥

દ્વિસદ્સત્ત્વત્ સભ્યે, વિક્રમાન્દે રત્નો દિને ।

માઘે શુક્લે ચ પશ્ચમ્યાં, સમ્પૂર્ણા ધર્મવર્ણિણી ॥ ૫ ॥

કાઠિયાવાડદેશ મેં રાજકોટ નામકા અઠ્ઠા નગર હૈ । જન્મ મેં
કોઠારી હરગોવિન્દકાકા રહતે હૈ । इनका सुशीलभार्याका नाम रक्षिणी
है । यह गृहकार्य में बहुत चतुर है । धर्मात्मा है, शान्ति प्रिया है एवं
दीन दुःखियों के ऊपर सदा दया भाव रखती है । काका का कुल दीपक,
एक दिनेशचन्द्र नाम का पुत्र और जितु नाम की-कन्या है । ये दोनों
माता पिता के प्रमोद के स्थान भूत हैं ।

મુજ્ઞ ઘાસીલાલ મુનિરાજ ને ઊઠ્ઠી કે વ્યાખ્યાન ભવન મેં ઢહર કર
વિક્રમ સવત ૨૦૦૪ દિન રવિવાર માઘશુક્લા પચમી કે દિન જ્ઞાત્ય
ધર્મકથાદ્ર, સૂત્રની યહ ટીકા રચકર સમાપ્ત કી હૈ ।

કાઠિયાવાડ પ્રાંતમા રાજકોટનામે એક સરસ્વતી રમ્ય નગર છે, તેમજ
કોઠારી હરગોવિન્દ કાકા રહે છે તેમની સુશીલ પત્નીનું નામ રક્ષિણી છે
તેઓ ગૃહકાર્યમાં ખડું જ ચતુર છે, ધર્માત્મા તેમજ શાંતિ પ્રિયા પણ છે
તેઓ ગરીબ દુઃખીઓના ઉપર હમેશા દયાભાવ રાખે છે । કાકાનો કુળદીપક
એક દિનેશચંદ્ર નામે પુત્ર અને જિતુ નામે એક કન્યા છે આ બંને માતા
પિતાના પ્રમોદના આશ્રયસ્થાનો છે ।

મેં ઘાસીલાલ મુનિરાજે તેમના જ વ્યાખ્યાન ભવનમા રહીને વિક્રમ
સવત ૨૦૦૪ રવિવાર માઘ શુક્લા પચમીના દિવસે જ્ઞાતાધર્મકથાંજ
સૂત્રની આ ટીકા રચીને પૂરી કરી છે

